Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमिळ

कम्ब रामायण

युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध)

कु 729

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ ३.

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कम्ब रामायणम्

(तमिळ)

युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध)

(नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय एवं हिन्दी अनुवाद)

रचयिता

महर्षि कम्बर्

लिप्यन्तरण एवं अनुवाद

आचार्य ति० शेषाद्रि, एम० ए०

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रथम संस्करण—

१९८२-८३ ई०

पृष्ठसंख्या—१८"×२२"÷८=८४०

मूल्य— ७०·०० रुपया

राजकीय संग्रहालय
क्रमसंख्या 5729
प्राप्ति तिथि
विभाग
श्रेणी
STATE MUSEUM, LUCKNOW.

मुद्रक—

वाणी प्रेस

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियां रोड, लखनऊ–२२६००३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिवंगत ब्रह्मर्षि आचार्य विनोबा भावे की पुण्यस्मृति में

समर्पण

भारत के द्वितीय शुकदेव ! भीष्म ने स्वार्थवश शरशय्या त्यागने में "उत्तरायण" की प्रतीक्षा की। आपने प्राणि-हित में, सन्निकट "उत्तरायण" की प्रतीक्षा किये विना, "दक्षिणायन" में ही दिव्यलोक को प्रयाण किया।

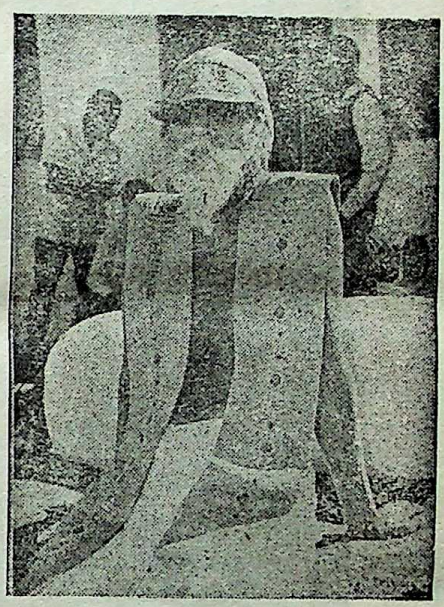

आपने, नागरी लिपि के माध्यम से विविध भाषाई क्षेत्रों के वाङ्मय को अखिल राष्ट्रव्यापी एवं विश्वतोमुख बनाने में अनुपम भूमिका प्रस्तुत की।

अकिञ्चन् ने सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण का कार्य सन् १९४७ ई० में अपनाया। सन् ६९ में तदर्थ "भुवन वाणी ट्रस्ट" की स्थापना की। आपसे अनेक बार शुभाशिष् एवं सतत सराहना प्राप्त कर हमारा श्रम सार्थक होता रहा। आपकी सस्तुति पर स्व० श्रीमन्जी ने "नागरी लिपि परिषद्" के पंजीकरण-आवेदन में आवश्यक सात बुनियादी सदस्यों में मुझको गौरव प्रदान किया।

मेरा परम सौभाग्य है कि "नागरी लिपि" के पुष्कल कार्य में, आज ७६ वर्ष की आयु में, सतत रत हूँ; और श्वासान्त तक ऐसा ही रत रह सकूँ, यह भगवान् से प्रार्थना है।

हमारे अनेकानेक सानुवाद लिप्यन्तरण-ग्रंथों में, तमिळ का यह महाकाव्य "कम्ब रामायण" अति जटिल एवं विलक्षण सिद्ध हुआ। इसके पिछले चार खण्ड एवं हमारे सभी कार्यों का आपने अपनी सहज प्रसन्न मुद्रा में अवलोकन किया है। उन पर चर्चा की है।

आज यह शिरोमणि ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ। आपकी पुण्यस्मृति में यह भाषाई मंगल-कलश हम भगवदर्पण कर रहे हैं। "जय जगत्" आपका उद्घोष रहा है। "जय जगत्" कह कर ही हम आपको प्रणाम करते हैं।

१७ नवम्बर, १९८२ ई० —नन्दकुमार अवस्थी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्री स्वामी चिन्मयानन्द
श्री शेषाद्रि
मदुरै
धन्य ॐ

बाम्बे यज्ञशाला
१४-११-७९

हरिः ओम्, हरिः ओम्, हरिः ओम्, प्रणाम ।

कम्बर रामायण के पूरे दस हज़ार से अधिक पद्यों के टीका सहित अनुवाद के अत्यद्भुत कार्य द्वारा श्री 'प्रभु' की सेवा करने के लिए जो तुमने अपने में 'विश्वास' पा लिया है उसके लिए मेरी बधाइयाँ ।

श्रीराम तुम पर अपनी कृपा बरसाएँ, श्री सीताजी आवश्यक "मनोबल" दें; और हनुमानजी उसे पूरा करने के लिए आवश्यक शारीरिक व मानसिक बल दें ।

प्रेम प्रेम प्रेम
(प्रेमसहित)
ॐ चिन्मयानन्द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

Shri swami Chinmayananda

Zurich, Switzerland
23rd May, 1982

Sri. T. Seshadri,
Madurai, 625011

Blessed Self,

Hari Om ! Hari Om ! Hari Om !
Salutations.

Truths are eternal. They don't change with times or places. Differences in language cannot sully the chaste beauty of the permanent or eternal. Masters have presented it in different ways, and in India this Spiritual Essence has been the theme for all artists, poets and literary men in their mighty compositions.

The Sanskrit Ramayan of Valmiki, considered to be the first great poetry in the languages of the World, has been an inspiration down the centuries for the entire past of our culture. No other book has influenced literature and art as Ramayana has accomplished.

The spirit of Rama has given the Hindus, even in their material and political life, their utopia, famously expressed as "Rama Rajya"— the reign of Rama.

Naturally, therefore, in all the well developed and important state languages of India we find great poets compellingly inspired to translate and communicate these inevitable life of Rama. If in North India Tulsi Ramayana is popular, in Tamil Nadu Kamban is equally famous and universally accepted.

Kamban Ramayana is not a mechanical translation of the original Valmiki. The poet had his feet planted in his society of his times, and although his head soared above the clouds, in his stupendous vision, his hands wove a pattern of beauty, all his own, within the frame of Valmiki vision. In fact, in some of the situations, I feel Kamban has handled more dexterously and smoothed out the unpolished areas of Valmiki's collosal work of art.

Sri Seshadri is a fit person, graciously equipped for this subtle work of serving as a bridge between North and South with his translation of this Tamil Classic into chaste modern Hindi (with Nagri transliteration as well.)

It wasn't a pleasant job. Though inspired, amidst his domestic and worldly pre-occupations, Prof. Seshadri had to struggle now for more than 4 years to accomplish this work. It has been brought out in 5 volumes and here he is presenting the 5th and the last volume. I shall confess that I am awestricken at the plenitude of his ever expanding mastery in language, and the torrential gush of appropriate telling expressions employed to bring out even the suggestive imports of that Tamil Scholar's unerring diction and irresistible food of his images.

If I say that I congratulate Sri. Seshadri, it only means that I have become silent at the benediction behind the frail professor as he sits bent upon his translation work. Jai Jai Sri Ramachandra.

With prem and Om,
Thy Own Self

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(हिन्दी अनुवाद)

श्री टी० शेषाद्रि,
मदुरै, 625011

पवित्र आत्मन्
हरि ओम् ! हरि ओम् ! हरि ओम् !
नमस्कार !

सत्य तथ्य सनातन हैं। वे देश या काल के साथ नहीं बदलते। भाषाओं की भिन्नता अमर या अनन्त रखनेवाली उस वस्तु की अव्यभिचारी सौंदर्य पर बट्टा नहीं लगा सकती। आचार्यों ने उसे भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रतिपादित किया है और भारत में यह आध्यात्मिक सार तत्त्व ही सभी कलाकारों, कवियों तथा साहित्यिकों का वर्ण्य-विषय रहता आता है।

वाल्मीकि की संस्कृत भाषा में रचित रामायण जो संसार की भाषाओं के काव्यों में सर्वप्रथम रचित काव्य ग्रंथ है, सदियों से हमारी भारतीय संस्कृति का प्रेरणास्रोत रही है। किसी भी अन्य ग्रंथ ने हमारे साहित्य और कला पर इतना प्रभाव नहीं डाला है जितना कि रामायण ने।

श्रीराम-तत्त्व ने हिन्दुओं को, उनके घोर भौतिक तथा सियासी जीवन में भी उनके यूरोपिया (कल्पित पर इच्छित स्वर्ग) का 'रामराज्य' की कल्पना का अश्वासन दिया है।

फिर, स्वाभाविक था कि भारत की सभी श्रेष्ठ तथा मँजी हुई प्रांतीय भाषाओं में हमें महान कवियों का साक्षात्कार मिले जिन्हें कि श्रीराम के जीवन के तत्त्वों के अनुवाद तथा प्रस्तुतीकरण की अदम्य प्रेरणा हुई। उत्तर में जहाँ गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामायण लोकप्रिय रहती है, वहाँ तमिळनाडु में कम्बन (का ग्रंथ) समान रूप से प्रसिद्ध तथा सर्वमान्य है।

कम्बन की रामायण मूल-वाल्मीकि-रामायण का यंत्रवत् उल्था नहीं है। कम्बन के चरण अपने समय के समाज की धरती में खूब जमे थे। और यद्यपि उनका सिर मेघमंडल के ऊपर उठा था अपने परमाद्भुत अवलोकन के फलस्वरूप, उनके हाथों ने वाल्मीकि को कल्पना के ढाँचे के अंतर्गत एक सौंदर्य की सृष्टि की जो एक दम उनकी अपनी थी। सच पूछा जाय, मेरी राय में, अनेक संदर्भों का, कम्बन ने अधिक चातुर्य से निर्वाह किया है और वाल्मीकि की बहुत विशद कलाकृति के कम प्रशस्त कच्चे स्थलों को चिकना व चमकदार बना दिया है।

श्री शेषाद्रि योग्य व्यक्ति है, जिसके पास तमिळ महाकाव्य के आधुनिक तथा शुद्ध हिन्दी में अनुवाद द्वारा उत्तर व दक्षिण के बीच (आदान-प्रदान का) पुल बनाने के नाजुक कार्य के लिए आवश्यक ईश्वरदत्त साधन हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह कार्य कोई पूर्ण सुखद काम नहीं था। हाँ, वे अवश्य अंतःप्रेरणा से भरे थे; तो भी अपने घरेलू तथा सांसारिक कर्तव्यों के बीच श्री शेषाद्रि को इसे पूरा करने में चार-पाँच वर्षों से अधिक जूझना पड़ा। यह कृति पाँच जिल्दों (भागों) में पूर्ण हो रही है। अब पाँचवाँ भाग आपके सामने है। मैं स्वीकार करूँगा कि उनके वर्धनशील भाषा पर अधिकार का विस्तार, तथा उन तमिळ के विद्वान कम्बन की अचूक अभिव्यंजना शैली तथा उनके प्रतीकों तथा चित्रणों के अपार प्रवाह के अंतर्निहित तात्पर्यों का भी प्रगटन करने में उनके द्वारा प्रयुक्त प्रभावकारी तथा उचित शब्दों के प्रयोग में पाया जानेवाला प्रपात-सा-वेग —ये मुझे अभिभूत करते हैं।

जो मैं कहूँ कि मैं श्री शेषाद्रि को बधाई देता हूँ उसका तात्पर्य इतना है कि मैं उन कृशकार्य आचार्य के पीछे, जब वे अपने अनुवाद के पावन कार्य में झुके बैठे हैं, जो ईश्वरीय कृपा है उसके सामने अवाक् हो जाता हूँ।

जय जय श्रीरामचन्द्र !

जूरिच, स्विट्ज़र्लैंड
23 मई, 1982

प्रेम तथा ओम् सहित
आपका ही आत्मीय
ॐ चिन्मयानन्द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

FOREWORD

Dr. V. Sp. Manickam, Ph.D., D.Litt.
Vice-Chancellor, Madurai Kamaraj University

Palkalai nagar
Madurai-625021

21-1-1982

Professor T. Seshadri has done a national service by his faithful translation in Hindi (along with Nagri transliteration) of the complete epic of Ramayanam in Tamil by the greatest poet Kamban. This valuable contribution by the learned professor to the wealth of Indian Literature will certainly open new vistas for tne comparative study of Ramayana from the Tamil point of view.

Dr. V. Sp. Manickam

It is traditionally stated that Kamban followed in the footsteps of Valmiki in composing his Tamil epic. This is only a general statement. On minute item-wise comparison in the narration of the story, in the arrangement of incidents, in the delineation of characters, in their conversational points, in the description of natural backgrounds, in the manifestation of culture, in the technique of niceties and subtlities and above all in the universal outlook of life, dissimilarities exceed and excel similarities in the epics of Valmiki and Kamban. Here we have to ponder over the reason for distinction and deviation of Kamban in his epic.

Many Indian scholars are not still aware of the fact that the ancient Tamil Cankam Literature has preserved several notable references to Rama and that according to Tamil version, Rama was a true historical personage. It will be thrilling to know that Valmiki was one of the Tamil poets of the Cankam period and his poem in Purananuru (358) philosophises on the renunciation of Raman. The devotional songs of the twelve Alwars have embedded innumerable new references about Rama

---

[डॉ० वी० एस्पी० माणिक्कम् तमिळ के मूर्धन्य महाविद्वानों में एक हैं। अध्ययन के आधार पर मिली उपाधियों के अलावा साहित्यिक साधना के सम्मानार्थ शॅम्मल् (श्रेष्ठ पुरुष), मुदु पॅरुम् पुलवर् (उच्चकोटि के महाविद्वान), पॅरुन् तमिळ्क् कावलर् (महान तमिळरक्षक) आदि उपाधियों से भी विभूषित हैं। उनको शिक्षण के अलावा अन्वेषण के क्षेत्र में भी उत्तम अनुभव प्राप्त है। वे अण्णामलै विश्वविद्यालय के तमिळ-विभाग के आचार्य तथा भारतीय-भाषा-विभाग के 'डीन' रहने के बाद कारैक्कुडी कालेज के प्रिंसिपल बने। वे तिरुवनंतपुरम् के अंतर्देशीय-द्रविड़भाषा-शास्त्र-पाठशाला के सीनियर फ़ेलो भी रहे हैं। सम्प्रति वे मदुरै के मदुरै-कामराज विश्वविद्यालय के उपकुलपति हैं। वे अंग्रेजी, संस्कृत, मलयाळम और हिन्दी आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं। साहित्य तथा भाषा के अलावा शैव-सिद्धांत-संप्रदाय के क्षेत्र में भी उनकी बड़ी कीर्ति है। स्वाभाविक था कि उन्हें इस कृति के प्रति सम्मान का भाव हो और ट्रस्ट के कार्य से संतोष हो। ट्रस्ट तदर्थ गौरवान्वित है।] —ति० शेषाद्रि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

traditionally handed down from generation to generation. Kamban who was well versed in these Tamil traditions developed the spirit of independence in the making and texture of his magnificient epic and established himself as an original poet. Kamban is a slave of Rama in his devotion and not a slave of Valmiki in his composition.

The abovs explanation will provs the incalculable value of this translation in Hindi by Professor Seshadri, a renowned scholar both in Hindi and Tamil at a time when we the Indians are trying our best to develop the emotional integration in the minds of the youth. I am convinced that only through a proper study and perfect under-standing of the value of the literary works in all Indian languages, integration by emotion and intelligence is possible. Thus Prof. Seshadri's contribution to the world of Indian Muse will have a far reaching effect on the analytical and synthetic approach. To translate the complete epic of Kamban into Hindi with necessary explanations and expositions is no mean achievement in these days of disturbed atmosphere. Steadfastness, patience, sincerity and national spirit which the Professor possesses in abundance enabled him to take up this monumental project and accomplish it in a few years.

I am happy to know that Bhuvan Vani Trust, Lucknow has published several volumes of translation by Prof. Seshadri and eminent scholars of all Indian languages. by investing heavy amouuts in this laudable objective. But for the financial assistance of this Trust, no work of this nature will see the light of publication. Hence the service of this Trust is unique and exemplary. Both the author and the Trust deserve our appreciation and gratefulness.

Madurai.
21.1.82

V. Sp. Manickam

(हिन्दी अनुवाद)

कविश्रेष्ठ कम्बन के (रचित), ऐतिहासिक महाकाव्य, पूरी रामायण का हू-ब-हू हिन्दी अनुवाद (तथा नागरी लिपि में लेखन व उच्चारण —दोनों पद्धतियों पर लिप्यन्तरण) करके प्रोफ़ेसर शेषाद्रि ने राष्ट्र की अच्छी सेवा की है। भारतीय साहित्य-भण्डार को यह अति मूल्यवान देन है और इससे अवश्य ही तमिळ के दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन के नये-नये क्षेत्र खुल आयँगे।

परंपरागत जनश्रुति है कि कंबन ने इस ऐतिहासिक महाकाव्य की रचना में वाल्मीकि के पदचिह्नों का अनुकरण किया है। यह तो मोटे तौर की साधारण उक्ति है। पर कथा-कथन के प्रकार में, घटना के विधान में, चरित्र-चित्रण में, वार्त्तालाप के विन्यास में, प्राकृतिक पृष्ठभूमि के वर्णनों में, संस्कृति के प्रकाशन में, बारीक और ललित युक्तियों (शैली) में और सबके ऊपर जीवन के विश्वव्यापी दर्शन में— बात-बात को लेकर सूक्ष्मता से देखा जाय तो ध्यान में आयगा कि वाल्मीकि और कम्बन में अंतर अधिक है और विशिष्ट भी, बजाए समानताओं के। यहाँ कंबन के ऐतिहासिक महाकाव्य में विशिष्टता के हेतुओं पर सोचना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनेक तमिळ के विद्वान अब भी इस बात से अनभिज्ञ हैं कि तमिळ के प्राचीन संघ-साहित्य में राम संबंधी अनेक उल्लेखनीय संदर्भ सुरक्षित रखे पाये जाते हैं। और तमिळ के कथांतरों के अनुसार राम एक सच्चा ऐतिहासिक पुरुष है। यह जानकर लोगों को रोमांच होगा कि 'वाल्मीकी' (बाल्मीकि ही का तमिळ नाम) संघ काल के तमिळ कवियों में एक थे और उनकी "पुरनानूरु" (चार सौ मुक्तक कविताओं के संग्रह) की एक कविता ने (सं० ३५८) राम के त्याग की दार्शनिक व्याख्या दी है। बारह आळवारों के भक्ति के पदों में अनेकानेक अनोखे व नये रामकथा संबंधी संदर्भ अंतर्निहित हैं, जो क्रम से पुरानीं पीढ़ी से नयी पीढ़ी सुनती आ रही है। कंबन इस परंपरा में सने हुए थे और उसी के आधार पर उन्होंने अपने अत्युत्कृष्ट महाकाव्य की संरचना में एक स्वतन्त्रता की भावना का विकास कर लिया है। और इसी के बल अपने को एक मौलिक कवि के रूप में संस्थापित कर लिया है। कम्बन अपनी भक्ति में राम का ग़ुलाम थे पर अपनी रचना में वाल्मीकि के ग़ुलाम नहीं रहे।

यह सफ़ाई प्रो० शेषाद्रि के, जो हिन्दी और तमिळ के विख्यात विद्वान हैं, इस हिन्दी अनुवाद के अतुल मूल्य को प्रमाणित कर देगी— विशेषकर ऐसे संदर्भ में जब हम भारतीय अपने युवकों के नम में भावात्मक एकता के विचार को बढ़ाने के कार्य में अधिक से अधिक प्रयत्न-तत्पर हैं। मेरा पक्का बिश्वास है कि सभी भारतीय भाषाओं के उचित अध्ययन और उनके महत्त्व के पूर्ण ज्ञान द्वारा ही भावात्मक तथा बौद्धिक एकता लाना संभव है। इस भाँति भारतीय चिंतन के संसार को प्रो० शेषाद्रि की भेंट विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक अध्ययन-प्रवेश-द्वार (Approach) पर दूर-गामी प्रभाव डालेगी। कंबन के पूरे महाकाव्य को हिन्दी में आवश्यक व्याख्याओं और टीकाओं के साथ अनूदित करना साधारण साधना का काम नहीं— खासकर विक्षुब्ध वातावरण के इन दिनों में। अचल लगन, सहनशीलता, ईमानदारी और राष्ट्रीय चेतना, इन सबने, जो शेषाद्रि में कसरत से हैं, उन्हें यह चिरस्मरणीय कार्य में हाथ लगाने और फिर कुछ ही वर्षों में संपन्न कराने की क्षमता दिलायी है।

भुवन वाणी ट्रस्ट ने प्रो० शेषाद्रि और अन्य भारतीय भाषाओं के विशिष्ट विद्वानों के कई ग्रंथों को इस प्रशंसनीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारी धन लगाकर प्रकाशित किया है —यह जानकर मुझे अत्यंत आनंद होता है। इस न्यास की आर्थिक सहायता के विना ऐसी कृतियाँ प्रकाशन के प्रकाश में आ ही नहीं सकेंगी। इस ट्रस्ट की सेवा विशिष्ट है तथा अनुकरणीय भी। लेखक तथा ट्रस्ट दोनों हमारी बधाई तथा धन्यवाद के पात्र हैं।

21-1-1982 (ह०) वी० एस्पी० माणिक्कम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विश्वनागरी लिपि

।। ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ।।

प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक
संत की वाणी।
सम्पूर्ण विश्व में
घर-घर है पहुँचानी ।।

विश्व-वाङ्मय से निःसृत
अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट सबने
अब भूतल-भ्रमण विचारा ।।

सब भारतीय लिपियाँ सम-वैज्ञानिक हैं !

All the Indian Scripts are equally scientific !

भारतीय लिपियों की विशेषता।

संसार की लिपियों में नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक है। यह कथन बिलकुल ठीक है। परन्तु यह कहते समय हमें याद रखना चाहिए कि वह सर्वाधिक वैज्ञानिकता केवल हिन्दी, मराठी, नेपाली, लिखी जानेवाली लिपि में नहीं, वरन् समस्त भारतीय लिपियों में मौजूद है। क, च, त, प आदि के रूपों में कोई वैज्ञानिकता नहीं है। वैज्ञानिकता है लिपि का

ध्वन्यात्मक होना। नियमित स्वरों का पृथक् होना। अधिक से अधिक व्यंजनों का होना। सबको एक 'अ' के आधार पर उच्चरित करना ('अ' अक्षर-स्वर, सकल अक्षरों का उस भाँति मूल आधार। सकल विश्व का जिस प्रकार 'भगवान्' आदि है जगदाधार)। एक स्वर में एक ही भार (वज़न) से प्रत्येक अक्षर को बोलना। एक अक्षर से केवल एक ध्वनि। जैसा लिखना वैसा ही बोलना, वैसा ही अक्षर का एकाक्षरी नाम। उच्चारण-संस्थान के अनुसार अक्षरों का कवर्ग, चवर्ग आदि में वर्गीकरण। फिर प्रत्येक वर्ग के अक्षरों का क्रम से एक ही संस्थान में थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठते हुए अनुनासिक तक पहुँचना, आदि-आदि ऐसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनेक गुण हैं जो अभारतीय लिपियों में एकत्र, एकसाथ नहीं मिलते। किन्तु ये गुण समान रूप से सभी भारतीय लिपियों में मौजूद हैं, अतः वे सब नागरी के समान ही 'सर्वाधिक वैज्ञानिक' हैं। सब ब्राह्मी लिपि से उद्भूत हैं। ताड़पत्र और भोजपत्र की लिखाई तथा देश-काल-पात्र के अन्य प्रभावों के कारण विभिन्न भारतीय लिपियों के अक्षरों में यत्र-तत्र परिवर्तन, हिन्दी वाली 'नागरी लिपि' को कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं करता। भारत की मौलिक सब लिपियाँ 'नागरी लिपि' के समान ही श्रेष्ठ हैं।

नागरी लिपि को 'भी' अपनाना श्रेयस्कर क्यों ?

"नागरी लिपि" की केवल एक विशेषता है कि वह कमोबेश सारे देश में प्रविष्ट है, जबकि अन्य भारतीय लिपियाँ निजी क्षेत्रों तक सीमित हैं। वहीं यह भी सत्य है कि नागरी लिपि में प्रस्तुत और विशेष रूप से हिन्दी का साहित्य, अन्य लिपियों में प्रस्तुत ज्ञानराशि की अपेक्षा कम और नवीनतर है। अतः समस्त भाषाओं की ज्ञानराशि को, सर्वाधिक फैली लिपि "नागरी" में अधिक से अधिक लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से उठाकर सबको सारे राष्ट्र में, यहाँ तक कि विश्व में ले आना परम धर्म है। विश्व की सब भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान (सत्साहित्य) है आत्मा, और 'नागरी लिपि' होना चाहिए उसका पर्यटक शरीर।

अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य है।

वस्तुतः यह परम धर्म है कि समस्त सदाचार साहित्य को नागरी में तत्परता और प्राचुर्य में लिप्यन्तरित करना। किन्तु साथ ही यह भी परम धर्म है कि अन्य लिपियों का उत्तरोत्तर उन्नति के साथ बरकरार रहना। यह इसलिए कि सबका सब कभी लिप्यन्तरित नहीं हो सकता। अतः अन्य लिपियों के नष्ट होने और नागरी लिपि मात्र के ही रह जाने से अलिप्यन्तरित हमारी समस्त ज्ञानराशि उसी प्रकार लुप्त-सुप्त होकर रह जायगी जैसे पाली का वाङ्मय रह गया। हमारा प्राचीन आप्तज्ञान विलुप्त हो जायगा।

नागरी लिपि वालों पर उत्तरदायित्व विशेष !

इन दोनों परम धर्मों की पूर्ति का सर्वाधिक भार नागरी लिपि वालों पर है, इसलिए कि उनको 'सम्पर्क लिपि' का श्रेष्ठ आसन प्रदत्त है। मैं कह सकता हूँ कि उन्होंने अपने कर्तव्य का, जैसा चाहिए था वैसा निर्वाह नहीं किया। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में अन्य लिपि वालों को भी "अपराध के जवाब में अपराध" नहीं करना चाहिए। 'कोयला' बिहार का है अथवा सिंहभूमि का है, इसलिए हम उसको नहीं लेंगे, तो वह हमारे ही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लिए घातक होगा। कोयले की क्षति नहीं होगी। अपनी लिपियों को समुन्नत रखिए, किन्तु नागरी लिपि को भी अवश्य जानिए।

उपर्युक्त परिवेश में नागरी लिपि का पठन और समग्र श्रेष्ठ साहित्य का नागरी में लिप्यन्तरण तो आवश्यक है ही, किन्तु अन्य लिपियाँ भी अपनी लिपि में दूसरी भाषाओं के सत्साहित्य को लिप्यन्तरित तथा अनूदित कर सकती हैं। 'अधिकस्य अधिकं फलम्।' ज्ञान की सीमा नहीं निर्धारित है। भुवन बाणी ट्रस्ट ने भी अवधी के रामचरितमानस को ओड़िआ भाषा में गद्य एवं पद्य अनुवाद-सहित, ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरित किया है। परन्तु सम्पर्क और एकीकरण की दृष्टि से 'नागरी लिपि' अनिवार्य है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव की सम्पत्ति है।

अब एक क़दम आगे बढ़िए। भारतीय लिपियों की सर्वाधिक वैज्ञानिकता युगों की मानव-श्रृंखला के मस्तिष्क की उपज है। क्या मालूम इस अनादि से चल रहे जगत् में कब, क्या, किसने उत्पन्न किया? भारत संयोग से इस समय इस विज्ञान का कस्टोडियन् है, स्रष्टा नहीं। भारत भी न जाने कब कहाँ तक और कितना था? अतः हम भारतीयों को नागरी लिपि के स्वामित्व का गर्व नहीं होना चाहिए। वह आज के मानव के पूर्वजों की देन है, सबकी सम्पत्ति है, सकल विश्व उसका समान गौरव से उपयोग कर सकता है। हमारा 'अहम्' उस लिपि की उपयोगिता को नष्ट कर देगा, जिसके हम सँजोये रखनेवाले मात्र हैं। किन्तु विदेशों में बसनेवाले बन्धुओं को भी नागरी लिपि के गुणों को अपने ही पूर्वजों की उपज मानकर परखना चाहिए। ये गुण इस निबन्ध के प्रथम अनुबन्ध में अधिकांशतः वर्णित हैं। न परखने पर उनकी क्षति है, विश्व की क्षति है। पेट्रोल अरब का है, अतः हम उसको नहीं लेंगे, तो क्षति किसकी होगी? पेट्रोल की नहीं, अपनी ही।

फिर याद दिला देना ज़रूरी है कि क, प आदि रूपों में वैज्ञानिकता नहीं है। वे काफ़, पे और के, पी, जैसे ही रूप रख सकते हैं, किन्तु लिपि में 'अनुबन्ध प्रथम' में ऊपर दिये हुए गुणों और क्रम को अवश्य ग्रहण करें। और यदि एक बनी-बनाई चीज़ को ग्रहण करके सार्वभौम सम्पर्क में समानता और सरलता के समर्थक हों, तो 'नागरी लिपि' के क्रम को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर, ग़ैर न समझकर, मौजूदा रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। वह भारत की बपौती नहीं है। आज के मानव के पूर्वजों की वह सृष्टि है। इससे विश्व के मानव को परस्पर समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

नागरी लिपि में अनुपलब्ध विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश।

हर शुभ काम में कजी निकालनेवाले एक दूर की कौड़ी यह भी लाते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हैं कि "नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक होते हुए भी अपूर्ण है और अनेक स्वर-व्यंजनों को अपने में नहीं रखती। उनको कहाँ तक और कैसे समाविष्ट किया जाय ?" यह मात्र तिल का ताड़ है। मौजूदा कर्तव्य को टालना है।

अलबत्ता अन्य भाषाओं में कुछ व्यंजन ऐसे हैं जो नागरी में नहीं हैं— किन्तु अधिक नहीं। भारतीय भाषा उर्दू की क़ ख़ ग़ ज़ फ़, ये पाँच ध्वनियाँ तो बहुत समय से नागरी लिपि में प्रयुक्त हो रही हैं। दुःख है कि आज़ादी के बाद से राष्ट्रभाषा के पक्षधर ही उनको ग़ायब करने पर लगे हैं। इसी प्रकार मराठी ळ है। इनके अतिरिक्त अरबी, इब्रानी आदि के कुछ व्यञ्जन हैं, किन्तु उनको नागरी की दैनिक लिपि में अनिवार्यतः रखना आवश्यक नहीं। विशिष्ट भाषाई कार्यों में उन विशिष्ट भाषाई व्यंजनों को चिह्न देकर दरसाया जा सकता है।

तदर्थ अरबी लिपि का आदर्श सम्मुख।

और यह कोई नयी बात नहीं। नितान्त अपरिवर्तनशील कहे जाने वालों की लिपि 'अरबी' में केवल २८ अक्षर होते हैं। भाषा के मामले में वे भी अति उदार रहे। "अिल्म चीन (अर्थात् दूर से दूर) से भी लाओ"— यह पैग़म्बर का कथन है। जब ईरान में, फ़ारसी की नई ध्वनियों च, प, ग, आदि से सामना पड़ा तो उन्होंने उनको अरबी-पोशाक चे, पे, गाफ़ पहना दी। जब हिन्दोस्तान आये तो ट, ड, ड़ आदि से सामना पड़ने पर अरबी ही जामे में टे, डाल, ड़े आदि तैयार कर लिये। यहाँ तक कि सिन्धी में नागरी के सब महाप्राण और अनुनासिक, तथा सिन्धी के विशिष्ट अन्तःस्फुट अक्षरों को भी अरबी का लिबास पहना दिया गया। फिर 'नागरी' वाले तो औदार्य का दावा करते हैं, उनको परेशानी क्या है? और नागरी में भी तो परिवर्तन होते रहे हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में प्रयुक्त ळ को छोड़ चुके हैं और ड़, ढ़ आदि को अवर्गीय दशा में जोड़ चुके हैं। नागरी लिपि में कुछ ही व्यंजनों का अभाव है। उनमें से कुछ को स्थायी तौर पर और कुछ को अस्थायी प्रयोग के लिए गढ़ सकते हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने ऐसा बड़ी सरलता, सफलता और सुन्दरता से किया है।

स्वर और प्रयत्न (लहजा) का अन्तर।

अब रहे स्वर। जान लीजिए कि प्रमुख स्वर तीन ही हैं— अ, इ, उ; उनसे दीर्घ, संयुक्त (डिप्थांग) बनते हैं। अतिदीर्घ, प्लुत, लघु, अतिलघु आदि फिर अनेक हैं जो विश्व में अनेक रूपों में बोले जाते हैं। भारतीय वैदिक एवं संस्कृत व्याकरण में अनेक हैं। वे स्वतंत्र स्वर नहीं हैं, प्रयत्न हैं, लहजा हैं। वे सब न लिखे जा सकते हैं, न सब सर्वत्र बोले जा सकते हैं। डायाक्रिटिकल मार्क्स कोशों में छाप-छापकर चमत्कार भले ही दिखा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिया जाय, प्रयोग में तो "एक ही रूप में" अपने निजी देशों में भी नहीं बोले जाते। स्वर क्या, व्यंजन तक। एक शब्द "पहले" को लीजिए। सब जगह घूम आइए, देखिए उसका उच्चारण किन-किन प्रकार से होता है। एक बिहार प्रदेश को छोड़कर कहीं भी "पहले" का लेखानुरूप शुद्ध उच्चारण सुनने को नहीं मिलेगा। उसी भाँति पंजाबी, बंगाली, मद्रासी के अंग्रेज़ी के उद्भट विद्वान् अंग्रेज़ी में भाषण देते हैं—उनके लहजे (प्रयत्न) बिलकुल भिन्न होते हैं। फिर भी न उनका उपहास होता है, न अंग्रेज़ी भाषा का ह्रास।

शास्त्र पर व्यवहार की वरीयता।

शास्त्र और विज्ञान से हमको विरोध नहीं। उसकी रचना, शोध, परिमार्जन, देश-काल-पात्र के अनुसार करते रहिए, परन्तु व्यवहारिकता को अवरुद्ध मत कीजिए। खाद्यपदार्थ के तत्त्वों का गुण-दोष, परिमाण, संतुलन, न्यूनाधिक्य, और खानेवाले की शक्ति के साथ उनका समन्वय, यह सब स्तुत्य है, कीजिए। किन्तु ऐसा नहीं कि उस समीक्षा के पूर्ण होने तक कोई भूखा रहकर मर ही जाय। थाली रखी है, उसे भोजन करने दीजिए। आज सबसे ज़रूरी है राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का एक-दूसरे की ज्ञानराशि को समझने के लिए एक सम्पर्क लिपि की व्यापकता।

भुवन वाणी ट्रस्ट ने स्थायी और मुक़ामी तौर पर अनेक स्वर-व्यंजनों की सृष्टि की है। दक्षिणी भाषाओं में प्रयुक्त एकार तथा ओकार की ह्रस्व, दीर्घ मात्राएँ हम प्रयोग में ला रहे हैं। पढ़ने दीजिए, बढ़ने दीजिए। समस्त भाषाओं के ज्ञान-भण्डार को निजी क्षेत्रों से उठाकर धरातल तक नागरी लिपि के माध्यम से पहुँचाइए। नागरी लिपि मानव के पूर्वज की सृष्टि है, मानव मात्र की है। यहाँ से योरोप तक उसकी पहुँच है। यूरोपियों की लिपि-शैली नागरी थी। अक्षरों के रूप कुछ भी रहे हों। किन्हीं कारणों से सामीकुलों में भटककर अलफ़ा-बीटा के क्रम को थोड़े अन्तर के साथ अपना लिया। फिर पुराने संस्कारों से याद आया, तो स्वर-व्यंजन पृथक् माने। किन्तु उनके क्रम-स्थान जैसे के तैसे मिले-जुले रहे। सामीकुल की भाषाओं ने भी प्रमुख स्वर तीन ही माने हैं, ज़बर-ज़ेर-पेश (अ इ उ)। ै और ौ का उच्चारण अरबी, संस्कृत, अवधी और अपभ्रंश का एक जैसा है— (अई, अऊ)। किन्तु खड़ी बोली व उर्दू के अै, और औ, ऐनक, औरत जैसे। यह स्वरों की भिन्नता नहीं है, वरन् लहजा (प्रयत्न) की भिन्नता है।

पूर्ण वैज्ञानिक कोई वस्तु मनुष्य के पल्ले नहीं पड़ सकती है। "पूर्ण विज्ञान" भगवान् का नाम है। सा-रे-ग-म-प-ध-नी ये सात स्वर; उनमें मध्य, मन्द, तार; कुछ में तीव्र, कोमल—बस इतने में भारतीय संगीत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बँधा है। उनमें भी कुछ अदा नहीं हो सकते, अनुभूति मात्र हैं। किन्तु क्या इतने ही स्वर हैं? संगीत के स्वरों का इनके ही बीच में अनंत विभाजन हो सकता है। जैसे अणु से परमाणु का, और उसमें भी आगे। किन्तु शास्त्र एक वस्तु है, व्यवहार दूसरी। व्यवहार में उपर्युक्त षडज से निषाद तक को पकड़ में लाकर संगीत क़ायम है, क्या उसको रोककर इनके मध्य के स्वरों को पहले तलाश कर लिया जाय? तब तक संगीत को रोका जाय, क्योंकि वह पूर्ण नहीं है। क्या कभी वह पूर्ण होगा? पूर्ण तो ब्रह्म ही है। "बेस्ट् इज़् द ग्रेटेस्ट् एनिमी ऑफ़् गुड्।" (Best is the greatest enemy of Good.) इसलिए शग़्ल और शोब्दों की आड़ न ली जाय। नागरी लिपि पर्याप्त सक्षम है।

विश्व-व्यापकता के संदर्भ में नागरी लिपि के स्वरों का रूप।

लिखने के भेद— यदि नागरी को हिन्दी क्षेत्र की ही लिपि बनाये रखना है तो इ, उ, ए, ऐ, लिखने के अपने पुरानेपन के मोह में मुग्ध रहिए। और यदि उसे राष्ट्रलिपि अथवा विश्व तक में, यहाँ तक कि सामीकुल में भी आसानी से ग्राह्य बनाना चाहते हैं तो अि, अु, अे, अै लिखिए। किन्तु कोई मजबूर नहीं करता। विनोबा जी ने भी इसका आग्रह नहीं रखा। आकार और रूप का मोह व्यर्थ है। पुराने ब्राह्मी-शिलालेखों को देखिए। आपके मौजूदा रूप वहाँ जैसे के तैसे कहाँ हैं?

आज क्या करना है?

सार यह कि हुज्जत कम, काम होना चाहिए। शास्त्र पर व्यवहार प्रबल है। समय बड़ा बलवान है, वह आवश्यकतानुसार ढलाई कर देता है। हिन्दी-क्षेत्र में ही घूम-घूमकर प्रतिमा-अनावरण, हिन्दी का महिमा-गान, अनुवादों की धूम, अमुक भाषा की हिन्दी को यह देन, अमुक भाषा में हिन्दी की यह छाप— यह सब दिशाविहीनता, क़िलेबन्दी और अभियान त्यागकर नागरी लिपि में विश्व का साहित्य लाइए। टूटी-फूटी ही सही, हिन्दी बोलना भी— (ही नहीं) बल्कि "भी" बोलने का अभ्यास कीजिए। लिपि और भाषा की सार्थकता होगी। मानवमात्र का कल्याण होगा।

—नन्दकुमार अवस्थी (पद्मश्री)
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमरभारती सलिल-मञ्जु की, 'तमिळ' सुपावन धारा।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

ग्रन्थ सम्पूर्ण

अभी कल की बात है, जब आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस भगीरथ-कार्य को हाथ में लिया और प्रतिकूल स्वास्थ्य में भी, लगभग ५००० पृष्ठ का यह वृहत् संस्करण सम्पूर्ण कर दिया। वर्ष १९८० के आरम्भ में कम्ब रामायण का बालकाण्ड, ६६० पृष्ठों में छपकर, राष्ट्र के सम्मुख अवतीर्ण हुआ था। वर्ष-समाप्ति से पहले ही अयोध्या-अरण्यकाण्ड की दूसरी जिल्द १०२४ पृष्ठों में छपकर तैयार हुई। सन् ८१ के आरम्भ में ही किष्किन्धा-सुन्दर की तीसरी वृहद् जिल्द १०१६ पृष्ठों में प्रकाशित हो गयी। वर्ष ८१-८२ में युद्धकाण्ड की प्रथम जिल्द (पूर्वार्ध) १०१६ पृष्ठों में सम्पूर्ण होकर आपके सम्मुख आ चुकी है। और आज, युद्धकाण्ड की दूसरी जिल्द (उत्तरार्ध) भी आपके सामने प्रस्तुत है। लगभग ३-४ वर्षों में ही इस प्रकार कम्ब रामायण का महाकाव्य पाँच खण्डों में नागरी-जगत में सम्पूर्ण कलाओं-सहित अवतरित हो गया। इस आशातीत उपलब्धि के लिए भगवति वाणी को हम बारम्बार नमन करते हैं।

इस तमिळ-भागीरथी के भगीरथ ?

तमिळ की अलौकिक लिपि एवं भाषा, और उसके प्राचीन महाकाव्य कम्ब रामायण के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण की गढ़ाई-जड़ाई कितनी जटिल है, यह पाठकों से अब ओझल नहीं। फिर भी, विद्वान् अनुवादक का अथक परिश्रम और ट्रस्ट के विद्वानों तथा शिल्पी कलाकारों का श्रम एवं ट्रस्ट के पवित्र कार्य के प्रति उनकी लगन और समर्पित मनोवृत्ति —इस बल पर ही हम इस त्वरा गति से कार्य को सम्पन्न करने में सफल हो सके हैं। इसलिए यह कथन उत्तरोत्तर चरितार्थ हो रहा है कि श्री शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये। श्री शेषाद्रि ही वे भगीरथ हैं, जिनकी विद्वत्ता, निष्ठा और अथक एवं अहर्निश श्रम की बदौलत अखिल भारत में आज यह नागरी-सलिला "तमिळगंगा" प्रवहमान है।

प्रो० ति० शेषाद्रि का परिचय

इन भगीरथ आचार्य प्रो० ति० शेषाद्रि का जन्म, तमिळनाडु में तेंजाउर ज़िला, तहसील नागपट्टणम् के कोळैयूर ग्राम में १४-६-१९१६ ई० को हुआ। गाँव में कक्षा ५ तक शिक्षा प्राप्त कर, नागपट्टणम् में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नेशनल हाई स्कूल से सन् १९३३ ई० में एस्० एस्० एल्० सी०, पश्चात् प्रशिक्षित (ट्रेण्ड) होकर अध्यापन-कार्य में लगे। कुछ ही समय बाद, राष्ट्र के सौभाग्य से वे राष्ट्रभाषा की सेवा में लग गये। हिन्दी प्रचार सभा से प्रचारक कोर्स, और निजी तौर पर मद्रास विश्वविद्यालय से 'हिन्दी-विद्वान' की उपाधि प्राप्त की। बी० ओ० एल० करने के उपरांत एम० ए० में निष्णात होकर, अध्यापक एवं प्रधानाध्यापक रहकर शिक्षा, विशेष रूप से राष्ट्रभाषा की शिक्षा एवं प्रचार में रत रहे। सन् १९४७ ई० में मदुरै कालेज में प्राध्यापक एवं आचार्य पद को सुशोभित किया। १९७६ ई० तदनन्तर में सेवानिवृत्त होकर, ६० वर्ष की आयु से पूर्णरूपेण राष्ट्रभाषा के प्रचार हेतु अर्पित हो गये। १९७९-८० में हिन्दी प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र में प्राचार्य, और १९८१ से असेफ़ा प्रशिक्षण केन्द्र में प्रिंसिपल रूप में विद्यमान हैं।

मध्यम परिवार में संघर्षशील जीवन बिताते हुए, आंध्र, केरल तथा मद्रास की परीक्षाओं के परीक्षक, मद्रास विश्वविद्यालय की अकेडेमिक कौन्सिल के सदस्य, और सम्प्रति मदुरै कामराज वि० वि० की अकेडेमिक कौन्सिल के, महामहिल राज्यपाल द्वारा मनोनीत, सदस्य हैं।

गांधीदर्शन के सक्रिय विचारक एवं लेखक, स्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज के परमभक्त एवं उनके कई ग्रन्थों के अनुवादक तथा अनगिनत कहानियों, पत्र-पत्रिकाओं में लेख— यह सब उनकी आजीवन की दिनचर्या है।

और सर्वोपरि, कम्ब रामायण का लगभग ५००० पृष्ठों का तमिळ ग्रन्थ— लेखन एवं उच्चारण पद्धति पर नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय, पदच्छेद और हिन्दी भावानुवाद ही वह भगीरथ-कार्य है, जिसके वे 'वर्तमान-भगीरथ' हैं। प्रो० शेषाद्रि "भुवन वाणी ट्रस्ट" के आजीवन न्यासी हैं। उनके स्वस्थ शतायु होने की कामना करता हूँ।

तमिळ का प्राचीन और विशाल महाकाव्य 'कम्बरामायण' अब केवल तमिळ-जन तक सीमित नहीं है। वह अब न केवल तमिळ प्रदेश, वरन् संपूर्ण राष्ट्र तथा हिन्दी-जगत की सम्पत्ति बन चुका है। तमिळ की वर्णमाला, उनके लेखन-उच्चारण में भेद की जटिलता को प्रत्येक खण्ड में पाठकों की सुविधा के लिए दे दिया गया है। प्रथम चार खण्डों में, विद्वान अनुवादक ने व्याकरण का एक धारावाहिक प्रकरण दिया है। कम्ब रामायण के पाँचों खण्डों पर प्रकाशकीय वक्तव्यों एवं विद्वानों से उपलब्ध प्रशस्तियों का सार इस अन्तिम खण्ड में पुनः दे देना पाठकों को रुचिकर होगा:—

बालकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् उद्देश्य; १९४७ ई०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

से अकिञ्चन् की साधना; १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना; तब से अब तक सभी भारतीय भाषाओं के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरणों की सम्पूर्ति; विदेशी भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण पर भी काम आरम्भ; नागरी लिपि में अप्राप्य अन्य भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों (स्वर-व्यञ्जनों) के सिर्जन से राष्ट्रलिपि का श्रृंगार; विशेष रूप से तमिळ लिपि की जटिलता; हिन्दी रूपान्तरकार वयोवृद्ध किन्तु अतिकर्मठ विद्वान् आचार्य ति० शेषाद्रि का हमारे पुनीत उद्देश्य की पूर्ति में योगदान —'बालकाण्ड' की भूमिका में इन सबकी चर्चा है। तमिळ ही नहीं, विश्व की सभी लिपियों और भाषाओं के पीछे, देर-सबेर, एक दिन एक ही मूलोद्गम के मत की ओर संकेत भी किया गया है।

बालकाण्ड में विद्वानों के प्राक्कथन

आरम्भ में ही श्रीस्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का सोल्लास आशीर्वाद, मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० एस्० शंकर राजू नायडू; कम्बन्चरण-रेणु श्री सा० गणेशन्; तमिळनाडु के चीफ़ जस्टिस् श्री एम्० एम्० स्माइल; जस्टिस् श्री महाराजन; श्री के० सन्थानम् आदि के प्राक्कथन। और सर्वोपरि महर्षि कम्बर् का शोधपूर्ण जीवनचरित्र।

टी० के० सी०

* कम्ब रामायण के अनेक पदों में, * यह चिह्न मुद्रित है। कम्ब रामायण का एक संस्करण टी० के० चिदम्बरनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। उनके मत से ये चिह्नित केवल १५१० पद मात्र ही कम्ब की मौलिक रचना हैं। शेष पद प्रक्षिप्त हैं, कम्बन द्वारा रचित नहीं। अधिकांश विद्वान उनके इस मत से सहमत नहीं हैं।

बालकाण्ड पर प्रतिक्रिया

जनता का उद्घोष जनार्दन का उद्घोष है। आवाज़ए ख़ल्क़, नक़्क़ारए ख़ुदा! चारों ओर से इस प्रयास को प्रशंसा प्राप्त हुई। उत्तर-दक्षिण, हिन्दी-अहिन्दी, ये भ्रान्तियाँ उड़ते शुष्क-श्वेत बादलों के समान विलुप्त हो रही हैं। जोश की एक लहर आई। विशेष रूप से तमिळनाडु में ग्रन्थ और ग्रन्थकार का स्थान-स्थान पर स्वागत एवं उस समय के महामहिम राज्यपाल श्री प्रभुदास बी० पटवारी द्वारा विमोचन; तमिळनाडु के मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं में न केवल 'कम्ब', वरन् सभी भाषाओं पर ट्रस्ट के कार्यों की सराहना —ऐसा हुआ जन-मानस में आलोडन!

अयोध्या-अरण्यकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

श्री प्रभुदास बी० पटवारी तथा दक्षिण में हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के गांधीयुगीन आदिम प्रवर्तक बिहारनिवासी श्रीअवधनन्दन ने इस महत्-कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रमुख राष्ट्रभाषा-सेवी श्री शौरिराजन ने एक लम्बी भूमिका में "उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमवद्-दक्षिणम् च यत्। वर्षं यत् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा।" का स्मरण दिलाकर राष्ट्रीय एकात्मीयता की छवि को निखारा है। गांधीयुग से निरन्तर राष्ट्रसेवी, तमिळनाडु के जाने-माने महापुरुष श्री ना० म० र० सुब्बरामन ने तो प्रस्तुत भाषाई-सेतुबन्धन पर अपने वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हज़ार रुपया भी दान-स्वरूप अर्पण किया। एक्सप्रेस परिवार की तमिळनाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'ग्राम-राज्यम्' आदि ने बड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मंदिर' के स्वरूप की चर्चा की है। अयोध्या-अरण्यकाण्ड की भूमिका में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय खण्ड) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

इस खण्ड में, विद्वान् अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार आचार्य ति० शेषाद्रि के अभिनन्दन का समग्र वर्णन पृष्ठ ९-११ पर विद्यमान है। २२ मार्च, सन् १९८१ के दिन, कम्बन के समाधिस्थल पर प्रत्येक वर्ष मनायी जानेवाली कम्ब जयन्ती के अवसर पर, 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित कम्ब रामायण के नागरी संस्करण का समादर और चर्चा दक्षिणाञ्चल का विषय बनी।

इस सुअवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्राचार्य डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने हिन्दी संस्करण की प्रशंसा करते हुए हिन्दी के सम्बन्ध में यह भी कहा है कि "हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, ने–का–के–की आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुगम नहीं"।

हिन्दी के पक्षधरों को उनके कथन पर ग़ौर करना चाहिए। डॉ० शंकर नायडू आरम्भ से ही हिन्दी भाषा और हमारे कार्य के प्रशंसक हैं। उन पर हिन्दी-विरोधी होने के आरोप की गुंजाइश नहीं। वे हिन्दी के विद्वान् भी हैं। हमको समझना चाहिए कि हिन्दी जैसी सरल भाषा भी, नवीन और अनभ्यस्त होने के कारण, अहिन्दीभाषी को अटपटी और कठिन प्रतीत होती है। यदि हिन्दीभाषी पर तमिळ-जैसी जटिल भाषा का भार आ पड़े तो उनको कितनी अधिक कठिनाई प्रतीत होगी? इसलिए अहिन्दीभाषियों की कठिनाई के प्रति हमें उदार होना चाहिए।

उसी प्रकार तमिळभाषियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि हिन्दी की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वर्णमाला तो कठिन नहीं, वरन् उनकी सहायक है। तमिऴ में, वे एक ही अक्षर लिखकर स्थान-भेद से कई ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। यह जटिलता नागरी लिपि में स्वतः दूर हो जाती है। जिसके फलस्वरूप तमिऴभाषी और हिन्दीभाषी को परस्पर एक-दूसरे की भाषा का लिखना-पढ़ना सुकर हो जाता है। इसी सुविधा के लिए किसी समय तमिऴ के लिबास में 'ग्रन्थ लिपि' की रचना हुई थी, जिसको कालान्तर में चढ़ा-ऊपरी ने निगल लिया। अन्यथा आज के युग में वह, राष्ट्र की भाषा-समस्या में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती।

युद्धकाण्ड (पूर्वार्ध) में अनुवादकीय एवं प्रकाशकीय का सार

आचार्य ति० शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है। अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिऴभाषा और तमिऴकाव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिऴ-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी। प्रथम तीन जिल्दों के तारतम्य में, युद्धकाण्ड पूर्वार्ध में व्याकरण प्रकरण समाप्त हुआ है। विशेष ज्ञान के लिए जिज्ञासु पाठकों को व्याकरण का विशेष अध्ययन करना श्रेयस्कर है।

प्रस्तुत युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध) में ग्रन्थ सम्पूर्ण

सर्वप्रथम स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज ने अपने योग्यतम शिष्य श्री शेषाद्रि के हाथों यह महत्-कार्य सम्पादित होने की भविष्यवाणी की थी। बालकाण्ड में उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ और अब इस अंतिम खण्ड में उन्होंने अपने शिष्य की सफल साधना के उपलक्ष में 'जयघोष' के साथ साधुवाद दिया है। यही नहीं, कम्बन-काव्य के नागरी-अवतरण की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए समग्र भारत के समस्रोत में प्रवाहित होने का निर्देश दिया है।

दूसरा उल्लेखनीय है मदुरै-कामराज विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर अपरिमित विद्वान डॉ० वी० एस्पी० माणिक्कम् का प्राक्कथन। उन्होंने न केवल उत्तर-दक्षिण, वरन् सभी भाषाई क्षेत्रों के भेद-विभेद के प्रपञ्च को त्यागकर राष्ट्रीय एकीकरण के लिए युवावर्ग का आह्वान किया है। कम्बन की अलौकिक प्रतिभा और उनके ग्रन्थ कम्ब रामायण की नाना दृष्टियों से मौलिकता पर विशद व्याख्या करते हुए, कल्पनातीत एक अद्भुत प्रसंग उपस्थित कर दिया है। अब तक महर्षि अगस्त्य उत्तर-दक्षिण के सेतु माने जाते थे। डॉ० माणिक्कम् ने तमिऴ के अति प्राचीत कवितासंग्रह "पुरनानूऱु" का उद्धरण देते हुए साधार-सप्रमाण एक तथ्य को प्रकाश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिया है कि "महर्षि वाल्मीकि" द्रविड़ देश के निवासी थे। फलस्वरूप उनकी मातृभूमि एवं उनकी रचना आदिकाव्य "वाल्मीकि रामायण" की सर्वव्यापकता, इन दोनों से उत्तर-दक्षिण का पुरातन का एकत्व एवं शोधकर्ता विद्वानों के लिए एक नवीन शोध-विषय की सृष्टि हुई है। डॉ० माणिक्कम् ने विद्वान शेषाद्रि के अथक श्रम और भुवन वाणी ट्रस्ट के विविध भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण के कार्य की भूरि-भूरि सराहना की है।

विश्वनगारी लिपि

इसी खण्ड में पृष्ठ ११-१६ में "विश्वनागरी लिपि" पर अकिञ्चन् द्वारा प्रस्तुत एक निबन्ध पठनीय है। उससे सहमत उदार विद्वानों तथा श्रीमानों से सहयोग एवं सहकार की हम अपेक्षा रखते हैं।

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का ८४० पृष्ठों का युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध) पञ्चम (अन्तिम) खण्ड है। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान् और उत्तर प्रदेश शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत "समापन ग्रन्थ" के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष उनसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के पदचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ-रूपी शिला पर शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। केन्द्रीय राजभाषा विभाग (गृहमंत्रालय) और शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को इस ग्रन्थ के प्रकाशन का पूर्ण श्रेय है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का प्रस्थापन, राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने, और सभी भारतीय भाषाओं को सारे राष्ट्र में प्रसारित करने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। आशा है सम्पूर्ण जगत् हमारे इस उपक्रम को "गिलहरी का सेतुबन्धन" मानकर सहकार और अनुग्रह प्रदान करता रहेगा।

—नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

दिवंगत मनीषी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिवंगत मनीषी

न्यायमूर्ति स्व० श्री एस्० महाराजन्

लोकप्रख्यात स्व० के० सन्थानम्

क्लेश का समाचार है कि ये शीर्षस्थ विद्वान आज हमारे बीच नहीं हैं। न्यायमूर्ति स्व० श्री एस० महाराजन्, स्व० श्री के० सन्थानम्; तथा स्व० श्री सा० गणेशन् कम्बन्-अडिप्पॉडि (कम्बन की चरणरेणु), जो "कम्बन् मणिमण्डपम्" के समीप ही कम्बन के चरणों में समाहित हो गये। बालकाण्ड में इनके वक्तव्य पठनीय हैं। उनकी परम शान्ति हेतु हम भगवान से प्रार्थना करते हैं।

—नन्दकुमार अवस्थी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कम्बन्-मणिमण्डपम्

तमिळनाडु में कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नाट्टरशन-कोट्टाई नामक स्थान में महर्षि कम्बन के समाधिस्थल पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन-अडिप्पोडि (कम्बन की चरणरेणु) श्री सा० गणेशन् द्वारा स्थापित "कम्बन् मणिमण्डपम्।"

कम्बन्-चरणरेणु स्व० श्री सा० गणेशन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सानुवाद लिप्यन्तरणकार—

आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनुवादक की अवतरणिका

(अन्तिम वक्तव्य)

सहृदय, साहित्यमर्मज्ञ, स्नेही तथा विज्ञ पाठकगण !

अब ग्रंथ समाप्त हो गया है। कार्य का अंजाम हो गया है। प्रभु की कृपा का क्या कहा जाय ?

अब स्वभावतः मेरा मन कार्यभार-निर्वाह की सफलता से उत्पन्न निवृति की राहत की साँस लेता है। इसमें न तो गर्वोत्कट आनंद है, न अतृप्ति का रञ्चमात्र क्लेश। जो है सो उनका है ! और उन्हीं को समर्पित है। उनकी सृष्टि में भी गुण-दोष-मय संसार पाया जाता है और वे उसी संसार में रमते हैं। वे चाहें तो मेरे अवगुणों को गुणों में परिवर्तित कर सकते हैं— कम से कम गुणधारा में छिपा दे सकते हैं। वे जो चाहें, करें; और भविष्य यह तमाशा देखे-- मैं कौन होता हूँ कि उनकी लीला में दखल देना चाहूँ या दे सकूँ ?

अब थोड़ा मुड़कर देखता हूँ। पाँच साल बीत गये हैं, मुझे इस शुभ कार्य में हाथ लगाये। इन पाँच सालों में मेरी मनोनौका किन-किन भाव-लहरों में चल चुकी है ? यह स्मरण करना एक ओर थकावट का वाईस बनता है, तो दूसरी ओर एक संयत आनंद के अनुभव का।

अब आभार मानूँ तो किन-किन का ? सबसे परले महात्मा स्वामी चिन्मयानंद जी महाराज का स्मरण हो आता है, जिनकी निराकार, अप्रत्यक्ष तथा सूक्ष्म प्रेरणा इसकी नींव में है। उस प्रेरणा में यह साफ़ इंगित तो नहीं था कि कौन सा पवित्र कार्य मेरे ज़िम्मे आ रहा है, पर साफ़ संकेत था कि बीमार पड़ने का यह समय नहीं; कोई महान कार्य, महान सेवा करने को तैयार रहो ! उनकी कृपा का, आभार-प्रदर्शन के मेरे अल्प शब्दों में, कियत् ही अंश में ही सही, बदला चुकाया जा सकता है ? फिर आयी साकार प्रेरणा (या प्रत्यक्ष आज्ञा कहिए) हमारे वन्दनीय भाषा-तपस्वी श्रीबर नंदकुमार अवस्थी जी की। इन दोनों का प्रभु श्रीराम, और उनके भक्त कंबन की साभार कृपा लेकर अभिनंदन करता हूँ। इन दोनों के संबंध में अधिक बातें कहना मेरी श्रद्धा की पवित्रता को कलुषित करना होगा। अतः उन दोनों को प्रणाम करके आगे बढ़ता हूँ।

अगर काल का संकोच तथा पृष्ठों के अधिक हो जाने का डर नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रहता तो निम्नलिखित सज्जनों में एक-एक का अनेक वाक्यों में आभार लिखना चाहूँगा। पर अब उन विभूतियों का एक साथ नाम लेता हूँ और अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ।

श्री प्रभुदास बी पटवारी
न्यायमूर्ति श्री एम्० एम्० इस्माइल
डॉ० वी० एस्० पी० माणिक्कम्
श्री ना० म० रा० सुब्बरामन
श्री अवधनंदन
डॉ० शंकरराजु नायुडु
श्री रा० शौरिराजन
श्री के० संतानम जी
जस्टिस महाराजन
कम्बनडिप्पॉडि शा० गणेशन

इन्होंने बड़ी कृपा करके अपने-अपने संस्तुति के वाक्यों से हमें गौरव दिलाया है।

(इधर शोक की बात है कि इनमें तीन— श्री संतानम जी, न्यायमूर्ति श्री महाराजन तथा कम्बन-अडिप्पॉडि नहीं रहे। इनके निधन से सारा साहित्य-संसार अनाथ-सा हो गया है।)

इनके अलावा विशेष रूप से मैं अपनी दो रिश्तेदारिन तरुणियों की चर्चा करना चाहता हूँ, जिसके लिए स्नेही पाठक मुझे क्षमा करें।

श्रीमती जया राजन्

इन्होंने जो सहायता दी उसके मूल्य का सही आँकन तभी हो सकता है जब मेरी स्वास्थ्य-स्थिति का साफ़ भान हो। ग्रंथ का काम चलते-चलते ऐसा समय आ गया जब दृष्टिरोग तथा गिरे हुए स्वास्थ्य ने इतनी भयंकर हालत पैदा कर दी कि मुझे डर लगने लगा कि यह काम मेरे हाथों पूरा नहीं होगा; और यह विश्वास हो गया कि भगवान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ने कोई दूसरा व्यक्ति तैयार कर रखा है और समय आने पर उसको मेरे स्थान पर बिठा देंगे।

उस स्थिति में मेरे मन की लाचारी से उत्पन्न बेचैनी का विचार, असफलता तथा असमर्थता की भावना से उत्पन्न टीस तथा पछतावे का अनुभव, हे सहृदय पाठक ! आप कर सकते हैं। तब इन दोनों ने पद्यों की नक़ल उतार के मेरी सहायता क्या की— ग्रंथ-समापन को संभव बना दिया।

श्रीमती ऊषा चंद्रू

पहली श्रीमती जया राजन् मेरी सौभाग्यवती कन्या है और दूसरी श्रीमती ऊषा चंद्रू मेरी साली की कन्या है। ये दोनों चिरायु तथा सौभाग्य-शालिनी रहें —भगवान से मेरी यह विनीत प्रार्थना है।

अन्ततः श्री अवस्थी जी के सुपुत्र श्री विनयकुमार अवस्थी, उनके परिवार के सदस्य, उनके प्रेस के कार्यकर्ता विद्वानों एवं शिल्पियों —सबको सस्नेह नमस्कार करता हूँ। सबके प्रति मेरी शुभकामनाएँ हैं।

अब मैं मौन हो जाता हूँ।

99, भारती रोड,
मदुरै— 62 011
25.9.1982

विनीत
ति० शेषाद्रि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त (तमिऴ) वर्णमाला का नागरी-रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ऱ' रूप निर्धारित किया था।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १९८०की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, 'ऱ' के स्थान पर 'ऴ' ही को ग्रहण किया गया।

तमिऴ - देवनागरी वर्णमाला

अ अ क	आ का	इ कि	ई की
उ उ कु	ऊ कू	ऎ कॆ	ए के
ऐ कै	ऒ ओ को	ओ को	औ कौ
ஃ अक्			
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ,ळ	ள ळ
ற ऱ,ऱ	ன ऩ,ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

☞तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं। तमिऴ में ए और ओ के ह्रस्व और दीर्घ स्वरों (मात्राओं) को भिन्न रूप में लिखा जाता है। नागरी लिपि में उनका रूप े ी; े ो हैं। देखिए पृष्ठ ३०-३२ पर।

—नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमिऴ-उच्चारण—कुछ तत्त्व

[तमिऴ के व्यञ्जनों में स्थानभेद से, लेखन तथा उच्चारण में अन्तर पड़ जाता है। नागरी लिपि के माध्यम से तमिऴ के पठन में यह एक समस्या है। कम्ब रामायण (बालकाण्ड) की भूमिका में, आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस सम्बन्ध में पृष्ठ २२-२४ में एक विवरण दिया है। पाठकों को तमिऴ के लेखन और उच्चारण में सुविधा प्रदान करने के लिए श्री शेषाद्रि का वह विवरण 'कम्ब रामायण' के प्रत्येक खण्ड में उद्धृत कर देना समुचित होगा:—]

ध्वनि-समूह—स्वर (तमिऴ में इनको प्राणाक्षर कहते हैं।) मूल १२ है। लब्धलिपि ह्रस्व:—अ इ उ अॆ (ए का ह्रस्व) अॊ (ओ का ह्रस्व)—1मात्रा

दीर्घ:—आ ई ऊ ए ऐ ओ औ	—	2 मात्राएँ
"आय्दम" (उपस्वर)—∴	—	½ मात्रा
अलब्धलिपि ह्रस्व—ऐ और औ	—	1 मात्रा
ह्रस्व—उ, ह्रस्व इ	—	½ मात्रा
ह्रस्व—'आय्दम'	—	¼ मात्रा

नोट:—आय्दम या उपस्वर संस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण 'अह्क्' है। इस लिप्यंतरण में दोनों संकेतों (∴ और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक ∴ पाने पर विसर्गवत् पढ़ लें और : पाने पर ∴ लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यंतरण में बालकाण्ड भर में और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों में अ या अय् लिखा गया है। इसमें एक त्रुटि रह जाती है कि तमिऴ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कहीं-कहीं संधि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियों के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अत: बाद के पदों में ऐ कॆ···आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेंगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरम्भ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी।

व्यंजन (शरीराक्षर) मूल १८ हैं	
लब्धलिपि वल्लॆऴुत्तु (परुष वर्ग)	क च ट त प ऱ
मॆल्लॆऴुत्तु —कोमल या अनुनासिक वर्ग	ङ ञ ण न म ऩ
इडैयॆऴुत्तु (मद्धिम) वर्ग	य र ल व ऴ ळ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अलब्धलिपि : ह, ग, ज, ड, द, ब। ह और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है। वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है। स्थान-भेद से वह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाती है। बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं। लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं।

नोट—तमिऴ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं। हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है। हलंत व्यंजन से शब्द आरम्भ नहीं होता।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दारम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद 'क' ही रह जाता है; जैसे— कण्डु, पाक्कु, उङ्गट्कु, कऱ्क।
दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है; जैसे— काहम्।
ङ् के बाद 'ग' बन जाता है। उदा : चङ्कम्— शङ्गम्।

च— द्वित्व में और ऱ्, ट् के बाद च ही रहता। उदाहरण : अच्चु, पॉऱ्चटै, वॅट्चि। अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है। जैसे पा शम्, शदम् आदि। (अपवाद—संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है; जैसे— कोसलै।)
ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण : मञ्चम्— मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है।

ट— शब्द के आरम्भ में नहीं आता। द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण : पडम्, पण्डम्।

त— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है; जैसे— तयरदन, शत्तम्, शक्ति। अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है— शन्दम्, परदन्, मोदल्।

प— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद यह 'प' ही है। उदा : पडम्, कप्पल्, पॅट्पु, पॉऱ्पु। अन्यत्र वह 'ब' के समान ध्वनित है।

विशेष : न् आदि के बाद यह कभी-कभी प, ब दोनों से पृथक्, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकालता है। भेद नगण्य है। बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है।

न— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है।

ऩ— यह भी दन्त्य है। पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है। इन दोनों में उच्चारण-भेद नहीं के बराबर है। पर शब्द के आरम्भ में ऩ नहीं आता। न शब्द के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मध्य में नहीं आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्यम ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ़ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारम्भ में नहीं आता। तमिळ में अ, इ या उ मिलाकर कहते हैं; जैसे— अरङ्गन्, इरामन्, उरुत्तिरन्।

ऱ— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारम्भ में नहीं आता। जब इसका द्वित्व होता है, तब उच्चारण कुछ ट्र के समान हो जाता है। दोनों र और ऱ मूर्धन्य ही हैं पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नहीं जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण : अरम्— रेती; अऱम्—धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ऴ— यह ऱ और ऩ के समान तमिळ की विशिष्ट ध्वनि है। ष और ळ के उच्चारण स्थानों के मध्य लुंठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तब यह ध्वनि निकाली जा सकती है। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रन्थाक्षर का ईजाद हुआ। पर वे ठेठ संस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते हैं।

विशेष ध्यानयोग्य— कहीं-कहीं इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे; जैसे-- निन्पॅरुञ् को निन्बॅरुञ् पढ़ना चाहिए, पर निन्पॅरुञ् पाया जायगा, तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर ज़ोर देने के अक्षर मूल रूप में उच्चरित हैं।

आख़िर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही बना है। अन्यथा कोई निर्धारित नहीं है। अतः इसमें कोई बड़ी ग़लती हो जाने की सम्भावना नहीं। हाँ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखण्ड (आगे देखें) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलाकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिळ में छन्द-रचना की विशेषता है। तमिळ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते हैं और छंद-रचना उसे कहीं भी खण्डित कर देती है। तब पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत् मानना पड़ेगा। तब 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सब नियम पढ़ते वक़्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विषय-सूची

युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध)

मुखपृष्ठ, प्रशस्तियाँ, प्रकाशकीय, विश्वनागरी लिपि, अनुवादकीय, तमिळ-देवनागरी वर्णमाला, तमिळ-उच्चारण-विधि विषय-सूची आदि 1-40

21 ब्रह्मास्त्र पटल 41-137

मकराक्ष आदि की मृत्यु सुनकर रावण का मेघनाद को बुलाना; इन्द्रजित् का युद्ध पर जाना; क्रौंचव्यूह और धनु को टंकृत करना; वानरों का भय से काँपना; श्रीराम-लक्ष्मण का राक्षस-सेना के साथ लड़ना; इन्द्रजित् का श्रीराम-लक्ष्मण के युद्ध-चातुर्य से प्रभावित होना; राक्षसों का डरना और इन्द्रजित् का उन्हें डाँटकर राम-लक्ष्मण पर चढ़ आना; लक्ष्मण का सौगन्द खाना; लक्ष्मण का युद्ध करने के लिए उठ आना; राक्षस-सेना का नाश; इन्द्रजित् तथा राम-लक्ष्मण का संवाद; लक्ष्मण-इन्द्रजित् की परस्पर सौगन्द; इन्द्रजित् का भीषण युद्ध करना; लक्ष्मण का जीतना और श्रीराम के कथन से वानरों का जय-जयकार; इन्द्रजित् का आकाश में छिप जाना; लक्ष्मण को ब्रह्मास्त्र चलाने से श्रीराम का रोकना; इन्द्रजित् के छिपने का आशय न जानकर श्रीराम और लक्ष्मण का युद्ध रोकना; श्रीराम का विभीषण को सेना के लिए भोजन लाने भेजना; लक्ष्मण को छोड़कर श्रीराम का अस्त्र-पूजार्थ चलना; इन्द्रजित् का अपने पिता से ब्रह्मास्त्र चलाने सम्बन्धी सलाह करना; रावण का महोदर को वानरों को बहकाने के लिए भेजना; महोदर का बड़ी सेना के साथ जाना; राक्षस-वानर युद्ध; उनका मरकर देव बनना; सुग्रीव आदि का अलग-अलग राक्षस-सेना-मध्य फँस जाना; अकंप-हनुमान का युद्ध और अकंपन की मृत्यु; हनुमान का लक्ष्मण की खोज में जाना; हनुमान का लक्ष्मण से आ मिलना; लक्ष्मण का पाशुपतास्त्र छोड़कर माया-मोह को हटाना; महोदर का हट जाना और मोह से छूटकर वानरों का मिलना; दूतों का रावण से राक्षस-नाश का समाचार देना; रावण का मेघनाद को समाचार देने की आज्ञा देना; इन्द्रजित् का ब्रह्मास्त्र चलाने के पूर्वांग में यज्ञ करना; रावणि का आकाश में छिपकर ताक में रहना; महोदर का माया-युद्ध करना, जिसमें इन्द्रादि देव और अन्य ऋषि-मानव आदि दिखाई देते हैं; लक्ष्मण का हनुमान से संशय कहना; इन्द्रजित् का ब्रह्मास्त्र चलाना; वानरों का मरना; लक्ष्मण, हनुमान आदि का बेहोश होना; मरे वानरों का देव बनना और उनका देवलोक में स्वागत; इन्द्रजित् का रावण के पास जाकर युद्ध का समाचार देना; इन्द्रजित् और महोदर का अपने-अपने स्थान जाना; श्रीराम का अस्त्र-पूजा के बाद युद्धस्थल में आना; मरे हुए वानरों और बेहोश वीरों को देखकर श्रीराम का दुःख करना; लक्ष्मण को देखकर श्रीराम का विलाप करना; श्रीराम का निद्रामग्न होना; देवों का श्रीराम को सच्ची बात बताना; श्रीराम की बेहोशी; दूतों का रावण से श्रीराम की हालत कहना।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

22 सीता-युद्धस्थल-दर्शन पटल 137-150

रावण का नगर में समाचार फैलाने की आज्ञा देना; मरे हुए राक्षसों को समुद्र में डलवा देना; राक्षसियों का सीता को युद्धस्थल में ले जा दिखाना; सीताजी का विलाप करना; त्रिजटा का आश्वासन देना; सीताजी का धैर्य धारण करना।

23 ओषधि-पर्वत पटल 150-197

विभीषण का भोजन लेकर युद्धाजिर में आना; वानरों की स्थिति देखकर घबड़ाना; श्रीराम को बेहोश जानकर थोड़ा आश्वस्त होना; विभीषण को युद्धस्थल में घूमकर जीवित लोगों की खोज लगाना; हनुमान का होश में आना; जाम्बवान से जा मिलना; जाम्बवान का हनुमान से ओषधि पर्वत लाने को कहना; हनुमान का विराटरूप लेकर ओषधि लाने के लिए प्रस्थान करना; हनुमान के जाने का वर्णन; शिवजी का उमा से हनुमान की यात्रा का कारण बताना; हनुमान का त्रिदेवों की वन्दना करके आगे बढ़ना; ओषधि पर्वत को देखकर पालक देवताओं की अनुमति से उसे उखाड़ लेना; इधर श्रीराम का जागकर विभीषण से वृत्तांत पूछना; श्रीराम का फिर से विलापना और मरने की अपनी इच्छा बताना; जाम्बवान का धैर्य दिलाना; हनुमान का बड़े कोलाहल के साथ आ जाना; सबका जाग जाना; ब्रह्मास्त्र का श्रीराम की परिक्रमा करके यथास्थान चला जाना; श्रीराम का हनुमान को आलिंगन करना; जाम्बवान के कहने पर हनुमान का ओषधि पर्वत को यथास्थान पहुँचाना।

24 मद्यपान-केलि पटल 197-207

रावण का स्त्रियों की मस्त केलियों को देखना; अप्सराओं का नृत्य; मस्त स्त्रियों का वर्णन; उधर जागकर वानर-सेनाओं का नर्दन करना; नर्दन सुनकर स्त्रियों का डर से संकुचित होना; रावण का दूतों से समाचार जानकर मन्त्रणा-भवन में जाना।

25 मायासीता पटल 207-244

रावण का सबको समाचार देना; माल्यवान का उपदेश देना; रावण का डींग मारना; इन्द्रजित् का उत्तर देना; सुग्रीव का श्रीराम से लंका को जला डालने का उपाय बताना; रामबाण से गोपुर का गिरना; हनुमान का पश्चिमी द्वार पर इन्द्रजित् से मिलना; इन्द्रजित् का माया-सीता दिखाकर कहना कि मैं इसे मारनेवाला हूँ; हनुमान का इन्द्रजित् से प्रार्थना करना; इन्द्रजित् का माया-सीता का सिर काटकर अयोध्या की तरफ़ जाने की बात कहकर चला जाना; मारुति का मूर्च्छित हो जाना; इन्द्रजित् का निकुंभिला पहुँचना; हनुमान का जागकर रोना; हनुमान का श्रीराम से वृत्तांत बताना; श्रीराम का दुःख से मूर्च्छित हो जाना; विभीषण का संशय करना; श्रीराम को उपचार करके होश में लाना; लक्ष्मण का श्रीराम को सांत्वना देना; सुग्रीव का कथन; हनुमान का इन्द्रजित् का अयोध्या की तरफ़ जाने का संकल्प बताना और श्रीराम का दुःखी होना; उनका अयोध्या जाने का मंशा बताना और लक्ष्मण का रोकना; हनुमान का उन्हें ले जाने की बात कहना; विभीषण का अनुमान और कथन; विभीषण का भ्रमर के रूप में जाकर सीता का हाल जान आना।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

26 निकुंभिला-याग पटल 244-320

श्रीराम का विभीषण आदि की प्रशंसा करना; विभीषण का श्रीराम से लक्ष्मण को यज्ञ रोकने के लिए भेजने की प्रार्थना करना; श्रीराम का लक्ष्मण को आवश्यक उपदेश देना और अस्त्रादि का प्रदान करना; लक्ष्मण का युद्ध पर जाना; लक्ष्मण का वानरों के साथ निकुंभिला जाना; राक्षस-वानर युद्ध; लक्ष्मण का युद्ध करना; इन्द्रजित् के यज्ञ का नाश; इन्द्रजित् का क्रोध के साथ कथन; हनुमान का वीरकृत्य तथा वीर वचन; इन्द्रजित् का उत्तर में कथन; इन्द्रजित् का प्रचण्ड युद्धोपक्रम; देवों का घबड़ाना और सँभलना; लक्ष्मण-इन्द्रजित् युद्ध; लक्ष्मण का ब्रह्मास्त्र की उग्रता कम करना; शिवजी का देवों को श्रीराम-लक्ष्मण की सत्यस्थिति बताना; इन्द्रजित् के सारे अस्त्रों का नष्ट होना; विभीषण का भय और लक्ष्मण का धीरज देना; इन्द्रजित् का विभीषण की निंदा करना; विभीषण का उत्तर देना; विभीषण का इन्द्रजित् के सारथी को मार देना; इन्द्रजित् का रावण के पास जाना।

27 इन्द्रजित्-वध पटल 320-351

रावण-इन्द्रजित् का संभाषण; इन्द्रजित् का लक्ष्मण की प्रशंसा करना; रावण को सलाह देना; रावण का दंभ के साथ झिड़कना और स्वयं युद्ध में जाने को उद्यत होना; इन्द्रजित् का उसे रोककर स्वयं जाना; लक्ष्मण का सामना करना; इन्द्रजित्-लक्ष्मण युद्ध; परस्पर प्रशंसा; विभीषण का लक्ष्मण को सचेत करना; इन्द्रजित् का आकाश में छिपकर प्रस्तर-वर्षा कराना; लक्ष्मण का इन्द्रजित् के हाथ को काट देना; इन्द्रजित् का वीर वचन; लक्ष्मण का श्रीराम की शपथ खाकर अस्त्र चलाना और इन्द्रजित् का सिर कटकर मरना; राक्षसों का भाग जाना; देवताओं के वर से वानरों का जी उठना; अंगद का इन्द्रजित् का सिर उठाकर आगे-आगे चलना तथा हनुमान लक्ष्मण को उठाये हुए पीछे-पीछे जाना; श्रीराम का आनंद; श्रीराम का लक्ष्मण के व्रणों को स्पर्श करके दर्द दूर करना; श्रीराम का विभीषण की प्रशंसा करना।

28 रावण-शोक पटल 351-374

रावण का समाचार पाकर क्रुद्ध होना; फिर कलपना; रावण का युद्धस्थल में जाकर पुत्र को ढूँढ़ना; हाथ को देखना; दुःख की स्थिति; सिर न पाकर रोना; लाश लेकर लंका में आना; मंदोदरी का दुःख; उसका विलाप; रावण का सीता को काटने निकलना और महोदर का रोकना; इन्द्रजित् के शरीर को तैल-द्रोणी में रखना।

29 सेना-संदर्शन पटल 374-396

सेनाओं का आना और रावण को बताना; सेनाओं का वर्णन; रावण का सेनाओं को देखना और दूतों का विवरण देना; सेनाओं की शक्ति का बखान; सेना-नायकों का आकर रावण को नमस्कार करना; सेना-नायकों की हँसी और वह्नि का गम्भीर रूप से प्रश्न करना; माल्यवान का श्रीराम के पराक्रम का वर्णन करना; वह्नि का युद्ध की सलाह देना।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

30 मूल-बल-वध पटल 396-493

रावण का सेना-नायकों को राम-लक्ष्मण को मारने की हिदायत देकर भेजना; फिर मूलबल को पहले जाने की आज्ञा देना; चतुरंगिनी सेना-व्यूह का वर्णन; वानरों का भाग जाना; देवों का भय से शिवजी से प्रार्थना करना; शिवजी का सुरों को धैर्य दिलाना; श्रीराम के पूछने पर विभीषण का सेनाओं का वृत्तांत बताना; श्रीराम का अंगद से भागे हुए वानरों को बुला लाने को कहना; वानरयूथपों का अंगद से भागने का कारण बताना; अंगद का उन्हें समझाना; जाम्बवान का उत्तर; जाम्बवान की बात मानकर वानरयूथपों का लौट आना; श्रीराम का लक्ष्मण से मारुति के साथ रहकर वानरों की रक्षा करने की आज्ञा देना; श्रीराम का हनुमान को समझाना; विभीषण और सुग्रीव आदि का लक्ष्मण की सहायता में चलना; श्रीराम का युद्ध करना; श्रीराम के अस्त्र का कार्य; श्रीराम का अकेले ही सबका नाश कर देना; युद्धस्थल में रक्त, शवों आदि का वर्णन; वह्नि का श्रीराम की प्रशंसा करना; श्रीराम का सेना-नायकों के साथ युद्ध करना; देवों का शिवजी से प्रश्न करना और शिवजी का धैर्य दिलाना; श्रीराम के युद्ध का फिर वर्णन; उनका शरमंडप बनाना; वह्नि का राक्षसों से श्रीराम के साथ युद्ध करने को कहना; श्रीराम और बचे राक्षसों का युद्ध; मूलबल का नाश; आगत सेना के वीरों का आक्रमण; राक्षसों का नाश; आपस में लड़कर मरना; श्रीराम की धनुर्विद्या की महिमा; देवों का विस्मय; राक्षसों का नाश और भूमिदेवी की भारनिवृत्ति; देवों का स्तुति करना; श्रीराम का लक्ष्मण की ओर जाना; वानरों का धैर्य पाकर लौट आना।

31 शक्ति-धारण पटल 493-514

रावण का रथ पर आरोहण करके सेनाएँ लेकर जाना; वानरों का कोलाहल; वानर-राक्षस युद्ध; मरी सेना का वर्णन; मारुति और लक्ष्मण द्वारा राक्षसों का नाश; रावण का वानरों पर अस्त्र छोड़ना; लक्ष्मण-रावण युद्ध; रावण का विभीषण पर शक्ति छोड़ना; लक्ष्मण का अपने वक्ष पर उस शक्ति को झेल लेना; विभीषण का रावण के सारथी और अश्वों को मारना; रावण का लंका में चला जाना; विभीषण का आत्महत्या का प्रयत्न और जाम्बवान को रोकना; हनुमान का ओषधि लाकर लक्ष्मण को जिलाना; सबका श्रीराम के पास जाना; श्रीराम का लक्ष्मण की शरणागत-रक्षा के लिए प्रशंसा करना; श्रीराम का विश्रांति पाना।

32 वानर-युद्धभूमि-संदर्शन पटल 514-529

सुग्रीव और वानरों का श्रीराम के द्वारा मारे गये राक्षसों की बड़ाई देखकर विस्मय करना; श्रीराम का विभीषण को सुग्रीव के साथ युद्धक्षेत्र के संदर्शनार्थ भेजना; विभीषण का मरी हुई सेना का विवरण देना; वानरों का बीच में ही देखना छोड़कर श्रीराम के पास चला जाना।

33 रावण-युद्धक्षेत्र-संदर्शन पटल 529-540

लंका में रावण का संतोष के साथ रहना; सहायकों को दावत देने की आज्ञा देना; अप्सराओं का भोगवस्तुओं के साथ आना; राक्षसों का सुखभोग; दूतों का आकर मूल-बल-वध का समाचार देकर विलासिता को रोकना; रावण का विस्मय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तथा संशय करना; दूतों का आकर लक्ष्मण के जागने का समाचार कहना; रावण का गोपुर पर चढ़कर युद्धक्षेत्र का हाल देखना; रावण का उतरकर दरबार में जाना।

34 रावण-रथारोहण पटल 540-555

रावण का बची-खुची सेना का संग्रह करने की आज्ञा देना; सेनाओं का इकट्ठा होना; रावण का युद्ध-साज सजा लेना; रावण का रथ की पूजा करके यात्रादान देना; रावण की सौगन्द; रावण का रथारोहण; तब रावण का रूप-रंग; रावण का टंकार करना; युद्धस्थल में आना; सुग्रीव आदि का रावण का आगमन जानना; विभीषण का श्रीराम को रावण के आगमन का समाचार देना।

35 श्रीराम-रथारोहण पटल 555-566

श्रीराम का युद्ध के लिए तैयार हो उठना; श्रीराम का युद्ध-साज सजा लेना; आकाश में सिद्ध आदि लोगों का आनंद प्रकट करना; ब्रह्मा की सलाह पर इन्द्र का मातलि द्वारा रथ बुलाना और देवों का उससे प्रार्थना करना; मातलि का रथ को श्रीराम के पास लाना; श्रीराम का मातलि से प्रश्न करना; मातलि का उत्तर; श्रीराम का संदेह और अश्वों का संदेहनिवारण करना; श्रीराम का मातलि, लक्ष्मण आदि का अभिप्राय जानकर रथ पर सवार होना।

36 रावण-वध पटल 566-665

देवों का श्रीराम की मंगलकामना करना; रावण का रथ को आगे बढ़ाने को कहना; वानरों का युद्ध करने को तैयार हो जाना; श्रीराम का मातलि को हिदायत देना; महोदर को रावण का लक्ष्मण के विरुद्ध लड़ने भेजना; महोदर का श्रीराम पर चढ़ जाना और सारथी का चेतावनी देना; महोदर का अनसुनी करना और श्रीराम से युद्ध करके मर जाना; रावण का श्रीराम से युद्ध करना; श्रीराम का राक्षस-सेना का नाश करना; रावण का दुश्शकुनों की परवाह न करना; राम-रावण युद्ध; रावण की शंखध्वनि; विष्णु के शंख की स्वतः उठी ध्वनि; पंचायुध का श्रीराम की सेवा में उपस्थित होना; मातलि का इन्द्रशंख को फूंकना; रावण का क्रोध-हास और उसका क्रोध वचन; दोनों में धनुर्युद्ध; रावण का रथ के साथ आकाश में चलकर युद्ध करना; श्रीराम की आज्ञा पर मातलि का अपने रथ को भी ऊपर आकाश में ले जाना; श्रीराम का रावण के हथियारों को काट देना; श्रीराम के रथ की अशनिध्वजा का रावण द्वारा नाश; रावण का कठोर युद्ध तथा मातलि के वक्ष में अस्त्र का लगना; श्रीराम का रावण के अस्त्रों द्वारा छिपाया जाना और देवों का अधीर होना; श्रीराम का रावण को त्रस्त करके ध्वजा का नाश करा देना; श्रीराम के रथ की ध्वजा में गरुड़ का आकर बैठ जाना और देवताओं का निश्चित हो जाना; श्रीराम पर रावण का तामसास्त्र चलाना; श्रीराम का शिवास्त्र चलाना; रावण का आसुरास्त्र चलाना; श्रीराम का आग्नेयास्त्र चलाकर उसका खण्डन करना; अन्य विविध अस्त्रों का परस्पर टकराना; रावण का मायास्त्र चलाना; मातलि का श्रीराम को समझाना और ज्ञानास्त्र द्वारा उसका निरसन; रावण का शूल छोड़ना; श्रीराम के हुंकार से शूल का चूर हो जाना; रावण का राम के प्रति संशय करना और बद्धसंकल्प हो युद्ध करना; रावण का थक जाना; रावण के कटे सिरों का फिर फिर उग जाना; हाथों का भी उग जाना; रावण का मूर्च्छित होना और मातलि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

का रथ को हटा के ले जाना; मूर्च्छा से जागकर रावण का सारथी पर गुस्सा करना; सारथी की सफाई; फिर से युद्ध; श्रीराम का ब्रह्मास्त्र चलाना; रावण का मर जाना; श्रीराम का मातलि को भेजकर रावण के पास जाना; श्रीराम का रावण की पीठ पर दिग्गजों के दाँतों के अंश देखकर दुःखी होना; विभीषण का सत्य बताकर दुःख को निरर्थक बनाना; श्रीराम का विभीषण से दाहकर्म करने की आज्ञा देना; विभीषण का विलाप करना; मंदोदरी का विलाप; मंदोदरी की मृत्यु; विभीषण का रावण के लिए दाहकर्म आदि करना; सभी मरे हुए राक्षसों का दाहकृत्य करना।

37 प्रत्यागमन पटल 665-804

श्रीराम का विभीषण को सांत्वना देना और लक्ष्मण से विभीषण का अभिषेक (मुकुट-धारण) करा आने को कहना; देवों का किरीट-धारण के लिए आवश्यक सहायता करना; विभीषण का मुकुट-धारण; देवों का बधाई देना; विभीषण का श्रीराम के पास आकर नमस्कार करना; श्रीराम का विभीषण को राजनीति का उपदेश देना; श्रीराम का हनुमान का सीताजी के पास समाचार कहने के लिए भेजना; हनुमान का सीताजी से 'शोभन' कहकर संदेश देना; सीताजी का आनंदमग्न होना; हनुमान का सीताजी से राक्षसियों को दण्ड देने की अनुमति माँगना; सीताजी का इन्कार करना तथा हनुमान को समझाना; श्रीराम का विभीषण से सीताजी को ले आने की आज्ञा देना; विभीषण का सीताजी से शृंगार कर लेने की प्रार्थना करना; सीताजी का इन्कार करना पर विभीषण का ज़ोर देना; सीताजी का शृंगार; यान पर सीताजी का जाना; राक्षस आदि लोगों का भीड़ लगाना और विभीषण का पिटाई करके भगाना; श्रीराम का विभीषण को डाँटना; सीताजी का श्रीराम को नमस्कार करना; श्रीराम का कटुवचन कहना; सीताजी का दुःख और लक्ष्मण से आग बनाने को कहना; सीताजी का अग्निप्रवेश और अग्निदेव का उन्हें ले आकर श्रीराम के पास छोड़ना; अग्निदेव का श्रीराम को समझाना; ब्रह्मा आदि की स्तुति; दशरथ का आना और राम को वर देना; लक्ष्मण और सीताजी का आशीर्वाद देना; श्रीराम से सीता को अपना लेने की सलाह देना; श्रीराम का देवों से वर माँगना; देवों के वरदान से मरे हुए वानरों का जी उठना; श्रीराम की माँग और विभीषण का पुष्पक-विमान लाना; पुष्पक पर सबका चढ़ना; श्रीराम की इच्छा के अनुसार सबका मानवरूप धारण कर लेना; विमान का प्रयाण और श्रीराम का सीताजी को स्थानों को दिखाते जाना; सीता का वानरियों को भी साथ ले आने की अनुमति की प्रार्थना करना; वानरियों का सीताराम को नमस्कार करना; श्रीराम का भरद्वाजाश्रम में आना; भरद्वाज की दावत की तैयारी; श्रीराम का हनुमान को मुँदरी देकर अयोध्या में संदेश भेजना; भरत की स्थिति; भरत का आग में घुसने का प्रबंध; कौसल्या का उन्हें रोकने का प्रयास करना; हनुमान का आना और आग को बुझाना; उँगली दिखाकर हनुमान का संदेश देना; भरत का हनुमान की पहचान जान लेना; भरत का हनुमान को भेंट देना; नगर का अलंकार; श्रीराम की अगवानी के लिए सबका जाना; जाते-जाते हनुमान का श्रीराम-वृत्तांत बखानना; भरत का गंगा के किनारे पर आना; भरत का संदेह करना और हनुमान का समाधान देना; भरत का श्रीराम के पास पहुँच जाना; श्रीराम का संतोष; पुष्पक का भूमि पर उतरना; श्रीराम का सबसे मिलकर नमस्कार करना; सबका आपस में मिलना; भरत की सेना का पुष्पक पर चढ़ना; पुष्पक का नंदिग्राम में पहुँचना।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

38 किरीट-धारण पटल 804-822

श्रीराम का नंदिग्राम में जटानिवारण, स्नान आदि करना; श्रीराम का रथ पर चढ़कर अयोध्या आना; सबका पुष्पक में अयोध्या आना; श्रीराम का महल में प्रवेश करना; श्रीराम की आज्ञा के अनुसार भरत का विभीषण आदि को महल दिखाना; सुग्रीव का हनुमान को तीर्थ लाने भेजना; वसिष्ठजी का अभिषेक योग्य दिन कल ही बताना; अभिषेक की तैयारियाँ; अभिषेक; शर्डेयप्पन के पूर्वज का किरीट लेकर देना और वसिष्ठ द्वारा श्रीराम के सिर पर किरीट रखना; श्रीराम की झाँकी; भूदेवी-श्रीराम-मिलन; भरत का युवराज-किरीट-धारण।

39 विदाई पटल 822-840

विदा देने के निमित्त सीतादेवी-सह श्रीराम का सभामंडप में आना तथा सिंहासन पर विराजना; सबका आगमन; श्रीराम का क्रमशः ब्राह्मणों, राजाओं, सुग्रीव आदि वानरों, गुह आदि लोगों को भेंट देकर विदा देना; विभीषण को भेंट देकर विदा करना; सबका अपने-अपने स्थान को प्रस्थान करना; विभीषण का गुह, सुग्रीव आदि को उनके स्थानों में छोड़ जाना; श्रीराम का राज्य करना और फलश्रुति।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ।।

श्रीराम-पञ्चायतन

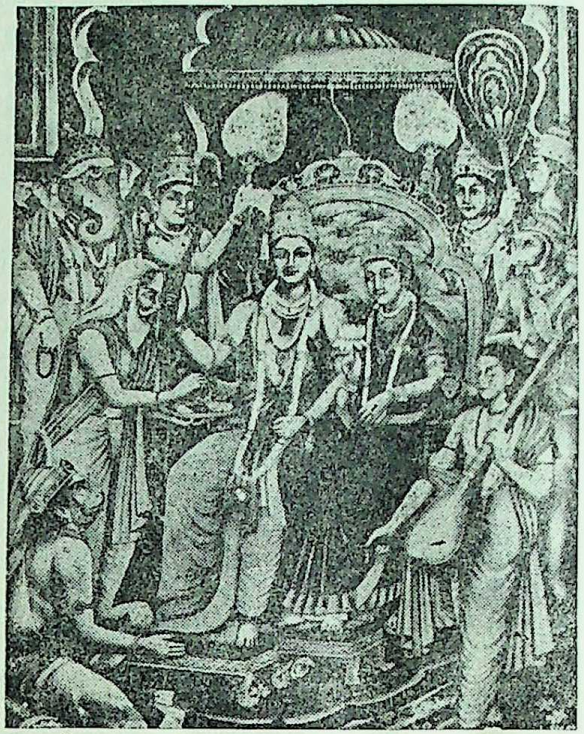

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

युद्धकाण्डम् (उत्तरार्ध)

21. पिरमात्तिरप् पडलम् (ब्रह्मास्त्र पटल)

करऩ्महऩ् पट्ट वाऱङ् गुरुदियिऩ् गण्णऩ् कालिऱ्
चिरऩैरिऩ् टुक्क वाऱुम् जिङ्गऩ दीऱुम् जेऩैप्
परमिऩि युलहुक् काहा दॆऩ्बदुम् बहरक् केट्टाऩ्
वरऩ्मुऱै तुऱन्दाऩ् वल्लैत् तरुदिरॆऩ् महऩै यॆऩ्ऱाऩ् 2377

करऩ् मकऩ्–खर के पुत्र के; पट्ट आऱुम्–मरने का हाल; कुरुतियिऩ् कण्णऩ्–शोणिताक्ष के; कालिऩ्–(वानर के) पैरों से; चिरम् नॆरिऩ्तु–सिर दरार खाकर; उक्क आऱुम्–जो मरा वह प्रकार; चिङ्कऩतु ईऱुम्–सिंह का अंत और; चेऩै परम्–सेना का भार; इऩि–आगे; उलकुक्कु आकातु–लोक में नहीं रहा; ऍऩ्पतुम्–यह समाचार; पकर–(दूतों को) कहते; केट्टाऩ्–सुना; वरऩ् मुऱै तुऱन्ताऩ्–क्रम का उल्लंघन करके; ऍऩ् मकऩै–मेरे पुत्र को; वल्लै–तुरंत; तरुतिर्–लाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–(रावण ने) हुकुम दिया। २३७७

खर के पुत्र (मकराक्ष) के मरने का हाल, शोणिताक्ष का वानर-चरण से सिर के फटने से मरना, सिंह का अन्त और सेना-भार का इस संसार में न रहना आदि बातें रावण ने दूतों के मुख से सुनी तो घटना-क्रम से हटकर उसने आज्ञा दी कि मेरे पुत्र को तुरंत ला दो। २३७७

कूयिऩ नऩ्दै यॆऩ्ऱार् कुऩ्ऱॆऩक् कुविन्द तोळाऩ्
पोयिऩ निरुद रियारुम् बॊऩ्ऱिऩर् पोलु मॆऩ्ऱाऩ्
एयिऩ पिऩ्ऩै मीळ्वार् नीयला दियाव रॆऩ्ऩा
मेयदु शॊऩ्ऩार् तूदर् तादैपाल् विरैविऩ् वन्दाऩ् 2378

उऩ्ऩै कूयिऩऩ्–आपके पिता ने बुलाया; ऍऩ्ऱार्–कहा (दूतों ने); कुऩ्ऱ ऍऩ–पर्वत हो जैसे; कुविन्त–पुष्ट; तोळाऩ्–कंधों वाले (इन्द्रजित्) ने; पोयिऩ निरुतर् यारुम्–जो गये वे सभी राक्षस; पॊऩ्ऱिऩर् पोलुम्–मर गये शायद क्या; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा; एयिऩ पिऩ्ऩै–प्रेषित होने के बाद; मीळ्वार्–लौटनेवाले; नी अलातु–आपके सिवा; यावर्–कौन हैं; ऍऩ्ऩा–कहकर; मेयतु–जो हुआ वह;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तूतर् चॊन्नार्–दूतों ने कहा; तातै पाल्–पिता के पास; विरैविन् वन्तान्–शीघ्र आया। २३७८

(इन्द्रजित् से दूतों ने जाकर कहा कि) आपके पिता ने आपको बुलाया है, तो इन्द्रजित् ने, जिसके कंधे पर्वत के समान पुष्ट थे, पूछा कि युद्ध में जो राक्षस गये थे क्या वे सब मर गये थे शायद ? दूतों ने उत्तर दिया कि युद्ध में जाने की आज्ञा से जो लोग जाते हैं, उनमें आपके सिवा लौट आनेवाले कौन हैं ? उन्होंने, जो हुआ वह सारा हाल बता दिया। इन्द्रजित् अपने पिता के पास शीघ्र आया। २३७८

वणङ्गिनी यंय नॊय्दिन् माण्डनर् मक्क ळॆन्न
उणङ्गलै यिन्रु काण्डि युलप्पऱु कुरङ्गै नीक्किप
पिणङ्गळिन् कुप्पै मऱ्ऱै नररुयिर् पिरिन्द याक्कै
कणङ्गुळैच् चीदै तानु ममररुङ् गाण्ब रॆन्ऱान् 2379

वणङ्कि–पिता का नमस्कार करके; ऐय–तात; मक्कळ् नॊय्तिन् माण्टनर्–लोग आसानी से मर गये; ऎन्न–सोचकर; उणङ्कलै–दुःख मत करें; उलप्पु अऱु कुरङ्कै–अनंत संख्या के वानरों को; नीक्कि–मारकर; पिणङ्कळिन् कुप्पै–लाशों के ढेर; मऱ्ऱै–और; उयिर् पिरिन्त–प्राण-वियुक्त; नरर् याक्कै–मनुष्यों के शरीरों को; कणम् कुळै–भारी कुंडलों की; चीतै तानुम्–सीता और; अमररुम्–देव; काण्पर्–देखेंगे; इन्ऱु काण्टि–आज ही देख लें; ऎन्ऱान्–कहा (इन्द्रजित् ने)। २३७९

इन्द्रजित् ने पिता से नमस्कार करके कहा, पिताजी ! लोग यों मर गये, यह समझकर आप दुःखी नहीं हों। असंख्य वानरों की लाशों के ढेरों को और मरे हुए राम-लक्ष्मण के शरीरों को भारी कुंडलधारिणी सीता देखेगी और देव भी देखेंगे। आज ही आप उसे देखेंगे। २३७९

वलङ्गॊण्डु वणङ्गि वान्शॆ लायिर मडङ्गल् पूण्ड
पॊलङ्गॊडि नॆडुन्दे रेऱिप् पोर्प्पणै मुळङ्गप् पोनान्
अलङ्गल्वा ळरक्कर् तानै यऱुबदु वॆळ्ळ मियानैक्
कुलङ्गळुन् देरु मावुङ् गुळाङ्गॊळक् कुळीइय वन्ऱे 2380

वलम् कॊण्टु–परिक्रमा करके; वणङ्कि–नमस्कार करके; वान् चॆल्–आकाश में जा सकनेवाले; आयिरम् मटङ्कल् पूण्ट–एक हज़ार सिंहों से युक्त; पॊलम् कॊटि–और सुन्दर ध्वजा से अलंकृत; नॆटु तेर्–बड़े रथ पर; एऱि–चढ़कर; पोर् पणै–मारू बाजों के; मुळङ्क–बजते; पोनान्–गया; अलङ्कल् वाळ्–माला से अलंकृत तलवारधारी; अरक्कर् तानै–राक्षस-सेना; अऱुपतु वॆळ्ळम्–साठ वॆळ्ळम्; यानै कुलङ्कळुम्–हाथियों के झुंड; तेरुम्–और रथ; मावुम्–अश्व; कुळाम् कॊळ–झुंडों में; कुळीइय–जुड़े गये। २३८०

इन्द्रजित् रावण की परिक्रमा व नमस्कार करके एक रथ पर सवार होके गया, जिस आकाशचारी रथ से हज़ार सिंह जुते थे और जिस पर बहुत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुन्दर ध्वजा फहरती थी। उसके साथ मारू बाजे बजते गये और माला से अलंकृत तलवार लिये हुए राक्षस वीर साठ 'वॅळ्ळम्' की संख्या में गये। इसके अलावा गजों, रथों और अश्वों के दल भी गये। २३८०

कुम्बिहै तिमिलै शॅण्डै कुऱडुमाप् पेरि कॉट्टुम्
पम्बैदार् मुरशञ् जङ्गम् बाण्डिल्पोर्प् पणवन् दूरि
कम्बलि युऱुमै तक्कै करडिहै दुडिवेय् कण्डै
यम्बलि कणुवै यूमै शहडैयो डार्त्त वऩ्ऱे 2381

कुम्पिकै–कुंबिकै; तिमिलै–तिमिलै; चॅण्टै–शॅण्डै; कुऱट्टु–कुरडु; मा पेरि–बड़ी भेरी; कॉट्टुम् पम्पै–पिटनेवाला 'पंबै'; तार् मुरचम्–माला से अलंकृत नगाड़े; चङ्कम्–शंख; पाण्टिल्–पांडिल; पोर् पणवम्–युद्ध पणव; तूरि–तूर्य; कम्पलि–कंबलि; उऱुमै तक्कै करटिकै–उऱुमै, तक्कै, करडिहै; तुटि–डमरू; वेय्–मुरलियाँ; कण्टै–कण्डै; अम्पलि–अंबलि; कणुवै–कणुवै; ऊमै–ऊमै; चकटैयोटु–शकट आदि वाद्य; आर्त्त–नाद कर उठे। २३८१

निम्नलिखित बाजे बजते गये : "कुंबिकै", "तिमिलै", "शॅण्डै", "कुऱडु", बड़ी भेरियाँ, 'पंबै', माला से अलंकृत नगाड़े, शंख, "पांडिल", मारू पणव, तुरही, "कंबली", "उऱुमै", "तक्कै", "करडिकै", डमरू, वंशी, 'कण्डै', "अंबली", "कणुवै", "ऊमै" और "शकडै"। २३८१

यानैमेऱ् पऱैशा लीट्टत् तऱैमणि यार्त्त दाळि
मानमाप् पुरविप् पॉऱ्ऱार् माक्कॉडि कॉण्ड पण्णैच्
चेनैयोर् कळलुन् दारुञ् जेडहप् पुळहच् चिल्लि
वानहत् तोडु माळि यलैयॅन वळर्न्द वऩ्ऱे 2382

यानै मेल्–हाथियों पर के; पऱै–ढिंढोरों के; चाल् ईट्टत्तु–बड़े दलों के साथ; अऱै मणि–बारी-बारी से बजनेवाली घंटियाँ; आळि आर्त्ततु–समुद्र के समान नाद करती रहीं; मानम् मा पुरवि–शानदार बड़े अश्व के; पॉन् तार्–स्वर्ण-निर्मित घुंघुरू; मा कॉटि कॉण्ट–बड़ी ध्वजाएँ लिये हुए; पण्णै–बलबद्ध; चेनैयोर्–सेना-वीरों की; कळलुम्–पायलें; तारुम्–माला; चेटकम् पुळकम् चिल्लि–शानदार व आईनों से सज्जित रथों के पहिये; वानकत्तोटु–आकाश तक; आळि अलै ऑन–समुद्र की लहरों के समान; वळर्न्त–(सबकी ध्वनियाँ) बढ़ीं। २३८२

हाथियों पर रहनेवाले ढिंढोरों के बड़े दलों के साथ बारी-बारी से (बजनेवाली) हाथियों के दोनों बाजुओं में लटकनेवाली घंटियाँ समुद्र के समान नाद करती गयीं। शानदार घोड़ों के स्वर्ण की लड़ियाँ, बड़ी-बड़ी ध्वजाओं को लिये हुए चलनेवाले वीरों की पायलें, घूंघुरू और शालीन व शीशे-लगे रथों के पहिये —इनके द्वारा उत्पन्न नाद आकाश तक बढ़ी हुई समुद्र-तरंगों की ध्वनि के समान ऊपर उठे। २३८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शङ्गॊलि वयिरि नोशै याहुळि दळङ्गु काळम्
पॊङ्गॊलि वरिकण् बीलिप्पेरॊलि वेयिन् पॊम्मल्
शिङ्गत्तिन् मुऴक्कम् वाशिच् चिरिप्पुत्ते रिडिप्पुत् तिण्कैम्
मङ्गुलि नदिर्वु वान मऴैयॊडु मलैन्द वन्ऱे 2383

चङ्कु ऑलि–शंख की ध्वनि; वयिरिन् ओचै–तुरही का नाद; आकुळि–आहुलि (नामक ढोल); तळङ्कु काळम्–बजनेवाले काहल का; पॊङ्कु ऑलि–गुंजायमान नाद; वरि कण् पीलि–मयूरपंख-लगे 'पीली' नामक वाद्य का; पेरॊलि–बड़ा स्वर; वेयिन् पॊम्मल्–वंशी का स्वर; चिङ्कत्तिन् मुऴक्कम्–सिंहों का गर्जन; बाचि चिरिप्पु–अश्वों की हँसी (हिनहिनाने की ध्वनि); तेर् इटिप्पु–रथों की गड़गड़ाहट; तिण् कै–मजबूत सूँड़ों वाले; मङ्कुलिन् अतिर्वु–मेघ-सम हाथियों की चिंघाड़; वान मऴै यॊटु–आकाश के मेघों के साथ; मलैन्त–(सबने) होड़ लगायी। २३८३

शंखनाद, तुरहीस्वर, आकुली (नामक पटहे) का स्वर, स्वरित काहल का उभरा हुआ नाद, मयूर-पंखों से अलंकृत "पीली" की ध्वनि, वंशी की गुंजार, सिंह का गर्जन, घोड़ों का हिनहिनाना, रथों की गड़गड़ाहट और सशक्त सूँड़ों वाले मेघ-सम हाथियों की चिंघाड़ —ये सब आकाश के मेघों से होड़ लगाते उठे। २३८३

बिल्लॊलि वयव रार्क्कुम् विळियॊलि तॆळिप्पि नोङ्गुम्
ऑल्लॊलि वीरर् पेशु मुरैयॊलि युरप्पिऱ् ऱोन्ऱुम्
जॆल्लॊलि तिरडोळ् कॊट्टुम् जेणॊलि निलत्तिर् चॆल्लुङ्
गल्लॊलि तुरप्प मऱ्ऱैक् कडलॊलि करन्द दन्ऱे 2384

बिल् ऑलि–धनु की टंकार; वयवर् आर्क्कुम्–वीरों का नर्दन; विळि ऑलि–आह्वान का स्वर; तॆळिप्पिन् ओङ्कुम्–जोर से बुलाने के कारण ऊँची; ओल् ऑलि–'ऑल्ल' की ध्वनि; वीरर् पेचुम् उरै ऑलि–वीरों की बोली का स्वर; उरप्पिल् तोन्ऱुम्–डाँटने पर हुआ; चॆल् ऑलि–अशनि-स्वर; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कंधों को; कॊट्टुम्–ठोंकने का; चेण् ऑलि–बहुत ऊँचा नाद; निलत्तिल् चॆल्लुम्–भूमि पर चलते वक्त होनेवाले; कल् ऑलि–'गल्ल' की ध्वनि; तुरप्प–इनसे भगाये जाने के कारण; मऱ्ऱै–अन्य; कटल् ऑलि–समुद्र-गर्जन; करन्ततु–छिप गया। २३८४

धनु की टंकार, वीरों की नर्दनध्वनि, आह्वान से उठी हुई ऊँची 'ऑल्' की ध्वनि, वीरों की आपस में बोलने से उठनेवाली ध्वनि, डाँटने का अशनिस्वर, कंधे ठोंकने से उत्पन्न नाद, भूमि पर चलने से उठती "गल्" की ध्वनि —इन सबने मानो समुद्र के शोर को भगा दिया। इसलिए समुद्र-गर्जन थम गया। २३८४

नाऱ्कड लनैय तानै नडन्दिडक् किडन्द पारिन्
मेऱ्कडुत् तॆळन्द तूळि बिशुम्बिन्मेऱ् ऱोडरन्दु वीश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मार्कडर् चेनै काणुम् वानवर् महळिर् मानप्
पार्कड लनैय वाट्कण् बनिक्कडल् पडुत्त दन्रे 2385

नाल् कटल् अनैय तानै–चार समुद्रों के समान सेना; नटन्तिट–चली, इसलिए; किटन्त पारिन्–पड़ी रहनेवाली धरती से; मेल्–ऊपर; कटुत्तु ऎळुन्त–जो सवेग उठी वह; तूणि–धूल; विशुम्पिन् मेल्–आकाश पर; तॊटर्न्तु वीच–बराबर उठती रही, इसलिए; माल्–बड़ी; कटल् चेनै–सागर-सी सेना; काणुम्–देखने वाले; वानवर् मकळिर्–देवांगनाओं की; मान–शालीन; पाल् कटल् अनैय–क्षीरसागर-सम; वाळ् कण्–सुन्दर आँखों ने; पनि कटल्–शीतल सागर; पटुत्ततु–निर्मित किया। २३८५

चार समुद्र के समान चतुरंगिनि सेना चली, इसलिए विशाल भूमि से धूल वेग के साथ उठी और बराबर आकाश में फैली। इसलिए समुद्र-सदृश सेना के दर्शक देवांगनाओं की क्षीरसागर-सम श्रेष्ठ आँखों ने शीतल समुद्र का सृजन कर दिया। (यानी आँसू बरसाये)। २३८५

आयिर कोडिन् तिण्डे रमरर्को नहर मॆन्न
मेयवर् शुर्ड्रत् तानोर् कॊर्ड्रप्पॊर् रेरिन् मेलान्
तूयपॊर् चुडर्ह ळॆल्लाम् जुर्ड्रुर नडुवट् टोन्ड्रुम्
नायहप् परिदि पोन्ड्रान् रेवरै नडुक्कङ् गण्डान् 2386

अमरर् कोन् नकरम् ऎन्न–देवेन्द्रनगर के-से; आयिरम् कोटि–एक हजार करोड़; तिण् तेर् मेयवर्–मजबूत रथारूढ़ वीरों के; चुर्ड्र–घेरे रहते; तेवरै नटुक्कम् कण्टान्–देव-भयकारी (इन्द्रजित्); तान्–स्वयं; ओर् कॊर्ड्रम् पॊन् तेरिन् मेलान्–एक विजयशील स्वर्ण-रथ पर आरूढ़; तूय पॊन् चुटर्कळ् ऎल्लाम्–पवित्र और सुन्दर ज्वलंत सारे ग्रहों के; चुर्ड्रुर–घेरे रहते; नटुवण् तोन्ड्रुम्–मध्य दिखनेवाले; नायकम् परिति–स्वामी सूर्य; पोन्ड्रान्–के समान रहा। २३८६

देवेन्द्र के महल के वीरों के समान हज़ार करोड़ राक्षस वीर मज़बूत रथों पर सवार होकर देवेन्द्र-भयंकर इन्द्रजित् को घेरे रहे। वह स्वयं एक विजयशील स्वर्ण-रथ पर सवार था। तब वह ऐसे नायक सूर्य के समान दिखा जो पवित्र, सुन्दर और उज्ज्वल ग्रहों के मध्य शोभता हो। २३८६

शॆन्ड्रवॆङ् गळत्तै यॆय्दिच् चिरैयॊडु तुण्डम् जॆङ्गण्
ऒन्ड्रिय कळुत्तु मेनि कालुहिर् वालो डॊप्पप्
पिन्ड्रलिल् वॆळ्ळत् तानै मुर्ड्रपडप् परप्पिप् पेळ्वाय्
अन्ड्रिलि नुरुव दाय वणिवहुत् तमैन्दु निन्ड्रान् 2387

चॆन्ड्र–जाकर; वॆम् कळत्तै ऎय्दि–भयानक युद्ध-रंग में जाकर; चिरैयॊटु तुण्टम्–पंखों के साथ चोंच और; चॆम् कण् ऒन्ड्रिय–लाल आँखों-सहित; कळुत्तुम्–गले और; मेनि–शरीर; काल्–पैर; उकिर–नाखून; वालोटु ऒप्प–पूंछ आदि के युक्त रीति से बनते; पिन्ड्रल् इल्–जो कभी पिछड़ती नहीं; वॆळ्ळम् तानै–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'वॅळ्ळमों' की संख्या की सेना को; मुऱै पट–क्रम से; परप्पि–फैलाकर; पेऴ्वाय्–फटे मुख के; अऩ्ऱिलिऩ् उरुवतु आय–क्रौंच के रूप में बने; अणि वकुत्तु–व्यूह-रचना करके; अमैऩ्तु निऩ्ऱाऩ्–उद्यत रहा। २३८७

इन्द्रजित् ने भयानक युद्धस्थल में जाकर सेना को क्रौंचव्यूह में व्यूहबद्ध किया; जिसके पंख, चोंच, लाल आँखें, ठीक डौल का गला, शरीर, पैर, नाखून, पूंछ और फटे मुख से यह व्यूहरचना मेल रखती थी। वह युद्धसन्नद्ध रहा। २३८७

पुरन्दरऩ् शॅरुविऱ् ऱन्दु पोयदु पुणरि येऴुम्
उरन्दविर्त् तूऴि पेरुङ् गालत्तु ळॊळिक्कु मोदै
करन्ददु वयिऱ्ऱुक् काल वलम्बुरि कैयिऩ् वाङ्गिच्
चिरम् बॊदिर्न् दमर रञ्ज वूदिऩाऩ् ऱिशैयुञ् जिन्द 2388

पुरन्तरऩ्–पुरन्दर; चॅरुविल् तन्तु पोयतु–युद्ध में (जिसे) दे गया; एऴु पुणरियुम्–सातों समुद्र; उरम् तविर्त्तु–(सारी सृष्टि का) बल मिटाकर; ऊऴि पेरुम् कालत्तुऴ्–युगपरिवर्तन के समय; ऒलिक्कुम् ओतै–जो नाद करते उसे; वयिऱ्ऱु करन्ततु–अपने पेट में जो छिपाए रहा; कालऩ्–यम-सम; वलम् पुरि–दक्षिणावर्त शंख; कैयिऩ् वाङ्कि–हाथ में लेकर; चिरम् पॊतिर्न्तु–सिरों के हिलते; अमरर् अञ्च–देवों के डरते; तिचैयुम् चिन्त–दिशाओं को अस्त-व्यस्त करते हुए; ऊतिऩाऩ्–बजाया। २३८८

इन्द्रजित् ने बाद शंख बजाया। वह शंख इन्द्र को युद्ध में हराकर अपना लिया गया था। युगपरिवर्तन के समय सारी सृष्टि का बल मिटा कर सातों समुद्र उमड़कर जो भयंकर नाद उठाते हैं, वह स्वर मानो उसके पेट में समा गया हो, ऐसा नाद उठानेवाला था। काल के समान था और दक्षिणावर्त शंख था। शंखनाद सुनकर देवों के सिर काँपे और वे भयपीड़ित हो गये। दिशाएँ भी अस्त-व्यस्त हो गयीं। २३८८

शङ्गत्तिऩ् मुऴक्कङ् गेट्ट कविप्पॅरुन् दाऩै याऩै
शिङ्गत्तिऩ् मुऴक्कङ् गेट्ट दॊत्तदु विरिन्दु शिन्दि
ॲङ्गुऱ्ऱ वॅऩ्ऩा वण्ण मिरिन्ददी दऩ्ऱि येऴै
पङ्गत्तऩ् मलैवि लॅऩ्ऩच् चिलैयॊलि परप्पि याऱ्त्ताऩ् 2389

चङ्कत्तिऩ् मुऴक्कम् केट्ट–शंखनाद जिसने सुना; कवि पॅरु ताऩै–वानरों की बड़ी सेना; चिङ्कत्तिऩ् मुऴक्कम् केट्टतु–सिंहगर्जन जिसने सुना उस; याऩै मॊत्ततु–हाथी के समान बनी; विरिन्तु चिन्ति–तितर-बितर छितरकर; ॲङ्कुऱ्ऱ–कहाँ गयी; ॲऩ्ऩा वण्णम्–न जाना जाए, इस प्रकार; इरिन्ततु–भागी; ईतु अऩ्ऱि–इसके अलावा; एऴै पङ्कत्तऩ्–अर्धनारीश्वर के; मलै विल् ॲऩ्ऩ–मेरु-धनु-ध्वनि के समान; चिलै ऒलि–धनु-ध्वनि; परप्पि–फैलाकर; आऱ्त्ताऩ्–नर्दन किया। २३८९

शंख-ध्वनि-श्रोता वानर-सेना सिंह-ध्वनि-श्रोता गजों के समान भाग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खड़ी हुई। यह पता ही नहीं चलता था कि कहाँ भागी। यही नहीं इन्द्रजित् ने अर्धनारीश्वर के मेरुधनुष के समान अपने धनु से नाद उठाकर स्वयं नर्दन किया। २३८९

कीण्डऩ शॅविह णॅञ्जङ् किऴिन्दऩ किळर्न्दु शॅल्ला
मीण्डऩ काल्हळ् कैयिऩ् विऴुन्दऩ मरऩुम् वॅऱ्पुम्
पूण्डऩ नडुक्कम् वाय्हळ् पुलर्न्दऩ मयिरुम् बॉङ्ग
माण्डऩ मऩ्ऱो वॅऩ्ऱ वानर मॅवॅयु मादो 2390

वानरम् ऍवॅयुम्–सभी वानर के; चॅविकळ् कीण्टऩ–फटे कानों के हुए; नॅञ्चम् किऴिन्तऩ–चिरे मन के हो गये; काल्कळ्–उनके पैर; किळर्न्तु चॅल्ला–उत्साह के साथ आगे न जाकर; मीण्टऩ–मुड़ गये; कैयिऩ्–हाथों में; मरऩुम् वॅऱ्पुम्–पेड़ और पहाड़; विऴुन्तऩ–नीचे गिर गये; नटुक्कम् पूण्टऩ–काँप गये; वाय्कळ् पुलर्न्तऩ–मुख सूख गये; मयिरुम् पॉङ्क–रोमों के गिरते; माण्टऩम् अऩ्ऱे–हम मरे न; ऍऩ्ऱ–ऐसा बोले। २३९०

सभी वानरों के कान फट गये; मन विदीर्ण हो गये। उनके पैर उत्साह-हीन होकर मुड़ आये। उनके हाथों के पर्वत और पेड़ फिसलकर गिर गये। शरीर काँपे और मुख सूखे। वे यह कहने लगे कि हमारे बाल कम हो गये और हम मर गये। २३९०

शॅङ्गदिर्च् चॅल्वऩ् शेयुञ् जमीरणऩ् शिऱुवऩ् ऱाऩुम्
अङ्गदप् पॅयरि ऩाऩु मण्णलु मिळैय कोवुम्
वॅङ्गदिर् मौलिच् चॅङ्गण् वीडणऩ् मुदलाम् वीरर्
इङ्गिवर् निऩ्ऱा रल्ल तिरिन्ददु शेऩै यॅल्लाम् 2391

चॅम् कतिर् चॅल्वऩ्–लाल किरणमाली का; चेयुम्–पुत्र और; चमीरणऩ् चिऱुवऩ् ताऩुम्–समीरण का सूनु; अङ्कतऩ् पॅयरिऩाऩुम्–अंगद नाम का वानरपति; अण्णलुम्–महान् श्रीराम; इळैय कोवुम्–और लघुराज; वॅम् कतिर् मौलि–गरम किरणें छिटकानेवाले मुकुटधारी; चॅम् कण् वीटणऩ् मुतलाम्–लाल आँखों वाला विभीषण आदि; वीरर्–वीर; इवर्–ये; इङ्कु निऩ्ऱार्–यहाँ टिके रहे; अल्लतु–इनके सिवा; चेऩै ऍल्लाम्–सारी सेना; इरिन्ततु–अस्त-व्यस्त हुई। २३९१

लाल किरणमाली का पुत्र सुग्रीव और समीरणसूनु, अंगद, महान् श्रीराम, लघुराज लक्ष्मण और गरम किरणें निकालनेवाले मुकुटधारी और अरुणाक्ष विभीषण आदि ये टिके रहे। अन्य सभी अस्त-व्यस्त होकर भाग गये। २३९१

पडैप्पॅरुन् दलैवर् निऱ्कप् पल्बॅरुन् दाऩै वेलै
उडैप्पुऱु पुऩलि ऩोड वूऴिना ळुवरि योदै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किडैत्तिड मुऴङ्गि यार्त्तुक् किळर्न्ददु निरुदर् शेनै
अडैत्तदु तिशैह ळॆल्ला मत्तव रहत्त रान्नार् 2392

पटै पॆरु तलैवर् निऱ्क–बड़े सेनापतियों के टिके रहते; पल् पॆरु तानै वेलै–विविध बड़ी सेना का सागर; उटैप्पु उऱु–तीर को तोड़कर जानेवाले; पुनलिन्–जल के समान; ओट–भाग गया; निरुतर् चेनै–राक्षस-सेना ने; ऊऴि नाळ् उवरि–युगांत-सागर के-से उठनेवाले; ओनै किटैत्तिट–नाद को पैदा करते हुए; मुऴङ्कि आर्त्तु–उमगकर नारे लगाकर; किळर्न्ततु–उत्साहपूर्ण रहने से; तिचैकळ् ऍल्लाम्–सारी दिशाओं में; अटैत्ततु–रोक लगा दी (या भर गयी); अन्नवर्–वे वानर; अकत्तर् आनार्–युद्ध के मैदान में रह गये। २३९२

बड़े-बड़े सेनानायक खड़े रहे और विविध और बड़ी-बड़ी वानर-सेनाएँ तीर तोड़कर बहनेवाले जल के समान भाग गयीं। तब राक्षस-सेना ने युगांतकालीन समुद्रगर्जन के समान नर्दन करते हुए उमंग के साथ सारी दिशाओं में रोक लगा दी तो वानर-सेना को मैदान में आना पड़ा। २३९२

मारुदि यलङ्गल् मालै मणियणि वयिरत् तोण्मेल्
वीरनुम् वालि शेय्दन् विऱल्हॆऴु शिहरत् तोण्मेल्
आरियर् किळैय गोवु मेऱिन रमरर् वाऴ्त्ति
वेरियम् बूवित् मारि शॊरिन्दन रिडैविडामै 2393

मारुति–मारुति के; अलङ्कल् मालै–हिलनेवाली माला से; अणि–अलंकृत; मणि वयिरम् तोळ् मेल्–सुन्दर वज्रस्कंध पर; वीरनुम्–श्रीवीरराघव और; वालि चेय् तन्–वाली के पुत्र के; विऱल् कॆऴु–मजबूत; चिकरम् तोळ् मेल्–शिखर-सम कंधों पर; आरियऱ्कु–आर्य श्रीराम के; इळैय कोवुम्–छोटे राजकुमार भी; एऱिनार्–आरूढ़ हुए; अमरर् वाऴ्त्ति–देवों ने शुभ कामनाएँ प्रकट करके; वेरि–शहद-सहित; अम् पूवित् मारि–सुन्दर फूलों की वर्षा; इटैविडामै चॊरिन्तनर्–लगातार करायी। २३९३

मारुति के खिलनेवाली माला से अलंकृत मनोरम वज्रस्कंध पर श्रीवीरराघव और वाली के पुत्र के शसक्त, पर्वतशिखर-सम कंधों पर आर्य श्रीराम के छोटे भाई आरूढ़ हुए, तब देवों ने शुभ कामनाएँ प्रकट करके मधुयुक्त सुन्दर पुष्पवर्षा बराबर करायी। २३९३

विडैयिन्मेऱ् कलुळन् ऱन्मेल् विल्लिनर् विळङ्गु हिऱ्ऱ
कडैयिन्मे लुयर्न्द काट्चि यिरुवरुङ् गडुत्तार् कणणुऱ्
ऱडैयिन्मे रुवैयुञ् जाय्क्कु मनुमनङ् गदनॆन् ऱिन्नार्
तॊडैयिन्मेन् मलर्न्द तारर् तोळिन्मेऱ् ऱोन्ऱुम् वीरर् 2394

कणणुऱ्ऱु अटैयिन्–दृष्टिपथ में आने पर; मेरुवैयुम्–मेरु (पर्वत) को; चाय्क्कुम्–नष्ट कर सकनेवाले; अनुमन् अङ्कतन्–हनुमान और अंगद; ऍन्ऱु–जो थे; इन्नार्–उनके; तोळिन्मेल् तोन्ऱुम्–कन्धे पर शोभायमान; मेल्–श्रेष्ठ; मलरन्त–विकसित पुष्प की; तॊटैयिन् तारर्–गुँथी मालाधारी; विल्लिनर्–धनुर्हस्त;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीरर्–वीर (राम-लक्ष्मण); विटैयिन् मेल्–ऋषभ और; कलुळन् तन्मेल्–गरुड़ पर; विळङ्कुकिन्ऱ–शोभायमान; कटैयिन् मेल् उयर्न्त–अपार महिमावाले; काट्चि–दर्शनीय; इरुवरुम्–दोनों (शिव, विष्णु); कटुत्तार–के समान लगते थे। २३९४

दृष्टिगोचर होने पर मेरु को भी गिरा सकनेवाले हनुमान और अंगद के कंधों पर दिखनेवाले शोभायमान और खिले पुष्पों की मालाधारी और धनुर्हस्त वीर (राम-लक्ष्मण) ऋषभ-गरुड़ पर शोभायमान उष्कृष्ट दर्शन के पात्र दोनों (शिव और विष्णु) के समान लगे। २३९४

नीलनै मुदला युळ्ळ नॆडुम्बडैत् तलैवर् निन्ऱार्
तालमु मलैयु मेन्दित् ताक्कुवान् शमैन्द वेलै
ञालमुम् विशुम्बुङ् गात्त नानिलक् किळवन् मैन्दन्
मेलमर् विळैवै युन्नि विलक्किनन् विळम्ब लुऱ्ऱान् 2395

नीलनै मुतला उळळ–नील को आदि में लेकर जो रहे; नॆटु पटै तलैवर्–बड़े सेनापति; तालमुम् मलैयुम्–तालतरुओं और पर्वतों को; एन्ति–लेकर; निन्ऱार्–खड़े रहे; ताक्कुवान्–आक्रमण करने; चमैन्त वेलै–जब उद्यत हुए तब; ञालमुम् विशुम्पुम् कात्त–भूमि और आकाश की रक्षा करनेवाले; नाल् निलम् किळवन्–चतुर्विधा भूमि के पति के; मैन्तन्–पुत्र श्रीराम ने; मेल् विळैवु–आगे आनेवाले; अमरै उन्नि–युद्ध को सोचकर; विलक्किनन्–उन्हें रोककर; विळम्पल् उऱ्ऱान्–(और) कहने लगे। २३९५

नील आदि श्रेष्ठ सेनापति कालवृक्ष और गिरियों को उठाये हुए खड़े होकर जब आक्रमण करने लगे, तब आकाश और भूमि को बचानेवाले धराधिप दाशरथी ने आगे आनेवाले युद्ध की बात सोचकर उनको रोका। वे आगे बोले। २३९५

कडवुळर् बडैयै नुम्मेल् वॆय्यवन् ऱुरन्द कालैत्
तडैयुळ वल्ल दाङ्गुन् दन्मैयि रल्लिर् ताक्किर्
किडैयुळ दॆम्बा नल्हिप् पिन्निरै निऱ्ऱि रीण्डिप्
पडैयुळ दनैयु मिन्ऱॆम् विऱ्ऱॊळिल् पार्त्ति रॆन्ऱान् 2396

वॆय्यवन्–दुष्ट इन्द्रजित्; नुम् मेल्–तुम लोगों पर; कटवुळर् पटैयै–दिव्य अस्त्रों को; तुरन्त कालै–जब चलाएगा तब; तटै उळ अल्ल–वे अवार्य होंगे; ताङ्कुम् तन्मैयर् अल्लिर्–(तुम लोग) सहने की शक्ति नहीं रखते; ताक्किऱ्कु–आक्रमण करने का; इटै उळतु–जो स्थान है उसे; ऎम्पाल्–हमारे पास; नल्कि–देकर; पिन् निरै–पीछे की पंक्तियों में; निऱ्ऱिर्–खड़े रहो; ईण्टु–यहाँ; इ पटै उळ तन्नैयुम्–इस सेना के रहते तक; इन्ऱु–आज; ऎम् विल् तॊळिल्–हमारा धनुकर्म; पार्त्तिर्–देखो; ऎन्ऱान्–कहा श्रीराम ने। २३९६

जब दुष्ट इन्द्रजित् तुम लोगों पर दिव्य अस्त्र चलाएगा, तब अवार्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनको आप बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। आक्रमण के लिए आगे का स्थान हमको देकर पीछे की पंक्तियों में खड़े रहो। यहाँ इस राक्षस-सेना के रहते तक हमारा धनुकर्म देख लो। २३९६

अरुण्मुऱै यवरु निन्ऱा राण्डहै वीर राऴि
उरुण्मुऱै तेरिन् मावि नोडैमाल् वरैयि नूऴि
इरुण्मुऱै निरुदर् तम्मे लेविन रिमैप्पि लोरुम्
मरुण्मुऱै यॅय्दिऱ् ऱॅन्बर् शिलैवऴङ् गशनि मारि 2397

अरुळ् मुऱै–कृपा की आज्ञा के अनुसार; अवरुम् निन्ऱार्–वे भी स्थित हुए; आण्टकै वीरर्–पौरुषपूर्ण वीर; आऴि उरुळ् मुऱै–पहियों के बल पर चलकर आनेवाले; तेरिन्–रथों पर; मावित्–घोड़े पर; ओटै–मुखपटालंकृत; माल् वरैयिन्–बड़े पर्वतों (-सम गजों) पर; ऊऴि इरुळ् मुऱै–और युगांतकालीन अन्धकार-सम; निरुतर् तम् मेल्–राक्षसों पर; चिलै वऴङ्कु–धनु जिन्हें चलाता है; अचनि मारि–उन (बाण रूपी) अशनियों की वर्षा; एविनर्–प्रेषित की। २३९७

श्रीराम की करुणामय आज्ञा के अनुसार वानर वीर खड़े हो गये। पौरुषपूर्ण श्रीराम और लक्ष्मण ने पहियोंदार रथों, अश्वों और मुखपटालंकृत गजों और युगांत के अंधकार-सदृश राक्षसों पर, धनुनिर्गत आशनि-वर्षा करायी। इससे अपलक देवों को भी भ्रमित होने की नौबत आ गयी। २३९७

तेरिन्मेऱ् चिलैयि निन्ऱ् विन्दिर शित्तॅन् ऱोडुम्
वीररुळ् वीरन् कण्डान् विऴुन्दन विऴुन्द वॅन्नुम्
पारिन्मे नोक्कि नन्ऱेऱ् पट्टनर् पट्टा रॅन्नुम्
पोरिन्मे नोक्कि लाद विरुवरुम् बॊरुद पूशल् 2398

विऴुन्तन विऴुन्त–गिरते ही रहे; ऍन्नुम्–ऐसा कहने योग्य रीति से; पारिन् मेल् नोक्किल् अन्ऱेल्–भूमि पर (गिरती लाशों को) देखने के सिवा; पट्टनर्–(कौन) हत हुए; पट्टार्–कौन मरे; ऍन्नुम्–यह निश्चित रूप से कहें ऐसा; पोरिन् मेल् नोक्कु इलात–युद्ध में ध्यान जो नहीं देते रहे; इरुवरुम्–दोनों; पॊरुत पूचल्–जो लड़ाई लड़े उसको; तेरिन् मेल्–रथ पर; चिलैयिन् निन्ऱ्–धनु को टेककर जो खड़ा रहा (या पत्थर की तरह जो खड़ा रहा) उस; इन्तिरचित्तु ऍन्ऱु ओतुम्–इन्द्रजित् के नाम से शंसित; वीररुळ् वीरन्–वीरों में वीर ने; कण्टान्–देखा। २३९८

श्रीराम और लक्ष्मण ऐसे युद्ध करते रहे कि लाशें गिरती ही रहीं और यह निश्चित रहा कि जिस पर शर लगा वह मर ही गया। इतना होने पर भी वे युद्ध पर विशेष ध्यान देकर लड़ते नहीं मालूम होते थे। इस युद्ध को रथ पर से इन्द्रजित् शंसित वीरों में वीर धनु को टेककर देखता ही रहा। ("शिलै" का अर्थ "धनु" भी है, "पत्थर" भी है। इसलिए प्रस्तरवत् यानी अवाक् देखता रहा।)। २३९८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यानैपट् टनवो वॅन्ऱा निरदमिऱ् ऱनवो वॅन्ऱान्
मानमा वन्द वॅल्ला मऱिन्दॊऴिन् दनवो वॅन्ऱान्
एनैवा ळरक्क रियारु मिल्लैयो वॅडुक्क वॅन्ऱान्
वानुयर् बिणत्तिन् कुप्पै मऱैत्तलिन् मयक्क मुऱ्ऱान् 2399

वान् उयर्–आकाश तक ऊँचे; पिणत्तिन् कुप्पै–लाशों के ढेर के; मऱैत्तलिन्–छिपाने से; मयक्कम् उऱ्ऱान्–भ्रमित हुआ; यानै पट्टनवो–हाथी हत हो गये क्या; ऍन्ऱान्–पूछा; इरतम् इऱ्ऱनवो ऍन्ऱान्–रथ मिट गये क्या; वन्त–आगत; मानम्–शानदार; मा ऍल्लाम्–अश्व सारे; मऱिन्तु ऒऴिन्ततवो–मर मिटे क्या; ऍन्ऱान्–पूछा; ऍटुक्क–(लाश को) लेने (हटाने); एनै वाळ् अरक्कर्–अन्य तलवारधारी राक्षस; यारुम् इल्लैयो–कोई नहीं है क्या; ऍन्ऱान्–पूछा (नैराश्य प्रगट किया)। २३९९

गगनोन्नत लाशों के ढेर के छिपाने से इन्द्रजित् भ्रमित हुआ और उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी कि क्या हाथी हत हो गये ? रथ टूट गये ? युद्ध में आगत सभी शानदार अश्व शव हो गये ? मृतकों को उठाने के लिए अन्य तलवारधारी राक्षस वीर नहीं हैं क्या ? । २३९९

शॅय्हिन्ऱा रिरुवर् वॅम्बोर् शिदैहिन्ऱ शेनै नोक्किन्
ऐयन्दा निल्ला वॅळ्ळ मऱुबदु मविह वॅन्ऱु
वैहिन्ऱा रल्ल राह वरिशिलै वलत्तान् माळ
ऍय्हिन्ऱा रल्ल रीदॆव् विन्दिर शाल मॅन्ऱान् 2400

वॅम् पोर् चॅय्किन्ऱार्–घमासान युद्ध करते थे; इरुवर्–दोनों ही; चितैकिन्ऱ चेनै–मिटनेवाली सेना को; नोक्किन्–देखने पर; ऐयम् तान् इल्ला–असंदिग्ध; अऱुपतु वॅळ्ळम्–साठ 'वॅळ्ळम'; अविक–मिट जाए; ऍन्ऱु–कहकर; वैकिन्ऱार्–शाप देते (मार देते हैं); अल्लर् आक–नहीं तो; वरि चिलै वलत्तान् माळ–सबन्ध धनु के बल से मारने; ऍय्किन्ऱारुम् अल्लर्–बाण छोड़नेवाले नहीं लगते; ईतु–यह काम; ऍव् इन्तिर चालमो–क्या इन्द्रजाल है; ऍन्ऱान्–विस्मय-कथन किया। २४००

घमासान युद्ध करनेवाले ये दोनों, हत सेना की स्थिति देखने पर यही लगता था कि, असंदिग्ध रूप से साठ हज़ार 'वॅळ्ळम्' की सेना को "मरो" का शाप देकर मार रहे हैं। नहीं तो सबंध धनु की शक्ति से मारने के लिए शर नहीं छोड़ रहे (यानी बहुत ही अनायास रूप से लड़ रहे हैं)। यह क्या इन्द्रजाल है ? इन्द्रजित् ने ऐसा विस्मय किया। २४००

अम्बिन्मा मळैयै नोक्कु मुदिरत्ति नाऱ्ऱै नोक्कुम्
उम्बरि नळवुऱ् जॅन्ऱ पिणक्कुन्ऱि नुयर्वै नोक्कुम्
कॊम्बऱ् वुदिर्न्द मुत्तिन् कुप्पैयै नोक्कुङ् गॊन्ऱ
तुम्बियै नोक्कुम् वीरर् शुन्दरत् तोळै नोक्कुम् 2401

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अम्पित् मा मऴैयै नोक्कुम्-अस्त्रों की घनी वर्षा को देखता; उतिरत्तित्-रुधिर की; आऱ्ऱै नोक्कुम्-नदी को देखता; उम्परित् अळवुम्-आकाश तक; चॆन्ऱ-गयी; पिणम् कुन्ऱिन् उयर्वै-लाशों के पर्वत की ऊँचाई को; नोक्कुम्-देखता; कॊम्पु अऱ-दाँतों के टूटने से; उतिर्न्त-गिरे हुए; मुत्तित् कुप्पैयै-मोतियों की राशियों को; नोक्कुम्-देखता; कॊन्ऱ तुम्पियै-हत हाथियों को; नोक्कुम्-देखता; वीरर् चुन्तरम् तोळै-वीरों की सुन्दर भुजाओं को; नोक्कुम्-देखता। २४०१

इन्द्रजित् विपुल शरवर्षा को देखता। रुधिर की नदी पर दृष्टि दौड़ाता। आकाश तक गयी हुई लाशों के ढेर की ऊँचाई पर ध्यान देता। हाथियों के दाँतों के कटने से गिरनेवाले मोतियों के ढेर को देखता। मारे गये हाथियों को देखता और वीरों की सुन्दर भुजाओं पर दृष्टि दौड़ाता। २४०१

मलैहळै नोक्कु मऱ्ऱु वानुऱक् कुविन्द वन्गण्
तलैहळै नोक्कुम् वीरर् शरङ्गळै नोक्कुन् ताक्कि
उलैहॊळ्वॆम् बॊऱियि नुक्क पडैक्कलत् तॊळुक्कै नोक्कुम्
शिलैहळै नोक्कु नाणेऱ् ऱिडियिनैच् चॆवियि नेऱ्कुम् 2402

मलैकळै नोक्कुम्-पर्वतों को देखता; मऱ्ऱु-और; अव् वान् उऱ-उस आकाश तक लगे; कुविन्त-ढेर लगे; वन् कण्-क्रूर आँखों वाले; तलैकळै नोक्कुम्-सिरों को देखता; वीरर्-वीरों के; चरङ्कळै-शरों को; नोक्कुम्-देखता; ताक्कि-टकराकर; उलै कॊळ्-भट्ठी के-से; वॆम् पॊऱियिन्-गरम अंगारों के साथ; उक्क-छितरे पड़े रहे; पटै कलत्तु ऒळुक्कै-हथियारों की पंक्तियों को; नोक्कुम्-देखता; चिलैकळै नोक्कुम्-धनुओं को देखता; नाण् एऱ्ऱु-डोरा टंकोरने से उत्पन्न; इटियिनै-अशनि-स्वर को; चॆवियिन् एऱ्कुम्-कानों पर (सुन) लेता। २४०२

वह पर्वतों को देखता और आकाश तक ढेर में रहे क्रूर आँखों के सिरों को देखता। वीरों (राम-लक्ष्मण) के शरों का बल सोचता। टकराने से गरम अंगारों के साथ गिरे पड़े रहे हथियारों की पंक्तियाँ देखता। उन वीरों के धनुओं को देखता और उनके डोरों से उत्पन्न अशनि-नाद श्रवण करता। २४०२

आयिरन् देरै याड लानैयै यलङ्गन् मावै
आयिरन् दलैयै याऴिप् पडैहळै यऱुत्तु मप्पाऱ्
पोयिन बहऴि वेहत् तन्मैयैप् पुरिन्दु नोक्कुम्
पायुम्वॆम् बहऴिक् कॊन्ऱुङ् गणक्किलाप् परप्पैप् पार्क्कुम् 2403

आयिरम् तेरै-हजार रथों को; आटल् आनैयै-मजबूत हाथियों; अलङ्कल् मावै-नाचनेवाले घोड़ों को; आयिरम् तलैयै-हजार (वीरों के) सिरों को; आऴि पटैकळै-और नाशकारी हथियारों को; अऱुत्तुम्-काटकर भी; अप्पाल् पोयिन पकऴि-आगे जानेवाले अस्त्रों की; वेकत् तन्मैयै-वेग-गति को; पुरिन्तु नोक्कुम्-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चाव के साथ देखता; पायुम्–सवेग चलनेवाले; वॅम् पकळिक्कु–भयंकर शरों का; कणक्कु ऑन्ऱुम् इला–अमाप; परप्पै पार्क्कुम्–विस्तार देखता। २४०३

उसने देखा कि बाण हज़ार रथों, मज़बूत हाथियों, नाचनेवाले घोड़ों, वीरों के हज़ारों सिरों और नाशकारी हथियारों को काटकर भी नहीं रुकते। वह उनकी गति को चाव के साथ देखता और यह भी देखता कि त्वरित उनके सामने अपार विस्तार है। २४०३

अऱुबदु वॅळ्ळ माय वरक्करद माऱ्ऱऱ् केऱ्ऱ
ऍऱिवऩ वॅय्व पॅय्व वॅऱ्ऱुऱु पडैह् ळियावुम्
पॊऱिवऩम् वॅन्द पॊलच् चाम्बराय्प् पोय दल्लाऱ्
चॅऱिवऩ विल्ला वाऱ्ऱैच् चिन्दयाऱ् ऱॅरिय नोक्कुम् 2404

अऱुपतु वॅळ्ळम् आय–साठ 'वॅळ्ळम्' के; अरक्कर् तम् आऱ्ऱऱ्कु एऱ्ऱ–राक्षसों के बल के योग्य; ऍऱिवऩ–फेंके जानेवाले; ऍय्व–चलाये जानेवाले; पॅय्व–बरसाये जानेवाले; ऍऱ्ऱु उऱु–पीटनेवाले; पटैकळ् यावुम्–सारे हथियार; पॊऱि वऩम् वॅन्त पोल–यन्त्रवन (कारखाना) जल गया हो, इस भाँति; चाम्पराय् पोयतु अल्लाल्–राख बनाना छोड़; चॅऱिवऩ इल्ला आऱ्ऱै–पास नहीं जाते यह हाल; चिन्तैयाल्–मन से; तॅरिय नोक्कुम्–सोचकर देखता। २४०४

साठ हज़ार वीरों ने कितने ही तरह के हथियार चलाये। फेंके जानेवाले, चलाये जानेवाले, पीटनेवाले, खोंसनेवाले, चुभोनेवाले, कितने ही हथियार थे पर वे सभी यंत्रवन के समान राख बनने के सिवा जाकर शत्रु पर नहीं लग सके। इन्द्रजित् इस बात को विस्मय के साथ सोचता। २४०४

वयिऱलैत् तोडि वन्दु कॊळुनर्मेऩ् महळिर् माळ्हिक्
कुयिऱलत् तुक्क वॅऩ्ऩक् कुळैहिऩ्ऱ कुळैवै नोक्कुम्
ऍयिऱलैत् तिडिक्कुम् बॅळ्वाय्त् तलैयिला वाक्कै यीट्टम्
पयिऱलैप् पऱवै पारिऱ् पडिहिलाप् परप्पैप् पार्क्कुम् 2405

वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटती हुई; ओटि वन्तु–भागती आकर; कॊळुनर् मेऩ्–पतियों के शरीरों पर; मकळिर् माळ्कि–स्त्रियाँ दुःखी होकर; कुयिऩ् तलत्तु उक्क ऍऩ्ऩ–कोयलें नीचे भूमि पर गिरी हों जैसे; कुळैकिऩ्ऱ–व्यथित होनेवालियों की; कुळैवै नोक्कुम्–व्यथा को देखते; ऍयिऱु अलैत्तु–दाँत पीसकर; इटिक्कुम्–शोर मचानेवाले; पेळ्वाय्–फटे मुखों के; तलै इला आक्कै–सिरहीन शरीरों (कबन्धों) के; ईट्टम्–झुण्डों का; पयिल्तलै–नाच और; पऱवै–पक्षियों का; पारिऩ् पटिकिला–भूमि पर न आने का; पटियै पार्क्कुम्–हाल देखता। २४०५

इन्द्रजित् उन स्त्रियों की व्यग्रता देखता, जो पेट पीटती हुई आतीं और अपने पतियों पर रोती हुई गिरतीं और आहत हो भूमि पर गिरी कोकिलाओं के समान व्यग्र होतीं। दाँत पीसते हुए गर्जन करनेवाले फटे-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

से मुखों के सिरों से हीन कबंध नाचते थे और उनसे डरकर पक्षी, भूमि पर उतर नहीं आते। इन्द्रजित् इसको भी देखता। २४०५

अङ्गद रऩन्द कोडि युळरॆऩु मऩुम ऩॆऩ्बार्क्
किङ्गिऩि युलह मॆल्ला मिडमिलै पोलु मॆऩ्ऩुम्
ऍङ्गुमिम् मऩिद रॆऩ्बा रिरुवरे कॊल्लॆऩ् ऱुऩ्ऩुञ्
जिङ्गवे ऱऩैय वीरर् गडुमैयैत् तॆरिहि लादाऩ् 2406

चिङ्क एऱ अऩैय–नर केसरी-सदृश; वीरर्–वीर (हनुमान और अंगद) के; कटुमैयै–वेग को; तॆरिकिलाताऩ्–जो जान नहीं पाया वह इन्द्रजित्; अङ्कतर्–अंगद; अऩऩ्त कोटि उळर्–अनंत कोटि हैं; ऍऩुम्–कहता; अनुमऩ् ऍऩ्पार्क्कु–हनुमान के लिए; इऩि–आगे; इङ्कु–यहाँ; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक में; इटम् इलै पोलुम्–स्थान नहीं है शायद; ऍऩ्ऩुम्–कहता; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; इ मऩितर् ऍऩ्पार्–ये नर-कथित; इरुवर् कॊल्–दोनों ही हैं क्या; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उऩ्ऩुम्–कहता। २४०६

केसरी-निभ वीर, हनुमान और अंगद की तेजी को इन्द्रजित् जान नहीं सका। इसलिए वह विस्मय के साथ कहता कि अनंत कोटि अंगद हैं और हनुमान के लिए दुनिया भर में गन्तव्य स्थान नहीं है। वह भी आश्चर्य किया कि क्या सर्वत्र राम और लक्ष्मण दो ही हैं ? । २४०६

आर्क्किऩ्ऱ वमरर् दम्मै नोक्कुमाङ् गवर्ह ळळ्ळित्
तूर्क्किऩ्ऱ पूवै नोक्कुन् दुडिक्किऩ्ऱ विडत्तो णोक्कुम्
बार्क्किऩ्ऱ तिशैह ळॆङ्गुम् पडुम्बिणप् परप्पैप् पाक्कुम्
ईर्क्किऩ्ऱ कुरुदि याऱ्ऱिऩ् यानैयिऩ् पिणत्तै नोक्कुम् 2407

आर्क्किऩ्ऱ–आनंदरव करनेवाले; अमरर् तम्मै–देवों को; नोक्कुम्–देखता; आङ्कु–वहाँ; अवर्कळ्–वे; अळ्ळि तूर्क्किऩ्ऱ–जो उठाकर फेंकते; पूवै नोक्कुम्–उन फूलों को देखता; तुटिक्किऩ्ऱ–फड़कनेवाले; इट तोळ्–बायें कंधे को; नोक्कुम्–देखता; पार्क्किऩ्ऱ तिचैकळ् ऍङ्कुम्–जहाँ देखता उन सभी दिशाओं में; पडुम्–दृष्टिगत होनेवाले; पिणम् परप्पै–लाशों के ढेरों को; पार्क्कुम्–देखता; कुरुति आऱ्ऱिऩ्–रक्त-नदी से; ईर्क्किऩ्ऱ–खींच लिये जानेवाले; यानैयिऩ् पिणत्तै नोक्कुम्–गजशवों को देखता। २४०७

वह आनंद-आरव करनेवाले देवों को देखता और उनके बरसाये हुए पुष्पों को देखता। फड़कनेवाली अपनी बायीं भुजा को देखता और लाशों के विस्तार को देखता, जो सभी दृष्टिगोचर दिशाओं में पाया जाता। उन गज-शवों को देखता, जो रुधिर-नदी में खींच लिये जाते। २४०७

आयिर कोडित् तेरु मरक्करु मॊऴिय वल्लार्
मायिरुञ् जेऩै यॆल्ला मायऩ्दवा कण्डुम् वल्लै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोयिऩ कुरक्कुत् ताऩ पुहुन्दिल दऩ्ऱे पॊऱ्ऱेऱ्त्
तीयवऩ् ऱऩ्मे लुळ्ळ पयत्तिऩाऱ् कलक्कन् दीरा 2408

आयिरम् कोटि–हज़ार करोड़; तेरुम्–रथों; अरक्करुम्–और राक्षसों को; ऑळिय–छोड़कर; अल्लार्–अन्यों की; मा इरु चेऩै ऍल्लाम्–बहुत बड़ी सेनाएँ, सारी; मायन्तवा कण्टुम्–मर गयीं देखकर; वल्लै–उतावली के साथ; पोयिऩ–जो गयी; कुरक्कु ताऩै–वानर-सेना; पॊऩ् तेर्–स्वर्णरथारूढ़; तीयवऩ् तऩ् मेल् उळ्ळ–दुष्ट (इन्द्रजित्) से; पयत्तिऩाल्–भय के कारण; कलक्कम् तीरा–भ्रम न दूर हुआ इसलिए; पुकुन्तिलतु–लौट नहीं आयी। २४०८

एक हज़ार करोड़ रथों और राक्षसों को छोड़कर अन्य सारी सेना मिट गयी। यह देखकर भी जो वानर-सेना भाग गयी थी, वह स्वर्ण-रथारूढ़ इन्द्रजित् से भय के कारण भ्रांति से न छूटकर लौट नहीं आयी। २४०८

तळप्पॆरुञ् जेऩै वॆळ्ळ मऱुबदुन् दलत्त दाह्
अळप्परुन् देरि ऩुळ्ळ दायिरक् कोडि याहत्
तुळक्कमि लाऱ्ऱल् वीरर् पॊरुदपोर्त् तॊळिलै नोक्कि
अळप्परुन् दोळैक् कॊट्टि यञ्जऩै मदलै यार्त्ताऩ् 2409

तळम् पॆरु चेऩै वॆळ्ळम्–दल-बद्ध बड़ी सेना के 'वॆळ्ळम्'; अऱुपतुम्–साठों; तलत्ततु आक–धराशायी हो गये; अळप्परुम् तेरिऩ्–अनंत रथों के वीरों का; उळ्ळतु–जो बचा रहा वह; आयिरम् कोटि आक–हज़ार कोटि का ही रहा; तुळक्कम् इल्–अचंचल; आऱ्ऱल् वीरर्–बलवान वीर; पॊरुत पोर् तॊळिलै–जो लड़े उस लड़ाई के कार्य को; नोक्कि–देखकर; अञ्चऩै मतलै–अंजनासुत ने; अळप्पु अरु–अमाप; तोळै कॊट्टि–अपने कंधों को ठोंककर; आर्त्ताऩ्–नाद उठाया। २४०९

दलबद्ध बड़ी राक्षस-सेना मिट्टी में मिल गयी। बेशुमार रथों की उस सेना के केवल एक हज़ार करोड़ ही बच सके। अचंचल मन के बलवान वीर राम और लक्ष्मण का यह अपूर्व युद्धकर्म देखकर अंजनासुत ने अपने अमाप कंधों को ठोंककर उच्च नर्दन किया। २४०९

आरिडै यऩुम ऩार्त्त वार्प्पॊलि यशऩि केळात्
तेरिडै निऩ्ऱु वीऴ्ऩ्दार् शिलर्शिलर् पडैहल् शिन्दिप्
पारिडै यिरुन्दु वीऴ्ऩ्दु पदैत्तऩर पैम्बॊ ऩिञ्जि
ऊरिडै निऩ्ऱु ळारु मुयिरिऩो डुदिरङ् गाऩ्ऱार् 2410

अरुमै इटै–अगम युद्धस्थल में; अनुमऩ् आर्त्त–हनुमान द्वारा उठाया गया; आर्प्पु ऑलि–नर्दन-स्वर (रूपी); अचऩि केळा–अशनिनाद सुनकर; चिलर्–कुछ राक्षस; तेर् इटै निऩ्ऱु वीऴ्ऩ्तार्–रथ से नीचे गिरे; चिलर्–कुछ; पटैकळ् चिऩ्ति–हथियार गिराकर; पार् इटै इरुन्तु–भूमि पर से ही; वीऴ्ऩ्तु–गिरकर; पतैत्तऩर्–छटपटाये; पचुमै पॊऩ् इञ्चि–चोखे स्वर्ण के प्राचीरों के मध्य; ऊर् इटै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निन्ऱुळारुम्–नगर में जो खड़े रहे उन्होंने भी; **उयिरितोटु उतिरम् कात्ऱार्**–अपने प्राणों के साथ रक्त वमन किया। २४१०

कठोर युद्धस्थल में हनुमान ने जो नारे लगाये, उनकी ध्वनि रूपी अशनि को सुनकर कुछ राक्षस रथों पर से नीचे गिर गये। कुछ राक्षस जो भूमि पर ही रहे अपने हथियार गिराकर भूमि पर गिरे और छटपटाये। चोखे सोने के प्राचीरों के मध्य लंका नगर में रहनेवाले राक्षसों ने भी अपने प्राणों के साथ रक्त का वमन कर दिया। २४१०

अञ्जिनीर् पोमि निन्ऱो रार्प्पॊलिक् कऴियर् पालिर्
वॆञ्जमम् विळैप्प ऎन्ऱो नीरुमिव् वीर रोडु
तुञ्जिनिर् पोलु मन्ऱो वॆन्ऱवर्च् चुळित्तु नोक्कि
मञ्जिनिर् करिय मॆय्या निरुवर्मे लॊरुवन् वन्दान् 2411

मञ्चिनिल्–मेघ से अधिक; **करिय मॆय्यान्**–काले रंग के शरीर के इन्द्रजित् ने; **इन्ऱु**–अब; **ओर्**–एक; **आर्प्पु ऒलिक्कु**–नारे के स्वर के सामने; **अऴियम् पालिर्**–मरनेवाले; **अञ्चिनीर्**–कायर; **पोमिन्**–(लौट के) चलो; **वॆम् चमम्**–कठोर युद्ध; **विळैप्पतु ऎन्ऱो**–करो कहाँ; **नीरुम्**–तुम भी; **इव् वीररोटु**–इन (मृतक) वीरों के साथ; **तुञ्चिनिर् पोलुम् अन्ऱो**–मर ही गये न; **ऎन्ऱु**–कहा और; **अवर् चुळित्तु नोक्कि**–उन पर कोपदृष्टि डालकर; **इरुवर् मेल्**–उन दोनों पर; **ऒरुवन्**–अकेले ही; **वन्तान्**–चढ़ आया। २४११

मेघ से भी काले रंग के इन्द्रजित् ने उनको डाँटा। एक ही नारे के सामने मरनेवाले, हे कायर लोगो! लौट चलो। कहाँ करोगे कठोर युद्ध? तुम भी इन (मृत) वीरों के साथ मर गये न। उन पर कोप-दृष्टि दौड़ाकर वह इन दोनों पर अकेले ही चढ़ आया। २४११

अक्कणत् तार्त्तु मण्डि यायिर कोडित् तेरुम्
पुक्कन नेमिप् पाट्टिऱ् किळिन्दन पुवन मॆन्नत्
तिक्कणि निन्ऱ यानै शिरम्बॊदि रॆऱियप् पारिन्
उक्कन विशुम्बिन् मीन्ग ळुदिर्न्दिडत् तेव रुट्क 2412

अ कणत्तु–उसी क्षण; **तिक्कु अणि निन्ऱ यानै**–दिशाओं के शृंगाररूप स्थित गजों के; **चिरम् पॊतिर् ऎऱिय**–सिर काँप उठें और; **विचुम्पिन् मीन्कळ्**–आकाश के नक्षत्र; **पारिन्**–भूमि पर; **उक्कु अन**–टूटे-से; **उतिर्न्तिट**–गिरें और; **तेवर् उट्क**–देव डरें, ऐसा; **आयिरम् कोटि तेरुम्**–हजार करोड़ रथ; **आर्त्तु मण्टि**–बड़े शोर के साथ पास आये और; **नेमि पाट्टिल्**–चक्रों के चलने से; **पुवनम् किळिन्तन ऎन्नत**–भूमि चिर गयी हो ऐसा; **पुक्कन**–युद्धस्थल में पहुँचे। २४१२

तभी दिशाओं के शृंगार, दिग्गजों के सिर काँपने लगे। आकाश के नक्षत्र भूमि पर चू पड़े। देवगण भयातुर हुए। अपने चक्रों को, मानो भूमि को चीरते हुए चलाकर एक हज़ार रथ युद्ध के मैदान में आ पहुँचे। २४१२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मार्ऱुमॊन् ऱिळैयवन् वळैविऱ् चङ्गरत्
तेऱ्ऱिनन् वणङ्गिनिन् ऱियम्बु वानिहल्
आऱ्ऱिन नरवुकॊण् डशैप्प वारमर्
तोऱ्ऱनॆ नॆऩ्ऱुकॊण् डुलहम् जॊल्लुमाल् 2413

वळै विल्–वक्र धनु को; चॆम् करत्तु–लाल हाथ में; एऱ्ऱिनन्–लिये हुए; वणङ्कि निऩ्ऱु–नमस्कार करके; इळैयवन्–छोटे (लक्ष्मण) ने; मार्ऱम् ऒऩ्ऱु–एक बात; इयम्पुवान्–कही; इकल् आऱ्ऱिनन्–वैर दिखानेवाले इन्द्रजित् के; अरवु कॊण्टु अचैप्प–नागपाश से बाँधने से; अरुमै अमर्–अगम युद्ध में; तोऱ्ऱनॆन्–हार गया; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उलकम् चॊल्लुम्–लोक (निंदा) कहेगा। २४१३

वक्र धनु को अपने लाल हाथ में लिये हुए लक्ष्मण ने नमस्कार करके श्रीराम से निवेदन किया कि वैरी इन्द्रजित् के नागपाश के बंधन से मैंने श्रेष्ठ युद्ध में हार खायी। इसको लेकर दुनिया मेरी निंदा करेगी। २४१३

काक्कवुङ् गिऱ्ऱिलन् काद नण्बरैप्
पोक्कवुङ् गिऱ्ऱिल नॊरुवन् पोय्प्पिणि
आक्कवुङ् गिऱ्ऱिलन् अमरि लारुयिर्
नीक्कवुङ् गिऱ्ऱिल नॆऩ्ऱु निऩ्ऱवाल् 2414

कातल् नण्परै–प्यारे मित्रों की; काक्कवुम्–रक्षा; किऱ्ऱिलन्–नहीं कर सका; पोक्कवुम् किऱ्ऱिलन्–(पाश को) हटा नहीं सका; ऒरुवन् पोय्–अकेले जाकर; पिणि आक्कवुम् किऱ्ऱिलन्–(इन्द्रजित् की) हानि भी नहीं कर सका; अमरिल्–युद्ध में; अरुमै उयिर्–प्यारे प्राण; नीक्कवुम् किऱ्ऱिलन्–त्याग भी नहीं सका; ऎऩ्ऱु निऩ्ऱतु–ऐसी निंदा स्थिर हो गयी है। २४१४

"वह प्यारे मित्रों को बचा नहीं सका। पाश नहीं हटा सका। अकेले जाकर इन्द्रजित् को कोई क्लेश भी नहीं दे सका, युद्ध में अपने प्राण भी नहीं छोड़ सका" यह निंदा की बात टिक गयी है। २४१४

इन्दिरन् पहैयॆनु मिवनै यॆऩ्शरम्
अन्दरत् तरुन्दलै यऱुक्क लादॆनिन्
वॆन्दॊऴिऱ् चॆय्हैयन् विरुन्दु माय्नॆडु
मैन्दरिऱ् कडैयॆनप् पडुवन् वाऴियाय् 2415

वाऴियाय्–आयुष्मान्; इन्तिरन् पकै ऎऩम्–इन्द्रशत्रु-कथित; इवनै–इसके; अरु तलै–अपूर्व सिर को; ऎऩ् चरम्–मेरा शर; अन्तरत्तु–आकाश में ही; अऱुक्कलातु ऎऩिन्–नहीं काटेगा तो; वॆम् तॊऴिल् चॆय्कैयन्–नृशंसकारी (यम) का; विरुन्तुम् आय्–अतिथि बनूँ और; नॆटु मैन्तरिल्–सम्मान्य लोगों में (गणना न पाकर); कटै–निकृष्ट; ऎऩ पटुवन्–कहा जाऊँ। २४१५

आयुष्मान्! इन्द्रशत्रु-कथित इसके बहुमूल्य सिर को मेरा शर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्तरिक्ष में ही नहीं काटे तो क्रूरकर्म यम के मेहमान बनकर जो गौरव समन्वित हुए उनमें मेरी गिनती नहीं होगी और मैं अति निकृष्ट रहूँगा। २४१५

निन्नुडै मुन्नरियान् नॅऱियि नीर्मैयान्
तन्नुडैच् चिरत्तैयॅन् शरत्तिऱ् ऱळ्ळिनार्
पॊन्नुडै वनैकळऱ् पॊलम्बॊऱ् ऱोळिनाय्
ऍन्नुडै यडिमैयु मिशैयिऱ् ऱामरो 2416

पॊन् उटै वनै–स्वर्णनिर्मित; कळल्–पायलधारी; पॊलम् पॊन् तोळिनाय्–स्वर्ण (-आभरणों) से अलंकृत कंधोंवाले; निन् उटै मुन्नर्–आपके ही सामने; यान्–मैं; नॅऱि इल् नीर्मैयान्–सन्मार्ग पर जाने का स्वभाव जिसका नहीं; तन्नुटै–उसके; चिरत्तै–सिर को; ऍन् चरत्तिल् तळ्ळिनाल्–अपने बाण से काट गिराऊँ तभी; ऍन् उटै अटिमैयुम्–मेरी दासता भी; इचैयिऱ्ऱु आम्–यशस्विनी होगी। २४१६

स्वर्ण-निर्मित वीर पायलधारी और स्वर्णाभरणालंकृत कंधों वाले! आपकी ही आँखों के सामने उस सन्मार्गप्रवेश-हीन इन्द्रजित् का सिर काट डालूँ, तभी मेरी दासता यशस्विनी होगी। २४१६

कडिदिनि लुलहॅलाङ् गण्डु निऱ्कवॅन्
अडुशर मिवन्ऱलै यऱुततिं लादॅनिन्
मुडियवॊन् ऱुणर्त्तुवॅ नुनक्कु नान्मुयल्
अडिमैयिन् पयनिहन् दऱुह आळियाय् 2417

आळियाय्–(आज्ञा-) चक्रधर; कटितिनिल्–जल्दी; उलकु ऍलाम्–सारे संसार के; कण्टु निऱ्क–देखते रहते; ऍन्–मेरा; अटु चरम्–संहारक शर; इवन् तलै–इसके सिर को; अऱुत्तिलातु ऍनिन्–नहीं काट दे तो; मुटिय–निश्चित रूप से; ऒन्ऱु उणर्त्तुवॅन्–एक बात बताऊँगा; उनक्कु–आपकी; नान् मुयल् अटिमैयिन्–मेरी प्रयत्नशील दासता का; पयन् इकन्तु अऱक–फल मुझे छोड़ जाए। २४१७

(आज्ञा) चक्रधारी! वेग के साथ, दुनिया के देखते, अगर मेरा संहारक बाण इसका सिर नहीं काटेगा तो मैं निश्चित रूप से एक बात बताऊँगा। मेरी प्रयत्नशील दासता का फल मुझे नहीं मिले। २४१७

वल्लव नव्वुरै वळङ्गु मेल्वैयिन्
अल्लनीङ् गिनमॅन वमर रार्त्तनर्
ऍल्लैयि लुलहमुम् यावु मार्त्तन
नल्लऱ मार्त्तदु नमनु मार्त्तननन् 2418

वल्लवन्–बलवान लक्ष्मण; अव् उरै–वह कथन; वळङ्कुम्–जब कर रहे थे; एल्वैयिन्–उस समय; अमरर्–देवों ने; अल्लल् नीङ्किनम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कष्ट से मुक्त हुए; ऍन्न–कहकर; आर्त्तनर्–आरव किया; ऍल्लै इल् उलकमुम् यावुम्–अनंत सभी लोकों ने, और अन्य सभी ने; आर्त्तनन–हो-हल्ला मचाया; नल् अऱम् आर्त्ततु–श्रेष्ठ धर्मदेवता ने नर्दन किया; नमनुम् आर्त्तनन्–यम ने भी आनंदनाद उठाया। २४१८

जब समर्थ लक्ष्मण ने यह बात कही तो देवों ने आनंद के साथ, "संकट-मुक्त हो गये" कहकर हो-हल्ला मचाया। अन्य जीवों ने भी उच्च स्वर में नर्दन किया। श्रेष्ठ धर्मदेवता के साथ यम भी आनन्द मनाने लगा। २४१८

मुऱुवल्वाण् मुहत्तिनन् मुळरिक् कण्णनुम्
अऱिवनी यडुवलॅन् इऱैदि यामॅन्निन्
इऱुदियुङ् गावलु मियऱ्ऱु मीशरुम्
वॅऱुवियर् वेऱिनि विळैवदि यादॅन्ऱान् 2419

मुळरि कण्णनुम्–कमलाक्ष भी; मुऱुवल्–मंदहास (से); वाळ् मुकत्तिनन्–शोभायमान श्रीमुख के होकर; अऱिव–बुद्धिमान; नी–तुम; अटुवल्–मारूँगा; ऍन्ऱु अनैति आम् ऍन्निन्–ऐसा संकल्प कर लोगे तो; इऱुतियुम्–संहार और; कावलुम्–पालन के काम; इयऱ्ऱुम् ईचरुम्–करनेवाले (शिव और विष्णु) देवता भी; वॅऱुवियर्–कुछ नहीं होंगे; इनि–अब; विळैवतु–होनेवाला; वेऱु यातु–दूसरा क्या होगा। २४१९

कमलाक्ष श्रीराम ने मन्दहास की छटा से दीप्त मुख वाले होकर कहा कि ऐ बुद्धिमान्! अगर तुम किसी को मारने का संकल्प करो तो सृष्टि के पालक और संहारक दोनों (विष्णु और शिव तुम्हारे सामने) कुछ नहीं होंगे, फिर उसे छोड़ क्या होगा ?। २४१९

शॊल्लदु केट्टडि तॊळुदु शुऱ्ऱिय
पल्पॆरुन् तेरॊटुम् मरक्कर् पण्णैयैक्
कॊल्वॆन्निङ् गन्नदु काण्डि कॊल्लन्न
ऒल्लैयि लॆळुन्दन्न नुवहै युळ्ळत्तान् 2420

अतु चॊल् केट्टु–वह शब्द सुनकर; अटि तॊळुतु–चरणों में नमस्कार करके; चुऱ्ऱिय–घेरे रहे; पल्–अनेक; पॆरु तेरॊटुम्–बड़े रथों और; अरक्कर् पण्णैयै–राक्षस-दलों को; इङ्कु कॊल्वॆन्–अभी मारूँगा; अन्नतु काण्टि–वह देखो; ऍन्न–ऐसा; उवकै उळ्ळत्तान्–उत्साहपूर्णमन हो; ऒल्लैयिल् ऎळुन्तनन्–झट उठा। २४२०

लक्ष्मण ने उनका कथन सुनकर उनकी चरण-वंदना करके दावे के साथ कहा कि इन्द्रजित् को घेरे रहनेवाले अनेक बड़े-बड़े रथों के साथ राक्षसों के विपुल दल को अभी मार दूँगा—वह देख लीजिए। यह कहकर वह आनन्दपूरित मन के साथ झट उठा। २४२०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अङ्गद नार्त्तत नशनि येऱैत, मङ्गुलिन् ऱदिर्न्दत वयवन् ऱेर्बुनै
शिङ्गमु नडुङ्गुऱत् तिरुवि नायहन् शङ्गमौन् ऱौलित्ततु कडलुन् दळ्ळुऱ 2421

वयवन् तेर्–वीर (इन्द्रजित् के) रथ से; पुनै–जुते; चिङ्कमुम्–सिंहों को भी; नटुङ्कुऱ–कँपाते हुए; मङ्कुल् निऱ्ऱ–मेघ से; अतिर्न्तत–शोर करनेवाले; अचनि एऱ अैत–तुमुल अशनिश्रेष्ठ के समान; अङ्कतन् आर्त्ततत्–अंगद ने नारे उठाए; कटलुम् तळ्ळुऱ–समुद्र को भी पीछे ढकेलते हुए (गर्जन में); तिरुविन् नायकन् चङ्कम् औऱ्ऱ–लक्ष्मीवान (लक्ष्मण का) शंख एक; औलित्ततु–ध्वनित हुआ। २४२१

तब अंगद ने ऐसा नाद उठाया कि वीर इन्द्रजित् के रथों से जुते हुए सिंह काँप उठें और वह शब्द मेघ-से नाद करनेवाले वज्र के समान हो। (विजय-) लक्ष्मीवान लक्ष्मण का एक शंख भी बज उठा, जिसके कारण समुद्र-गर्जन पिछड़ गया। २४२१

अॅऴुमऴुच् चक्कर मीट्टि तोमरम्
मुऴुमुरट् टण्डुवेन् मुशुण्डि मूविलै
कऴुवयिर् कप्पणङ् गवण्गल् कन्नहम्
विऴुमऴैक् किरट्टिविट् टरक्कर् वीशिनार् 2422

अॅऴु–खंभे (के आकार के हथियार); मऴु–परशु; चक्करम्–चक्र; ईट्टि–भाले; तोमरम्–तोमर; मुऴु मुरण्–पूर्ण सारयुक्त; तण्टु–गदा; वेल्–साँग; मुचुण्टि–मुशुण्डी; मूविलै कऴु–त्रिशूल; अयिल्–धारदार; कप्पणम्–"कप्पण"; कवण् कल्–ढेलेबाँस; कन्नकम्–कर्णक; विऴु मऴैक्कु इरट्टि–वर्षा के दुगुने (परिमाण में); अरक्कर्–राक्षसों ने; विट्टु वीचिनार्–चलाये। २४२२

राक्षसों ने निम्नलिखित हथियार आकाश से गिरनेवाले वर्षा के दुगुने रूप में चलाये:— खम्भे, परशु, चक्र, भाले, तोमर, बहुत मजबूत गदाएँ, शक्ति, मुशुंडी, त्रिशूल, तीक्ष्ण साँग, ढेलाबाँस और कर्णक। २४२२

मीनॅलाम् विण्णिनिन् ऱौरुङ्गु वीऴ्न्दॅन
वानॅला मण्णॅला मऱैय वन्दन
कानॅलान् दुणिन्दुपोय्त् तहर्न्दु कान्दिन
वेनिला नऩैयवन् बहऴि वॅम्मैयाल् 2423

वेनिलान्–वसंतनाथ; अऩैयवन्–जैसे (सुन्दर) के; पकऴि वॅम्मैयाल्–शरों की नाशक शक्ति से; मीन् अॅलाम्–सारे नक्षत्र; विण्णिन् निऱ्ऱ–आकाश से; औरुङ्कु वीऴ्न्ततु अॅन–एक साथ गिरे जैसे; वान् अॅलाम्–सारा आकाश; मण् अॅलाम्–और सारी पृथ्वी; मऱैय वन्तत–ढँकते जो आये; कान् अॅलाम्–हथियार सब; तुणिन्तु पोय्–भिन्न होकर; तकर्न्तु–चर होकर; कान्तित–प्रकाशहीन होते पड़े रहे। २४२३

वसंतदेवता के समान बड़े ही सुन्दर लक्ष्मण के बाणों की गर्मी से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सभी हथियार, जो आकाश के सारे नक्षत्र एक साथ नीचे गिरे जैसे आकाश और भूमि को ढकते हुए आ रहे थे, कटे, चूर हुए और कांति खो पड़े रहे। २४२३

आयिरन् देरॊरु तॊडैयि नच्चिरुम्
पाय्बरिक् कुलम्बडुम् बाहर् पॊन्रुवर्
नायहर् नॆडुन्दलै तुमियु नामरत्
तीयॆऴुम् बुहैयॆऴु मुलहन् दीयुमाल् 2424

ऒरु तॊडैयिन्–एक खेप (बाण) से; आयिरम् तेर्–हज़ार रथ; अच्चु इऱुम्–धुरी-कटे हो गिरते; पाय् परि कुलम्–सरपट भागनेवाले घोड़ों के दल; पटुम्–मरते; पाकर् पॊन्ऱुवर्–सारथी मरते; नाम् अऱ–भय दूर करते हुए; नायकर् नॆटु तलै–नायकों के बड़े सिर; तुमियुम्–कट जाते; ती ऎऴुम्–आग निकलती; पुकै ऎऴुम्–धुआँ उठता; उलकम् तीयुम्–लोक जलते। २४२४

उनके एक बाण से हज़ार रथों की धुरियाँ टूट जातीं और वे गिर जाते। सरपट भागनेवाले अश्वदल धराशायी हो जाते। उनके सवार भी मर जाते। भय दूर करते हुए सेनापतियों के बड़े सिर कट कर गिरते। आग ऊपर उठती। धुआँ फैलता और लोक जल जाता। २४२४

अडियऱुन् देर्मुर णाऴि यच्चिरुम्
वडिनॆडुञ् जिलैयऱुम् वाशि मार्बऱुम्
कॊडियऱुङ् गुडैयऱुङ् गॊऱ्ऱ वीरर्दम्
मुडियऱु मुरशऱु मुहिलुम् शिन्दुमाल् 2425

तेर्–रथ का; अटि–निचला भाग; अऱुम्–टूट जाता; मुरण् आऴि–मज़बूत पहियों का; अच्चु इऱुम्–धुरी के साथ नाश हो जाता; वटि–चुना हुआ (श्रेष्ठ); नॆटु चिलै–दीर्घ धनु; अऱुम्–कट जाता; वाचि–अश्व; मार्पु अऱुम्–चिरे वक्ष के हो जाते; कॊटि अऱुम्–ध्वजा कट जाती; कुटै अऱुम्–छत्र कट जाते; कॊऱ्ऱम् वीरर् तम्–विजयी वीरों के; मुटि अऱुम्–सिर कट जाते; मुरचु अऱुम्–नगाड़े फट जाते; मुकिलुम् चिन्तुम–मेघ भी चू पड़ते। २४२५

रथ के निचले भाग दूर हो जाते। मज़बूत पहियों के साथ धुरी मिट जाती। चुने हुए दीर्घ धनुष कट जाते। अश्वों के वक्ष चिर जाते। ध्वजा कट जाती। छाता दूर हो जाता। विजयी वीरों के सिर चले जाते। नगाड़े का चमड़ा फट जाता। मेघ भी बिखरकर चूर हो जाते। २४२५

इन्नदो रुऱुप्पिवै यितय तेर्परि
मन्नव रिवरिवर् पडैञर् मऱुऴोर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्नवोर् तन्मैयुन् दॆरिन्द दिल्लैयाल्
शिन्नबिन् नङ्गळाय् मयङ्गिच् चिन्दलाल् 2426

चिन्न पिन्नङ्कळाय्–छिन्न-भिन्न हो; मयङ्कि चिन्तलाल्–मिश्रित और बिखरे रहने से; इन्नतु ओर् उऱुप्पु–यह यह अंग है; इवै इन्नैय तेर्–ये अमुक रथ हैं; परि–अश्व; इवर् मन्नवर्–ये राजा; इवर् पटैञर्–ये सैनिक हैं; मऱ्ऱुळोर्–अन्य है; ऍन्न–ऐसा; ओर् तन्मैयुम्–कोई भेद; तॆरिन्ततु इल्लै–नहीं जाना गया। २४२६

छिन्न-भिन्न होकर सभी अंग छितर गये थे, इसलिए यह कौन सा अंग है ? ये कैसे रथ हैं या अश्व हैं ? ये ही राजा हैं। ये वीर हैं या ये अन्य हैं। —इस तरह का कोई विवेक नहीं हो सकता था। २४२६

तन्दैयर् तेरिडैत् तन्नयर् वन्ऱलै
वन्दन तादैयर् वयिर वान्शिरम्
शिन्दिन कादलर् तेरिऱ् चिन्नमाय्
अन्दरत् तम्बॊडु मऱ्ऱॆ ळुन्दन 2427

चिन्नमाय्–खण्डों के रूप में; अऱ्ऱ–कटकर; अम्पॊटु–बाणों के साथ; अन्तरत्तु ऍळुन्तन–आकाश में जो गये वे; तन्नयर् वल् तलै–पुत्रों के कठोर सिर; तन्तैयर् तेर् इटै–पिताओं के रथों में; वन्तन–आ गिरे; तातैयर–पिताओं के; वयिरम् वान् चिरम्–वृहत् वज्र-सिर; कातलर् तेरिल्–पुत्रों के रथों में; चिन्तिन–गिरे। २४२७

पुत्रों के कठोर सिर छिन्न होकर अस्त्र के साथ जो आकाश में गये, वे उनके पिताओं के रथों के आगे आ गिरे। पिताओं के वृहत् वज्र-सिर पुत्रों के रथों में पाये गये। २४२७

शॆम्बॆरुङ् गुरुदियिऱ् ऱिहळ्न्द शॆङ्गण्मीन्
कॊम्बॊडुम् बरवैयिऱ् ऱिरियुङ् गॊट्पॆन्नत्
तुम्बैयन् दॊडैयलर्त् तडक्कै तूणिवाङ्
गम्बॊडुन् दुणिन्दन निलैयॊ डऱ्ऱन 2428

तूणि–तूणीर से; वाङ्कु अम्पॊटुम्–जिसको निकालते रहे उस बाण के साथ; निलैयॊटु अऱ्ऱन–अपनी स्थिति से जो कट गये वे; तुम्पै अम् तॊटैयलर्–'तुंबै' (नामक युद्धद्योतक) फूलों की माला से अलंकृत राक्षसों के; तट कै–बड़े हाथ; चॆम् कण् मीन्–लाल आँखों के मत्स्य; कॊम्पॊटुम्–सींगों के साथ; परवैयिल् तिरियुम्–सागर में घूमते; कॊट्पु ऍन्न–जैसे, उसी प्रकार; चॆम्–लाल; पॆऱु–बड़े; कुरुतियिल्–रक्त-प्रवाह में; तिकळ्न्त–रहे। २४२८

तूणीर से कुछ राक्षस अस्त्र निकाल रहे थे, उसी स्थिति में उन "तुम्बै" मालाधारी राक्षसों के हाथ कट गये। वे रक्त के प्रवाह में उन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बड़े मत्स्यों के समान दिखे, जो समुद्र में लाल आँखों और बड़े सींग के साथ घूम रहे हों। २४२८

तडिवऩ कॊडुञ्जरन् दळ्ळत् तळ्ळुऱ
मडिवऩ कॊडिहळुङ् गुडैयु मऱ्ऱवुम्
वॆडिपडु कडऩिहर् कुरुदि वॆळ्ळत्तिऱ्
पडिवऩ वॊत्तऩ पऱवैप् पऩ्मैय 2429

तटिवऩ–काटने का काम करनेवाले; कॊटु चरम्–क्रूर शरों के; तळ्ळ तळ्ळुऱ–अधिक परिमाण में काटने से; मटिवऩ–जो नाश हुए; कॊटिकळुम् कुटैयुम्–वे ध्वजाएँ और छत्रियाँ; मऱ्ऱवुम्–और अन्य वस्तुएँ; वॆटि पटु–भयानक; कटल् निकर्–समुद्र-सम; कुरुति वॆळ्ळत्तिल्–रक्त के प्रवाह में; पटिवऩ–गिरनेवाले; पऩ्मैय–विविध और अनेक; पऱवै ऒत्तऩ–पक्षियों के सदृश रहे। २४२९

काटनेवाले भयंकर शरों ने सबको काट गिराया तो कटे छाते और कटी ध्वजाएँ और अन्य चीज़ें भयंकर समुद्र-सम रक्त-प्रवाह में गिरते हुए विविध पक्षियों के समान लगे। २४२९

शिऩ्दु रङ्गळिऩ् परुममुम् बहळियुऩ् देरुम्
कुऩ्दु वऩ्ऩॆडुञ् जिलैमुदर् पडैहळुङ् गॊडियुम्
इऩ्द ऩङ्गळा यिऱ्ऱ्दवर् विऴिक्कऩ लिलङ्ग
वॆऩ्द वॆम्बिणम् विऴुङ्गिऩ कळ्दुहळ् विरुम्बि 2430

चिऩ्तुरङ्कळिऩ् परुममुम्–गजों के कण्ठों के गद्दे; पकळियुम्–बाण; तेरुम्–रथ और; कुऩ्तु–(बाण जिन पर) बैठते हैं, वे; वल् ऩॆटु चिलै–कठोर और दीर्घ चाप; मुतल्–आदि; पटैकळुम्–हथियार; कॊटियुम्–ध्वजाएँ; इऩ्तऩङ्कळाय्–ईंधन बने; इऱ्ऱ्तवर् विऴि–मृतकों की आँखें; कतल् इलङ्क–आग बनीं; वॆऩ्त वॆम्पिणम्–जो पके उन (दुर्गन्धपूर्ण) घृणित लाशों को; कळुतुकळ्–भूतों ने; विरुम्पि–चाव के साथ; विऴुङ्कित–निगल लिये। २४३०

(युद्ध के मैदान में लाशें पकीं। कैसे? सुनिए।) गजों पर के गद्दे, रथ, कठोर और बड़े धनु आदि हथियार और ध्वजाएँ —ये सब ईंधन बने और मृतकों की आँखें अग्नि बनीं। तब लाशें पकीं और उनसे दुर्गन्ध फैली। उन लाशों को भूतगण चाव से निगलने लगे। २४३०

शिल्लि यूडऱच् चिदऱिऩ शिलशिल कोत्त
वल्लि यूडऱ मऱिऩ्दऩ पुरविहळ् मडियप्
पुल्लि मण्णिडैप् पुरण्डऩ शिलशिल पोराळ्
विल्लि शारदि यॊडुम्बडत् तिरिऩ्दऩ वॆऱिय 2431

चिल–कुछ रथ; चिल्लि ऊटु अऱ–पहियों के बीच से टूट जाने से; चितऱिऩ–छिन्न हुए; चिल–कुछ; कोत्त–बँधी हुई; वल्लि–(रास की) रस्सी के; ऊट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱ्-बीच में कट जाने से; मण् इटै मटिय-भूमि पर गिरकर मरें ऐसा; पुरविकळ्-अश्व; पुल्लि पुरण्टत्त-लगकर लोटे और; मऱिन्तत्त-मर गये; चिल चिल-कुछ-कुछ; पोर् आळ्-योद्धा; विल्लि-धनुर्धर; चारतियोटुम्-सारथी के साथ; पट-मरे तो; वॆऱिय तिरिन्तत्त-खाली घूमते रहे थे। २४३१

कुछ रथ पहियों के बीच से टूटने से टूटे। कुछ रथों की रस्सियों के टूटने से घोड़े भूमि पर गिरे और लुढ़क गये। कुछ रथ, योद्धा और धनुर्धर सारथियों के मर जाने से खाली घूम रहे थे। २४३१

अलङ्गु पत्मणिक् कदिरत्त कुरुदियि नळुन्दि
विलङ्गु शॆम्जुडर् विडुवत्त वॆळियिन्ऱि मिडैन्द
कुलङ्गॊळ् वॆय्यव रमर्क्कळत् तीयिडैक् कुळित्त
इलङ्गै मानहर् माळिहै निहर्त्तत्त विरदम् 2432

अलङ्कु-रह-रहकर प्रकाश देनेवाले; पत्मणि कतिरत्त-विविध रत्नों की कांति से भरे; कुरुतियित् अळुन्ति-रक्त में मग्न होकर; विलङ्कु-दिखनेवाले; चॆम् चुटर् विटुवत्त-लाल रंग की ज्योति देनेवाले; वॆळि इऱ्ऱि-रिक्त स्थान न छोड़कर; मिटैन्त इरतम्-जो सटे रहे वे रथ; कुलम् कॊळ्-समूह में रहे; वॆय्यवर्-क्रूर राक्षसों के; अमर् कळम् ती इटै-युद्धस्थल की आग में; कुळित्त-मग्न हुए; इलङ्कै मा नकर-उस लंका महानगर के; माळिकै निकर्त्तत्त-महलों के समान दिखे। २४३२

रह-रहकर प्रकाश छिटकानेवाले अनेक रत्नों-सहित अनेक रथ रक्त में मग्न होकर लाल रोशनी फैला रहे थे। सटे हुए रहे वे उन लंका नगर के महलों के समान लगे, जो क्रूर राक्षसों के युद्ध के कारण उठी आग के मध्य रहते हों। २४३२

आत्त कालैयि त्तिरामनु मयिल्मुहप् पहळि
शोत्तै मारियिऱ् चॊरिन्दत्त नत्तुमत्तैत् तूण्डि
वात्त मात्तङ्गण् मऱिन्दॆत्त तेरॆला मडियत्
तानुन् देरुमे यायित्त त्तिरावणन् ऱत्तयन् 2433

आत्त कालैयित्-तब; इरामनुम्-श्रीराम ने भी; अनुमत्तै-हनुमान को; तूण्टि-उकसाकर; अयिल् मुकम्-तीक्ष्णमुखी; पकळि-शरों को; चोत्तै मारियिल्-लगातार वर्षा के समान; चॊरिन्तत्तत्-चलाया; वात्तम् मात्तङ्कळ्-आकाशचारी यान; मऱिन्तत्त-टूटकर गिरे जैसे; तेर् ऎलाम् मटिय-सारे रथ मिट गये तो; इरावणत् तत्तयन्-रावण का पुत्र; तानुम् तेरुमे आयित्तत्-अकेले रथ का और अकेला हो गया। २४३३

तब श्रीराम ने मारुति को आगे चलाया और तीक्ष्णमुखी शरों को घनघोर वर्षा के समान चलाया। देवयान टूटकर गिरे-जैसे सभी रथ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मटियामेट हो गये। और रावणपुत्र अपने अकेले रथ के साथ अकेला हो गया। २४३३

पल्वि लङ्गोडु पुरविहळ् पूण्डलेर्प् परवै
वल्वि लङ्गल्पो लरक्कर्दङ् गुळात्तोडु मडिय
विल्वि लङ्गिय वीररै नोक्किनन् वॆहुण्डान्
शॊल्वि लङ्गलन् शॊल्लिन निरावणन् ऱोन्ऱल् 2434

पल् विलङ्कोटु–विविध पशुओं के साथ; पुरविकळ् पूण्ट–जिनसे अश्व जुते थे; तेर् परवै–उन रथों का विस्तार; वल्–कठोर; विलङ्कल् पोल्–पर्वतों के समान; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; कुळात्तोटु–दलों के साथ; मटिय–मिटे तो; विल् विलङ्किय–धनुकर्म में जो पिछड़ गये उन; वीररै–वीरों को; नोक्कितन्–देख; वॆकुण्टान्–क्रुद्ध होकर; इरावणन् तोन्ऱल्–रावण के पुत्र ने; विलङ्कलन्–अपने स्थान से न हटकर; ऒरु चॊल्–एक बात; चॊल्लिनन्–कही। २४३४

विविध पशुओं और अश्वों से युक्त रथों का समूह मज़बूत पर्वतों के समान राक्षसदलों के साथ मिट गये। तब इन्द्रजित् धनुर्विद्या-विदग्ध श्रीराम और लक्ष्मण को तरेरकर अपनी स्थिति से नहीं हटते हुए एक बात कही। २४३४

इरुवि रॆन्नोडु पॊरुदिरो वन्ऱॆनि नेऱ्ऱ
ऒरुविर् वन्दुयिर् तरुदिरो वुम्बडै योडुन्
बॊरुदु पॊन्ऱुदल् पुरिदिरो वुऱुवदु पुहलुम्
तरुव निन्ऱुमक् केऱ्ऱळ यानॆनच् चलित्तान् 2435

इरुविर् ऎन्नोटु पॊरुतिरो–दोनों मेरे साथ लड़ोगे; अन्ऱु ऎनिन्–नहीं तो; एऱ्ऱ–योग्य; ऒरुविर् वन्तु–एक आकर; उयिर् तरुतिरो–अपने प्राण दोगे; उम् पटैयोटुम्–अपनी सेना के साथ; पॊरुतु–युद्ध करके; पॊन्ऱुतल् पुरितिरो–मरने का काम करोगे; उऱुवतु पुकलुम्–जो करोगे वह करो; यान्–मैं; इन्ऱु–अब; उमक्कु एऱ्ऱळ–तुम्हारे योग्य बात; तरुवन्–करूँगा; ऎन–कहकर; चलित्तान्–झुँझलाया। २४३५

उसने पूछा— क्या तुम दोनों मेरे साथ लड़ोगे ? या योग्य एक आकर मरना चाहोगे या अपनी सेना-सहित लड़कर यम के मेहमान बनना चाहोगे ? अपना निर्णय कहो। जो माँगो वही दूँगा। इन्द्रजित् झुँझलाया। २४३५

वाळिऱ् ऱिणशिलैत् तॊळिलिनिन् मल्लिनिन् मऱ्ऱै
आळुऱ् ऱॆणणिय पडैक्कल मॆवऱ्ऱिनु ममरिल्
कोळुऱ् ऱुन्नोडु कुरित्तमर् शॆय्दुयिर् कॊळ्वान्
शूळुऱ् ऱेनिदु शरदमॆन् ऱिलक्कुवन् शॊन्नान् 2436

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाळिल्–तलवार से; तिण् चिलै तॊऴिलितिल्–सुदृढ़ धनुकर्म से; मल्लितिल्–मल्लयुद्ध करके; मऱ्ऱै–अन्य; आळ् उऱ्ऱु–दक्ष होकर; ऍण्णिय–गण्य; पटै कलम् ऍवऱ्ऱिनुम्–सभी हथियारों से; अमरिल्–युद्ध में; कोळ् उऱ्ऱु–बल दिखाकर; उन्नॊटु कुऱित्तु–तुम्हारा सामना करके; अमर् चॆय्तु–युद्ध करके; उयिर् कॊळ्वान्–प्राण हरने को; चूळ् उऱ्ऱेन्–सौगंध खायी है; इतु चरतम्–यह निश्चित है; ऍन्ऱु–ऐसा; इलक्कुवन् चॊन्नान्–लक्ष्मण ने कहा। २४३६

तब लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि मैंने ही शपथ खायी है कि तलवार, धनु, मल्लयुद्ध में और अन्य हथियारों द्वारा तुम्हारा सामना करूँ और तुम्हारे प्राण हर लूँ। २४३६

मुन्पि इऱन्दनिन् ऱमैयनै मुऱैतविर्त् तुन्नक्कुप्
पिन्पि ऱन्दव नाक्कुवॆन् पिन्पिऱन् दोयै
मुन्पि ऱन्दव नाक्कुवॆ निदुमुडि येन्नेल्
ऍन्पि ऱन्दव नाऱ्पय निरावणऱ् कॆन्ऱान् 2437

मुन् पिऱन्त–पहले जनमे; निन् तमैयनै–तुम्हारे अग्रज को; मुऱै तविर्त्तु–क्रम भंग करके; उन्नक्कु पिन्पु–तुम्हारे बाद; इऱन्तवन् आक्कुवेन्–मरनेवाला बना दूँगा; पिन् पिऱन्तोयै–अनुज को; मुन्पु इऱन्तवन् आक्कुवॆन्–पहले मरनेवाला बनाऊँगा; इतु–यह; मुटियेन्नेल्–न कर चुकूँ तो; इरावणऱ्कु–रावण के पुत्र के रूप में; पिऱन्ततनाल् पयन् ऍन्–जनमने से क्या लाभ; ऍन्ऱान्–कहा रावणि ने। २४३७

तब रावणि ने जवाब दिया कि अब मैं अग्रज अनुज का क्रम तोड़कर पहले तुमको मार दूँगा और अनुज को अग्रज (पहले जानेवाला) और अग्रज को अनुज बना दूँगा। अगर यह न करूँ तो रावण का पुत्र बनने से क्या लाभ हुआ ? । २४३७

इलक्कु वन्नॆनुम् बॆयरुन्नक् कियैवदे यॆन्न
इलक्कु वन्गणॆक् काक्कुवं निडुपुहुन् दिडैये
विलक्कु वॆन्नॆन विडैयवन् विलक्किनुम् वीरम्
कलक्कु वॆन्निदु काणुमुन् ऱमैयनुम् कण्णाल् 2438

इलक्कुवन्–'इलक्कुवन्' (लक्ष्मण का तमिऴ रूप); ऍनुम् पॆयर्–का नाम; उन्नक्कु इयैवते–तुम्हारे लिए युक्त है; ऍन्न–ऐसा; वन् कणॆक्कु–कठोर शर का; इलक्कु आक्कुवॆन्–'इलक्कु' (लक्ष्य) बनाऊँगा; इतु–यहाँ; इटैये पुकुन्तु–बीच में घुसकर; विलक्कुवॆन्–रोक लूँगा; ऍन–कहकर; विटैयवन्–ऋषभवाहन; विलक्किनुम्–रोकेगा तो भी; वीरम् कलक्कुवॆन्–उसकी वीरता को बेकार कर दूँगा; इतु–यह; उन् तमैयनुम्–तुम्हारा बड़ा भाई भी; कण्णाल् काणुम्–अपनी आँखों से देख लेगा। २४३८

"इलक्कुवन्" के तुम्हारे नाम को सार्थक बनाकर मैं तुम्हें अपने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बाण का "इलक्कु" (लक्ष्य) बना दूँगा। ऋषभवाहन शिव भी क्यों आड़े आवें, उनकी वीरता को बेकार कर दूँगा। यह मेरी करामात तुम्हारा बड़ा भाई देखेगा। (इलक्कुवन् "लक्ष्मण" शब्द का तमिळ रूप है। उस शब्द के आधार पर कम्बन श्लेष का प्रयोग करते हैं।)। २४३८

अऱुब दाहिय वॆळ्ळत्ति नरक्करै यम्बाल्
इऱुव दाक्किय विरण्डुविल् लिन्नरुङ्गण् डिरङ्ग
मऱुव दाक्किय वॆळ्ळबदु वॆळ्ळमु माळ
वॆऱुवि दाक्कुव नुलहिनैक् कणत्तिलोर् विल्लाल् 2439

अऱुपतु वॆळ्ळत्तिनर्-साठ 'वॆळ्ळम्'; आकिय-के जो थे; अरक्करै-उन राक्षसों को; अम्पाल्-बाणों से; इऱुवतु आक्किय-जिन्होंने अन्त करा दिया उन; इरण्टु विल्लिनरुम्-दोनों धनुर्धर; कण्टु इरङ्क-देखकर बेचैन हों ऐसा; मऱुवतु आक्किय-(राक्षसों पर) जिन्होंने कलंक लगवा दिया; ऎळुपतु वॆळ्ळमुम्-वे सत्तर 'वॆळ्ळम्'; माळ-मर जाएँ ऐसा; ओर् कणत्तिनिल्-एक क्षण में; विल्लाल्-अपने धनु से; उलकिनै-संसार को; वॆऱुवितु आक्कुवॆन्-खाली करा दूँगा। २४३९

तुम दोनों धनुर्धरों ने साठ 'वॆळ्ळम्' राक्षसों को अपने बाणों से निर्मूल कर दिया। अब तुम दोनों देखकर तरसो, इस तरह मैं राक्षस-कलंकदायक सत्तर 'वॆळ्ळम्' वानर-सेना को मिटा दूँगा और अपने धनु से संसार को रिक्त करा दूँगा। २४३९

कुम्ब कन्नन्नॆन् ऱोरुवनी रम्बिडैक् कुऱैत्त
तम्बि यल्लना निरावणन् महनोरु तमियेन्
ऎम्बि मारुक्कु मॆन्शिऱु तादैक्कु मिरुविर्
शॆम्बु णीर्कोडु कडन्गळिप् पेन्नॆन्ऱु तॆरिन्तान् 2440

नीर् अम्पिटै कुऱैत्त-तुम लोगों ने अपने बाणों से जिसको काटा; कुम्पकन्नन् ऎन्ऱु ओरुवन्-वह कुंभकर्ण नाम का एक; तम्पि अल्लन् नान्-छोटा भाई नहीं हूँ मैं; इरावणन् मकन्-मैं तो रावण का पुत्र हूँ; ओरु तमियेन्-अलग रूप से (श्रेष्ठ) हूँ मैं; ऎम्पिमारुक्कुम्-अपने छोटे भाइयों के लिए और; ऎन् चिऱु तादैक्कुम्-अपने चाचा के लिए; इरुविर्-तुम दोनों के; चॆम् पुण् नीर् कोटु-रुधिरजल से; कटन् कळिप्पॆन्-तर्पण-क्रिया करूँगा; ऎन्ऱु-ऐसा; तॆरिन्तान्-बताया (इन्द्रजित् ने)। २४४०

मैं रावण का भाई कुम्भकर्ण नहीं हूँ, जिसे तुमने अपने बाण से मारा था। मैं रावण का पुत्र हूँ। बल्कि (अन्य पुत्रों से) अलग हूँ। मैं तुम लोगों के रक्त से अपने छोटे भाइयों और चचा का तर्पण-कृत्य करूँगा। २४४०

अरक्क रॆन्बदोर् पॆयर्पडैत् तवर्क्कॆला मडुत्त
पुरक्कु नन्कडन् शॆयवळन् वीडणन् पोन्दान्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करक्कु नुन्दैक्कु नीशैयक् कडवत कडन्गळ्
इरक्क मुऱ्ऱनक् कवन्शेयु मॅन्ऱन तिळैयोन् 2441

अरक्कर् ऍन्पतु–राक्षस का; ओर् पॅयर् पटैत्तवर्कट्कु ऍल्लाम्–एक नाम जिनका है उन सभी के लिए; अटुत्त–अवश्यम्भावी; पुरक्कुम्–परलोक-क्षेमकारी; नल् कटन्–श्रेष्ठ अपर कर्मों को; चॅय–करने के लिए; वीटणन्–विभीषण; पोन्तान् उळन्–आया है; करक्कुन् नुन्तैक्कु–छिपनेवाले तुम्हारे पिता के लिए; नी चॅय कटवत कटन्कळ्–तुम्हारे कर्तव्य कर्मों को; इरक्कम् उऱ्ऱु–दया करके; उत्तक्कु–तुम्हारे लिए; अवन् चॅयुम्–वह करेगा; ऍन्ऱतन् इळैयोन्–कहा छोटे ने। २४४१

तब लक्ष्मण ने यह उत्तर दिया। राक्षस नामधारी सभी लोगों का अवश्यम्भावी और शुभफलदायक तर्पणकृत्य करने के लिए विभीषण पहले ही इधर आकर तैयार है। तुम्हारे पिता का, जो तुम्हें करना है, वह कृत्य वह दया करके तुम्हारे लिए करेगा। २४४१

आत कालैयि नयिलॅयिऱ् ऱरक्कनॅऱ् जळन्ऱान्
वानुम् वैयमुन् दिशैहळु मियावैयु मऱैयप्
पानल् वेलैयैप् परुहुव शुडरमुहप् पहळि
शोनै मारियि निरुमडि मुम्मडि शॊरिन्दान् 2442

आत कालैयिन्–तब; अयिल् ऍयिऱ्ऱु–तीक्ष्ण दाँतों वाले; अरक्कन्–राक्षस (इन्द्रजित्) ने; नॅञ्चु अळन्ऱान्–मन में तप्त होकर; वानुम्–आकाश; वैयमुम्–भूमि और; तिचैकळुम्–दिशाओं और; यावैयुम्–सभी को; मऱैय–छिपाकर; नल् पाल् वेलैयै–श्रेष्ठ क्षीरसागर(-सम वानर-सेना) को; परुकुव–पीनेवाले; चुटर् मुकम्–प्रकाशमुख; पकळि बाणों को; चोनै मारियिन्–धारावाही वर्षा के; इरुमटि मुम्मटि–दुगुने, तिगुने; चॊरिन्तान्–बरसाए। २४४२

तब तीक्ष्ण दाँतों वाले इन्द्रजित् ने क्रुद्धमन होकर आकाश, भूमि और दिशाओं को छिपाते हुए क्षीरसागर-सम वानर-सेना को सोख सकनेवाले प्रकाश-मुख शरों को घनघोर वर्षा के दुगुने, तिगुने परिमाण में चलाया। २४४२

अङ्ग दन्ऱनमे लायिर मवर्ऱिनुक् किरट्टि
वॅङ्गण् मारुदि मेनिमेल् वेऱुळ वीरच्
चिङ्ग मन्नव राक्कैमे लुलप्पिल शॅलुत्ति
ऍङ्गुम् वॅङ्गणै याक्किन निरावणन् शिऱुवन् 2443

इरावणन् चिऱुवन्–रावण के पुत्र ने; अङ्कतन् तन् मेल्–अंगद पर; आयिरम्–हजार; अवर्ऱिनुक्कु इरट्टि–उनके दुगुने; वॅम् कण्–क्रोधारुणाक्ष; मारुति मेनि मेल्–मारुति के शरीर पर; वेऱु उळ–अन्य जो थे; वीर चिङ्कम् अन्नवर्–वीर केसरी-सम वीरों के; आक्कै मेल्–शरीरों पर; उलप्पिल–अनगिनत (शर); चॅलुत्ति–चलाकर; ऍङ्कुम् वॅम् कणै आक्किनन्–सर्वत्र भयंकर शरों से भर दिया। २४४३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रावणपुत्र ने अंगद पर एक हज़ार, अरुणाक्ष हनुमान पर दुगुने (दो हज़ार) और अन्य वीरों पर बेशुमार बाण चलाये और सभी स्थानों को भयंकर शरों से भर दिया। २४४३

इळैय मैन्दन्मे लिरामन्मे लिरावणि यिहलि
विळैयुम् वन्रिऱल् वानर वीरर्मेन् मॆय्युऱ्
ऱुळैयुम् वॆञ्जरञ् जॊरिन्दन नाळिहै यॊन्ऱु
वळैयु मण्डलप् पिऱैयॆन निन्ऱदव् वरिविल् 2444

इरावणि–रावणि; इळैय मैन्तन् मेल्–लघुराज पर; इरामन् मेल्–श्रीराम पर; इकलि विळैयुम्–विरोध में लगे; वल् तिऱल्–अति बलवान; वानर वीरर् मेल्–वानर वीरों पर; मॆय् उऱ्ऱु–शरीर में चुभकर; उळैयुम्–पीड़ा देनेवाले; वॆम् चरम्–क्रूर शरों को; चॊरिन्तनन्–बरसाया; वरि विल्–सबन्ध चाप; वळैयुम्–वक्र; मण्टलम् पिऱै ऎन–मंडल के अर्धचन्द्र-सम; नाळिकै ऒन्ऱु–एक घड़ी तक; निन्ऱतु–स्थिर रहा। २४४४

रावणि ने राम और लक्ष्मण पर और वैरी वानर वीरों पर जो शर चलाये, वे अतिक्रूर शर उनके शरीरों में घुसकर उनको बहुत दुःख देने लगे। इन्द्रजित् का टेढ़ा बना धनु अर्धचंद्र के समान लगा और एक घड़ी तक एक ही स्थिति में रहा (यानी लगातार एक घड़ी तक बाण चलाता रहा।)। २४४४

पच्चि मत्तिनु मुहत्तिनु मरुङ्गिनुम् बहळि
उच्चि मुऱ्ऱिय वॆय्यवन् कदिरॆन वुमिळक्
कच्च मुऱ्ऱवन् गैत्तुणैक् कडुमैयैक् काणा
अच्च मुऱ्ऱनर् कण्पुदैत् तडङ्गिन रमरर् 2445

उच्चि मुऱ्ऱिय वॆय्यवन्–मध्याह्न-सूर्य की; कतिर् अन–किरणों के सदृश; पकळि–गरम बाणों को; पच्चिमत्तिनुम्–पृष्ठ भागों में; मुकत्तिनुम्–मुख में; मरुङ्किनुम्–पार्श्वों में; उमिळ–चलाते हुए; कच्चम् उऱ्ऱवन्–संकल्पबद्ध इन्द्रजित् के; तुणै कै कटुमैयै–हस्तद्वय की गति को; काणा–देखकर; अमरर्–देवगण; अच्चम् उऱ्ऱनर्–डर गये; कण् पुतैत्तु–आँखें मूंदकर; अटङ्कितर्–संकुचित हुए। २४४५

आकाश-मध्य आये हुए मध्याह्न-सूर्य की किरणों के समान शरों को संकल्पबद्ध इन्द्रजित् ने शत्रुओं के पृष्ठ भाग में, मुखों पर और पार्श्वों में चलाया। उसकी हस्तगति देखकर देवगणों ने भय से अपनी आँखें मूंद लीं और संकुचित रह गये। २४४५

मॆय्यिऱ् पट्टन पडप्पडा दनवॆलाम् विलक्कित्
तॆय्वप् पोर्क्कणैक् कत्तुणैक् कत्तुणै शॆलुत्ति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐयऱ् काङ्गिळङ् गोळरि यऱिविला नऱैन्द
पॊय्यिऱ् पोम्बडि याक्कितन् कडिदितिऱ् पुक्कान् 2446

आङ्कु–तब; ऐयऱ्कु इळ कोळरि–श्रीराम के छोटे भ्राता केसरी-सम लक्ष्मण; कटितितिल्–शीघ्रता के साथ; पुक्कान्–पहुँचे; मॆय्यिल् पट्टत–शरीर पर लगे; पट पटातत–और जो न लगे उन्हें; ऍलाम्–सभी को; विलक्कि–रोककर; अऱम् इलान्–अधर्मी के; अऱैन्त पॊय्यिल्–कहे असत्य की तरह; तॆय्वम् पोर् कणैक्कु–दिव्य और युद्ध में प्रयुक्त अस्त्रों को; अ तुणैक्कु अ तुणै चॆलुत्ति–उतनों के लिए उतने चलाकर; पोम्पटि आक्कितत्–मिटा दिया। २४४६

तब श्रीराम के छोटे भाई सिंह-सम लक्ष्मण सवेग युद्धस्थल में आये। उन्होंने अपने शरीर पर लगे हुए अस्त्रों को और तभी आ रहे अस्त्रों को दूर करके शत्रु के दिव्य अस्त्रों को वे ही अस्त्र चलाकर बेकार कर दिया। २४४६

पिऱहि निन्ऱनन् पॆरुन्दहै यिळवलैप् पिरियान्
अऱनि दन्ऱॆन वरक्कन्मेऱ् चरन्दॊडुत् तरुळान्
इऱवु कण्डिल रिरुवरु मॊरुवरै यॊरुवर्
विऱहिन् वॆन्दॆन विशुम्बिडैच् चॆऱिन्दन विशिहम् 2447

पॆरुन्तकै–सम्मानित प्रभु ने; इतु अऱन् अन्ऱु–यह धर्म नहीं; ऍन–ऐसा; अरक्कन् मेल् चरम् तॊटुत्तु–राक्षस पर बाण चलाकर; अरुळान्–कृपा नहीं की; इळवलै पिरियान्–छोटे भाई से अलग नहीं हुए; पिऱकिल् निन्ऱनन्–पीछे खड़े रहे; इरुवरुम्–दोनों (लक्ष्मण और इन्द्रजित्) को; ऒरुवरै ऒरुवर्–एक-दूसरे पर; इऱवु कण्टिलर्–हावी आते किसी ने नहीं देखा; विचिकम्–विशिख; विऱकिन् वॆन्तॆन–लकड़ी जली जैसे; विचुम्पु इटै–आकाश-मध्य; चॆऱिन्तन–भर गये। २४४७

उदार प्रभु श्रीराम ने सोचा कि मेरा स्वयं बाण चलाना धर्म नहीं होगा, इसलिए उन्होंने स्वयं बाण चलाने की कृपा नहीं की। लेकिन वे अपने लघु सहोदर लक्ष्मण से अलग नहीं हुए। उनके पीछे पास ही रहे। लक्ष्मण और इन्द्रजित्, इनमें किसी को दूसरे पर हावी आते कोई देख नहीं सके। दोनों के विशिख लकड़ी के समान जलकर आकाश में भर गये। २४४७

माडॆ रिन्दॆऴुन् दिरुवर्दङ् गणैहळुम् वळङ्गक्
काडॆ रिन्दन कनवरै यॆरिन्दन कनह
वीडॆ रिन्दन वेलह् ळॆरिन्दन मेहम्
ऊडॆ रिन्दन वूळियि नॆरिन्दन वुलहम् 2448

इरुवर्–दोनों ने; तम् कणैकळुम्–अपने-अपने अस्त्र; वळङ्क–जो छोड़े; माटु–आसपास; ऍरिन्तु ऍऴुन्तु–जलते उठे तो; काटु ऍरिन्तत–जंगल जले;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कतम् वरै–बड़े पर्वत; ऍरिन्तत्त–जले; कत्तकम् वीटु–स्वर्णमहल; ऍरिन्तत्त–जले; वेलैकळ् ऍरिन्तत्त–समुद्र जले; मेकम् ऊटु ऍरिन्तत्त–मेघ के मध्य भाग जले; उलकम्–लोक; ऊळियित् ऍरिन्तत्त–युगान्त की अग्नि में जैसे जले। २४४८

जब दोनों ने बाण चलाये, तब वे बाण आसपास जलते हुए उठ चले। इसलिए आसपास के वन, बड़े-बड़े पहाड़, स्वर्णमय मकान, समुद्र, मेघों के अंदर के भाग और लोक युगांत की आग में जैसे जल उठे। २४४८

पडङ्गॊळ् पाम्बणै तुऱन्दवर् किळैयवत् पहळि
विडङ्गॊळ् वॆळ्ळत्तित् मेलत्त वरुवत्त विलक्कि
इडङ्ग रेऱत्त वॆऱुळ्वलि यरक्कत्तुऱे रिळुक्कुम्
मडङ्ग लैयिरु नूऱ्ऱैयुङ् गूऱ्ऱित्वाय् मडुत्तात् 2449

पटम् कॊळ्–फणयुक्त; पाम्पु अणै–शेष-शय्या; तुऱन्तवर्कु–जो छोड़ आये थे उनके; इळैयवत्–छोटे भाई; वॆळ्ळत्तित् मेलत्त–"वॆळ्ळम्" से भी अधिक; वरुवत्त–आनेवाले; विटम् कॊळ् पकळि–विषाक्त बाण; विलक्कि–रोककर; ऍऱुळ् वलि–अधिक मजबूत; अरक्कत् तेर्–राक्षस के रथ के साथ; इळुक्कुम्–उसको खींचनेवाले; इटङ्कर् एऱ अत्त–नर मगर के समान; मटङ्कल्–सिंहों; ऐ इरु नूऱ्ऱैयुम्–(पाँच × दो =) दस सौ को; कूऱ्ऱित् वाय्–यम के मुख में; मटुत्तात्–पहुँचा दिया। २४४९

फणीशेष-शय्या को जो छोड़ आये थे, उनके छोटे भाई लक्ष्मण ने 'वॆळ्ळम्' से भी अधिक संख्या में आनेवाले विषाक्त बाणों को रोका और बहुत मजबूत राक्षस के रथ के साथ उसको खींचनेवाले नर मगर के समान हजार सिंहों को मौत के घाट उतार दिया। २४४९

तेर ळिन्दिडच् चेमत्तेर् पिऱिदिलत् शॆऱिन्द
ऊर ळिन्दिडत् तनिनिन्ऱ कदिरव त्तॊत्तात्
पार ळिन्ददु कुरङ्गॆत्तुम् बॆयरॆत्तप् पदैत्तार्
शूर ळिन्दिडत् तुरन्दत्तत् शुडुशरञ् जॊरिन्दात् 2450

तेर् अळिन्तिट–रथ के नष्ट होने पर; चेमम् तेर्–आरक्षित रथ; पिऱितु इलत्–दूसरा नहीं रहा उसके पास; चॆऱिन्त–घने; ऊर् अळिन्तिट–परिवेश के मिटने पर; तनि निन्ऱ–अकेला दिखते; कतिरवत् ऒत्तात्–सूर्य के समान बना; चूर् अळिन्तिट–वीर्य कम हो गया; तुरन्ततत्त–रथ चलाया; कुरङ्कु ऎत्तुम् पॆयर्–वानर का नाम ही; पार् अळिन्ततु–भूमि पर मिट गया; ऎत्त–ऐसा सोचकर; पतैत्तार्–सब काँप उठे। २४५०

इन्द्रजित् का रथ बेकार हो गया। दूसरा आरक्षित रथ नहीं मिल रहा, तब वह परिवेश-रहित सूर्य के समान दिख रहा था। तो भी वह गरम बाणों को छोड़ता हुआ गलते वीर्य के साथ रथ चलाता बढ़ा। वानर का नाम ही अब दुनिया में न रह गया, यह सोचकर सभी लोग काँप उठे। २४५०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱ्ऱ तेर्मिशै निन्ऱुपो रङ्गद नलङ्गऱ्
कॉऱ्ऱत् तोळिनु मिलक्कुवन् पुयत्तिनुङ् गुळित्तु
मुऱ्ऱ वॅण्णिला मुरट्कणै तूर्त्तनन् मुरट्पोर्
ऑऱ्ऱैच् चङ्गॅडुत् तूदिना नुलहॅला मुलैय 2451

मुरण्पोर्–वैरीयुद्ध में; अऱ्ऱ तेर् मिचै निन्ऱ–भग्न रथ पर खड़े होकर; पोर् अङ्कतन्–योद्धा अंगद के; अलङ्कल्–माला पहने हुए; कॉऱ्ऱम् तोळिनुम्–विजय-भूषित कंधों पर; इलक्कुवन् पुयत्तिनुम्–लक्ष्मण की भुजाओं में; कुळित्तु मुऱ्ऱ–चुभकर मग्न हों ऐसा; वॅळ् निला–श्वेत अर्धचन्द्र-सम; मुरण् कणै–कठोर अस्त्र; तूर्त्तनन्–बहुत चलाये; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; उलैय–कँपाते हुए; ऑऱ्ऱै चङ्कु ॲटुत्तु–एक शंख लेकर; ऊतिनान्–फूँका। २४५१

वैरप्रेरित उस युद्ध में अंगहीन रथ पर खड़े होकर उसने समर-समर्थ अंगद के मालाधारी और विजयी कंधों पर और लक्ष्मण की भुजाओं पर चुभोते हुए अर्धचन्द्र बाण छोड़े और साथ-साथ एक शंख लेकर बजाया जिससे सारा लोक हिल गया। २४५१

शङ्ग मूदिय तशमुहन् ऱनिमहन् ऱरित्त
कङ्ग मापॅरुङ् गवशमु मूट्टऱक् कळल
वॅङ्ग डुङ्गणै यॅयिरण् डुरुमॅन वीशिच्
चिङ्गवे ऱन्न विलक्कुवन् शिलैयैना णॅऱिन्दान् 2452

चिङ्क एऱु अन्न इलक्कुवन्–नर केसरी-समान लक्ष्मण; चङ्कम् ऊतिय–शंख बजानेवाले; तचमुकन् तनिमकन्–दशमुख के श्रेष्ठ पुत्र के; तरित्त–पहने हुए; कङ्कम् आर् पॅरु कवचमुम्–स्वर्णमय बड़े कवच को; मूट्टु अऱ कळल–सन्धियाँ टूटकर अलग हो जाए ऐसा; वॅम् चुटु कणै–भयंकर और संदाहक बाण; ऐयिरण्टु–दस; उरुम् ॲन वीचि–अशनि के समान चलाकर; चिलैयै–धनु को; नाण् ॲऱिन्तान्–डोरा टंकोरकर ध्वनित किया। २४५२

नरकेसरी के समान लक्ष्मण ने दस संतापक अशनि-सम अस्त्र चलाकर शंख बजानेवाले दशमुख के श्रेष्ठ पुत्र के सोने के बड़े कवच की संधि काटकर गिरा दिया। उन्होंने शंखध्वनि के जवाब में धनु की ध्वनि निकाली। २४५२

कण्ड कार्मुहिल् वण्णनुङ् गमलक्कण् कलुळत्
तुण्ड वॅण्बिऱै निलवॅन मुऱुवलुन् दोन्ऱ
अण्ड मुण्डतन् वायिना लार्मिनॅन् ऱरुळ
विण्ड तण्डमॅन् ऱुलैन्दिड वार्त्ततनर् वीरर् 2453

कण्ट–देखकर; कार्मुकिल् वण्णनुम्–मेघश्याम ने भी; कमलम् कण् कलुळ–कमलनेत्र से आनंदाश्रु बहाकर; वॅळ् तुण्टम् पिऱै–श्वेत अर्धचन्द्र से; निलवु ॲन–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चाँदनी छूटती जैसे; मुऱुवलुम् तोन्ऱ्-मंदहास प्रकट करके; अण्टम् उण्ट-अण्ड-भक्षक; तन् वायिताल्-अपने मुख से; आर्मिन्-नारे लगाओ; ऍन्ऱ अरुळ-ऐसी कृपाज्ञा देने पर; वीरर्-वानर वीर; अण्टम् विण्टतु-अण्ड फट गया; ऍन्ऱ-ऐसा; उलैन्तिट-सब दहल उठें, ऐसा; आर्त्ततर्-नर्दन कर उठे। २४५३

उसको देखकर मेघश्याम श्रीराम के कमल-नेत्रों से आनंद के आँसू बह चले। एक मुस्कुराहट से अर्धचन्द्र की चाँदनी-सम प्रकाश फैला। उन्होंने अंडभक्षक अपने श्रीमुख से कहा कि नारे लगाओ। वानरों ने अंड को फाड़ते हुए और क्षोभ फैलाते हुए उच्च नर्दन किया। २४५३

कण्णि मैप्पदन् मुन्बुपोय् विशुम्बिडैक् करन्दान्
अण्णल् मऱ्ऱव नाक्कैकण् डऱिहिल नाहिप्
पण्ण वऱ्किवन् पिळैक्कुमेऱ् पडुक्कुनम् बडैयै
ऍण्ण मऱ्ऱिलै ययन्पडै तॊडुप्पॆन्ऱ् ऱिशैत्तान् 2454

कण् इमैप्पतन् मुन्पु-पलक मारने से पहले; पोय्-जाकर; विचुम्पिटै-आकाश में; करन्तान्-छिप गया (इन्द्रजित्); अण्णल्-महिमावान लक्ष्मण; अवन् आक्कै कण्टु अऱिकिलन् आकि-उसका शरीर न देख-समझ पाकर; इवन् पिळैक्कुमेल्-यह (जीवित) बचेगा तो; नम् पटैयै पटुक्कुम्-हमारी सेना का नाश करा देगा; मऱ्ऱ ऍण्णम् इलै-दूसरा विचार न हो; अयन् पटै-ब्रह्मास्त्र; तॊटुप्पॆन्-चलाऊँगा; ऍन्ऱ-ऐसा; पण्णवऱ्कु-श्रीराम से; इचैत्तान्-कहा। २४५४

इन्द्रजित् (डरकर) आकाश में जाकर छिप गया। महिमामय सुमित्रानंदन ने उसको न देखकर श्रीराम से कहा कि अगर यह जीता बचेगा तो हमारी सेना का नाश करा देगा, इसलिए कोई दूसरी चिंता न करके उस पर ब्रह्मास्त्र चला दूँगा। २४५४

आन्ऱ वन्नदु पुहऱलु मऱनिलै वळादाय्
ईन्ऱ वन्दणन् पडैक्कलन् दॊडुक्किलिव् वुलहम्
मून्ऱै युञ्जुडु मॊरुवनान् मुडिहल दॆन्ऱान्
शान्ऱ वन्नदु तविर्न्दन नुणर्वुडैत् तम्बि 2455

आन्ऱवन्-श्रेष्ठ लक्ष्मण के; अतु पुकऱलुम्-वह कहते ही; अऱम् निलै वळाताय्-धर्माविमुख; उलकम् ईन्ऱ अन्तणन्-लोक-सर्जक ब्राह्मण ब्रह्मा का; पटैक्कलम्-अस्त्र; तॊटुक्किल्-चलाओ तो; इव् उलकम् मून्ऱैयुम्-इन तीनों लोकों को; चुटुम्-जला देगा; ऒरुवनाल् मुटिकलतु-किसी से भी रोका नहीं जा सकेगा; ऍन्ऱान्-कहा; उणर्वुटै तम्पि-प्राज्ञ छोटे भाई; चान्ऱवन्-साधू ने; अतु तविर्न्तनन्-उसे बचा लिया। २४५५

मनुष्यश्रेष्ठ लक्ष्मण के ऐसा कहने पर श्रीराम ने उनसे कहा कि हे धर्माविमुख! लोकस्रष्टा के अस्त्र को जो छोड़ोगे तो वह तीनों लोकों को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जला देगा। उसका कोई निवारण नहीं कर सकेगा। सद्विचारक साधू लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्र चलाने का विचार छोड़ दिया। २४५५

मऱैन्दु पोय्निन्ऱ वञ्जनु मवरुडै मनत्तै
अऱिन्दु तॆय्ववान् पडैक्कलन् दॊडुप्पदऱ् कमैन्दान्
पिरिन्दु पोवदे करुममिप् पॊऴुदॆनप् पॆयर्न्दान्
शॆऱिन्द देवर्ह ळावलङ् कॊट्टिनर् शिरित्तार् 2456

मऱैन्तु पोय्–छिपे जाकर; निन्ऱ–जो रहा; वञ्चनुम्–वह वंचक भी; अवरुटॆय मनत्तै–उनके विचार को; अऱिन्तु–जानकर; तॆय्वम्–दिव्य; वान्–उत्तम; पटैकलम्–अस्त्र; तॊटुप्पतऱ्कु अमैन्तान्–चलाने का संकल्प करके; इप्पॊऴुतु–अब; पिऱिन्तु पोवते–अलग जाना ही; करुमम्–करणीय हैं; ऎन–सोचकर; पॆयर्न्तान्–वहाँ से हट गया; चॆऱिन्त तेवर्कळ्–जो भीड़ लगा रहे, उन देवों ने; आवलम् कॊट्टिनर्–ताल बजाये; चिरित्तार्–हँसे। २४५६

जो छिप गया उस इन्द्रजित् ने उनका मन जानकर खुद ब्रह्मास्त्र चलाने का संकल्प कर लिया। (उसकी कुछ पूर्वक्रियाएँ करने के लिए) "अब अलग जाना ही योग्य काम है" —यह सोचकर वह अलग चला गया। बड़ी भीड़ लगाये जो देव खड़े रहे वे हो-हल्ला मचाकर हँसे। २४५६

शॆञ्ज रत्तॊडु शेण्कदिर् विशुम्बिन्मेऱ् चॆल्ला
मञ्जिन् मामऴै पोयिन दामॆन मारु
अञ्जि नान्मऱैन् दानहन् ऱानॆन वार्त्तार्
वॆञ्जि नन्दरु कळिप्पिनर् वानर वीरर् 2457

चॆम् चरत्तॊटु–लाल बाण के साथ; चेण्–बहुत दूर; कतिर्–सूर्य जहाँ संचार करता है; विचुम्पिन् मेल् चॆल्ला–उस आकाश में जाकर; मञ्चिन् मा मऴै–काला जलगर्भ मेघ; पोयिनतु आम् ऎन–चला जैसे; मारु–(इन्द्रजित् के) चलने पर; वानर वीरर्–वानर वीरों ने; अञ्चिनान्–डर गया; मऱैन्तान्–छिप गया; अकन्ऱान्–हट गया; ऎन–कहकर; वॆञ्चिनम् तरु–क्रोध के साथ उत्पन्न; कळिप्पिनर्–आनंदित होकर; आर्त्तार्–नारे लगाये। २४५७

लाल रंग के बाण के साथ बहुत दूर आसमान में, जिसमें सूर्य संचार करता है, काले जल-भरे मेघ के समान चला गया। तब वानर वीरों ने धोखे में आकर यह समझ लिया कि इन्द्रजित् डर के कारण चला गया। उन्हें क्रूर कोप के साथ हँसी भी आयी। उन्होंने नारे लगाये। २४५७

उडैन्द वानरच् चेनैयु मोदनी रुवरि
अडैन्द दामॆन वन्दिरैत् तार्त्तॆऴुन् दाडित्
तॊडर्न्दु शॆन्ऱदु तोऱ्ऱवन् यावर्क्कुन् दोन्ऱाक्
कडैन्द वेलैपेरऱ् कलङ्गुऱु मिलङ्गैयिऱ् करन्दान् 2458

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उटैन्त–जो हार गये; वानर् चेनैयुम्–वह वानर-सेना; ओतम् नीर् उवरि–विपुल जल-सागर; अटैन्ततु आम् ऍत–टूट पड़ा हो जैसे; वन्तु–आकर; इरैत्तु आर्त्तु–ज़ोर के साथ शोर मचाकर; ऍळ्ळन्तु–उठकर; आटि–नाचकर; तोटर्न्तु चॅन्ऱ्रतु–लगातार गयी; तोऱ्ऱवन्–हारा हुआ इन्द्रजित्; यावर्क्कुम् तोन्ऱा–किसी का भी दृष्टिगोचर न होकर; कटैन्त वेलै पोल्–मथे समुद्र के समान; कलङ्कुऱुम्–व्यथित; इलङ्कैयिल्–लंका में; करन्तान्–छिप गया। २४५८

वानर-सेना, जो हारकर भागी थी, अधिक जल के सागर के समान ज़ोर-शोर के साथ वापस आयी और नाचते हुए बराबर गयी। हारने वाला इन्द्रजित् किसी की आँखों में न पड़कर मथे हुए सागर के समान क्षुब्ध लंका में आकर छिप गया। २४५८

अऱ्कॊ णान्मुहन् पडैक्कल मिवरॆन्मेल् विडामुन्
मुऱ्कॊळ् वेन्नॆ मुयऱ्चियन् मऱैमुऱै मॊळिन्द
शॊऱ्कॊळ् वेळ्विपोय्त् तॊडङ्गुवा नमैन्दवन् ऱुणिवै
मऱ्कॊ डोळव ऱुणर्न्दिल रवन्ऱिऱ मऱन्दार् 2459

मल्कॊळ् लोळवर्–भुजबली; अवन् तिऱम् मऱन्तार्–उसका सामर्थ्य भूल गये; ऍल् कॊळ्–उज्ज्वल; नान् मुकन् पटै कलम्–ब्रह्मास्त्र; इवर्–ये; ऍन् मेल् विटा मुन्–मुझ पर (न) चलाएँ इसके पहले ही; मुन् कॊळ्वेन्–मैं प्रथम हो जाऊँगा; ऍन्ऱुम् मुयऱ्चियन्–इस प्रयत्न में; मऱै मुऱै मॊळिन्त–वेदोक्त; चॊल् कॊळ्–मंत्र उच्चारण कर; वेळ्वि पोय् तॊटङ्कुवान्–यज्ञ जाकर आरम्भ करने के लिए; अमैन्तवन्–उद्यत जो हो गया; तुणिवै–उसका मनोबल; उणर्न्तिलर्–जान नहीं पाये। २४५९

भुजबली श्रीराम और लक्ष्मण इन्द्रजित् की शक्ति को भूल गये। इन्द्रजित् यह संकल्प लेकर गया था कि इनके मेरे ऊपर ब्रह्मास्त्र को चलाने से पहले मैं इन पर ब्रह्मास्त्र प्रेरित कर दूँगा। उसके लिए वेदोक्त कोई यज्ञ करना था, उसे संपन्न करने का उसका दृढ़ संकल्प इन्होंने नहीं जाना। २४५९

अनुम नङ्गदन् ऱॊळिनिन् ऱिळिन्दन राहित्
तनुवुम् वॆङ्गणैप् पुट्टिलुङ् गवशमुन् दडक्कैक्
किनिय कोदैयुन् दुऱन्दन रिरुन्दन रिमैयोर्
पनिम लर्त्तॊहै पॊळिन्दनर् वाळ्त्तॊलि परप्पि 2460

अनुमन् अङ्कतन्–हनुमान और अंगद के; तोळितिन्ऱ–कंधों से; इळिन्तवर् आकि–उतरकर; तनुवुम्–धनु; वॆम् कणै पुट्टिलुम्–भयानक बाणों के तूणीर; कवचमुम्–और कवच; तट कैक्कु–विशाल हस्तों के; इनिय कोतैयुम्–सुखद हस्तत्राण; तुऱन्ततर्–छोड़कर; इरुन्ततर्–रहे; इमैयोर्–देवों ने; वाळ्त्तॊलि परप्पि–बधाई के शब्द कहकर; पनि मलर्–शीतल पुष्प; तॊकै पॊळिन्ततर्–राशियाँ बरसायीं। २४६०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राम और लक्ष्मण, हनुमान और अंगद के कंधों से नीचे उतर आये। धनु, कठोर अस्त्रों के तूणीर, कवच, मधुर विशाल हस्तत्राण आदि उतार दिया। देवों ने स्तुति करके शीतल फूल बरसाये। २४६०

आर्त्त शेतैयि नमलैपोय् विशुम्बिनै यलक्क
ईर्त्त तेरॊडुङ् गडिदुशॆन् ऱानहन् ऱिरवि
तीर्त्ततन् मेलवन् ऱिशैमुहन् पडैक्कलञ् जॆलुत्तप्
पार्क्कि लेन्मुन्दिप् पडुवदे नन्ऱॆनप् पट्टान् 2461

आर्त्त चेतैयिन्–जिसने युद्धारव किये, उस सेना का; अमलै–शोर; पोय्–जाकर; विचुम्पिनै अलैक्क–आकाश को झकझोरने लगा तो; ईर्त्त तेरॊटुम्–(अश्वों द्वारा) खींचे जानेवाले रथ के साथ; इरवि–सूर्य; अकन्ऱु–हटकर; कटितु चॆन्ऱान्–तेजी से चला; तीर्त्ततन् मेल्–पवित्र लक्ष्मण पर; अवन्–उस (इन्द्रजित्) का; तिचैमुकन् पटैक्कलन्–ब्रह्मास्त्र; चॆलुत्त पार्क्किलेन्–चलाना नहीं देख सकूँगा; मुन्ति पटुवते नन्ऱु–पहले अस्त होना ही अच्छा है; ऎन्ऱ–सोचकर; पट्टान्–अस्त हुआ। २४६१

नारे उठानेवाली सेना के शोर ने आकाश को हिला दिया। सूर्य अश्वों के खींचे हुए रथ के साथ शीघ्र (अस्ताचल की ओर) चला। वह अस्त हुआ, मानो यह सोचकर कि "पवित्र लक्ष्मण पर इन्द्रजित् जो ब्रह्मास्त्र चलाएगा उसे देख नहीं सकूँगा, इसलिए पहले ही डूब जाना अच्छा है"। २४६१

इरवु नन्पह लुम्बॆरु नॆडुञ्जॆरु वियऱ्ऱि
उरवु नम्बडै मॆलिन्दुळ दरुन्दुदऱ् कुणवु
वरवु ताऴ्त्ततु वीडण वल्लैयि नेहित्
तरवु वेण्डिन नॆन्ऱनन् ऱामरैक् कण्णन् 2462

इरवुम्–रात; नन् पकलुम्–अच्छे दिन में; पॆरु–बड़ा; नॆटु–दीर्घ; चॆरु इयऱ्ऱि–युद्ध करके; उरवु नम् पटै–बलवान हमारी सेना; मॆलिन्तुळतु–निर्बल हुई है; अरुन्तुतुऱ्कु–खाने के लिए; उणवु–भोजन का; वरवु–आना; ताऴ्त्ततु–विलंबित हो गया; वीटण–विभीषण; वल्लैयिन् एक्कि–जल्दी जाकर; तरवु वेण्टिनॆन्–लाना यह चाहता हूँ; तामरै कण्णन्–कमलाक्ष ने; ऎन्ऱनन्–कहा। २४६२

तब श्रीराम ने विभीषण से कहा कि हमारी बड़ी सेना रात और दिन लम्बी लड़ाई करके निर्बल हो गयी है। भोजन के आने में विलम्ब हो रहा है। हे विभीषण! मैं चाहता हूँ कि जल्दी जाकर भोजन लाओ। अरुणाक्ष राम ने विभीषण से ऐसा कहा। २४६२

इन्न देकडि दियऱुवॆ नॆन्नत्तॊऴ् दॆऴुन्दान्
पॊन्निन् मौलियन् वीडणन् ऱमरॊडुम् बोनान्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कन्न लॊन्ऱिलोर् कङ्गुलिन् वेलैयैक् कडन्दान्
अन्न वेलैयि निरामनी ळिळैयवर् करैन्दान् 2463

पॊन्निन् मौलियन्-स्वर्णकिरीटी; इन्नत्ते-यह काम; कटितु-शीघ्र; इयऱ्ऱवॆन्-करूँगा; ऎन्ऱ-कहकर; तॊऴुतु ऎऴुन्तान्-नमस्कार कर उठा; तमरॊटुम् पोनान्-अपनों के साथ गया; कन्नल् ऒन्ऱिल्-एक घड़ी में; ओर् कङ्कुलिन् वेलैयै-एक रात के काम को; कटन्तान्-पूरा किया; अन्न वेलैयिल्-उस समय; इरामन्-श्रीराम; इळैयवऱ्कु-छोटे भाई से; ईतु अरैन्तान्-यों बोले। २४६३

स्वर्णकिरीटी, "अभी करूँगा" कहकर नमस्कार कर उठा। अपने लोगों को ले जाकर एक ही घड़ी में रात भर होनेवाले कार्य को कर दिया। तब श्रीराम ने अपने छोटे भाई से यों कहा—। २४६३

तॆय्व वान्पॆरुम् बडैहट्कु वरन्मुऱै तिरुन्दु
मॆय्कॊळ् पूशनै यियऱ्ऱिनम् विडुमिदु विदियाल्
ऐय नानिवै याऱ्ऱिनन् वरुवदो रळवुम्
कैहॊळ् शेनैयैक् कावॆनप् पोर्क्कळङ् गडन्दान् 2464

तॆय्वम्-दिव्य; वान्-बहुत; पॆरुपटै कट्कु-श्रेष्ठ अस्त्रों की; वरन् मुऱै-यथाक्रम; तिरुन्तु-सुव्यवस्थित; मॆय् कॊळ्-यथार्थ; पूचनै-पूजा; इयऱ्ऱिनम्-करके; विटुम्-(तभी) प्रयोग करें; इतु विति-यही विधि है; ऐय-तात; नान् इवै-मैं यह; आऱ्ऱिनेन्-पूरा करूँ; वरुवतु ओर् अळवुम्-और वापस आऊँ, उस समय तक; कै कॊळ् वेनैयै-व्यूहबद्ध सेना की; का-रक्षा करो; ऎन्ऱ-कहकर; पोर्क्कळम्-युद्ध के मैदान को; कटन्तान्-पार करके गया। २४६४

श्रेष्ठ और दिव्य अस्त्रों की यथाक्रम उत्कृष्ट और सच्ची पूजा करना, बाद उनको चलना, यही उचित क्रम है। मैं जाकर वह पूजा कर आऊँ, तब तक उन व्यूहगत सेना की रक्षा करो। यह सुनाकर श्रीराम युद्धस्थल पार कर अन्यत्र चले गये। २४६४

तन्दै यैक्कण्डु पुहुन्दुळ तन्मैयुन् दन्मेल्
मुन्दै नाळ्मुहन् पडैक्कलन् दॊडुक्कुऱ्ऱ मुऱैयुम्
शिन्दै युट्पुहच् चॆप्पिन नन्नैयवन् ऱिहैत्तान्
ऎन्दै यॆन्निनिच् चॆयत्तक्क दिशैयॆन्न विशैत्तान् 2465

तन्तैयै कण्टु-पिता को देखकर; पुकुन्तु उळ तन्मैयुम्-ओ हुआ वह; तन् मेल्-अपने ऊपर; मुन्तै-प्राचीन; नान् मुकन् पडैक्कलम्-और ब्रह्मा का अस्त्र; तॊटुक्कुऱ्ऱ मुऱैयुम्-चलाने सम्बन्धी (शत्रु का) भाव; चिन्तै उट्पुक-मन में लग जाए ऐसा; चॆप्पिनन्-कहा इन्द्रजित् ने; अन्नैयवन् तिकैत्तान्-रावण ठिठक गया; ऎन्तै-पिताजी; इति चॆय तक्कतु ऎन्-अब करना क्या है; इचै-कहो; ऎन्न इचैत्तान्-ऐसा पूछा। २४६५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्द्रजित् ने अपने पिता से मिलकर घटी हुई बातें और ब्रह्मास्त्र-सम्बन्धी शत्रु का विचार बताया। रावण यह सुनकर ठिठक गया और उसने पुत्र से पूछा कि तात ! अब क्या करना है ? बताओ। २४६५

तन्नैक् कॊल्वदु तुणिवरेऱ् इनक्कदु तहुमेल्
मुन्नर्क् कॊल्लिय मुयल्हवॆन् ऱऱिञरे मॊऴिन्दार्
अन्नप् पोरव रऱिवुऱा वहैमऱैन् दयन्ऱन्
वॆन्नप् पोर्प्पडै विडुदले नलमिदु विदियाल् 2466

तन्नै कॊल्वतु तुणिवरेल्–अपने को कोई (किसी को) मारना ठान ले तो; तन्नक्कु अतु तकुमेल्–(मारे जाने को जो है) उसे वह संभव हो तो; मुन्नर् कॊल्लिय मुयल्क–वह पहले मारने का यत्न करे; ऎन्ऱु अऱिञरे मॊऴिन्तार्–ऐसा पंडितों ने ही कहा है; अन्न पोर्–उस तरह के युद्ध को; अवर्–वे (नर); अऱिवुऱा वकै–न जानें, इस प्रकार; मऱैन्तु–छिपे रहकर; अयन् तन् वॆन्न पोर्प्पटै–ब्रह्म के युद्धास्त्र का; विटुतले–प्रयोग करना ही; नलम्–भला है; इतु वितियाल्–यही विधि के अनुकूल होगा। २४६६

इन्द्रजित् ने बताया कि विद्वानों का कथन है कि जो किसी को मारने का संकल्प करे तो हो सके तो वह (जिसे मारने का उद्देश्य है) पहले ही उसको मारने का प्रयत्न करे। मैं यह युद्ध, वे जान नहीं पायें ऐसा छिपा रहकर करूँ और ब्रह्मास्त्र चलाऊँ, यही अच्छा है। यह उचित भी है। २४६६

तॊडुक्किन् ऱेन्नॆन्ब दुणर्वरे लप्पडै तॊडुत्ते
तडुप्पर् काण्बरेऱ् कॊल्लवुम् वलत्तरत् तवत्तोर्
इडुक्कॊन् ऱाहिन्ऱु दिल्लैनल् वेळ्वियै यियऱ्ऱि
मुडिप्पॆं निन्ऱवर् वाऴ्वैयोर् कणत्तॆन्न मॊऴिन्दान् 2467

तॊटुक्किन्ऱेन्–चलानेवाला हूँ; ऎन्पतु–यह बात; उणर्वरेल्–जान लेंगे तो; अ पटै तॊटुत्ते–वही ब्रह्मास्त्र संधान कर; तटुप्पर्–रोक देंगे; काण्परेल्–(मुझे) देख लेंगे तो; अ तवत्तोर्–वे तपस्वी; कॊल्लवुम् वल्लर्–मार भी सकेंगे; इटुक्कु ऒन्ऱु–बीच में कुछ; आकिन्ऱतु इल्लै–होनेवाला नहीं है; नल् वेळ्वियै इयऱ्ऱि–अच्छा यज्ञ करके; अवर् वाऴ्वै–उनके जीवन को; इन्ऱु–आज ही; ओर् कणत्तु–एक क्षण में; मुटिप्पॆन्–समाप्त कर दूँगा; ऎन्न–ऐसा; मॊऴिन्तान्–कहा (इन्द्रजित्) ने। २४६७

अगर उन्हें मालूम हो जाय तो वे वही अस्त्र चलाकर उसको रोक देंगे। वे तपस्वी मुझे देख लेंगे तो मार भी सकेंगे। बीच में कुछ नहीं होगा। यज्ञ ठीक तरह से करूँगा और आज ही एक क्षण में उनके जीवन का अन्त कर दूँगा। इन्द्रजित् ने यों कहा। २४६७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्नै यन्नवर् अऱिन्दिला वहैशॆय लियऱ्ऱत्
तुन्नु पोर्प्पडै मुडिविला दवर्वयिऱ् ऱूण्डिन्
पिन्नै निन्ऱ्ऱु पुरिवॆन्न् ऱन्नवन् पेश
मन्नन् मुन्निन्ऱ महोदरऱ् किम्मॊऴि वऴङ्गुम् 2468

ऍन्नै–मुझे; अन्नवर्–वे; अऱिन्तिला वकै–न जानें इस प्रकार; चॆयल् इयऱ्ऱ–काम करूँ उसके लिए; तुन्नु–खूब घनी; पोर् पटै–व युद्ध करनेवाली सेना को; मुटिविलातु–अनंत रीति से; अवर् वयिन्–उन पर; तूण्टिन्–भेजेंगे तो; पिन्नै–फिर; निन्ऱ्ऱु–जो है; पुरिवॆन्–करूँगा; ऍन्ऱु–ऐसा; अन्नवन् पेच–इन्द्रजित् के कहने पर; मन्नन्–(लंका के) राजा ने; मुन् निन्ऱ–सामने स्थित; मकोतरऱ्कु–महोदर से; इ मॊऴि–यह बात; पकर्वान्–कही। २४६८

ताकि मैं उनकी आँख बचाकर यह काम करूँ, इसलिए अच्छी तरह युद्ध कर सकनेवाली घनी सेनाओं को उन पर धावा करने के लिए प्रेरित कर भेज दीजिए। तब मैं जो करना चाहता हूँ, वह करूँगा। इन्द्रजित् का वह कथन सुनकर राक्षसराज ने अपने सामने स्थित महोदर से यह बात कही। २४६८

वॆळ्ळ नूऱुडै वॆञ्जिनच् चेनैयै वीर
अळ्ळि लैप्पडै यहम्बन्ने मुदलिय वरक्कर्
ऍळ्ळि लॆण्णिलर् तम्मॊडु विरैन्दनै येहिक्
कॊळ्ळै वॆञ्जॆरु वियऱ्ऱुदि मनिदरैक् कुऱुहि 2469

वीर–वीर; अळ् इलै–घने पत्र के; पटै–भाले के हथियार वाले; अकम्पन् मुतलिय अरक्कर्–अकंप आदि राक्षस; ऍळ्ळिल्–तिल के समान; ऍण् इलर् तम्मॊटु–असंख्यक लोगों के साथ; नूऱु वॆळ्ळम् उटै–सौ 'वॆळ्ळम्' के; वॆम् चिनम्–कड़े क्रोध के; चेनैयै–वीरों की सेना को लेकर; विरैन्तनै एकि–शीघ्र जाकर; कॊळ्ळै–वीरों की जान लूटनेवाले; वॆम् चॆरु–कठोर युद्ध को; मनितरै कुऱुकि–नरों से जाकर; इयऱ्ऱुति–करो। २४६९

वीर ! पत्र-सिर भालेधारी अकम्प आदि, तिल भी नीचे न गिरे, ऐसे अनगिनत वीरों के साथ सौ 'वॆळ्ळम्' की रोषपूर्ण सेना को लेकर शीघ्र जाओ और उन नरों से ऐसा घोर युद्ध करो जिसमें जीवों को अपार परिमाण में मारा जाय। २४६९

मायै यॆन्ऱन्न वल्लन्न यावैयुम् वऴङ्गित्
तीयि रुट्पॆरुम् बरप्पिनैच् चॆऱिवुऱ्ऱत् तिरुत्ति
नीयॊ रुत्तन्ने युलहॊरु मून्ऱैयु निमिर्वाय्
पोयु रुत्तव रुयिर्कुडित् तुदवॆन्नप् पुहन्ऱान् 2470

नी ऒरुत्तन्ने–तुम्हीं एक; वल्लन्न–समर्थ; मायै ऍन्ऱन्न–"माया" कहलाने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाले; यावैयुम् वऴङ्कि-सभी कार्य करके; ती-बुरे; इरुळ् पॅरुम् परप्पिनै-अन्धकार के बड़े विस्तार को; चॅय्विऱ् तिरुत्ति-घने रूप से पैदा करके; उलकु ऑरु मूनृरैयुम्-तीनों लोकों में; निमिर्वाय्-विजयी होगे; पोय्-जाकर; उरुत्तवर्-हमसे रुष्टों के; उयिर् कुटिऱ्ऱु-प्राण पीकर; उतवु-उपकार करो; ऍऩ-ऐसा; पुकऩ्ऱान्-कहा (रावण ने)। २४७०

तुम ही अकेले बहुत शक्ति की सभी मायाओं को रचने और भयानक घना अंधकार-विस्तार बनाने में समर्थ हो। तीनों लोकों को जीत कर शानदार रह सकते हो। जाओ हमसे रुष्ट उनके प्राणों को पीकर हमारी सहायता करो। २४७०

ऍऩ्ऱ कालैयि ऩॅऩ्ऱकॉ लेवुव दॅऩ्ऱु
निऩ्ऱ वाळॅयिऱ् ऱरक्कऩु मुवहैयि निमिरऩ्वाऩ्
शॅऩ्ऱु तेर्मिशै येऱिऩ तिराक्कदर् शॅऱिऩ्दार्
कुऩ्ऱु शुऱ्ऱिय मदकरिक् कुलमऩ्ऩ कुऱियार् 2471

ऍऩ्ऱ कालैयिऩ्-उसके कहने पर; एवुवतु ऍऩ्ऱु कॉल्-आज्ञा होगी कब; ऍऩ्ऱु-कहकर (प्रतीक्षा में); निऩ्ऱ-जो रहा; वाळ् ऍयिऱु अरक्कऩुम्-तलवार-सदृश दाँतों वाला राक्षस भी; उवकैयिऩ् निमिरऩ्ऱाऩ्-संतोष के साथ सिर ऊँचा करके; चॅऩ्ऱु-जाकर; तेर्मिचै-रथ पर; एऱिऩऩ्-चढ़ा; कुऩ्ऱु चुऱ्ऱिय-पर्वत को घेरे आनेवाले; मतम् करि कुलम् अऩ्ऩ-मत्त गजवृन्द के समान; कुऱियार्-स्वभाव वाले; इराक्कतर् चॅऱिऩ्ऱार्-राक्षस बहुत आये। २४७१

जब लंकेश ने ऐसा कहा तो तलवार के समान दाँतों वाला महोदर, जो यही प्रतीक्षा कर रहा था कि कब मुझे आज्ञा मिलेगी, खुशी से फूल गया। सिर उठाकर गया और रथ पर आरूढ़ हो गया। पर्वत को घेरे रहनेवाले मत्त गजों के समान राक्षस सटे हुए मिल आये। २४७१

कोडि कोडिनू ऱायिर मायिरङ् गुऱित्त
आड लाऩैह ळणितौऱु मणितौऱु मऩैन्द
ओडु तेर्क्कुल मुलप्पिल वोडिवन् दुऱ्ऱु
केडिल् वाम्बरि कणक्कॅयुङ् गडन्दऩ किळर्न्द 2472

कोटि कोटि नूऱु आयिरम्-करोड़-करोड़, दस हजार; आयिरम्-हजार; कुऱित्त-गिने हुए; आटल् आऩैकळ्-बलवान हाथी; अणि तौऱुम् अणि तौऱुम् अऩैऩ्त-हर दल में रहे; ओटु तेर् कुलम्-त्वरितगामी रथवृन्द; उलप्पु इल-असंख्यक; ओटि वऩ्ऱु उऱ्ऱु-दौड़ के आये; केटु इल्-निर्दोष; वाम्परि-लपक चलनेवाले घोड़े; कणक्कॅयुम् कटऩ्ऱऩ-गणित को पार कर (बेशुमार रीति से); किळर्न्द-उमग उठे। २४७२

हर पलटन में कोटि-कोटि और लक्ष-लक्ष मजबूत हाथी रहे। त्वरितगामी रथसमूह बेशुमार थे। वे भी दौड़े आकर मिल गये। निष्कलंक वाजी गणना पार कर उमँग उठे। २४७२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पडैक्क लङ्गळुम् बरुमणिप् पूण्गळुम् बहुवाय्
इडैक्क लन्दपे रॅयिऱ्ऱिळम् बिऱैहळु मॅऱिप्पप्
पुडैप्प रन्दन वॅयिल्हळु निलाक्कळुम् बुरळ
विडैक्कु लङ्गळ्पो लिराक्कदप् पदादियु मिडैन्द 2473

पटै कलङ्कळुम्–हथियार और; परु मणि पूण्कळुम्–और मोटे रत्नों के आभरण; पकुवाय् इटै–फटे-से मुखों के बीच से; कलन्त–जो मिले रहे; पेर् ॲयिऱु–बड़े दाँतों रूपी; इळम् पिऱैकळुम्–बालचन्द्र; ॲऱिप्प–प्रकाश देते रहे इसलिए; पुटै परन्तन–पार्श्वों में फैले; वॅयिल्कळुम्–धूप के समान प्रकाश; निलाक्कळुम्–और चाँदनी-सा प्रकाश; पुरळ–बारी-बारी से दिखायी दिया; विटै कुलङ्कळ् पोल्–बैलों के झुण्डों के समान; इराक्कतर पतातियुम्–राक्षस पदाति वीर; मिटैन्त–सटे आये। २४७३

हथियारों, स्थूल रत्नाभरणों और फटे मुखों के अंदर के बड़े दाँत रूपी अर्धचन्द्रों से प्रकाश छूट रहा था। इसलिए धूप और चाँदनी (की-सी रोशनी) बारी-बारी से छूट रही थी। ऋषभवृन्दों के समान पदाति वीर सटे खड़े रहे। २४७३

कॊडिक्कु ऴीइयिन कॊऴुन्दॆडुत् तॆऴुन्दु मेऱ्कॊळ्ळ
इडिक्कु ऴीइयॆऴु मऴैप्पॆरुङ् गुलङ्गळै यिरित्त
अडिक्कु ऴीइयिडु मिडन्दॊऱुम् अदिर्न्दॆऴुन् दार्त्त
पॊडिक्कु ऴीइयण्डम् बडैत्तवन् कण्णैयुम् बुदैत्त 2472

कुऴीइयिन कॊटि–मिली रही ध्वजाएँ; कॊऴुन्तु–अपने अग्र भाग को; ॲटुत्तु ॲऴुन्तु–ऊपर करके उठीं और; मेल् कॊळ्ळ–आकाश को व्याप गयीं तो; इटि–अशनियाँ; कुऴीइ–मिलाकर; ॲऴ–उठनेवाले; मऴै पॆरु कुलङ्कळै–बड़े मेघवृन्दों को; इरित्त–अस्त-व्यस्त कर दिया (ध्वजाओं ने); अटि–पैर; कुऴीइ–मिलकर; इटुम्–जहाँ रखे जाते हैं; इटम् तॊऱुम्–उन स्थानों से; अतिर्न्तु ॲऴुन्तु–शोर के साथ उठकर; आर्त्त पॊटि–जो भरी उस धूल से; कुऴीइ–मिलकर; अण्टम् पटैत्तवन्–अण्डसर्जक; कण्णैयुम्–(ब्रह्मा की) आँखों को भी; पुतैत्त–मुंदवा लिया। २४७४

पताकाओं के ऊपर के भाग आकाश में बहुत ऊपर हिल रहे थे, इसलिए अशनियुक्त मेघों के समूह अस्त-व्यस्त हुए। इनके पदाघात से धूल शोर के साथ उठी और उसकी राशि ने लोक-सर्जक की आँखों को भी मुंदवा लिया। २४७४

आनै यॆन्नुमा मलैहळि निऴिमद वरुवि
वान याऱुहळ् वाशियाय् नुरैयॊडु मयङ्गिक्
कान मामरङ् गल्लॊडु मोर्त्तन कडिदिर्
पोन पोक्करुम् बॆरुमैय पुणरियुट् पुक्क 2475

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आतै ऍन्नुम्–गज रूपी; मा मलैकळिन्–बड़े पर्वतों से; इऴि–सरकनेवाली; मतम् अरुवि–मदनीर रूपी; वानम् याऱुकळ्–आकाशसरिताएँ; वाचि वाय्–घोड़ों के मुख के; नुरैयॊटुम्–झाग के साथ; मयङ्कि–मिश्रित होकर; कानम् मा मरम्–जंगल के बड़े पेड़ों को; कल्लॊटुम् ईर्त्तनन–पत्थरों-सह खींच लेती हुई; कटितिन् पोन–सवेग जाकर; पोक्क अरु पॆरुमैय–गुरुता-सह; पुणरियुळ् पुक्क–समुद्र में घुसीं। २४७५

हाथी रूपी पर्वतों से गिरनेवाली मदनीर की आकाश-नदियाँ घोड़ों के मुखों से निकलनेवाले झागों से मिलकर जंगल के बड़े-बड़े पेड़ों और पत्थरों को खींच ले गयीं और अगम शान के साथ समुद्र में घुस गयीं। २४७५

तडित्तु मिन्गुलम् विशुम्बिडैत् तयङ्गुव शलत्तिन्
मडित्त वायिनर् वाळंयिऱ् ऱरक्करत्तम् वलत्तिऱ्
पिडित्त तिण्पडै विदिर्त्तिड विदिर्त्तिडप् पिऱळ्न्दु
पॊडित्त वॆम्बॊऱि पुहैयॊडु पोवन पोल्व 2476

चलत्तिन्–कोप से; मटित्त वायिनर्–ओंठ काटते हुए; वाळ् ऍयिऱु अरक्करु–तलवार-सम दाँतों वाले राक्षस; तम् वलत्तिल्–अपने दायें हाथों में; पिटित्त–पकड़े हुए; तिण् पटै–कठोर हथियारों को; वितिर्त्तिट वितिर्त्तिट–ज्यों-ज्यों झटकाते; पिऱळ्न्तु पॊटित्त–बारी-बारी से निकले; वॆम् पॊऱि–गरम अंगारे; पुकैयॊटु–धुएँ के साथ; पोवन–आगे गये; तटित्तु मिन्कुलम्–तडितों की राशि; विचुम्पिटै–आकाश में; तयङ्कुव पोल्व–प्रकाश देतीं जैसे रहीं। २४७६

ज्यों-ज्यों क्रोध के कारण अधरों को दाँतों के मध्य दबाए रहनेवाले घोर दंतोरे राक्षस अपने दाहिने हाथों के पकड़े हुए हथियारों को हिलाते, त्यों-त्यों अंगारे उठे और धुएँ के साथ बढ़े और आकाश में तडित् के समान छविमान रहे। २४७६

शॊन्न नूऱुडै वॆळ्ळमन् ऱिरावणन् ऱुरन्द
अन्न शेनैयै वायिलू डुमिळ्हिन्ऱ वमैदि
मुन्नम् वेलैयै मुळुवदुङ् गुडित्ततु मुऱैयी
दॆन्न मीट्टुमिळ् तमिळ्मुनि यॊत्तदव् विलङ्गै 2477

अन्ऱु–उस दिन; इरावणन् तुरन्त चॊन्न–रावण का भेजो जो कहा गया उसके अनुसार; नूऱु उटै वॆळ्ळम्–सौ वॆळ्ळम्' की; अन्न चेनैयै–उस सेना को; इलङ्कै–लंका; वायिल् ऊटु–मुख से; उमिळ्किन्ऱ अमैति–उगल रही थी उस प्रकार से; मुन्नम्–पहले; वेलैयै–समुद्र को; मुळुवतुम् कुटित्ततु–पूर्ण रूप से पीकर (उगल रहा); ईतु मुऱै ऍन्न–यही वह प्रकार है, ऐसा; मीट्टु उमिळ्–उगलनेवाले; तमिळ् मुनि–'तमिळ्' के निर्माता मुनि; ऒत्ततु–के समान रहा। २४७७

उस दिन रावण ने (एक सौ 'वॆळ्ळम्' सेना) कही थी। लंका के नगर-द्वार से वह सेना बाहर निकली तो ऐसा लगा मानो पहले कभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समुद्र पीकर अगस्त्य मुनि ने जैसे उसका वमन किया था, उसी प्रकार वह नगर सेना को वमन कर रहा हो। २४७७

शङ्गु पेरियुङ् गाळमुन् दाळमुन् दलैवर्
शिङ्ग नादमुञ् जिलैयिन्ना णॊलिहळुञ् जिन्नमाप्
पॊङ्गु मोदैयुम् बुरवियि नमलैयुम् बॊलन्देर्
वॆङ्ग णोलमु मालॆन्न विळुङ्गिय वुलहै 2478

चङ्कु–शंख; पेरियुम्–भेरियाँ; काळमुम्–काहल; ताळमुम्–ताल; तलैवर् चिङ्क नातमुम्–सेनानायकों का केसरी-गर्जन; चिलैयिन्–चापों के; नाण् ऒलिकळुम्–ज्यास्वन; चिन्न मा–क्रोधी गजों की; पॊङ्कुम् ओलैयुम्–गुंजायमान चिंघाड़; पुरवियिन्–घोड़ों के; अमलैयुम्–हिनहिनाने के स्वर; पॊलम्–सुन्दर; तेर्–रथों के; वॆम् कण् ओलमुम्–भयंकर चक्रस्थल की गड़गड़ाहट; माल् ऎन्न–श्रीविष्णु के समान; उलकै विळुङ्किय–संसार को ढाँप गये। २४७८

शंख, भेरियाँ, काहल, ताल, सिंहनाद, धनुष्टंकार, क्रोधी हाथियों की गुंजायमान चिंघाड़, घोड़ों का हिनहिनाना, स्वर्णरथों के पहियों की गड़गड़ाहट —इन सबने भुवनों को उदरस्थ करनेवाले विष्णु के समान इस संसार को अपने अन्दर समा लिया। २४७८

पुक्क दाऱ्पॆरुम् बोर्प्पडै पऱन्दलैप् पुऱत्तिल्
तॊक्क दानॆडु वानरत् तानैयुन् दुवन्ऱि
ऒक्क वार्त्तन्न वुऱुक्किन्न तॆळित्तन्न वुरुमिन्न्
मिक्क वान्पडै विडुकणै मामलै विलक्कि 2479

पॆरुम् पोर् पटै–बड़ी युद्ध-सेना; पऱन्तलै–मिलकर; पुऱत्तिल् पुक्कतु–युद्ध-मैदान में घुसी; नॆटु वानरर् तानैयुम्–बड़ी वानर-सेना भी; तुवन्ऱि तॊक्कतु–मिलकर आयी; मिक्क–अधिक; वान् पटै–परिमाण की राक्षस-सेना द्वारा; विटु कणै–प्रयुक्त बाणों को; मा मलै–बड़े पहाड़ों से; विलक्कि–रोककर; ऒक्क आर्त्तन्न–एक साथ शोर कर उठे (वानर); उऱुक्किन्न–डाँटे; उरुमिन्–अशनि के समान; तॆळित्तन्न–डपटे। २४७९

बड़े युद्ध के लिए तैयार वह सेना मिलकर मैदान में आयी। बड़ी वानर-सेना भी मिलकर आयी और लड़ाई शुरू हो गयी। राक्षसों ने बाण छोड़े, वानरों ने उनको बड़े-बड़े पर्वतों से रोका, नर्दन किया। वानर वीर डाँटे-डपटे। २४७९

कुन्ऱु कोडियुङ् गोडिमेऱ् कोडियुङ् गुऱित्त
वॆन्ऱि वानर वीरर्हण् मुहन्दॊऱुम् विलङ्गल्
ऒन्ऱिल् नाल्वरु मैवरु मिराक्कद रुलन्दार्
पॊन्ऱि वीळ्न्दन्न पॊरुकरि पाय्परि पॊलन्देर् 2480

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुकम् तोऱुम्–स्थान-स्थान पर; कोटियुम् कोटि मेल् कोटियुम्–कोटियों और उन पर कोटियों की संख्या में; कुन्ऱु–पर्वतों को; कुऱित्त–निशाना बाँधकर फेंकनेवाले; वॅन्ऱि वानर वीरर्कळ्–विजयी वानर वीरों के; विलङ्कल् ऑन्ऱिल्–एक-एक पर्वत से; नाल्वरुम् ऐवरुम्–चार-चार, पाँच-पाँच; इराक्कतर्–राक्षस; उलन्तार्–मरे; पोरु करि–लड़नेवाले हाथी; पाय् परि–लपकनेवाले घोड़े और; पॊलम् तेर्–स्वर्णमय रथ; पॊन्ऱि वीऴ्न्तत–नाश होकर गिरे। २४८०

विजयाभिलाषी वानर वीरों ने कोटियों पर कोटियों में पर्वत लेकर निशाना बाँधकर चलाये। हर पर्वत ने चार-पाँच राक्षसों का काम तमाम कर दिया। लड़ाकू हाथी, सरपट भागनेवाले घोड़े और स्वर्णमय रथ मर मिटे। २४८०

मऴुवुम् जूलमुम् वलयमुम् नाञ्जिलुम् वाळुम्
ऍऴुवु मीट्टियुन् दोट्टियु मॅऴुमुनैत् तण्डुम्
तऴुवुम् वॅलॊडु कणैयमुम् बहऴियुन् दाक्कक्
कुऴुवि नोडुपट् टुरुण्डन वानरक् कुलङ्गळ् 2481

मऴुवुम्–परशु और; चूलमुम्–शूल; वलयमुम्–वलय और; नाञ्चिलुम्–'नांजिल' (हल ?); वाळुम्–तलवार; ऍऴुवुम्–और खम्भे; ईट्टियुम्–साँग; तोट्टियुम्–अंकुश; ऍऴुमुनै तण्टुम्–खम्भे-सदृश अग्रभाग वाले दण्ड; तऴुवुम्–लगनेवाले; वेलॊटु–भाले के साथ; कणैयमुम्–'कणयम्'; पकऴियुम्–और बाणों के; ताक्क–प्रहार से; वानरर् कुलङ्कळ्–वानरगण; कुऴुविनोटु–झुण्ड के झुण्ड में; पट्टु–मरकर; उरुण्टन–लोट गये। २४८१

परशु, शूल, वलय, "नांञ्जिल" (हल?), तलवार, खम्भे, साँग, अंकुश, गदा और "वेल", "कणयम" और बाणों के लगने से वानरकुल झुण्डों में मरे। २४८१

मुऱ्क रङ्गळु मुशलमु मुशुण्डियु मुळैयुम्
शक्क रङ्गळुम् बिण्डिबा लत्तॊडु तण्डुम्
कप्प णङ्गळुम् वळैयमुङ् गवणुमिऴ् कल्लुम्
वॅऱ्पि नङ्गळै नुऱुक्किन कविहळै वीऴ्त्त 2482

मुऱ्करङ्कळुम्–मुद्गर; मुचलमुम्–मूसल; मुचुण्टियुम्–मुशुण्डी; मुळैयुम्–बाँस; चक्करङ्कळुम्–चक्र; पिण्टिपालत्तॊटु–भिंडीपालों के साथ; तण्टुम्–गदा; कप्पणङ्कळुम्–'कप्पण'; वळैयमुम्–वलय; कवण् उमिऴ् कल्लुम्–ढेलेबाँस; वॅऱ्पिनङ्कळै–(उन हथियारों ने) पर्वतसमूहों को; नुऱुक्किन–चूर कर दिया; कविकळै–वानरों को; वीऴ्त्त–गिराया। २४८२

मुद्गर, मूसल, मुशुंडी, बाँस, चक्र, भिण्डीपाल, गदा, कप्पन, वलय, और ढेलेबाँस आदि ने पर्वतों को चूर-चूर कर दिया और वानरों को मार गिराया। २४८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कदिर यिऱ्पडैक् कलम्वरऩ् मुऱैमुऱै कडाव
अदिर्पि णप्पॅरुङ् गुऩ्ऱुहळ् पडप्पड वळिन्द
उदिर मुऱ्ऱपे राऱुहळ् तिशैत्तिशै योड
ऍदिर्न डक्किल कुरक्किऩ मरक्करु मियङ्गार् 2483

कतिर्–उज्ज्वल; अयिल्–तीक्ष्ण; पटै कलम्–हथियारों को; वरऩ् मुऱै मुऱै कटाव–यथाक्रम चलाने से; कुरक्कितम्–वानर-समूह; ऍतिर् नटक्किल–सामने जा नहीं सके; अतिर् पिणम्–शोर के साथ गिरनेवाली लाशों के; पॅरु कुऩ्ऱुकळ्–बड़े-बड़े पर्वतों के; पट पट–उत्तरोत्तर गिरते रहने से; अळिऩ्त–उनसे अधिक परिमाण में निकलनेवाले; उतिरम् उऱ्ऱ पेर् आऱुकळ्–रुधिर की बनी बड़ी नदियों के; तिचै तिचै ओट–दिशा-दिशा में बहने से; अरक्करुम् इयङ्कार्–राक्षस भी बढ़ नहीं सके। २४८३

राक्षसों के ज्वलंत हथियारों को यथाक्रम चलाने से वानरदल आगे नहीं बढ़ सके। शोर मचाते हुए गिरनेवाली लाशों के बड़े-बड़े पर्वतों से टकराना पड़ा और उनसे बहनेवाली बड़ी-बड़ी रक्त-नदियाँ सभी दिशाओं में बह रही थीं। इसलिए राक्षस भी नहीं चल-फिर सके। २४८३

याव राङ्गिहल् वाऩर रायिऩ रॅवरुम्
तेव रादलि ऩवरॊडुम् विशुम्बिडैत् तिरिन्दार्
मेवु कादलिऩ् मॅलिवुऱु मरम्बैयर् विरुम्बि
आवि यॊऩ्ऱिडत् तळुविनर् पिरिवुनो यहऩ्ऱार् 2484

आङ्कु–वहाँ; यावर्–जो; इकल् वानरर् आयिऩर्–लड़नेवाले वानर थे; ऍवरुम्–वे सभी; तेवर् आतलिऩ्–(पूर्ववत्) देव बने, इसलिए; अवरॊटुम्–उनके साथ; विचुम्पिटै तिरिन्तार्–व्योमलोक में घूमती; मेवु कातलिऩ्–जाग्रत् प्रेम से; मॅलिवुऱुम् अरम्पैयर्–पतली बनी अप्सराओं ने; विरुम्पि–कामना-सह; आवि ऒऩ्ऱिट–प्राण एक करके; तळुविनर्–आलिंगन किया; पिरिव नोय्–विरह-रोग से; अकऩ्ऱार्–छूटीं। २४८४

उस युद्ध में जो मरे वे सभी वानर अपने यथार्थ में देव थे। अब वे फिर से देव बन गये और उनकी स्त्रियाँ आकाश में विरह के साथ थकी हुई घूम रही थीं। अब इनको एक-प्राण होकर गले लगाकर विरह-पीड़ा से मुक्त हुईं। २४८४

करक्कु मायमुम् वञ्जमुङ् गळवुमे कडऩा
इरक्क मेमुदल् तरुमत्ति ऩॅऱियॊऩ्ऱु मिल्ला
अरक्क रॅप्पॅरुन् देवर्ह ळाक्किऩ वमलऩ्
शरत्तिऩ् वेऱिऩिप् पवित्तिर मुळदॅऩत् तहुमो 2485

करक्कुम्–आँख बचाकर; मायमुम् वञ्चमुम्–माया और वंचना; कळवुमे–चोरी ही; कटऩा–अपना कर्तव्य बना लेकर; इरक्कमे मुतल्–दया आदि;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तरुमत्तित् नॅऱि ऑत्रुम् इल्ला–कोई धर्म-मार्ग न अपनाकर जो रहे; अरक्करै–उन राक्षसों को; पॅरु तेवर्कळ्–बड़े-बड़े देवों में; आक्कित–बदल दिया; अमलन्–निर्मल लक्ष्मण के; चरत्तित्–बाणों से बढ़कर; इनि–अब; पवित्तिरम्–पवित्र; वेरु–अन्य कुछ; उळतु ऍत–है कहना; तकुमो–ठीक होगा क्या। २४८५

उधर राक्षस भी, जिनका स्वभाव माया, वंचकता, चोरी और निर्दयता का था, अमर बन गये। यह लक्ष्मण के बाणों की पवित्रता का फल था। फिर उनसे पवित्र कोई चीज़ है, यह कहा जा सकता है क्या? । २४८५

अन्द हन्पॅरुम् बडैक्कल मन्दिरित् तमैन्दान्
इन्दु वॅळ्ळॅयिऱ् ऱरक्करु मियानैयुन् तेरुम्
वन्द वन्दन वानह मिडम्बॅऱा वण्णम्
शिन्दि तान्शर मिलक्कुवन् मुहन्दॊऱुन् दिरिन्दान् 2486

इलक्कुवन्–लक्ष्मण; अन्तकन् पॅरु पटैक्कलम्–यम का बड़ा अस्त्र; मन्तिरित्तु अमैन्तान्–अभिमंत्रित कर लिये हुए; मुकम् तॊऱुम्–हर युद्धाग्रस्थल में; तिरिन्तान्–जाते रहे और; इन्तु वॅळ् ऍयिऱु–चन्द्र-सम श्वेत दाँतों वाले; अरक्करुम्–राक्षस और; यानैयुम् तेरुम्–गज और रथ; वन्त वन्तन–जो भी आये उन्हें; वानकम्–आकाश-स्थल को; इटम् पॅऱा वण्णम्–स्थान न मिले ऐसा; चरम् चिन्तितान्–शर (बहुत संख्या में) चलाते रहे। २४८६

लघुराज लक्ष्मण यमास्त्र को अभिमंत्रित कर हाथ में लिये हुए फिरे और उनके अस्त्रों से अर्धचन्द्र-सम दाँतोंवाले राक्षस हाथी और गज जो भी उनके सामने आये, मरकर आकाश में ऐसे भर गये कि कोई स्थान बाक़ी नहीं रहा। २४८६

कुम्ब कन्नन्नाण् डिट्टदु वयिरवान् कुन्ऱिन्
वॅम्बु वॅञ्जुडर् विरिप्पदु तेवरै मेन्नाळ्
तुम्बै यिन्ऱलैत् तुरन्ददु शुडर्मणित् तण्डॊन्ऱ्
ऱिम्बर् आलत्तै नॅळिप्पदु मारुदि यॅडुत्तान् 2487

कुम्पकन्नन् आण्टु इट्टतु–कुंभकर्ण ने जिसे वहाँ छोड़ दिया था वह; वान् वयिरम् कुन्ऱिन्–बड़े वज्र-पर्वत के समान; वॅम्पु–तापक; वॅम् चुटर्–गरम दीप्ति को; विरिप्पतु–छिटकानेवाली; मेल् नाळ्–पुराने ज़माने में; तेवरै–देवों को; तुम्पैयिन् तलै–युद्ध में; तुरन्ततु–जिसने भगाया वह; इम्पर् आलत्तै–इहलोक को; नॅळिप्पतु–लचकानेवाली; चुटर् मणि–ज्वलन्त मणि-जड़ित; तण्टु ऑन्ऱु–एक गदा को; मारुति ऍटुत्तान्–मारुति ने लिया। २४८७

मारुति ने एक गदा हाथ में ली। वह गदा कुम्भकर्ण की थी, जो वहाँ छोड़ी गयी थी। बड़े वज्रपर्वत के समान थी और संतापक किरणों को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निकालती थी। उसने पुराने ज़माने में युद्ध के अवसर पर देवों को हराकर भगाया था। उसके सामने इहलोक भी लचक जाता था और उसमें कांति-पूर्ण मणियाँ जड़ी हुई थीं। २४८७

काऱ्ऱन्ऱिदु कनलन्ऱेऩ विमैयोरिडै काणा
वेऱ्ऱङ्गडु विशैयोडुयर् कॊलैनीडिय वियल्बाल्
शीऱ्ऱन्दऩि युरुवायिडै तेऱादद्दॊर् माऱाय्क्
कूऱ्ऱङ्गॊड् मुऩैवन्दॆऩक् कॊऩ्ऱाऩिहल् निऩ्ऱाऩ् 2488

इकल् निऩ्ऱाऩ्–बिरोध में जो खड़ा रहा वह हनुमान; एऱ्ऱम्–बढ़ती; कटुविचैयोटु–अधिक तेजी के साथ; उयर् कॊलै–बड़े हत्या-कार्य में लगा; नीटिय इयल्पाल्–उसके स्वाभाविक प्रकार से; इतु काऱ्ऱु अऩ्ऱु–यह पवन नहीं; इतु कऩल् अऩ्ऱु–यह आग नहीं; ऎऩ–कहकर; इमैयोर् इटै काणा–देव सच्ची स्थिति न जान सकें; कूऱ्ऱम् चीऱ्ऱम् तऩि उरुवाय्–(ऐसा) यम का मूर्तिमान क्रोध; इटै तेऱाऩतु–सत्य नहीं जाना जाए, इस रीति से; ओर् माऱाय्–अनुपम रीति से बदले हुए रूप में; कॊटु मुऩै–भयंकर युद्धक्षेत्र में; वऩ्तु ऎऩ–आया हो ऐसा; कॊऩ्ऱाऩ्–हत्या करता रहा। २४८८

रोषपूर्ण हनुमान ने अत्यधिक वेग के साथ बहुत लोगों को लगातार मारते हुए गदा चलायी। देवों को यह लगा कि यह पवन नहीं है, न आग ही। वे सच्ची स्थिति जान नहीं सके। यम के क्रोध का रूप बनकर वह अशांत वैर के साथ क्रूर युद्धस्थल में आया हो, इस तरह हत्या-काम करने लगा। २४८८

वॆङ्गण्मद मलैमेल् विरै परिमेल् विडु तेर्मेल्
शङ्गन्दरु पडै वीरर्ह ळुडऩ्मे लवर् तलैमेल्
ऎङ्गुम्मुळ ऩॊरुवऩ् ऩदिर्त् तिरुनाऩ् मऱै ऩॆरिक्कुऱ्
ऱॆङ्गण्णव ऩिवऩे यॆऩत् तिरिन्दाऩ् कलै ऩॆरिन्दाऩ् 2489

कलै ऩॆरिन्ताऩ्–कलाविद् हनुमान; वॆम् कण्–क्रूर आँखों और; मतम्–मद वाले; मलै मेल्–पर्वत (-सम) गजों पर; विरै परि मेल्–सवेग घोड़ों पर; विडु तेर् मेल्–चालित रथों पर; चङ्कम् तरु पटै वीरर्कळ्–झुण्डों के राक्षसों के; उटऩ् मेल्–शरीरों पर; अवर् तलै मेल्–उनके सिरों पर; इरु–श्रेष्ठ; नाऩ् मऱै ऩॆरिक्कुम्–चतुर्वेद-प्रतिपादित; चॆङ्कण्णवऩ्–अरुणाक्ष श्रीविष्णु; इवऩे–यही; ऎऩ–ऐसा; ऒरुवऩ् ऎङ्कुम् उळऩ् आकि–सर्वव्यापी बना; ऎऩिर्तु तिरिन्ताऩ्–प्रहार करता फिरा। २४८९

विविध कलाविद् हनुमान क्रूर आँखोंवाले मदमत्त पर्वत-सम गजों पर, तेज़ दौड़नेवाले घोड़ों पर और झुंडों के राक्षसों के शरीरों और सिरों पर प्रहार करता हुआ घूमा कि वह एक ही समय में सर्वत्र दिखायी दिया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और लोग कहने लगे कि वे प्रशंसित वेदप्रतिपादित अरुण कमलाक्ष यही हैं। २४८९

किळर्न्दारैयुङ् गिडैत्तारैयुङ् गिऴित्तान्कनल् विऴित्तान्
कळन्दानॊरु कुऴम्बाम्वहै यरत्तानिरु करत्तान्
वळर्न्दानिलै युणर्न्दारुल हॊरुमून्ऱैयुम् वलत्ताल्
अळन्दान्मुन्न मिवनेयॆन्न विमैयोर्हळु मयिर्त्तार् 2490

किळर्न्तारैयुम्–उमँगकर बढ़ आनेवालों और; किटैत्तारैयुम्–उसके हाथों में जो फँस गये उन्हें; कनल् विऴित्तान्–आग के समान दृष्टि डालकर; किऴित्तान्–चीरा और; कळम्–भूमि; ओर् कुऴम्पु आम् वकै–कीच बन जाए, ऐसा; इरु करत्तान्–दोनों हाथों से; अरैत्तान्–पीस डाला; वळर्न्तान् निलै–जो प्रवृद्ध हो गया उसकी स्थिति; उणर्न्तार्–स्थिति जानकर; इमैयोर्कळुम्–देवों ने भी; ऒरु उलकु मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों को; वलत्ताल्–बल ते; मुन्नम्–पहले; अळन्तान् इवनॆ–जिन्होंने मापा था वे यही हैं; ऎन्न–ऐसा; अयिर्त्तार्–संशय किया। २४९०

हनुमान ने उत्साह के साथ बढ़ आनेवालों और अपने हाथ में फँसे हुए राक्षसों को आग बरसाती आँखों से तरेरकर उनको चीरा और युद्धस्थल को कीच बनाते हुए अपने दोनों हाथों से पीस दिया। विश्व-रूप में उसका रूप देखकर देवों ने यह संदेह किया कि वही त्रिलोकमापक त्रिविक्रम देव है। २४९०

मत्तक्करि नॆडुमत्तहम् वहिर्प्पट्टुह मण्मेल्
मुत्तिऱ्पॊलि मुऴमेनियन् मुहिल्विण्डॊडु मॆय्यान्
ऒत्तक्कडै युहमुऱ्ऱुऴि युऱुकाल्पॊर वुडुमीन्
तॊत्तप्पॊलि कनहक्किरि वॆयिल्शुऱ्ऱिय दॊत्तान् 2491

मत्त करि–मत्त गजों के; नॆटु मत्तकम्–बड़े मस्तक; वकिर पट्टु–फूटे और; उक–(मोती) गिरे; मण् मेल्–इस भूमि पर; मुत्तिल् पॊलि–उन मोतियों के साथ शोभायमान; मुऴु मेनियन्–पूर्ण शरीर वाला; मुकिल् विण्–मेघ-भरे आकाश को; तॊटु मॆय्यान्–छूनेवाले आकार का; ऒत्तु अ कटै उकम् उऱ्ऱुऴि–सब मिलकर जब युगान्त में नष्ट होते हैं तब; उऱु काल् पॊर–बड़ी प्रबल वायु के झोंके से; उटु मीन्–उडु-नक्षत्र; तॊत्त–लगे रहें; पॊलि–ऐसे दीप्तिमान; वॆयिल् चुऱ्ऱियतु–और सूर्य जिसकी परिक्रमा करता है उस; कनकम् किरि–कनकगिरि के; ऒत्तान्–समान रहा। २४९१

मत्त गजों के माथे फूटे और उनसे निकले मोतियों से उसका शरीर अलंकृत हो गया। मेघाश्रय आकाशव्याप्त-शरीरी हनुमान उस कनक-गिरि के समान लगा, जिस पर युगांतकालीन झंझा से नक्षत्र आकर लगे हुए लटकते हों और जिसकी सूर्य परिक्रमा करता हो। २४९१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इडित्तानिलम् विशुम्बोडन विट्टानडि यॅळुन्दान्
पॊडित्तान्कडर् पॅरुञ्जेनैयैप् पॊलन्दण्डुतन् वलत्ताल्
पिडित्तान्मद करितेर्मुदल् पिळम्बानवै कुळम्बा
अडित्तानुयिर् कुडित्तानॅडुत् तार्त्तान्पहै तीर्त्तान् 2492

पॊलम् तण्टु–सुन्दर गदायुध; तन् वलत्ताल्–अपने दाहिने हाथ से; पिटित्तान्–पकड़ लेकर; निलम्–भूमि और; विचुम्पोटु–आकाश को; इटित्तान्–तोड़ता; ऍन्–जैसे; अटि इट्टान्–पग धरता; ऍळुन्तान्–ऊँचा बना; कटल् पॅरु चेनैयै–सागर-सी बड़ी सेना को; पॊटित्तान्–चर कर दिया; मतम् करि–मत्त गज; तेर् मुतल्–रथ आदि; पिळम्पु आनवै–जो रूपधारी पदार्थ थे, उन सबको; कुळम्पा–(सालन) कीच; अटित्तान्–बना दिया; उयिर् कुटित्तान्–प्राण पी लिये; पकै तीर्त्तान्–शत्रु मिटाकर; ऍटुत्तु आर्त्तान्–स्वर उन्नत कर नाद किया। २४९२

मारुति उज्ज्वल-दण्ड गदा को अपने दाहिने हाथ में पकड़कर आकाश और भूमि को अस्त-व्यस्त करता था। पग धरकर जो ऊँचा हुआ उसने सागर-सम बड़ी सेना को छिन्न-भिन्न किया। मत्त गजों, रथों और अन्य रूपधारी पदार्थों को रूपहीन कीच बनाया। प्राण पिये और उच्च स्वर नाद उठाया। २४९२

नूऱायिर मदमाल्करि यॊरुनाळिहै नुवल्पो
दाऱायॅडुङ् कडुञ्जोरियि नळऱाम्वहै यरैप्पान्
एऱायिर मॅन्नलायॅळु वयवीररै यिडऱित्
तेऱादुऱु कॊलैमेविय तिशैयानैयिऱ् ऱिरिन्दान् 2493

ऒरु नाळिकै नुवल् पोतु–एक घड़ी कहलानेवाले समय के अन्दर; आऱाय्–नदी बनकर बहनेवाले; नॅटु–बहुत; कटु–भयंकर; चोरियिन्–रक्त में; नूऱु आयिरम्–सौ हज़ार; मतम् माल् करि–मत्त, बड़े गजों को; अळऱु आम् वकै–कीच बनाकर; अरैप्पान्–पीसता; आयिरम् एऱु ऍन्नलाय्–हज़ार सिंह मानो ऐसा; ऍळु–उठके आनेवाले; वयम् वीररै–बलवान वीरों को; इटऱि–पैर से ठुकराकर; तेऱातु उऱु–मद में अपने को भूले हुए और; कॊलै मेविय–हत्या-प्रेमी; तिचै यानैयिल्–दिग्गज के समान; तिरिन्तान्–घूमा। २४९३

एक घड़ी में नदियों के रूप में बहनेवाले अति भयानक रक्त में लाखों गजों को कीच बनाते हुए पीसा और वह हज़ारों की संख्या में नर केसरियों के समान चढ़ आनेवाले बलवान राक्षसों को पैर से ठुकराता हुआ मत्त और हत्या-प्रेमी दिग्गज के समान घूमता रहा। २४९३

तेरेऱिन्ऱर् परियेऱिन्ऱर् विडैयेऱिन्ऱर् शिन्नवॅङ्
गारेऱिन्ऱर् मळैयेऱिन्ऱर् कलैयेऱिन्ऱर् पलवॅम्
पोरेऱिन्ऱर् पुहळेऱिन्ऱर् पुहुन्दार्पुडै वळैन्दार्
नेरेऱिन्ऱर् विशुम्बेऱिड नॅरित्तान्कवै तिरित्तान् 2494

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विटै एऱितर्–ऋषभ-सम; तेर् एऱितर्–रथारूढ़; परि एऱितर्–अश्वारूढ़ चितम् वॅम् कार्–क्रुद्ध भयंकरगजों पर; एऱितर्–सवार; मऴै एऱितर्–वर्षा करने वाले; कलै एऱितर्–युद्धविद्या में बढ़े-चढ़े; पल वॅम् पोर् एऱितर्–अनेक भयंकर युद्ध जो कर चुके; पुकऴ् ऐऱितर्–और बड़े कीर्तिमान हो गये; पुकुन्तार्–(वे सब) युद्धभूमि में पहुँचे; पुटै वळैन्तार्–चारों ओर से घेर आये; नेर् एऱितर्–सीधे युद्ध किया, उन सबको; कतै–गदा; तिरित्तान्–घुमाकर; विचुम्पु एऱिट–आकाश में चढ़ जाने को मजबूर करते हुए (मृत्युलोक में पहुँचाते हुए); नॅरित्तान्–सटाकर मारा। २४९४

ऋषभ के समान राक्षस, रथारूढ़, अश्वारूढ़ और क्रूर क्रोधी गजों पर आरूढ़ हो आये। वे युद्धकलाज्ञानी, क्रूर युद्धों के अभ्यस्त और यशस्वी थे। वे युद्ध के मैदान में आये और उसको घेरकर आगे बढ़े। हनुमान ने गदा घुमाकर उनको सटाकर मारा और आकाश पर चढ़वा दिया। २४९४

अरिकुल मन्न नील नङ्गदन् कुमुदन् शाम्बन्
परुबलिप् पनश नॅन्ऱिप् पडैत्तलै बीरर् यारुम्
बॊरुशिनन् दिरुहि वॅऱ्ऱिप् पोर्क्कळ मरुङ्गिऱ् पुक्कार्
ऒरुवरै यॊरुवर् काणा रुयर्पडैक् कडलि नुळ्ळार् 2495

अरिकुलम् मन्नन्–वानरकुल का राजा; नीलन्–नील; अङ्कतन्–अंगद; कुमुतन्–कुमुद; चाम्पन्–जाम्बवान; परुवलि–अतिबली; पनचन्–पनश; ऎन्ऱु–वग़ैरः; इ पटै तलै बीरर् यारुम्–ये सभी सेनानायक वीर; पॊरु चितम् तिरुकि–युद्धप्रेरक कोप में ऐंठकर; वॅऱ्ऱि पोर्क्कळम् मरुङ्किल्–विजयदायी युद्धमंच के पार्श्व में; पुक्कार्–घुसे; ऒरुवरै ऒरुवर् काणार्–एक-दूसरे को न देख सके; उयर्–बड़े; पटै कटलिन्–राक्षसों की सेना के सागर के मध्य; उळ्ळार्–रह गये। २४९५

वानरकुलराजा सुग्रीव, अंगद, कुमुद, जाम्बवान, अतिबलिष्ठ पनस आदि सभी वीर विजय-स्थल, युद्ध के मैदान के मध्य आये और एक-दूसरे से अदृश्य होकर राक्षस-सेना-सागर के अंदर रहनेवाले हो गये। २४९५

तॊहुम्बडै यरक्कर् वॅळ्ळन् दुऱैदुऱै यळ्ळित् तूवि
नहम्बडै याहक् कॊल्लु नरशिङ्ग नडन्द दॅन्न
मिहुम्बडैक् कडलुट् चॅल्लु मारुदि वीर वाऴ्क्कै
अगम्बनैक् किडैत्तान् ऱण्डा लरक्करै यरैक्कुङ् गैयान् 2496

वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम्' की गिनती में; तॊकुम् पटै अरक्कर्–दलगत सेना के राक्षसों को; तुऱै तुऱै–स्थान-स्थान में; अळ्ळि तूवि–उठा, छितराकर; नकम् पटै आक–नख को हथियार बनाकर; कॊल्लुम् नरचिङ्कम्–मारनेवाले नरसिंह; नटन्ततु ऎन्न–चले जैसे; मिकुम् पटै कटलुळ्–बहुत बड़ी सेना के सागर में; चॅल्लुम् मारुति–जो घुस चला वह मारुति; तण्टाल्–गदा से; अरक्करै अरैक्कुम् कैयान्–राक्षसों को पीसने वाले हाथ का बनकर; वीरम् वाऴ्क्कै–वीरजीवी; अकम्पनै किटैत्तान्–अकंप को मिला। २४९६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'वॅळ्ळम्' की संख्या में इकट्ठी हुई राक्षस-सेना को यत्र-तत्र उठाकर फेंकता हुआ, नखायुध नरसिंह के समान बहुत अधिक राक्षस-सेना के मध्य हनुमान चला और गदा से राक्षसों को पीसते हुए हाथों वाला बनकर वीर-जीवी अकंप के सामने आया। २४९६

मलैप्पॅरुङ् गळुदै यॅज्ज़ूर् इ़रट्टियान् मनत्तिर् चॅल्लुन्
दलैत्तडन् देरन् विल्लन् ऱारुहनॅन्नुन् दन्मैक्
कॊलैत्तॊळि लवुणन् पिन्नै यिराक्कद वेडङ् गॊण्डान्
शिलैत्तॊळिर् कुमरन् कॊल्लत् तॊल्लैनाट् चॅरुविर् ऱीर्न्दान् 2497

मलै पॅरु–पर्वत-से बड़े; कळुतै–गधे; ऐज़्ज़ूऱु इरट्टियान्–एक हज़ार से जुता रहा उससे; मनत्तिल् चॅल्लुम्–मन की-सी गति पर जानेवाले; तलै तट तेरन्–नायक-विशाल-रथी; विल्लन्–धनुर्धर; तारुकन् ऍन्नुम्–दारुक नामक; कॊलैत्तॊळिल् तन्मै–हत्या के कार्य में लगे चित्तवाला; अवुणन्–दानव; विलै तॊळिल्–धनुकार्य-समर्थ; कुमरन्–कुमार (षण्मुख) द्वारा; तॊल्लै नाळ्–पुराने ज़माने में; चॅरुविल् कॊल्ल तीरन्तान्–युद्ध में मारा जाकर; पिन्नै–बाद; इराक्कत वेटम् कॊण्टान्–इस राक्षस के रूप में आया। २४९७

धनुर्धर अकंप ऐसे रथ पर सवार था, जिससे एक हज़ार पर्वतोपम खच्चर जुते हुए थे और जो मन से भी अधिक तेज़ी से जा सकता था। वह हत्याकारी दारुक नामक दानव था, जो पहले धनुकर्म-चतुर कार्तिक कुमार द्वारा युद्ध में मारा गया और जो अब राक्षस-जन्म ले आया था। २४९७

पाहशा दनतु मऱ्ऱैप् पहैयडुन् दिहिरि पऱ्ऱुम्
एहशा दनतु मूनऱु पुरमुम्बण् डॅरित्तु ळोनुम्
पोहता मॊरुवर् मऱ्ऱिक् कुरङ्गॊडु पॊरक्कर् ऱारे
आहकूऱ् ऱावि युण्ब दिदनिन् मेऱ्ऱाहु मॅन्ऱान् 2498

पाकचातनतुम्–पाकशासन; मऱ्ऱै–और; पकै अटुम्–शत्रुहंता; तिकिरि–चक्र; पऱ्ऱुम्–धारी; एक चातनतुन्–एकसाधन श्रीविष्णु; मूनऱु पुरमुम्–त्रिपुरों को; पण्टु–प्राचीन समय में; ऍरित्तुळोनुम्–जिन्होंने जलाया वे शिव; पोक–जाएँ; ताम् ऑरुवर्–अकेले खुद कोई; इ कुरङ्कॊटु–इस वानर के साथ; पॊर कऱ्ऱारे आक–लड़ना भले ही सीख गया हो; कूऱ्ऱु–यम द्वारा; आवि उण्पतु–प्राण खाना; इतनिन् मेऱ्ऱु आकुम्–इस वानर का काम होगा। २४९८

(अकंप ने हनुमान की प्रशंसा की।) उसने कहा, पाकशासन, शत्रुहंता चक्रधर, जिनका एक ही (चक्र) है, और त्रिपुरांतक चाहे उससे लड़ने जाएँ, या और कोई भी हो जिसने इससे लड़ना सीख लिया हो—इस वानर के पास ऐसा सामर्थ्य है कि वह यम को मजबूर करेगा कि वह उनकी जान निकलवा दे। २४९८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यात्ऱडे नॆन्निन् मऱ्ऱिव् वॆळ्ळुदिरै वळाह मॆन्नाम्
वात्ऱडा दरक्क रॆन्नुम् बॆयरैयु माय्क्कु मॆन्ना
ऊन्ऱडा निन्ऱ वाळि मऴैतुरन् दुरुत्तुच् चॆन्ऱान्
मीन्ऱोडा निन्ऱ दिण्डो ळनुमनुम् विरैविन् वन्दान् 2499

यान् तटेन्–अगर मैं नहीं रोकूँ; ऍन्निल्–तो; इव ऍळ्ळुतिरै वळाकम्–सप्त-समुद्रवलयित यह भूमंडल; ऍन् आम्–क्या होगा; वान्–आकाशवासी; तटातु–नहीं रोक सकेंगे; अरक्कर् ऍन्नुम् पॆयरैयुम्–राक्षस का नाम ही; माय्क्कुम्–मिटा देगा; ऍन्ना–कहकर; ऊन्–शरीरधारी जीवों को; तटा निन्ऱ–रोकनेवाले; वाळि मऴै–बाणों की वर्षा; तुरन्तु–छोड़ता हुआ; उरुत्तु–रोष दिखाकर; चॆन्ऱान्–गया; मीन् तोटा निन्ऱ–नक्षत्रस्पर्शी; तिण् तोळ्–कठोर कंधों वाला; अनुमनम्–हनुमान भी; विरैविन् वन्तान्–सवेग आया। २४९९

अगर मैं इसको नहीं रोकूँ तो इस सप्त-समुद्रवलयित भूमण्डल का क्या होगा ? व्योमलोकवासी इसको रोक नहीं सकेंगे। यह राक्षसों का नाम तक मिटा देगा। यह कहते हुए वह सामने आनेवाले जीवों को रोककर शर-वर्षा करता हुआ सरोष बढ़ता चला। नक्षत्र-स्पर्शी सुदृढ़ कंधों वाला हनुमान भी सवेग आया। २४९९

तेरोडु कळिऱु मावु मरक्करु नॆरुङ्गित् तॆऱ्ऱक्
कारोडु कनलुङ् गालुङ् गिळर्न्द दोर् कालमॆन्न
वारोडुन् दोडर्न्द पैम्बोऱ् कळलिनान् वरुद लोडुञ्
जूरोडुन् दोडर्न्द तण्डैच् चुऴऱ्ऱिनान् वयिरत् तोळान् 2500

तेरोटुम्–रथ के साथ; कळिऱुम् मावुम्–हाथी और घोड़े; अरक्करुम्–राक्षस; नॆरुङ्कि–सटकर; तॆऱ्ऱ–साथ आये तब; कारोटु–मेघ के साथ; कनलुम् कालुम्–अनल और अनिल; किळर्न्ततु ओर् कालम् ऍन्न–मिल आये ऐसे मान्य समय के समान; वारोटुम् तोटर्न्त–फ़ीतों से बद्ध; पचुम् पोन् कळलिनान्–चोखे स्वर्ण की पायलधारी; वरुतल् ओटुम्–जब आया (अकंप) तब; वयिरम् तोळान्–वज्रस्कंध; चूरोटुम् तोटर्न्त–शौर्य के साथ पकड़ी रही; तण्टै–गदा को; चुऴऱ्ऱिनान्–(हनुमान ने) घुमाया। २५००

अकंप को चारों ओर से रथ, गज, तुरग, पदाति घेर आये। वह फ़ीते से बद्ध, स्वर्णपायलधारी युगांत के संमिश्रित उठे मेघ, अनल और अनिल के समान जब आया, तब वज्रस्कन्ध हनुमान ने शौर्य-प्रभावित दण्ड को घुमाया। २५००

ऍऱ्ऱिन वॆऱिन्द वॆल्लै यॆय्दिन वॆय्द पॆय्द
मुऱ्ऱिन पडैह ळियावु मुरैमुऱै मुऱिन्दु शिन्दच्
चुऱ्ऱिन वयिरत् तण्डाऱ् ऱुहैत्तन नमरर् तुळ्ळक्
कऱ्ऱिल निन्ऱु कऱ्ऱान् कवैयिनाल् वदैयिन् कल्वि 2501

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍऱ्ऱिऩ–जिनसे पीटा गया; ऍऱिन्त–जो फेंके गये; ऍल्लै ऍय्तिऩ ऍय्त–निशाना लगाकर जो चलाये गये; पॅय्त–जो बरसाये गये; मुऱ्ऱिऩ–पूर्ण; पटैकळ् प्रावुम्–वे सभी हथियार; मुऱै मुऱै मुऱिन्तु–क्रम से टटकर; चिन्त–बिखर जाएँ ऐसा; चुऱ्ऱिऩ–घुमायी गयी; वयिरम् तण्टाल्–वज्रदण्ड से; अमरर् तुळ्ळ–देवों को संतोष से उछलने देकर; तुकैत्तऩऩ्–कुचल डाला; कऱ्ऱिलऩ्–नहीं सीखा था; इऩ्ऱु–आज ही; कतैयिऩाल्–गदा से; वतैयिऩ् कल्वि–वध करने की विद्या; कऱ्ऱाऩ्–सीखी। २५०१

तब हनुमान ने राक्षसों से प्रेषित, प्रहरित, प्रेरित और वर्षित सभी सबल हथियारों को क्रम से तोड़कर छितरा दिया। देवगण इसको देखकर आनंद से उछल पड़े। हनुमान ने गदायुद्ध नहीं सीखा था, तो भी अब वह गदा द्वारा वध में दक्ष हो गया। २५०१

अहम्बऩुङ् गाणक् काण वैयिरु कोडिक् कैम्मा
मुहम्बयिल् कलिऩप् पाय्मा मुऩैवयिऱ् ऱूण्डु मूरि
नुहम्बयि ऱेरि ऩोडु नुऱुक्किऩ ऩूळि ऱीर्त्ताऩ्
उहम्बॅय रूळिक् काऱ्ऱि ऩुलैविला मेरु वॉप्पाऩ् 2502

उकम् पॅयर्–युगसन्धि में; ऊळि काऱ्ऱिऩ्–युगान्त की हवा से; उलैवु इला–जो चंचल नहीं होता; मेरु ऑप्पाऩ्–उस मेरु के समान; अकम्पऩुम् काण काण–अकंप के भी देखते-देखते; ऐयिरु कोटि कैम् मा–दस करोड़ गजों को; मुकम् पयिल्–मुख में लगी; कलिऩम्–रास-युक्त; पाय् मा–अश्वों को; मुऩै वयिऩ्–युद्धस्थल में; ऩूण्टुम्–चालित; मूरि नुकम् पयिल्–सारयुक्त जुए के साथ रहनेवाले; तेरिऩोटुम्–रथों के साथ; नुऱुक्किऩऩ्–चूर किया; नूळिल् तीर्त्ताऩ्–मारकर ढेर लगाये। २५०२

युगांत के पवन के सामने भी चलित न होनेवाले मेरु के समान अकंप के देखते-देखते हनुमान ने दस करोड़ हाथियों, लगाम-लगे घोड़ों और युद्ध में चालित और सबल जुओं से युक्त रथों को तोड़-फोड़ ढेर लगा दिया। २५०२

इऩ्ऱिवऩ् ऱऩ्ऩै विण्णा डेऱ्ऱिवा ळिलङ्गै वेन्दै
वॅऩ्ऱिय ऩाक्कि मऱ्ऱै मऩिदरै वॅऱिय राक्कि
निऩ्ऱुयर् नॅडिय तुऩ्ब ममरर्पा निऱुप्पॅ ऩॅऩ्ऩाच्
चॅऩ्ऱऩ नरक्क ऩऩ्ऱु वरुहॅऩ वऩुमऩ् शेर्न्दाऩ् 2503

इऩ्ऱु–आज; इवऩ् तऩ्ऩै–इसको; विण् नाटु–स्वर्गलोक में; एऱ्ऱि–पहुँचाकर; वाळ्–तलवारधारी; इलङ्कै वेन्ऩै–लंका के राजा को; वॅऩ्ऱियऩ् आक्कि–विजेता बनाकर; मऱ्ऱै–और; मऩितरै–नरों को; वॅऱियराक्कि–हारे हुए बनाकर; अमरर् पाल्–देवों के पास; निऩ्ऱु उयर्–रहते बड़े; नॅटिय–गम्भीर; तुऩ्पम्–दुःख को; निऱुप्पॅऩ्–स्थायी बना दूंगा; ऍऩ्ऩा–कहकर; अरक्कऩ्–राक्षस; चॅऩ्ऱऩऩ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गया; नत्ऱु वरुक–अच्छा, आओ; ॲत–कहकर; अनुमत् चेर्न्तान्–हनुमान भी आ मिला। २५०३

राक्षस ने यह दावे का वचन कहा कि आज मैं इसको स्वर्ग में चढ़ा दूँगा; तलवारधारी लंकाधिपति रावण को विजयी बना दूँगा; उन नरों को विजित बना दूँगा और देवों के गम्भीर दुःख को स्थायी बना दूँगा। हनुमान भी यह कहकर उससे आ मिला कि अच्छा है। आओ। २५०३

पडुकळप् परप्पै नोक्किप् पाऴिवाय् मडित्तु नूऴिऱ्
चुडुतऴऱ् पुहैवॆङ् गण्णिऱ् ऱोन्ऱिडक् कॊडित्तेर् तूण्डि
विडुकणैप् पडल मारि मऴैयिनु मुम्मै वीशि
मुडुहुरच् चॆन्ऱु कुन्ऱिन् मुट्टिनान् मुहिलि नार्प्पान् 2504

पटु कळम् परपपै नोक्कि–युद्ध के मैदान का विस्तार देखकर; पाऴि वाय मटित्तु–गुहा-सम मुख को मोड़कर; नूऴिल्–मारकर ढेर लगाने के काम में; चुटु–जलनेवाली; तऴल्–आग के साथ; पुकै–उठनेवाले धुएँ के; वॆम् कण्णिल् तोन्ऱिट–क्रूर आँखों में दिखायी देते; कॊटि तेर्–ध्वजा से अलंकृत रथ को; तूण्टि–चलाते हुए; विटु कणै पटलम् मारि–प्रेषित बाणों की राशियों की वर्षा को; मऴैयिनुम् मुम्मै–वर्षा से तिगुनी; वीचि-चलाकर; मुकिलिन् आर्प्पान्–मेघ के समान शब्द करता हुआ; मुटुकु उऱ–बहुत तेजी से; चॆन्ऱु–जाकर; कुन्ऱिन् मुट्टिनान्–पर्वत के समान टकराया। २५०४

अकंप ने मैदान का विस्तार देखा। ओंठ काटा। उसकी क्रूर आँखों में गरम आग और धुआँ प्रकट हुआ जो खुद शत्रुओं को मारकर ढेर लगा दे। वह ध्वजा से अलंकृत रथ चलाता हुआ और वर्षा से तिगुनी शर-वर्षा करता हुआ मेघ-सम नाद के साथ सवेग आया और पर्वत के समान हनुमान से टकराया। २५०४

शॊरिन्दन पहऴि मारि तोळिनु मार्बिन् मेलुन्
दॆरिन्दन वशनि पोल्व शॆऱिपॊऱि पिदिर्व तिक्किन्
वरिन्दन वॆरुवै मानच् चिऱैहळा लमरर् मार्बै
अरिन्दन वडिम्बु पॊन्कॊण् डणिन्दन वाहुङ् गण्ण 2505

अचनि पोल्व–अशनि-सदृश; चॆऱि–घने; पॊऱि–अंगारों को; तिक्किन् पितिर्व–दिशाओं में छितरानेवाले; ॲरुवै–गीधों के; मानम् चिऱैकळाल्–बड़े पंखों से; वरिन्तन–बाँधे गये; अमरर् मार्पै–देवों की छातियों को; अरिन्तन–जिन्होंने पहले खण्डित किया था; पॊन् कॊण्टु–स्वर्ण से; वटिम्पु अणिन्तन–जिनके अग्रभाग निर्मित थे; आकुम् कण्ण–जो बड़े चौड़े थे; चॊरिन्तन–बरसाये जो गये; पकऴि मारि–उन शरों की वर्षा; तोळिनुम् मार्पिन् मेलुम्–कंधों और छाती पर; तॆरिन्तन–दिखायी दिये। २५०५

उसके अस्त्र अशनि-सम थे। घने रूप से दिशाओं में अंगारे बिखेरने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाले थे। कंक-पक्षों से बद्ध थे। देववक्षभेदक थे। स्वर्णमुख थे और बड़े थे। वे हनुमान के कंधों और छाती पर लगे। २५०५

मार्बिनुन् दोळिन् मेलुम् वाळिवाय् मडुत्त वायिर्
चोर्पॅरुङ् गुरुदि शोरत् तुळङ्गुवान् ऱेऱा मुन्नन्
देरिरण् डरुहु पूण्ड कळुदैयु मच्चुम् जिन्दच्
चारदि पुरळ वीरत् तण्डिनार् कण्डञ् जॅय्दान् 2506

मार्पिनुम् तोळिन् मेलुम्–छाती और कंधों पर; वाळि वाय् मटुत्त–जहाँ शर भेद चले; वायिल्–वहाँ से; चोर्–बहनेवाला; पॅरु कुरुति–बड़ा रक्त-प्रवाह; चोर–बहता रहा; तुळङ्कुवान्–चंचल बना (हनुमान); तेऱा मुन्नम्–स्वस्थ बने, इसके पहले; तेर् इरण्टु अरुकु–रथ के दोनों बाजुओं में; पूण्ट–जुते हुए; कळुतैयुम्–(गधे या खच्चर); अच्चुम्–और धुरी के; चिन्त–नष्ट होने पर; चारति पुरळ—सारथी लोट गया ऐसा; वीरम् तण्टिनाल्—वीरताप्रदर्शक दण्ड से; कण्टम् चॅय्तान्—खण्डित किया (हनुमान ने)। २५०६

हनुमान के वक्ष और कंधों पर जहाँ बाण चुभे थे, उन व्रणों से रक्त बहता रहा और हनुमान थोड़ा श्रांत हो गया। उसके स्वस्थ होने से पहले ही उसने गदा से रथ के दोनों बाजुओं में जुते खच्चरों को गिराया। धुरी को तोड़ दिया और सारथी को लुढ़का दिया। २५०६

विल्लिना लिवनै वॅल्ल लरिदॅन निरुदन् वॅय्य
मल्लिना लियन्ऱ तोळिन् वलियिनाल् वानत् तच्चन्
कॊल्लिना लमैत्त दाण्डोर् कॊडुमुनैत् तण्डु कॊण्डान्
अल्लिनाल् वहुत्त दन्न मेनियान् कडलि नार्प्पान् 2507

इवनै–इसे; विल्लिनाल्–धनु से; वॅल्लल् अरितु–हराना कठिन है; अॅन–ऐसा सोचकर; अल्लिनाल् वकुत्ततु अन्नत–अन्धकार का बनाया जैसा शरीर वाला; कटलिन् आर्प्पान्–समुद्र के समान शब्द करनेवाला; निरुतन्–राक्षस (अकंप); वॅय्य–कठोर; मल्लिनाल् इयन्ऱ–सबल; तोळिन् वलियिनाल्–भुजबल से; वानम् तच्चन्–देवशिल्पी के; कॊल्लिनाल्–लुहार के कार्य से; अमैत्ततु–निर्मित; कॊटु मुनै–तीक्ष्ण नोकदार; ओर् तण्टु–एक गदा; आण्टु–तब; कॊण्टान्–हाथ में लिया। २५०७

अंधकार-निर्मित-से शरीर वाले ने, जो समुद्र-सम गरजनेवाला राक्षस था, यह सोचा कि इसको धनु के सहारे जीतना कठिन है। इसलिए उसने देवशिल्पी द्वारा निर्मित, तीक्ष्ण नुकीला एक दण्डायुध हाथ में लिया, जिसे वही अपने भुजबल से चला सकता था। २५०७

ताक्किना रिडत्तु मऱुम् वलत्तिनुन् दिरिन्दार् शारि
ओक्किना रूळि नार्प्पुक् कॊट्टिनार् किट्टि नार्कोळ्त्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तूक्किऩार् शुऴऱ्ऱि मेऩ्मेऱ् चुऱ्ऱिऩा रॅऱ्ऱि वॅऱ्ऱि
नोक्किऩार् नॅरुक्कि ऩार्मे ऩॅरुङ्गिऩार् नीङ्गि ऩार्मेल् 2508

ताक्किऩार्–परस्पर प्रहार किया; मऱुम्–और; इटत्तुम् वलत्ततिऩुम्–बायाँ और दायाँ; चारि तिरिन्तार्–पैंतरे बदलकर घूमे; ऊऴिऩ्–युगान्त के समान; आर्प्पु ओक्किऩार्–उच्च घोष किया; कॊट्टिऩार्–(कंधे) ठोंके; कीऴ् किट्टिऩार्–नीचे से जाकर; तूक्किऩार्–उठाया; चुऴऱ्ऱि–लपेट लिया; मेऩ् मेल्–उत्तरोत्तर; चुऱ्ऱिऩार्–घुमाया; ऍऱ्ऱि–पीटकर; वॅऱ्ऱि नीक्किऩार्–विजयी होने से रोका; ऩॅरुक्किऩार्–कस लिया; मेल् ऩॅरुङ्किऩार्–पास गये और; मेल् नीङ्किऩार्–दूर हटे। २५०८

अकंप और हनुमान टकराये; दायें-बायें पैंतरे बदले, प्रलयनाद उठाया, कंधे ठोंके; एक-दूसरे को नीचे से सिर लगाकर उठा लिया, घुमाया। परस्पर विजय से वंचित करने का प्रयास किया। लिपटे और अलग हुए। २५०८

तट्टिऩार् तऴुवि ऩार्मेऱ् ऱाविऩार् तरैयि ऩोडुङ्
गिट्टिऩार् किडैत्तार् वीशिप् पुडैत्तवै, कीऴु मेलुङ्
गट्टिऩार् कात्ता रॊऩ्ऱुङ् गाण्गिला रिऱवु कण्णुऱ्
ऱॊट्टिऩार् माऱि वट्ट मोडिऩा रादि पोऩार् 2509

तट्टिऩार्–कंधे ठोंककर; तऴुविऩार्–पाशबद्ध कर लिया; मेल् ताविऩार्–ऊपर उछले; तरैयिऩोटुम् किट्टिऩार्–धरती पर एक-दूसरे को बाँध लिया; किटैत्तार्–एक-दूसरे को मिल गये; वीचि पुटैत्तवै–ज़ोर के साथ पीटा तो; कीऴुम् मेलुम् कट्टिऩार् कात्तार्–नीचे और ऊपर कसकर बचा लिया; इऱवु ऒऩ्ऱुम्–कोई बढ़ना; काण्किलार्–न देख सके; कण्णुऱ्ऱु–परस्पर देखकर; ओट्टिऩार्–ललकारा; वट्टम् ओटिऩार्–गोल-गोल घूमे; माऱि–बदलकर; आति पोऩार्–सीधे गये। २५०९

दोनों ने कंधे ठोंककर परस्पर लपेट लिया। ऊपर उछले। भूमि पर आ भिड़े। प्रहार से बचे। दूसरे की बड़ाई न देख सके। ललकारा। कभी चक्राकार घूमे। कभी उसको छोड़ के सीधे गये। २५०९

मैयॊडुम् बहैत्तु निऩ्ऱ निऱत्तिऩाऩ् वयिर मार्बिऱ्
पॊय्यॊडुम् बहैत्तु निऩ्ऱ कुणत्तिऩाऩ् पुहुन्दु मोद
वॆय्यव ऩदऩैत् तण्डाल् विलक्किऩाऩ् विलक्क लोडुङ्
गैयॊडु मिऱ्ऱु मऱ्ऱक् कदैकळङ् गिडन्द दऩ्ऱे 2510

पॊय्यॊटुम्–असत्य से; पकैत्तु निऩ्ऱ–शत्रुता किये रहने के; कुणत्तिऩाऩ्–गुण वाले हनुमान ने; मैयॊटुम् पकैत्तु निऩ्ऱ–काजल से होड़ लगाये रहनेवाले; निऱत्तिऩाऩ्–रंग के अकंप से; वयिरम् मार्पिल्–वज्र-सम वक्ष पर; पुकुन्तु मोत–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(दण्ड) चलाकर प्रहार किया तो; वॆय्यवऩ्-क्रूर अकंपन ने; अतऩै-उसे; तण्टाल् विलक्कितान्-दण्डायुध से निवारा; विलक्कलोटुम्-रोकने पर; अ कऩै-वह गदा; कैयॊटुम्-हाथ के साथ; इऱ्ऱु-कटकर; कळम्-युद्धभूमि पर; किटन्ततु-गिर गया। २५१०

असत्यशत्रु हनुमान ने अंजन से होड़ लगानेवाले रंग के अकंप के वज्रवक्ष पर दण्ड से प्रहार किया तो अकंप ने उसको अपने दण्ड से रोका। तब वह गदा उसके साथ के साथ कटकर युद्धभूमि में गिर गयी। २५१०

कैयॊडु तण्डु नीङ्गक् कडलॆऩक् कलक्क मुऱ्ऱ
मॆय्यॊडु निऩ्ऱ वॆय्योऩ् मिडलुडै यिडक्कै वीशि
ऐयऩै यलङ्ग लाहत् तडित्तऩ ऩडित्त लोडुम्
ऑय्यॆऩ वयिरक् कुऩ्ऱत् तुरुमिऩै ऱिडित्त दॊत्त 2511

कैयॊटु-हाथ के साथ; तण्टुम् नीङ्क-गदा के नष्ट होने पर; कटल् ऎऩ-समुद्र के समान; कलक्कम् उऱ्ऱ-अस्त-व्यस्त होकर; मॆय्यॊटु निऩ्ऱ-शरीर के साथ जो खड़ा रहा उस; वॆय्योऩ्-क्रूर राक्षस ने; मिटल् उटै-बलवान; इट कै वीचि-बायें हाथ को बढ़ाकर; ऐयऩै-हनुमान को; अलङ्कल् आकत्तु-मालायुक्त वक्ष पर; अटित्तऩऩ्-पीटा; अटित्तलोटुम्-पीटते ही; ऑय्यॆऩ-त्वरित गति से; वयिरम् कुऩ्ऱत्तु-वज्रगिरि पर; उरुमिऩ् एऱु-बहुत बड़ी अशनि; इटित्ततु ऑत्त-फूटी जैसे हो गया। २५११

हाथ और गदा खोकर समुद्र-सम क्षुब्ध क्रूर राक्षस ने सशक्त अपने बायें हाथ को चलाकर हनुमान के मालाधारी वक्ष पर प्रहार किया। वह प्रहार वज्रगिरि पर सवेग गिरनेवाले अशनिराज-सम था। २५११

अडित्तवऩ् ऱऩ्ऩै नोक्कि यशऩिये ऱऩैय तण्डु
पिडित्तुनिऩ् ऱेयु मॆऱ्ऱाऩ् वॆऱुङ्गैयाऩ् पिऴैयिऱ् ऱॆऩ्ऩा
मडित्तुवा यिडत्तुक् कैयाऩ् मार्बिडैक् कुत्त वायाऱ्
कुडित्तुनिऩ् ऱुमिऴ्वा ऩॆऩ्ऩक् कक्कितऩ् कुरुदि वॆळ्ळम् 2512

अचऩि एऱु-अशनिराज; अऩैय तण्टु-के समान दण्ड; पिटित्तु निऩ्ऱेयुम्-पकड़े रहा तो भी; अटित्तवऩ् तऩ्ऩै नोक्कि-प्रहारक को देखकर; वॆऱुम् कैयाऩ्-यह खाली हाथ है; पिऴैयिऱ्ऱु-(इसको मारना) ग़लत होगा; ऎऩ्ऩा-ऐसा सोचकर; ऎऱ्ऱाऩ्-पीटा नहीं; वाय् मटित्तु-ओंठ काटकर; इटत्तु कैयाऩ्-बायें हाथ से; मार्पिटै कुत्त-छाती में घूंसा मारा; कुरुति वॆळ्ळम्-रक्त-प्रवाह को; वायाल् कुटित्तु निऩ्ऱु-मुख से पहले पीकर; उमिऴ्वाऩ् ऎऩ्ऩ-वमन करता जैसे; कक्कितान् अकंप ने वमन किया। २५१२

हनुमान के हाथ में अशनिराज-सी गदा थी। तो भी उसने सोचा कि यह खाली हाथ है। इसको गदा से मारना ग़लत है। ओंठ काटकर उसने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अपने बायें हाथ से उसकी छाती पर घूंसा मारा। तब उसके मुख से ऐसा रक्त निकला मानो वह पिया हुआ रक्त वमन कर रहा हो। २५१२

मीट्टुमक् कैयाल् वीशिच् चॅवित्तलत् तॅऱ्ऱि वीऴ्त्तात्
कूट्टिऩा ऩुयिरै विण्णोर् कुऴात्तिडै यरक्कर् कूट्टङ्
गाट्टिल्वाऴ् विलङ्गु माक्कळ् कोळरि कण्ड वॅऩ्ऩ
ईट्टमुऱ् ऱॅदिर्न्द वॅल्ला मिरिन्दऩ तिशैह् ळॅङ्गुम् 2513

मीट्टुम्–फिर; कैयाल् वीचि–(उसी) हाथ को चलाकर; चॅवि तलत्तु ऍऱ्ऱि–कानों पर प्रहार किया और; वीऴ्त्तात्–गिराया और; उयिरै–जीव को; विण्णोर् कुऴात्तु इटै–देवों के दलों में; कूट्टिऩात्–मिला दिया; ईट्टमुऱ्ऱु–दल बाँधकर; ऍतिर्न्त–जो लड़े वे; अरक्कर् कूट्टम् ऍल्लाम्–राक्षसों का दल; कोळरि कण्ट–सिंह देखकर; काट्टिल् वाऴ्–वनवासी; विलङ्कु माक्कळ् ऍऩ्ऩ–तिरछे बढ़नेवाले जानवर जैसे; तिचैकळ् ऍङ्कुम्–सभी दिशाओं में; इरिन्तऩ–भागे। २५१३

हनुमान ने फिर से उसकी कर्णपटी में हाथ से मारकर शरीर को नीचे गिराया और जीव को देवसमूह में मिला दिया। भीड़ में आये सभी राक्षस सिंह-दर्शक जंगल के जानवरों के समान सभी दिशाओं में अस्त-व्यस्त होकर भागे। २५१३

माण्डऩ ऩहम्बऩ् मण्मेऩ् मडिन्दऩ निरुदर् शेऩै
मीण्डऩर् कुरक्कु वीरर् विऴुन्दऩ शिऩक्कै वेऴम्
तूण्डिऩ कॊडित्ते रऱ्ऱुत् तुणिन्दऩ तॊडुत्त वाशि
आण्डहै यिळैय वीर ऩडुशिलै पॊऴियु मम्बाल् 2514

अकम्पऩ्–अकंप; मण् मेल् माण्टऩऩ्–पृथ्वी पर मरकर गिर गया; निरुतर् चेऩै मटिन्तऩ–राक्षस-सेनाएँ नाश हो गयीं; कुरक्कु वीरर्–वानर वीर; मीण्टऩर्–बचे लौट आये; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; इळैय वीरऩ्–लघुवीर के; चिलै पॊऴियुम्–धनुनिर्गत; अटुम् अम्पाल्–संहारक बाणों से; चिऩम्–क्रुद्ध; कै वेऴम्–शुंडी गज; विऴुन्तऩ–गिरे; तूण्टिऩ–चालित; कॊटि तेर्–ध्वजा-सहित रथ; अऱ्ऱु–टूटे तो; तॊटुत्त वाचि–जुते हुए घोड़े; तुणिन्तऩ–कट गये। २५१४

अकंप भूमि पर लोट गया। राक्षस-सेना धराशायी हो गयी। पुरुषश्रेष्ठ लघु वीर के धनु से निर्गत बाणों से क्रोधी करि मरकर गिरे। राक्षस द्वारा चालित ध्वजायुक्त रथ टूटे और उनसे जुते घोड़े कटे। २५१४

आर्क्किऩ्ऱ कुरलुङ् गेळा ऩिलक्कुव ऩशऩि येऱ्ऱैप्
पोर्क्किऩ्ऱ शिलैयि ऩाणिऩ् पोरॊलि केळाऩ् वीरर्
यार्क्किऩ्ऩ लुऱ्ऱ दॅऩ्ब दुणर्न्दिल ऩिशैप्पो रिल्लैप्
पोर्क्कुऩ्ऱ मऩैय तोळा ऩऩैयदोर् पॊरुम् लुऱ्ऱाऩ् 2515

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आर्क्किन्ऱ कुरल्–गर्जन का स्वर; केळात्तुम्–हनुमान न सुन पाया; इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; अचनि एऱ्ऱै–अशनिराज को; पोर्क्किन्ऱ–बेकार करनेवाली; चिलैयिन्–धनु की; नाणित्–प्रत्यंचा की; पोर् ऑलि–युद्ध-ध्वनि; केळान्–न सुन पाया; वीरर् यार्क्कु–किस वीर की; इन्नल् उऱ्ऱतु–हानि हुई; ऍन्पतु उणर्न्तिलन्–यह जो न जान पाया; इचैप्पोर् इल्लै–बतानेवाला कोई नहीं रहा; पोर् कुन्ऱम् अन्नैय–युद्धगिरि-सम; तोळान्–कन्धों वाला; अन्नैयतु ओर्–उसी (गिरि) सम; ओर् पॊरुमल् उऱ्ऱान्–एक खेद का अनुभव किया। २५१५

हनुमान ने वानरों का नाद नहीं सुना, लक्ष्मण के धनु के अशनिराज-सम ज्यास्वन नहीं सुना। उसे यह न मालूम हुआ कि किस वीर का क्या हाल हुआ। न वह किसी से सुन सका, क्योंकि आकर बतलानेवाला कोई नहीं था। इसलिए युद्धयोग्य पर्वत-सम कंधों वाला हनुमान शोकाकुल हुआ। २५१५

वीशिन्न निरुदर् शेन्नै वेलैयिर् ऱॆन्मेऱ् ऱिक्किन्
योशन्नै येळु शॆन्ऱा न्नङ्गद न्नवन्नुक् कप्पाल्
आशैयि न्निरट्टि शॆन्ऱा न्नरिकुलत् तलैव न्नप्पाल्
ईशन्नुक् किळैय वीर न्निरट्टिक्कु मिरट्टि शॆन्ऱान् 2516

वीचिन्न–बहुत दूर तक फैली रही; निरुतर् चेन्नै–राक्षस-सेना; वेलैयिल्–सागर में; तॆन् मेल् तिक्किल्–दक्षिण-पश्चिम दिशा में; अङ्कतन्–अंगद; एळु योचन्नै चॆन्ऱान्–सात योजन गया; अरि कुलम् तलैवन्–वानरकुलाधिपति; अवन्नुक्कु अप्पाल्–उससे भी आगे; आचैयित्–दिशा में; इरट्टि चॆन्ऱान्–दुगुनी दूर गया; ईचन्नुक्कु–ईश्वर श्रीराम के; इळैय वीरन्–कनिष्ठ वीर; अप्पाल्–उससे भी आगे; इरट्टिक्कुम् इरट्टि चॆन्ऱान्–दुगुनी की दुगुनी दूर गया था। २५१६

बहुत दूर तक फैली रही राक्षस-सेना के सागर में दक्षिण-पश्चिम दिशा में अंगद सात योजन दूर चला गया था। उसके आगे वानर-कुलपति (सुग्रीव) दुगुनी दूर चला गया था। ईश्वर राम के छोटे भाई दुगुनी की दुगुनी दूर यानी छप्पन योजन चले गये थे। २५१६

मऱ्ऱैयोर् नालु मैन्दुम् योशन्नै मलैन्दु पुक्कार्
कॊऱ्ऱमा रुवियुम् वळ्ळ लिलक्कुव न्निन्ऱ शूळल्
मुऱ्ऱिन्न न्निरण्डु मून्ऱु कावद मॊळियप् पिन्नुञ्
जुऱ्ऱिय शेन्नै नीर्मेऱ् पाशिपोन् मिडैन्दु तुन्न 2517

मऱ्ऱैयोर्–अन्य वानर वीर; मलैन्तु–लड़कर; योचन्नै–योजन; नालुम् ऐन्तुम्–(चार और पाँच) नौ; पुक्कार्–गये; पिन्नुम् चुऱ्ऱिय चेन्नै–उसके ऊपर भी घेरे जो रही वह सेना; नीर् मेल् पाचि पोल्–जल पर काई के समान; मिटैन्तु तुन्न–घने रूप से मिली रही तो; कॊऱ्ऱम् मारुतियुम्–विजयी मारुति; वळ्ळल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इलक्कुवन्–उदार प्रभु लक्ष्मण; निन्ऱ चूऴल्–जहाँ रहे उस स्थान को; इरुण्टु मून्ऱु कावतम्–दो-तीन कोस; ऒऴिय–अंतर रखकर; मुऱ्ऱिनन्–पहुँचा। २५१७

अन्य वानर वीर लड़ते-लड़ते नौ योजन दूर चले गये। उस पर घेरकर जो सेना रही, वह जल के ऊपर काई के समान फैली रही। मारुति उदार प्रभु लक्ष्मण के स्थान से दो-तीन कोश दूर पर आ गया। २५१७

इळैयव निन्ऱ शूऴ लॆय्दुवॆन् विरैवि नॆन्ऱोर्
उळैवुवन् दुळ्ळन् दूण्ड वूऴिवॆङ् गालिऱ् चॆल्वान्
कळैवरुन् दुन्ब नीङ्गक् कण्डन नॆन्ब मन्नो
विळैवत्त शॆरुविऱ् पल्वे ऱायिन कुऱिहळ् मेय 2518

उळ्ळम्–मन में; ओर् उळैवु–एक व्यथा के; वन्तु तूण्ट–उठकर उकसाने से; इळैयवन् निन्ऱ चूऴल्–लघु वीर जहाँ हैं उस स्थान को; विरैविन् ऎय्तुवॆन्–जल्दी चला जाऊँगा; ऎन्ऱु–कहकर; ऊऴि–युगांत के; वॆम् कालिन्–घनघोर पवन के समान; चॆल्वान्–जाता हुआ; कळैवु अरुम्–अवार्य; तुन्पम् नीङ्क–दुःख दूर करते हुए (घटनेवाले); चॆरुविल् विळैवत–युद्ध में जो हुए; पल् वेऱु आयिन–विविध; कुऱिकळ्–आसार; मेय कण्टनन्–हुए, देखा। २५१८

हनुमान के मन में लक्ष्मण को न देखकर बेचैनी पैदा हो गयी। "उनके पास शीघ्र जाऊँगा"—यह कहकर प्रलयकालीन पवन के समान जल्दी जाने लगा। तब युद्ध के कुछ ऐसे आसरे मिले जिनसे अवार्य दुःख दूर हुआ। २५१८

आनैयिन् कोडुम् बीलित् तऴैहळु मारत् तोडु
मानमा मणियुम् बॊन्नु मुत्तमुङ् गॊऴित्तु वारि
मीनॆन वङ्गु मिङ्गुम् बडॆक्कल मिळिर वीशुम्
पेनवॆण् गुडैय वाय कुरुदिप्पे राऱु कण्डान् 2519

आनैयिन् कोटुम्–हाथियों के दाँत; पीलि तऴैकळुम्–'पीलि' नामक वाद्य; आरत्तोटु–हारों के साथ; मानम् मा मणियुम्–अनेक बड़े रत्न; पॊन्नुम् मुत्तमुम्–स्वर्ण और मोती; कॊऴित्तु–अलग करके ले जाते हुए; वारि मीन् ऎन–जल की मछलियों के समान; पटॆक्कलम्–हथियारों के; अङ्कुम् इङ्कुम्–उधर और इधर; मिळिर–चमकते; वीचुम् पेनम्–चलनेवाले फेन के समान; वॆण् कुटैय–स्वेतछत्र वाली; आय–जो बनी थीं; कुरुति पेर् आऱु–रक्त की बड़ी नदियाँ; कण्टान्–देखीं हनुमान ने। २५१९

गजदंत, "पीली" नाम के बाजे, हार के साथ अनेक रत्न, स्वर्ण और मोती इनको छाँट लेती हुई रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बह रही थीं; जिनमें जल में मछलियों के समान हथियार इधर-उधर चमक रहे थे और फेन के समान श्वेत छत्र तिर रहे थे। २५१९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आशैह डोऱुञ् जुऱ्ऱि मलैहिऩ्ऱ वरक्कर् तम्मेल्
वीशिऩ पहऴि यऱ्ऱ तलैयॊडुम् विशुम्बै मुट्टि
ओशैयि ऩुलह मॆङ्गु मदिर्वुऱ वूऴि नाळिऱ्
काशऱु कल्लिऩ् मारि पॊऴिवपोल् विऴुव कण्डाऩ् 2520

आचैकळ् तोऱुम्–दिशा-दिशा में; चुऱ्ऱि मलैकिऩ्ऱ–घूमकर जो लड़े; अरक्कर् तम् मेल्–उन राक्षसों पर; वीचिऩ पकऴि–चलाये गये बाण; अऱ्ऱ तलैयोटुम्–कटे सिरों के साथ; विचुम्पै मुट्टि–आकाश से टकराकर; ओचैयिऩ्–उस शोर से; उलकम् ऍङ्कुम् अतिर्वु उऱ–सारे लोक थर्रा उठें, ऐसा; ऊऴि नाळिल्–युगांत में; काचु अऱु–निर्दोष; कल्लिऩ् मारि–पत्थरों की वर्षा; पॊऴिव पोल्–हो रही जैसे; विऴुव कण्टाऩ्–गिर रहे, वह हनुमान ने देखा। २५२०

दिशा-दिशा में घेरकर जो राक्षस लड़ रहे थे, उन पर अस्त्र चलाये गये थे। वे अस्त्र कटे हुए सिरों के साथ आकाश से टकराकर, उस शब्द से सारे लोकों को कँपाते हुए प्रलयकालीन निर्दोष प्रस्तरवर्षा के समान नीचे गिरे। हनुमान ने उसको देखा। २५२०

मानवे लरक्कर् विट्ट पडैक्कल वाऩ मारि
आऩवऩ् पहऴि शिऩ्दत् तिशैतॊऱुम् बॊऱियो डऱ्ऱ
मीऩिऩम् विशुम्बि निऩ्ऱु मिरुळुह विऴुव पोलक्
काऩहऩ् दॊडर्ऩ्द तीयिऱ् चुडुवऩ पलवुङ् गण्डाऩ् 2521

आऩवऩ् पकऴि–(युद्ध-) योग्य लक्ष्मण के शरों के; चिऩ्त–अधिक परिमाण में लगने से; मानम् वेल् अरक्कर्–शानदार भालों के धारक राक्षसों के; विट्ट–चलाये; पटैक्कलम्–हथियारों को; वाऩम् मारि–आकाश की वर्षा; तिचै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में; पॊऱियोटु अऱ्ऱ–अंगारों के साथ मिट गये; मीऩ् इऩम्–नक्षत्रसमूह; विचुम्पिऩ् निऩ्ऱुम्–आकाश से; इरुळ् उक–अंधकार मिटाते हुए; विऴुव पोल–गिरते जैसे; काऩकम् तॊटर्ऩ्त–वन में लगी; तीयिल्–आग के समान; चुटुवऩ–जलनेवाले; पलवुम् कण्टाऩ्–अनेक देखे। २५२१

लक्ष्मण के शरों ने शानदार राक्षसों के हथियारों को काटकर छितराया। तो वे हर दिशा में अंगारों के साथ अपनी शक्ति खोकर आकाश से अँधेरा दूर करके गिरनेवाले नक्षत्रों के समान नीचे गिरे और जंगल की आग के समान जलते रहे। हनुमान ने ऐसे बहुत से हथियार देखे। २५२१

भरुळुडैक् कुरिशिल् वाळि यन्दर मॆङ्गुऩ् वामायत्
तॆरुळुऱत् तॊडर्ऩ्दु वीशिच् चॆल्वऩ तेवर् काण
इरुळिडैच् चुडलैयॊडु मॆण्बुयत् तण्णल् वण्णच्
चरुळडैच् चडैयिऩ् कऱ्ऱैच् चुऱ्ऱैऩच् चुडर्व कण्डाऩ् 2522

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरुळ् उटै–करुणावान; कुरिचिल्–प्रभु के; वाळि–बाण; अन्तरम् ऍङ्कुम् तामाय्–आकाश भर में स्वयं वे ही रहे; तॆरुळ् उऱ–प्रकाश देते हुए; तॊटर्न्तु वीचि वॆल्वत्त–लगातार बढ़ते चले; इरुळ् इटै–रात में; चुटलै–श्मशान में; तेवर् काण–देवों के देखते; आटुम्–नाचनेवाले; ऍण् पुयत्तु अण्णल्–अष्टभुज शिवजी की; वण्णम्–सुन्दर; चुरुळ् उटै कऱ्ऱै चटैयिन् चऱ्ऱ ऍत्त–घुँघुराली जटा-जूट के समान; चुटर्व–प्रकाश देते थे, यह; कण्टान्–देखा (हनुमान ने)। २५२२

करुणामय प्रभु के शर आकाश भर में पूर्ण रूप से व्याप गये और आगे बढ़ते जाते हुए श्मशान में देवों के देखते नाचनेवाले अष्टभुज शिवजी की सुन्दर घुँघुराली जटाजूट के समान प्रकाश दे रहे थे। हनुमान ने वह भी देखा। २५२२

नॆय्युऱक् कॊळुत्तप् पट्ट नॆरुप्पॆत्तप् पॊरुप्पि त्तोङ्गुम्
मॆय्युऱक् कुरुदित् तारै विशुम्बुऱ विळङ्गि निन्ऱ
दैयत्तिक् कङ्गुन् मालै यरशॆत्त वऱिन्दु कालङ्
गैविळक् कॆडुत्त दॆन्नक् कवन्दत्तिन् काडु कण्डान् 2523

नॆय् उऱ–घी भरकर; कॊळुत्तप् पट्ट–जो जलायी गयी हो; नॆरुप्पु ऍत्त–वैसी आग के समान; पॊरुप्पिन् ओङ्कुम्–पर्वत के समान ऊँचा रहनेवाले; मॆय् उऱ–शरीर से अधिक; कुरुति तारै–रक्त का प्रवाह; विचुम्पु उऱ–आकाश पर लगे; विळङ्कि निन्ऱतु–जो शोभता रहा वह; ऐयन्–सुन्दर कुमार लक्ष्मण (को); अरचु ऍत्त–राजा के रूप में; अऱिन्तु–जानकर; इ कङ्कुल् माले कालम्–यह रात का समय; कै विळक्कु ऍटुत्ततु–हस्तदीप लिये हुए हो; ऍत्त–जैसा; कवन्तत्तिन् काटु कण्टान्–कबन्धों का जंगल देखा। २५२३

घी डालकर उभारी गयी आग के समान राक्षसों के पर्वतोपम शरीरों से रुधिर बहा और वह रक्त आकाश तक उछल रहा था। इस स्थिति में कबंध नाच रहे थे। वह रात के राजा लक्ष्मण के अभिनंदनार्थ हाथ में दीप लिये नाचने के समान था। हनुमान उन कबंधों का वह जंगल देखा। २५२३

आळॆला मऴिन्द तेरु मात्तैयु माडन् मावुम्
नाळॆला मॆण्णि त्तालुन् दॊलैविला नाद रिन्ऱिट्
ताळॆलाङ् गुलैय वोडित् तिरिवत्त ताङ्ग लाऱ्ऱुङ्
गोळिला मत्त त्ताट्टिऱ् कुडियॆत्तक् कुलैव कण्डान् 2524

आळ् ऍलाम्–वीर सभी; अऴिन्त तेरुम्–जिनके मिट गये थे वे रथ; आत्तैयुम्–गज; आटत् मावुम्–नृत्यशील घोड़े; नाळ् ऍलाम्–दिन भर; ऍण्णित्तालुम्–गिनो तो भी; तॊलैवु इला–जिनका अन्त नहीं हो सकता; नातर् इऱ्ऱि–अनाथ होकर; ताळ् ऍलाम् कुलैय–पैर थकाते हुए; ओटि तिरिवत्त–दौड़ते फिरनेवाले; ताङ्कल् आऱ्ऱुम्–पालनकर्म के; कोळ् इला–सिद्धान्त से हीन; मत्तत्त् ताट्टिल्–राजा के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राज्य में; कुटि अँत–प्रजा के समान; कुलैव–अस्त-व्यस्त थे, यह; कण्टान्–देखा। २५२४

हनुमान ने सारथी-रहित रथ, गज, घोड़े आदि देखे। वे अपने पैरों को बहुत दुःख देते हुए, सिद्धांतहीन राजा के राज्य की प्रजा के समान अस्त-व्यस्त हो भाग रहे थे। २५२४

मिडल्हॊळुम् बहळि मारि वानिनु मुम्मै वीशि
मडल्हॊळु मलङ्गन् मार्बन् मलैन्दिड वुलैन्दु माण्डार्
उडल्हळु मुदिर नीरु मॊळिर्बडैक् कलमु मुर्ऱ
कडल्हळु नॆडिय कानुङ् गार्तवळ् मलैयुङ् गण्डान् 2525

मटल् कॊळुम्–दलसंकुल; अलङ्कल् मार्पन्–पुष्पमाला से अलंकृत वक्ष वाले लक्ष्मण ने; मिटल् कॊळुम्–सारयुक्त; पकळि मारि–शर-वर्षा को; वानिनुम्–आकाश की वर्षा से; मुम्मै वीचि–तिगुनी चलाते हुए; मलैन्तिट–युद्ध किया, इसलिए; उलन्तु माण्टार्–प्राण खोकर जो मरे उनके; उटल्कळुम्–शरीर और; उतिरम् नीरुम्–रक्तजल; ऒळिर् पटै कलमुम्–उज्ज्वल हथियार; उर्ऱ–जिनमें जा मिले थे उन; कटल्कळुम्–समुद्रों और; नॆटिय कानुम्–विशाल वन को; कार् तवळ्–मेघ जिन पर रेंगते हैं, ऐसे; मलैयुम्–पर्वत को; कण्टान्–देखा हनुमान ने। २५२५

दललसित पुष्पमालाधारी वक्ष वाले लक्ष्मण के सशक्त शर-वर्षा को मेघ-वर्षा से तिगुना चलाते हुए युद्ध करने से मरे हुए राक्षसों के शरीर-रक्त का प्रवाह और उज्ज्वल हथियार, इनसे युक्त सागरों, विशाल वनों और मेघावृत पर्वतों को हनुमान ने देखा। २५२५

शुळित्तॆऱि यूळिक् कालिऱ् ऱुरुविनन् तॊडरुन् दोन्ऱल्
तळिक्कॊण्ड कुरुदि वेलै तावुवान् ऱनिप्पे रण्डङ्
गिळिन्ददु किळिन्द दॆन्नु नाणुरु मेरु केट्टान्
अळित्तॊळि कालत् तार्क्कु मार्हलिक् किरट्टि यार्त्तान् 2526

चुळित्तु ऎऱि–चक्करों में बहनेवाली; ऊळि कालिल्–युगान्त की हवा के समान; तुरुविनन्–टटोलकर; तॊटरुम्–बढ़नेवाला और; तळिक् कॊण्ट–उसे भग्न करनेवाले; कुरुति वेलै–रक्त-समुद्र को; तावुवान्–पार करनेवाला जो था; तोन्ऱल्–उस महिमावान हनुमान ने; तनि पेर् अण्टम्–अनोखा एक बड़ा अण्ड; किळिन्ततु किळिन्ततु–फटा, फटा; ऎन्नुम्–जैसा; नाण् उरुम् एरु–ज्यास्वन का अशनिराज; केट्टान्–सुना; अळित्तु ऒळि–(लोक) नाशक; कालत्तु–युगान्तकालीन; आर्क्कुम्–गरजनेवाले; आर् कलिक्कु–समुद्र से; इरट्टि–दुगुना; आर्त्तान्–(आनन्द-) नाद उठाया। २५२६

हनुमान युगांत के बवंडर के समान ढूँढ़ता हुआ बढ़ रहा था और रक्त के समुद्रों को पार करता हुआ जा रहा था। तब उसने डोरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खीचने का अशनि-सम शब्द सुना, जिससे यह विलक्षण बड़ा अंड फट गया, ऐसी स्थिति हो गयी। उसको सुनकर हनुमान ने सर्वनाशक युगांत के समुद्र-गर्जन का दुगुना नाद उठाया। २५२६

आर्त्तपे रमलै केळा वणुहिऩ ऩऩुम ऩॆल्लार्
वार्त्तऩैयुङ् गेट्क लाहु मॆऩ्ऱह महिऴ्ऩ्दु वळ्ळल्
पार्प्पदऩ् मुऩ्ऩम् वऩ्दु पणिऩ्दऩऩ् विशयप् पावै
तूर्त्तऩै यिळैय वीरऩ् ऱऴुविऩ ऩिऩैय शॊऩ्ऩाऩ् 2527

आर्त्त पेर् अमलै–उठा उच्च ज्यास्वन; केळा–सुनकर; अनुमऩ्–हनुमान; अणुकिऩऩ्–पास जाकर; ऍल्लार् वार्त्तऩैयुम्–सभी का समाचार; केट्कलाकुम्–सुन सकेंगे; ऍऩ्ऱु–ऐसा; अकम् मकिऴ्ऩ्ऩु–संतोष करके; वळ्ळल्–उदार प्रभु; पार्प्पऩऩ् मुऩ्ऩम्–देख लें, इसके पहले; वऩ्दु पणिऩ्दऩऩ्–आकर नत हुआ; विचय पावै तूर्त्तऩै–विजयलक्ष्मी के कामुक हनुमान को; इळैय वीरऩ्–लघुवीर ने; ऱऴुविऩऩ्–आलिंगन कर लिया और; इऩैय चॊऩ्ऩाऩ्–ये बातें कहीं। २५२७

हनुमान ने लक्ष्मण के धनुष की टंकार सुनकर सोचा कि लक्ष्मण पास ही हैं। सारा समाचार सुन सकूँगा। उत्साह के साथ वह, लक्ष्मण उसको देखें इसके पहिले ही, सामने आकर झुका। विजयश्री के कामुक हनुमान को लघुराज ने गले लगाकर उससे ये बाते पूछीं। २५२७

अरिकुल वीर रैय याण्डैय ररुक्कऩ् मैऩ्दऩ्
पिरिवुऩैच् चॆय्द दॆव्वा ऱङ्गदऩ् पॆयर्ऩ्द दॆङ्गे
विरियुरुट् परवैच् चेऩै वॆळ्ळत्तु विळैऩ्द चॊऩ्ऱुऩ्
दॆरिहिल ऩुरैत्ति यॆऩ्ऱाऩ् चॆऩ्ऩिमेऱ् कैयऩ् शॊऩ्ऩाऩ् 2528

ऐय–तात; अरिकुल वीरर्–वानरकुल के वीर; याण्टैयर्–कहाँ हैं; अरुक्कऩ् मैऩ्दऩ्–सूर्यसूनु ने; उऩै–आपको; पिरिवु चॆय्ततु–अलग किया; ऍव्वाऱु–कैसा; अङ्कऩऩ् पॆयर्ऩ्ततु–अंगद अलग गया; ऍङ्के–कहाँ; विरि इरुळ्–विशाल अंधकार के; परवै–सागर में मिली; चेऩै वॆळ्ळत्तु–सेना के सागर में; विळैऩ्ततु–जो हुआ; ऑऩ्ऱुम् ऩॆरिकिलेऩ्–एक समाचार भी नहीं जानता; उरैत्ति–कहो; ऍऩ्ऱाऩ्–लक्ष्मण ने पूछा; चॆऩ्ऩिमेल् कैयऩ्–सिर पर घृत हाथों वाले ने; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। २५२८

तात! वानरकुल वीर कहाँ हैं? अर्कपुत्र तुमसे अलग हुआ कैसे? अंगद गया कहाँ? विशाल अंधकार में सेना का प्रवाह छिप गया और मुझे कुछ भी विदित नहीं हो रहा है। बताओ। हनुमान ने जुड़े हाथ सिर पर रख लिये और यों कहा। २५२८

पोयिऩार् पोय वाऱुम् बोयिऩ दऩ्ऱिप् पोरिल्
आयिऩा राय दॊऩ्ऱु मऱिऩ्दिल ऩैय यारुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेयिऩार् मेय पोदै तॆरियलाम् विळैन्द दऩ्ऱाऩ्
तायिऩाऩ् वेलै योडु मयिन्दिरप् परवै तऩ्ऩै 2529

वेलैयोटुम्–समुद्र और; ऐऩ्तिरम् परवै तऩ्ऩै–ऐंद्रव्याकरण-सागर को; तायिऩाऩ्–जिसने पार किया था; ऐय–(उस हनुमान ने) प्रभु; पोयिऩार् पोय आऱम्–जो गये उनके जाने का हाल; पोयिऩतु अऩ्ऱि–जाने के अलावा; पोरिल् आयिऩार्–युद्धरत जो रहे; आयतु ऒऩ्ऱुम्–उनका क्या हुआ, यह कुछ; अऱिन्तिलऩ्–नहीं जाना; यारुम्–किसी के बारे में; मेयिऩार् मेय पोते–जो गये हैं उनके आने पर ही; विळैन्त–जो हुआ वह; तॆरियलाम्–जाना जा सकता है; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। २५२९

समुद्र और ऐंद्र (व्याकरण) के पारंगत हनुमान ने निवेदन किया कि प्रभु ! जो गये उनकी बातें या जो लड़े उनकी स्थिति मैं नहीं जानता। उनके लौटने पर ही बातें मालूम हो सकती हैं। २५२९

मन्दिर मुळदा लैय बुणर्वुऱु मालैत् तः(ह्)दुऩ्
चिन्दैयि ऩुणर्न्दु शॆय्यऱ् पाऱ्ऱिऩिच् चॆय्दि तॆव्वर्
तन्दिर मिदनैत् तॆय्वप् पडैयिऩाऱ् चमैक्कि ऩल्लाल्
ऎन्दैनिऩ् ऩडियर् यारु मॆय्दलर् निऩ्ऩै यॆऩ्ऱाऩ् 2530

ऐय–प्रभु; उणर्वु उऱु–प्रज्ञा पाने की; मालैत्तु–शक्तिदायक; मन्तिरम् उळ्ळतु–मंत्र है; अ.ःतु–वह; उऩ् चिन्तैयिऩ् उणर्न्तु–आपके चित्त में ध्यान करके; चॆय्यल् पाऱ्ऱु–करने अर्ह है; इऩि–अब; चॆय्ति–कीजिए; तॆव्वर्–शत्रुओं की; तन्तिरम्–साजिश से हुए; इतऩै–इस (भ्रम) को; तॆय्ब पटैयिऩाल्–दिव्यास्त्र से; चमैक्किऩ् अल्लाल्–हटाये बग़ैर; ऎऩ्तै–पिताजी; निऩ् अटियर् यारुम्–आपका भक्त कोई; निऩ्ऩै ऎय्तिलर्–आपको नहीं मिलेंगे; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा, हनुमान ने। २५३०

हनुमान ने आगे कहा कि प्रभु ! मोह दूर करके प्रज्ञा दिलानेवाला एक मंत्र है। आप उस मंत्र का मन लगाकर प्रयोग करें। शत्रु की माया से यह भ्रांति उत्पन्न है, दिव्यास्त्र छोड़कर इसको दूर किये विना, हे धाता ! आपके दास कोई आपके पास नहीं आयेंगे। २५३०

अऩ्ऩदु पुरिवे ऩॆऩ्ऩा वायिर नामत् तण्णल्
तऩ्ऩैये वणङ्गि वाळ्त्तिच् चरङ्गळैत् तॆरिन्दु वाङ्गिप्
पॊऩ्मलै विल्लि ऩाऩ्ऱऩ् पडैक्कलम् बॊरुन्द वेन्दि
मिऩ्ऩॆयिऱ् ऱरक्कर् तम्मेल् वीशिऩाऩ् विल्लिऩ् शॆल्वऩ् 2531

विल्लिऩ् चॆल्वऩ्–धनुर्धनी लक्ष्मण ने; अऩ्ऩतु पुरिवेऩ्–वही करूँगा; ऎऩ्ऩा–कहकर; आयिरम् नामत्तु–सहस्रनामी; अण्णल् तऩ्ऩैये–प्रभु श्रीराम का; वणङ्कि वाळ्त्ति–नमन और स्तुति करके; चरङ्कळै–बाणों को; तॆरिन्तु वाङ्कि–चुन लेकर; पॊऩ् मलै विल्लिऩाऩ् तऩ्–स्वर्णमेरुधन्वा के; पटै कलम्–अस्त्र को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(पाशुपतास्त्र को); पॊरुन्त एन्ति–युक्त रीति से संधानकर; मिन् ऍयिऱु–बिजली के समान दाँतों वाले; अरक्कर् तम् मेल्–राक्षसों पर; वीचिनान्–चलाया। २५३१

धनुर्धनी लक्ष्मण ने हनुमान की वह बात सुनकर उत्तर दिया कि मैं वही करूँगा। फिर उन्होंने सहस्रनामी श्रीराम को नमस्कार करके स्वर्णमेरुधन्वा शिवजी का पाशुपतास्त्र चुनकर उठाया और बिजली-सम दाँतोंवाले राक्षसों पर चलाया। २५३१

मुक्कणान् पडैयै मूट्टि विडुदलु मूङ्गिऱ् काट्टिऱ्
पुक्कदो रूऴित् तीयिऱ् पुऱत्तिनो रुरुवुम् बोहा
दक्कणत् तॆरिन्दु वीऴ्न्द दरक्करदञ् जेनै याऴि
तिक्कॆला मिरुळुन् दीर्न्द तेवरु मयक्कन् दीर्न्दार् 2532

मुक्कणान् पटैयै–त्रिनेत्र शिवजी के अस्त्र को; मूट्टि विटुतलुम्–संधान कर छोड़ते ही; मूङ्किल् काट्टिल्–बाँस के वन में; पुक्कतु–लगी; ओर् ऊऴि तीयिल्–युगांत की आग के समान; पुऱत्तिन्–उस तरफ़; ओर् उरुवुम् पोकातु–एक पदार्थ भी न हट जाए ऐसा; अरक्कर् चेनै आऴि–राक्षस-सेना-सागर; अक्कणत्तु–उसी क्षण में; ऍरिन्तु वीऴ्न्ततु–जलकर गिरा (नष्ट हुआ); तिक्कु ऍलाम्–सभी दिशाओं में; इरुळुम् तीर्न्ततु–अन्धकार मिट गया; तेवरुम्–देव भी; मयक्कम् तीर्न्तार्–भ्रममुक्त हुए। २५३२

त्रिनेत्र शिवजी के अस्त्र को जब लक्ष्मण ने छोड़ा, तब उससे बाँस के वन में फैली युगांत की अग्नि के समान आग जल उठी और राक्षस-सेना उसी क्षण जलकर मिट गयी। कोई भी जीव इधर-उधर नहीं जा सका। सारी दिशाओं का अंधकार मिट गया। देवों को भी होश आया। २५३२

तेवर्दम् बडैयै विट्टा नॆन्बदु चिन्दै शॆय्या
माबॆरु मायै नीङ्ग महोदरन् मऱैयप् पोनान्
यावरु मिरिन्दा रॆल्ला मिनमळै कळिय वार्त्तुक्
कोविळङ् गळिऱ्ऱै वन्दु कूडिना राडल् कॊण्डार् 2533

तेवर् तम् पटैयै–ईश्वर का पाशुपतास्त्र; विट्टान् ऍन्पतु–यह बात; चिन्तै चॆय्या–सोचकर; मा पॆरु मायै नीङ्क–बहुत बड़ी माया के दूर होने पर; मकोतरन् मऱैय पोनान्–महोदर छिपकर चला गया; इरिन्तार् यावरुम्–तितर-बितर जो गये वे सभी; इनम् मळै ऍल्लाम्–इकट्ठे हुए सारे मेघ; कळिय–पिछड़ जाएँ ऐसा; आर्त्तु–शब्द करते हुए; इळम् कळिऱ्ऱै–कलभ-सम लक्ष्मण के पास; वन्तु कटिनार्–आ जमा हुए; ऍल्लाम् आटल् कॊण्टार्–सब नाचने लगे। २५३३

महोदर ने जान लिया कि लक्ष्मण ने पाशुपतास्त्र का प्रयोग किया है, तो वह छिपकर चला गया। जो भागे थे वे सभी वानर मेघों के गर्जन-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाद को भी हरानेवाले शोर के साथ लौट आये और कलभ-सम लक्ष्मण से आ मिले और नाचने लग गये। २५३३

यावर्क्कुन् दीदि लामै कण्डुकण् डुवहै येऱत्
तेवर्क्कुन् देवन् ऱम्बि तिरुमनत् तैयन् दीर्न्दान्
कावऱ्पोर्क् कुरक्कुच् चेनै कल्लॅनक् कलन्दु पुल्लप्
पूवर्क्क मिमैयोर् दूवप् पॊलिन्दनन् तूदर् पोनार् 2534

तेवर्क्कुन् तेवन् तम्पि–देवाधिदेव के छोटे भाई ने; यावर्क्कुम्–सभी (किसी) को; तीतु इलामै कण्टु–हानि-रहित देखकर; कण्टु–देखकर; उवकै एऱ–आनंद के बढ़ने से; तिरुमनत्तु–श्रीमन में से; ऐयम् तीर्न्तान्–संदेह दूर कर दिया; कावल्–रक्षण में; पोर् कुरक्कु चेनै–युद्ध-योग्य वानर-सेना के; कल् ॲत कलन्तु पुल्ल–'गल्ल' शब्द के साथ आकर मिलने पर; इमैयोर्–देवों के; पू बर्क्कम् तूव–पुष्पराशि बरसाते; पॊलिन्तनन्–शोभित रहा; तूतर् पोनार्–दूत (रावण के पास) गये। २५३४

देवादिदेव लक्ष्मण को यह देखकर सन्तोष हुआ कि किसी की कुछ हानि नहीं हुई है। उनके मन का संशय दूर हो गया। उनके रक्षण में लड़ने के लिए वानर-सेना 'गल्ल' शब्द के साथ आ जुट गयी। देवों ने पुष्पवर्षा की। इस स्थिति में लक्ष्मण शोभायमान रहे। रावण के दूत यह देखकर रावण के पास समाचार देने चले। २५३४

इलङ्गैयर् कोनै यॅय्दि यॅय्दिय दुरैत्तार् नीविर्
विलङ्गिनिर् पोलुम् वॅळ्ळ नूऱ्ऱैयोर् विल्लिल् वेळ्क्
कुलङ्गळि नोडुङ् गॊल्लक् कूडुमो वॅन्नक् कॊन्ऱै
अलङ्गलान् पडैयि नॅन्ऱा रन्नदे लाहु मॅन्ऱान् 2535

इलङ्कैयर् कोनै ॲय्ति–लंकाधिपति के पास जाकर; ॲय्तियतु उरैत्तार्–जो हुआ वह बताया; नीविर्–तुम लोग; विलङ्किनिर् पोलुम्–डर से अलग हट गये शायद क्या; वेळ्ळम् कुलङ्कळिनोटुम्–गजवृन्दों के साथ; वॅळ्ळम् नूऱ्ऱै–सौ 'वॅळ्ळम्' सेना को; ओर् विल्लिल्–एक धनु से; कॊल्ल कूडुमो–मारा जा सकता है क्या; ॲन्नत–पूछने पर; कॊन्ऱै–अमलतास पुष्प की; अलङ्कलान्–मालाधारी शिव के; पडैयिन्–(पाशुपत-) अस्त्र से; ॲन्ऱार्–कहा; अन्नतेल् आकुम्–वह बात हो तो हो सकता है; ॲन्ऱान्–मान लिया (रावण ने)। २५३५

दूतों ने लंकेश के पास जाकर बीती बात कही। रावण ने पूछा। तुम लोग डर के मारे दूर ही रहे शायद क्या? सौ 'वॅळ्ळम्' सेना को हाथियों-सहित एक ही धनु द्वारा मारा जा सकता है क्या? दूतों ने उत्तर दिया कि अमलतास के फूलों की मालाधारी शिवजी के (पाशुपत-) अस्त्र से ऐसा काम हुआ, तो रावण ने माना कि वही हो तो संभव है! । २५३५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तोडवि ऴलङ्ग लॅन्शेय्क् कुणर्त्तुमि नॅन्नच् चॊन्नान्
ओडिनार् शारर् वल्लॅ युणर्त्तिनर् तुणुक्क मॅय्दा
आडवर् तिलहन् याण्डै यानिह लनुम नेनोर्
वीडणन् याङ्ग णुळ्ळा रुणर्त्तुमिन् विरैवि नॅन्ऱान् 2536

तोटु अविऴ्-विकसितदल; अलङ्कल्-मालाधारी; अॅन् चेय्क्कु-मेरे पुत्र को; उणर्त्तुमिन्-बताओ; अॅन्न-ऐसा; चॊन्नान्-कहा; चारर्-दूत; वल्लै-शीघ्र; ओटिनार्-दौड़े; उणर्त्तिनर्-समझाया; तुणुक्कम् अॅय्दा-डरकर; आटवर् तिलकन्-पुरुषतिलक; याण्टैयान्-कहाँ (रहता है); इकल् अनुमन्-वीर हनुमान; एनोर्-अन्य वानर; याङ्कण् उळ्ळार्-कहाँ हैं; विरैविन् उणर्त्तुमिन्-जल्दी कहो; अॅन्ऱान्-पूछा (इन्द्रजित् ने)। २५३६

रावण ने कहा कि तुम लोग जाओ और विकसित दलों वाले पुष्पों की मालाधारी मेरे पुत्र को यह समाचार सुनाओ। चर शीघ्र भागे। इन्द्रजित् को समझाया। इन्द्रजित् काँप उठा। पुरुषतिलक श्रीराम कहाँ है? बलवान हनुमान कहाँ? अन्य वानर कहाँ? तुरन्त बताओ। —इन्द्रजित् ने पूछा। २५३६

वन्दिल निरामन् वेऱोर् मलैयुळा नुन्द मायन्
दन्दन तॅरिवान् पोना नुण्बन ताऴ्क्कल् ताळा
अॅन्दैती दियऱ्ऱु दॅन्न महोदर नियाण्डै यॅन्न
अन्दरत् तिडैय नॅन्न विरावणि यऴहिऱ् ऱॅन्ऱान् 2537

इरामन् वन्तिलन्-राम नहीं आया; वेऱोर् मलै उळान्-अन्य किसी पहाड़ पर है; मायम् तन्तनन्-माया जो की जाती है उसे; तॅरिवान् उन्तै-उसे जाननेवाले तुम्हारे पिता (चाचा); उण्पन ताऴ्क्क-रसद के आने में देरी होने से; पोनान्-गये; ताळा अॅन्तै-विलंब न करनेवाले मेरे पिता (तुल्य); तीतु इयऱ्ऱु-हानि हो गयी है; अॅन्न-(दूतों के ऐसा) कहने पर; मकोतरन् याण्टै-महोदर कहाँ; अॅन्न-पूछने पर; अन्तरत्तु इटैयन्-आकाशमध्य; अॅन्न-कहने पर; इरावणि-रावणि ने; अऴकितु-सुन्दर है यह; अॅन्ऱान्-कहा। २५३७

राम आया नहीं। वह कहीं दूसरे पर्वत पर है। माया पहचान सकनेवाले आपके चाचा रसद आने में विलम्ब हुआ तो रसद लाने गये। अविलम्ब कार्य करनेवाले तात! नुक़सान हो गया। दूतों ने यह कहा, तो इन्द्रजित् ने प्रश्न किया कि महोदर कहाँ है? 'आकाश में' —जवाब मिलने पर रावणि ने कहा कि यह भी सुन्दर रहा। २५३७

काल मीदॅन्नक् करुदिय विरावणन् कादल्
आल मामर मॊन्ऱिन्नै विरैविनि नडैन्दान्
मूल वेळ्विक्कु वेण्डव कलप्पॅहण् मुऱैयार्
कल नीङ्गिय विराक्कदप् पूशुरर् कॊणर्न्दार् 2538

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईतु–यही; कालम्–युक्त समय है; ऍन्न करुतिय–ऐसा सोचा; इरावणन् कातल्–रावणनंदन; मा आल मरम् ऑन्ऱिनै–बड़े वटवृक्ष के पास; विरैविनिन्–जल्दी; अटैन्तान्–पहुँचा; कूलम् नीङ्किय–अतिक्रमी; इराक्कतर् पूचुरर्–राक्षस-ब्राह्मण; मूलम् वेळ्विक्कु वेण्टुव–प्रधान यज्ञ के लिए आवश्यक; कलप्पैकळ्–सामग्रियाँ; मुऱैयाल् कोणर्न्तार्–क्रम से लाये। २५३८

रावणनन्दन ने सोचा कि ब्रह्मास्त्र चलाने का यही समय है। वह एक बड़े बरगद के पेड़ के पास शीघ्र गया। अमर्यादित कर्मकाण्डी राक्षस-ब्राह्मण यागसामग्रियाँ यथारीति लाये। २५३८

अम्बि नाऱ्पॅरुञ् जमिदैह ळमैन्दन ऩनलिल्
तुम्बै मामलर् तूविनन् कारियॅट् चॉरिन्दान्
कॉम्बु पल्लॉडु करियवॅळ् ळाट्टिरुङ् गुरुदि
वॅम्बु वॅन्दशै मुऱैयिनिट् टॅण्मैयाल् वेट्टान् 2539

अम्पिनाल्–बाणों से; पॅरुम् चमितैकळ्–बड़ी समिधाएँ; अमैत्तनन्–बनायीं; अनलिल्–आग में; तुम्पै मा मलर्–'तुंबै' के बड़े पुष्पों को; तूविनन्–डाला; कारि ऍळ्–काले तिल को; चॉरिन्तान्–होम किया; कॉम्पु पल्लॉटु–सींग और दाँतों-सह; करिय वॅळ् आटु–बकरी का; इरु कुरुति–अधिक रक्त; वॅम्पु–पके जाने योग्य; वॅम् तचै–कठिन मांस; मुऱैयिन् इट्टु–क्रम से डालकर; ऍण् नॅयाल्–मुख्य-मान्य घी से; वेट्टान्–यज्ञ सम्पन्न किया। २५३९

इन्द्रजित् ने अस्त्रों की समिधा बनायी। आग में 'तुंबै' के बड़े फूलों को डाला। काला तिल होम किया। सींगों और दाँतों के साथ बकरी का रक्त और मांस डालकर श्रेष्ठ घी से होमकार्य सम्पन्न किया। २५३९

वलञ्जु ऴित्तुवन् दॅळुन्दॅरि नऱुवंऱि वयङ्गि
नलञ्जु रन्दन पॅरुङ्गुऱि मुऱैमैयि नल्हक्
कुलञ्जु रन्दॅळु कॉडुमैयान् मुऱैयिनिऱ् कॉण्डे
निलञ्जु रन्दॅळु वॅन्ऱियॅन् ऱुम्बरि निमिर्न्दान् 2540

ऍरि–यागाग्नि; नऱु वॅऱि वयङ्कि–सुगंधिसंमिश्रित; वलम् चुऴित्तु वन्तु–दायीं ओर से घूमकर; ऍळुन्तु–उठी और; नलम् चुरन्तन–शुभकारी; पॅरु कुऱि–बड़े शकुन; मुऱैमैयिन् नल्क–यथेच्छित दिखाये तो; कुलम् चुरन्तु ऍळु–कुल भर में होनेवाली; कॉटुमैयान्–दुष्टता का आगार; वॅन्ऱि–विजय; निलम् चुरन्तु ऍळुम्–युद्धभूमि से मिलेगी ऐसा; मुऱैयिनिल् कॉण्टे–यथारीति मन में मानकर; उम्परिन् निमिर्न्तान्–आकाश में ऊँचा खड़ा रहा। २५४०

यागाग्नि सुगन्ध के साथ दायीं तरफ़ घूम उठी। अच्छे शकुन प्रकट हुए। सारे राक्षसकुल की सम्पूर्ण क्रूरता का मूर्तिमान इन्द्रजित् यह विश्वास लेकर आकाश में उठा कि युद्धभूमि से हित अवश्य होगा। २५४०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विशुम्बु पोयिऩऩ् मायैयिऩ् पॅरुमैयाऩ् मेलैप्
पशुम्बॊ ऩाट्टवर् नाट्टमु मुळ्ळमुम् बडरा
वशुम्बु विण्णिडै यडङ्गिऩऩ् मुऩिवरुम् मऱियार्
तशुम्बु नुण्णॆडुङ् गोळॊडु कालमुञ् जार 2541

मायैयिऩ् पॅरुमैयाऩ्–माया के प्रभाव से; विचुम्पु पोयिऩऩ्–आकाश में जाकर; तचुम्पु–कुम्भराशि के; नुण् नॆटु कोळॊटु–शनि ग्रह के साथ; नॆटुकोळॊटु–लंबे (केतु) ग्रह के साथ; कालमुम् चार–काल के मिलने से; मेलै–ऊपर; पचुम् पॊऩ् नाट्टवर्–स्वर्णनगरी के वासियों के; नाट्टमुम् उळ्ळमुम्–नेत्र और मन; पटरा–जहाँ नहीं पहुँच पाते; अचुम्पु विण् इटै–मैले जलकणों के साथ रहे आकाश में; अटङ्किऩऩ्–दबा रहा; मुऩिवरुम् अऱियार्–ऋषि भी जान नहीं पाये। २५४१

माया के बल से वह आकाश में चला। कुंभ राशि का देवता शनि लक्ष्मण के नक्षत्र की चन्द्रराशि में केतु के साथ आ गया था। इन्द्रजित् आकाश में ऐसे स्थान पर जा छिपा रहा, जहाँ ऊपर के स्वर्गलोक के वासी देवों की आँखें क्या उनका मन भी नहीं पहुँच सकता था। २५४१

अऩैय ऩिऩ्ऱऩ ऩब्बळि महोदर ऩऱिन्दोर्
विऩैय मॆण्णिऩ ऩिन्दिर वेडत्तै मेवित्
तुऩैव लत्तयि राबदक् कळिऱ्ऱिन्मेर् ऱोन्ऱि
मुऩैवर् वाऩव रवरॊडुम् बोर्शॆय मूण्डाऩ् 2542

अऩैयऩ्–वह रावणि; निऩ्ऱऩऩ्–खड़ा रहा; अब् बळि–तब; मकोतरऩ्–महोदर ने; अऱिन्तु–जान-बूझकर; ओर् विऩैयम्–एक उपाय; ऎण्णिऩऩ्–सोचा; इन्तिर वेटत्तै मेवि–इन्द्र का वेश धरकर; तुऩै वलत्तु–तेज गति और बल से युक्त; अयिरापतम् कळिऱ्ऱिऩ् मेल् तोन्ऱि–ऐरावत गज पर प्रकट हो; मुऩैवर् वाऩवर् अवरॊटुम्–मुनियों और देवों के साथ; पोर् चॆय्–युद्ध करने को; मूण्टाऩ्–उद्यत हुआ। २५४२

रावणि जब वहाँ खड़ा रहा, तब महोदर ने खूब सोचकर एक माया रची। उसने इन्द्र का वेश धर लिया। उसने बलवान और वेगवान गज ऐरावत पर आरूढ़ होकर देवों-मुनियों को साथ लाकर युद्ध छेड़ा। २५४२

अरक्कर् माऩिडर् कुरङ्गॆऩु मवैयॆला मल्ल
उरुक्कळि यावुळ वुयिरिऩि युलहत्ति ऩुळल्व
तरुक्कु पोर्क्कुडऩ् वऩ्दुळ वामॆऩच् चमैत्ताऩ्
वॆरुक्कॊ ळप्पॆरुङ् गविप्पडै कुलैन्ददु विलङ्गि 2543

अरक्कर् माऩिटर्–राक्षस, मनुष्य और; कुरङ्कु ऎऩुम्–वानर आदि; अवै ऎलाम् अल्ल–वे सब नहीं; इप्पोतु–अब; उलकत्तिऩ् उळल्व–संसार में चलने-फिरनेवाले; उरुक्कळ् उयिर्–रूपधारी जीव; इऩि या उळ–अब जो हैं; अवै ऎलाम्–वे सभी; तरुक्कु–सगर्व; पोर्क्कु–युद्ध के लिए; उटऩ् वऩ्तऩ आम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

साथ आये हैं क्या; अॅन्न चमैत्तात्–(ऐसा मान्य रीति से) माया रची; पॅरु कवि पटै–बड़ी वानर-सेना; वॅरु कॉळ–डर गयी; विलङ्कि कुलैन्ततु–हटी और तितर-बितर हो गयी। २५४३

राक्षस, मानव और वानर क्या ? लोक में शरीरधारी जीव जितने हैं, वे सब युद्ध में आये हों—ऐसी भ्रमोत्पादक माया रची महोदर ने। उसको देखकर वानर-सेना भय खाकर पीछे हटी और अस्त-व्यस्त हो गयी। २५४३

कोडु नान्गुडैप् पाऱिऱक् कुऱुमेऱ् कॉण्डाऱ्
आड लिन्दिर ऩल्लव रियावरु ममरर्
शेडर् शिन्दऩै मुऩिवर्ह ळमर्बॉरच् चीऱि
ऊडु वन्दुऱ्ऱ दॅऩ्गॉलो निबमॅऩ वुलैन्दार् 2544

नान्कु कोटु उटै–चार दाँतों वाले; पाल् निऱम्–दुग्धवर्ण; कुऱुम् मेल् कॉण्टाऱ्–पर्वत (-सम) दिग्गज ऐरावत पर जो सवार था; आटल् इन्तिरऩ्–बलशाली इन्द्र हैं; अल्लवर् अमरर्–अन्य सभी देव हैं; चेटर्–बाक़ी सब; चिन्तऩै मुऩिवर्कळ्–ध्यानरत मुनिगण हैं; पॉर–(ये सब) युद्ध करने; चीऱि–रोष के साथ; ऊटु–मध्य; वन्तु उऱ्ऱतु–आ गये इसका; निपम् अॅऩ् कॉलो–कारण क्या ही होगा; अॅऩ्न उलैन्तार्–ऐसा शंकित और क्षुब्ध हुए (असली देव)। २५४४

"चार दाँतों वाले क्षीरवर्ण पर्वत (गज) पर आरूढ़ जो है, वह इन्द्र है। उसके परिवार देव हैं। अन्य ईश्वरध्यानमग्न ऋषि हैं। वे सभी इस युद्ध में क्रोध के साथ लड़ने आये हैं, किस कारण से ?" यह सोचकर सभी क्षुब्ध हुए। २५४४

अनुमऩ् वाणमुह नोक्किऩ ऩाऴियै यहऱ्ऱित्
तऩुव लङ्गॉण्ड तामरैक् कण्णवऩ् ऱम्बि
मुऩिवर् वाऩवर् मुऩिन्दुवन् दॅय्दया मुयऩ्ऱ
तुऩिह ळॅऩ्गॉलो शॉल्लुदि विरैन्दऩच् चॉऩ्ऩाऩ् 2545

आऴियै अकऱ्ऱि–चक्रायुध चलाकर; तऩुवलम् कॉण्ट–धनु को दायें हाथ में लिये हुए; तामरैक् कण्णवऩ् तम्पि–कमलाक्ष के भाई (लक्ष्मण) ने; अनुमऩ् वाळ् मुकम्–हनुमान के उज्ज्वल मुख को; नोक्किऩऩ्–देखकर; मुऩिवर् वाऩवर्–मुनि और देव; मुऩिन्तु वन्तु अॅयत–कोप करके आएँ इसके लिए; याम् मुयऩ्ऱ–हमारे यत्न से किये; तुऩिकळ् अॅऩ् कॉलो–बुरे कृत्य क्या हैं; विरैन्तु चॉल्लुति–जल्दी बोलो; अॅऩ्न चॉऩ्ऩाऩ्–ऐसा पूछा। २५४५

चक्रायुध त्यागकर जिन्होंने कोदण्ड हाथ में लिया था, उन कमलाक्ष श्रीराम के भाई ने हनुमान का तेजोमय मुख निहारा और पूछा कि मुनिगण और देव भी हमारे विरुद्ध लड़ने आएँ, ऐसा हमारे यत्न से क्या बुराई हो गयी ? शीघ्र बताओ। २५४५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्न कालैयि निलक्कुवन् मेनिमे लॅय्दान्
मुन्नै नान्मुहन् पडैक्कल मिमैप्पदन् मुन्नम्
बॊन्निन् माल्वरैक् कुरीइयिन मॊय्प्पन बोलप्
पन्न लान्दर मल्लन शुडर्क्कणै पाय्न्द 2546

इन्न कालैयिन्–इसी समय; मुन्नै–प्राचीन; नान्मुकन् पटै कलम्–चतुर्मुख के अस्त्र को; इमैप्पतन् मुन्नम्–पलक मारने के समय के अंदर; इलक्कुवन् मेनि मेल्–लक्ष्मण के शरीर पर; ऍय्तान्–चलाया; पॊन्निन् माल् वरै–स्वर्ण-पर्वत (मेरु) पर; कुरीइ इन्नम्–चिड़ियों के दल; मॊय्प्पन पोल–बैठे हों ऐसा; पन्नलाम् तरम् अल्लन्–विवरण योग्य नहीं, ऐसे; चुटर् कणै–ज्वलंत शर; पाय्न्त–(लक्ष्मण के शरीर पर) चुभे। २५४६

जितने में यह सब हो रहा था उतने में ही इन्द्रजित् ने पलक झपने के अन्दर प्राचीन ब्रह्मास्त्र को लक्ष्मण के शरीर पर चला दिया। उनके सारे शरीर पर अवर्ण्य रीति से ज्वलंत अस्त्र ऐसे जा चुभ गये जैसे बड़े स्वर्ण-पर्वत पर चिड़ियों के दल आ बैठे हों। २५४६

कोडि कोडिनू ऱायिरङ् गॊडुङ्गणैक् कुळाङ्गळ्
मूडि मेनियै मुऱ्ऱुरच् चुऱ्ऱिन मूळ्ह
ऊडु शॆय्वदॊन् ऱुणर्न्दिल नुणर्वुपुक् कॊडुङ्ग
आडन् माकरि शॆवह मैन्दॆन वयर्न्दान् 2547

कोटि कोटि–करोड़ों; नूरायिरम्–लाख; कॊटु कणै–कठोर बाण; कुळाङ्कळ्–समूह; मेनियै–शरीर को; मूऱ्ऱु मूटि–पूर्ण रूप से आवत कर; चुऱ्ऱिन–ढँककर; मूळ्क–अन्दर घुसे; ऊटु–इतने में; चॆय्वतु–करना; ऒन्ऱु–कुछ; उणर्न्तिलन्–नहीं जाना; उणर्वु–प्रज्ञा; पुक्कु–जाकर; ऒटुङ्क–क्षीण हुई तो; आटल् मा करि–सशक्त बड़ा गज; चेवकम् अमैन्तु–अपने निद्रास्थल में चूर पड़ा हो; ऍन–ऐसा; अयर्न्तान्–दब गये। २५४७

करोड़ों और लाखों संदाहक शरों के समूह उनके सारे शरीर को पूर्ण रूप से ढँककर अन्दर घुस गये। लक्ष्मण किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। सुध-बुध खोकर वे निर्बल हुए बड़े सबल गज के अपने निद्रास्थल में जैसे दबे पड़े रह गये। २५४७

अनुम निन्दिरन् वन्दव नॆन्गॊली दमैन्दान्
इनिय नॆऱ्ऱुवन् कळिऱ्ऱिनो डॆडुत्तॆन वॆळ्ऱन्दान्
तनुवि नायिरङ् गोडिवॆङ् गडुङ्गणै तॆक्क
निनैवुऱ् जॆय्हैयु मऱन्दुपोय् नॆडुनिलऱ् जेर्न्दान् 2548

अनुमन्–हनुमान; इनियन् इन्तिरन्–हमारा प्रिय मित्र इन्द्र; वन्तवन्–जो आया; ईतु ऍन् कॊल् अमैन्तान्–इस काम में क्यों लगा; कळिऱ्ऱिनोटु ऍटुत्तु–हाथी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के साथ उठाकर; ऍऱ्ऱवॅन्-पटक दूँगा; ऍऩ ऍऴुन्तान्-कहकर उठा; तऩुविल्-शरीर में; आयिरम् कोटि-हज़ार करोड़; वॅम् कटु कणै-सालनेवाले कठोर शर; तैक्क-चुभे, इसलिए; निऩैवुम् चॅय्कैयुम्-स्मरण और कर्म; मऱन्तु पोय्-भूलकर; नॅटु निलम् चार्न्तान्-विशाल भूमि पर गिर गया। २५४८

हनुमान को भी संशय रहा कि हमारा मित्र इन्द्र यह क्या करने आया है ? तो भी उसने संकल्प किया कि जो हो इसको हाथी के साथ उठाकर पटक दूँगा। ज्योंही वह उठने लगा, त्योंही उसके शरीर पर हज़ार करोड़ भयंकर शर आ चुभ गये। वह सोचना और करना भूल गया और धराशायी हो गया। २५४८

अरुक्कन् मामह नाडहक् कुऩ्ऱमॊऩ् ऱलर्न्द
मुरुक्किऩ् कानह मामॅऩक् कुरुदिनीर् मुडुहत्
तरुक्कि वॅञ्जरन् दलैत्तलै मयङ्गिऩ तैक्क
उरुक्कु चॅम्बऩ कण्णिऩ नॅडुनिल मुऱ्ऱान् 2549

अरुक्कन् मा मकऩ्-सूर्य का उत्तम पुत्र; आटकम् कुऩ्ऱम् ऒऩ्ऱु-एक स्वर्ण-पर्वत पर; अलर्न्त-विकसित; मुरुक्किऩ् कानकम् आम् ऍऩ-कँटीले पलाश के पुष्पवन के समान; कुरुतिनीर्-रक्त के; मुटुक-तुरंत निकल बहते; तरुक्कि-तनकर; वॅम् चरम्-वेदनादायी शरों के; तलै तलै-स्थान-स्थान पर; मयङ्किऩ तैक्क-मिश्रित होकर चुभते; उरुक्कु-पिघले; चॅम्पु अऩ-ताम्र के समान; कण्णिऩऩ्-नेत्रों वाला बनकर; नॅटु निलम् उऱ्ऱान्-विशाल धराशायी हो रहा। २५४९

सूर्य के महान पुत्र सुग्रीव के शरीर पर रक्त इतना बहा कि वह स्वर्णपर्वत के समान लगा, जिस पर कँटीले पलाशवन के अति लाल फूल तभी खिले हों। भयंकर शर शरीर के सभी भागों पर चुभे तो पिघले ताम्र के समान आँखों का होकर वह धराशायी बन गया। २५४९

अङ्ग दऩ्पदि नायिर मयिऱ्कणै यऴुन्दच्
चिङ्ग वेऱिडि युण्डॅऩ नॅडुनिलञ् जेर्न्दान्
शङ्ग मेऱिय पॅरुम्बुहऴ्च् चाम्बऩुञ् जायन्दान्
तुङ्ग मार्बैयुन् दोळैयुम् तडिक्कणै तुळैक्क 2550

अङ्कतऩ्-अंगद; पतिऩायिरम्-दस हज़ार; अयिल् कणै-तीक्ष्ण शरों के; अऴुन्त-चुभने से; चिङ्क एऱु-पुरुष सिंह; इटि उण्टॅऩ-वज्राहत हो गया ऐसे; नॅटु निलम् चेर्न्तान्-विशाल धरती पर गिर गया; चङ्कम् एऱिय-वीरसंघ में प्रशंसित; पॅरु पुकऴ्-बड़ा यशस्वी; चाम्पऩुम्-जाम्बवान भी; तुङ्कम् मार्पैयुम्-तुंग वक्ष और; तोळैयुम्-कंधों को; तटि कणै-मोटे शरों ने; तुळैक्क-भेदा, इसलिए; चाय्न्तान्-गिर गया। २५५०

अंगद का क्या हाल था ? उसके शरीर पर दस हज़ार तीक्ष्ण शर धँसे। वह वज्राहत सिंह के समान भूमि पर गिर गया। वीरों के समूह में अग्रगण्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाम्बवान भी, उसके तुंग वक्ष और कंधों को स्थूल शरों के भेदने से, भूमि पर गिर गया। २५५०

नील ऩायिरम् वडिक्कणै निऱम्बुक्कु नॅरुङ्गक्
काल ऩार्मुहङ् गण्डऩ ऩिडबन्विण् कलन्दाऩ्
आल मेयऩ्ऩ पहऴियाऱ् पऩशऩु मयर्न्दाऩ्
कोलिऩ् मेविय कूऱ्ऱिऩाऱ् कुमुदऩुङ् गुलैन्दाऩ् 2551

नीलऩ्–नील ने; आयिरम्–हज़ार; वटि कणै–तीक्ष्ण शरों के; निऱम् पुक्कु–वक्ष में घुसकर; नॅरुङ्क–त्रस्त करने से; कालऩार् मुकम् कण्टऩऩ्–यम का मुख देखा (प्राण छोड़ दिये); इटपऩ् विण् कलन्ताऩ्–ऋषभ स्वर्ग चला गया; पऩचऩुम्–पनश भी; आलमे अऩ्ऩ–हलाहल ही सम; पकऴियाल्–अस्त्र से; अयर्न्ताऩ्–निर्जीव पड़ गया; कुमुतऩुम्–कुमुद भी; कोलिऩ् मेविय–अस्त्र पर स्थित; कूऱ्ऱिऩाल्–यम से; कुलैन्ताऩ्–ढेर हो गया। २५५१

नील के वक्ष में हज़ार तीक्ष्ण बाण घुसकर सालने लगे तो उसने यम का मुख देख लिया (मृत्यु पा ली)। ऋषभ यम का मेहमान बन गया। हलाहल के समान शर लगा तो पनस का भी काम तमाम हो गया। कुमुद भी बाण पर स्वेच्छा से स्थित यमदेव से प्राणहीन कर दिया गया। २५५१

वेलै तट्टव ऩायिरम् बहऴियाल् वीऴ्न्दाऩ्
वालि नेर्वलि मैन्दऩुन् दम्बियु मडिन्दार्
काल वॅन्दॊऴिऱ् कवयऩुम् वाऩहङ् गण्डाऩ्
मालै वाळियिऱ् केशरि मण्णिडै मऱैन्दाऩ् 2552

वेलै तट्टवऩ्–समुद्र पर सेतु जिसने बनाया था वह नल; आयिरम् पकऴियाल्–हज़ार अस्त्रों से; वीऴ्न्ताऩ्–गिरा (मरा); वालि नेर् वलि–वाली का समबली; मयिन्तऩुम्–मैंद और; तम्पियुम्–उसका छोटा भाई द्विविद; मटिन्तार्–मर गये; कालऩ् वॅम् तॊऴिल्–यम के समाम क्रूर कार्यकारी; कवयऩुम्–गवय भी; वाऩकम् कण्टाऩ्–आकाश का दर्शक बना (मरा); केचरि–केसरी; मालै वाळियिल्–अस्त्रमाला से; मण् इटै मऱैन्ताऩ्–धरती में अदृश्य हो गया। २५५२

समुद्रसेतु-निर्माता नील हज़ार बाणों का शिकार होकर यम का मेहमान बन गया। वाली के सदृश बलवान मैंद और उसका भाई द्विविद हत हुए। कालदेवता-सा क्रूर-कर्म गवय भी स्वर्गवासी हो गया। केसरी पर बाण-माला-सी आ लगी और वह धरती में लोट गया और 'अब नहीं' हो गया। २५५२

विन्द मऩ्ऩदोट् चदवलि शुशेडणन् विऩदऩ्
कॅन्द मादऩ ऩिडुम्बऩ्वऩ् ऱदिमुहऩ् किळर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन्दु वार्कणै कोडिदम् मुडलमुऱ् ऱॊळिप्पत्
तन्द नल्लुणर् वॊडुङ्गिनर् मण्णुऱच् चाय्न्दार् 2553

विन्तम् अत्त तोळ्–विंध्यपर्वत-सम कंधों वाला; चतबलि–शतबली और; सुचेटणन्–सुषेण; विनतन्–विनत; कॆन्तमातनन्–गंधमादन और; इटुम्पनुम्–हिडिंब; बल् ततिमुकनुम्–बलवान दधिमुख; किळर्–ऊपर उठ जायँ ऐसा; उन्तुबार्–प्रेषित; कोटि कणै–करोड़ अस्त्र; तम् उटलम् उऱ्ऱु–उनके शरीरों में लगकर; ऒळिप्प–छिपे तो; तम् तम् नल् उणर्वु–अपनी-अपनी सुधि; ऒटुङ्किनर्–खो दी; मण् उऱ चाय्न्तार्–और धराशायी हो गये। २५५३

विंध्यस्कंध शतबली, सुषेण, विनत, गंधमादन, हिडिंब, बलवान दधिमुख, इन सभी पर ऊपर उठकर बढ़ें, ऐसे प्रेरित करोड़ों अस्त्र घुसे और छिप गये तो वे सुध-बुध खोकर धराशायी हो गये। २५५३

मऱ्ऱै वीरर्ह ळियावरुम् वडिक्कणै मऴैयाल्
मुऱ्ऱुम् वीन्दनर् मुऴङ्गुपे रुदिरत्तिन् मुन्नीर्
ऎऱ्ऱु वान्ऱिरैक् कडलॊडुम् बॊरुदुशॆन् ऱेऱ
ऒऱ्ऱै वान्कणै यायिरङ् गुरङ्गिनै युरुट्ट 2554

मुऴङ्कु–शब्दायमान; पेर्–बड़ा; उतिरत्तिन् मुन्नीर्–रुधिर-सागर; ऎऱ्ऱु–जिनको उछालता है; वान् तिरै कटलॊटुम्–उन आकाश-स्पर्शी तरंगों से युक्त सागर; पॊरुतु चॆन्ऱु एऱ–टकराने के लिए जा चढ़े ऐसा; ऒऱ्ऱै–अनुपम; वान् कणै आयिरम्–श्रेष्ठ हज़ार बाण; कुरङ्किनै उरुट्ट–वानरों को लुढ़का रहे थे, इसलिए; मऱ्ऱै वीरर्कळ्–अन्य वीर; यावरुम्–सभी; वटि कणै मऴैयाल्–तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से; मुऱ्ऱुम् वीन्ततर्–बिलकुल प्राणहीन हो गये। २५५४

शब्दायमान रक्त-सागर उत्तुंग तरंगों वाले समुद्र से होड़ लगाकर बहे, ऐसा हज़ारों अनुपम शरों ने वानरों को लुढ़का दिया, इसलिए अन्य वानर वीर भी तीक्ष्ण-शर-वर्षा से बिलकुल मिट गये। २५५४

तळैत्तु वैत्तदु शदुमुहन् पॆरुम्बड तळ्ळि
ऒळिक्क मऱ्ऱॊरु पुहलिड मुणर्हिल रुरुमिन्
वळैत्तु वित्तिय वाळियान् मण्णॊडु तिण्णम्
मुळैप्पु डैत्तन वॊत्तन वानर मुडिन्द 2555

चतुमुकन् पॆरु पटै–ब्रह्मा के बड़े अस्त्र ने; तळ्ळि–गिराकर; तळैत्तु वैत्ततु–बाँध-सा लिया; ऒळिक्क–उससे बचकर छिपने के लिए; मऱ्ऱु ऒरु पुकल् इटम्–कोई दूसरा आश्रय-स्थान; उणर्किलर्–जान नहीं पाये; वळैत्तु वित्तिय–घेरकर बोया हो ऐसा प्रेषित; उरुमिन्–अशनि-सदृश; वाळियान्–(इन्द्रजित् के) बाणों से; मण्णॊटु–धरती के साथ; तिण्णम्–अटल; मुळै पुटैत्तत–अंकुर उगे हों, ऐसे; वानरम् मुटिन्त–वानर हत हुए। २५५५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रेष्ठ ब्रह्मास्त्र ने वीरों को पछाड़कर बाँध-सा दिया। उससे बचने का वानरों के पास कोई मार्ग नहीं था। बाणों के साथ वे प्राणहीन वानर अंकुरों के समान लगे जो बोये गये-से अस्त्रों से उग आये हों। २५५५

कुवळैक् कण्णियर् वाऩवर् मडन्दैयर् कोट्टित्
तुवळप् पारिडैक् किडन्दऩर् कुरुदिनीर् शुऱ्ऱित्
तिवळक् कीऴॊडु मेल्पुडै परन्दिडै शॆऱियप्
पवळक् काडुडैप् पाऱ्कड लॊत्तदप् परवै 2556

कुवळै कण्णियर्–कुवलयाक्षी; वाऩवर् मटन्तैयर्–सुरांगनाएँ; कोट्टि तुवळ–सिर झुकाकर मुरझा जाएँ ऐसा; पार् इटै–(लक्ष्मण और वानर) भूमि पर; किटन्तऩर्–पड़े रहे; कुरुति नीर् चुऱ्ऱि–रक्त चारों ओर बहकर; कीऴॊटु मेल् पुटै–नीचे और ऊपर; परन्तु–फैलकर; इटै तिवळ चॆऱिय–सभी जगह आँखों में खूब घेर आया; अ परवै–तो वह (वानर-सेना-) सागर; पवळम् काटु उटै–प्रवालवन-सहित; पाल् कटल् ऒत्ततु–क्षीर-सागर-सम लगा। २५५६

कुवलयाक्षी सुरबालाएँ इनको देखकर दुःख से सिर झुका लें, ऐसा वे भूमि पर पड़े रहे। रक्त का सागर ऊपर, नीचे और चारों ओर सर्वत्र दिखायी दे रहा था। तब वह सेना-सागर प्रबाल-वन-सहित क्षीरसागर के समान लगा। २५५६

विण्णिऱ् चॆन्ऱदु कविक्कुलप् पॆरुम्बडै वॆळ्ळङ्
गण्णिऱ् कण्डऩर् वाऩवर् विरुन्दॆऩक् कलन्दार्
उण्णिऱ् कुम्बॆरुङ् गळिप्पिऩ रळवळा युवन्दार्
मण्णिऱ् चॆल्लुदि रिक्कणत् तेयॆऩ वलिन्दार् 2557

कविकुलम्–वानरों का; पॆरु पटै वॆळ्ळम्–बड़ा सेना-प्रवाह; विण्णिल् चॆन्ऱतु–आकाश में गया; वाऩवर् कण्णिल् कण्टऩर्–देवों ने समक्ष देखा; विरुन्तु ऎऩ कलन्तार्–अतिथि के रूप में स्वागत करके; उळ् निऱ्कुम्–अंतस्थ; पॆरु कळिप्पिऩर्–बहुत सुख से प्रभावित होकर; अळवळाय्–दिल दे बातें करके; उवन्तार्–आनंदित हुए; इ कणत्ते–इसी क्षण; मण्णिल् चॆल्लुतिर्–पृथ्वी पर (राक्षसों का नाश करने) जाओ; ऎऩ वलिन्तार्–कहकर जबरदस्त किया। २५५७

वानरों की बड़ी सेना का सागर स्वर्गलोक चला गया। सुरों ने इसे देखा। वानरों का अतिथि के रूप में स्वागत किया। आनंद से भरकर आपस में बातचीत करके मुदित हुए, फिर तक़ाज़ा किया कि अभी भूलोक चले जाओ। २५५७

पाऱ्प डैत्तवऩ् पडैक्कॊरु पूशऩै पडैत्तीर्
नीर् पडक्कड वीरलीर् वरिशिलै नॆडियोऩ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पेऱ्प डैत्तवऱ् कडियवऱ्क् कडियरुम् बॅऱुवार्
वेऱ्प डैत्तवॅम् बिऱवियाऱ् ऱुवक्कुणा वीडु 2558

पार् पटैत्तवन्–लोकस्रष्टा के; पटैक्कु–हथियार की; ऑरु पूचनै पटैत्तीर्–एक पूजा की; नीर् पट कटवीर् अलीर–तुम लोग मरने अर्ह नहीं हो; वरि चिलै–सबन्ध धनुर्धर; नॅटियोन् पेर् पटैत्त वऱ्कु–त्रिविक्रम नामधारी (श्रीराम) के; अटियवऱ्कु अटियरुम्–दासों के दास भी; वेर् पटैत्त–समूल; वॅम् पिऱवियाल्–दुःखदायी जन्म के कारण होनेवाले; तुवक्कु ओणा–बन्धन से रहित; वीटु पॅऱुवार्–मोक्ष पा जाते हैं। २५५८

तुम लोगों ने लोकस्रष्टा के ब्रह्मास्त्र का आदर किया। नहीं तो तुम मरनेवाले नहीं थे। सबंध धनुर्धर त्रिविक्रम नामधारी श्रीराम के दास के दास भी बद्धमूल व भयानक भवरोग से अछूते होकर मोक्ष पाने के हक़दार होते हैं। २५५८

नङ्गळ् कारिय मियऱ्ऱुवा नुलहिडै नडन्दीर्
उङ्ग ळारुयि रॅम्मुयि रुडल्पिरि दुऱ्ऱीर्
शॅङ्ग णायहऱ् काहवॅङ् गळत्तिडैत् तीर्न्दीर्
ऍङ्ग णायहर् नीङ्गळॅन् ऱिमैयव रिशैत्तार् 2559

नङ्कळ्–हमारा; कारियम् इयऱ्ऱुवान्–कार्य पूरा करने के निमित्त; उलकिटै नटन्तीर्–पृथ्वी में गये थे; उङ्कळ् अरुमै उयिर्–आपके बहुमूल्य प्राण; ऍम् उयिर्–हमारे प्राण हैं; उटल् पिऱितु उऱ्ऱीर्–केवल शरीर पृथक् पा गये; चॅम् कण् नायकऱ्कु–अरुणाक्ष जगन्नाथ; आक–के लिए; वॅम् कळत्तिटै–भयंकर युद्धाजिर में; तीर्न्तीर्–मरे; नीङ्कळ् ऍङ्कळ् नायकर्–तुम लोग हमारे नायक हो; ऍन्ऱु–ऐसा; इमैयवर्–देवों ने; इचैत्तार्–कहा। २५५९

हमारे हितार्थ तुम लोग पृथ्वी पर गये थे। तुम्हारे प्राण हमारे प्राण हैं। केवल शरीर से भिन्न हो। अरुणाक्ष श्रीराम के निमित्त तुम लोगों ने युद्धक्षेत्र में प्राण छोड़े। तुम लोग हमारे नायक हैं। देव यों बोले। २५५९

वॅङ्गण् वानरक् कुळुवॉडु मिळैयवन् विळिन्दान्
इङ्गु वन्दिल नहन्ऱन त्तिरामनॅन् ऱिहळ्न्दान्
शङ्ग मूदिनन् ऱादैयै वल्लैयिऱ् चार्न्दान्
पॉङ्गु पोरिडैप् पुहुन्दुळ पॉरुळॅलाम् बुहन्ऱान् 2560

वॅम् कण्–भयानक आँखों के; वानरर् कुळुवॉटु–वानरगणों के साथ; इळैयवन्–छोटे राजा; विळिन्तान्–मरे; इरामन्–श्रीराम; इङ्कु–यहाँ; वन्तिलन्–न आकर; अकन्ऱनन्–दूर हट गया; ऍन्ऱु–ऐसा; इकळ्न्तान्–निंदा की (इन्द्रजित् ने); चङ्कम् ऊतिनन्–विजयशंख बजाया; तातैयै–पिता के पास; वल्लैयिल्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शीघ्र; चार्न्तान्–पहुंचा; पॉङ्कु पोर् इटै–उत्साहवर्धक युद्ध में; पुकुन्तुळ पॉरुळ् ॲलाम्–जो हुए वे सभी; पुकन्ऱान्–कह सुनाया। २५६०

इन्द्रजित् ने ताना मारा कि क्रूर आँखों वाले वानरवृन्दों के साथ छोटा भाई मर गया। राम तो इधर आया ही नहीं! कहीं दूर चलकर है! फिर विजयशंख बजाकर पिता के पास सवेग गया। जाकर उसने रावण से उत्साह के साथ जो लड़ाई की गयी, उसमें घटी बातें बतायीं। २५६०

इऱन्दि लन्कॊलव् विरामऩॆन् ऱिरावण निशैत्तान्
दुऱन्दु नीङ्गिऩ ऩल्लऩेऱ् ऱम्बियैत् तॊलैत्तुच्
चिऱन्द नण्बरैक् कॊन्ऱुऩन् शेनैयैच् चिदैक्क
मऱन्दु निऱ्कुमो मऱ्ऱवन् ऱिऱऩॆन्ऱान् मदलै 2561

अव् इरामन्–वह राम; इऱन्तिलन् कॊल्–मरा नहीं क्या; ॲन्ऱु–ऐसा; इरावणन् इचैत्तान्–रावण ने पूछा; मतलै–पुत्र ने; तुऱन्तु नीङ्किऩन्–(सबको भय के कारण) छोड़ गया; अल्लऩेल्–नहीं जाता तो; तम्पियै तॊलैत्तु–छोटे भाई को मरवाकर; चिऱन्त नण्परै कॊन्ऱु–श्रेष्ठ मित्रों को मरवाकर; तन् चेनैयै चितैक्क–अपनी सेना के मिटते तक; मऱ्ऱवन्–वह अपना; तिऱम् मऱन्तु–बल भूलकर; निऱ्कुमो–चुप खड़ा रहता क्या; ॲन्ऱान्–कहा। २५६१

रावण ने पूछा कि क्या वह राम मरा नहीं है? पुत्र ने उत्तर दिया, मैदान छोड़ गया न! नहीं जाता तो क्या वह अपने भाई को, मित्रों को और अपनी सेना को मिटते देखकर भी अपना बल भूलकर चुप रहता?। २५६१

अन्ऩ देयॆऩ वरक्कनु मादरित् तमैन्दान्
शॊन्ऩ मैन्दऩुन् दऩ्पॆरुङ् गोयिलैत् तॊडर्न्दान्
मन्ऩ ऩेवलिन् महोदरन् पोयिऩन् वन्दान्
ॲन्ऩै याळुडै नायहन् वेऱिडत् तिरुन्दान् 2562

अरक्कऩुम्–राक्षसराज ने भी; अन्ऩते–वही हुआ होगा; ॲन्ऱु–कहकर; आतरित्तु अमैन्तान्–स्वीकार कर लिया; चॊन्ऩ मैन्तऩुम्–ऐसा जो कहा वह कुमार भी; तन् पॆरु कोयिलै–अपने बड़े मंदिर की तरफ़; तॊटर्न्तान्–बढ़ चला; मन्ऩन् एवलिन् वन्तान्–राजाज्ञा से जो आया था वह; मकोतरन्–महोदर भी; पोयिऩन्–अपने स्थान चला गया; वेऱु इटत्तु इरुन्तान्–दूसरे स्थान में जो रहे; ॲन्ऩै आळुटै नायकन्–मेरे मालिक। २५६२

रावण ने सकारा— हाँ वही हुआ होगा! यह कहकर इन्द्रजित् अपने बड़े महल की तरफ़ रवाना हो गया। महोदर भी, जो राजाज्ञा से आया था, चला गया। उधर मुझ दास (कवि) के नायक प्रभु —। २५६२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शय्य तामर नाण्मलर्क् कैत्तलञ् जेप्पत्
तुय्य तेवर्दम् बडैक्कॅलाम् वरन्मुऱै तुरक्कुम्
मॅय्हीळ् पूशनै विदिमुऱै यियऱ्ऱिमेल् वीरन्
मॉय्हॉळ् पोर्क्कळत् तॅय्दुवा मिनियॅन मुयन्ऱान् 2563

वीरन्–वीर; चॅय्य–लाल; तामरै नाळ् मलर्–कमल के ताजे फूल के समान; कै तलम्–हाथ को; चॅप्प–और भी लाल बनाते हुए; तुय्य–पवित्र; तेवर् तम् पटैक्कु ॲलाम्–देवों के सभी अस्त्रों की; वरन्मुऱै तुरक्कुम्–यथारीति की जानेवाली; मॅय्कॉळ् पूचनै–यथार्थ पूजा; विति मुऱै इयऱ्ऱि–विधिवत् करके; मेल्–फिर; इनि–आगे; मॉय् कॉळ्–बलवान वीरों के; पोर् कळत्तु–युद्ध के स्थल में; ॲय्तुवाम्–जाएंगे; ॲन्न–कहकर; मुयन्ऱान्–यत्न करने लगे। २५६३

श्रीवीरराघव ने अपने कमलारुण हाथों को और भी लाल करते हुए पवित्र दिव्यास्त्रों की यथारीति विधिवत् पूजा करके वीरों के पास युद्धक्षेत्र में जाने का उपक्रम किया। २५६३

कॉळ्ळि यिऱ्चुड रन्नलिदन् पहळिकैक् कॉण्डान्
अळ्ळि नुङ्गला मारिरुट् पिळम्बिनै यळित्तान्
वॅळ्ळ वॅङ्गळप् परप्पिनॅप् पॉरुक्कॅन विळित्तान्
तळ्ळि ऱामरैच् चेवडि नुडङ्गुऱच् चार्न्दान् 2564

कॉळ्ळियिल्–अधजली लकड़ी के समान; चुटरुम्–प्रकाश देनेवाले; अन्नलि तन्–अग्नि के; पकळि–अस्त्र को; कै कॉण्टान्–हाथ में लेकर; अळ्ळि नुङ्कलाम्–उठाकर पी सकें, ऐसे; अरुमै–अपार; इरुळ् पिळम्पिनै–अंधकार-पुंज को; अळित्तान्–मिटा दिया; तळ्ळिल् तामरै चेवटि–उत्कृष्ट कमल-चरण; नुटङ्कुऱ–चंचल करते हुए; चार्न्तान्–जाकर; वॅळ्ळम्–सेनाप्रवाह-युक्त; वॅम् कळम् परप्पिनै–भयंकर युद्धस्थल के विस्तार को; पॉरुक्कॅन–झटिति; विळित्तान्–देखा। २५६४

उन्होंने अधजली लकड़ी के समान आग्नेयास्त्र हाथ में लिया। उससे पेय-से रहनेवाला पुंजीभूत अंधकार दूर हो गया। अनिंद्य अपने कमल-चरणों (पर बल देते) हुए वे युद्धक्षेत्र में गये और वानरसेना-सागर-युक्त उस भूमि को ठिठककर देखा। २५६४

नोक्कि नान्परुन् दिशैतॉऱु मुऱैमुऱै नोक्कि
ऊक्कि नान्ऱडन् दामरैत् तिरुमुहत् तुदिरम्
पोक्कि नानिणप् पऱन्दलै यळुवत्तुट् पुक्कान्
ताक्कुम् वन्रुणैत् तलैवरैत् तनित्तनिक् कण्डान् 2565

पॅरु तिचै तॉऱम्–बड़ी दिशाओं में; नोक्किनान्–दृष्टि दौड़ायी; ऊक्किनान्–यत्न के साथ; मुऱै मुऱै नोक्कि–लगातार देखकर; तट तामरै तिरुमुकत्तु–विशाल मुखकमल पर; उतिरम् पोक्किनान्–रक्त फेंकने दिया; निणम्–मांस-भरे; पऱन्तलै अळुवत्तुळ–युद्धस्थल के विस्तार में; पुक्कान्–पहुँचे; ताक्कुम्–आक्रमण-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कारी; वल् तुणै तलैवरै–सहायक वानरपतियों को; तत्ति तत्ति कण्टान्–एक-एक करके देखा। २५६५

दिशा-दिशा में उन्होंने दृष्टि दौड़ायी। रह-रहकर यत्न से देखा। तब उनका विशाल श्रीमुख अकस्मात् रक्त के तेज़ दौरे से लाल हो उठा। फिर मांससंकुल मैदान में आगे बढ़े। शत्रुओं से टकरानेवाले नायक वीरों को अलग-अलग देखा। २५६५

शुक्कि रीवऩ नोक्कित्तऩ् ऱामरैत् तुणैक्कण्
उक्क नीर्त्तिर ळॊऴुहिड नॆडिदुनिऩ् ऱुयिर्त्ताऩ्
तक्क दोविदु निऩक्कॆऩ्ऱु तऩ्मऩन् दळर्न्दाऩ्
पक्क नोक्किऩऩ् मारुदि तऩ्मैयैप् पार्त्ताऩ् 2566

चुक्किरीवऩै नोक्कि–सुग्रीव की ओर मुख करके; तऩ् तामरै तुणै कण्–अपनी कमल-सी आँखों के जोड़े से; उक्क नीर् तिरळ्–निकलनेवाले अश्रुप्रवाह को; ऒऴुकिट–बहने देते हुए; निऩ्ऱु–खड़े रहकर; नॆटिदु उयिर्त्ताऩ्–लम्बी आहें भरीं; इदु–यह; निऩक्कु तक्कतो–तुम्हारे लिए योग्य है क्या; ऎऩ्ऱु–कहकर; तऩ् मऩम् तळर्न्ताऩ्–अपने मन को जर्जर कर दिया; पक्कम् नोक्किऩऩ्–पास देखा; मारुति तऩ्मैयै पार्त्ताऩ्–मारुति की स्थिति को जाना। २५६६

सुग्रीव को देखा तो कमल-नेत्रों से आँसू बहने लगा और बहता ही रहा। बहुत देर तक अवाक् खड़े रहे। फिर लम्बी आह भरकर उद्गार निकाली कि क्या यह (ऐसा पड़ा रहना) तुमको सोहता है? उनका मन क्षुब्ध हुआ। उस तरफ़ फिरकर देखा तो मारुति की स्थिति नज़र लगी। २५६६

कडल् कडन्दुपुक् करक्करैक् करुमुदऱ् कलक्कि
इडर् कडन्दुना निऩक्कनी नल्हिय दिदऱ्को
उडल् कडन्दऩ वोवुऩै यरक्कऩ्विल् लुदैत्त
अडल् कडन्दपोर् वाळियॆऩ् ऱाहुलित् तळुदाऩ् 2567

कटल् कटन्तु–समुद्र पार करके; पुक्कु–लंका में प्रवेश करके; अरक्करै–राक्षसों को; करु मुतल् कलक्कि–गर्भस्थित शिशु से लेकर कष्ट देकर; नाऩ् इटर् कटन्तु इरुक्क–मैं दुःख पार कर रहूँ, इस वास्ते; नी नल्कियतु–तुम्हारा अच्छा कार्य करना; इतऱ्को–इस वास्ते क्या; अरक्कऩ् विल् उतैत्त–राक्षस के धनु ने जिसे लात मारकर निकाला; कटन्त अटल्–वह अति कठोर; पोर् वाळि–युद्धास्त्र; उऩै–तुम्हारे; उटल् कटन्तऩवो–शरीर पार कर गया क्या; ऎऩ्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; आकुलित्तु–व्याकुल होकर; अऴुताऩ्–रोये। २५६७

हाय! हनुमान! मेरे हितार्थ तुमने समुद्र लाँघा और राक्षसों को गर्भस्थ शिशु से लेकर क्षुब्ध किया। क्या ऐसे उपकार का कार्य इसी अन्त के लिए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

था ? राक्षस-धनु-प्रेषित शर तुम्हारे शरीरों को भी भेद सके क्या ? ऐसा विलाप करके श्रीराम व्याकुल हुए । २५६७

मुन्नैत् तेवर्दम् वरङ्गळु मुन्निवर्दम् मॊळियुम्
बिन्नैच् चान्हि युदवियुम् बिळैत्तन पिऱन्द
पुन्मैच् चॆय्दॊळि लॆन्विन्नैक् कॊडुमैयाऱ् पुहळोय्
ऍन्नैप् पोल्बव रारुळ रॊरुवरॆन् ऱिशैत्तान् 2568

पुकळोय्–यशस्वी; पिऱन्त–सहज; पुन्मै चॆय् तॊळिल्–नीचकर्मकारी; ऍन् विन्नै कॊटुमैयाल्–मेरे प्रारब्ध की क्रूरता से; मुन्नै–पहले; तेवर्तम् वरङ्कळुम्–देवों के दिये वर; मुन्निवर् तम् मॊळियुम्–और मुनियों के आशीर्वचन; पिन्नै–बाद; चान्कि उतवियुम्–जानकी का उपकार; पिळैत्तन–असफल हो गये; ऍन्नै पोल्पवर्–मेरे समान; ऒरुवर्–कोई; आर् उळर्–कौन है; ऍन्ऱु–ऐसा; इचैत्तान्–कहा । २५६८

यशस्वी ! सहजात नीच कर्मकारी मेरे प्रारब्ध के बल से पहले देवों द्वारा दिये गये वर, मुनियों के आशीर्वचन, बाद जानकी का उपकार सब बेकार हो गया । हाय ! मेरे समान और कौन होगा ? श्रीराम ने ऐसा विलाप किया । २५६८

पुन्ऱॊ ळिऱ्पुलै यरशिनै वॆः(ह्)हिनेन् पूण्डन्
कॊन्ऱॊ रुक्किनै नॆन्दैयैच् चडायुवैक् कुऱैत्तेन्
इन्ऱॊ रुक्किनै नित्तनै वीररै यिरुन्देन्
वन्ऱॊ ळिऱ्कॊरु वरम्बुमुण् डाय्वर वऱ्ऱो 2569

पुन् तॊळिल्–क्षुद्रकार्य के; पुलै अरचिनै–नीचराज्य को; वॆः.किनेन् पूण्टेन्–चाहकर मैंने अपनाया; ऍन्तैयै कॊन्ऱु–अपने पिता को मरवाकर; ऒरुक्किनेन्–मिटा दिया; ऍन्तैयै चटायुवै–पितातुल्य जटायु को; कुऱैत्तेन्–आयुहीन कर दिया; इन्ऱु–आज; इत्तनै वीररै–इतने वीरों को; ऒरुक्किनेन्–प्राणहीन कर दिया; इरुन्तेन्–मैं रह गया; वल् तॊळिऱ्कु–मेरे कठोर कर्म की; ऒर वरम्पुम् उण्टाय् वर वऱ्ऱो–कोई सीमा हो सकेगी क्या । २५६९

मैंने क्षुद्रकर्म नीच शासन की इच्छा की और लिया । उसके परिणाम में मेरे पिता स्वर्गवासी हुए । पितृहंता हुआ । फिर पितातुल्य जटायु की आयु क्षीण करा दी । आज इतने वीरों का काम तमाम करवाकर सुख से रह रहा हूं ! मेरे बेरहम कार्यों की भी सीमा है क्या ? । २५६९

तमैय नैक्कॊन्ऱु तम्बिक्कु वानरत् तलैमै
अमैय नल्हिनै नडङ्गलु मविप्पदऱ् कमैन्देन्
कमैबि डित्तुनित् रुङ्गळै यित्तुणै कण्डेन्
शुमैयु डऱ्पॊऱै शुमक्कवन् दननॆनच चॊन्नान् 2570

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमैयतै कॊन्ऱु–ज्येष्ठ भ्राता को मारकर; तम्पिककु–छोटे भाई को; वानरर् तलैमै–वानरपतित्व; अमैय नल्कित्तेन्–ठीक रूप से देकर; अटङ्कलुम् अविप्पतऱ्कु–सबका नाश करने का; अमैन्तेन्–यत्न करनेवाला बन गया; कमै पिटित्तु नित्ऱु–क्षमा अपनाकर; उङ्कळै इ तुणै कण्टेन्–तुम लोगों पर इतना सारा दुःख ढा दिया; चुमै–भूभार-रूप; उटल् पॊऱै–शरीर-भार; चुमक्क वन्तत्तन्–ढोने पैदा हुआ हूँ; अॅत्त–ऐसा; चॊन्तान्–दुःखी होकर कहा। २५७०

मैंने बड़े भाई (वाली) को मारकर छोटे भाई को नायकत्व देकर क्या ही उपकार किया ! सारे वानरों पर मृत्यु ला दी। क्षमाशील बनकर मैंने तुम्हें अपार कष्ट दिया है। यह शरीर बड़ा भार है और उसे ढोने के लिए ही पैदा हुआ हूँ। ऐसा कहकर श्रीराम रोये। २५७०

विडैक्कु लङ्गळि त्तडुवणोर् विडैकिडन् दॆन्त्तक्
कडैक्कण् डीयुह वङ्गदक् कळिऱ्ऱित्तैक् कण्डान्
पडैक्क लङ्गळैच् चुमक्कित्तऱ पदहत्तेन् पऴिपार्त्
तडैक्क लप्पॊरुळ् कात्तवा ऱऴुहिदॆन् ऱऴुदान् 2571

विटै कुलङ्कळित् नटुवण्–ऋषभवृन्द में; ओर्–अनुपम; विटै–ऋषभ एक; किटन्तु अॅत्त–रहता हो जैसे; अङ्कतन् कळिऱ्ऱितै–अंगद रूपी गज को; कण्टान्–देखा; कण् कटै–आँखों के कोरों से; ती उक–आग निकालते हुए; पटै कलङ्कळै चुमक्कित्तऱ–हथियार धारण करनेवाला; पतकत्तेन्–पापी मैं; पऴि पार्त्तु–निंदा देखकर; अटैक्कलम् पॊरुळ् कात्त आऱु–धरोहर के पालन का प्रकार; अऴकितु–बड़ा सुन्दर है यह; अॅन्ऱु–कहकर; अऴुतान्–रोये। २५७१

श्रीराम ने मामूली बैलों के मध्य पड़े हुए ऋषभराज के समान अंगद रूपी गज को पड़ा देखा। तब उनकी आँखों के कोर से आग-सी निकल पड़ी। "हथियारधारी पापी हूँ मैं ! कलंक लगवा लेते हुए मेरा अपने धरोहर के (आश्रित) लोगों की रक्षा करने का यह प्रकार भी बड़ा सुन्दर रहा" —यह कहते हुए वे रोने लगे। २५७१

उडलि डैत्तॊडर् पहऴियि त्तॊळिर्हदिर्क् कऱ्ऱैच्
चुडरु डैप्पॆरुङ् गुरुदियिऱ् पाम्बॆत्तच् चुमन्द
मिडलु डैप्पण मीमिशैत् तात्पण्डै वॆळ्ळक्
कडलि डैत्तुयिल् वात्तन्त तम्बियैक् कण्डान् 2572

उटल् इटै तॊटर्–शरीर पर लगातार लगे; पकऴियित्–बाणों के; ऒळिर् कतिर् कऱ्ऱै–ज्वलन्त प्रकाश की लटों से; चुटर् उटै–प्रकाशमान; पॆरु कुरुतियिल्–बड़े रक्तप्रवाह में; पाम्पु अॅत्त–सर्प के समान; चुमन्त–ढोए हुए; मिटल् उटै–सबल; पणम् मी मिचै–फन के ऊपर; पण्टै–प्राचीन; वॆळ्ळम् कटल् इटै–प्रवाहमय समुद्र पर; तुयिल्वान् तान् अन्त–सोनेवाले-से; तम्पियै–छोटे भाई को; कण्टान्–श्रीराम ने देखा। २५७२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम ने लघुसहोदर को देखा। वे रक्त के मध्य पड़े रहे, जिस पर उनके ही शरीर पर बराबर आ लगे शरों का प्रकाश पड़ रहा था। वे प्राचीन क्षीरसागरमध्य सबल सर्पफनों पर योगनिद्रारत रहनेवाले विष्णु के ही समान सर्प की भाँति पड़े रहे। २५७२

पॊरुमि नानहम् बॊङ्गिना नुयिर्मुऱुम् बुहैन्दान्
कुरुम णित्तिरु मेनियु मनमॆनक् कुलैन्दान्
तरुम निन्ऱुतन् कण्पुडैत् तलम्वरच् चाय्न्दान्
उरुमि नालिडि युण्डदोर् मरामर मॊत्तान् 2573

अकम् पॊरुमिनान्–उत्तप्त-मन हुए; पॊङ्किनान्–क्रुद्ध हुए; उयिर् मुऱुम्–श्वास सब; पुकैन्तान्–धुएँ के हो गये; कुरु मणि–नीली मणि-सम; तिरुमेनियुम्–श्रीशरीर; मनम् ऎन कुलैन्तान्–मन के ही समान जर्जर हुआ; तरुमम्–धर्म-देवता; निन्ऱु–खड़े होकर; तन् कण् पुटैत्तु–अपनी आँखें पीटकर; अलम् वर–दुःखी हो ऐसा; उरुमिनाल् इटि उण्टतु–वज्राहत; ओर् मरामरम् ऒत्तान्–एक सालवृक्ष-सदृश हो गये। २५७३

श्रीराम का मन बहुत दुखा। उन्हें क्रोध आया। श्वास ही धुएँ बनकर निकले। उनका नीलमणि-सा शरीर मन के समान निस्तेज हुआ। तब वे वज्राहत सालवृक्ष के समान लगे, जिन्हें देखकर धर्मदेवता अपनी आँखें पीटकर व्याकुल हुआ। २५७३

उयिर्त्ति लन्नॊरु नाऴिहै युणर्न्दिल नॊन्ऱुम्
वियर्त्ति लन्नुडल् विऴित्तिलन् कण्णिणै विण्णोर्
अयर्त्त नन्गॊलिन् ऱञ्जिन् रङ्गयुन् दाळुम्
बॆयर्त्ति लन्नुयिर् पिरिन्दिलन् करुणैयाऱ् पिऱन्दान् 2574

करुणैयाल्–भूतदया के कारण; पिऱन्तान्–अवतरित श्रीराम; ऒरु नाऴिकै–एक घड़ी; उयिर्त्तिलन्–श्वासहीन रहे; ऒन्ऱुम् उणर्न्तिलन्–किसी की सुध नहीं की; वियर्त्तिलन्–स्वेद नहीं निकाला; कण् इणै–अक्षद्वय; विऴित्तिलन्–नहीं खोला; अम् कैयुम् ताळुम्–सुन्दर हाथों और पैरों को; पॆयर्त्तिलन्–नहीं हिलाया; उयिर् पिरिन्तिलन्–प्राणहीन न हुए यही गनीमत थी; विण्णोर्–देव; अयर्त्ततन् कॊल्–प्राणहीन हो गये क्या; ऎन्ऱु अञ्चिनर्–ऐसा डरे। २५७४

जीवों पर दया के कारण अवतरित श्रीराम एक घड़ी बेहोश रह गये। श्वास नहीं निकाले; कुछ सुधि नहीं रह गयी। शरीर पर स्वेद झलक नहीं आया। आँखें नहीं खुलीं। हाथ या पैर नहीं हिले। केवल प्राण छूटे नहीं। देव यह संशय करने लगे कि क्या ये प्राणहीन हो गये ? । २५७४

ताङ्गु वारिल्लैत् तम्बियैत् तऴीइक्कॊण्ड तडक्कै
वाङ्गु वारिल्लै वाक्किनाल् तॆरुट्टुवा रिल्लै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाङ्ग रायुळ्ळो रियावरुम् बट्टत्तर् पट्ट
तीङ्गु दानिदु तमियत्तै यार्तुयर् तीर्प्पार् 2575

पाङ्कराय् उळ्ळोर्–मित्र जो रहे वे; यावरुम् पट्टत्तर्–सभी मर गये; ताङ्कुवार् इल्लै–सँभालनेवाले नहीं थे; तम्पियै तळ्ळीइ कॊण्ट–भाई का आलिंगन करते जो पड़े रहे उन; तट कै–(श्रीराम के) बड़े हाथों को; वाङ्कुवार् इल्लै–हटानेवाले नहीं; वाक्कितात्–शब्दों से; तॆरुट्टुवार् इल्लै–सांत्वना देनेवाले नहीं; पट्ट तीङ्कु इतु–उनका भोगा दुःख ऐसा था; तमियत्तै–एकाकी को; तुयर् तीर्प्पार् पार्–दुःखमुक्त करे कौन। २५७५

उनके मित्र सभी मर गये। सँभालनेवाला कोई नहीं रहा। लघुभ्राता से लगकर पड़े रहे उनके विशाल हाथ को हटानेवाला कोई नहीं था। सान्त्वना के शब्द कहनेवाला कोई नहीं। उनकी बुरी स्थिति ऐसी हो गयी। एकाकी जो हो गये थे, उनका दुःख दूर करे कौन ?। २५७५

कवन्द पन्दमुङ् गळ्ळुन्दङ् गणवरैक् काणाच्
चिवन्द कण्णियर् तेडित्तर् तिरिबवर् तिरळुम्
उवन्द शादहत् तीट्टमुम् ओरियि नॊळ्क्कुम्
निवन्द वल्लदु पिऱविल्लैक् कडत्तिडै निन्ऱ 2576

कवन्त पन्तमुम्–कबन्धवृन्द; कळ्ळुतुम्–और भूत; तम् कणवरै काणार्–अपने पतियों का पता न पाकर; चिवन्त कण्णियर्–लाल हुई आँखों वाली; तेटित्तर् तिरिपवर्–खोजती फिरनेवालियों के; तिरळुम्–समूह; उवन्त–नन्दित; चातकत्तु ईट्टमुम्–पिशाचों का (भद्रकाली देवी के भृत्यों का) झुण्ड; ओरियित् ऒळ्क्कुम्–और सियारों की पंक्तियाँ; निवन्त–हावी रहे; अल्लाल्–उन्हें छोड़कर; कटत्तिटै निन्ऱ–जंगल में जो जीवित रहे; पिऱ इल्लै–अन्य कुछ नहीं रहे। २५७६

वहाँ तब कबंधवृन्द, भूत, पति की खोज में लगी लाल आँखों वाली स्त्रियों के झुंड, भद्रकालिका देवी के मुदित भृत्य, भूतों के समूह, सियारों की पंक्तियाँ —ये सब भरे रहे। फिर वहाँ क्या रहा ?। २५७६

वात नाडियर् वयिऱलैत् तळुदकण् मळैनीर्
शोतै मारियिऱ् चॊरिन्दत्त तेवरुञ् जॊरिन्दार्
एत्तै निऱ्पवुन् दिरिबवु मिरङ्गित्त वॆवैयुम्
आत्त नायह नुरुवमे यादला नडुङ्गि 2577

वात नाटियर्–देवलोकदयिताएँ; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटकर; अळुत कण् मळै नीर्–जो रोयीं तब निकली अश्रुवर्षा; चोतै मारियिल्–अविरत वर्षा के समान; चॊरिन्तत्त–बरसी; तेवरुम् चॊरिन्तार्–देवों ने भी बरसायी; ऎवैयुम्–सभी; आत्त नायकत् उरुवमे–ज्ञाननायक (श्रीराम) के ही रूप हैं; आतलात्–इसलिए; नटुङ्कि–काँपकर; एत्तै निऱ्पवुम्–अन्य अचर और; तिरिपवुम्–चर; इरङ्कित्त–शोकाकुल हुए। २५७७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देवलोकदयिताएँ पेट पीटती रोयीं और उनका अश्रुजल वर्षा के समान गिरा। देव भी रोये। प्रपंच के सभी जीवधारी ज्ञाननायक श्रीराम के ही रूप के सिवा कुछ नहीं। इसलिए चराचर सब काँपे और दुःखपीड़ित हुए। २५७७

मुहैयि नाण्मलर्क् किळवऱ्कु मुक्कणान् ऱतक्कुम्
तहैयि नीङ्गिय तिरुमुहङ् गरुणैयि नलिन्द
तॉहैयि निन्ऱवर्क् कुळळदु शॊल्लियॆन् तॊडर्न्द
पहैयुम् बार्क्किन्ऱ पावमुङ् गलुळ्न्दन पर्वाल् 2578

मुकै इल्–जो कली नहीं; नाण् मलर्–सद्यविकसित कमल के; किळवऱ्कुम्–वासी ब्रह्मा के; मुक्कणान् ततक्कुम्–त्रिनेत्र शिवजी के; तकैयिन् नीङ्किय–स्वभाव-विपरीत; तिरुमुकम्–श्रीमुख; करुणैयिन् नलिन्त–सहानुभूति के कारण निष्प्रभ हुए; तॊकैयिन् निन्ऱवर्क्कु–एक ही समूह के जो रहते हैं उनका; उळ्ळतु–जो हाल होता है; चॊल्लि ऍन्–वह क्या कहें; तॊटर्न्त पकैयुम्–लगी हुई शत्रुता ने और; पार्क्किन्ऱ–उसको देखनेवाले; पावमुम्–पाप ने भी; परिवाल् कलुळ्न्तन–सहानुभूति से अश्रु बहाये। २५७८

कली जो नहीं रहा पर जो ताज़ा खिल गया, उस पद्म के प्रभु ब्रह्मा का श्रीमुख और त्रिनेत्र शिवजी का श्रीमुख स्वभाव के विपरीत सहानुभूति-जनित करुणा के कारण मलिन हो गये। एक ही समूह के हैं —उनके दुःख का क्या कहा जाय ? शत्रुता और पाप ने भी अश्रु बहाये ! । २५७८

अण्ण लुञ्जिऱि दुणर्वित्तो डयर्वुयिर्प् पणुहिक्
कण्वि ळित्तनन् तम्बियॆत् तॆरिवुऱक् कण्डान्
विण्णै युऱ्ऱनन् मीळ्हिल नॆन्ऱहम् वॆदुम्बप्
पुण्णि नुऱ्ऱदो रॆरियन्न तुयरिनन् पुलम्बुम् 2579

अण्णलुम्–महिमावान श्रीराम ने भी; चिऱितु उणर्वित्तोटु–कुछ प्रज्ञा के साथ; अयर्वु–थकावट; उयिर्प्पु–और लम्बे श्वासों के साथ; अणुकि–लगकर; कण् विळित्तनन्–आँखें खोलीं; तम्पियै–अपने भाई को; तॆरिवुऱ कण्टान्–साफ़-साफ़ देखा; विण्णै उऱ्ऱनन्–स्वर्ग पहुँच गया; मीळ्किलन्–लौट नहीं आयेगा; ऍन्ऱु–यह कहकर; अकम् वॆतुम्प–चित्त के तप्त होते; पुण्णिन्–व्रण में; ओर् ऍरि–एक आग; उऱ्ऱतु अन्न–घुसी जैसे; तुयरिनन्–दुःखी हो; पुलम्पुम्–विलाप करने लगे। २५७९

महिमामय श्रीराम थोड़ा आश्वस्त हुए। लम्बी आह के साथ सुधि आयी। आँखें खोलकर उन्होंने भाई को खूब देखा। 'यह स्वर्गवासी हो गया। लौटेगा नहीं !' यह सोचकर उनका मन तप्त हुआ। व्रण में आग लगी हो जैसे वे वेदना के साथ यों विलाप करने लगे। २५७९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्दै यिऱन्दा नॅन्ऱु मिरुन्दे नुलहॅल्लान्
दन्दत नॅन्नुङ् गॉळ्है तविर्न्देन् ऱनियल्लेन्
उय्न्दु मिरुन्दाय् नीयॅत नित्ऱे नुरैकाणेन्
वन्दत नैया वन्दत नैया विनिवाळेन् 2580

ऍन्तै इऱन्तान् ऍन्ऱुम्–मेरे पिता मर गये, यह सुनकर भी; इरुन्तेन्–मैं जीवित रहा; उलकु ऍल्लाम् तन्तत्तन् ऍन्नुम्–सभी लोकों को भरत का कर दिया यह; कॉळ्कै तविर्न्तेन्–धारणा भी झुठला दी; तनि अल्लेन्–(मुझे) एकाकी न बनाते हुए; नी उय्न्तुम् इरुन्ताय्–तुम जीवित रहे; नित्ऱेन्–इसी विचार से (सुखी) रहा; उरै काणेन्–तुम्हारा बोलना नहीं देखता; इनि वाळेन्–अब न जीऊँगा; ऐया–तात; वन्तत्तन्–आ गया; ऐया–तात; वन्तत्तन्–आ गया तुम्हारे पास। २५८०

अपने पिता की मृत्यु सुनकर भी मैं जीवित रहा। भरत को राज्य दे दिया —यह दावा भी छोड़ा। तब तुम साथ थे; मैं अकेला नहीं था। उसी से मैं जीवित रहा। अब तुम्हारी वाणी नहीं सुन पाता। मैं नहीं जीऊँगा तात ! आ गया ! तात ! आ गया तुम्हारे पास। २५८०

तायो नीये तन्दैयु नीये तवनीये
शेयो नीये तम्बियु नीये तिरुनीये
पोयो नित्ऱा यॅन्नै यिहन्दाय् पुहळ्पाराय्
नीयो यानो निन्नितु नॅञ्जम् वलियेनाल् 2581

तायो नीये–माता भी तुम हो; तन्तैयुम् नीये–पिता भी तुम्हीं; तवम् नीये–तप (का फल) भी तुम्हीं; चेयो नीये–पुत्र भी तुम्हीं; तम्पियुम् नीये–लघु सहोदर भी तुम्हीं; तिरु नीये–संपत्ति भी तुम्हीं; नीयो–तुम तो; पुकळ् पाराय्–यश न चाहकर; ऍन्नै इकन्ताय्–मेरी उपेक्षा करके; पोयो नित्ऱाय्–जा ही गये; यानो–मैं तो; निन्नितुम्–तुमसे बढ़कर; नॅञ्चम् वलियेन्–चित्त का कठोर हूँ। २५८१

माता, पिता, तप, पुत्र, लघुभ्राता सभी तुम्हीं हो ! मेरी सारी श्री तुम्हीं हो ! पर तुम तो यश की अवहेलना करके मुझे छोड़ गये ! मैं (जो अब भी जीवित हूँ) तुमसे भी कठोर दिल का हूँ। २५८१

ऊऱाय् नित्ऱु पुण्णुडै याय्पा लुयिर्काणेन्
आऱा नित्ऱे नावि शुमन्दे यळुहिन्ऱेन्
एऱे यित्नु मुय्यितु मुय्वे निरुकूऱाक्
कीऱा नॅञ्जम् बॅऱ्ऱत नन्ऱो कॅडुवेनै 2582

ऊऱाय् नित्ऱु–दुःखकारी; पुण् उटैयाय् पाल्–व्रणों से भरे शरीर में; उयिर् काणेन्–प्राण नहीं देखता; आऱा नित्ऱेन्–सँभलकर; आवि चुमन्ते–प्राण ढोते हुए; अळुकिन्ऱेन्–रोता हूँ; एऱे–सिह; कॅटुवेन्–मिट जाऊँगा; इरु कूऱा–दो भागों में; कीऱा नॅञ्चम्–जो नहीं फटता ऐसा मन; पॅऱ्ऱतन् अन्ऱो–मैंने पाया है न; इन्नुम्–और भी; उय्यितम् उय्बॅन्–जीता तो रहूँगा; अन्ऱो–न। २५८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम्हारे बहते व्रणों के शरीर में प्राणों का निशान नहीं। तुम साँसें नहीं छोड़ते। शांत होकर प्राण ढोता हुआ रो रहा हूँ। हे नरकेसरी! मैं मिटा! मेरे ऐसा कठोर दिल है जो दो भागों में फटता नहीं! फिर भी जीवित रह जाऊँगा (तो आश्चर्य नहीं)! । २५८२

पयिलुङ् गालम् बत्तॊडु नालुम् बडर्कानत्
तयिल्हिन् ऱेनुक् कावन नल्हि यियिलादाय्
वॆयिलॆन् ऱुन्नाय् निन्ऱु तळर्न्दे मॆलिवॆय्दित्
तुयिल्हिन् ऱायो विन्ऱिव् वुऱक्कन् दुऱवायो 2583

पटर् कानत्तु–विशाल कानन में; पयिलुम् कालम् पत्तॊटु नालुम्–मिले जब रहे उन चौदहों सालों में; अयिल्किन्ऱेनुक्कु–खानेवाले मुझे; आवन नल्कि–भोग्य वस्तुएँ देकर; अयिलाताय्–हे स्वयं कुछ न खानेवाले; वॆयिल् ऍन्ऱु उन्नाय्–धूप की परवाह नहीं करते; तळर्न्तु निन्ऱे–श्लथ रहकर; मॆलिवु ऍय्ति–निर्बल होकर; इन्ऱु तुयिल्किन्ऱायो–आज सोते हो क्या; इव् उऱक्कम्–यह निद्रा; तुऱवायो–न छोड़ोगे क्या। २५८३

विशाल कानन में चौदह साल हम एक साथ रहे। तुमने मेरा खाने का प्रबन्ध मेरी इच्छा के अनुसार कराया। पर तुम विना खाए ही रह जाते थे। धूप नहीं देखते। शरीर को कृश बना लिया। आज क्या मन के भी शिथिल पड़ जाने से सोये पड़े हो? क्या यह निद्रा नहीं त्यागोगे? । २५८३

अयिरा नॆञ्जु माविय़ु मॊन्ऱे यॆन्नुमच्चॊल्
पयिरा वॆल्लैप् पादह नेऱ्कुम् बरिवुण्डो
शॆयिरो विल्ला वुन्नै यिळन्दुन् दिरिहिन्ऱेन्
उयिरो नान्नो वारिनि युन्नो डुऱवॆया 2584

अयिरा–संशय न करके; नॆञ्चुम् आवियुम्–मन और प्राण; ऒन्ऱे–एक ही; ऍन्नुम् अ चॊल्–वैसा वह कथन; पयिरा ऍल्लै–जब निरर्थक हो गया; पातकनेऱ्कुम्–पापी मुझमें; परिवु उण्टो–करुणा होगी क्या; चॆयिर् इल्ला–निर्दोष; उन्नै इळन्तुम्–तुमको खोकर भी; तिरिकिन्ऱेन्–सप्राण घूमता हूँ; ऐया–तात; इनि–अब; उन्नॊटु उऱवु–तुम्हारे साथ रिश्ता; उयिरो–मेरे प्राण; नान्नो–या मैं; आर्–कौन। २५८४

हम परस्पर विश्वासी एक-मन एक-प्राण हैं —ऐसा लोग कहते थे। वह कथन अब निरर्थक हो गया है। तब मुझ पातक में अनुताप रहता है क्या? निर्दोष तुम्हें खोकर भी मैं घूमता फिरता हूँ। तात! अब तुम्हारे साथ नाता निबाहें मेरे प्राण? या निबाहूँ मैं? कौन? । २५८४

वेळ्विक् केहि विल्लु मिऱुत्तोर् विडमम्मा
वाळ्विक् कुम्मॆन् ऱॆणिनन् मुन्ने वरुवित्तेन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शूऴ्वित् तॆन्नॆच् चुऱ्ऱिन रोडुञ् जुडुवित्तेन्
ताऴ्वित् तेन्नो वित्तन्नॆ केडुन् दरुवित्तेन् 2585

वेऴ्विक्कु एकि–(जनक के) यज्ञ में जाकर; विल्लुम् इऱुत्तु–धनु भी तोड़कर; ओर् विटम्–एक विष (सीता); वाऴ्विक्कुम्–हमको जिलायगा; ऎन्ऱु ऎण्णिनॆन्–सोचा मैंने; मुन्नॆ वरुवित्तेन्–सामने लाया; चूऴ्वित्तु–वंचना करके; ऎन्नॆ चुऱ्ऱितरोटुम्–अपने सभी बन्धु-बान्धवों को; चुटुवित्तेन्–जलवा दिया; ताऴ्वित्तेन्नो–पीछे हटा क्या; इत्तनै केटुम् तरुवित्तेन्–इतने कष्ट ला दिये; अम्मा–माँ री। २५८५

जनक के धनुर्यज्ञ में गया, शिवधनुष तोड़ा और सोचा कि सीता रूपी विष हमको जिलाएगा (सुखमय जीवन दिलाएगा)। उसे सामने ले आने दिया। सबको वंचना करके रिश्तेदारों के साथ जला दिया! कुछ भी संकोच किया क्या मैंने? ओह! कितनी ही हानियाँ करा दीं! । २५८५

मण्मेल् वैत्त कादलिन् माता मुदलोर्क्कुप्
पुण्मेल् वैत्त तीनिहर् तुन्बम् बुहुवित्तेन्
पॆण्मेल् वैत्त कादलि निप्पे रुहळ्पॆऱ्ऱेन्
ऎण्मेल् वैत्त वॆन्पुहळ् नन्ऱा लॆळियन्नो 2586

मण् मेल् वैत्त कातलिन्–धरती पर हुई इच्छा से; माता मुतलोर्क्कु–माता (कैकेयी) आदि लोगों को; पुण् मेल् वैत्त–व्रण में रखी; ती निकर्–आग के समान; तुन्पम् पुकुवित्तेन्–दुःख दिलाया; पॆण् मेल् वैत्त कातलिन्–स्त्री पर रखे प्रेम से; इ पेऱुकळ् पॆऱ्ऱेन्–ये लाभ पाये; ऎण् मेल् वैत्त–मान्य; ऎन् पुकळ्–मेरा यश भी; नन्ऱु–खूब रहा; ऎळियेन्नो–दीन (सहानुभूति योग्य) हूँ क्या। २५८६

मैंने राज्यलिप्सा के कारण माता (कैकेयी) आदियों को व्रण पर रखी आग के समान दुःख पहुँचाया। स्त्रीलिप्सा के कारण ये सब लाभ पाये। मान्य मेरा यश भी बड़ा अच्छा रहा! क्या मैं दीन (सहानुभूति योग्य) हूँ? । २५८६

माण्डाय् नीयो यान्नॊरु पोदु मुयिर्वाळॆन्
आण्डा नल्ल नान्निल मन्दो परदन्ऱान्
पूण्डा रॆल्लाम् बॊन्ऱुवर् तुन्बम् बॊऱैयाऱ्ऱार्
वेण्डा वोना नल्लऱ मञ्जि मॆलिवुऱ्ऱाल् 2587

नीयो माण्टाय्–तुम तो मर गये; यान्–मैं; ऒरु पोतुम् उयिर् वाळॆन्–मैं कदापि नहीं जीवित रहूँगा; परतन्–(तब) भरत; नान्निलम् आण्टान् अल्लन्–चतुर्विधा भूमि का शासन नहीं करेगा; अन्तो–हन्त; तुन्पम् पॊऱै आऱ्ऱार्–दुःखभार वहन न कर सककर; पूण्टार् ऎल्लाम्–रिश्तेदार सभी; पॊन्ऱुवर्–मर जाएँगे; नान्–मैं; नल् अऱम् अञ्चि–श्रेष्ठधर्म-भीरु होकर; मॆलिवुऱ्ऱाल्–निर्बल रहा तो; वेण्टावो–ये सब न होने चाहिए क्या। २५८७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम तो चल बसे ! मैं एक पल भर भी प्राणधारण नहीं करूँगा। (उस स्थिति में) भरत भूमि का पालन नहीं करेगा। हन्त ! दुःख-भार न सह सककर सभी नातेदार मर जाएँगे। अच्छे धर्म से डरकर मैं निर्बल रह गया न ? इतना काफ़ी है क्या मुझे ? । २५८७

अऱन्दाय् तन्दै शुऱ्ऱमु मऱ्ऱु मॆऩैयल्लाल्
तुऱन्दा यॆऩ्ऱु मॆऩ्ऩै मऱादाय् तुणैवन्दु
पिऱन्दा यॆऩ्ऩैप् पिऩ्बु तॊडर्न्दाय् पिरिवाऱ्ऱाय्
इऱन्दा युऩ्ऩैक् कण्डु मिरुन्दे ऩॆळियेऩो 2588

अऱम्–धर्म; ताय् तन्तै–माता-पिता; चुऱ्ऱमुम्–और रिश्तेदार; मऱ्ऱुम्–अन्य सभी को; ऎऩै अल्लाल्–मुझे छोड़; तुऱन्ताय्–छोड़ चलनेवाले; ऎऩ्ऱुम् ऎऩ्ऩै मऱाताय्–कभी मुझे न भूलनेवाले; तुणै वन्तु पिऱन्ताय्–साथी भाई के रूप में जनमे; पिरिवु आऱ्ऱाय्–वियोग न सह सकनेवाले; ऎऩ्ऩै–मेरा; पिऩ्पु तॊटर्न्ताय्–पीछा कर आये; इऱन्ताय्–मर गये; उऩ्ऩै कण्टुम्–तुम्हें देखकर भी; इरुन्तेऩ्–जीवित रहता हूँ; ऎळियेऩो–दीन हूँ क्या। २५८८

तुमने धर्म, माँ, बाप, रिश्तेदार सभी को त्यागा, केवल मेरे वास्ते ! हे मुझे कभी न भूलनेवाले; मेरे सहोदर के रूप में जनमे मेरे भाई ! वियोग सह नहीं सककर, मेरे पीछे जंगल आनेवाले ! तुम मर गये तो भी देखता रह रहा हूँ मैं ! क्या मैं दीन हूँ ? । २५८८

शाऩ्ऱोर् मादैत् तक्क वरक्कऩ् शिऱै तट्टाल्
आऩ्ऱोर् शॊल्लु नल्लऱ मऩ्ऩाऩ् वयमाऩाल्
मूऩ्ऱाय् निऩ्ऱ पेरुल हॊऩ्ऱाय् मुडिया वेल्
तोऩ्ऱा वोवॆऩ् विल्वलि दीरत् तॊऴिलम्मा 2589

चाऩ्ऱोर् मातै–सुयोग्य पुरुष की पुत्री को; तक्क अरक्कऩ्–बलवान राक्षस; चिऱै तट्टाल्–कारा में बाँध रखे तो; आऩ्ऱोर् चॊल्लुम् नल् अऱम्–साधुशंसित श्रेष्ठ धर्मदेवता; अऩ्ताऩ् वयम्–उसके वश में; आताल्–हो जाय तो; मूऩ्ऱाय् निऩ्ऱ पेर् उलकु–त्रिविध बड़े लोक; ऒऩ्ऱाय् मुटियावेल्–एक साथ न मिटें तो; ऎऩ् विल् वलि–मेरे धनु का बल; तीरम् तॊऴिल्–और पराक्रम; तोऩ्ऱावो–प्रकट नहीं होगा क्या। २५८९

बहुत ही सुयोग्य (जनक) की दुहिता को बली राक्षस ने कारा में बंद रखा है। तो धनु को उसका नाश करा देना चाहिए। पर श्रेष्ठ धर्मदेवता उसके वश में रह गया। तो तीनों लोकों को एक साथ मिट जाना चाहिए। वह भी न हुआ तो क्या मेरा धनु का वीर कार्य प्रकट नहीं हो ? मैया, यह क्या आश्चर्य है ? । २५८९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेलैप् पळ्ळक् कुण्डह ऴिक्कुम् विरादर्कुङ्
गालिर् चॅल्लुङ् गाह मणिक्कुङ् गरनुक्कुम्
मूलप् पॊत्तर् चॅत्त मरत्तेऴ् मुदलुक्कुम्
वालिक् कुम्मे यायिन वाऱॅन् वलियम्मा 2590

वेलै–सागर-कथित; पळ्ळम् कुण्टु अकऴिक्कुम्–गड्ढे रूपी लंका की गहरी खाई के विषय में; विरातर्कुम्–विराध; कालिल् चॅल्लुम्–पवनगतिगामी; काकम्–काकासुर की; मणिक्कुम्–आँख के तारे; करनुक्कुम्–खर; मूलम् पॊत्तल्–जड़ में छेद के साथ; चॅत्त–सत्त्वहीन; मरत्तु एऴ् मुतलुक्कुम्–सात सालवृक्ष आदि के विषय में और; वालिक्कुम् ए–वाली के विषय में ही; ऍन् वलि–मेरा बल; आयिन वाऱ ऍन्–कारगर रहा, यह हाल कैसा। २५९०

लंका की सागर की ही परिखा, विराध, पवनगति काग की आँख की पुतली, खर, खोखली जड़ के सत्त्वहीन सात सालवृक्ष और वाली —इनके ही विषय में मेरा बल कारगर रहा ! यह क्या हाल है ? । २५९०

इरुन्दे नाना लिन्दिर शित्ते मुदलाय
पॅरुन्दे रारैक् कॊन्ऱु पिऴैक्कप् पॅऱुवेनो
वरुन्दे नीये वॅल्लुदि यॅन्नुम् वलिकॊण्डेन्
पॊरुन्दे नानिप् पॊय्प्पिऱ विक्कुम् बॊऱैयल्लेन् 2591

वरुन्तेन्–(यत्न) कष्ट नहीं करूँगा; नीये वॅल्लुति–तुम्हीं जीतोगे (रावणि को); ऍन्नुम् वलि कॊण्टेन्–यह कहने का जो साहस करता था; इरुन्तेन् आनाल्–वह मैं इधर रहता तो; इन्तिरचित्ते मुतल् आय–इन्द्रजित् आदि; पॅरु तेरारै–महारथियों को; कॊन्ऱु–मारकर; पिऴैक्क पॅऱुवेनो–बच सकता क्या; नान् पॊरुन्तेन्–मैं (तुम्हारा सहोदर होने) योग्य नहीं हूँ; इनि–अब; पॊय् पिऱविक्कुम्–वृथा जन्म का; पॊऱै अल्लेन्–भार ढोने भी योग्य नहीं। २५९१

'मैं कष्ट न करूँगा, तुम्हीं जीतोगे (इन्द्रजित्) को' यह कहने का धैर्य मुझमें रहा। ऐसा मैं यहीं रहता तो इन्द्रजित् आदि महारथियों को मारकर बचता क्या ? मैं तुम्हारा सहोदर होने योग्य ही नहीं ! यह सारहीन जीवन ढोने की शक्ति भी नहीं रखता। (सब तरह से असमर्थ साबित हो गया हूँ।) । २५९१

मादा वुम्नञ् जुऱ्ऱमु नाडु मऱैयोरुम्
एदा नारो वॅन्ऱु तळर्न्दे यिऱुवारैत्
तादाय् काणच् चाल निनैन्देन् ऱळर्हिन्ऱेन्
पोदा यैया पॊन्मुडि यॅन्नैप् पुनैविप्पान् 2592

मातावुम्–माता और; नम् चुऱ्ऱमुम्–हमारे रिश्तेदार; नाटुम्–और हमारे देशवासी; मऱैयोरुम्–ब्राह्मण लोग; एतानारो–क्या हो गये; ऍन्ऱु तळर्न्तु–ऐसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सोचकर शिथिल पड़कर; इऱुवारै–जो क्षीण होंगे उनको; ताताय्–तात; काण–देखने की इच्छा; चाल निऩैनूतेऩ्–खूब की; तळर्किऩ्ऱेऩ्–घुलता हूँ; ऐया–बाबा; ऍऩ्ऩै–मुझे; पॊऩ् मुटि पुऩैविप्पाऩ्–स्वर्णकिरीट पहनाने के लिए; पोताय्–उठ आओ। २५९२

हे तात ! मैं बहुत चाहता था कि जाऊँ और माताओं, बन्धु-बान्धवों और ब्राह्मणों को, जो मेरी स्थिति के सम्बन्ध में संशय करते हुए मलिन होते होंगे, देखूँ। मैं इसी विचार से निर्बल होता रहता हूँ। तात ! उठो ! मुझे स्वर्णकिरीट पहनाने के लिए ही सही आओ। २५९२

पाशमु मुऱ्ऱच् चुऱ्ऱिय पोदुम् बहैयाले
नाशमु ऎऱ्ऱिप् पोदु नडन्दे ऩुडऩल्लेऩ्
नेशमु मऱ्ऱार् शॆय्वऩ शॆय्दे निलैनिऩ्ऱेऩ्
तेशमु मुऱ्ऱॆऩ् कॊऱ्ऱ नलत्तैच् चिरियारो 2593

पाचमुम्–नागपाश; मुऱ्ऱ चुऱ्ऱिय पोतुम्–जब पूर्ण रूप से लिपटा रहा तब भी; पकैयाले–शत्रु द्वारा; नाचम् उऎऱ्ऱु–नाश को प्राप्त होने के; इप्पोतु–इस समय में भी; उटऩ् अल्लेऩ्–साथ नहीं रहा; नटऩ्तेऩ्–दूर चला गया; नेचमुम् अऱ्ऱार्–स्नेहहीन; चॆय्वऩ–जो करेंगे वही; चॆय्ते–करके; निलै निऩ्ऱेऩ्–अचल रहता हूँ; तेचमुम्–देशवासी; उऱ्ऱु–लगकर; ऍऩ् कॊऱ्ऱम् नलत्तै–मेरी विजय की श्रेष्ठता की; चिरियारो–हँसी नहीं उड़ायेंगे क्या। २५९३

मैं तब भी तुम्हारे पास नहीं रहा, जब नागपाश तुम पर लिपट गया था। मैं अबकी बार भी न रहा, जब शत्रु के हाथ तुम्हारा मरण हो गया। दोनों बार दूर चला गया था। स्नेहहीन का-सा काम करके अचल रहता हूँ। देशवासी क्या, युक्त ही रीति से, मेरी विजयश्रेष्ठता की हँसी नहीं करेंगे ? । २५९३

कॊडुत्ते ऩऩ्ऱे वीडण ऩुक्कुक् कुलमाळ
मुडित्तोर् शॆल्व मियाऩ्मुडि यादे मुडिहिऩ्ऱेऩ्
पडित्ते ऩॆऩ्ऱे पॊय्म्मै कुडिक्कुप् पऴिपॆऱ्ऱेऩ्
ऒडित्ते ऩऩ्ऱे यॆऩ्बुहऴ् नाने युणर्वऱ्ऱेऩ् 2594

वीटणऩुक्कु–विभीषण को; कुलम् आळ–कुल का शासन करने हेतु; मुटित्तु–मुकुट पहनाकर; ओर् चॆल्वम् कॊटुत्तेऩ्–एक सम्पत्ति दिलायी मैंने; अऩ्ऱे–दिया न; मुटियाते–उसको सम्पन्न किये विना; याऩ् मुटिकिऩ्ऱेऩ्–मरनेवाला हूँ; पॊय्म्मै पटित्तेऩ्–असत्य सीख लिया; ऍऩ्ऱे–ऐसा ही; कुटिककु–(इक्ष्वाकु) वंश को; पऴि पॆऱ्ऱेऩ्–कलंक दिला दिया; उणर्वु अऱ्ऱेऩ्–बुद्धिहीन हूँ; ऍऩ् पुकऴ्–अपने यश को; नाते ऒटित्तेऩ्–मैंने स्वयं तोड़ (नष्ट कर) दिया। २५९४

मैंने विभीषण को राक्षसकुलाधिपत्य देकर किरीट पहनाया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पहनाकर राज्यश्री दिलायी न ! अब उसे पूरा किये विना ही मैं अंत होने वाला हूँ। असत्यवादी बनकर इक्ष्वाकुकुल पर कलंक सम्पादित कर लगवा दिया। दुर्बुद्धि मैंने अपना यश स्वयं ही नष्ट कर लिया। २५९४

ऍन्ऱॆन् ऱेङ्गा विम्मु मुयिर्क्कु मिडैयः(ह्)किच्
चॆन्ऱोन् ऱोन्ऱो डिन्दिय मॆल्लाम् जिऱैयॆय्दप्
पॊन्ऱुम् मॆन्नुन् दम्बियै मार्वत् तॊडुपुल्लि
ऑन्ऱुम् बेशान् ऱन्नै मऱन्दान् तुयिल्वुऱ्ऱान् 2595

ऍन्ऱॆन्ऱु–ऐसा-ऐसा; एङ्का–विलाप करके; विम्मुम्–सिसकते; उयिर्क्कुम्–लम्बी आहें छोड़ते; इटै–बीच में; अ..कि चॆन्ऱु–क्षीण पड़कर; ऑन्ऱोटु–एक इन्द्रिय (मन) के साथ; इन्तियम् ऍल्लाम्–सारी इन्द्रियाँ; ऑन्ऱु–मिलतीं और; चिऱै ऍय्त–बद्ध हो जातीं और; पॊन्ऱुम् ऍन्नुम्–मृतक बने; तम्पियै–लघु सहोदर को; मार्वत्तॊटु पुल्लि–छाती से लगाकर; ऑन्ऱुम् पेचान्–कुछ नहीं बोलते; तन्नै मऱन्तान्–अपने को भूल जाते और; तुयिल्वुऱ्ऱान्–निद्रामग्न हो गये। २५९५

ऐसी-ऐसी बातें कहते हुए श्रीराम सिसके; रोये। लम्बी आहें भरीं। क्षीण हुए। उनकी सारी इन्द्रियाँ मन के साथ निष्क्रिय हुईं। और वे मृतक-से पड़े रहे छोटे भाई को गले से लगा लेते हुए अवाक् होकर निद्रामग्न हो गये। २५९५

कण्डार् विण्णोर् कण्गळ् पुडैत्तार् कलुळ्हिन्ऱार्
कॊण्डार् तुन्ब मॆन्मुडि वॆन्नक् कुलैहिन्ऱार्
अण्डा वैया वॆङ्गळ् पॊरुट्टा लयर्हिन्ऱाय्
उण्डो वुन्बाऱ् ऱुन्बॆन्न वन्बा लुरैशॆय्दार् 2596

विण्णोर्–देवों ने; कण्टार्–देखा; कण्कळ् पुटैत्तार्–आँखें पीट लीं; कलुळ्कित्ऱार्–रोये; तुन्पम् कॊण्टार्–दुःखी हुए; मुटिवु ऍन्न–परिणाम क्या होगा; ऍन्–कहकर; कुलैकिन्ऱार्–अधीर होते हैं; अण्टा–देव; ऐया–प्रभु; ऍङ्कळ् पॊरुट्टाल्–हमारे वास्ते; अयर्किन्ऱाय्–कष्ट उठाते हैं; उन् पाल् तुन्पु उण्टो–आपके पास दुःख भी भटकेगा क्या; ऍन्न–ऐसा; अन्पाल्–भक्ति के कारण; उरै चॆय्तार्–कहा। २५९६

देवों ने यह देखा तो आँखें पीट लीं और रोये। दुःखी हुए और परिणाम के सम्बन्ध में संशय करते हुए काँप उठे। वे भक्ति के साथ बोले कि अंडनायक ! हमारे वास्ते आप दुःख सह रहे हैं। नहीं तो आपके पास दुःख भटक भी सकता है क्या ? । २५९६

उन्नै युळ्ळ पडियऱियो मुलह मुळ्ळ तिऱमुळ्ळोम्
बिन्नै यऱियो मुन्नऱियो मिडैयु मऱियोम् पिऱळामल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निन्नै वणङ्गि नीवहुत्त नॅऱियि निऱ्कु मदुवल्लाल्
ऍन्नै यडियेञ् जॅयऱ्पाल विन्ब दुन्ब मिल्लोन्ने 2597

इन्प तुन्पम् इल्लोन्ने–सुख-दुःख-विमुक्त; उन्नै उळ्ळपटि अऱियोम्–आपको यथार्थ से नहीं जानते; उलकम्–लोक; उळ्ळ तिऱम्–जैसे (आपके अन्दर) रहते हैं, वह प्रकार; उळ्ळोम–न जानते; पिन्नै अऱियोम्–आगे का नहीं जानते; मुन् अऱियोम्–पीछे का नहीं जानते; इटैयुम् अऱियोम्–मध्य भी मालूम नहीं; पिऱ्ळामल्–क्रम भंग किये बगैर; अऱियोम्–बातें नहीं जानते; निन्नै वणङ्कि–आपकी पूजा करके; नी वकुत्त नॅऱियिन्–आपके निर्दिष्ट मार्ग में; निऱ्कुम् अतु अल्लाल्–रहने की वह बात छोड़कर; अटियेम् चॅयऱ्पाल–हम दासों के कृत्य; ऍन्नै–क्या हैं। २५९७

(देव आगे बोले :) हे सुख-दुःख-रहित ! हम आप की यथार्थ स्थिति नहीं जानते। लोकस्थिति भी न जानते। न आगे की बात जानते, न पीछे की, न मध्य की ही। यथाक्रम बातें जानना भी हमें आता नहीं ! आपकी स्तुति करें, और आपके निर्दिष्ट मार्ग पर स्थित हों, इसके सिवा हमारा कृत्य क्या होगा ? । २५९७

अरक्कर् कुलत्तै वेरऱुत्तॅम् मल्ल नीक्कि यरुळायॅन्
ऱिरक्क वॅम्मेऱ् करुणैयिन्ना लिशैया वुरुव मिवैयॅय्दिप्
पुरक्कु मन्नर् कुडिप्पिऱन्दु पोन्दा यऱत्तैप् पॉऱैतीर्प्पान्
करक्क निन्ऱे नॅडुमाय मॅमक्कुङ् गाट्टक् कडवायो 2598

अरक्कर् कुलत्तै–राक्षसकुल को; वेरऱुत्तु–मूल से काटकर; ऍम् अल्लल् नीक्कि–हमारे कष्ट को दूर करके; अरुळाय्–कृपा दरसाएँ; ऍन्ऱु–कहकर; इरक्क–हमने याचना की तो; ऍम् मेल्–हम पर; करुणैयिन्नाल्–करुणा से; इचैया उरुवम् इवै–अयोग्य ये रूप; ऍय्ति–लेकर; पुरक्कुम् मन्नर्–देशपालक राजा के; कुडि पिऱन्तु–गृह में जन्म लेकर; पोन्ताय्–प्रकट होनेवाले; अऱत्तै पॉऱै तीर्प्पान्–धर्म का भार दूर करने; करक्क निन्ऱे–छिपे ही रहकर; मायम्–जो माया रचते हैं उसको; ऍमक्कुम्–हमें भी; काट्ट कटवायो–नहीं दरसा सकेंगे क्या। २५९८

हमने प्रार्थना की थी कि राक्षसकुल को निर्मूल करें और हमारा संकट हरके हम पर दया बरतें। हम पर कृपा करके आपने अपने लिए बिलकुल न सोहनेवाला रूप धर लिया। लोकपालक राजकुल में अवतरित हे देव ! धर्मदेवता का संकट-भार हटाने के लिए छिपे रहते हैं। क्या उसी रूप में आप अपनी माया का रहस्य हमें नहीं दरसाएँगे। २५९८

ईन्ऱॅम् मिडुक्कण् डडैत्तळिप्पा निरङ्गि यरश रिऱ्पिऱन्दाय्
मून्ऱा मुलहन् दुयर्दीर्त्ति यॅन्नु माशै मुयल्हिन्ऱोम्
एन्ऱु मऱन्दो मवन्नल्लन् मन्निद नॅन्ऱे यिदुमायम्
पोन्ऱ दिल्लै याळुडैयाय् पॉय्युम् बुहलप् पुक्कायो 2599

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईत्र ऍम्–आपसे सृष्ट हमारे; इटुक्कण् तुटैत्तु–संकट पोंछकर; अळिप्पान् इरङ्कि–पालने की दया के भाव लेकर; अरचर् इल् पिऱन्ताय्–हे राजगृह में अवतरित; मूत्ऱाम् उलकम्–त्रिविध लोकों का; तुयर् तीर्त्ति–दुःख दूर करेंगे; ऍन्नुम् आचै–इस आशा से; मुयल्किन्ऱोम्–यत्नशील हैं; एन्ऱु–आपकी स्थिति को सच्चा मानकर; अवत् अल्लत्–वे (परमपुरुष) नहीं; मनितत्–मानव ही; ऍन्ऱु–मानकर; मऱन्तोम्–(आपका यथार्थ) भूल गये; इतु मायै पोन्ऱतु–ऐसी माया का-सा कार्य दूसरा; इल्लै–नहीं; आळ् उटैयाय्–हम दासों के मालिक; पोय्युम्–असत्य भी; पुकल–कहने; पुक्कायो–लगे क्या। २५९९

आपके सृष्ट हमारे संकट दूर करके हमारी रक्षा करने के निमित्त दया से राजकुल में अवतरित, हे देव ! त्रिलोक का संकट भी दूर करेंगे, इस आशा में हम यत्नवान हैं। आपकी अब की स्थिति को सच्चा मानकर हम आपके यथार्थ परत्व को भूल गये। ऐसी माया भी कहीं होती है ? हे हमारा दासत्व ग्रहण करनेवाले हमारे स्वामी ! आप असत्य-वादन भी आरम्भ कर चुके क्या ? । २५९९

अण्डम् बलवु मनैत्तुयिरु महत्तुम् बुऱत्तु मुळवाक्कि
उण्डु मुमिळ्न्दु मळन्दिडन्दु मुळ्ळुम् बुऱत्तु मुळैयाहिक्
कॊण्डु शिलम्बि तन्वायिऱ् कूर्न्नूलियैयक् कूडियऱ्ऱिप्
पण्डु मिन्ऱु मैक्किन्ऱ पडियै यॊरुवाय् परमेट्टि 2600

परमेट्टि–परमेष्ठि; अण्टम् पलवुम्–अनेक अण्ड; अनैत्तुयिरुम्–सभी जीव; उण्टुम्–निगलकर; उमिळ्न्तुम्–उगलकर; अकत्तुम् पुऱत्तुम् उळ आक्कि–अन्दर और बाहर के बनाकर; अळन्तुम् इटन्तुम्–मापकर और भाग बनाकर; उळ्ळुम् पुऱत्तुम्–भीतर और बाहर; उळैयाकि–रहनेवाले बने; चिलम्पि–मकड़ा; तन् वायिल्–अपने मुख में; कूर् नूल् इयैय–महीन सूत्र के निकलते; कॊण्टु–उससे; कूटु इयऱ्ऱि–जाला बनाकर; पण्टुम्–पहले और; इन्ऱुम्–आज भी; मैक्किन्ऱ पटियै–जो करता रहता है, उस प्रकार से; ऒरुवाय्–नहीं हटते। २६००

परमेष्टि ! आप सारे अंडों व सारे जीवों को निगलते और उगलते; उदरस्थ भी रखते और बाहर भी रखते। मापते और भाग करते ! भीतर भी रहते और बाहर भी रहते। जैसे मकड़ा अपने मुख के महीन सूत से जाला बुनता है, उसी प्रकार आप तब भी करते रहे और अब भी करते रहते हैं। उसे आप छोड़ेंगे नहीं ! । २६००

तुन्ब विळैयाट् टिदुवेयु मुन्नैत् तुन्बन् दॊडर्बिन्मै
इन्ब विळैयाट् टामॆन्निनु मऱिया देमुक् किडरुऱ्ऱाल्
अन्बु विळैयु मरुळ्विळैयु मऱिवु विळैयु मवैयॆल्लाम्
मुन्बु पिन्बु नडुविल्लाय् मुडित्ता लन्ऱि मुडियावे 2601

मुन्पु पिन्पु नटु इल्लाय्–आद्यन्तमध्य-हीन; उन्नै–आपको; तुन्पम् तॊटर्पु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्मै–दुःख नहीं लगता इसलिए; इतु तुन्प विळैयाट्टाम्–यह दुःख का खेल भी; इन्प विळैयाट्टाम्–सुख का खेल ही है; ऍन्निनुम्–तो भी; अरियातेमुक्कु–जो नहीं जानते उन हमारे लिए; इटर् उऱ्ऱाल्–आप पर संकट आये तो; अन्पु विळैयुम्–प्रेम होगा; अरुळ् विळैयुम्–कृपा होगी; अऱिवु विळैयुम्–ज्ञान होगा; अवै ऍल्लाम्–वे सभी; मुटित्ताल् अऱ्ऱि–आप न हटाएँ तो; मुटियावे–न हटेंगे। २६०१

आदि-मध्य-अन्त-रहित ! आपको दुःख छू नहीं सकता। अतः यह दुःख की लीला रचते हैं, क्योंकि यह सुख की लीला है ! तो भी हम अज्ञ हैं। अतः प्रेम, करुणा, दया आदि लेकर हम दुःखी होते हैं। आप उसका अंत करें तभी दुःख का अन्त हो। २६०१

वरुवाय्पोल वारादाय् वन्दा यॆन्ऱु मनङ् गळिप्प
वॆरुवा दिरुन्दो नीयिडैये तुन्बम् विळैक्क मॆलिहिन्ऱोम्
करुवा यळिक्कुम् कळैकण्णे नीये यिदनैक् कळैयायेल्
तिरुवाळ् मार्ब निन्माये यॆम्माऱ् ऱीर्क्कत् तीरुमो 2602

वरुवाय् पोल–गोचर होनेवाले के समान; वाराताय्–पर न होनेवाले; वन्ताय्–अवतरित हुए (दुष्ट-निग्रह शिष्ट-परिपालनार्थ); ऍन्ऱु–सोचकर; मनम् कळिप्प–मन में आनन्द के साथ; वॆरुवातु इरुन्तोम्–निडर रहे; तुन्पम् विळैक्क–दुःख होने पर; मॆलिकिन्ऱोम्–क्षीण होते हैं; करुवाय्–गर्भवासी होकर; अळिक्कुम्–हमारे रक्षक बने; कळैकण्णे–हमारे आश्रय; नीये–आप ही; इतनै कळैयायेल्–इस संकट को दूर न करें तो; तिरुवाळ् मार्प–श्रीनिवासवक्ष; निन् मायै–आपकी माया; ऍम्माल् तीर्क्क–हमसे हटाए; तीरुमो–दूर होगी क्या। २६०२

हे गोचर-अगोचर ! हमारे वास्ते आपने अवतार लिया है —उसी विचार में हम भयरहित हो खुश रहे। आप दुःख में पड़ते हैं तो हम निर्बल हो जाते हैं। गर्भवास करके हमारा संकट हरनेवाले हे हमारे आश्रय ! हे श्रीवक्ष ! अगर आप यह दुःख दूर नहीं करेंगे तो हमसे निवारे निवारण हो सकता है क्या ? । २६०२

अम्ब रीडऱ् करुळियदु मयनार् महनुक् कळित्तदुवुम्
ऍम्बि रानै यॆमक्किन्ऱु पयन्दा यॆन्ऱे येमुऱ्वोम्
वॆम्बु तुयर नीयुळक्क वॆळिका णादु मॆलिहिन्ऱोम्
तम्बि तुणैवा नीयिदनैत् तविर्त्तॆम् मुणर्वैत् तारायो 2603

ऍम्पिरानै–हमारे प्रभु; अम्परीटऱ्कु अरुळियतुम्–अम्बरीष पर कृपा जो की; अयनार् मकनुक्कु–अजमुत रुद्र को; अरुळियतुम्–जो कृपा-दान किया वह; ऍमक्कु–हमें; इन्ऱु–आज; पयन्ताय्–दिया; ऍन्ऱे–उसी विचार से; एमुऱ्वोम्–आपके रक्षण की प्रतीक्षा में सुरक्षित हैं; वॆम्पु तुयरम्–सन्ताप देनेवाले दुःख से; नी उळक्क–आप संकट उठावें; वॆळि काणातु–छूटने का उपाय न जानकर; मॆलिकिन्ऱोम्–क्षीण हो रहे हैं; तम्पि तुणैवा–लघु सहोदर के साथी; इतनै तविर्त्तु–यह दुःख दूर करके; ऍम् उणर्वै–हमें बुद्धि को; तारायो–नहीं देंगे क्या। २६०३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हमारे प्रभु ! "आपने जैसे अंबरीष पर कृपा की, ब्रह्मा-पुत्र रुद्र का उपकार किया, वैसे ही हम पर दया दिखाएँगे" —यही सोचकर हम आपके रक्षण की आशा लिये रहते हैं। पर आपको दुःख में मग्न देखकर कोई उपाय न देखकर हाथ मले रह जाते हैं। सहोदर के उपकारी साथी! यह संकट दूर कीजिए। [राजा अंबरीष एकादशी के दिन अनशन व्रत रखते थे और द्वादशी के दिन भोजन करके उसका पारायण करने का नियम पालते थे। एक द्वादशी के सवेरे दुर्वासा आये और स्नान आदि करके लौटने की बात कहकर जलाशय में चले गये। उनको समय पर आता न देख राजा ने भगवान का चरणामृत भोग कर व्रतभंग होने से अपने को बचा लिया। तो भी भोजन नहीं किया। फिर भी दुर्वासा ने गुस्सा करके अपने बल से एक भूत को पैदा करके राजा पर भेजा। तब श्रीविष्णु का चक्र आकर मुनि को भगाने लगा। दुर्वासा आखिर श्रीविष्णु की शरण आये तभी जाकर वे बच सके। रुद्र के बचने की कहानी भस्मासुर-वध की कहानी है। भस्मासुर ने शिवजी से यह वर प्राप्त कर लिया कि वह जिस किसी के भी सिर पर हाथ रखे तो वह भस्म हो जाय। उसने शिवजी के ही सिर पर हाथ रखकर वर की शक्ति की परीक्षा लेना चाहा। शिव डर से भागे। श्रीविष्णु मोहनी के रूप में असुर के सामने आये और काम-मुग्ध उससे उसके सिर पर स्वयं हाथ रखवा दिया। वह भस्म हो गया। शिवजी बचे। पर उनका मोहनी पर प्रेम हो गया। उस प्रेम के फल-स्वरूप जो पुत्र पैदा हुआ वही दक्षिण में शास्ता या हरिहरपुत्र या अय्यनार् के रूप में पूजा जाता है। 'शबरीमलै' (दक्षिण में एक पर्वत) पर जो शास्ता का मन्दिर है वह अतिविख्यात है और लाखों लोग हर साल वहाँ निश्चित दिन (जैसे मकरसंक्रांति के दिन) आकर दर्शन कर जीवन सार्थक बना लेते हैं। मन्दिर में जाने के पहले कठिन उपवास और अन्य व्रतों का पालन करना पड़ता है। रास्ता पैदल ही तय करना पड़ता है और जंगली रास्ता बड़ा भयानक होता है। भक्ति की महिमा है लोग सकुशल यात्रा तथा दर्शन सम्पन्न कर लेते हैं।] । २६०३

अॅऩ्ब पलवु मॅडुत्तियम्बि यिमैया दोरुमिड रुऴन्दार्
अऩ्बु मिहुदि यालैय ऩावि युऴ्ळे यडङ्गिऩान्
तुऩ्ब मऩिदर् करुममे पुणर मुऩ्बु तुणिन्दमैयार्
पुऩ्ग णिरुदर् पॅरुन्दूदर् पोऩा ररक्क ऩिडम्बुक्कार् 2604

अॅऩ्प–ऐसे; पलवुम्–अनेक; अॅटुत्तु इयम्पि–ले कहकर; इमैयोरुम्–देव भी; इटर् उऴऩ्तार्–दुःखपीड़ित हुए; तुऩ्पम् मऩितर्–दुःखपात्र मानव का; तॊऴिले–चरित्र ही; पुणर–मिला रहे ऐसा; मुऩ्पु–(अवतार लेने से) पहले ही; तुणिन्तमैयाल्–संकल्प कर लेने से; अऩ्पु मिकुतियाल्–वात्सल्याधिक्य से; ऐयऩ्–प्रभु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ने; आवि उळ्ळे अटङ्कितान्–प्राण अन्दर खींच लिये; पुन् कण् निरुतर्–क्षुद्र-स्वभाव राक्षस के; पॆरु तूतर्–बड़े दूत; पोतार्–गये; अरक्कनिटम् पुक्कार्–राक्षस (रावण) के पास पहुँचे। २६०४

देवों ने दुःखपीड़ित होकर ऐसी बहुत सी बातें कहीं। श्रीराम तो जान-बूझकर ही दुःखालय मानव का अवतार लिया था। इसलिए वात्सल्य-अतिरेक से उन्होंने अपने प्राणों को अन्दर खींच लिया था। यह देखकर क्षुद्र राक्षसकुल के बड़े दूत रावण के पास गये। २६०४

अॆन्वन् ददुनी रॆन्ऱरक्करक् किऱैव नियम्ब वॆरिशॆरुविल्
नित्मैन् दन्ऱन् नॆडुञ्जरत्तार् रुणैव रॆल्ला निलञ्जेरप्
पित्वन् दवनु मुयिरिऴन्द पिऴैयै नोक्किप् पॆरुन्दुयराल्
मुन्वन् दवनु मुडिन्दानुन् पहैपोय् मुडिन्द दॆन्नमॊऴिन्दार् 2605

अरक्करक्कु इऱैवन्–राक्षसराज के; नीर् वन्ततु–तुम्हारा आना; अॆन्–क्या (लेकर); अॆन्ऱु इयम्प–ऐसा पूछने पर; अॆरि चॆरुविल्–(परस्पर) टकराने के युद्ध में; नित् मैन्तन् तन्–तुम्हारे पुत्र के; मॆटु चरत्तास्–बड़े बाण से; तुणैवर् अॆल्लाम् निलम् चेर–मित्रों के धराशायी होने पर; पित् वन्तवनुम्–और अनुज के भी; उयिर् इऴन्त–प्राण खोने का; पिऴैयै नोक्कि–बुरा कार्य देख; पॆरु तुयराल्–गम्भीर दुःख से; मुन् वन्तवनुम्–अग्रज (श्रीराम) भी; मुडिन्तान्–अन्त हो गया; उन् पकै–आपका शत्रुत्व; पोय् मुटिन्ततु–आखिर चलकर शून्य हो गया; अॆन्न मॊऴिन्तार्–ऐसा कहा। २६०५

राक्षसराज ने उनके आने का कारण पूछा तो वे बोले, "आपसी आक्रमण के युद्ध में आपके पुत्र इन्द्रजित् के बड़े शरों के लगने से राम के सभी मित्र भूशायी हो गये। राम का अनुज भी प्राणहीन हो गया। यह आफ़त देखकर उसके अग्रज ने भी दुःख से अभिभूत होकर प्राण छोड़ दिये। अब आपके शत्रु का अन्त हो गया।" । २६०५

22. पिराट्टि कळङ्गाण् पडलम् (देवी-युद्धस्थल-दर्शन पटल)

पॊय्यार् तूद रॆन्बदनार् पॊङ्गि यॆऴुन्द वुवहैयिनान्
मॆय्यार् निदियम् पॆरुवॆरुक्कै वॆरुक्क वीशि विळैन्दपडि
कैयार् वरैमेन् मुरशेऱ्ऱिच् चाऱ्ऱि नहरङ् गळिशिऱप्प
नॆय्या राडल् कॊळ्हॆन्ऱु निहऴ्त्तु हॆन्ऱा नॆरियिल्लान् 2606

नॆरि इल्लान्–सन्मार्ग-रहित रावण; तूतर् पॊय्यार्–दूत असत्य नहीं कहेंगे, ऐसा; अॆन्पतनार्–होने से; पॊङ्कि अॆऴुन्त–जो उमंग उठा उस; उवकैयिनान्–आनन्द के साथ; मॆय् आर्–(शंख, पद्म आदि रूप में) एकत्रित; पॆरु वॆरुक्कै नितियम्–बहुत बड़ी निधि को; वॆरुक्क–(दान लेनेवाले) ऊब जाएँ इतना; वीचि–लुटाकर; विळैन्त पटि–जैसा (युद्ध का हाल) हुआ वैसा; कै आर्–सूंड़-सहित;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वरै मेन्–पर्वत (गज) पर; मुरचु एऱ्ऱि–नगाड़ा चढ़ाकर; चाऱ्ऱि–घोषणा करके; नकरम्–नगर; कळि चिऱप्प–आनन्द में पगकर; नॆय्यार् आटल्–घी मलकर स्नान; कॊळ्क–करे; ऎन्ऱु–ऐसा; निकळ्त्तुक–मुनादी करा दो; ऎन्ऱान्–आज्ञा सुनायी। २६०६

कुमार्गी रावण का विश्वास था कि दूत झूठ नहीं बोले। उसका आनन्द उमग आया। उसने बहुत बड़ी निधि दान में लुटाई कि स्वयं दान लेनेवाले अघा गये। फिर उसने आज्ञा दिलायी कि हाथी पर नगाड़ा चढ़ाओ और युद्ध में हुई बात की घोषणा कर दो। साथ-साथ यह भी मुनादी पिटवा दो कि लंकानगर-वासी घी मलकर स्नान करके आनंद मनाएँ और बढ़ा लें। २६०६

अन्द नॆऱियै यवर्शॆय्य वरक्कन् मरुत्तन् ऱनैक्कूवि
मुन्द नीपो यरक्करुडल् मुळुदुङ् गडलिल् मुडुक्किडुनिन्
शिन्दै यॊळियप् पिऱरऱियिऱ् चिरमुम् वरमुञ् जिन्दुवॆन्नॆन्
ऱुन्द ववन्बो यरक्करुडल् मुळुदुङ् गडलि नुळ्ळिट्टान् 2607

अन्त नॆऱियै–वह काम; अवर् चॆय्य–उन्होंने (भृत्यों ने) किया तब; अरक्कन्–रावण; मरुत्तन् तन्नै कूवि–मरुत को बुलाकर; मुन्त नी पोय्–पहले तुम जाकर; अरक्कर् उटल् मुळुतुम्–सारे राक्षसों के शरीरों को; कटलिल् मुटुक्किटु–समुद्र में डाल दो; निन् चिन्तै ऒळिय–तुम्हारे अपने मन के सिवा; पिऱर् अऱियिल्–दूसरे जान लें तो; चिरमुम्–तुम्हारा सिर और; वरमुम्–वर (सुविधाएँ); चिन्तुवॆन्–हर लूँगा; ऎन्ऱु–कहकर; उन्त–भेज दिया तो; अवन्–उसने; पोय्–जाकर; अरक्कर् उटल् मुळुतुम्–सारे राक्षसों के शरीरों को; कटलिन् उळ्–समुद्र के अन्दर; इट्टान्–डाल दिया। २६०७

मुनादी पीटनेवाले वह काम करने चले गये। रावण ने मरुत को बुला भेजा और उससे कहा कि तुरंत जाओ और सारे राक्षसों के शरीरों को समुद्र में डुबो दो। यह बात केवल तुम्हारा मन जाने; और कोई जान पाया तो समझ लो कि मैं तुम्हारा सिर और वर (दी गयी सुविधाएँ) हरण कर लूँगा। मरुत ने वैसे ही सारी राक्षस-लाशों को समुद्र में डाल दिया। २६०७

तॆय्व विमानत् तिडैयेऱ्ऱि मन्नित्तरक् कुऱ्ऱ शॆयलॆल्लान्
तैयल् काणक् काट्टुमिन्गळ् कण्डा लन्ऱित् तन्नुळ्ळत्
तैय नीङ्गा ळॆन्ऱुरैक्क वरक्कर् महळि रिरैत्तोण्डि
उय्यु मुणर्वु नीत्ताळै नॆडुम्बोर्क् कळत्तिन् मिशैयुय्त्तार् 2608

तॆय्व विमानत्तु इटै एऱ्ऱि–दिव्य (पुष्पक) यान पर चढ़ाकर; मन्नित्तरक्कु–नरों पर; उऱ्ऱ चॆयल् ऎल्लाम्–जो बीता वह कृत्य सब; तैयल् काण–स्त्री (देवी) देख ले; काट्टु मिन्कळ्–दिखा दो; कण्टाल् अन्ऱि–देखे बिना; तन् उळ्ळत्तु ऐयम्–अपने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन का संदेह; नीङ्काळ्–दूर नहीं करेगी; ऍन्ऱु उरैक्क–ऐसा करने पर; अरक्कर् मकळिर्–राक्षस-स्त्रियाँ; इरैत्तु ईण्टि–हो-हल्ला मचाती हुई जमा होकर; उय्युम्–हम बचीं; उणर्वु नीत्ताळै–यह सुध जो खोकर रहती है; नॅटु पोर्क्कळत्तिन् मिचै–विशाल युद्धमैदान में; उय्त्तार्–पहुँचाया। २६०८

(फिर रावण ने सीता के पास जो पहरे पर बैठी थीं, उनको आज्ञा सुनायी—) दिव्य पुष्पक यान पर सीता को बैठाकर युद्धक्षेत्र में ले जाओ और उसे दिखा दो कि नरों का क्या हाल हुआ है ? वह अपनी आँखों नहीं देखे तो अपना संशय दूर नहीं कर सकेगी। यह सुनकर राक्षस-नारियाँ शोर मचाती हुई मिल आयीं और बचने की आशा छोड़ जो बैठी थीं उन सीता जी को विशाल युद्धभूमि पर ले गयीं। २६०८

कण्डाळ् कण्णार् कणवनुरु वन्ऱि यॊन्ऱुङ् गाणादाळ्
उण्डाळ् विडत्तै यॆनवुडलु मुणर्वु मुयिर्प्पु मुडनोय्न्दाळ्
तण्डा मरैप्पू नॆरुप्पुऱ्ऱ तन्मै युऱ्ऱा डरियादाळ्
पॆण्डा नुऱ्ऱ बॆरुम्बीळै युलहुक् कॆल्लाम् बॆरिदन्ऱो 2609

कणवन् उरु अन्ऱि–पति के रूप के सिवा; ऒन्ऱुम् काणाळ्–और कोई न देखनेवाली सीतादेवी ने; कण्णाळ्–अपनी आँखों से; कण्टाळ्–देखा (श्रीराम को); तरियाताळ्–सह नहीं सकीं; विटत्तै उण्टाळ् ऎन्ऱ–विष खाया हो ऐसा; उटलुम् उणर्वुम्–शरीर और मन तथा; उयिर्प्पुम्–श्वास को; उटन् ओय्न्ताळ्–एक साथ शिथिल पाकर; तण् तामरै पू–शीतल कमलपुष्प; नॆरुप्पु उऱ्ऱ तन्मै–आग से ग्रस्त हो ऐसी स्थिति; उऱ्ऱाळ्–पा गयीं; पॆण् उऱ्ऱ पॆरु पीळै–एक रमणी की वेदना; उलकुक्कु ऎल्लाम्–सारे लोक की आँखों में; पॆरितु अन्ऱो–बहुत बड़ा है न। २६०९

सीताजी श्रीराम के रूप के सिवा किसी भी रूप का ध्यान नहीं करती थीं। उन्होंने जब श्रीराम को बेहोशी की स्थिति में देखा तो वे सह नहीं सकीं। विष खा चुकी हों ऐसे उनकी सुध-बुध और श्वास-शक्ति सब चली गयीं। अग्नितप्त कमलपुष्प की-सी स्थिति में पड़ गयीं। स्त्री का दुःख ! सारी दुनिया को वह बहुत बड़ा (असह्य) लगेगा न ? । २६०९

मङ्गै यळुदाळ् वानाट्टु मयिल्ह ळळुदार् मळविडैयोन्
पङ्गि नुऱैयुङ् गुयिलळुदाळ् पदुमत् तिरुन्द मादळुदाळ्
गङ्गै यळुदा णामडन्दै यळुदाळ् कमलत् तडङ्गण्णन्
तङ्गै यळुदा ळिरङ्गाद वरक्कि मारुन् दळर्न्दळुदार् 2610

मङ्कै अळुताळ्–देवी रोयीं; वान् नाट्टु–आकाशलोक की; मयिलकळ्–मयूरनिभ स्त्रियाँ; अळुतार्–रोयीं; मळ विटैयोन्–तरुण-वृषभारूढ़ शिवजी के; पङ्किन् उऱैयुम्–(बायें) अंग में रहनेवाली; कुयिल् अळुताळ्–कोकिला (-सी भाषिणी) रोयीं; पदुमत्तु इरुन्त मातु–पद्मासनस्था (लक्ष्मी) देवी; अळुताळ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रोयीं; कङ्कै अऴुताळ्–गंगामाता रोयीं; नामटन्तै–वाणीदेवी; अऴुताळ्–रोयीं; कमलम् तट कण्णत्–कमल-विशालाक्ष (श्रीविष्णु) की; तङ्कै अऴुताळ्–लघु सहोदरा (देवी दुर्गा) रोयीं; इरङ्कात अरक्कि मारुम्–निर्दय राक्षस-स्त्रियाँ भी; तळर्न्तु अऴुतार्–शिथिल पड़कर रोयीं। २६१०

सीताजी रोयीं तो आकाश-देश की कलापी-सी रमणियाँ रोयीं। तरुण ऋषभ पर सवार शिव के आधे अंग की रहनेवाली कोकिला-सी देवी पार्वती रोयीं। पद्मासनस्था श्रीदेवी रोयीं। भागीरथी गंगा माता रोयीं। वाग्देवी सरस्वती रोयीं। कमलपत्रविशाला श्रीविष्णु की भगिनी देवी दुर्गा रोयीं। निर्मम राक्षसियाँ शिथिल पड़कर रोयीं। २६१०

पॊन्ऱाळ् कुऴैया डत्तैयीन्ऱ पूमा मडन्दै पुरिन्दऴुदाळ्
कुन्ऱा मऱैयुन् दरुममुमॆय् कुऴैन्दु कुऴैन्दु तळर्न्दऴुद
पिन्ऱा दुडऱुम् बॆरुम्बाव मऴुद पिन्नॆन् बिऱर्शॆय्है
निन्ऱार् निन्ऱ पडियऴुदार् निनैप्पु मुयिर्प्पु नीत्तिट्टाळ् 2611

पॊन् ताळ्–स्वर्णमय; कुऴैयाळ् तत्तै–कुंडलधारिणी को; ईन्ऱ–जिसने जन्म दिया था वह; पू मा मटन्तै–भूदेवी; पुरिन्तु अऴुताळ्–समझकर रोयीं; कुन्ऱा मऱैयुम्–अक्षय वेद; तरुममुम्–और धर्मदेवता; मॆय् कुऴैन्तु कुऴैन्तु–शरीर लचका-लचकाकर; तळर्न्तु अऴुत–शिथिल पड़कर रोये; पिन्ऱातु–विना पिछड़े; उटऱुम्–दुःख देनेवाला; पॆरुम् पावम् अऴुत–बड़ा पाप भी रोया; पिऱर् चॆय्कै–दूसरों का काम; पित् ऍन्–फिर क्या कहा जाय; निन्ऱार्–जो जहाँ थे वे वहीं; निन्ऱपटि–खड़े-खड़े; अऴुतार्–रोये; निनैप्पुम् उयिर्प्पुम्–स्मरण और श्वास लेना; नीत्तिट्टाळ्–देवी ने छोड़ा। २६११

स्वर्णकुण्डलधारिणी सीताजी की जननी, भूदेवी सहानुभूति करके रोयीं। अक्षय वेद और धर्मदेवता जर्जर हो गये। अचूक रीति से संकट देनेवाला पाप भी रोया, तो अन्यों की बात क्या कही जाए? जो जहाँ रहे वे वहीं खड़े-खड़े रोने लगे। तब देवी की सुध-बुध तथा श्वास भी खो गया। २६११

निनैप्पु मुयिर्प्पु नीत्ताळै नीराऱ् ऱॆळित्तु नॆडुम्बॊऴुदिन्
इनत्ति नरक्कर् मडवार्ह ळॆडुत्ता रुयिर्वन् देङ्गिनाळ्
कनत्ति निऱत्तान् ऱनैप्पॆयर्त्तुङ् गण्डाळ् कयलैक् कमलत्तार्
चिनत्ति नलैप्पा ळॆनक्कण्णैच् चिदैयक् कैयान् मोदिनाळ् 2612

अरक्कर् इनत्तिन्–राक्षसकुल की; मटवार्कळ्–स्त्रियों ने; निनैप्पुम् उयिर्प्पुम् नीत्ताळै–प्रज्ञा और श्वास जो त्याग चुकीं उन्हें; नीराल् तॆळित्तु–जल छिड़ककर; ऍटुत्तार्–सँभाल लिया; नॆटुम् पॊऴुतिन्–लम्बी देर के बाद; उयिर् वन्तु–होश में आकर; एङ्किनाळ्–दुखने लगीं; कनत्तिन् निऱत्तान् तत्तै–मेघश्याम को; पॆयर्त्तुम् कण्टाळ्–फिर से देखा; चिनत्तिन्–कोप से; कयलै–कयल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मछली को; कमलत्ताल्–कमल-पुष्प से; अलैप्पाळ् अँत–पीटती जैसे; कण्णै–अपनी आँखों को; चितैय–बेहाल करते हुए; कैयान्–हाथों से; मोतिताळ्–पीटा। २६१२

राक्षसकुल की उन स्त्रियों ने मूर्च्छित सीतादेवी पर जल छिड़का। अपने हाथों पर उठाया। बहुत देर के बाद सीताजी जाग पड़ीं। फिर मेघश्याम को देखकर उन्होंने रुष्ट होकर कमल-पुष्प से कयल मछली को मारती-सी अपनी आँखों को बेहाल करते हुए अपने हाथों से पीट लिया। २६१२

अडित्ताण् मुलैमेल् वयिऱलैत्ता ळळुदा डॉळुदा ळऩल्वीळ्न्द
कॉडित्ता नॅन्न मॅय्शुरुण्डाळ् कॉदित्ताळ् पदैत्ताळ् कुलैवुऱ्ऱाळ्
तुडित्ताण् मिन्बो लुयिर्हरप्पच् चोर्न्दाळ् शुळऩ्ऱा डुळ्ळिऩाळ्
कुडित्ता डुयरै युयिरोडुङ् गुळैत्ता ळुळैत्ताळ् कुयिलऩ्ऩाळ् 2613

कुयिल् अऩ्ऩाळ्–कोयल-सी देवी ने; मुलै मेल् अटित्ताळ्–(स्तनों पर) छाती पीट ली; वयिऱु अलैत्ताळ्–पेट पीटा; अळुताळ्–रोयीं; तॉळुताळ्–नमस्कार किया; अऩल् वीळ्न्त–आग में पड़ी; कॉटितान् अँऩ्ऩ–लता-सी ही; मॅय् चुरुण्टाळ्–शुष्क शरीर हो गयीं; कॉतित्ताळ्–खौल उठीं; पतैत्ताळ्–बेचैन हुईं; कुलैवु उऱ्ऱाळ्–विकृत हुईं; मिन् पोल्–बिजली के समान; तुटित्ताळ्–छटपटायीं; उयिर् करप्प–श्वास छिप गये; चोर्न्ताळ्–निर्बल हुईं; चुळऩ्ऱाळ्–मन भ्रान्त हो गया; तुळ्ळिऩाळ्–उछल पड़ीं; तुयरै कुटित्ताळ्–दुःख पी लिया; उयिरोटुम् कूट्टि कुळैत्ताळ्–प्राणों से (उस दुःख को) घोला; उळैत्ताळ्–अत्यन्त वेदना से ग्रस्त रहीं। २६१३

कोकिला-सी सीताजी ने अपनी छाती पीट ली। पेट पीट लिया। रोयीं। नमस्कार किया। आग में पड़ी लता के समान मुरझायीं। तप्त हुईं। बेचैन हुईं। जर्जर हुईं। मछली के समान छटपटायीं। श्वास रुक-सा गया। लचक गयीं। उनका मन भ्रमित हुआ। वे उछलीं। उन्होंने दुःख पीकर और प्राणों से मिलाकर घोल दिया। इस भाँति वे बहुत दुःखी हुईं। २६१३

विळुन्दाळ् पुरण्डा ळुडऩ्मुळुदुम् वियर्त्ता ळुयिर्त्ताळ् वॅदुम्बिऩाळ्
ऍळुन्दा ळिरुन्दाण् मलर्क्करत्तै नॅरित्ताळ् शिरित्ता ळेङ्गिऩाळ्
कॉळुन्दा वॅऩ्ऱा ळयोत्तियर्दङ् गोवे यॅऩ्ऱा ळॅव्वुलहुन्
दॉळुन्दा ळरशे योवॅन्ऱाळ् शोर्न्दा ळरऱ्ऱत् तॉडङ्गिऩाळ् 2614

विळुन्ताळ्–गिरीं; पुरण्टाळ्–लोटीं; उटल् मुळुतुम्–सारे शरीर में; वियर्त्ताळ्–स्वेदित हुईं; उयिर्त्ताळ्–दीर्घ निःश्वास छोड़े; वॅदुम्पिताळ्–तप्तमन हुईं; ऍळुन्तु इरुन्ताळ्–उठ बैठीं; मलर् करत्तै–कमल-हस्त को; नॅरित्ताळ्–चटकाया; चिरित्ताळ्–हँसीं; एङ्किताळ्–तरसीं; कॉळुन्ता–पति; ऍऩ्ऱाळ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहकर बुलाया; अयोत्तियर् तम्-अयोध्यावासियों के; कोवे-राजा; ऍन्ऱाळ्-कहा; ऍव् उलकुम् तॊऴुम्-सर्वलोकवंद्य; ताळ् अरचेयो-चरणों वाले राजा; ऍन्ऱाळ्-बुलाया; अरऱ्ऱ तॊटङ्किताळ्-विलाप करने लगीं। २६१४

देवी विमान में ही गिर गयीं। शरीर भर में स्वेदयुक्त हुईं। लम्बी आहें भरीं। तप्तचित्त हुईं। उठ बैठीं। कमलहस्त चटकाया। हँसीं। तरसीं। 'हे मेरे पति' कहकर बुलाया। "अयोध्याधिपति ! सर्वलोकवंद्य-चरण प्रभु !" आदि संबोधन किये। जर्जर हुईं। फिर वे विलाप करने लगीं। २६१४

उऱमे वियहा दलुनक् कुडैयार्, पुऱमे दुमिला रॊडुपू णहिलाय्
मऱमे पुरिवार् वशमा यिऩैयो, अऱमे कॊडिया यिदुवो वरुडान् 2615

अऱमे-धर्मदेवता; उऩक्कु-तुम्हारे प्रति; उऱ मेविय-खूब लगे; कातल्-प्रेम से; उटैयार्-युक्त; पुऱम्-अन्य; एतुम् इलारॊटु-किसी से कोई सम्बन्ध न रखनेवाले (मेरे पति) से; पूणकिलाय्-मित्रता न रखकर; मऱमे-पाप ही; पुरिवार्-करनेवाले; वचम् आयिऩैयो-वश में हो चुके हो क्या; कॊटियोय्-निर्मम; अरुळ् तात् इतुवो-क्या यही कृपा है। २६१५

हे धर्मदेवता! तुम पर मेरे पति अपार प्रेम रखते थे और धर्मेतर बातों से उनका लगाव नहीं था। उनसे तुमने मित्रता नहीं रखी। क्या तुम पापियों के वश में आ गये ? हे क्रूर ! यही तुम्हारी करुणा है ? । २६१५

मुदिया रुणर्वेद मॊऴिन् दवलार्, कदिये तुमिलार् दुयर्का णुदियो
मदियेऩ् मदिये नुऩैवाय् मैयिला, विदिये कॊडियाय् विळैया डुदियो 2616

वाय्मै इला-नेकी बिना रहनेवाले; वितिये-विधिदेवता; मुतियार्-ज्ञानवृद्धों के; उणर् वेतम्-ज्ञात वेदों के; मॊऴिन्त वलाल्-कहे प्रकार के सिवा; कति एतुम् इलार्-अन्य गति जिनकी नहीं; तुयर् काणुतियो-उनका दुःख देखना चाहते हो क्या; उऩै मतियेऩ्-तुमको कुछ गिन नहीं सकूँगी; कॊटियाय्-क्रूर; विळैयाडुतियो-खेल है तुम्हारा क्या। २६१६

आर्जव-हीन विधि ! ज्ञानवृद्धों द्वारा ज्ञेय वेदोक्त मार्ग को छोड़ हम इतर मार्ग पर जानेवाले नहीं हैं। ऐसे हमारा दुःख देखने की इच्छा करोगे क्या तुम ! तुमको मैं कुछ नहीं मानती। हे क्रूर ! तुम खिलवाड़ करते हो क्या ? । २६१६

कॊडिये निवैकाण् गिलऩेऩ् नुयिर्होळ्, मुडिया नमऩे मुऱैयो मुऱैयो
विडिया विरुळ्वा यॆऩैवी शिऩैये, अडिये नुयिरे यरुणा यहऩे 2617

कॊटियेऩ्-मैं क्रूर हूँ; इवै-यह; काण्किलेऩ्-देख सह नहीं सकती; ऍऩ् उयिर् कोळ्-मेरे प्राण ले; मुटियात नमऩे-मेरा अन्त न करनेवाले, हे यम; मुऱैयो-(उनका अन्त करना) क्रम है क्या; मुऱैयो-क्रम है क्या; अटियेऩ् उयिरे-मेरे प्राण; अरुळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नायकऩे–दयामय नाथ; विटिया इरुळ्वाय्–अमिट अन्धकार में; ऍऩै वीचिऩैयो–मुझे डाल दिया क्या । २६१७

मैं बड़ी क्रूर हूँ । मैं यह दृश्य सह नहीं सकती । मेरे प्राण न ले सकनेवाले यम ! तुम्हारा यह (उनके प्राण-हरण का) काम क्रमसंगत है क्या ? क्रमसंगत है ? हे मेरे प्राण ! करुणानाथ ! क्या मुझे अमिट अन्धकार में आपने फेंक दिया है ? । २६१७

ऍण्णा वुयिरो ड्मिरुन् ददुनिऩ्, पुण्णा हियमे ऩिपॊरुन् दिडवो
मण्णो रुयिरे यिमैयोर् वलिये, कण्णे यमुदे करुणा हरऩे 2618

मण्णोर् उयिरे–पृथ्वीवासियों के प्राण; इमैयोर् वलिये–देवों के बल; कण्णे–मेरी आँख; अमुते–अमृत; करुणा करऩे–करुणाकर; ऍण्णा–(दुःखों की) परवाह न करके; उयिरोटुम् इरुन्ततु–सप्राण रही; निऩ्–आपके; पुण्णाकिय मेऩि–व्रणसहित शरीर से; पॊरुन्तिटवो–लगने के लिए क्या । २६१८

पृथ्वीवासियों के प्राण (हे राम) ! देवों के बल ! मेरे नेत्र ! अमृत ! करुणाकर ! अपने दुःखों की परवाह न करके मेरा अब तक प्राणधारण क्या आपके व्रण-सहित शरीर को देखने के अर्थ था ? । २६१८

मेविक् कऩऩ्मुऩ् मिदिलैत् तलैयॆऩ्, पाविक् कैपिडित् तदुपण् णवनिऩ्
आविक् कॊरुकोळ् वरवो वलर्वाळ्, देविक् कमुदे मऱैयिऩ् ऱॆळिवे 2619

अलर् वाळ् तेविक्कु–कमलनिवासिनी देवी के; अमुते–अमृत; मऱैयिऩ् ऱॆळिवे–वेदों के निर्धारित अर्थ; पण्णव–ईश्वर; मितिलै तलै–मिथिला में; कऩल् मुऩ् मेवि–अग्नि-सम्मुख विराजकर; पावि–पापिनी; ऍऩ् कै पिटित्ततु–मेरा पाणिग्रहण करना; निऩ् आविक्कु–आपके प्राणों पर; ऒरु कोळ् वरवो–बन आये इस वास्ते क्या । २६१९

हे कमला के अमृत ! वेदों के साफ़ अर्थ ! ईश्वर ! मिथिला में आपका मेरा पाणिग्रहण करना क्या आपके प्राणों पर बन आये, इस वास्ते था ? । २६१९

उय्या ळुयर्हो शलैतऩ् ऩुयिरो, डैया विळैयो रुयिर्वाळ् हिलराल्
मॆय्या विऩैयॆण् णिविडुत् तकॊडुङ्, गैहे शिहरुत् तिदुवो कळिऱे 2620

कळिऱे–कलभ (निभ); उयर् कोचलै–मानार्ह कौसल्या; तऩ् उयिरोटु उय्याळ्–अपने प्राण ले जीवित नहीं रहेंगी; मॆय्या–सत्यसन्ध; ऐया–प्रभु; इळैयोर् उयिर् वाळ्किलर्–छोटे भी जीवित नहीं रहेंगे; विऩै ऍण्णि–(संभाव्य) हानि का विचार करके; विटुत्त–(जिन्होंने वन) भेजा; कॊटु कैकेचि–उन क्रूर कैकेयी का; करुत्तु–भाव; इतुवो–यही था क्या । २६२०

हे गज-सम ! मानार्ह कौसल्यादेवी जीवित नहीं रहेंगी ! हे सत्यसंध !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आपसे छोटे लोग भी जीवन धारण नहीं करेंगे। बुराई सोचकर क्रूर कैकेयी ने जो हमें वन भिजवाया, उनका भाव यही था क्या ? । २६२०

तहैवा णहर्नी तविर्वा यॅऩवुम्, वहैया दुतॉडर्न् दॉरुमान् मुदलाप्
पुहैया डियका डुपुहुन् दुडऩे, पहैया डियवा परिवे दुमिलेन् 2621

तकै–सुसंपन्न; वाळ् नकर्–प्रकाशमय नगर (अयोध्या) में; नी–तुम; तविर्वाय्–ठहरो; ऍऩवुम्–ऐसा (मुझसे आपके) कहने पर; नाऩ् वकैयातु–मैं उसमें न आकर; तॉटर्न्तु–आपका पीछा करके; पुकै आटिय काटु–धुएँ जिसमें उठते थे, उस जंगल में; पुकुन्तु–पहुँची, तब; उटऩे–तुरन्त; ऑरु माऩ् मुतल–(स्वर्ण-) मृग से लेकर; पकै–शत्रुओं को; आटिय नेर्न्त–मारने की स्थिति जो आयी; आ–वह प्रकार भी कैसा; परिवु–प्रेम; एतुम् इलेन्–कुछ भी नहीं मुझमें। २६२१

"सर्वसमृद्ध अयोध्या में ही रह जाओ" —यह आपने मुझसे कहा। मैं उसको अनसुना करके आपके पीछे आग और धुएँ से भरे जंगल में आयी। तुरन्त आपको एक विलक्षण मृग से लेकर शत्रुओं को मारना जो पड़ा, वह भी कितना विचित्र हाल है ! मैं भी कितनी निर्दय हूँ ! । २६२१

इऩ्ऱी हिलैये लिऱविव् विडैमाऩ्, अऩ्ऱी यॅऩवुम् बरिवो डडियेन्
निऩ्ऱी वदुनिन् ऩॅनॅडुञ् जॅरुविऱ्, कॉऩ्ऱी वदॉर् हॉळ्है कुऱित्तलिऩो 2622

इऩ्ऱु–आज ही; इव् इटै–यहाँ; माऩ् ईकिलैयेल्–हिरन (पकड़कर) न दोगे तो; इऱवु–मृत्यु; ई–दो; ऍऩवुम्–कहते ही; परिवोटु–दुःख के साथ; निऩ्ऱीवतु–मेरा असहाय रह जाना; नॅटु चॅरुविल्–दीर्घ सागर में; कॉऩ्ऱु ईवतु–मार देने की; ऑरु कॉळ्कै कुऱित्तलिऩो–एक धारणा लेकर क्या। २६२२

"अभी आप मृग पकड़कर नहीं देंगे तो मेरा मरण निश्चित है ! अतः आप पकड़ दें।" मैंने यह प्रार्थना की ! दुःख के साथ मेरा अकेला रह जाना क्या लम्बे युद्ध में आपको मरवाने की योजना के कारण था ? । २६२२

मेदा विळैयोय् विदियार् विळैवाऱ्, पोदा नॅऱियॅम् मॉडुपो दुऱुनाळ्
मूदा ऩवऩ्मुन् ऩमुडिन् दिडॅऩुम्, मादा वुऱैयिऩ् वऴिनिऩ् ऱऩैयो 2623

वितियार् विळैवाल्–प्रारब्ध के फल से; पोता नॅऱि–दुर्गम मार्ग में; ऍम्मोटु–हमारे साथ; पोतुऱु नाळ्–जब जाने लगे तब; इळैयोय्–छोटे भैया; मेता–मेधावि; मूताऩवऩ्–ज्येष्ठ; मुऩ्तम् मुटिन्तिटु–(के) पहले मर जाओ; ऍऩुम्–यह आज्ञा देनेवाली; माता उऱैयिऩ् वऴि–माँ के कहे मार्ग में; निऩ्ऱऩैयो–रहे क्या (रहकर मरे क्या)। २६२३

प्रारब्धवश हो जब हम अगम जंगल के मार्ग पर जाने लगे, तभी लक्ष्मण से उनकी माँ ने कहा कि अपने बड़े भाई के पहले तुम मर जाओ (उन पर कुछ होने की नौबत आये तो)। हे लक्ष्मण ! क्या तुम अपनी माता की आज्ञा के पालन के मार्ग में रह गये ? । २६२३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूवुन् दळिरुन् दॊहुपॊङ् गणैमेऱ्, कोविन् तुयिलैत् तविर्वाय् कॊडियार्
एविन् ऱलैवन् दविरुङ् गणैयिन्, मेवुम् कुळिर्मॆल् लणैमे विनैयो 2624

पूवुम् तळिरुम्–पुष्प और पत्र; तॊकु–जिस पर एकत्रित थे; पॊङ्कु अणै मेल्–उस उत्साहवर्द्धक शय्या में; कोविन् तुयिलै–राजोचित नींद के; तविर्वाय्–हे त्यागी; कॊटियार्–क्रूरों (राक्षसों) के; एविन् तलै वन्त–धनु से निर्गत; इरु कणैयिन्–बड़े शरों से; मेवुम्–बने; कुळिर्मॆल् अणै–शीतल नरम शय्या (शर-तल्प); मेविनैयो–चाह ली क्या। २६२४

राजोचित पुष्प-पल्लव-संयुक्त व उल्लासमय शय्या में निद्रा को त्यागनेवाले! क्या आपने क्रूर राक्षसधनु-निर्गत बड़े शरों की बनी शय्या चाह ली ? । २६२४

नॆय्यार् अळल्वेळ् विनिरप् पिनॆडुञ्, जॆय्यार् पुनना डुदिरुत् तुदियाल्
मॆय्या हियवा शहमुम् विदियुम्, बॊय्या नवॆन्मे निपॊरुन् दुदलाल् 2625

नॆय् आर् अळल् वेळ्वि–घी डालकर अग्नि में किये जानेवाले यज्ञ; निरप्पि–सम्पन्न करके; नॆटु चॆय् आर्–बड़े खेतों से भरे; पुनल् नाट–जलसम्पन्न कोसल देश को; तिरुत्तुति–सुव्यवस्थित करते रह गये होते; ऎन् मेनि पॊरुन्तुतलाल्–मेरे शरीर का स्पर्श किया, इसलिए; मॆय्याकिय वाचकमुम्–आपके सत्यवचन; वितियुम्–और अच्छे कर्मफल; पॊय्यान–झूठे हो गये हैं। २६२५

सब ठीक रहा तो आप आग में घी देकर किये जानेवाले यागों को संपन्न करते हुए लम्बे खेतों से भरी अयोध्या में देश को सुव्यवस्थित रखते रह जाते! पर मेरे शरीर के स्पर्श से आपके सत्यवचन और अच्छा प्रारब्ध भी झूठा हो गया। २६२५

मऴुवाळ् वरिनुम् बिळवा मननुण्, डऴुवे ळिनियॆन् निडरा ऱिडयान्
विऴुवे नवन्मे नियिन् मीदिलॆना, ऎऴुवा ळैविलक् कियियम् बिनळाल् 2626

मऴु–परशु; वाळ्–और तलवार; वरिनुम्–आ लगें तो भी; पिळवा–जो नहीं कटता; मनन् उण्टु–वैसा मेरा मन है; अऴुवेन्–मैं रोती हूँ; इनि–अब; ऎन् इटर् आऱिट–अपना दुःख दूर करने; अवन् मेनियिन् मीतिल्–उनके शरीर पर; विऴुवेन्–गिरूँगी; ऎना–कहकर; ऎऴुवाळै–जो उठीं उनको; विलक्कि–रोककर; इयम्पिनळाल्–कहने लगी (त्रिजटा)। २६२६

परशु, तलवार आदि के प्रहार से भी अभेद्य है मेरा मन! रोती मैं उनके शरीर पर गिरकर मरूँगी और अपना दुःख मेटूँगी। यह कहकर देवी उठीं तो त्रिजटा ने उन्हें रोका और कहा। २६२६

माडुऱ वळैन्दु निन्ऱ वळैयॆयिऱ् ऱरक्कि मारप्
पाडुऱ वहऱ्ऱि नोक्किप् पावैयैत् तऴुविप् पऱ्ऱिक्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कूडिऩ ळऩ्ऩ निऩ्ऱु शॆवियिडैक् कुऱुहिच् चॊऩ्ऩाळ्
तेडिय तवमे यऩ्ऩ तिरिशडै मऱुक्कन् दीर्प्पाळ् 2627

तेटिय तवमे अऩ्ऩ–(पिछले जन्म में) सुरक्षित तप के फल के समान; तिरिचटै–त्रिजटा; मऱुक्कम् तीर्प्पाळ्–भ्रम दूर करते हुए; माटुऱ वळैऩ्तु निऩ्ऱ–पास घेरे रहनेवाली; वळै ऍयिऱु अरक्किमारै–वक्रदन्तोरी राक्षसियों को; पाटु उऱ–दूर जाएँ, ऐसा; अकऱ्ऱि–हटाकर; पावैयै नोक्कि–प्रतिमा (-सी सीता) को देखकर; कुऱुकि–पास जाकर; पऱ्ऱि तऴुवि–पकड़कर आलिंगन कर; कूटिऩळ् ऍऩ्ऩ–समागत हो गयी हो ऐसा; निऩ्ऱु–खड़ी होकर; चॆवि इटै–कान में; चॊऩ्ऩाळ्–कहने लगी। २६२७

त्रिजटा, जो सीताजी के पूर्व-जन्म-सुकृत के फल के रूप में मिली थी, उनका दुःख दूर करने के इरादे से घेरी खड़ी रही राक्षसियों को अलग करके सीताजी के पास गयी। प्रतिमा-सी उन्हें आलिंगन करके 'शरीर एक हो गये हों' —ऐसा रहकर उनके कान में कहने लगी। २६२७

मायमाऩ् विडुत्त वाऱुम् जऩहऩै वहुत्त वाऱुम्
पोयनाळ् नाह पाशम् बिणित्तदु पोऩ वाऱुम्
नीयमा निऩैयाय् माळ निऩैदियो नॆऱियि लाराल्
आयमा माय मॊऩ्ऱु मऱ्जलै यऩ्ऩ मऩ्ऩाय् 2628

अऩ्तम् अऩ्ऩाय्–हंस-समाना; पोय नाळ्–बीते दिनों में; मायमाऩ् विटुत्त आऱुम्–मायामृग जो भेजा था, वह हाल; चतकऩै वकुत्त आऱुम्–जनक का निर्माण जो हुआ था, वह हाल; नाक पाचम् पिणित्ततु–जो नागपाश-बन्धन हुआ था, उसके; पोऩ आऱुम्–निरसन का हाल; अम्मा–माते; नी–तुम; निऩैयाय्–नहीं सोचतीं; माळ निऩैतियो–मरना सोचोगी; नॆऱियिलाराल्–कुमार्गी लोगों से; आय–रची; मा मायम्–बड़ी माया से; ऒऩ्ऱुम् अऱ्चिलै–कुछ भी मत डरो। २६२८

हे हंसिनी-सी माते! पहले जो-जो हुए थे तुम जानती हो। मायामृग भेजा गया था। माया-जनक रचा गया था। नागपाश का बंधन और मुक्ति हुई थी। हे माते! तुम यह सब नहीं सोचकर मरने का विचार करती हो! कुमार्गी और दुष्ट राक्षसों की बड़ी से बड़ी माया से भी मत डरो। २६२८

कण्डऩ कऩवुम् बॆऱ्ऱ निमित्तमु निऩदु कऱ्पुन्
दण्डह मुऱैयु नाळिऱ् चॆय्हैयुन् दरुमन् दाङ्गुम्
अण्डर्ना यहऩ्ऱऩ् वीरत् तऩ्मैयु मयरेऱ् चॆङ्गट्
पुण्डरी हऱ्कु मुण्डो विऱुदियिप् पुल्लर् हैयाल् 2629

कण्टऩ कऩवुम्–देखे गये स्वप्न; पॆऱ्ऱ निमित्तमुम्–और जो मिले वे शकुन; निऩतु कऱ्पुम्–और तुम्हारा पातिव्रत्य; तण्टकम् उऱैयुम् नाळिल्–दंडक वनवास के समय में; चय्कैयुम्–जो हुई थीं, वे घटनाएँ; तरुमम् ताङ्कुम्–धर्म-संस्थापनार्थ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अवतरित; अण्टर् नायकन् तन्-अण्डनायक का; वीरम् तन्मैयुम्-वीर स्वभाव; अयरेल्-मत भूलो; पुण्टरीकम् इ चॅङ्कण्णर्कुम्-इन अरुण कमलाक्ष का भी; पुल्लर् कैयाल्-क्षुद्र लोगों के हाथों; इऱुति उण्टो-अन्त होगा क्या। २६२९

मेरे देखे स्वप्न, हुए शकुन, तुम्हारा पातिव्रत्य, दण्डक वन में घटी घटनाएँ, अंडनायक श्रीराम की वीरता —इन सबको भूलो मत। अरुण-पुण्डरीकाक्ष श्रीराम की मृत्यु क्षुद्रों के हाथों होगी भी क्या ? । २६२९

आऴियाऩ् ऩाक्कै ताक्कि यम्बॊऩ्ऱु मऱुक्कि लामै
एऴैनी काण्डि यऩ्ऱे यिळैयवऩ् वदऩ मिऩ्ऩुम्
ऊऴिना ळिरवि यॆऩ्ऩ वॊळिर्हिऩ्ऱ दुयिरुक् किऩ्ऩल्
वाऴियार् किल्लै वाळा मयङ्गलै मण्णिल् वन्दाय् 2630

एऴै-वराकी; आऴियाऩ्-चक्रधारी श्रीराम के; आक्कै-श्रीशरीर में; ऎऩ्ऱु अम्पुम् ताक्कि-एक अस्त्र का भी लगकर; अऱुक्किलामै-न भेदना; नी काण्टि-तुम देखो; मण्णिल् वन्ताय्-भूमिजा; इळैयवऩ् वदऩम्-छोटे (लक्ष्मण) का वदन; इऩ्ऩुम्-अब भी; ऊऴिनाळ् इरवि ऎऩ्ऩ-युगान्त के सूर्य के समान; ऒळिर्किऩ्ऱतु-छवि बिखेरता है; वाऴियार्क्कु-आयुष्मान् के; उयिरुक्कु इऩ्ऩल् इल्लै-प्राणों की हानि नहीं; वाळा मयङ्कलै-बेकार मोह में मत पड़ो। २६३०

हे वराकी ! तुम साफ़ देखो— चक्रधारी श्रीराम के शरीर पर कोई भी शर लगकर नहीं भेद सका है ! हे भूमिजा ! छोटे लक्ष्मण का मुख देखो। उनका वदन युगांत के रवि के समान छविमय रहता है ! अतः साफ़ है कि उनकी कोई हानि नहीं हुई। तुम व्यर्थ भ्रमित नहीं हो। २६३०

वीय्न्दुळ ऩिराम ऩॆऩ्ऩि ऩुलहमो रेऴु मेऴुन्
दीर्न्दऱु मिरवि पिऩ्ऩुन् दिरियुमे वॆय्व मॆऩ्ऩाम्
वीय्न्दुऱुम् विरिञ्जऩ् मुऩ्ऩा वुयिरॆलाम् वॆरुव लऩ्ऩै
आय्न्दवै युळ्ळ पोदे यवरुळ ररमु मुण्डाल् 2631

इरामऩ् वीय्न्तुळऩ्-श्रीराम मरे होते; ऎऩ्ऩिऩ्-तो; उलकम् ओर् एऴुम् एऴुम्-चौदहों लोक; तीर्न्तु अऱुम्-मटियामेट हो जाते; पिऩ्ऩुम्-और भी; इरवि तिरियुमे-सूर्य संचार करता (क्या); तॆय्वम् ऎऩ्ऩाम्-ईश्वर क्या हो; विरिञ्चऩ् मुऩ्ऩा-विरंचि से लेकर; उयिर् ऎलाम्-सारे जीव; वीय्न्तुऱुम्-नष्ट हो जाते; आय्न्तवै-कथित ये; उळ्ळ पोते-जब रहते हैं तब; अवर् उळर्-वे भी जीवित हैं; अऱमुम् उण्टु-धर्म भी चालू है; अऩ्ऩै-माते; वॆरुवल्-मत डरो। २६३१

अगर श्रीराम मरे होते तो चौदहों भुवन मिट जाते ! उस हालत में रवि भी संचार करता क्या ? फिर दैव का क्या अर्थ होगा ? विरंचि से लेकर सारे जीव मिट जाते। उक्त सभी चीज़ें जब यथाप्रकार हैं, तो उसका अर्थ है कि वे जीवित ही हैं। धर्म भी स्थायी है। हे माते ! डरो मत। २६३१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मारुदिक् किल्लै यऩ्ऱे मङ्गैनिऩ् वरत्ति ऩाले
आरुयिर् नीङ्गल् निऩ्बाऱ् कऱ्पुक्कु मऴिवुण् डामे
शीरिय दऩ्ऱि दॊऩ्ऱुऩ् दिशैमुहऩ् पडैयिऩ् शॆय्है
पेरुमिप् पॊऴ्दे तेव रॆण्णमुम् बिऴैप्प दुण्डो 2632

मङ्कै–देवी; निऩ् वरत्तिताले–तुम्हारे वर से; मारुतिक्कु–मारुति के; अरुमै उयिर्–प्यारे प्राण; नीङ्कल् इल्लै–छूटे नहीं; अऩ्ऱे–न; निऩ् पाल् कऱ्पुक्कुम्–(अगर वह मरता तो) तुम्हारे पातिव्रत्य पर भी; अऴिवुणटाम्–संकट आ जायगा; इतु–ऐसा सोचना; ऒऩ्ऱुम् चीरियतु अऩ्ऱु–किसी विध श्लाघ्य नहीं; तिचैमुकऩ् पटैयिऩ् चॆय्कै–(चतुर्मख के) ब्रह्मास्त्र का कार्य; इप्पॊऴुते पेरुम्–अभी दूर हो जायगा; तेवर् ऎण्णमुम्–देवों का विचार; पिऴैप्पतु उण्टो–व्यर्थ होगा क्या। २६३२

देवी ! आपके दिये गये वर से मारुति के प्यारे प्राण छूटे नहीं हैं ! नहीं न ! अगर वह मर जाता तो आपके पातिव्रत्य की भी हानि हो जायगी। यह विचार भी श्लाघ्य नहीं होगा ! ब्रह्मास्त्र के फलस्वरूप जो हुआ है, वह अभी दूर हो जाएगा। देवों का विचार भी झूठा हो सकता है क्या ? । २६३२

तेवरैक् कण्डेऩ् पॆम्बॊऱ् चॆङ्गरञ् जिरत्तिऱ् चेर्त्ति
मूवरैक् कणडा लॆऩ्ऩ विरुवरै मुऱैयि ऩोक्कि
आवलिप् पॆय्दु हिऩ्ऱा रयर्त्तिल रञ्ज लऩ्ऩै
कूवलिऱ् पुक्कु वेलै कोट्पडु मॆऩ्ऱु कॊळ्ळेल् 2633

तेवरै कण्टेऩ्–देवों को देखती हूँ; मू वरै कण्टाल् ऎऩ्ऩ–त्रिमूर्ति को देखते हों जैसे; इरुवरै मुऱैयिऩ् नोक्कि–इन दोनों को आदर के साथ देखकर; पचुम् पॊऩ्–चोखे स्वर्ण के बने आभरणों के; चॆम् करम्–लाल हाथों को; चिरत्तिल् चेर्त्ति–सिर पर धारण करके; आवलिप्पु ऎय्तुकिऩ्ऱार्–सोत्साह हैं; अयर्त्तिलर्–संशय-पीड़ित नही; वेलै–समुद्र; कूवलिल् पुक्कु–कुएँ में प्रवेश करके; कोट्पटुम्–उसको अपने अंदर समा लेगा; ऎऩ्ऱु–ऐसा; कॊळ्ळेल्–मत समझो। २६३३

मैं देवों को देखती हूँ। वे इन दोनों को त्रिमूर्त्तिवत् देखते हैं। चोखे स्वर्णाभूषणभूषित लाल हाथों को अपने सिर पर रखे बड़े उत्साह के साथ रहते हैं। वे कुछ भी क्षुब्ध नहीं दिखते। इसलिए, हे माते ! मत डरो। समुद्र कुएँ के अन्दर घुसकर उसमें समा जाएगा —ऐसा मत सोचो। २६३३

मङ्गल नोङ्गि ऩारै यारुयिर् वाङ्गि ऩारै
नङ्गैयिक् कडवुण् माऩऩ् दाङ्गुऱु नवैयिऱ् ऱऩ्ऱाल्
इङ्गिवै यळवै याह विडर्क्कडल् कडत्ति यॆऩ्ऱाळ्
शङ्गैय ळाय तैयल् शिऱिदुयिर् दरिप्प दाऩाळ् 2634

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नङ्कै–देवी; मङ्कलम् नीङ्कितारै–सधवापन से रहित स्त्रियों; आरुयिर् वाङ्कितारै–और प्यारे प्राणों से हीन लोगों को; इ कटवुळ् मानम्–यह दिव्य यान; ताङ्कुरुम् नवैयिऱ्ऱु अनृऱु–धारण करने का दोषयुक्त नहीं; इङ्कु इवै–अब ये; अळवै–प्रमाण हैं; आक–इसलिए; इटर् कटल् कटत्ति–दुःख-सागर तर लो; ऎन्ऱाळ्–कहा; चङ्कैयळ् आय तैयल्–शंकित जो रहीं वे देवी; चिऱितु उयिर् तरिप्पतानाळ्–थोड़ा प्राणधारण करने लगीं (सँभलीं)। २६३४

हे देवी ! यह दिव्य यान विधवाओं और मृतकों को धारण करने का अपराध नहीं करता। इन सब प्रमाणों के आधार पर दुःख-सागर तर जाओ। त्रिजटा ने यह सब कहा तो देवी सीता, जिसके मन में शंका थी, अब थोड़ा आश्वस्त हुई ! और प्राणधारण करने लगीं। २६३४

अन्नैनी युरैत्त दॊन्ऱु मऴिन्दिल दाद लाने
उन्नैये दॆय्व माक्कॊण् डित्तनै काल मुयन्देन्
इन्नमिव् विरवु मुऱ्ऱु मिरुक्किन्ऱे निऱत्त लॆन्बाल्
मुन्नमे मुडिन्द दन्ऱे यॆन्ऱुनळ् मुळरि नीत्ताळ् 2635

मुळरि नीत्ताळ्–कमलवासत्यागिनी ने; अन्नै–माते; नी उरैत्तत्तु ऒन्ऱुम्–तुम्हारा कहना कुछ; अऴिन्तिलतु–वृथा नहीं गया है; आतलान्–इसलिए; उन्नैये तॆय्वमा कॊण्टु–तुमको ही देव मानकर; इत्तुणै कालम्–इतने दिन; उयन्तेन्–जीवित रही; इन्नम्–और भी; इव् इरवु मुऱ्ऱुम्–इस रात भर में; इरुक्किन्ऱेन्–जीवन रखूँगी; इऱत्तल्–मरना तो; ऎन्पाल्–मेरी ओर से; मुन्नमे मुटिन्ततु अन्ऱे–पहले ही हो गया न; ऎन्ऱुनळ्–कहा। २६३५

कमलवासत्यागिनी सीता ने कहा कि हे माते ! तुम्हारा कहा कुछ भी व्यर्थ नहीं गया है ! इसीलिए मैं तुम्हें देव मानकर अब तक जीवन धारण कर रही हूँ। और भी आज रात तक जीवित रहूँगी। मरना तो, जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, पहले ही निश्चित हो गया है न ! । २६३५

नाणॆलान् दुऱन्दे निल्लि नन्मैयि नल्लार्क् केय्न्द
पूणॆलान् दुऱन्दे नॆन्ऱन् पॊरुशिलै मेहन् दन्नैक्
काणला मॆन्नु माशै तडुक्कवॆन् नावि कात्तेन्
एणिला वुडल नीक्क लॆळिदॆनक् कॆनवुञ् जॊन्नाळ् 2636

नाण् ऎलाम् तुऱन्तेन्–लज्जा सब छोड़ चुकी हूँ; इल्लिन्–गृहस्थी योग्य; नन्मैयिन्–श्रेष्ठ और; नल्लार्क्कु एय्न्त–उत्तम स्त्रियों के लिए आवश्यक; पूण् ऎलाम्–आभरण-मान्य गुण सभी को; तुऱन्तेन्–छोड़ चुकी; ऎन् तन्–मेरे; पॊरु चिलै–युद्ध धनुर्धर; मेकम् तन्नै–मेघ (-श्याम) को; काणलाम् ऎन्नम् आचै–देखने की इच्छा ने; तडुक्क–रोका, इसलिए; ऎन् आवि कात्तेन्–अपने प्राणों का रक्षण कर लिया; एण् इला–गौरवहीन; उटलम् नीक्कल्–शरीर का त्याग; ऎनक्कु ऎळितु–मेरे लिए सुलभ है; ऎनवुम्–ऐसा भी; चॊन्नाळ्–कहा, देवी ने। २६३६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देवी ने और भी कहा कि मैं लज्जा त्याग चुकी। और गृहिणी के लिए मंगल देनेवाले और उत्तम स्त्रियों के लिए आवश्यक आभरण-से गुणों से भी हाथ धो चुकी। तो भी अपने युद्धधनुर्धर मेघश्याम के दर्शन की लालसा के रोकने से मैं अपने प्राणों को सुरक्षित रख रही हूँ। नहीं तो क्षुद्र इस शरीर का त्याग कोई कठिन बात नहीं ! । २६३६

तैयलै यिरामऩ् मेऩि तैत्तवेऱ् ऱडङ्ग णाळक्
कैहळिऱ् पऱ्ऱिक् कॊण्डार् विमाऩत्तैक् कडावु हिऩ्ऱार्
मॆय्युयि रुलहत् ताह विदियैयुम् वलित्तु विण्मेल्
पॊय्युडल् कॊण्डु शॆल्लु नमऩुडैत् तूदर् पोऩ्ऱार् 2637

इरामऩ् मेऩि तैत्त–श्रीराम के शरीर पर लगी; वेल् तटम् कणाळै–भाले-सी विशाल आँखों वाली; तैयल्–देवी को; कैकळिल् पऱ्ऱि कॊण्टार्–हाथों से पकड़ लेकर; विमाऩत्तैत् कटावुकिऩ्ऱार्–दिव्य यान को चलानेवाली राक्षसियाँ; मॆय् उयिर् उलकत्तु आक–सच्चे जीव को (जीवात्मा को) यहीं इस लोक में छोड़कर; वितियैयुम् वलित्तु–विधि के बल से; विण्मेल्–आकाशमार्ग में; पॊय् उटल् कॊण्टु–झूठा शरीर ले; चॆल्लुम्–जानेवाले; नमऩ् उटै–यम के; तूतर् पोऩ्ऱार्–दूत के समान रहीं। २६३७

राक्षसियाँ सीता को, जिसकी भाले-सी आँखों की दृष्टि श्रीराम के शरीर पर गड़ी थी, अपने हाथों से पकड़ लेकर दिव्य यान को चलाती गयीं। तब वे उन यमदूतों के समान थीं, जो विधि के बल से सच्चे जीव (-आत्मा) को भूमि पर छोड़कर आकाश-मार्ग से मिथ्या शरीर को ले जाते हैं। २६३७

23. मरुत्तुमलैप् पडलम् (ओषधि-पर्वत पटल)

पोयिऩ डैय लिप्पाऱ् पुरिहॆऩप् पुलवर् कोमाऩ्
एयिऩ करुम नोक्कि येहिय विलङ्गै वेऩ्दऩ्
मेयिऩ वुणवु कॊण्डु मीण्डवै युऱैयुळ् विट्ट
आयिऩ वाक्किऩ् ताऩ्वऩ् दमर्प्पॆरुङ् गळत्त ऩाऩाऩ् 2638

तैयल् पोयिऩळ्–देवी गयीं; इप्पाल्–इधर; पुरिक अॆऩ–(भोजन लाने का काम) करो यह; पुलवर् कोमाऩ्–देवपति के द्वारा; एयिऩ करुमम्–आज्ञापित कार्य को; नोक्कि–उद्देश्य करके; इलङ्कै वेऩ्तऩ्–लंकाधिपति विभीषण; मेयिऩ उणवु कॊण्टु–उचित भोजन लेकर; मीण्टु–लौटा; अवै–उन्हें; उऱैयुळ् विट्ट आयिऩ आक्कि–पड़ावों के अन्दर रखा बनाकर; ताऩ् वऩ्तु–स्वयं आकर; अमर् पॆरुकळत्तऩ् आऩाऩ्–बड़े युद्धस्थल का बना (में पहुँचा।) । २६३८

सीतादेवी गयीं। उधर लंकाधिपति विभीषण, जो श्रीराम की आज्ञा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

से भोजन लाने गया था, उचित भोजनसामग्रियाँ ले लौटा। फिर उन्हें डेरों के अन्दर रखकर युद्ध के क्षेत्र में आया। २६३८

नोक्किनान् कण्डान् पण्डिव् वुलहङ्गळ् पडैक्क नोऱ्ऱान्
वाक्किनान् माण्डा रॅन्न वानर वीरर् मुऱ्ऱुम्
ताक्किना रॅल्लाम् बट्ट तन्मैये विडत्तैत् ताने
तेक्किना नॅन्न निन्ऱु तियङ्गिना नुणर्वु तीर्न्दान् 2639

पण्टु–पहले; इव् उलकङ्कळ्–इन लोकों को; पटैक्क–रचने के लिए; नोऱ्ऱान्–जिसने व्रत पाला था, उस ब्रह्मा के; वाक्किनाल्–शाप-वचन से; माण्टार् ऍन्न–जो मरते हैं, उनके समान; वानर वीरर्–वानर वीर; मुऱ्ऱुम् ताक्किनार्–पूर्ण रूप से आघात पाकर; ऍल्लाम् पट्ट तन्मैयै–सब मरे पड़े थे वहहाल; नोक्किनान्–देखा; कण्टान्–समझा; विटत्तै ताने तेक्किनान् ऍन्न–विष स्वयं पी लिया हो ऐसा; निन्ऱु–(भ्रान्त) खड़े होकर; उणर्वु तीर्न्तान्–मूर्च्छित हुआ। २६३९

उधर उसने देखा कि सभी वानर वीर ब्रह्मास्त्र से शाप पाकर मरे हुओं के समान पड़े रहते हैं। यह देखकर अधिक विष को अकेला खा चुका जैसे भ्रमित खड़ा रहा; फिर मूर्च्छित हो गया। २६३९

विळैन्दवा रुणर्न्दि लादा नेङ्गिनान् वॅदुम्बि नान्मेल्
उळैन्दुळैन् दुयिर्त्ता नावि युण्डिलै यॅन्न वोय्न्दान्
वळैन्दपेय्क् कणमु नायु नरिहळु मिरिय वन्दान्
इळङ्गिळै योडुञ् जाय्न्द विरामनै यॅय्दिक् कण्डान् 2640

विळैन्त आऱु–जो हुआ है, उसका प्रकार; उणर्न्तिलातान्–जो नहीं जानता था, वह विभीषण; एङ्कितान्–तरसकर; वॅतुम्पितान्–तप्त हुआ; मेल्–और; उळैन्तु–व्यग्र होकर; उळैन्तु–लटकर; उयिर्त्तान्–निःश्वास छोड़ा; आवि उण्टु इलै ऍन्न–प्राण हैं या नहीं यह संशय हो, ऐसा; ओय्न्तान्–निर्जीव हुआ; वळैन्त पेय् कणमुम्–भूत-गण जो घेरे रहे; नायुम् नरिकळुम्–और कुत्ते और सियार; इरिय–अस्त-व्यस्त भागें ऐसा; वन्तान्–आया; इळ किळैयोटुम्–लक्ष्मण के साथ; चाय्न्तु–गिरे पड़े रहे; इरामनै ऍय्ति–श्रीराम के पास पहुँचकर; कण्टान्–देखा। २६४०

उसे मालूम नहीं था कि क्या हुआ? वह तरसा, तप्त हुआ और क्षुब्ध हुआ। उसने लम्बी आहें भरीं। ऐसी स्थिति में आया कि यह संशय हो कि वह जीवित है या मरा हुआ। वह घेरे रहनेवाले भूतगणों, कुत्तों, और सियारों को अस्त-व्यस्त भागने देते हुए वहाँ आया, जहाँ अपने छोटे भाई के साथ श्रीराम पड़े थे। वहाँ आकर उसने उनको देखा। २६४०

ऍन्बॅन्ब दियाक्कै यॅन्ब दुयिरॅन्ब दिवैह ळॅल्लाम्
बिन्बॅन्ब वल्ल वेनुन् दम्मुडै निलैयिऱ् पेरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुन्बॅन्ब वुळदॅन् ऱालु मुऴुवदुन् दॅरिन्द वाऱ्ऱाल्
अन्बॅन्ब दॊन्ऱिन् ऱन्मै यमररु मऱिन्द दन्ऱाल् 2641

अॅन्पु अॅन्पतु–हड्डियाँ कहना; याक्कै अॅन्पतु–संघात (शरीर) कहना; उयिर् अॅन्पतु–जीव (या प्राण) कहना; इवैकळ् अॅल्लाम्–ये सब; पिन्पु अॅन्प–बाद के कहते हैं; अल्ल–नहीं; एनुम्–तो भी; तम्मुटै निलैयिल् पेरा–अपनी स्थिति से अविचलित; मुऴुवतुम् तॅरिन्त आऱ्ऱाल्–पूर्ण रूप से विश्लेषण करने पर; अन्पु अॅन्पतु–प्रेम नाम के; ऒन्ऱिन् तन्मै–एक तत्त्व का स्वभाव; अमररुम् अऱिन्ततु अन्ऱु–देव भी जानते हों ऐसा एक नहीं। २६४१

शरीर, प्राण, हड्डियाँ आदि प्रेम के पीछे की नहीं हैं। यानी उनके बाद ही प्रेम की गणना है। तो भी उस अटल प्रेम का रहस्य पूर्ण रूप से विवेचना करने पर, देवों को भी मालूम नहीं। २६४१

आयिनु मिवरुक् किल्लै यऴिवॅनु मदन्ना लावि
पोयिन दिल्लै वायाऱ् पुलम्बिलन् पॊरुमिप् पॊङ्गित्
तीयिनु मॅरियु नॅञ्जिन् वॅरुवलन् ऱॅरिय नोक्कि
नायहन् मेनिक् किल्लै वडुवॅन नडुक्कन् दीर्न्दान् 2642

आयिनुम्–तो भी; इवरुक्कु अऴिवु इल्लै–इनका अन्त नहीं होगा; अॅनुम्–ऐसे; अतनाल्–उस विचार से; आवि पोयिनतु इल्लै–प्राण छूटे नहीं; वायाल् पुलम्पिलन्–मुख खोलकर विलाप न करके; पॊरुमि पॊङ्कि–दुःख से भरकर; तीयिनुम् अॅरियुम्–आग से भी अधिक जलनेवाले; नॅञ्चिन्–मन से; वॅरुवलन्–निडरता से; तॅरिय नोक्कि–सोचकर, देखकर; नायकन् मेनिक्कु–नायक के शरीर पर; वटु इल्लै–व्रण नहीं; अॅन–सोचकर; नटुक्कम् तीर्न्तान्–(भय-) विकंपित होना छोड़ दिया। २६४२

वैसे प्रेमी विभीषण ने विचार किया। इन श्रीराम का अन्त नहीं हो सकता। अतः उनके प्राण छूटे नहीं। उसने मुख खोलकर विलाप करता हुआ, अग्नि से भी अधिक तपते मन के साथ निडर होकर देखा कि श्रीराम के शरीर पर कोई व्रण नहीं। इसलिए उसने भयकंपन छोड़ दिया। २६४२

अन्दणन् पडैयाल् वन्द दॅन्बदु माऱ्ऱल् शान्ऱ
इन्दिर शित्ते यॅय्दा नॅन्बदु मिळ वऱ्काह
नॊन्दन निराम नॅन्नु मुण्मैयु नॊय्दु नोक्किच्
चिन्दैयि नॅण्णि यॅण्णित् तीर्वदो रुबायन् दॅर्वान् 2643

अन्तणन् पटैयाल्–ब्राह्मण-श्रेष्ठ (ब्रह्मा) के अस्त्र से; वन्ततु–आया; अॅन्पतुम्–यह बात और; आऱ्ऱल् चान्ऱ–बलसंयुक्त; इन्तिर चित्ते अॅय्तान्–और इन्द्रजित् ने ही चलाया; अॅन्पतुम्–यह बात; इळवऱ्काक–छोटे भाई के लिए; इरामन्–श्रीराम; नॊन्तनन्–दुःखी हुए; अॅन्नुम् उण्मैयुम्–यह तथ्य भी; नॊय्तु नोक्कि–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शीघ्र जानकर; चिन्तैयिन् ऍण्णि–मन में विवेचना करके; ऍण्णि–विवेचना करके; तीर्वतु ओर् उपायम्–इस संकट से मुक्त होने का एक उपाय; तेर्वान्–सोचने लगा। २६४३

उसने अनुमान कर लिया कि यह ब्रह्मास्त्र की करतूत है। उसे बलवान इन्द्रजित् ने चलाया। श्रीराम लक्ष्मण का हाल देखकर दुःख से बेसुध हो गये हैं। उसने बहुत सोचा कि इस स्थिति के निवारण का मार्ग क्या हो ? । २६४३

उळ्ळुऱु तुन्ब मून्ऱ वुऱ्ऱन्न नुऱक्क मन्ऱो
तॆळ्ळिदि लुणर्न्द पिन्नॆच् चिन्दन्नै तॆरिव दन्ऱे
वळ्ळलो तम्बि माय वाळ्हिलन् माय वाळ्क्कैक्
कळ्वरो वॆन्ऱा रॆन्ना मळैयॆन्नक् कलुळुङ् गण्णान् 2644

उळ् उऱु तुन्पम्–अन्दर का दुःख; ऊन्ऱ–गड़ा (गम्भीर) रहा इसलिए; उऱक्कम् उऱ्ऱनन् अन्ऱो–मूर्च्छित हो गये न; तॆळ्ळितिन् उणर्न्त पिन्नै–साफ़ समझने के बाद; चिन्तनै तॆरिवतु–उनका विचार जान लेना है; वळ्ळलो–प्रभु तो; तम्पि माय–छोटे भाई के मरने पर; वाळ्किलन्–नहीं मरेगा; माय वाळ्क्कै–वंचकजीवी; कळ्वरो–चोर; वॆन्ऱार्–विजयी हो जाएँगे;. ऍन्ना–ऐसा सोचकर; मळै ऍन्न–बारिश के समान; कलुळुम् कण्णान्–रोनेवाली आँखों का बनकर (विभीषण)। २६४४

"भीतरी दुःख के गंभीर रूप से कष्ट देने से श्रीराम मूर्च्छित हो गये न ? निश्चित रूप से जानने के बाद उनका मन जान लेना होगा। क्योंकि प्रभु, भाई मर गये तो जीवन धारण नहीं करेंगे। तब मायाजीवी वंचकों की जीत होगी।" यह सोचकर वह बारिश के समान बहनेवाले अश्रु की आँखों का हो गया। २६४४

पाशम्बो यिऱ्ऱाऱ् पोलप् पदुमत्तोन् पडैयु मिन्ऱे
नाशम्बो यॆय्दु नम्बि तम्बिक्कु नाश मिल्लै
वीशुम्बोर्क् कळत्तु वीळ्न्द शेनैयु मीळुम् वॆय्य
नीशन्बोर् वॆल्व दुण्डो वॆन्ऱह निनैन्दु निन्ऱान् 2645

पाचम् पोय् इऱ्ऱाल् पोल–पाश टूटा जैसे; पतुमत्तोन् पटैयुम्–कमलासन का अस्त्र भी; इन्ऱे नाचम् पोय् ऍय्तुम्–आज ही नाश हो जायगा; नम्पि तम्पिक्कुम्–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के भाई का; नाचम् इल्लै–नाश नहीं होगा; वीचुम्–जहाँ हथियार चलाये जाते हैं उस; पोर् कळत्तु–युद्धस्थल में; वीळ्न्त चेनैयुम्–मरी सेना भी; मीळुम्–जीवित हो जाएगी; वॆय्य नीचन्–क्रूर नीच रावण भी; पोर् वॆल्वतु उण्टो–युद्ध जीते क्या; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; अकम्–मन में; निनैन्तु निन्ऱान्–सोचते हुए खड़ा रहा। २६४५

पाश का बन्धन जैसे टूटा था वैसे ही ब्रह्मास्त्र (का असर) भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आज नाश को प्राप्त हो जायगा। जगन्नाथ के भाई की भी कोई हानि नहीं होगी। हथियार जिसमें खूब चलाये जाते हैं, उस युद्ध में मरे वानर वीर भी जी उठेंगे। क्या क्रूर व नीच रावण को जीत मिल सकेगी? ऐसा सोचता हुआ वह खड़ा रहा। २६४५

उणर्वदन् मुन्न मिन्ने मुऱ्ऱुऴि युदवऱ् कॊत्त
तुणैवर्ह ऱुञ्ज लिल्ला रुळरंनिऱ् ऱुरुवित् तेडिक्
कॊणर्हुवॆन् विरैवि नॆन्नाक् कॊळ्ळियॊन् ऱङ्गै कॊण्डान्
पुणरियि नुदिर वॆळ्ळत् तॊरुदनि विरैविऱ् पोनान् 2646

उणर्वतन् मुन्नम्–(श्रीराम के) होश में आने के पहले; इन्ने–अभी; उऱ्ऱुऴि उतवऱ्कु ऒत्त–संकट के समय में सहायता देने योग्य; तुणैवर्कळ्–साथी; तुञ्चल् इल्लार्–कोई जीवित; उळर् ऎनिल्–हो तो; तुरुवि तेटि–टटोलकर-ढूंढ़कर; विरैविल् कॊणर्कुवॆन्–जल्दी लाऊँगा; ऎन्ना–कहकर; कॊळ्ळि ऒन्ऱु–आधी जली लकड़ी एक; अम् कै कॊण्टान्–सुन्दर हाथ में लिया; उतिरम् पुणरियिन् वॆळ्ळत्तु–रक्त-सागर के प्रवाह में; ऒरु तनि–अकेला; विरैविल् पोनान्–जल्दी-जल्दी गया। २६४६

"श्रीराम को मूर्च्छा से जागने के पूर्व मैं जाकर ढूँढूँगा यह देखने के लिए कि आफ़त के समय में सहायता देनेवाले कोई साथी जीवित हैं। अगर मिलें तो ले आऊँगा।" यह सोचकर वह एक लूक (अधजली लकड़ी हाथ में लेकर रक्त-प्रवाह के मध्य अकेले सवेग गया। २६४६

वाय्मडित् तिरण्ड् कैयु मुऱुक्कित्तन् वयिरच् चॆङ्गण्
तीयुहक् कनहक् कुन्ऱिऱ् ऱिरण्डदोण् मळैयैत् तीण्ड
आयिर कोडि यानैप् पॆरुम्बिणत् तमळि मेलान्
काय्शिनत् तनुम नॆन्नुङ् गडल्हिडन् दानैक् कण्डान् 2647

वाय् मडित्तु–अधर मोड़कर; इरण्टु कैयुम् मुऱुक्कि–दोनों हाथों को ऐंठकर; तन् वयिरम् चॆ कण्–अपनी वैरयुक्त लाल आँखों से; ती उक–अंगारे छोड़ते हुए; कनकम् कुन्ऱिल्–कनकगिरि (मेरु) सम; तिरण्ट तोळ् मळैयै तीण्ट–पुष्ट कन्धों के मेघों का स्पर्श करते; आयिरम् कोटि यानै–हजार करोड़ हाथियों की; पॆरुम् पिणत्तु–अनेक लाशों की; अमळि मेलान्–शय्या पर पड़े रहनेवाले; काय् चिनत्तु अनुमन् ऎन्नुम्–जलानेवाले क्रोध से अभिभूत हनुमान जो; कटल् किटन्तानै–सागर-सम पड़ा था उसे; कण्टान्–देखा। २६४७

उसने हनुमान को देखा। हनुमान के अधर मुड़े हुए थे, हाथ ऐंठे थे। वैरप्रदर्शक लाल आँखों से आग-सी निकल रही थी। कनकपर्वत (मेरु) सम कंधे आकाश को छू रहे थे। हज़ार करोड़ हाथियों की लाशों पर वह क्रुद्ध पड़ा रहा। समुद्र के समान पड़े रहे उसको विभीषण ने देखा। २६४७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्डुतन् कण्ग ळडु मळैयॅनक् कलुळि काल
उण्डुयि रॅन्ब दुन्नि युडर्कणै यॊन्रॊन् ड्राह
विण्डनीर्प् पुण्णि निन्ड्र मॅल्लॅन विरहिन् वाङ्गिक्
कॊण्डनीर् कॊणर्न्दु कोल मुहत्तिनैक् कुळिरच् चॅय्दान् 2648

कण्टु–देखकर; तन् कण्कळ् ऊटु–अपनी आँखों से होकर; मळै ऍत–बारिश के समान; कलुळि काल–अश्रु निकालते हुए; उयिर् उण्टु–जीव है; ऍन्पतु उन्नि–यह अनुमान लगाकर; विण्ट पुण्णिन्–खुले व्रण के; नीर् निन्ड्र–रक्त से; मॅल्ल–धीरे-धीरे; उटल् कणै–शरीर पर लगे बाणों को; ऒन्ड्र ऒन्ड्र आक–एक-एक करके; विरकिन् वाङ्कि–कुशलता से निकालकर; कॊण्टल् नीर्–मेघ का जल; कॊणर्न्तु–लाकर; कोल मुकत्तिनै–मनोरम मुख को; कुळिर चॅय्तान्–शीतल बनाया। २६४८

विभीषण ने हनुमान को देखा तो उसकी आँखों से अश्रु-वर्षा-सी होने लगी। उसने अनुमान कर लिया कि वह जीवित है। उसने रक्तमय व्रणों में उसके शरीर पर लगे अस्त्रों को धीरे-धीरे दक्षता के साथ एक-एक करके निकाला। फिर मेघ से जल ले आकर उसके मनोरम मुख को शीतल किया। २६४८

उयिर्प्पुमुन् नुदित्त पिन्न रुरोमङ्गळ् शिलिर्प्प वूडु
वियर्प्पुळ दाहक् कण्गळ् विळित्तन मेनि मॅल्लप्
पॅयर्त्तुवाय् पुनल्वन् दूर विक्कलुम् बिड्रन्द दाह
अयर्त्तिल निराम नामम् वाळ्त्तिन नमर रार्त्तार् 2649

उयिर्प्पु–श्वास; मुन् उतित्त पिन्तर्–पहले निकला उसके बाद; उरोमङ्कळ् चिलिर्प्प–रोम पुलकित हुए; ऊटु–शरीर पर; वियर्प्पु उळतु आक–पसीना निकला तो; कण्कळ् विळित्तन–आँखें खुलीं; मेनि–शरीर को; मॅल्ल पॅयर्त्तु–धीरे-धीरे मुद्रा बदलकर; वाय्–मुख में; पुनल् वन्तु ऊर–जल के स्रवते; विक्कलुम् पिड्रन्तु आक–हिचकी बँधी; अयर्त्तिलन्–प्रज्ञा न खोकर; इरामनामम् वाळ्त्तिनन्–श्रीराम के नाम की स्तुति की (हनुमान ने); अमरर्–देवगण; आर्त्तार्–चिल्ला उठे। २६४९

हनुमान ने साँसें छोड़ना आरंभ किया। फिर रोम पुलकित हुए। शरीर स्वेदित हुआ। आँखें खुलीं। तब उसने धीरे-धीरे अपने शरीर की मुद्रा को बदला। मुख में जल स्रवने लगा। हिचकी बँधी। उस स्थिति में भी अप्रमत्त रूप से उसने श्रीराम-नाम की दुहाई दी। देवों ने यह सुनकर आनंद-आरव किया। २६४९

अळुहैयो डुवहै युर्र वीडण नार्वङ् गूरत्
तळुविन नवनैत् तानु मन्बॊडु तळुवित् तक्कोय्
वळुविल नन्ड्रे वळ्ळ लॅन्रनन् वलिय नॅन्रान्
तॊळदन नुलह मून्ड्रन् नलैयिन्मेर् कॊळ्ळन् दूयान् 2650

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऴुकैयोटु–रुलाई के साथ; उवकै उऱ्ऱ–आनंदित जो हुआ उस; वीटणऩ्–बिभीषण ने; आऱ्वम् कूर–प्रेम के बढ़ने से; अवऩै–उसे; तऴुवित्तऩ्–आलिंगन में लिया; तातुम्–हनुमान ने भी; अऩ्पोटु तऴुवि–प्रेम के साथ आलिंगन करके; तक्कोय्–सुयोग्य; वळ्ळल्–प्रभु; वऴुविलऩ् अऩ्ऱे–आँच-रहित हैं न; ऍऩ्ऱऩऩ्–पूछा; वलियऩ्–कुशल से हैं; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा; उलकम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोक; तलैयिऩ् मेल् कॊळ्ळुम्–जिसको सिर पर धारण करते हैं; तूयाऩ्–और जो पवित्र है, उस हनुमान ने; तॊऴुतऩऩ्–नमस्कार किया। २६५०

एक साथ रोते-हँसते विभीषण का प्रेम बढ़ आया। उसने हनुमान का आलिंगन कर लिया। हनुमान ने भी उसे गले से लगा लिया। पूछा कि सुयोग्य ! प्रभु श्रीराम पर कोई आँच तो नहीं आयी न ? विभीषण ने उत्तर दिया कि हाँ "स्वस्थ हैं"। यह सुनकर त्रिलोकवंद्य हनुमान ने श्रीराम को वहीं से नमन किया। २६५०

अऩ्बुदऩ् ऱम्बि मेलात् तऱिविऩै मयक्क वैयऩ्
तुऩ्बॊडुऩ् दुयिल ऩाऩा ऩुणर्विऩित् तॊडर्ऩ्द पिऩ्ऩे
ऍऩ्बुहुऩ् दॆय्दु मॆऩ्ब दऱिहिलॆ मॆऩ्ऱु लोडुऩ्
दऩ्बॆरुऩ् दऩ्मैक् कॊत्त शाम्बऩॆत् तलैय ऩॆऩ्ऱाऩ् 2651

अऩ्पु तऩ् तम्पि मेल् आत्तु–प्यार अपने भाई पर रखने से; अऱिविऩै मयक्क–सुधि को भ्रष्ट करने से; ऐयऩ्–प्रभु; तुऩ्पुटऩ्–दुःख के साथ; तुयिलऩ् आऩाऩ्–मूर्च्छित हैं; इति–अब; उणर्वु तॊटर्ऩ्त पिऩ्ऩे–होश के आने के बाद; ऍऩ् पुकुऩ्तु ऍय्तुम्–क्या आ मिलेगा; ऍऩ्पतु अऱिकिलॆम्–यह नहीं जानते; ऍऩ्ऱलोटुम्–यह (विभीषण के) कहने पर; तऩ् पॆरु तऩ्मैक्कु ऒत्त–अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण स्वोपम; चाम्पऩ्–जाम्बवान; ऍ तलैयऩ्–कहाँ हैं; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा मारुति ने। २६५१

विभीषण ने कहा— भाई पर प्रेम के आधिक्य से श्रीराम की बुद्धि भ्रमित हो गयी और वे दुःख के साथ मूर्च्छित हैं। सुध आने के बाद क्या होगा ? —नहीं जानते ! हनुमान ने पूछा कि स्वोपम गुणश्रेष्ठ जाम्बवान कहाँ हैं ? । २६५१

अऱिन्दिल ऩवऩै याण्डुङ् गण्डिल ऩावि याक्कै
पिऱिन्दुळ दिलदॆऩ् ऱॊऩ्ऱुऩ् दॆरिन्दिलॆऩ् पॆयर्ऩ्दे ऩॆऩ्ऱु
शॆऱिन्दतार् निरुदर् वेन्द ऩुरैशॆयक् कालिऩ् शॆम्मल्
इऱुन्दिऱ मवऩुक् किऩ्ऱा ऩाडुदु मेहि यॆऩ्ऱाऩ् 2652

अवऩै अऱिन्तिलऩ्–उसके बारे में नहीं जानता; याण्टुम् कण्टिलऩ्–कहीं नहीं देखा; याक्कै आवि पिरिन्तुळतु–(क्या) शरीर प्राण छोड़ चुका है या; इलतु–नहीं; ऍऩ्ऱु–ऐसा; ऒऩ्ऱुम् तॆरिन्तिलॆऩ्–नहीं जानता; पॆयर्ऩ्तेऩ्–उसी स्थिति में आ गया हूँ; ऍऩ्ऱु–ऐसा; चॆऱिन्त तार्–घनी मालाधारी; निरुतर् वेन्तऩ्–राक्षसराज के; उरै चॆय–उत्तर कहने पर; कालिऩ् चॆम्मल्–वायुनंदन ने; अवऩक्कु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इऱम् तिऱम् इन्ऱ–उसका मरना नहीं है; एकि–जाकर; नाट्टुम्–ढूंढ़ेंगे; ऍन्ऱान्–कहा। २६५२

उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता। शरीर से प्राण छूट गये या नहीं —मैं नहीं जानता। उसी स्थिति में मैं इधर आया। घनी माला-धारी राक्षसराज के यह कहने पर वायुकुमार ने कहा कि वे तो मरनेवाले नहीं। चलो जाकर ढूंढ़ लें। २६५२

अन्नवन् ऱन्नैक् कण्डा लाणैये यरक्करक् कॅल्लाम्
मन्नव नम्मै मीट्टु वाऴ्विक्कु मुबायम् वल्लन्
ऍन्नलु मुय्न्दो मैय वेहुदुम् विरैवि नॅन्ना
मिन्निऱ वॉळियिऱ् चॅन्ऱार् शाम्बनै विरैविऱ् चेर्न्दार् 2653

अरक्करक्कु ऍल्लाम् मन्नव–सर्वराक्षसपति; अन्नवन् तन्नै–उसको; कण्टाल्–देख लें तो; नम्मै–हमें; मीट्टुम्–पुनः; वाऴ्विक्कुम् उपायम्–जिलाने का उपाय; वल्लन्–कह सकेंगे; आणैये–यह ध्रुव है; ऍन्नलुम्–कहने पर; ऐय–प्रभु; उय्न्तोम्–हम बच गये; विरैविन् एकुतुम्–जल्दी जायँ; ऍन्ना–(विभीषण के) यह कहने पर; मिन् निऱ ऑळियिल्–बिजली के श्वेत प्रकाश में; चाम्पनै विरैविल् चेर्न्तार्–जल्दी जाम्बवान के पास गये। २६५३

सर्वराक्षसपति ! उसको पा लेंगे तो वे बचने का उपाय बता सकेंगे। यह निश्चित है ! —हनुमान ने ऐसा कहा। "तब तो हम बचे। चलो जल्दी चलें।" यह कहकर विभीषण चलने लगा। दोनों बिजली के प्रकाश का सहारा लेकर गये और जाम्बवान के पास पहुँच गये। २६५३

ऍरिहिन्ऱ मूप्पि नालु मेवुण्ड नोवि नालुम्
अरिक्किन्ऱ तुन्बत् तालु मारुयिर्प् पडङ्गि यॉन्ऱुन्
दॅरिहिन्ऱ दिल्ला मम्मर्च् चिन्दैय नॅन्निनुम् वीरर्
वरुहिन्ऱ शुवट्टै योर्न्दान् शॅविहळाल् वयिरत् तोळान् 2654

ऍरिकिन्ऱ–संतापक; मूप्पिनालुम्–बुढ़ापे से और; एवुण्ट नोविनालुम्–शर के लगने से होनेवाली वेदना से; अरिक्किन्ऱ–जर्जर करनेवाले; तुन्पत्तालुम्–मानसिक चिन्ता से; अरुमै उयिर्प्पु अटङ्कि–अच्छे श्वास के बन्द होते; ऑन्ऱुम् तॅरिकिन्ऱतु इल्ला–कुछ न जान सकनेवाले; मम्मर् चिन्तैयन् ऍन्निनुम्–अस्पष्ट मन वाला रहा तो भी; वयिरम् तोळान्–वज्र-सम कन्धों वाले ने; वरुकिन्ऱ चुवट्टै–उनके आने की आहट; चॅविकळाल्–कानों से; ओर्न्तान्–सुन ली। २६५४

जाम्बवान संतापक बुढ़ापा, शरदत्त पीड़ा, अंदर ही अंदर छेदनेवाला दुःख —इनके प्रभाव से क्षीणश्वास रहे और उनका मन कुछ जानने की दशा में नहीं था और अस्पष्ट था। तो भी उसने लोगों के आने की आहट सुन ली। २६५४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरक्कनो वॅन्नै याळु मण्णलो वनुमन् रानो
इरक्कमुर् ऱरुळ वन्द तेवरो मुनिव रेयो
वरक्कड वार्ह ळॅल्लिन् माऱ्ऱलर् मलैन्दु पोनार्
पुरक्कवुळ् ळारे यॅन्न निनैन्दनन् पॉरुम रीर्न्दान् 2655

अरक्कनो–विभीषण क्या; अॅन्नै आळुम्–मेरे शासक; अण्णलो–प्रभु क्या; अनुमन् तानो–या हनुमान ही; इरक्कम् उऱ्ऱु–दया करके; अरुळ वन्त–उपकार करने के लिए आगत; तेवरो–देव लोग हैं; मुनिवरेयो–या मुनि ही; अॅल्लिल्–निशा में; माऱ्ऱलर्–शत्रु; मलैन्तु पोनार्–विजय पाकर लौट गये; पुरक्क उळ्ळारे–सहायता करनेवाले ही; वर कटवार्कळ्–आ गये होंगे; अॅन्न–ऐसा; निनैन्तनन्–सोचकर; पॉरुमल् तीर्न्तान्–दुःख से मुक्त हुआ। २६५५

उसने सोचा— आनेवाले कौन ? राक्षस विभीषण ? या मेरे शासक प्रभु श्रीराम ? या मारुति ही आ रहा है क्या ? या मुझ पर दया करके उपकारार्थ देव आ रहे हैं ? या मुनि लोग ? रात को शत्रु लड़ाई में विजय पाकर लौट जा चुके थे। अतः अब आनेवाले हमारे रक्षक ही होंगे। तब उसका मन आश्वस्त हुआ। २६५५

वन्दय निन्ऱु कुन्ऱिन् वार्न्तुवी ळुरुवि मानच्
चिन्दिय कण्णि नीर रेङ्गुवार् तम्मैत् तेऱ्ऱि
अन्दमिल् कुणत्ति रियावि रणुहिनि रंन्ऱा नैय
उय्न्दन सुय्न्दो मॅन्ऱ वीडण नुरैयैक् केट्टान् 2656

वन्तु–आकर; अयल् निन्ऱु–पास खड़े होकर; कुन्ऱिन्–पर्वत से; वार्न्तु–बीळु–गिरनेवाली; अरुवि मान–सरिता के समान; चिन्तिय–बहनेवाले; कण्णिन् नीरर्–अश्रु वाले; एङ्कुवार् तम्मै–व्याकुल रहनेवाले उन्हें; तेऱ्ऱि–ढाढ़स दिलाकर; अन्तम् इल् कुणत्तिर्–अनंतगुणी; अणुकिनिर् याविर्–पास आये कौन हो; अॅन्ऱान्–पूछा (जाम्बवान ने); ऐया–बाबा; उय्न्तनम्–जी गये; उय्न्तोम्–सकुशल हो गये; अॅन्ऱ–ऐसा जिसने कहा उस; वीटणन् उरैयै–विभीषण के वचन को; केट्टान्–सुना। २६५६

वे उसके पास आये। उनकी आँखों से पर्वत से झरनेवाली सरिता के समान अश्रुधारा बह रही थी। व्याकुल उन्हें आश्वस्त करके जाम्बवान ने पूछा कि हे अनन्त सुगुणी ! पास आये हुए कौन हो ? विभीषण आनन्द से चिल्लाया कि हम जी गये; जी गये। जाम्बवान ने वह सुना और स्वर पहचाना। २६५६

मऱ्ऱय निन्ऱा नियाव नॅन्नमा रुदियुम् वाळि
कॉऱ्ऱव वनुम निन्ऱेन् ऱॉळुदन नॅन्ऱु कूऱ
इऱ्ऱिल मैय वॅल्लो मॅळुन्दन मॅळुन्दो मॅन्ना
उऱ्ऱपे रुवहै याले योङ्गिना नूऱ्ऱ मुऱ्ऱान् 2657

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱ्ऱु–फिर; अयल् निऩ्ऱान्–पास खड़ा है; यावऩ्–कौन; ऍऩ्ऩ–पूछने पर; मारुतियुम्–हनुमान ने भी; कॊऱ्ऱव–विजयी वीर; वाऴि–जय हो; अनुमऩ् निऩ्ऱेऩ्–हनुमान खड़ा हूँ; तॊऴुतऩ्–प्रणाम करता हूँ; ऍऩ्ऱु कूऱ–ऐसा कहा तो; इऱ्ऱिलम्–नष्ट नहीं हुए; ऐय–तात; ऍल्लोम ऍऴुन्तऩम्–हम सब उठ गये; ऍऴुन्तोम्–उठ गये; ऍऩ्ऩा–कहकर; उऱ्ऱ पेर् उवकैयाले–हुए बहुत आनन्द से; ओङ्किऩाऩ्–फूल गया। २६५७

फिर जाम्बवान ने पूछा— पास खड़ा कौन है ? मारुति ने उत्तर दिया कि विजयी वीर ! जय हो। मैं हनुमान खड़ा हूँ ! नमस्कार करता हूँ। प्रतापी जाम्बवान ने उत्साह के साथ कहा कि अब हम मरेंगे नहीं। सब जीवित हो जाएँगे। तात ! हम सब जी जायँगे। वह फूला नहीं समाया। २६५७

विरिञ्जऩ् वॆम् बडैयॆऩ्ऱालुम् वेदऩ्ति ऩुट्पङ् गूऱुम्
अरिन्दमऩ् ऱऩ्ऩै यॊऩ्ऱु माऱ्ऱल दॆऩ्ऩ माऱ्ऱल्
तॆरिन्दऩऩ् मुऩ्ऩे यऩ्ऩाऩ् शॆय्ददॆऩ् ऱॆरिऩ्ति यॆऩ्ऱाऩ्
पॆरुन्दहै तुऩ्ब वॆळ्ळत् तुयिलुळाऩ् पॆरुम वॆऩ्ऱाऩ् 2658

विरिञ्चऩ् वॆल्पडै ऍऩ्ऱालुम्–भयानक ब्रह्मास्त्र ही क्यों न हो; वेतऩ्तिऩ् नुट्पम् कूऱुम्–वेदों के सूक्ष्म अर्थतत्त्व; अरिन्तमऩ् तऩ्ऩै–अरिदम श्रीराम को; ऍऩ्ऱुम् आऱ्ऱलतु–कुछ नहीं कर सकता; ऍऩ्ऩुम् आऱ्ऱल्–यह शक्तिदायक बात; तॆरिन्तऩऩ्–जानता हूँ; अऩ्ऩाऩ् चॆय्ततु ऍऩ्–उन्होंने क्या किया; मुऩ्ऩे तॆरिऩ्ति–पहले बताओ; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा (जाम्बवान ने); पॆरुम्–आदरणीय; पॆरुन्तकै–सम्मान्य श्रीराम; तुऩ्प वॆळ्ळम्–दुःख की बहुलता से; तुयिलुळाऩ्–निद्रित (मूर्च्छित) हैं; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। २६५८

"ब्रह्मास्त्र भी वेदसूक्ष्मतत्त्व अरिंदम श्रीराम का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह बलवर्धक बात मुझे मालूम है। उन्होंने क्या किया ? वह बताओ पहले।" —जाम्बवान ने पूछा। विभीषण ने उत्तर में कहा कि श्रीराम दुःखप्रवाह में निद्रित (मूर्च्छित) हैं। २६५८

अऩ्ऩवऩ् ऱऩ्ऩैक् कण्डा लाऱ्ऱुमो वाक्कै वेऱे
इऩ्ऩुयि रॊऩ्ऱे मूलत् तिरुवरु मॊरुव रेयाल्
इऩ्ऩदु किडप्पत् ताऴा विङ्गिऩि यिमैप्पिऩ् मुऩ्ऩर्क्
कॊऩ्ऩियल् वयिरत् तोळाय् मरुन्दुबोय्क् कॊणर्दि यॆऩ्ऱाऩ् 2659

अऩ्ऩवऩ् तऩ्ऩै कण्टाल्–उस (लक्ष्मण) को देखकर; आऱ्ऱुमो–धैर्य धारण कर सकते हैं क्या; मूलऩ्ऩु–मूल बात को देखने पर; इरुवरुम् ऒरुवरे–दोनों एक हैं; आक्कै वेऱु–शरीर भिन्न हैं; इऩ् उयिर् ऒऩ्ऱे–प्यारे प्राण एक ही हैं; कॊऩ् इयल्–भयानक; वयिरम् तोळाय्–सुदृढ़ कन्धों वाले; इऩ्ऩतु किटप्प–बात जब ऐसी रहती है; इऩि–अब; इङ्कु ताऴा–इधर विलम्ब न करके; इमैप्पिऩ् मुऩ्ऩर्–पलक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मारने से पहले; पोय्–जाकर; मरुन्तु कॊणर्ति–ओषधि लाओ; ऍन्ऱान्–कहा (जाम्बवान ने)। २६५९

जाम्बवान ने कहा— भाई की हालत देखकर वे कैसे धीरज धर सकेंगे ? मूल में दोनों एक ही हैं। शरीर दो पर प्राण एक हैं उनके। हे शत्रुत्रासक कंधोंवाले ! जब हालत ऐसी है तो तुम यहाँ विलम्ब मत करो। जाओ पल भर में ओषधि (संजीवनी अमृत) लाओ। २६५९

ऍऴबदु वॆळ्ळत् तोरु मिरामनु मिळैय कोवुम्
मुऴुदुमिव् वुलह मून्ऱु नल्लऱ मूर्त्ति तानुम्
वऴुवलिन् मऱैयु मुन्नाल् वाऴ्न्दन वाहु मैन्द
पॊऴुदिऱै ताऴा दॆन्शॊऩ् नॆऱिदरक् कडिदु पोदि 2660

मैन्त–पुत्र; ऍऴुपतु वॆळ्ळत्तोरुम्–सत्तर 'वॆळ्ळम्' सब; इरामनुम्–श्रीराम; इळैय कोवुम्–और छोटे राजा; मुऴुतुम् इ उलकम् मुन्ऱुम्–सम्पूर्ण ये तीनों लोक; नल् अऱम् मूर्त्ति तानुम्–श्रेष्ठ धर्मदेवता; वऴुवल् इल् मऱैयुम्–अमोघ वेद; उन्नाल्–तुम्हारे कृत्य से; वाऴ्न्तत आकुम्–जो जाएँगे; इऱै पॊऴुतु ताऴातु–कुछ भी समय विलम्ब न करके; ऍन् चॊल् नॆऱि तर–मेरे वचन के मार्ग निर्दिष्ट करते; कटितु पोति–झट जाओ। २६६०

"पुत्र ! तुम मेरे कहे अनुसार मार्ग तय करके जाओ और अमृत लाओ, तो सत्तर 'वॆळ्ळम्' वानर-सेना, श्रीराम, छोटे राजा, पूर्ण रूप से ये तीनों लोक, अच्छे धर्मदेवता, अमोघ वेद —सब तुम्हारे कार्य से जीवित हो जायँगे। जल्दी चलो। २६६०

पिन्बुळदिक् कडलॆन्नप् पॆयर्न्द दऱ्पिन् योशनैहळ् पेशनिन्ऱ
ऑन्बदिना यिरङ्गडन्दा लिमयमॆनुङ् गुलवरैयै युरुदि युऱ्राल्
तन्बॆरुमै योरिरण्डा यिरमुळो शनैयदुपिन् ऱविरप् पोनाल्
मुन्बुळयो शनैयॆल्ला मुऱ्ऱिनैपॊऱ् कूडञ्जॆन् ऱुरुदि मॊय्म्ब 2661

मॊय्म्प–विक्रमी; इ कटल्–इस सागर को; पिन्पु उळतु ऍन्न–पीछे रहता छोड़; पॆयर्न्ततन् पिन्–आगे जाने के बाद; पेच निन्ऱ योचनैकळ्–कथनीय योजन; ऑन्पतिनायिरम्–नौ हज़ार; कटन्ताल्–पार करोगे तो; इमयम् ऍनुम् कुलवरैयै–हिमवान नामक कुलगिरि को; उऱुति–पहुँचोगे; उऱ्ऱाल्–पहुँचने पर; तन् पॆरुमै–उसकी चौड़ाई; ओर् इरण्टु आयिरम् उळ–दो हज़ार योजन है; पिन् तबिर–उसे पीछे छोड़; मुन्पु उळ–आगे रहे; योचनै ऍल्लाम् मुऱ्ऱिनै–सभी योजनों को दूरी पार करके; पॊन् कूटम् चॆन्ऱु उऱुति–हेमकूट जा पहुँचो। २६६१

बलवान ! इस समुद्र को पार कर नौ हज़ार योजन जाओ तो हिमालय नामक कुलगिरि मिलेगी। उसकी चौड़ाई दो हज़ार योजन है। उसे पार करके नौ हज़ार योजन जाओ तो हेमकूट पर जाओगे। २६६१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इम्मलैक्कु मॊऩ्बदिऩा यिरमुळदा लियोशऩैयि ऩिडद मॆऩ्ऩुम्
जॆम्मलैक्कु मुळवाय वत्तऩैयो शऩैकडन्दार् चॆऩ्ऱु काण्डि
ऍम्मलैक्कुम् बॆरिदाय वडमलैयै यम्मलैयि ऩहल मॆण्णिऩ्
मॊय्म्मलैन्द तिण्डोळाय् मुप्पत्ती रायिरमियो शऩैयिऩ् मुऱ्ऱुम् 2662

इ मलैक्कुम्–इस (हेमकूट) पर्वत से; ऒऩ्पतिऩायिरम् योचऩैयिल्–नौ हज़ार योजन पर; निटतम् ऍऩ्ऩुम् चॆम्मलै उळ्ळतु–निषध नामक लाल पर्वत है; अम्मलैक्कुम्–उस गिरि से; उळवाय् अत्तऩै योचऩै कटन्ताल्–जो है उतने योजन की दूरी पार करो तो; ऍ मलैक्कुम् पॆरितु आय–सभी पर्वतों से बड़े; वट मलैयै चॆऩ्ऱु काण्टि–(मेरु) उत्तर गिरि को जा देखोगे; अ मलैयिऩ् अकलम् ऍण्णिऩ्–उस गिरि की चौड़ाई सोचो तो; मॊय् मलैन्त तिण् तोळाय्–सबल और युद्धचतुर सुदृढ़ कंधों वाले; मुप्पत्तीरायिरम् योचऩैयिऩ् मुऱ्ऱुम्–बत्तीस हज़ार योजन की होगी। २६६२

हेमकूट से नौ हज़ार योजन पर श्रेष्ठ निषध पहाड़ है। फिर नौ हज़ार योजन चलो तो सबसे बड़े मेरु पर्वत पर पहुँचोगे। हे सबल तथा युद्धसमर्थ कंधोंवाले! उसकी चौड़ाई बत्तीस हज़ार योजन में समाप्त होगी। २६६२

मेरुविऩैक् कडन्दप्पा लॊऩ्बदिऩा यिरमुळवो शऩैयै विट्टाल्
नेरणुहु नीलगिरि तानिरण्डा यिरमुळयो शऩैयि निऱ्कुम्
मारुदिमऱ् ऱदऱ्कप्पा लियोशऩैना लायिरत्तिऩ् मरुन्दु वैहुङ्
गार्वरैयैक् काणुदिमऱ् ऱदुकाण वित्तुयर्क्कुक् करैयुङ् गाण्डि 2663

मेरुविऩै कटन्तु–मेरु को पार करके; अप्पाल्–आगे; ऒऩ्पतिऩायिरम् उळ योचऩैयै विट्टाल्–नौ हज़ार योजन पार करो तो; नेर् अणुकुम्–सामने मिलनेवाली; नील किरि तान्–नीलगिरि ही है; इरण्टायिरम् उळ योचऩैयिऩ् निऱ्कुम्–दो हज़ार योजन (की चौड़ाई) ले खड़ी है; मारुति–मारुति; म ऱ्ऱु–फिर; अतऱ्कु अप्पाल्–उसके उस पार; नालायिरम् योचऩैयिल्–चार हज़ार योजन पर; मरुन्तु वैकुम्–जिसमें ओषधि रहती है; कार् वरैयै–उस काले पर्वत को; काणुति–देखोगे; काण–देखो तो; इ तुयर्क्कु–इस दुःख का; करैयुम् काण्टि–कूल भी देख लोगे। २६६३

मेरु के बाद नौ हज़ार योजन पार करो तो सामने नीलगिरि ही होगी। मारुति! उससे चार हज़ार योजन पर वह काला पर्वत है, जिसमें ये ओषधियाँ हैं। उसको देख लो तो समझो कि दुःख के पार पहुँच गये। २६६३

माण्डारै युय्विक्कु मरुन्दॊऩ्ऱु मॆय्वेऱु वहिर्हळाहक्
कीण्डालुम् बॊरुन्दु विप्पदॊरुमरुन्दुम् बडैक्कलङ्गळ् किळर्प्पदॊऩ्ऱुम्
मीण्डेयुन् दम्मुरुवे यरुळुवदोर् मॆय्म्मरुन्दु मुळनीवीर
आण्डेहिक् कॊणर्दियॆऩ वडैयाळत् तॊडुमुरैत्ता ऩऱिविऩ्मिक्काम् 2664

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

माण्टारै–मरे हुओं को; उय्विक्कुम्–जिलाने की; मरुन्तु ऒन्ऱु–एक ओषधि और; मॆय्–शरीर; वेऱु वकिर्कळ् आक–अलग-अलग भागों में; कीण्टालुम्–चिर जाए तो भी; पॊरुन्तुविप्पतु–मिलानेवाली; ऒरु मरुन्तुम्–एक ओषधि; पटैकलङ्कळ्–हथियारों की; किळर्प्पतु ऒन्ऱुम्–(शरीर से) निकालनेवाली एक ओषधि और; मीण्टेयुम्–फिर से; तम् उरुवे–(विकृत मूल) रूप को; अरुळुबतु–दिलानेवाली; ओर् मॆय् मरुन्तुम्–एक सच्ची ओषधि; उळ–हैं; वीर–वीर; आण्टु एकि–वहाँ जाकर; कॊणर्ति–लाओ; ऎऩ–ऐसा; अटैयाळत्तॊटुम्–उनके लक्षणों के साथ; उरैत्तान्–कहा; अऱिविऩ् मिक्कान्–मतिश्रेष्ठ (जाम्बवान) ने। २६६४

मतिश्रेष्ठ जाम्बवान ने कहा— मृतक को जिलाने की ओषधि एक; छिन्न शरीरों को एक करानेवाली एक; शरीर पर लगे हथियारों को निकालनेवाली एक और विकार-प्राप्त आकार को मूल रूप दिलानेवाली एक— (आदि) चार कारगर ओषधियाँ हैं। वीर ! तुम वहाँ जाकर उन्हें लाओ। साथ-साथ जाम्बवान ने उनके लक्षण भी बताये। २६६४

इऩ्ऩमरुन् दॊरुनाऩ्गुम् बयोददियैक् कलक्कियञान् ऱॆळुन्द तेवर्
मुऩ्ऩियमैत् तऩर्मऱैक्कु मॆट्टाद परञ्जुडरिव् वुलह मून्ऱुम्
तऩ्ऩिरुता ळुळ्ळडक्किप् पॊलि पोळ्दिऩ् यान्मुरशञ् जाऱ्ऱुम्वेलै
अऩ्ऩवैहण् डुयावुदलुन् दॊऩ्मुनिव रवऱ्ऱियलॆऱ् कऱिवित् ताराल् 2665

इऩ्ऩ मरुन्तु–ये ओषधियाँ; ऒरु नाऩ्कुम्–चारों; तेवर्–देवों के; पयोततियै कलक्किय ञाऩ्ऱु–पयोधि को मथते दिन; ऎळुन्त–प्रकट हुईं; मुऩ्ऩि–(उनका प्रभाव) सोचकर; अमैत्तऩर्–सुरक्षित रखा है; मऱैक्कुम् ऎट्टात–वेद के लिए भी अग्राह्य; परम् चुटर्–परमज्योतिस्वरूप (त्रिविक्रम); इव् उलकम् मून्ऱुम्–इन तीनों लोकों को; तऩ् इरु ताळ् उळ् अटक्कि–अपने दोनों चरणों के अन्तर्गत करके; पॊलि पॊळ्तिऩ्–जब शोभे तब; यान् मुरचम् चाऱ्ऱुम् वेलै–मैं जब ढिंढोरा पीटता गया; अऩ्ऩवै कण्टु–उनको देखकर; उयावुतलुम्–प्रश्न करने पर; तॊल् मुऩिवर्–प्राचीन मुनियों ने; अवऱ्ऱ इयल्–उनके गुणों को; ऎऱ्कु अऱिवित्तार्–मुझे बताया। २६६५

ये सब उस दिन प्रकट हुई थीं, जिस दिन देवों ने पयोदधि को मथा था। उनकी शक्ति जानकर उन्हें गोपनीय रखा है। जब वेदों के लिए भी अग्राह्य परमज्योतिस्वरूप त्रिविक्रम अपने दोनों चरणों के दायरे में इन लोकों को मापकर शोभायमान रहे, तब मैंने मुनादी पीटी थी। उस अवसर पर इन्हें देखकर विवरण पूछा, तो प्राचीन मुनियों ने उनके गुण बताये थे। २६६५

इम्मरुन्दु कात्तुऱैव वॆण्णिलवार् ऱॆय्वङ्ग ळिरङ्गा यार्क्कुम्
नॆय्म्मरुङ्गु पडरहिल्ला नॆडुनेमिप् पडंयुमवर् ऱुडऩे निऱ्कुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॉय्म्मरुङ्गि निल्लादाय् पुरिहिन्ऱ कारियत्तिन् पॉरुळै नोक्किक्
कैम्मरुङ्गुण् डानिन्नैक् कायावा मप्पुऱम्बोय्क् करक्कु मॅन्ऱान् 2666

इ मरुन्तु–इन ओषधियों को; कात्तु उऱैव–जो रक्षित करते रहते हैं; तय्वङ्कळ् ऍण्णिल–वे देवता असंख्यक हैं; यार्क्कुम् इरङ्का–किसी पर दया नहीं करते; नॅय्–धृतरंजित; मरुङ्कु पटरकिल्ला–पास भटकने न देनेवाले; नॅटु नेमि पटैयुम्–बड़ा चक्रायुध भी; अवऱ्ऱुटने निऱ्कुम्–उनका सहायक रहता है; पोय् मरुङ्कित् निल्लाताय्–असत्य के पास भी न जानेवाले; पुरिकिन्ऱ कारियत्तिन् पॉरुळै नोक्कि–तुम जो करनेवाले हो उस कार्य को देखकर; कै मरुङ्कु उण्टाम्–वे तुम्हारे हाथ में आ जाएँगी; निन्नै कायावाम्–वे देवता भी तुमसे रुष्ट नहीं होंगे; अप्पुऱम् पोय् करक्कुम्–दूसरी ओर जाकर छिप जायेंगे; ऍन्ऱान्–कहा। २६६६

असंख्य देव इन ओषधियों की रक्षा करते रहते हैं। वे किसी पर रहम नहीं करेंगे। धृतरंजित और अगम चक्रायुध भी इनकी सहायता में रहता है। हे असत्य के पास भी न जानेवाले! तुम्हारे कार्य का हेतु समझकर वे औषध तुम्हारे हाथ लग जाएँगी। वे देव भी तुम पर कोप नहीं करेंगे। वे स्वयं अलग छिप जाएँगे। जाम्बवान ने बताया। २६६६

ईङ्गिदुवे पणियाहि निऱन्दारुम् बिऱन्दारे यॅङ्गोक् कियादुन्
तीङ्गिडैयू ऱैय्दामऱ् ऱॅरुट्टिडुदिर्बो यॅन्नच्चॊल्लि यवरैत् तीर्न्दान्
ओङ्गिनन्वा नॅडुमुहट्टै युऱ्ऱनन्पॉऱ् ऱोळिरण्डुन् दिशैयो डॊक्क
वीङ्गिनवा हाशत्तै विळुङ्गिनने यॅन्नवळर्न्दान् वेदम् बॊल्वान् 2667

ईङ्कु–यहाँ; इतुवे–यही; पणियाकिन्–आज्ञा हो; इऱन्तारुम्–मृतक भी; पिऱन्तारे–जन्म ले चुके; ऍम् कोक्कु–हमारे राजा को; यातुम्–कोई भी; तीङ्कु–हानि; इटैयूऱु–बाधा; ऍय्तामल्–न हो ऐसा; पोय्–जाकर; तॅरुट्टिटुतिर्–समझाओ; ऍन्न चॊल्लि–ऐसा कहकर; अवरै तीर्न्तान्–उनसे हटा (हनुमान); वेतम् पोल्वान्–वेद-सम; ओङ्कितन्–ऊँचा बढ़कर; वान् नॅटु मुकट्टै–आकाश की चोटी को; उऱ्ऱनन्–पहुँचा; पॉन् तोळ् इरण्टुम्–सुन्दर दोनों कन्धे; तिचैयोटु ऑक्क–दिशाओं से एक-सम; वीङ्कित–फूले; आकाचत्तै विळुङ्किनने ऍन्न–आकाश को निगल लिया (समा लिया) जैसे; वळर्न्तान्–विवर्धित हुआ। २६६७

हनुमान ने उत्साह के साथ कहा कि इतना ही हुक्म है तो सभी मरे हुए लोग जी उठे। देखो हमारे प्रभु पर कोई आँच न आये —इसकी सावधानी रखो! वह उन्हें छोड़ अलग हुआ। वेदसदृश आकाश की चोटी को छूते हुए बढ़ा। उसके दोनों सुन्दर कंधे दिशाओं के समान वर्द्धित हुए। आकाश को निगल लिया हो, ऐसा वह फूल गया। २६६७

कोळोडु तारहैहळ् कोत्तमैत्त मणियारक् कोवै पोन्ऱ
तोळोडु तोळहल मायिरमियो शनैयॅन्नवुम् जॊल्ल वॊण्णा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ताळोडु ताळ्पॅयर्क्क विडमिलदा हियदिलङ्गै तडक्कै वीश
नीळोडु तिशैपोदा विशैत्तॅळुवा नुरुवत्ति निलैयि दम्मा 2668

कोळोडु–ग्रहों के साथ; तारकैकळ्–नक्षत्र; कोत्तु अमैत्त–गूँथकर रचित; मणि आरम्–रत्नहारों के; कोवै पोन्ऱ–समूह-से लगे; तोळोडु तोळ्–कन्धे से कन्धा; अकलम्–चौड़ाई में; आयिरम् योचनै ऍनवुम्–हज़ार योजन ही; चॊल्ल ऒण्णा–कह नहीं सकते; ताळोटु ताळ् पॅयर्क्क–पैर बदलने के लिए; इलङ्कै–लंका; इटम् इलतु आकियतु–ख़ाली स्थान से हीन हो गयी; तट कै वीच–विशाल हाथों को हिलाने; नीळ् ओटु तिचै–लम्बी-चौड़ी दिशाएँ; पोता–पर्याप्त नहीं रहीं; विचैत्तु ऍऴबात्–झटका देकर जो उठा, उसके; उरुवत्तिन् निलै इतु–आकार की यह स्थिति थी। २६६८

तब ग्रह और तारे गुँथे हुए रत्नहारों के समान लगे। कंधे से कंधा हज़ार योजन से भी दूर पड़ता था। पैर बदलकर रखने के लिए लंका में स्थान नहीं रह गया। विशाल हाथों को हिलाने के लिए दिशाएँ कम पड़ गयीं। झटके के साथ जो उठा, उस हनुमान के आकार की स्थिति यह थी। २६६८

वाल्वळैत्तुक् कैन्निमिर्त्तु वायिनैयुञ् जिऱिद्रहल मडित्तु मानक्
कानिलत्ति निडैयून्ऱि युरम्विरित्तुक् कळुत्तिनैयुञ् जुरुक्किक् काट्टित्
तोन्मयिर्क्कुन् दळञ्जिलिर्प्प विशत्तॅळुन्दा नव्विलङ्गे तुळङ्गिच् चूळ्न्द
वेलैयिऱ्पुक् कळुन्दियदोर् मरक्कलम्बोऱ् ऱिरिन्दयर विशयत् तोळान् 2669

विचयम् तोळान्–विजय-स्कन्ध; वाल् वळैत्तु–पूँछ टेढ़ी करके; कै निमिर्त्तु–हाथ को ऊँचा उठाकर; वायिनैयुम्–मुख को; चिऱितु अकल–थोड़ा चौड़ा; मटित्तु–मुड़ाकर; मानम् काल्–बड़ पैरों को; निलत्तिन् इटै–भूमि में; ऊन्ऱि–स्थिर रखकर; उरम् विरित्तु–छाती फुलाकर; कळुत्तिनैयुम्–गले को; चुरुक्कि काट्टि–सँकरा कर दर्शित करके; तोल्–चर्म पर के; मयिर् कुन्तळम् चिलिर्प्प–बालों को पुलकित करके; तुळन्ति–अस्त-व्यस्त हो; चूळ्न्त–आवरण के; वेलैयिल् पुक्कु–समुद्र में घुसकर; अळुन्तियतु–जो डूब गया उस; ओर् मरक्कलम् पोल्–एक पोत के समान; अव् इलङ्कै–उस लंका के; तिरिन्तु अयर–घूमकर अस्त-व्यस्त हो ऐसा; विचैत्तु ऍऴुन्तान्–ज़ोर लगाकर उछला। २६६९

विजयस्कंध हनुमान ने पूँछ टेढ़ी की; हाथ उठाये; मुख को थोड़ा चौड़ा मुड़ाया; प्रशंसा योग्य पैर भूमि पर गड़ाये; छाती फुलायी और कंठ को संकुचित कर लिया। उसके शरीर पर के रोम पुलकित हुए। वह ससंभ्रम ज़ोर से उठा तो लंका नगरी समुद्रमध्य पोत के समान हिल उठी और कंपित हुई। २६६९

किळिन्दनमा मळैक्कुलङ्गळ् कीण्डवुनीण् डहल्वेलै किळक्कु मेऱ्कुम्
चॊळिन्दन मीन्वॊडर्न्वॅळुन्द पॊरुप्पिनमुन् तरुक्कुलमुम् बिऱवुम् बॊङ्गि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऴिन्दनवा ऩवर्मान माहायत् तिडैयिऩिऱ्पे रशनि यॆऩ्ऩ
निऴुन्दऩनीर्क् कडलऴुन्द वेऱिऩमेऱ् कीऱिऩपोय्त् तिशैह ळॆल्लाम् 2670

मा मऴै कुलङ्कळ्–बड़े मेघवृन्द; किऴिन्तऩ–चिर गये; नीण्टु अकल्–लम्बा-चौड़ा; वेलै–सागर; कीण्टतु–चिर गया; किऴक्कुम् मेऱ्कुम्–पूर्व और पश्चिम में; मीऩ् पॊऴिन्तऩ–नक्षत्र चू पड़े; पॊऱुप्पु इऩमुम्–पर्वत-श्रेणियाँ और; तरु कुलमुम्–तरुवृन्द; पिऱवुम्–और अन्य; पॊङ्कि–उठे और; तॊटर्न्तु ऎऴुन्त–साथ लगे ऊपर गये; वानवर् मानम्–देवों के यान; आकायत्तु इटैयिनिल्–आकाश के मध्य; पेर् अचनि ऎऩ्ऩ–बड़े वज्रों के समान; नीर् कटल्–उदधि में; अऴुन्त–डूबते हुए; विऴुन्तऩ–गिरे; तिचैकळ् ऎल्लाम् पोय्–सारी दिशाओं को जाकर; कीऱिऩ–फाड़ डाला (जल ने)। २६७०

और बड़े मेघसमूह चिरे। लंबा-चौड़ा सागर फटा। पूरब और पश्चिम में नक्षत्र चू गये। पर्वतसमूह और तरुकुल साथ उठ चले। देवयान आकाश-मध्य अशनि के समान समुद्र में गिरे और डूबे। समुद्रजल दिशाओं को फाड़ गया। २६७०

पाय्न्दऩऩङ् गप्पॊऴुदे परुवरैह ळॆऩैप्पलवुम् वडपा हत्तुच्
चाय्न्दऩपे रुडऱ्पिऱन्द शण्डमा रुदम्वीशत् तादै शाल
ओय्न्दऩऩॆऩ् ऱुरैशॆय्य विशुम्बूडु पडर्हिऩ्ऱा ऩुरुवे हत्ताऱ्
काय्न्दऩवे लैकण्मेहङ् गरिन्दऩवॆन् दॆरिन्दबॆरुङ् गाऩ मॆल्लाम् 2671

अप्पॊऴुते–तभी; अङ्कु पायन्तऩऩ्–वहाँ उछला; परुवरैकळ्–बड़े-बड़े पर्वत; एऩै पलवुम्–अन्य अनेक; पेर् उटल्–वृहदाकार शरीर से; पिऱन्त–निकले; चण्टम् मारुतम् वीच–चण्डमारुत के बहने से; वट पाकत्तु चाय्न्तऩ–उत्तर में गिरे; तातै–पिता (पवनदेव); चाल ओय्न्तऩऩ्–निपट थक गया; ऎऩ्ऱु उरै चॆय्य–कहा जाय ऐसा; विचुम्पु ऊटु–आकाश-मार्ग से; पटर्किऩ्ऱाऩ्–जो जा रहा था उसके; उरु वेकत्ताल्–ग़ज़ब के वेग से; वेलैकळ् काय्न्तऩ–समुद्र सूखे; मेकम् करिन्तऩ–मेघ झुलसे; पॆरु काऩम् ऎल्लाम्–बड़े-बड़े कानन सब; वॆन्तु ऎरिन्त–जल-भुन गये। २६७१

तभी वह उधर झपटा। उसके बड़े शरीर से पवन चालित हुआ और उससे बड़े-बड़े पर्वत उत्तर की तरफ़ झुक गये। हनुमान इतने वेग से आकाश में उड़ता चला कि लोग कहने लगे कि उसका पिता बहुत थक गया। उसके शरीर के वेग की गति से समुद्र सूख गये और मेघ झुलस गये। सभी बड़े कानन जल-भुन गये। २६७१

कडल्पिऩ्ऩे निमिर्न्दोडक् काऩ्मुऩ्ऩे कडिदोडक् कालिऱ् चॆल्वाऩ्
उडल्मुऩ्ऩे शॆलवुळ्ळङ् गडैकुळैयाच् चॆलच्चॆल्वा ऩुरुवै नोक्कि
अडऩ्मुऩ्ऩे तॊडङ्गियना ळाऴ्हडल्शू ऴिलङ्गैयॆऩु मरक्कर् वाऴुन्
दिडर्मुऩ्नी रिडैप्पडुत्तुप् पऱित्तऩऩऩ् दुयरॆऩ्ऱार् तेव रॆल्लाम् 2672

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कटल्–सागर; पिन्ते–पीछे-पीछे; निमिर्न्तु ओट–तनकर चला और; काल्–पवन; मुन्ते–आगे-आगे; कटितु ओट–तेजी से चला; कालिल् चॅल्वान्–पवनगति से चलनेवाला; उटल् मुन्ते चॅल–शरीर को आगे चलाकर; उळ्ळम्–मन को; कटै कुळैया चॅल–पीछे चलाता हुआ; चॅल्वान्–जो जा रहा था उसके; उरुवै नोक्कि–आकार को देखकर; तेवर् अॅल्लाम्–सभी देवों ने; मुन्ते–पहले; अटल् तॊटङ्किय नाळ्–बलप्रदर्शन आरम्भ करने के दिन; आळ् कटल् चूळ्–गहरे सागर से आवृत; इलङ्कै अॅन्तुम्–लंका नाम का; अरक्कर् वाळुम् तिटर्–राक्षसावास द्वीप को; मुन्नीर् इटै पटुत्तु–(दुःख-) सागर में डुबोकर; नम् तुयर् पऱित्तनन्–हमारे दुःख को दूर कर दिया; अॅन्ऱार्–कहा। २६७२

समुद्र उठकर पीछे-पीछे चला। पवन आगे भागा। पवनगति में जानेवाले हनुमान का शरीर आगे गया और मन पीछे। उसका रूप देखकर देवों ने कहा कि जब इसने अपना पराक्रम-प्रदर्शन आरम्भ किया, तभी समुद्र-वलयित लंका का टीला दुःख-सागर में डूब गया और उसने हमारे दुःख को दूर कर दिया। २६७२

मेहत्तिन् पदङ्गडन्दु वॅङ्गदिरुन् दण्गदिरुम् विरैविऱ् चॅल्लुम्
माहत्ति नॅऱिक्कप्पाल् वानमीन् कुलम्वळङ्गुम् वरैप्पु नीङ्गिप्
पोहत्तिन् कुऱितॊडर्न्दार् पुहलिडङ्गळ् पिऱ्पडप्पोय्प् पूविन् वन्द
एहत्तन् दणनिरुक्कै यिनिच्चेय्त्तन् ऱामॅन्न वॅळुन्दु शॅन्ऱान् 2673

मेकत्तिन् पतम् कटन्तु–मेघों का स्थान पार करके; वॅम् कतिरुम्–गरम किरणमाली; तण् कतिरुम्–शीतल-किरण चन्द्र; विरैविल् चॅल्लुम्–जहाँ सवेग चलते हैं; माकत्तिन् नॅऱिक्कु अप्पाल्–उस आकाश-मार्ग के उस पार; वान मीन् कुलम्–आकाश के नक्षत्रगण; वळङ्कुम्–जहाँ संचार करते हैं; वरैप्पु नीङ्कि–उस सीमा को भी पार करके; पोकत्तिन् कुऱि तॊटर्न्तार्–(स्वर्ग-) भोग को उद्देश्य करके जिन्होंने यागादि कर्म किये हैं; पुकल् इटङ्कळ्–उन लोगों के गम्य-स्थान स्वर्ग आदि स्थानों को; पिन् पट पोय्–पीछे छोड़ जाकर; पूविन् वन्त–(श्रीविष्णु के नाभी-) कमल पर प्रगट; एकत्तु अन्तणन्–अद्वितीय ब्राह्मण (ब्रह्मा) का; इरुक्कै–लोक; इनि–अब; चेय्त्तु अन्ऱु आम्–दूर नहीं है; अॅन्न–ऐसा कहने योग्य स्थिति पर; अॅळुन्तु चॅन्ऱान्–उड़ चला। २६७३

उसने मेघों का स्थान, गरमकिरणमाली सूर्य और शीतलकिरण चन्द्र का आकाश-मार्ग आदि के उस पार नक्षत्रमंडल की सीमा पार की। भोगप्रसक्त लोग यागादि करके जहाँ पहुँचते हैं, उन स्वर्गादि लोकों को भी पीछे छोड़ वह आगे चला। अब 'श्रीविष्णु के नाभीकमल से उत्पन्न ब्रह्मा का लोक दूर नहीं' जहाँ कहा जा सकता था उस स्थान पर पहुँचा। २६७३

वाननाट् टऱैहिन्ऱार् वयक्कलुळन् वल्विशैयान् मायन् वैहुन्
दाननाट् टुऱुहिन्ऱा नॅन्नुरैत्तार् शिलर्शिलर्हळ् विरिञ्जन् ऱान्ऱन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एऩैनाट् टऴ्हिऩ्ऱा ऩॆऩ्ऱुरैत्तार् शिलर्शिलर्ह ळीश ऩल्लार्
पोऩनाट् टिडैपोह वल्लऩो विवऩ्मुक्कट् पुऩिद ऩॆऩ्ऱार् 2674

वातम् नाटु उऱ्कॆऩ्ऱार् चिलर्–आकाशलोकवासी कुछ; वयम् कलुऴऩ्–बलवान गरुड़; वल् विचैयाऩ्–बहुत ज़ोर के साथ; मायऩ् वैकुम्–जहाँ मायावी (श्रीविष्णु) रहते हैं; तातम् नाटु उऱुकिऩ्ऱाऩ्–उस स्थान (लोक) को जा रहा है; ऎऩ्ऱु उरैत्तार्–ऐसा बोले; चिलर्कळ्–कुछ; विरिञ्चऩ् ताऩ्–विरंचि ही; तऩ्–अपने; एऩै नाटु–अन्य लोक को; ऎऴुकिऩ्ऱाऩ्–जाता है; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उरैत्तार्–बोले; चिलर् चिलर्कळ्–कुछ-कुछ; ईचऩ् अल्लाल्–ईश्वर नहीं तो; पोऩ नाटु इटै–बहुत ऊँचे लोक में; पोक वल्लऩो–जा सकता है क्या वह; इवऩ् मुक्कण् पुऩितऩ्–यह त्रिनेत्र पवित्र परमेश्वर ही है; ऎऩ्ऱार्–ऐसा बोले। २६७४

कुछ व्योमलोकवासियों ने कहा कि बलवान गरुड़ अधिक तेज़ी से श्रीविष्णु के वासस्थान को जा रहा है! कुछ ने कहा कि विरंचि अपने दूसरे लोक (ब्रह्मलोक) को जा रहा है! कुछ-कुछ ने कहा कि ईश्वर को छोड़ कोई इतने ऊपर के लोक में जा सकेगा क्या? अतः यह त्रिनेत्र पवित्र परमेश्वर ही हैं! । २६७४

वेण्डुरुवङ् गॊण्डुवन्दु विळैयाडु हिऩ्ऱाऩ्मॆय् वेद नाऩ्गुऩ्
दीण्डुरुव ऩल्लाद तिरुमाले यिवऩॆऩ्ऱार् तॆरिय नोक्किक्
काण्डुमॆऩ विमैप्पदऩ्मुऩ् कट्पुलत्तैक् कडऩ्दहलु मिऩ्ऩुङ् गाण्मिऩ्
मीण्डुवरुऩ् दरमल्ला वीट्टुलहम् बुहुमॆऩ्ऱार् मॆऩ्मे लुळ्ळार् 2675

मॆऩ् मेल् उळ्ळार्–ऊपर और ऊपर रहनेवाले; वेण्टुरुवम् कॊण्टु वऩ्तु–मनचाहा रूप ले आकर; विळैयाटुकिऩ्ऱाऩ्–खेलता; मॆय्–सचमुच; वेतम् नाऩ्कुम्–चारों वेदों के; तीण्टु उरुवऩ् अल्लात–अस्पृश्य रूप वाला; तिरुमाले इवऩ्–श्रीविष्णु ही है; ऎऩ्ऱार्–ऐसा बोले; तॆरिय नोक्कि–खूब ध्यान देकर; काण्टुम्–देखें; ऎऩ–सोचकर; इमैप्पतऩ् मुऩ्–पलक मारने से पहले; कण् पुलत्तै कटऩ्तु–दृष्टि की भूमि को पार कर; अकलुम्–दूर जानेवाला है; इऩ्ऩुम् काण्मिऩ्–और देखो; मीण्टु वरुम् तरम् अल्ला–जहाँ से लौटने का मार्ग नहीं होता उस; वीटु उलकम् पुकुम्–मोक्षलोक में जाएगा; ऎऩ्ऱार्–कहा। २६७५

ऊपर और ऊपर रहनेवालों ने अनुमान किया कि ये चतुर्वेद-अग्राह्य विष्णु ही होंगे। मनचाहा रूप ले आया है और लीला रच रहा है! ध्यान लगाकर देखें कहकर देखा और कहा कि पलक झपने के समय के अन्दर दृष्टिपथ पार कर लेता है! और देखो। वह उस मोक्षलोक पहुँच जायगा, जहाँ से लौटना नहीं होता। २६७५

उरुवॆऩ्ऱार् शिलर्शिलर्ह ळॊळियॆऩ्ऱार् शिलर्शिलर्ह ळॊळिरु मेऩि
अरुवॆऩ्ऱार् शिलर्शिलर्ह ळण्डत्तुक् कप्पुऱऩिऩ् ऱुलह माक्कुङ्
गरुवॆऩ्ऱार् शिलर्शिलर्हळ् काऱ्ऱॆऩ्ऱार् शिलर्शिलर्हळ् कडलैत् ताविच्
चॆरुवॆऩ्ऱा ऩिलैयॊऩ्ऱुऩ् दॆरियहिला रुलहऩैत्तुऩ् दॆरियुञ् जॆलवर् 2676

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उलकु अत्तैत्तुम्–सारे लोकों को; तॅरियुम् चॅल्वम्–जाननेवाले (ज्ञान के) धनी; कटलै ताबि–सागर लाँघकर; चॅरु वॅन्ऱान्–युद्ध जिसने जीता था उसकी; निलै ऑत्ऱुम् तॅरियकिलार्–स्थिति कुछ नहीं जान सके; चिलर् चिलर्कळ्–कुछ-कुछ; ऑळिरुम् मेनि–शोभायमान शरीर; उरु–(साकार) रूप है; ऍन्ऱार्–कहते; चिलर् चिलर्कळ्–कुछ-कुछ; ऑळि–ज्योति है; ऍन्ऱार्–कहते; पिन्नुम् चिलर् चिलर्–और कोई-कोई; कार्ऱु ऍन्ऱार्–वायु कहते; चिलर् चिलर्–अन्य कोई-कोई; अरु ऍन्ऱार्–निराकार कहते; मऱ्ऱुम् चिलर् चिलर्–अन्य कुछ-कुछ; अण्टत्तुक्कु अप्पुरम् निन्ऱु–अण्ड के उस पार से; उलकम् आक्कुम्–लोक सृष्ट करनेवाला; करु–निमित्त कारण (ईश्वर) है; ऍन्ऱार्–कहते। २६७६

सर्वलोकज्ञानधनी भी समझ नहीं सके कि समुद्र लाँघकर युद्ध जिसने जीता था, उस हनुमान की स्थिति क्या है! कुछ लोगों ने कहा कि छविमय शरीर साकार है। कुछ लोगों ने केवल ज्योति माना। और कुछ लोगों ने पवन का अनुमान लगाया। कुछ लोगों ने कहा कि यह अरूप है! कुछ लोगों का अनुमान था कि वह अण्ड पार रहनेवाला लोकसृष्टि का निमित्त कारण है। २६७६

वाशनाण् मलरोन्ऱ नुलहळवु निमिर्न्दनमेल् वान मान
काशमा यिनवॅल्लाङ् गरन्ददन दुरुविडैये कनहत् तोळ्हळ्
वीशवान् मुहडुरिञ्ज विशैत्तॅळुवा नुडर्पिऱन्द मुळक्कम् विम्म
आशंका वलर्तलैहळ् पॊदिरॅऱिन्दार् विदिरॅऱिन्द दण्ड कोळम् 2677

वाचम् नाळ् मलरोन् तन्–सुगन्धित नवविकसित कमलासन के; उलकु अळवुम्–सत्यलोक तक; निमिर्न्तत–ऊँचे; मेल् वानम् आन–ऊपर के आकाश जो हैं; काचम् आयिन ऍल्लाम्–उन सारे आकाशों को; करन्त–छिपानेवाले; तनतु उरु इटैयै–अपने शरीर के; कनकम् तोळ्कळ्–मनोरम कन्धे; वीच–आगे-पीछे गये, इसलिए; वान् मुकटु उरिञ्च–आकाश की चोटी को स्पर्श करते हुए; विचैत्तु ऍऴुवान्–ज़ोर से उठ चलनेवाले हनुमान के; उटल् पिऱन्त–शरीर से निकला; मुळक्कम्–शब्द; विम्म–स्फीत हो उठा तो; आचै कावलर्–दिग्पालक; तलैकळ् पॊतिर् ऍऱिन्तार्–काँपते सिर के हो गये; अण्टकोळम् वितिर् ऍऱिन्ततु–अण्डगोल थर्रा उठा। २६७७

उसके रूप के अन्दर सुगंधित तथा नितनवविकसित कमल के देव ब्रह्मा के सत्यलोक तक फैला आकाश सब छिप सकता था। अपने स्वर्ण-कंधों को हिलाते हुए जब वह आकाश को स्पर्श करता उठा, तब उसके शरीर से ज़ोर का शोर उठा। उसके बढ़ने से दिग्पालों के सिर काँप गये और अण्डगोल थर्रा उठा। २६७७

तॊडुत्तनाण् मालै वानोर् मुनिवरे मुदल तॊल्लोर्
अडुत्तनान् मऱैहु ळोदि वाळत्तला लवुणर् वेन्दन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॊडुत्तना ळळन्दु ऱॊण्ड कुऱळऩार् कुऱिय पादम्
ऎडुत्तना ळॊत्त दण्ण लॆळुन्दना ळुलहुक् कॆल्लाम् 2678

अण्णल् ऎळुन्त नाळ–महिमावान जिस दिन ऊँचा उठा वह दिन; उलकुक्कु ऎल्लाम्–सारे लोकों के लिए; तॊडुत्त नाळ् मालै–गुंथी हुई नव-विकसित पुष्पों की मालाधारी; वाऩोर्–देव; मुऩिवर् मुतल–मुनि आदि; तॊल्लोर्–प्राचीन लोग; अडुत्त–उचित; नाऩ् मऱैकळ् ओति–चतुर्वेदोच्चारण करके; वाळ्त्तलाल्–मंगल-वचन करते रहे इसलिए; अवुणर् वेन्तऩ्–दानवराजा महाबली ने; कॊटुत्त नाळ्–जिस दिन उदक ढालकर दान किया तब; अळन्तु कॊण्ट–भूमि को चरणों से जिन्होंने नाप लिया उन; कुऱळऩार्–वामन-मूर्ति ने; कुऱिय पातम्–अपने छोटे चरण को; ऎटुत्त नाळ्–उठाया, उस दिन; ऒत्ततु–के समान रहा। २६७८

महान हनुमान के ऊपर उठ जाने का वह दिन उस दिन के समान था, जिस दिन नवविकसित पुष्पमालाधारी देवों और मुनियों द्वारा वेदों के उच्चारण के साथ स्तुति का पात्र बनकर महाबली ने उदक ढालकर दान किया था और वामन (त्रिविक्रम) देवता ने, जिन्होंने दो ही चरणों में सारे लोकों को नाप लिया, अपने छोटे चरण को उठाया था। २६७८

तेवरु मुऩिवर् तामुञ् जित्तरुन् दॆरिवै मारुम्
मूवहै युलहि ऩुळ्ळा रुवहैयाल् तॊडर्न्दु मॊय्त्तार्
तूविऩ मणियुञ् जान्दुञ् जुण्णमु मलरुन् दॊत्तप्
पूवुडै यमरर् दॆय्वत् तरुवॆऩ विशुम्बिऱ् पोऩाऩ् 2679

मूवकै उलकिऩ् उळ्ळार्–त्रिलोकवासी; तेवरुम् मुऩिवर् तामुम्–देवों और मुनियों; चित्तरुम् तॆरिवै मारुम्–सिद्धों और उन सबकी देवियों ने; उवकैयाल्–मोद से; तॊडर्न्तु मॊय्त्तार्–पीछे लगी भीड़ में; तूविऩ–जो बिखेरे; मणियुम्–वे रत्न और; चान्दुम् चुण्णमुम्–चन्दन और चूर्ण; मलरुम् तॊत्त–उसके शरीर पर लगे लटके; पू उटै–पुष्प-भरे; अमरर् तॆय्वम् तरु ऎऩ–देवों के कल्पतरु के समान; विचुम्पिऩ् पोऩाऩ्–आकाश-मार्ग में गया। २६७९

त्रिलोकवासी, देव, मुनिगण, सिद्ध लोग और उन सभी की पत्नियाँ आनंद से आकर भीड़ बना गयीं। उन्होंने जो रत्न, चन्दन, सुगंधचूर्ण आदि उस पर डाले उनके साथ हनुमान पुष्पित दिव्य कल्पतरु के समान आकाश में उड़ता चला। २६७९

इमयमाल् वरैयै युऱ्ऱा ऩङ्गुळ विमैप्पि लोरुङ्
गमैयुडै मुऩिवर् मऱ्ऱु मऱ्ऱॆऱि कलन्दो रॆल्लाम्
अमैहनिऩ् करुम मॆऩ्ऱु वाळ्त्तिऩ रदऩुक् कप्पाल्
उमैयॊरु पाहऩ् वॆहुङ् गयिलैहण् डुवहै युऱ्ऱाऩ् 2680

इमयम् माल् वरैयै उऱ्ऱाऩ्–हिमालय के बड़े पर्वत पर पहुँचा; अङ्कु उळ–वहाँ रहनेवाले; इमैप्पिलोरुम्–अपलक और; कमै उटै मुऩिवर्–क्षमाशील मुनि;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱ्ऱुम्–और; अऱम् नॅऱि–धर्म-मार्ग पर; कलन्तोर् ऍल्लाम्–जानेवाले सभी ने; निन् करुमम् अमैक–तुम्हारा कार्य सफल हो; ऍन्ऱु वाऴ्त्तित्तर्–ऐसी शुभ कामना प्रगट की; अतत्तुक्कु अप्पाल्–उसके बाद; उमै ऑरु पाकन्–उमादेवी को एक अंग में रखनेवाले शिवजी; वॅकुम्–जहाँ रहते हैं; कयिलै कण्टु–उस कैलास को देखकर; उवकै उऱ्ऱान्–मुदित हुआ। २६८०

हनुमान बड़े हिमालय पर्वत पर गया। वहाँ के अपलक और क्षमाशील मुनियों और धर्मपथगामी साधुओं ने शुभकामना प्रकट की कि तुम्हारा कार्य सफल हो। उसके बाद वह कैलास को, जिस पर देवी उमा को अपने आधे अंग में स्थान दिये रहनेवाले शिवजी वास करते थे, देखकर मुदित हुआ। २६८०

वडकुण तिशैयिऱ् ऱोन्ऱु मऴुवला ऩाण्डु वैहुन्
दडवरै यदनै नोक्किन् तामरैच् चॅङ्गै गूप्पिप्
पडर्हुवान् ऱन्नै यन्न परमनुम् बरिविऱ् पार्त्तुत्
तडमुलै युमैक्कुक् काट्टि वायुविन् ऱनय नॅन्ऱान् 2681

वटकुणम् तिचैयिल्–उत्तर-पूर्व दिशा में; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; मऴुवलान्–परशुधर; आण्टु वॅकुम्–जहाँ शासन करते हुए विद्यमान हैं; तट बरै अतनै–विशाल पर्वत उसको; नोक्कि–देखकर; तामरै चॅम् कै कूप्पि–कमल-विशाल हस्त जोड़कर; पटर्कुवान् तन्नै–जानेवाले उस हनुमान को; अन्न परमनुम्–उन परमेश्वर ने; परिविन् पार्त्तु–प्रेम से देखकर; तटमुलै–पीनस्तनी; उमैक्कु काट्टि–उमा को दिखाकर; वायुविन् तनयन्–वायु का पुत्र; ऍन्ऱान्–कहा। २६८१

उत्तर पूरब में दर्शन देनेवाले परशुधर परमेश्वर के शासन-निवासस्थान उस विशाल कैलास पर्वत को देखकर हनुमान ने अरुणपद्महस्त जोड़कर नमस्कार किया। उन परमेश्वर ने भी उस पर स्नेहार्द्र दृष्टि डाली और पीनस्तनी उमा को दिखाकर कहा कि यह वायुपुत्र हनुमान है। २६८१

ऍन्निब नॅऴुन्द तन्मै यॅन्ऱुल हीन्ऱाळ् केट्प
मन्नव निरामन् ऱूदन् मरुन्दिन्मेल् वन्दान् वञ्जर्
तॅन्नह रिलङ्गैत् तीमै तीर्वदु तिण्णञ् जेर्न्दु
नन्नुद नामुम् वॅम्बोर् काणुदु नाळै यॅन्ऱान् 2682

इवन् ऍऴुन्त तन्मै ऍन्–इसके जाने का कारण क्या; ऍन्ऱु–ऐसा; उलकु ईन्ऱाळ् केट्प–जगज्जननी के पूछने पर; मन्नवन्–राजा; इरामन् तूतन्–राम का दूत; मरुन्तिन् मेल् वन्तान्–ओषधि लेने आया है; वञ्चर्–वंचक राक्षसों की; तॅन् नकर् इलङ्कै–दक्षिण में स्थित लंका की; तीमै–बुराई; तीर्बतु तिण्णम्–दूर होगी यह निश्चित है; नन् नुतल्–सुन्दर भाल वाली; नामुम्–हम भी; चेर्न्तु–मिलकर; नाळै–कल; वॅम् पोर्–घमासान लड़ाई; काणुतुम्–देखेंगे; ऍन्ऱान्–कहा। २६८२

जगज्जननी ने पूछा कि इसके जाने का कारण क्या है? परमेश्वर ने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहा कि यह श्रीराजाराम का दूत है, ओषधि लाने जा रहा है। अब राक्षसों की दक्षिण में स्थिता लंका की बुराई का अन्त निश्चित है। हे सुन्दर भालवाली भामिनी ! कल हम भी देवों के साथ मिलकर घमासान युद्ध देखें। २६८२

नामयो शऩैहळ् कॊण्ड दायिर नडुवु नीङ्गि
एमकूडत्ति नुम्ब रॆय्दिऩ ऩिऱुदि यिल्लाक्
काममे नुहरुञ् जॆल्वक् कडवुळ रीट्टङ् गण्डाऩ्
नेमियिऩ् विशैयिऱ् चॆल्वा ऩिडदत्ति ऩॆऱ्ऱि युऱ्ऱाऩ् 2683

नेमियिऩ् विचैयिल्–चक्रायुधगति में; चॆल्वाऩ्–जानेवाला; नामम् आयिरम् योचऩैकळ् कॊण्टतु–नामी हज़ार योजन की; नटुवु नीङ्कि–दूरी पार करके; एमकूटत्तिऩ् उम्पर्–हेमकूट के ऊपर; ऎय्तिनऩ्–पहुँचा; इऱुति इल्ला–अनंत; काममे नुकरुम्–भोगवादी; चॆल्वम् कटवुळर्–ऐश्वर्ययुक्त देवों की; ईट्टम्–भीड़; कण्टाऩ्–देखी; निटतत्तिऩ् ऩॆऱ्ऱि उऱ्ऱाऩ्–निषध की चोटी पर पहुँचा। २६८३

चक्रायुधगति में जानेवाला हनुमान एक हज़ार योजन का अन्तर पार करके हेमकूट के ऊपर आया। वहाँ अनन्त भोगमग्न देवों का जमघट देखा। फिर वह निषधपर्वत के ऊपर गया। २६८३

ऎण्णुक्कु मळवि लाद वऱिविऩो रिरुन्दु नोक्कुङ्
गण्णुक्कुङ् गरुदुन् दॆय्व मऩत्तिऱ्कुङ् गडिय ऩाऩाऩ्
मण्णुक्कुन् दिशैहळ् वैन्द वरम्बिऱ्कु मलरोऩ् वैहुम्
विण्णुक्कु मळवै याय मेरुविऩ् मीदु शॆऩ्ऱाऩ् 2684

ऎण्णुक्कुम्–सोचकर; अळवु इलात–मापने में असाध्य; अऱिविऩोर्–बुद्धिमान; इरुन्तु नोक्कुम्–बैठकर जिससे देखते हैं; कण्णुक्कुम्–उस ज्ञानचक्षु के लिए और; करुतुम्—ध्यान लगा सकनेवाले; तॆय्वम् मऩत्तिऱ्कुम्–दिव्य मन के लिए भी; कटियऩ् आऩाऩ्–न गोचर हो सके इतना वेगवान बना; मण्णुक्कुम्–पृथ्वी का; तिचैकळ् वैत्त वरम्पिऱ्कुम्–और दिगन्त का; मलरोऩ् वैकुम्–कमलासन का वासस्थान; विण्णुक्कुम्–सत्यलोक का; अळवै आय–जो मानदण्ड-सा रहा; मेरुविऩ् मीदु चॆऩ्ऱाऩ्–उस मेरु पर से गया। २६८४

अचिंत्य अपार ज्ञानियों के ज्ञानचक्षु और दिव्य ध्यान-क्षम मन के लिए भी अज्ञेय तीव्रता से हनुमान जा रहा था। फिर वह मेरु पर गया जो भूमि, दिगंत और कमलासन का सत्यलोक —इन सबका मानदंड-सा है। २६८४

यावदु निलैमैत् तऩ्मै यिऩ्ऩदॆऩ् ऱिमैया नाट्टत्
तेवरुन् दॆरिन्दि लाद वडमलैक् कुम्बरच् चॆऩ्ऱाऩ्
नावलम् बॆरुन्दी वॆऩ्ऩा नळिर्हडल् वळाह वैप्पिऱ्
कावऩ्मूऩ् ऱुलह मोदुङ् गडवुण्मा मरत्तॆक् कण्डाऩ् 2685

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इमैया नाट्टम्–अपलकचक्षु; तेवरुम्–देवों ने भी; निलैमै तन्मै इन्नतु ऍन्ऱु–गतिविधि क्या है ऐसा; यावतुम्–कुछ भी (जिसके बारे में); तॆरिन्तिलात–नहीं जाना; वट मलैक्कु–उस उत्तरी (मेरु) पर्वत के; उम्पर् चॆन्ऱान्–ऊपर गया; नळिर् कटल् वळाक वैपपिल्–शीतल सागरावृत पृथ्वी पर; पॆरु–सम्मान्य; नावलम् तीवु ऍन्ऱा–जम्बूद्वीप; कावल् मून्ऱु उलकम् ओतुम्–(जिसके नाम पर) सुरक्षित तीनों लोक कहते हैं उस; कटवुळ् मा मरत्तै–दिव्य बड़े तरु को; कण्टान्–देखा। २६८५

अपलक देव भी जिसकी सच्ची स्थिति नहीं जान सके, उस उत्तरी मेरु पर्वत के ऊपर हनुमान गया। वहाँ उस जामुन के दिव्य पेड़ को देखा, जिसके कारण पृथ्वी का त्रिलोकशंसित जम्बूद्वीप नाम पड़ा था। २६८५

अन्नमा मलैयि नुम्ब रुलहॆला मैत्त वण्णल्
नन्नह रदनै नोक्कि यदनडु नाप्प णामप्
पॊन्मलर्प् पीडन् दन्मे नान्मुहन् पॊलियत् तोन्ऱुम्
दन्मैयुङ् गण्डु कैयाल् वणङ्गिनान् ऱुरुमम् बोल्वान् 2686

तरुमम् पोल्वान्–धर्ममूर्ति; अन्न मा मलैयिन् उम्पर्–उस बड़े पर्वत के ऊपर; उलकु ऍलाम्–सारे प्रपंच की; अमैत्त अण्णल्–सृष्टि करनेवाले प्रभु ब्रह्मा के; नन्नकर् अतनै नोक्कि–श्रेष्ठ लोक को देखकर; अतन् नटु नाप्पण्–उसके ठीक मध्य में; नामम्–प्रसिद्ध; पॊन् मलर् पीटम् तन् मेल्–स्वर्णसुमन के पीठ पर; नान् मुकन्–चतुर्मुख; पॊलिय तोन्ऱुम् तन्मैयुम्–शोभा के साथ विराजमान थे वह हाल; कण्टु–देखकर; कैयाल् बणङ्कितान्–हाथ जोड़कर नमस्कार किया। २६८६

धर्ममूर्ति ने उस पर्वत पर लोकस्रष्टा ब्रह्मा का लोक देखा। उसके बीचोबीच स्वर्ण-कमल-पीठ पर चतुर्मुख विराज रहे थे। उस शोभा को देखकर उसने हाथ जोड़े। २६८६

तरुवन मॊन्ऱि वानोर् तलैत्तलै मयङ्गित् ताळप्
पॊरुवरु मुनिवर् वेदम् पुहळ्न्दुरै योदै बॊङ्ग
मरुविरि तुळब मौलि मानिलक् किळत्ति योडुन्
दिरुवॊडु मिरुन्द मूलत् तेवैयुम् वणक्कम् जॆय्दान् 2687

तरु वनम् ऒत्ऱि–तरुलसित वन के साथ; वानोर्–व्योमवासी; तलै तलै–स्थान-स्थान पर; मयङ्कि ताळ–भक्तिमुग्ध हो जहाँ सिर झुकाते हैं; पॊरु अरु मुनिवर्–अनुपम मुनि; वेतम् पुकळ्न्तु–वेदों से स्तुति करके; उरै–जो कह रहे थे वह; ओतै पॊङ्क–शब्द जहाँ फैल रहा था वहाँ; मा निलम् किळत्तियोटुम्–श्रेष्ठ भूदेवी के साथ; तिरुवॊटुम्–श्री (लक्ष्मी) देवी के साथ; मरु विरि तुळपम् मौलि–सुगन्ध-भरी तुलसी से अलंकृत मुकुटधारी; मूलम् तेवैयुम्–आदिकारण श्रीमन्नारायण को भी; वणक्कम् चॆय्तान्–नमस्कार किया। २६८७

फिर उस स्थान में भूदेवी व श्रीदेवी-सहित तुलसीमाला-किरीटालंकृत श्रीमन्नारायण के दर्शन किये, जहाँ तरुसंकुल वन था, जहाँ स्थान-स्थान पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देव भक्तिमुग्ध होकर सिर नवा रहे थे और जहाँ से मुनियों की वेदस्तुति का पावन शब्द सब जगह फैल रहा था। २६८७

आयदन् वडहीळ् पाहत् तायिर मरुक्क रान्ऱ्
काय्हदिर् परप्पि यञ्जु कदिर्मुहक् कमलङ् गाट्टित्
तूयपे रुलह मून्ऱुन् दूविय मलरिऱ् चूळ्न्द
शेयिळै पाहत् तॅण्डो ळॊरुवनै वणक्कञ् जॅय्दान् 2688

आयतन् वट कीळ् पाकत्तु–उसके उत्तर-पूर्व भाग में; आन्ऱ–उत्कृष्ट; आयिरम् अरुक्कर्–सहस्र सूर्य-सम; काय् कतिर्–(अन्धकार) निवारक किरणों के साथ; परप्पि–फैलाकर; अञ्चु कतिर् मुकम् कमलम् काट्टि–पाँच उज्ज्वल मुखकमल दिखाते हुए; तूय–पवित्र; पेर् उलकम् मून्ऱुम्–तीनों बड़े लोकों के वासी द्वारा; तूविय–अर्पित; मलरिल् चूळ्न्त–पुष्पों से आवृत; चॅम्मै इळै–लाल स्वर्णाभरणभूषित पार्वतीदेवी को; पाकत्तु–अपने अंग में रखनेवाले; ॲण् तोळ् ऒरुवनै–अष्टभुज देवता (रुद्र) को; वणक्कम् चॅय्तान्–नमस्कार किया। २६८८

उसके उत्तर-पूर्व में उसने अष्टभुज रुद्र के दर्शन किये, जो हज़ार सूर्यों की सम्मिलित प्रभा के समान ज्योतिर्मय थे; पाँच मुखकमल दरसा रहे थे; और जो पवित्र त्रिलोकवासियों द्वारा पूजा में अर्पित पुष्पों से आवृत थे। उनके बायें अर्धांग में लाल स्वर्ण से निर्मित आभरणभूषिता पार्वतीदेवी थीं। उसने उनको नमस्कार किया। २६८८

शन्दिर नतैय कॊऱ्ऱत् तनिक्कुडै तलैयिऱ् ऱाहच्
चुन्दर महळि रङ्गैच् चामरै तॅन्ऱु रूव
अन्दर वान नाड रडिदॊळ् मुरश मार्प्प
इन्दिर निरुन्द तन्मै कण्डुवन् दिऱैञ्जिप् पोनान् 2689

चन्तिरन् अनैय–चन्द्र-सम; कॊऱ्ऱम् तनि कुटै–अप्रतिम विजयछत्र; तलैयिऱ्ऱ आक–सिर के ऊपर था; चुन्तरम् मकळिर्–सुन्दर स्त्रियाँ; अकम् कै चामरै–जो अपने हाथ में लिये थीं वे चामर; तॅन्ऱल् तूव–मलयपवन (सी हवा) कर रहे थे; अन्तरम् वानम्–अन्तरिक्ष आकाश के; नाटर्–लोकवासी; अटि तॊळ–चरणवन्दना कर रहे थे; मुरचम् आर्प्प–भेरी बज रही थी; इन्तिरन् इरुन्त–(इस सन्निवेश में) इन्द्र जो विराजमान रहा वह; तन्मै कण्टु–शान देखकर; उवन्तु–खुश होकर; इऱैञ्चि–नमन करके; पोनान्–गया। २६८९

फिर उसने इन्द्र के दर्शन किये। इन्द्र के ऊपर चंद्र-सम विजयछत्र शोभ रहा था। सुन्दर अप्सराएँ चामर डुलाकर मलयपवन-सी वायु संचरित करा रही थीं। व्योमलोकवासी देव चरणों में नमन कर रहे थे। भेरियाँ बज रही थीं। यह वैभव देखकर हनुमान हुलसित हुआ और नमस्कार करके आगे गया। २६८९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूवलर् मरत्तैप् पोर्प्पप् पॊऱ्पहम् विरिन्दु पॊङ्गित्
तेवर्द मिरुक्कै यान मेरुविन् शिहरच् चेऱ्पिन्
मूवहै युलहुञ् जऴ्न्द मुरट्टिशै मुऱैयिर् ऱाङ्गुङ्
गावल रॆण्मर् निन्ऱ तन्मैयुन् दॆरियक् कण्डान् 2690

पू अलर्–विकसित पुष्पयुक्त; मरत्तै पोर्प्प–कल्पतरु को घेरे; पॊऱ्पु–छटा; अकम् विरिन्तु पॊङ्कि–जिससे निकलकर बढ़ी; तेवर् तम् इरुक्कै आन–जो देवों का वासस्थान था; मेरुविन् चिकरम् चेर्प्पिल्–मेरु के शिखर-स्थल में; मू वकै उलकुम् चूऴ्न्त–त्रिविध लोकों में फैली; मुरण् तिचै–परस्पर विपरीत दिशाओं को; मुऱैयिल् ताङ्कुम्–यथोचित रीति से धारण करनेवाले; ॲण्मर् काबलर्–अष्ट दिग्पालकों के; निन्ऱ तन्मैयुम्–स्थित रहने का हाल भी; तॆरिय कण्टान्–खूब देखा। २६९०

मेरुशिखर पर, जो पुष्पित कल्पक वृक्ष के समान शोभा का आगार अतः देवों का वासस्थान बना था, उसने आठों दिक्पालों को देखा जो विपरीतवर्ती दिशाओं को सँभालते थे। २६९०

अत्तडङ् गिरियै नीङ्गि यत्तलै यडैन्द वळ्ळल्
उत्तर कुरुवै युऱ्ऱा नॊळियवन् कदिर्ह ळून्ऱिच्
चॆऱ्ऱिय विरुळिन् ऱाक्कि विळङ्गिय शॆयलै नोक्कि
वित्तहन् विटिन्द दॆन्ना मुडिन्ददॆन् वेह मॆन्ऱान् 2691

अ तट किरियै–उस बड़े पर्वत को; नीङ्कि–छोड़कर; अ तलै–उस पार; अटैन्त वळ्ळल्–जो गया वह उदार प्रभु; उत्तर कुरुवै उऱ्ऱान्–उत्तरकुरु में गया; ऒळियवन् कतिर्कळ् ऊन्ऱि–सूर्य की किरणें स्थायी रहीं; चॆऱ्ऱिय–घने; इरुळ् इन्ऱु आक्कि–अँधेरे का अभाव बनाकर; विळङ्किय चॆयलै नोक्कि–शोभ रहा था उस (जादू के) काम को देखकर; वित्तकन्–विदग्ध ने; विटिन्ततु–प्रभात हो गया; ऎन्ना–कहकर; ऎन् वेकम् मुटिन्ततु–मेरा वेग भी बन्द हो गया; ऎन्ऱान्–कहा। २६९१

प्रभु हनुमान ने उस बड़े पर्वत को पार किया। उस तरफ़ उत्तर कुरु प्रदेश में आया। वहाँ देखा कि किरणमाली की किरणें खूब फैली हैं और अंधेरे का अभाव हो गया है। विदग्ध हनुमान ने सोचा कि प्रभात हो गया और मेरा वेग (बल भी) समाप्ति पर है। (उसे दुःख हुआ)। २६९१

आदिया नुणरा मुन्न मरुमरुन् दुदवि यल्लिर्
पादिया लन्नैय तुन्ब महर्ऱुवान् बावित् तेर्कुच्
चोदिया नुदयञ् जॆय्दा नुऱ्ऱदोर् तुणिद लाऱ्ऱेन्
एदियान् शॆय्व दॆन्ना विडरुऱ्ऱा निणैयि लादान् 2692

इणैयिलातान्–अनुपम हनुमान; आतियान् उणरा मुन्नम्–आदिपुरुष श्रीराम के होश में आने से पहले; अरु मरुन्तु उतवि–श्रेष्ठ औषध को देकर; अल्लिल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पातियाल्–अर्धरात्रि के अन्दर; अनैय तुन्पम् अकर्रुवात्–उनका वैसा दुःख दूर करने का; पावित्तेर्क्कु–विचार रखनेवाले मुझे (निराश करने); चोतियात् उतयम् चॅय्तात्–किरणमाली उदित हो गया; उर्रतु–हानि हो गयी; ओर् तुणितल् आर्रेन्–कोई निर्णय नहीं कर पाता; यान् चॅय्वतु ऍतु–अब मेरा करणीय कृत्य क्या है; ऍन्ना–ऐसा सोचकर; इटर् उर्रान्–दुःखी हुआ। २६९२

अनुपम हनुमान ने आप ही आप चिंता के साथ कहा— पुरुष पुरातन श्रीराम के जागने से पहले औषध देकर आधी रात के अंदर क्लेश दूर करने की बात मैंने सोची थी। पर अब ज्योतिष्मान सूर्य उग आया। बस ! मेरी इच्छा असफल हो गयी और मुझे कष्ट मिल गया। अब कोई निर्णय नहीं कर पा रहा। अब मुझे कर्तव्य क्या है ? । २६९२

काऱ्ऱिशै शुरुङ्गच् चॅल्लुङ् गडुमैयान् कदिरिन् शॅल्वन्
मेऱ्ऱिशै यळुवा नल्लन् विडिन्ददु मन्ऱु मेरु
माऱ्ऱिनान् वडपाऱ् ऱोन्ऱु मॅन्बदु मऱैहळ् वल्लोर्
शाऱ्ऱिना रॅन्नत् तुन्बन् दणिन्दनन् ऱवत्तु मिक्कान् 2693

तवत्तु मिक्कान्–तपोश्रेष्ठ; काल् तिचै चुरुङ्क–पवन दिशा में मन्द चले, ऐसा; चॅल्लुम्–चलनेवाला; कटुमैयान्–वेगवान हनुमान; कतिरिन् चॅल्वन्–किरणधनी; मेऱ् चिॅत–पश्चिम दिशा में; ऍळुवान् अल्लन्–उगनेवाला नहीं; विटिन्ततुम् अन्ऱु–प्रभात हुआ भी नहीं; मेरु–मेरु पर; माऱ्ऱिनान्–अपनी दिशा बदलकर; वटपाल् तोन्ऱुम् ऍन्पतु–उत्तर में; तोन्ऱुम्–पश्चिम में दिखायी देगा (सूर्य); ऍन्पतु–यह बात; मऱैकळ् वल्लोर्–वेदपारंगतों ने; चाऱ्ऱितार्–कहा है; ऍन्नत–ऐसा सोचकर; तुन्पम् तणिन्ततत्–दुःख शान्त कर लिया। २६९३

तपोश्रेष्ठ तथा पवन-गति-गामी हनुमान ने देखा कि सूर्य अपनी बायीं तरफ़ उगा है। उसने मुड़कर देखा तो सूर्य को दायीं ओर देखा। तब सोचने लगा कि किरणमाली पश्चिम दिशा में उगनेवाला नहीं। इसलिए प्रभात भी नहीं हुआ है। वेदज्ञों का कहना है कि (यह पुराणों का मत है कि मेरु के) उत्तर भाग में सूर्य के उदय की दिशा पश्चिम है। इसलिए उसने दुःख छोड़ दिया। २६९३

इरुवरे तोन्ऱि यॅन्ऱु मीऱिला वायु ळॅय्दि
ऑरुवरो डॊरुव रुळ्ळ मुयिरॊडु मॊन्ऱै याहिप्
पॊरुवरु मिन्बन् दुय्त्तुप् पुण्णियम् बुरिन्दोर् वैहुन्
दिरुवुऱै कमल मन्न नाट्टैयुन् दॅरियक् कण्डान् 2694

इरुवरे तोन्ऱि–(स्त्री-पुरुष) दो ही पैदा होकर; ऍन्ऱुम् ईऱु इला–कभी अन्त न होनेवाली; आयुळ् ऍय्ति–आयु पाकर; ऑरुवरोटु ऑरुवर्–परस्पर; उळ्ळम् उयिरॊटु–मन और प्राण के; ऑन्ऱै आकि–एक होकर; पॊरुवरुम् इन्पम् तुय्त्तु–अनुपम सुख भोगकर; पुण्णियम् पुरिन्तोर् वैकुम्–पुण्यकृत जहाँ रहते थे; तिरु उऱै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कमलम् अनुत–श्री जिस पर रहती हैं, उस कमल के समान; नाट्टैयुम् तॅरियक् कण्टान्–उत्तरकुरु प्रदेश को देखा (हनुमान ने)। २६९४

उस उत्तर कुरु देश में वे ही लोग रहते थे जो विना जन्म बदले, स्त्री और पुरुष का जन्म लेकर, एक-प्राण-मन हो अपार सुख-भोग में सर्वदा लीन थे। वे ऐसा पुण्य कर चुके थे। वह और भी श्रीलक्ष्मी के वास के कमल के समान था। हनुमान ने उस देश को खूब देखा। २६९४

वन्निनाट् टियपॊन् मौलि वानवन् मलरिन् मेलान्
कन्निनाट् टिरुवच् चेर्न्द कण्णनु माळुङ् गाणिच्
चॆन्निनाट् टॅरियल् वीरन् तियाहमा विनोदन् ऍय्वप्
पॊन्निनाट् टुवमै वैप्पप् पुलन्गॊळ नोक्किप् पोनान् 2695

वन्नि नाट्टिय–वह्नि पुष्पधारी; पॊन् मौलि–स्वर्णकिरीटी; वानवन्–देव शिवजी और; मलरिन् मेलान्–कमलासन; नाळ् नाळ्–नित्ययौवना, नित्यसुन्दरी; कन्नि तिरुवै चेर्न्त–कन्या श्री को अपने वक्ष में रखे हुए; कण्णनुम्–पद्मपत्र-विशालाक्ष; आळुम् काणि–(उनके द्वारा) शासित भूमि; चॆन्नि–सिर पर; नाळ् तॅरियल्–उसी दिन खिले पुष्पों की मालाधारी; वीरन्–वीर; तियाकमा विनोतन्–त्याग ही जिसका विनोद था उस चोळ राजा के; तॅय्वम् पॊन्नि नाटु उवमै–दिव्य कावेरी प्रदेश के समान; वैप्पै–भूभागों को; पुलन् कॊळ नोक्कि–चक्षुरिंद्रिय खूब जमाकर देखते हुए; पोनान्–गया। २६९५

वहाँ 'वह्नि' पुष्पधारी स्वर्णकिरीटी शिवजी, कमलासन ब्रह्मा और नित्यसुन्दरी नित्ययौवना श्री का वासस्थान जिनका वक्ष है, वे पद्माक्ष शासन करते थे। वहाँ के भूभाग उस 'त्याग-विनोद' चोळ राजा के दिव्य कावेरी प्रदेश के समान उर्वर थे, जो ताजे फूलों की माला सिर पर धारण करता था। हनुमान उनको आँख भर देखता गया। (एक चोळ राजा का विरुद 'त्यागविनोद' पड़ा था। यह कुलोत्तुंग चोळ ही था, यह एक धारणा है। अन्य लोगों का कहना है कि यह विरुद और कुछ राजाओं को भी मिला था। अतः इसके आधार पर कम्बन का काल-निर्णय करना उचित नहीं माना जाता।)। २६९५

विरियवान् मेरु वॆन्नुम् वॆऱ्पिनिन् मीदु शॆल्लुम्
पॆरियव नयनार् शॆल्वम् बॆऱ्ऱवन् पिऱप्पिऱ् पेर्न्दान्
अरियवा नुलह् मॆल्ला मळन्दनाळ् वळर्न्दु तोन्ऱुङ्
गरियव नॆन्न निन्ऱु नीलमाल् वरैयैक् कण्डान् 2696

वान् विरिय–आकाश चीरते हुए; मेरु ऍन्नुम् वॆऱ्पिनिन् मीतु–मेरु कथित पर्वत के ऊपर; चॆल्लुम्–जानेवाले; पॆरियवन्–महान; अयनार् चॆल्वम् पॆऱ्ऱवम्–ब्रह्मापद के लिए नामजद; पिऱप्पिल् पेर्न्तान्–आगे जिसका जन्म नहीं, उस हनुमान ने; उलकम् ऍल्लाम् अळन्त नाळ्–त्रिलोक मापने के उस दिन; वळर्न्तु तोन्ऱुङ्–जो बढ़ते दिखे;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरियवन् करियवन् ऍन्न-हरि-नाम के श्यामल देव के समान; निन्ऱ-जो खड़ा था उस; नीलम् माल् वरैयै कण्टान्-नीले बड़े पर्वत को देखा। २६९६

महान हनुमान ने, जो आकाश को चीरते हुए मेरु के पर्वत के ऊपर से जा रहा था, जो ब्रह्मा के पद के लिए नामज़द हो चुका था, जो आगे जन्म नहीं लेनेवाला था, नीले पर्वत को देखा जो त्रिलोक मापने के उस दिन बढ़े रहे त्रिविक्रमदेव के समान ऊँचा बढ़ा था। २६९६

अऱ्कुन्ऱ वलङ्गु शोदि यम्मलै यहलप् पोन्नान्
पॊऱ्कुन्ऱ मनैय तोळा नोक्किन्नान् पुलवन् शॊन्न
नऱ्कुन्ऱ मदनैक् कण्डा नुणर्न्दन नाह मुऱ्ऱ
अंऱ्कुन्ऱ वॆऱियुन् दॆय्व मरुन्दडै याळ मॆन्न 2697

अल् कुन्ऱ-अन्धकार को भी संकोच में डालते हुए; अलङ्कु चोति-रहनेवाली छटा से युक्त; अ मलै-वह पर्वत; अकल-दूर हो ऐसा; पोन्नान्-आगे गया; पॊन् कुन्ऱम् अनैय-स्वर्णपर्वत-सदृश; तोळान्-कन्धों वाले ने; नोक्किन्नान्-दृष्टि दौड़ाकर; पुलवन् चॊन्न-विद्वान (जाम्बवान) से कथित; नल् कुन्ऱम् अनतै-श्रेष्ठ पर्वत को; कण्टान्-देखा; तॆय्वम् मरुन्तु अटैयाळम्-दिव्य ओषधि का लक्षण; नाकम् मुऱ्ऱ-स्वर्ग भर में; ऍल् कुन्ऱ-सूर्य को फीका करते हुए; ऍऱियुम्-प्रकाश छिटकाना; ऍन्न-ऐसा अनुमान करके; उणर्न्तनन्-जान लिया। २६९७

वह पर्वत अँधेरे को भी संकोच में डालते हुए शोभ रहा था। पर्वतोपम कंधों वाला उसको पीछे छोड़ आगे गया। उसने जाम्बवान से निर्दिष्ट ओषधि-पर्वत को देखा। दिव्य ओषधि का लक्षण आकाशलोक भर में सूर्य के प्रकाश को निष्प्रभ बनाते हुए प्रकाश देना है। इस तर्क के आधार पर उसने अनुमान कर लिया कि यह वही पर्वत है। २६९७

पाय्न्दनन् पाय्द लोडु मम्मलै पाद लत्तुच्
चाय्न्ददु काक्कुन् दॆय्वञ् जलित्तन तडुत्तु वन्दु
काय्न्दन नीदा नियावन् करुत्तॆन्गॊल् कळऱु ऍन्न
आय्न्दव नुऱ्ऱ दॆल्ला मवऱ्ऱिनुक् करियच् चॊन्नान् 2698

पाय्न्तनन्-झपटा; पाय्तलोडुम्-झपटने पर; अम् मलै-वह पर्वत; पातलत्तु चाय्न्ततु-पाताल में चला गया; काक्कुम् तॆय्वम्-रक्षक देवता; चलित्तन-विचलित हुए; तडुत्तु वन्त-(बाद) रोकते हुए आये; काय्न्तन-गुस्सा दिखाकर; नी तान् यावन्-तुम हो कौन; करुत्तु ऍन्-अभिप्राय क्या है; कळऱुक-बताओ; ऍन्न-(उनके) पूछने पर; आय्न्तवन्-विवेकी (हनुमान) ने; उऱ्ऱ ऍल्लाम्-जो हुआ वह सब; अवऱ्ऱिनुक्कु-उन्हें; अरिय-समझाकर; चॊन्नान्-कहा। २६९८

हनुमान उस पर झपटा। तो वह पर्वत पाताल तक धँस गया। पालक देवता विचलित हुए। फिर गुस्सा करके आये और रोकते हुए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूछा कि तू है कौन ? तेरा अभिप्राय भी क्या है ? तब विवेकशील हनुमान ने अपने आने का सारा हाल बताया । २६९८

केट्टवै यैय वेण्डिऱ् ऱियऱ्ऱिप्पिऩ् कॆडाम लॆम्बाऱ्
काट्टॆऩ वुणर्त्ति वाळ्त्तिक् करन्दऩ कमलक् कण्णऩ्
वाट्टलै नेमि तोन्ऱि मऱैन्ददु मण्णि निऩ्ऱुऩ्
दोट्टऩ ऩनुमऩ् मऱ्ऱक् कुन्ऱिऩै वयिरत् तोळाल् 2699

केट्टवै–श्रोता देवता; ऐय–बाबा; वेण्टिऱ्ऱु इयऱ्ऱि–जो चाहते हो वह काम पूरा करके; पिऩ्–फिर; कॆटामल्–हानि किये बिना; ऍम्पाल् काट्टु–हमारे पास ला दिखाओ; ऍऩ–ऐसा; उणर्त्ति वाळ्त्ति–समझाकर आशीर्वाद देकर; करन्तऩ–छिप गये; कमलम् कण्णऩ्–कमलाक्ष श्रीविष्ण का; वाळ् तलै–तीक्ष्ण धारदार; नेमि–चक्र; तोन्ऱि–प्रगट होकर; मऱैन्ततु–छिप गया; वयिरम् तोळाल्–वज्र-दृढ़ हाथों से; अनुमऩ्–हनुमान ने; मऱ्ऱु–बाद; अ कुन्ऱिऩै–उस पर्वत को; मण्णिऩ् निऩ्ऱुम्–पृथ्वी से; तोट्टऩऩ्–जड़ से खोद लिया । २६९९

हनुमान का कहा सुनकर उन देवताओं ने कहा कि बाबा ! ले जाओ अपना काम पूरा करो और बाद उन्हें विना हानि के हमारे पास लौटाकर दिखा दो । फिर उसे आशीर्वाद देकर वे ओझल हो गये । तब कमलाक्ष श्रीविष्णु के चक्र ने भी आ दर्शन दिये और अपने को छिपा लिया । वज्रदृढ़ कंधों वाले हनुमान ने उस पर्वत को भूमि से मूल के साथ उखाड़ लिया । २६९९

इङ्गुनिऩ् ऱिऩ्ऩऩ मरुन्दॆऩ् ऱॆण्णिऩाऱ्
चिङ्गुमाऱ् कालमॆऩ् ऱुणर्न्द शिन्दैयाऩ्
अङ्गदु वेरॊडु मङ्गै ताङ्गिऩाऩ्
पॊङ्गिय विशुम्बिडैक् कडिदु पोहुवाऩ् 2700

इङ्कु निऩ्ऱु–यहाँ रहकर; इऩ्ऩऩ मरुन्तु–यह औषध है; ऍऩ्ऱु ऍण्णिऩाल्–ऐसा सोचते रहें तो; कालम् चिङ्कुम्–काल व्यर्थ जायगा; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उणर्न्त चिन्तैयाऩ्–समझकर सोचनेवाला; अङ्कु–तब; अतु–उस पर्वत को; वेरॊटुम्–मूल के साथ; अम् कै ताङ्किऩाऩ्–अपने सुन्दर हाथों में उठा लेकर; पॊङ्किय विचुम्पु इडै–विशाल आकाश में; कटितु पोकुबाऩ्–तेजी से (उड़ता) चला । २७००

हनुमान ने सोचा कि यहीं रहकर ओषधि के सम्बन्ध में सोचता रहूँ, तो समय व्यर्थ बीत जायगा । वह पर्वत को अपने लाल हाथ में उठाये झट विशाल आकाश में उड़ चला । २७००

आयिर मियोशऩै यहल मीदुयर्न्
दायिर मियोशऩै याळ्न्द दम्मलं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एयॅनु मात्तिरत् तॉरुहै येन्दिनान्
तायिन नुलहॅलान् दवळ्न्द शीर्त्तियान् 2701

उलकु ॲलाम्–संसार भर में; तवळ्न्त चीर्त्तिवान्–जिसकी कीर्ति फैली थी; आयिरम् योचनै दूरम् अकलम्–हज़ार योजन दूर; मऱ्पुऱत्तु उयर्न्तु–ऊपर उठकर; आयिरम् योचनै–हज़ार योजन; आळ्न्त्तु–जिसकी जड़ गयी थी, जो भूमि के अंदर; अ मलै–उस पर्वत को; ए ॲनुम् मात्तिरत्तु–'ए' कहने की देरी के अन्दर; ऑरुक्कै एन्तिनान्–एक हाथ में उठा लिया (उस हनुमान ने)। २७०१

हनुमान ने, जिसका यश सभी लोकों में व्याप्त था, हज़ार योजन ऊँचे और हज़ार योजन गहरे उस पर्वत को 'ऐ' कहने के समय के अन्दर उठा लिया। वह उसे अपने एक हाथ में उठा लिये लपक चला। २७०१

अत्तलै यन्नव नैय नायिनान्, इत्तलै यिरुवरुम् विरैवि नॅय्दिनार्
कैत्तलत् तालडि वरुडुङ् गालैयिल्, उत्तमऱ् कुऱ्ऱदै युणर्त्तु वामरो 2702

अ तलै अन्नवत्–वहाँ वह; अनैयन् आयिनान्–वैसा हुआ; इ तलै–यहाँ; इरुवरुम्–दोनों (जाम्बवान और विभीषण); विरैविन्–शीघ्र; ॲय्तिनार्–पहुँचे (श्रीराम के पास); कै तलत्ताल्–हाथों से; अटि वरुडुम् कालैयिल्–पैर सहलाते समय; उत्तमऱ्कु–पुरुषोत्तम का; उऱ्ऱनै–जो हुआ; उणर्त्तुवाम्–वह कहेंगे। २७०२

उधर उसकी स्थिति वह रही। इधर जाम्बवान और विभीषण दोनों शीघ्र श्रीराम के पास जा पहुँचे। उन्होंने जब श्रीराम के पैर सहलाये, तब श्रीराम का क्या हाल हुआ वह अब हम (कवि) बताएँगे। २७०२

वण्डॅन मडन्दैयर् मानत्तै वेरीडुङ्
गण्डन कॉळवरुङ् गरुणै तामॅनक्
कॉण्डन कॉडुप्पन वरङ्गळ् कोळिलाप्
पुण्डरी हत्तुणै तरुमम् बूत्तन 2703

वण्टु ॲन–भ्रमरों के समान; मटन्तैयर् मनत्तै–रमणियों के मनों को; वेरॉडुम् कण्टन–मूल के साथ जिन्होंने अपना बना लिया था; कॉळ वरुम्–सब उड़ेल ले, ऐसी; करुणै ताम् ॲन–करुणा यही है; कॉणटन–ऐसे गुण अपने में रखनेवाली; वरङ्कळ् कॉटुप्पन–वरदायी जो हैं; कोळ् इला–विषमता-रहित; पुण्टरीकम् तुणै–आँखों का कमलद्वय; तरुमम् पूत्तन–धर्म के समान खिल उठे। २७०३

उनकी कमल-सम आँखें, जो भ्रमरों के समान रमणियों के मनों को मूल के साथ अपना बना ले सकती थीं, जो सब जीवों के ग्रहण योग्य करुणा-रूप थीं और जो वरदायिनी थीं, धीरे-धीरे धर्म के समान विकसित हुईं। २७०३

नोक्किनन् करडिहट् करशु नोन्बुहळ्
आक्किय निरुदन मळ्द कण्णिनार्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तूक्किय तलैयित्तर् तॊऴुद कैयित्तर्
एक्कमुर् ऱुरुहिरुन् दिरङ्गु वार्हळै 2704

अऴुत कण्णित्तार्–रोती आँखों वाले; तूक्किय तलैयित्तर्–उठाए हुए सिर वाले; तॊऴुत कैयित्तर्–नमस्कार की मुद्रा में धरे हुए हाथों वाले; एक्कमुर्ऱु–तरसकर; अक्कु इरुन्तु–पास रहकर; इऱङ्कुवार्कळै–जो दुःख से पीड़ित हो रहे थे उन; करटिकट्कु अरचु–रीछों के राजा को; नोन् पुकऴ् आक्किय–और यश को बढ़ा लेनेवाले; निरुततुम्–राक्षस (विभीषण) को; नोक्कित्तन्–श्रीराम ने देखा। २७०४

श्रीराम ने आँखों को खोलकर रीछों के राजा जाम्बवान और बड़े यशस्वी राक्षसराजा विभीषण पर अपनी दृष्टि डाली। वे आँसू बहाते हुए अंजलिबद्ध हो पास खड़े, दुःख से रो रहे थे। २७०४

एविय कारिय मियऱ्ऱि यय्दिनै
नोविलै कॊल्लॆन नोक्क वीडणन्
तावरुम् बॆरुम्बुहऴ्च् चाम्बन् ऱन्नैयुम्
आविवन् दनैहॊलॆन् ऱुऴि नानरो 2705

वीटणन् नोक्कि–विभीषण को देखकर; एविय कारियम्–आज्ञापित कार्य; इयऱ्ऱि ऍय्तिनै–पूरा करके आये क्या; नोवु इलै कॊल्–कोई कष्ट नहीं है क्या; ऍन–ऐसा और; ता अरु–निर्दोष; पॆरु पुकऴ्–बड़े यशस्वी; चाम्पत् तन्नैयुम्–और जाम्बवान को देखकर; आवि वन्ततै कॊल्–जीवंत हो गये क्या; ऍनऱु–ऐसा; अरुळित्तान्–पूछने की कृपा की। २७०५

श्रीराम ने विभीषण से पूछा कि क्या तुम मेरी आज्ञा का काम पूरा कर आये ? कोई कष्ट तो नहीं है न ? फिर निर्दोष यशस्वी जाम्बवान से पूछने की कृपा की कि तुम जीवित हो गये ? । २७०५

ऐयत्मीर् नमक्कुऱ्ऱ वऴिवि दादलिन्
शॆय्वहै पिऱिदिला वुयिरिर् ऱीर्न्दवर्
उय्हिल रिनिच्चॆयऱ् कुरिय दुण्डॆनिऱ्
पॊय्यिलीर् पुहलुदिर् पुलमै युळ्ळत्तीर् 2706

ऐयत्मीर्–जी; पिऱितु चॆय्वकै इला–प्रत्यवायहीन रीति से; उयिरिल् तीर्न्तवर्–जो प्राणहीन हो गये; उय्किलर्–नहीं जीवित हुए; नमक्कु उऱ्ऱ–हमें प्राप्त; अऴिवु इतु–नष्ट यह; आतलिन्–इसलिए; इनि–अब; चॆयऱ्कु उरियतु उण्टु–करने योग्य काम कुछ है; ऍनिल्–तो; पुलमै उळ्ळत्तीर्–ज्ञानी मन वाले; पॊय्यिलीर्–असत्य न बोलनेवाले; पुकलुतिर्–कहो। २७०६

मित्रो ! प्रत्यवायहीन रीति से जो मरे हैं वे मर ही चुके हैं। हमारी बड़ी हानि है यह। अब हमें करने को कुछ हो, हे बुद्धिमान लोगो ! बताओ। २७०६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शीदैयॅन् ऱॊरुत्तिया लुळ्ळन् देम्बिय
पेदैयेन् शिऱुमैया लुऱ्ऱ पॅऱ्ऱियै
यादॅऩ वुणर्त्तुहे ऩुलहॊ डिव्वुऱाक्
कादैवन् बऴियॊडुन् दिरुत्तिक् काट्टिऩेन् 2707

चीतै ॲऩ्ऱ ऒरुत्तियाल्–सीता नाम की एक स्त्री के कारण; उळ्ळम् तेम्पिय–चित्तभ्रमित; पेतैयेन्–अज्ञ मुझे; चिऱुमैयाल्–अल्पता के कारण; उऱ्ऱ पॅऱ्ऱियै–जो मिली वह उपलब्धि; यातु ॲऩ–क्या; उणर्त्तुकेन्–बताऊँगा; इव् उलकॊडु उऱा–इस लोक से असंबद्ध; कातै–अपनी गाथा को; वऩ् पऴियॊटुम्–क्रूर निंदा के साथ; निऱुत्ति–लगवाकर; काट्टिऩेन्–दिखाया। २७०७

सीता नाम की स्त्री के कारण बुद्धिहीन मेरा मन विकृत हो गया था। क्षुद्र बुद्धि से मुझ पर क्या आया है—इसका क्या बताऊँ? मेरी गाथा संसार की रीति से बिलकुल अलग रह गयी और मैंने उसे निंद्य बना छोड़ा है। २७०७

मायैयिऩ् माऩॆऩ वॆम्बि वाय्मैयाल्
तूयऩ वुऱुदिहळ् शॊऩ्ऩ शॊऱ्कॊळेन्
पोयिऩऩ् पॅण्णुरै मऱादु पोऩदाल्
आयदिप् पऴियुडै याऩि यऩ्बिऩीर् 2708

अऩ्पिऩीर्–प्यारे; मायैयिऩ् माऩ्–माया का मृग; ॲऩ–ऐसा; ॲम्पि–मेरे लघु सहोदर के; वाय्मैयाल्–सच्चे रूप से; तूयऩ उऱुतिकळ् चॊऩ्ऩ–पवित्र हित में कहे; चॊल् केळेऩ्–वचन मैंने नहीं सुने; पोयिऩऩ्–(पकड़ने) गया; पॅण् उरै मऱादु–स्त्री का कहा इन्कार न करके; पोऩताल्–गया इसलिए; इ पऴि उटै–यह निन्दा-सहित; आऩि आयतु–हानि हो गयी। २७०८

प्यारो! मेरे भाई ने मायामृग के सम्बन्ध में सचेत किया था। पर उसके पवित्र और हितकारी वचनों पर मैंने ध्यान नहीं दिया। हिरन पकड़ने गया। स्त्री के वचन से न मुकरने का फल यह हुआ कि निन्दा भी आ गयी है और बड़ी हानि भी हो गयी है। २७०८

कण्डऩ ऩिरावणऩ् ऱऩ्ऩैक् कण्गळाल्
मण्डमर् पुरिन्दऩऩ् वलियि ऩारुयिर्
कॊण्डिल ऩुऱवॆलाङ् गॊडुत्तु माळनाऩ्
पण्डुडैत् तीविऩै पयन्द पण्बिऩाल् 2709

इरावणऩ् तऩ्ऩै–रावण को; कण्कळाल् कण्टऩऩ्–आँखों से देखा; वलियिऩ्–जोर के साथ; मण्टु अमर् पुरिन्तऩऩ्–घोर युद्ध किया (मैंने); नाऩ् पण्टु उटै–मेरा पूर्वजन्मकृत; तीविऩै–बुरा कर्म; पयन्त–फल देने लग गया; पण्पिऩाल्–उसके फलस्वरूप; उऱवु ॲलाम् माळ–सब नातेदारों को मरने; कॊटुत्तु–देकर; वलियिऩ्–जबरदस्ती; आरुयिर् कॊण्टिलऩ्–उसके प्राण न हर लिये मैंने। २७०९

रावण को मैंने अपनी आँखों देखा और उससे घमासान लड़ाई भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

की थी। पर पूर्वजन्मों के पापों का फल था कि मैंने उसके प्यारे प्राण नहीं हरे और मेरे सभी बन्धु-मित्र भी मर गये। २७०९

तेवर्दम् बडैक्कलन् दौड़त्तुत् तीयवन्
शावदु काण्डुमॅन् रिळवल् शाऱ्ऱवुम्
आवदै यिशॅन्दिल नऴिव वॅन्वयिन्
मेवुद लुऱुवदोर् विदियिन् वॅम्मैयाल् 2710

इळवल्–मेरा छोटा भाई; तेवर् तम् पटैकलम्–ब्रह्मा (देव) का अस्त्र; तौट्टुत्तु–चलाकर; तीयवन् चावतु काण्टुम्–खल (इन्द्रजित्) का मरना देख लें; ऍन्ऱु–ऐसा; चाऱ्ऱवुम्–जब बोला तब; अऴिवतु–नाश का समय; ऍन् वयित् मेवुतल् उऱुवतु–मेरे पास आ जाने के; ओर् बितियिन् वॅम्मैयाल्–प्रारब्ध की क्रूरता से; आवतै–हितकारी उससे; इचैन्तिलन्–सहमत नहीं हुआ। २७१०

मेरे छोटे भैया ने मुझसे सुझाया कि ब्रह्मास्त्र चलाकर खल मेघनाद का वध करा दूँगा। पर "विनाशकाल आ जाए मेरा" —यह क्रूर विधि का भयंकर विधान था और मैंने उसे अनुमति नहीं दी। २७१०

निन्ऱिल नुडनॅऱि पडैक्कु नीदियाल्
ऑन्ऱिय पूशनै यियऱ्ऱ वुन्निनैन्
पॊन्ऱिनर् तमरॅला मिळवल् पोयिनान्
वॅन्ऱिल नरक्कनै विदियिन् वॅम्मैयाल् 2711

निन्ऱिलन्–(भाई के साथ युद्धस्थल में) न खड़ा रहकर; ऍऱि पटैक्कु–चलाये जानेवाले अस्त्र-शस्त्रों की; नीतियाल्–उचित क्रम से; ऑन्ऱिय–युक्त; पूचनै इयऱ्ऱ–पूजा करने को; उन्निनैन्–सोचा था; बितियिन् वॅम्मैयाल्–विधि के क्रूर विधान से; तमर् ऍलाम् पॊन्ऱिनर्–अपने सभी लोग मर गये; इळवल्–मेरा छोटा भाई; अरक्कनै वॅन्ऱिलन्–राक्षस को न हराकर; पोयिनान्–चल बसा। २७११

मैं अपने भाई के साथ न रहा। मैंने यथोचित रीति से युद्ध में प्रयुक्त होनेवाले अस्त्र-शस्त्रों की पूजा करनी चाही। विधि की क्रूरता थी कि मेरे अपने सभी हत हो गये। मेरा भाई भी राक्षस को न हराने का दुःख लेकर मर गया। २७११

ईण्डिव णिरुन्दवै यियम्बु मेऴैमै
वेण्डुव दन्ऱिनि यमरिन् वीडिय
आण्डहै यन्बरै यमरर् नाट्टिडैक्
काण्डले नलम्बिऱ् कण्ड दिल्लैयाल् 2712

इण्टु–अब; इवण् इरुन्तु–यहाँ रहकर; इवै–ये बातें; इयम्पुम्–कहने की; एऴैमै–बुद्धिहीनता; वेण्टुवतु अन्ऱु–नहीं चाहिए; इनि–अब; अमरिन् वीटिय–युद्ध में हत; आण् तकै अन्बरै–वीर मित्रों को; अमरर् नाटु इटै–स्वर्गलोक में; काण्डले नलम्–देखना ही भला है; पिऱ कण्टतु इल्लै–दूसरा उपाय नहीं है। २७१२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अब यहाँ रहकर ऐसी दीन बातें करते रहने की बुद्धिहीनता की आवश्यकता नहीं। पर जो युद्ध में प्राण त्याग चुके, उन प्यारे वीरों को स्वर्ग में (देखने) पहुँचाने का कार्य करना ही भला होगा। फिर कोई रास्ता नहीं दीखता उन्हें यहाँ रख लेने का। २७१२

अॅम्बियैत् तुणैवरै यिऴन्दप् पालिनि
बॅम्बुपो ररक्करै मुरुक्कि वेरुत्
तम्बिनि निरावण नावि पाऴ्पडुत्
तुम्बरुक् कुदविमे लुरुव दॅन्नरो 2713

अॅम्पियै–अपने लघु सहोदर को; तुणै वरै–और मित्रों को; इऴन्तु–खोकर; अप्पाल्–बाद; इनि–आगे; बॅम्पु अरक्करै–नृशंसकारी राक्षसों को; पोर्–युद्ध में; मुरुक्कि–मारकर; वेर् अऱुत्तु–निर्मूल बनाकर; अम्पिनिल्–अपने शर से; इरावणन् आवि पाऴ् पटुत्तु–रावण के प्राण छुड़ाकर; उम्परुक्कु उतवि–देवों का उपकार करके; मेल् उऱुवतु अॅन्–बाद पाऊँ, ऐसा क्या है। २७१३

प्यारे भाई और मित्रों को मरने देने के बाद नृशंसकारी राक्षसों को युद्ध में हराऊँ, निर्मूल करूँ और अपने अस्त्र से रावण के प्राणों का अन्त करके देवों की सहायता करूँ भी तो लाभ क्या होगा ? । २७१३

इळैयव निऱन्दपिन् नॅवरु मॅन्नॅनक्
कळवरु शोर्त्तियॅन् नऱनॅन् नाण्मैयॅन्
गिळैयुऱु शुऱ्ऱमॅन् नरशॅन् गेण्मैयॅन्
विळैवुदा नॅन्मऱै विदियॅन् मॅय्म्मैयॅन् 2714

इळैयवन् इऱन्त पिन–लघुसहोदर के मरने के बाद; अॅनक्कु अॅवरुम् अॅन्–मेरे लिए कोई क्या है; अळवु अऱु कीर्त्ति अॅन्–अपार कीर्ति से क्या; अऱन् अॅन्–धर्म क्या; आण्मै अॅन्–पौरुष (वीरता) से क्या है; किळै उऱु–शाखायुक्त; चुऱ्ऱम् अॅन्–बन्धुओं से क्या; केण्मै अॅन्–मित्रों से क्या; अरचु अॅन्–राज्य से क्या; विळैवु तान् अॅन्–अन्य नतीजों से क्या; नान् मऱै विति अॅन्–चतुर्वेदविहित विधियों से क्या; मॅय्म्मै अॅन्–सत्य से क्या। २७१४

अपने छोटे भाई को खो देने के बाद किससे क्या वास्ता ? अपार यश का भी क्या होगा ? धर्मपालन, वीरता, शाखा-सम बन्धु-बान्धव, मित्र, राज्य या अन्य कोई लाभ —किससे क्या मतलब ? चतुर्वेदविहित चरित्र-पालन या सत्यनिष्ठा से भी क्या होगा ? । २७१४

इरक्कमुम् बाऴ्पड वॅम्बि यीऱुकण्
डरक्करै वॅन्ऱुनिन् ऱाण्मै याळ्वॅन्नेल्
मरक्कणवन् कळवनॅन् वञ्ज नॅनिनिक्
करक्कुम दल्लदोर् कडनुण् डाहुमो 2715

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरक्कमुम् पाऴ्पट–दया को व्यर्थ बनाते हुए; ऍम्पि ईऱ कण्टु–अपने छोटे भाई की मृत्यु देखकर; अरक्करै वॆन्ऱु–राक्षसों को जीतकर; निन्ऱु–रह कर; आण्मै आऴ्वॆतेल्–वीरता दिखाऊँ तो; मरम् कण्–काठ की आँखों का; वल् कऴ्वतेन्–चोर रहूँगा; वञ्चतेन्–वंचक भी रहूँगा; इनि–अब; करक्कुम् अतु अल्लतु–जीवन अन्त करने के सिवा; ओर्–एक; कटन् उण्टाकुमो–कर्तव्य रहेगा क्या। २७१५

मेरी दया व्यर्थ गयी। मेरा भाई मर गया। अब मैं राक्षसों को जीतकर वीरता दिखाने चलूँ, तो मेरी आँखें काठ की होंगी और मैं चोर रह जाऊँगा ! अब प्राणत्याग छोड़ कोई कर्तव्य है क्या ? । २७१५

तादैयै इऴन्दपिन् शडायु विऱ्ऱपिन्
कादलिन् ऱुणैवरु मुडियक् कात्तुऴल्
कोदऱु तम्बियुम् विळियक् कोळिलन्
शीदैयै युवन्दुळा नॆन्बर् शीरियोर् 2716

तातैयै इऴन्त पिन्–पिता को खोने के बाद; चटायु इऱ्ऱपिन्–जटायु के मरने के बाद; कातलिन् तुणैवरुम्–सभी प्यारों के; मुटिय–अन्त होने पर; कात्तु उऴल्–मेरे रक्षण में कष्ट जो उठाता रहा; कोतु अऱु तम्पियुम्–अनिंद्य भाई के भी; विळिय–मरने के बाद; चीतैयै उवन्तुळान्–सीता को चाहता है; कोळ् इलन्–सिद्धान्तरहित है; ऍन्पर्–कहेंगे; चीरियोर्–साधू लोग। २७१६

उत्तम साधू लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे ? राम ने पिता को खोया, जटायु को खोया। प्यारे मित्र चल बसे। उसके रक्षण में संकट उठाता जो रहा, वह प्यारा सहोदर मर गया। तो भी सीता के प्रेम के कारण प्राण रख रहा है। उसका कोई अच्छा सिद्धांत नहीं है ! । २७१६

वॆन्ऱन नरक्करै वेरुम् वीय्न्दऱक्
कॊन्ऱन नयोत्तियैक् कुऱुहिनेन् कुणत्
तिन्ऱुणैत् तम्बियै यिन्ऱि यानुळेन्
नन्ऱर शाळुमो शाल नन्ऱरो 2717

वॆन्ऱनन्–जीतकर; अरक्करै वेरुम् वीय्न्तु अऱ–राक्षसों का उन्मूलन करके; कॊन्ऱनन्–मारकर; अयोत्तियै कुऱुकिनेन्–अयोध्या जाकर; कुणत्तु–गुणी; इन् तुणै–अच्छे साथी; तम्पियै–छोटे भाई के; इन्ऱि–विना; यान् उळेन्–मैं रहूँगा (तो); अरचु आळुमा–राज्य करना; नन्ऱु–अच्छा होगा; चाल नन्ऱु–बहुत अच्छा होगा। २७१७

विजय पाऊँ, राक्षस को निर्मूल करूँ, फिर अयोध्या जाऊँ तो भी प्रिय साथी सहोदर को मरने देने के बाद राज्य का शासन करने लगूँ तो अच्छा होगा ! बड़ा अच्छा होगा ! । २७१७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पडियिऩ दादलि ऩियादुम् बार्क्किलऩ्
मुडिहुव ऩुडऩॆऩ मुडुक्किक् कूऱलुम्
अडियिणै वणङ्गियच् चाम्ब ऩाऴियाय्
नॊडिहुव दुळदॆऩ नुवल्व दायिऩाऩ् 2718

पटियिऩतु आतलिऩ्–मेरी स्थिति यह है, इसलिए; यातुम् पार्क्किलऩ्–कुछ भी नहीं सोचूँगा; उटऩ् मुटिकुवऩ्–झट मर जाऊँगा; अॆऩ–ऐसा; मुटुक्कि कूऱलुम्–त्वरा से कहते ही; अ चाम्पऩ्–उस जाम्बवान ने; अटि इणै वणङ्कि–चरणद्वय में नमन करके; आऴियाय्–चक्रधारी; नॊटिकुवतु उळतु–कहने के लिए कुछ है; अॆऩ–कहकर; नुवल्वतु आयिऩाऩ्–कहने लगा। २७१८

मेरी स्थिति यह है। फिर क्या सोचूँ ? न आगे देखूँगा, न पीछे; पर अपने प्राण त्याग दूँगा। श्रीराम ने जब ऐसा ज़ोर के साथ कहा, तब जाम्बवान ने उनके चरणद्वय में नमस्कार करके निवेदन किया कि हे चक्रधारी ! एक बात कहनी है। सुनने की कृपा करें। जाम्बवान बताने लगा। २७१८

उऩ्ऩैनी युणर्हिलै यडिय ऩेऩुऩै
मुऩ्ऩमे युणर्हुवऩ् मॊऴिद ऱीददु
अॆऩ्ऩॆऩि लिमैयव ऱॆण्णुक् कीऩमाम्
पिऩ्ऩरे तॆरिहुदि तरिविल् पॆऱ्ऱियाय् 2719

तॆरिविल् पॆऱ्ऱियाय्–अग्राह्य गुण वाले; उऩ्ऩै नी उणर्किलै–आपने अपने को नहीं पहचाना; अटियऩेऩ्–दास मैं; उऩै–आपको; मुऩ्ऩमे–पहले ही से; उणर्कुवऩ्–जानता हूँ; अतु मॊऴितल्–उसको कहना; तीतु–ग़लत है; अॆऩ् अॆऩिऩ्–क्योंकि; इमैयवर् अॆण्णुक्कु–देवों के विचार की; ईऩम् आम्–हानि होगी; पिऩ्ऩरे तॆरिकुति–बाद आप ही जान लेंगे। २७१९

हे अज्ञेय ! आप (अज्ञेय होकर भी) अपना ज्ञान नहीं रखते ! मैं आपको पहले से ही पहचानता हूँ। पर उसको प्रगट करना ग़लत होगा। क्योंकि देवों की बात बिगड़ जायगी। पीछे आप स्वयं पहचान लेंगे। २७१९

अम्बुयत् तवऩ्पडै याद ऱेऱिऩऩ्
उम्बियै युलप्परु मुरुवै मूऩ्ऱिड
वॆम्बुवॆङ् गळत्तिडै विऴुत्त वॆऩ्ऱियाऩ्
अॆम्बॆरुऩ् दलैववी ऱॆण्ण मुण्मैयाऩ् 2720

अॆम् पॆरुम् तलैव–हमारे श्रेष्ठ स्वामी; वॆम्पु–वीरों को संताप देनेवाले; वॆम् कळत्तु इटै–भयानक युद्ध के मैदान में; उम्पियै–आपके छोटे भाई को; उलप्पु अरु–अवध्य; उरुवै–वानरों के शरीर में; ऊऩ्ऱिट–खूब धँसकर; विऴुत्त–जो मरवाया;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆन्ऱियान्–ऐसी विजय वाला था, अतः; अम्पुयत्तवन् पटै आतल्–कमलासन का शर है यह; तेरिन्तन्–जाना मैंने; ईतु–यह; उण्मै–सच है। २७२०

हमारे महान स्वामी ! वीरों को संतप्त करनेवाले भयंकर युद्धस्थल में आपके भाई को और अप्रतिहत वानरों के शरीरों में लगकर उनको इन्द्रजित् का अस्त्र मारने में सफल हो सका। तभी मैंने समझ लिया कि वह अंबुजासन का अस्त्र है। यह बात सच है। २७२०

अन्नवन् पडैक्कल ममरर् तान्नवर्
तन्नैयुम् विडिनुयिर् कुडिक्कुन् दऱ्पर
उन्नैयॊन् ऱिळैत्तिल दॊळिन्दु नीङ्गियदु
इन्नमु मुवमैयॊन् ऱॆण्ण वेण्डुमो 2721

अन्नवन् पटै कलम्–उनका अस्त्र; विटिन्–प्रेरित हो तो; अमरर् तान्नवर् तन्नैयुम्–देवों और दानवों को; उयिर् कुटिक्कुम्–प्राणहीन कर देगा; तत्पर–परात्पर; उन्नै ऒन्ऱु इळैत्तिलतु–आपका कुछ (अहित) नहीं किया; ऒळिन्तु नीङ्कियतु–छोड़कर अलग हो गया; इन्नमुम्–और भी; उवमै ऒन्ऱु–कोई उपमा; ऎण्ण वेण्टुमो–सोचना चाहिए क्या। २७२१

ब्रह्मास्त्र देवों और दानवों का भी अंत कर देगा। परात्पर ! उसने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा। वह छोड़कर अलग चला गया। फिर क्या प्रमाण चाहिए ? । २७२१

पॆरुन्दिऱ लनुमनीण् डुणर्वु पॆऱ्ऱुत्तान्
अरुन्दुयर् मुडिक्कुऱु मळवि लाऱ्ऱलान्
मरुन्दिऱैप् पॊळुदिनिऱ् कॊणर्हु वायॆन्नप्
पॊरुन्दिन्नन् वडतिशैक् कडिदु पोयिन्नान् 2722

पॆरु तिऱल् अनुमन्–महाबली हनुमान; ईण्टु–अब; उणर्वु पॆऱ्ऱु–प्रज्ञा पाकर; अरु तुयर्–अवार्य दुःख को; मुटिक्कुऱुम्–निवारण करने की; अळवु इल् आऱ्ऱलान्–अपार शक्ति रखनेवाले (उस) से; यान्–मैंने; मरुन्तु–संजीवनी औषध को; इऱै पॊळुतिनिल्–बहुत कम समय में; कॊणर्कुवाय्–लाओ; ऎन्न–कहा तो; पॊरुन्तिन्नन्–सम्मत होकर; तान्–वह; वट तिचै–उत्तर दिशा में; कटितु पोयिन्नन्–तुरन्त गया। २७२२

महावीर हनुमान होश में आ गया। उस अपार बली को यह संकट दूर करने के निमित्त मैंने संजीवनी को एक पल में लाने भेजा। वह भी सम्मत हो उत्तर में गया है। २७२२

पनिवरै कडन्दनन् परुप्प दङ्गळिन्
तनियर शिन्पुऱन् दविरच् चार्न्दुळन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्नियॊरु कणत्तिन्वन् दॆय्दु मीण्डुरुन्
दुन्निवरु तुन्बनी तुऱत्ति तॊल्लैयोय् 2723

पन्नि वरॆ कटन्तनन्-हिमगिरि पार कर; परुप्पतङ्ककळिन्-पर्वतों के; तन्नि अरचिन् पुऱम् तविर-अकेले राजा (मेरु पर्वत) को पीछे छोड़; चार्न्तुळन्-गया है; ईण्टु-यहाँ; ऒरु कणत्तिन्-एक पल में; वन्तु ऎय्तुम्-आ जायगा; तॊल्लैयोय्-पुरुष पुरातन; उऱुम्-होनेवाला; तुन्नि वरु-चित्तविलोडनकारी; तुन्पम्-दुःख; नी-आप; तुऱत्ति-छोड़ दें। २७२३

वह हिमालय के उस पार, गिरिराज मेरु के भी आगे गया है। अभी एक पल में आ जायगा। पुरुष पुरातन! चित्ताक्रांतकारी दुःख को छोड़ दीजिएगा। २७२३

यान्नला लॆन्दैया युलहै यीन्ऱुळान्
दान्नलाऱ् चिवन्नला नॆमि ताङ्गिय
कोन्नला लियावरु मुणरुङ् गोळिलर्
वॆन्निलान् मॆन्निया मरुन्दै मॆय्युऱ् 2724

वॆन्निलान् मॆन्निया-वसंतराज मन्मथ (निभ); यान् अलाल्-मेरे सिवा; ऎन्तैयाय्-मेरे पिता जो; उलकॆ ईन्ऱुळान्-लोकजनक; तान् अलाल्-(ब्रह्मा) के सिवा; चिवन् अलाल्-शिव के सिवा; नॆमि ताङ्किय-चक्रधर; कोन् अलाल्-अधिपति श्रीविष्णु के सिवा; यावरुम्-कोई भी; मरुन्तॆ-उस औषध को; मॆय् उऱ उणरुम्-यथार्थ रूप से जानने की; कोळ् इलर्-बुद्धि नहीं रखते। २७२४

वसंतऋतु के देवता मन्मथ के जैसे मनोरम रूपवाले! मुझे, मेरे पिता ब्रह्मा को, शिव और चक्रधारी को छोड़ अन्य उस संजीवनी औषधों के सम्बन्ध में यथार्थ नहीं जानते। २७२४

आर्हलि कडैन्दना ळमिर्दिन् वन्दन्न
कार्निऱत् तण्णऱ नॆमि काप्पन्न
मेरुवि नुत्तर कुरुविन् मेलुळ
यारुमुऱ् ऱुणर्हिला वरण मॆय्दिन्न 2725

आर् कलि-समुद्र को; कटैन्त नाळ्-जिस दिन मथा गया; अमिर्तिन् वन्तन्न-अमृत के साथ प्रकट हुए; कार् निऱत्तु अण्णल् तन्-मेघश्याम के; नॆमि-चक्र द्वारा; काप्पन्न-रक्षित हैं; मेरुविन्-मेरु के उस तरफ़; उत्तर कुरुविन् मेल् उळ-उत्तर कुरु प्रदेश में हैं; यारुम्-कोई भी; उऱ्ऱु उणर्किला-पास जा समझ न सकें; अरणम् ऎय्तिन्न-ऐसी सुरक्षा-प्रबन्ध के अन्दर हैं। २७२५

वे ओषधियाँ समुद्रमथन के दिन अमृत के साथ प्रगट हुई थीं। मेघ-श्याम श्रीविष्णु के चक्र के संरक्षण में हैं। मेरु के उत्तर के उत्तर-कुरुप्रदेश के उस पार हैं। उनका सुरक्षाप्रबन्ध ऐसा है कि कोई उनके पास पहुँच उन्हें जान न सके। २७२५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तोन्ऱिय नाण्मुद लियारुन् दॊट्टिल
आन्ऱपे रण्णले यवऱ्ऱि नाऱ्ऱल्हेळ्
मून्ऱॆन वॊन्ऱिय वुलह मुन्नैनाळ्
ईन्ऱव निऱप्पिनु मावि यीयुमाल् 2726

तोन्ऱिय नाळ् मुतल्–जन्म से लेकर; यारुम् तॊट्टिल–(ये) किसी से छुई नहीं गयीं; आन्ऱ पेर् अण्णले–बड़े यशस्वी प्रभु; अवऱ्ऱिन् आऱ्ऱल् केळ्–उनकी शक्ति सुनिए; मून्ऱु ऎन ऒन्ऱिय–तीन का समूह; उलकम्–जो है उन लोकों को; मुन्नै नाळ्–प्राचीन दिन में; ईन्ऱवन्–जिन्होंने बनाया वे ब्रह्मा; इऱप्पिनुम्–मर जायें तो भी; आवि ईयुम्–उन्हें जिला देंगे। २७२६

प्रगट होने के दिन से आज तक वे किसी से भी छुई नहीं गयीं। महान यशस्वी! उनकी शक्ति सुनिए। त्रिलोकसर्जक ब्रह्मा भी मर जायँ उनको भी वे प्राणवंत कर सकती हैं। २७२६

शल्लिय महऱ्ऱुव दॊन्ऱु शन्दुहळ्
पुल्लुऱप् पॊरुत्तुव दॊन्ऱु पोयिन
नल्लुयिर् नल्हुव दॊन्ऱु नन्निऱन्
दॊल्लैय दाक्कुव दॊन्ऱु तॊल्लैयोय् 2727

तॊल्लैयोय्–पुरुष पुरातन; ऒन्ऱु–एक; चल्लियम् अकऱ्ऱुवतु–शल्य-निवारक है; ऒन्ऱु–एक; चन्तुकळ्–जोड़ों को; पुल् उऱ–खूब; पॊरुत्तुवतु–जोड़नेवाला है; ऒन्ऱु–एक; पोयिन नल् उयिर्–गये हुए अच्छे प्राणों को; नल्कुवतु–लौटाने वाला है; ऒन्ऱु–और एक; नल् निऱम्–श्रेष्ठ शरीर को; तॊल्लैयतु आक्कुवतु–पुराना रूप देनेवाला है। २७२७

पुरुष पुरातन! उनमें एक शल्य-निवारक है। दूसरी टूटे जोड़ों को जोड़नेवाली है। तीसरी प्राण दिलाने में समर्थ है। चौथी विकृत शरीर को यथावत् रूप दिला सकती है। (वाल्मीकी में इनके नाम विशल्यकरणी, संतानकरणी, मृतसंजीवनी और सावर्ण्यकरणी दिये गये हैं।)। २७२७

वरुवदु तिण्णनी वरुन्दन् मारुदि
तरुनॆऱि तरुममे काट्टत् ताळ्हलन्
अरुमैय दन्ऱॆन्ऩा वडिव णङ्गिनान्
इरुमैयुन् दुडैप्पव नेम्ब लॆय्दिनान् 2728

वरुवतु तिण्णम्–(औषध का) आना निश्चित है; नी वरुन्तल्–आप दुःख न करें; मारुति–मारुति; तरुममे–धर्मदेवता के ही; तरु नॆऱि काट्ट–आने का मार्ग दिखाते; ताळ्कलन्–विलम्ब न करके (आ जायगा); अरुमैयतु अन्ऱु–दुस्साध्य नहीं; ऎन्ऩा–कहकर; अटि वणङ्किनान्–चरणों में नमन किया; इरुमैयुम् तुटैप्पवन्–कर्मद्वयमेटक; एम्पल् ऎय्तिनान्–खुश हुए। २७२८

वह आ जायगा, यह निश्चित है। मारुति धर्मदेवता के ही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पथप्रदर्शन में अविलम्ब ले आ जायगा। उसके लिए कोई असाध्य नहीं। यह कहकर जाम्बवान ने उनके चरणों में नमस्कार किया। यह सुनकर कर्मद्वयमेटक श्रीराम मुदित हुए। २७२८

पॊन्मलै मीदुपोय्प पोह बूमियिन्
नन्मरुन् दुदवुमॆन् ऱुरैत्त नल्लुरैक्
कन्वय मिल्लैयॆन् ऱयिर्क्किन् ऱेनलेन्
ऍन्नलुम् वडदिशै यॆळुन्द दङ्गॊलि 2729

पॊन् मलै मीतु पोय्–स्वर्ण-पर्वत पर जाकर; पोकम् पूमियिन्–भोगभूमि से; नन् मरुन्तु–श्रेष्ठ संजीवनी औषध; उतवुम्–(लाकर) उपकार करेगा; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैत्त नल् उरैक्कु–जो (शब्द) कहे (तुमने) उन शब्दों के लिए; अन्वयम् इल्लै–अर्थ नहीं; ऍन्ऱु–ऐसा; अयिर्क्किन्ऱेन् अलेन्–सन्देह नहीं करता; ऍन्नलुम्–(ऐसा श्रीराम के) कहते-कहते; अङ्कु–वहाँ; वट तिचै–उत्तर दिशा में; ऒलि–शब्द; ऍळुन्ततु–उठा। २७२९

उन्होंने कहा कि तुमने जो कहा कि हनुमान स्वर्णगिरि के भी उस पार भोग (स्वर्ग) भूमि भी पार कर श्रेष्ठ संजीवनी औषधों को ला देगा, उसमें मैं संशय ही नहीं करता। ज्योंही उन्होंने यह कहा, त्योंही उत्तर में कोई शब्द सुनायी दिया। २७२९

कडल्हिळर्न् दॆळुन्दुमेऱ् पडरक् कार्वरै
इडैयिडै परिन्दुविण् णेऱ विऱ्ऱिडै
तडैयिला दुडऱ्ऱुऱु चण्ड मारुदम्
वडदिशै तोन्ऱिय मऱुक्क मुऱ्ऱदाल् 2730

कटल्–समुद्र; किळर्न्तु ऍळुन्तु–उमँग उठकर; मेल् पटर–तीरों पर बहा; कार् वरै–मेघाश्रित पर्वत; इटै इटै परिन्तु–बीच-बीच में टूटकर; विण् एऱ–आकाश में गये; इटै इऱ्ऱु–बीच में टूटकर; तटै इलातु–अबाध रूप से; उटऱ्ऱुऱु–बहने वाला; चण्ट मारुतम्–प्रचंड मारुत; वट तिचै तोन्ऱिय–उत्तर दिशा में जो प्रकट हुआ वह; मऱुक्कम् उऱ्ऱ–अस्त-व्यस्त हुआ। २७३०

समुद्र उमग उठा और तीर पर बहा। मेघाश्रित पर्वत टूटकर आकाश में उछल उठे। उत्तर से अबाध तथा निरंतर बहनेवाले प्रचण्ड-मारुत से सब स्थानों में अव्यवस्था हुई। २७३०

मीन्गुलङ् गुलैन्दुह वॆयिलिन् मण्डिलन्
दान्गुलैन् दुयर्मदि तळुवत् तन्नुळै
मान्गुलम् वॆरुक्कॊळ मयङ्गि मण्डिवान्
तेन्गुलङ् गलङ्गिय नऱविऱ् चॆन्ऱवाल् 2731

मीन् कुलम्–उडुगण; कुलैन्तु उक–अव्यवस्थित होकर च गये; वॆयिलिन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मण्टिलम्तान्–सूर्यमण्डल; कुलैन्तु–लटकर; उयर् मति तऴुय–ऊपर चन्द्र से लग गया; तन् उऴै–(चन्द्र के) अपने मध्य रहनेवाले मृग से; मान् कुलम् वॆरु कॊळ–मृगकुल भयभीत हुए; तेन् कुलम् कलङ्किय–भ्रमरकुल तितर-बितर हुए जैसे; वान् मेकम् मण्टि–आकाश के मेघ मिले और; मयङ्कि चॆन्ऱु–मिश्रित होकर चले। २७३१

उडुगण अस्त-व्यस्त हो गिर गये। सूर्यमण्डल गड़बड़ाकर चन्द्र से मिल गया। चन्द्र के मध्य जो हिरन था, उससे मृगकुल डरे। आकाश के मेघ छत्ते पर भ्रमरकुल अस्त-व्यस्त हो गये हों जैसे आपस में मिल मिश्रित हो संचार करने लगे। २७३१

वेर्त्तुणर् तूरॊडु विशुम्बॆ मीच्चॆलप्
पोर्त्तनत मलैयॊडु मरनु मुन्बुपोल्
तूर्त्तनत वेलैयॆक् कालिन् ऱोन्ऱलुम्
आर्त्तनत नऩैयव ररन्द याऱ्ऱुवान् 2732

वेर् तुणर् तूरॊटु–जड़, गुच्छों और शाखाओं के साथ; मी चॆल–आकाश में गये, इसलिए; पोर्त्तनत–ढाँपकर; मलै यॊटु मरनुम्–पर्वत और तरु; मुन्पु पोल्–पहले (सेतुबन्धन के समय में) जैसे; वेलैयॆ तूर्त्तनत–समुद्र को सुखा गये; कालिन् तोन्ऱलुम्–वायुपुत्र ने भी; अऩैयवर् अरन्तॆ आऱ्ऱुवान्–उनके दुःख को दूर करता हुआ; आर्त्तनत–उच्च घोष किया। २७३२

पर्वत और तरु अपने मूलों, गुच्छों और शाखाओं के साथ ऊपर जाकर आच्छादित करते हुए समुद्र पर गिरे और उन्होंने पहले बने सेतु के समान समुद्र को जलहीन कर दिया। मारुति ने भी श्रीराम आदि के दुःख को दूर करने के विचार से बड़ा नाद उठाया। २७३२

मऴैहळुङ् गडल्हळु मऱ्ऱु मुऱ्ऱुमण्
णुऴैयवुम् विशुम्बवु मॊलित्तऱ् कॊत्तुळ
कुऴीइयिन कुमुऱिन कॊळ्है कॊण्डवाल्
उऴुवॆयिन् शिनत्तव नार्त्त वोशैये 2733

उऴुवॆयिन् चिनत्तवन्–व्याघ्र की तरह क्रुद्ध हनुमान का; आर्त्त ओचै–उठाया हुआ नाद; मण् उऴैयवुम्–पृथ्वीवासी; विचुम्पवुम्–आकाशवासी; ऒलित्तऱ्कु ऒत्तु उळ–शब्द कर सकनेवाले; मऴैकळुम् कटल्कळुम्–मेघ और सागर; मऱ्ऱुम् मुऱ्ऱुम्–अन्य सभी; कुऴीइयन्–इकट्ठे होकर; कुमुऱिन कॊळ्कॆ कॊण्ट–शब्द करें तो जो होगा वही रहा। २७३३

व्याघ्र के समान रोषपूर्ण हनुमान का नाद भूलोक और आकाश के गर्जन करने के स्वभाव वाले मेघों, सागरों और अन्य सभी चीज़ों के सम्मिलित नाद के समान था। २७३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍऱितिरैप् पॅरुङ्गडल् कडैय वेऱ्ऱनाळ्
शॅऱिशुडर् मन्दरन् दरुदि शॅन्ऱॅन
वॅऱिदुहॉ लॅनक्कॉडु विशुम्बिन् मीच्चॅलुम्
उऱुवलिक् कलुळ्ळ ऍॉत्तुत् तोन्ऱिनान् 2734

ऍऱि तिरै–उछलती तरंगों के; पॅरु कटल्–बड़े (क्षीर-) सागर को; कटैय–मथने के लिए; एऱ्ऱ नाळ्–(जिस दिन देव और असुर) सम्मत हुए उस दिन; चॅऱि चुटर्–घने प्रकाश वाले; मन्तरम् चॅन्ऱु तरुति–मन्दर पर्वत लाकर दो; ऍन–कहने पर; वॅऱितु कॉल्–(हमेशा यह स्थान) रिक्त ही रहा क्या; ऍन–ऐसा लोग कहें इस रीति से; कॉटु–लेकर; विशुम्पिन् मी चॅलुम्–आकाश में ऊपर चलनेवाले; उऱु वलि–महाबली; कलुळ्ळ ऍॉत्तु तोन्ऱिनान्–गरुड़ के समान ही दिखा। २७३४

जब उछलती तरंगों के क्षीरसागर को मथने के काम में देव और दानव प्रवृत्त हुए, तब गरुड़ से कहा गया कि घने प्रकाश से शोभनेवाले मन्दर पर्वत को ला दो। गरुड़ ने उसके स्थान को रिक्त करते हुए उस पर्वत को उखाड़ा। तब महाबली वह गरुड़ आकाश में जाते हुए जैसे लग रहा था, वैसे ही हनुमान अब लगा। २७३४

पूदलत् तरवॉडु मलैन्दु पोऩनाळ्, ओदिय वॅन्ऱिय ऩुडऱु मूऱ्ऱत्तन्
एदमि लिलङ्गैयङ् गिरिहॉ डॅय्दिय, तादैयु मॉत्तऩ ऩुवमै तऱ्किलात् 2735

पूतलत्तु–भूलोक में; अरवॉटु मलैन्तु पोऩ नाळ्–जब आदिशेष नाग से युद्ध करने गया उस दिन; ओतिय वॅन्ऱियऩ्–प्रशंसित विजयी; उटऱुम् ऊऱ्ऱत्तऩ्–बहने की शक्ति रखनेवाले; एतम् इल् इलङ्कै–निर्दोष लंका में; अम् किरि कॉटु–और जो सुन्दर त्रिकूट पर्वत को ले; ऍय्तिय–आया था; तातैयुम् ऍॉत्तऩऩ्–उस अपने पिता के समान भी रहा; उवमै तऱ्कु इलात्–अपनी सानी न रखनेवाला हनुमान। २७३५

आदिशेष का एक दिन वायु से टक्कर हो गया था। उस दिन वायुदेव प्रकीर्तित विजयी हो गया। वायु समरसमर्थ बली भी था। वही निर्दोष लका में त्रिकूट पर्वत लाया था। अप्रतिम हनुमान अपने पिता, उसी वायुदेव के समान लगा। २७३५

तोन्ऱिऩ नॅऩ्ऩुमच् चॉल्लिऩ् मुऩ्ऩम्वऩ्
दून्ऱिऩ निलत्तडि कडवु ळोङ्गऱान्
वाऩ्ऱऩि निऩ्ऱदु वञ्ज रूर्वर
एऩ्ऱिल दादलि ऩऩुम ऩॅय्दिऩऩ् 2736

तोन्ऱिऩऩ्–आ गया; ऍऩ्ऩुम्–ऐसे; अ चॉल्लिऩ्–उस शब्द के; मुऩ्ऩम् वऩ्तु–पहले ही आकर; निलत्तु अटि ऊन्ऱिऩऩ्–भूमि पर पैर रखा; अनुमऩ् ऍय्तिऩऩ्–हनुमान आ गया; वञ्चर् ऊर् वर–वंचकों की बस्ती में आना; एऩ्ऱिलतु आतलिऩ्–पसंद नहीं था, इसलिए; कटवुळ् ओङ्कल्–दिव्य (ओषधि-) पर्वत; वाऩ् ततिल्–आकाश में; निऩ्ऱतु–खड़ा रह गया। २७३६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'आ गया' —जाम्बवान के यह शब्द कह चुकने से पूर्व ही हनुमान ने ज़मीन पर पैर रख लिया। वह ओषधिपर्वत वंचकों के नगर में आना पसन्द न करके ऊपर आकाश में ही रह गया। २७३६

कार्रुवन् दशैत्तलुङ् गडवु णाट्टवर्
पोर्ऱिऩर् विरुन्दुवन् दिरुन्द पुण्णियर्
एर्ऱमुम् बॆरुवलि यऴहॊ डॆय्दिऩार्
कूर्ऱिऩै वॆन्ऱुद मुरुवुङ् गूडिऩार् 2737

कटवुळ् नाट्टवर्–देवलोकवासियों से; पोर्ऱिऩर्–शंसित; विरुन्तु वन्तिरुन्त–अतिथि के रूप में आगत; पुण्णियर्–पुण्यात्मा; कार्ऱु वन्तु–पवन के आकर; अचैत्तलुम्–हिलाते ही; एर्ऱमुम्–उत्कृष्टता और; पॆरु वलि–बड़ा बल और; अऴकॊटु–सुन्दरता इनको; ऎय्तिऩार्–प्राप्त करके; कूर्ऱिऩै वॆन्ऱु–मृत्यु को जीतकर; तम् उरुवुम् कूटिऩार्–अपने शरीरों से मिल गये। २७३७

देवलोक में उनसे प्रशंसित मेहमान होकर जो गये थे, वे सुकृत वानर पवन के हिलाते ही यम को हराकर उत्कृष्टता और सुन्दरता के साथ अपने पूर्व रूप में जाग पड़े। २७३७

अरक्करद माक्कैह ळऴिवि लाऴियिऱ्
करक्कमर् ऱॊऴिन्दऩ वॊऴियक् कण्डऩ
मरक्कल मुदलवु मुय्न्दु वाऴ्न्दऩ
कुरक्किऩ मुय्न्दवु कूऱ वेण्डुमो 2738

अरक्कर् तम् आक्कैकळ्–राक्षसों के शरीर; अऴिविल् आऴियिल्–अक्षय समुद्र में; करक्क–छिपे रहे (इसलिए); ऒऴिन्तऩ–मिट गये; ऒऴिय कण्टऩ–उनके सिवा दिखनेवाले; मरक्कलम् मुतलवुम्–नावें आदि भी; उय्न्तु वाऴ्न्तऩ–बचकर जीवित हुए; कुरङ्कु इऩम्–वानरगण; उय्न्ततु–जीवित हो गये; कूऱ वेण्टुमो–कहना भी है क्या। २७३८

राक्षसों के शरीर अक्षय सागर में छिपे पड़े थे। इसलिए वे प्राणवंत नहीं हो सके। उधर रहे काठ के पोत भी जीवित हो गये; तो यह भी कहना चाहिए कि वानरों का दल जीवित हो गया ?। २७३८

कऴन्ऱऩ नॆडुङ्गणै कऴन्ऱु पुण्गडुत्
तऴन्ऱऩ कुऴिर्न्दऩ वङ्गऱ् जॆङ्गण्गळ्
शुऴन्ऱऩ वुलहॆलान् दॊऴुद तॊङ्गलित्
कुऴन्ऱॆऴुङ् गुऱ्जिया ऩुणर्वु कूडिऩान् 2739

नॆटुकणै कऴन्ऱऩ–(लक्ष्मण के शरीर से) लम्बे अस्त्र निकल आये; कऴन्ऱु–निकलने से; पुण्कळ्–व्रण; कटुत्तु अऴन्ऱऩ–जो ज़ोर से जलन देते रहे; कुऴिर्न्तऩ–शीतल हो गये; अङ्कम्–शरीर में; चॆम् कण्कळ्–लाल आँखें; चुऴन्ऱऩ–घूमने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लगीं; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों ने; तॉळुत–स्तुति की; तॉङ्कलित्–माला के समान; कुळन्ऱु ॲळुम्–घूर्णन के साथ दिखनेवाले; कुऴ्चियान्–केश से शोभायमान लक्ष्मण; उणर्वु कूटिन्त्–होश में आये। २७३९

लक्ष्मण के शरीर से लम्बे शर स्वतः निकल आये। व्रण, जो अपार दर्द दे रहे थे, अब शीतल बन गये। लाल आँखें घूमने लगीं। सारे लोकों ने उनकी स्तुति की। माला के समान घूर्णन-सहित केश वाले लक्ष्मण प्रज्ञासहित हो गये। २७३९

यावरु मॅळुन्दन रार्त्त वेळ्हडल्
ताळ्वरुम् बेरॉलि शॅवियिऱ् चार्वलुम्
तेवर्हळ् वाळ्त्तॉलि केट्ट शॅङ्गणान्
एवनीङ् गिन्तॅन् विळव लोङ्गिनान् 2740

एळ् कटल्–सातों समुद्रों को; ताळ् वरुम्–अपने सामने नीचा दिखानेवाले; यावरुम्–सभी (वानर वीर); ॲळुन्तत्तर्–जाग उठे; आर्त्त पेर् ऑलि–उन्होंने जो नर्दन किया वह बड़ा शोर; चॅवियिल् चार्त्तलुम्–कानों में पड़ा तो तुरन्त; तेवर्कळ् वाळ्त्तॉलि–देवों का जयघोष; केट्ट–जिन्होंने सुना वे; चॅम् कणान्–अरुणाक्ष श्रीराम; एवम् नीङ्कित्तन् ॲन्त–दुःख से मुक्त हो गये, यह सम्भव करते हुए; इळवल् ओङ्कितान्–लघुराज उठे। २७४०

सभी वानर जाग उठे। उन्होंने जो जय-घोष किया, उसके सामने सागर-गर्जन भी हार गया। उनका स्वर सुनकर देवों ने भी घोष किया। इसको सुनकर अरुणाक्ष श्रीराम को दुःखविमुक्त करते हुए लक्ष्मण उठे। २७४०

ओङ्गिय तम्बियै युयिर्वन् दुळ्ळुऱ
वीङ्गिय तोळ्हळाऱ् ऱळुवि वॅन्दुयर्
नीङ्गिन निरामनु मुलहि निन्ऱिल
तीङ्गुळ तेवरु मऱुक्कम् जिन्दिनार् 2741

उयिर् वन्तु उळ् उऱ–प्राणों के अन्दर आ लगने से; ओङ्किय तम्पियै–जो उठ खड़े हुए उन अपने लघु सहोदर को; वीङ्किय–फूली; तोळ्कळाल्–भुजाओं से; तळुवि–आलिंगन करके; इरामनुम्–श्रीराम भी; वॅन्तुयर् नीङ्कित्तन्–संतापक दुःख से छूटे; उळ तेवरुम्–अमर देवताओं ने भी; मऱुक्कम् चिन्तितर्–व्यथा छोड़ी; तीङ्कु–बुराइयाँ; उलकिल् निन्ऱिल–लोक में न रहे। २७४१

श्रीराम ने प्राणवान हुए अपने लघु सहोदर को अपनी फूली हुई भुजाओं से बाँध लिया। उनका कठोर दुःख दूर हो गया। अमर देवों की बेचैनी भी दूर हुई। संसार भर में कहीं बुराई नहीं ठहरी। २७४१

अरम्बॅय राडिन रमुद वेळ्ळिशै, नरम्बियल् किन्नर मुदल नन्मैये
निरम्बिन वुलहॅला मुवहै नॅयविळाप, परम्बिन मुनिवरर् वेदम् बाडिनार् 2742

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरम्पैयर् आटिनर्–अप्सराएँ नाच उठीं; नरम्पु इयल्–तन्त्रियों से युक्त; किन्नरम् मुतल–'किन्नर' आदि वाद्य; नन्मैये–सुखद; अमुतम्–अमृत के समान; एऴ् इचै निरम्पित–सप्त स्वरों से भर गये; उलकु ऍलाम्–लोक भर में; उवकै–आनन्द-प्रदर्शक; नॅय्विऴा–घी के स्नान का उत्सव; परम्पित–फैला; मुनिवरर्–मुनिवरों ने; वेतम् पाटिनार्–वेदगान किये। २७४२

अप्सराएँ नाचीं। तंत्री-वाद्य, किन्नर आदि से सुखद अमृत-सम सप्तस्वर आने लगे। सारे लोक में आनन्द के कारण घृत-स्नान का उत्सव मनाया जाने लगा। मुनिवरों ने वेद गाये। २७४२

वेदनिन् ऱार्त्तन वेद वेदियर्, पोदनिन् ऱार्त्तन पुहऴ् मार्त्तन
ओदनिन् ऱार्त्तन वोद वेलैयिऱ्, चीदनिन् ऱार्त्तन तेवर् शिन्दनै 2743

वेतम्–वेदों ने; निन्ऱु आर्त्तन–स्थायी रहकर उद्घोष किया; वेतम् वेतियर्–वेदपाठी विप्रों के; पोतम् निन्ऱु आर्त्तन–ज्ञान ने स्थिर रहकर घोष किया; पुकऴुम् आर्त्तन–यश ने भी नाद उठाया; ओतम् निन्ऱु आर्त्तन–समुद्रों ने उच्च गर्जन किया; तेवर् चिन्तनै–देवों का मन भी; ओतम् वेलैयिल्–जलसागर के समान; चीतम् निन्ऱु आर्त्तन–शीतल (खुश) रहकर कुतूहल से भर गया। २७४३

चारों वेदों ने जयघोष किया। वेदविप्रों का ज्ञान शब्द कर उठा। सागर उमग उठे और गरजने लगे। देवों का मन भी सागर के समान शीतलता (सुख) से भरकर नाद कर उठा। २७४३

उन्दिन पिन्गॊलै यॊऴिवि लुण्मैयुम्
दन्दनै नीयदु निनक्कुच् चान्ऱॆनाच्
चुन्दर विल्लियैत् तॊऴुदु शूऴवन्
दन्दणन् पडैयुनिन् ऱहन्ऱु पोनदाल् 2744

कॊलै उन्तित पिन्–मरण से छूटने पर; अन्तणन् पटैयुम्–ब्रह्मास्त्र भी; चुन्तरम् विल्लियै–सुन्दर कोदण्डपाणी को; चूऴ वन्तु तॊऴुतु–परिक्रमा करके नमस्कार करके; निन्ऱु–सामने सविनय खड़ा रहकर; नी–आपने; ऒऴिविल्–अमर; उण्मैयैयुम् तन्तनै–सत्य को भी दिया; अतु–वह; निनक्कु चान्ऱु–आपका गौरव है; ऎनाऱ्–कहकर; अकन्ऱु पोनतु–दूर चला गया। २७४४

सबके मृत्यु से छूटने के बाद ब्रह्मास्त्र ने सुंदर कोदंडपाणी की परिक्रमा तथा विनय की। सामने खड़े होकर निवेदन किया कि आपने अमर सत्य संस्थापित कर दिया। यह आपका गौरव है! फिर वह हट गया। २७४४

❀आय कालैयि नमर रार्त्तॆऴत्, तायि नन्बनैत् तऴुवि नान्ऱनि
नाय हन्पंरुन् दुयर नामऱत्, तूय कादनीर् तुळङ्गु कण्णिनान् 2745

आय कालैयिन्–उस समय; तनि नायकन्–अद्वितीय जगन्नायक ने; पॆरु तुयरम् नाम् अऱ–बड़े दुःख के नाम के मिटते; तूय कातल्–पवित्र प्रेम से; नीर् तुळङ्कु कण्णिनान्–अश्रुशोभित आँखों वाले हो; तायिन् अनपनै–माता से भी अधिक प्यारे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हनुमान को; अमरर् आर्त्तु ऍळ्ळ–देव घोष कर उठें ऐसा; तळुवित्तान्–गले से लगा लिया। २७४५

तब अद्वितीय नायक श्रीराम का अपार दुःख नाम-निशान-हीन हो गया। प्रेम से अश्रु-बहाती आँखों के साथ उन्होंने माता से भी प्यारे मारुति को गले लगा लिया जिस पर देव लोग नर्दन कर उठे। २७४५

❀ ऍळुवु कुङ्गुमत् तिरुवि नेन्दुको, डुळुद मार्बिना लुरुहि युळ्ळुरत्
तळुवि निर्ऱ्ऱलुन् दाळ्न्दु ताळुरत्, तॊळुद मारुदिक् किनैय शॊल्लुवान् 2746

ऍळुतु–चित्रकारी के रूप में लगे; कुङ्कुमम्–कुंकुमलेप से अलंकृत; तिरुवित्–देवी सीता के; एन्तु कोटु–और उन्नत स्तनों के अग्रभाग से; उळुत मार्पित्तान्–जोते वक्षवाले श्रीराम के; उळ् उर उरुकि–अन्दर से द्रवीभूत होकर; तळुवि निर्ऱ्ऱलुम्–खूब आलिंगन करते; ताळ् उर–चरणों से लगकर; तॊळुत–जिसने नमन किया उस; मारुतिक्कु–हनुमान से; इनैय चॊल्लुवान्–ये बातें कहीं (श्रीराम ने)। २७४६

श्रीराम, जिनका श्रीवक्ष सीताजी के कुंकुम की चित्रकारी से अलंकृत मनोरम स्तनाग्रों से दबाया गया था, स्नेहार्द्र होकर जब हनुमान का आलिंगन कर रहे थे, तब हनुमान ने उनके चरणों में विनत हो नमस्कार किया। श्रीराम उससे यों बोले। २७४६

❀ मुन्निर् ऱोन्ऱि नोर् मुऱैयि नीङ्गला
दॆन्निर् ऱोन्ऱिय तुयरि नीङ्गुशेर्
मन्निर् ऱोन्ऱिनो मुन्न माण्डुळोम्
निन्निर् ऱोन्ऱिनो नॆऱियिर् ऱोन्ऱिनाय् 2747

मुन्निल् तोन्ऱिनोर्–(मेरे कुल में) जो पहले पैदा हुए वे; मुऱैयिन् नीङ्कलातु–नीति से न हटकर (जो पालन करते थे उन); ऍन्निल् तोन्ऱिय–मेरे कारण उत्पन्न; तुयरिन्–दुःख से; ईङ्गु चेर्–मृत्यु को प्राप्त; मन्निन् तोन्ऱिनोम्–राजा से जनमे; मुन्नम् माण्डुळोम्–हम पहले (ब्रह्मास्त्र से) मर गये; नॆऱियिल् तोन्ऱिनाय्–नयरत; निन्निल् तोन्ऱिनोम्–तुमसे हम प्रगट हुए (तुम्हारे उपकार से हम जी उठे)। २७४७

अपने पूर्वजों के निर्दिष्ट मार्ग में पालन जो करते रहे उन दशरथ के, जो मेरे कारण उत्पन्न दुःख से स्वर्गवासी हो गये थे, पुत्र हम पहले मर गये। फिर, सन्मार्गगामी हनुमान ! तुमसे हम फिर से उद्भूत हुए ! । २७४७

अळियुङ् गाऱ्ऱु मुदवि यैयने
मॊळियुङ् गाऱ्ऱु मुयिरिन् मुऱ्ऱुमे
पळियुङ् गात्तरुम् बहैयुङ् गात्तॆमै
वळियुङ् गात्तनै मऱयुङ् गात्तनै 2748

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐयऩे–बाबा; मॊऴियुम् काल्–कहना हो तो; अऴियुम् काल् तरुम् उतवि–मरने समय का उपकार; तरुम् उयिरिऩ्–जो प्राण देता है उससे; मुऱ्ऱुमे–प्रतिकार करने योग्य है क्या; पऴियुम् कात्तु–हमको निंदा से बचाकर; अरुम् पकैयुम्–कठोर शत्रु को; कात्तु–दबाकर; ऍमै वऴियुम् कात्ततऩै–हमको कुलसहित बचा दिया; मऱैयुम् कात्ततऩै–वेदों को भी रक्षित कर दिया। २७४८

तात ! सोचा जाय तो मरण के अवसर पर तुमने उपकार किया और हमें जीवन मिला। उसके बदले में कुछ देकर ऋण चुकाया जा सकेगा क्या ? तुमने हमें लोकनिन्दा से बचाया। शत्रुओं को दबोच दिया और हमको हमारे कुल के साथ बचाया। वेदों का भी संरक्षण हो गया। २७४८

ताऴ्वु मीङ्गिऱैप् पॊऴुदु तक्कदे
वाऴि ऍम्बिमे लऩ्बु माट्टलाल्
एऴुम् वीयुमॆऩ् पहर्व ऍल्लैवाय्
ऊऴि काणुनो युदवि ऩायरो 2749

ऍम्पिमेल्–मेरे सहोदर पर; अऩ्पु माट्टलाल्–प्रेम को स्थिर करने से; ईङ्कु–अब; इऱैप्पॊऴुतु–कुछ देर; ताऴ्वुम्–संकटग्रस्त रहना भी; तक्कते–चाहिए था; वाऴि–जीते रहो; ऊऴि काणुम् नी–युगान्त भी देखनेवाले तुमने; ऍल्लै वाय्–ऐन मौक़े पर; उतविऩाय्–उपकार किया; ऍऩ् पकर्वतु–(नहीं तो) क्या कहना; एऴुम् वीयुम्–सातों लोक नष्ट हो जाते। २७४९

अब जो कुछ संकट हुआ वह भी चाहिए था, क्योंकि तभी मेरा भायपा स्थिरीकृत हुआ ! तुम जुग-जुग जिओ ! हे चिरंजीव ! तुमने ऐन मौक़े पर उपकार किया। नहीं तो क्या कहा जाय ! सातों लोक मिट गये होते। २७४९

इऩ्ऱु वीहला वॆवरु मॆम्मुडऩ्, निऩ्ऱु वाऴुमा नॆडिदु नल्हिऩाय्
ऒऩ्ऱु मिऩ्ऩऩो युऱुहि लादुनी, ऍऩ्ऱुम् वाऴ्दिया लिऩिदॆ ऩेवलाल् 2750

इऩ्ऱु–आज; वीकलातु–बिना मरे; ऍम्मुटऩ् निऩ्ऱु–हमारे साथ रहकर; नॆटितु वाऴुमा नल्किऩाय्–बहुत समय के जीवन का दान किया; नी–तुम; इऩ्ऩल् नोय् ऒऩ्ऱुम् उऱुकिलातु–कोई संकट या रोग का शिकार मत बनो; इऩितु–सुख से; ऍऩ् एवलाल्–मेरी आज्ञा से; ऍऩ्ऱुम् वाऴ्ति–सदा रहो। २७५०

आज (जब मेघनाद ने अस्त्र चलाया) तुम जीवित हुए, हमारे साथ रहे और हमें लम्बी आयु दिला दी ! ऐसे उपकारी तुम मेरी आज्ञा से रोग, दुःख आदि से छूटकर सदा सुखी रहो। २७५०

मऱ्ऱैयोर्हऴु मनुमऩ् बण्मैयाल्, पॆऱ्ऱ वायुळार् पिऱन्द कादलार्
शुऱ्ऱु मेयिऩार् तॊऴुदु वाऴ्ऩ्तिऩार्, उऱ्ऱ वाऱैला मुणरक् कूऱिऩाऩ् 2751

मऱ्ऱैयोर्कऴुम्–अन्य भी; अनुमऩ् बण्मैयाल्–हनुमान की उदारता से; पॆऱ्ऱ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयुळार–जीवंत होकर; पिऱन्त कातलार्–हनुमान पर उत्पन्न प्रेम के हो; चुऱ्ऱम् मेयिऩार्–उसे घेर गये; तॊऴुतु वाऴ्त्तिऩार्–नमस्कार किया, स्तुति की; उऱ्ऱ आऱु ऎलाम्–जो हुआ वह सब; उणर कूऱिऩान्–(हनुमान ने) समझाकर कहा। २७५१

अन्य भी, जो हनुमान की उदारता से जीवित हुए, हनुमान पर उत्पन्न स्नेह के साथ उसे घेर आये। उसको नमस्कार किया। उसकी स्तुति की। हनुमान ने उनसे बीता हाल सारा बताया। २७५१

उय्त्त मामरुन् दुदव वॊन्ऩलार्, पॊय्त्त शिन्दैया रिऱुदल् पॊय्क्कुमाल्
मॊय्त्त कुन्ऱैयम् मूल मूऴैवाय्, वैत्तु मीडियाल् वरम्बि लाऱ्ऱलाय् 2752

वरम्पिल् आऱ्ऱलाय–अपार शक्तिमंत; मा मरुन्तु–श्रेष्ठ ओषधि के; उतव–उपकार से; पॊय्त्त चिन्तैयार्–वंचकमन राक्षस; ऒन्ऩलार्–शत्रुओं का; इऱ्ऱल्–मरना; पॊय्क्कुम्–असत्य हो जायगा (अगर यह पर्वत यहाँ रहे तो); मॊय्त्त कुन्ऱैं–ओषधिपूर्ण इस पर्वत को; मूल मूऴै वाय्–उसके मूल स्थान में; वैत्तु मीटि–रखकर आओ (यह जाम्बवान ने कहा)। २७५२

जाम्बवान ने कहा— हे अपार बलवान हनुमान ! तुम जो ओषधि लाये हो, वह राक्षसों का भी उपकार कर देगी और उन शत्रुओं की मृत्यु झूठी हो जायगी। इसलिए इस ओषधि-पर्वत को ले जाकर अपने यथास्थान में रख आओ। २७५२

अऩ्ऱु शाम्बव ऩियम्ब वीदरो, नऩ्ऱु शालवॆऩ् ऱॊऩ्ऱु नाऴिहैच्
चॆऩ्ऱु मोऴ्वनॆऩ् ऱुणर्न्दु वॆय्वमाक्, कुऩ्ऱु ताङ्गियक् कुरिशिल् पोयिऩान् 2753

ऎऩ्ऱु चाम्पवऩ् इयम्प–ऐसा जाम्बवान के कहने पर; ईतु चाल नऩ्ऱु–यह बहुत ही अच्छा है; ऎऩ्ऱु–कहकर; ऒऩ्ऱु नाऴिकै–एक घड़ी में; चॆऩ्ऱु मीऴ्वऩ्–हो आऊँगा; ऎऩ्ऱु उणर्न्तु–ऐसा समझकर; मा–बड़े; तॆय्वम् कुऩ्ऱु तङ्कि–दैवी पर्वत उठाकर; अ कुरिचिल्–वह महावीर; पोयिऩान्–गया। २७५३

जाम्बवान के यों कहने पर हनुमान ने भी सोचा कि यह बहुत अच्छा है। एक घड़ी में हो आऊँगा। वह महापुरुष उस दिव्य पर्वत को उठा ले चला। २७५३

24. कळियाट्टुप् पडलम् (विनोद-उत्सव पटल)

इऩ्ऩदित् तलैय दाह विरावण ऩॆऴुन्दु पॊङ्गित्
तऩ्ऩैयुङ् गडन्दु नीण्ड वुवहैयऩ् शमैत्त कीदङ्
गिऩ्ऩरर् मुदलोर् पाड मुहत्तिडैक् किडन्द कॆणडैक्
कऩ्ऩिनऩ् मयिलऩ् ऩारै नॆडुङ्गळि याट्टङ् गण्डाऩ् 2754

इ तलै–यहाँ; इऩ्ऩतु आक–ऐसा जब रहा; इरावणऩ्–(उधर) रावण ने; पॊङ्कि ऎऴुन्तु–उमंग से उठकर; तऩ्ऩैयुम् कटन्तु–अपने को भी पार कर जो;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीण्ट-बढ़ा था वैसे; उवकैयन्-मोदवाला बनकर; चमैत्त कीतम्-सुगठित गीत; कित्तरर् मुतलोर् पाट-किन्नर आदि लोगों के गाते; मुकत्तिटै किटन्त-मुख में रही; कॅण्टै-"कॅण्डै" मछली के समान आँखों वाली; कन्नि-तरुणी; नल् मयिल् अन्नार्-श्रेष्ठ कलापी-सी स्त्रियों को; नॅटु कळि आट्टम्-जोरदार मदिरा से मस्त केलि को; कण्टान्-देखा। २७५४

इधर यह सब होता रहा। उधर रावण मोद के साथ उमँग उठा। उसका उमंग अपार था (कवि कहता है कि वह आप से भी बढ़ा था)। उसने 'कॅण्डै' नामक मछली-सी आँखों वाली तरुण और कलापी-सी सुन्दर स्त्रियों की अठखेलियाँ देखीं। जब वह देखने गया, तब किन्नर लोग संगीत-व्याकरण-सम्मत गीत गाते गये। २७५४

अरम्बैयर् विज्जै माद ररक्किय रवुण मादर्
कुरुम्बैयङ् गॊङ्गै नाहर् कोदैय रियक्कर् कोदिल्
करुम्बिनु मिनिय शॊल्लार् शित्तर्दङ् गन्नि मार्हळ्
वरम्बऱु शुम्मै योर्हण् मयिर्कुल मरुळ वन्दार् 2755

अरम्पैयर्-अप्सराएँ और; विज्चैमातर्-विद्याधरियाँ; अरक्कियर्-और राक्षस-नारियाँ; अवुणर् मातर्-दानवदयिताएँ; कुरुम्पै अम् कॊङ्कै-कच्चे नारियल के समान स्तनों वाली; नाकर् कोतैयर्-नागकन्याएँ; इयक्कर् कोतैयर्-यक्षसुन्दरियाँ; कोतु इल्-निर्दोष; करुम्पिनुम् इनिय चॊल्लार्-इक्षु से भी मधुर वाणी वाली; चित्तर् कन्निमार्कळ्-सिद्धिनियाँ; वरम्पु अऱु-(आदि स्त्रियाँ) अपार; चुम्मैयोर्कळ्-भीड़ में; मयिल् कुलम्-मयूरवृन्द को; मरुळ-भ्रम में डालते हुए; वन्तार्-आयीं। २७५५

अप्सराएँ, विद्याधररियाँ, राक्षसरमणियाँ, दानवदयिताएँ और कच्चे नारियल के बाल फलों-जैसे स्तनों की नागकन्याएँ, यक्षबालाएँ, अमल इक्षुरस से भी मधुर वाणी की सिद्धस्त्रियाँ —आदि बड़े-बड़े समूहों में मयूरवृन्दों को भी लजाती हुई आयीं। २७५५

मेनहै यिलङ्गु वाट्कट् टिलोत्तमै यरम्बै मॅल्लॅन्
तेनहु मळलै यिम्शॊ लुरुप्पशि मुदल दॅय्व
बानह महळिर् वन्दार् शिल्लरिच् चदङ्गै पम्ब
आनह मुरशम् जङ्ग मुरुट्टॊडु मिरट्ट वाडि 2756

मेनकै-मेनका; इलङ्कु-शोभायमान; वाळ् कण्-तलवार-सम आँखों की; तिलोत्तमै-तिलोत्तमा; अरम्पै-रम्भा; तेन् नकु-मधु-सम; मॅल् ऍन्-मृदु; मळलै इन् चॊल्-तोतली-सी मधुरभाषिणी; उरुप्पशि-उर्वशी; मुतल-आदि; तॅय्वम् वान् अकम्-दिव्य व्योमलोक की; मकळिर्-अंगनाएँ; आनकम् मुरचम् चङ्कम्-आनकों, भेरियों और शंखों के साथ; मुरुट्टॊडुम्-'मुरुडु' नाम के ढोल के; इरट्ट-बजते रहते; चिल् अरि-छोटी गुरियों से भरे; चतङ्कै पम्प-घुँघुरुओं के क्वणित होते; आटि वन्तनर्-नाचती आयीं। २७५६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेनका, सुन्दर तलवार-सी आँखों वाली तिलोत्तमा, रम्भा, अस्पष्ट-मधु-मधुर-मृदुभाषिणी उर्वशी आदि देवलोक की अप्सराएँ नाचती आयीं। भेरियाँ, शंख, मुरुडु नामक बाजे और पटहे साथ-साथ बजते आये और उनस्त्रियों की झाँझरें भी कंकड़ियों के कारण क्वणित हो रही थीं। २७५६

तोडुण्ड शुरुळुन् दूङ्गुङ् गुळहळुञ् जुरुळिऱ् ऱोन्ऱुम्
एडुण्ड पशुम्बोऱ् पूवुन् दिलदमु मिलवच् चॆव्वाय्
मूडुण्ड मुऱुवन् मुत्तु मुळ्ळुण्ड मुळरिच् चॆङ्गट्
काडुण्डु पुहुन्द दॆन्न मुनिन्ददु कऱैवॆण् डिङ्गळ् 2757

तोटुण्ट–ताड़ के घुमावदार पत्ते के समान; चुरुळुम्–स्वर्ण-निर्मित 'शुरुळ्' नामक जेवर; तूङ्कुम्–लटकनेवाले; कुळैकळुम्–कुण्डल और; चुरुळिल् तोन्ऱुम्–घुमाकर बँधे केश में दिखनेवाले; एट उण्ट–दल-सहित; पचु पोन् पूवम्–चोखे स्वर्ण के फूल और; तिलतमुम्–तिलक; इलवम् चॆव्वाय्–सेमर-से लाल अधर; मूटुण्ट–आच्छादित; मुऱुवल्–मंदहासयुक्त; मुत्तुम्–मोती के समान दाँत; मुळ् उण्ट–कोमल काँटों-सहित; मुळरि चॆम् कण्–कमल-सी आँखें; काट–इनके बन को; उण्टु पुकुन्ततु ऎन्न–खाकर प्रवेश किया हो, ऐसा मानकर; कऱै वॆण् तिङ्कळ्–कलंक-युक्त श्वेत चन्द्र; मुनिन्ततु–नाराज़ हुआ। २७५७

ताड़ के पत्ते के बने जैसे स्वर्ण के शुरुळ नामक कर्णाभूषण, लटकते कुंडल, केशालंकार विशेष में शोभनेवाले स्वर्णनिर्मित सदल पुष्प, तिलक, सेमर-जैसे लाल अधर; मुस्कुराते मोती-जैसे दाँत, मृदु काँटों-सहित कमल के समान लाल आँखें —इनका वन मुझे छिपाने आ घुसा है —यह सोचकर सकलंक श्वेतचन्द्र नाराज़ हुआ। २७५७

मुळैक्कॊळुङ् गदिरिन् कऱ्ऱै मुऱुवल्वॆण् णिलवु मूरि
ऒळिप्पिळम् बॊळ्हुम् बूणि नुमिळिळ वॆयिलु मॊण्बोन्
विळक्कॆयुम् विळक्कु मेनि मिळिर्हदिर्प् परप्पुम् वीश
वळैत्तपे रिरुळुम् गण्डो ररिवॆन मरुळु मादो 2758

मुळै–उगनेवाली; कॊळु कतिरिन् कऱ्ऱै–पुष्ट किरणों की लटों का; मुऱुवल्–हँसी रूपी; वॆळ निलवुम्–श्वेत चन्द्र और; मूरि–अधिक; ऒळि पिळमपु ऒळ्हुम्–ज्योति निकालनेवाले; पूणिन्–आभरणों से; उमिळ्–निःसृत; इळ वॆयिलुम्–बाल धूप; ऒण् पोन्–प्रकाशमय स्वर्ण के समान; विळक्कॆयुम् विळक्कुम्–दीप को भी दीप्त करनेवाले; मेनि–शरीर से; मिळिर् कतिर्–निकलकर फैलनेवाली छवि-किरणों के; परप्पुम् वीच–विस्तार के फैलते; वळैत्त पेर् इरुळुम्–घेर आनेवाला बड़ा अन्धकार; कण्टोर् अऱिवु ऎन्न–दर्शकों की बुद्धि के समान; मरुळुम्–घुल-मिल जाते (भ्रमित करते) हैं। २७५८

मुस्कुराहट की पुष्कल रोशनी वाली चाँदनी छिटक रही थी। अधिक छविमान आभरणों से बाल धूप निकल रही थी। उज्ज्वल स्वर्ण के समान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दीप को भी दीप्ति देनेवाली देहों की कांति की किरणें छूट रही थीं। चारों ओर अन्धकार घेरे था। यह दृश्य देखनेवाले का मन जैसे चकित होता था, वैसे ही वह विविध रोशनियाँ भी मिश्रित हो रही थीं। २७५८

नऱ्पॆरुङ् गल्विच् चॆल्व नवैयऱु नॆऱियै नण्णि
मुऱ्पय नुणर्न्द तूयोर् मॊऴियॊडुम् बऴहि मुऱ्ऱिप्
पिऱ्पय नुणर्द ऱेऱ्ऱाप् पेदैपाल् वञ्जन् शॆय्द
कऱ्पनै यॆन्न वोडिक् कलन्ददु कळ्ळिन् वेहम् 2759

नल् पॆरु कल्वि चॆल्वम्–श्रेष्ठ बड़े विद्या-धन से; नवै अऱु–दोषहीन; नॆऱियै नण्णि–मार्ग में जाकर; मुन् पयन् उणर्न्त–आगे का नतीजा जो जानते हैं; तूयोर् मॊऴियोडुम्–पवित्र लोगों के (उपदेश) वचनों के साथ; पऴकि–अभ्यस्त हो; मुऱ्ऱि–पक्व होकर; पिन् पयन्–पीछे का फल; उणर्तन् तेऱ्ऱा–जो न जान सके; पेतै पाल्–उस जड़मति के प्रति; वञ्चन् चॆय्त–वंचककृत; कऱ्पनै ऎन्न–कल्पित कार्य के समान; कळ्ळिन् वेकम् कलन्ततु–ताड़ी का उग्र प्रभाव मिल गया। २७५९

श्रेष्ठ विद्याश्री से प्राप्त निर्दोष न्यायमार्ग पर जो चलते हैं और जिन्हें भावी का फलकार्य विदित है, ऐसे पवित्र साधुओं के उपदेश-वचनों से अभ्यस्त रहना आवश्यक है। पर इसके विपरीत जो अज्ञ हैं, उनके पास वचक की कल्पना मिली हो—ऐसा उन स्त्रियों में ताड़ी का नशा मिल गया था। २७५९

पलपड मुऱुवल् वन्दु परन्दन पनित्त मॆय्वेर्
इलविदऴ् तुडित्त मुल्लै यॆयिऱुवॆण् णिलवै यीन्ऱ
कॊलैपयि नयन वेलिन् कॊऴुङ्गडै शिवन्द कॊऱ्ऱय्
चिलैनहर् पुरुव नॆऱ्ऱिक् कुनित्तन विळर्त्त शॆव्वाय् 2760

मुऱुवल्–मंदहास; पल पड–विविध प्रकार का; वन्तु–आकर; परन्तन–फैला; मॆय् वेर् पनित्त–शरीर पर स्वेदकण झलक आये; इलवु इतऴ्–सेमर (सम लाल) अधर; तुटित्त–फड़के; मुल्लै ऎयिऱु–'मुल्लै' कली-से दाँतों ने; वॆण् निलवै ईन्ऱ–श्वेत चाँदनी को जन्म दिया; कॊलै पयिल्–मारक काम में अभ्यस्त; नयनम् वेलिन्–नयन रूपी भालों के; कॊऴु कटैकळ्–मनोरम कोरों में; चिवन्त–लाली उठी; चिलै निकर्–धनु-सी; पुरुवम्–भौंहें; नॆऱ्ऱि कुनित्तन–ललाट में कुंचित हुई; चॆव्वाय्–लाल अधर; विळर्त्तन–पांडुर हो गये। २७६०

तरह-तरह के मंदहास उदित हुए और फैले। शरीर पर स्वेदकण उग आये। सेमर के फूलों-से अधर फड़के। 'मुल्लै' नाम के (श्वेत) फूल के समान दाँतों ने श्वेत प्रकाश छिटकाया। संहारदक्ष आँखों रूपी भालाओं के पुष्ट कोरों में लाली उदित हो आयी। धनु-सी भौंहें भाल पर कुंचित हो चढ़ीं। लाल मुख पांडुर बन गये। २७६०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कून्दलम् बारक् कर्रैक् कॊन्दळक् कोलक् कॊण्डल्
एन्दह लल्हुर् रेरै यिहन्दुपो यिरङ्ग याणर्प्
पून्दुहि लोडुम् बूशन् मेहलै शिलम्बु पूण्ड
मान्दळि रैय्द नॊय्दिन् मयङ्गिनर् मळलैच् चॊल्लार् 2761

कून्तल् अम्पारम् कर्रै–केश की लटों के संभार रूपी; कॊन्तळम् कोलम् कॊण्टल्–चक्रों के आकार में रहे मनोरम मेघ; एन्तु अकल्–उन्नत विशाल; अल्कुल् तेरै–जघन-रथ को; इकन्तु पोय्–पारकर जाकर; इरङ्क–लटके रहे; याणर्–नये; पून्तुकिलोटुम्–महीन वस्त्रों के साथ; पूचल्–क्वणनशील; मेकलै–मेखला; चिलम्पु पूण्ट–नूपुर से अलंकृत; मान्तळिर् ऍय्त–आम्रपल्लव से जाकर लगी थी; मळलैच् चॊल्लार्–(मनोरम) अस्पष्ट-वाणी स्त्रियाँ; नॊय्तिन्–आसानी से; मयङ्किनर्–(कौन पैर को छूता है ? यह सोच) भ्रमित होती हैं। २७६१

अंबार के केशों की लटें रूपी घुमावदार व सुन्दर मेघ उन्नत और चौड़े नितंब प्रदेश को पार कर नीचे लटक रहे थे। नये और क्वणनशील मेखला के साथ शोभ रहे वस्त्र नूपुर से अलंकृत आम्रपल्लव-से पैरों से जा लग रहे थे। तो तुतलाती मधुर बोली वाली स्त्रियाँ ("कौन है पैरों पर पड़ा" —ऐसा) संशय-विचलित हो रहीं। २७६१

कोत्तमे हलैयि नॊडुन् दुहिन्मणिक् कुरङ्गैक् कूडक्
कात्तन कून्दर् कर्रै यर्रमत् तन्मै कण्डु
वेत्तवै कीळु ळोर्हळ् कीळ्मैये विळैत्तार् मेलाञ्
जीर्त्तवर् शॆय्यत् तक्क करुममे शॆय्दा रॆन्न 2762

वेन्तु अवै–राजसभा में; कीळ् उळोर्कळ्–नीची श्रेणी में काम करनेवालों ने; कीळ्मैये विळैत्तार्–अल्प काम ही किये; मेलाम् चीर्त्तवर्–उच्च श्रेष्ठ लोगों ने; चॆय्यत्तक्क करुममे चॆय्तार्–करने योग्य कार्य ही किये; ऍन्न–जैसे; कोत्त मेकलैयिन्नोटुम्–गुंथी मेखला के साथ; तुकिल्–वस्त्र के; मणि कुरङ्कै कूट–(कमर छोड़) सुन्दर ऊरु से जा लगने पर (जो लज्जाजनक काम हो गया तब); अ तन्मै कण्टु–वह प्रकार देख; कून्तल् कर्रै–केशराशि ने; अर्रम् कात्तन–लाज रखी। २७६२

राजसभा के क्षुद्र सभासद नीच काम ही करते हैं और उच्च सभासद उत्कृष्ट काम। वैसे ही मेखला के साथ वस्त्र खिसक गये और ऊरु तक पहुँच गये। तब उसे देखकर केशों की लटों ने नितंब प्रदेश पर फैलकर लाज बचा ली। २७६२

पाणियिर् रळ्ळिक् काल मात्तिरैप् पडादु पट्ट
नाणियिन् मुरैयिर् कूडा दॊरुवळि नडैयिर् चॆल्लुम्
आणियि नळिन्व पाड लीन्रन रनङ्ग वेडन्
तूणियि नडैत्त वम्बिर् कॊडुन्दॊळि रुरन्द कण्णार् 2763

अनङ्कन वेडन–अनंग रूपी शिकारी के; तूणियिन्–तूणीर में; अटैतत अम्पिल्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बन्द रखे शरों के समान; कॊटु तॊऴिल् तुऱन्त–क्रूर-कर्म-त्यक्त; कण्णार्–आँखों वाली स्त्रियों ने; पाणियिन् तळ्ळि–ताललय छोड़कर; कालम् मात्तिरै–काल की मात्रा से; पट्टातु–बद्ध न रहकर; पट्ट नाणियिन्–वाद्य में की तन्त्री के; मुऱैयिल् कूटातु–बजने के क्रम से अबद्ध; ऒरु वऴि नटैयिल्–अपने अलग मार्ग में; चॆल्लुन्–जानेवाले; आणियिन् अऴिन्त पाटल–क्रम-भग्न गीत; ईत्तऱतर्–पैदा किये (गाये)। २७६३

मन्मथ के तूणीर में सुरक्षित शरों के समान उनकी आँखें घातक काम से निवृत्त थीं। वे गाना गाती थीं, जिनका ताल-मेल कुछ ठीक नहीं बैठता था; न उनका तंत्रियों से उठे स्वर से कोई लय मिलता था; न उनका काल-प्रमाण से कोई बन्धन दिखता था। २७६३

वङ्गियम् वहुत्त कान मारुहॊण् मऴलै वायर्
शङ्गैयिल् पॆरुम्ब णुऱ्ऱ निऱत्तुऱै निरम्बित् तळ्ळच्
चिङ्गलि नमुदि नोडुम् बुऴियळान् देऱ लॆन्न
वॆङ्गुर लॆडुत्त पाडल् विऴित्तनर् मयक्कम् वीङ्ग 2764

वङ्कियम् वकुत्त कानम्–'नादस्वर' के संगीत से; मारुकॊळ–विपरीत; मऴलै वायर्–अस्पष्ट मीठी वाणी की स्त्रियों ने; मयक्कम् वीङ्क–(मद्य-) मस्ती के बढ़ने से; चङ्कै इल्–निर्दोष; पॆरु पण् उऱ्ऱ–श्रेष्ठ तान में बने; निऱम् तुऱै–पूर्ण प्रकार से; निरम्पि तळ्ळ–बिलकुल अलग हुए; चिङ्कल् इल्–अभय; अमुतिनोटुम्–अमृत के साथ; पुऴि अळाम्–खटाई से युक्त; तेऱल् ऍन्त–मद्य के समान; वॆम् कुरल् ऍटुत्त पाटल्–कठोर कर्कश स्वर में गीत; विऴित्तनर्–गाये। २७६४

'नागस्वर' (शहनाई-सा वाद्य) से जो संगीत होता है, उसकी टक्कर की मधुरता से युक्त अस्पष्ट बोली वाली स्त्रियों का ताड़ी का नशा अत्यधिक चढ़ गया था। तब वे जो गाती थीं, वह अमृत से मिली खट्टी ताड़ी के समान लगी। उनका स्वर बड़ा कर्कश और कठोर था और तानें ठीक नहीं बन पाती थीं। २७६४

एनैय पिऱवुङ् गण्डार्क् किन्दिर शाल मॆन्नत्
तानवै युरुविऱ् ऱोन्ऱुम् बावनैत् तहैमै शान्ऱोर्
मानमर् नोक्कि नारै मैन्दरैक् काट्टि वायाल्
आनैयै विळम्बित् तेरै यबिनयत् तियऱ्ऱि युऱ्ऱार् 2765

अवै–अनुभाव; उरुविल् तोन्ऱुम्–उनके शरीर पर दिखनेवाली; पावनै तकैमै चान्ऱोर्–नृत्य की मुद्राओं में अभ्यस्त; एनैय पिऱवुम्–अन्य अभिनय; कण्टार्क्कु–देखनेवालों को; इन्तिर चालम् ऍन्न–इन्द्रजाल के समान लगे; मान् अमर् नोक्कितारै–मृगनयनाओं के लिए; मैन्तरै–तरुण पुरुषों को; काट्टि–दिखाकर; वायिनाल्–मुख से; आनैयै विळम्पि–गजों को कहकर; अपिनयत्तु–अभिनय में; तेरै इयऱ्ऱि उऱ्ऱार्–वादुरों को दिखातीं। २७६५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अभिनय की कला में दक्ष वे स्त्रियाँ साधरण रूप से जब किसी पात्र का अभिनय करतीं, तब वे ही मानो इन्द्रजाल-सा रच देतीं और दर्शकों के सामने अभिनय के पात्र मानो जीवित हो उठते। पर अब वे मृगनयना स्त्रियाँ इशारे से पुरुषों को दिखातीं और कहतीं 'गज' और दादुर के रूप का अभिनय करतीं। २७६५

अळुहुवार् नहुवार् पाडि याडुवा रयनिन् ऱारैत्
तॊळुहुवार् तुयिल्वार् तुळ्ळित् तूङ्गुवार् तुवर्वा यिनऱैन्
ऒळुहुवा रॊल्हि यॊल्हि यॊरुवर्मे लॊरुवर् पुक्कु
मुळुहुवार् कुरुदि वाट्कण् मुहिळ्त्तिड मूरि पोवार् 2766

अळुकुवार्–(कुछ) रोतीं; नकुवार्–हँसतीं; पाटि आटुवार्–गातीं-नाचतीं; अयल् निन्ऱारै–पास जो खड़े थे उन्हें; तॊळुकुवार्–प्रणाम करतीं; तुयिल्वार्–सोतीं; तुळ्ळि–उछल-उछलकर; तूङ्कुवार्–थकित हो जातीं; तुवर् वाय्–प्रवालाधरों से; इन् तेन्–मधुर मधु को; ऒळुकुवार्–गिरातीं; ऒल्कि ऒल्कि–लचक-लचककर; ऒरुवर् मेल् ऒरुवर्–एक-दूसरे पर; पुक्कु मुळुकुवार्–लगकर चिपक जातीं; कुरुति वाळ् कण्–रक्तरंजित तलवार-सी आँखों को; मुकिळ्त्तिट–बन्द करके; मूरि पोवार्–अँगड़ाई लेतीं। २७६६

(मस्ती के कारण) वे रोतीं, हँसतीं और नाचती-गाती थीं। कुछ स्त्रियाँ प्रणाम करतीं; कुछ सो जातीं। कुछ स्त्रियाँ उछल-कूद मचाकर थक जातीं। प्रवालाधरों से कुछ के मुख में मद्य टपकता। कुछ लचक-लचक जातीं और एक-दूसरे से लिपटकर गाढ़ालिंगन में डूब जातीं। रक्तवर्ण तथा तलवार-सम आँखें मूँदकर वे अँगड़ाई लेतीं। २७६६

उयिर्प्पुऱत् तुऱ्ऱ तन्मै युणर्त्तिना रुळ्ळत् तुळ्ळ
दयिर्प्पिनि लऱिदि रॆन्ऱे यदुकळि याट्ट माहच्
चॆयिर्प्पऱु दॆय्वच् चिन्दैत् तिरुमऱै मुनिवर्क् केयुम्
मयिर्प्पुऱन् दोऱुम् वन्दु पॊडित्तन मदन वाळि 2767

उळ्ळत्तु उळ्ळतु–मेरे मन की रहनी (बात); अयिर्प्पिनिल्–विना सन्देह के; अऱितिर्–जान लेंगे; ऎन्ऱु–ऐसा; उयिर् पुऱत्तु उऱ्ऱ–जान से लगा (आंतरिक); तन्मै उणर्त्तिनार्–हाल बतलाया (स्त्रियों ने); अतु कळियाट्टम् आक–जब वह केलि होती रही; चॆयिर्प्पु अऱु–त्रुटिहीन; तॆय्वम् चिन्तै–देवलग्न चित्त वाले; तिरु मऱै मुनिवर्क्केयुम्–श्रीवेदों के ज्ञाता विप्रों के लिए भी; मतनन् वाळि–मदनशर; मयिर् पुऱम् तोऱुम्–रोमकूपों में; वन्तु पॊटित्तन–आ भर गये। २७६७

उन नारियों ने अपने मन का भाव विना संशय को मौक़ा दिये ही जता दिया। उनके हावभाव तथा लीला को देखनेवाले चाहे निर्दोष देव-चिंतन में लगे उत्कृष्ट वेदज्ञ विप्र ही क्यों न हों, उनके भी रोमकूपों में मन्मथ-शर आ भरे। २७६७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

माप्पिऱऴ् नोक्किऩार् तम्-हरिण के समान चंचल दृष्टि वाली (राक्षस) रमणियों की; मणि नॆटु-सुंदर आयत; कुवळै-नीलोत्पल-सम; वाळ् कण्-प्रकाशमय आँखें; चेप्पु उऱ-लाल बनीं; चॆम् किटै-लाल 'किडै' (खुखरी) नाम की लता तथा; अरत्तम्-लाल कमल-से; चॆव्वाय्-लाल अधरों पर; वॆण्मै चेर-पांडुरता के छा जाते; उऱु-वलय-सह; काप्पु उऱु पटै कै-रक्षण-कार्य के योग्य हथियारों से लैस हाथों वाले; कळ्व निरुतर्क्कु-चोर राक्षसों को; ओर् इऱुति काट्टि-एक अन्त दिखाकर; पू पिऱऴ्न्तु-फूल अपना स्वभाव बदलकर; उरुवम् वेऱाय् पॊलिन्ततु ओर् तन्मै-दूसरा बन गया है ऐसी स्थिति; पोऩ्ऱ-से हो गये, (ऐसा) लगा। २७६८

मृगनयनी राक्षस-रमणियों के सुंदर उत्पल-सी (नीली) तेज़ आँखें लाल हो गयीं। रक्तकुमुद-से अधर श्वेत हो गये। यह (फूलों का रंग बदलना) दुश्शकुन था और बाहुवलय तथा रक्षक हथियारधारी राक्षसों के अन्त को सूचित करता-सा लगा। २७६८

कयल्वरु कालऩ् वॆवेऱ् कामवेळ् कणैयॆऩ् ऱालुम्
इयल्वरु हिऱ्कि लाद नॆडुङ्गणा रिणैमॆऩ् कॊङ्गैत्
तुयल्वरु कऩह नाणुङ् गाञ्जियुन् दुहिलुम् वाङ्गिप्
पुयल्वरु कून्दऱ् पारक् कऱ्ऱैयिऱ् पुऩैय लुऱ्ऱार् 2769

कयल्-मछली; वरु कालऩ्-आगंतुक यम का; वॆ वेल्-तीक्ष्ण भाला; कामऩ् वेळ् कणै-मनोज का शर; ऎऩ्ऱालुम्-आदि उपमान कहें तो भी; इयल् वरुकिऱ्किलात-उपमा नहीं बनेगी ऐसी; नॆटु कणार्-आयत आँखों वाली राक्षस-रमणियों ने; इणै मॆल् कॊङ्कै-जोड़े के मृदुल स्तनों पर; तुयल् वरु-लोटनेवाले; कऩकम् नाणुम्-कनक-दाम को; काञ्चियुम्-और मेखला को; तुकिलुम्-वस्त्र को; वाङ्कि-हाथ में लेकर; पुयल् वरु-मेघ-सम; कून्तल् पारम् कऱ्ऱैयिल्-केशभार-राशि पर; पुऩैयल् उऱ्ऱार्-पहनने लगीं। २७६९

राक्षस-नारियों के नेत्र ऐसे थे कि मछली, प्राणहर यम के हाथ का भाला, या कामशर उनके उपमान नहीं बन सकें। वे अब मस्ती में थीं। उन्होंने पीन स्तनद्वय पर लोटनेवाले कनक-दाम को, मेखला को और वस्त्र को उतारकर उनसे अपने केश का शृंगार करने लगीं। २७६९

मुत्तऩ्मै मॊऴिय लाहा मुहिऴिऩ मुऱुव ऩल्लार्
इत्तऩ्मै यॆय्द ऩोक्कि यरशुवीऱ् ऱिरुन्द वॆल्लै
यत्तऩ्मै यरियिऩ् शेऩै यार्हलि यार्त्त वोशै
अत्तऩ्मॆय् मयङ्ग वन्दु शॆवितॊऴ मडुत्त दऩ्ऱे 2770

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुत्तु अत्मै–मोती नहीं ऐसा; मॊळियल् आका–जो नहीं कहा जा सकता; मुकिळ् इळ मुऱुवल्–ऐसे मंदहास से; नल्लार्–शोभनेवाली स्त्रियाँ; इ तन्मै ऍय्तल्–इस (नशे की) स्थिति में पहुँची हैं, यह हालत; नोक्कि–देखकर; अरचु–राजा (रावण); वीऱ्ऱिरुन्त ऍल्लै–जब विराजमान रहा तब; अ तन्मै–उधर जीवित स्थिति में आये; अरियिन् चेत्त आर्कलि–वानर-सेना-सागर का; आर्त्त ओचै–घोषित नाद; अत्तत्–उसके; मॆय् मयङ्क–शरीर को थकाते हुए; चॆवि तॊऱम् वन्तु अडुत्तत्तु–(रावण के) कान-कान में आ लगा। २७७०

मोती ही सम मृदु हास वाली स्त्रियाँ ऐसी स्थिति में आ रही थीं। राक्षसराज यह देखते हुए आनंद के साथ विराज रहा था। तभी वानर-सेना-सागर ने उच्च नाद उठाया। वह उसके शरीर को थकाते हुए हर कान में जा पहुँचा। २७७०

आडलुङ् गळिप्पिन् वन्द वमलैयु ममुदि तान्ऱ्
पाडलु मुऴवित् ऱैय्वप् पाणियुम् बवळ वायार्
ऊडलुङ् गडैक्कण् णोक्कु मऴलैवॆव् वुरैयु मॆल्लाम्
वाडन्मॆन् मलरे यॊत्त वार्प्पॊलि वरुद लोडुम् 2771

पवळ वायार्–मूँगे के समान मुख वाली राक्षसियों के; आटलुम्–नाच और; कळिप्पिन् वन्त–मत्तता से उठे; अमलैयुम्–शोर और; अमुतिन् आन्ऱ्–अमृत से भी श्रेष्ठ; पाटलुम्–गान और; मुऴवित्–मृदंग आदि वाद्यों के; तॆय्वम् पाणियुम्–दिव्य ताल-स्वर; ऊटलुम्–रूठन; कटै कण् नोक्कुम्–कटाक्ष; मऴलै–तोतली; वॆम्मै उरैयुम्–प्यारी बोलियाँ; ऍल्लाम्–सब; आर्प्पु ऒलि–नर्दन का स्वर; वरुतलोटुम्–ज्योंही आया, त्योंही; वाटल्–मुरझाये; मॆल् मलरे ऒत्त–मृदु फूल के ही समान हो गये। २७७१

प्रवालमुखी राक्षसियों के नाच और मद्यमस्ती में उत्पन्न शोर अमृत के समान गान और मृदंग आदि बाजों के दैवी नाद और ताल, रूठन, कटाक्ष, तुतली प्यारी बोलियाँ —सभी वानर-सेना के नर्दन के उठते ही मुरझाये मृदु सुमन-से हो गये। २७७१

तऱिपॊरु कळिनल् यात्तै शेवहन् दळ्ळि येङ्गत्
तुऱुशुवऱ् पुरवि तूङ्गित् तुणुक्कुऱ् वरक्क रुट्कच्
चॆऱिहळ् लिरुवर् दॆय्वच् चिलैयॊलि पिऱन्द दन्ऱे
ऍऱिकडल् कडैन्द मेन्ना ळॆऴुन्द पेराशै यॆन्न 2772

चॆऱि कळल् इरुवर्–ठोस पायलधारी दोनों (राम-लक्ष्मण) के; तॆय्वम् चिलै ऒलि–दैवी धनु की टंकार; तऱि पॊरु–खूँटे से टकरानेवाले; कळि नल् यात्तै–मद-मत्त तथा श्रेष्ठ गज; चेवकम् तळ्ळि एङ्क–अपने सोने के स्थान में पड़े म्लान हुए; तुऱु चुवल् पुरवि–घने अयालवाले अश्व; तूङ्कि–काँपकर; तुणुक्कु उऱ्–भयभीत हुए; अरक्कर् उट्क–राक्षस डरे (ऐसा); ऍऱि–तरंग फेंकते; कटल् कडैन्त–सागर को (जिस दिन) मथा गया; मेन्नाळ्–उस प्राचीन दिन में; ऍऴुन्त पेर् ओचै–जो बड़ा शोर उठा; ऍन्न–उसके समान; पिऱन्तत्तु–उठी। २७७२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

घनी-वीर-पायल-धारी श्रीराम और लक्ष्मण के धनु की टंकार उठी, तो मदमत्त हाथी अपने सोने के स्थानों में पड़े म्लान हो गये। घने अयालवाले अश्व भय-चकित हो गये। राक्षस डर गये। और वह ध्वनि उस दिन तरंगविक्षुब्ध समुद्रमथन के अवसर पर उठे नादके समान थी। २७७२

मुत्तम्वा णहैक्कुत् तोऱ्कु मुहत्तियर् मुऴुक्कण् वेलाऱ्
कुत्तुवार् कूट्ट मॅल्लाम् वानरक् कुऴुविऱ् ऱोन्ऱ
मत्तुवाऴ् कडलि नुळ्ळ मऱुहुऱ वदन मॅन्नुम्
पत्तुवाण् मदिक्कु मन्नाट् पहलॉत्त दिरवु पण्बाल् 2773

मुऴु कण् वेलाल्–पूर्ण आँख रूपी शक्ति को; कुत्तुवार्–भोंकती; मुत्तम्–मोती; वाऴ् नकैक्कु–जिनके प्रकाशमय हास के सामने; तोऱ्कुम्–हार जाते ऐसे; मुकत्तियर्–मुख वाली नारियाँ; ॲल्लाम्–सभी; वानरम् कुऴुविल् तोन्ऱ–वानर-समूह-सी लगीं; मत्तु वाऴ् कटलिन्–तब मथानी-सहित समुद्र के समान; उळ्ळम् मऱुकुऱ–चित्त के व्यग्र होते; अ नाळ्–उस दिन; इरवु–रात; पण्पाल्–अपनी स्थिति से; वतनम् ॲन्नुम्–वदन रूपी; वाऴ्–प्रकाशमय; पत्तु मतिक्कुम्–दसों चन्द्रों के लिए; पकल् ऑत्ततु–दिन-सा लगा। २७७३

अपनी पूर्ण बड़ी आँखों के साँग से सालनेवाली, मोतियों को हराने वाले हँसी के मुखों की रमणियाँ अब रावण को वानर-सेना-सी (अप्रिय) लगीं। उसका मन मन्दर-मथानी से विलोडित क्षीरसागर-सा विक्षुब्ध हो गया। उस रात की स्थिति ही बदल गयी। इसलिए वह रात उसके चंद्र-सम दसों मुखों के लिए दिन बन गयो। २७७३

ईदिडै याह वन्दा रलङ्गन्मी देऱि नार्पोय्
ऊदिनार् वेय्हळ् वण्डि नुरुविन्ना रुऱ्ऱ वॅल्लान्
तीदिलर् पहैञ रॅन्नत् तिक्कॅन्ऱ मनत्तन् ऱॅय्वम्
पोदुहु पन्दर् निन्ऱु मन्दिरत् तिरुक्कै पुक्कान् 2774

ईतु इडैयाक–एतन्मध्य; वन्तार् वेय्कळ्–आगत चर; वण्टिन् उरुविन्तार्–भ्रमर-रूप-धारी बन; अलङ्कल् मीतु–माला पर; पोय् एऱिन्तार्–जा चढ़े; ऊतिन्तार्–(कान में) फूंके; उऱ्ऱ ॲल्लाम्–जो बीता वह सब; इरावणन् पकैञर्–रावणशत्रु; तीतिलर्–हानि-रहित हैं; ॲन्नत–जानकर; तिक् ॲन्ऱ मनत्तन्–ठिठक-भरे मन का होकर; तॅय्वम् पोतु उकु–दैवी पुष्प जहाँ चूते थे उस; पन्तर् निन्ऱु–मण्डप को छोड़कर; मन्तिरत्तु–मंत्रणा-मण्डप में; पुक्कान्–पहुँचा। २७७४

जब यह हो रहा था तब चर आये। भ्रमरों के रूप में रावण की माला पर से चढ़कर उन्होंने बीता सारा हाल रावण के कानों में फूंका। रावण ने जब जाना कि उसके शत्रुओं पर कोई आँच नहीं आयी है, तो उसके मन में ठिठक भर गयी। वह उस मण्डप से, जिसमें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दैवी फूल (कलप-सुमन) चू रहे थे, निकलकर अपने मन्त्रणागृह में पहुँच गया। २७७४

25. माया शीदैप् पडलम् (माया-सीता पटल)

मैन्दनु मऱ्ऱु ळोरु महोदरन् मुदलो राय
तन्दिरत् तलैमै योरु मुदियरुन् दळ्ळवत् तक्क
मन्दिर रॅवरुम् वन्दु मरुङ्गुऱप् पडर्न्दार् पट्ट
अन्दर मुळ्ळुदुन् दाने यऩैयवर्क्क् कऱियच् चॊन्नान् 2775

मैन्तनुम्–पुत्र (इन्द्रजित्) और; मऱ्ऱुळोरुम्–अन्य; मकोतरन् मुतलोराय–महोदर आदि; तन्तिरम् तलैवरुम्–सेनापति; मुतियरुम्–वृद्ध लोग और; तळ्ळव तक्क–मंत्रणा-समर्थ; मन्तिरर् ऍवरुम्–सभी मन्त्री; वन्तु–आये; मरुङ्कु उऱ–पार्श्वस्थ हो; पटर्न्तार्–घेरकर बैठे; पट्ट–आप बीता; अन्तरम् मुळ्ळुतुम्–दुःख का सारा हाल; अऩैयवर्क्कु–उनसे; तान्–खुद; अऱिय–समझाकर; चॊन्नान्–(रावण ने) कहा। २७७५

मंत्रणागृह में उसका पुत्र इन्द्रजित्, महोदर आदि सेनापति, वयोवृद्ध लोग और मंत्रणा देने की योग्यता रखनेवाले नेता लोग आये और घेरकर बैठ गये। तब रावण ने अपना सारा दुःख अपने ही मुख से पूर्ण रूप से कह सुनाया। २७७५

इलङ्गैयि निऩ्ऱु मेरुप् पिऱ्पड विमैप्पिऱ् पाय्न्दु
वलङ्गिळर् मरुन्दु निऩ्ऱ मलैयॊडुङ् गॊणर वल्लान्
अलङ्गलन् दडन्दो ळण्ण लनुमऩे यादल् वेण्डुम्
कलङ्गलि लुलहुक् कॆल्लाङ् गारणङ् गण्ड वाऱ्ऱाल् 2776

(माल्यवान) उलकुक्कु ऍल्लाम्–सारे लोकों के; कलङ्कलिल्–अप्रमत्त; कारणम्–कारण को; कण्ट आऱ्ऱल्–देखा है उस शक्ति से; इलङ्कैयिऩ् निऩ्ऱु–लंका से; इमैप्पिऩ्–एक पल में; मेरु पिऱ्पट–मेरु को पीछे छोड़कर; पाय्न्तु–लपक चलकर; वलम् किळर् मरुन्तु–प्रभावमय 'मृतसंजीवनी' औषध को; निऩ्ऱु मलैयॊटुम्–वह जिसमें रहा उस पर्वत के साथ; कॊणर वल्लान्–ला सकनेवाला; अलङ्कल्–माला से अलंकृत; अम् तटम् तोळ्–सुन्दर विशाल कन्धों वाला; अण्णल्–महिमावान; अनुमऩे आतल् वेण्टुम्–हनुमान ही होगा। २७७६

(तब माल्यवान ने कहना आरम्भ किया—) जो अशेष तथा अचल लोककारण का ज्ञान रखता है और जिसे अपूर्व बल प्राप्त है; जो लंका से निकलकर मेरु के भी आगे एक पल में गया और शक्तिसंयुक्त औषधों को उनके पर्वत के साथ ला सका, वह सुंदर माला से अलंकृत विशाल कंधों वाला महावीर हनुमान ही हो सकता है। २७७६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीरिनैक् कडक्क वाङ्गि यिलङ्गैया निन्ऱ कुन्ऱैप्
पारिनिऱ् किऴिय वीशि नारुळर् पिऴैक्कर् पालार्
पोरिनिप् पॊरुव दॆङ्गे पोयिन वनुमन् पॊन्मा
मेरुवैक् कॊणर्न्दिव् वूर्मे लिडुमॆनिन् विलक्क लामो 2777

इलङ्कैया निन्ऱ–लंका के रूप में स्थित; कुन्ऱै–पर्वत को; नीरिनै कटक्क–जल से अलग करके; वाङ्कि–उठाकर; पारिनिल्–भूमि पर; किऴिय वीचिन्–चीरते हुए कोई पटके तो; पिऴैक्कल् पालार्–बच सकनेवाले; यार् उळर्–कौन हैं; पोयिन अनुमन्–जो गया वह हनुमान; पॊन् मा मेरुवै–स्वर्ण के बड़े मेरु को; कॊणर्न्तु–लाकर; इ ऊर् मेल्–इस नगर पर; इट्टुम् ऍनिन्–डाले तो; विलक्कल् आमो–रोका जा सकेगा क्या; इनि–अब; पोर् पॊरुवतु ऍङ्के–लड़ना कहाँ । २७७७

लंका के पर्वत को समुद्र से अलग करके उठाकर कोई भूमि पर उसको चीरते हुए डाल दे तो बचनेवाला कौन होगा ? ओषधि-पर्वत जो लाने गया, वह स्वर्ण-मंदर पर्वत को लाकर इस नगर पर डाल गया होता तो कोई उसे रोक सकता था क्या ? इस हालत में युद्ध कहाँ होगा ? । २७७७

मुऱैहॆड वॆन्ऱु वेण्डिन् निनैत्तदै मुडिप्पन् मुन्बिन्
कुऱैविलाक् कुणङ्गट् काङ्गोर् कोदिलर् वेदङ् गूऱम्
इऱैवर्कण् मूव रॆन्ब दॆण्णिला रॆण्ण मेदान्
अऱैहळ् लनुम नोडुम् नाल्वरे मुदल्व रम्मा 2778

मुऱै कॆट–(सृष्टि-) क्रम बदलूँ; ऍन्ऱु वेण्टिन्–ऐसा इच्छा करे तो; निनैत्तते–सोचा ही; मुन्पिन्–बल से; मुटिप्पन्–पूरा कर देगा; कुऱैवु–त्रुटि; इला–हीन; कुणङ्कट्कु–गुणकथन के लिए; ओर् कोतिलर्–कोई दोष जो नहीं रखते; वेतम् कूऱम्–वेदशंसित; इऱैवर्कळ्–देवता; मुवर्–तीन; ऍन्पतु–कहना; ऍण्णिलार्–विवेकहीनों का; ऍण्णमे तान्–विचार है; मुतल्वर्–प्रथम; अऱै कळल् अनुमनोटुम्–क्वणनशील पायलधारी हनुमान को मिलाकर; नाल्वरे–चार ही हैं; अम्मा–आश्चर्य री मैया । २७७८

अगर हनुमान चाहे कि 'उलट-फेर मचा दूँगा' तो वह अपने बल से वह काम पूरा कर सकेगा । 'निर्दोष गुणपूर्ण आदिदेव तीन हैं'—यह अविवेकियों का विचार है । असल में आदिदेव क्वणनशील पायलधारी हनुमान को मिलाकर चार हैं ! यह विस्मयकारी बात है, री मैया ! । २७७८

नङ्गिळै युलन्द दॆल्ला मुयन्दिड नणुहु मन्ऱे
वॆङ्गॊडुन् दीमै तन्नाल् वेलैयि निट्टि लोमेल्
इङ्गुळ वॆल्ला माडर् किनिवरु मिडैयू रिल्लै
पङ्गयत् तण्णन् मीळाप् पडैपळु दुऱ्ऱ पण्बाल् 2779

उलन्ततु–जो मरे; नम् किळै ऍल्लाम्–उन हमारे सारे बांधवों को; वॆम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॊटुम् तीमै तन्नाल्–भयंकर नाशकारी बुराई से; वेलैयिन्–समुद्र में; इट्टिलोमेल्–नहीं डालते तो; उय्न्तिट नणुकुम् अन्ऱे–बच सकते न; पङ्कयत्तु अण्णल्–कमलासन भगवान का; मीळा पटै–अवार्य अस्त्र; पळुतु उऱ्ऱ–असफल हुआ उस; पण्पाल्–हालत में; इति–अब; इङ्कु उळ ऎल्लाम्–यहाँ का सभी; माळ्तऱ्कु–मिट जाय इसमें; वरुम्–होनेवाली; इटैयूऱु इल्लै–कोई बाधा नहीं। २७७९

हमारे लोग जितने मरे हैं, उन सबको अगर क्रूरता के साथ समुद्र में तुम न डाल गये होते तो उनके बचने का मौक़ा होता न ? कमलासन भगवान ब्रह्मा का अस्त्र, जो कभी असफल नहीं होता, अब व्यर्थ हो गया है। इस स्थिति में अब यहाँ के लोगों के मरने में कोई बाधा नहीं होगी। २७७९

इऱन्दव रिऱन्दु तीर विनियॊरु पिऱवि वन्दु
पिऱन्दन माहि युळ्ळो मुय्न्दनम् बिळैक्कुम् बॆऱ्ऱि
मऱन्दन मॆनिनु मिन्नञ् जनहियै मरबि नीन्दे
अऱन्दरु शिन्दै योरै यडैक्कलम् बुहुदु मैय 2780

ऐय–तात; इऱन्तवर् इऱन्तु तीर–मरे सो मरे, उन्हें छोड़ो; इनि–अब; ऒरु पिऱवि वन्तु–और एक जन्म प्राप्त कर; पिऱन्तनम् आकि–जनमे; उळ्ळोम्–जो हैं वे हम; उय्न्तनम्–बचे; पिळैक्कुम् पॆऱ्ऱि–जीवित रहने का उपाय; मऱन्तनम्–भूल गये; ऎनिनुम्–तो भी; इन्नम्–अब ही सही; चनकियै–जानकी को; मरपिन् ईन्ते–आदरपूर्वक दे देकर; अऱम् तरु चिन्तैयोरै–धर्ममन (राम और लक्ष्मण) की; अटैक्कलम् पुकुतुम्–शरण में जायँ। २७८०

तात ! जो मरे, वे मरे। हम जो बचे हैं, हमें मानो नया जन्म ही बख्शा गया है। जीवित रहने का मार्ग भी हम भूल गये हैं। तो भी हम देवी जानकी को आदर के साथ लौटा दें और धर्मचित्त श्रीराम और लक्ष्मण की शरण पड़ें। २७८०

वालियै वाळि यॊन्ऱाल् वानिडै वैततु वारि
वेलैयै वॆन्ऱु कुम्ब करुणनै वीट्टि नानै
आलियिन् मॊक्कु ळन्न वरक्करो वमरिन् वॆल्वार्
शूलियैप् पॊरुप्पि नोडुन् दूक्किय विशयत् तोळाय् 2781

चूलियै–शूली को; पॊरुप्पितोटुम्–पर्वत के साथ; तूक्किय–उठानेवाले; विचय–विजयी; तोळाय्–कंधों वाले; वाळि ऒन्ऱाल्–एक बाण से; वालियै–बाली को; वानिटै वैत्तु–आकाश में पहुँचाकर; वारि वेलैयै–जल-सागर को; वॆन्ऱु–अधीन करके; कुम्पकरुणनै–कुंभकर्ण को; वीट्टिनानै–जिसने मारा उसे; आलियिन् मॊक्कुळ् अन्न–ओले के बुलबुले के समान; अरक्करो–राक्षस क्या; अमरिन्–युद्ध में; वॆल्वार्–मारेंगे। २७८१

शूली शिव को कैलास पर्वत के साथ उठानेवाले विजयस्कन्ध ! जिसने एक ही बाण से वाली को मारा, समुद्र को अधीन कर लिया और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुम्भकर्ण को भी मारा, क्या उसे जल के बुलबुले के समान राक्षस युद्ध में हरा सकेंगे ? । २७८१

मऱिकडल् कुडित्तु वाऩै मण्णॊडुम् बऱिक्क वल्ल
ऍऱिपडै यरक्क रॆल्ला मिऱन्दऩ रिलङ्गै यूरुञ्
जिऱुवनु नीयु मल्लाल् यारुळ रॊरुवर् तीर्न्दार्
वॆऱिदुनम् वॆन्ऱि यॆन्ऱान् मालिमेल् विळैव दोर्वान् 2782

मेल् विळैवतु–भविष्य में जो होगा उसे; ओर्वान्–सोचनेवाले; मालि–माली ने; मऱि कटल् कुडित्तु–उमगते सागर को पीकर; वाऩै–आकाश को; मण्णॊटुम् पऱिक्क वल्ल–भूमि के साथ उखाड़ सकनेवाले; ऍऱि पटै–फेंके जा सकें, ऐसे हथियारों वाले; अरक्कर् ऍल्लाम्–सारे राक्षस; इऱन्ततर्–मर ही गये; तीर्न्तार्–(मरने से) जो रहे; इलङ्कै ऊरुम्–लंका नगर और; चिऱुवनुम्–पुत्र; नीयुम् अल्लाल्–और तुम्हें छोड़; ऒरुवर् यार् उळर्–और कोई क्या है; नम् वॆन्ऱि–हमारी विजय; वॆऱितु–व्यर्थ है; ऍन्ऱान्–कहा । २७८२

भविष्यवेत्ता माल्यवान ने आगे कहा कि उमँगनेवाले समुद्र को पीकर, आकाश और भूमि को उखाड़ सकनेवाले सारे वीर मर गये । बचे तो तुम हो और तुम्हारा पुत्र बचा है ! लंकानगर है । और कौन है ? विजयकामना व्यर्थ है । २७८२

कट्टुरै यदऩैक् केळाक् कण्णॆरि कदुव नोक्किप्
पट्टऩ ररक्क रॆन्ऩिर् पडैक्कलम् बडैत्त वॆल्लाङ्
गॆट्टऩ वॆऩिनुम् वाळ्क्क कॆडादुनऱ् किळिय ऩाळै
विट्टिड वॆण्णि योनान् पिडित्तदु वेट्कै वीय 2783

कट्टुरै अतऩै–निर्णय के उन वचनों को; केळा–सुनकर; कण् ऍरि–आँख की आग; कतुव–(माल्यवान को) जला दे ऐसा; नोक्कि–देखकर; अरक्कर् पट्टसर् ऍन्ऩिऩ्–राक्षस हत हो गये तो भी; पटैत्त–प्राप्त; पटैक्कलम् ऍल्लाम्–हथियार सभी; कॆट्टऩ ऍऩिनुम्–बेकार गये तो भी; नल् किळि अऩाळै–सुन्दर शुक-सदृश सीता को; नान् पिटित्ततु–जो मैं पकड़ लाया वह; वेट्कै वीय–इच्छा को नष्ट करके; वाळ्क्कै कॆटातु–जीवन नष्ट न करके; विट्टिट ऍण्णियो–छोड़ना सोचकर क्या । २७८३

रावण की आँखों से यह सुनकर अंगारे फूट निकले और माल्यवान पर लगे । रावण ने कहा कि क्या हुआ अगर वीर मरे और हथियार व्यर्थ हो गये ? शुक-समाना सीता को क्या मैं इसलिए पकड़ लाया कि जीवन व्यर्थ किये विना अपनी कामना और उसे त्याग दूं ? । २७८३

मैन्दऩैन् मऱ्ऱै योरॆ ऩञ्जिऩिर् वाळ्क्कै वेट्टीर्
उय्न्दुनीर् पोवीर् नाळै यूऴिवॆन् दीयि ऩोङ्गिच्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिन्दिनन् मनिद रोडु कुरङ्गिनैत् तीर्प्पं नॅन्ड्रान्
वॅन्दिर लरक्कर् वेन्दन् महनिवै विळम्ब लुर्ड्रान् 2784

वॅम् तिर्ल्-कठोर बली; अरक्कर् वेन्तन्-राक्षसराज; मैन्तन् ऍन्-पुत्र क्या; मर्ड्रैयोर् ऍन्-अन्यों से क्या; अञ्चिनिर्-तुम सब डर गये; वाळ्क्कै वेट्टीर्-जीवन का मोह करते हो; नीर्-तुम लोग; उयन्तु पोवीर्-बच जाओ; नाळै-कल ही; ऊळि वॅम् तीयिन्-युगान्त की भयंकर आग के समान; ओङ्कि-उठकर; मनितरोटु-नरों के साथ; कुरङ्कितै-वानरों को; चिन्तिनॅन्-तितर-बितर करके; तीर्प्पॅन्-मिटा दूंगा; ऍन्ड्रान्-बोला; मकन्-पुत्र; इवै-ये; विळम्पल् उर्ड्रान्-कहने लगा। २७८४

क्रूर बली राक्षसराज (रावण) ने सभासदों से निष्ठुरता से कहा कि अब मेरे पुत्र से क्या होगा? अन्यों से भी क्या फ़ायदा? तुम सब डर गये हो। जीवन के मोह में पड़े हो! चलो सब! जान बचाते चले जाओ। कल ही मैं युगांत की अग्नि के समान उठूँगा और नरों और वानरों का खातमा कर दूँगा। तब पुत्र इन्द्रजित् ने निम्नोक्त बातें कहीं। २७८४

उळदुना नुणर्त्तर् पाल वुणर्न्दनै कोड लुण्डेल्
तळमलर् किळवन् ड्रन्द पडैक्कलन् दळलिर् चेर्त्ति
अळविल दमैय विट्ट दिरामनै नीक्कि यन्राल्
विळैविल दनैयन् मेनित् तीण्डिन्ड्रि मीण्ड दम्मा 2785

उणर्न्तनै-समझकर; कोटल् उण्टेल्-लेना होगा तो; नान् उणर्त्तल् पाल-मेरे समझाने योग्य; उळतु-(वचन) हैं; तळम् मलर् किळवन्-सदल कमल का भगवान; तन्त-(ब्रह्मा द्वारा) दत्त; पटैक्कलम्-अस्त्र; तळलिर् चेर्त्ति-अग्नि में रखकर; अळविलतु-(शक्ति में) अपार बनाकर; अमैय-ठीक बने, ऐसा; विट्टतु-मुझसे चलाया गया वह; इरामनै नीक्कि अन्ड्र-राम को छोड़कर नहीं; विळैविलतु-बेकार हो; अनैयन् मेनि-उसके शरीर को; तीण्टिन्ड्रि-स्पर्श किये बिना ही; मीण्टतु-वापस आ गया; अम्मा-क्या ही आश्चर्य माँ। २७८५

अगर आप समझ लेने के लिए तैयार हों तो कुछ कहने को मेरे पास है। सदल कमल-भव के अस्त्र को मैंने अग्नि में रखकर जो चलाया था, वह राम को अलग करके नहीं। पर वह अस्त्र बेकार हो गया। उसके शरीर को स्पर्श किये बिना ही लौट आ गया। यह आश्चर्य है माँ! । २७८५

मानिड नल्लन् रॊल्लै वानव नल्लन् मर्रुम्
मेनिवर् मुनिव नल्लन् वीडणन् मॅय्यिर् चॊन्न
यानॅन्न दंण्ण रीर्न्दा रॅण्णुरु मॊरुव नॅन्ड्रे
तेनहु तॅरियन् मन्ना शेहर्त् तॅरिन्द दन्ड्रे 2786

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेन् नकु–शहद-भरी; तॅरियल् मन्ना–मालाधारी राजा; मानिटम् अल्लन्–(वह) नर नहीं; तॊल्लै–पुरातन; वानवन् अल्लन्–देव नहीं; मऱ्ऱुम्–और; मेल् निवर्–उत्कृष्ट; मुनिवन् अल्लन्–मुनि नहीं; वीटणन्–विभीषण ने; मॅय्यिल्–सच ही; चॊन्न–जिसके बारे में कहा वह; यान् ऍन्नु ऍण्णल् तीर्न्तार्–अहंकार, ममकार-रहित लोग; ऍण्णुऱुम्–जिसका स्मरण करते हैं; ऒरुवन् ऍन्ऱे–अद्वितीय है यही; चेकु अऱ–विना संशय के; तॅरिन्ततु–जाना गया। २७८६

मधुमिश्रित सुमनमालाधारी राजा ! अब निस्संदेह समझ में आ गया कि वह नर नहीं; पुरातन देवता नहीं; और उत्कृष्ट मुनि भी नहीं। पर विभीषण ने सच जो कहा है, उसके अनुसार वह अहंकार, ममकार-रहित साधुओं का आराध्य देव परमेश्वर है। २७८६

अन्नैयदु वेऱु निऱ्क वन्नदु पहर्द लाण्मै
विन्नैयॅन्नि नन्ऱु निन्ऱु वीळ्न्ददु वीळ्ह वीर
इन्नैयनी मूण्डि यान्बोय् निहुम्बिलै विरैवि नॅय्दित्
तुन्नियऱु वेळ्वि वल्लै यियऱ्ऱिनान् मुडियुन् दुन्बम् 2787

अन्नैयतु–वह तथ्य; वेऱु–अलग एक ओर; निऱ्क–रहे; अन्नतु पकर्तल्–वह कहना; आण्मै विन्नै–वीर कार्य है; ऍन्नित्–तो; अन्ऱु–नहीं; निन्ऱु–रहकर; वीळ्न्नतु वीळ्क–जो नष्ट हुआ वह हो गया रहे; वीर–वीर; नी इळैयल्–आप म्लान मत हों; यान्–मैं; विरैवित्–जल्दी; निकुम्पिलै मूण्टु पोय्–निकुंभिला (लंका के बाहर एक मन्दिर का स्थान) में त्वरा से जा; ऍय्ति–पहुँचकर; वल्लै–शीघ्र; तुन्नि अऱु–दोषहीन; वेळ्वि–यज्ञ; इयऱ्ऱिनाल्–संपन्न करूँ तो; तुन्पम् मुडियुम्–दुःखों का अन्त हो जायगा। २७८७

वह तथ्य रहे एक ओर। उसको मानना वीरता का लक्षण नहीं होगा। जो मिट गया सो मिट गया। वीर ! आप दुःखी मत हों। मैं निकुंभिला जाऊँगा, शीघ्र विधिवत यज्ञ करूँगा। वह संपन्न हो जायगा तो सारे दुःख दूर हो जायँगे। २७८७

अन्नदु नल्ल देया लमैत्तियॅन् ऱरक्कन् शॊन्नान्
नन्मह नुम्बि कूऱ नण्णलार् कण्डु नण्णि
मुन्नित्य वेळ्वि मुऱ्ऱा वहैशॅरु मुयल्व रॅन्ना
ऍन्नव रॅय्दा वण्ण मियऱ्ऱला मुऱुदि यॅन्ऱान् 2788

अरक्कन्–राक्षस (रावण) ने; अन्नतु नल्लते–वही अच्छा है; अमैत्ति–करो; ऍन्ऱु चॊन्नान्–ऐसा कहा; नन् मकन्–अच्छे लड़के के; उम्पि कूऱ–आपके छोटे भाई के कथन से; नण्णलार्–शत्रु; कण्टु–जानकर; नण्णि–मेरे पास आकर; मुन्नित्य–आरब्ध; वेळ्वि–याग; मुऱ्ऱा वकै–पूरा न हो ऐसा; चॆऱु मुयल्वर्–युद्ध का प्रयत्न करेंगे; ऍन्ना–ऐसा कहने पर; अवर् ऍय्ता वण्णम्–वे न आएँ उस प्रकार; ऍन्नु उऱुति–कौन सा उपाय; इयऱ्ऱलाम्–कर सकते हैं; ऍन्ऱान्–पूछा (रावण ने)। २७८८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षस ने कहा कि ठीक है वही करो। तब सुपुत्र ने प्रश्न किया कि अगर आपके भाई के बतलाने पर शत्रु लोग आकर मेरे यज्ञ को पूरा न होने देते हुए युद्ध करें तो ? रावण ने पूछा, वे न आएँ, इसका क्या उपाय किया जाय ? । २७८८

शानहि युरुव माहच् चमैत्तव डन्मै कण्ड
वानुय रनुमन् मुन्ने वाळिनाऱ् कॊन्ऱु माऱ्रि
यानॆडुञ् जेनै योडु मयोत्तिमे लॆळुन्दे नॆन्नप्
पोनबिन् पुरिव दॊन्ऱुन् दॆरिहिलर् तुन्बम् बूण्बार् 2789

चानकि उरुवमाक–जानकी के रूप में; चमैत्तु–कोई (प्रतिमा) बनाकर; अवळ् तन्मै कण्ट–उसके स्वभाव के ज्ञाता; वान् उयर् अनुमन् मुन्ने–आकाश तक चढ़े यश वाले हनुमान के सामने; वाळिनाल् कॊन्ऱु–तलवार से काटकर; माऱ्रि–जान लेकर; यान्–मैं; नॆटुम् चेनैयोटुम्–बड़ी सेना के साथ; अयोत्ति मेल् ऍळुन्तेन् ऍन्न–अयोध्या पर चढ़ने गया जैसा (भ्रम पैदा करके); पोन पिन्–जाऊँगा, उसके बाद; तुन्पम् पूण्पार्–(राम-लक्ष्मण) दुःखी होंगे; पुरिवतु ऒन्ऱुम् तॆरिकिलर्–क्या करना यह नहीं जानेंगे। २७८९

इन्द्रजित् ने कहा कि स्वर्ण की माया-सीता रचूँगा। उसको खूब जानता है वह श्रेष्ठ हनुमान। उसके सामने अपनी तलवार से उसकी जान ले लूँगा। फिर अयोध्या पर अपनी सेना के साथ चढ़ जाने का भ्रम पैदा करके चला जाऊँगा। बाद वे दुःखी होंगे और नहीं जानेंगे कि क्या करना है ? । २७८९

इत्तलैच् चीदै माण्डाळ् पयनिव णिल्ल यॆन्बार्
अत्तलैत् तम्बि मारुन् दायरु मडुत्तु ळोरुम्
उत्तम नहरु माळु मॆन्बदो रच्च मून्ऱप्
पॊत्तिय तुन्बत् तोडुञ् जेनैयुन् दामुम् बोवार् 2790

इ तलै–यहाँ; चीतै माण्टाळ्–सीता मर गयी; इवण् पयन् इल्लै–अब यहाँ कोई काम नहीं; ऍन्पार्–कहकर; अ तलै–वहाँ; तम्पिमारुम्–भाई लोग और; तायरुम्–माता लोग और; अटुत्तुळोरुम्–रिश्तेदार लोग; उत्तम नकरुम्–और उत्तम नगर (अयोध्या); माळुम्–मिट जायँगे; ऍन्पतु ओर् अच्चम्–ऐसा एक भय; ऊन्ऱ–स्थिर हो जाय तो; पॊत्तिय तुन्पत्तोटुम्–भरपूर दुःख के साथ; चेनैयुम् तामुम्–सेना और वे; पोवार्–लौट चलेंगे। २७९०

इधर सीता मर गयी। अब यहाँ कोई काम नहीं। वहाँ तो भाई, माताएँ और अन्य परिवार के लोग मर जायँगे। नगर का भी नाश होगा। यह भय उनके मन में घर कर लेगा। तो वे दुःख से भरकर सेना-सहित लौट जायँगे। २७९०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोहिल रन्ऱ पोदु मनुमन्नै याण्डुप् पोक्कि
आहिय दऱिन्दा लन्ऱि यरुन्दुय राऱ्ऱ लाऱ्ऱार्
एहिय करुम मुऱ्ऱिया निवण् विरैवि नॆय्दि
वेहवॆम् बडैयिऱ् कॊन्ऱु तरुहुवन् वॆन्ऱि यॆन्ऱान् 2791

पोकिलर् ऍन्ऱ पोतुम्–न जाएँ तब भी; अनुमन्नै आण्टु पोक्कि–हनुमान को वहाँ भिजवाकर; आकियतु–(वहाँ) जो हुआ वह; अरिन्ताल् अन्ऱि–विना जाने; अरुम् तुयर्–अपार दुःख; आऱ्ऱल् आऱ्ऱार्–नहीं सह सकेंगे; यान्–मैं; एकिय करुमम्–जिस पर गया वह कर्म; मुऱ्ऱि–पूरा करके; इवण्–यहाँ; विरैविन् ऍय्ति–जल्दी आकर; वेक–तेज; वॆम् पटैयिल्–भयंकर हथियारों से; कॊन्ऱु–उन्हें हत करके; वॆन्ऱि तरुकुवन्–विजय दिला दूँगा; ऍन्ऱान्–कहा। २७९१

अगर वे नहीं जाएँ तो भी वे हनुमान को उधर भिजवाकर समाचार जान लेंगे। नहीं तो उनको कल नहीं पड़ेगी; अपार दुःख झेल नहीं सकेंगे। इतने में तब मैं अपना काम संपन्न करके शीघ्र लौटूँगा। लौट कर तेज तथा घातक अस्त्रों से उन्हें मार दूँगा और आपको विजय दिला दूँगा। २७९१

अन्नदु पुरिद नन्ऱॆन् ऱरक्कनु ममैय वञ्जप्
पॊन्नुरु वमैक्कु माय मियऱ्ऱुवान् मैन्दन् पोनान्
इन्नदित् तलैय दाह विरामनुक् किरवि शॆम्मल्
तॊन्नह रदनै वल्लैक् कडिहॆडच् चुडुदु मॆन्ऱान् 2792

अन्नतु पुरितल्–वैसा करना; नन्ऱु ऍन्ऱु–ठीक कहकर; अरक्कनुम् अमैय–राक्षस (रावण) के सम्मत होते; मैन्तन्–कुमार; पॊन् उरु अमैक्कुम्–स्वर्ण-प्रतिमा बनाने का; वञ्च मायम् इयऱ्ऱुवान्–वंचक मायाकार्य करने; पोनान्–गया; इ तलै–यहाँ; इन्नतु आक–यह होता रहा, तब; इरामनुक्कु–श्रीराम से; इरवि चॆम्मल्–रवि के पुत्र सुग्रीव ने; तॊल् नकर् अनतै–प्राचीन नगर को; कटि कॆट–रक्षण-शून्य करके; वल्लै–शीघ्र; चुटुतुम्–जला देंगे; ऍन्ऱान्–ऐसा कहा। २७९२

रावण ने भी सम्मति दी कि वही अच्छा काम है। तब कुँअर इन्द्रजित् स्वर्ण-प्रतिमा का मायारूप निर्मित कराने चला गया। इधर जब यह हो रहा था, तब रविपुत्र ने श्रीराम को सुझाया कि हम पुरातन लंका नगरी को अरक्षित कर जला दें और मिटा दें। २७९२

अत्तॊऴिल् पुरिद नन्ऱॆन् ऱण्णलु मऱैय वॆण्णित्
तत्तिन निलङ्गै मूदूर्क् कोबुरत् तुम्बर्च् चार्न्दान्
पत्तुडै येऴ शान्ऱ वानर कुऴुवुम् बऱ्ऱिक्
कॆत्तलत् तोरोर् कॊऴ्ऴि यॆडुत्तदॆव् वुलहुङ् गाण 2793

अण्णलुम्–प्रभु श्रीराम ने भी; अ तॊऴिल् पुरितल्–वह काम करना; नन्ऱु–अच्छा है; ऍन्ऱु–ऐसा; अऱैय–कहा तो; ऍण्णि–(सुग्रीव) सोचकर; तत्तिनन्–लपककर; इलङ्कै मूतूर्–पुरातन लंका नगर के; कोपुरत्तु उम्पर्–गोपुर के ऊपर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चार्न्तात्–पहुँचा; पत्तु उटै एळु चात्तुऱ–दस के सात (सत्तर) संख्या के वृहत्; वात्तर कुळुवुम्–वानरदल ने; ऍ उलकुम् काण–सारे लोक देखें ऐसा; कै तलत्तु–अपने-अपने हाथ में; ओरोर् कॊळ्ळि–एक-एक जलती लकड़ी; पऱ्ऱि ऍट्टुत्ततु–पकड़कर उठायी। २७९३

प्रभु श्रीराम ने कहा कि वह कार्य उचित ही है। सुग्रीव लपक कर लंका के गोपुर के ऊपर पहुँचा। सत्तर 'वॆळ्ळम्' वानर वीरों ने भी हाथ में जलती लकड़ियाँ ले लीं। दुनिया इसे देख रही थी। २७९३

अॆण्णिल कोडिप् पल्हवि यावुम्, मण्णुऱु कावऱ् ऱिण्मदिल् तावि
वॆण्णिऱ मेह मिन्नित्तै वीशि, नण्णित्त पोल्व तॊन्नहर् नाण 2794

अॆण् इल–असंख्य; पल् कोटि–अनेक करोड़; कवि यावुम्–सभी वानर; मण् उऱु–मिट्टी के बने; कावल्–सुरक्षित; तिण् मतिल्–सुदृढ़ प्राचीर; ताबि–लाँघकर; तॊल् नकर् नाण–प्राचीन नगर लजा जाए ऐसा; वॆण्णिऱ मेकम्–सफ़ेद मेघ; मिन्नित्तै वीचि–बिजली फेंकते हुए; नण्णित्त पोल्व–आये जैसे रहे। २७९४

सारे असंख्यक अनेक करोड़ वानर मिट्टी के बने, सुदृढ़ और सुरक्षित प्राचीर पर चढ़े। लंका नगर ही लजा गया। मेघ बिजली फेंकते आते हों —ऐसे वे वानर दिखायी दिये। २७९४

आशॆह डोऱु मळ्ळित्त कॊळ्ळि, माशऱु तात्तै मर्क्कड वॆळ्ळम्
नाशमिव् वूरुक् कुण्डॆत्त नळ्ळित्, वीशित्त वात्तिन् मीन्विळ लॆन्त्त 2795

वॆळ्ळम्–'वॆळ्ळम्' की संख्या के; मर्क्कट–मरकटों की; माचु अऱ तात्तै–निर्दोष सेना ने; आचैकळ् तोऱुम्–दिशा-दिशा में; कॊळ्ळि अळ्ळित्त–जलती लकड़ियाँ उठाकर; नळ्ळित्–अर्धरात्रि में; इ ऊरक्कु नाचम् उण्टु–इस नगर का नाश होगा; ऍत्त–यह संकेत देते हुए; वात्तिन् मीन्–आकाश के नक्षत्र; विळल् ऍन्त्त–गिरे जैसे; वीचित्त–(जलती लकड़ियाँ) फेंकीं। २७९५

'वॆळ्ळमों' की अनिंद्य वानर-सेना ने जलती लकड़ियाँ ले फेंकीं और वह ऐसा लगा, मानो आकाश के नक्षत्र लंका के नाश का संकेत देते हुए गिर रहे हों। २७९५

वञ्जनै मन्नन् वाळु मिलङ्गैक्, कुञ्जर मन्नार् वीशिय कॊळ्ळि
अञ्जत वण्ण नाळियि लेवुञ्, जॆञ्जर मॆन्नच् चॆऱ्ऱदु मेन्मेल् 2796

कुञ्चरम् अन्नार्–हाथी-सरीखे वानरों ने; वञ्चनै मन्नन्–वंचक राजा; वाळुम्–जहाँ रहता था उस; इलङ्कै–लंका में; वीचिय–जो फेंकीं; कॊळ्ळि–जलती लकड़ियाँ; अञ्चत वण्णन्–अंजनवर्ण श्रीराम के; आळियिल्–समुद्र में; एवुम्–प्रेरित; वॆम् चरम् ऍन्त्त–भयंकर शर के समान; मेन् मेल् चॆन्ऱतु–उत्तरोत्तर चलीं। २७९६

गजनिभ वानरों द्वारा वंचक राजा रावण के वासस्थान लंका नगर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पर फेंकी गयी जलती लकड़ियाँ अंजनवर्ण श्रीराम द्वारा समुद्र पर चलाये गये अस्त्र के समान उत्तरोत्तर बढ़ती गयीं। २७९६

कैयह लिञ्जिक् कावल् कलङ्गच्, चॅय्य कॊऴुन्दीच् चॅन्ऱु नॅरुङ्ग
ऐय नॅडुङ्गा राऴियै यम्बाल्, ऍय्य वॅरिन्दा लॊत्त दिलङ्गै 2797

कै अकल्–सुविशाल; इञ्चि–प्राचीर के; कावल्–रक्षकों को; कलङ्क–भयभीत करते हुए; चॅय्य–लाल; कॊऴु ती–घनी आग; चॅन्ऱु नॅरुङ्क–जा लगी; इलङ्कै–लंका; ऐयन्–प्रभु के; नॅटु कार् आऴियै–लम्बे काले सागर पर; अम्पाल् ऍय्य–अस्त्र चलाने पर; ऍरिन्ताल् ऒत्ततु–(समुद्र) जल गया जैसे लगी। २७९७

लाल घनी आग जब लंका में लगी, तब विशाल प्राचीरों के रक्षक दहल उठे। तब का दृश्य उस समय के समुद्र का-सा था, जब श्रीराम ने काले लम्बे सागर पर अस्त्र चलाया और वह जल उठा। २७९७

परऱुऱु पल्पऴु वत्तॅरि पऱ्ऱ, निरऱुऱु पल्पऱ वैक्कुलम् यावुम्
उरऱ्ऱिऩ विण्णि नॊलित्तॅऴुम् वण्णम्, अरऱ्ऱि यॅऴुन्द दडङ्ग विलङ्गै 2798

परल् तुऱु–कंकड़ों से भरे; पल् पऴुवत्तु–अनेक जंगलों में; ऍरि पऱ्ऱ–आग लगने पर; निरल् तुऱु–समूहों में रहनेवाले; पल् पऱवै कुलम्–अनेक पक्षीगण; यावुम् अऱ्ऱिऩ–सभी चहचहा उठे; विण्णिल्–आकाश में; ऒलित्तु ऍऴुम् वण्णम्–शोर करते उठे, वैसे ही; इलङ्कै–लंकावासी; अटङ्क–सभी; अरऱ्ऱि–चिल्लाते हुए; ऍऴुन्त–उठे। २७९८

अनेक कंकड़ीले जंगलों में जब आग लग जाती है, तब पेड़ों पर रहनेवाले पक्षी चीखते-चिल्लाते आकाश में उड़ते हैं। उसी तरह सभी लंका-वासी हो-हल्ला मचाते हुए उठे और चले। २७९८

मूवुल हत्तव रुम्मुद लोरुम्, एवल् वलत्तॊऴिल् वीर निरामन्
दीव मॅनच्चिल वाऴि शॅलुत्तक्, कोवुर मुऱुम् विऴुन्ददु कुन्ऱिऩ् 2799

मू उलकत्तवरुम्–तीनों लोकों के लोगों को; मुतलोरुम्–आदिदेवों को; एवल्–आज्ञा दे सकनेवाले; वल तॊऴिल्–सबल कार्यकारी; वीरन् इरामन्–वीर श्रीराम के; तीवम् ऍत–दीप के समान; चिल वाऴि चॅलुत्त–कुछ बाण चलाते; कोवुरम् मुऱुम्–सारे गोपुर; कुन्ऱिऩ् विऴुन्ततु–(टूटकर) पर्वत पर गिरे। २७९९

तब श्रीराम ने, त्रिलोकवासी तथा त्रिदेव जिनकी आज्ञा के बल के अधीन हैं, दीप के समान अस्त्र चलाये और उनसे आहत होकर सारे गोपुर (मीनारें) पर्वत पर गिर गये। २७९९

इत्तलै यिऩ्ऩ निहऴ्न्दिडु मॅल्लैक्, कॆत्तलै यिऱ्कॊडु कालि नॅऴुन्दान्
उय्त्त पॅरुङ्गिरि मेरुवि नुप्पाल्, वैत्त नॅडुन्दहै मारुदि वन्दान् 2800

इ तलै–यहाँ; इऩ्ऩत–ऐसे कार्य; निकऴ्न्तिटुम् ऍल्लै–जब हो रहे थे तब;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उय्त्त पॅरम् किरि–लाये गये बड़े पर्वत को; कै तलैयिन् कॉटु–हाथ में ले; कालिन्–पवन के समान; ऍळुन्तान्–जो उठा था और; मेरुविन् उप्पाल्–मेरु के उस पार; वैत्त–रख आया था; नॅटु तकै मारुति–वह सुयोग्य मारुति; वन्तान्–लौट आया। २८००

इधर यह सब हो रहा था। तभी सुयोग्य हनुमान, जो आनीत ओषधि-पर्वत को उसके स्थान पर छोड़ने गया था, मेरु के भी आगे उसे स्थापित करके लौट आया। २८००

अरैयर वक्कळन् मारुदि यार्त्तान्, उरैयर वञ्जिरै युरुळ दव्वूर्
शिरैयर वक्कलु ळन्गॉडु शीरुम्, इरैयर वक्कुल मॉत्त दिलङ्गै 2801

अरै अरवम्–शब्द करनेवाली; कळल् मारुति–पायलधारी मारुति ने; आर्त्तान्–उत्साह का नाद उठाया; अ ऊर्–उस नगर ने; उरै अरवम्–घने नर्दन को; चिरै उरुळतु–अपने में समा लिया; इलङ्कै–लंका; चिरै–अपने पंखों से; अरवम् कलुळन्–शब्द करनेवाले गरुड़ द्वारा; कॉटु–पकड़ा जाकर; चीरुम्–जो फूत्कार करता है उस; इरै–अस्त-व्यस्त; अरवम् कुलन् ऑत्ततु–सर्पवृन्द के समान लगी। २८०१

शब्द करनेवाली पायलधारी मारुति ने लंका के पास आते ही ज़ोर से नर्दन किया। लंका ने उस शब्द को अपने में समा लिया। तब लंका नगरी पंखों से शब्द उठानेवाले गरुड़ से पकड़े जाकर फूत्कार करते हुए अस्त-व्यस्त रहनेवाले सर्प-वृंद के समान थी। २८०१

मेर्रिशै वायिलै मेविय वॅङ्गट्, कार्रिन् महन्रनै वन्दु कलन्दान्
मार्रलिन् मायै वहुक्कुम् वलत्तान्, कूर्रैयुम् वॅन्रुयर् वट्टणै कॉण्डान् 2802

मेल् तिचै वायिलै–पश्चिमी द्वार पर; मेविय–जो आया; कार्रिन् मकन् तनै–उस वायुपुत्र को; मार्रल् इल्–दुर्धर्ष; मायै वकुक्कुम् वलत्तान्–मायाकार्य-समर्थ; कूर्रैयुम् वॅन्रु–यम को भी जीतकर; उयर् वट्टणै कॉण्टान्–ऊँचा जो घूम आया वह इन्द्रजित्; वन्तु कलन्तान्–आ मिला। २८०२

वायुपुत्र पश्चिमी द्वार पर आया। तब दुर्धर्ष माया-समर्थ इन्द्रजित् आकर मिला, जो यम को भी जीतकर घूम आया था। २८०२

शानहि यामवहै कॉण्डु शमैत्तोर्, मानै याळै वडिक्कुळल् पर्रा
ऊनहु वाळॉरु कैक्कॉ डुरुत्तान्, आनव नन्निलै यिन्न दरैन्दान् 2803

चानकि आम् वकै कॉण्टु–जानकी बने ऐसा एक प्रकार बनाकर; चमैत्तु–निर्मित कर; ओर् मान् अनैयाळै–अपूर्व उस हरिणी-सी स्त्री को; वटि कुळल् पर्रा–शहद चूनेवाले केश से पकड़कर; ऊन् नकु–मांसलिप्त; वाळ्–तलवार; ऑरु कै कॉटु–एक हाथ में लेकर; उरुत्तान् आनवन्–क्रुद्ध उसने; अ निलै–उस स्थिति में; इन्नतु–यह; अरैन्तान्–कहा। २८०३

इन्द्रजित् ने माया से जानकी का-सा रूप रखनेवाली एक स्त्री का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निर्माण किया था। एक हाथ से मृगी-सी उसके केश को पकड़कर दूसरे हाथ में मांसलिप्त तलवार लिये हुए वह क्रोधी बनकर यों बोला। २८०३

वन्दिवळ् कारण माह मलैन्दीर्, ऍन्दै यिहऴ्न्दन तियानिव ळावि
शिन्दुव ऩॅन्ऱ शॅऱुत्तुरै शॅय्दान्, अन्दमिन् मारुदि यञ्जि ययर्न्दान् 2804

इवळ् कारणमाक–इसके कारण; वन्तु–यहाँ आकर; मलैन्तीर्–युद्ध किया (तुम लोगों ने); ऍन्तै इकऴ्न्ततन्–मेरे पिता असावधान रह गये; इवळ् आवि–इसके प्राण; यान् चिन्तुवन्–मैं निकाल दूँगा; ऍन्ऱ–ऐसा; चॅऱुत्तु–क्रोध करके; उरै चॅय्तान्–वचन कहा; अन्तम् इल् मारुति–अमर मारुति; अञ्चि–डरकर; अयर्न्तान्–निर्बल हो गया। २८०४

(उसने हनुमान से कहा—) इसी के निमित्त तुम लोग आये और लड़े। मेरे पिता उदासीन रह गये। मैं इसके प्राण निकाल दूँगा। यह इन्द्रजित् का क्रुद्ध वचन सुनकर चिरंजीव हनुमान दहल गया, निर्बल हो गया। २८०४

कण्डव ळेयिव ळॅऩ्बदु कण्डान्, विण्डदु पोलुनम् वाऴ्वॅऩ वॅन्दान्
कॊण्डिडत् तीर्वदोर् कोळऱि हिल्लान्, उण्डु यिरोवॅऩ वायु मुलर्न्दान् 2805

इवळ्–यह; कण्टवळे–वही है जिसे मैंने पहले देखा था; ऍन्पतु कण्टान्–यह जाना; नम् वाऴ्वु–हमारा जीवन; विण्टतु पोलुम्–अन्त को आ गया शायद; ऍऩ–सोचकर; वॅन्तान्–उत्तप्त हो गया; इटै कॊण्टु तीर्वतु–यह मध्य में आयी बाधा ले चलने का; ओर् कोळ्–कोई उपाय; अऱिकिल्लान्–न जान सका; उयिर् उण्टो ऍऩ–जान भी है क्या ऐसा संशय पैदा हुआ और; वायुम् उलर्न्तान्–मुख-सूखा हो गया। २८०५

हनुमान ने यह सोच लिया कि यही सीता हैं, जिनसे मैं अशोक वन में मिला था। उसे अपार दुःख हुआ कि हमारे जीवन का अंत हो गया। इस बाधा का कैसे निवारण हो? कोई उपाय नहीं सूझा। उमका मुख सूख गया। यह संशय भी हो गया कि क्या वह जीवित है?। २८०५

यादु मिनिच्चॅयल् वेऱिलै यऩ्ऩाल्, नीदि युरैप्पदु नेरॅऩ वोराक्
कोदिल् कुलत्तॊरु नीकुण मिक्काय्, मादै यॊऱुत्तल् वशैत्तिऱ मन्ऱो 2806

इति–अब; ऍऩ्ऩाल् चॅयल्–मुझसे काम; वेऱु यातुम् इल्लै–दूसरा कोई नहीं; नीति उरैप्पतु–न्याय-वाद करना; नेर्–उचित है; ऍऩ–ऐसा; ओरा–विवेक करके; कोतु इल् कुलत्तु–अकलंक कुल के; ऒरु नी–अनुपम तुम; कुणम् मिक्काय्–गुण में बढ़े हो; मातै ऒऱुत्तल्–स्त्री की हत्या करना; वचै तिऱम् अन्ऱो–निंद्य होगा नहीं क्या। २८०६

(हनुमान ने सोचा—) अब मुझसे हो, ऐसा कोई कार्य नहीं। उसे न्याय समझाऊँगा। यह सोचकर उसने इन्द्रजित् से कहा कि तुम अकलंक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ब्राह्मण-कुल में जनमे हो ! उत्तम हो ! गुणी हो ! स्त्री-वध क्या पाप नहीं होगा ? । २८०६

नान्मुह नुक्कॉरु नाल्वरिन् वन्दाय्, नून्मुह मुऱ्ऱु नुणङ्ग वुणर्न्दाय्
पान्मुह मुऱ्ऱ पॅरुम्बऴि यन्ऱो, मान्मुह मुऱ्ऱॉरु मादै वदैत्ताल् 2807

नान् मुकत्तुक्कु–चतुर्मुख के; ऑरु नाल्वरिन् वन्ताय्–चौथी पीढ़ी में आये हो; नूत्तुमुकम् मुऱ्ऱम्–शास्त्र-विशेष सब; नुणङ्क उणर्न्ताय्–सूक्ष्म रीति से जानते हो; मान् मुकम् उऱ्ऱ–मृगमुखी (नयना); ऑरु मातै–एक स्त्री को; वतैत्ताल्–मारो तो; पाल् मुकम् उऱ्ऱ–बुरी श्रेणी में रखे; पॅरुम् पऴि अन्ऱो–बड़े कलंकों में एक नहीं होगा क्या । २८०७

चतुर्मुख से चौथी पीढ़ी में हो । श्रेष्ठ शास्त्रों के प्रमुख अंशों के सूक्ष्म ज्ञाता हो ! मृगनयना को मारो तो बुरे से बुरे पापों में बड़ा पाप लगेगा नहीं क्या ? । २८०७

ऍन्वयि नल्हिनै येहिनै यॅन्ऱाल्, निन्वय मामुल हियावैयु नीनिन्
अन्वय मेदु मऱिन्दिलै यैया, पुन्मै तॉडङ्गल् पुहऴ्क्कऴि वॅन्ऱान् 2808

ऐया–बाबा; ऍन् वयिन् नल्किनै–मेरे पास देकर; एकिनै ऍन्ऱाल्–जाओ तो; उलकु यावैयुम्–सारे लोक; निन् वयम् आम्–तुम्हारे वश में हो जायँगे; नी–तुम; मिन् अन्वयम्–अपना वंशक्रम; एतुम् अऱिन्तिलै–कुछ नहीं जानते; पुन्मै तॉटङ्कल्–क्षुद्रता आरम्भ करना; पुकऴ्क्कु अऴिवु–यश का नाश है; ऍन्ऱान्–कहा (हनुमान ने) । २८०८

बाबा ! मेरे पास दो और चले जाओ, तो सारे लोक तुम्हारे अधीन हो जायँगे । तुम अपने वंश का गौरव नहीं समझते ! यह क्षुद्र काम का आरम्भ करो तो अपने यश को मिटाना होगा । हनुमान यों बोला । २८०८

मण्गुलै हिन्ऱदु वान नडुङ्गिक्, कण्गुलै हिन्ऱदु काणुदि कण्णाल्
ऍण्गुलै हिन्ऱ दिरङ्ग ऱुऱन्दाय्, पॅण्गॊलै शॅय्दल् पॅरुम्बऴि यन्ऱो 2809

मण् कुलैकिन्ऱतु–पृथ्वी काँपती है; वानम्–देवलोक; नटुङ्कि–दहलकर; कण् कुलैकिन्ऱतु–आँखें फड़काता है; कण्णाल्–अपनी आँखों से; काणुति–देख लो; ऍण्–मेरा चिन्तन भी; कुलैकिन्ऱतु–काँपता है; इरङ्कल् तुऱन्ताय्–दया छोड़ चुके हो; पॅण् कॊलै चॅय्तल्–स्त्री-हत्या करना; पॅरु पऴि अन्ऱो–बड़ा पाप होगा न । २८०९

(वह आगे बोला—) पृथ्वी काँपती है । व्योमलोकवासी डरते हैं और उनकी आँखें भयचंचल हैं । देखो अपनी आँखों से । मेरा भी मन काँपता है । दया छोड़ चुके हो । स्त्री-हत्या परम पाप नहीं है क्या ? । २८०९

ऍन्दैयु मिन्द विलङ्गैयु ळोरुम्, उय्न्दिड वानव रियावरु मोडच्
चिन्दुवॅन् वाळिनि लॅन्ऱु शॅयिर्त्तान्, इन्दिर शित्तव निन्न विशैत्तान् 2810

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्तिरचित्तु अवन्-इन्द्रजित् ने; ऍन्तैयुम्-मेरे पिता और; इन्त इलङ्कै युळोरुम्-और यह लंकावासी; उय्न्तिट-पनपें; वानवर् यावरुम्-सभी देव; ओट-भाग जायें; वाळितिल्-ऐसा अपनी तलवार से; चिन्तुवॅन्-मार डालूँगा; ऍन्ऱु-कहकर; चॅयिर्त्तान्-कोप करके; इन्न इचॅत्तान्-ये बातें कहीं। २८१०

इन्द्रजित् ने उत्तर यों दिया— अपने पिता तथा लंकावासियों को सुखी जीवन दिलाने और देवों को भगाने के लिए मैं तलवार से इसका वध करूँगा ही। क्रुद्ध हो वह आगे यों बोला। २८१०

पोमि नडाविवळ् पोयिनळ् पोलाम्, आमॅनि निन्नु मयोत्तियै यण्मिक्
कामिन दिन्ऱु कनल्करि याह, वेमदु शॅय्दिनि मीळ्हुवॅ नॅन्ऱान् 2811

अटा-रे बन्दरो; इवळ् पोयिनळ् पोलाम्-यह मरी ही समझो; आम् ऍनिल्-हो सके तो; इन्नुम्-अब भी; अयोत्तियै अण्मि-अयोध्या में जाकर; कामिन्-रक्षा कर लो; अतु-वह; इन्ऱु-आज; कनल् करि आक-जलकर राख बनें ऐसा; वेम् अतु-जलाने का काम; चॅय्तु-करके; इनि-अभी; मीळ्कुवॅन्-लौट आऊँगा; ऍन्ऱान्-कहा। २८११

इन्द्रजित् ने वानरों से कहा कि रे वानरो! इसे मरा ही समझो! हो सके तो जाकर अयोध्या की रक्षा का प्रयत्न करो। मैं अभी जाकर उसे जलाकर राख बना आनेवाला हूँ। २८११

तम्बियर् तम्मॊडु तायरु मायोर्, उम्बर् विलक्किडु नुम्मिनि युय्यार्
वॅम्बु शुडुङ्गनल् वीशिडु मॅन्गॅ, अम्बुह ळोडु मविन्दन रम्मा 2812

तम्पियर् तम्मॊटु-छोटे भाइयों के साथ; तायरुम् आयोर्-और माताएँ जो हैं; उम्पर् विलक्किटिनुम्-देवता लोग रोकें तो भी; इनि-अब; उय्यार्-जीवित नहीं बचेंगे; वॅम्पु चुटु कनल्-भयंकर, जलानेवाली आग को; वीचिटुम्-फेंकनेवाले; ऍन् कै अम्पुकळोटुम्-मेरे हाथ के शरों से; अविन्तनर्-मरे जान लो। २८१२

राम के छोटे भाई, उसकी माताएँ, इनमें कोई भी देवों के दखल देने पर भी जीवित नहीं रहेगा। वे मेरे हाथ के संतापक क्रूर अग्निवर्षक बाणों से निश्चय मरेंगे। २८१२

इप्पॊळु देकडि देहुव नियानिप्, पुट्पह मान मदिऱ्पुह निन्ऱेन्
तप्पुव रेयवर् तामिनि यॅन्गॅ, वॅप्पुऱु वाळिह ळिन्ऱु विरैन्दाल् 2813

इप्पॊळुते-अभी; यान्-मैं; इ पुट्पक मानम् अतिल्-इस पुष्पकयान में; पुक निन्ऱेन्-चढ़ने को तैयार हूँ; कटितु-जल्दी; एकुवन्-चलूँगा; ऍन् कै-मेरे हाथ से; वॅप्पु उऱु वाळिकळ्-गरम बाण; इन्ऱु विरैन्ताल्-आज तेज जायँगे तो; इनि-फिर; अवर् ताम्-वे क्या; तप्पुवरे-बचेंगे क्या। २८१३

इसी क्षण मैं इस पुष्पक यान पर सवार होनेवाला हूँ। जल्दी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाऊँगा। मेरे हाथ से जब गरम बाण उनकी ओर शीघ्र जायँगे, तो वे क्या बच सकेंगे ? । २८१३

आळुडै यायरु ळायरु ळायॅन्, ऎळै यळङ्गुऱु शॊल्लि निरङ्गान्
वाळि नॅऱिन्दनन् माहडल् पोलुम्, नीळुऱु शेनैयि नोडु निमिर्न्दान् 2814

आळुटैयाय्–स्वामीत्व रखनेवाले (स्वामी); अरुळाय्–दया करो; ऎन्ऱु–ऐसा; एळै–अबला; यळङ्कु उऱु–जो कह रही थी; चॊल्लिन्–उन शब्दों से भी; इरङ्कान्–आर्द्र न हुआ; वाळिन्–तलवार से; ऎऱिन्तनन्–वार करके; मा कटल् पोलुम्–बड़े समुद्र के समान; नीळ् उऱु चेनैयिनोटुम्–बड़ी सेना के साथ; निमिर्न्तान्–यान पर चढ़ गया। २८१४

तब अबला (माया-) सीता ने विलापा। मेरे स्वामी ! मुझ पर दया करो। पर उसने सीता के विलापवचन पर दया न दिखाकर तलवार से उसे काट दिया। फिर वह काले सागर-सम अपनी विशाल सेना के साथ यान पर चढ़ गया। २८१४

तॅन्ऱिशै निन्ऱु वडादु तिशैक्कण्, पॊन्ऱिहळ् पुट्पह मेल्कॊडु पोनान्
ऒन्ऱु मुणर्न्दिलन् मारुदि युक्कान्, वॆन्ऱि नॆडुङ्गिरि पोल विळुन्दान् 2815

तॅन् तिचै निन्ऱु–दक्षिणी दिशा से; वटादु तिचैक्कण्–उत्तरी दिशा की ओर; पॊन् तिकळ्–स्वर्णशोभित; पुट्पकम् मेल् कॊटु–पुष्पकयान पर सवार होकर; पोनान्–गया; मारुति–मारुति; ऒन्ऱुम् उणर्न्तिलन्–कुछ समझ नहीं सका; उक्कान्–घुलकर; वॆन्ऱि नॆटु किरि पोल्–विजय की बड़ी गिरि के समान; विळुन्तान्–गिरा। २८१५

स्वर्णशोभित वह यान दक्षिण से उत्तर की ओर चलने लग गया, तो मारुति कुछ नहीं समझ सका। वह जर्जर हो गया। बड़ी विजयगिरि के समान नीचे गिर गया। २८१५

पोयवन् मारि निहुम्बिलै पुक्कान्, तूयव नॆञ्जु तुयर्न्दु शुरुण्डान्
ओय्वॊडु नॆञ्ज मॊडुङ्ग वुलर्न्दान्, आयिन निन्नन पन्नि यळिन्दान् 2816

पोयवन्–जो गया; मारि–बदलकर; निकुम्पिलै पुक्कान्–निकुंभिला गया; तूयवन्–पवित्रमन; नॆञ्चु तुयर्न्तु–चिन्ताग्रस्त हो; चुरुण्टान्–विगत-बल हो गया; नॆञ्चम्–मन; ओय्वॊटु ऒटुङ्क–थक गया, क्षीण हो गया; उलर्न्तान् आयिनन्–सूख-सा गया; इन्नन–(निम्नोक्त) ऐसा-ऐसा; पन्नि–कहकर; अळिन्तान्–श्लथ हुआ। २८१६

उधर इन्द्रजित् मार्ग बदलकर निकुंभिला गया। इधर पवित्रमन हनुमान चिन्ताग्रस्त होकर श्लथ हो गया। मन थकित हुआ, संकुचित हुआ और वह सूख-सा गया। तब वह ऐसा-ऐसा कहकर विलाप करने लगा। २८१६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्नमे यॆन्नुम् बॆण्णि नरुङ्गुलक् कलमे यॆन्नुम्
ऍन्नमे यॆन्नुन् दॆय्व मिल्लैयो यादु मॆन्नुम्
शिन्नमे शॆय्यक् कण्डुन् दीविनै नॆञ्ज माबि
पिन्नमे याव दिल्लै यॆन्नुम्बे रार्रल् पेर्न्दान् 2817

पेर् आर्रल्–बड़ा धैर्य; पेर्न्तान्–खोकर जो रहा वह हनुमान; अन्नमे–हंस; ऍन्नुम्–पुकारता; ऍन् अम्मे–मेरी माता; ऍन्नुम्–बुलाता; पॆण्णिन् अरु कुल कलमे–स्त्री-जाति के हे अमूल्य आभरण; ऍन्नुम्–कहता; तॆय्वम्–देव; यादुम् इल्लैयो–कोई नहीं है क्या; ऍन्नुम्–कहता; चिन्नमे चॆय्य कण्टुम्–छिन्न करते देखकर भी; तीविनै नॆञ्चम्–पापी (मेरा) मन; आबि–और प्राण; पिन्नमे आयतु इल्लै–टूटे ही नहीं; ऍन्नुम्–कहता। २८१७

अपना गंभीर धैर्य खो चुका हनुमान कभी 'हे हंस !' सम्बोधित करता; कभी 'मेरी माँ' चिल्लाता। हे स्त्रीकुलभूषण ! पुकारता। क्या कोई देव नहीं रहा ? हाय मैंने आपको छिन्न होते देखा, तो भी पापी मेरा मन और मेरे प्राण टूटे नहीं। ऐसा शोक-वचन कहता। २८१७

ऍऴुन्दवन् मेले पाय वॆण्णुम्बे रिडरिर् रऴ्ळि
विऴुन्दुवॆय् दुयिर्त्तु विम्मि वीङ्गुम्बोय् मॆलियुम् वॆन्दीक्
कॊऴुन्दुह वुयिर्क्कु मियाक्कै कुलैवुरुन् दलैये कॊण्डुर्
रुऴुन्दरै तन्नैप् पिन्नु मिनैयन वुरैप्प दानान् 2818

अवन्–वह; ऍऴुन्तु–उठकर; मेले पाय–ऊपर झपटने को; ऍण्णुम्–सोचता; पेर् इटरिल्–बड़े संकट में; तळ्ळि–ढकेला जाकर; विऴुन्तु–गिरकर; वॆय्तु उयिर्त्तु–गरम निःश्वास छोड़कर; विम्मि–सिसकता; वीङ्कुम्–फूल जाता; पोय् मॆलियुम्–जाकर कृश बनता; वॆम् ती कॊऴुन्तु–गरम अग्नि-ज्वाला; उक–निकले ऐसा; उयिर्क्कुम्–साँसें छोड़ता; याक्कै–शरीर; कुलैवु उरुम्–कंपायमान होता; तरै तन्नै–भूमि को; तलैये कॊण्टु–अपने सिर से ही; उर्र उऴुम्–जोत देता; पिन्नुम्–फिर; इनैयन–ये वचन; उरैप्पतानान्–कहने लगा। २८१८

वह उठकर ऊपर झपटना चाहता ! बड़े ही दुःख के साथ गिरकर गरम साँसें छोड़ता। सिसकता, फूलता, कृश होता। श्वास छोड़ता तो आग की ज्वाला भभकती। उसका शरीर काँप गया। भूमि को अपने सिर से जोतता। और यों कहता :। २८१८

मुडिन्ददु नन्द मॆण्ण मूवुल हिर्कुङ् गङ्गुल्
विडिन्ददॆन् रिरुन्देन् मीळ वॆन्दुय रिरुळिन् वॆळ्ळम्
पडिन्ददु विनैयच् चॆय्है पयन्ददु पावि वाळाल्
तडिन्दनन् रिरुवै यन्दो तविर्न्ददु तरुम मम्मा 2819

नम्तम् ऍण्णम्–हमारा मंशा; मुटिन्ततु–पूरा हुआ; मूवुलकिर्कुम्–तीनों लोकों के लिए; कङ्कुल्–रात; विटिन्ततु–प्रभात में आ गयी; ऍन्ऱ इरुन्तेन्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसा सोचता रहा; वॅम् तुयर्–कठोर दुःख के; इरुळिन् वॅळ्ळम्–अन्धकार की बाढ़; मीळ पटिन्ततु–फिर छा गयी; वितैय चॅय्कै–मायाकृत्य; पयन्ततु–सफल हो गया; अन्तो–हाय; पावि–पापी इन्द्रजित्ने ; तिरुवै–लक्ष्मी को; वाळाल्–अपनी तलवार से; तटिन्तत्तु–काट दिया; तरुमम् तविर्न्ततु–धर्म च्युत हो गया; अम्मा–आश्चर्य । २८१९

मैंने सोचा था कि मंशा सफल हो गयी और लोकों को प्रभात हो गया। पर गरम दुःख का अंधकार फिर छा गया। माया सफल हो गयी। हाय ! पापी ने लक्ष्मी को अपनी तलवार से काट दिया। धर्म टल गया। आश्चर्य माँ ! । २८१९

पॅरुञ्जिरैक् कर्पि नाळैप् पॅण्णिनैक् कण्मुन् कॊल्ल
इरुञ्जिर हर्र पुट्पो लियादुमॊन् रियर्र लार्रेन्
परुञ्जिरै यळुन्दु हिन्रे नॅम्बिरान् रेवि पट्ट
अरुञ्जिरै मीट्ट वण्ण मळ्हिदु पोलु मम्मा 2820

पॅरु चिरै कर्पिनाळै–आत्मरक्षा के बड़े साधन रूपी पातिव्रत्यशीला को; पॅण्णिनै–स्त्रीलक्षणवती को; कण् मुन्–मेरी आँखों के सामने; कॊल्ल–मारते; इरु चिरकु अर्र–दोनों पक्षों से रहित; पुट् पोल्–पक्षी की तरह; यातुम् ऑन्रुम्–कोई एक (काम) भी; इयर्रल् आर्रेन्–कर नहीं सका; परु चिरै–कठोर कारा में; अळुन्तुकिन्रेन्–फँस रहा हूँ; ऍम्पिरान् तेवि–हमारे प्रभु की पत्नी; पट्ट–जिसमें फँसीं; अरु चिरै–उस बन्दीगृह से; मीट्ट वण्णम्–छुड़ाने का यह प्रकार भी; अळकितु पोलुम्–सुन्दर रहा शायद; अम्मा–माँ, आश्चर्य । २८२०

वह अपने पातिव्रत्य के पहरे में बन्द थीं। वह स्त्रियोचित गुण रखती थीं। इन्द्रजित् ने उन्हें मेरे ही समक्ष मारा और मै पक्षहीन पक्षी के समान कुछ करने में असमर्थ रह गया। यही हमारे प्रभु की देवी को कठोर कारा से मुक्त कराने की सुन्दर रीति है शायद ! । २८२०

पादह वरक्कन् रॅय्वप् पत्तिनि तवत्तु ळाळैप्
पेदैयैक् कुलत्तिन् वन्द पिळैप्पिला दाळैप् पॅण्णैच्
चीदैयैत् तिरुवैत् तीण्डिच् चिरैवैत्त तीयोन् शेये
कादवुङ् गण्डु निन्र करुममे करुणैत् तम्मा 2821

तॅय्व पत्तिनि–दिव्य पत्नी; तवत्तुळाळै–(पातिव्रत्य-) तपस्विनी को; पेतैयै–अबोध को; कुलत्तिन् वन्त–उच्चकुलजाता; पिळैप्पु इलाताळै–अनिंद्या को; पॅण्णै–नारी को; चीतैयै–सीता को; तिरुवै–श्रीलक्ष्मी को; तीण्टि–स्पर्श करके; चिरै वैत्त–बन्दीगृह में जिसने रखा था; तीयोन्–उस खल के; पातक अरक्कन्–पातक राक्षस के; चेये–पुत्र को ही; कातवुम्–मारते; कण्टु–देखकर; निन्र–जो चुप खड़ा रहा; करुममे–वही कार्य; करुणैत्तु–करुणायोग्य है; अम्मा–आश्चर्य । २८२१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिव्यपत्नी, पातिव्रत्य तपस्या में रत, अबोध देवी, उच्चकुलजाता अनिंद्य सीताजी को, श्रीलक्ष्मी को पकड़कर जिसने बंदीगृह में रखा था, उस पातक क्रूर राक्षस के पुत्र ने उन्हें मारा। मैं देखता ही रह गया। वह भी बड़ा करुणाप्रदर्शक कार्य रहा ! री मैया ! । २८२१

कल्विक्कु निमिर्न्द कीर्त्तिक् काहुत्तन् रूद नाहिच्
चॊल्विक्क वन्दु पोन्ने नोय्विलित् तुयर्शॆय् दारै
वॆल्विक्क वन्रु निन्नै मीट्पिक्क वन्रु वॆय्दिर्
कॊल्विक्क वन्दे नन्रे कॊडुम्बऴि कूट्टिक् कॊण्डेन् 2822

कल्विक्कु निमिर्न्त–(सभी) विद्याओं से परे; कीर्त्ति–यशस्वी; काकुत्तन् तूतताकि–काकुत्स्थ का दूत बनकर; चॊल्विक्क–वैसा कहलाने के लिए; वन्तु पोन्नेन्–आया था; ओय्विल्–निरन्तर; इ तुयर् चॆय्तारै–यह दुःख जिन्होंने दिया है; वॆल्विक्क अन्रु–हराने नहीं; निन्नै–आपको; मीट्पिक्क अन्रु–छुड़ाने के लिए भी नहीं; वॆय्तिन्–क्रूरता से; कॊल्विक्क वन्तेन् अन्रे–मरवाने आया था न; कॊटुम् पऴि–भयंकर अपयश; कूट्टिक् कॊण्टेन्–अपने लिए बना लिया मैंने। २८२२

सभी विद्याओं से अज्ञेय काकुत्स्थ का दूत कहा गया —यही मेरे इधर आ जाने का प्रयोजन रहा। अब अमिट दुःखदायी राक्षस को जिताने नहीं; आपको (सीताजी को) छुड़ाने नहीं; पर अब बहुत ही निर्मम रूप से आपको मरवाने आया न ! बड़ा अपयश कमा लिया। २८२२

वञ्जियै यॆङ्गुङ् गाणा तुयरिन्नै मऱन्दा नॆन्नच्
चॆञ्जिलै युरवोन् तेडित् तिरिहिन्ऱा नुळ्ळन् देऱ
अञ्जॊला ळिरुन्दाळ् कण्डे नॆन्ऱया नरक्कन् कॊल्लत्
तुञ्जिना ळॆन्ऱुञ् जॊल्लत् तोन्ऱिनेन् रोऱ्ऱ मीदाल् 2823

चॆम् चिलै उरवोन्–श्रेष्ठ धनुर्धर वीर; वञ्चियै–'वञ्जि' लता-सी आपको; ऎङ्कुम् काणातु–कहीं नहीं देखकर; उयिरिन्नै मऱन्तान् ऎन्न–प्राणों को ही भूल गये जैसे; तेटि तिरिकिन्ऱान्–जो खोजते फिरते थे; उळ्ळम् तेऱ–उनके मन को धैर्य देते हुए; अम् चॊलाळ्–मधुरभाषिणी; इरुन्ताळ्–थीं; कण्टेन्–देखा; ऎन्ऱ यान्ने–जो कहा था वही मैं; अरक्कन् कॊल्ल–राक्षस के मारने से; तुञ्चिनाळ्–मर गयीं; ऎन्ऱुम् चॊल्ल–यह भी कहूं उसके लिए; तोन्ऱिनेन्–पैदा हुआ हूँ; तोऱ्ऱम् ईतु–जन्म (का फल) यह है। २८२३

श्रेष्ठ विक्रमी कोदंडपाणी श्रीराम 'वंजी' लता-सी आपको कहीं न देख पाकर अपने ही प्राणों को मानो खोकर खोजते रहे। उनको धीरज देते हुए मैंने कहा था कि देवी जीवित हैं। मैंने अपनी आँखों देखा था। उसी मुझे अब जाकर उनसे कहना पड़ गया कि इन्द्रजित् के मारे वे मर गयीं। इसी को मेरा जन्म हुआ था क्या ? । २८२३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरुङ्गडल् कडन्दिव् वूर यळ्ळॅरि मडुत्तु वॅळ्ळक्
करुङ्गडल् कट्टि मेरुक् कडन्दॊरु मरुन्दु काट्टि
कुरङ्गिनि युन्नो डॊप्पा रिल्लॅनक् कळिप्पुक् कॊण्डेन्
पॅरुङ्गडऱ् कोट्टत् तेय्वै यॊत्तदॅन् नडिमैप् पॅऱ्ऱि 2824

अरु कटल कटन्तु–अगम सागर पार करके; इ ऊरै–इस नगर में; अळ् ऍरि–घनी आग; मटुत्तु–लगाकर; वॅळ्ळ–जल-भरे; करु कटल्–काले सागर को; कट्टि–(सेतु) बाँधकर; मेरु कटन्तु–मेरु पर्वत पार करके; ऒरु मरुन्तु काट्टि–अपूर्व औषध दिखाकर; उन्नोटु ऒप्पार्–तुम्हारी समानता करनेवाले; कुरङ्कु इनि इल्–वानर अब नहीं है; ऍन्न–ऐसा लोग कहें, ऐसा; कळिप्पु कॊण्टेन्–मुदित हुआ; ऍन् अटिमै पॅऱ्ऱि–मेरी दासता का गौरव; पॅरु कटल–बड़े सागर में; कोट्टम् तेय्वै ऒत्ततु–'कोष्ट' (सुगन्ध पदार्थ) घिसना जैसा हो गया। २८२४

मैंने अलंघ्य सागर लाँघा; इस नगर में आग लगायी। गहरे सागर पर सेतुबंधन करने में सहायता दिलायी। संजीवनी ओषधि लाया। लोगों ने कहा कि तुम-सा कोई दूसरा बंदर नहीं है। मैं उसको सुनकर इतराया। अब स्थिति ऐसी आ गयी कि मेरी दासता का महत्त्व सागर में घिसे 'कोष्ट' (सुगन्ध द्रव्य) की महक के समान हो गया। २८२४

विण्डुनिन् ऱाक्कै शिन्दप् पुल्लुयिर् विट्टि लादॅन्
कॊण्डुनिन् ऱानैक् कॊल्लक् कूशिनै नॅदिरे कॊल्लक्
कण्डुनिन् ऱेन्मऱ् ऱिन्नुङ् गैहळार् कनिहळ् वॅव्वे
रुण्डुनिन् ऱुय्य वल्ले नॅळियनो वॊरुव नुळ्ळेन् 2825

विण्टु निन्ऱु–शत्रुता करके; आक्कै उटलै–(देवी के) शरीर को; चिन्त–काटते; पुल् उयिर्–(देखकर) अल्प प्राण; विट्टिलातेन्–जो नहीं छोड़ा वह मैं; कॊण्टु निन्ऱानै–उन्हें जो पकड़े रहा उसे; कॊल्ल कूचिनेन्–मारने से संकोच करता रह गया; ऍतिरे कॊल्ल कण्टुम्–समक्ष मारते देखकर भी; निन्ऱेन्–चुप खड़ा रहा; इन्नुम्–अब भी; कैकळाल्–हाथों से; वॅव् वेऱु कनिकळ् उण्टु–विविध फल (तोड़) खाकर; निन्ऱु–(चिरंजीव) रहकर; उय्य वल्लेन्–जीवित रहनेवाला; ऒरुवन् उळ्ळेन्–एक रहूँगा; ऍळियनो–मैं दीन हूँ क्या। २८२५

शत्रुता दिखाकर इन्द्रजित् ने देवी के शरीर को काटा और मैं देखता रहा। मैंने अपने क्षुद्र प्राणों को छोड़ा नहीं। उन्हें पकड़े जो खड़ा रहा, उसे मारने से भी संकोच करता रहा। मेरे ही समक्ष उसने उन्हें मारा। देखता चुप खड़ा रहा मैं। अब मैं जीवित रहता हूँ। इन अपने हाथों से विविध फल तोड़ खाऊँ और खुशी से बहुत दिन रहूँ! फिर मैं दीन हूँ क्या? । २८२५

ऍन्नॅनिन् ऱिरङ्गिक् कळ्व नयोत्तिमे लॅळुवॅ नॅन्ऱु
शॊन्नदु मुण्डु पोन शुवडुण्डु तॊडर्न्दु शॅल्लिन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऩ्ऩनिङ् गुऱ्ऱ दऩ्मै युणर्हिलऩ् वरुव दोरेऩ्
पिऩ्ऩिऩि मुडिप्प दियादॆऩ् ऱिरङ्गिऩा ऩुणर्वु पॆऱ्ऱाऩ् 2826

ऍऩ्ऩ–कहकर; निऩ्ऱु इरङ्कि–खड़ा हो दुःखी; कळ्वऩ्–चोर ने; अयोत्ति मेल् ऍऴ्वऩ्–अयोध्या पर चढ़ूँगा; ऍऩ्ऱु–कहकर; चॊऩ्ऩतुम् उण्टु–कहा भी था; पोत चुवटु उण्टु–जाने का आसरा भी है; तॊटर्ऩ्तु चॆल्लिऩ्–पीछा कर जाऊँ तो; इङ्कु उऱ्ऱ तऩ्मै–यहाँ हुए हाल; मऩ्ऩऩ् उणर्किलऩ्–राजाराम नहीं जानेंगे; वरुवतु ओरेऩ्–भविष्य न जान पाता; इऩि–अब; मुटिप्पतु यातु–करना क्या; ऍऩ्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; इरङ्किऩाऩ्–दुःखी हुआ; पिऩ्–बाद; उणर्वु पॆऱ्ऱाऩ्–सुधि पायी। २८२६

हनुमान ऐसी बातें कहते हुए दुःखी हो रहा था। "चोर इन्द्रजित् ने 'यह कहा था कि अयोध्या पर चढ़ जाऊँगा'। फिर गया भी; उसका सबूत है। अगर मैं उसका पीछा करके जाऊँ तो यहाँ की घटना को श्रीराजाराम जान नहीं पायेंगे। अब क्या होगा —यह नहीं समझ पाता। और मैं क्या करूँ ?" यह सोचकर वह अधिक क्षुब्ध हुआ। फिर धैर्य का अवलम्बन किया। २८२६

उऱ्ऱदै युणर्त्तिप् पिऩ्ऩै युलहुडै यॊरुव ऩोडुम्
इऱ्ऱुऱि निऱ्ऱु माळ्व ऩऩ्ऱॆऩि ऩॆण्ण मॆण्णिच्
चॊऱ्ऱडु शॆय्वऩ् वेऱोर् पिऱिदिलॆऩ् ऱुणिवि दॆऩ्ऩाप्
पॊऱ्ऱडऩ् दोळाऩ् वीरऩ् पॊऩ्ऩडि मरुङ्गिऱ् पोऩाऩ् 2827

पॊऩ् तटम् तोळाऩ्–विशाल-स्वर्ण-स्कन्ध; उऱ्ऱऩै–जो हुआ उसे; उलकुटै ऒरुवऩोटुम्–लोकों के स्वामी एक नायक से; उणर्त्ति–कहकर; पिऩ्ऩै–बाद; याऩुम्–मैं भी; इऱ्ऱुऱिऩ्–मर सकूँ तो; इऱ्ऱु माळ्वऩ्–प्राणों का अन्त करके मरूँगा; अऩ्ऱु ऍऩिऩ्–नहीं तो; ऍण्णम् ऍण्णि–सोचकर; ऒरु करुत्तै करुति–जो एक बात सोचकर; चॊऱ्ऱतु–कहें उसे; चॆय्वऩ्–करूँगा; वेऱु ओर् पिऱितु इल्–कोई दूसरा करना नहीं; ऍऩ् तुणिवु इतु–मेरा निश्चय यह है; ऍऩ्ऩा–निश्चय करके; वीरऩ्–वीर (श्रीराम) के; पॊऩ्ऩटि मरुङ्किऩ्–श्रीचरण के पास; पोऩाऩ्–गया। २८२७

स्वर्ण-विशाल-स्कंध मारुति ने यह सोचा कि मैं लोकस्वामी श्रीराम के पास जाकर यहाँ जो हुई वह बात बता दूँगा। फिर मर सकूँगा तो मर जाऊँगा। नहीं तो वे कुछ सोचकर आज्ञा दें तो उसको बजा लाऊँगा। इसके सिवा कुछ नहीं करने को है। यही मेरा निर्णय है। यही संकल्प लेकर वह वीर श्रीराम की शरण में गया। २८२७

शिङ्गवे ऱऩैय वीरऩ् शॆऱिहळऱ् पादञ् जेर्ऩ्दाऩ्
अङ्गमु मऩमुङ् गण्णु माविपु मलक्क णुऱ्ऱाऩ्
पॊङ्गिय पॊरुमल् वीङ्गि युयिर्प्पॊडु पुरत्तैप् पोर्प्प
वॆङ्गणी ररुवि शोर मालवरै यॆऩ्ऩ वीळ्ऩ्दाऩ् 2828

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिङ्क एऱु अऱैय–नर केसरी-तुल्य; वीरऩ्–वीर के; कळल् चॆऱि–पायल से अलंकृत; पातम् चेऱ्ऩ्ताऩ्–चरणों में जाकर; अङ्कमुम् मऩमुम्–अंग, मन; कण्णुम् आविमुम्–आँखें और प्राण; अलक्कण् उऱ्ऱाऩ्–विह्वल होकर; पॊङ्किय पॊऱुमल्–उमगते दुःख के; उयिर्प्पॊटु–निःश्वास के साथ; वीङ्कि–बढ़कर; पुरऩ्तै– शरीर को; पोर्प्प–वश में कर लेते; वॆम् कण् नीर् अरुवि–गरम अश्रुनदी के; चोर–बहते; माल् वरै ऍऩ्ऩ–बड़े पर्वत के समान; वीऴ्ऩ्ताऩ्–गिरा। २८२८

नरसिंह-तुल्य श्रीवीरराघव के पायलधारी चरणों पर जाकर मारुति बड़े पर्वत के समान गिरा। उसके अंग-अंग, मन, आँखें और प्राण सभी दुःख से भरे रहे। उमगता दुःख निःश्वास के साथ बढ़ता गया, और सारे शरीर को आक्रांत कर गया। उसकी आँखों से गरम अश्रुनदी बह रही थी। २८२८

वीऴ्ऩ्दवऩ् ऱऩ्ऩै वीरऩ् विळैन्ददु विळम्बु हऩ्ऩाऩ्
ताऴ्ऩ्दिरु दडक्कै पऱ्ऱि यॆडुक्कवुऩ् दरिक्क लादाऩ्
आऴ्ऩ्दॆऴु दुऩ्बत् ताळै यरक्कऩ्शे यॆयिल्हॊळ् वाळाल्
पोऴ्ऩ्दऩ ऩॆऩ्ऩक् कूऱिप् पुरण्डऩऩ् पॊऱुमु हिऩ्ऱाऩ् 2829

वीरऩ्–वीर श्रीराम ने; ताऴ्ऩ्तु–झुककर; वीऴ्ऩ्तवऩ् तऩ्ऩै–गिरे हुए हनुमान को; इरु तट कै पऱ्ऱि–दोनों बड़े हाथों को पकड़कर; विळैन्ततु विळम्पुक–जो हुआ वह कहो; ऍऩ्ऩा–पूछा तो; ऍटुक्कवुम्–उठाने पर; तरिक्कलाताऩ्–अधीर (हनुमान); आऴ्ऩ्तु ऍऴु–गहरे हो उठे; तुऩ्पत्ताळै–दुःख में मग्न सीताजी को; अरक्कऩ् चेय्–राक्षसपुत्र ने; अयिल् कॊळ् वाळाल्–धारदार तलवार से; पोऴ्ऩ्ततऩ्–काट दिया; ऍऩ्ऩ–ऐसा; कूऱि–कहकर; पुरण्टऩऩ्–लोटने लगा; पॊऱुमुकिऩ्ऱाऩ्–बिलखता रहा। २८२९

श्रीराम ने झुककर भूमि पर पड़े रहे उसके दोनों हाथ पकड़कर पूछा कि क्या हुआ ? बतलाओ। उठाने पर असह्य वेदना से पीड़ित हनुमान ने निवेदन किया कि गम्भीर-दुःख-मग्न देवी को रावण-पुत्र ने तीक्ष्ण तलवार से काट दिया। यह कहकर वह भूमि पर दुःख से विह्वल होकर लोटा। २८२९

तुडित्तिल ऩुयिर्प्पु मिल्ल ऩिमैत्तिलऩ् ऱुळ्ळिक् कण्णीर्
पॊडित्तिल ऩियादु मॊऩ्ऱुम् बुहऩ्ऱिलऩ् पॊऱुमि युळ्ळम्
वॆडित्तिलऩ् विम्मिप् पारिऩ् वीऴ्ऩ्दिलऩ् वियर्त्ता ऩल्लऩ्
अडत्तुळ तुऩ्ब मियाबु मऱिन्दिल रमर रेयुम् 2830

तुटित्तिलऩ्–(श्रीराम) छटपटाये नहीं; उयिर्प्पुम् इल्लऩ्–श्वासहीन हो गये; इमैत्तिलऩ्–पलक न मारी; कण्णीर् तुळ्ळि पॊटित्तिलऩ्–आँसू की बूँदें न निकालीं; यातुम् ऒऩ्ऱुम्–कुछ भी; पुकऩ्ऱिलऩ्–नहीं बोले; उळ्ळम् पॊऱुमि–मन दुःख से भरकर; वॆटित्तिलऩ्–फूटे नहीं; विम्मि–सिसककर; पारिऩ् वीऴ्ऩ्तिलऩ्–भूमि पर गिरे नहीं; वियर्त्ताऩ् अल्लऩ्–स्वेदयुक्त हुए नहीं; अटत्तु उळ तुऩ्पम् यावुम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन पर जो बीते वे सारे दुःख; अमररेयुम्–देव भी; अऱिन्तिलर्–नहीं जान पाये। २८३०

यह सुनते ही श्रीराम की विचित्र हालत हो गयी। वे नहीं छटपटाये। साँस बन्द-सी हो गयी। पलकें नहीं गिरीं। अश्रु झलक नहीं आये। बोल नहीं फूटे। मन दुःख से भरकर फूटा नहीं। सिसक कर भूमि पर नहीं गिरे। शरीर पर पसीना भी नहीं आया। उनके दुःख को पूर्ण रूप से देव भी नहीं जान सके। २८३०

शॊऱ्ऱदु केट्ट लोडुन् दुणुक्कुऱ वुणर्वु शोर
नऱ्पॆरु वाडै युऱ्ऱ मरङ्गळि नडुक्क मॆय्दाक्
कऱ्पह मनैय वळ्ळल् करुङ्गऴऱ् कमलक् कान्मेल्
वॆऱ्पिन मॆन्न वीऴ्न्दार् वानर वीर रॆल्लाम् 2831

वानर वीरर् ऎल्लाम्–सभी वानर वीर; चॊऱ्ऱु–कहा; केट्टलोटुम्–सुनते ही; तुणुक्कु उऱ–ठिठक गये; उणर्वु चोर–सुधि खो गयी; नल् पॆरु वाटै उऱ्ऱ–अच्छी उग्र उदीची हवा के झोंके में; मरङ्कळिन्–तरुओं की तरह; नटुक्कम् ऎय्ता–कंपन पाकर; कऱ्पकम् अनैय वळ्ळल्–कल्पतरु के समान उदार प्रभु के; करु कळ्ळल्–सुदृढ़ पायलधारी; कमल काल् मेल्–कमल-चरणों में; वॆऱ्पु इनम् ऎन्न–पर्वत-समूह के समान; वीऴ्न्तार्–गिरे। २८३१

वानर वीरों ने ज्योंही श्रीराम से कही हुई बात सुनी, त्योंही वे भौचक हो गये। उनकी सुधि खो गयी। प्रबल उदीची हवा के झोंकों से जैसे तरु हिल जाते हैं, वैसे ही वे भी काँप उठे और सुदृढ़ पायलधारी श्रीराम के कमल-चरण में पर्वतसमूहवत् गिरे। २८३१

चित्तिरत् तन्मै युऱ्ऱ शेवह नुणर्वु तीर्न्दान्
वित्तहर् वदन नोक्का निळैयवन् विनवप् पेशान्
पित्तरु मिऱैयॊ ऱाद पेरबि मान मॆन्नुम्
शत्तिर मार्बिऱ् ऱैक्क वुयिरिल नॆन्नच् चाय्न्दान् 2832

चित्तिरम् तन्मै उऱ्ऱ–चित्र की-सी (निस्पन्द) हालत में जो आये; चेवकन्–वे वीर श्रीराम; उणर्वु तीर्न्तान्–बेहोश हुए; वित्तकर्–बुद्धिमानों का; वतनम् नोक्कान्–मुख नहीं देखते; इळैयवन् विनव–छोटे भाई के पूछने पर; पेचान्–कुछ नहीं बोलते; पित्तरुम्–पागल भी; इऱै–थोड़ा ही सही; पॊऱात–जो सह नहीं सकें; पेर् अपिमानम् ऎन्नुम्–बड़ा ममत्व रूपी; चत्तिरम्–अस्त्र; मार्पिल् तैक्क–छाती में लगा इसलिए; उयिरिलन् ऎन्न–निष्प्राण हुए जैसे; चाय्न्तान्–गिर गये। २८३२

तब श्रीराम निस्पन्द तथा प्रज्ञाहीन हुए। विद्वान मित्रों का वदन नहीं देखते; लक्ष्मण के पूछने पर भी उत्तर नहीं देते। पागल भी जिसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुछ देर भी नहीं सह सकते, वैसा मान का अस्त्र उनकी छाती में गड़ गया था। अतः प्राणहीन के समान गिरे थे। २८३२

नायहऩ् ऱऩ्मै कण्डुऩ् दमक्कुऱ्ऱ नाणम् बार्त्तुम्
आयिऩ करुम मीळ वळिवुऱ्ऱ वदऩैप् पार्त्तुम्
वायॊडु मऩमुङ् गण्णु मियाक्कैयु मयर्न्दु शाम्बित्
तायिऩै यिऴन्द कऩ्ऱिऱ ऱम्बियुन् दलत्त ऩाऩाऩ् 2833

तम्पियुम्–छोटे भाई भी; नायकऩ् तऩ्मै कण्टुम्–नायक का हाल देखकर और; तमक्कु उऱ्ऱ–अपने पर लगी; नाणम् पार्त्तुम्–लज्जा का हाल देखकर; आयिऩ करुमम्–जो अच्छा होने को आया था वह काम; मीळ- फिर; अऴिवुऱ्ऱ–बिगड़ गया; अतऩै पार्त्तुम्–वह हाल देखकर; वायॊटु–मुख और; मऩमुम्–मन और; कण्णुम्–आँखें; याक्कैयुम्–और शरीर; अयर्न्तु–थक गये; चाम्पि–मुरझा गये; तायिऩै इऴन्त कऩ्ऱिऩ्–माता को जिसने खो दिया उस बछड़े के समान; तलत्तऩ् आऩाऩ्–भूमि पर गिरे हो गये। २८३३

छोटे भाई पर भी नायक के हाल का प्रभाव पड़ा। उन्होंने अपने पर जो शरमाने की हालत आ गयी उसको सोचा। सिद्ध होता-सा रहा कार्य फिर से बिगड़ गया था। इन सबके प्रभाव से उनका मुख, मन, आँखें और शरीर सभी जर्जर हो गये। वे भी धैर्य खोकर मृत माता गाय के बछड़े के समान भूमि पर पड़े रह गये। २८३३

तॊल्लैय दुणरत् तक्क वीडणऩ् ऱुळक्क मुऱ्ऱाऩ्
ऎल्लैयि ऱुऩ्ब मूऩ्ऱ विडैयॊऩ्ऱुऩ् दॆरिहि लादाऩ्
वॆल्लवु मरिदु नाश मिवडऩाल् विळैन्द दॆऩ्ऩाक्
कॊल्वदु मडुक्कु मॆऩ्ऱु मऩत्तिऩो रैयङ् गॊण्डाऩ् 2834

तॊल्लैयतु–दूर तक; उणर तक्क–जान सकनेवाले; वीटणऩ्–विभीषण तुळक्कम् उऱ्ऱाऩ्–दहल उठा; ऎल्लै इल्–अपार; तुऩ्पम् ऊऩ्ऱ–दुःख के होते; इटै ऒऩ्ऱुम्–कारण कुछ; तॆरिकिलाताऩ्–जो न जानता था; वॆल्लवुम् अरितु–जीतना भी असाध्य है; इवळ् तऩाल्–इस (सीता) से; नाचम् विळैन्ततु–नाश हुआ; ऎऩ्ऩा–सोचकर; कॊल्वतुम्–(सीता को) मारना भी; अटुक्कुम्–सम्भव भी था; ऎऩ्ऱु–ऐसा सोचकर; मऩत्तिऩ्–मन में; ओर् ऐयम् कॊण्टाऩ्–एक संशय-ग्रस्त हुआ। २८३४

तब दूरदर्शी विभीषण व्यग्र हो उठा। अपार दुःख ने उसके मन को आक्रांत किया। कोई कारण नहीं जान सका। उसके मन में एक संशय उठा कि सीताजी को, इस बात पर झल्लाकर कि श्रीराम-लक्ष्मण को हराना दुस्साध्य है और इसी के कारण राक्षसकुल का नाश हो गया, राक्षस ने मारा हो —यह सम्भव है। २८३४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शीदनीर् मुहत्ति नप्पिच् चेबहन् मेनि तीण्डिप्
पोदम्बन् देय्दर् पाल यावयुम् बुरिन्दु पॊऱ्पूम्
बादमुङ् गैयु मॆय्युम् बऱ्ऱिनन् वरुड लोडुम्
वेदमुङ् गाणा वळ्ळल् विळित्तनन् कण्णै मॆल्ल 2835

चेबकन् मुकत्तितन्-पराक्रमी (श्रीराम) के मुख पर; चीत नीर् अप्पि-शीतल जल डालकर; मेनि तीण्टि-शरीर स्पर्श करके; पोतम् बन्तु ऍय्तल् पाल-सुध आये इसके लिए आवश्यक; यावैयुम् पुरिन्तु-सभी (उपचार) करके; पॊन्-मनोरम; पूम् पातमुम्-मृदु चरणों; कैयुम् मॆय्युम्-हाथ और शरीर; पऱ्ऱिनन्-दबाकर; वरुटलोटुम्-सहलाया तो; वेतमुम् काणा वळ्ळल्-वेदों के लिए भी अगम्य प्रभु ने; कण्णै-आँखों को; मॆल्ल-धीरे-धीरे; विळित्तनन्-खोला। २८३५

विभीषण ने विक्रमी श्रीराम के मुख पर शीतल जल छिड़का। शरीर को स्पर्श करके होश लाने के लिए आवश्यक तथा योग्य उपचार किये। सुन्दर मृदु श्रीचरणों, हाथों और शरीर को सहलाया। तो तुरन्त वेदों के लिए भी अगम्य प्रभु सचेत हुए और उन्होंने धीरे से आँखें खोलीं। २८३५

ऊऱ्ऱुवार् कण्णी रोडु मुळ्ळलिन् दुऱ्ऱ देण्णि
आऱ्ऱुवा नल्ल नाहि यय्र्हिन्ऱा नॆनिनु मैयन्
माऱ्ऱुवा नल्लन् मान मुयिरुह वरुन्दु मॆन्नात्
तेऱ्ऱुवा निनैन्दु तम्बि यिवैयिवै शॆप्प लुऱ्ऱान् 2836

ऊऱ्ऱु-बहनेवाली; वार्-लंबी; कण्णीरोटुम्-अश्रुधारा के साथ; उळ् अळिन्तु-मन नष्ट करके; उऱ्ऱतु ऍण्णि--जो हो गया उसे सोचकर; आऱ्ऱुवान् अल्लन् आकि-धीरज न धर सककर; अयर्कित्ऱान्-(लक्ष्मण) शिथिल रहे; ऍनिनुम्-तो भी; ऐयन्-श्रीराम; मानम् माऱ्ऱुवान् अल्लन्-अपना मान नहीं छोड़ेंगे; उयिर् उक-प्राण निकल जायँ ऐसा; वरुन्तुम्-दुःखी होंगे; ऍन्ना-सोचकर; तेऱ्ऱुवान् निनैन्तु-धीरज बँधाना चाहकर; तम्पि-लघु भ्राता; इवै इवै-ऐसे-ऐसे (वचन); चॆप्पल् उऱ्ऱान्-कहने लगे। २८३६

लक्ष्मण की स्थिति भी विकट थी। उनकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। बीती बातें सोचकर उन्हें असह्य दुःख हो रहा था। वे स्वयं शिथिल थे तो भी उन्होंने सोचा कि प्रभु अपना मान नहीं छोड़ेंगे। रोते-रोते प्राण छोड़ देंगे। उन्होंने उन्हें सांत्वना देना चाहा। इसलिए लघुभ्राता ने निम्नोक्त बातें कहीं। २८३६

मुडियुनाट् टाने वन्दु मुऱ्ऱिनाऱ् ऱुन्ब मुन्नीर्
पडियुमाञ् जिऱ्ऱियोर् तन्मै निन्नक्किदु पळ्ळियिऱ् ऱामाल्
कुडियुमा शुण्ड देन्नि नऱुत्तॊडु मुलहैक् कॊन्ऱु
कडियुमा ऱन्ऱिच् चोर्न्दु कळिदियो करुत्ति लार्बोल् 2837

मुडियुम् नाळ्-विनाशकाल; ताने वन्तु मुऱ्ऱिनाल्-स्वयं आकर पक्व होता है;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुन्पम् मुन्नीर् पटियुमाम्–तो दुःख (रूपी) सागर में मग्न हो जाना; चिरियोर् तन्मै–छोटों का स्वभाव है; इतु–यह; नित्तक्कु पळियिऱ्ऱु आम्–आपके लिए अपयश है; कुटियुम्–कुल भी; माचु उण्टतु–कलंकित हो गया; ऍन्निन्–तो; अऱत्तॊटुम् उलकै–धर्म और संसार को; कॊन्ऱु कटियुमाऱु अऱ्ऱि–नाश कर मिटाने के सिवा; करुत्तिलार् पोल्–विवेकहीनों के समान; चोर्न्तु कळितियो–थके रह जायँगे क्या। २८३७

अंत (कष्ट) काल स्वयं आ जाए तो दुःख-सागर में मग्न रहना छोटों का स्वभाव है। पर आपके लिए यह अपयश होगा। कुल पर भी जब धब्बा लग गया, तब धर्म के साथ संसार का भी नाश करना छोड़कर विचार-हीन के समान शिथिल पड़े समय काटेंगे क्या ? । २८३७

तॆयलैत् तुणैयि लाळैत् तवत्तियैत् तरुमक् कऱ्पिन्
तॆय्वदन् दन्नै मऱ्ऱुन् ऱेवियैत् तिरुवैत् तीण्डि
वॆय्यवन् कॊन्ऱा नॆन्ऱाल् वेदनै युळप्प दिन्नम्
उय्यवो करुणै यालो तरुमत्तो डुऱवु मुण्डो 2838

तॆयलै–अबला को; तुणै इलाळै–निस्सहाय रही देवी को; तवत्तियै–तपस्विनी को; तरुम कऱ्पिन्–पतिव्रता-धर्म की; तॆय्वतम् तन्नै–देवी को; मऱ्ऱु–और; उन् तेवियै–आपकी पत्नी को; तिरुवै–लक्ष्मीदेवी को; तीण्टि–छूकर; वॆय्यवन्–दुष्ट ने; कॊन्ऱान् ऍन्ऱाल्–मारा तो; वेतनै उळप्पतु–(यह सुनकर) दुःख में यंत्रणा पाना; इन्नम् उय्यवो–आगे भी जीने के लिए क्या; करुणैयालो–दया के कारण; तरुमत्तोटु–धर्म से; उऱवु उण्टो–अब भी नाता होगा; क्या। २८३८

दुष्ट, क्रूर राक्षस ने एक अबला को, निस्सहाय स्त्री को, तपस्विनी को, धार्मिक पतिव्रता देवी को, और आपकी देवी को, श्री को हाथ से स्पर्श करके मार डाला। यह सुनकर रोते रहें —यह और जीवित रहने के निमित्त है क्या ? या दया के कारण ? या धर्म से अब भी नाता है ? । २८३८

अरक्करॆन् नमरर् तामॆ नन्दणर् तामॆ नन्दक्
कुरुक्कळॆन् मुनिवर् तामॆन् वेदत्तिन् कॊळ्है तानॆन्
शॆरुक्किनर् वलिय राहि नॆऱिनिन्ऱार् शिदैव राहिन्
इरुक्कुमि दॆन्ना मिम्मून् ऱुलहैयु मॆरिम डादे 2839

अरक्कर् ऍन्–राक्षस हुए तो क्या; अमरर् ताम् ऍन्–देव हों तो भी क्या; अन्तणर् ताम् ऍन्–ब्राह्मण हुए तो क्या; अन्त कुरुक्कळ्–वे (मान्य) गुरु; ऍन्–क्या; मुनिवर् ताम् ऍन्–मुनि लोग भी क्या; वेतत्तिन् कॊळ्कै तान् ऍन्–वेद-सिद्धान्त क्या; चॆरुक्किनर्–दंभी; वलियर् आकि–बल-प्रदर्शक बने; नॆऱि निन्ऱार्–और धर्मावलम्बी; चितैवार् आकिल्–विनाश पायें तो; इ मून्ऱु उलकैयुम्–इन तीनों लोकों को; ऍरि मटाते–आग लगाये विना; इरुक्कुम् इतु–रहने की यह प्रवृत्ति; ऍन् आम्–क्या होगी। २८३९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षस क्या, देव भी क्या ? ब्राह्मण क्या, मान्य गुरु लोग हों तो क्या ? वेदशासन भी रहा तो क्या ? शत्रु दम्भी होकर बल पाकर रहें और फलस्वरूप धर्मावलंबी संकटग्रस्त हों तो इन तीनों लोकों में आग लगाए विना चुप रहना क्या है ? । २८३९

मुऴुवदे ऴुलह मिऩ्ऩ मुऱैमुऱै शॅय्है मेऩ्मूण्
डॅऴुवदे यमर रिऩ्ऩ मिरुप्पदे यऱमुण् डॅऩ्ऱु
तॊऴुवदे मेह मारि शॊरिवदे शोऱ्ऱ्ऱु नाम्वीऴ्ऩ्
दऴुवदे नऩ्ऱु नऩ्दम् विऱ्ऱॊऴि लाऱ्ऱ लम्मा 2840

एऴ् उलकम् मुऴुवतुम्–सातों लोक सारे; इऩ्ऩम्–अब भी; मुऱै मुऱै–क्रम से; चॅय्कै मेल्–अपने-अपने कृत्य पर; मीण्टुम्–फिर; ऍऴुवते–उठें (शाश्वत रहें); इऩ्ऩम् अमरर् इरुप्पते–अब भी देव रहें; अऱम् उण्टु ऍऩ्ऱु–धर्म है यह सोचकर; तॊऴुवते–वंदना हो; मेकम् मारि चॊरिवते–मेघ-वर्षा हो; नाम्–हम; चोऱ्ऱ्ऱु–निर्बल हो; वीऴ्ऩ्ऩु अऴुवते–गिरकर रोयें; नम् तम्–हमारे; विल् तॊऴिल् आऱ्ऱल्–धनु-कर्म का बल; नऩ्ऱु–बड़ा अच्छा रहा; अम्मा–शाबाश । २८४०

क्या ये सातों लोक अब भी अपने-अपने यथाक्रम कार्य करते रहें ? देवों को भी जीने दिया जाय ? धर्म का अस्तित्व मानकर उसकी वन्दना हो ? मेघ भी वर्षा करते रहें ? और हम निर्बल होकर गिरें और रोते रहें? अहा! हमारे धनुकर्म का प्रभाव भी बड़ा अच्छा रहा! मैया । २८४०

पुक्किव्वू रिमैप्पिऩ् मुऩ्ऩम् बॊडिपडुत् तरक्कऩ् पोऩ
तिक्कॆलाऱ् जुट्टु वाऩो रुलहॆलाऩ् दीय्ऩ्ऩुत् तीर्क्कत्
तक्कनाङ् गण्णी राऱ्ऱित् तलैशुमऩ् दिरुकै नाऱ्ऱित्
तुक्कमे युऴुप्प मॆऩ्ऱाऱ् चिऱुमैयाय्त् तोऩ्ऱु मऩ्ऱे 2841

इ ऊर् पुक्कु–इस (लंका) नगर में घुसकर; इमैप्पिऩ् मुऩ्ऩम्–पलक भर की देरी के अन्दर; पॊटि पटुत्तु–खाक बनाकर; अरक्कऩ् पोऩ–जिनमें राक्षस गया; तिक्कु ऍलाम्–उन सारी दिशाओं को; चुट्टु–जलाकर; वाऩोर् उलकॆलाम्–देवों के सभी लोकों को; तीय्ऩ्ऩुत्–जलाकर; तीर्क्कत् तक्क–समाप्त करने में शक्य हम; कण्णीर् आऱ्ऱि–आँसू बहाकर; इरु कै–दोनों हाथों को; तलै चुमऩ्ऩु–सिर पर ढोकर; नाऱ्ऱि–(सिर) लटकाकर; तुक्कमे उऴुप्पम्–दुःख ही भोगेंगे; ऍऩ्ऱाल्–तो; चिऱुमैयाय् तोऩ्ऱुम् अऱ्ऱे–लघुता न दिखेगी । २८४१

इस नगर में प्रवेश करके पल भर में खाक बना देंगे। इन्द्रजित् जिन दिशाओं में गया हो उन सभी दिशाओं को जला देंगे। देवलोकों को राख बना देंगे। ऐसा कर सकनेवाले हम आँसू बहाते हुए सिर पर हाथ धरकर सिर को लटकाते हुए दुःख भोगते रहें तो छुटपन नहीं होगा क्या ? । २८४१

अङ्गुमिव् वऱमे नोक्कि यरशिऴ्ऩ् दडवि यॆय्दि
मङ्गैयै वञ्जऩ् पऱ्ऱ वरम्बऴि यादु वाऴ्ऩ्देम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इङ्गुमित् तुऩ्ब मॅय्दि यिरुत्तुमे लॅळिमै नोक्किप्
पॊङ्गुवऩ् ऱळैयिऱ् पूट्टि याट्चॅयप् पुहल्व रऩ्ऱे 2842

अङ्कुम्–वहाँ (अयोध्या में) भी; इ अऱमे नोक्कि–यही धर्म देखकर; अरचु इऴन्तु–राज्य खोकर; अटवि ऍय्ति–अटवी आकर; मङ्कैयै–देवी को; वञ्चऩ्–वंचक; पऱ्ऱ–पकड़ ले गया और; वरम्पु अऴियातु–धर्म का उल्लंघन किये विना; वाऴ्न्तेम्–रहे; इङ्कुम्–यहाँ भी; इ तुऩ्पम् ऍय्ति–यह दुःख पाकर; इरुत्तुमेल्–रह जायँगे तो; ऍळिमै नोककि–दैन्य देखकर; पॊङ्कु वऩ् तळैयिल्–साफ़ दिखनेवाली कठोर हथकड़ियों से; पूट्टि–बाँधकर; आळ् चॅय–दासता करने को; पुकल्बर् अऩ्ऱे–कहेंगे न । २८४२

अयोध्या में क्या हुआ ? इसी धर्म का विचार करके राज्य खोया । जंगल गये । रावण देवी को ग्रस ले गया । पर हम धर्म का उल्लंघन किये विना रहते रहे ! यहाँ भी वही बात ! दुःख भोगते रहें तो हमारी दीनता देखकर शत्रु लोग हथकड़ी-बेड़ी बनाकर हमें गुलाम नहीं बना लेंगे क्या ? । २८४२

मऩ्ऱलङ् गोदै याळैत् तम्मॅदिर् कॊणर्न्दु वाळिऩ्
कॊऩ्ऱवर् तम्मैक् कॊल्लुङ् गोळिला नाणङ् गूरप्
पॊऩ्ऱिऩ रॅऩ्ब रावि पोक्किऩाऱ् पॊदुमै पार्क्किऩ्
अऩ्ऱिदु करुम मॅऩ्ऩी ययर्हिऩ्ऱ दऱिवि लार्पोल् 2843

आवि पोक्किऩाल्–प्राण छोड़ दें तो; मऩ्ऱल् अम् कोतैयाळै–सुगन्धपूर्ण केश वाली को; तम् ऍतिर् कॊणर्न्तु–उनके ही समक्ष लाकर; वाळिऩ् कॊऩ्ऱवर् तम्मै–तलवार से काटनेवालों को; कॊल्लुम् कोळ् इला–मारने की शक्ति उनमें जो नहीं थी; नाणम्–उस शरम के; कूर–बढ़ने से; पॊऩ्ऱिऩर्–मरे; ऍऩ्पर्–ऐसा लोक कहेंगे; पॊतुमै पार्क्किऩ्–साधारण धर्म देखें तो; इतु करुमम् अऩ्ऱु–यह करणीय नहीं; अऱिविलार् पोल्–बुद्धिहीनों के समान; नी–आप; अयर्किऩ्ऱ्तु–श्लथ पड़ते हैं; ऍऩ्–क्यों । २८४३

समझिए कि मर गये । तो लोग क्या कहेंगे ? सुगन्धपूर्ण केश वाली पत्नी को उनके ही सामने लाकर जिसने तलवार से काटकर मारा, उस राक्षस के मारने की शक्ति नहीं थी । शरम बढ़ गयी; इसलिए वे मर गये । यही कहेंगे । साधारण रीति से देखें तो यह करणीय नहीं ! बुद्धिहीनों के समान आप दुःख-शिथिल क्यों होते हैं ? । २८४३

अऩैयऩ विळवल् कूऱ वरुक्कऩ्शे ययर्हिऩ् ऱाऩोर्
कऩवुकण् डऩऩे यॅऩ्ऩक् कदुमॅऩ वॅळुन्दु काणुम्
विऩैयिऩि युण्डे वल्लै विळक्किऩ्वीळ् विट्टि लॅऩ्ऩ
मऩैयिडै यरक्कऩ् मार्बिऱ् कुदित्तुम्नाम् वम्मि ऩॅऩ्ऱान् 2844

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इळवल्–लघुराज के; अऩैयत–वैसी बातें; कूऱ–कहने पर; अयर्किऩ्ऱाऩ्–जो शिथिल था; अरुक्कऩ् चेय्–अर्कपुत्र; ओर् कऩवु–एक स्वप्न; कण्टऩऩे ऍऩ्ऩ–देखनेवाले के ही समान; कऩुम् ऍऩ–झटिति; ऍऴुऩ्ऩु–उठकर; वल्लै–जल्दी; विळक्किऩ् वीऴ्–दीप में गिरे; विट्टिल् ऍऩ्ऩ–पतंग के समान; मऩै–पत्नी देवी को; इटै–त्रास देनेवाले; अरक्कऩ्–राक्षस (रावण के); मार्पिल्–वक्ष में; नाम् कुतित्तुम्–हम कूदेंगे; वम्मिऩ्–आओ; काणुम् वित्तै–सोचने का कार्य; इऩि उण्टो–अब होगा क्या; ऍऩ्ऱाऩ्–बोला। २८४४

लक्ष्मण की बातों को सुग्रीव ने, जो अशक्त हो पड़ा हुआ था, सुना। तो स्वप्न से जागनेवाले के समान वह झट उठा और बोला। दीप में पतंग के समान हम राक्षस की छाती पर कूदेंगे जिसने हमारे प्रभु की पत्नी को संकट दिया है! आओ सब। फिर कोई अन्य काम है जो हम करें? । २८४४

इलङ्गैयै यिडऩ्दु वॆङ्ग णिराक्कद रॆऩ्गिऩ् ऱारैप्
पॊलङ्गुऴै महळि रोडुम् बाऩुहर् पुदल्व रोडुम्
कुलङ्गळो डडङ्गक् कॊऩ्ऱु कॊडुऩ्दॊऴिल् कुऱित्तु नम्मेल्
विलङ्गुवा रॆऩ्ऩिऱ् ऱेवर् विण्णैयु निलत्तु वीऴ्त्तुम् 2845

इलङ्कैयै इटऩ्तु–लंका को उखाड़ लेकर; वॆम् कण्–क्रूर आँखों वाले; इराक्कतर् ऍऩ्किऩ्ऱारै–राक्षस नामधारी सभी को; पॊलम् कुऴै–सुन्दर कुंडलधारिणी; मकळिरोटुम्–स्त्रियों के साथ; पाल् नुकर्–दूध-पीते; पुतलवरोटुम्–बच्चों के साथ; कुलङ्कळोटु–कुल के साथ; अटङ्क कॊऩ्ऱु–पूरा मारकर; कॊटु तॊऴिल् कुऱित्तु–हमारा क्रूर काम देख; नम् मेल्–हमारे; तेवर् विलङ्कुवार् ऍऩ्ऩिल्–आड़े आयेंगे तो; विण्णैयुम्–आकाश को भी; निलत्तु–भूमि पर; वीऴ्त्तुम्–गिरा देंगे। २८४५

वह आगे बोला— लंका को उखाड़ देंगे। क्रूराक्ष राक्षसों को, उनकी सुन्दर कुंडलधारिणी स्त्रियों को और उनके दूध-पीते बच्चों को कुल-सहित मार डालेंगे। हमारा यह क्रूर काम देखकर देवलोग आड़े आयेंगे तो उनके लोकों को भी भूमि पर गिरा देंगे। २८४५

अऱङ्गॆडच् चॆय्दु मॆऩ्ब दमैऩ्दऩ माहि ऩैय
पुऱङ्गिडऩ् दुऴप्प दॆऩ्ऩे पॊरुदिऩिप् पुवऩ मूऩ्ऱुम्
कऱङ्गॆऩऩ् तिरिऩ्दु तेवर् कुलङ्गळैक् कट्टु मॆऩ्ऩा
मऱङ्गिळर् वयिरत् तोळा ऩिलङ्गॆमेल् वाव लुऱ्ऱाऩ् 2846

मऱम् किळर्–वीरता-दर्शक; वयिरम् तोळाऩ्–वज्र-सम कंधों वाले; ऐय–प्रभु; अऱम् कॆट–धर्म बिगाड़ने (का काम); चॆय्तुम् ऍऩ्ऩपतु–करना जो है उसमें; अमैऩ्ततम् आकिऩ्–लग जायँ तो; पुऱम् किटऩ्ऩु–(लंका के) बाहर रहकर; उऴप्पतु ऍऩ्ऩे–दुःख क्यों करते रहें; इऩि–आगे; पुवऩम् मूऩ्ऱुम् पॊरुतु–तीनों भुवनों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

से लड़कर; कऱङ्कु ऍऩ–पतंग के समान; तिरिऩ्तु–घूमकर; तेवर् कुलङ्कळै–देववर्गों को; कट्टुम्–छिन्न-भिन्न कर देंगे; ऍऩ्ऩा–कहते हुए; इलङ्कै मेल्–लंका पर; वावल् उऱ्ऱाऩ्–झपटने लगा। २८४६

विक्रम-शोभित वज्रस्कंध सुग्रीव ने श्रीराम से कहा कि प्रभु ! धर्म बिगाड़ने पर तुले ही हैं तो (लंका के) बाहर पड़े रहकर क्षुब्ध रहें क्यों ? अभी तीनों लोकों पर आक्रमण करेंगे, पतंग के समान घूमेंगे और देव वर्गों को मिटा-हटा देंगे। यह कहते हुए वह लंका पर झपटने लगा। २८४६

मऱ्ऱैय वीर ऍल्ला मऩ्ऩऩिऩ् मुऩ्ऩऩ् दावि
ऍऱ्ऱुदु मरक्कर् तम्मै यिल्लॊडु मडुत्तॆऩ् ऱेहल्
उऱ्ऱऩ ऱुऱद लोडु मुणर्त्तुव दुळदॆऩ् ऱुऩ्ऩाच्
चॊऱ्ऱऩ ऩनुमऩ् वञ्ज ऩयोत्तिमेऱ् पोऩ शूळ्च्चि 2847

मऱ्ऱैय–अन्य; वीरर् ऍल्लाम्–सभी वीर; मऩ्ऩऩिऩ् मुऩ्ऩम् तावि–राजा के पहले लपककर; अरक्कर् तम्मै–राक्षसों को; इल्लॊटुम् ऍटुत्तु–घरों के साथ उठाकर; ऍऱ्ऱुतुम्–फेंक देंगे; ऍऩ्ऱु–कहते हुए; एकल् उऱ्ऱऩर्–चलने लगे; उऱुतलोटुम्–जब चलने लगे तब; अनुमऩ्–हनुमान (ने); उणर्त्तुवतु उळतु–समझाने को है; ऍऩ्ऱु उऩ्ऩा–ऐसा सोचकर; वञ्चऩ्–वंचक का; अयोत्ति मेल्–अयोध्या की ओर; पोऩ चूळ्च्चि–जाने की दुष्ट योजना; चॊऱ्ऱऩऩ्–बताया। २८४७

तब अन्य वीर भी यह कहते हुए उछलने लगे कि हम अपने राजा के पूर्व ही झपटेंगे और राक्षसों को उनके घरों के साथ उठाकर फेंक देंगे। जब वे झपटने लगे तब हनुमान ने कहा कि अब समझने की एक बात है। उसने वंचक इन्द्रजित् के अयोध्या की ओर जाने का बुरा संकल्प बताया। २८४७

तायरुऩ् दम्बि मारुऩ् दवम्बुरि नहरञ् जारप्
पोयिऩ ऩॆऩ्ऱु माऱ्ऱञ् जॆवित्तुळै पुहुद लोडुम्
मेयिऩ वडुवि ऩिऩ्ऱु वेदऩै कऩैय वॆऩ्ऱ
तीयिडैत् तणिऩ्द दॆऩ्ऩच् चीदैपाऱ् ऱुयरऩ् दीर्ऩ्दाऩ् 2848

तायरुम् तम्पि मारुम्–माताएँ और भाई लोग; तवम् पुरि–जहाँ तपस्या करते हैं; नकरम्–उस नगर की ओर; चार–जाने (की इच्छा से); पोयिऩऩ्–गया; ऍऩ्ऱु माऱ्ऱम्–इस कथन के; चॆवि तुळै पुकुतलोटुम्–कर्णरन्ध्र में घुसते ही; मेयिऩ वडुविऩ् ऩिऩ्ऱु–हुए व्रण के कारण रही; वेऩऩै–पीड़ा; कऩैय वॆऩ्ऱ–बहुत ही तपी; तीयिटै–आग में; तणिऩ्ऩतु–शान्त हो गयी; ऍऩ्ऩ–जैसे; चीतै पाल्–सीता के कारण उठे; तुयरम् तीर्ऩ्ताऩ्–दुःख से निवृत्त हुए। २८४८

"माताएँ, भाई आदि जहाँ तपस्या कर रहे हैं, उस नगर की ओर गया है इन्द्रजित्" —यह कथन ज्योंही श्रीराम के कर्णरंध्र में घुसा, त्योंही उनका सीता-सम्बन्धी दुःख इस प्रकार उन्हें छोड़ गया जैसे व्रण की पीड़ा गम्भीर आग की पीड़ा में अदृश्य हो जाती है ! । २८४८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऴुन्दिय पालिन् वॆळ्ळत् ताऴिनिन् ऱन्दर् नीङ्गि
ऎऴुन्दन ऩॆन्नत् तुन्बक् कडलिनिन् ऱेऱि याऱाक्
कॊऴुन्दुरु कोबत् तीयु नडुक्कमु मनत्तैक् कूड
उऴुन्दुरुळ् पॊऴुदुन् दाऴा विरैविनान् मरुक्क मुऱ्ऱान् 2849

पालिन् अऴुन्तिय–क्षीर के बने गहरे; वॆळ्ळत्तु–जल के; आऴि निन्ऱु–समुद्र से; अनन्तर् नीङ्कि–निद्रा त्यागकर; ऎऴुन्तनन् ऎन्न–(श्रीविष्णु) उठे, वैसे; तुन्पक् कटलिन् निन्ऱु एऱि–दुःख-सागर से ऊपर चढ़कर; आऱा–अदम्य; कॊऴुन्तु उरु–ज्वालायुक्त; कोपम् तीयुम्–कोपाग्नि और; नटुक्कमुम्–कंपन; मनत्तै कूट–मन में मिल उठे, इसलिए; उऴुन्तु उरुळ् पॊऴुतुम्–उड़द के लुढ़कने की देर भी; ताऴा विरैविनान्–विलम्ब न करके वेगवान श्रीराम; मरुक्कम् उऱ्ऱान्–क्षुब्ध हुए। २८४९

श्रीराम ऐसे ही दुःख-सागर से बाहर आये जैसे क्षीरसागरशय्या से श्रीविष्णु निद्रा त्यागकर आते हों। उनमें अदम्य ज्वालासहित कोपाग्नि उठी और कंपन हुआ। उड़द की लुढ़कती जितनी देर भी विलंब न करनेवाले गतिमान श्रीराम दुःखभ्रमित हो गये। २८४९

तीरुमिच् चीदै योडु मॆन्गिल दॆन्ऱन् ऱीमै
वेरॊडु मुडिपप् दाह विळैन्ददु वेऱु मिन्नुम्
आरॊडुन् दॊडरु मॆन्ब दऱिहिले निदनै यॆय
पेरिड ववदि युण्डो वॆम्बियर् पिऴैक्किन् ऱारो 2850

ऐय–बाबा; ऎन्ऱन् तीमै–मेरा पाप; इ चीतैयोटु–इस सीता के साथ; तीरुम् ऎन्किलतु–रह जायगा नहीं दिखता; वेरॊटुम् मुटिप्पताक–निर्मूल कर देगा; विळैन्ततु–ऐसा बना है; इन्नतम्–और; वेऱु यारॊटु–अन्य किसको लेकर; तॊटरुम्–आगे बढ़ेगा; ऎन्पतु–यह; अऱिकिलेन्–नहीं जानता; इतनै पेरिट–इसको दूर करने की; अवति उण्टो–अवधि है क्या; ऎम्पियर्–मेरे छोटे भाई; पिऴैक्किन्ऱारो–जी सकेंगे क्या। २८५०

उन्होंने विभीषण से कहा कि बाबा ! मेरा पाप इस सीता को लेकर पूरा होता नहीं दीखता, मुझे निर्मूल करने पर तुला लगता है। और किस पर लगा आयगा ? —यह नहीं जानता। क्या इस आफ़त को दूर करने के लिए अवधि भी बची है ? मेरे भाई लोग बच सकेंगे ? । २८५०

निनैवदन् मुन्नन् जॆल्लु मानत्ति नॆडिदु पोनान्
विनैयॊरु कणत्तिन् मुऱ्ऱि मीळ्हिन्ऱान् विनैयेन् वन्द
मनैपॊडि पट्ट दङ्गु माण्डदु तार मीण्डुम्
ऎनैयन तॊडरु हिन्ऱ दुणर्हिले निऱप्पुङ् गाणेन् 2851

निनैवतन् मुन्नम्–(मन की गति से भी अधिक वेग से) सोचने के पहले ही; नॆटितु चल्लुम्–वेग से जानेवाले; मानत्तिन्–यान पर; पोनान्–जो गया वह;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑरु कणत्तिन्-एक क्षण में; वित्तै मुऱ्ऱि-कार्य साधकर; मीळ्किन्ऱान्-लौट आता है; अङ्कु-वहाँ; वित्तैयेन्-पापी मैं; वन्त-जिसमें पैदा हुआ वह; मत्तै-घर; पॊटि पट्टतु-धूल बना; ईण्टुम्-यहाँ भी; तारम्-पत्नी; माण्टतु-मर गयी; ऍत्तैयत-क्या-क्या; तॊटरुकिन्ऱ-लगे आयेंगे; उणर्किलेन्-जान नहीं पाता; इऱप्पुम् काणेन्-मृत्यु भी नहीं देखता। २८५१

इन्द्रजित् चित्त की तेज़ी से भी अधिक तेज़ी से जानेवाले यान पर गया है। वह क्षण में अपना कार्य साधकर लौट आयगा। वहाँ अयोध्या में मुझ पापी का जन्म का घर ख़ाक बन गया। यहाँ भी सीता मर गयी। आगे क्या-क्या लगे आयँगे ? —यह मैं नहीं जानता। मरण भी तो आता नहीं दिखता। २८५१

तादैक्कुञ् जडायु वान तन्दैक्कुन् दमिय ळाय
शीदैक्कुङ् गूऱ्ऱङ् गाट्टित् तीर्न्दिल दॊरुवन् ऱीमै
पेदैप्पॆण् पिऱन्दु पॆऱ्ऱ तायर्क्कुम् बिळैप्पिल् लाद
कादऱ्ऱम् बियर्क्कु मूर्क्कु नाट्टिऱ्कुङ् गाट्टिऱ् ऱन्ऱे 2852

ऑरुवन् तीमै-अप्रतिम एक मेरा पाप; तातैक्कुम्-मेरे पिता का और; चटायुवान तन्तैककुम्-पिता-सम जटायु का; तमियळाय-अकेली रही; चीतैक्कुम्-सीता का; कूऱ्ऱम् काट्टि-यम बनकर; तीर्न्तिलतु-विरत नहीं हुआ; पेतैप् पॆण् पिऱन्तु-अबोध स्त्री के रूप में प्रकट होकर; पॆऱ्ऱ तायर्क्कुम्-जननी माताओं का; पिळैप्पु इल्लात-दोषहीन; कातल् तम्पियर्क्कुम्-प्यारे भाइयों का; ऊर्क्कुम्-नगर का; नाट्टिऱ्कुम्-और देश का भी; काट्टिऱ्ऱ-(यम दिखा) गया। २८५२

अपूर्व मेरे पाप ने मेरे पिताजी को, मेरे पिता-तुल्य जटायु को और निस्सहाय सीता को मृत्यु दिलायी। वहाँ तक वह नहीं रुका। स्त्री के रूप में प्रगट होकर वह मेरी जननी माताओं को, अनिंद्य प्यारे लघु सहोदरों को और मेरे नगर पर मौत ला चुका है। २८५२

उऱ्ऱदॊन् ऱुणर हिल्ला रुणर्न्दुवन् दुरुत्ता रेनुम्
वॆऱ्ऱिवॆम् बाशम् वीशि विशित्तवन् कॊन्ऱु वीळ्त्ताल्
मऱ्ऱैवॆम् बुळ्ळिन् वेन्दन् वरुहिलन् मरुत्तु नल्हक्
कॊऱ्ऱमा रुदियङ् गिल्लै यारुयिर् कॊडुक्कर् पालार् 2853

उऱ्ऱतु ऑन्ऱु-जो हुआ वह कुछ; उणरकिल्लार्-जो नहीं समझ सके वे (भरत-शत्रुघ्न); उणर्न्तु वन्तु-समझकर आकर; उरुत्तारेनुम्-(इन्द्रजित् पर) क्रोध करें तो भी; अवन्-वह; वॆऱ्ऱि-विजयदायी; वॆम्-भयंकर; पाचम्-पाश (नागास्त्र) को; वीचि-फेंककर; विचित्तु-बाँधकर; कॊन्ऱु-मारकर; वीळ्त्ताल्-गिरा दे तब; वॆम् पुळ्ळिन् वेन्तन्-भयंकर पक्षीराज (गरुड़); वरुकिलन्-न आयगा; मरुन्तु नल्क-औषध देने; कॊऱ्ऱ मारुति-विजयी मारुति; अङ्कु इल्लै-वहाँ नहीं; उयिर् कॊटुक्कर् पालार्-उन्हें जीवन दिला देंगे; यार्-कौन। २८५३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बीती बातें जो न जानते हैं वे भरत और शत्रुघ्न बातें अब जान लें और आकर लड़ें भी, तो वह इन्द्रजित् विजयदायी नागपाश चलाकर मार गिरा देगा। उस हालत में परंतप पक्षीराज गरुड़ नहीं आयगा ! न मारुति ही वहाँ है जो ओषधि ला दे। उन्हें जीवन दिलाएगा कौन ? । २८५३

माहमा नहरञ् जार वल्लैयिन् वयिरत् तोळाय्
एहुवा नुबाय मुण्डे लियम्बुदि निन्ऱ वॅल्लाम्
शाहमऱ् ऱिलङ्गैप् पोरुन् दविर्हवच् चऴक्कन् कण्गळ्
काहमुण् डदऱ्पिन् मीण्डु मुडिप्पनॅन् करुत्तै यॅन्ऱान् 2854

वयिरम् तोळाय्–वज्रस्कंध; माक मा–बहुत बड़े; नकरम्–नगर (अयोध्या) को; वल्लैयिन् चार–जल्दी पहुँचने के लिए; एकुवान्–जाने का; उपायम् उण्टेल्–उपाय हो तो; इयम्पुति–कहो; निन्ऱ ॲल्लाम्–बाक़ी जो है वह सब; चाक–मिट जाय; इलङ्कै पोरुम्–लंका का युद्ध भी; तविर्क–रुक जाय; अ चऴक्कन्–उस दुष्ट की; कण्कळ्–आँखों को; काकम् उण्टतऱ् पिन्–कौओं के खाने के बाद; मीण्टु–लौट आकर; ॲन् करुत्तै ॲल्लाम्–अपना सारा सोचा; मुटिप्पन्–पूरा कर दूंगा। २८५४

वज्रस्कंध ! उस बड़े नगर अयोध्या जल्दी जाने का कोई उपाय हो तो कहो। इधर जो बचा है वह मर जाय तो जाय ! लंका का युद्ध भी टले ! वहाँ उस दुष्ट की आँखों को कौए खा जायँ, फिर इधर लौट आऊँगा और अपना मनोरथ पूरा कर दूँगा। २८५४

अव्विडत् तिळव लैय परदनै यमरिऱ् ऱाक्क
ॲव्विडऱ् कुरियान् पोन विन्दिर शित्ते यन्ऱु
तॅव्विडत् तमैयिन् मुम्मै युलहमुन् दीन्द ऱावो
वॅव्विडर्क् कडलिन् वैहल् केळॅन विळम्ब लुऱ्ऱान् 2855

अव् विटत्तु–तब; इळवल्–लक्ष्मण; ऐय–स्वामी; परतनै अमरिल् ताक्क–भरत का युद्ध में सामना करने; पोन इन्तिरचित्तु–जो गया वह इन्द्रजित्; ॲव्विटऱ्कु–बाण चलाने के लिए; उरियान्ने अन्ऱु–योग्य (समर्थ) है ही नहीं; तॅव् इटत्तु–(वह भारत) लड़ने में; अमैयिन्–लग जाय तो; मुम्मै उलकमुम्–तीनों विध लोक; तीन्तु–जलकर; अऱावो–मिटेंगे नहीं क्या; वॅम्मै–संतापक; इटर् कटलिन् वैकल्–संकट-सागर में मत पड़ें; केळ्–सुनें; ॲन–कहकर; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। २८५५

तब लघुराज ने श्रीराम से कहा कि प्रभु ! भरत को मारने जो अयोध्या गया है, वह उन पर बाण चलाने योग्य है ही नहीं। भरत लड़ने लगें तो क्या तीनों लोक जलकर नहीं मिटेंगे ? आप कठोर दुःख-सागर में मग्न न हों। मेरी बातें सुनिए। वह आगे यों बोला। २८५५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तीक्कॊण्ड वञ्जन् वीशत् तिशैमुहन् पाशन् दीण्डि
वीक्कुण्डु वीळ यान्नो परदन्नम् वॆय्य कूऱ्ऱैक्
कूय्क्कॊण्डु कुत्तुण् डन्नान् कुलत्तॊडु निलत्त नादल्
पोय्क्कण्डु कोडि यन्ऱे यंन्ऱनन् पुळुङ्गु हिन्ऱान् 2856

पुळुङ्कुकिन्ऱान्–विक्षुब्ध (लक्ष्मण) ने; ती कॊण्ट–बुराई से भरे; वञ्चन्–वंचक के; तिचै मुकन् पाचम्–ब्रह्मास्त्र (पाश); वीच–चलाने पर; तीण्टि–मुझे ग्रसकर; वीक्कुण्टु वीळ–बाँधने पर गिरने के लिए; परतनुम् यान्नो–क्या भरत भी मैं (लक्ष्मण) हैं; वॆय्य कूऱ्ऱै–भयंकर मृत्यु को; कूय्क्कॊण्टु–बुला लेकर; कुत्तुण्टु–उससे आहत होकर; अन्नान्–वह (इन्द्रजित्); कुलत्तॊटु–परिवार के साथ; निलत्तन् आतल्–धराशायी बना रहेगा वह; पोय्–आप ही जाकर; कण्टु कॊटि–देख लें; ऎन्ऱनन्–कहा। २८५६

व्याकुलमन लक्ष्मण ने कहा कि क्या भरत भी 'मैं' (लक्ष्मण) हैं कि नृशंस वंचक राक्षस ब्रह्मास्त्र चलाए और वे बद्ध होकर गिर जायँ ? इसके विपरीत उनसे आहत होकर इन्द्रजित् यम की दुहाई देता हुआ अपने परिवारों के साथ धराशायी होगा और आप स्वयं जाकर उसे देखेंगे। २८५६

अक्कणत् तनुम निन्ऱा नैयवॆन् ऱोळि नाहक्
कैत्तुणैत् तलत्ते याह वेऱुदिर् काऱ्ऱुन् दाळ
विक्कणत् तयोत्तिमूदू रॆयदुवॆ निडमुण् डॆन्निल्
तिक्कनैत् तिनिलुञ्जॆल्वॆ नियाने पोय्प् पहैयुन् दीर्वॆन् 2857

अ कणत्तु–उस क्षण; निन्ऱान्–वहाँ स्थित; अनुमन्–हनुमान; ऐय–स्वामी; ऎन् तोळिन् आक–मेरे कंधे पर या; कै तलत्तिन् आक–करतल पर; एऱुतिर्–चढ़ जायँ; काऱ्ऱुम् ताळ–पवन भी पिछड़ जाय ऐसा; अयोत्ति मूतूर्–अयोध्या की पुरानी नगरी; इ कणत्तु–इसी क्षण में; ऎय्तुवॆन्–पहुँचूँगा; इटम् उण्टु ऎन्निल्–मौक़ा रहा तो; तिक्कु अनैत्तिनिलुम्–सारी दिशाओं में; चॆल्वॆन्–जाऊँगा; याने पोय्–मैं खुद जाकर; पकैयुम् तीर्वॆन्–शत्रु को मिटा दूँगा। २८५७

तब हनुमान ने, जो वहाँ खड़ा रहा, कहा कि प्रभु ! आप दोनों चाहें तो मेरे दोनों कंधों पर या करतलों पर चढ़ बैठिए। मैं पवन से भी तेज़ी से इसी क्षण अयोध्या ले चलूँगा। आवश्यकता पड़े तो सारी दिशाओं में जाऊँगा। मैं अकेले जाकर शत्रु का संहार कर मिटा दूँगा। २८५७

कॊल्लवन् दानै नीदि कूरिनॆन् विलक्किक् कॊळ्वान्
शॊल्लवुञ् जॊल्लि निन्ऱेन् कॊन्ऱपिन् ऱुन्ब मॆन्नै
वॆल्लवुन् दरैयिन् वीळ्वुर् ऱुणर्न्दिलॆन् विरैन्दु पोनान्
इल्लैयॆन् ऱुळदेर् ऱीयोन् पिळैक्कुमो विळुक्क मुर्ऱेन् 2858

कॊल्ल वन्तानै–मारने आये उसे; विलक्कि–रोककर; कॊळ्वान्–अपने पक्ष

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में करने के लिए; नीति कूऱितॆन्-न्याय-वाद किया; चॊल्लवुम्-कहने योग्य बातें; चॊल्लि निन्ऱेन्-कहता रहा; कॊन्ऱपिन्-उसके मारने के बाद; तुन्पम् ऍन्ऩै वॆल्लवुम्-संताप के मुझे अपने वश में कर लेने से; तरैयिन् वीऴ्वुऱ्ऱु-धरती पर गिरकर; उणर्न्तिलॆन्-कुछ समझ नहीं पाया; विरैन्तु पोऩान्-सवेग चला गया; इऴुक्कम् उऱ्ऱेन्-चूक गया; इल्लै ऍन्ऱु उळतेल्-ऐसा नहीं रहा तो; तीयोन् पिऴैक्कुमो-दुष्ट जिएगा क्या। २८५८

मैंने सीताजी का वध करने जो आया उसे अपनी ओर कर लेने के विचार से उसे नीति की बातें बतायीं। हितोपदेश करता खड़ा रह गया। सीताजी के वध के बाद मैं दुःख से अभिभूत हो गया और भूमि पर गिरकर बेसुध हो गया। तब तक वह तेज़ चला गया। मैं चूक गया। नहीं तो दुष्ट बच पायगा क्या ?। २८५८

मनत्तिन्मुन् शॆल्लु मानम् बोयदु वऴिय दाह
निनैप्पिन्मु नयोत्यि यॆय्दि वरुनॆऱि पार्त्तु निऱ्पॆन्
इनिच्चिल ताऴ्प्प दॆन्ऩे येऱुदि रिरण्डु तोळुम्
बुनत्तुळाय् मालै मार्बीर् पुट्पहम् बोदन् मुन्नन् 2859

पुनम् तुळाय्-बाग़ में उत्पन्न तुलसी की; मालै मार्पीर्-माला से अलंकृत वक्ष वाले; मनत्तिन् मुन्-मन से भी तीव्रगति से; चॆल्लुम् मानम्-जानेवाले पुष्पकयान के; पोयतु-जाने के; वऴियतु आक-मार्ग से; निनैप्पिन् मुन्-सोचने के पहले; अयोत्ति अय्ति-अयोध्या पहुँचकर; वरुम् नॆऱि-उसके आने की राह; पार्त्तु-देखता; निऱ्पॆन्-खड़ा रहूँगा; इनि-अब; चिल-कुछ; ताऴ्प्पतु ऍन्ऩे-बिलम्ब करना क्यों; पुट्पकम् पोतल् मुन्नम्-पुष्पक के जाने से पहले; इरण्टु तोळुम्-दोनों कंधों पर (दोनों); एऱुतिर्-चढ़ जायें। २८५९

बाग़ में उत्पन्न तुलसी की माला-धारी ! मैं उसी मार्ग में सोचने के पहले ही अयोध्या जाऊँगा, जिससे मन की गति से भी तेज़ पुष्पक में इन्द्रजित् गया है और उसके ताक में खड़ा रहूँ। फिर कुछ विलम्ब क्यों ? पुष्पक के जाने से पहले (जाने हेतु) आप दोनों मेरे कंधों पर चढ़ जाइए। २८५९

एऱुदि रॆन्ऩ वीर रॆऴुदलु मिऱैञ्जि यीण्डुक्
कूऱुव दुळदु तुन्बङ् गोळुऱुक् कुलुङ्गि युळ्ळम्
तेऱुव दरिदु शॆय्है मयङ्गिनन् ऱिहैत्तु निन्ऱेन्
आऱिन नदनै येय मायमॆन् ऱुयिर्क्किन् ऱेनाल् 2860

एऱुतिर् ऍन्ऩ-सवार हों, कहने पर; वीरर् ऍऴुतलुम्-जब (दोनों) वीर उठे तब; इऱैञ्चि-विनय करके; ईण्टु-अब; कूऱुवतु उळतु-कहना है; तुन्पम् कोळ् उऱ-दुःख के ग्रसने से; कुलुङ्कि-व्यथित होकर; उळ्ळम् तेऱुवतु-सुलझना; अरितु-कठिन है; चॆय्क मयङ्किनन्-कर्तव्यविमूढ़ हो; तिकैत्तु निन्ऱेन्-भ्रमित खड़ा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रह गया; ऐय–नाथ; अतनै आऱितन्–उस स्थिति से शान्त हुआ; मायम् ऍन्ऱु–माया कहकर; अयिर्क्किन्ऱेन्–संशय करता हूँ। २८६०

जब हनुमान ने कहा कि चढ़िए, तो दोनों तैयार हो गये। तब विभीषण ने विनय के साथ निवेदन किया कि यहाँ कुछ कहना है! दुःख हावी आ गया था। उसके बुरे प्रभाव में सुलझा विचार रखना कठिन हो गया इसलिए भ्रमित खड़ा रह गया। अब उस स्थिति से स्वस्थिति में आ गया हूँ। अब मुझे संशय हो रहा है कि इन्द्रजित् का वह काम माया है। २८६०

पत्तिनि तन्नैत् तीण्डिप् पादहन् पडुत्त पोदु
मुत्तिऱत् तुलहुम् वॅन्दु शाम्बराय् मुडियु मन्ऱे
अत्तिऱ मान देनु मयोत्तिमेऱ् पोन तन्मै
शित्तिर मिदनै यॅल्लान् दॅरियलाऱ् जिऱिदु पोऴ्दिन् 2861

पत्तिनि तन्नै–पतिव्रता पत्नी को; तीण्टि–(हाथ से) स्पर्श करके; पातकन्–पापी इन्द्रजित् ने; पटुत्त पोतु–जब मारा तब; मु तिऱत्तु उलकुम्–तीनों विध लोक; वॅन्तु चाम्पराय् मुटियुम् अन्ऱे–जलकर राख बन जायेंगे न; अ तिऱम् आनतेनुम्–अगर बही हुआ तो भी; अयोत्ति मेल् पोन तन्मै–अयोध्या पर जाने का हाल; चित्तिरम्–चित्र (कल्पना, झूठ) है; इतनै ऍल्लाम्–यह सब; चिऱितु पोऴ्तिन्–कुछ ही देर में; तॅरियल् आम्–जानना हो सकेगा। २८६१

सीताजी पतिव्रता पत्नी हैं। उनको पातक इन्द्रजित् मारता तो तीनों लोक जलकर राख बनता। उसे संभव भी माना जाय पर अयोध्या जाने की बात बिलकुल माया है! यह सब हम कुछ ही देर में परखकर जान लेंगे। २८६१

इमैयिडै याह यान्पो येन्दिऴै यिरुक्कै यॅय्दि
अमैवुऱ नोक्कि युऱ्ऱ दऱिन्दुवन् दऱेन्द पिन्नर्च्
चमैवदु शॅय्व दॅन्ऱु वीडणन् विळम्बत् तक्क
दमैहवॅन् ऱिरामन् शॊन्ना नन्दरत् तवनुम् शॅन्ऱान् 2862

इमै इटै आक–क्षण भर में; यान्–मैं; एन्तिऴै–उत्कृष्ट आभरणधारिणी (सीता) के; इरुक्कै पोय् ऍय्ति–स्थान जा पहुँचकर; अमैवु उऱ–सावधानी से; नोक्कि–देखकर; उऱ्ऱतु–घटी बात; अऱिन्तु वन्तु–जान आकर; अऱेन्त पिन्नर्–कहने के बाद; चमैवतु–उचित जो होगा वह; चॅय्वतु ऍन्ऱु–करें, ऐसा; वीटणन् विळम्प–विभीषण के कहने पर; इरामन्–श्रीराम ने; तक्कतु–योग्य है; अमैक–करो; ऍन्ऱान्–कहा; अवनुम्–वह भी; अन्तरत्तु चॅन्ऱान्–आकाश में गया। २८६२

क्षण भर में मैं उत्कृष्ट आभरणालंकृता सीताजी के स्थान पर जाकर सावधानी से देख-परख आऊँगा। मेरे लौटने के बाद निर्णय हो कि क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करना है। विभीषण के ऐसा कहने पर श्रीराम ने कहा कि ठीक है; वही हो। विभीषण अंतरिक्ष में उठकर चला। २८६२

वण्डिऩ दुरुवङ् गॊण्डाऩ् माऩवऩ् मऩत्तिऱ् पोऩाऩ्
तण्डलै यिरुक्कै तऩ्ऩैप् पॊरुक्कॆऩच् चाऱ्ऱु ताऩे
कण्डऩ ऩॆऩ्ऩ मऩ्ऩो कण्गळाऱ् करुत्ता लावि
उण्डिलै यॆऩ्ऩच् चॆय्द वोविय मॊक्किऩ् ऱाळै 2863

वण्टितु उरुवम् कॊण्टाऩ्–भ्रमर का रूप लिया; माऩवऩ्–सम्मानित श्रीराम के; मऩत्तिऩ्–मन की भाँति; पोऩाऩ्–गया; तण्टलै–अशोक वन में; इरुक्कै तऩ्ऩै–(सीताजी के) रहने के स्थान को; पॊरुक्कॆऩ–झट; चाऱ्ऱु–पहुँचकर; आवि उण्टु–प्राण हैं; इलै ऎऩ्ऩ–नहीं ऐसा; चॆय्त–रचित; ओवियम् ऒक्किऩ्ऱाळै–चित्र-सम रहनेवाली को; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; करुत्ताल्–मन से भी; ताऩे–स्वयं; कण्टऩऩ्–देखा; ऎऩ्प–कहते हैं। २८६३

भ्रमर के रूप में विभीषण श्रीराम के मन की उतनी तेज़ गति से अशोक वन में झट गया। उसने अपनी आँखों से सीताजी को देखा जिनकी स्थिति यह संशय पैदा कर रही थी कि वह जीवित हैं या प्राण नहीं हैं ? और मन से भी परखा। ऐसा विद्वान कहते हैं। २८६३

तीर्प्पदु तुऩ्बम् याऩॆऩ् ऩुयिरॊडॆऩ् ऱुणर्न्द शिन्दै
पेर्प्पऩ विऩ्शॊ लाळत् तिरिशडै पेशप् पेर्न्दाळ्
कार्प्पॆरु मेहम् वन्दु कडैयुहङ् गलन्द दऩ्ऩ
आर्प्पॊलि यमुद माह वारुयि राऱ्ऱि ऩाळै 2864

याऩ्–मेरा; ऎऩ् तुऩ्पम् तीर्प्पतु–अपना दुःख मिटाना; उयिरॊटु–अपनी जान के साथ ही; ऎऩ्ऱु उणर्न्त–ऐसा समझनेवाले; चिन्तै–मन को; पेर्प्पऩ–बदल सकनेवाले; इऩ् चॊलाळ्–मधुर वचन की भाषिणी; अ तिरिचटै–उस त्रिजटा के; पेच–कहने से; पेर्न्ताळ्–अपना दुःख छोड़कर; कटै युकम्–युगान्त में; कार् पॆरु मेकम् वन्तु–काला बड़ा मेघ आकर; कलन्ततु अऩ्ऩ–मिल गया हो ऐसा; आर्प्पु ऒलि–नर्दन-स्वर के; अमुतमाक–अमृत बनते; आरुयिर् आऱ्ऱिऩाळै–अपने प्राणों को शांति देनेवाली को (देखा विभीषण ने)। २८६४

वे यही सोचकर दुःखी हो रही थीं कि मैं अपने दुःख से निवृत्ति अपनी मृत्यु के साथ ही पाऊँगी। उनके दुःख को मधुरभाषिणी त्रिजटा ने अपने हित-वचनों से बदल दिया। जब सीताजी उनके वचन से आश्वासन पाकर थोड़ा संभलीं तो युगांतकालीन बड़े मेघों के गर्जन के समान वानरों का घोष सुना। वह नर्दन उन्हें अमृत ही-सा बना। तभी वह अपने मन को शांत कर पायीं। उन्हें उस स्थिति में विभीषण ने देखा। २८६४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वज्जनै यॆन्ब दुन्नि वानुय रुवहै वैहुम्
नॆञ्जिन नाहि युळ्ळन् दळ्ळुर लॊळिन्दु निन्ऱान्
वॆञ्जिलै मैन्दन् पोना निहुम्बिलै वेळ्वि यानॆन्
ऱॆञ्जलि लरक्कर् शेनै यॆळुन्दॆळुन् देहक् कण्डान् 2865

वॆम् चिलै मैन्तन्–भयंकर धनुर्धर वीर इन्द्रजित्; निकुम्पिलै वेळ्वियान्–निकुंभिला यज्ञ-कार्य पर; पोनान्–गया; ऎन्ऱु–ऐसा अनुमान कर; ऎञ्चल् इल् अरक्कर् चेनै–अक्षय राक्षस-सेना; ऎळुन्तु ऎळुन्तु–उठ-उठकर; एक–जाती; कण्टान्–देखा; वञ्चनै ऎन्पतु–वंचक काम ऐसा; उन्नि–सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुऱल्–चित्त का डाँवा-डोल होना; ऒळिन्तु–त्यागकर; वान् उयर्–आकाश तक ऊँचा; उवकै–आनन्द; वैकुम्–पूरित; नॆञ्चिनन् आकि–मन वाला बनकर; निन्ऱान्–खड़ा रहा। २८६५

विभीषण ताड़ गया कि भयंकर धनुर्धर इन्द्रजित् निकुंभिला में याग करने गया है। (निकुंभिला एक पवित्र स्थान है। जहाँ एक मंदिर भी था।) उसने देखा कि अक्षय सेना के भाग भी उस तरफ़ जा रहे हैं। तब निश्चय हो गया कि सब माया था। उसका मन संशयरहित हो गया और "आकाश-जितने ऊँचे" संतोष से भर गया। वह उसी मुदित स्थिति में खड़ा रहा। २८६५

वेळ्विक्कु वेण्डर् पाल कलप्पैयुम् विऱहु नॆय्युम्
आळ्विक्कुन् दाळ्वि लॆन्नुम् वानवर् मऱुक्कङ् गण्डान्
शूळ्वित्त वण्ण मीदो नन्ऱॆनत् तुणिवु कॊण्डान्
दाळ्वित्त मुडियन् वीरन् ऱामरैच् चरणन् दाळ्न्दान् 2866

वेळ्विक्कु–यज्ञ के लिए; वेण्टल् पाल–आवश्यक सामग्री; कलप्पैयुम्–हल; विऱकु–ईंधन; नॆय्युम्–और घी; ताळ्विल्–हमको दुर्गति में; आळ्विक्कुम्–डालेगी; ऎन्नुम्–कहनेवाले; वानवर्–देवों की; मऱुक्कम्–बेचैनी; कण्टान्–(विभीषण ने) देखी; चूळ्वित्त–वंचना से सम्पन्न; वण्णम्–हाल; ईतो–यही; नन्ऱु–अच्छा; ऎन–ऐसा; तुणिवु कॊण्टान्–मन में निर्णय कर लिया; वीरन्–श्रीवीरराघव के; तामरै चरणम्–कमल-चरणों में; ताळ्वित्त–झुके; मुटियन्–सिरवाला होकर; ताळ्न्तान्–प्रणाम किया। २८६६

देवलोग यह कहते हुए अति व्याकुलता दिखा रहे थे कि ये याग के लिए आवश्यक हल, ईंधन, घी आदि सामग्रियाँ हमें गर्त में मग्न करा देंगी। विभीषण ने आप ही आप कहा कि इन्द्रजित् की माया का हाल बड़ा अच्छा रहा। वह मन में कोई निर्णय करके वीर श्रीराम के चरण-कमलों में जाकर विनत हुआ। २८६६

इरुन्दन डेवि यानै यॆदिर्न्दन नॆन्ग णार
अरुन्ददि कऱ्पि नाळुक् कळिवुण्डो वरक्क तम्मै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वरुन्दिड मायञ् जॅय्दु निहुम्बिलै मरुङ्गु पुक्कात्
मुरुङ्गऴल् वेळ्वि मुऱ्ऱि मुदलऱ मुडिक्क मूण्डान् 2867

तेवि इरुन्ततळ्–देवी विद्यमान थीं; यातॅ–मैंने ही; ऍऩ् कण् आर–अपनी आँखों से भरपूर; ऍतिर्न्ततऩ्–देखा; अरुन्तति–अरुन्धती-सी; कऱ्पिताळुक्कु–पातिव्रत्य वाली को; अऴिवु उण्टो–नाश होगा क्या; अरक्कऩ्–राक्षस; नम्मै वरुन्तिट–हमें दुःखी करने; मायम् चॅय्तु–वंचना करके; मुरुङ्कु अऴल्–घनी आग में; वेळ्वि मुऱ्ऱि–यज्ञ सम्पन्न करके; मुतल् अऱ मुटिक्क–हमें समूल समाप्त करने पर; मूण्टान्–तुला है; निकुम्पिलै मरुङ्कु–निकुंभिला के पास; पुक्कात्–गया। २८६७

विभीषण ने श्रीराम से निवेदन किया कि मैंने अपनी आँखों को भरपूर तृप्ति देते हुए देख लिया कि देवी हैं। अरुन्धती-सी पतिव्रता का भी अंत हो सकता है क्या ? राक्षस इन्द्रजित् माया में हमें दुःखी बनाकर पक्की आग में याग संपन्न करके हमें निर्मूल करने का निर्णय लेकर निकुंभिला के पास गया है। २८६७

ऍऩ्ऱलु मुलह मेऴु मेऴुमात् तीवु मॅल्लै
ऒऩ्ऱिय कडल्ह ळेऴु मॊरुङ्गॅऴुन् दार्क् कुमोवै
अऩ्ऱॅऩ वाहु मॅऩ्ऩ वमररु मयिर्क्क वार्त्तुक्
कुऩ्ऱिऩ मिडियत् तुळ्ळि याडिऩ कुरक्किऩ् कूट्टम् 2868

ऍऩ्ऱलुम्–कहते ही; कुरक्किऩ् कूट्टम्–वानर-दल; उलकम् एऴुम्–सातों लोक; एऴु मा तीवुम्–सातों बड़े द्वीप; ऍल्लै ऒऩ्ऱिय–जिनकी सीमाएँ एक-दूसरी से मिली हैं वे; कटल्कळ् एऴुम्–सातों समुद्र; ऒरुङ्कु ऍऴुन्तु–एक साथ उठकर; आर्क्कुम्–जो शोर मचाये; अऩ्ऱु आकुम् ऍऩ्ऩ–उस दिन का है, यह कहकर; अमररुम् अयिर्क्क–देव भी भ्रम करें ऐसा; आर्त्तु–घोष उठाकर; कुऩ्ऱु इऩम्–पर्वतकुल; इटिय–टूट जायँ ऐसा; तुळ्ळि आटिऩ–उछले, कूदे और नाचे। २८६८

विभीषण के यह कहते ही वानरों ने ऐसा नर्दन किया कि देव भी यह संशय करने लगे कि सातों लोक, सातों द्वीप और सातों समुद्र, जिनकी सीमाएँ परस्पर मिली हुई थीं, एक साथ मिल उठकर जब गर्जन करते हैं, उस दिन का यह शोर है ! वे शोर मचाते हुए उछले-कूदे और नाचे जिससे पर्वत-कुल ही टूट गये। २८६८

26. निहुम्बिलै याहप् पडलम् (निकुंभिला-याग पटल)

वीरऩु मैयऩ् दीर्न्दाऩ् वीडणऩ् ऱऩ्ऩै मॅय्यो
डार्वमु मुयिरु मॊऩ्ऱ वळुन्दुऱत् तळ्वि यॅय
तीर्वदु पॊरुळो तुऩ्बम् नीयुळै तॅय्व मुण्डु
मारुदि युळऩाञ् जॅय्द तवमुण्डु वलियु मुण्डाल् 2869

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बीरतुम्–वीर श्रीराघव भी; ऐयम् तीर्न्तान्–संशयमुक्त हुए; बीटणन् तन्तै–विभीषण को; मॅय्योटु–अपने शरीर के साथ; आर्वमुम् उयिरुम् ऑत्तुर–प्रेम और प्राण मिल जायँ, ऐसा; अळुन्तुर तळुवि–गाढ़ालिंगन करके; ऐय–पुरुष-श्रेष्ठ; नी उळ–तुम हो; तॅय्वम् उण्टु–ईश्वर है; मारुति उळन्–मारुति है; नाम् चॅय्त–हमारा किया हुआ; तवम् उण्टु–तप है; वलियुम् उण्टु–और बल भी है; तुन्पम् तीर्वतु–दुःख निवारना; पॉरुळो–कोई (कठिन) चीज़ है क्या। २८६९

पराक्रमी श्रीराम संशयमुक्त हुए। विभीषण को अपने शरीर के साथ प्रेम और प्राणों को एक करते हुए गाढ़ालिंगन करके श्रीराम ने कहा कि हे पुरुषश्रेष्ठ ! तुम हो; ईश्वर हैं। मारुति है और हमारी की हुई तपस्या है। फिर दुःख का दूर होना कोई बड़ी चीज़ है क्या ? । २८६९

ऍन्रलु मिरैञ्जि याह मुडियुमे लियारुम् वॅल्लार्
वॅन्रियु मरक्कर् माडे विडैयरु ळिळव लोडुम्
शॅन्रव नावियुण्डु वेळ्वियुञ् जिदैप्पॅ नॅन्रान्
नन्रदु पुरिदि रॅन्रु नायहन् नविल्व दान्तान् 2870

ऍन्रलुम्–कहने पर; इरैञ्चि–विनय करके; याकम् मुटियुमेल्–याग पूरा होगा तो; यारुम्–और कोई भी; वॅल्लार्–नहीं जीतेंगे; अरक्कर् माटे–राक्षसों के पक्ष में ही; वॅन्रियुम्–विजय होगी; इळवलोटुम् चॅन्रु–लघुराज के साथ जाकर; अवन् आवि उण्टु–उसके प्राण हरकर; वेळ्वियुम् चितैप्पॅन्–यज्ञ का भी नाश करा दूंगा; विटै अरुळ्–आज्ञा दें; ऍन्रान्–निवेदन किया; नायकन्–नायक ने भी; नन्रु–अच्छा; अतु पुरितिर्–वह करो; ऍन्रु–ऐसा; नविल्वतु आन्तान्–कहा। २८७०

श्रीराम का वचन सुनकर विभीषण ने निवेदन किया कि अगर इन्द्रजित् यज्ञ पूरा कर देगा तो कोई भी उसे जीत नहीं सकेंगे। फिर विजय राक्षसों की ही होगी। इसलिए लघुराज को लेकर जाऊँ; उसके प्राण निकाल दूं और उसके यज्ञ को नष्ट कर दूं। आज्ञा दें। नायक ने कृपा-वचन कहा कि अच्छा है। जाओ वही कर आओ। २८७०

तम्बियैत् तळुवि यैयन् तामरैत् तविशिन् मेलान्
वॅम्बडै तॉडुक्कु मायिन् विलक्कुम दन्रि वीर
अम्बुनी तुरप्पा यल्लै यन्नैयदु तुरन्द कालै
उम्बरु मुलहु मॅल्लाम् विळियुमः(ह्) दॉळिदि यॅन्रान् 2871

ऐयन्–आर्य श्रीराम ने; तम्पियै तळुवि–छोटे भाई का आलिंगन करके; वीर–वीर; तामरै तविचिन् मेलान्–कमलासन ब्रह्मा का; वॅम् पटै–भयंकर अस्त्र; तॉटुक्कुमायिन्–अगर वह चलायगा तो; विलक्कुम् अतु अन्रि–निवारण करना, उसको छोड़; अम्पु–वह अस्त्र; नी–तुम; तुरप्पाय् अल्लै–मत छोड़ो; अन्नैयतु–वह अस्त्र; तुरन्त कालै–छोड़ते समय; उम्परुम्–देव; उलकुम् ऍल्लाम्–और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सारे लोक; विळियुम्–विनष्ट हो जायँगे; अ.'.तु–वह काम; ऒऴिति–छोड़ दो (मत करो)। २८७१

फिर श्रीराम ने अपने भाई को गले लगाकर समझाया कि हे वीर ! कमलासन ब्रह्मा का अस्त्र बहुत ही प्रतापी अस्त्र है। वह छोड़े तो उसको रोकने के अर्थ तुम चलाओ। नहीं तो तुम स्वयं मत चलाओ। क्योंकि वह छूटेगा तो देव, लोक सभी मिट जायँगे। वह कार्य रहने दो। २८७१

मुक्कणान् पडैयु माऴि मुदलवन् पडैयु मुन्निन्
ऱोक्कवे विडुमे विट्टा लवऱ्ऱैयुम् मवऱ्ऱि नोयत्
तक्कवा ऱियऱ्ऱि मऱ्ऱुन् शिलैवलित् तरुक्कि नाले
पुक्कव नावि कॊण्डु पोदुदि पुहऴिन् मिक्कोय् 2872

पुकऴिन् मिक्कोय्–यशश्रेष्ठ; मुक्कणान् पटैयुम्–त्रिनेत्र का पाशुपतास्त्र भी; आऴि मुतलवन्–चक्रधारी आदिदेव; पटैयुम्–नारायण का अस्त्र भी; मुन् निन्ऱु–तुम्हारे सामने खड़ा होकर; ऒक्कवे विटुमे–एक साथ चलायगा; विट्टाल्–चलाए तो; अवऱ्ऱैयुम्–उन्हें भी; ओय तक्कवाऱु–शान्त करने; अवऱ्ऱिन् इयऱ्ऱि–उनका प्रयोग करो; मऱ्ऱु–और; उन् चिलै वलि–तुम्हारे धनु के बल के; तरुक्कितालै–गौरव से; पुक्कु–(युद्ध में) प्रवेश करके; अवन् आवि कॊण्टु–उसके प्राण (हर) लेकर; पोतुति–लौट आओ। २८७२

वह त्रिनेत्र-पाशुपतास्त्र और चक्रधारी-नारायणास्त्र एक साथ छोड़ेगा। तब तुम भी उन्हें विफल करने के लिए उन्हें चलाओ। फिर भी तुम भी अपना बल-पराक्रम दिखाकर युद्ध करो और उसको मारकर लौट आओ। २८७२

वल्लन माय विञ्जै वहुत्तन वऱिन्दु माळक्
कल्लुदि तरुम मॆन्नुङ् गण्णहन् करुत्तैक् कण्डु
पल्पॆरुम् बोरुञ् जॆय्दु वरुन्दिन वऱ्ऱुम् बार्त्तुक्
कॊल्लुदि यमरर् तङ्गळ् कूऱ्ऱिनैक् कूऱ्ऱु मॊप्पाय् 2873

कूऱ्ऱुम् ऒप्पाय्–यम-तुल्य; अमरर् तङ्कळ्–देवों के; कूऱ्ऱिनै–यम (रूपी इन्द्रजित्) को; माय विञ्चै वल्लन वकुत्तन्–उसके माया के बल से रचित; अऱिन्तु–(कार्य) जानकर; माळ–उन्हें मिटाने के लिए; कल्लुति–उन्हें उखाड़ दो; तरुमम् ऎन्नुम्–धर्म के; कण् अकन्–विशाल (गम्भीर); करुत्तै कण्टु–तथ्यों को जानकर; पल् पॆरुम् पोरुम्–अनेक बड़े युद्ध भी; चॆय्तु–करके; वरुन्तिन–अऱ्ऱुम्–जब वह थका है, वह मौक़ा; पार्त्तु–देखकर; कॊल्लुति–मार दो। २८७३

हे यमतुल्य वीर ! देवमारक इन्द्रजित् माया के बल से कृत कार्यों के प्रति सावधानी से व्यवहार करो। उनको मिटाते हुए उखाड़ दो। धर्म

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विस्तृत क्षेत्र को ध्यान में रखो और तदनुसार अनेक विविध बड़े युद्ध करो। जब वह थका हो रहता है, तब मौक़ा पाकर उसका हनन कर दो। २८७३

पदैत्तवन् वॅम्मै योडिप् पल्पॅरुम् बहळि मारि
बिदैप्पन विदैया निन्रु विलक्किनु मॅलिवु मिक्काल्
उदैप्पन शिलैयिन् वाळि मरुमत्तैक् करुदि योट्टि
वदैत्तॊळिल् पुरिदि शाब नूनॅरि मरप्पि लादाय् 2874

चापनूल् नॅरि–धनुशास्त्र-मार्ग; मरप्पिलाताय्–अविस्मरणकारी; अवन्–उसके; पतैत्तु–उतावली करके; वॅम्मै ओटि–क्रोध में बढ़कर; पल् पॅरुम्–अनेक अधिक; पकळि मारि–शर-वर्षा; वितैप्पन–जो प्रेरित होंगे उन्हें; वितैया–तुम्हारे ऊपर न लगे, ऐसा; निन्रु विलक्किनुम्–रहकर निवारण करोगे तो भी; मॅलिवु मिक्काल्–निर्बलता अधिक हो तो; चिलैयिन् उतैप्पन–तुम्हारे धनु (जिनको) निकालें; वाळि–उन शरों को; मरुमत्तै करुति–मर्मस्थल देखकर; ओट्टि–चलाकर; वतै तॊळिल् पुरिति–वध-कार्य करो। २८७४

हे धनुशास्त्र के अविस्मरणकारी! इन्द्रजित् गड़बड़ाकर व क्रुद्ध होकर तुम्हारे चलाये शरों की वर्षा से बचने का प्रयास करेगा। तो भी मौक़े की ताक में रहो और जब उसकी थकावट अधिक हो रहती हो, तब तुम अपने अस्त्रों को उसके मर्म में चलाओ और वधकार्य करो। २८७४

तॊडुप्पदन् मुन्नम् वाळि तॊडुत्तवै तुरैह डोरुम्
तडुप्पन तडुत्ति यॅण्णङ् गुरिप्पिना लुणर्न्दु तक्क
कडुप्पिनु मळवि लाद कदियिनुङ् गणैहळ् काऱ्रिन्
विडुप्पन ववऱ्रै नोक्कि विडुदियाल् विरहिन् मिक्काय् 2875

विरकिन् मिक्काय्–उपायचतुर; वाळि तॊटुप्पतन् मुन्नम्–(उसके) शर लगाने से पहले; तॊटुत्तु–संधान करके; अवै–उन्हें; तुरैकळ् तोरुम्–हर मार्ग से; तटुप्पन तटुत्ति–रोकना रोक दो; अळविलात कटुप्पिनुम्–अपार वेग के साथ; काऱ्रिन् कतियिनुम्–पवनगति से; विटुप्पन कणैकळ्–प्रेरित शरों को; ऍण्णम् कुरिप्पिनाल्–चित्त-संकेत से; उणर्न्तु–जानकर; अवऱ्रै नोक्कि–उन्हें देखकर; तक्क–योग्य शर; विटुति–चलाओ। २८७५

हे उपायचतुर! वह संधान करे, उसके पूर्व ही तुम अपने धनु पर शर संधान करके उसके शरों को आवश्यक सभी मार्गों में रोक दो। वह अपार वेग के साथ पवन से भी तेज़ गति में शर चलायगा। उनको उसके मन का भाव ताड़कर देख लो और उनको रोकते हुए अपने शर प्रेरित करो। २८७५

ऍन्बन मुदलु बाय मियावैयु मियम्बि येऱ्ऱ
मुन्बनै नोक्कि यॅय मूवहै युलहुन् दानायत्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तन्पॅरुन् दन्मै तानु मऱिहिला वॉरुवन् ताङ्गुम्
वन्पॅरुञ् जिलैयो दाहुम् वाङ्गुदि वलमुङ् गॉळ्वाय् 2876

अॅन्पत मुतल्–ऐसे अन्य; उपायम् यावैयुम्–सभी उपाय; इयम्पि–बतलाकर; एऱ्ऱ–जिन्होंने स्वीकारा उन; मुन्पत्तै–बलशाली को; नोक्कि–देखकर; ऐय–तात; ईतु–यह (धनु); मूवकै उलकुम् तानाय्–स्वयं तीनों लोक बनकर; तन् पॅरुम् तन्मै–अपने बड़प्पन का हाल; तानुम् अऱिकिला–स्वयं जो नहीं जानते; ओरुवन्–वे अनुपम; तिरुमाल्–विष्णु; ताङ्कुम्–जिसे धारण करते हैं; वन् पॅरुम् चिलै आकुम्–कठोर और बड़ा धनु है; वाङ्कुति–पकड़ो; वलमुम् कॉळ्वाय्–विजय भी पा लो। २८७६

श्रीराम ने ऐसे उपाय आदि कहे। लक्ष्मण ने उन्हें हृदयस्थ कर लिया। फिर बलवान लक्ष्मण से उन्होंने कहा कि तात ! देखो यह वह बड़ा और सारयुक्त धनु है, जो विष्णु स्वयं अपने हाथ में धारण करते थे, वे विष्णु जो स्वयं तीन लोक बने रहते हैं और जो स्वयं अपना बड़प्पन नहीं जानते। लो इसे तुम। जाओ और विजयी बनकर आओ। २८७६

इच्चिलै यियऱ्कै मेनाळ् तमिऴ्मुनि यियम्बिऱ् ऱॅल्लाम्
अच्चॅनक् केट्टा यन्ऱे यायिर मौलि यण्णल्
मॅय्च्चिलै विरिञ्जन् मूट्टुम् वेळ्वियिन् वेट्टुप् पॅऱ्ऱु
कैच्चिलै यॅन्ऱु तानै कॉडुत्तनन् कवशत् तोडुम् 2877

इ चिलै इयऱ्कै–इस धनु का गुण; मेल् नाळ्–पहले; तमिऴ् मुनि–'तमिऴ-मुनि' (अगस्त्य) ने; इयम्पिऱ्ऱु अॅल्लाम्–जो विवरण दिया था वह सब; अच्चु अॅन–सच ही; केट्टाय्–तुमने सुना; अन्ऱे–न; आयिरम् मौलि अण्णल्–सहस्रशीर्ष भगवान का; मॅय् चिलै–सच्चा धनु है; विरिञ्चन् मूट्टुम् वेळ्वियिन्–ब्रह्मा द्वारा कृत यज्ञ में; वेट्टु–होम आदि करके; पॅऱ्ऱु–प्राप्त; कै चिलै–हस्तयोग्य धनु है; अॅन्ऱु–कहकर; कवचत्तोटुम्–कवच के साथ; तानै कॉटुत्तनन्–खुद दिया। २८७७

इस धनु के सम्बन्ध में 'तमिऴ ऋषि' अगस्त्य ने पहले जब सारा विवरण दिया था, तब तुमने भी सुना था न ? यह सहस्रशीर्ष श्रीविष्णु का सच्चा धनु है। यह विरंचि-रचित यज्ञ में उत्पन्न हुआ, हस्त-धारण-योग्य धनु है। यह बताकर श्रीराम ने अपने हाथ से वह धनु देकर कवच भी दिया। २८७७

आणियिव् वुलहुक कान वाऴियान् पुऱत्ति नाऱ्त्त
तूणियुङ् गॉडुत्तु मऱ्ऱु मुऱुदिहळ् पलवुञ् जोल्लित्
ताणुविन् ऱोऱ्ऱत् तानैत् तऴुविनन् तऴुव लोडुम्
शेणुयर् विशुम्बिऱ् ऱेवर् तीर्न्ददेञ् जिऱुमै यॅन्ऱार् 2878

इव् उलकुक्कु आणि आन–इस संसार की धुरी की कील के रूप में जो हैं;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आळियान्–चक्रधारी; पुऱत्तिन् आऱ्त्त–पीठ पर बँधा; तूणियुम् कॊटुत्तु–तूणीर भी देकर; मऱ्ऱुम्–और; उऱ्ऱतिकळ् पलवुम्–अनेक हितकारी उपदेश; चॊल्लि–कहकर; ताणुवित् तोऱ्ऱुत्तातै–स्थाणु-सदृश रूपवान को; तळुवितत्–गले लगा लिया; तळुवलोटुम्–आलिंगन करते ही; चेण् उयर्–बहुत ऊँचे; विचुम्पिल्–आकाश में; तेवर्–देव; ऍम् चिऱ्ऱमै–हमारी हीनता; तोर्न्ततु–दूर हुई; ऍन्ऱार्–बोले। २८७८

फिर संसार की धुरी की कील के समान विद्यमान चक्रधारी (के अवतार) श्रीराम ने अपनी पीठ से तूणीर उतारकर उसे भी दिया। फिर अनेक हितोपदेश देकर उन्होंने स्थाणुसदृश आकार वाले लक्ष्मण को गले से लगा लिया। उनको आलिंगन करता देखकर देवों ने कह लिया कि हमारी लघुता दूर हो गयी। २८७८

मङ्गलन् देवर् कूऱ वाऩव महळिर् वाळ्त्तिप्
पङ्गमि लाशि कूऱिप् पलाण्डिशै परवप् पाहत्
तिङ्गळिऩ् मौलि यण्ण ऱिरिबुरन् दीक्कच् चीऱिप्
पॊङ्गिऩ ऩॆऩ्ऩत् तोऩ्ऱिप् पॊलिन्दऩऩ् पोर्मेऱ् पोवान् 2879

पोर् मेल् पोवान्–युद्ध पर जानेवाले; तेवर् मङ्कलम् कूऱ–देवों के मंगल-वचन कहते; वाऩव मकळिर्–देवस्त्रियों के; पङ्कम् इल्–निर्दोष; आचि–आशीर्वचन; कूऱि वाळ्त्तुति–कहकर विजयकामना करके; पलाण्टियै परव–'जुग-जुग जिओ' का गान गाते; पाक तिङ्कळिऩ् मौलि–अर्धचन्द्रशेखर; अण्णल्–भगवान शिव; तिरपुरम् तीक्क–त्रिपुर मिटाने; चीऱि–क्रोध करके; पॊङ्किऩऩ् ऍऩ्ऩत–तेजी से उठे जैसे; तोऩ्ऱि–झाँकी देकर; पॊलिन्ऩऩऩ्–शोभे। २८७९

युद्ध पर लक्ष्मण जाने लगे। देवों ने मंगल-शब्द कहे। देवस्त्रियों ने अमोघ आशीर्वाद के वचन कहकर 'जुग-जुग जिओ' का गान किया। तब लक्ष्मण अर्धचन्द्रशेखर शिवजी के समान शोभे जो त्रिपुरदहन के लिए ससंभ्रम उठे हों। २८७९

मारुदि मुदल्व राय वाऩरत् तलैव रोडुम्
वीरनी शेऱि यॆऩ्ऱु विडहॊडुत् तरुळुम् वेलै
आरियऩ् कमल पाद महत्तिऩुम् बुऱत्तु माहच्
चीरिय शॆऩ्ऩि शेर्त्तुच् चॆऩ्ऱऩऩ् तरुमच् चॆल्वऩ् 2880

वीर–वीर; मारुति मुतल्वर् आय–मारुति आदि; वाऩर तलैवरोटुम्–वानर-यूथपों के साथ; नी चेऱि–तुम चलकर पहुँचो; ऍऩ्ऱु–ऐसा कहकर; विटै कॊटुत्तु–विदा देने की; अरुळुम् वेलै–जब कृपा की तब; तरुमच् चॆल्वऩ्–धर्मधनी; आरियऩ् कमल पातम्–आर्य के कमल-चरणों में; अकऩ्ऱितुम् पुऱत्तुमाक–भीतर-बाहर दोनों (करणों) से; चीरिय चॆऩ्ऩि–श्रेष्ठ सिर; चेर्त्तु–लगाकर (बाद); चॆऩ्ऱऩऩ्–निकले। २८८०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब श्रीराम ने कृपा की आज्ञा सुनायी कि तुम मारुति आदि वानरयूथपों को साथ ले युद्धभूमि की ओर कूच करो, तब धर्मधनी लक्ष्मण ने मन और शरीर से आर्य श्रीराम के कमल-चरणों में सिर नवाया। फिर रवाना हो गये। २८८०

पॊलङ्गॊण्ड लऩैय मेनिप् पुरवलऩ् पॊरुमिक् कण्णीर्
निलङ्गॊण्डु पडर निऩ्ऱु नॆञ्जऴि वाऩैत् तम्बि
वलङ्गॊण्डु वयिर वल्वि लिडङ्गॊण्डु वञ्जऩ् मेले
शलङ्गॊण्डु कडिदु शॆऩ्ऱाऩ् ऱलैहॊण्डु वरुवॆ नॆऩ्ऱे 2881

पॊलम् कॊण्टल् अऩैय–सुन्दर मेघ-सम; मेनि पुरवलऩ्–शरीर वाले प्रभु श्रीराम; पॊरुमि–दुःख से भरकर; कण्णीर्–आँसू को; निलम् कॊण्टु पटर–भूमि पर लगे फैलने देते हुए; निऩ्ऱु–खड़े रहे और; नॆञ्चु अऴिवाऩै–जो मन को घोल रहे थे, उनको; तम्पि–छोटे भाई; वलम् कॊण्टु–परिक्रमा करके; बयिर वल् विल्–वज्र-कठोर धनु; इटम् कॊण्टु–बायें हाथ में लेकर; वञ्चऩ मेले–वंचक इन्द्रजित् पर; चलम् कॊण्टु–गुस्सा ले; तलै कॊण्टु वरुवॆऩ्–सिर काट लाऊँगा; ऎऩ्ऱु–कहकर; कडिदु–शीघ्र; चॆऩ्ऱाऩ्–गये। २८८१

सुन्दर श्याम-मेघ-वर्ण श्रीराम ने विदा तो दे दी। पर वियोगपीड़ा को सह नहीं सके। उनकी आँखों से आँसू बह निकला और भूमि पर गिरकर फैला। घुलते हुए खड़े रहनेवाले उनकी छोटे भाई ने परिक्रमा की। वज्रधनु को बायें हाथ में धर लिया। वंचक पर क्रोध ले वे यह सौगंद करके निकले कि मैं उसका सिर काट लाऊँगा। २८८१

ताऩ्पिरि हिऩ्ऱि लाद तम्बिवॆङ् गडुप्पिऱ् चॆल्ला
ऊऩ्पिरि हिऩ्ऱि लाद वुयिरॆऩ मऱैद लोडुम्
वाऩ्पॆरु वेळ्वि काक्क वळर्हिऩ्ऱ परुव नाळिल्
ताऩ्पिरिन् देहक् कण्ड तयरदऩ् ऱऩ्नै यॊत्ताऩ् 2882

ताऩ् पिरिकिऩ्ऱिलात–अपने से जो कभी अलग नहीं हुआ; तम्पि–वह भाई; ऊऩ् पिरिकिऩ्ऱिलात–शरीर से अवियुक्त; उयिर् ऎऩ–प्राणों के समान; वॆम् कटुप्पिऩ्–अति वेग के साथ; चॆल्ला–जाकर; मऱैतलोडुम्–ओझल हो गया तो; वळर्किऩ्ऱ परुव नाळिल्–जब वे बढ़ रहे थे उन दिनों; वाऩ् पॆरु वेळ्वि–बहुत बड़ा यज्ञ; काक्क–रक्षित करने; ताऩ् पिरिऩ्तु एक–स्वयं जब बिछुड़ गये; कण्ट–उसका अनुभव जिन्होंने किया; तयरतऩ् तऩ्नै–उन दशरथ के; ऒत्ताऩ्–समान हुए। २८८२

श्रीराम से लक्ष्मण कभी अलग नहीं हुए थे। अब शरीर से अवियुक्त रहनेवाले प्राणों के समान जो रहे वे तेज़ी से अलग हो रहे हैं और ओझल हो गये। तब श्रीराम दशरथ की स्थिति में रहे, जिनसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम स्वयं अपनी बढ़ती आयु के पर्व में याग संरक्षणार्थ अलग गये थे। २८८२

शेनापदि येमुदल् शेवहर्ताम्, आनार्निमिर् कॉळ्ळिहो ळङ्गैयिनार्
कानार्नॅड्रि युम्मलै युङ्गळियप्, पोनार्ह णिहुम्बिलै पुक्कनराल् 2883

चेनापतिये मुतल् चेवकर्–सेनापति (नील) आदि वीर; ताम्–खुद; निमिर् कॉळ्ळि–अधिक जलनेवाली उल्का; कोळ्–रखनेवाली; अङ्कैयिनार् आयिनार्–हथेली वाले बने; कान् आर्–जंगल-भरे; नॅड्रियुम्–मार्ग; मलैयुम्–और पर्वत; कळ्ळिय–पीछे छोड़कर; पोनार्कळ्–जाकर; निकुम्पिलै पुक्कनर्–निकुंभिला पहुँचे। २८८३

सेनापति नील आदि वीरों ने हाथ में उल्काएँ ले लीं। वे उस मार्ग से गये जिसमें जंगल और पर्वत भरे थे और निकुंभिला पहुँचे। २८८३

उण्डायदॉ रालुल हुळ्ळॉरुवन्, कॉण्डानुरै हिन्रदु पोर्कुलवि
विण्डानुम् विळुङ्ग विरिन्ददनैक्, कण्डार वरक्कर् करुङ्गडले 2884

उलकु–लोक को; ऑरुवन्–अद्वितीय श्रीमन्नारायण; उळ् कॉण्टान्–अपना उदरस्थ करके; उरैकिन्रतु पोल्–जैसे रहते हैं; ओर् आल् उण्टु आयतु–वैसे वहाँ एक बरगद का पेड़ था; अ अरक्कर् करुम् कटल्–उन राक्षसों का काला-सागर; कुलवि–शोभकर; विण् तानुम् विळुङ्क–आकाश को निगलते हुए; विरिन्ततनै–विस्तृत रहा उसे; कण्टार्–देखा। २८८४

वहाँ एक बरगद का पेड़, सारे लोकों को उदरस्थ करके रहनेवाले विष्णु-सम रहा। वानरों ने वहाँ राक्षसों का काला सेना-सागर देखा, जो इतना विस्तृत था कि आकाश भी उसके अन्दर छिप जाए। २८८४

नेमिप्पॅयर् यूह निरैत्तुनॅडुञ्, जेमत्तदु निन्रदु तीविनैयोन्
ओमत्तनल् वॅव्वड वैक्कुडनै, पामक्कड निन्रदॉर् पान्मैयदै 2885

नेमि पॅयर् यूकम् निरैत्तु–चक्रव्यूह रचकर; नॅटुम् चेमत्तु–दीर्घ रक्षण-कार्य में; अतु निन्रतु–वह (सेना) जो खड़ी रही वह; ती विनैयोन्–पापी की; ओमत्तु अनल्–होमाग्नि; वॅव् वटवैक्कुटन्–भयंकर बड़वा के साथ; पाम कटल्–विशाल सागर; निन्रतॉर् पान्मैयतै–जैसे रहता हो उस प्रकार को। २८८५

चक्रव्यूह में उसका दृश्य बड़े सागर का-सा था, जो नृशंसकारी की यागाग्नि रूपी बड़वा के साथ रहे। २८८५

कारायिन कायहरि तेर्परिमात्, तारायिर कोडि तळीइयदुदान्
नीराळियॉ डाळि निरीइयदुपोल्, ओरायिर मियोशनै युळ्ळवनै 2886

कार् आयिन–मेघ-सम; काय्–क्रोधी स्वभाव के; करि–हाथी और; तेर्–रथ; परिमा–अश्व; तार्–पदाति वीर; आयिर कोटि तळीइयतु–हजार करोड़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो (खड़े) थे वह रीति; नीर् आऴियोटु–जल-समुद्रों के साथ; आऴि निऱैइयतु पोल्–अन्य समुद्र मिले रहते हों जैसे; ओरायिरम् योचनै–एक हज़ार योजन; उळ्ळतनै–विस्तार जो था उसको (लक्ष्मण आदि ने देखा)। २८८६

हज़ार करोड़ मेघ-सम क्रोधशील हाथी, रथ, अश्व और पदातिक मिले खड़े थे। वह दृश्य जल-समुद्र के साथ अन्य समुद्र भी मिलकर एक हज़ार योजन तक फैले पड़े हों —यह भ्रम पैदा करता था। २८८६

पॊऱ्ऱेर्परि माकरि मापॊरुतार्, ऎऱ्ऱेपडै वीररै यॆण्णिलमाल्
उऱ्ऱेविय यूह मुलोहमुडैच्, चुऱ्ऱायिर मूडु शुलायदनै 2887

पॊरु तार्–युद्ध करनेवाली आगे की सेना में; पॊन् तेर्–स्वर्ण-रथ और; परिमा–अश्व; करि मा–हाथी; ऎऱ्ऱे–कितने ही; पटै वीररै–सेना के वीरों को; ऎण्णिलम्–गिना नहीं; उऱ्ऱ–रचित होने; एविय यूकम्–इन्द्रजित् ने जिसकी आज्ञा दी थी वह व्यूह; उलोकम् चुऱ्ऱ उटै–पृथ्वी को वलयित रहनेवाले; आयिरम् ऊटु–समुद्रों से; चुलायतनै–मिश्रित थे (उन्हें देखा)। २८८७

युद्धसन्नद्ध सेना के अगले भाग में कितने ही रथ थे ? कितने ही अश्व और कितने ही हाथी थे ? पदाति वीरों को तो हमने गिना ही नहीं। इन्द्रजित् द्वारा की हुई इनकी व्यूह-रचना लोक और उसको वलयित कर रहनेवाले समुद्रों की स्थिति का स्मरण दिला रही थी। २८८७

वण्णक्करु मेनियिन् मेन्मऴैवाऴ्, विण्णैत्तॊडु शॆम्मयिर् वीशुदलाल्
अण्णऱ्करि यानन लम्बडैवॆम्, बण्णैक्कडल् पोल्वदॊर् पान्मैयदै 2888

करु वण्ण–नीलवर्ण; मेनियिन् मेल्–शरीरों पर; मऴै वाऴ्–मेघावास; विण्णै तॊटु–आकाशस्पर्शी; चॆम्मयिर् वीचुतलाल्–लाल बाल हिलते, इसलिए; करियान् अण्णल्–श्यामल भगवान द्वारा प्रेषित; अनल् अम् पटै–आग्नेयास्त्र-दग्ध; चॆम् पण्णै कटल् पोल्वतु–भयंकर और राशिकृत समुद्र के समान रहने की; ओर् पान्मैयतै–एक रीति को (देखा)। २८८८

नीलवर्ण राक्षसों के शरीरों पर मेघाश्रय-आकाशस्पर्शी लाल केश हिल रहे थे। तब वह दृश्य तब की भयानक समुद्र-राशि के दृश्य के समान लगता था, जब श्यामवर्ण श्रीराम ने आग्नेयास्त्र को उस पर छोड़ा था। २८८८

वऴङ्गाशिलै नाणॊलि वानिल्वरुम्, बऴङ्गार्मुह मॊत्त पणैक्कुलमुम्
तऴङ्गाकडल् वाऴ्वन पोल्तहैशाल्, मुऴङ्गामुहि लॊत्तन मामुरशे 2889

चिलै–(राक्षसों के) धनुष; नाण् ऒलि–डोरे का स्वन; वऴङ्का–नहीं उठाते; वानिल् वरुम्–और आकाश में आनेवाले; पऴम् कार्मुकम्–प्राचीन (इन्द्र-) धनुष; ऒत्त–के समान रहते; पणै कुलमुम्–वाद्यवृन्द भी; कटल् वाऴ्वन पोल्–समुद्रमग्न रहे-से; तऴङ्का–नहीं बजते; तकै चाल्–सुयोग्य; मा मुरचु–बड़ी भेरियाँ; मुऴङ्का मुकिल् ऒत्तन–न गरजते मेघ के समान रहीं। २८८९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षसों के हाथों के धनु ज्यास्वन नहीं निकालकर आकाश में प्रकट होनेवाले पुरातन इन्द्रधनुष के समान लगे। 'पणै' नामक बाजे भी समुद्रमग्न-से चुप रहे। सुघड़ भेरियाँ भी मौन मेघों के समान चुप रहीं। २८८९

वलियान विराहवन् वाय्मॊळियाल्, शलियाद नॆडुङ्गडल् तानॆनलाय्
ऒलियादुरु शेनैयै युऱ्ऱॊरुनाळ्, मॆलियादव रार्त्तनर् विण्गिळिय 2890

वलियान–बलवान; इराकवन् वाय् मॊळियाल्–श्रीराघव की आज्ञा से; चलियात–अचंचल; नॆटुम् कटल् तान् ऎनल् आय्–बड़े समुद्र के ही समान जो रहे; ऒरु नाळ् मॆलियातवर्–और जो एक दिन भी निर्बल नहीं हुए वे वानर वीर; ऒलियातु–विना किसी शब्द के; उरु चेनैयै–जो थी उस राक्षस-सेना के; उऱ्ऱु–पास जाकर; विण् किळिय–आकाश को फाड़ते हुए; आर्त्ततर्–शोर मचा उठे। २८९०

श्रीराम की आज्ञा पाकर जो अचंचल रहा उस लम्बे समुद्र के ही समान जो रही, उस वानर-सेना के अथक वीरों ने मौन रही राक्षस-सेना के पास पहुँचकर आकाश को फाड़ते-से उच्च नाद किया। २८९०

आर्त्तारॆदि रार्त्त वरक्करकुलम्, पोर्त्तार् मुरशङ्गळ् पुडैत्तपुहत्
तूर्त्तारिवर् कऱ्पडै शूनमुहिलिन्, नीर्त्तारैयि नम्बवर् नीट्टिनराल् 2891

आर्त्तार्–(वानर वीरों ने) घोष किया; अरक्कर् कुलम्–राक्षस-वर्गों ने; ऎतिर् आर्त्तत–बदले में नर्दन किया; तार् पोर् मुरचङ्कळ्–मालाओं से अलंकृत भेरियाँ; पुटैत्त–ठनक उठीं; इवर्–ये; कल् पटै–पत्थरों रूपी हथियारों को; पुक–(राक्षस-सेना-मध्य) चलें ऐसा; तूर्त्तार्–फेंककर भर दिया; अवर्–उन्होंने; चूल्–जल-गर्भ; मुकिलिन्–मेघों की; नीर् तारैयिन्–जल-वर्षा के समान; अम्पु नीट्टिनर्–बाण चलाये। २८९१

वानर वीरों का घोष सुनकर राक्षस-सेनाओं ने भी नर्दन किया। माला से अलंकृत भेरियाँ ठनक उठीं। वानरों ने पत्थरों को सेना के मध्य खूब फेंका। उधर राक्षसों ने जलगर्भित मेघ की धाराओं के समान अस्त्र चलाये। २८९१

मिन्नुम्बडै वीशलिन् वॆम्बडैमेल्, पन्नुङ्गवि शेनै पडिन्दुळदाल्
तुन्नुन्दुऱै नीर्निऱै वावितॊडर्न्, दन्नङ्गळ् पडिन्दन वामॆनलाय् 2892

वॆम् पटै–(राक्षसों की) क्रूर सेना के; मिन्नुम्–चमकदार; पटै–हथियारों को; वीचलिन्–फेंकने से; पन्नुम्–कथित; कवि चेनै मेल्–वानर-सेना पर; तुन्नुम्–पास-पास रहे; तुऱै–घाटों के; नीर् निऱै वावि–जल-भरे तडाग में; तॊटर्न्तु–लगातार; अन्नङ्कळ् पटिन्तन आम्–हंस ठहरे हैं, ऐसा कहने की रीति से; पटिन्तुळतु–लगे रहे। २८९२

भयंकर राक्षस-सेना ने चमकदार हथियार फेंके तो वे वानर वीरों पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जा लगे और उन हंसों के समान दिखायी दिये, जो पास-पास के घाटों वाले जलाशय में आ ठहरे हों। २८९२

विल्लुम्मऴु वुम्मॆऴु वुम्मिडलोर्, पल्लुन्दलै युम्मुड लुम्बडियिल्
शॆल्लुम्बडि शिन्दिऩ शॆन्ऱऩवाल्, कल्लुम्मर मुङ्गर मुङ्गदुव 2893

कल्लुम् मरमुम्–(वानर-प्रेषित) पत्थर और तरु; करमुम्–और उनके हाथ; कतुव चॆन्ऱऩ–राक्षसों पर लगते गये; मिटलोर्–बलवान राक्षसों के; विल्लुम् मऴुवुम् ऍऴुवुम्–धनु, फरसे और वक्रदण्ड; पल्लुम्–दाँत; तलैयुम्–सिर और; उटलुम्–शरीर; पटियिल् चॆल्लुम्पटि–भूमि पर गिरें ऐसा; चिन्तिऩ–गिरे। २८९३

वानरों के हाथों द्वारा चलाये गये पत्थर और तरु ही नहीं, उनके हाथ भी राक्षसों को पकड़ने गये और उन्होंने सबल राक्षसों के धनु, फरसे और वक्रदंड आदि हथियारों को ही नहीं, बल्कि उनके दाँतों, सिरों और शरीरों को भी भूमि पर गिरा दिया। २८९३

वालुन्दलै युम्मुड लुम्वयिऱुम्, कालुङ्गर मुन्दरै कण्डऩवाल्
कोलुम्मऴु वुम्मॆऴु वुङ्गॊऴुवुम्, वेलुङ्गणै युम्वळै युम्विशिऱ 2894

कोलुम्–दण्डायुध; मऴुवुम्–और फरसे; ऍऴुवुम्–वक्रदण्ड; कॊऴुवुम्–'कॊऴु' नाम के हथियार; वेलुम्–साँग; कणैयुम्–बाण; वळैयुम्–वलय; विचिऱ–(इनको) चलाने से; वालुम्–(वानरों की) पूँछें; तलैयुम्–सिर; उटलुम्–और शरीर; वयिऱुम्–पेट; कालुम्–पैर; करमुम्–और हाथ; तरै कण्टऩ–भूमि पर गिरे। २८९४

राक्षसों ने दंडों, फरसों, वक्रदंडों, 'कॊऴु' नाम के हथियारों, शरों और वलयों का प्रयोग किया, तो वानरों की पूँछें, सिर, शरीर, पेट, पैर और हाथ अलग-अलग होकर भूमि पर गिरे। २८९४

वॆन्ऱिप्पडै वीरऩै वीडणऩ्नी, निन्ऱिक्कडै ताऴुदल् नीदियदो
शॆन्ऱिक्कडि वेळ्वि शिदैत्तिलैयेल्, ऍऩ्ऱिक्कडल् वॆल्हुदु मियामऩलुम् 2895

वीटणऩ्–विभीषण के; वॆन्ऱि पटै वीरऩै–विजयवाहिनी के स्वामी लक्ष्मण से; इ कटै–यहाँ; नी–आप; निऩ्ऱु ताऴुतल्–खड़े रहकर विलंब करें यह; नीतियतो–नीति होगा क्या; कटि–रक्षण में चलनेवाले; इ वेळ्वि–इस यज्ञ को; चॆन्ऱु–जाकर; चिदैत्तिलैयेल्–नष्ट न करियेगा तो; याम्–हम; ऍऩ्ऱु–कब; इ कटल्–इस सागर- (सी सेना) को; वॆल्कुतुम्–जीतेंगे; ऍऩलुम्–ऐसा कहने पर। २८९५

तब विभीषण ने विजयवाहिनी के स्वामी लक्ष्मण से कहा कि यहाँ आप खड़े-खड़े देरी लगा दें —क्या यह नीतिसम्मत होगा ? रक्षण में चलने वाले याग को आप नष्ट नहीं करेंगे तो हम कब इस सेना-सागर को जीत सकेंगे ? । २८९५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेवाविय रुन्दिशै नान्मुहनुम्, मूवामुद लीशनु मूवुलहिन्
कोवाहिय कॉऱ्ऱव नुम्मुदलोर्, मेवादव रिल्लै विशुम्बुऱैवोर् 2896

तेवातियरुम्–देवादि (१८ वर्ग के) सुर लोग; नाल् तिचै मुकनुम्–चतुर्दिशामुख; मूवा मुतल् ईचनुम्–जो वृद्ध नहीं होते वे परमेश्वर; मू उलकिन् कोवाकिय–त्रिलोकाधिपति; कॉऱ्ऱवनुम्–विजयी श्रीमन्नारायण; मुतलोर्–आदि; विशुम्पु उऱैवोर्–आकाशवासी; मेवातवर् इल्लै–जो नहीं आये वे कोई नहीं थे। २८९६

अठारह वर्गों के देव, चतुर्दिशामुख ब्रह्मा, शिव, त्रिलोकीनाथ श्रीविष्णु, जो अजर हैं आदि आकाशवासियों में कोई नहीं बचे थे, जो उधर आकर एकत्र नहीं हुए हों। २८९६

पल्लार्पडै निन्ऱदु पल्लणियाय्, पल्लार्पडै निन्ऱदु पल्पिऱैवॅण्
पल्लार्पडै निन्ऱदु पल्लियमुम्, बल्लार्पडै निन्ऱदु पल्पडैये 2897

पल्लार् पटै–अनेकों की (वानर-) सेना; निन्ऱतु–सन्नद्ध खड़ी रही; वॅण् पिऱै पल्–अर्धचन्द्र-सम; पल्लार् पटै–दंतोरों की सेना; निन्ऱतु–खड़ी रही; पल्लार् पटै–अनेकों की सेना के; पल्लियमुम् निन्ऱतु–अनेक (मारू) बाजे भी तैयार थे; पल् पटैये–अनेक (वानरों) की सेना; पल् आर् पटै–जिसके हथियार दाँत ही थे; निन्ऱतु–खड़ी रही। २८९७

संख्या में अनेक वीरों की वानर-सेना युद्धसन्नद्ध खड़ी थी। श्वेत अर्धचन्द्र-सम दाँतों वाले राक्षसों की सेना भी तैयार खड़ी थी। अनेक राक्षसों की सेनाओं के मारू बाजे भी बज रहे थे। उनके आगे अनेक भागों में बँटी वानर-सेना दाँतों को ही हथियार मानकर खड़ी थी। (इसमें यमकालंकार है।)। २८९७

अक्कालै यिलक्कुव नप्पडैयुळ्, पुक्कानयि लम्बु पॉऴिन्दनन्नाल्
उक्कार वरक्करत सूरॉऴियप्, पुक्कार्नम नारुऱै तॅन्पुलमे 2898

अक्कालै–उस समय; इलक्कुवनु–लक्ष्मण; अ पटैयुळ् पुक्कानु–उस सेना में घुसे; अयिल् अम्पु पॉऴिन्तनन्नु–तीक्ष्ण शर छोड़े; अव् अरक्कर् उक्कार–वे राक्षस मरे; तम् ऊर् ऑऴिय–अपना गाँव छोड़कर; नमनार् उऱै–यम का वासस्थान; तॅन् पुलम्–दक्षिणी लोक; पुक्कार्–पहुँचे। २८९८

तब लक्ष्मण ने उस सेना में प्रवेश किया और तीक्ष्ण शर चलाये। तब उन राक्षसों के प्राण निकल (गिर) गये। वे अपना स्थान, लंका छोड़कर यम के दक्षिणी लोक में पहुँचे। २८९८

तेऱामद माकरि तेर्परिमा, नूऱायिर कोडियिन् नूऴिल्पडच्
चेऱार्कुरु दिक्कड लिल्तिडरिल्, कूऱायुह वावि कुऱैत्तनन्नाल् 2899

तेऱा–नशे से जो बाहर नहीं आये; मतम् मा करि–(वे) मदमत्त बड़े गज; तेर्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रथ; परि मा–घोड़े; नूऱायिर कोटियित्–सौ सहस्र करोड़ों की संख्या में; नूऴिल् पट–हत होकर ढेर लगाये गये; चेऱु आर्–पंक-भरे; कुरुति कटलिल्–रक्त-समुद्र में; तिटरिल् कूऱाय् उक–टीलों के समान खण्डों के हो गिरें ऐसा; आवि–राक्षसों के प्राणों को; कुऱैत्तनन्–नष्ट किया । २८९९

नशे में चूर बड़े मदमत्त हाथी, रथ, अश्व आदि सौ हज़ार करोड़ की संख्या में मारे जाकर ढेर बन गये । पंकसहित रक्त-सागर में टीलों के समान राक्षसों के शरीरों के टूकड़े गिरें —ऐसा लक्ष्मण ने राक्षसों का हनन किया । २८९९

वामक्करि ताळऴि वार्कुऴिवन्, तीमॊय्त्त वरक्करहळ् शॆम्मयिरिन्
तामत्तलै पुक्क तळङ्गॆरियिन्, ओमत्तै निहर्त्त वुलप्पिलवाल् 2900

वामम्–मनोहर; करि–गजों ने; ताळ्–अगले पैरों से; अऴि–जो खोदा; वार्–(उन) लम्बे; कुऴि–गड्ढों में; वन्–सुदृढ़; अरक्करकळ्–राक्षसों के; तीमॊय्त्त–आग के समान आवृत कर रहनेवाले; चॆम् मयिरिन्–लाल केशों के; उलप्पुइल–असंख्य; ताम–माला से अलंकृत; तलै–सिर; पुक्क–घुसे वे; तळङ्कु ऎरियिन्–जलती आग के; ओमत्तै निकर्त्त–होमकुण्ड के समान लगे । २९००

मनोहर गजों ने अपने अगले पैरों से जो गड्ढे बनाये, उनमें बलवान राक्षसों के अग्नि-सम लाल केशों से आवृत व माला से अलंकृत असंख्यक सिर गिरे । तब वे गड्ढे प्रज्वलित अग्नि-सहित होमकुंडों के समान लगे । २९००

शिलैयिन्कणै यूडु तिऱन्दनतिण्, गॊलैवॆङ् गळिमाल्हरि शॆम्बुनल्हॊण्
डुलैविन्ऱु किडन्दन वॊत्तुळवाल्, मलैयुञ्जुनै युम्वयि ऱुम्मुडलुम् 2901

चिलैयिन् कणै–कमान के तीरों के; तिण्–कठोर; कॊलै–संहारक; वॆम्–क्रूर; कळि–मत्त; माल् करि–बड़े हाथियों को; ऊटु तिऱन्तन–बीच से फाड़ने से; चॆम् पुनल् कॊण्टु–लाल रक्त बहाते हुए; उलैविन्ऱु–विना हिले; किटन्तन–पड़े रहे; उटलुम् वयिऱुम्–शरीर और पेट; मलैयुम् चुनैयुम्–(क्रमशः) गिरि और स्रोत के; ऒत्तुळ–समान दिखे । २९०१

लक्ष्मण के शरों से कठोर, खूनी, भयंकर रूप से मस्त व बड़े-बड़े हाथी विद्ध हुए और खून बह निकला । वे हाथी ढेर बने हिले-डुले विना पड़े रहे । उनके शरीर और पेट क्रमशः पर्वतों और स्रोतों के समान लगे । २९०१

विऱ्ऱॊत्तिय वॆङ्गणै यॆण्गित्वियन्, पऱ्ऱॊत्तिय पोऱ्पडि यप्पलवुम्
मुऱ्ऱच्चुडर् मिन्मिनि मॊय्त्तुळवन्, पुऱ्ऱॊत्त मुडित्तलै पूऴियन 2902

पूऴियन–धलि में पड़े रहे; मुटि तलै–किरीट-मंडित सिर; विल् तॊत्तिय–(लक्ष्मण-) धनु से निकले; वॆम् कणै पलवुम्–क्रूर अस्त्र अनेक; ऎण्कित्–रीछ के;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वियन्-बड़े; पल् तोत्तिय पोल्-दाँत गड़े हों जैसे; पटिय-लगे इसलिए; चुटर् मिन्मिति-चमकदार खद्योतों के; मुऱ्ऱ-पूर्ण रूप से; मोय्त्तु उळ-जिस पर मँड़राते हों उस; वन् पुऱ्ऱ-बड़े (सर्प-) बिल के समान; ओत्त-लगे। २९०२

राक्षसों के किरीटमंडित सिर धूल में पड़े रहे और उनमें लक्ष्मण के धनुप्रेषित कठोर शर रीछों के बड़े दाँतों के समान गड़े रहे। तो वे उन सर्प-बिलों के समान दिखे, जिन पर पूर्ण रूप से खद्योत मँड़रा रहे हों। २९०२

पडुमारि नॅडुङ्गणै पाय्दलिन्ताल्, विडुमाऱुदि रप्पुन्नल् वीळ्वन्नवाल्
तडुमाऱुनॅ डुङ्गोडि ताळ्हडल्वाय्, नॅडुमामुहिल् वीळ्व निहर्त्तन्नवाल् 2903

नॅटुम् कणै-लक्ष्मण के बड़े शरों की; पटु मारि-बरसनेवाली वर्षा; पाय्तलिन्ताल्-चली, इसलिए; विटुम्-बहनेवाले; उतिरम् पुन्नल्-रक्तवारि की; आऱु-नदियाँ; वीळ्वन्न-(भूमि पर) गिरीं; तटुमाऱुम् नॅटु कॊटि-डगमगानेवाली पताकाएं; ताळ् कटल् वाय्-गहरे समुद्र में; नॅटु मा मुकिल् वीळ्व-बड़े काले मेघ गिरते; निकर्त्तन्न-जैसे लगे। २९०३

लक्ष्मण के शर वर्षा की लम्बी धारों के समान उनके शरीरों में घुसे। तो उनके शरीरों से रक्त नदियों के रूप में बह निकला। उसमें पताकाएँ लड़खड़ाने लगीं और जाकर बड़े मेघों के समान गंभीर समुद्र में मग्न हो गयीं। २९०३

मिन्नार्कणै ताळऱ वीशविळुन्, दन्नारुदि रत्तु ळळुन्दुवदाल्
ऒन्नार्मुळ वॅण्गुडै यॊत्तन्नवाल्, शॅन्नाहम् विळुङ्गिय तिङ्गळिन्नै 2904

मिन् आर् कणै-चमकदार (लक्ष्मण-) शर; वीच-लगे; ऒन्नार्-शत्रुओं के; मुळु वॅण् कुटै-पूर्ण श्वेत छत्र; ताळ् अऱ-कटकर; विळुन्तु-गिरे; अन्नार्-उनके; उतिरत्तुळ्-रक्त में; अळुन्तुवताल्-मग्न हो गये, इसलिए; चॅम् नाकम्-लाल (केतु) सर्प द्वारा; विळुङ्किय-निगले गये; तिङ्कळिन्नै ऒत्तन्न-चन्द्र के समान रहे। २९०४

(लक्ष्मण के) ज्वलंत शर चले तो शत्रुओं के पूर्ण-श्वेत-छत्रों के मूठ कटे और छत्र गिरे और उनके रक्त के प्रवाह में धँसे। तब वे लाल (केतु) सर्प-ग्रस्त चन्द्र के समान लगे। २९०४

कॊडुनीळ्करि कैयॊडु ताळ्कुऱैयप्, पडुनीळ्कुरु दिप्पडर् हिन्ऱन्नवाल्
अडुनीळुयि रिन्मैयि न्ताळ्हिलवाल्, नॅडुनीरिडै वङ्गम् निहर्त्तन्नवाल् 2905

कॊटु-क्रूर; नीळ्-लम्बे; करि-गज; कैयॊटु ताळ् कुऱैय-सूंड़ों और पैरों के कट जाने से; पटु नीळ् कुरुति-निकलनेवाले अधिक रुधिर के बहाव में; पटर्किन्ऱन्न-जो जाते हैं; अटु-मारने; नीळ् उयिर्-प्राण; इन्मैयिन्-नहीं रहे, इसलिए;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऴ्किल–डूबे नहीं; नॅटु नीर् इटै–बड़े जल (समुद्र) में; वङ्कम्–पोतों की; निकर्त्तत–समानता करते थे। २९०५

क्रूर और बड़े हाथियों के पैर और सूँड़ें कटीं। वे रक्त के प्रवाह में तिर चले। उनमें प्राण नहीं थे, इस कारण वे डूबे नहीं और विशाल समुद्र के ऊपर पोतों के समान लगे। २९०५

करियुण्ड कळत्तिडै युऱ्ऱनकान्, नरियुण्डि युहप्पन नट्टनवाल्
इरियुण्डव रिन्निय मिट्टिडलाल्, मरियुण्ड वुडर्प्पोरै मानिनवाल् 2906

करि उण्ट–राख जो बने; कळत्तिटै–(युद्ध के) आँगन में; कान नरि–जंगली सियार; उण्टि उकप्पन–आहार चाहकर; उऱ्ऱन–आकर; नट्टन–बीच में खड़े रहे; इरि उण्टवर्–जो भागे उनके; इन्नियम्–अपने मधुर बाजों को; इट्टिटलाल्–नीचे गिराने से; मरि उण्ट–मृत; उटर्प्पोरै–शरीर-भार की; मानिन–(वे बाजे) समानता करते थे। २९०६

जंगली सियार युद्ध के मैदान के मध्यस्थान में आ गये, जो राख बना पड़ा था। भागनेवाले मधुर बाजों को गिराते हुए भागे और वे लाशों के समान दिखे। २९०६

वायिऱ्कनल् वॅङ्गडु वाळियिनम्, पायप्परु मक्कुलम् वेवनवाल्
वेयुऱ्ऱ नॅडुङ्गिरि मोवॅयिलाम्, दीयुऱ्ऱन पोन्ऱ शिनक्करिये 2907

वायिल्–मुख में; वॅम् कटु कनल्–अति क्रूर अग्नि रखनेवाले; वाळि इनम्–(आग्नेय) अस्त्र-समूह; चिन करि–क्रुद्ध हाथियों पर; पाय–चले तो; परुमम् कुलम्–(हाथियों के हौदों के) गद्दों का समूह; वेवन–जले; वेय् उऱ्ऱ–बाँस-सहित; नॅटु किरि मी–बड़ी गिरि पर; वॅयिल् आम् ती–गरम आग की लपटें; उऱ्ऱन–लगी हों; पोन्ऱ–जैसे दिखे। २९०७

निपट क्रूर अग्निमुखी आग्नेयास्त्रसमूह क्रुद्ध गजों पर चले। तो उनके गलों के गद्दे, जो जले, वंशवनसंयुक्त गिरि पर लगी गरम आग के समान लगे। २९०७

अलैवेल यरक्करै यॅण्गिनुहिर्, तलैमेन्मुडि यैत्तरै तळ्ळुदलाल्
मलैमेलुयर् पुऱ्ऱिनै वळ्ळुहिराल्, निलैपेर मऱिप्प निहर्त्तनवाल् 2908

अलै वेलै अरक्करै–तरंगसहित समुद्र के समान राक्षसों के; तलै मेल् मुटियै–सिरों पर के किरीटों को; ऍण्किन् उकिर्–रीछों के नाखून; तरै तळ्ळुतलाल्–नोचकर नीचे गिराते हैं इसलिए; मलै मेल् उयर्–पर्वतों पर ऊँचे; पुऱ्ऱिनै–बिलों को; वळ् उकिराल्–कठोर नखों से; निलै पेर–स्थिति बदलते हुए; मऱिप्पु–उखाड़ते; निकर्त्तन–जैसे लगे। २९०८

तरंगसंकुल सागर-सम (सेना के) राक्षसों के सिरों पर से किरीटों को रीछों के नखों ने नोचकर नीचे गिरा दिया। तब ऐसा लगा मानो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रीछ पर्वतों पर उगे हुए सर्प-बिलों को अपने नखों से नोचकर उखाड़ रहे हों। २९०८

मावाळिहण् मामळै पोल्वरलाल् मावाळिहळ् पोर्तॅरु मामरवोर्
मावाळिहळ् वन्ऱलै यिन्ऱलैवाळ् मावाळिह ळोडु मऱिन्दनराल् 2909

मा वाळिकळ्–बड़े शरों के; मा मळै पोल्–काले मेघों के समान; वरलाल्–आने से; मा–बड़े; आळिकळ्–याळियों (शरभों) को; पोर्–युद्ध में; तॅरुम्–मारनेवाले; मा–श्रेष्ठ; मऱवोर्–(राक्षस) वीर; मा आळिकळ्–बड़े जानवरों (हाथियों व अश्वों) को चलानेवालों के; वन् तलैयिन् तलै वाळ्–कठोर सिरों पर रहने वाले; मा–काले; आळिकळोटु–भ्रमरों के साथ; मऱिन्तनर्–मर गये। २९०९

बड़े-बड़े शर काले मेघों के समान आये। तो बड़े-बड़े 'याळि' यों (शरभों) को युद्ध में मारनेवाले वीर और बड़े जानवरों (हाथियों और अश्वों) को चलानेवाले वीर मरे और उनके साथ उनके कठोर सिरों पर मँड़रानेवाले भ्रमर भी मर मिटे। (यमकालंकार का पद्य है। अतः भाव की विशेषता नगण्य है, यद्यपि अर्थ सुन्दर है।)। २९०९

अङ्गङ्गिळि यत्तुणि पट्टदनाल्, अङ्गङ्गिळि कुऱ्ऱ वमर्त्तलैवर्
अङ्गङ्गिळि शॅम्बुनल् पम्बवलैन्, दङ्गङ्ग णिरम्बि यलम्बियवाल् 2910

अङ्कु अङ्कु–वहाँ-वहाँ; इळि कुऱ्ऱ–जो हारे थे वे; अमर् तलैवर्–युद्ध-नायक; अङ्कम्–अंगों के; किळिय–चिर जायँ, ऐसा; तुणि पट्टतनाल्–कट जाने से; अम् कङ्कु–सुन्दर कंकों ने; इळि चॅम्पुनल्–बहनेवाले रक्त को; पम्प–(सब जगह) फैलाते हुए; अलैन्तु–घूमकर; कम् कळ् निरम्पि–अपने सिरों में मलकर; अलम्पिय–धो लिया (अपने शरीरों को)। २९१०

यहाँ-वहाँ जो यूथप हारे उनके अंग विद्ध हुए और कट गये। तब सुन्दर कंक पक्षी रक्त को इधर-उधर फैलाते हुए घूमे और अपने सिरों पर खूब मलकर अपने को धो लिया। २९१०

वन्ऱानैयै वार्कणै मारियिनाल्, मुन्ऱादैयॊर् तेर्कॊडु मॊय्पलतेर्प्
पिन्ऱावॆदिर् तानवर् पेरणियैक्, कॊन्ऱानॆन वॆय्दु कुऱैत्तनताल् 2911

तातै–पिता दशरथ ने; मुन्–प्राचीनकाल में; ओर् तेर् कॊटु–एक रथ ले जाकर; मॊय् पल तेर्–घने रूप से रहे अनेक रथों को ले; पिन्ऱा ऍतिर्–विना पैर उखड़े रहे; तानवर् पेरणियै–उन राक्षसों की बड़ी सेना को; कॊन्ऱान् ऍन्–मारा था, उसी प्रकार; वन् तानैयै–कठोर सेना को; वार् कणै मारियिनाल्–लम्बे शरों की वर्षा से; ऍय्तु–चलाकर; कुऱैत्तनन्–नष्ट किया। २९११

लक्ष्मण वैसे ही कठोर शर चलाकर राक्षसों की सशक्त सेना का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्षय कर रहे थे, जैसे उनके पिता दशरथ ने, एक रथ पर जाकर अनेक रथों में आये दुर्धर्ष दानवों की सेनाओं को मारा था। २९११

मलैहळु मऴैहळुम् वात मीन्गळुम्, अलैयवॅङ् गाल्पॊर वऴिन्द वामॅत
उलैयवॅङ् गतल्पॊदि योम मुऱ्ऱवाल्, तलैहळु मुडल्हळुञ् जरङ्ग डावित 2912

वॅम् काल् पॊर–प्रचण्ड पवन के झोंके से; मलैकळुम्–पर्वत और; मऴैकळुम्–मेघ और; वात मीन्कळुम्–आकाश के नक्षत्र; अलैय–अपने स्थान से हटकर; अऴिन्तवाम् अॅत–जैसे नष्ट हो जाते हों वैसे; चरङ्कळ् तावित–जिन पर (लक्ष्मण-) शर चलकर आये; तलैकळुम् उटल्कळुम्–सिर और शरीर; उलैय–कष्ट पाने; वॅम् कतल् पॊति–भयंकर अग्नि-भरे; ओमम् उऱ्ऱ–होमकुंड में गये (जा गिरे)। २९१२

(युगक्षय के अवसर पर बहनेवाले) प्रचंड पवन के झोंकों से जैसे पर्वत, मेघ और नक्षत्र विस्थापित होते हैं और विनष्ट होते हैं, वैसे ही शरों के चलने से राक्षसों के शरीर भयंकर आग से भरे होमकुंड में झुलसने के लिए पहुँचे। २९१२

वारण मत्तैयवत् रुणिप्प वात्पडर्
तारणि मुडिप्पॅरुन् दलैह डाक्कलाल्
आरण मन्दिर ममैय वोदिय
पूरण मणिक्कुड मुडैन्दु पोयदाल् 2913

वारणम् अत्तैयवत्–गज (सदृश लक्ष्मण) के; तुणिप्प–काटने से; वात् पटर्–आकाश में उड़नेवाले; तार् अणि–माला पहने हुए; मुटि पॅरुम् तलैकळ्–किरीट-मंडित बड़े सिर; ताक्कलाल्–जा टकराये इसलिए; आरण मन्तिरम् अमैय ओतिय–वेद-मन्त्र जहाँ युक्त रीति से पठन होता रहा; मणि पूरण कुटम्–रत्नमय पूर्ण कुम्भ; उटैन्तु पोयतु–टूट गया। २९१३

कुंजरसन्निभ कुँअर सुमित्रापुत्र ने जिन सिरों को काटा वे माला से अलंकृत किरीट-मंडित सिर आकाश में उड़े। उनके जाकर टकराने से पूर्णकुंभ, जो युक्त वेदमंत्राभिमंत्रित था, टूट गया। २९१३

तारुकॊण् मदकरि शुमन्दु तामरै
शीऱिय मुहत्तलै युरुट्टिच् चॅन्निऱत्
तूरुहळ् शॊरिन्दपे रुदिरत् तोङ्गलै
यारुहळ् मुरुङ्गत लवियच् चॅन्ऱवाल् 2914

तारु कॊळ्–अंकुश का प्रहार पाकर; मत करि–मत्त गज; चुमन्तु–ढोकर और; तामरै चीऱिय–कमल से बिगड़े; मुकम् तलै–मुखों और सिरों को; उरुट्टि–लुढ़काते हुए; ऊरुकळ् चॊरिन्त–व्रणों से बहनेवाले; चॅम् निऱत्तु–लाल रंग के; उतिरत्तु–रक्त की; ओङ्कु अलै–उन्नत लहरों वाली; पेर् आऱुकळ्–बड़ी नदियाँ; मुरुङ्कु–खूब जलती हुई; अतल् अविय–आग को बुझाते हुए; चॅन्ऱ–गयीं। २९१४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अंकुश से उकसाये गये गजों और कमल-वैरी (असुंदर) मुखों को और सिरों को बहा ले जानेवाली व्रणनिःसृत तथा तरंगपूर्ण रक्त की बड़ी नदियाँ होमकुण्ड की सर्वभक्षी आग को बुझाती हुई चलीं। २९१४

तॅरिहणै विशुम्बिडैत् तुमिप्पच् चॅम्मयिर्
वरिहळ लरक्करदन् दडक्कै वाळॉडुम्
उरुमॅन्न वीळ्दलु मन्नलुक् कोक्किय
ॲरुमैहण् मरिन्दन्न मरियु मीर्न्दवाल् 2915

तॅरि कणै-(लक्ष्मण के) चुने हुए बाणों के; विचुम्पु इटै-आकाश में; चॅम्मयिर् वरि चुळल्-लाल केशों और बँधी पायलों वाले; अरक्कर् तम्-राक्षसों के; तम् तटक्कै-विशाल हाथों को; वाळॉडुम्-तलवारों के साथ; तुमिप्प-काटने से; उरुम् ॲन्न-(वे हाथ) अशनि के समान; वीळ्तलुम्-गिरे तो; अन्नलुक्कु ओक्किय-अग्नि (में बलि) के लिए तैयार रखे हुए; ॲरुमैकळ् मरिन्तत-भैंसे मरे; मरियुम् ईर्न्त-अज भी मरे। २९१५

लक्ष्मण द्वारा चुनकर प्रेरित अस्त्र आकाश-मार्ग में लाल केशों और बँधी पायलों वाले राक्षसों के विशाल हाथों को काट दिया तो वे अशनि के समान गिरे जिससे बलि के लिए निश्चित भैंसे मर गये और अज भी विद्ध हो गये। २९१५

अङ्गडङ् गळिन्दपे ररुविक् कुन्रिनिन्
अङ्गडङ् गिळिन्दुह वळिन्द वाडवर्
अङ्गडङ् गलुम्बडर् हुरुदि याळियिन्
अङ्गडङ् गिन्नर्तॉडर् पहळि यञ्जिन्नार् 2916

अम्-सुन्दर; कटम्-गंडस्थलों से; कळिन्त-निकल बहनेवाली; पेर् अरुविक्-बड़ी सरिताओं वाले; कुन्रिनिन्-पर्वतों (गजों) के समान; अळिन्त आटवर्-हतोत्साह वीर; अम् कटम्-उनके गालों को भी; किळिन्तु उक-चिरकर गिरने देकर; तॉटर् पकळि-लगे आनेवाले शरों से; अञ्चिन्नार्-डरकर; अङ्कु अटङ्कलुम्-उस मैदान भर में; पटर् कुरुति आळियिन्-फैले रहे रक्त-सागर में; अङ्कण्-वहीं; तङ्किन्नर्-ठहरे। २९१६

सुन्दर गंडस्थलों से निकल बहनेवाले रक्त की नदियों के साथ रहने वाले पर्वत-से गजों के समान जो वीर थे, वे अब शिथिलमन रहे। उनके गाल भी चिरकर गिर गये। वे अपने पीछे आनेवाले शरों से डरकर युद्ध के मैदान में फैले रहे रक्त-सागर में घुसकर वहीं छिपे बैठे रहे। २९१६

कारलैक् करत्तॉडुन् दुणियक् काय्हदिर्क्
कोरलैत् तलैयुर मरुक्कङ् गूडिन्नार्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेऱलत् तून्ऱिनार् तुळङ्गु मॅय्यिनार्
नाऱलैक् कुडलिनर् पलरु नण्णिनार् 2917

काय् कतिर् कोल्–जलानेवाले प्रकाशमय शर; तलै तलै उऱ–सिर-सिर पर धँसे; काल्–पैर; तलै–सिर; करत्तोटुम्–हाथों के साथ; तुणिय–कटे; मऱक्कम् कटिनार्–(इसलिए) मूर्च्छित होकर; वेल् तलत्तु ऊन्ऱिनार्–साँगों को भूमि पर टेककर; तुळङ्कुम् मॅय्यिनार्–काँपते शरीर वाले बनकर; नाऱ अलै कुटलिनर्–लटककर हिलनेवाली आँतों के होकर; पलरुम्–अनेक; नण्णिनार्–(एक ओर) एकत्रित हुए। २९१७

जलानेवाले उज्ज्वल शर राक्षसों के सिर-सिर पर आ चुभे। इसलिए पैर, सिर और हाथ कटे। राक्षसों पर बेहोशी-सी छा गयी। वे साँगों को भूमि पर टेककर, काँपते शरीरों और बाहर लटककर हिलनेवाली आँतों को लेकर आये और एकत्रित हुए। २९१७

पॊङ्गुडऱ् ऱुणिन्दतम् बुदल्वर्प् पोक्किलार्
तॊङ्गुडऱ् ऱोण्मिशै यिरुन्दु शोर्वुऱ
अङ्गुडऱ् ऱम्बियैत् तळुवि यण्मिनार्
तङ्गुडऱ् मुदुहिडैच् चरियत् तळ्ळुवार् 2918

पॊङ्कु उटल् तुणिन्त–मोटे शरीर जिनके कट गये उन; तम् पुतल्वर्–अपने पुत्रों को; पोक्किलार्–जो नहीं छोड़ सके वे राक्षस; तोळ् मिचै–कंधों पर; तॊङ्कु उटल् इरुन्तु–लटकनेवाले शरीरों के रहकर; चोर्वु उऱ–लटते; तम् कुटर्–अपनी आँतों के; मुतुकिटै चरिय–पीठ की तरफ़ गिरते; तळ्ळुवार्–उनको (भीतर) धकेलते हुए; अङ्कु–वहाँ; उटल्–लड़नेवाले; तम्पियै अण्मि–छोटे भाई लक्ष्मण के पास जाकर; तळुविनार्–घेर गये। २९१८

पिता वहाँ थे, जिनके पुत्रों के मोटे शरीर कट गये। वे उन्हें छोड़ना नहीं चाहते थे। इसलिए कंधों पर उठाये जाने लगे, तो वे लाशें कंधों पर से लटकती रहीं। स्वयं वे पिता थक गये और उनकी आँतें बाहर निकली थीं। उनको भीतर धकेलते हुए वे गये और श्रीराम के लघुभ्राता को घेरकर खड़े हो गये। २९१८

मूडिय नॅय्यॊडु नऱव मुऱ्ऱिय
शाडिहळ् पॊरियॊडु तहर्न्दु तळ्ळुऱक्
कोडिहळ् पलपल कुळाङ्गु ळाङ्गळाय्
आडिन वऱुहुऱै यरक्क राक्कंये 2919

नॅय्यॊटु–घी के साथ; नऱवम्–ताड़ी; पॊरियॊटु–लाजे से; मुऱ्ऱिय–भरे; मूटिय–आच्छादनयुक्त; चाटिकळ्–घड़े; तकर्न्तु तळ्ळुऱ–टूटकर गिरें ऐसा; अऱ अरक्कर्–कटनेवाले राक्षसों के; कुऱै आक्कै–कबन्ध; पल पल कोटिकळ्–अनेक कोटि संख्या में; कुळाम् कुळाङ्कळाय्–दल बाँधकर; आटिन–नाचे। २९१९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

घी, ताड़ी, लाजे आदि के भरे, आच्छादनयुक्त घड़ों को तोड़ गिराते हुए शरविद्ध राक्षसों के कोटि-कोटि कबन्ध दल बाँधकर नाचे। २९१९

कालॅऩक् कडुवॅऩक् कलिङ्गक् कम्मियर्
नूलॅऩ वुडर्पॊऱै तॊडर्न्द नोयॅऩप्
पालुऱु पिरैयॅऩक् कलन्दु पऩ्मुऱै
मेलुऱु शेऩैयैत् तुणित्तु वीऴ्त्तिऩान् 2920

काल् अॅऩ–पवन के समान और; कटु अॅऩ–विष के समान; कलिङ्कम् कम्मियर्–साड़ियाँ बुननेवाले बुनकरों के; नूल् अॅऩ–सूत के समान; उटल् पॊऱै तॊटर्न्त–शरीर में लगे; नोय् अॅऩ–रोग के समान; पाल् उऱु पिरै अॅऩ–दूध में पड़े जामन के समान; पल् मुऱै–बार-बार; मेल् उऱु–अपने पर चढ़ आनेवाली; चेऩैयै–सेना को; कलन्तु–उसमें घुसकर; तुणित्तु वीऴ्त्तिऩान्–काट गिराया (लक्ष्मण ने)। २९२०

लक्ष्मण ने (इस भाँति) पवन, विष, बुनकर के सूत, शरीर के रोग और दूध के जामन के समान अपने पर बार-बार चढ़ आनेवाली सेना में घुसकर वीरों को काट गिराया। २९२०

कण्डनऩ् ऱिशैतॊऱुम् नोक्किक् कण्णहऩ्
मण्डल मऱिकड लऩ्ऩ माप्पडै
विण्डॅरि काल्पॊर मऱिन्दु वीऱ्ऱुऱुम्
तण्डलै यामॅऩक् किडन्द तऩ्मैयै 2921

तिचै तॊऱुम्–हर दिशा में; नोक्कि–दृष्टि दौड़ाकर; कण् अकऩ्–विशाल; मण् तलम्–पृथ्वीतल में; मऱि कटल् अऩ्ऩ–मुड़-मुड़कर चलनेवाली लहरों के समुद्र के समान; मा पटै–बड़ी सेना (के); विण्टु अॅरि–शत्रुता करके जलनेवाली; काल् पॊर–हवा के प्रचंड झोंकों से; मऱिन्तु वीऱ्ऱु उऱुम्–ऊपर-नीचे कटकर उजड़नेवाले; तण्टलै आम् अॅऩ–शीतल बगीचे के समान; किटन्त तऩ्मैयै–पड़े रहने का हाल; कण्टऩऩ्–देखा। २९२१

इन्द्रजित् ने देखा कि विशाल पृथ्वीतल में, मुड़-मुड़कर आनेवाली तरंगों से भरे सागर-सम उसकी सेना के वीर छिन्न-भिन्न हो गिर गये हैं और मैदान प्रचंड प्रभंजन के झोंकों से उजड़े शीतल उपवन का-सा दृश्य उपस्थित कर रहा है। २९२१

मिडलिऩ्वॅङ् गडहरिप् पिणत्तिऩ् विण्डॊडुम्
तिडलुम्वॅम् बुरवियुन् देरुञ् जिन्दिय
उडलुम्वऩ् ऱलैहळु मुदिरत् तोङ्गलैक्
कडलुमल् लादिडै यॊऩ्ऱुङ् गण्डिलऩ् 2922

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिटलित्–बलवान; कटम् वॅम् करि–मत्त भयंकर हाथियों की; पिणत्तिन्–लाशों के; विण् तोटुम्–गगनस्पर्शी; तिटलुम्–टीले; वॅम् पुरवियुम्–और भयंकर अश्व; तेरुम्–और रथ; चिन्तिय उटलुम्–छितरे बड़े शरीर; वत् तलैकळुम्–और कठोर सिर; ओङ्कु अलै–उन्नत लहरों के; उतिरत्तु कटलुम् अल्लातु–रक्त-सागर (इन) के अलावा; इटै–मैदान में; ऑन्ऱुम् कण्टिलन्–कुछ नहीं देखा (इन्द्रजित् ने)। २९२२

उसने, सबल, मत्त और संतापक रीति से क्रुद्ध गजों की लाशों के गगन-स्पर्शी ढेरों, भीमकाय अश्वों, रथों, कटे शरीरों और कठोर सिरों तथा चलायमान लहरों के रुधिर-सागरों के अलावा कुछ नहीं देखा। २९२२

नूऱुनू ऱायिर कोडि नोन्गळल्
मारुपो ररक्करै यॊरुवन् वाट्कणै
कूऱुकू ऱाक्किय कुवैयुञ् जोरियिन्
आऱुमे यन्ऱियो राक्कै कण्डिलन् 2923

नूऱु नूऱु आयिर कोटि–सौ-सौ हज़ार करोड़ (अत्यधिक संख्या में); नोन् कळल्–कठिन पायलधारी; माऱु पोर्–वैरी लड़ाकू; अरक्करै–राक्षसों को; ऑरुवन्–अद्वितीय लक्ष्मण के; वाळ् कणै–तीक्ष्ण शरों ने; कूऱु कूऱु आक्किय–जो छिन्न-भिन्न कर दिया वे; कुवैयुम्–उन ढेरों के; चोरियिन् आऱुमे अन्ऱि–और रक्त की नदियों के अलावा; ओर् याक्कै कण्टिलन्–एक शरीर को भी नहीं देखा। २९२३

उसने सहस्र-सहस्र कोटि के कठिन पायल-धारी तथा योद्धा राक्षस वीरों को अनुपम लक्ष्मण के शरों से क्षत-विक्षत होकर टुकड़ों के ढेरों में पड़ा हुआ ही देखा; एक शरीर को भी पूर्ण रूप में नहीं देखा। २९२३

नञ्जिनुम् वॅय्यवर् नडुङ्गि नावुलर्न्
दञ्जिनर् शिलर्शिल रडैहिन् ऱार्शिलर्
वॅञ्जिन वीरर्हळ् मीण्डि लादवर्
तुञ्जिनर् तुणैयिल रॅन्नत्तु ळङ्गिनार् 2924

चिलर्–कुछ लोग; नञ्चिनुम् वॅय्यवर्–विष से भी क्रूर; नटुङ्कि–डर से काँपकर; ना उलर्न्तु–जीभ सूखकर; अञ्चिनर्–डरे; चिलर्–और कुछ; अटैकिन्ऱार्–इन्द्रजित् के पास पहुँचे; चिलर् वॅञ्चिन वीरर्कळ्–कुछ भयंकर क्रोधशील वीर; मीण्टिलातवर्–जो लौट नहीं सके; तुणै इलर् ऍन–असहाय हो गये यह सोचकर; तुळङ्किनार्–दहले; तुञ्चिनर्–मरे। २९२४

उसने देखा कि कुछ विष से भी क्रूर वीर लक्ष्मण के सामने भयातुर हो काँप रहे हैं। उनकी जीभ सूख गयी है। कुछ हैं, जो इन्द्रजित् की छाया में पनाह पाने दौड़े आते हैं। कुछ क्रुद्ध वीर देखे गये जो अपने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

स्थान से लौट नहीं आ पाये और केवल भय के कारण वहीं प्राण छोड़ चुके हैं। २९२४

ओमवॅङ् गऩलविन् वुळैक्क लप्पॅयुम्
कामर्वण् डरुप्पॅयुम् बिऱवुङ् गट्टऱ
नाममन् विरत्तॊळिऩ् मऱन्दु नन्दुरु
तूमवॅङ् गऩलॅऩप् पॊलिन्दु तोऩ्ऱिऩाऩ् 2925

ओम–होमकुण्ड की; वॅम् कऩल्–क्रूर आग; अविन्तु–बुझी; उळै–पास की; कलप्पॅयुम्–सामग्रियाँ; कामर्–सुन्दर; वण् तरुप्पॅयुम्–समृद्ध वर्म; पिऱवुम्–और अन्य; कट्टु अऱ–अस्थिर हुए; नाममम्–भयदायी; मऩतिरत् तॊळिल्–मंत्रोच्चारण का कार्य; मऱन्तु–भूलकर; नन्तु उऱु–वर्धनशील; तूम–धूम्रसहित; वॅम् कऩल् ॲऩ–गरम आग के समान; पॊलिन्तु–शोभा के साथ; तोऩ्ऱिऩाऩ्–दिखा। २९२५

(याग की स्थिति देखिए।) होमकुंड की संदाहक आग बुझ गयी। पास की सामग्रियाँ, पनपे कुश सब अस्त-व्यस्त हो छितर गये। मंत्रोच्चारण का काम भूलने से रुक गया। यह देखकर स्वयं इन्द्रजित् तपती व धूम्रसहित आग के समान शोभा। २९२५

अक्कणत् तडुहळत् तप्पु मारियाल्
उक्कव रॊळितर वुयिरु ळोरॅलाम्
तॊक्कऩ ररक्कऩैच् चूळ्ऩ्दु शुऱ्ऱऱप्
पुक्कदु कविप्पॅरुञ् जेऩैप् पोर्क्कडल् 2926

अ कणत्तु–उस क्षण; अटुकळत्तु–मैदान-जंग में; अम्पु मारियाल्–शर-वर्षा से; उक्कवर् ॲळि तर–मरे हुओं को छोड़कर; उयिर् उळोर् ॲलाम्–जीवित रहे सभी; अरक्कऩै चुऱ्ऱऱ–राक्षस (इन्द्रजित्) को चारों ओर से; चूळ्ऩ्तु तॊक्कऩर्–घेरकर एकत्रित हुए; कवि–वानरों की; पोर्–युद्धरत; पॅरुम् चेऩै कटल्–बड़ी सेना का सागर; पुक्कतु–घुस आया। २९२६

तब युद्ध के मैदान में शर-वर्षा से जो मरे उनको छोड़ अन्य जो जीवित रहे, वे सब इन्द्रजित् को चारों ओर से घेर गये। इसको देखकर वानर-सेना का बड़ा सागर युद्ध करने मैदान में घुस गया। २९२६

आयिर कोडियि ऩळवि लप्पडै
एयॅऩु मात्तिरत् तिऱ्ऱ दॅऩ्बदुम्
तूयवऩ् शिलैवलित् तॊळिलुऩ् दुऩ्बमुम्
मेयिऩ वॅहुळियुङ् गिळर वॅम्बिऩाऩ् 2927

आयिरम् कोटियित्–सहस्र कोटि; अळविल्–संख्या की; अप् पटै–वह सेना; ए ॲऩुम् मात्तिरत्तु–'ए' कहने की देरी में; इऱ्ऱतु ॲऩ्पतुम्–नष्ट हो गयी, यह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बात; तूयवन् चिलै वलि तॊऴिलुम्–पवित्र (श्रीलक्ष्मण) का धनुर्बलपराक्रम (दोनों) ने; तुन्पमुम्–दुःख और; एयिन्–उचित; वॆकुळियुम्–कोप; किळर–उकसाये; वॆम्पित्तान्–तो वह संतप्त हुआ। २६२७

हज़ार करोड़ की संख्या की थी इन्द्रजित् की सेना। वह 'ए' कहने की देरी के अंदर मिट गयी। इस बात ने और पवित्र लक्ष्मण के धनुर्युद्ध-समर्थ कार्य ने इन्द्रजित् के मन में दुःख और उचित ही कोप को पैदा किया तो वह संतप्त हुआ। २९२७

मॆय्हुलैन् दिरुनिल मडन्दै विम्मुऱच्
चॆय्हॊलैत् तॊऴिलैयुञ् जॆन्ऱ तीयवर्
मॊय्हुलत् तिरुदियु मुनिवर् कण्डवर्
कैहुलक् किन्ऱदुङ् गण्णि नोक्किनान् 2928

इरु निल मटन्तै–बड़ी पृथ्वीदेवी; मॆय् कुलैन्तु–शरीर-स्थिति बिगड़कर; विम्मुऱ–दुःखी हो ऐसा; कॊलै चॆय् तॊऴिलैयुम्–वध-कार्यों को; चॆन्ऱ–जो गये थे; तीयवर्–उन खलों के; मॊय् कुलत्तु–भरपूर कुलों का; इऱुतियुम्–नाश; कण्टवर् मुनिवर्–(जिन्होंने) देखा वे मुनि; कै कुलैक्किन्ऱतुम्–हाथों को हिलाते हैं, उसे; कण्णिन्–अपनी आँखों से; नोक्किनान्–देखा (इन्द्रजित् ने)। २६२८

लक्ष्मण उत्तम पृथ्वीमाता को विक्षत और दुःखी करते हुए राक्षस-हनन का काम करते थे। युद्ध में गये खल लोग अपने भरपूर कुल-सहित मर गये। दोनों बातों को देखकर मुनि लोगों के हाथ हिल उठे। इसको इन्द्रजित् ने देखा। २९२८

मानमुम् बाऴ्बड वहुत्त वेळ्वियिन्
मोनमुम् बाऴ्बड मुडिवि लामुरण्
शेनैयुम् बाऴ्बडच् चिऱन्द मन्दिरत्
तेनैयुम् बाऴ्बड विनैय शॆप्पिनान् 2929

मानमुम् पाऴ् पट–मान नष्ट हुआ; वकुत्त–प्रबन्ध जिसका हुआ उस; वेळ्बियिल्–यज्ञ में; मोनमुम्–मौनव्रत; पाऴ् पट–भंग हुआ; मुरण् मुटिविला–बल में असीम; चेनैयुम्–सेना भी; पाऴ् पट–नष्ट हुई; चिऱन्त मन्तिरत्तु–श्रेष्ठ योजना के; एनैयुम् पाऴ् पट–सबके नष्ट होते (देखकर); इनैय चॆप्पिनान्–ये बातें कहीं (इन्द्रजित् ने)। २६२९

अब इन्द्रजित् का गौरव, यज्ञ का आवश्यक मौनव्रत, असीम बलवान सेना और चिंतित अन्य सभी कार्य —सभी नष्ट हो गये तो वह यों कहने लगा। २९२९

वॆळ्ळमै यॆन्दुडन् विरिन्द शेनैयिन्
उळ्ळदक् कुरोणियी रॆन्दो डोयुमाल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅळ्ळरुम् वेळ्वियिऩ् ऱिऩिदि यऱ्ऱुदल्
पिळ्ळैमै यऩैयदु शिदैऩ्दु पेऱ्ऱ्ददाल् 2930

ऐ ऐऩ्तु वॅळ्ळम् उटऩ्–पचीस 'वॅळ्ळम्' की संख्या में; विरिऩ्त–विस्तृत; चेऩैयिऩ्–सेना में; उळ्ळतु–बची रही; ईरैऩ्तु अक्कुरोणि ओटु ओयुम्–दस अक्षौहिणी तक ही है; अॅळ् अरुम् वेळ्वि–अनिंद्य यज्ञ; चिऩैऩ्तु पोऩ्ततु–टूट गया; इऩ्ऱु–आज; इऩ्ऱितु–तृप्तिदायक रीति से; इयऱ्ऱुतल्–करना (सोचना); पिळ्ळैमै–बचकाना; अऩैयतु–सा होगा। २९३०

"पचीस 'वॅळ्ळम्' की संख्या की सेना में अब बची केवल दस अक्षौहिणियों की ही! अनिंद्य यज्ञ बीच में ही नष्ट हो गया। अब इस यज्ञ को अच्छी रीति से संपन्न करने का प्रयास बचकाना-सा होगा।" । २९३०

तॊडङ्गिय वेळ्वियिऩ् ऱूम वॅङ्गऩल्
अडङ्गिय दविऩ्दुळ दमैयु मामऩ्ऱे
इडङ्गॊडु वॅञ्जॅरु वॅऩ्ऱि यिऩ्ऱॅऩक्
कडङ्गिय दॅऩ्बदऱ् केदु वाहुमाल् 2931

तॊटङ्किय–आरब्ध; वेळ्वियिऩ्–यज्ञ में; तूम वॅम् कऩल्–धूम्रसहित भयंकर आग; अटङ्कियतु–थम गयी; अविऩ्तुळतु–बुझ गयी; अमैयुम् आम्–यह बात निश्चित हो गयी; अऩ्ऱे–न; इटङ्कॊटु–विस्तृत; वॅम् चॅरु–भयंकर युद्ध में; वॅऩ्ऱि–विजय; अॅऩक्कु इऩ्ऱु अटङ्कियतु–मेरी आज अंत हो गयी; अॅऩ्पतऱ्कु–इसका; एतु आकुम्–हेतु है। २९३१

"आरब्ध यज्ञ की धुआँ-सह कठोर अग्नि थक गयी, बुझ गयी। यह निश्चित हो गया न? अब यह इसी बात का द्योतक है कि बड़े युद्ध में विजय अब अंत हो गयी; मेरी न रहेगी।" । २९३१

आङ्गदु किडक्कनाऩ् मऩिशर्क् काऱ्ऱलॅऩ्
नीङ्गिऩॅ नॅऩ्बदो रिऴिवु नेरुऱ
वीङ्गुनिऩ् ऱियावरु मियम्ब वॅऩ्गुलत्
तोङ्गुपे राऱ्ऱलु मॊळियु मॊल्हुमाल् 2932

आङ्कु अतु किटक्क–वहाँ वह रहे; नाऩ्–मैं; मऩिचर्क्कु–नरों से; आऱ्ऱलॅऩ्–लड़ नहीं सका; नीङ्किऩॅऩ्–इसलिए भागा; अॅऩ्पतु–ऐसा; ओर्–एक; इऴिवु नेर् उऱ–अपयश हो गया; यावरुम्–ऐसा सभी; ईङ्कु नितुऱु इयम्प–यहाँ रहकर कहते हैं; अॅऩ् कुलत्तु–मेरे कुल का; ओङ्कु–ऊँचा; पेर् आऱ्ऱलुम्–बड़ा बल और; ऒळियुम्–प्रकाश (यश); ऒल्कुम्–मंद पड़ जायगा। २९३२

"वह वहाँ रहे। अब सब यही कहेंगे कि मैं नरों के सामने ठहर नहीं सका और इसलिए भाग आया। यह अपयश मुझ पर लग गया है। मेरे कुल का बल और यश भी मंद पड़ जायगा।" । २९३२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन्दिर वेळ्विपोय् मडिन्द दामॅऩच्
चिन्दैयि ऩिऩैन्दुनॊन् दिरुन्दु तेय्वुऱल्
अन्दरत् तमरर्दा मऩिदर्क् काऱ्ऱलऩ्
इन्दिरर्क् केयिवऩ् वलियॅऩ् ऱेशवो 2933

मन्तिर वेळ्वि–मन्त्रयुक्त यज्ञ; पोय् मटिन्ततु आम्–मिट गया है; ऍऩ–ऐसा; चिन्तैयिऩ् निऩैन्तु–मन में सोचकर; नॊन्तु–दुःख करके; इरुन्तु–रहकर; तेय्वु उऱल्–क्षीण होना; अन्तरत्तु अमरर् ताम्–व्योम के देवों के; इवऩ् मऩितर्क्कु आऱ्ऱलऩ्–यह नरों के आगे ठहर नहीं सकता; इवऩ् वलि–इसका बल; इन्तिरर्क्के–इन्द्र के सम्बन्ध में ही (कारगर) है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; एचवो–निन्दा करने के लिए ही है क्या। २९३३

"यह सोचकर कि मंत्रपुष्ट यज्ञ मिट गया, रोता-घुलता बैठा रहना क्यों? इसलिए कि देव मेरी यह निंदा करें कि यह नर का सामना नहीं कर सकता। इसका बल क्या इन्द्र को हराने में ही समर्थ है?"। २९३३

ऍऩ्ऱवऩ् पहर्हिऩ्ऱ वॅल्लै यिऩ्ऩिरुम्
कुऩ्ऱॊडु मरङ्गळुम् पिणत्तिऩ् कूट्टमुम्
पॊऩ्ऱिऩ करिहळुङ् गविहळ् पोक्किऩ
शॅऩ्ऱऩ पॅरुम्बड यिरिन्दु शिन्दिऩ 2934

ऍऩ्ऱु–ऐसा; अवऩ्–उसके; पकर्किऩ्ऱ ऍल्लैयिल्–कहने के अवसर पर; कविकळ्–वानरों ने; इरुम् कुऩ्ऱॊटु–बड़े पर्वतों को और; मरङ्कळुम्–तरुओं; पिणत्तिऩ् कूट्टमुम्–लाशों के ढेरों और; पॊऩ्ऱिऩ करिकळुम्–मरे हाथियों को; पोक्किऩ–उठा फेंका; पॅरुम् पटै–राक्षसों की बड़ी सेना; इरिन्तु–हटकर; चिन्तिऩ–बिखर गयी। २९३४

जब इन्द्रजित् ऐसा सोचकर दुःख कर रहा था, तब वानरों ने बड़े पर्वतों, तरुओं, लाशों के ढेरों और मरे हुए गजों को राक्षसों पर फेंका। इससे राक्षस-सेना अस्त-व्यस्त हुई और बिखर गयी। २९३४

ऒदुङ्गिऩ रॊरुवर्ही ळॊरुवर् पुक्कुऱप्
पदुङ्गिऩर् नडुङ्गिऩर् पहळि पाय्दलिऩ्
पिदुङ्गिऩर् कुडरुडल् पिळवु पट्टऩर्
मदम्बुलर् कळिऱॅऩच् चीऱ्ऱ माऱ्ऱिऩार् 2935

ऒरुवर् कीळ्–एक के नीचे; ऒरुवर्–दूसरा; ऒतुङ्किऩर्–छिपा; पुक्कुऱ पतुङ्किऩर्–अपने को छिपाकर दुबके; पकळि पाय्तलिऩ्–शरों के आने से; नटुङ्किऩर्–डरे; कुटर् पितुङ्किऩर्–बाहर निकली आँतों वाले हो गये; उटल् पिळवु पट्टऩर्–छिन्न-शरीर हो गये; मतम् पुलर्–मदहीन; कळिऱु ऍऩ–गज के समान; चीऱ्ऱम् माऱ्ऱिऩार्–शान्तक्रोध हो गये। २९३५

कुछ राक्षस एक-दूसरे के नीचे छिपे दुबके रहे। कुछ चलते आते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लक्ष्मण-शरों से भयविकंपित हुए। कुछ लोगों की आँतें बाहर निकल आयीं। मदशुष्क हाथियों के समान राक्षस शांतकोप हो रहे। २९३५

वीरन्वॆङ् गणैयॊडङ् गविहळ् वीशिय
कार्वरै यरक्कर्दङ् गडलिन् वीळ्नदन्
पोर्नॆडुङ् गाल्पॊरप् पॊळियु मामळैत्
तारयु मेहमुम् पडिन्द तन्मैय 2936

वीरन्–वीर लक्ष्मण के; वॆम् कणैयॊटुम्–क्रूर शरों के साथ; कविकळ्–वानरों ने; वीचिय–जो फेंके; कार् वरै–वे काले पर्वत; अरक्कर् तम् कटलिल्–राक्षस-सागर में; वीळ्न्तन्–जो गिरे; पोर् नॆटुम्–ढकेलनेवाले उग्र; काल् पॊर–पवन के झोंके में; पॊळियुम्–बरसनेवाले; मा मळै तारैयुम्–काली मेघ की धारें; मेकमुम्–और मेघ; पटिन्त तन्मैय–(सागर में) गिरे पड़े हों, उस प्रकार दिखे। २९३६

वीर लक्ष्मण के शर और वानर-प्रेषित काले पर्वत, जो राक्षससेना-सागर-मध्य गिरे, वे प्रचंड प्रभंजन के झोंकों से समुद्र में मग्न होती काली वर्षा की धारों और मग्न होते पर्वतों के समान लगे। २९३६

तिरैक्कडर् पॆरुम्बडै यिरिन्दु शिन्दिड
मरत्तिन्निर् पुडैत्तडर्त् तुरुत्त मारुदि
अरक्कनुक् कणित्तॆन वणुहि यन्नवन्
उरक्कदम् जिरप्पन मार्रङ् गूरुवान् 2937

तिरै कटल् पॆरुम् पटै–तरंगाकीर्ण सागर-तुल्य बड़ी सेना; इरिन्तु चिन्तिट–अस्त-व्यस्त हो भाग गयी; मरत्तिन्निल्–पेड़ों से; पुटैत्तु–पीटकर; अटर्त्तु–त्रस्त करके; उरुत्त मारुति–जो बड़ा क्रुद्ध हुआ उस मारुति ने; अरक्कनुक्कु अणित्तु ऎन–राक्षस के समीप; अणुकि–जाकर; अन्नवन्–उसके; उरम् कतम्–सबल क्रोध; चिरप्पन–बढ़ानेवाले; मार्रम् कूरुवान्–शब्द कहे। २९३७

तब तरंगपूर्ण सागर-सदृश राक्षस-सेना को अस्त-व्यस्त हो भगाते हुए हनुमान ने तरुओं से पीटा। क्रुद्ध हनुमान फिर इन्द्रजित् के पास गया और उसके क्रोध को उभाड़नेवाले ये वचन कहे। २९३७

तडन्दिरैप् परवै यन्न शक्कर यूहम् बुक्कुक्
किडन्ददु कण्ड दुण्डे नाणॊलि केट्टि लायो
तॊडर्न्दुपो ययोत्ति तन्नैक् किळैयॊडुन् दुणिय नूरि
नडन्ददॆप् पॊळुदु वेळ्वि मुडिन्ददे करुम नन्रे 2938

तटम्–विशाल; तिरै–तरंग-सहित; परवै अन्न–समुद्र के समान; चक्कर यूकम्–चक्रव्यूह में; पुक्कु किटन्ततु–(तुम्हारा) प्रवेश कर (छिपा) रहना; कण्टतु उण्टे–हमने देख लिया; नाण् ऒलि–डोरे का नाद; केट्टिलायो–सुना नहीं क्या;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॊटर्न्तु पोय्–लगा जाकर; अयोत्ति तन्नै–अयोध्या को; किळैयोटुम्–परिवार के साथ; तुणिय–काटकर; नूऱि–मिटाकर; नटन्ततु–वापस आना; ऎप्पॊऴुतु–कब; वेळ्वि करुमम्–यज्ञकर्म; नन्ऱे मुटिन्ततते–अच्छा पूरा हुआ न । २९३८

अब हमने तुम्हारा विशाल तरंग-सहित सागर-सदृश चक्रव्यूह के मध्य छिपा रहना देख लिया न ? तुमने धनुष की टंकार नहीं सुनी ? तुम तभी अयोध्या में जाकर श्रीरामजी के परिवार को मार आने की बात कहते थे ! वह काम करके तुम लौटे कब ? क्या यज्ञकर्म सुसम्पन्न हो गया ? । २९३८

एन्दहन् ञाल मॆल्ला मिनिऱैदुन् दिवरत् ताङ्गुम्
बान्दळिऱ् पॆरिय तिण्डोट् परदनैप् पऴियिऱ् ऱीर्न्द
वेन्दनैक् कण्डु नीनिन् विल्वलङ् गाट्टि मीण्डु
पोन्ददो वुयिरुङ् गॊण्डे पोनवै पॊरुन्दिऱ् ऱम्मा 2939

इनितु उऱैन्तु–सुख से रहकर; एन्तु अकल् ञालम् ऎल्लाम्–बहुत विस्तृत सारी भूमि को; इवर–ठीक; ताङ्कुम्–धारण करनेवाले; पान्तळिन्–(आदिशेष-) नाग से अधिक; पॆरिय–बड़े; तिण् तोळ्–व सुदृढ़ कन्धों वाले; परतनै–भरत को; पऴियिन् तीर्न्त–अपयशविमुक्त; वेन्तनै–राजा को; नी कण्टु–तुम देखकर; निन्–अपना; विल् वलम्–धनु का बल; काट्टि–प्रदर्शन करके; मीण्टु–फिर; उयिरुम् कॊण्टे–प्राण बचाकर; पोन्ततो–आये क्या; पोनवै–जाना; पॊरुन्तिऱ्ऱु–उचित रहा; अम्मा–आश्चर्य । २९३९

सुदृढ़ तथा सुस्थिर रूप से भूभार वहन करनेवाले आदिशेषनाग के फन से भी बड़े तथा कठोर कंधों के स्वामी, अपयश-विमुक्त भरत को देखो, उन्हें अपना धनुबल दिखाओ; फिर जीवित लौट आओ —क्या यह सम्भव रहा ? क्या ही खूब रहा तुम्हारा यह कहना कि मैं उधर जा रहा हूँ ? । २९३९

अम्बरत् तमैन्द वल्विऱ् चम्बर नावि वाङ्गि
उम्बरुक् कुदवि शॆय्द वॊरुवनुक् कुदयञ् जॆय्द
नम्बियर् मुदल्व रान मूवर्क्कु नाल्व नान
तम्बियैक् कण्डु निन्ऱन् ऱनुवलङ् गाट्टिऱ् ऱुण्डो 2940

अम्परत्तु अमैन्त–आकाश में जो लड़ाई में लगा उस; वल् विल् चम्परन्–सबल धनुर्धर शंबर के; आवि–प्राणों को; वाङ्कि–दूर कर; उम्परुक्कु–देवों की; उतवि चॆय्त–सहायता जिन्होंने की; ऒरुवनुक्कु–उन अनुपम दशरथ के; उतयम् चॆय्त–पुत्रों के रूप में उदित; नम्पियर्–गुणपूर्ण; मुतल्वरान्–अग्रज; मूवर्क्कु–तीन के बाद; नाल्वनात–चतुर्थ; तम्पियै–लघु सहोदर को; कण्टु–देखकर; निन्तन्–तुमने अपना; तनु वलम्–धनु का बल; काट्टिऱ्ऱु उण्टो–दिखाया क्या । २९४०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सबल धनुवीर शंबरासुर को मारकर जिन्होंने देवों की सहायता की थी, उन अनुपम दशरथ जी के पुत्रों के रूप में अवतरित चार भाइयों में जो चौथे हैं, उन शत्रुघ्न से भी भेंट की थी क्या तुमने? उन्हें अपना धनुसामर्थ्य-प्रदर्शन किया था क्या ? । २९४०

तीयॊत्त वयिर वाळि युडलुऱच् चिवन्द शोरि
कायत्तिन् शॆविय नूडुम् वायिनुङ् गण्ग ळूडुम्
पायप्पो यिलङ्गै बुक्कु वञ्जनै परप्पच् चॆय्युम्
मायप्पो राऱ्ऱ लॆल्ला मिन्ऱॊडु माळु मन्ऱे 2941

ती ऒत्त–अग्नि-सदृश; वयिर वाळि–वज्र-बाण; उटल् उऱ–तुम्हारे शरीर पर लगें; कायत्तिन्–(तज्जनित) व्रणों के; चिवन्त चोरि–लाल रक्त; चॆविय़िन् ऊटुम्–कानों से और; वायिनुम्–मुख से; कण्कळ् ऊटुम्–और आँखों से होकर; पाय–बहे; इलङ्कै पोय् पुक्कु–इस स्थिति में लंका में प्रवेश करके; वञ्चनै परप्प–माया फैलाने के निमित्त; चॆय्युम् माय–जो तुम करोगे उस; पोर् आऱ्ऱल् ऎल्लाम्–युद्ध का सारा सामर्थ्य; इन्ऱॊटु माळुम्–आज के साथ समाप्त हो जायगा । २९४१

लक्ष्मणजी के अग्नि-सम वज्रनिभ बाण तुम्हारे शरीर में लगेंगे; व्रण होंगे; लाल रक्त तुम्हारे कानों, मुख और आँखों से होकर बाहर निकलेंगे। इसलिए लंका में जा घुसकर माया रचने का तुम्हारा सारा सामर्थ्य आज ही समाप्त हो जायगा । २९४१

पाशमो मलरिन् मेलान् पॆरुम्बडैक् कलमो पण्डै
ईशनार् पडैयो मायो नेमियो यादो विन्नुम्
वीशनीर् विरुम्बु हिन्ऱी रदऱ्कुनाम् वॆरुविच् चालक्
कूशिनेम् बोदुम् नुम्मै कूऱ्ऱिनार् कुऱुह वन्दार् 2942

पाचमो–नागपाश; मलरिन् मेलान्–कमलासन का; पॆरुम् पटै कलमो–बड़ा अस्त्र; ईचनार् पण्टै पटैयो–परमेश्वर का पुराना अस्त्र; मायोन्–मायावी श्रीविष्णु का; नेमियो–चक्र; इन्नुम्–और; नीर्–तुम; यातो वीच विरुम्पुकिन्ऱीर्–हम पर क्या चलाना चाहते हो; अतऱ्कु–उससे; नाम्–हम; चाल वॆरुवि–बहुत डरकर; कूचिनेम्–संकोच करते हैं; पोतुम्–बस; नुम्मै–तुम्हारे; कूऱ्ऱिनार्–यम; कुऱुक वन्तार्–पास आया है । २९४२

अब तुम क्या अस्त्र चलाओगे ? नागपाश, कमलासन ब्रह्मा का अस्त्र ? परमेश्वर का पाशुपतास्त्र ? या मायावी नारायण का चक्र ? या दूसरा कौन सा अस्त्र ? ओह ! हम बहुत भयभीत हैं ! (व्यंग्य) । बस ! (तुम्हारा माया-जाल अब कुछ नहीं रहा ।) तुम सबको मारने के लिए यम आ चुका है । २९४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वरङ्गणो रुडैय वारु मायङ्गळ् वल्ल वारुम्
बरङ्गॊळ्वा तवरिर् ऱैय्वप् पडैक्कलम् बडैत्त वारुम्
उरङ्गळु नित्ऱ वत्ऱे युम्मैना मुयिरि नोडुञ्
जिरङ्गॊळत् तुणिन्द दन्त दुण्डदु तिऱम्बि नोमो 2943

नीर् वरङ्कळ् उटैय आऱुम्–तुम वर पा चुके हो, वह स्थिति और; मायङ्कळ्–मायाओं में; वल्ल आऱुम्–समर्थ हो वह बात; परम् कॊळ्–श्रेष्ठता रखनेवाले; बातवरित्–देवों से; तॆय्व पटै कलम्–दिव्यास्त्र; पटैत्त आऱुम्–तुम्हारे ग्रहण किये रहने का भाव; उरङ्कळुम्–तुम्हारे बल; नित्ऱ अत्ऱे–स्थिर रहनेवाले हैं न; नाम्–हमने; उम्मै–तुमको; उयिरिनोटुम्–प्राणों के साथ; चिरम् कॊळ–सिर ले लेना; तुणिन्ततु अत्ततु–ठाना था वह निश्चय; उण्टतु–था; अतु तिऱम्पिनोमो–उससे चूके क्या। २९४३

तुम्हारे प्राप्त वरों की महिमा, माया का बल, श्रेष्ठ देवों से प्राप्त हथियारों की स्थिति, तुम्हारे सामर्थ्य —यह सभी स्थायी हैं न ? तो भी हमने तुम्हारे प्राणों के साथ (या प्राणों के रहते) सिरों को चुन लेने का निश्चय किया था ! क्या हम उसमें चूके ? । २९४३

विडन्दुडिक् किन्ऱ कण्डत् तण्णलुम् विरिञ्जन् ऱानुम्
पडन्दुडिक् किन्ऱ नाहप् पाऱ्कडऱ् पळ्ळि यानुञ्
जडन्दुडिक् किलराय् वन्दु ताङ्गिनुञ् जाद ऱिण्णम्
इडन्दुडिक् किन्ऱ दुण्डे यिरुत्तिरो वियम्बु वीरे 2944

विटम् तुटिक्किन्ऱ–जिसमें विष शोभता है ऐसे; कण्टत्तु अण्णलुम्–कण्ठ के प्रभु और; विरिञ्चत् तानुम्–विरंचि और; पाल् कटल्–क्षीरसागर में; पटम् तुटिक्किन्ऱ–फन फैलाये; नाक–सर्प की; पळ्ळियानुम्–शय्याशायी; चटम् तुटिक्किलराय्–शरीर को कंपित न होने देते हुए; वन्तु ताङ्कित्तुम्–आकर सहायता दें तो भी; चातल् तिण्णम्–मरना ध्रुव है; इटम् तुटिक्किन्ऱतु–बायाँ (अंग) फड़कता; उण्टे–है न; इरुत्तिरो–(जीवित) रहोगे क्या; इयम्पुवीर्–कहो। २९४४

चाहे विषशोभित कंठवाले शिवजी, विरंचि, क्षीरसागर-फणी-शेषशायी नारायण आदि विना किसी शरीरकंपन के आकर तुम्हें अवलंब दें— पर तुम्हारी मृत्यु ध्रुव है। तुम्हारे बायें अंग फड़कते हैं कि नहीं। क्या तुम जीवित रहोगे ? बताओ ! । २९४४

कॊल्वनॆन् ऱुन्नैत् तानॆ कुऱित्तॊरु शूळुङ् गॊण्ड
विल्लिवन् दरुहु शार्न्दुन् शेनैयै मुळुदुम् वीट्टि
वल्लैनी पॊरुवा यॆन्ऱु विळिक्किन्ऱान् वरिवि नाणिन्
ऑल्लॊलि यॆय शॆय्यु मोमत्तुक् कुऱुप्पॊन् ऱामो 2945

कुऱित्तु–तुम्हारे सम्बन्ध में; उन्नै तानॆ कॊल्वन्–तुम्हें मैं स्वयं मारूँगा;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्ऱ–ऐसी; ऑरु चूळुम् कॉण्ट–एक प्रतिज्ञा जिन्होंने की; विल्लि–वे धनुर्धर; वन्तु–आकर; अरुकु चार्न्तु–नियराकर; उन् चेतैयै मुळुतुम् वीट्टि–तुम्हारी सारी सेना को मिटाकर; वल्लै नी–प्रतापी तुम; पोरुवाय्–युद्ध करो; ऍन्ऱ–ऐसा; विळिक्किन्ऱान्–बुलाते हैं; ऐय–इन्द्रजित्; विल् नाणिन्–धनु के डोरे की; ऑल् ऑलि–'ऑल' की ध्वनि; चॅय्युम् ओमत्तुम्–जो करते हो उस याग का; उऱुप्पु ऑन्ऱु आमो–एक अंग बन सकेगी क्या। २९४५

तुम्हारे सम्बन्ध में लक्ष्मण ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं ही उसका वध करूँगा। वे धनुर्धर यहाँ आकर तुम्हारी सारी सेना को मिटा चुके। अब ललकार रहे हैं कि 'आओ लड़ने' बाबा! उनके धनु की टंकार-ध्वनि भी तुम्हारे यज्ञहोम का एक अंग है क्या? । २९४५

मूवहै युलहुङ् गाक्कु मुदलवन् तम्बि पूशल्
तेवर्हण् मुनिवर् मऱ्ऱुन् दिऱ्ऱतिऱ्ऱ् तुलहञ् जेर्न्दार्
यावरुङ् गाण निन्ऱा रिनियिऱै ताळ्प्प वॅन्नो
शावदु शरद मन्ऱो वॅन्ऱनन् ऱरुमङ् गाप्पान् 2946

तरुमम् काप्पान्–धर्मसंरक्षक हनुमान; मूवकै उलकुम् काक्कुम्–त्रिलोकपालन-कर्ता; मुतलवन्–आदिनाथ के; तम्पि–छोटे भाई; पूचल् काण–जो युद्ध (करेंगे) उसको देखने; तेवर्कळ–सुर; मुनिवर्–मुनि; मऱ्ऱुम्–अन्य; तिऱ्ऱतिऱ्ऱतु–विध विध; उलकम् चेर्न्तार्–लोकवासी; यावरुम्–सभी; निन्ऱार्–आ खड़े हैं; इनि–अब; इऱै–थोड़ा भी; ताळ्प्पतु–विलंब करना; ऍन्नो–क्यों; चावतु–मरना; चरतम् अन्ऱो–ध्रुव है न; ऍन्ऱनन्–कहा। २९४६

धर्मसंरक्षक हनुमान ने आगे जारी किया— त्रिलोकपालक आदिभगवान के भाई के युद्ध को देखने के निमित्त देव, मुनि और अन्य सभी लोकों के सभी वासी आ जुटे हैं। अब थोड़ा भी विलंब क्यों? मरना तो निश्चित है न? । २९४६

अन्नवा शहङ्गळ् केळा वनलुयिर्त् तलङ्गऱ् ऱोळान्
मिन्नहु पहुवा यूडु वॅयिलुह नहैपोय् वीङ्ग
मुन्नरे वन्दिम् माऱ्ऱ माऱ्ऱलिन् मॉळिन्द वाऱे
दॅन्नदो नीयिरॅन्नै यिहळ्न्ददॅन् ऱिनैय शॉन्नान् 2947

अलङ्कल् तोळान्–मालाभुज; अन्न वाचकङ्कळ–वे बचन; केळा–सुनकर; अनल् उयिर्त्तु–अग्नि की साँस निकालकर; मिन् नकु–बिजली के-से प्रकाश वाले; पकु वाय् ऊटु–फटे मुँह से; वॅयिल् उक–धूप-सा निकालते हुए; नकै–हँसी के; पोय् वीङ्क–उठकर वर्धित होते; मुन्नर् वन्तु–सामने आकर; इ माऱ्ऱम्–ये वचन; आऱ्ऱलिन् मॉळिन्त–जोर के साथ बोलने का; आऱु एतु–हेतु क्या है; नीयिर्–तुम्हारा; ऍन्नै इकळ्न्ततु–मेरा अपमान करना; ऍन्नतो–क्यों; ऍन्ऱु–कहकर; इनैय चॉन्नान्–यह बोला। २९४७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मालाधारी कंधों वाले इन्द्रजित् ने उन वचनों को सुना तो उसे अपार क्रोध हुआ। साँसें आग-सी गरम निकलीं। बिजली का-सा प्रकाश छिटकानेवाले फटे-से मुख के अन्दर से भी लू-सा हवा निकली। हँसी उठी जो अट्टहास में बदली। उसने हनुमान से पूछा कि तुम्हारे मेरे सामने आकर ऐसी बातें कहने के साहस का आधार क्या है? मेरा उपहास कैसे करते हो। उसने आगे कहा। २९४७

मूण्डपोर् तोऱुम् बट्टु मुडिन्दनीर् मुऱैयिऱ् ऱीर्न्दु
मीण्डपो दद्दनै यॅल्लाम् मऱत्तिरो विळिदल् वेण्डि
ईण्डवा वॅन्ऩा निऩ्ऱी रित्तऩ पेरुम् बट्टु
माण्डपो दुयिर्तन् दीयु मरुन्दु वैत्तऩिरो मान 2948

मूण्ट पोर् तोऱुम्–जो हुए उन सभी युद्धों में; पट्टु मुटिन्त नीर्–मरे सो तुम; मुऱैयिल् तीर्न्तु–स्वाभाविक रीति के विपरीत; मीण्ट पोतु–जीवित जब हुए तब; अतऩै ऍल्लाम्–उस सबको; मऱत्तिरो–भूल गये क्या; इत्तऩै पेरुम्–इतने सारे; पट्टु–आहत होकर; माण्ट पोतु–जब मरे तब; उयिर् तन्तु ईयुम्–जीवन प्रदान करनेवाली; मरुन्तु–ओषधि; वैत्तऩिर् मान–जैसे रखते थे वैसे; विळितल् वेण्टि–मरना चाहकर; ईण्ट वा–नियरा आओ; ऍन्ऩा निऩ्ऱीर्–कहते खड़े हो। २९४८

जितने भी युद्ध हुए उन सब में तुम मरे थे। पर प्रकृति के नियमों के प्रतिकूल प्राण पा गये! क्या वह सब भूल गये? जब इतने वानर मेरे प्रहार पाकर मरे तब उन्हें जिलाने की ओषधि तुम रखते थे। वैसे ही अब उन्हें मौत के पास भिजवाने की ओषधि ढूँढ़ते हुए मेरे पास आ गये क्या?। २९४८

इलक्कुव ऩाह मऱ्ऱै यिरामऩ याह वीण्डु
विलक्कुव ऱॅल्लाम् वन्दु विलक्कुह कुरङ्गु वॅळ्ळम्
गुलक्कुल माह माळुङ् गॊऱ्ऱमु मऩिदर् कॊळ्ळुम्
अलक्कणु मुऩिवर् तामु ममरुङ् गाण्ब रऩ्ऱे 2949

इलक्कुवऩ् आक–लक्ष्मण हो; मऱ्ऱै–चाहे; इरामऩै आक–स्वयं राम हो; ईण्टु–यहाँ; विलक्कुवर् ऍल्लाम्–रोकनेवाले सभी; वन्तु–आकर; विलक्कुक–रोकें; कुलम् कुलमाक–दल बाँधकर; कुरङ्कु वॅळ्ळम्–वानर की बाढ़; माळम्–मर मिटें इसमें; कॊऱ्ऱमुम्–मेरी वीरता और; मऩितर् कॊळ्ळुम्–नरों का जो मिलेगा वह; अलक्कणुम्–दुःख भी; अमररुम्–देव और; मुऩिवर् तामुम्–मुनि; काण्पर्–देखेंगे। २९४९

चाहे लक्ष्मण हो चाहे स्वयं राम! सब यहाँ आकर मुझे रोकने का प्रयास भले ही करें। पर यह वानरों की बाढ़ झुण्ड के झुण्ड मर जायगी। उसको साधनेवाली मेरी वीरता को और इससे होनेवाले नर के दुःख को देव और मुनिवृन्द देखेंगे न?। २९४९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यानुडै विल्लु मॅन्बॊऱ् ऱोळ्हळु मिरुक्क विन्नुम्
ऊनुडै युयिर्ह ळियाबु मुय्युमो वॊळ्ळिप्पि लामल्
कूनुडैक् कुरङ्गि नोडु मनिदरैक् कॊन्ऱु शॅन्ऱव्
वानिडत् तॊडर्न्दुङ् गॊल्वॅन् मरुन्दिनु मुय्य माट्टीर् 2950

यानुटै विल्लुम्–मेरा धनुष और; ऍन् पॊन् तोळ्कळुम्–मेरे मनोरम कन्धे; इन्नुम् इरुक्क–अब भी रहते हैं इस हालत में; ऊन् उटै उयिर्कळ् यावुम्–शरीरधारी सभी जीव; ऒळ्ळिप्पु इलामल्–विना मिटे; उय्युमो–बचेंगे क्या; कून् उटै कुरङ्कितोटु–कुबड़े वानरों के साथ; मनितरै–नरों को; कॊन्ऱु–मारकर; अ वानिटै चॅन्ऱुम्–उस व्योमलोक में (जायँ तब भी) जाकर; तॊटर्न्तुम्–पीछा करके भी; कॊल्वॅन्–मारूँगा; मरुन्तिनुम्–ओषधि से भी; उय्य माट्टीर्–बचोगे नहीं। २९५०

जहाँ मेरा धनु और मेरे मनोरम कंधे हैं, वहाँ शरीरधारी सभी जीव विना मरे जीते रहेंगे क्या ? इन कुबड़े वानरों को और नरों को, वे देव बनकर स्वर्ग जायँ तो भी पीछा करके मार दूँगा। ओषधि से ही बचाये नहीं जा सकोगे। २९५०

वेट्किन्ऱ वेळ्वि यिन्ऱु पिळैत्तदु वन्ऱो मॅन्ऱु
केट्किन्ऱ वीर मॅल्लाङ् गिळत्तुवीर् किळत्तल् वेण्डा
ताळ्क्किन्ऱ दिल्लै युम्मैत् तनित्तनित् तलैहळ् पाऱच्
चूळ्क्किन्ऱ वीर मॅन्गैच् चरङ्गळाय्त् तोन्ऱु मन्ऱे 2951

इन्ऱु–आज; वेट्किन्ऱ वेळ्वि–किया जानेवाला यज्ञ; पिळैत्तदु–व्यर्थ हो गया; वॅन्ऱोम्–हम जीत गये; ऍन्ऱु–ऐसा; केट्किन्ऱ–सुनायी देनेवाले; वीरम् ऍल्लाम्–वीरता की सब बातें; किळत्तुवीर्–कह रहे हो; किळत्तल् वेण्टा–मत कहो; उम्मै–तुम्हें; तनि तनि–अलग-अलग; तलैकळ् पाऱ–सिर आधारहीन करने; चूळ्क्किन्ऱ वीरम्–जो सोच रहा हूँ वह वीरता का काम; ऍन् कै चरङ्कळाय्–मेरे हाथ के बाणों के रूप में; तोन्ऱुम्–प्रगट होगा; ताळ्क्किन्ऱतु इल्लै–अब विलंब करना नहीं। २९५१

तुम लोग जो वीरता के वचन कह रहे हो कि आज इसका किया गया यज्ञ बेकार हो गया और हम जीत गये, उसको बन्द करो। तुम वैसा बोलना छोड़ दो। मेरी वीरता, जो तुम्हारे- हर एक के सिर को अलग-अलग तोड़ देने को सोच रही है, मेरे हाथों के शरों के रूप में प्रकट होगी। अब कोई विलंब नहीं होगा। २९५१

मऱ्ऱैला नुम्मैप् पोल वायिनाऱ् चॊल्ल माट्टेन्
वॅऱ्ऱिदान् मुन्नन् दन्दीर् विरैवदु वॅल्लऱ् कॊल्ला
उऱ्ऱुना नुऱुत्त कालत् तॊरुमुऱै यॅदिरे निऱ्कक्
किऱ्ऱिरो वित्तु माण्डु किडत्तिरो नडत्ति रोदान् 2952

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नुम्मै पोल–तुम्हारी भाँति; ऍलाम्–सब; वायित्ताल्–मुख खोलकर; चॊल्ल माट्टेन्–नहीं कहूँगा; मुन्नुम्–पूर्व भी; वॆऱ्ऱि तान् तन्तीर्–मुझे विजय ही दिलायी थी; विरॆबतु–जल्दी करना; वॆल्लऱ्कु ऒल्ला–जीतने के लिए उपयोगी नहीं होगा; नान् उऱ्ऱु ऒरु मुऱै–मैंने खूब एक बार; उऱ्ऱत्त कालत्तु–गुस्सा किया, उस समय; ऍतिरे निऱ्क किऱ्ऱिरो–सामने खड़े रह सको क्या; इन्नुम् माण्टु किटत्तिरो–फिर एक बार मरा पड़ा रहना चाहोगे; नटत्तिरो–या चले जाओगे। २९५२

तुम्हारी भाँति मैं बातों में शेखी न बघारूँगा। पहले भी तुमने विजय ही दिला दी थी। किसी बात में उतावली विजय नहीं दिलाती। एक बार मैं लाल आँखें दिखाऊँ तो तुम ठहर भी सकोगे क्या? अब फिर मरकर पड़ा रहना चाहते हो या बचकर चलोगे?। २९५२

निन्मिन्ग णिन्मि नॆन्ना नॆरुप्पॆळ विळित्तु नीण्ड
विन्मिन्गॊळ् कवश मिट्टान् वीक्किनान् ऱूणि वीरप्
पॊन्मिन्गॊळ् कोदै कैयिऱ् पूट्टिनान् पॊऱुत्तान् पोर्विल्
ऍन्मिन्गॊळ् वयिरत् तिण्डे रेऱिना नॆऱिन्दा नाणि 2953

निन्मिन्कळ्–खड़े रहो; निन्मिन्–खड़े रहो; ऍन्ना–कहकर; नॆरुप्पु ऍळ–आग-सी निकालते हुए; विळित्तु–तरेरकर; नीण्ट–बहुत; विल् मिन् कोळ्–चमकदार; कवचम् इट्टान्–कवच पहन लिया; तूणि वीक्किनान्–तूणीर बाँध लिया; वीर–वीरतायुक्त; पॊन् मिन् कॊळ्–मनोरम और उज्ज्वल; कोतै–अंगुलित्राण; कैयिल् पूट्टिनान्–उँगलियों में पहने; पोर् विल्–युद्ध-धनु; पॊऱुत्तान्–धारण करके; ऍल्–सूर्य के; मिन् कॊळ्–(समान) प्रकाश-युक्त; वयिरम् तिण्–वज्रदृढ़; तेर् एऱिनान्–रथ पर चढ़ा; नाणि ऍऱिन्तान्–डोरा टंकोरा। २९५३

इन्द्रजित् ने आगे जारी रखा। ठहरो, ठहरो। फिर आग-सी उगलती आँखों से तरेरा। बहुत उज्ज्वल कवच पहना। तूणीर बाँध लिया। फिर वीरता-द्योतक मनोहर तथा उज्ज्वल अंगुलित्राण पहन लिये। अन्त में युद्ध-चाप हाथ में ले रथ पर आरूढ़ हुआ और डोरा टंकोरा। २९५३

ऊदिनान् शङ्गम् वानत् तॊण्डॊडि महळि रॊण्गण
मोदिनार् कणत्तिन् मुन्ने मुऴुवदु मुरुक्कि मुऱ्ऱक्
कादिना नॆन्न वानोर् कलङ्गिनार् कयिलै यानुम्
पोदिनान् ऱानु मिन्ऱु पुहुन्ददु पॆरुम्बो रॆन्ऱार् 2954

चङ्कम् ऊतिनान्–शंख बजाया; वानत्तु–देवलोक की; ऒण् तॊटि मकळिर्–उज्ज्वल कंकणधारिणी स्त्रियों ने; ऒण् कण–उज्ज्वल आँखों को; मोतिनार्–पीट लिया; वानोर्–देव; कणत्तिन् मुन्ने–एक क्षण (बीतने) के पहले; मुऴुवनुम् मुरुक्कि–सबको मिटाकर; मुऱ्ऱ कातिनान्–पूर्ण रूप से मार दिया; ऍन्न–ऐसा समझकर; कलङ्किनार्–बेचैन हुए; कयिलैयानुम्–कैलासपति; पोतिनान् तानुम्–और कमलासन; इन्ऱु–आज; पॆरुम् पोर् पुकुन्ततु–बड़ा युद्ध हो गया; ऍन्ऱार्–बोले। २९५४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्द्रजित् ने शंख ले बजाया। उसका नाद सुनकर देवलोक की छविमय कंकणधारिणी अंगनाओं ने अपनी आँखें पीट लीं। देवों ने सोच लिया कि ग़ज़ब हो गया। एक क्षण बीतने के पहले ही सारी वस्तुओं को वह अवश्य तहस-नहस कर देगा। वे बहुत उद्विग्न हुए। स्वयं कैलासपति और कमलासन ने भी कहा कि आज बड़ा युद्ध आरंभ हो गया है। २९५४

इऴैत्तपे रियाहन् दाऩे याज्जॅय्द तवत्ति ऩाले
पिऴैत्तदु पिऴैत्त लाले यिवऩिऩिप् पिऴैक्क लाऱ्ऱान्
अऴैत्तदु विदिये याहु मिलक्कुव ऩम्बि ऩाले
उऴैत्तदु काण्गिऩ् ऱोमॅन् ऱोङ्गिऩा रुम्ब रॅल्लाम् 2955

उम्पर् अॅल्लाम्–सभी देव; याम् चॅय्त तवत्तिऩाले–हमारी की हुई तपस्या से; इऴैत्त–(इन्द्रजित्) कृत; पेर् याकम्–बड़ा यज्ञ; पिऴैत्तदु–अधरा रह गया; पिऴैत्तलाले–उस चूक से; इऩि–अब; इवऩ्–वह; पिऴैक्कल् आऱ्ऱाऩ्–नहीं बच सकेगा; अऴैत्तदु–(लक्ष्मण को) बुला लाया; विदिये आकुम्–प्रारब्ध ही; इलक्कुवऩ् अम्पिऩाले–लक्ष्मण के शर से; उऴैत्तदु–दुःखी होगा; काण्किऩ्ऱोम्–देखनेवाले हैं; अॅऩ्ऱु–ऐसा; ओङ्किऩार्–सन्तोष में बढ़े। २९५५

सभी देवों ने आपस में कहा कि हमारी की हुई तपस्या का फल था कि इन्द्रजित्-कृत बड़ा यज्ञ निरर्थक हो गया। चूँकि यज्ञ में दोष आ गया, अब वह जीवित रह नहीं सकेगा। इसका प्रारब्ध ही लक्ष्मण को इधर बुला लाया है। अब यह लक्ष्मण के अस्त्रों से त्रस्त होगा —हम देखेंगे। इस विचार से उनके मोद का पारा चढ़ा। २९५५

नाण्डॊऴि लोशै वीशिच् चॅबिदॊऱु नडत्त लोडुम्
आण्डॊऴिऩ् मऱन्दु कैयि नडुक्किय मरऩुङ् गल्लुम्
मीण्डऩ मऱिन्दु शोर विऴुन्दऩ विऴुन्द मॅय्ये
माण्डऩ मॅऩ्ऱे युऩ्ऩि यिरिन्दऩ कुरङ्गिऩ् माले 2956

नाण् तॊऴिल् ओचै–डोरे के (टंकार के) काम से उठी ध्वनि; वीचि–फैलकर; चॅवि तॊऱुम्–काम-कान में; नटत्तलोटुम्–ज्योंही लगी त्योंही; कुरङ्किऩ् माले–वानर-पंक्तियाँ; आण तॊऴिल् मऱन्तु–पौरुष-कृत्य भूलकर; कैयिऩ् अटुक्किय–हाथ में रखे हुए; मरऩुम् कल्लुम्–तरुओं और पर्वतों को; मीण्डऩ–फिर से; मऱिन्तु चोर–(भूमि की ओर) लौट के गिरने देते हुए; विऴुन्तऩ–खुद गिर गयीं; विऴुन्त–जो ऐसे गिरे उन्होंने; मॅय्ये माण्टऩम्–हम सचमुच मर गये; अॅऩ्ऱे उऩ्ऩि–वही समझकर; इरिन्तऩ–उठ भागे। २९५६

ज्योंही धनुष की टंकार-ध्वनि वानरों के कानों में पड़ी, त्योंही दल-दल के वानर अपना पौरुष ही भूल गये। उनके हाथ में रहे पर्वत और तरु नीचे खिसक गये और वे स्वयं भी गिर गये। वे यही समझ गये कि हम सचमुच मरे हैं। फिर किसी विध उठकर भागे। २९५६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पडैप्पॅरुन् दलैवर् निऩ्ऱा रल्लव रिऱुदि पऱुम्
अडैप्परुङ् गालक् काऱ्ऱा लाऱ्ऱल दाहिक् कीऱिप्
पुडैत्तिरिन् दोडुम् वेलेप् पुऩलॅन विरिय लुऱ्ऱार्
किडैत्तपे रनुम ऩाण्डोर् नॅडुङ्गिरि किऴित्तुक् कॊण्डाऩ् 2957

पॅरुम्पटै तलैवर् निऩ्ऱार्–बड़े-बड़े सेनापति खड़े रहे; अल्लवर्–इतर; इऱुति पऱुम्–अन्तकारी; अटैप्पु अरुम्–अवार्य; काल काऱ्ऱाल्–युगांत के पवन से; आऱ्ऱलतु आकि–निर्बल बनकर; काऱि–चीरते हुए; पुटैत्तु–टकराते हुए; इरिन्तु ओटम्–अस्त-व्यस्त बहनेवाले; वेलै पुऩल् ऍऩ–समुद्र-जल के समान; इरियलुऱ्ऱार्–अस्त-व्यस्त हुए; किटैत्त–पास जो रहा; पेर् अनुमऩ्–बड़े हनुमान ने; आण्टु–तब; ओर् नॅटु किरि–एक बड़े पर्वत को; किऴित्तु कॊण्टाऩ्–उखाड़ लिया। २९५७

बड़े-बड़े वानर सेनापति खड़े रहे; पर अन्य वानर लोकांतकारी तथा अप्रतिहर युगपवन के कारण चीरते, टकराते हुए बहनेवाले समुद्र-प्रवाह के समान अस्त-व्यस्त हो भागे। तब पास जो रहा उस बड़े हनुमान ने एक बड़े पर्वत को उखाड़कर हाथ में ले लिया। २९५७

निल्लडा निल्लु निल्लु नीयडा वाशि पेशिक्
कल्लॅडा निऩ्ऱ दॅऩ्ऩे पोर्क्कळत् तमरर् काणक्
कॊल्लला मॅऩ्ऱो नऩ्ऱु कुरङ्गॅऩ्ऱाऱ् कूडु मऩ्ऱे
नल्लैपोर् वावा वॅऩ्ऱाऩ् नमऩुक्कुम् नमऩाय् निऩ्ऱाऩ् 2958

नमऩुक्कुम् नमऩाय् निऩ्ऱाऩ्–यम का भी जो यम बना रहा उस इन्द्रजित् ने; निल्लटा निल्लु निल्लु–खड़ा रह रे, खड़ा रह, खड़ा रह; अटा–रे; नी वाचि पेचि–तुम खूब बोलकर; कल् ऍटा निऩ्ऱतु–पत्थर उठा के खड़े हो; ऍऩ्ऩे–यह क्या; पोर् कळत्तु–युद्धस्थल में; अमरर् काण–देवों के देखते; कॊल्ललाम् ऍऩ्ऱो–(मुझे) मारना चाहकर क्या; नऩ्ऱु–अच्छा-अच्छा; कुरङ्कु ऍऩ्ऱाऱ्–बन्दर कहना तो; कूटुम् अऩ्ऱे–हो सकता है न; पोर् नल्लै–युद्ध में अच्छे हो; वा वा–आओ, आओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। २९५८

उसे देखकर यम के भी यम इन्द्रजित् ने कहा— रे रुको ! रुको ! बातें खूब करके तुमने पर्वत उठा लिया, क्यों ? देवों के देखते मुझे मारने का विचार है क्या ? शाबाश ! तुम सचमुच वानर कहने योग्य हो ! युद्ध में भी चतुर हो ! आ, आ ! । २९५८

विल्लॅडुत् तुरुत्तु निऩ्ऱ वीररुळ् वीरऩ् नेरे
कल्लॅडुत् तॅऱिय निऩ्ऱ वनुमऩैक् कण्णि नोक्कि
मल्लॅडुत् तुयर्नद तोळाऱ् कॅऩ्गॊलाम् वरुव दॅऩ्ऩाच्
चॊल्लॅडुत् तमरर् शॊऩ्ऩार् तादैयुन् दुणुक्क मुऱ्ऱाऩ् 2959

विल् ऍटुत्तु–धनु लेकर; उरुत्तु निऩ्ऱ–जो क्रुद्ध खड़ा रहा; वीररुळ् वीरऩ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस वीरों में वीर के; नेरे–सामने; कल् ऍटुत्तु–पत्थर उठाये; ऍऱिय निनैऱ–फेंकने के विचार से जो खड़ा रहा; अनुमनै–उस हनुमान को; अमरर्–देवों ने; कण्णिन् नोक्कि–आँखों से देखकर; मल् ऍटुत्तु–बलसंयुक्त; उयर्न्त तोळाऱ्कु–उन्नत कन्धों वाले पर; ऍन् कॊल् वरुवतु आग्–क्या ही बीतेगा; ऍन्ना–ऐसा; चॊल् ऍटुत्तु–शब्दों में ले; चॊन्नार्–कहा; तातैयुम्–(हनुमान का) पिता भी; तुणुक्कम् उऱ्ऱान्–भयकातर हुआ। २९५९

वीरों में श्रेष्ठ वीर इन्द्रजित् के सामने उस पर फेंकने के लिए पर्वत उठाए हुए खड़े रहनेवाले हनुमान को देवों ने अपनी आँखों से देखकर भय का अनुभव किया और कहा कि अति बलवान तथा उन्नतभुज हनुमान पर क्या ही बीतेगा ? हनुमान के पिता वायु भी दहल उठे। २९५९

वीशिनन् वयिरक् कुन्ऱम् वॆम्बॊऱिक् कुलङ्गळ् विण्णिन्
आशैयि निमिर्न्दु शॆल्ल वायिर मुरुमॊन् ऱाहप्
पूशिन पिळम्बि ऍन्ना वरुमदन् पुरिवै नोक्किक्
कूशिन वुलह मॆल्लाङ् गुलैन्ददव् वरक्कर् कूट्टम् 2960

विण्णिन्–आकाश में और; आचैयिन्–दिशाओं में; वॆम् पॊऱि कुलङ्कळ्–गरम अंगारों की राशियाँ; निमिर्न्तु चॆल्ल–उठकर जायें ऐसा; वयिरम् कुन्ऱम्–वज्र गिरि को; वीचिनन्–फेंका; आयिरम् उरुम्–हजार वज्रों का; ऒन्ऱाक–एक साथ; पूचिन–मिलकर बना; पिळम्पु इतु–पुंज यह; ऍन्ना–ऐसा कहने योग्य रीति से; वरुम् अतन् पुरिवै नोक्कि–आते उसका कृत्य देखकर; उलकम् ऎल्लाम्–सारे लोक; कूचिन–संकुचित हुए; अरक्कर् कूट्टम्–राक्षसों की भीड़ भी; कुलैन्ततु–अस्त-व्यस्त हुई। २९६०

तब हनुमान ने वज्रदृढ़ पर्वत को फेंक दिया और वह आकाश और दिशाओं में अंगारे छितराते हुए चला। सहस्रवज्रों के सम्मिलित पिंड के समान आते हुए उसकी गति को देखकर सारे लोक ठिठुर गये। राक्षस-सेना भी तितर-बितर हो गयी। २९६०

कुण्डल नॆडुविल् वीश मेरुविऱ् कुविन्द तोळान्
अण्डमुङ् गुलुङ्ग वार्त्तु मारुदि यशनि यञ्ज
विण्डलत् तॆऱिन्द कुन्ऱम् वॆऱुन्दुह ळाहि वीळक्
कण्डन नॆय्द तन्मै कण्डिल रिमैप्पिल् कण्णार् 2961

मारुति–मारुति ने; अचनि अञ्च–अशनि को भयभीत करते हुए; विण्तलत्तु–आकाश में; ऍऱिन्त कुन्ऱम्–जो पर्वत फेंका, उस पर्वत को; मेरुविन्–मेरु से अधिक; कुविन्त तोळान्–पुष्ट कन्धों वाले इन्द्रजित् ने; कुण्टलम्–कुण्डलों के; नॆटु विल् वीच–लम्बी रोशनी को बिखेरते; अण्टमुम् कुलुङ्क–अण्डों को कँपाते हुए; आर्त्तु–बड़ा शोर मचाकर; वॆऱुम् तुकळाकि–केवल धूल बनकर; वीळ कण्टनन्–गिरते देखा (गिराया); इमैप्पिल् कण्णार्–अपलकनेत्र देवों ने; ऍय्त तन्मै–उसके बाण चलाने की बात; कण्टिलर्–नहीं देखी। २९६१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरु-तुल्य पुष्ट कंधों वाले इन्द्रजित् ने मारुति द्वारा आकाश में फेंके गये वज्र-भीकर पर्वत को, अपने कुंडलों को हिलाते हुए और अंडों को कँपाते हुए गर्जन करके धूलि में बदलकर गिरा दिया। अपलक देव उसका अस्त्र चलाना नहीं देख पाये। (देवों ने गर्जन सुना, कुंडलों का हिलना देखा और पर्वत को चूर होकर गिरते देखा पर अस्त्र चलाना उनकी दृष्टि में नहीं पड़ा।) । २९६१

माऱॊरु कुन्ऱम् वाङ्गि मरुहुवान् मार्बिऱ् ऱोळिल्
काऱरु कालिऱ् कैयिऱ् कळुत्तिनि नुदलिऱ् कण्णिन्
एऱिन वॆन्ब मन्नो वॆरिमुहक् कडवुळ् वॆम्मै
शीऱिय पहऴि मारि तीक्कडु विडत्तिऱ् ऱोयन्द 2962

माऱु ऑरु–दूसरे एक; कुन्ऱम्–गिरि को; वाङ्कि–लेकर; मऱुवान्–घूमते हुए मारुति के; मार्पिल् तोळिल्–वक्ष और कन्धों पर; काल् तरु कालिल्–पवन को चालित करनेवाले पैरों पर; कैयिल्–हाथ में; कळुत्तिनिल्–कंठ में; नुतलिल्–भाल पर; कण्णिन्–आँखों पर; तीं कटु विटत्तिल्–अग्नि के समान क्रूर विष में; तोय्न्त–सने; मुक–जिनके मुख में; ऍरि कटवुळ्–जलानेवाले अग्नि देवता की; वॆम्मै–गर्मी; चीऱिय–फूत्कार रही थी; पकऴि मारि–वैसे शरों की वर्षा; एऱिन–चढ़ी; ऎन्प–लोग कहते हैं। २९६२

मारुति ने दूसरा पर्वत लिया और उसे फेंकने में ज़ोर लगाने के विचार से घूम रहा था। तभी उसके अंग-अंग पर, कंधों, पवन-जनक पैरों, हाथों, कंठ, भाल और आँखों पर अग्नि-सम विष में सने और अग्नि की-सी गरमी वेग से छुड़ानेवाले शरों की वर्षा-सी हो गयी। ऐसा लोग कहते हैं। २९६२

वॆदिरॊत्त शिहरक् कुन्ऱिन् मरुङ्गुऱ विळङ्ग लानुम्
ऎदिरॊत्त विरुळैच् चीऱि यॆऴुहिन्ऱ वियऱ्कै यानुम्
कदिरॊत्त पहऴिक् कऱ्ऱै कदिरॊळि काट्ट लानुम्
उदिरत्तिन् शॆम्मै यानु मुदिक्किन्ऱ कदिरो नॊत्तान् 2963

वॆतिर्–बाँस के वन; ऑत्त–जिसमें सम रूप से उगे थे, उस; चिकर कुन्ऱिन्–शिखर-सहित पर्वत को; मऱङ्कु उऱ–पास में ले; विळङ्कलानुम्–रहता है इसलिए; ऎतिर् ऑत्त इरुळै–आगे के अन्धकार (राक्षसदल) पर; चीऱि ऎऴुकिन्ऱ–गुस्सा करके उठता है; इयऱ्कैयानुम्–उस भाव से; कतिर् ऑत्त–किरणों के समान; पकऴि कऱ्ऱै–शरों का समूह; कतिर् ऑळि–सूर्य प्रकाश-सा; काट्टलानुम्–दिखा रहा है, इसलिए; उतिरत्तिन् चॆम्मैयानुम्–बहते रक्त की लालिमा से; उतिक्किन्ऱ कतिरोन् ऑत्तान्–उदीयमान सूर्य की समानता करता था (हनुमान)। २९६३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तब हनुमान निम्नलिखित साम्यों के कारण उदीयमान सूर्य के समान दिखा। पास शिखरयुक्त पर्वत था। सामने अंधकार-सम राक्षसों का वैरी बना खड़ा था। शरों की राशियाँ धूप के समान प्रकाश दे रही थीं। बहनेवाले रक्त की लाली सूर्य की लाली का साम्य कर रही थी। २९६३

आयव नयर्द लोडु मङ्गदन् मुदल्व रान्नोर्
काय्शिन्तन् दिरुहि वन्दु कलन्दुळार् तम्मैक् काणा
नीयिर्हळ् निन्मिन् निन्मि निरुमुरै नॅडिय वानिल्
पोयव नॅङ्गे निन्ड्रा नॅन्ड्रनन् पॉरुट् चॅयादान् 2964

आयवन्–वैसा हनुमान; अयर्तलोटुम्–जब शिथिल हुआ तभी; अङ्कतन् मुतल्वरान्नोर्–अंगदादि; काय् चिन्तम्–जला सकने वाले क्रोध के; तिरुकि–ऐंठते; वन्तु कलन्तुळार् तम्मै–जो (लड़ने) आ मिले थे उन्हें; काणा–देखकर; पॉरुळ् चॅयातान्–जो लापरवाह रहा, उस इन्द्रजित् ने; नीयिर्कळ्–तुम लोग; मिन्मिन्–खड़े रहो; निन्मिन्–खड़े रहो; इरुमुरै–दो बार; नॅटिय वानिल् पोयवन्–दूर स्वर्गलोक जो गया था; अॅङ्के निन्ड्रान्–वह लक्ष्मण कहाँ खड़ा है; अॅन्ड्रनन्–पूछा। २९६४

जब ऐसी स्थिति में हनुमान निर्बल हो गया, तब अंगदादि वीर जला सकनेवाले क्रोध के ऐंठते सामने आये। अपने से लड़ने के लिए मिलने आये उनको देखकर इन्द्रजित् ने कोई परवाह नहीं की। उसने उनसे कहा कि तुम खड़े रहो, खड़े रहो। और पूछा कि वह कहाँ है, जो दो बार मेरे अस्त्रों से लम्बे आकाश में (स्वर्ग में) पहुँचा था ?। २९६४

वॅम्बिनर् पिन्नु मेन्मेर् चेरलुम् वॅहुण्डु शीयम्
तुम्बियैत् तॉडर्व दल्लार् कुरङ्गिनैत् तॉडर्व दुण्डो
अम्बिनै माट्टि यॅन्ने शिरिबुपो राड्र वल्लान्
तम्बियैक् काट्टित् तारीर् शादिरो शलत्ति नॅन्ड्रान् 2965

वॅम्पिनर–और गरम होकर अंगदादि वानरों के; पिन्नुम्–और भी; मेन् मेल् चेरलुम्–उत्तरोत्तर बढ़ने पर; वॅकुण्टु–गुस्सा करके (इन्द्रजित् ने); चीयम्–सिंह का; तुमपियै तॉटर्वतु अल्लाल्–गज का पीछा (सामना) करना छोड़कर; कुरङ्किनै तॉटर्वतु उण्टो–वानर का पीछा करना होता है क्या; अम्पिनै–(तुम लोगों पर) शरों को; माट्टि अॅन्ने–लगाने से क्या होगा; चलत्तिल्–गुस्से में; चातिरो–मरोगे क्या; चिरिबु–थोड़ा ही सही; पोर् आड्र वल्लान्–युद्ध कर सकनेवाले के; तम्पियै–छोटे भाई को; काट्टि तारीर्–दिखा दो; अॅन्ड्रान्–कहा। २९६५

यह अपमानद्योतक वचन सुनकर अंगद आदि वीरों के क्रोध का पारा और चढ़ा। वे और भी पास जाने लगे। उसने गुस्से के साथ कहा कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिंह लड़ने के लिए हाथी के पीछे पड़ेगा न कि वानरों के। तुम लोगों का निशाना बनाकर अस्त्र संधानने से क्या लाभ ? तुम क्या कोप के वश में होकर मरना चाहते हो ? थोड़ा ही सही युद्ध कर सकनेवाला एक ही है। उस राम के भाई को मुझे दिखा दो। इन्द्रजित् ने यों कहा। २९६५

अनुमनैक् कण्डि लीरो ववनिलुम् वलियि रोवॅन्
तनवुळ दन्ऱो तोळि नव्वलि तविर्न्द दुण्डो
इनिमुन्नै नीर लीरो वॅव्वलि योट्टि वन्दीर्
मनिदरैक् काटटि नुन्द मलैतोऱुम् वऴिक्कॊ ळीरे 2966

अनुमनै कण्टिलीरो–हनुमान को देखते नहीं क्या; अवनिलुम् वलियिरो–उससे बलवान हो क्या; अॅन् तनु–मेरा धनु; उळतु अन्ऱो–नहीं है क्या; तोळिन् अ वलि–कन्धों का वह बल; तविर्न्ततु उण्टो–हट गया क्या; इनि–अब; नीर्–तुम; मुन्नै नीर् अलिरो–पहले के तुम नहीं हो; अॅ वलि–कौन सा बल; ईट्टि वन्तीर्–बटोर लाये हो; मनितरै काट्टि–नरों को दिखाकर; नुम् तम्–अपने-अपने; मलै तोऱुम्–पर्वतों का; वऴि कॊळीर्–रास्ता लो। २९६६

(उसने आगे पूछा—) क्या तुम (मूर्च्छित) हनुमान को नहीं देखते ? क्या तुम उससे अधिक बलवान हो ? क्या अब मेरा धनु मेरे पास नहीं रहा ? या मेरा भुजबल चला गया ? या तुम लोग पुराने तुम नहीं हो ? क्या नया बल कमा लाये हो ? चलो। उन नरों को दिखा देकर तुम अपने-अपने पर्वत-स्थान की राह लो। २९६६

अॅन्ऱव निळव ऱन्मे लॅऴुहिन्ऱ वियऱ्कै नोक्किक्
कुन्ऱमु मरमुम् वीशिक् कुऱुहिनार् कुऴाङ्ग डोऱुम्
शॅन्ऱन पहऴि मारि मेरुवै युरुवित् तीर्व
ऒन्ऱल कोडि कोडि युळैन्दनर् वलियु मोय्न्दार् 2967

अॅन्ऱु–ऐसा कहकर; अवन्–उसका; इळवल् तन् मेल्–लघुराज पर; अॅऴुकिन्ऱ–आक्रमण करने का; इयऱ्कै–हाल; नोक्कि–देखकर; कुन्ऱमुम् मरमुम–पर्वतों और पेड़ों को; वीचि–फेंकते हुए; कुऱुकिनार्–जो नियराये; कुऴाङ्कळ् तोऱुम्–उन वृन्दों में; मेरुवै उरुवि तीर्व–मेरु को भेदकर जा सकनेवाले; पकऴि मारि–वर्षा के रूप में शर; ओन्ऱु अल–एक नहीं; कोटि कोटि–करोड़ों; चॅन्ऱन–गये; उळैन्तनर्–थके; वलियुम् ओय्न्तार्–निर्बल हुए। २९६७

इन्द्रजित् यह कहते हुए लघुराज लक्ष्मण पर आक्रमण करने जो गया वह हालत देखकर अंगदादि वीर पत्थरों और तरुओं को फेंकते हुए उसके पास गये। झुण्ड के झुण्ड आनेवाले उन पर इन्द्रजित् ने मेरुभेदक शरों की वर्षा-सी करा दी। शर, एक-दो नहीं कोटि-कोटि, उन पर लगे। वे बेचारे पीड़ित हुए और निर्बल हो गये। २९६७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पडुहिन्ऱ दन्ऱो वुन्ऱन् पॅरुम्बडै पहळि मारि
विडुहिन्ऱ दन्ऱो वॅन्ऱि यरक्कनाङ् गाळ मेहम्
इडुहिन्ऱ वेळ्वि माण्ड दिनियिवन् पिळैप्पु ऱामे
मुडुहॅन्ऱा नरक्कन् तम्बि नम्बियुञ् जॅन्ऱु मूण्डान् 2968

अरक्कन् तम्पि–राक्षस (रावण) के भाई (ने); उन् तन् पॅरुम् पटै–आपकी बड़ी सेना; पटुकिन्ऱतु अन्ऱो–मिटती है न; वॅन्ऱि अरक्कन् आम्–विजयी राक्षस रूपी; काळ मेकम्–काला मेघ; पकळि मारि विटुकिन्ऱतु–शरवर्षा करता है; अन्ऱो–न; इटुकिन्ऱ वेळ्वि–किया जानेवाला यज्ञ; माण्टतु–मिट गिया; इनि–अब; इवन् पिळैप्पु उऱामे–यह जीवित न रहे ऐसा; मुटुकु–संकट दें; ऍन्ऱान्–कहा; नम्पियुम्–पुरुषश्रेष्ठ भी; चॅन्ऱु–जाकर; मूण्टान्–लग गये। २९६८

यह हालत देखकर राक्षस (रावण) के भाई विभीषण ने लक्ष्मणजी से कहा कि हे लक्ष्मणजी, आपकी सेना मिटती है। विजयी इन्द्रजित् के रूप में मानो काला मेघ ही शर-वर्षा कर रहा है! उसका आरब्ध यज्ञ आधे में ही बेकार हो गया। अब उसको जीवित छोड़े विना त्रस्त करें। पुरुषश्रेष्ठ भी युद्ध में लगे। २९६८

वन्दानॅडुन् दहैमारुदि मयङ्गामुह मलर्न्दान्
ऍन्दाय्कडि देऱायॅन दिरुतोण्मिशै यॅन्ऱान्
अन्दाहवॅन् ऱुवन्दॅयनु ममैवायिन निमैयोर्
शिन्दाकुलङ् गळैन्दारवन् नॅडुञ्जारिहै तिरिन्दान् 2969

नॅटु तकै मारुति –सुयोग्य मारुति; मयङ्का मुकम–चकित मुख; मलर्न्तान्–प्रफुल्लित करके; वन्तान्–आया; ऍन्ताय्–तात; ऍन्तु–मेरे; इरु तोळ् मिचै–दोनों कन्धों पर; कटितु एऱाय्–शीघ्र सवार हो; ऍन्ऱान्–बोला; ऐयनुम् प्रभु ने भी; अन्ताक–वही हो; ऍन्ऱु–कहा और; उवन्तु–खुश होकर; अमैवु आयिनन्–स्वीकार किया; इमैयोर्–देवों ने; चिन्ताकुलम्–चित्त की व्याकुलता; कळैन्तार–छोड़ी; अवन्–हनुमान; नॅटुम् चारिकै तिरिन्तान्–लंबा संचार करने लगा। २९६९

तब सुयोग्य मारुति, जो पहले मूर्च्छित हो गया था, अब हरा और प्रसन्नमुख होकर लक्ष्मणजी के पास आया और बोला कि तात! मेरे कंधों पर शीघ्र चढ़ जाइए। लक्ष्मण ने भी 'वैसा ही हो' कहकर स्वीकार कर लिया। तब देवताओं की चित्त की आकुलता दूर हुई। वह हनुमान लक्ष्मण को धारण करते हुए खूब सब जगह संचार करने लगा। २९६९

कारायिर मुडनाहिय दॅन्नलाहिय करियोन्
ओरायिरम् बरिपूण्डदॉ रुयर्तेर्मिशै युयर्न्दान्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नेरायिऩ रिरुवोर्हऴु नॆडुमारुदि निमिर्न्दाऩ्
पेरायिर मुडैयाऩॆऩ्ऱ तिशैयॆङ्गणुम् बॆयर्न्दाऩ् 2970

आयिरम् कार् उठऩ् आकियतु–हज़ार मेघ एकत्रित हुए; ऍऩ्ऱल् आकिय–जैसे बना; करियोऩ्–काला इन्द्रजित्; ओर् आयिरम् परि–एक हज़ार अश्वों के; पूण्टतु–जुते; ओर् उयर् तेर् मिचै–एक ऊँचे रथ पर; उयर्न्ताऩ्–चढ़ा; इरुवोर्कऴुम्–दोनों; नेर् आयिऩर्–आमने-सामने हो गये; नॆटु मारुति–ऊँचा मारुति; निमिर्न्ताऩ्–तनकर खड़ा हुआ; आयिरम् पेर् उटैयाऩ् ऍऩ्ऱ–सहस्रनामी (त्रिविक्रम) के समान; तिचै ऍङ्कणुम्–सारी दिशाओं में; पॆयर्न्ताऩ्–संचार किया। २९७०

एकत्रित सहस्र घन-सम काला इन्द्रजित् सहस्र अश्वों के जुते रथ पर चढ़ा। दोनों समान हो गये। आमने-सामने हुए लम्बे क़द का मारुति और तनकर खड़ा हो गया और सहस्रनामी त्रिविक्रम के समान सर्व सभी दिशाओं में डग भरने लगा। २९७०

तीयॊप्पऩ वुरुमॊप्पऩ वुयिर्वेट्टऩ तिरियुम्
पेयॊप्पऩ पशियॊप्पऩ पिणियॊप्पऩ पिऴैया
मायक्कॊडु विऩैयॊप्पऩ मऴुवॊप्पऩ कऴुदिऩ्
तायॊप्पऩ शिलवाऴिहऴ् तुरन्दाऩ्ऱुयिल् तुऱन्दाऩ् 2971

तुयिल् तुऱन्ताऩ्–निद्रात्यागी ने; ती ऒप्पऩ–अग्नि-सम; उरुम् ऒप्पऩ–अशनि-सम; उयिर् वेट्टऩ–जीवों को चाहकर; तिरियुम्–घूमनेवाले; पेय् ऒप्पऩ–पिशाचों से तुल्य; पचि ऒप्पऩ–भूख के समान; पिणि ऒप्पऩ–रोग-सरीखे; पिऴैया–अचूक; कॊटु–क्रूर; माय विऩै–माया-कार्य के; ऒप्पऩ–समान रहनेवाले; मऴु ऒप्पऩ–परशु-सम; कऴुतिऩ् ताय्–'कऴुतु' जाति के भूतों की माता के; ऒप्पऩ–समान रहनेवाले; चिल वाऴिकऴ्–कुछ शर; तुऱन्ताऩ्–चलाये। २९७१

निद्रात्यागी सुमित्रानन्दन ने इन्द्रजित् पर कुछ ऐसे शर चलाये जो अग्नि, अशनि, जीव-लालची पिशाच, भूख, रोग, अचूक माया-कृत्य, परशु और "कऴुतु" भूत की माता के समान गुण वाले थे। २९७१

अव्वम्बिऩै यव्वम्बिऩि ऩऱुत्ताऩिह लरक्कऩ्
ऍव्वम्बिऩि युलहत्तुळ वॆऩ्ऩुम्बडि यॆय्दाऩ्
ऍव्वम्बर मॆव्वॆण्डिशै यॆव्वेलैहऴ् पिऱवुम्
वव्वुङ्गडै युहमामऴै पॊऴिहिऩ्ऱदु माऩ 2972

इकल् अरक्कऩ्–बलवान राक्षस ने; अ अम्पिऩै–उस-उस अस्त्र को; अ अम्पिऩिल्–उसी (के योग्य) अस्त्र से; अऱुत्ताऩ्–काट गिराया; ऍ अम्परम्–सारे आकाश को; ऍ ऍण्तिचै–सारी आठों दिशाओं को; ऍ वेलैकऴ्–सारे समुद्रों को; पिऱवुम्–और अन्यों को; वव्वुम्–प्रसकर मिटानेवाली; कटै युकम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

युगांत की; मा मळै–प्रचण्ड वर्षा; पोळिकिन्रतु–बरसती; मात्त–जैसे; उलकत्तु–संसार में; अँ अम्पु–कौन सा अस्त्र; इत्ति उळतु–अब (इससे बढ़कर) है; अँन्नुम् पटि–ऐसा कहने योग्य प्रकार से; अँय्तान्–चलाया। २९७२

इन्द्रजित् ने उस-उस अस्त्र को उसके योग्य शर से काट गिराया। सारे आकाश, सभी दिशाओं और समुद्रों को ग्रस लेनेवाले युगक्षय के मेघ धारें गिरा रहे हों, ऐसा उसने शर चलाये। यही नहीं लोग यह कहें कि संसार में इनके समान कौन सा अस्त्र है ? —ऐसे अस्त्र चलाये। २९७२

आयोनॅडुङ् गुरुविक्कुल मॅन्नुञ्जिल वम्बाल्
पोयोडिडत् तुरन्दानवै पॉरियोवॅन मरियत्
तूयोनुमत् तुणैवाळिहळ् तॉडुत्तानवै तडुत्तान्
तीयोनुमक् कणत्तायिरम् नॅडुञ्जारिहै तिरिन्दान् 2973

आयोन्–उस (इन्द्रजित्) ने; कुरुविक्कुलम् अँन्नुम्–'पक्षीदल' नाम के; चिल नॅटु अम्पाल्–कुछ लंबे शरों को; पोय् ओटिट–जाकर लगें ऐसा; तुरन्तान्–चलाया; अवै–उन्हें; तूयोनुम्–पवित्र मूर्ति ने भी; पॉरियो अँन–चूर्ण हैं क्या ऐसा; मरिय–काटने के लिए; अ–श्रेष्ठ; तुणै वाळिकळ्–शरद्वय; तॉटुत्तान्–चलाकर; अवै तटुत्तान्–उन्हें रोका; तीयोनुम्–दुष्ट भी; अ कणत्तु–उस क्षण में; आयिरम्–हजार; नॅटुम् चारिकै–लंबा संचार; तिरिन्तान्–घूमा। २९७३

और भी उसने 'पक्षीवृन्द' समझने योग्य अनेक अस्त्र लक्ष्मण पर छोड़े। उन्हें पवित्रमूर्ति ने 'पहले ही चूर्ण थे क्या ?' —यह संदेह उत्पन्न करते हुए श्रेष्ठ दो अस्त्र चलाकर बेकार कर दिया। दुष्ट इन्द्रजित् भी तब हजारों तरह से घूम गया। २९७३

कल्लुन्नॅडु मलैयुम्बल मरमुङ् गडैहाणुम्
पुल्लुञ्जिरु कॉडियुम् मिडैतॅरिया वहैपुरियच्
चॅल्लुन्नॅरि तॉरुञ्जॅन्रन्न तॅरुङ्गाल्पुरै मरुवोन्
शिल्लिन्मुदिर् तेरुञ्जिन वयमारुदि ताळुम् 2974

तॅरुम्–मारक; काल् पुरै–(चण्ड-) मारुत-सम; मरुवोन्–वीर; मुतिर् चिल्लिन्–पक्के पहियों का; तेरुम्–रथ और; चिन–क्रोधी; वयम्–विजयी; मारुति ताळुम्–मारुति के पैर; कल्लुम्–चट्टानों; नॅटु मलैयुम्–बड़े पर्वतों को; पल मरमुम्–अनेक तरु; कटै काणुम् पुल्लुम्–जीव-धारियों में सबसे नीचे रहनेवाली घास को; चिरु कॉटियुम्–छोटी लताओं को; इटै तॅरिया वकै–अन्तर न दिखे ऐसा; पुरिय–नष्ट करते हुए; चॅल्लुम् नॅरि तोरुम्–गम्य सभी स्थलों में; चॅन्रन्न–गये। २९७४

प्राणघातक चंडमारुत-तुल्य वीर रावणि के पक्के पहियों का रथ और क्रोध-भरे और विजयी वीर हनुमान के पैर चट्टानों, पर्वतों, तरुओं,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जीवकोटि में अंतिम घासों और छोटी लताओं में कोई भेद न करते हुए, सबको एक-सम मिटाते हुए, गम्य सभी मार्गों में गये। २९७४

इरुवीररु मिवनिन्नव निवनिन्नव नॅन्नच्
चॅरुवीररु मऱियावहै तिरिन्दार्कणॅ शॉरिन्दार्
ऑरुवीररु मिवरॉक्किल रॅनवानव रुवन्दार्
पॉरुवीरॅयुम् बॉरुवीरॅयुम् बॉरुदालॅनप् पोरुदार् 2975

इरु वीररुम्–दोनों वीर; इवन् इन्नवन्–यह अमुक है; इवन् इन्नवन्–यह अमुक है; ऍन्न–पहचान कर कहना; चॅरु वीररुम्–(पास रहे) युद्धवीर भी; अऱिया वकै–न जान पाएँ ऐसा; तिरिन्तार्–घूमे; कणॅ चॉरिन्तार्–शर बरसाये; पॉरु वीरॅयुम्–लड़ाकू समुद्र और; पॉरु वीरॅयुम्–लड़ाकू समुद्र; पॉरुताल् ऍन्न–लड़ते हों वैसे; पॉरुतार्–टकराये; वानवरुम्–देवों ने भी; ऑरु वीररुम्–कोई भी वीर; इवर् ऑक्कु इलर्–इनके समान नहीं; ऍन्न–कहकर; उवन्तार्–मोद पाया। २९७५

पास रहनेवाले वीर भी पहचान नहीं सके कि यह इन्द्रजित् है या लक्ष्मण ? इस भाँति वे घूमे। एक-दूसरे पर शर बरसाये। युद्ध-रत दो सागर टकराते हों, ऐसा दोनों लड़े। देव भी यह कहते हुए आनंद कर रहे थे कि ऐसे वीर संसार में कोई और नहीं हैं। २९७५

विण्शॅल्हिल शॅल्हिन्ऱन विशिहम्मॅन विमैयोर्
कण्शॅल्हिल मनञ्जॅल्हिल कणिदमुरु मॅनिनोर्
ऍण्शॅल्हिल नॅडुङ्गालवन् इडैशॅल्हिल् नुडन्मेऱ्
पुण्शॅय्वन वल्लालॉरु पॉरुळ्शॅय्वन तॅरिया 2976

विचिकम्–विशिख; चॅल्किन्ऱन–जो चलते हैं; विण् चॅल्किल–आकाश में नहीं जाते; ऍन्न–कहकर; इमैयोर्–देवों की; कण् चॅल्किल–दृष्टि नहीं जाती; मनम् चॅल्किल–मन नहीं जाता; कणित मुरुम् ऍनिन्–गिनती में लाना चाहो तो; ओर् ऍण् चॅल्किल्–कोई संख्या नहीं; इटै–उनके मध्य; नॅटुम् कालवन्–लंबा वायुदेव भी; चॅल्किलन्–जा नहीं सका; उटन् मेल्–शरीर पर; पुण् चॅय्वन–अल्लाल्–व्रण बनाना छोड़कर; ऑरु पॉरुळ् चॅय्वन–कोई दूसरा काम करते; तेरिया–न जाने जाते। २९७६

उनके द्वारा प्रेरित शर इतनी तेज़ी से गये कि देवों की दृष्टि या मन नहीं समझ सके। वे तो यह कहने लगे कि वे शर आकाश में नहीं चले। वे किसी गिनती में न आये। उनके मध्य पवन भी चल नहीं सका। शरीरों पर व्रण लगाते थे, इसको छोड़ उनकी और कोई प्रवृत्ति दृष्टि में पड़ती ही नहीं थी। २९७६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍरिन्देऱिऩ तिशैयावैयुम् मिडियामॆऩप् पॊडियाय्
नॆरिन्देऱिऩ नॆडुनाणॊलि पडर्वाऩिऱै युरुमिऩ्
शॊरिन्देऱिऩ शुडुवॆङ्गणै तॊडुन्दारहै मुळुदुम्
करिन्देऱिऩ वलहियावैयुङ् गऩल्वॆम्बुहै कदुव 2977

नॆटु–लंबे; नाण् ऒलि–डोरों की टंकार-ध्वनि; इटि आम् ऍऩ–वज्र के समान थी; तिचै यावैयुम्–सभी दिशाएँ; पॊटियाय् नॆरिन्तु–चूर्ण के रूप में; एऱिऩ–बनीं; ऍरिन्तु एऱिऩ–जल गयीं; चुटु–तापक; वॆम् कणै–गरम अस्त्र; पटर् वाऩ्–विशाल आकाश में; निरै उरुमिऩ्–भरे वज्र के समान; चॊरिन्तु एऱिऩ–गिरे और फटे; उलकु यावैयुम–सारे लोकों को; कऩल्–आग का; वॆम् पुकै–गरम धुआँ; कतुव–ढक गया; तॊटुम् तारकै–पास-पास रहे सभी तारे; मुळुतुम् करिन्तु एऱिऩ–सब जल गये। २९७७

लम्बे डोरों की ध्वनि अशनि के समान हुई तो सारी दिशाएँ चूर-चूर होकर जल गयीं। अग्निमय क्रूर बाण विशाल आकाश-मध्य अशनि के समान सर्वत्र गिरे। सारे संसार में आग का धुआँ फैल गया और संकुलित रहे तारे सारे झुलस गये। [तमिळ में संयुक्त क्रिया के रूप में 'पो' का प्रयोग होता है जैसे हिन्दी में 'जा'। इधर "एऱिऩ" (चढ़े) उसी 'जा' के अतितीव्र अर्थ में प्रयुक्त है।]। २९७७

वॆडिक्किऩ्ऱऩ तिशैयावैयुम् विळुहिऩ्ऱॆऩ विडिवन्
दिडिक्किऩ्ऱऩ शिलैनाणॊलि यिरुवाय्हळु मॆदिराक्
कडिक्किऩ्ऱऩ कऩल्वॆङ्गणै कलिवाऩुऱ विशैमेल्
पॊडिक्किऩ्ऱऩ पॊऱिवॆङ्गऩ लिवैहण्डऩर् पुलवोर् 2978

इटि वऩ्तु विळुकिऩ्ऱॆऩ–वज्र आकर गिरते जैसे; चिलै नाण् ऒलि–धनुष के डोरों की ध्वनि; इटिक्किऩ्ऱऩ–कड़कती है; तिचै यावैयुम्–सारी दिशाएँ; वॆटिक्किऩ्ऱऩ–फटती हैं; इरु वाय्कळुम्–दोनों के (अस्त्रों के) मुख; ऍतिरा–आमने-सामने रहकर; कटिक्किऩ्ऱऩ–काटते हैं; कऩल् वॆम् कणै–अग्निसम गरम अस्त्र; कलिवाऩ् उऱ–बड़े आकाश में जाते हैं; विचै मेल्–तेज़ी के कारण; वॆम्कऩल् पॊऱि–गरम अंगारे; पॊटिक्किऩ्ऱऩ–बिखरते हैं; इवै–इनको; पुलवोर्–देवों ने; कण्टऩर्–देखा। २९७८

डोरों के टंकार अशनि-सम कानों में गिरते हैं (इससे) दिशाएँ फटती हैं। दोनों के बाणों के मुख (अग्रभाग) आपस में काटते हैं (टकराते है)। अग्निवर्षी बाण आकाश में चढ़ते हैं और उनकी तेज़ी से भयानक अंगारे बिखरते हैं। देवों ने यह सब देखा। २९७८

कडल्वऱ्ऱिऩ मलैयुक्कऩ परुदिक्कऩल् कदुवुऱ्
ऱुडल्पऱ्ऱिऩ मरमुऱ्ऱऩ कऩल्पऱ्ऱिऩ वुदिरम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शुडर्पऱ्ऱिन शुऱुमिक्कदु तुणिपट्टुदिर् कणैयिन्
तिडर्पट्टदु परवैक्कुळि तिरियुऱ्ऱदु पुवनम् 2979

कटल् वऱ्ऱिन–समुद्र सूखे; मलै उक्कन–पर्वत टूटे; परुति उटल्–सूर्य का शरीर; कनल् कतुवुऱ्ऱु–आग लगकर; पऱ्ऱिन–जला; कनल् पऱ्ऱिन–आग लगे; मरम् उऱ्ऱन–तरु जले; उतिरम्–रक्त; चुटर् पऱ्ऱिन–दमक के साथ; चुऱु मिक्कतु–जलने की गन्ध अधिक देने लगा; तुणि पट्टु–कटकर; उतिर्–नीचे गिरनेवाले; कणैयिन्–शरों से; परवै कुळि–समुद्र का गड्ढा; तिटर् पट्टतु–टीला बना; पुवनम्–भुवन; तिरियुऱ्ऱतु–हिल गया। २९७९

इन बाणों के कारण समुद्र सूखे। सूर्य के शरीर आग लगकर जले। आग लगकर तरु झुलसे। रक्त चमका और आग में जलने की गन्ध अधिक हो गयी। कटे बाणों के गिरने से समुद्र का गड्ढा टीला बन गया। भूमि हिल गयी (या विकृत हो गयी)। २९७९

ऍरिहिन्ऱन वयिल्बॆङ्गणै यिरुशेनैयु मिरियत्
तिरिहिन्ऱन पुडैनिन्ऱिल तिशैशॆन्ऱन शिदऱिक्
करिपॊन्ऱिन परिमङ्गिन कविशिन्दिन कडल्पोल्
शॊरिहिन्ऱन पॊरुशॆम्बुनल् तॊलैहिन्ऱन कॊलैयाल् 2980

ऍरिकिन्ऱन–आग बिखेरनेवाले; अयिल्–तीक्ष्ण; वॆम् कणै–गरम अस्त्रों से; इरु चेनैयुम् इरिय–दोनों सेनाएँ हटीं; तिरिकिन्ऱन–और घूमती हैं; पुटै निन्ऱिल–पास खड़ी भी नहीं रहतीं; चितऱि–बिखरकर; तिचै चॆन्ऱन–दिशा-दिशा में चली जाती हैं; करि पॊन्ऱिन–हाथी मरे; परि मङ्किन–अश्व मिटे; कवि–वानर; चिन्तिन–भागे; पॊरु–युद्ध के कारण निकलनेवाला; चॆम् पुनल्–लाल रक्त; कटल् पोल्–समुद्र के समान; चॊरिकिन्ऱन–गिरता है; कॊलैयाल्–वध होकर; तॊलैकिन्ऱनर्–मिटते हैं। २९८०

आग-सी बिखेरनेवाले तीक्ष्ण तापक शरों के कारण दोनों सेनाएँ अस्त-व्यस्त हो घूमती हैं। वे पास ही नहीं भटकतीं। बिखरकर दिशा-दिशा में भाग गयीं। हाथी मरे। अश्व मिटे। वानर भागे। युद्ध के फलस्वरूप निकला रक्त समुद्र के समान गिरता है। वधकार्य से जीव मटियामेट हो जाते हैं। २९८०

पुरिन्दोडिन पुहैन्दोडिन पॊऱिन्दोडिन पुहैपोय्
ऍरिन्दोडिन करिन्दोडिन इडमोडिन वलमे
तिरिन्दोडिन शॆऱिन्दोडिन विरिन्दोडिन तिशैमेल्
शरिन्दोडिन करुङ्गोळरिक् किळैयान्विडु शरमे 2981

करुम् कोळरिक्कु–श्यामवर्ण केसरी श्रीराम के; इळैयान्–कनिष्ठ सहोदर द्वारा; विटु चरम्–प्रेरित शरों में; पुरिन्तु ओटिन–(कुछ) ऐंठते चले; पुकैन्तु ओटिन–धुआँ फैलाते चले; पॊऱिन्तु ओटिन–अंगारे छितराते चले; पुकै पोय्–धुआँ-रहित;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍरिन्तु ओटित्त–जलते चले; करिन्तु ओटित्त–कोयला बनकर चले; इटम् ओटित्त–बायें चले; वलमे तिरिन्तु ओटित्त–बायें घूम चले; चॅरिन्तु ओटित्त–सटे चले; विरिन्तु ओटित्त–अलग-अलग चले; तिचै मेल्–दिशा पर; चरिन्तु ओटित्त–तिरछे चले। २९८१

श्यामकेसरी श्रीराम के कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मण ने जो शर चलाये, वे कुछ ऐंठते चले; कुछ धुआँ उगलते हुए चले। कुछ अंगारे छितराते हुए चले। कुछ धूम्ररहित होकर धधकती ज्वाला के साथ गये। कुछ कोयला बनकर गये। कुछ बायें गये। कुछ दायें गये। कुछ सटे हुए चले और कुछ अलग-अलग चले। कुछ दिशाओं में तिरछे चले। २९८१

नीरोत्तत्त नॅरुप्पॊत्तत्त पॊरुप्पॊत्तत्त निमिरुम्
कारोत्तत्त वुरुमॊत्तत्त कडलॊत्तत्त कदिरोन्
तेरॊत्तत्त विडैमेलवन् शिरमॊत्तत्त वुलहिन्
वेरॊत्तत्त शॅरुवॊत्तिह लरक्कन्विडु विशिहम् 2982

इकल् अरक्कन्–सशक्त राक्षस; चॅरु ऒत्तु–युद्ध में सम रहकर; विडु विचिकम्–जो विशिख छोड़ता था वे; नीर् ऒत्तत्त–प्रवाह-सम लगे; नॅरुप्पु ऒत्तत्त–अग्नि-सम थे; पॊरुप्पु ऒत्तत्त–पर्वत-सरीखे थे; निमिरुम् कार् ऒत्तत्त–उठकर चलते मेघों के सदृश थे; उरुम् ऒत्तत्त–वज्रतुल्य थे; कडल् ऒत्तत्त–समुद्र-सम थे; कतिरोन्–किरणमाली के; तेरॊत्तत्त–रथ के समान थे; विटै मेलवन्–ऋषभारूढ़ (शिव) के; चिरम् ऒत्तत्त–सिर के समान थे; उलकिन् वेर् ऒत्तत्त–लोक की जड़ (मेरु) के समान थे। २९८२

बलवान इंद्रजित् ने भी लक्ष्मण के सम रहकर विशिख चलाये। उनमें कुछ जलप्रलय के समान रहे; कुछ युगांत की अग्नि के समान रहे। कुछ पर्वतों के समान रहे। कुछ आकाश में उठे चलनेवाले मेघों के समान रहे। कुछ वज्र के समान रहे। कुछ समुद्र के समान रहे। कुछ किरणमाली के रथ के समान रहे। कुछ ऋषभवाहन के (पाँच) सिरों के समान रहे। कुछ लोकमूल मेरु के समान रहे। २९८२

एमत्तडङ् गवशत्तिह लहलत्तत्त विरुवोर्
वामप्पॅरुन् दोण्मेलत्त वदत्तत्तत्त वयिरत्
तामत्तुणै कुरङ्गोडिरु शरणत्तत्त तत्तम्
कामक्कुल मडमङ्गैयर् कडैक्कण्णॅत्तक् कणैहळ् 2983

काम–काम्य; कुल मट मङ्कैयर्–कुलीन बाललनाओं की; कटैक्कण् ऍत्त–तिरछी नजर के समान (भेद चलनेवाले); तम् तम् कणैकळ्–उन-उनके अस्त्र; एमम्–रक्षणार्थ; तटम् कवचत्तु–विशाल कवच-रक्षित; इकल् अकलत्तत्त–कठोर वक्ष में लगे; वामम्–मनोहर; पॅरुम् तोळ् मेलत्त–कंधों पर के हुए; वतत्तत्तत्त–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बदन पर लगे; वयिरम्–वज्र-दृढ़; ताम्–सुन्दर; तुणै कुऱङ्कोटु–ऊरुद्वय और; चरणत्तत–पैरों पर लगे। २९८३

परस्पर जो बाण उन दोनों ने चलाये वे काम्य बाल-ललनाओं की तिरछी दृष्टि के समान भेद चले और दोनों के रक्षणार्थ पहने कवचावृत वक्षों में लगे। मनोरम व विशाल भुजाओं में लगे। उनके वदनों पर लगे। वज्र-सम मनोहारी ऊरुद्वयों और पैरों में चुभे। २९८३

अॅन्नाळिऩि नॅत्तेवर्ह ळॅत्तानव रॅवरे
अऩ्ऩार्शरु वॉत्तारॅऩ विमैयोरॅडुत् तार्त्तार्
पॉऩ्ऩार्शिलै यिरुकाल्हळु मॉरुकाल्पॉऱै युयिरा
मुऩ्ऩाळिऩि लिरण्डाम्बिऱै मुळैत्तालॅऩ वळैत्तार् 2984

पॉऩ् आर् चिलै–स्वर्णमय धनुओं को; पॉऱै उयिरा–भार दूर करने; मुऩ् नाळिऩिल्–कृष्णपक्ष के; इरण्टाम् पिऱै–दूज का चाँद; मुळैत्ताल् अॅऩ–उगा हो जैसे; इरु काल्कळुम्–दोनों (धनुषों के) छोरों को; ओरु काल्–एक ही समय में; वळैत्तार्–(दोनों ने) झुकाया; इमैयोर्–देव; अॅ नाळिऩिऩ्–किस दिन; अॅ तेवर्कळ्–कौन से देवों; अॅ तानवर्–कौन दानवों ने; अॅवरे–किसने; अऩ्ऩार् चॅरु–उनके युद्ध के; ओत्तार्–समान युद्ध किया था; अॅऩ–ऐसा; अॅटुत्तु उरॅत्तार्–खोलकर बोले। २९८४

दोनों ने स्वर्णिम चापों को भार-निवारणार्थ दोनों छोरों को झुकाया और वे पूर्वपक्ष के दूज के चाँद के समान बने। देवों ने मुख खोल कर विस्मय किया कि ऐसा युद्ध कहाँ, कब और किन देवों ने या दानवों ने या और किन्होंने किया था ? । २९८४

वेहिऩ्ऱऩ वुलहिङ्गिवर् विडुहिऩ्ऱ विशिहम्
बोहिऩ्ऱऩ कडल्वॅऩ्दऩ विमैयोर्हळुम् बुलर्ऩ्दार्
आहिऩ्ऱदॉ रळिहालमि दामऩ्ऱॅऩ वयिर्त्तार्
नोहिऩ्ऱऩ तिशैयाऩैहळ् शॅविनाणॉलि नुळैय 2985

इङ्कु–यहाँ (इस युद्ध में); इवर्–ये (दोनों); विटुकिऩ्ऱ–(जो) छोड़ते हैं; विचिकम्–विशिख; पोकिऩ्ऱऩ–चलते हैं; उलकु वेकिऩ्ऱऩ–लोक पक जाते हैं; कटल् वॅऩ्तऩ–समुद्र झुलसे; इमैयोर्कळुम्–देव भी; पुलर्ऩ्तार्–(मुख में) सूख गये; अऩ्ऱ–तब; ओर् अळिकालम्–एक अपूर्व नाशकाल; इतु आकिऩ्ऱतु–यह आ गया; आम् अॅऩ–है, ऐसा; अयिर्त्तार्–भ्रमित हो गये; नाण् ओलि–ज्यास्वन; चॅवि नुळैय–कान में घुसा; तिचै यानैकळ्–दिग्गज; नोकिऩ्ऱऩ–वेदना का अनुभव करते हैं। २९८५

अब इनके प्रेरित शर चलते हैं तो लोक जलते हैं। समुद्र झुलसते हैं। देवों के मुख सूख जाते हैं। तब सब संशय करने लगे कि यह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाशकाल हो रहा है ! ज्यास्वन कानों में घुसा तो दिग्गज पीड़ित हुए । २९८५

मीनुक्कदु नॅडुवानहम् वॅयिलुक्कदु शुडरुम्
मानुक्कदु मुळुवॅण्मदि मळैयुक्कदु वानम्
तानुक्कदु कुलमाल्वरै तरैयुक्कदु तहैशाल्
ऊनुक्कवॅव् वुलहत्तिनु मुळदाहिय वुयिरे 2986

नॅटु वानकम्–विशाल आकाशतल ने; मीन्–नक्षत्रों को; उक्कतु–चुवा दिया; चुटरुम्–किरणदेव भी; वॅयिल् उक्कतु–धूप गिरा गया; वॅण्–श्वेत; मुळु मति–पूर्णचन्द्र ने भी; मान् उक्कतु–हिरण को खो दिया; वानम्–आकाश ने; मळै उक्कतु–मेघों को डाल दिया; कुल माल् वरै–श्रेष्ठ बड़ा पर्वत (मेरु); तान् उक्कतु–स्वयं चूर-चूर हो गया; तकै चाल् तरै–मान्य भूमि; उक्कतु–बिखर गयी; अॅ उलकत्तिनुम्–सभी लोकों में; उळताकिय–रहनेवाले; उयिरे–जीवों ने; ऊन् उक्कतु–शरीर त्याग दिये । २९८६

इनके अस्त्रों से त्रस्त होकर दीर्घ आकाश ने नक्षत्रों को चुवा दिया । सूरज ने गर्मी त्याग दी । श्वेत पूर्णचन्द्र ने अपना 'हिरण' त्याग दिया । आकाश ने मेघ गिरा दिये । श्रेष्ठ मेरु पर्वत स्वयं चूर-चूर हो गया । माननीय भूमि बिखर गयी । सभी लोकों के सारे जीवों ने अपने शरीर डाल दिये । २९८६

अक्कालैयि नयिल्वॅङ्गणै यैयैन्दुबुक् कळुन्दत्
तिक्काशइ वॅन्ऱान्मह निळङ्गोवुडऱ् चॅरित्तान्
गैक्कारमुहम् वळैयच्चिल कनल्वॅङ्गणै कवशम्
बुक्काहमुङ् गळुन्ऱोडिड विळङ्गोळरि पॊळिन्दान् 2987

अक्कालैयिल्–तब; तिक्कु–(आठों) दिशाओं को; आचु अऱ–बिना कसूर के; वॅन्ऱान्–जिसने जीता था उस (रावण) के; मकन्–पुत्र ने; अयिल्–तीक्ष्ण; ऐ ऐन्तु वॅम् कणै–पचीस भयंकर अस्त्रों को; इळङ्को–लघुराज के; उटल् पुक्कु–शरीर में घुसकर; अळुन्त–धँस जायँ ऐसा; चॅरित्तान्–लगवा दिया; इळम् कोळरि–बालकेसरी (लक्ष्मण) ने भी; आकमुम् पुक्कु–शरीर में घुसकर; कवचम् कळन्ऱु–कवच भी खुलकर; ओटिट–चला जाय ऐसा; कै कार् मुकम् वळैय–हाथ के चाप को झुकाकर; चिल–कुछ; कनल्–आग के समान; वॅम् कणै–भयंकर अस्त्र; पॊळिन्तान्–लगातार छोड़े । २९८७

तब अष्टदिग्विजयी रावण के पुत्र इन्द्रजित् ने पचीस तीक्ष्ण और गरम अस्त्र चलाये जो लघुराज लक्ष्मण के शरीर के अंदर चले गये । लघुराज ने भी अपने हाथ के धनु को झुकाकर कुछ आग्नेय अस्त्र चलाये और वे इन्द्रजित् के शरीर में घुसे और कवच भी खुलकर अलग हो गया । २९८७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॅरिन्दान्शिल शुडर्वॅङ्गणै तेवेन्दिरन् शिनमा
इरिन्दोडिडत् तुरन्दोडिन विमैयोरैयु मुन्नाळ्
अरिन्दोडिन वॅरिन्दोडिन यवैहोत्तड लरक्कन्
शॊरिन्दानुयर् नॅडुमारुदि तोण्मेलिनिऱ् ऱोन्ऱ 2988

अटल् अरक्कन्–बलवान राक्षस ने; मुन् नाळ्–पहले किसी दिन; तेवेन्तिरन्–देवेन्द्र के; चिनमा–क्रुद्ध गज को; इरिन्तु ओटिट–अस्त-व्यस्त भागने को मजबूर करके; तुरन्तु–(चाप) छोड़कर; ओटिन–जो गये और; इमैयोरैयुम्–देवों को; अरिन्तु–काटकर; ओटिन–जो गये और; ऍरिन्तु ओटिन–जो आग उगलते गये; चिल–(ऐसे) कुछ; चुटर्–तेजोमय; वॅम्–भयंकर; कणै अवै–शरों को; कोत्तु लगाकर; उयर्–ऊँचे क़द के; नॅटु–बड़े; मारुति तोळ् मेलितिल्–मारुति के कंधों पर; तोन्ऱ–वे शोभें ऐसा; तॅरिन्तान्–जान-बूझकर; चॊरिन्तान्–चलाये। २९८८

सबल इन्द्रजित् ने ऊँचे क़द के बड़े मारुति के कन्धे पर जान-बूझकर वे उज्ज्वल तथा भयंकर अस्त्र चलाये, जिनके लगने से देवेंद्र का क्रोधी गज ऐरावत अस्त-व्यस्त भागा, जो देवों को काट चले थे और जो आग उगलते चले थे। वे जाकर हनुमान के कंधों पर शोभे। २९८८

कुरुदिप्पुनल् शॊरियुम्मुयर् कुन्ऱनॅन्नुम वनुमन्
परुदित्तिऱ निऱमॊत्त यिळङ्गोळरि पार्त्तान्
ऒरुतिक्किनुम् बॅयरावहै यवन्ऱेरिनै युदिर्त्तान्
बॊरुदिक्कणम् वॅन्ऱेनॅनच् चरमारिहळ् पॊऴिन्दान् 2989

कुरुति पुनल् चॊरियुम्–रक्त बहानेवाले; उयर्–ऊँचे; कुन्ऱ–पर्वत; ऍन्नुम्–के समान; अ अनुमन्–उस हनुमान के; निऱम्–रंग के; परुति ऒत्त–सूर्य के समान रहने का; तिऱम्–ढंग; इळम्–लघुराज ने; पार्त्तान्–देखा; अवन् तेरिनै–उस (इन्द्रजित्) के रथ को; ऒरु तिक्किनुम् पॅयरा वकै–किसी भी दिशा में न जाने देकर; उतिर्त्तान्–गिराकर; इ कणम्–इसी क्षण; पॊरुतु–लड़कर; वॅन्ऱेन्–जीत लिया; ऍन्न–कहते हुए; चरमारिकळ्–शरवर्षाएँ; पॊऴिन्तान्–कीं। २९८९

रक्तस्रावी उन्नत पर्वत-सम हनुमान का शरीर बाल-सूर्य के समान लाल रंग का हो गया। बालकेसरी लक्ष्मण ने उसकी स्थिति देखी। उन्होंने उसके रथ को किसी दिशा में जाने न देकर गिरा दिया और यह कहते हुए शर-वर्षा करायी कि अभी, इसी क्षण में युद्ध करके उसे हरा दूँगा। २९८९

अत्तेरऴिन् ददुनोक्किय विमैयोरॅडुत् तार्त्तार्
मुत्तेवरु मुवन्दारव नुरुमेऱॅन मुनिन्दान्
तत्तावॊरु तडन्देरिनैत् तॊडर्न्दान्शरन् दलैमेल्
पत्तेविन नवपाय्दलि निळङ्गोळरि पवैत्तान् 2990

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अ तेर्–उस रथ का; अळिन्ततु–नष्ट होना; नोक्किय–देखनेवाले; इमैयोर्–देवों ने; अॅट्टुत्तु आर्त्तार्–स्वर ऊँचा करके हर्षनाद किया; मु तेवरुम्–त्रिदेव; उवन्तार्–खुश हुए; अवन्–वह (इन्द्रजित्); उरुम् एऱु अॅन–अशनिराज के समान; मुनिन्तान्–गुस्सा करके; ओरु तटम् तेरिनै–एक विशाल रथ पर; तत्ता तॉटर्न्तान्–छलाँग मारकर चढ़ा और गया; तलै मेल्–(लक्ष्मण के) सिर पर; पत्तु चरम्–दस शर; एविनन्–चलाये; अवै–उनके; पाय्तलिन्–लगने से; इळङ्कोळरि–बालकेसरी (लक्ष्मण); पतैत्तान्–छटपटाये। २९९०

उसके रथ को नष्ट हुआ देख देवों ने ज़ोर से हर्षनाद किया। त्रिदेव भी मुदित हुए। यह देखकर इन्द्रजित् अशनि के समान क्रोध से कड़क उठा। एक बड़े रथ पर उछलकर चढ़ा। लक्ष्मण का पीछा करके गया और उनके सिर पर दस शर चलाये। उनके लगने पर बालकेसरी-से लक्ष्मण छटपटाये। २९९०

पदैत्तानुड निलैत्तान्शिल पहुवाययिऱ् पहळि
विदैत्तानवै विलक्काद्मुन् विडैमेल्वरु विमलन्
मदत्तालेदिर् वरुहालनै यॉरुहालुऱ् मरुमत्
तुदैत्तानॅनत् तनित्तोर्कणै यवन्मार्बिनि लुदैत्तान् 2991

उटल् पतैत्तान्–जिनका शरीर कंपित हुआ वे; निलैत्तान्–स्थिर हुए; पकुवाय्–फटे मुख के; अयिल्–तीक्ष्ण; चिल पकळि–कुछ अस्त्र; वितैत्तान्–बो दिये; अवै विलक्काद मुन्–उनको रोकने से पहले; विटैमेल्–ऋषभ पर; वरु विमलन्–आनेवाले विमल मूर्ति ने; मतत्ताल्–मद से; अॅतिर् वरु कालनै–सामना करके आनेवाले यम को; ओरु काल्–एक पैर से; मरुमत्तु उऱ–मर्म पर लगाकर; उतैत्तान् अॅन–जैसे लात मारी वैसे; अवन् मार्पितिल्–उस (इन्द्रजित्) के वक्ष पर; तनित्तु ओर् कणै–अलग एक अस्त्र; उतैत्तान्–छोड़ा। २९९१

अधीर जो हुए वे लक्ष्मण थोड़ी देर के बाद स्थिर हुए। और उन्होंने कुछ फटे मुँह वाले व तीक्ष्ण शर बो-से दिये। उनको इन्द्रजित् रोके उसके पहले ही उन्होंने इन्द्रजित् के वक्ष पर एक शर चलाया, जो ऋषभवाहन की दम्भी यम की छाती पर लगायी गयी लात के समान लगा। २९९१

कवशत्तैयुम् नॅडुमार्बैयुङ् गडन्दक्कणै कळिय
अवशत्तॉळि लडैन्दानदऱ् किमैयोरॅडत् तार्त्तार्
तिवशत्तॅळु कदिरोनॅनत् तॅरिहिन्ऱदॉर् कणैयाल्
तुवशत्तैयुम् तुणित्तेयवन् मणित्तोळैयुन् दुळैत्तान् 2992

अ कणै–वह अस्त्र; कवचत्तैयुम्–कवच को और; नॅटु मार्पैयुम्–विशाल वक्ष को; कटन्तु कळिय–भेदकर निकल गया तो; अवच तॉळिल् अटैन्तान्–अवश स्थिति को प्राप्त हुआ; अतऱ्कु–उसको लेकर; इमैयोर्–देवों ने; अॅट्टुत्तु–ज़ोर से; आर्त्तार्–हर्षघोष किया; तिवचत्तु अॅळु–दिन (मध्याह्न) में उठे; कतिरोन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍत्त–किरणमाली के समान; तॅरिकिन्ऱतु–दिखनेवाले; ओर्–एक; कणैयाल्–शर से; अवत् तुवचत्तैयुम्–उसकी ध्वजा को; तुणित्तु–काटकर; मणि तोळैयुम्–मनोरम कंधों को भी; तुळैत्तान्–छिन्न कर दिया। २९९२

वह शर इन्द्रजित् के कवच तथा विशाल वक्ष को भेदकर निकल गया। वह अवश हो गया। तब देवों ने आनंद-रव किया। लक्ष्मण ने मध्याह्न के सूर्य के समान एक प्रखर बाण चलाकर उसकी ध्वजा को काट गिराया और उसके नीलवर्ण रत्न-सम कंधों को भी छिन्न कर दिया। २९९२

उळ्ळाडिय वुदिरप्पुत्तल् कॊऴुन्दीयॆत्त वॊऴुहत्
तळ्ळाडिय वडमेरुविऱ् चलित्तानुड ऱरित्तान्
पुळ्ळाडिय कडुम्बोर्क्कणै तुरन्दानवै शुडर्पोय्
विळ्ळानॆडुङ् गवशत्तिडै नुऴैयादुह वॆहुण्डान् 2993

(इन्द्रजित् के) उळ् आटिय–अन्दर बहता रहा; उतिरम् पुत्तल्–रुधिर-जल; कॊऴु ती ऍत्त–पुष्ट आग के समान; ओऴुक–स्रवित हुआ; तळ्ळाटिय–लड़खड़ाने वाले; वट मेरुविन्–उत्तरी मेरु के समान; उटल् चलित्तान्–थकित-शरीर हुआ; तरित्तान्–फिर सँभला; पुळ् आटिय–(मांसखोजी) पक्षी के समान; कटुम्–तेज; पोर् कणै–युद्ध शर; तुरन्तान्–छोड़े; अवै–वे; चुटर् पोय् विळ्ळा–प्रकाश-किरणों से अवियुक्त; नॆटु कवचत्तु इटै–(लक्ष्मण के) बड़े कवच के मध्य; नुऴैयातु–प्रवेश न कर सके; उक–गिरे; वॆकुण्टान्–क्रुद्ध हुआ। २९९३

इन्द्रजित् के अंदर बहता रहा रक्त पुष्ट आग के समान बहने लगा। वह चल मेरु के समान चलित हो गया। फिर थोड़ा सँभलकर उसने आहार खोजनेवाले पक्षियों के समान अस्त्र चलाये। वे लक्ष्मण के अमुक्त छवि कवच-मध्य प्रवेश नहीं कर सके और गिर गये। तब इन्द्रजित् बहुत क्रुद्ध हुआ। २९९३

मऱित्तायिरम् वडिवॆङ्गणै मरुमत्तिनै मदियाक्
कुऱित्तायिरम् बरित्तेरवन् विडुत्तानवै कुऱिपार्त्
तिऱुत्तानॆडुञ् जरत्तालॊरु तन्निनायहऱ् किळैयोन्
शॆऱित्तानुडल् शिलपॊऱ्कणै शिलैनाणरत् तॆरित्तान् 2994

आयिरम् परि–सहस्र अश्वों के; तेरवन्–रथवाला; मऱित्तु–फिर; मतिया–सोचकर; आयिरम्–हजार; वटि वॆम् कणै–तीक्ष्ण और भयंकर अस्त्र; मरुमत्तिनै कुऱित्तु–मर्मस्थल देखकर; विटुत्तान्–चलाये; तन्नि नायकऱ्कु–अकेले नायक के; इळैयोन्–लघुभ्राता ने; अवै–उनका; कुऱि पार्त्तु–निशाना लगाकर; ऒरु नॆटुम् चरत्ताल्–एक लम्बे अस्त्र से; इऱुत्तान्–कटवा दिया; चिलै नाण् अऱ्–धनुष का डोरा काटा; पॊन्–स्वर्ण-सम; चिल–कुछ; कणै–अस्त्रों को; तॆरित्तान्–चुन लेकर; उटल् चॆऱित्तान्–उसके शरीर में चुभो दिया। २९९४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सहस्र अश्वयुक्त रथ पर आरूढ़ होकर इन्द्रजित् ने लक्ष्मण के मर्म पर हज़ार तीक्ष्ण संदाहक शर चलाये। अप्रतिम नायक श्रीराम के कनिष्ठ ने निशाना साधकर एक लंबे शर से उनको काटा, कुछ स्वर्ण-सम शर चलाकर उसके धनु का डोरा भी तोड़ दिया। फिर कुछ अस्त्र शरीरों पर गड़ा दिये। २९९४

विल्लिङ्गिदु नॆडुमाल्शिव नॆऩुमेलवर् तऩुवे
कॊल्लॆऩ्ऱुऱ्हॊण् डयिर्त्तानॆडुङ् गवशत्तैयुङ् गुलैयाच्
चॆल्लुङ्गॊडुङ् गणैयावैयुञ् जिदैयामैयुन् दॆरिन्दाऩ्
वॆल्लुन्दर मिल्लामैयु मऱिन्दाऩह मॆलिन्दाऩ् 2995

इङ्गु इतु विल्–यहाँ यह (लक्ष्मण का) धनुष; नॆटु माल् चिवऩ् ऎऩुम्–श्रीविष्णु, शिव आदि; मेलवर्–श्रेष्ठ देवों का; तऩुवे कॊल्–धनु ही है क्या; ऎऩ्ऱु कॊण्टु–ऐसा सोच करके; अयिर्त्ताऩ्–संशयचित्त हुआ; नॆटुम् कवचत्तैयुम्–और बड़े कवच को भी; कुलैया–छिन्न-भिन्न करके; चॆल्लुम्–जो आगे जाते हैं; कॊटुम् कणै यावैयुम्–क्रूर सभी शरों के; चितैयामैयुम्–छिन्न न होने की बात; तॆरिन्ताऩ्–जान ली; वॆल्लुम् तरम् इल्लामैयुम्–अपनी जीत की कोई संभावना न रहना; अऱिन्ताऩ्–जान लिया; अकम् मॆलिन्ताऩ्–मन में खिन्न हुआ। २९९५

इन्द्रजित् को संशय हो गया कि क्या लक्ष्मण के हाथ का वह धनुष श्रीविष्णु, शिव आदि अतिश्रेष्ठ देवों का चाप है। और उसने देखा कि उसके शर अपने कवच को छिन्न करते हुए जानेवाले लक्ष्मण के शरों का कुछ नहीं कर पा रहे हैं। उसे इसका भी भान हुआ कि वह जीत नहीं सकेगा। इसलिए वह बहुत खिन्नमन हो गया। २९९५

अत्तऩ्मैयै यऱिन्दाऩवऩ् शिऱुतादैयु मणुहा
मुत्तऩ्मुह नोक्कावॊरु मॊऴिकेळॆऩ मॊऴिवाऩ्
ऎत्तऩ्मैयु मिमैयोर्हळै वॆऩ्ऱाऩिहल् वॆऩ्ऱाय्
पित्तऩमहऩ् ऱळर्न्दाऩिऩिप् पिऴैयाऩॆऩप् पहर्न्दाऩ् 2996

अवऩ्–उसके; चिऱु तातैयुम्–चाचा ने भी; अ तऩ्मैयै–उस स्थिति को; अऱिन्तु–जानकर; मुत्तऩ्–मुक्त लक्ष्मण; अणुका–के पास जाकर; मुकम् नोक्का–उनका मुख देखकर; ऒरु मॊऴि केळ्–एक बात सुनो; ऎऩ–कहकर; मॊऴिवाऩ्–बोलने लगा; ऎ तऩ्मैयुम्–सभी प्रकार के; इमैयोर्कळै–देवों को; वॆऩ्ऱाऩ्–जिसने जीता था उसे; इकल्–युद्ध में; वॆऩ्ऱाय्–जीत लिया; पित्तऩ् मकऩ्–दीवाने (रावण) का पुत्र यह; तळर्न्ताऩ्–शिथिल पड़ गया; इऩि–अब; पिऴैयाऩ्–जीता नहीं रहेगा; ऎऩ–ऐसा; पकर्न्ताऩ्–कहा। २९९६

उस इन्द्रजित् के चाचा विभीषण ने इन्द्रजित् की क्षीण हालत देखी तो मोक्षदाता लक्ष्मण के पास जाकर उनका मुख देखा और कहा कि एक बात सुनें। आपने सब प्रकार के देवों के विजेता इसको युद्ध में हराया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है। (प्रेम-) पागल रावण का पुत्र यह बहुत जर्जर हो गया है। जीवित बचेगा नहीं। २९९६

कूऱ्ऱिन्पडि कॊदिक्किन्ऱवक् कॊलैवाळॆयिऱ् ऱरक्कन्
एऱ्ऱुञ्जिलै नॆडुनाणॊलि युलहेऴिनु मॆय्दच्
चीऱ्ऱन्दलैत् तलैशॆन्ऱुऱ विदुतीरॆळत् तॆरियाक्
काऱ्ऱिन्पडै तॊडुत्तानव नदुवेकॊडु कात्तान् 2997

कूऱ्ऱिन् पटि–यम के समान; कॊतिक्किन्ऱ–खौलनेवाला; अ–वह; वाळ् ऎयिऱ–तीक्ष्ण (घोर) दाँतों वाला; कॊलै अरक्कन्–वधकारी राक्षस; चिलै–अपने चाप पर; एऱ्ऱुम्–जो चढ़ाया; नॆटु नाण् ऒलि–लम्बे डोरे की ध्वनि; एऴु उलकिनुम् ऎय्त–सातों लोकों में पहुँची तो; चीऱ्ऱम्–कोप; तलै तलै चॆन्ऱु उऱ–सिर पर जा लगा; इतु तीर्–इसको बुझाओ; ऎन–कहकर; काऱ्ऱिन् पटै–वायवास्त्र को; तॆरिया–चुन लेकर; तॊटुत्तान्–लगाकर चलाया; अवन्–उस (लक्ष्मण) ने; अतुवे कॊटु–उसी अस्त्र से; कात्तान्–उसे रोका। २९९७

यम-तुल्य, खौलनेवाले, तीक्ष्ण दंतोरे व घातक इन्द्रजित् ने धनु के डोरे को टंकृत किया। वह ज्यास्वन सातों लोकों में जाकर भरा। क्रोध उसके सिर पर चढ़ गया। उसने वायवास्त्र डोरे से लगाया और कहा कि इसे मिटाओ (तो देखें)। उसने उसे चलाया तो लक्ष्मण ने उसी अस्त्र से उसको रोक दिया। २९९७

अनलिन्पडै तॊडुत्तानव नदुवेकॊडु तडुत्तान्
पुनलिन्पडै तॊडुत्तानव नदुवेकॊडु पॊऱुत्तान्
कनवॆङ्गदि रवन्वॆम्बडै तुरन्दान् मनङ्गरियान्
शिनवॆन्दिऱ विळङ्गोळरि यदुवेकॊडु तीर्त्तान् 2998

अवन्–उस (इन्द्रजित्) ने; अनलिन् पटै–आग्नेयास्त्र; तॊटुत्तान्–चलाया; अतुवे कॊटु तटुत्तान्–उसी से रोका (लक्ष्मण ने); अवन्–उसने; पुनलिन् पटै–वरुणास्त्र; तॊटुत्तान्–चलाया; अतुवे कॊटु–उसी से; पॊऱुत्तान्–रोका; मनम् करियान्–काले मन वाले ने; कन वॆम् कतिरवन्–अधिक गरम किरणमाली का; वॆम् पटै–प्रखर अस्त्र; तुरन्तान्–छोड़ा; चिन–क्रुद्ध; वॆम् तिऱल्–बहुत सबल; इळम् कोळरि–बालकेसरी ने; अतुवे कॊटु–उसी से; तीर्त्तान्–उसे मिटाया। २९९८

फिर उसने आग्नेयास्त्र छोड़ा। लक्ष्मण ने आग्नेयास्त्र ही से उसे रोक दिया। उसने वरुणास्त्र छोड़ा। लक्ष्मण ने वरुणास्त्र से ही उसे निवार दिया। काले मन वाले इन्द्रजित् ने बहुत गरम तथा कठोर सूर्यास्त्र छोड़ा। क्रुद्ध और सबल लक्ष्मण ने सूर्यास्त्र चलाकर उसे विफल कर दिया। २९९८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इदुकात्तिहो लॅन्नावॅडुत् तिशिहप्पडै यॅय्दान्
अदुकाप्पदर् कदुवेयळ वेन्नात्तॊडुत् तमैन्दान्
शॅदुहाप्पडै तॊडुप्पेन्नॅन निनैन्दान् तिशैमुहत्तान्
मुदुमाप्पडै तुरन्देनिनि मुडिन्दायॅन मॊळिन्दान् 2999

इतु कात्ति कॊल्–इसे रोक भी सकते हो; अॅन्ना–कहकर; इचिकप्पटै–इषीकास्त्र; अॅटुत्तु अॅय्तान्–ले छोड़ा; अतु काप्पतर्कु–उसके निवारण के लिए; अतुवे अळवु–वही पर्याप्त है; अॅन्ना–सोचकर; अम्पिल् तॊटत्तु–अस्त्र चलाकर; अमैन्तान्–रहे; चॅतुका पटै–अचूक अस्त्र; तॊटुप्पेन्–चलाऊँगा; अॅन–ऐसा; निनैन्तान्–सोचकर; तिचै मुकत्तान्–दिशामुख ब्रह्मा का; मुतु मा पटै–पुराना बड़ा अस्त्र; तुरन्तेन्–चलाया है; इनि मुटिन्ताय्–अब मिटे; अॅन मॊळिन्तान्–ऐसा कहा। २८९९

"इसको भी रोक सकोगे शायद!" यह कहते हुए इन्द्रजित् ने इषीकास्त्र चलाया। लक्ष्मण ने सोचा कि वही अस्त्र उसे रोकने के लिए पर्याप्त है। वे इषीकास्त्र चलाकर शांत रहे। फिर इन्द्रजित् ने निश्चय किया कि अचूक अस्त्र कोई प्रयोग करूँगा। उसने बड़े ब्रह्मास्त्र को छोड़ा और कहा कि अब तुम गये। २९९९

वानिन्रलै निलैनिन्रवर् मळुवाळियुम् मलरोन्
तानुम्मुनि वररुम्बिर् तवत्तोर्हळु मरत्तोर्
कोनुम्बिर् पिरतेवर्हळ् कुळुवुम्मनङ् गुलैन्दार्
ऊनम्मिनि यिलदाहुह विळङ्गोक्कॅन वुरैत्तार् 3000

वानिन् तलै–आकाश में; निलै निन्रवर्–जो स्थायी हैं; मळु आळियुम्–परशु के धारक शिव; मलरोन् तानुम्–और कमलभव; मुनिवररुम्–और मुनिवर; पिर तवत्तोर्कळुम्–अन्य तपस्वीगण; अरत्तोर् कोनुम्–धर्मश्रेष्ठों के राजा देवेन्द्र; पिर पिर–अलग-अलग; तेवर्कळ् कुळुवुम्–देववृन्द; मनम् कुलैन्तार्–चित्ताक्रांत हुए; इळम् कोक्कु–युवराज की; इनि–अब; ऊनम् इलतु–हानि नहीं; आकुक–हो; अॅन–ऐसा; उरैत्तार्–मंगलकामना कही। ३०००

इसको देखकर व्योमलोक के स्थिर वासी देवगण, परशुधर शिव, कमलभव ब्रह्मा, मुनिवर, अन्य तपस्वी, धर्मावलम्बियों के राजा देवेंद्र और अन्य देववृन्द सभी व्यग्र हुए। मंगल-कामना की कि लघुराज पर कोई आँच न आवे। ३०००

ऊळिक्कडै यिरुमत्तलै युलहियावैयु मुण्णुम्
आळिप्पॅरुङ् गनरुन्नॊरु शुडरॅन्नवु माहाप्
पाळिच्चिहै परप्पित्तनि पडर्हिन्रुडु पारत्तान्
आळित्तनि मुदनायहर् किळैयानदु मदित्तान् 3001

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कटै ऊऴि–अन्तिम युग; इऱुम् अ तलै–जब अन्त होगा तब; उलकु यावैयुम् उण्णुम्–सारे लोकों के भक्षक; आऴि पॅरुम् कतल्–समुद्र-मध्य की बड़ी आग; तन् ऑरु चुटर्–उस अस्त्र की एक किरण है; ऍऩ्ऩवुम्–ऐसा कहने भी योग्य; आका–नहीं ऐसा (तेजोमय); पाऴि चिकै–अपनी बड़ी ज्वालाओं को; परप्पि–फैलाते हुए; तऩि–अनुपम; पटर्किऩ्ऱतु–आता है उसे; अऴि–चक्रधारी; तऩि–अद्वितीय; मुतल्–आदि; नायकऱ्कु–नायक के; इळैयान्–छोटे भाई ने; पार्त्तान्–देखा; अतु मतित्तान्–उसका महत्त्व जाना। ३००१

युगक्षय के दिन सारे लोकों को उदरस्थ कर लेनेवाली समुद्र की बड़ी बड़वाग्नि उसकी एक किरण के भी समान नहीं होगी —इतने अधिक तेज के साथ अपनी विपुल ज्वालाओं को निःसृत करता हुआ, निपट अनुपम रीति से वह अस्त्र आता रहा और चक्रधर परमदेव जगन्नायक के भाई लक्ष्मण ने उसे देखा और उसकी शक्ति पहचान ली। ३००१

माट्टाऩिवन् मलरोऩ्पडै मुदऱ्पोदुतन् वलत्ताल्
मीट्टाऩलन् दडुत्ताऩलन् मुडिन्दाऩॅऩ विट्टान्
काट्टादिऩिक् करन्दालदु करुमम्मल दॅऩ्ऩात्
ताट्टामरै मलरोऩ्बडै तॊडुप्पॅऩॅऩच् चमैन्दान् 3002

इवन् मलरोऩ् पटै माट्टाऩ्–यह ब्रह्मास्त्र झेल नहीं सकेगा; मुतऱ्पोतु–पहली बार; तन् वलत्ताल्–अपने बल से; मीट्टाऩ् अलऩ्–न लौटा सका; तटुत्ताऩ् अलऩ्–रोक भी नहीं सका; मुटिन्ताऩ्–अब गया; ऍऩ–सोचकर; विट्टाऩ्–छोड़ा (इन्द्रजित् ने); काट्टातु–बल-प्रदर्शन किये विना; इऩि करन्ताल्–अब उसे छिपाये रखें तो; अतु करुमम् अलतु–वह (उचित) कार्य नहीं होगा; ऍऩ्ऩा–सोचकर; ताळ् तामरै मलरोऩ्–लम्बे नाल के कमल के स्वामी (ब्रह्मा) के; पटै–अस्त्र को; तॊटुप्पेऩ्–लगाकर चलाऊँगा; ऍऩ चमैन्ताऩ्–ऐसा निश्चय किया। ३००२

"यह ब्रह्मास्त्र के सामने नहीं ठहर सकेगा। पहली बार हमने जब चलाया था उसने इसको अपनी शक्ति से न फिराया, न रोक पाया। अबकी बार यह, बस, गया।" ऐसा सोचकर इन्द्रजित् ने वह अस्त्र चलाया। लक्ष्मण ने सोचा, अब हम अपना बलप्रदर्शन न करके छिपाये रहें, तो वह बुद्धिमानी का काम नहीं होगा। मैं अभी कमलासनास्त्र ही छोड़ूँगा। लक्ष्मण ने ऐसा निर्णय किया। ३००२

नऩ्ऱाहुह वुलहुक्कॅऩ मुदलोऩ्मॊऴि नविऩ्ऱाऩ्
बिऩ्ऱादव नुयिर्मेऱ्चॅल वॊऴिहॅऩ्बदु पिडित्ताऩ्
ऑऩ्ऱादविम् मलरोऩ्पडै तऩैमाय्क्कवॅऩ् ऱुरैत्ताऩ्
निऩ्ऱाऩदु तुरन्दाऩवऩ् नलम्वाऩवर् निऩैन्दार् 3003

उलकुक्कु नऩ्ऱाकुक–लोक का क्षेम हो; ऍऩ–कहकर; मुतलोऩ् मॊऴि–भगवान के शब्द (वेद); नविऩ्ऱाऩ्–कहे; पिऩ्ऱातवऩ्–जो कभी पीछे नहीं हटता;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उयिर् मेल्–उसके प्राणों पर; चॅलवु ऑळिक–जाना भी न रहे; ऍन्पतु पिटित्तान्–यह संकल्प भी किया; ऑन्ऱात–(लोक-कल्याण के लिए) अनुचित; इ मलरोन् पटै तनै–उस ब्रह्मास्त्र को; माय्क्क–मिटा दे; ऍन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा (अपने ब्रह्मास्त्र से) कहा; निन्ऱान्–खड़े होकर; अतु तुरन्तान्–उसको छोड़ा; वानवर्–देवों ने; अवन् नलम्–उनका सद्भाव; निनैन्तार्–स्मरण किया। ३००३

लक्ष्मण ने लोकक्षेम का मंगल चाहकर आदिभगवान विष्णु के स्वर वेदों के मंत्र कहे। फिर "जो कभी पीछे नहीं हटता है, उस इन्द्रजित् के प्राणों पर नहीं चले" यह विचार करके लक्ष्मण ने ब्रह्मास्त्र को आज्ञा दी कि केवल वही अस्त्र मिटाओ। फिर खड़े होकर उन्होंने वह अस्त्र छुड़ाया। देव उनके सद्गुण पर मुदित हुए। ३००३

तान्विट्टदु मलरोन्पडै यॅनिन्मऱ्ऱिडै तरुमो
वान्विट्टदु मण्विट्टदु मऱवोनुड लिरुमो
तेन्विट्टुहु मलरोन्पडै तीर्प्पायॅनत् तीर्न्दान्
ऊन्विट्टव नऱम्विट्टिल नॅनवानव रुवन्दार् 3004

तेन् विट्टु उकु–मधु निकालकर गिरानेवाले; मलरोन् पटै–कमल के स्वामी ब्रह्मा का अस्त्र; तीर्प्पाय्–मेटो; ऍन–कहकर; तीर्न्तान् तान्–जिसने छोड़ा उस लक्ष्मण का; विट्टतुम्–प्रेरित; मलरोन् पटै–ब्रह्मास्त्र; ऍनिन्–है तो; इटै तरुमो–पीछे हटेगा क्या; वान् विट्टतुम्–आकाश छोड़कर भी; मण् विट्टतुम्–पृथ्वी छोड़कर भी; मऱवोन् उटल्–दुष्ट के शरीर को; इरुमो–मिटा देगा क्या; ऊन् विट्टवन्–जिसने नीच कर्म छोड़ दिया है वह; अऱम् विट्टिलन्–धर्म नहीं छोड़ चुका है; ऍन–ऐसा; वानवर् उवन्तार्–देव मुदित हुए। ३००४

देवों ने यह कहकर मोद जताया कि मधुस्रावी कमल के देवता ब्रह्मास्त्र को केवल इन्द्रजित् के ब्रह्मास्त्र को मिटाने की आज्ञा देकर लक्ष्मण ने छुड़ाया है। वह भी ब्रह्मास्त्र ही है तो भी वह क्या आज्ञा से पीछे हटेगा? (नहीं।) क्या वह, जिसने व्योमलोक को और भूलोक को अछूता छोड़ दिया है, क्रूर इन्द्रजित् के शरीर का नाश करेगा? लक्ष्मण नीच भावों से विमुक्त हैं। उन्होंने धर्म नही छोड़ा है। ३००४

उरुमेऱुवन् दॅदिर्त्तालद नॅदिरेनॅरुप् पुय्त्ताल्
वरुमाङ्गदु तविर्न्दालॅन मऱवोन्पडै मायत्
तिरुमाल्तनक् किळैयान्पडै युलहेळैयुन् दीय्क्कुम्
अरुमाहन लॅननिन्ऱदु विशुम्बॅङ्गणु माहि 3005

उरुम् एऱु–अशनिश्रेष्ठ; वन्तु ऍतिर्न्ताल्–आकर आक्रमण करे तब; अतन् ऍतिरे–उसके आगे; नॅरुप्पु उय्त्ताल्–आग चला दे; आङ्कु वरुम्–वहाँ आता; अतु–वह वज्र; तविर्न्ताल् ऍन–दूर हो गया हो; ऍन–जैसे; मऱवोन् पटै–(इन्द्रजित्) दुष्ट का अस्त्र; माय–मिट गया; तिरुमाल् तनक्कु इळैयान्–श्रीविष्णु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के छोटे भाई का; पटै–अस्त्र; विचुम्पु अॅङ्कणुम् आकि–आकाश भर में व्यापकर; उलकु एळैयुम् तीय्क्कुम्–सातों लोकों को जला देगा; अरु मा कतल्–अपूर्व बड़ी आग; अॅत–ऐसा; निन्ऱतु–रहा। ३००५

अशनि के सामने कोई आग आयी हो और उससे वज्र हट गया हो, ऐसा दुष्ट इन्द्रजित् का ब्रह्मास्त्र मिट गया। श्रीविष्णु के भाई का अस्त्र आकाश भर में व्याप गया और सातों लोकों की नाशकारी बड़े अग्निपुंज के समान स्थिर रहता रहा। ३००५

पडैयङ्गदु पडरावहै पहलोन्कुल मरुमान्
इडैयॊन्ऱदु तडुक्कुम्बडि शॅन्दीयुह वॅय्दान्
तॊडैयॊन्ऱिनैक् कणैमीमिशैत् तुरुवायिनि यॅन्ऱान्
विडमॊन्ऱुहॊण् डॊन्ऱीर्न्ददु पोऱीर्न्ददु वेहम् 3006

पकलोन् कुल मरुमान्–सूर्य (कुल) वंशज ने; अङ्कु–वहाँ; अतु पटै–वह अस्त्र; पटरा वकै–(आगे) न बढ़े ऐसा; तॊटै ऒन्ऱिनै–और एक अस्त्र को; कणै मी मिचै–आकाश में अस्त्र पर; इनि–अब; तुरुवाय्–हावी आओ; अॅन्ऱान्–कहा; अतु ऒन्ऱु–उस पहले को; इटै तटुक्कुम्पटि–बीच में रोकने; चॅम् तो उक–लाल आग निकालते हुए; अॅय्तान्–चलाया; ऒन्ऱु विटम् कॊण्टु–एक विष से; ऒन्ऱु ईर्न्ततु पोल्–दूसरा हर दिया जैसे; वेकम् तीर्न्ततु–वेग-विमुक्त हुआ। ३००६

दिनकुलभूत लक्ष्मण ने उसे बढ़ने से रोकने के विचार से दूसरे अस्त्र को यह कहकर छोड़ा कि जाकर उसे दबा दो। वह लाल अग्नि उगलता गया। उससे एक विष से दूसरा विष हर गया हो, ऐसा पहले अस्त्र की शक्ति क्षीण हो गयी। ३००६

विण्णोरदु कण्डार्वय वीरर्क्किनि मेन्मेल्
ऒण्णादन वुळवोवॅन मनन्देऱिन रुवन्दार्
कण्णार्नुदऱ् पॅरुमानिवर्क् करिदोवॅनक् कडैपार्त्
तॅण्णादिवै पहर्न्दीर्पॊरुळ् केळीरॅन विशैत्तान् 3007

अतु–उसे; विण्णोर् कण्टार्–देवों ने देखा; वय वीरर्क्कु–विजयी वीर (लक्ष्मण) के लिए; इनि–अब; मेल् मेल्–उत्तरोत्तर; ऒण्णातन–आ मिलनेवाले (हित, सामर्थ्य आदि); उळवो–हैं क्या; अॅन–सोचकर; मनम् तेऱितर्–मन में धैर्य धरकर; उवन्तार्–खुश हुए; नुतल् कण् आर्–जिनके भाल में नेत्र है वे; पॅरुमान्–भगवान; इवर्क्कु अरितो अॅन–इनके लिए कठिन क्या ऐसा; कटै पार्त्तु अॅण्णातु–अन्त तक आजमाये बगैर; इवै पकर्न्तीर्–ये वचन कहे; पॊरुळ् केळीर्–तथ्य सुनिए; अॅन–कहकर; इचैत्तान्–आगे बोले। ३००७

उसको देवों ने देखा। "विजयी वीर श्रीराम और लक्ष्मण के लिए अब उत्तरोत्तर आ नहीं लगें ऐसे कुछ हैं क्या ?" यह सोचकर देव धीर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और बहुत आनंदित हुए। भालनेत्र शिवजी ने कहा कि तुम लोगों ने जो कहा है, वह उनका सारा पराक्रम और रहस्य आद्योपांत न जानकर कहा है। यथार्थ सुनो। ३००७

नारायण नररॆन्ऱिव रुळराय्नमक् कॆल्लाम्
वेराय्मुऴु मुदऱ्कारणप् पॊरुळाय्वित्तै कडन्दोर्
आरायिनुन् दॆरियाददॊर् नॆडुमायैयि नहत्तार्
पारायण मऱैनान्गैयुङ् गडन्दारिवर् पऴैयोर् 3008

इवर्–ये; नारायण नरर् ऍऩ्ऱु–नारायण और नर ऐसे; उळराय्–नामधारी रहकर; नमक्कु ऍल्लाम्–हम सबके; वेराय्–मूल हैं; मुऴु मुतल् कारण पॊरुळाय्–अशेष, सर्व आदि कारण तत्त्व हैं; वित्तै कटन्तोर्–कर्मपारण; आरायिनुम्–जो भी हों उन सभी के लिए भी; तॆरियातु ओर्–अज्ञात एक; नॆटु मायैयिन् अकत्तार्–गम्भीर माया-मध्य हैं; पारायण–अध्ययन के; मऱै नान्कैयुम्–चारों वेदों के; कटन्तार्–पार हैं; इवर् पऴैयोर्–ये प्राचीनतम हैं। ३००८

ये नरनारायण हैं। हमारे मूल हैं। अशेष आदिकारण हैं। कर्ममुक्तों के लिए भी अज्ञात हैं और बड़ी माया के मध्य हैं। पारायण के चतुर्वेद के भी परे हैं। वे पुरातन पुरुष हैं। ३००८

अऱत्ताऱऴि वुळदामॆऩ मऱिवुन्दॊडर्न् दणहाप्
पुऱत्तार्पुहुन् दहत्तारॆऩप् पिऱन्दन्ऩदु पुरप्पार्
मऱत्तार्कुल मुदल्वेरऱ मायप्पाऩिवण् वन्दार्
तिऱत्तालदु तॆरिन्दियावरुन् दॆरियावहै तिरिवार् 3009

अऱिवुम् तॊटर्न्तु अणुका–ज्ञान भी जिनको पीछे जाकर छू नहीं सकता; पुऱत्तार्–ऐसे दूर के हैं; अऱत्तु आऱु–धर्ममार्ग; अऴिवु उळतु आम् ऍऩ–नष्ट हो रहा है, सोचकर; पुकुन्तु–संसार में प्रवेश करके; अकत्तार् ऍऩ–संसार-बद्ध के समान; पिऱन्तु–जन्म लेकर; अऩ्ऩतु–उस धर्म के; पुरप्पार्–संरक्षक बने; मऱत्तार्–पापियों का; कुलम्–समूह; मुतल् वेर् अऱ–निर्मूल; मायप्पाऩ्–करके नाश करने; इवण्–इस लोक में; वन्तार्–आये हैं; यावरुम्–सभी; तिऱत्ताल्–अपने बुद्धिबल से; अतु–वह रहस्य; तॆरिन्तु तॆरिया वकै–जानकर भी न जानें इस तरह; तिरिवार्–संचार करते हैं। ३००९

बुद्धि इनका अन्वेषण करके पा नहीं सकती। धर्म की ग्लानि होती जानकर वे मानो इस जगत के अन्तर्गत हों, ऐसा अवतार लेकर उस धर्म का संरक्षण करनेवाले हैं। दुष्टों को निर्मूल करने यहाँ, इस भूमि में वे आये हैं। कोई यह रहस्य अपनी बुद्धि के सामर्थ्य से अनुमान करके भी जान नहीं पायें, इस प्रकार वे व्यवहार करते फिरते हैं। ३००९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उयिर्दोऱुमुऱ् ऱुळन्दोत्तिरत् तॊऱुवन्नॆन वुरैक्कुम्
अयिरानिलै युडैयानिव नवनिव्वुल हनैत्तुम्
तयिर्दोय्पिरै यॆन्नलाम्वहै कलन्देऱिय् तलैवन्
पयिराददॊर् पॊरुळिन्नवॆन् ऱुणर्वीरिदु परमाल् 3010

इवन्–यह; उयिर् तोऱुम्–जीव-जीव में; उऱ्ऱु–लगकर; उळन्–रहते हैं; तोत्तिरत्तु ऒरुवन्–स्तुत्य हैं; ऎन्न–ऐसा; उरैक्कुम्–कथित; अयिरा निलै–असंदिग्ध स्थिति; उडैयान्–के हैं; अवन्–वे; तयिर् तोय्–दही जमानेवाले; पिरै ऎन्नल् आम् वकै–जामन के समान मान्य प्रकार से; इ उलकु अनैत्तुम्–इस सारे लोक में; कलन्तु एऱिय–मिले रहनेवाले हैं; तलैवन्–नाथ है; इन्नन्तु इतु–कैसा क्या; पयिराततु–अविमर्शनीय; ओर् पॊरुळ्–एक तत्त्व है; ऎन्ऱु उणर्वीर्–ऐसा जान लीजिए; इतु परम्–यह परतत्त्व है। ३०१०

ये सभी जीवों के अन्तर्यामी हैं। स्तुत्य हैं, अद्वितीय हैं। वे ऐसे मान्य असंदिग्ध स्थिति के हैं। वे दही जमानेवाले जामन के समान सारे लोकों में मिश्रित रहते हैं। वे ऐसे तत्त्व हैं, जिसे यह कहकर निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता कि यह अमुक है! यह तुम लोग जान लो। ये परमतत्त्व हैं। ३०१०

नॆडुम्बार्कडऱ् किडन्दारुम्बण् डिवर्नोर्हुऱै नेर
विडुम्बाक्किय मुडैयार्हळैक् कुलत्तोडऱ वीट्टि
इडुम्बाक्कियत् तऱङ्गाप्पदऱ् कियन्दारॆन्न विदॆलाम्
अडुम्बाक्किय दॊडॆच्चॆञ्जडै मुदलोन् पणित्तमैत्तान् 3011

पण्टु–पहले; नीर् कुऱै नेर–आप अपने कष्ट-निवेदन (जिनसे) करें; नॆटुम् पाल् कटल् किटन्तारुम्–विशाल क्षीरसागर में शयन करते रहनेवाले भी; इवर्–ये ही; विटुम् पाक्कियम् उटैयार्कळै–त्यक्त-भाग्य राक्षसों को; कुलत्तोटु–कुल के साथ; अऱ वीट्टि–मिटाते हुए मारकर; पाक्कियम् इटुम्–सौभाग्यदायी; अऱम्–धर्म को; काप्पतऱकु–रक्षित करने के लिए; इयैन्तार्–सम्मत हुए; ऎन्न–ऐसा; अटुम्पु आक्किय–'अडुंबु' नाम के फूलों की गुंथी; तॊटै–माला को; चॆम् चटै मुतलोन्–जो अपनी लाल जटा पर पहनते हैं, उन उत्तम देव ने; इतु ऎलाम् पणित्तु–यह सब कहके; अमैत्तान्–समाप्त किया। ३०११

प्राचीन काल में तुम लोग रक्षा की प्रार्थना करने क्षीरसागर जब गये थे, तब उस विशाल क्षीरसागर में शयनमुद्रा में तुम लोगों का निवेदन जिन्होंने सुना था, वे ये ही हैं। भाग्यमुक्त पापियों को कुल के साथ मिटाकर भाग्यदायी धर्म के संरक्षण के लिए ये सम्मत हुए हैं। —ऐसा कहकर 'अडुम्बु' नाम की लता के फूलों की मालाधारी, लाल जटायुक्त शिवजी ने अपनी बात समाप्त की। ३०११

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱिन्देयिरुन् दऱियेमव नॆडुमायैयि नयर्न्देम्
पिऱिन्देमित्ति मुळुदैयमुम् बॆरुमानुरै पिडित्तेम्
ऍऱिन्देम्बहै मुळुदुम्मित्ति दिरुन्देमिडर् कडन्देम्
शॆऱिन्दोर्वित्तप् पहैवावॆत् तॊळुदार्नॆडुन् देवर् 3012

नॆटु तेवर्–बड़े देवों ने; वित्तै चॆऱिन्तोर् पकैवा–नीचकर्मों के शत्रु; अऱिन्ते इरुन्तु–जानते हुए भी; नॆटु मायैयिन्–दीर्घ माया से; अऱियेम्–अज्ञानी बनकर; अयर्न्तेम्–थकित हुए; इत्ति–आगे; मुळुतु ऐयमुम्–संशय पूरा; पिऱिन्तेम्–छोड़ दिया; पॆरुमान् उरै–भगवान आपका वचन; पिटित्तेम्–ग्रहण किया; पकै मुळुतुम्–सारी शत्रुता; ऍऱिन्तेम्–दूर की; इत्तितु इरुन्तेम्–सुख से रहे; इटर् कटन्तेम्–संकट पार किया; ऍन्न–कहकर; तॊळुतार्–प्रणाम किया। ३०१२

शिवजी की बात सुनकर श्रेष्ठ देवों ने उत्तर में कहा कि हे दुष्कृतों के शत्रु! हम यह जानते हुए भी गम्भीर माया के वश होकर भूल-से गये थे और भ्रमित हो गये थे। अब हमारा सारा संदेह दूर हो गया। आपकी बातों को स्थिर रूप से ग्रहण कर चुके। हमें विश्वास हो गया कि हम शत्रु-हीन हो गये। अब सुख से रहे और संकट को पार कर गये। यह कहकर उन्होंने शिवजी की पूजा की। ३०१२

मायोनॆडुम् बडैवाङ्गिय वळैवाळॆयिऱ् ऱरक्कन्
नीयेयिदु तडुप्पायॆन्ऩि नित्तक्कारॆदिर् निऱ्पार्
पोयेविशुम् बडैवायिदु पिळैयादॆन्नप् पुहलात्
तूयोन्मिशै युलहियावैयुन् दडुमाऱिडत् तुरन्दान् 3013

मायोन् नॆटुम् पटै–श्रीविष्णु का बड़ा अस्त्र; वाङ्किय–लेकर; वळै–वक्र; वाळ् ऍयिऱु–उज्ज्वल दाँतों के; अरक्कन्–राक्षस ने; नीये–तुम ही; इतु–यह; तटुप्पाय् ऍन्ऩिन्–रोकोगे तो; नित्तक्कु ऍतिर् निऱ्पार् आर्–तुम्हारे सामने कौन टिका रह सकेगा; विचुम्पु पोये अटैवाय्–आकाश जा पहुँचोगे; इतु पिळैयातु–यह नहीं चूकेगा; ऍन्न पुकला–ऐसा कहकर; उलकु यावैयुम्–सभी लोकों को; तटुमाऱिट–अस्त-व्यस्त करते हुए; तूयोन् मिचै–पवित्रमूर्ति पर; तुरन्तान्–चलाया। ३०१३

नारायणास्त्र हाथ में लेकर वक्रतीक्ष्णदंतुले, इन्द्रजित् ने लक्ष्मण से कहा कि अगर तुम इसे रोक सकोगे तो तुम्हारा सामना करनेवाला कौन होगा? (कोई नहीं हो सकेगा)। पर निश्चित है कि तुम आकाश (स्वर्ग) पहुँच जाओ। यह अस्त्र चूकेगा नहीं। फिर उसने पवित्रमूर्ति पर सारे लोकों को अस्त-व्यस्त करते हुए उस अस्त्र को प्रेरित कर दिया। ३०१३

शेमित्तन रिमैयोर्तमैच् चिरत्तेन्दिय करत्तार्
आमित्तॊळिल् पिऱरियावरु मडैन्दार्पळु दडैयाक्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कामिप्पदु मुडिविप्पदु पडर्हिन्ऱदु कण्डान्
नेमित्तनि यरिदानॅन निनैन्दानंदिर् नडन्दान् 3014

इमैयोर्–अपलक देवों ने; चिरत्तु–सिर पर; एन्तिय करत्तार्–उठाये हुए हाथों वाले; तमै चेमित्तनर्–अपने को बचा लिया; पिऱर् यावरुम्–अन्य सभी ने; आम् इ तॊऴिल्–कारगर यह कार्य; अटैन्तार्–करके बचा लिया; पऴुतु अटैया–अमोघ; कामिप्पतु मुटिविप्पतु–इच्छा को पूरा करनेवाला वह अस्त्र; पटर्किन्ऱतु–बढ़ता आता; कण्टान्–(लक्ष्मण ने) देखा; नेमि–चक्रधर; तनि अरि तान्–अप्रतिम हरि ही है; अॅन–ऐसा; निनैन्तान्–सोचा; अॅतिर् नटन्तान्–सामने चले। ३०१४

देवों ने अपने सिरों पर हाथ रखकर अपने को बचा लिया। अन्य लोगों ने भी उसी कार्य को सफल जानकर वही अंजलि का काम करके अपने को बचा लिया। अचूक तथा इच्छित कार्य सिद्ध करनेवाले उस अस्त्र को बढ़ता आता देख लक्ष्मण अपने को चक्रधर विष्णु मानकर उसके सामने चले। ३०१४

तीक्कुमिनि युलहेऴैयु मॅनच्चेऱुलुन् दॅरिन्दान्
नीक्कुन्दर मल्लामुऴु मुदऱ्ऱानॅन निनैन्दान्
मीच्चॅन्ऱिल दयल्शॅन्ऱदु विलङ्गावलङ् गॊडुमेल्
पोय्त्तङ्गदु कनल्माण्डदु पुहैवीय्न्ददु पॊदुवे 3015

इनि–अब; उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; तीक्कुम्–जला दे; अॅन–ऐसा; चेऱुलुम्–उसका आना भी; तॅरिन्तान्–जान लिया; तान्–मैं; नीक्कुम्–दूर करूँ; तरम् अल्ला–ऐसी जिनकी गति नहीं; मुऴु मुतऱ्ऱान्–वह आदितत्त्व हैं; अॅन–ऐसा; निनैन्तान्–ध्यान किया; मी चॅन्ऱिलतु–उन पर नहीं गया; विलङ्का–हटकर; अयल् चॅन्ऱतु–दूर गया; अङ्कु–वहाँ; अतु–वह बाण; वलम् कॊटु–दायें घूमकर; मेल् पोय्त्तु–ऊपर चला गया; पॊतुवे–समान रूप से (हित करके); कनल् माण्टतु–अग्नि शान्त हुई; पुकै वीय्न्ततु–धुआँ भी हट गया। ३०१५

उन्होंने जान लिया कि वह सातों लोकों को जलाता-सा आ रहा है। उन्होंने अपने को अमर तथा अप्रतिहत आदिदेव के रूप में ध्यान कर लिया। तब वह उन पर न चला, पर हटकर दायीं ओर घूमकर ऊपर चला गया। सबका समान रूप से हित करते हुए उसकी आग बुझ गयी। धुआँ भी दूर हो गया। ३०१५

एत्ताडिन रिमैयोर्हऴुम् कवियिन्कुल मॅल्लाम्
कूत्ताडिन ररमङ्गैयर् कुनिन्दाडिनर् तवत्तोर्
कात्तायुल कनैत्तुमॅनक् कळित्ताडिनर् कमलम्
पूत्तानुमम् मऴवाळियुम् मुऴुवाय्हॊडु पुहऴ्न्दार् 3016

इमैयोर्कऴुम्–अपलक देव भी; एत्ताटिनर्–स्तुति करते हुए नाचे; कवियिन् कुलम् अॅल्लाम्–और वानरवर्ग सभी; कूत्ताटिनर्–नाचे; अर मङ्कैयर्–देवांगनाएँ;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुत्तिनतु आटित्तर्–झुकीं और नाचीं; तवत्तोर्–तपस्वी ऋषियों ने; उलकु अत्तैत्तुम्–सारे लोकों को; कात्ताय्–रक्षित किया; अॅत–कहकर; कळित्तु–मुदित होकर; आटित्तर्–नृत्य किया; कमलम् पूत्तातुम्–कमलभव और; अम् मळु आळियुम्–परशुधर शिव दोनों ने; मुळ वाय् कोट्टु–अपने मुख भर (भूरि-भूरि); पुकळ्न्तार्–प्रशंसा की। ३०१६

यह देखकर देवों ने उनकी स्तुति की और नृत्य किया। वानर सब नाचे। देवांगनाएँ झुक-झुककर नाचीं। मुनिगण मुदित हुए और लक्ष्मण से कहा कि आपने सारे लोकों को बचा दिया और नाचे। कमलभव और परशुधर ने जी खोलकर तारीफ़ की। ३०१६

अवत्तन्नदु कण्डात्तिव त्तारोवॅत्त वयिर्त्तात्
इवत्तन्नदु मुदलेयुडै यिर्रैयोत्तॅत्त वियवा
ॲवत्तॅन्नित्तु नन्ड्राहुह वित्तियॅण्णल नॅत्त्ताच्
चिवत्तित्पडै तॊडुत्तारुयिर् मुडिप्पेत्तॅत्त तॅरिन्दात् 3017

अवत्–वह (इन्द्रजित्); अत्तत्तु कण्टात्–को देखकर; इवत् आरो–यह कौन है; अॅत–ऐसा; अयिर्त्तात्–संशय करने लगा; इवत्–यह; अत्तत्तु–उस अस्त्र के; मुतलै उटै इर्रैयोत्–मूलस्वामी भगवान नारायण है क्या; अॅत वियवा–ऐसा विस्मय करके; ॲवत् अॅत्तित्तुम्–कोई भी हो; नन्ड्र आकुक–भले ही हो; इत्ति–अब; अॅण्णलत्–विमर्श नहीं करूँगा; अॅत्ता–कहकर; चिवत्तित् पटै–पाशुपतास्त्र; तॊट्टत्तु–चलाकर; आर् उयिर्–उसके प्यारे प्राण; मुटिप्पेत्–समाप्त करूँगा; अॅत तॅरिन्तात्–ऐसा सोचा। ३०१७

इन्द्रजित् ने नारायणास्त्र को विफल होते देखा तो उसे संशय हो गया कि क्या यह नारायणस्त्र का मूलदेवता स्वयं नारायण तो नहीं! फिर विचारा कि जो भी हो उसका विचार अब नहीं करूँगा। और निर्णय किया कि पाशुपतास्त्र चलाकर उसके प्यारे प्राणों का अंत कर दूँगा। ३०१७

पार्प्पात्तरु मुलहियावैयु मॊरुनाळॊरु पहले
तीर्प्पात्पडै तॊडुप्पेत्तॅत्त तॅरिन्दानदु तॅरिया
मीप्पाविय विमैयोर्हुलम् वॅरुवुर्रदिप् पॊळ्दे
माय्पपात्तॅत्त वुलहियावैयु मरुहुर्रत मयङ्गा 3018

पार्प्पात् तरुम्–ब्राह्मण ब्रह्मा द्वारा रचित; उलकु यावैयुम्–सभी लोकों को; ऒरु नाळ् ऒरु पकले–अहर्निश के एक अह्न में; तीर्प्पात्–संहार करनेवाले शिव का; पटै–अस्त्र; तॊट्टुप्पेत्–प्रयोग करूँगा; अॅत तॅरिन्तात्–ऐसा विचारा; अतु तॅरिया–वह जानकर; मी पाविय–ऊपर एकत्रित रहे; इमैयोर् कुलम्–देववर्ग; वॅरुवुर्रतु–डर गये; उलकु यावैयुम्–सारे लोकों को; इप्पॊळुते माय्प्पात्–अभी मिटा देगा; अॅत–ऐसा सोचकर; मयङ्का–भ्रमित हो; मरुकुर्रत–व्यथित हुए। ३०१८

ब्रह्मा-रचित सारे लोकों के अहर्निश के एक अह्न में नाश करनेवाले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिवजी का अस्त्र चलाना जब इन्द्रजित् ने ठाना, तब वह जानकर आकाश में भरे रहे देववर्ग डर गये। 'सारे लोकों को अभी मिटा देगा' —यह सोचकर वे भ्रमित हुए और व्यथित हुए। ३०१८

तानेशिवन् तरप्पॅऱ्ऱदु तवनाऴ्पल वुऴन्देन्
नानेपिऱ ररियाददु तन्देन्ऩॅऩ नवित्ऱान्
आऩालिव नुयिर्होडलुक् कैयमिलै यॅन्ऩा
एऩाऴुमि दाऩालॅदिर् तडैयिल्लदै यॅडुत्तान् 3019

चिवन् ताऩे तरप् पॅऱ्ऱतु–शिव द्वारा स्वयं दिया गया; पल नाऴ्–अनेक दिन; तवम् उऴन्तेत्–तपस्या की; पिऱर् अऱियाततु–दूसरों द्वारा न जाना गया; नाऩे तन्तेत्–मैं ही देता हूँ; अॅऩ–ऐसा; नवित्ऱान्–(शिवजी) बोले; आऩाल्–तो; इवत् उयिर् कोटलुक्कु–इसके प्राण हर लेगा उसमें; ऐयम् इलै–सन्देह नहीं; अॅऩ्ऩा–कहकर; एल् नाऴुम्–योग्य दिन भी; इतु आऩाल्–यह है इसलिए; अॅतिर् तटै इल्लतै–दुर्धर्ष उसे; अॅटुत्तान्–अपने हाथ में लिया। ३०१९

इन्द्रजित् ने सोचा— 'यह अस्त्र स्वयं शिवजी का दिया हुआ है। बहुत समय तपस्या की। तभी शिवजी ने यह कहकर मुझे दिया कि इसकी महत्ता और लोग नहीं जानते। मैं अपनी ओर से स्वयं दे रहा हूँ। तब तो इसके प्राणों का अंत होना असंदिग्ध है। और दिन भी आज अनुकूल बना है।' इतना सोचकर उसने उस दुर्दम अस्त्र को हाथ में लिया। ३०१९

मऩत्तान्मलर् पुऩल्शान्दमॊ डविदूबमुम् वहुत्तान्
निऩैत्तानिव नुयिर्होण्डिव णिमिर्वायॅऩ निमिर्त्तान्
शिऩत्तान्ऩॅडुऱ् जिलैनाण्डडन् दोण्मेलुऱच् चॅलुत्ता
अॅऩैत्तायदॊर् पॊरुळालिडै तडैयिल्लदै विट्टान् 3020

मलर्–पुष्प; पुऩल्–जल; चान्तमॊटु–चन्दन के साथ; आवि–हवि; तूपमुम्–धूप; मऩत्ताल् निऩैत्तान् वकुत्तान्–मानसिक रूप से रचा; इवत् उयिर् कॊण्टु–इसके प्राण लेकर; इवण् निमिर्वाय्–यहाँ लौट आओ; अॅऩ–कहकर; निमिर्त्तान्–सीधा पकड़कर; नॅटु चिलै नाण्–बड़े धनु की प्रत्यंचा को; चिऩत्ताल्–क्रोध के साथ; तटम् तोळ् मेल्–विशाल कंधे पर; उऱ चॅलुत्ता–खूब लगाकर; अॅऩैत्तु आयतु ओर् पॊरुळाल्–किसी की बनी किसी भी वस्तु से; इटै तटै इल्लतै–बीच में जो रोका नहीं जा सके उसको; विट्टान्–छोड़ा। ३०२०

फिर उसने मानसिक रीति से पुष्प, जल, चन्दन, हवि, धूप आदि से उसकी पूजा की। 'जाओ, इसके प्राण हर ले आओ' कहकर उसे सीधा किया। फिर डोरे से लगाकर अपने कंधे तक खींचा और किसी भी वस्तु से अवार्य उस अस्त्र को छुड़ाया। ३०२०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शूल्ङ्गळु मऴुवुञ्जुडु कणैयुङ्गऩर् चुडरुम्
आलङ्गळु मरवङ्गळु मशनिक्कुल मॆवैयुम्
कालऩ्ऱऩ दुरुवङ्गळुङ् गरुम्बूदमुम् बॆरुम्बेय्च्
चालङ्गळुम् निमिर्हिऩ्ऱऩ वुलहॆङ्गणुन् दामाय् 3021

उलकु ऍङ्कणम्–लोकों में सर्वत्र; चूलङ्कळुम्–अनेक शूल; मऴुवुम्–परशु; चटु कणैयुम्–संदाहक अस्त्र; कऩल् चुटरुम्–अग्निज्वालाएँ; आलङ्कळुम्–और विष; अरवङ्कळुम्–सर्प; अचनि कुलम् ऍवैयुम्–सारे अशनिकुल; कालऩ् तऩतु उरुवङ्कळुम्–यम के रूप; करुम् पूतमुम्–काले भूत; पॆरु पेय् चालङ्कळुम्–बड़े-बड़े पिशाचगण; ताम् आय्–खुद प्रकट होकर; निमिर्किऩ्ऱऩ–बढ़ते हैं। ३०२१

वह अनेक शूल, परशु, दाहक अस्त्र, आग और विष, सर्प, अशनिकुल, यम के अनेक रूप, काले भूत और बड़े पिशाचवृन्द सभी बना। वे बढ़ते आये। ३०२१

ऊऴिक्कऩ लोरुपालद नुडनेतोडर्न् दुडर्ऱुम्
शूऴिक्कॊडुङ् गडुङ्गार्ऱ्ऱद नुडनेवरत् तूर्क्कुम्
एऴिर्कुमप् पुऱ्ऱतायुळ पॆरुम्बोर्क्कड लिऴिन्दाङ्
गाऴित्तलैक् किडन्दालॆऩ नॆडुन्दूङ्गिरु ळडैय 3022

ऒरु पाल्–एक ओर; ऊऴि कऩल्–युगान्त की अग्नि; उटऩे तॊटर्न्तु–साथ लगे; उटर्ऱुम्–दुःख देगी; एऴिर्कुम् अप्पुऱ्ऱताय्–सातों (समुद्रों) के उस पार; उळ–जो हैं; पॆरुम् पोर् कटल्–टकरानेवाला बड़ा सागर; इऴिन्त आङ्कु–गिरा हो जैसे; आऴि तलै–समुद्र के तीर पर; किटन्ताल् ऍऩ–पड़ा हो ऐसा जो रहा; नॆटु तूङ्कु इरुळ्–विशाल तथा लटकनेवाला अन्धकार; अटैय–रहे ऐसा; चूऴि कॊटुम् कटुम् कार्ऱु–भयंकर तेज बवण्डर; अतऩ् उटऩे वर–उसके साथ आयगा; तूर्क्कुम्–(इस भाँति आकर वह) नाश करेगा। ३०२२

एक ओर युगांत की अग्नि उसके साथ-साथ लगी आती और लोक को त्रस्त करती। दूसरी ओर घना और लटकता-सा अंधकार रहता जो सातों समुद्रों के उस पार रहनेवाले प्रहारशील समुद्र के समान रहा और जो समुद्र तीर पर पड़ा रहता हो। तीसरी ओर बवण्डर उसके साथ आता और लोकों को त्रस्त करता। ३०२२

इरिन्दार्कुल नॆडुन्देवर्ह ळिरुडिक्कुलत् तॆवरुम्
परिन्दारिदु पऴुदाहिल दिऱुवाऩॆऩुम् बयत्ताल्
नॆरिन्दाङ्गऴि कुरङ्गुर्ऱ्ऱदु पहरुन्दुणै नॆडिदे
तिरिन्दारिरु शुडरोडुल हॊरुमूऩ्ऱुडऩ् तिरिय 3023

इतु–यह; पऴुतु आकिलतु–व्यर्थ नहीं होगा; इऱुवाऩ्–(लक्ष्मण) नष्ट होगा; ऍऩम् पयत्ताल्–इस डर से; कुलम् नॆटु तेवर्कळ्–श्रेष्ठ कुल के देव; इरिन्तार्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भाग गये; इरुटि कुलत्तु–ऋषिकुल के; ऍवरुम्–सभी; परिन्तार्–दुःखी हुए; कुरङ्कु–मरकट; आङ्कु–वहाँ; नॅरिन्तु–सटकर; अऴि उऱ्ऱतु–जो निर्बल हुए वह; पकरुम् तुणै नॅटितु–कहने योग्य से बड़ा है; इरु चुटरोटु–दो तेजपुंजों (सूर्य-चन्द्र) के साथ; ऑरु मून्ऱु उलकु–तीनों लोक; उटन् तिरिय–साथ-साथ घूमे; तिरिन्तार्–सब भटके। ३०२३

श्रेष्ठ कुलों के देवों ने सोच लिया कि यह अचूक है और लक्ष्मण नहीं बचेगा। वे भागे। सभी ऋषि, मुनि दुःखी हुए। एकत्र वानरों की जो बदहालत हुई उसका वर्णन कथा-शक्ति से बड़ा है। दोनों तेजपुंज सूर्य-चन्द्र और पृथ्वी घूम गयी। लोकवासी भी भटकने लगे। ३०२३

पार्त्तानॅडुन् दहैवीडण नुयिर्हालुऱ्प् पयत्ताल्
वेर्त्तानिदु विलक्कुन्दर मुळदोमुदल् वीरा
तीर्त्ताबॅऩ वऴैत्तानदर् किळङ्गोळरि शिरित्तान्
पोर्त्तारडर् कविवीररु मवन्दाणिऴल् पुहुन्दार् 3024

नॅटु तकै वीटणन्–सुयोग्य विभीषण ने; पार्त्तान्–देखा; पयत्ताल्–डर से; उयिर् काल् उऱ–निःश्वास छोड़ते हुए; वेर्त्तान्–पसीने से भर गया; मुतल् वीरा–आदितत्त्व वीर; तीर्त्ता–पवित्रमूर्ति; इतु–यह; विलक्कुम् तरम् उळतो–रोका जाय ऐसा है क्या; ऍऩ–ऐसा; अऴैत्तान्–(लक्ष्मण को) बुलाया (प्रश्न किया); अतऱ्कु–उसके उत्तर में; इळम् कोळरि–बालकेसरी; चिरित्तान्–हँसा; पोर्तार्–युद्ध-चिह्न के रूप में मालाओं के धारक; अटर्–भीड़ के; कवि वीररुम्–वानर वीर; अवन्–उनके; ताळ् निऴल्–चरण की छाया में; पुकुन्तार्–प्रविष्ट हुए। ३०२४

सुयोग्य विभीषण की भी बुरी स्थिति हो गयी। डर से निःश्वास छोड़े। पसीना-पसीना हो गया। उसने लक्ष्मण से पूछा कि मूलभूत तत्त्व! वीर! क्या इसको रोकने का उपाय भी है? बालकेसरी यह सुनकर हँसा। युद्धचिह्न के रूप में माला से अंलकृत वानर वीर उनकी शरण-छाया में आ गये। ३०२४

अवयम्मुनक् कवयम्मॅनु मनैवोरैयु मञ्जल्
कवयम्मुमक् कॅन्ऱोळिणै यॅनक्कैत्तलङ् गवित्तान्
उवयम्मुऱु मुलहिन्पय मुणर्न्देनिति यॉऴियेन्
शिवनैम्मुह मुडैयान्पडै तॉडुप्पेऩॅनत् तॅळिन्दान् 3025

उनक्कु अवयम् अवयम्–आपके अभयशरण हैं, आपका ही अभय है; ऍनुम्–कहनेवाले; अनैवोरैयुम्–सभी को; अञ्चल्–मत डरो; उमक्कु–तुम लोगों के लिए; ऍन् तोळ् इणै–मेरे दो कंधों का जोड़ा; कवयम्–कवच है; ऍऩ–कहकर; कै तलम् कवित्तान्–(अभयमुद्रा में) हाथ औंधा किया; उवयम् उऱुम्–दो बनकर रहे; उलकिन्–लोकों के; पयम्–भय को; उणर्न्तेनु–जाना; इति ऑऴियेन्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अब पीछे नहीं हटूँगा; ऐ मुकम् उटैयान्-पंचमुख; चिवन् पटै-शिव का अस्त्र; तोटुप्पेन-लगाऊँगा; अॅन तॅळिन्तान्-ऐसा निर्णय किया। ३०२५

'आपका अभय है, अभय-दान करें' —यह कहनेवाले सभी को लक्ष्मण ने धीरज दिलाया और कहा कि मत डरो। मेरे दोनों कंधों का जोड़ा तुम्हारा कवच बनेगा। उन्होंने अभय-मुद्रा में हथेली औंधी की। "आकाश तथा भूतल दो रहे लोकों के वासियों का भय मैं जानता हूँ। अब पीछे नहीं हटूँगा। पंचमुख शिव का अस्त्र चलाऊँगा।" यह लक्ष्मण ने साफ़ रूप से निर्णय किया। ३०२५

अप्पॊऱ्पडै मनत्ताल्निनैन् दर्च्चित्तदै यऴिप्पाय्
इप्पॊऱ्पडै तनैमऱ्ऱॊरु तॊऴिल्शॆय्हिलै यॆन्नात्
तुप्पॊप्दॊर् कणैकूट्टिनन् ऱुरन्दानिडै तॊडरा
ॲप्पॊऱ्पॆरुम् बडैयुम्बुह विऴुङ्गुऱ्ऱदॊ रिमैप्पिन् 3026

अ पॊन् पटै-उस ज्वलन्त अस्त्र को; मनत्ताल् निनैन्तु-मन से स्मरण करके; अर्च्चित्तु-पूजा करके; अतै अऴिप्पाय्-उसे मिटाओ; मऱ्ऱु ऒरु तॊऴिल्-दूसरा कोई काम; चॆय्किलै-मत करो; ॲन्ना-कहकर; इ पॊन् पटै तनै-इस ज्वलन्त (पाशुपत-) अस्त्र को; तुप्पु ऒप्पतु-(शत्रु के अस्त्र की) समानता करनेवाले; ओर् कणै कूट्टिनन्-एक अस्त्र से लगाकर; तुरन्तान्-छोड़ा; इटै-(इन्द्रजित् का अस्त्र जहाँ रहा उस) स्थान में; तॊटरा-जाकर; ॲ पॆरुम् पॊन् पटैयुम्-किसी भी बड़े ज्वलन्त अस्त्र को; पुक-अपने में समा लेने की स्थिति में रहकर; ओर् इमैप्पिन्-एक पल में; विऴुङ्कुऱ्ऱतु-निगल लिया। ३०२६

लक्ष्मण ने उस स्वर्ण-प्रकाशमय अस्त्र की मानसिक पूजा की। उसे हिदायत दी कि (इन्द्रजित् के) उस अस्त्र का नाश करो। पर आगे कोई कार्य मत करो। फिर उस उज्ज्वल अस्त्र को उसी के समान महत्त्व के और एक अस्त्र के साथ मिलाकर छोड़ा। वह उस अस्त्र के पास गया। किसी भी उज्ज्वल अस्त्र को आत्मसात् करने की शक्ति के साथ उसने पल भर में उस अस्त्र को निगल लिया। ३०२६

विण्णार्त्ततु मण्णार्त्ततु मेलोर्मणि मुरशिन्
कण्णार्त्ततु कडलार्त्ततु मऴैयार्त्ततु कलैयोर्
ॲण्णार्त्ततु मऱैयार्त्ततु विशयम्मॆन वियम्बुम्
पॆण्णार्त्तन ळऱमार्त्ततु पिऱरार्त्ततु पॆरिदो 3027

विण् आर्त्ततु-व्योमलोक घहर उठा; मण् आर्त्ततु-पृथ्वी ने हो-हल्ला मचाया; मेलोर्-देवों की; मणि-सुन्दर; मुरचिन्-दुन्दुभी की; कण् आर्त्ततु-'आँख' ठनक उठी; कटल् आर्त्ततु-समुद्र गरजे; मऴै आर्त्ततु-मेघगर्जन हुआ; कलैयोर् ॲण्-ज्योतिषियों की संख्याएँ; आर्त्ततु-आनन्दरव करने लगीं; मऱै आर्त्ततु-वेदों ने नर्दन किया; विचयम् ॲन इयम्पुम् पॆण्-विजय कहलानेवाली देवी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ने; आर्त्ततऴ्–शोर मचाया; अऱम् आर्त्ततु–धर्मदेवता ने मोदशब्द किया; पिऱर् आर्त्ततु–अन्यों ने नर्दन किया; पॅरितो–बड़ी बात है क्या। ३०२७

इन्द्रजित् के अस्त्र को विफल हुआ देखकर देवों और भूलोकवासियों ने जयघोष किया। देवों की दुन्दुभी बजायी गयी। समुद्र गरजे। मेघ-गर्जन हुआ। ज्योतिषी की गिनतियों ने आनंद मनाया। चारों वेदों और विजयश्री ने जयघोष किया। स्वयं धर्मदेवता ने नर्दन किया, तो दूसरों का नर्दन करना कौन सी बड़ी बात है ? । ३०२७

इऱुकालैयि नुलहियावैयु मविप्पानिहऱ् पडैयै
मऱुहावहै पुरिन्दाऩदु वाङ्गुम्बडि वल्लान्
तॅऱुकालऩिऱ् कॊडियोऩुमऱ् ऱदुहण्डहन् दिहैत्तान्
अऱुहावयक् कविवीररु मरियॅऩ्बदै यऱिन्दार् 3028

इऱु कालैयिऩ्–युगक्षय के समय; उलकु यावैयुम्–सभी लोकों को; अविप्पाऩ्–मिटानेवाले शिवजी के; इकल् पटैयै–सशक्त अस्त्र को; वल्लाऩ्–बलवान लक्ष्मण ने; अतु वाङ्कुम्पटि–उसको मिटाने का; मऱुका वकै–अप्रमत्त उपाय; पुरिन्ताऩ्–किया; अतु कण्टु–उसको देखकर; तॅऱु–संहारक; कालऩिऩ्–यम से भी; कॊटियोऩुम्–क्रूर इन्द्रजित्; अकम् तिकैत्ताऩ्–मन में भ्रांत हुआ; अऱुका–अक्षय; वय कवि वीररुम्–विजयशील वानर वीर; अरि ऍऩ्पतै–हरि होने की बात; अऱिन्तार्–जान गये। ३०२८

युगक्षय के सर्वलोकसंहारक शिव के बलवान अस्त्र का हरण लक्ष्मण ने अप्रमत्त रीति से करा दिया। वह देखकर यमराज से भी क्रूर इन्द्रजित् भ्रमित हो गया। अक्षय वानर वीरों ने भी जान लिया कि लक्ष्मण हरि (का अंश) है। ३०२८

तॅय्वप्पडै पऴुदुऱ्ऱु वॅऩक्कूशुदल् शिदैवाल्
अॅय्वित्तह मुऴदऩ्ऩदु पिऴैयादॅऩ विशैयाक्
कॅवित्तह मदऩाऱ्चिल कणैवित्तऩ ऩवैयुम्
मॊय्वित्तहऩ् तडन्दोळिऩुम् नुदऱ्चूट्टिऩु मूऴ्ह 3029

तॅय्वप् पटै–दिव्य अस्त्र (पाशुपतास्त्र); पऴुतुऱ्ऱतु–व्यर्थ गया; ऍऩ–कहकर; कूचुतल्–हिचकना; चितैवु–हीनता है; ऍय्–शर चलाने की; वित्तकम्–विद्या; उळतु–मेरे पास है; अऩ्ऩतु–वह ज्ञान; पिऴैयातु–चूकेगा नहीं; ऍऩ इचैया–ऐसा कहकर; कै वित्तकम् अतऩाल्–हस्तलाघव से; चिल कणै–कुछ शर; वित्तितऩ्–चलाये; अवैयुम्–वे भी; मॊय् वित्तकऩ्–गम्भीर ज्ञानी के; तटम् तोळिऩुम्–विशाल कंधों पर और; नुतल् चूट्टिऩुम्–भालपट्ट पर; मूऴ्क–चुभे तब। ३०२९

इन्द्रजित् ने विचारा— दिव्यास्त्र व्यर्थ हुआ। इस पर हिचकता रहना हीनता होगा। मेरे पास अस्त्रचालन की विद्या है। वह अचूक है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसा सोचकर उसने हस्तलाघव के साथ कुछ शर चलाये। वे भी बड़े ज्ञानी लक्ष्मण के विशाल कंधों और भाल के पट्ट पर चुभे। ३०२९

वॅय्योन्महन् मुदलाहिय विऱ्लोर्मिहु तिऱ्लोर्
कैयोय्विलर् मलैमारिपि निरुदक्कडल् कडप्पार्
उय्यारॅन वडिवाळिहळ् शदकोडिह ळुय्त्तान्
शॅय्योनयल् तनिनिन्ऱदन् शिऱुतादैयैच् चॅऱुत्तान् 3030

वॅय्योन् मकन्–सूर्यपुत्र; मुतलाकिय–आदि; विऱ्लोर्–वीर; मिकु तिऱ्लोर्–अति बलवान; कै ओय्विलर्–हाथ को रोके विना; मलै–पर्वतों को; मारियिन्–वर्षा के समान (फेंककर); निरुत कटल्–राक्षस-सागर को; कटप्पार्–पार करने लगे; उय्यार् ॲन–नहीं बचेंगे कहकर; चत कोटिकळ्–शत कोटि; वाळिकळ्–बाण; उय्त्तान्–चलाकर; चॅय्योन्–गोरे वर्ण के लक्ष्मण के; अयल्–पार्श्व में; तनि निन्ऱ–अलग जो खड़ा रहा; तन् चिऱु तातैयै–अपने चाचा को; चॅऱुत्तान्–घृणा से देखा (इन्द्रजित् ने)। ३०३०

सूर्यपुत्र सुग्रीव आदि वानर वीर बल में बढ़कर, हाथ रोके विना पर्वतों की वर्षा-सी करते हुए राक्षस-सेना-सागर पार कर रहे थे। वे बचें नहीं, ऐसा संकल्प करके इन्द्रजित् ने सौ-सौ करोड़ों की संख्या में तीक्ष्ण शर चलाये। फिर गोरे रंग के लक्ष्मण के पास जो खड़ा रहा, उस विभीषण को देखकर उसने (शब्दों द्वारा) घृणा दिखायी। ३०३०

मुरट्टडन् दण्डु मेन्दि मनिदरै मुऱैमै कुन्ऱप्
पिरट्टरिऱ् पुहळ्न्दु पेदै यडियरिऱ् ऱोळुदु पिन्शॅन्
ऱिरट्टुरु मुरश मॅन्न विशैत्तदे यिशैक्किन् ऱायैप्
पुरट्टुवन् तलैयै यिन्ऱु पळियॅन वॊळिवन् बोलाम् 3031

मुरण्–कठिन; तटम् तण्टुम्–बड़ा दण्ड; एन्ति–लेकर; मुऱैमै कुन्ऱ–योग्यता खोकर; पिरट्टरिन्–धोखेबाज के समान; मनितरै पुकळ्न्तु–नरों की स्तुति करके; पेतै अटियरिन्–जड़मति गुलामों के समान; तॊळुतु–वंदना करके; पिन् चॅन्ऱु–अनुगमन करके; इरट्टुरुम्–बारी-बारी से बजायी जानेवाली; मुरचम् ॲन्न–भेरी के समान; इचैत्तते–जो कहते हो; इचैक्किन्ऱायै–उसी को दुहरानेवाले तुम्हें; तलैयै इन्ऱु पुरट्टुवन्–तुम्हारे सिर को लुढ़का दूंगा; पळि ॲन–पर यह कलंक है, ऐसा सोचकर; ऒळिवन्–त्याग देता हूँ। ३०३१

(इन्द्रजित् ने कहा—) आप सशक्त दंड हाथ में लिये हुए फिरते हैं। अपनी योग्यता को गिराकर मार्गच्युत लोगों के समान नरों की तारीफ़ करते हैं। फिर मूर्ख दासों के समान उनकी दासता करते हैं। बारी-बारी से कही हुई बात को भेरीनाद के समान दुहराते रहते हैं। ऐसे आपका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिर कटवाकर मैं भूमि पर लुढ़का दूँगा। पर उससे अपयश होगा। इसी विचार से मैं पीछे हटता हूँ। ३०३१

विऴिपड मुदल्व ऱॆल्लाम् वॆदुम्बिऩ ऱॊदुङ्गि वोऴ्न्दु
वऴिपड वुलह मून्ऱु मडिप्पड वन्द देऩुम्
अऴिपडै ताङ्ग लाऱ्ऱु माडव रियाण्डुम् वॆ.ः(ह्)हाप्
पऴिपड वन्द वाऴ्वै यावरे नयक्कर् पालार् 3032

मुतल्वर् ऎल्लाम्–सभी प्रमुख देव; विऴि पट–दृष्टि के पड़ने पर; वॆतुम्पिऩर्–तप्तचित्त हुए; ऒतुङ्कि–हटकर; वीऴ्न्तु–गिरे; वऴि पट–वंदना की; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोक; अटिप्पट–चरणतल में रहें; वन्ततेऩुम्–ऐसी स्थिति आने पर भी; याण्टुम्–कहीं भी; वॆ.ः.का–अनिच्छित; पऴि पट—कलंकसहित; वन्त वाऴ्वै–रहते जीवन को; अऴि पटै–मिटाने आनेवाली सेना का; ताङ्कल्–सामना करने की; आऱ्ऱुम्–शक्ति रखनेवाले; आटवर् यावर्–कौन पुरुष; नयक्कल् पालार्–चाहेंगे। ३०३२

प्रमुख देव दृष्टि पड़ते ही थर्रायें; हटकर चलें, फिर चरणों पर गिर कर वंदना करें। तीनों लोक नमन करें। ऐसा ऐश्वर्य मिले तो भी अपयश के साथ मिले वैभव को, जिसकी कोई साधारण मनुष्य भी इच्छा नहीं कर सकता, कौन ऐसा पुरुष चाहेगा जो घातक सेना का सामना करने की ताक़त रखते हैं। ३०३२

नीरुळ दऩैयु मुळ्ळ मीऩॆऩ निरुद ऱॆल्लाम्
वेरुळ दऩैयुम् वीव रिरावण ऩोडु मीळार्
ऊरुळ दॊरुव निऩ्ऱाय् नीयुळै युऱैय निऩ्ऩो
डारुळ ररक्कर् निऱ्पा ररशुवीऱ् ऱिरुक्क वैया 3033

नीर् उळ तऩैयुम्–जब तक जल है तब तक; मीऩ् उळ्ळ–मछलियाँ रहती हैं; ऎऩ–ऐसा; निरुतर् ऎल्लाम्–सभी राक्षस; वेर् उळ तऩैयुम्–मूल (रावण) के रहते तक (रहेंगे); इरावणऩोटु–रावण के साथ; वीवर्–मरेंगे; मीळार्–बाद नहीं रहेंगे; ऐया–तात; ऊर् उळतु–नगर है; उऱैय–रहने के लिए; नी उळै–तुम हो; अरचु वीऱ्ऱिरुक्क–राजा बनने; ऒरुवऩ् निऩ्ऱाय्–अकेले तुम रहते हो; निऩ्ऩोटु–तुम्हारे साथ; निऱ्पार्–रहें ऐसे; अरक्कर्–राक्षस; आर् उळर्–कौन हैं। ३०३३

जब तक जल रहेगा, तब तक ही मछलियाँ जीवित रहेंगी। वैसे ही जब तक मूल पुरुष रावण रहेंगे, तब तक राक्षस रहेंगे। और रावण मरें तो ये भी मर जायँगे। बचेंगे नहीं। तो हे तात ! लंका रहेगी इसी पर राज्य करने के लिए आप बचे हैं। आपका साथ देने कौन (क्या) रहेगा ? । ३०३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुन्दैना ळुलहन् दन्द मूत्तवा नोर्हट् कॅल्लाम्
तन्दैयार् तन्दे यारैच् चॅरुविडैच् चायत् तळ्ळिक्
कन्दनार् तन्दे यारैक् कयिलैयो डॊरुहैक् कॊण्ड
ऍन्दैया ररशु शॅय्व दिप्पॅरुम् बलङ्गॊण् डेयो 3034

मुन्तैनाळ्–प्राचीन काल में; उलकम् तन्त–विश्व जिन्होंने रचा; मूत्त–वृद्ध; वान्तोर्कट्कु ऍल्लाम्–सभी देवों के; तन्तैयार्–पिता के; तन्तैयारै–पिता (विष्णु) को; चॅरुविटै–युद्ध में; चाय तळ्ळि–हराकर; कन्तनार् तन्तैयारै–स्कंद के पिता को; कयिलैयोटु–कैलास के साथ; ऒरु कै कॊण्ट–एक हाथ में जिन्होंने उठा लिया था; ऍन्तैयार्–वे मेरे पिता; अरचु चॅय्वतु–राज्य करते हैं; इ पॅरु पलम् कॊण्टेयो–क्या इस (नरों की सहायता) का बल लेकर ही क्या। ३०३४

जिन्होंने पुरातन प्रपंचकर्ता, देवों के पिता वयोवृद्ध ब्रह्मा के पिता श्रीविष्णु को युद्ध में हराया था; जिन्होंने स्कंददेव के पिता शिवजी को कैलास के साथ हाथ में उठा लिया था, वे मेरे पिता अब राज करते हैं —क्या इनके बड़े बल की सहायता से ? । ३०३४

पन्निमलर्त् तविशिन् मेलोन् पार्प्पन्नक् कुलत्तुक् कॅल्लाम्
तन्निमुदल् तलैव नान् वुन्नैवन् दमरर् ताळ्वार्
मन्निदरुक् कडिमै याय्नो यिरावणन् शॅल्व माळ्वाय्
इन्नियुन्नक् कॅन्नो मान् मॅङ्गळो डडङ्गिऱ् ऱन्ऱे 3035

पन्नि मलर् तविचिन् मेलोन्–शीतल कमलासनस्थ ब्रह्मा के; पार्प्पन्न कुलत्तुक्कु ऍल्लाम्–सारे ब्राह्मण-कुल के; तन्नि–अकेले; मुतल्–प्रथम; तलैवनान् उन्नै–नायक आपके सामने; अमरर् वन्तु–देव आकर; ताळ्वार्–सिर नवाते; नी–आप; मन्नितरुक्कु अटिमैयाय्–नरों का दास बनकर; इरावणन् चॅल्वम्–रावण का राज; आळ्वाय्–शासन करेंगे; इन्नि–आगे; उनक्कु मानम् ऍन्नो–आपका मान क्या रहा; ऍङ्कळोटु अटङ्किऱ्ऱु–हमारे साथ वह चला गया; अन्ऱे–न। ३०३५

(आप हमारे साथ ही रहते तो) शीतल कमल पर आसीन ब्रह्मा के सारे ब्राह्मण कुलों के अकेले आदिपुरुष आपकी देवता लोग स्तुति करते। पर आप नरों के दास बनकर रावण की संपत्ति पर शासन करेंगे ! अब आपका क्या मान रहा ? कुलगौरव हमारे साथ नष्ट हो गया न ? । ३०३५

शॊल्वित्तुम् बळित्तु नुङ्गै मूक्किनैत् तुणित्तो राले
वॅल्वित्तुम् बडैक्कै युङ्ग डमैयनै यॅङ्ग ळोडुम्
कॊल्वित्तुन् दोऱ्ऱु निन्ऱु कूऱ्ऱिनार् कुलत्तै यॅल्लाम्
वॅल्वित्तुम् वाळुम् वाळ्विन् वॅरुमैये विळुमि दन्ऱे 3036

नुङ्कै–आपकी छोटी बहिन को; मूक्कितै–नाक को; तुणित्तोराले–काटनेवालों से; चॊल्वित्तुम्–कहलाकर; पळित्तुम्–निंदा कराकर; वॅल्वित्तुम्–हराकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उङ्कळ्–आप लोगों के; पटैक्कै–अस्त्र-हस्त; तमैयतै–ज्येष्ठ भ्राता (कुंभकर्ण) को; ऍङ्कळोटु कॊल्वित्तुम्–हमारे लोगों के साथ मरवाकर; तोऱ्ऱ निऱ्ऱ–हमारे हाथ जो हारे रहे उन; कूऱ्ऱितार् कुलत्तै ऍल्लाम्–यम के कुल के सारे लोगों को; वॆल्वित्तुम्–जिताकर; वाऴुम् वाऴ्विऱ्–जीने के जीवन से; वॆऱुमैये–अभाव ही; विऴुमितऱ्ऱे–श्रेष्ठ है न । ३०३६

आपने अपनी ही बहिन की नाक को काटनेवालों द्वारा हमारे प्रति कठोर शब्द कहलवाये; अपमान करवाया, हराया और हथियारधारी अपने बड़े भाई कुंभकर्ण को हमारे लोगों के साथ मरवा भी दिया । यम हमारे हाथ हारा था । उसके वर्ग के सभी लोगों को आपने जिता दिया । छि: ऐसे जीवन से अभाव में रहना श्रेष्ठ होगा न ? । ३०३६

ऍऴुदिये रणिन्द दिण्डो ळिरावण निराम नम्बाल्
पुऴुदिये पाय लाहप् पुरण्डनाळ् पुरण्डु मेल्वीऴ्न्
दऴुदियो नीयुङ् गूड वार्त्तियो यवनै वाऴ्त्तित्
तॊऴुदियो वॆन्नो शॆय्यत् तुणिन्दनै विशयत् तोळाय् 3037

विचय तोळाय्–विजयी भुजावाले; ऍऴुति–चित्रकारी से युक्त; एर् अणिन्त–सुन्दर बने; तिण् तोळ्–सुदृढ़ कंधों के; इरावणन्–रावण; इरामन् अम्पाल्–राम-बाण से; पुऴुतिये–धूल को ही; पायलाक–शय्या बनाकर; पुरण्ट नाळ्–जिस दिन लोटेंगे उस दिन; मेल् वीऴ्न्तु–उन पर गिरकर; पुरण्टु अऴुतियो–लोट कर रोयेंगे क्या; नीयुम् कूट–आप भी साथ; आर्त्तियो–चिल्लायेंगे; अवनै–उन (श्रीराम) की; वाऴ्त्ति–तारीफ़ करके; तॊऴुतियो–पूजा करेंगे; ऍन्नो–क्या ही; चॆय्य तुणिन्तनै–करना ठाना है । ३०३७

विजयस्कंध ! जिस दिन चित्रकारी के साथ शोभित भुजावाले रावण राम के बाण से हत होकर धूलि पर लोटेंगे, क्या आप उन पर गिरकर रोयेंगे ? उनके साथ चिल्लायेंगे ? या राम की स्तुति करके उसके आगे नमन करेंगे ? क्या करने का निश्चय किया है ? । ३०३७

ऊनुडै युडम्बि नीङ्गि मरुन्दिना लुयिर्वन् दॆय्दुम्
मानिड रिलङ्गै वेन्दैक् कॊल्वरे नीयु मन्नान्
तानुडंच् चॆल्वन् दुय्क्कत् तहुदिये शरत्ति नोडुम्
वानिडैप् पुहुदि यन्ऱे यान्पऴि मऱक्कि लेनाल् 3038

यान्–मैं; पऴि–अपयश; मऱक्किलेन्–भूला नहीं हूँ; ऊनु उटै उटम्पिन्–मांसल शरीर से; उयिर् नीङ्कि–प्राण दूर होने पर; मरुन्तिनाल्–(संजीवनी) ओषधि से; वन्तु ऍय्तुम्–जीवन-प्राप्त; मानिटर्–नर; इलङ्कै वेन्तै–लंका के राजा को; कॊल्वरे–मार सकेंगे क्या; अन्नान् तान् उटै–उनकी; चॆल्वम् तुय्क्क–संपत्ति भोगने; नीयुम् तकुतिये–आप भी योग्य हैं क्या; चरत्तिनोटुम्–(अंदर घुसे) बाणों के साथ; वान् इटै–आकाश में; पुकुति अन्ऱे–चलेंगे न; ऍन्ऱान्–कहा इन्द्रजित् ने । ३०३८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मैं आपके कारण कुल पर लगे बड़े कलंक को भूल नहीं पाता। मांसल शरीर से जिनके प्राण चले गये थे और जो संजीवनी औषध से पुनः जीवन पा गये वे नर क्या रावण को मार सकेंगे? रावण की संपत्ति भोगने की योग्यता भी आपमें है क्या? मेरे बाण के साथ स्वर्ग न चले जायँगे? । ३०३८

अव्वुरै यमैयक् केट्ट वीडण नलङ्गल् मौलि
शैव्विदिल् तुळक्कित् तन्पाल् मुऱुवलुन् देरिव दाक्कि
वैव्विदु पावञ् जालत् तरुममे विळुमि देय
इव्वुरै केट्टि यैन्ना विनैयन विळम्ब लुऱ्ऱान् 3039

अ उरै–वह कथन; अमैय–मन में लगे ऐसा; केट्ट–जिसने सुना वह; वीटणन्–विभीषण; अलङ्कल् मौलि–माला से अलंकृत सिर को; चैव्वितिल् तुळक्कि–खूब हिलाकर; तन् पाल्–अपने पास; मुऱुवलुम्–मंदहास भी; तेरिबतु आक्कि–प्रगट कराकर; ऐय–तात; पावम्–पाप; वैव्वितु–हानिकारक है; तरुममे–धर्म ही; चाल–बहुत; विळुमितु–श्रेष्ठ है; इ उरै केट्टि–यह वचन सुनो; ऐन्ना–कहकर; इनैयन–ऐसा; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। ३०३९

विभीषण ने ये वचन सुनकर हारालंकृत अपना सिर खूब हिलाया और मुस्कुराते हुए कहा कि तात! पाप नाशक है! धर्म ही बहुत श्रेष्ठ है। सुनो यह। वह आगे यों बोला। ३०३९

अऱन्दुणै याव दल्ला लरुनर हमैय नल्हुम्
मऱन्दुणै याह मायाप् पळियोडुम् वाळ माट्टेन्
तुऱन्दिलेन् मैय्म्मै येदुम् बोय्म्मैये तुऱप्प दल्लाल्
पिऱन्दिले निलङ्गै वेन्दन् पिन्नवन् पिळैत्त पोदे 3040

अऱम्–धर्म ही; तुणै आवतु अल्लाल्–सहायक होगा उसे छोड़कर; अरु नरकु–असह्य नरक; अमैय नल्कुम्–मुझे जो अवश्य दिला देगा; मऱम्–पाप को; तुणै आक–सहायक बनाकर; माया–अमिट; पळियोटुम्–कलंक के साथ; वाळ माट्टेन्–जीवन धारण नहीं करूंगा; पोय्मैये तुऱप्पतु अल्लाल्–असत्य त्यागूंगा उसे छोड़; मैय्मै एतुम्–कोई सत्यमार्ग; तुऱन्तिलेन्–नहीं छोड़ा; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा; पिळैत्त पोतु–जब अपचार करते थे; पिन्नवन्–कनिष्ठ मैं; पिऱन्तिलेन्–जनमा नहीं हो गया। ३०४०

धर्म को सहायक न बनाकर नरक पहुँचानेवाले पाप के साथ, अमिट कलंक लेकर मैं जीना नहीं चाहूँगा। असत्य को त्यागूँगा। उसके सिवा सत्य को छोड़ूँगा नहीं। ज्योंही रावण ने वह अपराध किया, त्योंही मेरा उसके भ्राता के रूप में जन्म "नहीं" हो गया। ३०४०

उण्डिल नऱवम् बोय्म्मै युरैत्तिलन् वलिया लोन्ऱुम्
कोण्डिलन् माय वञ्जङ् गुऱित्तिल नियारुङ् गुऱ्ऱम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्डिल रॆन्बा लुण्डे नीयिरुङ् गाण्डि रन्ऱे
पॆण्डिरिर् ऱिऱम्बि नारॆत् तुऱन्ददु पिऴैयिर् ऱामो 3041

नऱवम्–मद्य; उण्टिलन्–पान नहीं करता; पॊय्मै उरॆत्तिलन्–असत्य नहीं बोलता; वलियाल्–बलात्कार से; ऒन्ऱुम्–कुछ भी; कॊण्टिलन्–ग्रहण नहीं करता; माय वञ्चम्–माया तथा वंचक कार्य; कुऱित्तिलन्–नहीं सोचता; ऎन् पाल्–मेरे सम्बन्ध में; यारुम् कुऱ्ऱम् कण्टिलर्–किसी ने कुछ अपराध नहीं देखा है; उण्टे–है क्या; नीयिरुम्–तुम लोगों ने भी; काण्टिर् अन्ऱे–देखा है न; पॆण्टिरिन्–स्त्री को लेकर; तिऱम्पित्तारै–जो अनुचित कार्य करता है उसे; तुऱन्ततु–छोड़ना; पिऴैयिऱ्ऱु आमो–अपराध होगा क्या। ३०४१

मैं ताड़ी नहीं पीता, झूठ नहीं बोलता। ज़ोर-ज़बरदस्ती कुछ नहीं छीन लेता। माया, वंचना आदि से दूर रहता हूँ। कोई मुझमें कुछ दोष नहीं देखता। है क्या ? तुम लोगों ने यह जाना है न ? स्त्री के प्रति अपराधी को छोड़ आना अपराध होगा क्या ? । ३०४१

मूवहै युलहु मेत्तु मुदलव नॆवर्क्कु मूत्त
तेवर्दन् देवन् ऱेवि कऱ्पिनिर् चिऱन्दु ळाळै
नोवन् शॆय्दल् तीदॆन् ऱुरैप्पनुन् ऱादै शीऱिप्
पोवॆन् बुरैक्कप् पोन्दे नरहदिर् पॊरुन्दु वेन्नो 3042

मूवकै उलकुम्–(ऊपर, मध्य, नीचे) तीनों विध लोक; एत्तुम्–जिनकी स्तुति करते हैं; मुतलवन्–वे आदिदेवता; ऎवर्क्कुम्–सभी; मूत्त–वृद्ध; तेवर् तम् तेवन्–देवाधिदेव श्रीराम की; तेवि–पत्नी; कऱ्पिनिल्–पातिव्रत्य में; चिऱन्तुळाळै–श्रेष्ठ देवी को; नोवन् चॆय्तल्–दुःख देना; तीतु–बुरा है; ऎन्ऱु–ऐसा; उरैप्प–कहने पर; नुन् तातै–तुम्हारे पिता के; चीऱि–ग़ुस्सा करके; पो–जाओ; ऎन्–ऐसा; उरैक्क–कहने पर; पोन्तेन्–मैं चला आया; नरकु अतिल्–नरक में; पॊरुन्तुवेन्नो–जाऊँगा क्या। ३०४२

"सभी त्रिलोकवासियों द्वारा स्तुत, आदिदेव, सबसे पुरातन तथा देवाधिदेव श्रीराम की पत्नी, पातिव्रत्य में श्रेष्ठ देवी सीताजी को दुःख देना बुरा है।" मैंने यही कहा। उस पर तुम्हारे पिता ने क्रुद्ध होकर मुझसे कहा कि 'चलो, हटो।' मैं आ गया। फिर नरक में जाऊँ (क्या) ? । ३०४२

वॆम्मैयिऱ् ऱरुम नोक्का वेट्टदे वेट्टु वीयुम्
उम्मैये पुहऴम् बूण तुऱक्कमु मुमक्के याह
शॆम्मैयिऱ् पॊरुन्दि मेलो रॊऴुक्किन्नो डऱ्ततॆत् तेऱुम्
ऎम्मैये पऴियुम् बूण नरहमु मॆमक् याहके 3043

वॆम्मैयिल्–(तुम लोगों के) क्रूरता (के कार्यों) से; तरुम नोक्का–धर्म का विचार न करके; वेट्टते वेट्टु–मनमाना चाहकर; वीयुम्–मरनेवाले; उम्मैये–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम्हें ही; पुकळुम् पूण–यश प्राप्त हो; तुऱक्कमुम्–स्वर्ग भी; उमक्के आक–तुम्हें प्राप्त हो; चॅम्मैयिन् पॊरुन्ति–उत्तम गुणों में रहकर; मेलोर् ऒळुक्किन्ऱोट्–साधुओं के योग्य चरित्र के साथ; अऱत्तै–धर्म को; तेऱुम्–जो मानकर चलता है; ऍम्मैये–मुझ जैसे लोगों पर; पळियुम् पूण–कलंक लगे; ऍमक्के–हमें ही; नरकममु आक–नरक मिले । ३०४३

यश मिले तुम्हीं को जो नृशंस हो, धर्म नहीं देखते, मनमाना करते हो और मर जाओगे ! सद्गुणी रहकर साधुचरित्र तथा धर्म पर विश्वास रखनेवाले हमें अपयश मिले ! नरक भी हमें ही मिले ! । ३०४३

अऱित्तितैप् पावम् वॆल्ला दॆन्ऱुम दऱिन्दु नाऩे
तिऱत्तिनु मुऱुमॆन् ऱॆण्णित् तेवर्क्कुन् देवॆच् चेर्न्देऩ्
पुऱत्तिनिऱ् पुहळे याह पळियॊडुम् बुणर्ह पोदच्
चिऱप्पिनिप् पॆऱुह तीर्ह वॆन्ऱऩन् शीऱ्ऱ मिल्लान् 3044

चीऱ्ऱम् इल्लान्–जो क्रोध नहीं करता था, उस विभीषण ने; अऱत्तितै–धर्म को; पावम् वॆल्लातु–पाप जीत नहीं सकेगा; ऍन्ऱुम्–जो है; अतु–वह; अऱिन्तु–जानकर भी; तिऱत्तिनुम् उऱुम्–सिधाई से सम्बद्ध है; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; तेवर्क्कुम् तेवै–देवाधिदेव से; नाऩे चेर्न्तेऩ्–मैं ही जा मिला; पुऱत्तितिल्–बाहर (लोक में); पुकळे आक–यश मिले; पळियॊटुम् पुणर्क–(या) अपयश ही मिले; इति–अब; पोत चिऱप्पु–अधिक श्रेष्ठता; पॆऱुक–मिले; तीर्क–या मिटे; ऍन्ऱऩन्–कहा । ३०४४

विभीषण ने आगे कहा कि मैं यह जानकर कि धर्म को पाप जीत नहीं सकता, और यह सोचकर कि यही सीधा कार्य है, देवाधिदेव श्रीराम के पक्ष में स्वयं आया । यह चाहे संसार में यश लाये या अपयश ! इससे मुझे गौरव अधिक मिले या नष्ट हो । ३०४४

पॆऱुञ्जिऱप् पॆल्ला मॆन्गैप् पिऱैमुहप् पहळि पॆऱ्ऱाल्
इऱुञ्जिऱप् पल्ला लप्पा लॆङ्गिनिप् पोव वॆन्ऩात्
तॆऱुञ्जिऱैक् कलुळ् ऩन्ऩ वॊरुहणै तॆरिन्दु शॆम्बॊन्
उऱुञ्जुडर्क् कळुत्तै नोक्कि नूक्किऩा ऩुऱुमिन् वॆय्योन् 3045

उऱुमिन् वॆय्योन्–वज्र से भी कठोर इन्द्रजित्; पॆऱुम् चिऱप्पु ऍल्लाम्–मिलने वाले गौरव सब; ऍन् कै–मेरे हाथ के; पिऱैमुक–अर्धचन्द्र से नोक वाले; पकळि–बाण; पॆऱ्ऱाल्–पाओगे तो; चिऱप्पु इऱुम्–गौरव नष्ट होंगे; अल्लाल्–नहीं तो; इति–अब; अप्पाल्–दूर; ऍङ्कु पोवतु–कहाँ जाओ; ऍऩ्ऩा–कहकर; चॆम् पॊन् उऱुम्–लाल स्वर्ण-सम; चुटर् कळुत्तै–शोभते गले का; नोक्कि–निशाना बनाकर; तॆऱुम्–घातक; चिऱै कलुळऩ् अऩ्ऩ–पक्षी गरुड़ के समान; ऒरु कणै–एक अस्त्र को; तॆरिन्तु–चुन लेकर; नूक्किऩान्–चलाया । ३०४५

यह सुनकर अशनि से भी दारुण इन्द्रजित् ने विभीषण से कहा कि आपको जो गौरव मिलेगा, वह मेरे हाथों के अर्धचन्द्र बाणों का लगना ही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

होगा। आपको जब वह मिले तब आपके सारे गौरव मिट जायँगे। नहीं तो आप जायँगे कहाँ ? यह कहकर उसने विभीषण के लाल स्वर्ण-सम कंठ का निशाना बनाकर गरुड़ पक्षी के समान रहनेवाले एक दाहक बाण चुनकर चलाया। ३०४५

अक्कणै यशनि यॆन्न वन्नलॆन्न वाल मुण्ड
मुक्कणान् शूल मॆन्न मुडुहिय तिऱत्तै नोक्कि
इक्कणत् तिऱ्ऱा निऱ्ऱा नॆन्गिन्ऱ विमैयोर् काणक्
कैक्कणै यॊन्ऱाल् वळ्ळ लक्कणै कण्डङ् गण्डान् 3046

अ कणै–वह बाण; अचनि ऍन्न–वज्र के समान; अनल् ऍन्न–आग के समान; आलम् उण्ट–विष जिन्होंने खाया उन; मुक्कणान्–त्रिनेत्र शिवजी के; शूलम् ऍन्न–त्रिशूल के समान; मुटुकिय–वेग से जो आया; तिऱत्तै नोक्कि–उस वेग को देखकर; इ कणत्तिल् तान्–इसी क्षण; इऱ्ऱान्–(विभीषण) मर गया; ऍन्किन्ऱ–ऐसा जो कहते रहे; इमैयोर् काण–उन देवों के देखते; वळ्ळल्–उदार प्रभु लक्ष्मण ने; कै कणै ऒन्ऱाल्–हाथ के एक अस्त्र से; अ कणै–उस अस्त्र को; कण्टम् कण्टान्–खण्डित कर दिया। ३०४६

वह शर अशनि, आग और हलाहलभोगी त्रिनेत्र शिव के त्रिशूल के समान आ रहा था। उसकी गतिविधि देखकर जो देव यह कह रहे थे कि विभीषण मर गया, उनके ही समक्ष उदार प्रभु लक्ष्मण ने अपने हाथ के एक अस्त्र से उसे खण्ड-खण्ड कर दिया। ३०४६

कोलॊन्ऱु तुणिद लोडुङ् गूऱ्ऱुक्कुङ् गूऱ्ऱ मन्नान्
वेलॊन्ऱु वाङ्गि विट्टान् वॆयिलॊन्ऱु विळुव दॆन्न
नालॊन्ऱु मून्ऱु मान पुवनङ्गळ् नडुङ्ग लोडुम्
नूलॊन्ऱु वरिवि लानु मदनैयुम् नुऱुक्कि वीळ्त्तान् 3047

ऒन्ऱु कोल्–अतिश्रेष्ठ उसका बाण; तुणितलोटुम्–खंडित हुआ तो; कूऱ्ऱुक्कुम्–यम का भी; कूऱ्ऱम् अन्नान्–यम जो था उस (इन्द्रजित्) ने; वेल् ऒन्ऱु–एक शक्ति; वाङ्कि–ले; विट्टान्–चलाया; वॆयिल् ऒन्ऱु–एक सूर्य; विळुवतु ऍन्न–गिरता जैसे (गिरा तो); नाल् ऒन्ऱुम्–चार और; मून्ऱुम्–तीन; आन–जो हैं वे सात; पुवनङ्कळ्–भुवन; नटुङ्कलोटुम्–काँपे और; नूल् ऒन्ऱु–धनुष-शास्त्रोक्त रीति से बने; वरि–सबन्ध; विलानुम्–धनु रखनेवाले (लक्ष्मण) ने; अतनैयुम्–उसको भी; नुऱुक्कि–चूर करके; वीळ्त्तान्–गिरा दिया। ३०४७

अपने श्रेष्ठ बाण को खण्डित हुआ देखकर यम के यम इन्द्रजित् ने विभीषण पर एक शक्ति ले चलायी। वह सूर्य के समान गिर रही थी और सातों भुवन काँप रहे थे। तब धनुषशास्त्रोक्त रीति से बने, सबन्ध धनु के धारक बीर लक्ष्मण ने उसे भी चूर्ण कर गिरा दिया। ३०४७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेल्कॊडु नम्मे लॆय्दा नॆन्ऱॊरु वॆहुळि पॊङ्गक्
काल्हॊडु कालिऱ् कूडिक् कैतॊडर् कनहत् तण्डाल्
कोल्हॊळु मॊरुव नॊडुङ् गॊडित्तडन् देरिऱ् पूण्ड
पाल्हॊळुम् बुरवि यॆल्लाम् बडुत्तितान् पडियिन् मेले 3048

नम्मै–हम पर; वेल् कॊटु–शक्ति का; ऍय्तान्–प्रहार किया; ऍन्ऱ–ऐसा; ऒरु वॆकुळि पॊङ्क–क्रोध के उभरते; काल् कॊटु–पैर से; कालिन्–पवन के समान; कूटि–उसके पास जाकर; कै तॊटर्–हाथ में रहे; कनक तण्टाल्–कनक-दण्ड से; कॊटि–ध्वजा से अलंकृत; तटम् तेरिल्–विशाल रथ पर; कोल् कॊळुम्–वेत्रपाणी; ऒरुवनॊटुम्–एक सारथी के साथ; पूण्ट–रथ से जुते; पाल् कॊळुम्–दुग्धश्वेत; पुरवि ऍल्लाम्–सभी अश्वों को; पटियिन् मेले–भूमि पर; पटुत्तितान्–गिरा दिया (विभीषण ने)। ३०४८

विभीषण इस पर नाराज हुआ कि इन्द्रजित् ने उस पर शक्ति का प्रयोग किया। इसलिए वह कनक-दण्ड लेकर पवन-गति में पैदल इन्द्रजित् के पास गया। उसने ध्वजासहित रथ पर रहनेवाले वेत्रधारी सारथी को और रथ से जुते अश्वों को मार भूमि पर गिरा दिया। ३०४८

अळिन्दतेर् मीदु निन्ऱा नायिर कोडि यम्बु
पॊळिन्दवन् ऱोळिन् मेलु मिलक्कुवन् पुयत्तिन् मेलुम्
ऒळिन्दव रुरत्तिन् मेलु मुदिरनीर् वारि याह
अळिन्दिळिन् दोड नोक्कि यण्डमु मिरिय वार्त्तान् 3049

अळिन्त तेर् मीतु–टूटे रथ पर; निन्ऱान्–खड़ा रहकर; आयिर कोटि अम्पु–सहस्र कोटि शर; पॊळिन्तु–चलाकर; अवन् तोळिन् मेलुम्–उस (विभीषण) के कन्धों पर और; इलक्कुवन् पुयत्तिन् मेलुम्–लक्ष्मण की भुजाओं पर; ऒळिन्तवर्–अन्यों के; उरत्तिन् मेलुम्–वक्षों पर; उतिर नीर्–रक्तजल; वारियाक–समुद्र के रूप में; अळिन्तु–निकलकर; इळिन्तु–गिरकर; ओट–बहा; नोक्कि–देखकर; अण्टमुम् इरिय–अण्ड फाड़ते हुए; आर्त्तान्–नर्दन किया (इन्द्रजित् ने)। ३०४९

टूटे रथ पर रहते हुए इन्द्रजित् ने सहस्र कोटि शरों की वर्षा-सी करा दी। वे विभीषण के कंधों, लक्ष्मण की भुजाओं और अन्यों के वक्षों पर जा लगे। सबके शरीरों से रक्त-वारि सागर के समान बह निकला। यह देखकर इन्द्रजित् ने ऐसा भीषण नाद किया कि अंड ही फट जाय। ३०४९

आर्त्तव नन्नैय पोदि नळिविलात् तेर्हॊण् डन्ऱिप्
पोर्त्तॊळिल् पुरिय लाहा दॆन्बदोर् पॊरुळै युन्निप्
पार्त्तव रिमैया मुन्नम् विशुम्बिडैप् पाय्न्दा नॆन्नुम्
वार्त्तैयै निऱुत्तिप् पोन्ना निरावणन् मरुङ्गु शॆन्ऱान् 3050

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आर्त्तवत्–जिसने नाद उठाया वह इन्द्रजित्; अतैय पोतिन्–तब; अऴिविला–नाशहीन; तेर् कॊण्टत्रि–रथ लिये विना; पोर् तॊऴिल्–युद्धकार्य; पुरियल् आकातु–कर नहीं सकते; ऍन्पतु ओर् पॊरुळै–ऐसी एक बात; उन्ति–सोचकर; पार्त्तवर्–दर्शक; इमैया मुन्नम्–पलक मारें इसके पूर्व ही; विचुम्पु इटै पाय्न्तान्–आकाश में उछला; ऍन्नुम् वार्त्तैयै निऱुत्ति–यही कथन पीछे छोड़कर; पोतान्–गया; इरावणन् मरुङ्कु–रावण के पास; चॆन्ऱान्–पहुँचा। ३०५०

गर्जन करने के बाद इन्द्रजित् ने सोचा कि ऐसे रथ के विना, जो नहीं टूटे, युद्धकार्य असंभव है। यह विचार करके वह एक दम आकाश में इतनी तेज़ी से उछल गया कि देखनेवाले पलक न झप पायें। उछलने का समाचार सर्वत्र रह गया पर वह कहीं दिखायी नहीं दिया। वह सीधे रावण के पास जा पहुँचा। ३०५०

27. इन्दिरशित्तु वदैप् पडलम् (इन्द्रजित्-वध पटल)

विण्णिडैक् करन्दा ऩॆन्बार् वञ्जनै विळैक्कु मॆन्बार्
कण्णिडैक् कलक्क नोक्कि यैयुऱ वुळक्कुङ् गालै
पुण्णुडै याक्कैच् चॆन्नी रिऴिदरप् पुक्कु निन्ऱ
ऍण्णुडै महऩै नोक्कि यिरावण निऩैय शॊन्नान् 3051

विण् इटै–आकाश में; करन्तान्–अदृश्य हो गया; ऍन्पार्–जो कहते; वञ्चनै विळैक्कुम्–वंचना करेगा; ऍन्पार्–जो कहते; कण्णिटै–आँखों में; कलक्कम्–भ्रांति दिखाकर; नोक्कि–देखते हुए; ऐयुऱवु कॊण्टु–संशय करते हुए; उळक्कुम् कालै–जब व्याकुल हो रहे थे; पुण् उटै याक्कै–व्रण-सहित शरीर से; चॆन् नीर् इऴि तर–लाल रक्त के बहते; पुक्कु निन्ऱ–प्रवेश कर जो खड़ा रहा; ऍण् उटै मकऩै–चिन्ताकुल पुत्र को; नोक्कि–देखकर; इऩैय–ये बातें; इरावणन्–रावण ने; चॊन्नान्–कहीं। ३०५१

कुछ वानरों ने कहा कि आकाश में ओझल हो गया इन्द्रजित्। कुछ अन्य वानरों का विचार था कि वह अवश्य वंचक कार्य करेगा। सभी वानरों की आँखों में भ्रांति थी। संशयग्रस्त हो वे संकट उठा रहे थे। तब शरीर से बहते लाल रक्त के साथ प्रवेश कर खड़े रहे चिंताकुल अपने पुत्र को देखकर रावण ने यों कहा। ३०५१

तॊडङ्गिय वेळ्वि मुऱ्ऱुप् पॆऱ्ऱिलात् तॊऴिल् निन्ऱोण्मेल्
अडङ्गिय वम्बे यॆन्ऩै यऱिवित्त दऴिवि लियाक्कै
नडुङ्गिऩै पोलच् चालत् तळर्न्दऩै कलुळ ऩणप्
पडङ्गुऱै यरव मॊत्ता युऱ्ऱदु पहर्दि यॆन्ऱान् 3052

तॊटङ्किय वेळ्वि–आरब्ध यज्ञ; मुऱ्ऱुप् पॆऱ्ऱिला तॊऴिल्–पूरा नहीं हुआ सो काम; निन् तोळ् मेल्–तुम्हारे कंधे पर; अटङ्किय अम्पे–चुभे अस्त्रों ही ने;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्तै अऱिवित्ततु–मुझे समझा दिया; नटुङ्कितै पोल–भयातुर-से; अऴिवु इल् याक्कै–अमर तुम्हारा शरीर; चाल तळर्न्ततै–खूब थका है; कलुऴन् नण्ण–गरुड़ के पास आने पर; पटम् कुऱै–झुके पन वाले; अरवम् ऑत्ताय्–सर्पतुल्य हो; उऱ्ऱतु–जो हुआ; पकर्ति–बताओ; ऍन्ऱान्–कहा। ३०५२

तुम्हारे कंधों में चुभे रहे अस्त्र देखता हूँ और जान लेता हूँ कि आरब्ध यज्ञ पूरा नहीं हुआ है। तुम बहुत काँप गये —यह तुम्हारे अमिट शरीर की शिथिल स्थिति से जान पड़ता है! गरुड़ के पास आने पर फन संकुचित कर रहनेवाले साँप के समान दिखते हो। जो हुआ सो बतलाओ। ३०५२

चूऴ्वितै माय मॅल्ला मुम्बिये तुडैक्कच् चुऱ्ऱि
वेळ्वियैच् चिदैय नूऱ वॅहुळिया लॅऴुन्दु पॉङ्गि
आळ्वितै याऱ्ऱ ऱन्ना लमर्त्तॊऴि ऱॊडङ्गि यानुम्
दाळ्विलाप् पडैहण् मून्ऱुन् दॊडुत्ततॅन् ऱडुत्तु विट्टान् 3053

चूऴ्–साजिश के; मायम् वितै ऍल्लाम्–मायापूर्ण सभी कृत्यों को; उम्पिये–आपके कनिष्ठ भ्राता ने ही; तुटैक्क–मिटा दिया और; चुऱ्ऱि–घेराव डालकर; वेळ्वियै–यज्ञ को; चितैय नूऱ–(लक्ष्मण के) व्यर्थ करके मिटाने पर; यानुम्–मैंने भी; वॅकुळियाल्–क्रोध से; ऍऴुन्तु–उठकर; पॉङ्कि–उफनकर; आळ्वितै आऱ्ऱल् तन्नाल्–पौरुषपूर्ण अपनी शक्ति से; अमर् तॊऴिल् तॊटङ्कि–युद्धकार्य आरम्भ करके; ताऴ्बु इला–जो कम नहीं उन; पटैकळ् मून्ऱुम्–(त्रिदेवों के) तीनों अस्त्र; तॊटुत्ततॅन्–छोड़े; तटुत्तु विट्टान्–लक्ष्मण ने उन्हें विफल कर दिया। ३०५३

इन्द्रजित् ने उत्तर दिया— साजिश में भ्रम पैदा करने के लिए मैंने जो भी कार्य किये, उन सबको आपके छोटे भाई ने बेकार कर दिया। लक्ष्मण ने घेरा डालकर यज्ञ को तहस-नहस कर दिया। मैं कोप करके उठा और अपने पौरुषयुक्त बल दिखाकर युद्ध करने लगा। जो किसी विध कम नहीं, उन तीनों दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया। पर लक्ष्मण ने उन (पाशुपत, ब्रह्मास्त्र और नारायणास्त्र) तीनों को रोक दिया। ३०५३

निलञ्जॅय्दु विशुम्बुञ् जॅय्द नॅडियवन् पडैनिन् ऱानै
वलञ्जॅय्दु पोयिऱ् ऱॅन्ऱाल् मऱ्ऱिनि वलिय दुण्डो
कुलञ्जॅय्द पावत् ताले कॊडुम्बहै तेडिक् कॊण्डाय्
शलञ्जॅयि नुलह मून्ऱु मिलक्कुवन् मुडिप्पन् ऱानै 3054

निलम् चॅय्तु–भूलोक रचकर; विचुम्पुम् चॅय्त–जिसने आकाश भी रचा; नॅटियवन् पटै–उस लम्बोतरे (श्रीविष्णु) का अस्त्र; निन्ऱानै–स्थित उसको; वलम् चॅयतु–परिक्रमा करके; पोयिऱ्ऱु ऍन्ऱाल्–गया कहो तो; इनि–इससे बढ़कर; वलियतु–बलवान; मऱ्ऱु उण्टो–अन्य है क्या; कुलम् चॅय्त–हमारे कुल ने जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किया; पावत्ताले–उस पाप से; कॊटुम् पकै–भयंकर शत्रु; तेटि कॊण्टाय्–आपने ढूंढ़ लिया है; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; चलम् चॆयित्–क्रोध करे तो; तानॆ–अकेले ही; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों का; मुटिप्पन्–अन्त करा देगा। ३०५४

पृथ्वी और आकाश के रचयिता त्रिविक्रम नारायण का अस्त्र उस लक्ष्मण की परिक्रमा करके हट गया —कहें तो इससे बढ़कर पुष्टता क्या चाहिए ? कुल का प्रभूत पाप है— आपने बहुत ही दारुण शत्रु ढूंढ़ लिया है ! लक्ष्मण क्रोध करेगा तो अकेले ही तीनों लोकों का अंत कर देगा। ३०५४

मुट्टिय शॆरुविन् मुन्न मुदलवन् पडैयै यॆन्मेल्
विट्टिल नुलहै यञ्जि यादलाल् वॆन्ऱु मीण्डेन्
किट्टिय पोदुङ् गात्ता निन्नमुङ् गिळर वल्लान्
शुट्टिय वलियि नाले कोऱलैत् तुणिन्दु निन्ऱान् 3055

मुन्नम्–पहले; मुट्टिय चॆरुविल्–घमासान युद्ध में; मुतलवन् पडैयै–ब्रह्मास्त्र को; उलकै अञ्चि–लोक (-नाश) से डरकर; ऍन् मेल्–मुझ पर; विट्टिलन्–नहीं चलाया था; आतलाल्–तभी तो; वॆन्ऱु मीण्टेन्–जीतकर लौटा; किट्टिय पोतुम्–(अबकी बार जब वह) उसके पास गया; कात्तान्–अपने को बचा भर लिया; इन्नमुम् किळर वल्लान्–और भी खिल सकता है; चुट्टिय वलियिनाले–लोकशंसित बल से; कोऱलै–मारना; तुणिन्तु निन्ऱान्–निश्चय करके खड़ा है। ३०५५

पहले जो घोर युद्ध चला उसमें उन्होंने लोकनाश से डरकर मुझ पर ब्रह्मास्त्र प्रयुक्त नहीं किया था। उसी कारण मैं विजय पाकर लौट सका। फिर अब जब ब्रह्मास्त्र उसके सामने गया, उसने अपने को बचा भर लिया। वह और भी अपने बल में खिल सकेगा। प्रकीर्तित बल के आधार पर वह मेरी हत्या ठानकर स्थित है। ३०५५

❀आदला लञ्जि नॆनॆन् ऱरुळलै याशै तानच्
चीदैबाल् विडुदि यायि नऩैयवर् शीऱ्ऱन् दीर्वर्
पोदलुम् बुरिवर् शॆय्द तीमैयुम् बॊऱुप्प रुन्मेऱ्
कादला लुरैत्ते नॆन्ऱा नुलहॆलाङ् गलक्कि वॆन्ऱान् 3056

उलकॆलाम् कलक्कि–सभी लोकों को क्षुब्ध करके; वॆन्ऱान्–जिसने जीता था उस (इन्द्रजित्) ने; आतलाल्–इसलिए; अ चीतै पाल्–उस सीता पर; आचै विटुति आयिन्–मोह को छोड़ दें तो; अनैयवर्–वे; चीऱ्ऱम् तीर्वर्–क्रोध छोड़ देंगे; पोतलुम् पुरिवर्–पुनर्गमन भी करेंगे; चॆय्त तीमैयुम्–हमने जो की वह बुराई भी; पॊऱुप्पर्–क्षमा कर देंगे; अञ्चिनॆन् ऍन्ऱु–डर गया ऐसा; अरुळलै–सोचने की कृपा न करें; कातलाल्–प्रेम के कारण; उरैत्तेन्–कहा; ऍन्ऱान्–कहा (इन्द्रजित् ने)। ३०५६

लोकों को विक्षुब्ध करनेवाले इन्द्रजित् ने रावण से कहा कि इसलिए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आप सीता पर मोह को छोड़ दें तो वे कोप शांत कर लेंगे। लौट जायँगे भी। हमारे दुष्कृत्यों को भी माफ़ कर देंगे। यह मत सोचिए कि मैं भय खा गया। आप पर स्नेह के कारण ही मैं यह बता रहा हूँ। ३०५६

इयम्बलु मिलङ्गै वेन्द नॅयिऱ्ऱिळ निलवु तोन्ऱप्
पुयङ्गळुङ् गुलुङ्ग नक्कुप् पोर्क्किन्ऱि यॊऴिदि पोलाम्
मयङ्गिन्ऱै मनमु मञ्जि वरुन्दिन्ऱै वरुन्द लैय
शयङ्गॊडु तरुवॆं निन्ऱे मन्निदरैत् तनुवॊन् ऱाले 3057

इयम्पलुम्–कहने पर; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा ने; ऍयिऱ्ऱ इळ निलवु–दाँतों की बालचन्द्रिका को; तोन्ऱ–प्रकट करते; पुयङ्कळुम् कुलुङ्क–भुजाओं को हिलाते हुए; नक्कु–हँसकर; इन्ऱि पोर्क्कु–अब युद्ध से; ऒऴिति पोल् आम्–हट जाओगे शायद क्या; मनमुम् मयङ्किन्ऱै–भ्रमितमन हो गये; अञ्चि वरुन्तिन्ऱै–डरे तथा दुःखी हो; ऐय–तात; वरुन्तल्–दुःखी मत हो; मन्निदरै–नरों को; तनु ऒन्ऱाले–एक धनु से; इन्ऱे–आज ही; चयम् कॊटु–विजय लाकर; तरुवॆन्–दूँगा। ३०५७

इन्द्रजित् के ऐसा कहने पर लंका के राजा ने दाँतों से बालचंद्रिका-सा प्रकाश छिटकाते हुए और भुजाओं को हिलाते हुए मुस्कुराकर कहा कि तुमने अब युद्ध में जाने का विचार छोड़ दिया है क्या ? तुम्हारा मन भ्रमित है। डरते और संकट पाते हो ! तात ! तुम दुःखी न हो। उन नरों पर मैं आज ही अपने अकेले धनु से तुम्हें विजय दिलाऊँगा। ३०५७

❀ मुन्नैयो रिऱन्दो रॆल्ला मिप्पहै मुडिप्प रॆन्ऱुम्
पिन्नैयोर् निन्ऱो रॆल्लाम् वॆन्ऱवर्प् पॆयर्व रॆन्ऱुम्
उन्नैनी यवरै वॆन्ऱु तरुदियॆन् ऱुणर्न्दु मन्ऱाल्
ऍन्नैये नोक्कि यान्निन् नॆडुम्बहै तेडिक् कॊण्डेन् 3058

मुन्नैयोर्–पहले के; इऱन्तोर् ऍल्लाम्–जो मरे वे सभी; इप्पकै मुटिप्पर्–इस शत्रु का नाश करेंगे; ऍन्ऱुम्–ऐसा और; पिन्नैयोर्–बाद के; निन्ऱोर् ऍल्लाम्–जो बचे हैं वे सब; अवर् वॆन्ऱु–उनको जीतकर; पॆयर्वर् ऍन्ऱुम्–लौटेंगे ऐसा; उन्नै–तुम्हें; नी–तुम; अवरै वॆन्ऱु तरुति–उन्हें जीतकर (विजय) दिलाओगे; ऍन्ऱु–ऐसा; उणर्न्तुम् अन्ऱु–समझकर नहीं; ऍन्नैये नोक्कि–अपने को ही देखकर; इ–इन; नॆटु पकै–बड़े शत्रुओं को; तेटिक् कॊण्टेन्–ढूँढ़कर बना लिया। ३०५८

"जो पहले मर गये वे इन शत्रुओं को मारेंगे; या जो अभी बचे हैं, वे इन्हें हराकर लौटेंगे; या तुम उन्हें हराकर विजय दिलाओगे।" —ऐसा सोचकर नहीं; पर अपने को देखकर ही मैंने यह बड़ी शत्रुता बना ली थी। ३०५८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ पेदैमै युरैत्ताय् पिळ्ळा युलहैलाम् बैयरप् पेराक्
कादैयैन् पुहऴि नोडु निलैपैऱ् वमरर् काण
मीदैळु मॊक्कु ळन्न याक्कैयै विडुव दल्लाल्
शीदैयै विडुव दुण्डो विरुपदु तिण्डो ळुण्डाल् 3059

पिळ्ळाय्–पुत्र; पेतैमै उरैत्ताय्–अज्ञान की बातें कहीं; उलकैलाम् पैयर–सारे लोकों के नष्ट होते भी; ऎन् पुकऴिनोटु–मेरे यश के साथ; पेरा कातै–मेरी अमर गाथा; निलै पैऱ्–स्थिर हो ऐसा; अमरर् काण–देवों के देखते; मीतु ऎळु–(जल) पर उठनेवाले; मॊक्कुळ् अन्न–बुलबुले के समान; याक्कैयै–शरीर को; विटुवतु अल्लाल्–त्यागना छोड़कर; इरुपतु तोळ् उण्टु–बीस कंधों के रहते; चीतैयै विटुवतु–सीता को त्यागना; उण्टो–होगा क्या । ३०५९

पुत्र ! तुमने अज्ञानता की बात कही । जब लोक अपनी स्थिति से बिगड़ जायँगे, तब भी मैं अपने यश और अपनी अमर गाथा को देवों के देखते स्थिर बनाकर अपना जल के बुलबुले के समान शरीर छोड़ूँगा । उसके सिवा बीसों भुजाओं के रहते सीता को छोड़ना भी कहीं होगा क्या । ३०५९

❀ वॆन्ऱिलॆ नॆन्ऱ पोदुम् वेदमुळ् ळळवु मियानुम्
निन्ऱुळॆ नन्ऱो मऱ्ऱव् विरामन्पेर् निऱ्कु मायिन्
पॊन्ऱुद लॊरुहा लत्तुत् तविरुमो पॊदुमैत् तन्ऱो
इन्ऱुळार् नाळै माळ्वर् पुहऴुक्कु मिरुदि युण्डो 3060

वॆन्ऱिलॆन् ऎन्ऱ पोतुम्–न जीतूँगा तो भी; वेतम् उळ्ळळवुम्–जब तक वेद रहेंगे, तब तक; इरामन् पेर् निऱ्कुम् आयिन्–राम का नाम रहेगा तो; यानुम्–मैं भी; निन्ऱुळॆन् अन्ऱो–रह गया न; ऒरु कालत्तु–कभी एक बार; पॊन्ऱुतल्–मरना; तविरुमो–चूक सकता है क्या; पॊतुमैत्तु अन्ऱो–(मरना) सर्वसामान्य बात है न; इन्ऱु उळार्–आज के जीवित; नाळै माळ्वर्–कल मर जायँगे; पुकऴुक्कुम्–(पर) यश का भी; इऱुति उण्टो–अंत होता है क्या । ३०६०

मैं जीतूँ नहीं तो भी वेदों के रहते तक राम का नाम रहेगा तो मैं भी रह गया न ? आखिर एक न एक दिन मरना अवार्य है क्या ? मरण सर्वसामान्य है न ! आज के रहनेवाले कल मरनेवाले ही हैं ? लेकिन यश का अंत होगा क्या ? । ३०६०

❀ विट्टनॆन् शनहि तन्नै यॆन्ऱलुम् विण्णोर् नण्णिक्
कट्टुव दल्ला लॆन्नैप् पॊरुळॆनक् करुदु वारो
पट्टनै नॆन्ऱ पोदु मॆळिमैयिऱ् पडुहि लेन्यान्
ऎट्टिनो डिरण्डु मान तिशैहळै यॆऱिन्दु वॆन्ऱेन् 3061

चनकि तन्नै–जानकी को; विट्टनॆन् ऎन्ऱलुम्–छोड़ दिया, यह सुनते ही; विणणोर्–देव; नण्णि–मेरे पास आकर; ऎन्नै कट्टुवतु अल्लाल्–मुझे बाँधना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

छोड़कर; पॊरुळ् ऎन्न–कोई पदार्थ; करुतुवारो–सोचेंगे क्या; यान् पट्टॆन्–मैं मर गया; ऎन्ऱ् पोतुम्–ऐसे समय में भी; ऎळिमैयिऱ् पट्टुकिलेन्–आसानी से नहीं मरूँगा; ऎट्टिन्नोटु इरण्टुम् आन्न–आठ और दो से बनी; तिचैकळ्–दिशाओं को; ऎऱिन्तु वॆन्ऱेन्–मिटाकर जीतूँगा। ३०६१

जानकी को छोड़ दूँ तो देव आकर मुझे बाँध देंगे। मुझे अपदार्थ मानेंगे। इसके सिवा कुछ गौरव देंगे क्या? मरना ही पड़े तो भी आसानी से नहीं मरूँगा; दसों दिशाओं को मिटाकर विजयी बनूँगा। ३०६१

❀ शॊल्लियॆन् पलवुम् नीनिन् निरुक्कैयैत् तॊडर्न्दु तोळिल्
पुल्लिय पहळि वाङ्गिप् पोर्त्तॊळिऱ् चिरमम् बोक्कि
ऎल्लियुङ् गळित्ति यॆन्ना वॆळुन्दन नॆळुन्दु पेळ्वाय्
वल्लिय मुनिन्दा लन्नान् वरुहतेर् विरैवि नॆन्ऱान् 3062

पलवुम् चॊल्लि ऎन्–किंबहुना कथनेन; नी–तुम; निन्–अपने; इरुक्कैयै–वासस्थान को; तॊटर्न्तु–जाकर; तोळिल् पुल्लिय–कंधों पर चुभे; पकळि–शरों को; वाङ्कि–निकालकर; पोर् तॊळिल्–युद्ध-कृत्य से उत्पन्न; चिरमम् पोक्कि–श्रम दूर करके; ऎल्लियुम्–रात को भी; कळित्ति–बिताओ; ऎन्ना–कहकर; ऎळुन्तनन्–उठा; ऎळुन्तु–उठकर; पेळ् वाय्–फटे-से मुँह वाला; वल्लियम्–व्याघ्र; मुनिन्ताल्–कुपित हुआ; अन्नान्–जैसा उसने; वरुक तेर्–आये रथ; विरैवित्–जल्दी; ऎन्ऱान्–कहा। ३०६२

बहुत सी बातें कहने से क्या लाभ? तुम जाओ। अपने महल में जाकर कंधों पर चुभे अस्त्रों को निकाल दो। युद्ध-श्रम का परिहार कर लो और रात को आराम से काट दो। रावण यह कहकर उठा और विवृत मुख व्याघ्र कुपित हुआ जैसे क्रोध करके बोला कि आये मेरा रथ शीघ्र। ३०६२

ऎळुन्दवन् ऱन्नै नोक्कि यिणैयडि यिऱैञ्जि यॆन्दाय्
ऒळिन्दरुळ् शीऱ्ऱम् शॊन्न वुरुदियैप् पॊऱुत्ति यान्पोय्क्
कळिन्दनॆ नॆन्ऱ पिन्नर् नल्लवा काण्डि यॆन्ना
मॊळिन्दनन् दॆय्वत् तेर्मे लेऱिनन् मुडिय लुऱ्ऱान् 3063

ऎळुन्तवन् तन्नै–जो उठा उसे; मुटियलुऱ्ऱान्–अन्त को जो आ गया था उस इन्द्रजित् ने; नोक्कि–देखकर; इणै अटि–चरणद्वय की; इऱैञ्चि–वंदना करके; ऎन्ताय्–मेरे पिता; चीऱ्ऱम्–कोप; ऒळिन्तु अरुळ्–दूर करने की कृपा करें; चॊन्न उरुतियै–मेरा कहा हित-वचन; पॊऱुत्ति–क्षमा कर लें; यान् पोय्–मैं जाकर; कळिन्तनॆन्–मरा; ऎन्ऱ पिन्नर्–यह होने के बाद; नल्लवा काण्टि–अच्छा देखेंगे; ऎन्ना मॊळिन्तनन्–ऐसा कहा; तॆय्व तेर् मेल्–दिव्य रथ पर; एऱिनन्–सवार हुआ। ३०६३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आसन्न-मृत्यु इन्द्रजित् ने उठे अपने पिता से नमस्कार करके विनय की। मेरे पिताजी ! आप क्रोध छोड़ देने की कृपा करें। मैंने जो हितवचन कहा उसके लिए क्षमा कर दें। मेरी युद्ध में मृत्यु होने के बाद आप सत्य को अच्छी तरह से देख लेंगे। यह कहकर वह दिव्य रथ पर सवार हुआ। ३०६३

पडैक्कल विज्जै मऱ्ऱुम् पडैत्तऩ पलवुन् दऩ्बाल्
अडैक्कल माहत् तेव रऴित्तऩ वॆल्लाम् वाङ्गिक्
कॊडैत्तॊऴिल् वेट्टोर्क् कॆल्लाङ् गॊडुत्तऩऩ् कॊडियोऩ् इऩ्ऩैक्
कडैक्कणाल् नोक्कि नोक्कि यिरुहणीर् कलुऴप् पोऩाऩ् 3064

तेवर्–देवों ने; तऩ् पाल्–उसके पास; अटैक्कलमाक–धरोहर के रूप में; अऴित्तऩ–जो दे रखी थी; पटैक्कल विज्चै–अस्त्रविद्या को; मऱ्ऱुम्–और अन्य; पटैत्तऩ पलवुम्–रचित अनेक; ऎल्लाम् वाङ्कि–सब लेकर; कॊटै तॊऴिल्–दान-कर्म में; वेट्टोर्क्कॆल्लाम्–सभी माँगनेवालों को; कॊटुत्तऩऩ्–दान किया; कॊटियोऩ् तऩ्ऩै–क्रूर रावण को; कटै कण्णाल्–आँखों की कोर से; नोक्कि नोक्कि–बार-बार देखकर; इरु कण्–दोनों आँखों से; नीर्–आँसू; कलुऴ–बहने देकर; पोऩाऩ्–गया। ३०६४

उसने देवों के धरोहर के रूप में अपने पास रखे हुए अस्त्र-शस्त्रों की विद्या और हथियार सब ले लिये। बाद याचकों को उनको तृप्त करते हुए खूब दान किया। अपने पिता को आँखों के कोर से बार-बार देखते हुए और आँखों से आँसू बहाते हुए चला। ३०६४

इलङ्गैयि ऩिरुद रॆल्ला मॆऴुन्दऩर् विरैवि ऩॆय्दि
विलङ्गलन् दोळ निऩ्ऩैप् पिरिहलम् विळिदु मॆऩ्ऩ
वलङ्गॊडु तॊडर्न्दार् दम्मै मऩ्ऩऩैक् कामिऩ् यादुम्
कलङ्गलि रिऩ्ऱे शॆऩ्ऱु मऩिदरैक् कडप्प लॆऩ्ऱाऩ् 3065

इलङ्कैयिऩ् निरुतर् ऎल्लाम्–लंकावासी सभी राक्षस; ऎऴुन्तऩर्–उठे; विरैवित् ऎय्ति–जल्दी जाकर; विलङ्कल् अम् तोळ्–पर्वतोपम मनोरम कन्धों वाले; निऩ्ऩै पिरिकलम्–आपसे अलग नहीं होंगे; विळितुम्–मरेंगे; ऎऩ्ऩ–कहते हुए; वलङ्कॊटु–दायीं ओर से; तॊटर्न्तार् तम्मै–जो पीछा करते थे उनसे; मऩ्ऩऩै कामिऩ्–राजा की रक्षा करें; यातुम् कलङ्कलिर्–कुछ क्षुब्ध न हों; इऩ्ऱे चॆऩ्ऱु–आज ही जाकर; मऩितरै कटप्पल्–नरों को जीतूँगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ३०६५

तब लंका के सारे राक्षस जल्दी आ जुट गये। उन्होंने कहा कि हे पर्वतस्कंध ! आपसे अलग नहीं रह सकेंगे। हम भी आपके साथ मरेंगे। वे प्रदक्षिणा करके उसके साथ-साथ जाने लगे। इन्द्रजित् ने उनसे कहा कि आप अपने राजा की सेवा करें। कुछ व्यग्र न हों। अभी जाकर मैं उन नरों को जीत लूंगा। ३०६५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वणङ्गुवार् वाळ्त्तु वार्हळ् वडिविऩै नोक्कित् तम्वाय्
उणङ्गुवा रुयिर्प्पा रुळ्ळ मुरुहुवार् वॆरुव लुऱ्ऱ
कणङ्गुऴै महळि रीण्डि यिरैत्तवर् कडैक्क णॆऩ्ऩम्
अणङ्गुऱै नंडुवेल् पायु ममर्हडन् दरिदिऱ् पोऩान् 3066

वॆरुवल् उऱ्ऱ–भयभीत; कणम् कुऴै–पृथुल कुंडलधारिणी; मकळिर्–स्त्रियाँ; ईण्टि–एकत्रित होकर; इरैत्तवर्–हो-हल्ला मचाती हुई; वणङ्कुवार्–नमन करतीं; वाळ्त्तुवार्कळ्–(कुछ स्त्रियाँ) आशीर्वाद करतीं; वटिविऩै नोक्कि–(उसका) रूप देखकर; तम् वाय् उणङ्कुवार्–कुछ के मुख सूख जाते; उयिर्प्पार्–निःश्वास छोड़ती; उळ्ळम् उरुकुवार्–कुछ का दिल पिघल जाता; कटैक्कण् ऍऩ्ऩुम्–तिरछी नज़र रूपी; अणङ्कु उऱै–भयकारी व; पायुम्–वेग से जानेवाले; णॆटु वेल्–लम्बे भालों से; अमर् कटन्तु–युद्ध करके विजय पाकर; अरितिल्–कठिनता से; पोऩान्–गया। ३०६६

भयातुर पृथुलकुंडलधारिणी राक्षस-नारियाँ शोर मचाते हुए एकत्र हो गयीं। कुछ स्त्रियों ने नमस्कार किया। कुछ ने शुभकामना प्रगट की। उसका रूप देखकर कुछ स्त्रियों का मुख सूख गया। कुछ लोगों ने लम्बे निःश्वास छोड़े। कुछ का मन पिघल गया। इस भाँति रही स्त्रियों की तिरछी नज़र रूपी धमकी-भरी तथा चुभनेवाली लम्बी शक्तियों से टक्कर लेते हुए इन्द्रजित् कठिनाई से आगे जा पाया। ३०६६

एयिऩ ऩिऩ्ऩ ऩाह विलक्कुव ऩॆडुत्त विल्लान्
शेयिरु विशुम्बै नोक्कि वीडणा तीयो ऩप्पाल्
पोयिऩ ऩादल् वेण्डुम् पुरिन्दिल ऩॊऩ्ऱु मॆऩ्बान्
आयिरम् पुरवि पूण्ड तेरिऩ्पे ररवङ् गेट्टान् 3067

इऩ्ऩऩ्–ऐसा; एयिऩऩ् आक–गया तो; ऍट्टुत्त विल्लान्–उठे हुए धनुर्धर; इलक्कुवऩ्–लक्ष्मण ने; चेय्–दूर तक; इरु–बड़े; विचुम्पै नोक्कि–आकाश को देखकर; वीटणा–विभीषण; तीयोऩ्–दुष्ट ने; ऒऩ्ऱुम् पुरिन्तिलऩ्–कुछ नहीं किया है; अप्पाल् पोयिऩऩ्–अलग गया; आतल् वेण्टुम्–होना चाहिए; ऍऩ्पाऩ्–कहा तो; आयिरम् पुरवि पूण्ट–हज़ार घोड़ों के जुते; तेरिऩ्–रथ की; पेर् अरवम्–उच्च ध्वनि; केट्टाऩ्–सुनी। ३०६७

वह इस भाँति आ रहा था। उधर सन्नद्धधनु लक्ष्मण ने आकाश को देखकर विभीषण से कहा कि विभीषण! दुष्ट इन्द्रजित् ने कुछ नहीं किया। उस तरफ़ चला गया होना चाहिए। तभी उन्हें हज़ार अश्वों के जुते रथ का उच्च नाद सुनायी दिया। ३०६७

कुऩ्ऱिडै ऩॆरिदर वडवरैयिऩ् कुवडुरुळ् हुवदॆऩ मुडुहुतॊऱुम्
पॊऩ्ऱिणि कॊडियिऩ दिडियुरुमि ऩदिर्हुरऩ मुरल्वदु पुऩैमणियिऩ्
मिऩ्ऱिरळ् शुडरदु कडल्परुहुम् वडवऩल् वॆळियुऱ वरुवदॆऩच्
चॆऩ्ऱदु तिशैतिशै युलहिरियत् तिरिबुव ऩमुमुऱु तऩियिरदम् 3068

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरि पुवनमुम्–तीनों भुवनों में; उऱ–जा सकनेवाला; तनि इरतम्–विशिष्ट रथ; इटै–मार्गमध्यस्थित; कुन्ऱ–पर्वतों को; नॅरि तर–चूर करते हुए; पॊन् तिणि–स्वर्णपूर्ण; कॊटियिनतु–ध्वजा वाला; वटवरैयित् कुवट्टु–उत्तरी (मेरु) पर्वत का शिखर; उरुळ्कुवतॅत–लुढ़कता आता जैसे; मुट्टुकु तोऱुम्–जल्दी जाते हर समय; इटि उरुमिन्–घोर अशनि का; अतिर्कुरल्–थर्रानेवाला नाद; मुरल्वतु–उठाता; पुनै मणियिन्–अलंकृतकारी रत्नों की; मिन् तिरळ्–बिजली-समूह की-सी; चुटरतु–कांति बिखेरनेवाला; उलकु इरिय–संसार को अस्त-व्यस्त करते हुए; तिचै तिचै–दिशा-दिशा में; कटल् परुकुम्–समुद्र को पीनेवाली; वट अनल्–बड़वाग्नि; वॆळियुऱ–बाहर निकलकर; वरुवतु ऍन–आती हो जैसे; चॆन्ऱतु–गया। ३०६८

वह रथ तीनों लोकों में जा सकता था। मार्ग के पर्वतों को चूर करता हुआ वह स्वर्णपूर्ण ध्वजाओं से अलंकृत रथ उत्तरी मेरु लुढ़कता हो ऐसा लुढ़कता हुआ आ रहा था। जब वह सवेग जाता तब वज्र का-सा नाद उठता था। जड़े हुए रत्नों के समूह से कांति छूटती थी। बड़वानल आता हो, ऐसा वह सारे लोकों को भय से तितर-बितर भगाते हुए आ रहा था। ३०६८

कडन्मऱु हिडवुल हुलैयनॆडुङ् गदिरिरि दरवॆदिर् कविकुलमुम्
कुडर्मऱु हिडमलै कुलैयनिलङ् गुऴियॊडु किऴिपड वऴिपडरुम्
इडमऱु हियपॊडि मुडुहिडलु मिरुळुळ ऍनवॆऴु मिहलरविन्
पडमऱु हिडवॆदिर् विरवियदव् विरुळ्पह लुऱवरु पहैयिरदम् 3069

कटल्–समुद्र; मऱुकिट–धूम उठें; उलकु उलैय–लोक अस्त-व्यस्त हों; मॆदुम् कतिर्–बड़े तेजपुंज, सूर्य और चन्द्र; इरि तर–स्थान बदलकर भागें; ऍतिर्–सामने रहे; कवि कुलमुम्–कपिकुल की; कुटर् मऱुकिट–आँतें छिन्न हों; मलै कुलैय–कुलगिरियाँ अस्थिर हों; निलम्–पृथ्वी; कुऴियॊटु–गड्ढों-सहित; किऴि पट–फट जाय ऐसा; वऴि पटरुम्–मार्ग में जहाँ रथ जाता रहा; इडम्–उन स्थानों में; मऱुकिय पॊटि–धूमनेवाली धूल; मुटुकिटलुम्–जल्दी गयी (और) उन गड्ढों को भरती रही; इरुळ् उळतु–अँधेरा है; ऍन–ऐसा; ऍऴुम्–उठनेवाले; इकल् अरविन्–शत्रु सर्प का; पटम् मऱुकिट–फन पिस जाय ऐसा; अ इरुळ्–वह अंधकार; पकल् उऱ–दिन बन जाय ऐसा; वरु–आनेवाला; पकै इरतम्–वैरी रथ; ऍतिर् विरवियतु–सामने आया। ३०६९

समुद्र क्षुब्ध हुए। लोक काँपे। बड़े तेजपुंज सूर्य और चन्द्र स्थिति बदल गये। वानरों की आँतें छिन्न हुईं। भूमि गड्ढों-सहित फट गयी। उसके मार्ग में उठी धूल ने गड्ढों को भर दिया। अंधकार को आया समझकर जो साँप भूमि के ऊपर आये उनके फनों को कुचलता हुआ, उस अंधकार को दिन में बदलता हुआ वह वैरी-रथ सामने प्रकट हुआ। ३०६९

आर्त्तदु निरुदर्व मनिहमुड नमररुम् वॆरुवितर् कविकुलमुम्
वेर्त्तदु वॆरुवलॊ डलम्वरलाल् विडुहणे शिदरिन नडुतॊऴिलोत्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तीर्त्ततु मवनॆदिर् मुडुहिनॆडुन् दिशैशॆवि डॆऱितर विशैहॆळुतिण्
पोर्त्तॊळिल् पुरिदलु मुलहुकडुम् बुहैयॊडु शिहैयत्तल् पॊदुळियदाल् 3070

निशतर् तम् अत्तिकम्–राक्षसों की सेना ने; उटत् आर्त्ततु–एक साथ घोष किया; अमरशम् वॆरुवित्तर्–देव डरे; कवि कुलमुम्–वानर-यूथ; वॆरुवलॊडु–डर के साथ; अलम् वरलाल्–मन दुःखी होने से; वेर्त्ततु–स्वेद से भर गये; अटु तॊळिलोत्–युद्धकर्मी (इन्द्रजित्) ने; विटु कणै–धनु से निकले शरों को; चितऱित्तत्–सर्वत्र चलाया; तीरत्ततुम्–पवित्रमूर्ति; अवत् ऍतिर्–उसके सामने; मुटुकि–जल्दी जाकर; नॆटु तिचै–लम्बी दिशाएँ; चॆविटु ऍऱितर–उच्च नाद से पीड़ित हुईं; विचै कॆळु–जोरदार; तिण् पोर् तॊळिल्–कठोर युद्ध-कार्य; पुरितलुम्–करते समय; उलकु–लोक भर में; कटुम् पुकैयॊडु–घने धुएँ के साथ; चिकै अत्तल्–अग्नि-ज्वालाएँ; पॊतुळियतु–भर उठीं। ३०७०

राक्षस-सेना ने एकदम बड़ा नर्दन किया। देव डरे। कपिकुल भी डर और भ्रम से पसीने से तर हो गये। युयुत्सु इन्द्रजित् ने अपने धनु से बाण छोड़े। पवित्रमूर्ति ने भी उसके सामने तेज़ी से जाकर तीव्र तथा प्रचंड युद्ध किया, जिससे लम्बी दिशाएँ काँप गयीं। धुएँ और ज्वालाओं के साथ आग सर्वत्र फैली। ३०७०

वीडण नमलत्तै विऱल्हॆळुपोर् विडलैयै यिन्नियिडै विडलुळदेल्
शूडलै तुऱुमलर् वाहैयत्तत् तॊळुदत् तवळवि लळहनुमक्
कोडणै वरिशिलै युलहुलैयक् कुलवरै पिदिर्पड निलवरैयिल्
शेडनुम् वॆरुबुऱ् वुरुमुऱळुतिण् तॆऱुकणै मुऱैमुऱै शिवऱित्तत्ताल् 3071

वीटणत्–विभीषण ने; पोर्–युद्ध में; विऱल् कॆळु–विजयशील; विटलैयै–छोकरे को; इन्नि–अब; इटै विटल्–मध्य में छोड़ना; उळतेल्–होगा तो; तुऱु–घने; वाकै मलर्–'वाहै' पुष्प की माला (जयमाला); चूटलै–नहीं पहनेंगे; ऍत्त–ऐसा कहकर; अमलत्तै–पवित्रमूर्ति को; तॊळुतत्तत्–नमस्कार किया; अ अळविल्–तब; अळकत्तुम्–सुन्दरमूर्ति ने भी; अ–उस; कोटणै–घोषयुक्त; वरि चिलैयै–सबन्ध धनु पर; उलकु उलैय–लोकों को विक्षुब्ध करते हुए; कुलवरै–कुलगिरियों को; पिदिर् पट–चूर करके; निलवरैयिल्–पृथ्वी में; वेटत्तुम् वॆरुबुऱ्–आदिशेषनाग को भय से भरकर; उरुम् उऱळ्–वज्र-सम; तिण् तॆऱु–शत्रुहंता; कणै–शर; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; चितऱित्तत्–लगातार चलाये। ३०७१

विभीषण ने लक्ष्मण को समझाया कि युद्धविजयी वीर छोकरे को अबकी बार बचने देंगे तो 'वाहै' (जय-) माला पहन नहीं पायँगे। यह कहकर विभीषण ने पवित्रमूर्ति को नमस्कार किया। तब सुन्दरमूर्ति लक्ष्मण ने भी शोर करनेवाले सबन्ध धनु से वज्र-सम कठोर निपातक शर संधानकर लोकों को क्षुब्ध करते हुए, कुलगिरियों को चूर करते हुए और भूमि ढोनेवाले शेषनाग को भय में डालते हुए छोड़े। ३०७१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयिर वळवित वयिन्मुहवा यड्हणै यवन्विड विवन्विडवत्
तीयिनु मॅरिवत वुयिर्परुहच् चिदरित कविहळो डिननिरुदर्
पोयित पोयित तिशैनिरैयप् पुरळ्बवर् मुडिविलर् पॉरुतिरलोर्
एयित रॊरुवरै यॊरुवर्कुरित् तॅरिहणै यिरुमळै पॊऴिवनपोल् 3072

आयिरम् अळवित–हजार के परिमाण के; अयिन् मुक–तीक्ष्णमुखी; वाय् अटु कणै–घातक अस्त्र; अवन् विट–इन्द्रजित् के चलाने पर; इवन् विट–इनके भी छोड़ने पर; अ तीयिनुम्–(युगान्त की) उस अग्नि से भी; ॲरिवत–अधिक जलने वाले; उयिर् परुक–प्राण पीने लगे; कविकळ्–वानर; चितरित–बिखरकर; ओटित–भागे; निरुतर्–राक्षस; पोयित पोयित तिचै–जहाँ-जहाँ भागे उन दिशाओं में; निरैय–भरकर; पुरळ्पवर्–जो लोटे; मुटिविलर्–उनकी संख्या का अन्त नहीं; पॊरु तिरलोर्–युद्धवीर (दोनों) ने; ऒरुवरै ऒरुवर् कुरित्तु–एक-दूसरे का निशाना बनाकर; इरु मळै–दो मेघ; पॊऴिवत पोल्–बरसते जैसे; ॲरि कणै–ज्वालायुक्त शरों को; एयित्तर्–चलाया। ३०७२

सहस्र की संख्या के तीक्ष्णमुखी व संहारक शर इन्द्रजित् ने चलाये और लक्ष्मण ने भी प्रयोग किये। युगांत की अग्नि से भी दाहक वे दोनों ओर रहनेवाले वानरों के प्राणों को पीने (हरने) लगे तो वे बिखरकर भागे। राक्षस भी जहाँ गये, उस दिशा में भर गये। जो आग में फँसकर लोटे, वे असंख्यक थे। युद्धसमर्थ दोनों ने परस्पर लक्ष्य बनाकर बड़ी वर्षा के समान अपने ज्वाला-सहित शरों को चलाया। ३०७२

अऱ्ऱत वतल्विऴि निरुदन्वळङ् गडुहणै यिडैयिडै यडलरियिन्
कॊऱ्ऱवन् विडुहणै मुडुहियव नुडल्पॊदि कुरुदिहळ् परुहितकॊण्
डुऱ्ऱत वॊऴिकिळर् कवशनुळैन् दुरुहिल तॅरुहिल वनुमनुडल्
पुऱ्ऱिडै यरवॅत नुळैयनॅडुम् बॊरुशर मवतवै युणर्हिलताल् 3073

अतल् विऴि–अग्नि बरसानेवाली आँखों का; निरुतन्–राक्षस; वळङ्कु–जो चला रहा था; अटु कणै–वे घातक बाण; इटै इटै–बीच-बीच में; अऱ्ऱत–कट गये; अटल् अरियिन्–ताक़तवर सिंह-सदृश; कॊऱ्ऱवन्–विजयी; विटु कणै–जो शर चला रहे थे वे; मुटुकि–तेज़ जाकर; अवन् उटल् पॊति–उसके शरीर में भरे रहे; कुरुतिकळ् परुकि–रक्त पीकर; कॊण्टु उऱ्ऱत–पीते घुसे रहे; नॅटुम्–लम्बे; पॊरु चरम्–युद्ध-शर; ऒऴि किळर्–कांतियुत; कवचम् नुळैन्तु–(लक्ष्मण के) कवच में प्रवेश करके; उऱुकिल–कुछ घुसे नहीं; तॅऱुकिल–हानि नहीं की; अनुमन् उटल्–हनुमान के शरीर में; पुऱ्ऱिटै अरवु ॲत–बाँबी में सर्प के समान; नुळैय–घुसे; अवन्–वह; अवै उणर्किलत्–उन्हें अनुभव ही नहीं करता था। ३०७३

अग्नि-दृष्टि इन्द्रजित् द्वारा प्रेरित संहारक शर बीच-बीच में कट गये। बलवान केसरी-तुल्य लक्ष्मण के शर तेज़ जाकर इन्द्रजित् के शरीर पर रक्त को पीते हुए लगे रहे। इन्द्रजित् के लम्बे युद्धशर उज्ज्वल कवच में घुसकर कुछ हानि नहीं कर सके। न उनके शरीर को छेद सके। पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हनुमान के शरीर पर बिल में साँप जैसे घुसे; तो भी हनुमान ने कुछ अनुभव ही नहीं किया कि शर चुभे हैं। ३०७३

आयिडै यिळैयवन् विडमनैया ऩवऩिडु कवशमु मऴिवुपडत्
तूयिऩ ऩयिऩ्मुह विशिहऩॆडुन् दुळैपड विऴिकऩल् शॊरियमुऩिन्
देयिऩ निरुदऩ ऩॆरिहणैता मिडऩिल पडुवऩ विडैयिडैवन्
दोय्वुऱु वऩलदु ऩॆरिवुऱला लुरऱिऩ रिमैयव रुवहैयिऩाल् 3074

आयिटै–तब; इळैयवन्–लघुराज ने; विटम् अऩैयान् अवऩ्–विषतुल्य उस (इन्द्रजित्) के; इटु कवचमुम्–पहने कवच को; अऴिवु पट–नष्ट करके; अयिऩ् मुक विचिकम्–तीक्ष्णमुखी बाण; नॆटु तुळै पट–बड़े छेद बनाते हुए; वीचिऩऩ्–चलाये; विऴि–आँखों से; कऩल् चॊरिय–आग उगलते हुए; मुऩिन्तु–ग़ुस्सा करके; निरुतऩ्–राक्षस के; ऩॆरि कणै–चुने बाण; एयिऩताम्–जो चलाये गये वे; इटऩ् पटुवऩ इल–निशाने के स्थानों पर नहीं लगते; वऩ्तु–आकर; इटै इटै–बीच-बीच में; ओय्वु उऱुवऩ–रुक जाते; अतु–वह; ऩॆरिवुऱलाल्–जानकर; इमैयवर्–देवों ने; उवकैयिऩाल्–संतोष से; उरऱिऩर्–नारे लगाये। ३०७४

तब लघुराज लक्ष्मण ने तीक्ष्णमुखी शर चलाकर इन्द्रजित् का कवच भेदकर उसके शरीर में छेद भी बना दिये। इन्द्रजित् नाराज़ हुआ, जिससे उसकी आँखों से आग-सी निकली। उसने सावधानी से चुनकर अस्त्र प्रयुक्त किये, पर वे निशाने पर नहीं लगे; बल्कि बीच ही बीच रुक गये। यह देखकर देव लोग आनंदातिरेक से चिल्ला उठे। ३०७४

विल्लिऩिऩ् वलितर लरिदॆऩलाल् वॆयिलिऩु मऩलुमि ऴयिल्विरैविल्
शॆल्लॆऩ मिडल्कॊडु कडविऩऩ्मऱ् ऱदुतिशै मुहऩ्महऩ् ऩुदवियदाल्
अल्लिऩुम् वॆळिपड वॆदिर्वदुहण् डिळैयव ऩॆऴुवहै मुऩिवरर्दम्
शॊल्लिऩुम् वलियदॊर् शुडुहणैयाल् नडुविरु तुणिपड वुडऱिऩऩाल् 3075

विल्लिऩिऩ्–धनुष से; वलि तरल्–जीतना; अरितु ऎऩलाल्–कठिन है, इसलिए; वॆयिलिऩुम्–धूप से; अऩल् उमिऴ्–आग निकालनेवाले; अयिल्–शक्ति को; विरैविल् चॆल्–जल्दी चल; ऎऩ–कहकर; मिटल् कॊटु–ज़ोर से; कडविऩऩ्–चलाया; अतु–वह; तिचैमुकऩ् मकऩ्–ब्रह्मा का पुत्र (पुलस्त्य) द्वारा; उतवियताल्–दिया गया था, इसलिए; ऎल्लिऩुम्–सूर्य से; वॆळि पट–प्रकाश देते हुए; ऎतिर्वतु–जो सामने आ रहा था उसे; इळैयवऩ् कणटु–कनिष्ठ ने देखकर; ऎऴु वकै मुऩिवरर् तम्–सप्तविध ऋषियों के; चॊल्लिऩुम्–शाप-वचन से भी; वलियतु–असरदार; ओर चुटु कणैयाल्–एक दाहक शर को; नट–बीच में; इरु तुणि पट–दो भागों में तोड़ते हुए; उटऱिऩऩ्–चलाया। ३०७५

इन्द्रजित् ने सोचा कि धनु के बल से लक्ष्मण को परास्त करना असंभव है। अतः उसने धूप से भी अधिक ज्वलंत एक शूल लिया और उसे 'चलो जल्दी' कहकर ज़ोर के साथ चलाया। वह चतुर्मुखपुत्र पुलस्त्य का दिया हुआ था। वह सूर्य से भी अधिक प्रकाश छिटकाता हुआ आ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रहा था। लक्ष्मण ने देखा और सप्तऋषियों के शाप से भी अचूक एक अस्त्र चलाकर उसे बीच से काट दिया। ३०७५

आणियि निऴैयवन् विशिहनुऴैन् दायिर मुडल्पुह वऴिपडुशॆम्
शोणिद निलमुऱ वुलऱिडवुन् दॊडुहणै विडुवन मिडल्हॆऴुतिण्
पाणिहळ् कडुहिन मुडुहिडलुम् पहलवन् मरुमह नडुकणैयिन्
तूणियै युरुमुऱळ् पहऴिहळाल् तुणिपड मुऱैमुऱै शिदऱिनऩाल् 3076

आणियिन्–प्रपंच की धुरी के समान श्रीराम के; इळैयवन्–कनिष्ठ के; आयिरम् विचिकम्–हजार शर; उटल्–(इन्द्रजित् के) शरीर में; नुऴैन्तु पुक–अन्दर घुसे; अऴि पटु–निकल बहनेवाला; चॆम् चोणितम्–लाल रक्त; निलम् उऱ–भूमि पर गिरा; उलऱिटवुम्–उनका शरीर सूख-सा गया; तॊटु कणै–लगाये गये शर; विटुवन–छोड़नेवाले; मिटल् कॆऴु–बलसंयुक्त; तिण् पाणिकळ्–कठोर हाथ; विटुवन–छोड़नेवाले; मिटल् कॆऴु–बलसंयुक्त; तिण् पाणिकळ्–कठोर हाथ; मुटुकिटलुम्–जोर लगाते रहे तो; उरुम् उऱळ्–अशनि-सम; कटुकिन–तीव्रगामी; पकऴिकळाल्–शरों को; पकलवन् मरुमकन्–सूर्यवंशोद्भव लक्ष्मण के; अटु कणैयिन्–घातक शरों के; तूणियै–तूणीर को; तुणि पट–छिन्न करते हुए; मुऱै मुऱै–कई बार; चितऱिनऩ्–छितरा दिया (निरंतर, अधिक संख्या में चलाया)। ३०७६

लोक की धुरी से तुल्य श्रीराम के भाई ने सहस्र विशिख चलाये, जो राक्षस के शरीर के अन्दर घुसे। उससे लाल रक्त बहा और भूमि पर गिरा। इन्द्रजित् का शरीर सूख गया। उसके अस्त्रप्रेरक हाथ त्वरा से काम करने लगे तो उसने अशनि-सम तेज़ अस्त्रों को सूर्यवंशज के घातक अस्त्रों वालेतूणीर को बार-बार काटते हुए मानो छितरा दिया। ३०७६

तेरुळ दॆनिनिवन् वलितॊलैया नॆनुमदु तॆरिवुऱ वुणरुऱुवान्
पोरुऱु पुरविहळ् पडुहिलवाल् पुनैपिणि तुणिहिल पॊरुहणैयाल्
शीरिदु पॆरिदिद निलैमैयॆनत् तॆरिबव नॊरुशुडु तॆऱुकणैयाल्
शारदि मलैपुरै तलैयैनॆडुन् दरैयिडै यिडुदलुम् निलतिरिय 3077

तेर् उळतु ऍनिन्–रथ रहेगा तो; इवन् वलि तॊलैयान्–यह निर्बल नहीं होगा; ऍनुम् अतु–जो था वह (तथ्य); तॆरिवुऱ–साफ़; उणर्वु उऱुवान्–समझनेवाले (लक्ष्मण) के; पॊरु कणैयाल्–युद्ध-शर से; पोर् उऱु–युद्धरत; पुरविकळ्–अश्व; पटुकिल–नहीं मरते; पुनै–बद्ध; पिणि–बंधन; तुणिकिल–नहीं कटते; इतु चीरितु–यह विशेष बात है; इतन् निलैमै पॆरितु–इसकी स्थिति गुरु है; ऍन तॆरिपवन्–यह जानकर; चुटु–जलानेवाले; ऒरु तॆऱु कणैयाल्–एक घातक अस्त्र से; चारति–सारथी के; मलै पुरै तलैयै–पर्वतोपम सिर को; निलै तिरिय–स्थिति बदलते हुए; नॆटुम् तरैयिटै–लम्बी पृथ्वी पर; इटुतलुम्–गिराते समय। ३०७७

इन्द्रजित् का रथ जब तक रहेगा तब तक वह निर्बल नहीं होगा। यह बात लक्ष्मण ने समझ ली। "मेरे अस्त्रों से इसके अश्व नहीं मरते; बल्कि उसके ऊपर बँधी रस्सियाँ आदि कटती भी नहीं। यह विशेष बात

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लगती है। इसका अर्थ भी बड़ा गंभीर है।" उन्होंने ऐसा सोचकर एक बहुत ही प्रभावशाली अस्त्र से सारथी के पर्वत-सम सिर को अपने स्थान से अलग करके लम्बी भूमि पर गिरा दिया। ३०७७

उय्विन्नै यॊरुवन् तूण्डा दुलत्तलिऱ् ऱवत्तै नण्णि
ऐविन्नै नलिय नॆवा ऩऱिविऱ्कु मुवमै याहि
मॆय्विन्नै यमैन्द काममु विऱ्किन्ऱ विरहिऱ् ऱोराम्
पॊय्विन्नै महळिऱ् कऱ्पुम् बोन्ऱदप् पॊलम्बॊऱ् ऱिण्तेर् 3078

अ पॊलम् पॊन् तिण् तेर्–वह सुन्दर स्वर्ण-रथ; तवत्तै नण्णि–तपस्या में लगकर; ऐविन्नै नलिय–पंचेंद्रिय-कर्म के क्षय होने को; उय्विन्नै–उचित कर्म करवानेवाले (आचार्य); ऒरुवन्–एक के; तूण्टातु–प्रेरित न करते; उलत्तलिन्–मर जाने पर; अऱिविऱ्कुम्–बुद्धि के लिए; उवमै आकि–दृष्टान्त बनकर; मॆय्विन्नै अमैन्त काममु–शरीर-कर्म पर अवलंबित काम को; विऱ्किन्ऱ–बेचने का; विरकिऱ्ऱोर् आम्–उपाय जिनके पास है उन; पॊय्विन्नै मकळिऱ्–झूठे काम करनेवाली स्त्रियों के; कऱ्पुम् पोन्ऱतु–चरित्र के समान रहा। ३०७८

तब वह सुदृढ़ स्वर्ण-रथ उस शिष्य की बुद्धि की-सी स्थिति में आ गया, जिसके गुरु तपस्या करके पंचेंद्रिय-निग्रह करने के मार्ग में चलाये विना मर गये हों। और भी शरीर पर अवलंबित काम को बेचने के उपाय को अपनाकर असत्य कार्य करनेवाली वेश्या की-सी स्थिति उसकी रह गयी। ३०७८

तुळ्ळुपाय् पुरवित् तेरुम् मुऱैमुऱै ताने तूण्डि
अळ्ळिनन् पऱिक्कुन् दन्बे राहमे याव माह
वळ्ळन्मे लनुमन् ऱन्मेऱ् मऱ्ऱैयोर् मऱ्ऱिण् डोण्मेल्
उळ्ळुऱप् पहळि तूवि यार्त्तनन् ऩॆवरु मुट्क 3079

तुळ्ळु–छलाँग मारकर; पाय्–सरपट दौड़नेवाले; पुरवि–अश्वों से जुते; तेरुम्–रथ को; ताने–स्वयं; मुऱै मुऱै तूण्टि–बारी-बारी से प्रेरित करके; तन् पेर् आकमे–अपने बड़े शरीर को ही; अळ्ळिनन्–उठाकर; पऱिक्कुम्–नोच जिससे अस्त्र लिये जाते हैं; आवमाक–तूणीर बनाकर; ऎवरुम् उट्क–सबको भयभीत करते हुए; वळ्ळल् मेल्–उदार प्रभु पर और; अनुमन् तन् मेल्–हनुमान पर; मऱ्ऱै योर्–अन्यों के; मल् तिण् तोळ् मेल्–सशक्त कठोर कंधों पर; उळ् उऱ–अन्दर घुस भी जायँ ऐसा; पकळि तूवि–शर चलाकर; आर्त्तनन्–उच्च घोष किया। ३०७९

इन्द्रजित् ने स्वयं उस रथ को, जिसे छलाँग मारनेवाले और सरपट दौड़नेवाले अश्व खींच रहे थे, बार-बार प्रेरित करता और अपने ही शरीर को तूणीर बनाकर उससे उठाकर शरों को चलाता हुआ प्रभु लक्ष्मण पर, हनुमान पर और अन्य वीरों के कंधों पर शर चलाये। वे उनके शरीर में घुसे। सभी इसे देखकर भयभीत हुए। तब इन्द्रजित् ने उच्च हर्ष-नाद किया। ३०७९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीररॆन् बार्हट् कॆल्लाम् मुन्निऱ्कुम् वीरर् वीरन्
पेररॆन् बार्ह ळाहुम् बॆऱ्ऱियिऱ् पॆऱ्ऱित् तामे
शूररॆन् ऱुरॆक्कऱ् पालार् तुञ्जुम्बो दुणर्विऱ् चोरात्
तीररॆन् ऱमरर् पेशिच् चिन्दिनर् बॆय्वप् पॊऱ्पू 3080

वीरन् ऎन्पार्कटकु ऎल्लाम्–वीर कहलानेवाले सभी लोगों में; मुन् निऱ्कुम् वीरर् वीरन्–अग्रस्थ वीर; पेरर् ऎन्पार्कळ्–नामी कहलानेवालों के; आकुम् पॆऱ्ऱियिल्–पास जो है उस रीति के; पॆऱ्ऱित्तु आमो–गुण का है क्या; तुञ्चुम् पोतु–मरते समय भी; उणर्विल् चोरा–वीरता के भाव में अप्रमत्त; तीरर्–धीर; चूरर्–शूर; ऎन्ऱु–ऐसा; उरॆक्कऱ्पालर्–कहलाने योग्य हैं; ऎन्ऱु–ऐसा; अमरर् पेचि–देवों ने बोलते हुए; तॆय्वम् पॊन् पू–दिव्य स्वर्ण-सुमन; चिन्तितार्–बरसाये। ३०८०

"वीरों में अग्रगण्य वीर है। नामी वीरों की वीरता भी इसकी वीरता (सी) हो सकती है क्या? मरते दम भी वीरता में न घटनेवाला धीर और शूर है।" ऐसा बोलते हुए देवों ने उस पर दिव्य तथा स्वर्णपुष्प बरसाये। ३०८०

ऎय्दवन् पहऴि यॆल्लाम् बऱित्तिव नॆन्मे लॆय्युम्
कैतडु माऱा दुळ्ळ मुयिरिनुङ् गलङ्गा दियाक्कै
मॊय्हणे कोडि कोडि मॊय्क्कवु मिळैप्पॊन् ऱिल्लान्
ऐयनु मिवनो डॆञ्जु माण्डॊऴि लाऱ्ऱ लॆन्ऱान् 3081

ऐयनुम्–प्रभु लक्ष्मण ने भी; ऎय्त–मैंने जो चलाये; वल् पकऴि ऎल्लाम्–उन सारे कठोर शरों को; इवन्–यह; पऱित्तु–खींच लेकर; ऎन् मेल्–मुझ पर; ऎय्युम्–प्रयोग करता है; कै तटुमाऱातु–हाथ नहीं लड़खड़ाता; उळ्ळम्–मन; उयिरिनुम्–जीव के ही समान; कलङ्कातु–व्यग्र नहीं होता; याक्कै–शरीर पर; मॊय् कणे–भरे शर; कोटि कोटि–कोटि-कोटि; मॊय्क्कवुम्–चुभे रहते हैं; इळैप्पु मॊन्ऱु इल्लाम्–थकावट नाम की भी नहीं रखता; आण् तॊऴिल्–पौरुष की; आऱ्ऱल्–वीरता; इवनोटु ऎञ्चुम्–इसके साथ समाप्त हो जायगी; ऎन्ऱान्–कहा। ३०८१

प्रभु लक्ष्मण को विस्मय हुआ। "मैं जो कठोर अस्त्र चलाता हूँ, उन्हीं को अपने शरीर से छीन लेकर यह मुझ पर चला देता है। उसके हाथ विचलित नहीं होते; मन में बेचैनी नहीं। जीव में अस्थिरता नहीं। शरीर पर कोटि-कोटि अस्त्र चभे हुए लगे रहते हैं। तो भी थकावट का नाम नहीं। पुरुषोचित वीरता की हस्ती आज इसके साथ समाप्त हो जायगी।"। ३०८१

तेरिनैक् कडाबि विण्मेऱ् चॆल्लिनुञ् जॆल्लुञ् जॆय्युम्
बोरिनैक् कडन्दु मायम् पुणर्क्किनम् बुणर्क्कुम् बोयक्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कारिऩैक् कडन्दु वञ्जङ् गरुदिऩुङ् गरुदुम् काण्डि
वीरमॅय्प् पहलि ऩल्लाल् विळिहिल निरुळिऩ् वॅय्योऩ् 3082

वीर–वीर; तेरिऩै कटावि–रथ को चलाकर; विण् मेल्–आकाश में; चॅल्लिऩुम्–जाए भी; चॅल्लुम्–जायगा; चॅय्युम् पोरिऩै–जो कर रहा है उस युद्ध को; कटन्तु–छोड़कर; मायम् पुणर्क्कितुम्–माया-कार्य करे तो; पोय् पुणर्क्कुम्–जाकर कर सकता है; अ कारिऩै कटन्तु–उन मेघों को पार कर; वञ्चम् करुतिऩुम्–वंचना करने का विचार करे तो; करुतुम्–विचार कर सकता है; काण्टि–देखें; वॅय्योऩ्–क्रूर; पकलिऩ् अल्लाल्–दिन में नहीं तो; इरुळिऩ्–अन्धकार में; विळिकिलऩ्–नहीं मरेगा; मॅय्–यह सच है। ३०८२

विभीषण ने लक्ष्मण से कहा कि हे वीर! रथ को प्रेरित करके यह आकाश में चला भी जायगा, या युद्ध छोड़कर माया में लग भी सकता है। मेघों के पार जाकर वंचना करने की भी संभावना है। देखें। क्रूर वह दिन में ही मारा जा सकता है। अन्धकार में वह नहीं मरेगा। यह सत्य है। ३०८२

ऍऩ्ऱेडुत् तिलङ्गै वेन्द ऩिळैयवऱ् कियम्ब विऩ्ऱे
पॊऩ्ऱुव दल्ला लप्पा लिऩियॊरु पोक्कु मुण्डो
शॆऩ्ऱळिच् चॆल्लु मऩ्ऱे तॆऱुकणै वलियिल् तीर्न्दाऩ्
वॆऩ्ऱियिप् पोदे कोडुङ् गाणॆऩ विळम्बु मॆल्लै 3083

इलङ्कै वेन्तऩ्–लंका के राजा विभीषण के; इळैयवऱ्कु–लघुराज के पास; ऍऩ्ऱु–ऐसा; ऍदुत्तु इयम्प–समझा कर कहने पर; इऩ्ऱे–आज ही; पॊऩ्ऱुवतु अल्लाल्–मरना छोड़; अप्पाल्–बाद; इऩि ऑरु पोक्कुम् उण्टो–अब कोई गति है क्या; तॆऱु कणै–संहारक शर; वलियिल् तीर्न्ताऩ्–कमजोर(हुआ)इन्द्रजित्; चॆऩ्ऱळि–जहाँ-जहाँ जाय वहाँ; चॆल्लुम् अऩ्ऱे–जायगा न; इप्पोते–अभी; वॆऩ्ऱि कोडुम्–विजय पायेंगे; काण्–देखो; ऍऩ–ऐसा; विळम्पुम् ऍल्लै–जब कहा तब। ३०८३

लंका के राजा विभीषण के लघुराज लक्ष्मण से यह कहने पर लक्ष्मण ने आश्वासन दिया "कि आज ही मरेगा। उसे छोड़ दूसरी कोई गति नहीं। मेरा संहारक बाण, वह जहाँ भी जाए, वहाँ जायगा न? आज ही हम जीत पायेंगे। देख लो।" वे यह कह ही रहे थे कि—। ३०८३

शॆम्बुनऱ् चोरिच् चॆक्कर् तिशैयुऱच् चेऱ लालुम्
अम्बॆऩ वुऱ्ऱ कॊऱ्ऱत् तायिरङ् गदिर्ह ळालुम्
वॆम्बुपॊऱ् ऱेरिऱ् ऱोऩ्ऱुञ् जिऱप्पिऩ् मरक्कऩ् वॆय्योऩ्
उम्बरिऱ् चॆऩ्ऱा ऩोडॊत् तुदित्तऩ ऩरुक्क ऩुप्पाल् 3084

उप्पाल्–उधर; अरुक्कऩ्–सूर्य; चॆम् पुऩल् चोरि–लाल रक्त के समान; चॆक्कर् तिचै उऱ–लाल गगन में; चेऱलालुम्–गया, इसलिए और; अम्पॆऩ उऱ्ऱ–शर-समान बनी; कॊऱ्ऱम्–विजयी; आयिरम् कतिर्कळालुम्–हजार किरणों से;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆम्पु–तपते; पॊन् तेरिल्–स्वर्ण-रथ पर; तोन्ऱुम् चिऱप्पिनुम्–प्रगट होने की विशिष्टता से; अरक्कन् वॆय्योन्–राक्षस दुष्ट; उम्परिन् चॆन्ऱाऱोटु ऒत्तु–आकाश में जो गया उससे तुल्य होकर; उतित्तनन्–उदित हुआ। ३०८४

उधर सूर्य इन्द्रजित् के शरीर से निकल बहनेवाले लाल रक्त की तरह लाली-सी भरे (पूर्वी) आकाश में निम्नोक्त समानता से दुष्ट इन्द्रजित् के ही समान उदित हुआ। उसकी हर किरण इन्द्रजित् पर लगे अस्त्र की समानता करती थी। इन्द्रजित् स्वर्णरथ पर सवार था और सूर्य भी गरम अपने रथ पर सवार था। ३०८४

विडिन्ददु पॊऴुदुम् वॆय्योन् विळङ्गिन तुलह मीदा
विडुञ्जुडर् विळक्क मॆन्न वरक्करि निरुळुम् वीयक्
कॊडुञ्जिन मायच् चॆय्है वलियॊडुङ् गुऱैन्दु कुन्ऱ
मुडिन्दन ररक्क रॆन्ना मुऴङ्गिन रुम्बर् मुऱ्ऱुम् 3085

उम्पर् मुऱ्ऱुम्–सभी देव; पॊऴुतुम् विटिन्ततु–सवेरा हो गया; चुटर् विटुम् विळक्कम् ऎन्न–प्रकाश देनेवाले दीप के समान; अरक्करिन् इरुळुम्–राक्षस रूपी अन्धकार को भी; वीय–मिटाने; वॆय्योन्–उष्णकिरण; उलकम् मीता–संसार के ऊपर; विळङ्कितन्–शोभता है; कॊटुञ् चिन–निर्मम क्रोध से बनी; माय चॆय्कॆ–माया के कृत्य; वलियॊटुम्–उनके बल के साथ; कुऱैन्तु कुन्ऱ–कम होकर छीज जायेंगे; अरक्कर्–और राक्षस; मुटिन्ततर्–मिटे; ऎन्ना–ऐसा; मुऴङ्कितर्–उच्च स्वर में बोले। ३०८५

आकाश भर में देव मुदित हो गये। "सवेरा हो गया। प्रकाश-प्रसारक दीप के समान, राक्षस रूपी अन्धकार को दूर करने के निमित्त उष्ण-किरण पृथ्वी के ऊपर प्रकट हुआ है। अत्यन्त क्रोधी मायाकारी राक्षसों के मायाकृत्य उनके ही बल के साथ छीज जायँगे। राक्षस भी मर गये, समझो।" यह कहकर उन्होंने आनंदनाद किया। ३०८५

आरऴि याद शूलत् तण्णल्दन् नरुळि नीन्द
तेरऴि याद पोदुञ् जिलैकरत् तिरुन्द पोदुम्
पोरऴि यानिव् वॆय्योन् पुहळऴि याद पॊऱ्ऱोळ्
वीरवि दाणै यॆन्ऱान् वीडणन् विळैव दोर्वान् 3086

पुकऴ् अऴियात–अयशमुक्त; पॊन् तोळ् वीर–मनोरम भुजा वाले वीर; इ वॆय्योन्–यह निर्मम; आर् अऴियात–जिसके नोक की तीक्ष्णता कभी दूर नहीं हो; चूलत्तु अण्णल्–उस शूल के रखनेवाले भगवान ने; तन् अरुळिन् ईन्त–अपनी कृपा से जो दिया; तेर्–वह रथ; अऴियात पोतुम्–जब नष्ट न होगा तब; करत्तु–हाथ में; जिलै–धनु; इरुन्त पोतुम्–जब रहता तब; पोर् अऴियान्–युद्ध में नहीं मरेगा; इतु आणै–यह विधि है; विळैवतु ओर्वान्–भावी को समझनेवाले; वीटणन्–विभीषण ने; ऎन्ऱान्–कहा। ३०८६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तब भविष्यदर्शी विभीषण ने लक्ष्मण से कहा कि अक्षय यश के मनोरम भुजावाले वीर ! इन्द्रजित् का रथ अमिट तीक्ष्णता से युक्त शूल के धारक शिवजी का कृपा के साथ दिया हुआ है। जब तक वह नहीं टटता और जब तक इसके हाथ में धनु है, तब तक युद्ध में वह नहीं मरेगा। यह विधि है ! । ३०८६

पच्चैवेम् बुरवि वीया पल्लियच् चिल्लि पारिन्
निच्चय मऱ्ऱु नीङ्गा वॆन्बदु निनैन्दु विल्लिन्
विच्चैयिन् कणव नान्नान् विन्मैयाल् वयिर मिट्ट
अच्चिन्नो डाळि वॆव्वे ऱाक्किन्ना नाणि नीक्कि 3087

विल्लिन् विच्चैयिन्–धनुर्विद्या के; कण्वन्नान्नान्–जो नायक थे वे; पच्चै–हरे; वेम् पुरवि–क्रूर अश्व; वीया–नहीं मरेंगे; पल्लियच् चिल्लि–अनेक विध शब्द करनेवाले चक्र; पारिन्–भूमि पर; अऱ्ऱु–मिटकर; निच्चयम् नीङ्का–जरूर ही दूर नहीं होंगे; ऎन्पतु निनैन्तु–यह सोचकर; विन्मैयाल्–धनुसामर्थ्य से; आणि नीक्कि–कीलों को अलग करके; वयिरम् इट्ट–हीरे वाले काठ की बनी; अच्चिन्नोटु–धुरी के साथ; आळि–चक्रों को; वॆव्वेऱु आक्किन्नान्–अलग-अलग कर दिया। ३०८७

धनुर्विद्या के नायक लक्ष्मण ने विचार किया। इसके रथ के हरे रंग के भयानक अश्व नहीं मरेंगे। विविध स्वरकारी पहिये भूमि पर निश्चय ही नहीं मिटेंगे। इसलिए उन्होंने अपनी धनुर्विद्याविदग्धता से कीलों को अलग किया। फिर हीरे के (बहुत पक्के) काठ की बनी धुरी से पहियों को अलग कर दिया। ३०८७

मणिनॆडुन् देरिन् गट्टु विट्टदु मऱिद लोडुम्
अणिनॆडुम् बुरवि यॆल्ला माऱ्ऱल वान वन्ऱे
तिणिनॆडु मरमॆन् ऱाळि वाण्मऴुत् ताक्कच् चिन्दिप्
पणैनॆडु मुदलु नीङ्गप् पाङ्गुऱुम् बऱवै पोल 3088

मणि–रत्नजड़ित; नॆटु तेरिन्–ऊँचे रथ के; कट्टु विट्टु–सन्धि-बन्धन टूटे; अतु–वह; मऱितलोटुम्–ऊपर-नीचा हो गया; अणि नॆटुम्–सुन्दर बड़े; पुरवि–अश्व; ऎल्लाम्–सारे; तिणि–सारयुक्त; नॆटुम् मरम् ऒऱु–लम्बा एक पेड़; आळि–चक्र; वाळ्–तलवार; मऴु–परशु; ताक्क–(इनके) प्रहार से; चिन्ति–टूटकर; नॆटु पणै–लम्बी शाखाएँ; मुतलुम्–तना; नीङ्क–अलग-अलग हो जाने पर; पाङ्कु उऱुम्–बाहर जानेवाले; पऱवै पोल–पक्षियों के समान; आऱ्ऱल आन्न–शक्तिहीन बन गये। ३०८८

रत्नजड़ित रथ के संधिबंधन टूट गये। वह औंधा गिर गया। उससे जुते मनोहर अश्व उन पक्षियों के समान बलहीन हो गये जो किसी पेड़ के चक्र-सम तीक्ष्ण परशु के द्वारा तने और लम्बी शाखाओं के काटे जाने पर इधर-उधर उड़ जाते हैं। ३०८८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अळिन्दतेर्त् तट्टि निन्ऱु मङ्गुळ्ळ पडैह ळळ्ळिप्
पॊळिन्दन निळैय वीरन् कणैहळाल् तुणित्तुप् पोक्क
मॊळिन्ददो रळविन् विण्णै मुट्टिना नुलह मून्ऱुम्
किळिन्दन वन्न वार्त्तान् कण्डिल रोशै केट्टार् 3089

अळिन्त तेर्–टूटे रथ के; तट्टिनिन्ऱुम्–पीठ से; अङ्कु उळ्ळ पटैकळ्–वहाँ रहे हथियारों को; अळ्ळि–उठाकर; पॊळिन्तनन्–बरसाया; इळैय वीरन्–छोटे वीर ने; कणैकळाल्–अपने शरों से; तुणित्तु पोक्क–काटकर मिटाया; मॊळिन्ततु–कहने भर की; ओर् अळविल्–देरी में; विण्णै मुट्टिनान्–(इन्द्रजित्) आकाश को पहुँच गया; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोक; किळिन्तन अन्न–दरार खा गये हों, ऐसा; आर्त्तान्–नाद उठाया; कण्टिलर्–कोई देख नहीं पाये; ओचै केट्टार्–ध्वनि सुनी। ३०८९

टूटे रथ के आसन पर ही से इन्द्रजित् ने वहाँ रहे सभी हथियारों को लेकर प्रेरित किया। लघुराज लक्ष्मण ने उन्हें काटकर दूर कर दिया। तब एक शब्द कहने की देर के अंदर इन्द्रजित् आकाश में उड़ गया। वहाँ से ऐसा उच्च नाद किया, जिससे मानो तीनों लोक चिर गये। किसी ने यह नहीं देखा कि वह था कहाँ ? पर सबने उसका स्वन सुना। ३०८९

मल्लिन्मा मारि यन्न तोळिनान् मळैयिन् वायन्द
कल्लिन्मा मारि पॆऱ्ऱ वरत्तिनाऱ् चॊरियुङ् गालैच्
चॆल्लुवान् रिशैह ळोरार् शिरत्तिनो डुडल्हळ् शिन्दप्
पुल्लिनार् निलत्तै निन्ऱ वानर वीरर् पोहार् 3090

मा मारि अन्न–काले मेघ के समान; मल्लिन् तोळिनान्–सशक्त कंधों वाले ने; पॆऱ्ऱ वरत्तिनाल्–प्राप्त वर से; मळैयिन् वायन्त–वर्षा के समान बनी; कल्लिन् मा मारि–पत्थर की वर्षा; चॊरियुम् काले–जब करायी तब; निन्ऱ वानर वीरर्–जो खड़े रहे वे वानर वीर; पोकार्–नहीं हटे; चॆल्लुवान्–भागने के विचार से; तिचैकळ् ओरार्–दिशाएँ नहीं जानते; चिरत्तिनोटु–सिरों के साथ; उटल्कळ् चिन्त–शरीरों के छिन्न होते; निलत्तै पुल्लिनार्–भूमि से लगे। ३०९०

बड़े काले मेघ के समान सशक्त भुजा वाले इन्द्रजित् ने वरमहिमा से पत्थर की महा वर्षा करा दी। तब वानर कहीं भाग नहीं पाये। भागने को दिशा की ओर देख भी नहीं सके। उनके सिर और शरीर कटे और वे भूमि के क्रोड में आ गये। ३०९०

काण्गिलन् कल्लिन् मारि यल्लदु काळै वीरन्
शेण्गलन् दॊळित्तु निन्ऱ शॆयलिनैत् तॆळिन्दु नोक्कि
माण्गलन् दळन्द मायन् वडिवॆन मुळ्दुम् वौव
एण्गलन् दमैन्द वाळि येविना निडै विडामल् 3091

काळै वीरन्–ऋषभ-सम वीर; कल्लिन् मारि अल्लतु–प्रस्तर-वर्षा के अलावा;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काण्किलत्-नहीं देखते; चेण् कलन्तु-आकाश में मिलकर; ऑळिमुतु निन्ऱ-ओझल रहने का; चॅयलिनै-काम; तॅळिन्तु नोक्कि-साफ़ देखकर; माण् कलन्तु-गौरव के साथ; अळन्त मायन्-अनंत मायावी (विष्णु) के; वटिवु ऍन्त-श्रीशरीर के समान; मुळुतुम् वौव-प्रपञ्च भर को ग्रसने; ऍण् कलन्तु-बल से युक्त; अमैन्त वाळि-बने बाणों को; इटै विटामल्-निरन्तर; एविनान्-चलाया। ३०९१

ऋषभ-सम वीर लक्ष्मण ने प्रस्तरवर्षा देखी और कुछ नहीं देखा। आकाश में इन्द्रजित् छिपा रहता है, वह बात उन्हें विदित थी। तब महान त्रिविक्रम भगवान के शरीर के समान प्रपंच भर को ग्रस सकनेवाले सशक्त शरों को लक्ष्मण निरंतर चलाने लगे। ३०९१

मऱैन्दन तिशैह ळङ्गुम् मायम्बोय् मलैयु माऱ्ऱल्
कुऱैन्दन निरुण्ड मेहक् कुळात्तिडैक् कुरुदिक् कॊण्मू
उऱैन्दुळ दॆन्न निन्ऱा नुरुविनै युलह मॆल्लाम्
निऱैन्दवन् कण्डान् काणा विनैयदोर् निनैव दानान् 3092

तिचैकळ् ऍङ्कुम्-सारी दिशाएँ; मऱैन्तन-छिप गयीं; मायम् पोय्-माया में जाकर; मलैयुम् आऱ्ऱल्-(छिपकर) लड़ने की शक्ति में; कुऱैन्तनन्-कम हो गया; इरुण्ट मेकम् कुळात्तिटै-काले मेघसमूहमध्य; कुरुतिक् कॊण्मू-एक रक्त का मेघ; उऱैन्तुळतु ऍन्त-रहता हो जैसे; निन्ऱान्-जो रहा उस (इन्द्रजित्) को; उलकम् ऍल्लाम् निऱैन्तवन्-लोकव्यापी लक्ष्मण ने; उरुविनै कण्टान्-उसके रूप को देखा; काणा-देखकर; इनैयतु-यों; ओर् निनैवतु आनान्-एक (बात) सोचने लगे। ३०९२

उन शरों से सारी दिशाएँ छिप गयीं। मायागुप्त इन्द्रजित् की युद्ध-शक्ति क्षीण हुई। वह काले मेघसमूहमध्य रक्त के मेघ के समान खड़ा रहा। उसे सर्वव्यापी भगवान (के रूप) लक्ष्मण ने देखकर यों सोचा। ३०९२

शिलैयऱा दॆनिनु मऱ्ऱत् तिण्णियोन् ऱिरण्ड तोळाम्
मलैयऱा दॊळियाद दॆन्ना वरिशिलै यॊन्ऱु वाङ्गिक्
कलैयऱात् तिङ्ग ळन्न वाळियाऱ् कैयैक् कॊय्दान्
विलैयऱा मणिप्पू णोडुम् विल्लॊडुम् निलत्तु वीळ 3093

चिलै अऱातु ऍनिनुम्-धनु कटेगा नहीं तो भी; अ तिण्णियोन्-उस बलशाली के; तिरण्ट तोळ् आम् मलै-पुष्ट कंधों रूपी पर्वत; अऱातु ऒळियातु-विना टूटे नहीं बचेंगे; ऍन्ना-सोचकर; वरि चिलै-सबन्ध धनु; ऒन्ऱु-अनुपम; वाङ्कि-झुकाकर; कलै अऱा-कला जिसकी नहीं कटी हो उस; तिङ्कळ् अन्त-अर्ध-चन्द्र-सम; वाळियाल्-अस्त्र से; विलै अऱा-अमूल्य; मणि पूणोटुम्-रत्नाभरणों के साथ; विल्लॊटुम्-धनु के साथ; निलत्तु वीळ-भूमि पर गिराकर; कैयै कॊय्तान्-हाथ को काट दिया। ३०९३

धनु कटे नहीं तो भी इन्द्रजित् के पुष्ट कंधे विना कटे नहीं रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह कहते हुए उन्होंने अपने अनुपम धनु को झुकाकर अर्धचन्द्र अस्त्र चलाया और अनमोल रत्ना भरणों और धनु के साथ हाथ को काटकर गिरा दिया। ३०९३

पाहवान् पिऱैपोल् वॅव्वाय्च् चुडुहणै पडुद लोडुम्
वेहवान् कडुङ्गा लॅऱ्ऱ मुऱ्ऱुम्बोय् विळिन्द नाळिल्
माहवान् ऱडक्कै मण्मेल् विऴुन्ददु मणिप्पूण् मिऩ्ऩ
मेहमा हायत् तिट्ट विल्लॊडुम् वीऴ्न्द दॆऩ्ऩ 3094

मुऱ्ऱुम्–लोक सभी; पोय् विळिन्त नाळिल्–जब मिट जावें उस दिन; वान्–आकाश में; वेकम्–सवेग; कटुम् काल्–प्रचण्ड पवन के; ऍऱ्ऱ–झोंके देने पर; मेकम्–एक मेघ; आकायत्तु इट्ट–आकाश में बने; विल्लॊटुम्–(इन्द्र-) धनुष के साथ; वीऴ्न्तत्तु ऍऩ्ऩ–गिरा हो जैसे; वान्–गौरवपूर्ण; पाक–अर्ध; पिऱै पोल्–चन्द्र के समान; वॅम् वाय्–क्रूर नोक से; चुटु कणै–संतापक बाण; पट्टलोटुम्–लगा तो तुरंत; माकम्–आकाश से; वान्–बड़ा; तटम् कै–विशाल हाथ; मणि पूण् मिऩ्ऩ–रत्नाभरणों की चमक के साथ; मण् मेल्–भूमि पर; विऴुन्तत्तु–गिरा। ३०९४

युगांतकालीन प्रखर प्रभंजन के झोंके से मेघ इन्द्रधनुष के साथ कटकर गिरता हो जैसे इन्द्रजित् का हाथ मान्य तथा दाहक अर्धचन्द्र बाण के लगने से आकाश से रत्नाभरणों की चमक के साथ धरती पर गिर गया। ३०९४

पडित्तळम् जुमन्द नाहम् पाहवान् पिऱैयैप् पऱ्ऱिक्
कडित्तदु पोलक् कोल विरल्हळा लिऱुहक् कट्टिप्
पिडित्तवॅञ् जिलैयि लोडुम् पेरॆऴिल् वीरन् पॊऱ्ऱोळ्
तुडित्तदु मरमुङ् गल्लुन् दुहळ्पडक् कुरङ्गुन् दुञ्ज 3095

पटि तलम्–भूतल को; चुमन्त नाकम्–ढोनेवाले नाग ने; वान्–आकाश के; पाक–अर्ध; पिऱैयै पऱ्ऱि–चन्द्र को पकड़कर; कटित्तत्तु पोल–काटा हो जैसे; कोल विरल्कळाल्–सुन्दर हाथों से; इऱुक कट्टिप् पिटित्त–खूब कसकर पकड़े गये; वॅञ् चिलैयिलोटुम्–भयंकर धनु के साथ; पेर् ऍऴिल् वीरन्–बहुत ही सुन्दर वीर; पॊऱ् तोळ्–मनोरम कंधे; मरमुम् कल्लुम्–तरुओं और पत्थरों को; तुकळ् पट–चूर करते हुए; कुरङ्कुम् तुञ्च–वानरों को भी मारते हुए; तुटित्तत्तु–तड़पे। ३०९५

भूभारवाही नाग अर्धचंद्र को ग्रस रहा हो, ऐसा इन्द्रजित् का हाथ अपनी सुन्दर उँगलियों से जिस भयंकर धनु को पकड़ रहा था, उसके साथ नीचे गिरा और तड़पने लगा, तो तरु और पत्थर चूर हुए और वानर मरे। ३०९५

अन्दर मदनि निऩ्ऱु वानव ररुक्कल् वीऴच्
चन्दिरन् वीऴ मेरु माल्वरै तहर्न्दु वीऴ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्दिर शित्तिन् पॊऱ्ऱो ळिऱ्ऱिडै विळुन्द ऍन्ऱाल्
ऍन्दिर मऩैय वाऴ्क्क यिऩिच्चिल रुहन्दॆ ऩॆन्ऱार् 3096

अन्तरम् अतऩिन् निन्ऱ–आकाश में स्थित; वाऩवर्–व्योमलोकवासी; अरुककऩ् वीऴ–सूर्य गिरे; चन्तिरन् वीऴ–चन्द्र गिरे; मेरु माल् वरै–मेरु का बड़ा पर्वत; तकर्न्तु वीऴ–टूटकर गिरे; इन्तिरचित्तिन्–(ऐसा) इन्द्रजित् की; पॊन् तोळ्–सुन्दर भुजा; इटै इऱ्ऱु–बीच से कटकर; विळुन्तु ऍन्ऱाल्–गिर गया तो; इऩि–अब; चिलर्–कुछ लोग; ऍन्तिरम् अऩैय वाऴ्क्कै–यन्त्र-सम जीवन; उकन्तु–चाहें; ऍन्–क्यों; ऍन्ऱार्–कहा। ३०९६

आकाश में स्थित व्योमवासियों ने कहा कि सूर्य, चन्द्र व मेरुपर्वत को भी गिराते हुए इन्द्रजित् की मनोरम भुजा बीच से कटकर गिर गयी! इसके बाद भी कुछ लोग यंत्रचालित-सा जीवन जीना चाहें क्यों ? । ३०९६

मॊय्यऱ मूर्त्ति यऩ्ऩ मॊय्म्बिऩा ऩम्बि ऩालप्
पॊय्यऱच् चिऱिदॆऩ् ऱॆण्णुम् बॆरुमैयाऩ् पुदल्वऩ् पूत्त
मैयऱक् करिदॆऩ् ऱॆण्ण मऩत्तिऩाऩ् वयिर मऩ्ऩ
कैयऱत् तलैयऱ् ऱार्पोऱ् कलङ्गिऩार् निरुदर् कण्डार् 3097

मॊय्–साकार; अऱमूर्त्ति अऩ्ऩ–धर्मदेवता-सम; मॊय्म्पिऩाऩ्–बलवान (लक्ष्मण) के; अम्पिऩाल्–अस्त्र से; पॊय्–असत्य को; अऱ चिऱितु–अतिनिर्बल; ऍऩ्ऱु ऍण्णुम्–ऐसा समझनेवाले; अ पॆरुमैयाऩ् पुतल्वऩ्–उस महिमावान का पुत्र; पूत्त–सुन्दर; मै–अंजन; अऱ करितु–बहुत कम काला है; ऍऩ्ऱु ऍण्णुम्–ऐसा सोचने देनेवाले काले; मऩत्तिऩाऩ्–मन वाला; वयिरम् अऩ्ऩ–वज्र-सम; कै अऱ–कटे हाथ का हुआ तो; कण्टार् निरुतर्–देखा तो राक्षस; तलै अऱ्ऱार् पोल्–स्वयं कटे सिर के हो गये हों, ऐसा; कलङ्किऩार्–व्याकुल हुए। ३०९७

साकार धर्मदेवता के समान बलवान लक्ष्मण के अस्त्र से असत्य को क्षुद्र बली समझनेवाले महिमावान रावण के पुत्र, अंजन को भी रंग में हरानेवाले काले मन के इन्द्रजित् की वज्र-सम भुजा कटी तो राक्षस देखकर ऐसा क्षुब्ध हुए मानो उनके सिर ही कट गये हों। ३०९७

अऩ्ऩदु निहऴुम् वेलै यार्त्तॆऴुन् दरियिऩ् वॆळ्ळम्
मिऩ्ऩॆयिऱ् ऱरक्कर् शेऩै यावरुम् मीळा वण्णम्
कॊऩ्ऩहक् करत्ताऱ् पल्लाऩ् मरङ्गळाऩ् माऩक् कुऩ्ऱाल्
पॊऩ्ऩॆडु नाट्टै यॆल्लाम् पुदुक्कुडि येऱ्ऱिऱ् ऱऩ्ऱे 3098

अऩ्ऩतु निकऴुम् वेलै–जब यह हो रहा था; अरियिऩ् वॆळ्ळम्–तब वानरों के प्रवाह ने; आर्त्तु ऍऴुन्तु–शोर मचा उठकर; मिऩ् ऍयिऱु–चमकदार दाँतों की; अरक्कर् चेऩै यावरुम्–राक्षस-सेना के सभी; मीळा वण्णम्–लौट न जायें ऐसा; कॊल् नकम्–घातक नाखूनों के; करत्ताल्–हाथों से और; पल्लाल्–दाँतों से; मरङ्कळाल्–पेड़ों से; माऩ–बड़े; कुऩ्ऱाल्–पर्वतों से; ऩॆटु–विशाल; पॊऩ् नाट्टै–स्वर्ण-नगरी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(व्योमपुरी); ऍल्लाम्–भर में; पुतु कुटि एऱ्ऱिऱ्ऱु–नये वासियों को बसा दिया। ३०९८

इतने में वानर-सेना ने घोष के साथ चमकदार दंतोरे राक्षसों को नगर में लौटने से रोककर उन्हें घातक नखों, दाँतों, तरुओं और बड़े पर्वतों से व्योमस्वर्णनगरी में नये वासियों के रूप में बसा दिया। ३०९८

कालङ् गॊण्डॆ ऴुन्द मेहक् करुमैयान् शॆम्मै काट्टुम्
आलङ्गॊण् डिरुण्ड कण्डत् तमरर्हो नरुळिऱ् पॆऱ्ऱ
शूलङ्गॊण् डॆऱिव लॆन्नान् तोन्ऱिनान् पहैयिऱ् ऱोन्ऱ
मूलङ्गॊण् डुणरा निन्नै मुडित्तन्ऱि मुडियॆ नॆन्ऱान् 3099

कालम् कॊण्टु–पर्वकाल में; ऎऴुन्त–उठे; मेक करुमैयान्–मेघ-सम (काला इन्द्रजित्); चॆम्मै काट्टुम्–लाल दिखनेवाले; आलम् कॊण्टु–विष खाकर; इरुण्ट–काला बने; कण्टत्तु–कण्ठ वाले; अमरर् कोन्–देवों के पति परमेश्वर की; अरुळिऱ् पॆऱ्ऱ–कृपा से प्राप्त; चूलम् कॊण्टु–शूल को लेकर; ऎऱिवल्–चलाऊँगा; ऎन्ऱा–कहकर; तोन्ऱिनान्–प्रगट हुआ; पकैयिन् तोन्ऱ–शत्रुता के साथ प्रकट हो; मूलम् कॊण्टु उणरा–हेतु नहीं जान पाता ऐसे; निन्नै–तुम्हें; मुटित्तन्ऱि–विना मारे; मुटियेन्–नहीं मरूँगा; ऎन्ऱान्–ऐसा बोला। ३०९९

पर्वतकालीन मेघ के समान काले इन्द्रजित् ने सोचा कि रक्तवर्ण विषकंठ देवदेव शिवजी द्वारा कृपादत्त शूल फेंकूँ। उसने प्रकट होकर लक्ष्मण से कहा कि शत्रुता ले आये हो। हेतु नहीं जानता। ऐसे तुम्हारा अंत किये विना मैं नहीं मरूँगा। ३०९९

काऱ्ऱॆन वुरुमे ऱॆन्नक् कनलॆनक् कडैना ऴुऱ्ऱ
कूऱ्ऱमोर् शूलङ् गॊण्डु कुऱहिय दॆन्नक् कॊल्वान्
तोऱ्ऱिना नदनैक् काणा विनित्तलै तुणिक्कुङ् गालम्
एऱ्ऱदॆन् ऱयोत्ति वेन्दऱ् किळैयव निदनैच् चॆय्दान् 3100

कटै नाळ् उऱ्ऱ–युगान्त में उठे; काऱ्ऱु ऎन–बवंडर के समान; उरुम् एऱु ऎन्त–अशनिराज के समान; कनल् ऎन–आग के समान और; कूऱ्ऱम्–मृत्यु; ओर् चूलम् कॊण्टु–एक शूल लेकर; कॊल्वान्–हनन करने; कुऱकियतु–पास आती हो; ऎन्त–ऐसा; तोऱ्ऱिनन्–अपने को प्रकट करा लिया (इन्द्रजित् ने); अतनै–उसे; अयोत्ति वेन्तऱकु–अयोध्याधिपति के; इळैयवन्–कनिष्ठ ने; काणा–देखकर; इनि–अब; तलै तुणिक्कुम्–सिर कटवा देने का; कालम् एऱ्ऱतु–काल आ गया; ऎन्ऱु–यह सोचकर; इतनै चॆय्तान्–यह कार्य किया। ३१००

उसने युगक्षय के बवण्डर के समान, अशनिराज के समान, आग के समान और लक्ष्मण को मारने हेतु पास आनेवाले मृत्युदेव के समान अपने को प्रकट करा लिया। अयोध्याधिपति के अनुज ने उसे देखकर निश्चय मान लिया कि अब इसके सिर को काटने का समय आ गया। उन्होंने (निम्नोक्त) यह कार्य किया। ३१००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱैहळे तेऱत् तक्क वेदियर् वणङ्गऱ् पाल
इऱैयव निराम नॅन्नु नल्लऱ मूर्त्ति यॅन्निल्
पिऱैयॅयिऱ् ऱिवनैक् कोऱि यॅन्ऱोरु पिऱैवाय् वाळि
निऱैयुऱ वाङ्गि विट्टा नुलहॅला निऱुत्ति निन्ऱान् 3101

इरामन् ऍन्नुम्–श्रीराम नाम के; नल् अऱ मूर्त्ति–श्रेष्ठ धर्मविग्रह; मऱैकळे तेऱ तक्क–वेदों से ही प्रतिपाद्य; वेतियर् वणङ्कऱ्पाल–विप्रपूज्य; इऱैयवन् ऍन्निल्–भगवान हैं तो; पिऱै ऍयिऱ इवनै–अर्धचन्द्रवदन्त इसे; कोऱि–निहत कर दे; ऍन्ऱु–कहकर; निऱैयुऱ वाङ्कि–पूर्णरूप से खींचकर; ऒरु पिऱै वाय् वाळि–एक अर्धचन्द्रमुखी बाण को; विट्टान्–चलाया; उलकॅलाम् निऱुत्ति–सारे लोकों की संस्थापना करके; निन्ऱान्–जो सदा रहते हैं (उन शेषावतार लक्ष्मण ने)। ३१०१

अगर यह सत्य है कि धर्मविग्रह श्रीराम वेदप्रतिपाद्य विप्रवंद्य परमेश्वर हैं, तो हे अस्त्र ! तू इस वक्रदंतुले का हनन कर दे। यह कहकर लक्ष्मण ने खूब डोरा खींचकर एक अर्धचंद्रमुखी अस्त्र को चलाया। उसी के फलस्वरूप सारे लोक सुस्थिर हुए और उनका नाम भी स्थायी रह गया। ३१०१

नेमियुङ् गुलिश वेलुम् नॅऱ्ऱियि नॅरुप्पुक् कण्णान्
नामवे ऱानु मऱ्ऱै नान्मुहन् पडैयु नाणत्
तीमुहङ् गडुव वोडिच् चॅन्ऱवन् शिरत्तॅत् तळ्ळिप्
पूमळै वानोर् शिन्दप् पॊलिन्ददप् पहळिप् पुत्तेळ् 3102

अ पकळि पुत्तेळ्–वह शर रूपी देवता; नेमियुम्–(विष्णु-) चक्र; कुलिच वेलुम्–(इन्द्र का) कुलिश; नॅऱ्ऱियिन्–भाल के; नॅरुप्पु कण्णान्–आग्नेय नेत्र वाले; नाम वेल् तानुम्–(शिवजी का) भयानक त्रिशूल; मऱ्ऱै–और; नान्मुकन् पटैयुम्–चतुर्मुख का अस्त्र; नाण–शरम खाने देते हुए; ती मुकम्–उसका अग्निमुख; कतुव–पकड़ ले ऐसा; ओटि चॅन्ऱु–दौड़ जाकर; अवन् चिरत्तै तळ्ळि–उसके सिर को काट गिराकर; वानोर् पू मळै चिन्त–देवों के फूलों की वर्षा करते; पॊलिन्ततु–शोभता रहा। ३१०२

वह अग्निमुखी अस्त्र रूपी देवता श्रीविष्णु-चक्र, इन्द्र-कुलिश, भालाग्निनेत्र शिव का भयानक शूल और ब्रह्मास्त्र —इन सबको शरम में डालते हुए शत्रु को ग्रसने के लिए तेज़ी से गया और इन्द्रजित् के सिर को काटकर गिरा दिया। देवों ने पुष्पवर्षा की और वह शोभायमान रहा। ३१०२

अऱ्ऱवन् ऱलैमी दोङ्गि यण्डमुऱ् ऱणुहा मुन्नम्
पऱ्ऱिय शूलत् तोडु मुडलुऱै पहळि योडुम्
ऍऱ्ऱिय कालक् कार्ऱान् मिन्नॊडु मिडियि नोडुम्
इऱ्ऱोरु काळ मेहम् वीळ्न्दॅन वीळ्न्द दियाक्कै 3103

अवन् तलै–उसका सिर; अऱ्ऱु–अलग कटकर; मीतु ओङ्कि–ऊपर जाकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अण्टम् उऱ्ऱु–भूमि पर आकर; अणुका मुन्नतम्–पहुँचे इसके पहले; याक्कै–शरीर; पऱ्ऱिय चूलत्तोटुम्–गृहीत शूल के साथ; उटल् उऱै–शरीर पर चुभे; पकऴियोटुम्–शरों के साथ; ऍऱ्ऱिय–बहनेवाले; काल काऱ्ऱान्–युगांतपवन से; ऑरु काळ मेकम्–एक काला मेघ; मिन्नोटुम् इटियोटुम्–बिजली और वज्र के साथ; इऱ्ऱु वीऴ्न्तु ऍन्न–कटकर गिरा-जैसे; वीऴ्न्ततु–गिरा। ३१०३

इसके पहले कि इन्द्रजित् का सिर कटकर ऊपर उछलकर भूमि पर जा लगे, उसका शरीर हाथ में पकड़े हुए शूल, और शरीर पर चुभे बाणों के साथ युगांत के चण्डमारुत के झोंके से काला मेघ विद्युत् और वज्र-सहित कटकर गिरा जैसे भूमि पर गिरा। ३१०२

विण्डलत् तिलङ्गु तिङ्ग ळिरण्डीडु मिन्नु वीशुङ्
गुण्डलत् तुणैह ळोडुङ् गोन्दळक् कुञ्जिच् चॅङ्गेऴ्च्
चण्डवॅङ् गदिरोन् शॅक्करत् तऴलोडु मरुवित् ताम
मण्डलम् विऴुन्द दॅन्न विऴुन्ददु तलैयुम् मण्मेल् 3104

विण् तलत्तु–आकाशतल में; इलङ्कु–विद्यमान; तिङ्कळ् इरण्टोटु–चन्द्रद्वय-समान; मिन्नु वीचुम्–प्रकाश छिटकानेवाले; कुण्टलम् तुणैकळोटुम्–कुंडलों के जोड़े के साथ; कोन्तळ कुञ्चि–घुँघराले बाल के; चॅम् केऴ्–लाल रंग की; चण्ट वॅम्–प्रखर, गरम; चॅक्कर् तऴलोटुम्–लाल आग के साथ; मरुवि–मिलकर; कतिरोन् ताम मण्टलम्–सूर्य का प्रकाशमण्डल; मण् मेल्–भूमि पर; विऴुन्ततु ऍन्न–गिरा हो जैसे; तलैयुम्–इन्द्रजित् का सिर भी; विऴुन्ततु–गिरा। ३१०४

आकाश में रहनेवाले चन्द्रद्वय के समान प्रभाशमान कुंडलों के जोड़े और घुंघराले बालों की प्रचंड अग्नि के साथ इन्द्रजित् का सिर सूर्यमंडल अग्नि के साथ नीचे गिरा हो जैसे भूमि पर गिरा। ३१०४

उयिर्पुरत् तुऱ्ऱ कालै युण्जिनऱ् वुणर्वि नोडुम्
शॅयिरऱु पॉऱियु मन्दक् करणमुञ् जिन्दु मापोल्
अयिलॅयिऱ् ऱरक्क रुळ्ळा राऱ्ऱल राहि यानऱ्
ऍयिलुडै यिलङ्गै नोक्कि यिरिन्दनर् पडैयुम् विट्टार् 3105

उयिर्–जीव (प्राण); पुऱत्तु उऱ्ऱ कालै–जब बाहर निकल जाते हैं तब; उळ् निनऱ्–भीतर स्थित; उणर्वितोटुम्–प्रज्ञा के साथ; चॅयिर् अऱु–निर्दोष; पॉऱियुम्–इंद्रिय और; अन्तक्करणमुम्–अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि); चिन्तुमा पोल्–जैसे अलग हो जाते हैं वैसे; अयिल् ऍयिऱु अरक्कर् तीक्ष्णदंतुले राक्षस; उळ्ळार्–जो थे वे; आऱ्ऱलर् आकि–निर्बल होकर; पडैयुम् विट्टार्–हथियार डालकर; आनऱ् ऍयिल् उटै–विशाल प्राचीरों के अन्दर रहनेवाली; इलङ्कै नोक्कि–लंका की तरफ़; इरिन्ततर्–भागे। ३१०५

प्राणवियोग के अवसर पर जैसे प्रज्ञा, इन्द्रिय और अन्तःकरण अलग हो जाते हैं, वैसे ही इन्द्रजित् के मरने पर तीक्ष्ण दंतुले राक्षस शक्तिहीन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हुए अपने हथियारों को नीचे डालकर बड़े प्राचीरों की लंका की तरफ़ भाग गये। ३१०५

विल्लाळ रान्नार्क् कॅल्ला मेलवन् विळिइ लोडुम्
शॅल्लादव् विलङ्गै वेन्दर् करशॅनक् कळित्त तेवर्
अॅल्लारुन् दूशु वीशि येऱ्ऱिड वार्त्त पोदु
कॉल्लाद विरदत् तार्दङ् गडवुळर् कूट्ट मॉत्तार् 3106

विल्लाळर् आन्नार्क्कु अॅल्लाम्–धनुष पर शासन करनेवाले सभी लोगों में; मेलवन्–श्रेष्ठ इन्द्रजित् के; विळितलोटुम्–मरते ही; अ–उस; इलङ्कै वेन्तऱ्कु–लंकाधिपति का; अरचु चॅल्लातु–राज्य नहीं चलेगा; अॅन्न–ऐसा; कळित्त–मुदित; तेवर् अॅल्लारुन्–सभी देवों ने; तूचु वीचि–वस्त्र उछालकर; एऱ्ऱिट–बहुत; आर्त्त पोतु–जब नारे लगाये; कॉल्लात विरतत्तार्तम्–श्रमणों के; कटवुळर् कूट्टम् ऑत्तार्–देवताओं के समूह के समान दिखे। ३१०६

धनुवीरों में सर्वश्रेष्ठ जो था उस इन्द्रजित् के मरते ही देव बहुत आनंदित हुए और यह कहते हुए कि 'आगे लंकाधिपति का राज्य नहीं चलेगा', अपने वस्त्र उतारकर उछालने लगे। तब वे श्रमण देवताओं के समान (अवस्त्र) दिखायी दिये। ३१०६

वरन्दरु मुदल्वन् मऱ्ऱै मान्मऱिक् करत्तु वळ्ळल्
पुरन्दरन् मुदल्व राय नान्मऱैप् पुलवर् पारिल्
निरन्दरम् दोन्ऱि निन्ऱा ररुळिना निऱैन्द नॅञ्जर्
करन्दिल रवरै याक्कै कण्डन कुरङ्गुङ् गण्णाल् 3107

वरम् तरु–वरदायी; मुतल्वन्–आदिदेव (विष्णु); मान् मऱि करत्तु–बालहिरणहस्त; वळ्ळल्–भगवान शिव; पुरन्दरन्–इन्द्र; मुतल्वराय–जिनके प्रमुख हैं; नान् मऱै–उन चतुर्वेदज्ञ; पुलवर्–देव; पारिल्–भूमि पर; निरन्तरम्–लगातार; तोन्ऱि निन्ऱार–प्रकट खड़े रहे; अरुळिनाल् निऱैन्त नॅञ्चर्–करुणा-भरे मन वाले; करन्तिलर्–अपने को छिपाया नहीं; अवरै–उनके; कुरङ्कुम्–वानरों ने भी; कण्णाल्–अपनी आँखों से; याक्कै कण्टनर्–शरीरों को देखा। ३१०७

वरद श्रीविष्णु, बालहिरणहस्त शिव, पुरंदर आदि जिनके प्रमुख हैं, वे चतुर्वेदज्ञ देव आकर भीड़ लगाये प्रगट रूप से खड़े हो गये। और विना अपना रूप छिपाये खड़े रहे। दयापूर्ण, उन्हें वानरों ने अपने पार्थिव आँखों से देखा। ३१०७

अऱन्दलै निन्ऱार्क् किल्लै यळिवॅन्नु मऱिञर् वार्त्तै
शिऱन्दवु शरङ्गळ् पायच् चिन्दिय शिरत्त वाहिप्
पऱन्दलै यदनिन् मऱ्ऱप् पावह वरक्कन् कॉल्ल
इऱन्दन मॉविह [illegible] विनैयो रेत्त 3108

CC-0. In Public Domain. Lucknow State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चरङ्कळ् पाय–बाणों के लगने से; कविकळ् ऍल्लाम्–सारे कपि; चिन्तिय चिरत्त आकि–कटे सिरों के होकर; पऱन्तलै अतत्तिल्–युद्धभूमि पर; अ पातक अरक्कन्–उस पातक राक्षस के; कॊल्ल–मारने से; इऱन्तत्त–जो मरे, वे; इमैयोर् एत्त–देवों के प्रशंसा करते; ऍऴुन्तत्त–जी उठे; अऱम् तलै निन्ऱार्क्कु–धर्म में स्थिर रहनेवालों का; अऴिवु इल्लै–नाश नहीं; ऍन्तुम्–यह; अऱिञर् वार्त्तै–पंडितों का वचन; चिऱन्ततु–अर्थ-भरा हो गया। ३१०८

वे वानर जो उस पातक के बाणों के लगने से सिरों के कटने पर युद्ध-स्थल में मरे गिरे थे, अब देवों के आशीर्वाद से जी उठे। इससे यह विद्वानों का कथन अर्थवान हो गया कि धर्मवान का नाश नहीं होता। ३१०८

आक्कैयि नित्ऱु वीऴ्न्द वरक्कन्ऱन् तलैयै यङ्गै
तूक्किनन् तुळ्ळुङ् गूत्तन् वालिशेय् तूशु शॆल्ल
मेक्कुयर्न् दमरर् वॆळ्ळ मळ्ळियै तॊडर्न्दु वीशुम्
पूक्किळर् पन्दर् नीऴ लनुमन्मे लिळवल् पोनान् 3109

आक्कैयिनित्ऱु–शरीर से; वीऴ्न्त–(कटकर) जो गिरा था; अरक्कन् तन् तलैयै–उस राक्षस-सिर को; तुळ्ळुम् कूत्तन्–उछल-कूद मचाते हुए; बालि शेय्–वालीपुत्र ने; अङ्कै तूक्किनन्–अपने सुन्दर हाथों से उठाया; तूचु चॆल्ल–आगे की पंक्ति में गया; मेक्कु उयर्न्तु–उच्च स्थान में रहकर; अमरर् वॆळ्ळम्–देवों की भीड़ ने; अळ्ळियै–उठाकर; तॊटर्न्तु वीचुम्–जो निरंतर बरसाये; पू किळर्–उन फूलों के बने; पन्तर् नीऴल्–उस वितान की छाँह में; अनुमन् मेल्–हनुमान पर; इळवल्–लघुराज; पोनान्–गये। ३१०९

इन्द्रजित् के शरीर से अलग होकर जो सिर गिरा उसको वालीपुत्र ने आनंद-नृत्य के साथ सुन्दर हाथ में उठा लिया। वह आगे की पंक्ति में जाने लगा। पीछे देवों के द्वारा बरसाये गये फूलों के वितान की छाँह में, हनुमान के कंधों पर आरूढ़ होकर लक्ष्मण गये। ३१०९

वीङ्गिय तोळन् तेय्न्दु मॆलिहिन्ऱ पऴियन् मीदुऱ्
ऱोङ्गिय मुडियन् तिङ्ग ळॊळिपॆऱु मुहत्त नुळ्ळाल्
वाङ्गिय तुयरन् मीप्पोय् वळर्हिन्ऱ पुहऴन् वन्दुऱ्
ऱोङ्गिय बुवहै याळ निन्दिर निनैय शॊल्वान् 3110

इन्तिरन्–इन्द्र; वीङ्किय तोळन्–फूले हुए कंधों वाला; तेयन्तु–घिसकर; मॆलिकिन्ऱ–क्षीण होनेवाले; पऴियन्–अपयश का; मीतुऱु ओङ्किय–उन्नत; मुटियन्–सिर वाला; तिङ्कळ् ऒळि–चन्द्रप्रभा; पॆऱु मुकत्तन्–भरे मुख वाला; उळ्ळाल् वाङ्किय–अन्दर दबे; तुयरन्–दुःख वाला; मी पोय्–ऊँचा बने; वळर्किन्ऱ पुकऴन्–यश वाला; वन्तुऱु–आकर; ओङ्किय–बढ़े हुए; उवकैयाळन्–मोदवाला; इनैय–ऐसी बातें; चॊल्वान्–कहने लगा। ३११०

इन्द्र ने देखा तो उसके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। कंधे फूल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गये। अपयश क्षीण हो गया। उन्नत-सिर बने उसका मुख चंद्रप्रभा-से खिल गया। दुःख अन्दर ही अन्दर दब गया। यश बढ़ गया। उसने बढ़ते उत्साह के साथ आकर ये बातें कहीं। ३११०

ऎल्लिवान् मदियि नुऱ्ऱ करैयॆन्न याण्डु मॆन्ऱोळ्
पुल्लिय वडुबुम् बोहा वॆन्ऱहम् बुळुङ्गि नॆन्देन्
विल्लियर् तिलहन् वन्दु तुडैत्तुऱ वॆम्मै तीर्न्देन्
शॆल्वमुम् बॆऱुदऱ् कुण्डो कुऱैयिनिच् चिऱुमै यादो 3111

ऎल्लि–रात में; वान् मतियिन्–आकाश के चन्द्र में; उऱ्ऱ–लगे; कऱै ऎन्न–कलंक के समान; याण्डुम्–हमेशा; ऎन् तोळ् पुल्लिय–मेरे कंधों पर लगे; वटुबुम्–दाग़; पोकातु–दूर नहीं होगा; ऎन्ऱु–ऐसा सोचकर; अकम् पुळुङ्कि–भीतर से क्षुब्ध होकर; नॆन्तेन्–घुल रहा था; विल्लियर् तिलकन्–धनुर्धरतिलक के; वन्तु–आकर; तुटैत्तुऱ–पोंछने से; वॆम्मै तीर्न्तेन्–गरम दुःख से छूटा; चॆल्वमुम्–धन; पॆऱुतऱ्कु उण्टो–पाने (दूसरा) है क्या; इनि–आगे; कुऱै चिऱुमै–अभाव की क्षुद्रता; यातु–क्या। ३१११

'मेरे कंधों में रात में प्रकट चंद्र के कलंक के समान दाग़ जो लगे थे, वे नहीं मिटेंगे' —यह सोचकर मैं घुल रहा था। धनुर्धरतिलक लक्ष्मण ने उसे पोंछ दिया। अब मेरा संताप दूर हो गया। आगे पाने के लिए कौन सा श्रेष्ठ धन है? अब कौन दीनता व अल्पता है? । ३१११

तॆन्ऱलै याऴि तॊट्टोन् शेयरुळ् शिऱुवन् शॆम्मल्
वॆन्ऱलैत् तॆन्नै यार्त्तुप् पोर्त्तॊऴिल् कडन्द वॆय्योन्
तन्ऱलै यॆडुप्पक् कण्डु तानवर् तलैहळ् शाय
ऎन्ऱलै यॆडुक्क लाने निनिक्कुडै यॆडुप्पे नॆन्ऱान् 3112

ऎन्नै वॆन्ऱु–मुझे जीतकर; अलैत्तु–त्रस्त करके; आर्त्तु–नारे लगाकर; पोर्त्तॊऴिल् कटन्त–युद्ध में जो जीता; वॆय्योन् तन्–उस क्रूर के; तलै–सिर को; तॆन् तलै–मनोरम तल वाले; आऴि–समुद्र को; तॊट्टोन् चेय्–जिन्होंने खोदा, उन सगरपुत्रों के वंशज; अरुळ्–उन श्रीराम की कृपा-प्राप्त; चिऱुवन्–युवा; चॆम्मल्–उत्कृष्ट गुणों वाला (अंगद); ऎडुप्प–उठाये रखा है, यह; कण्टु–देखकर; तानवर् तलैकळ्–दानवों के सिरों के; चाय–झुके होते; ऎन् तलै–अपने सिर को; ऎडुक्कलानेन्–उठाने लगा; इनि–आगे; कुटै ऎडुप्पेन्–विजयछत्र तान लूंगा। ३११२

"उसने मुझे परास्त किया और बहुत सताया। कोलाहल मचाकर युद्ध में जो जीता उस क्रूर के सिर को मनोहर तल वाले समुद्र के खननकारी सगरपुत्रवंशज श्रीराम की कृपा के पात्र युवा, श्रेष्ठ अंगद हाथ में ले आ रहा है। उसे देखकर दानवों के सिर अवनत होते हैं। मेरा सिर उन्नत हो रहा है। आगे विजयछत्र भी तान लूंगा।" देवेन्द्र यों बोला। ३११२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वरदन्पोय् मऱुहा निन्ऱ मनत्तिनन् मायत् तोऩैच्
चरदप्पोर् वॆन्ऱु मीळुन् दरुममे ताङ्ग वॆन्ऱुबान्
विरदम्बूण् डुयिरि ऩोडुन् दन्नुडै मीट्चि नोक्कुम्
बरदन्बोन् ऱिरुन्दान् ऱम्बि वरुहिन्ऱ परिशैप् पार्त्तान् 3113

बरतन्–वरद (लक्ष्मण) के; पोय्–जाने के बाद; मऱुका निन्ऱ–दुःखी रहे; मनत्तिनन्–मन वाले; तरुममे ताङ्क–धर्म के धारण करने से; चरतम्–निश्चय; मायत्तोऩै–मायावी को; पोर् वॆन्ऱु–युद्ध में जीतकर; मीळुम्–लौटेगा; ऍन्पान्–कहते हुए जो रहे; विरतम् पूण्टु–(वे श्रीराम) व्रत पालन करते हुए; उयिरिऩोटुम्–जीवन धारण करके; तन्नुटैय–उनके; मीट्चि–(नगर-) प्रत्यागमन की; नोक्कुम्–प्रतीक्षा करनेवाले; परतन् पोन्ऱु–भरत के समान; इरुन्तान्–रहे; तम्पि–अनुज के; वरुकिन्ऱ परिचै–लौट आने का हाल; पार्त्तान्–देखा। ३११३

इधर वरद लक्ष्मण के युद्ध में जाने के बाद श्रीराम बहुत व्याकुलमन हो गये थे। 'धर्म के बल से लक्ष्मण अवश्य मायावी इन्द्रजित् को मारकर लौट आयगा' —ऐसा कहते हुए व्रतरत होकर श्रीराम किसी विध जीवन धारण कर उनके प्रत्यागमन की प्रतीक्षा में, अयोध्या में रहनेवाले भरत की-सी स्थिति में रह रहे थे। अब उन्होंने अपने भाई को विजयी होकर लौटते हुए देखा। ३११३

वन्बुलङ् गडन्दु मीळुन् दम्बिमेल् वैत्त मालैत्
तन्बुल नयन मॆन्नुन् दामरै शॊरियुन् दारै
अन्बुहॊ लळुह णीर्हॊ लाऩन्द वारि येहॊल्
ऍन्बुह ळुरुहिच् चोरुङ् गरुणैहॊ लियार दोर्वार् 3114

वन् पुलम्–शत्रुस्थान में; कडन्तु–जीतकर; मीळुम्–लौट आनेवाले; तम्पि मेल्–अनुज पर; वैत्त–रखे; तन् पुलन्–अपने इन्द्रिय; नयनम् ऍन्नुम् तामरै–नेत्र-कमल; माल चॊरियुम् तारै–माला के रूप में जो धारें बहा रहे थे; अन्पु कॊल्–वे प्रेम (के प्रतीक) हैं; अळु कणीर् कॊल्–रुदनाश्रु हैं; आऩन्त वारिये–आनंद-बाष्प ही; कॊल्–क्या; ऍन्पुकळ्–हड्डियाँ; उरुकि–पिघलकर; चोरुम्–तब जो बहती है; करुणै कॊल्–वह करुणा है क्या; अतु–वह; यार् ओर्वार्–कौन जाने। ३११४

अब युद्धस्थल में विजय पाकर जो लौट रहे थे, उन अपने अनुज पर रखे प्रेम के कारण उनके नेत्रकमलों से माला के रूप में अश्रुधारा बहने लगी। वह क्या प्रेम का ही फल थी? या वे रुदन के आँसू हैं? या आनन्दबाष्प ही हैं? या करुणा है जो हड्डियों को पिघलाकर बह रही है? वह कौन जाने? । ३११४

विळुन्दळि कण्णि ऩीरु मुवहैयुङ् गळिप्पुम् वीङ्ग
अळुन्दॆदिर् वन्द वीर ऩिणैयडि मुन्ऩ रिट्टान्
कॊळुन्दॆळुञ् जॆक्करक् करऱै वॆयिल्विड वॆयिऱ्ऱिन् कूट्टम्
अळुन्दुऱक् कडित्त पेळ्वायत् तलैयडि युऱैयॊन् ऱाह 3115

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विळुन्तु अळि-गिरकर बहनेवाले; कण्णिन् नीरुम्-नेत्राश्रु व; उवकैयुम्-और आनन्द; कळिप्पुम्-उत्साह; बीङ्क-के बढ़ते; ऍळुनतु-उठकर; ऍतिर्वन्त वीरन्-सामने (जो) आये (उन) वीर के; इणै अटि मुन्नर्-चरणद्वय के सामने; कॊळुन्तु ऍळुम्-ज्वाला जिनसे उठती हो, उन; चॆक्कर् कऱ्ऱै-लाल लटों के; वॆयिल् विट-धूप-से छिटकाते; ऍयिऱ्ऱिन् कूट्टन्-दंतपंक्ति; अळुन्तुऱ कटिन्त-जिसमें गहरे काट रही थी; पेळ वाय्-उस विवृत मुख वाले; तलै-सिर को; अटिपुऱै ऑन्ऱु आक-चरण में भेंट के रूप में; इट्टान्-(अंगद ने) समर्पित किया। ३११५

बहते अश्रुजल बढ़े; आनंद बढ़ा और उत्साह प्रवृद्ध हुआ। श्रीराम उठे और भाई के समक्ष आये। उनके दोनों चरणों के सामने अंगद ने इन्द्रजित् के सिर को चरण-भेंट के रूप में समर्पित किया। उस सिर के लाल केश की लटें अग्नि-ज्वालाओं के समान लाल प्रकाश छोड़ रही थीं। दाँत खूब सटे हुए थे मानो काट रहे हों। मुख विवृत था। ३११५

तलैयिनै नोक्कुन् दम्बि कॊऱ्ऱवै तळीइय पॊऱ्ऱोण्
मलैयिनै नोक्कुम् निन्ऱु मारुदि वलियै नोक्कुम्
शिलैयिनै नोक्कुन् देवर् शॆय्हैयै नोक्कुम् शॆय्द
कॊलैयिनै नोक्कु मॊन्ऱु मुरैत्तिलन् कळिप्पुक् कॊण्डान् 3116

तलैयिनै नोक्कुम्-सिर को देखते; तम्पि-अनुज के; कॊऱ्ऱवै तळीइय-विजयश्री से आलिंगित; पॊन् तोळ् मलैयिनै-सुन्दर कंधों रूपी पर्वत को; नोक्कुम्-निहारते; निन्ऱु-सामने स्थित; मारुति-हनुमान के; वलियै-शरीर-बल को; नोक्कुम्-देखते; चिलैयिनै नोक्कुम्-(लक्ष्मण के) धनु पर दृष्टि डालते; तेवर् चॆय्कैयै नोक्कुम्-देवों के कार्य पर नजर चलाते; चॆय्त कॊलियिनै-कृत वधकार्य पर; नोक्कुम्-सोचते; ऑन्ऱुम् उरैत्तिलन्-कुछ नहीं बोले; कळिप्पु कॊण्डान्-मुदित हुए। ३११६

(श्रीराम भावविमग्न हो गये।) इन्द्रजित् के सिर को देखते और अपने अनुज के विजयश्री से आलिंगित कंधों के पर्वतों को देखते। सामने स्थित मारुति के सुघटित शरीर को देखते; फिर लक्ष्मण के धनु को देखते। देवों के कार्यों के बारे में सोचते और लक्ष्मण के वध-कार्य पर विचार करते। पर वे कुछ नहीं बोले और बहुत ही मुदित रहे। ३११६

काळमे हत्तैच् चॆक्कर् कलन्दॆन्नक् करिय कुन्ऱम्
नाळवॆयिऱ् परन्द दॆन्न नम्बितन् तम्बि मार्बिल्
तोळिन्मे लुदिरच् चॆङ्गेळ्च् चुडुवदन् नुरुविल् तोन्ऱत्
ताळिन्मेल् वणङ्गि नानैत् तळ्विनन् तनित्तॊन् ऱिल्लान् 3117

तनित्तु ऑन्ऱु-(लक्ष्मण के अलावा) अलग कुछ; इल्लान्-जिनके कुछ नहीं था; नम्पि-उन भगवान ने; काळ मेकत्तै-काले मेघ से; चॆक्कर् कलन्तॆन्न-लाल गगन मिला जैसे; करिय कुन्ऱम्-काले पर्वत पर; नाळ् वॆयिल्-उदयकालीन धूप; परन्ततु-फैली जैसे; तन् तम्पि-अपने अनुज के; मार्पिलुम्-वक्ष पर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तोळित् मेल्–और कंधों पर के; उतिर–रुधिर-सह; चॅम् केऴ्–लाल व्रणों के; चुबटु–चिह्न; तन् उरुविल् तोत्रु–अपने शरीर पर लगवाते हुए; ताळिन् मेल् बणङ्कितातै–अपने चरणों में नमस्कार करनेवाले को; तऴुवितन्–गले लगा लिया। ३११७

तब लक्ष्मण ने श्रीराम के चरणों में नमस्कार किया और लक्ष्मण के अनन्यप्रेमी भगवान श्रीराम ने अपने अनुज का आलिंगन कर लिया। वह दृश्य कैसा था ? काले मेघ से लाल गगन मिला हो ऐसा था; काले पर्वत पर उदयकालीन धूप फैली हो, ऐसा था। आलिंगन से श्रीराम के वक्ष पर और कंधों पर लक्ष्मण के रुधिर-सहित व्रण के निशान लग गये। ३११७

तूक्किय तूणि वाङ्गित् तोळॊडु मार्बॆच् चुऱ्ऱि
वीक्किय कवश पाश मॊऴित्ततु विरॆवि नीक्कित्
ताक्किय पहऴिक् कूर्वाय् तडिन्दपुण् तऴुम्बु मिन्ऱिप्
पोक्कितन् तऴुविप् पल्हाल् पॊऱ्ऱडन् दोळि नॊऱ्ऱि 3118

तूक्किय–जो धारण कर रहे थे; तूणि वाङ्कि–उस तूणीर को हटाकर; तोळॊटु मार्पॆ–गले और वक्ष को; चुऱ्ऱि वीक्किय–लपेटकर जो बाँधा गया था उस; कवच पाचम् ऒऴित्ततु–कवच-पाश को खोलकर; अतु–उस कवच को; विरॆवित् नीक्कि–जल्दी-जल्दी हटाकर; ताक्किय–शरीर पर लगे; पकऴि–बाणों के; कूर् वाय्–तीक्ष्ण नोकों ने; तटिन्त–जो बनाये थे; पुण् तऴुम्पुम् इन्ऱि–व्रणों के निशान को भी दूर करते हुए; पल् काल् तऴुवि–अनेक बार आलिंगन करके; पॊन् तटम् तोळित्–मनोरम विशाल भुजाओं से; ऒऱ्ऱि–सेंककर; पोक्कितन्–दूर किया। ३११८

फिर उन्होंने अपने भाई के शरीर से उनसे धृत तूणीर को उतारा। कंधों पर और छाती पर लपेटकर बाँधे गये कवच के बंधन खोलकर कवच को अलग किया। शरीर पर लगे अस्त्रों की नोकों से बने व्रणों के दाग़ भी दूर करते हुए बार-बार आलिंगन क्या किया, मानो अपने विशाल मनोरम भुजाओं से सेंककर व्रण और दर्द को दूर किया। ३११८

आडवर् तिलह निन्ना लन्ऱिह लनुम नॆन्नुम्
शेडन्ना लन्ऱु वेऱोर् दॆय्वत्तिन् शिऱप्पु मन्ऱु
वीडणन् तन्द वॆन्ऱि यीदॆन विळम्बि मॆय्म्मै
एडवि ऴलङ्गल् मार्ब निरुन्दन निनिदि निप्पाल् 3119

एटु अविऴ्–जिसमें पुष्पदल विकसित हैं; मार्पन्–ऐसे वक्ष वाले श्रीराम ने; आटवर् तिलक–पुरुषतिलक; निन्नाल् अन्ऱु–तुम्हारे कारण नहीं; इकल्–पराक्रमी; अनुमन् ऎन्नुम्–हनुमान नाम के; चेटनाल् अन्ऱु–श्रेष्ठ से भी नहीं; वेऱु ओर्–अन्य किसी; तॆय्वत्तिन् चिऱप्पुम् अन्ऱु–देवता की विशेषता से नहीं; ईतु–यह; वीटणन् मॆय्म्मै–विभीषण की ईमानदारी की; तन्त वॆन्ऱि–दी हुई विजय है; ऎन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विळम्पि–ऐसा कहकर; इनितिन् इरुन्ततन्–सुख से रहा; इप्पाल्–इधर यह हालत रही। ३११९

श्रीराम ने विभीषण की यों प्रशंसा की। लक्ष्मण! हे पुरुषतिलक! इस विजय का गौरव तुम्हें नहीं मिलेगा। बलवान हनुमान नामक उत्तम व्यक्ति का भी इसमें भाग नहीं। किसी और देवता की विशेषता भी इसका हेतु नहीं रह सकती। असल में यह विभीषण की ईमानदारी के कारण मिली विजय है। श्रीराम बड़े सुखी रहे। इधर का यह वृत्तांत है। ३११९

28. इरावणन् शोहप् पडलम् (रावण-शोक पटल)

ओद रोदन वेलै कडन्दुळार्, पूद रोदरम् बुक्कॅन्नप् पोर्त्तिळि
शीद रोदक् कुरुदित् तिरैयॉरीइत्, तूद रोडिन्नर् तादैयिर् चॉल्लुवान् 3120

तूतर्–(रावण के) दूत; तातैयिन्–धाता के पास; चॉल्लुवान्–कहने हेतु; ओत–समुद्रगर्जन-सम; रोतत वेलै–रुदन-सागर को; कटन्तुळार्–पार कर; पोर्त्तु–आवृत करके; इळि–बहनेवाले; चीत–शीतल; रोतम्–तीरों वाले; कुरुति तिरै–रक्त की लहरों को; ऑरीइ–लाँघकर; पूतर् उतरम्–भूधर (मेरु) के उदर में; पुक्कॅन्न–घुसे जैसे; ओटिन्नर्–लंका के अंदर दौड़े। ३१२०

उधर रावण के दूत अपने धाता से वृत्तांत कहने के वास्ते समुद्रगर्जन-सदृश रुदनस्वर-सागर, और भूमि को आवृत रहनेवाले शीतल अवरोधन-सहित रहे रक्त-सागर को पार कर भूधर मेरु के उदर में घुसते-से गोद्वार में घुसकर लंका में भागे। ३१२०

अन्ऱि लङ्गरुम् बेडैह ळामॅन, मुन्ऱि लॅङ्गु मरक्कियर् मॉय्त्तळ
इन्ऱि लङ्गै यळिन्दवॅन् ऱेङ्गुवार्, शॅन्ऱि लङ्गैयिर् ऱादयैच् चेर्न्दुळार् 3121

अरक्कियर्–राक्षसरमणियाँ; अन्ऱिल्–'अन्ऱिल्' नाम के पक्षी की; अम्–सुन्दर; करुम् पेटैकळ् आम् अॅन–काली मादाओं के समान; मुन्ऱिल् अॅङ्कुम्–सभी आँगनों में; मॉय्त्तु–भीड़ लगाकर; अळ–रोयीं; इन्ऱु–आज; इलङ्कै अळिन्ततु–लंका मिट गयी; अॅन्ऱु ऐङ्कुवार्–ऐसा जो दुःखी हुए वे दूत; अयिल् इलङ्कु–शक्ति जिसके हाथ में थी उस; तातैयै–धाता रावण के पास; चॅन्ऱु चेर्न्तुळार्–जा पहुँचे। ३१२१

राक्षसियाँ 'अन्ऱिल्' की काली मादा पक्षियों की तरह यत्र-तत्र आँगनों में भीड़ लगाकर बैठीं और रुदन करने लगीं, तो दूत दुःखी हो गये कि जाज लंका मिटेगी। वे शक्तिधारी धाता रावण के पास जा पहुँचे। ३१२१

पल्लुम् वायु मतमुन्दम् बादमुम्, नल्लु यिर्प्पॉऱै योडु नडुङ्गुवार्
इल्लै यायिन तुन्ऱम् मिन्ऱॅन्ऱ्, नॉल्लि वारुवयम् नुरन्त तळङ्गुवार् 3122

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Sri Mata Amrtanandamayi Math, Kazigahanj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पयम् चुऱ्ऱ–डर के घरे; तुळङ्कुवार्–काँपते हुए; तम् पल्लुम्–अपने दाँतों; वायुम्–मुख; मनमुम्–मन; पातमुम्–पैरों के; नल्–अच्छे; उयिर्प्पोऱ्ऱैयोटु–जीवधारी शरीरों के साथ; नटुङ्कुवार्–काँपनेवाले दूतों ने; इन्ऱु–आज; उन् मकन् इल्लै–आपका पुत्र (जीवित) नहीं है; अँन–ऐसा; चॊल्लिनार्–कहा। ३१२२

वे पूर्णरूप से भयावृत थे। उनके दाँत, मन, पैर और शरीर सब काँप रहे थे। उन्होंने रावण से जाकर निवेदन किया कि आज आपका पुत्र नहीं रह गया है। ३१२२

माडि रुन्दवर् वानवर् मादरार्, आडल् नुण्णिडै यार्मऱ्ऱु मियावरुम्
वीडु मिन्ऱिव् वुलहॆन विम्मुवार्, ओडि यॆङ्गणुञ् जिन्दि यॊळित्तनर् 3123

माटिरुन्तवर्–पास जो रहीं; वानवर् मातरार्–उन देवस्त्रियों ने; आटल् नुण्णिटैयार्–नाचनेवाली क्षीण कमर वालियों ने; मऱ्ऱुम् यावरुम्–अन्य सभी ने; इ उलकु–इस लोक को; इन्ऱु वीटुम्–आज छोड़ देंगे; अँन–सोचकर; विम्मुवार्–सिसककर; अँङ्कणुम् ओटि–सर्वत्र दौड़कर; चिन्ति–तितर-बितर हो; ऒळित्तनर्–अपने को छिपा लिया। ३१२३

(उसके कोप से संभाव्य नतीजे से डरकर) पतली कमर वाली नर्तकी अप्सराओं और अन्यों ने भी 'आज जीवन त्यागना पड़ेगा' इस विचार से सिसकते हुए सर्वत्र तितर-बितर भागकर अपने को छिपा लिया। ३१२३

शुडर्क्कॊ ळुम्बुहै तीविऴि तूण्डिडत्, तडऱ्ऱु वाळुरु वित्तरु तूदरै
निडऱ्ऱु वीश लुऱाविऴुन् दानरो, कडऱ्पॆ रुन्दिरै पोऱ्करञ् जोरवे 3124

विऴि–आँखों ने; चुटर्–प्रकाश के साथ; कॊळुम् पुकै–घने धुएँ के साथ; ती–आग; तूण्डिट–निकाली; वाळ्–तलवार; तटऱु–म्यान से; उरुवि–निकालकर; तरु तूतरै–समाचार देने आये दूतों को; कटल् पॊरु–समुद्र में टकराने वाली; तिरै पोल्–तरंगों के समान; करम् चोरवे–हाथों के थकित होते; निडऱु–उनके कण्ठों पर; वीचल् उऱा–वार कर; विऴुन्तान्–(स्वयं नीचे) गिरा। ३१२४

रावण की आँखों से धुएँ के साथ आग निकल आयी। उसने म्यान से तलवार निकाली। दूतों के गले काट दिये। उसके समुद्रतरंगों के समान हाथ थक गये और वह नीचे गिर गया। ३१२४

वाय्प्पि इन्दु मुयिर्प्पिन् वळर्न्दुम्वान्
काय्प्पु रुन्दॊऱुङ् गण्णिडैक् कान्दियुम्
पोय्प् पिऱङ्गिव् वुलहैप् पॊदियुम्वॆन्
दीप्पि इन्दुळ दिन्ऱॆनच् चॆय्ददाल् 3125

पिऱङ्कु–विद्यमान; इ उलकै–इस लोक को; पॊतियुम्–ग्रसनेवाली; वॆम् ती–दारुण अग्नि; वाय् पिऱन्तुम्–मुख में पैदा हुई; उयिर्प्पिन्–और श्वास से; वळर्न्तुम्–बढ़ीं; वान्–बड़ी; काय्प्पु उऱुम् तोऱुम्–प्रकट होती हर बार; कण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इट्टं–आँखों में; कान्तियुम्–धधकी; इन्ऱु पोय् पिऱन्तुळतु–आग जाकर पैदा हुई; ऍन्ऱ–ऐसा; चॆय्ततु–(उसने) कार्य किया। ३१२५

लोकग्राही क्रूर आग उसके मुख से पैदा हुई, श्वास में पली घृणा के प्रकट होते-होते आँखों में बढ़ी और इस तरह आज ही जन्म ले चुकी हो, ऐसा काम करने लगी। ३१२५

पडम्बि ऱङ्गिय पान्दळुम् बारुम्बेऱ्न्
दिडम्बि ऱङ्गि वलम्बॆयर्न् दीङ्ऱु
उडम्बि ऱङ्गिक् किडन्दुळैत् तोङ्गुती
विडम्बि ऱन्द कडलॆन्ऱ वॆम्बिऩान् 3126

पटम् पिऱङ्किय–फनों से शोभित; पान्तळुम्–आदिशेषनाग और; पारुम्–भूमि; पेर्न्तु–विस्थापित हो; इटम् पॆयर्न्तु–बायीं तरफ़ बिगड़कर; वलम् पॆयर्न्तु–दायीं तरफ़ अस्त-व्यस्त होकर; ईटु उऱ–संकट में पड़े; उटम्पु–शरीर भी; इऱङ्कि–आसन से नीचे खिसककर; किटन्तु–पड़ा रहकर; उळैत्तु–कष्ट सह कर; ओङ्कु ती–बढ़ती आग-सा; विटम् पिऱन्त–विष का जन्मस्थान; कटल् ऍन्ऱ–समुद्र के समान; वॆम्पिऩान्–उत्पन्न हुआ। ३१२६

फनों से शोभित अनंतनाग तथा भूमि की भी स्थिति बिगड़ी। भूमि की बायीं ओर बिगड़ी; फिर दायीं ओर बिगड़ी। वह संकटमें पड़ गयी। रावण भी आसन से नीचे खिसका, भूमि पर गिरा और कष्ट पाने लगा। तब वह वर्धनशील अग्नि-तुल्य विष के जन्मस्थान समुद्र के समान संतप्त हुआ। ३१२६

तिरुहु वॆञ्जिऩत् तीनिहर् शीऱ्ऱमुम्
पॆरुहु कादलुन् दुऩ्पुम् बिऱङ्गिड
इरुब दॆऩ्ऩु मॆरिपुरै कण्गळुम्
उरुहु शॆम्बॆऩ वोडिय दूऱ्ऱुनीर् 3127

तिरुकु वॆम् चिऩम्–ऐंठे हुए और तापक क्रोध रूपी; ती निकर्–अग्नितुल्य; चीऱ्ऱमुम्–कोप और; पॆरुकु कातलुम्–(पुत्र पर) बढ़नेवाला स्नेह; तुऩ्पुम्–(उसकी मृत्यु से उत्पन्न) दुःख, इनके; पिऱङ्किट–बढ़ने से; इरुपतु–बीस; ऍऩ्ऩुम्–कहलानेवाले; ऍरि पुरै–आग के समान; कण्कळुम्–नेत्रों से; उरुकु चॆम्पु ऍऩ्ऱ–पिघलते ताँबे के समान; ऊऱ्ऱु नीर्–स्रवनेवाला जल; ओटियतु–बहा। ३१२७

तब उसके मन में आग-सम क्रोध ऐंठ उठा। साथ-साथ पुत्र का प्रेम, और पुत्रवियोगजनित दुःख भी भर उठे। इसलिए बीसों अग्नि-सदृश नेत्रों से पिघले ताँबे के समान आँसू निकलकर बहा। ३१२७

कडित्त पऱ्कुलङ् गऱ्कुलङ् गण्णऱ
इडित्त कालत् तुरुमॆऩ वॆङ्गणुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अडित्त कैत्तलत् ताऱ्ऱरै याऴिनीर्
वॆडित्त वाय्दॊऱुम् पॊङ्गिऩ मीच्चॆल 3128

कऱ्कुलम्–पर्वतराशियों को; कण् अऱ–गाँठें तोड़ते हुए; इटित्त–जो फटता; कालत्तु उरुम् ऎऩ–उस वर्षाकाल के वज्रों के समान; पऱ्कुलम्–दाँतों की पंक्तियाँ; कटित्त–काटी गयीं; तरै अटित्त–धरती पर पीटते; कै तलत्ताल्–करतलों से; ऎङ्कणुम् वॆटित्त–सर्वत्र हो उठे; वाय् तॊऱुम्–गड्ढों में; आऴि नीर्–समुद्रजल; मी चॆल–ऊपर जाय ऐसा; पॊङ्किऩ–उभर उठा। ३१२८

उसने दाँत पीसे तो पर्वतकुलों को चूर करते हुए गिरनेवाले वर्षा-काल के वज्रों के समान शब्द हुआ। धरती को उसने अपने हाथों से पीटा, जिससे सर्वत्र गड्ढे बन गये और उनसे समुद्रजल उभर आया। ३१२८

❀ मैन्द वोवॆऩुम् मामह ऩेयॆऩुम्, ऎन्दै योवॆऩु मॆन्ऩुयि रेयॆऩुम्
उन्दि ऩेऩुऩै नाऩुळॆ ऩेयॆऩुम्, वॆन्द पुण्णिडै वेल्पट्ट वॆम्मैयाऩ् 3129

वॆन्त पुण्णिटै–पके व्रण में; वेल् पट्ट–भाला घुसा जैसे; वॆम्मैयाऩ्–दुःख में रहनेवाले ने; मैन्त वो–हे पुत्र; ऎऩुम्–चिल्लाया; मा मकऩे–महान पुत्र; ऎऩुम्–पुकारता; ऎन्तैयो ऎऩुम्–मेरे तात कहता; ऎऩ् उयिरे ऎऩुम्–मेरे प्राण चिल्लाता; उऩै–तुम्हें; उन्तिऩेऩ्–भेजकर; नाऩ् उळॆऩे–मैं रह गया ओफ़; ऎऩुम्–कहता। ३१२९

पके व्रण में भाला घुसे तो जैसी स्थिति होगी, उस स्थिति में रहा रावण चिल्लाने लगा। वह पुकारता— हे मेरे पुत्र! महान पुत्र! मेरे तात! मेरे प्राण! तुम्हें भिजवाकर मैं रह गया, हाय! वह रो उठा। ३१२९

अरन्दै वाऩव रार्त्तऩ रोवॆऩुम्, बुरन्द रऩ्पहै पोयिऱ्ऱऩ् ऱोवॆऩुम्
करन्दै शूडियुम् बाऱ्कडऱ् कळ्वऩुम्, निरन्द रम्बहै नीङ्गिऩ रोवॆऩुम् 3130

अरन्तै वाऩवर्–दुःखी देव; आरत्तऩरो–अब आनन्द मनाते हैं क्या; ऎऩुम्–कहता; पुरन्तरऩ्–पुरंदर का; पकै–शत्रु; पोयिऱ्ऱु अऩ्ऱो–दूर हो गया न; ऎऩुम्–कहता; करन्तै चूटियुम्–'करंदै' (नामक) पुष्पधारी (शिव) भी; पाल् कटल्–क्षीरसागरवासी; कळ्वऩुम्–चोर (श्रीविष्णु) भी; निरन्तरम्–सदा के लिए; पकै नीङ्किऩरो–शत्रुविहीन हो गये न; ऎऩुम्–कहता। ३१३०

रावण आगे विलाप करने लगा। दुःखी जो रहे वे देव अब आनंद का शोर करते हैं न? पुरंदर का शत्रु चला गया न! 'करंदै' पुष्पधारी शिव और क्षीरसागरवासी चोर विष्णु अरि-विमुक्त हो गये न?। ३१३०

नीऱु पूशियुम् नेमियुम् नीङ्गिऩार्, मारिल् कुऩ्ऱॊडु वेलै मऱैन्दुळार्
ऊऱु नीङ्गिऩ रायुव णत्तिऩो, डेऱु मेरि युलावुव रॆऩ्ऩुमाल् 3131

नीऱु पूचियुम्–भभूतधारी और; नेमियुम्–चक्रधारी; मारिल्–अचल; कुऩ्ऱॊडु–पर्वत और; वेलै–समुद्र में; मऱैन्तुळार्–छिपे हैं; नीङ्किऩार्–दूर रहे; ऊऱु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीङ्कित्तराय्–(अब) संकट से मुक्त होकर; एऱुम्–ऋषभ पर और; उवणत्तित्तोटु–गरुड़ पर; एऱि उलाबुवार्–सवार हो सैर करेंगे; ऍन्नुम्–यह कहता। ३१३१

"भस्मधारी (शिव) और चक्रधर (विष्णु) क्रमशः अचल कैलास पर्वत और (क्षीर-) सागर में छिपे रहे। अब संकट से मुक्त होकर वे क्रमशः ऋषभ और गरुड़ पर सवार होकर बेधड़क सैर करेंगे न!" रावण ऐसा कहता। ३१३१

वान मानमुम् वानव रीट्टमुम्, पोन पोन तिशैयिडम् बुक्कन
तान मानवै शार्हिल शार्हुव, ऊन मानिडर वॅन्ऱिकॉण् डोवॅनुम् 3132

वान मानमुम्–आकाशचारी यान और; वानवर् ईट्टमुम्–देवों के समूह; पोन पोन तिचैयिटम्–जहाँ-जहाँ गये उन दिशाओं में; पुक्कन–घुसे; तानम् आनवै–अपने-अपने स्थान जो हैं उनमें; चार्किल–न पहुँचे; ऊनम्–हीन दीन; मानिटर्–नर; वॅन्ऱि कॉण्टोम् ऍन–विजय पा गये, कहकर; चार्कुव–अपने-अपने स्थान पहुँचनेवाले बन गये। ३१३२

हे इन्द्रजित्! तुमसे डरकर जो आकाशचारी यानों और देवों के समूह जहाँ कहीं दिशाओं में भागे और अब तक अपने स्थानों में जा नहीं पाये। पर अब स्थिति यह हो गयी है कि नर विजयगाथा लेकर अपने स्थानों में पहुँच जायँगे!। ३१३२

कॅट्ट तूदर् किळत्तिन वारॉरु, कट्ट मानिडन् कॉल्लवॅन् कादलन्
पट्टॉ ऴिन्दन नॅयॅनुम् बन्मुऱै, विट्ट ऴॅक्कु मुऴॅक्कुम् वॅदुम्बुमाल् 3133

कॅट्ट तूतर्–इन बुरे दूतों ने; किळत्तिनवाऱु–जो बतलाया, उसके अनुसार; कट्ट–कष्टदायी; ऑरु मानिटन् कॉल्ल–एक नर के मारे; ऍन् कातलन्–मेरा प्यारा पुत्र; पट्टु ऑऴिन्तनने–मर मिटा, हे; ऍनुम्–कहता; पन् मुऱै–बार-बार; विट्टु–मुख खोलकर; अऴॅक्कुम्–नाम लेकर पुकारता; उऴॅक्कुम्–वेदना का अनुभव करता; वॅनुम्पुम्–संतप्त होता। ३१३३

दूतों के कथन के अनुसार कष्टदायी नर के मारे मेरा प्यारा पुत्र मर गया— हाय! रावण यों कहता और बार-बार नाम ले पुकारता! पीड़ा का अनुभव करता और संतप्त होता। ३१३३

❀ऍऴमि रुक्कुम् नडक्कु मिरक्कमुऱ्
ऱऴम रऱ्ऱु मयर्क्कुम् वियर्क्कुम्बोय्
विऴुम्वि ऴिक्कु मुहिऴ्क्कुन्दन् मेनियाल्
उऴुनि लत्तै युरुऴुम् बुरऴुमाल् 3134

ऍऴम्–उठता; इरुक्कुम्–(धरती पर) बैठता; नटक्कुम्–चलता; इरक्कम् उऱ्ऱु–तरसकर; अऴुम्–रोता; अरऱ्ऱम्–विलाप करता; अयर्क्कुम्–थक जाता; वियर्क्कुम्–स्वेद निकलता; पोय् विऴुम्–जाकर गिरता; विऴिक्कुम्–आँखें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खोलता; मुकिऴ्क्कुम्–बन्द करता; तन् मेऩियाल्–अपने शरीर से; निलत्तै उऴुम्–भूमि को जोतता; उरुऴुम्–लोटता; पुरऴुम्–लुढ़कता। ३१३४

रावण कभी उठता, फिर बैठ जाता। कुछ दूर चलता और तरस कर रोता। विलाप करता और थक जाता। कुछ दूर चलकर नीचे भूमि पर गिर जाता। कभी आँखों को खोलता, कभी उन्हें बन्द कर लेता। अपने शरीर को ऐसा पटकता कि लगता कि वह भूमि को जोत रहा हो! लोटता और लुढ़कता। ३१३४

ऐय नेयॅऩु मोर्शिरम् यानिऩम्
शॅय्व नेयर शॅऩ्ऩुमङ् गोर्शिरम्
कैयऩे ऩुऩैक् काट्टिक् कॊडुत्तनान्
उय्व नेयॅऩ् ऱुरैक्कुमङ् गोर्शिरम् 3135

ओर् चिरम्–एक सिर; ऐयऩे ऍऩुम्–तात पुकारता; अङ्कु–वहाँ; ओर् चिरम्–एक सिर; यान् इऩम्–मैं अब भी; अरचु चॅय्वऩे–राज्य करूँगा क्या; ऍऩ्ऩुम्–कहता; अङ्कु ओर् चिरम्–वहाँ एक सिर; कैयऩेऩ्–नीच; उऩै काट्टि कॊटुत्त–(जिसने) तुम्हें (शत्रु को) दिखा दिया; नान्–वह मैं; उय्वऩे–बचूँगा क्या; ऍऩ्ऱु उरैक्कुम्–ऐसा वेदना के साथ कहता। ३१३५

रावण के दस सिरों में एक सिर 'तात!' बुलाता। वहाँ दूसरा सिर यह कहकर रोता कि क्या मैं अब भी राज करूँगा? तीसरा सिर कलपता कि मैं नीच हूँ! तुम्हें शत्रु को मारने के लिए दिखा दिया। क्या मैं बच सकूँगा? । ३१३५

ऍऴुविऱ् कोल मॅऴुदिय तोळ्हळाल्
तऴुविक् कॊळ्हलै यॅऩ्ऩुमङ् गोर्तलै
उऴुवैप् पोत्तै युऴैयुयि रुण्बदे
शॅऴुविऱ् चेवह नेयॅऩु मोर्शिरम् 3136

अङ्कु–वहाँ; ओर् तलै–एक सिर; कोलम् ऍऴुतिय–चित्रकारी-सहित ऍऴुविऩ्–खंभे के समान; तोळ्कळाल्–भुजाओं से; तऴुवि कॊळ्कलै–आलिंगन नहीं करते; ऍऩ्ऩुम्–कहता; ओर् चिरम्–अन्य एक सिर; उऴुवै पोत्तै–व्याघ्र-शिशु को (या पुरुष व्याघ्र को); उऴै–हरिण; उयिर् उण्पऩे–जीवन खा ले क्या; चॅऴु विल्–सबल धनुर्धर; चेवकऩे–वीर; ऍऩुम्–कहता। ३१३६

उधर एक सिर पछताता कि चित्रकारीयुक्त लोहे के खंभे के समान अपनी भुजाओं से तुम मेरा आलिंगन नहीं करते! और एक सिर कहता— पुरुष व्याघ्र के प्राणों को क्या एक हरिण खा ले? हे सबल धनुर्धर वीर! यह क्या अन्याय है? । ३१३६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीलङ् गाट्टिय कण्डनुम् नेमियुम्
एलुङ् गाट्टि ऩॅऱिन्द पडॅक्कॅलाम्
तोलुङ् गाट्टित् तुरन्दऩै मीण्डुनिन्
ओलङ् गाट्टिलै योवॅनु मोर्शिरम् 3137

ओर् चिरम्–एक सिर; नीलम् काट्टिय–नील रंग दिखानेवाले; कण्टनुम्–कंठ वाले शिव और; नेमियुम्–चक्रधर विष्णु; एलुम्–जहाँ युद्ध हुए; काट्टिऩ्–उन जंगलों में; ऍऱिन्त पटॅक्कु ऍलाम्–तुम पर चलाये गये अस्त्रों को; मीण्टुम्–बार-बार; तोलुम् काट्टि–हार दिखाकर; तुरन्तऩै–(अस्त्र) चलाये; निऩ् ओलम्–अपना वीरगर्जन (अब); काट्टिलैयो–तुमने सुनाया नहीं क्या; ऍऩुम्–कहता। ३१३७

फिर एक सिर कलपता कि पहले नीलकंठ और चक्रधर के विरुद्ध जंगलों में हुए युद्धों में तुमने उनके चलाये सारे हथियारों को परास्त करते हुए अपने अस्त्र चलाये थे, अब क्या तुमने वीर-गर्जन की शक्ति दिखायी नहीं ? । ३१३७

तुञ्जि ऩाय्हील् तुणैपिरिन् देऩॅऩुम्, वञ्ज मोवॅनुम् वारलै योवॅनुम्
नॅञ्जु नोव नॅडुन्दऩि येकिडन्दु, अञ्जि ऩॅऩॅन् ऱरऱ्ऱुमङ् गोर्दलै 3138

अङ्कु–वहाँ; ओर् तलै–एक सिर; तुञ्चिऩाय् कॊल्–क्या मर गये; तुणै पिरिन्तेऩ्–सहायक से अलग हो गया; वञ्चमो–क्या यह वंचना है; ऍऩुम्–कहता; वारलैयो–तुम नहीं आओगे क्या; नॅञ्चु नोव–मन व्याकुल करके; नॅटुम् ततिये किटन्तु–बहुत दिन अकेले रहकर; अञ्चिऩेऩ्–डर जाता हूँ; ऍऩ्ऱु अरऱ्ऱुम्–ऐसा कलपता। ३१३८

उधर एक सिर संशय के साथ पूछता कि तुम क्या सचमुच मर गये ? हाय ! अपने सहायक से छूट गया मैं। क्या यह छल है ? पूछता कि क्या तुम नहीं आओगे ? मेरा मन व्याकुल है ! बहुत देर से अकेले रहकर भयातुर हो गया। ३१३८

काह माडु कळत्तिडैक् काण्बऩो, पाह शादऩ् मौलियॊ डुम्बऱित्
तोहै मेवुऱ वैत्तवुऩ् ऩुच्चियिल्, वाहै नाण्मल रॅऩ्ऩुमऱ् ऱोर्दलै 3139

मऱ्ऱोर् तलै–और एक सिर; मौलियॊटुम् परित्तु–जिसके किरीट को अलग करके; ओकै मेवुऱ–संतोष के बढ़ते; उऩ् उच्चियिल् वैत्त–तुमने अपने सिर पर रखा था उस; पाकचातऩ्–पाकशासन पर (विजयचिह्न रूपी); नाण् वाकै मलर्–ताजे 'वाहै' फूलों की माला को; काकम् आटु–कौए जहाँ खेलते हैं उस; कळत्तिटै–समराजिर में; काण्पेऩो–देखूंगा क्या; ऍऩ्ऩुम्–कहता। ३१३९

और एक सिर रोता कि तुमने इन्द्र के किरीट को छीन लेकर बढ़ते आनंद के साथ अपने सिर पर रख लिया था। पाकशासन पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विजय पाने पर जो तुमने ताज़े "वाहै" के फूलों की माला पहनी थी, उसे आज उस युद्धांगन में देखूँ जहाँ कौए क्रीड़ा करते हैं ? । ३१३९

शेलि यऱ्क णियक्कर् तन्देविमार्, मेलि नित्तविर् हिऱ्पर्हॊल् वीरनिन्
कोल विऱ्कुरल् केट्टुक् कुलुङ्गित्तम्, तालि यैत्तॊड लॆन्नुमऱ् ऱोर्दलै 3140

मऱ्ऱु ओर् तलै–अन्य एक सिर; वीर–वीर; नित्–तुम्हारे; कोल–सुन्दर; विल् कुरल्–धनु का स्वर; केट्टु–सुनकर; कुलुङ्कि–काँपकर; तम् तालियै तॊटल्–अपने (अहिवात के) मंगलसूत्र को छूने का काम; इयक्कर् तम्–यक्षों की; चेल् इयल्कण्–'शेल' मछली-सी आँखों वाली; तेविमार–पत्नियाँ; इनि मेल्–आगे; तविर्किऱ्पर् कॊल्–छोड़ देंगी न; ऎन्नुम्–कहता । ३१४०

और एक सिर पछताता कि हे पुत्र ! तुम्हारे धनु की टंकार सुन कर यक्षस्त्रियाँ अपने मंगल-सूत्रों का स्पर्श (इस प्रार्थना के साथ कि मेरा अहिवात न जाए) कर रही थीं। अब शेल मछली-सी चंचल आँखों वाली वे यह (बार-बार मंगलसूत्र स्पर्श करने का) काम छोड़ देंगी न ? । ३१४०

कूऱ्ऱ मुन्नॆदिर् वन्दुयिर् कॊळ्वदोर्, ऊऱ्ऱन् दानुडैत् तन्ऱैनै युम्मॊळित्
तेऱ्ऱ वॆव्वुल हुऱ्ऱनै यॆल्लैयिल्, आऱ्ऱ लायॆन् ऱुरैक्कुमङ् गोर्दलै 3141

ऎल्लैयिल् आऱ्ऱलाय्–निस्सीम बलशाली; कूऱ्ऱम्–यम; उन् ऎतिर् वन्तु–तुम्हारे सामने आकर; उयिर् कॊळ्वतु–जान लेने का; ओर् ऊऱ्ऱम् तान्–एक साहस; उटैत्तन्ऱु–नहीं रखता; ऎन्नैयुम् ऒळित्तु–मुझसे छिपकर; एऱ्ऱ–योग्य; ऎं उलकु–किस लोक में; उऱ्ऱनै–गये; ऎन्ऱु–ऐसा; अङ्कु–उधर; ओर् तलै उरैक्कुम्–एक सिर कहता । ३१४१

हे अपार बलवान ! यम में इतना साहस नहीं कि वह तुम्हारे समक्ष आकर तुम्हारे प्राण हर ले । (इसलिए साफ़ है, तुम यमलोक नहीं गये ।) फिर मेरी भी आँख बचाकर अपने योग्य तुमने किस लोक को चुन लिया है ? । ३१४१

इन्न वाऱ्ऱैत् तेङ्गुहिन् ऱान्ऱॆऴुन्, दुन्नु मात्तिरत् तोडिन नूऴिनाळ्
पॊन्निन् वानन्न पोर्क्कळम् बुक्कनन्, नन्म हन्ऱन दाक्कैयै नाडुवान् 3142

इन्नवाऱु–इस भाँति; अऴैत्तु–पुकारकर; एङ्कुकित्ऱान्–शोक करता रावण; ऎऴुन्तु–उठा; नन् मकन् तन्तु–अपने अच्छे पुत्र के; आक्कैयै–शरीर को; नाटवान्–खोजने के लिए; ऊऴि नाळ्–युगक्षय के काल के; पॊन्निन् वान् अन्न–स्वर्ण-देव-नगर के समान जो रही; पोर्क्कळम्–उस युद्धभूमि में; उन्नुम् मात्तिरत्तु–सोचने की देरी के अंदर; ओटिन्न् पुक्कन्न्–दौड़ पहुँचा । ३१४२

रावण इस भाँति विलापता रहा। फिर उठा। अपने अच्छे पुत्र की लाश को ढूँढ़ लेने के विचार से वह दौड़ कर युगांतकालीन स्वर्णदेवनगरी के समान रहे समरांगन में सोचने मात्र की देरी के अन्दर पहुँचा । ३१४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेव रेमुद लाहिय शेवहर्, एव रुम्मुड नेतॉडर्न् देहिन्नार्
मूव हैप्पे रुलहन्नि मुऱैमैयुम्, याव दाहुमिन् ऱॆन्न विरङ्गुवार् 3143

तेवरे मुतलाकिय-देव ही आदि; चेवकर् एवरुम्-वीर सभी; मूवकै पेरु लकिन् त्रिविध लोकों का; मुऱैमैयुम्-क्रम; इन्ऱु-आज; यावतु आकुम्-क्या होगा; ऍन्न-ऐसा; इरङ्कुवार्-शोक करते; उटन्ने-तभी; तॉटर्न्तु-उसका पीछा करके; एकिन्नार्-गये। ३१४३

देव आदि सभी वर्गों के वीरों को भय हो गया कि अब इन तीनों लोकों के क्रम में क्या ही परिवर्तन होनेवाला होगा ? वे भी अनुताप करके उसका पीछा करके गये। ३१४३

अऴुद वाऱ्चिल वन्बिन पोन्ऱडि
तॉऴुद वाऱ्चिल तूङ्गिन वाऱ्चिल
उऴद यानैप् पिणम्बुक् कॉळित्तवाल्
कऴुदुम् बुळ्ळु मरक्कनैक् काण्डलुम् 3144

कऴुतुम् पुळ्ळुम्-पिशाच और पक्षी; अरक्कनै काण्टलुम्-राक्षस को देखते ही; चिल अऴुत-कुछ रोये; चिल-कुछ; अन्पिन् पोन्ऱु-कुछ सौहार्द्र दिखाकर; अटि तॉऴुत-चरणों में झुके; चिल-कुछ; तूङ्किन-सोते (-से) रहे; उऴुत-(जिन्होंने युद्ध में प्रयत्न के साथ लड़कर) प्राण दिये थे; यानै पिणम् पुक्कु-उन हाथियों की लाशों में घुसकर; ऑळित्त-छिपे। ३१४४

जब रावण युद्धस्थल में पहुँचा तो भूत-पिशाच आदि और पक्षीगण हड़बड़ा गये। कुछ रोये। कुछ स्नेह का प्रदर्शन करते हुए उसके चरणों में झुके। कुछ सोते (-से) रहे। और कुछ खूब लड़कर मरे हाथियों की लाशों के मध्य जा छिपे। ३१४४

कोडि कोडिक् कुदिरैयिन् कूट्टमुम्
आडल् वॅन्ऱि यरक्करद माक्कैयुम्
ओडै यानैयुन् देरु मुळक्किनान्
नाडि नान्ऱन् महनुडल् नाळॆलाम् 3145

तन् मकन् उटल्-अपने पुत्र के शरीर को; नाळ् ऍलाम्-दिन भर; नाटिनान्-खोजा; कोटि कोटि-कोटि-कोटि; कुतिरैयिन् कूट्टमुम्-अश्वों की भीड़ों; आटल्-युद्ध में; वॅन्ऱि-विजयी; अरक्कर् तम्-राक्षसों के; आक्कैयुम्-शरीरों को; ओटै यानैयुम्-मुखपट्ट से अलंकृत हाथियों को; तेरुम्-और रथों को; उळक्किनान्-रौंदकर कीच बना दी। ३१४५

रावण ने दिन भर अपने पुत्र के शरीर को ढूंढ़ा। उसके पैरों-तले कोटि-कोटि अश्व, युद्धविजयी राक्षस वीरों के शरीर, मुखपट्ट से अलंकृत हाथियों की लाशें, रथ —ये सब रौंदकर कीच बने। ३१४५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊय्हि डन्द विऴिवऴि नीरुह, नॆय्हि डन्द कनल्पुरै नॆञ्जिनान्
मॊय्हि डन्द शिलैयॊडु मूरिमाक्, कैहि डन्ददु कण्डनन् कण्गळाल् 3146

नॆय् किटन्त–घी-मिश्रित; कनल् पुरै–आग के समान; नॆञ्चिनान्–मन वाले ने; पॊय् किटन्त विऴि वऴि–असत्य जिनमें वास करता था, उन आँखों से; नीर् उक–आँसू बहाते हुए; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; मूरि–बलवान; मा–बड़े; कै–(इन्द्रजित् के) हाथ को; मॊय् किटन्त–सुदृढ़ता से युक्त; चिलैयॊटु–धनु के साथ; किटन्ततु–पड़ा; कण्टनन्–देखा। ३१४६

उसका मन घी के साथ जलती आग के समान था। उसने अपनी असत्य-भरी आँखों से इन्द्रजित् के बलयुक्त हाथ को बड़े और सशक्त धनु को पकड़ा हुआ पड़ा देखा। ३१४६

पॊङ्गु तोळ्वळै युङ्गणैप् पुट्टिलो
डङ्ग दङ्गळु मम्बु मिलङ्गिड
वॆङ्ग णाह मॆनप्पॊलि हिन्ऱदैच्
चॆङ्गै यालॆडुत् तान्शिरञ् जेर्त्तिनान् 3147

पॊङ्कु–फूले हुए; तोळ्–बाहुओं के; वळैयुम्–वलय और; कणै पुट्टिलोटु–तूणीर; अङ्कतङ्कळुम्–बाजूबंद; अम्पुम्–शर; इलङ्किट–शोभते रहे; वॆम् कण् नाकम्–भीषण आँखों वाले नाग; ऍत–के समान; पॊलिकिन्ऱतै–शोभनेवाले (हाथ) को; चॆम् कैयाल्–पुष्ट हाथ से; ऍटुत्तान्–उठाकर; चिरम् चेर्त्तिनान्–सिर पर रख लिया। ३१४७

पुष्ट कंधों पर लगे कंकण, तूणीर, बाजूबंद, शर —ये सब शोभ रहे थे। रावण ने इनके साथ शोभित और क्रूर आँखों वाले सर्प के समान पड़े रहे हाथ को अपने पुष्ट हाथ में लेकर अपने सिर पर धारण कर लिया। ३१४७

कऱ्ऱिण् मार्बिऱ् ऱऴुवुङ् गऴुत्तिनिल्
शुऱ्ऱुञ् जॆन्निनियिऱ् चूट्टुञ् जुऴल्कणो
डॊऱ्ऱुम् मोन्दिट् टुरुह मुऴैक्कुमाल्
मुऱ्ऱु नाळिन् विडुनॆडु मूच्चिनान् 3148

मुऱ्ऱुम् नाळिन्–आयु के अन्त के समय में; विटुम्–छोड़े जानेवाले-से; नॆटु मूच्चिनान्–लम्बे निःश्वास वाला; कल् तिण् मार्पिल्–चट्टान के समान कठोर वक्ष से; तऴुवुम्–लगा लेता; कऴुत्तिनिल्–कण्ठ में; चुऱ्ऱुम्–लपेट लेता; चॆन्निनियिल् चूट्टुम्–सिर पर धारण कर लेता; चुऴल् कणोटु–चंचल आँखों पर; ऒऱ्ऱुम्–रख लेता; मोन्तिट्टु–सूंघकर; उरुकुम्–द्रवीभूत होता; उऴैक्कुम्–दुःखी होता। ३१४८

वह ऐसा निःश्वास छोड़ने लगा, मानो आयु के अंतिम समय की साँस हो! वह उस हाथ को ले अपने चट्टान-सम कठोर छाती से लगा लेता। फिर कंठ में लपेट लेता। सिर पर रख लेता। चंचल आँखों पर रख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust., Delhi and eGangotri Funding : IKS

लेता। सूँघता और द्रवीभूत हो जाता। बहुत ही शोकातुर बन गया। ३१४८

कैहण् डान्पिन् करुङ्गडल् कण्डॅन्न
मॅय्हण् डान्नदन् मेल्विळुन् दान्नरो
पॅय्हण् डारै यरुविप् पॅरुन्दिरै
मॉय्हण् डार्दिरै वेलैयै मूडवे 3149

कै कण्टान्–(पहले) हाथ को देखा; पिन्–बाद; करुङ् कटल्–काला सागर; कण्टु अॅन्न–देखा जैसे; मॅय् कण्टान्–शरीर को देखा; कण् पॅय्–आँखों से बहनेवाली; तारै–धाराओं की; पॅरु अरुवि तिरै–बड़ी नदी की तरंगों को; मॉय् कण्टार्–बलवान बीरों के; तिरै वेलैयै–तरंगपूर्ण सागर को; मूटवे–आवृत करने देते हुए; अतन् मेल् विळुन्तान्–उस (शरीर) पर गिरा। ३१४९

उसने पहले इन्द्रजित् के हाथ को देखा। फिर शरीर को देखा, जो काले सागर के समान पड़ा हुआ था। उसकी आँखों से इतनी अश्रुधारा बही कि लगा उस नदी की तरंगें सशक्त राक्षस वीरों के तरंगपूर्ण सागर को डुबा दे! ऐसा रोते हुए वह उस शरीर पर धड़ाम से गिरा। ३१४९

अप्पु मारि यळुन्दिय मार्दैत्तन्
अप्पु मारि यळुदिळि याक्कैयिन्
अप्पु मारि नणैक्कुम् मरर्रुमाल्
अप्पु मानुर्र दियावरुर् रारो 3150

अम्पु–शरों की; मारि–वर्षा; अळुन्तिय मार्पै–जिसमें घुसी थी उस छाती को; अळुतु–रोकर; तन्–अपने; अप्पु मारि–अश्रु की वर्षा; इळि याक्कैयिन्–जिस पर गिरती थी उस शरीर को; अप्पुम्–मल लेता; मारिन्–अपनी छाती से; अणैक्कुम्–लगा लेता; मरर्रुम्–कलपता; अ पुमान्–उस श्रेष्ठ पुरुष का; उर्रतु–जो हाल हुआ; यावर् उर्रार्–किसका हुआ। ३१५०

उसने शरविद्ध पुत्र-वक्ष पर आँसू बहाये और उस शरीर को ले अपने शरीर से लगा लिया। छाती से लगा लिया। फिर वह विलाप करने लगा। तब उसका जो हाल हुआ, वह किसे हुआ था? । ३१५०

पऱिक्कु मार्बिर् पहळियैप् पन्मुऱै
मुऱिक्कुम् मूर्च्चिक्कुम् मोक्कु मुयङ्गुमाल्
ऍऱिक्कुम् वॅङ्गदि रोडुल हेळैयुम्
कऱिक्कुम् वायिलिट् टिन्ऱॅन्नक् कान्दुमाल् 3151

मार्पिल्–छाती में से; पकळियै–शरों को; पन् मुऱै पऱिक्कुम्–अनेक बार छीन लेता; मुऱिक्कुम्–तोड़ देता; मूर्च्चिक्कुम्–मूर्च्छित होता; मोक्कुम्–सूँघता;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुयङ्कुम्–आलिंगन कर लेता; ऍऱिक्कुम्–धूप बिखेरनेवाले; वॆम् कतिरोटु–भीषण सूर्य को और; उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; इन्ऱु–आज; वायिल् इट्टु–अपने मुख में डालकर; कऱिक्कुम्–खा लूँगा; ऍन्ऱ–कहकर; कान्तुम्–कोप दिखाता। ३१५१

रावण इन्द्रजित् की छाती में चुभे शरों को निकालता और उन्हें तोड़ता। वह बेहोश हो जाता। उठकर सूँघता। "आज धूप फैलानेवाले क्रूर सूर्य और सातों लोकों को मुख में डालकर खा लूँगा" कहकर वह अपनी नाराज़गी दिखाता। ३१५१

तेव रोडु मुनिवरुञ् जीरियोर्, एव रोडु मुडन्ऱिरि हिन्ऱिलर्
मूव रोडु मुलहॊरु मून्ऱुडन्, पोव देहॊन् मुनिवॆनुम् बॊम्मलान् 3152

मुनिवु–कोप; मूवरोटुम्–तीनों (त्रिदेवों) के साथ; उलकु ऒरु मून्ऱुटन्–त्रिलोक के साथ; पोवते कॊल्–पूरा होगा क्या; ऍनुम् पॊम्मलान्–ऐसे भय से; तेवरोटु मुनिवरुम्–देव और मुनिवर; चीरियोर् ऍवरोटुम्–शिष्ट सभी; उटन् तिरिकिन्ऱिलर्–साथ (प्रकट) नहीं घूमते। ३१५२

देवों और मुनियों ने रावण का गुस्सा देखा तो डरने लगे कि क्या इसका कोप त्रिलोक, त्रिदेवों का अंत करने के बाद भी रुकेगा ? वे और अन्य कोई भी शिष्ट साथ-साथ खुले रूप से नहीं घूमे (सब छिप गये)। ३१५२

कण्डि लन्ऱलै कान्दिय मानिडन्
कॊण्डि ऱन्दन ऩॆन्बदु कॊण्डवन्
पुण्डि ऱन्दन नॆञ्जन् पॊरुमलन्
विण्डि ऱन्दिड विम्मि यरऱ्ऱिनान् 3153

तलै कण्टिलन्–सिर नहीं देखा; कान्ति–जल-भुनकर; अ–वह; मानिटन् कॊण्टु इऱन्ततन्–नर ले गया; ऍन्पतु–यह; कॊण्टवन्–धारणा करके; पुण् तिऱन्तन–व्रण (जिसके) ताज़े खुल गये; नॆञ्चन्–ऐसे मन वाला; पॊरुमलन्–दुःख से भरकर; विम्मि–सिसककर; विण् तिऱन्तिट–आकाश को फाड़ते हुए; अरऱ्ऱिनान्–चिल्लाया। ३१५३

रावण ने इन्द्रजित् का सिर नहीं देखा। उसने जल-भुनकर समझ लिया कि वही नर इसके सिर को ले गया है। उसके मन के व्रण ताज़े खुल गये। दुःख से भरकर सिसकते हुए वह इतने ज़ोर से चिल्लाया कि आकाश भी फट जाय ! । ३१५३

निलैयुमा दिरत्तु निन्ऱ यानैयुम् नॆऱ्ऱिक् कण्णन्
मलैयुमे वॆळियेवोनान् पऱित्तऱ्कु मऱुविन् मैन्दन्
तलैयुमा रुयिरुङ् गॊण्डा रवरुड लोडुन् दङ्गप्
पुलैयऩे निन्ऱु मावि शुमक्किन्ऱेन् पोलुम् बोलुम् 3154

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निलैयुम् मातिरत्तु-अचल दिशाओं में; निन्ऱ यानैयुम्-स्थित गज और; नॅऱ्ऱि कण्णन्-भालनेत्र शिव का; मलैयुमे-पर्वत ही; नान् परित्तऱ्कु-मेरे द्वारा उखाड़ने के लिए; ॲळियवो-सुलभ रहे क्या; मऱ इल् मैन्तन्-निर्दोष पुत्र के; तलैयुम्-सिर और; आर् उयिरुम्-प्यारे प्राण; कॉण्टार्-ले लिये हाय; अवर्-वे; उडलोटुम् तङ्क-सशरीर रहते; पुलैयनेन्-चांडाल मैं; इन्नुम्-अब भी; आवि चुमक्किन्ऱेन्-प्राण ढो रहा हूँ । ३१५४

(वह विलापा—) स्थायी दिग्गज और भालनेत्र शिव का कैलास पर्वत —क्या ये ही मेरे तोड़ने के लिए सुलभ रह गये ? वे नर, जिन्होंने मेरे निर्दोष पुत्र का सिर और उसके प्यारे प्राण हर लिये, सशरीर रहते हैं। उनको देखता हुआ चाण्डाल मैं अब भी प्राण ढो रहा हूँ ! हाय ! कैसी दुर्गति ! । ३१५४

ॲरियुण वळहै मूदू रिन्दिर निरुक्कै यॅल्लाम्
पॉरियुण वुलह मून्ऱुम् बॉदुवऱप् पुरन्देन् पोलाम्
अरियुणु मलङ्गन् मौलि यिळन्दवॅन् मदलै याक्कै
नरियुणक् कण्डे नूणि नायुणु मुणवु नन्ऱाल् 3155

अळकै मूदूर्-अलकापुरी का प्राचीन नगर; इन्तिरन् इरुक्कै-इन्द्र का वासस्थान (अमरावती); ॲल्लाम्-(आदि) सभी नगरों को; ॲरि उण-आग जला दें; पॉरि उण-अंगारे जला दें; उलकम् मून्ऱुम्-तीनों लोकों का; पॉतु अऱ-साझे के विना; पुरन्तेन्-पालन करता रहा; अरि-भ्रमरों से; उणुम्-भोग्य; अलङ्कन् मौलि-पुष्पों से अलंकृत सिर को; इळन्त-खोकर जो है; ॲन् मतलै-ऐसे मेरे पुत्र के; याक्कै-शरीर को; नरि उण-सियारों को खाता; कण्टेन्-देखा; ऊणिन्-अपने भोजन से; नाय् उणवुम् उणवु-कुत्ते का (जूठा) खाना; नन्ऱु-बेहतर; पोल् आम्-हो गया, शायद वही सच है । ३१५५

अलकापुरी, अमरावती आदि नगरों को अग्निदग्ध कराकर मैंने त्रिभुवन का असपत्न रूप से पालन किया था। पर आज देख रहा हूँ कि अलिकुलभोग्य पुष्पालंकृत सिर से हीन मेरे पुत्र के शरीर को सियार खा रहे हैं ! मेरे भोजन से कुत्ते का भोजन श्रेष्ठ होगा शायद ! । ३१५५

पूण्डॉरु पहैमेऱ कॉण्डॅन् पुत्तिर नोडुम् बोनार्
मीण्डिलर् विळिन्दु वीळ्न्दार् विरदिय रिरुव रोडुम्
आण्डुळ कुरङ्गु मॉन्ऱु ममर्क्कळत् तारु मिन्नुम्
माण्डिल रिनिवे रुण्डो विरावणन् वीर वाळ्क्कै 3156

ऑरु पकै मेल् कॉण्टु-एक शत्रु पर आक्रमण करके; ॲन् पुत्तिरनोटुम्-मेरे पुत्र के साथ; पोनार्-जो गये वे; मीण्टिलर्-नहीं लौटे; विळिन्तु वीळ्न्तार्-मरकर गिरे; आण्टु उळ-वहाँ रहते; विरतियर्-व्रती (तपस्वी); इरुवरोटुम्-दोनों के साथ; कुरङ्कुम्-वानर; आरुम् ऑन्ऱुम्-कोई एक; इन्नुम् माण्टिलर्-अभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नहीं मरे; इरावणन् वीर वाऴ्क्कै–रावण का वीर का जीवन; इऩि वेऱु उण्टो–अब कुछ अन्य है क्या। ३१५६

वैर साधकर जो मेरे पुत्र के साथ गये वे सभी विना लौटे मर मिट गये। वहाँ तपस्वी, वानर इनमें कोई भी नहीं मरा! रावण का वीरता के जीवन का और कुछ प्रमाण चाहिए क्या? । ३१५६

कन्दर्प्प रियक्कर् शित्त ररक्कर्दङ् गन्ऩि मार्हळ्
शॆन्दॊक्कुञ् जॊल्लिऩा रुन् तेवियर् तिरुवि ऩल्लार्
वन्दुऱ्ऱॆङ् गणवन् ऱन्ऩैक् काट्टॆन्ऱु मरुङ्गिल् वीऴ्न्दाल्
अन्दॊक्क वरऱ्ऱ वोनान् कूऱ्ऱैयु माडल् कॊण्डेन् 3157

कन्तर्प्पर–गन्धर्व; इयक्कर्–यक्ष; चित्तर्–सिद्ध; अरक्कर्–राक्षस; तम्–इनकी; कन्तिमारकळ्–कन्याएँ; चॆन्तु ऒक्कुम्–'सिंदु' नाम के तान के समान; चॊल्लिऩार्–बोली वालियाँ; उन् तेवियर्–तुम्हारी पत्नियाँ; तिरुविन् मल्लार्–लक्ष्मी से भी सुन्दर; वन्तु उऱ्ऱ–आ पहुँचकर; ऎम् कणवन् तन्ऩै–हमारे पति को; काट्टु–दिखाओ; ऎन्ऱु–कहकर; मरुङ्किल्–पास में; वीऴ्न्ताल्–गिरें तो; कऱ्ऱैयुम् आटल् कॊण्टेन्–यमविजेता मैं; ऒक्क अरऱ्ऱवो–एक साथ कलपूँ; अन्त–हन्त। ३१५७

गंधर्व, यक्ष, सिद्ध और राक्षसनारियाँ, 'सिंदु' तान की-सी मधुरभाषिणी लक्ष्मी से भी सुन्दरी तुम्हारी पत्नियाँ, आ पहुँचकर मुझसे यह माँग करते हुए कि हमारे पति को दरसा दो, मेरे पार्श्व में गिरें, तो यमविजेता मैं क्या साथ मिलकर (अपने दसों मुखों से) कलपूँ? हाय! । ३१५७

शिऩत्तॊडुङ् गॊऱ्ऱ मुऱ्ऱ विन्दिरन् शॆल्वम् मेव
निऩैत्तदु मुडित्तु निन्ऱेन् नेरिऴै यॊरुत्ति तऩ्ऩाल्
ऎऩक्कुनी शॆय्यत् तक्क कडऩैला मिरङ्गि येङ्गि
उऩक्कुनान् शॆय्व दाऩे ऩॆन्ऩिन्या रुलहत् तुळ्ळार् 3158

चिऩत्तॊडुम्–कोप के साथ; कोऱ्ऱम्–विजय; मुऱ्ऱ–जब बढ़ी तब; इन्तिरन् चॆल्वम् मेव–इन्द्रसंपत्ति मेरे पास आयी; निऩैत्तऩ्तु–जो सोचा वह; मुटित्तु निन्ऱेन्–पूरा किये रहा; नेरिऴै ऒरुत्ति तऩ्ऩाल्–सीधी आभरणभूषिता एक के कारण; ऎऩक्कु–मेरे प्रति; नी चॆय्यत्तक्क–तुम्हारे द्वारा कर्तव्य; कटऩैलाम्–अपर कर्म आदि; इरङ्कि–शोक के साथ; एङ्कि–रोकर; नान्–मैं; उऩक्कु चॆय्वतु आऩेन्–करनेवाला बन गया; ऎऩ्ऩिन् यार्–मुझसे बढ़कर (हीन) कौन; उलकत्तु उळ्ळार्–लोक में है। ३१५८

मेरा क्रोध, मेरी विजयशीलता सब वर्धनशील थे। इन्द्र की संपत्ति मेरे वश में आयी। जो मैं सोचता वह पूरा कर लेता था। पर एक सीधी और आभरणभूषिता के कारण मैं तुमको वह सारा अपर कर्म

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रोते-कलपते करनेवाला हो गया, जो तुम्हारे द्वारा मेरे प्रति कर्तव्य है। मुझसे अन्य ऐसा कौन है इस दुनिया में ? । ३१५८

अॅन्बत्त पलवुम् बन्नि यॅडुत्तळैत् तिरङ्गि येङ्गि
अन्बिन्ाल् महनैत् ताङ्गि यरक्किय रर्र्रि वीळ्प्
पॉन्बुनै नहरम् बुक्कान् कण्डवर् पुलम्बुम् बूशल्
ऑन्बदु तिक्कु मर्र्रै यॉरुतिक्कु मुर्र्र दन्र्रे 3159

अॅन्पत्त–सो; पलवुम्–अनेक बातें; पन्नि–कहकर; अॅटुत्तु अळैत्तु–स्वर उठा पुकारकर; इरङ्कि एङ्कि–शोक करके व्याकुल होकर; अन्पिन्ाल्–स्नेह के साथ; मकनै ताङ्कि–पुत्र को ढोकर; अरक्कियर्–राक्षसियों के; अरर्र्रि वीळ्–कलपकर गिरते; पॉन् पुनै नकरम्–स्वर्णनिर्मित नगर में; पुक्कान्–घुसा; कण्टवर्–दर्शक; पुलम्पुम् पूचल्–जो रोते-कलपते थे वह शोर; ऑन्पतु तिक्कुम्–नवों दिशाओं में; मर्र्रै–और; ऑरु तिक्कुम्–एक दिशा में; उर्र्रतु–पहुँचा। ३१५९

रावण ऐसी अनेक बातें कहकर विलाप करता, उच्च स्वर में पुत्र का नाम ले पुकारता, शोकाकुल और संतप्त होकर प्रेम के साथ अपने पुत्र (के शरीर) को उठा लेता हुआ अपने स्वर्णनिर्मित नगर में पहुँचा। उसको देखकर राक्षसियाँ रोती-कलपती भूमि पर गिर पड़ीं। उसको देखकर लोगों ने जो विलाप के स्वर निकाले वे दसों दिशाओं में जा व्याप्त हुए। ३१५९

कण्गळैच् चूल्हिन् र्रारुङ् कळुत्तिनैत् तडिहिन् र्रारुम्
पुण्गॉळत् तिर्रन्दु मार्बि नीरुळैप् पोक्कु वारुम्
पण्गळ्पुक् कलम्बु नावै युयिरॉडु परिक्किन् र्रारुम्
अॅण्गळिर् पॅरिय रिन्द विरुन्दुयर् पॉरुक्क लार्र्रार् 3160

कण्कळै–आँखों को; चूल्किन्र्रारुम्–नोचनेवालियाँ और; कळुत्तिनै–गलों को; तटिकिन्र्रारुम्–काट लेनेवालियाँ; मार्पिन्–छातियों को; पुण् कॉळ–व्रण बनाते हुए; तिर्रन्तु–खोलकर; ईरुळै–फेफड़ों को; पोक्कुवारुम्–दूर फेंकनेवालियाँ और; पण्कळ् पुक्कु–(संगीत के) राग जिनमें घुसकर; अलम्पुम्–पवित्र करते थे; नावै–उन जीभों को; उयिरॉटु–प्राणों के साथ; परिक्किन्र्रारुम्–खींच लेनेवालियाँ; इन्त–यह; इरुम् तुयर्–घोर दुःख; पॉरुक्कल् आर्र्रार्–न सह सकनेवालियाँ; अॅण्कळिल् पॅरियर्–संख्या में बड़ी हैं। ३१६०

इन्द्रजित् की लाश को देखकर स्त्रियों ने विविध रूप से अपना असह्य दुःख प्रदर्शन किया। जिन्होंने अपनी आँखें खुद नोच लीं; जिन्होंने अपना कण्ठ काट लिया; जिन्होंने अपनी छाती चीरकर फेफड़े निकाल लिये, जिन्होंने अपनी संगीत-धौत जीभों को प्राणों के साथ निकाल लिया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

—ऐसी स्त्रियों की संख्या, जो अपना घोर दुःख सह नहीं सकीं, अधिक होती गयी। ३१६०

मादिरङ् गडन्द तिण्डोळ् मैन्दन्ऱन् महुडच् चॅन्नि
पोदलैप् पुरिन्द याक्कै पॊऱुत्तन्न् पुहुदक् कण्डार्
ओदनीर् वेलै यन्न कण्गळा लुहुत्त वॅळ्ळक्
कादल्नी रोडि याडर् करुङ्गडन् मडुत्त दन्ऱे 3161

मातिरम् कटन्त–दिग्विजयी; तिण् तोळ्–सबलस्कन्ध; मैन्तन् तन्–(अपने) पुत्र के; मकुटम् चॅन्नि–मुकुटमंडित सिर से; पोलै पुरिन्त याक्कै–हीन शरीर को; पॊऱुत्तन्न्–ढोता हुआ; पुकुत कण्टार्–(रावण) आ रहा था उसे देखा (जिन्होंने); ओतम् नीर् वेलै अन्न–(उन्होंने) शब्दित सागर के समान; कण्कळाल् उकुत्त–अपनी आँखों से जो बरसाया; कातल् नीर् वॅळ्ळम्–स्नेह-जल की बाढ़; ओटि–बहकर; आटल्–लहराते; करुम् कटल्–काले-सागर में; मटुत्तन्तु–पहुँची। ३१६१

उन लोगों के, जिन्होंने रावण को दिग्विजयी सबल-स्कन्ध पुत्र इन्द्रजित् के मुकुट-मंडित सिर से हीन शरीर को ढोते हुए जाता देखा, शब्दायमान सागर-सम निःसृत स्नेहाश्रु की बाढ़ जाकर दोलायमान व काले सागर में मिली। ३१६१

आवियि ऩिऩिय काद लरक्कियर् मुदल्व राय
तेवियर् कुळाङ्गळ् शुऱ्ऱच् चिरत्तिऩ्मेल् तळिर्क्कै शेर्त्ति
ऑवियं मळुदु वीळ्ऩ्दु पुरळ्वन्न वॉप्प वॉल्लैक्
कोवियल् कोयिऱ् पुक्कान् कुरुदिनीर्क् कुमिळिक् कण्णान् 3162

ओवियम्–चित्र; चिरत्तिऩ् मेल्–सिरों पर; तळिर् कै चेर्त्ति–पल्लवहस्त रखकर; अळुदु–रोते; वीळ्ऩ्दु पुरळ्वन्न–गिरते लोटते; ऑप्प–जैसे; आवियिऩ् इऩिय कातल्–प्राणों से मधुर प्रेम की; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; मुतल्वराय तेवियर्–आदि पत्नियों के; कुळाङ्कळ्–झुंडों के; चुऱ्ऱ–घेरे आते; कुरुति नीर् कुमुळि–रक्ताश्रुओं के बुलबुले जिनसे निकलते थे; कण्णान्–ऐसी आँखों वाला; ऑल्लै–शीघ्र; को इयल्–राजयोग्य; कोयिल्–महल में; पुक्कान्–घुसा। ३१६२

उसे इन्द्रजित् की प्राणप्यारी राक्षसादि पत्नियाँ घेरे आ रही थीं। वे सिरघृतपल्लव-हस्त व उन चित्रों के समान थीं, जो रोते-कलपते, गिरते-लोटते रहते हों। उसकी आँखों से मानो रक्त के बुलबुले उठ रहे थे। वह जल्दी-जल्दी अपने राज-महल में प्रविष्ट हुआ। ३१६२

करुङ्गुळऱ् कऱ्ऱैप् पारङ् गाल्तॊडक् कमलप् पूवाल्
कुरुम्बैयैप् पुडैक्किऩ् ऱाळ्पोऱ् कैकळाल् मुलैमेऱ् कॊट्टि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरुङ्गलच् चुम्मै ताङ्ग वहलल्हु लन्रिच् चऱ्ऱे
मरुङ्गुलु मुण्डो वॅन्न मयन्महळ् मऱुहि वन्दाळ् 3163

मयन् मकळ्–मयसुता; करुङ्कुळल् पारम् कऱ्ऱे–काले केशभार की लटों को; काल् तॉट–पैरों को छूने देते हुए; कमल पूवाल्–कमल के फूल से; कुरुम्पॅयॅ–छोटे कच्चे नारियल को; पुटैक्कित्ऱाळ् पोल्–पीटती-जैसे; कैकळाल्–हाथों से; मुलै मेल् कॉट्टि–स्तनों पर पीटती हुई; अरुम् कलम् चुम्मै–श्रेष्ठ आभरणों का भार; ताङ्क–ढोने; अकल् अल्कुल् अऱ्रि–विशाल भग के सिवा; चऱ्ऱे–थोड़ा; मरुङ्कुलुम्–कमर भी; उण्टो–है क्या; ऍन्न–लोग कहें ऐसा; मऱुकि–शोकसंतप्त होकर; वन्ताळ्–आयी। ३१६३

तब मयसुता मंदोदरी भी उधर आयी। उसके काले केशभार की लटें उसके पैरों को स्पर्श कर रही थीं। वह अपने छोटे कच्चे नारियल-जैसे स्तनों पर कमल-सम हस्तों से पीटती आयी। 'क्या उसके आभरणभार को धारण करने के लिए भग के अलावा थोड़ा कमर भी है?' ऐसा लोग कहें, इस भाँति वह चकित हो आयी। ३१६३

तलैयिन्मेऱ् चुमन्द कैयळ् तळलिन्मेन् मिदिक्किन् ऱाळ्पोल्
निलैयिन्मेन् मिदिक्कुन् दाळा ळेक्कत्ताल् निऱैन्द नॅञ्जाळ्
कॉलैयिन्मेऱ् कुऱित्त वेडन् कूऱ्ङ्गणै युयिरैक् कॉळ्ळ
मलैयिन्मेन् मयिल्वीळ्न् दॅन्न मैन्दन्मेन् मऱुहि वीळ्न्दाळ् 3164

तलैयिन् मेल्–सिर पर; चुमन्त कैयाळ्–घृत हाथों वाली; तळलिन् मेल्–आग पर; मितिक्किन्ऱाळ् पोल्–पग धरती जैसे; निलैयिन् मेल्–भूमि पर; मितिक्कुम् ताळाळ्–डग भरनेवाले पैरों की; एक्कत्ताल्–शोक से; निऱैन्त नॅञ्याळ्–भरे मन वाली; कॉलैयिन् मेल् कुऱित्त–हत्या पर तुले; वेटन्–व्याध के; कूऱ् कणै–तीक्ष्ण बाण के; उयिरै कॉळ्ळ–प्राण हरने पर; मयिल–एक मोर; मलैयिन् मेल् वीळ्न्तॅन्न–पर्वत पर गिरा जैसे; मैन्तन् मेल्–पुत्र पर; मऱुकि वीळ्न्ताळ्–चक्कर खाकर गिरी। ३१६४

उसके हाथ सिर पर धरे थे। वह भूमि पर ऐसा डग भरती मानो अंगारों पर पैर रख रही हो। दुःखपूरितमना वह अपने उत्कृष्ट पुत्र की लाश पर उस मोर के समान गिरी, जो वधोद्यत व्याध का शर खाकर प्राण खो पर्वत पर गिरा हो। ३१६४

उयिर्त्तिल ळुणर्वु मिल्लळ् उयिरिलळ् कॉल्लो वॅन्नप्
पॅयर्त्तिल ळियाक्कै यॉन्ऱुम् बेशलळ् विम्मि यादुम्
वियर्त्तिलळ् नॅडिदु पोदु विम्मलळ् मॅल्ल मॅल्ल
अयर्त्तिलळ् अरिदिऱ् ऱेऱि वायतिऱन् दरऱ्ऱ लुऱ्ऱाळ् 3165

उयिर्त्तिलळ्–सांसें नहीं छोड़तीं; उणर्वुम् इल्लळ्–प्रज्ञाहीन है; उयिरिलळ् कॉल्लो–प्राणहीन है क्या; ऍन्न–यह संशय पैदा करते हुए; याक्कै–शरीर को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॅयर्त्तिलळ्–नहीं हिलाती; विम्मि–सिसकती; यातुम् ऑत्तुम् पेचलळ्–कुछ भी, एक भी नहीं कहती; नॅटिटु पोतु–लम्बी देर तक; वियर्त्तिलळ्–स्वेद नहीं निकालती; अयर्त्तिलळ्–भूली-बिसरी भी नहीं; मॅल्ल मॅल्ल–धीरे-धीरे; अरितिल्–कष्ट से; तेऱि–संभलकर; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱल् उऱ्ऱाळ्–विलाप करने लगी। ३१६५

वह श्वास-हीन, प्रज्ञा-हीन रही। शरीर निस्पंद रहकर यह संशय पैदा कर रहा था कि क्या वह जीवित भी है ? वह सिसकी पर कुछ नहीं बोली। लंबी देर तक शरीर पर स्वेद भी नहीं झलका। पर वह कुछ भूली नहीं थी। फिर धीरे-धीरे कष्ट के साथ स्वस्थ हुई और मुख खोलकर विलाप करने लगी। ३१६५

कलैयिऩाल् तिङ्गळ् पोल वळर्हिऩ्ऱ कालत् तेयुन्
शिलैयिऩा लरियै वॅल्लक् काण्बदोर् तवमुन् शॅय्देन्
तलैयिला वाक्कै काण वॅत्तवञ् जॅय्दे ऩन्दो
निलैयिला वाळ्वै यिऩ्ऩुम् निऩैवऩो निऩैवि लादेन् 3166

कलैयिऩाल्–कला में; तिङ्कळ् पोल–चन्द्र के समान; वळर्किऩ्ऱ कालत्ते–जब बढ़ते थे तब; उऩ् चिलैयिऩाल्–अपने धनु से; अरियै–इन्द्र को; वॅल्ल काण्पतु–जीतना देखने का; ओर् तवम्–एक तप; मुऩ् चॅय्तेऩ्–पहले किया था; अऩ्तो–हाय; तलै इला–सिर-रहित; आक्कै काण–शरीर देखने को; अॅ तवम् चॅय्तेऩ्–कौन-सी तपस्या की थी; निऩैवु इलातेऩ्–स्मरणशक्ति से हीन मैं; निलैयिला वाळ्वै–मर्त्य जीवन की; इऩ्ऩुम्–अब भी; निऩैवऩो–परवाह करूँगी क्या। ३१६६

जब कलाधर चन्द्र के समान कला पर कला के साथ तुम बढ़ रहे थे, तब मेरा भाग्य रहा कि मैंने तुम्हें अपने धनु से इन्द्र को हराता देखा। पर हाय ! अब मस्तकहीन तुम्हारे शरीर को देखने के लिए मैंने क्या ही तपस्या की है ? स्मरणहीन होकर क्या मैं अब भी मर्त्य जीवन को चाहूँगी ? । ३१६६

ऐयऩे यऴह ऩॅयॅऩ् ऩरुम्बॅऱ् लमिऴ्दे याऴिक्
कैयऩे मऴुव ऩॅयॅऩ् ऱिवर्वलि कडन्द काल
मॉय्यऩे मुळरि यऩ्ऩ निऩ्मुहङ् गण्डि लादेन्
उय्वऩो उलह मूऩ्ऱुक् कॉऱुवऩे शॅऱुव लोऩे 3167

ऐयऩे–तात; अऴकऩे–सुन्दर; अॅऩ्–मेरे; पॅऱ्ऱल् अरुम्–अप्राप्य; अमिऴ्ते–अमृत; आऴिक् कैयऩे–चक्रहस्त और; मऴुवऩे–परशुधर (शिव); अॅऩ्ऱ इवर्–आदि इनके; वलि कटन्त–बल-परास्त-कारी; कालम् मॉय्यऩे–यम के समान पराक्रमी; उलकम् मूऩ्ऱुक्कु ऑऱुवऩे–तीनों लोकों में अद्वितीय; चॅऱु वलोऩे–युद्ध-दक्ष; मुळरि अऩ्ऩ–कमल-सम; निऩ् मुकम् कण्टिलातेऩ्–तुम्हारा मुख न देखती; उय्वऩो–जीवित रहूँगी क्या। ३१६७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे तात ! सुन्दर ! दुष्प्राप्य अमृत ! चक्रधर-व-परशुधर-बल-परास्तकारी यम-सम पराक्रमी ! तीनों लोकों में अद्वितीय ! युद्ध-दक्ष ! कमलमुख तुम्हारा मुख नहीं देखती हुई मैं जीवित रहूँगी क्या ? । ३१६७

ताळरिच् चदङ्गै यार्प्पत् तवळ्हिन्ऱु परुवन् दन्निल्
कोळरि यिरण्डु पऱ्ऱिक् कॊणर्न्दनै कॊणर्न्दु कोबम्
मूळुऱुप् पॊरुत्ति माड मुन्ऱिलिन् मुऱैयि नोडु
मीळरु विळैयाट् टिन्नङ् गाण्बनै विदियि लादेन् 3168

ताळ्-तुम्हारे पैरों में; अरि चतङ्कै-कंकड़-भरी पैंजनियाँ; आर्प्प-क्वणन जब करें; तवळ्कित्ऱु-घुटनों चलने की उस; परुवम् तन्निल्-वय में; इरण्डु कोळरि-वो सिंहों को; पऱ्ऱि-पकड़कर; कॊणर्न्तनै-लाये; कॊणर्न्तु-लाकर; कोपम् मूळुऱु-कुपित हों, ऐसा; पॊरुत्ति-युद्ध में लगवाकर; माट मुन्ऱिलिन्-माढ़े के आँगन में; मुऱैयिनोडु-योग्य रीति से; मीळ अरुम् विळैयाट्टु-फिर न देखी जाय ऐसी क्रीडा को; वितियिलातेन्-भाग्यहीना मैं; इन्नम् काण्पॆने-और कभी देखूँगी क्या । ३१६८

जब तुम पैरों की कंकड़ियों से भरी पैंजनियों को क्वणित कराते हुए घुटनों के बल चलते थे, उस वय में तुम दो सिंहों को पकड़ लाये थे। दोनों में युद्ध छिड़वाया। माढ़े के आँगन में अपने योग्य यह खेल, जो फिर से नहीं हो सकता, खेलते रहे। अब भाग्यहीना मैं फिर एक बार देख सकूँगी क्या ? । ३१६८

अम्बुलि यम्म वावॆन् ऱळैत्तलु मविर्वॆण् डिङ्गळ्
इम्बर्वन् दानै यञ्ज लॆनविरु करत्ति नेन्दि
वम्बुरु मऱुवैप् पऱ्ऱि मुयलॆन वाङ्गुम् वण्णम्
ऍम्बॆरुङ् गळिऱे काण वेशऱ्ऱे नॆळुन्दि राये 3169

ऍम्-हमारे; पॆरुम् कळिऱे-बड़े (महत्त्व के) गज; अम्पुलि-चन्द्र को; अम्म वा-माँ आ; ऍन्ऱु-कहकर; अळैत्तलुम्-बुलाने पर; अविर्-छविपूर्ण; वॆण् तिङ्कळ्-श्वेतचन्द्र; इम्पर् उलकुक्कु-इस लोक में; वन्तानै-जो आया उसे; अञ्चल् ऍन-मत डरो कहकर; इरु करत्तिन् एन्ति-दोनों हाथों में उठाकर; वम्पु उऱु-विशिष्ट; मऱुवै-कलंक को; पऱ्ऱि-पकड़कर; मुयल् ऍन-खरगोश कहकर; वाङ्कुम् वण्णम्-पोंछ लेने की लीला; काण एचऱ्ऱेन्-देखना चाहती; ऍळुन्तिराय् ए-उठोगे नहीं क्या । ३१६९

हमारे बहुमूल्य गज ! तुमने चाँद को माँ ! आ, कह बुलाया और वह छविमय श्वेत चाँद इस भूमि पर उतर आया। तुमने उसे दोनों हाथों में लिया और 'मत डरो' का आश्वासन दिया। फिर उसके विशिष्ट कलंक को खरगोश कहकर पोंछने लगा। वह लीला फिर से देखना चाहती हूँ ! क्या नहीं उठोगे तुम ? । ३१६९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इयक्किय ररक्कि मार्हळ् विञ्जैय रेऴै मार्हळ्
मुयऱ्करै पयिलात् तिङ्गण् मुहत्तियर् मुऴुदु निन्नै
मयक्किय मुयक्कन् दन्नान् मलरणै यमळि मीदे
अयर्त्तनै युऱङ्गु वायो वमर्पॊरु दलशि नायो 3170

इयक्कियर्–यक्षियाँ; अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; विञ्चैयर एऴैमार्कळ्–विद्याधरवनिताएँ; मुयल् करै पयिला–शशांकहीन; तिङ्कळ् मुकत्तियर्–चन्द्र-मुखियाँ; निन्नै–तुम्हें; मुऴुतुम्–पूर्ण रूप से; मयक्किय–बेहोश करा दें, ऐसे; मुयक्कम् तन्नाल्–आलिंगन से; मलर् अणै अमळि मीतु–पुष्पों के तकियों-सह शय्या पर; अयर्त्तनै–थके; उऱङ्कुवायो–सोते हो क्या; अमर् पॊरुतु–युद्ध करके; अलचिनायो–थक गये क्या। ३१७०

क्या तुम यक्ष, राक्षस, विद्याधर आदि शशांकहीन मुखवाली रमणियों के मूर्च्छाकारी आलिंगन से पुष्प-शय्या पर थके सो रहे हो ? या युद्ध से शिथिल पड़ गये ? । ३१७०

मुक्कणान् मुदलि नोरै युलहॊरु मूनऱि नोडुम्
पुक्कपो रॆल्लाम् वॆन्ऱु निन्ऱवॆन् पुदल्वन् पोलाम्
मक्कळि लॊरुवन् कॊल्ल माळ्बवन् वान मेरु
उक्कमॆन् कालाल् वेरो डोडिवदु मुळदे यम्मा 3171

मुक्कणान्–त्रिनेत्र; मुतलिनोरै–आदि (त्रिदेवों) के साथ; उलकु ऒरु मूनऱिनोटुम्–त्रिभुवन के साथ; पुक्क–छिड़े; पोर् ऎल्लाम्–सभी युद्ध; वॆन्ऱु निन्ऱ–जीतकर जो खड़ा था; ऎन् पुतल्वन्–मेरा पुत्र; मक्कळिल् ऒरुवन्–मानवों में एक के; कॊल्ल माळ्पवन्–मारते मर जानेवाला बन गया; अम्मा–आश्चर्य; वान मेरु–बड़ा मेरु पर्वत; उक्कम् मॆन् कालाल्–पंखे के नरम पवन से; वेरोटु–जड़ के साथ; ऒटिवतुम् उळते–टूटे वह भी हो; पोल् आम्–जैसे है। ३१७१

तुमने त्रिनेत्र आदि त्रिदेवों और त्रिभुवनों के विरुद्ध हुए सारे युद्ध जीते थे। अब नरों में एक के मारे मर गये ! क्या आश्चर्य ! यह ऐसा है जैसा पंखे के नरम पवन से बड़ा मेरु हरहराकर जड़ से खुदकर गिर जाय ! । ३१७१

पञ्जॆरि युऱ्ऱ दॆन्न वरक्करदम् बरवै यॆल्लाम्
वॆञ्जिन मनिदर् कॊल्ल विळिन्ददे मीण्ड दिल्लै
अञ्जिनै नञ्जिनैनच् चीदयॆन् ऱमिऴ्दिर् ऱोय्त्त
नञ्जिना लिलङ्गै वेन्दन् नाळैयित् तहैय नन्ऱो 3172

पञ्चु ऎरि उऱ्ऱतु ऎन्न–रूई जल गयी जैसे; अरक्कर् तम्–राक्षसों का; ऎल्लाम् परवै–सारा सागर; वॆम् चित्त मनितर्–दारुण क्रोधयुक्त मनुष्यों के; कॊल्ल–मारने से; विळिन्ततै–मर गये तो; मीण्टतिल्लै–लौटे नहीं; अ चीतै ऎन्ऱु–उस सीता नाम के; अमिऴ्तिल् तोय्त्त–अमृत में सने; नञ्चिनाल्–विष से; नाळै–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कल; इलङ्कै वेन्तन्-लंका का राजा; इ तकैयन् अन्ड्रो-इस स्थिति का नहीं होगा क्या; अञ्चिनेन्-डरी; अञ्चिनेन्-डरी। ३१७२

रूई जल गयी जैसे राक्षस-सेना-सागर सब दारुण क्रोधी नरों के मारे मर मिटा, हाय ! लौटा नहीं। अमृत-सना विष जो है वैसी सीता के कारण कल लंकाधिपति की स्थिति भी यही हो रहेगी न ! हाय ! बड़ा भय लगता है ! डरती हूँ। ३१७२

ऎन्ड्रळैत् तिरङ्गि येङ्ग वित्तुय रॆमर्हट् कॆल्लाम्
पॊन्ड्रळैत् तनैय वल्हुर् चीदैयाल् पुहुन्द दॆन्न
वन्ड्रळैक् कल्लिन् नॆञ्जिन् वञ्जहत् ताळै वाळाल्
कॊन्ड्रिळैत् तिडुवॆ नॆन्ना वोडिन नरक्कर् कोमान् 3173

ऎन्ड्र-ऐसा; अळैत्तु-आह्वान करके; इरङ्कि-व्यग्र होकर; एङ्क-तरसी तब; ऎमर्कट्कु ऎल्लाम्-सारे हमें; इ तुयर्-यह दुःख; पॊन् तळैत्त अतैय-स्वर्णबहुल-से; अल्कुल् चीतैयाल्-नितंब वाली सीता से; पुकुन्ततु-आया; ऎन्न-सोचकर; वन् तळै-बहुत कठोर; कल्लिन् नॆञ्चिन्-प्रस्तरमन; वञ्चकत्ताळै-वंचकी को; वाळाल् कॊन्ड्र-तलवार से हत करके; इळैत्तिडुवॆन्-काम तमाम कर दूंगा; ऎन्ना-कहते हुए; अरक्कर् कोमान्-राक्षसराज; ओटिनान्-दौड़ा। ३१७३

ऐसी करुणा के वचन कहते हुए मंदोदरी रोती-बिलाती, व्यग्र होती रही। तब रावण ने सोचा कि हमारा यह हाल स्वर्णसुन्दर नितंबों वाली सीता के कारण ही हुआ ! 'उस प्रस्तरमना वंचकी को अपनी तलवार से मारकर काम तमाम कर दूंगा।' यह कहते हुए राक्षसराज दौड़ने लगा। ३१७३

ओडुहिन् ड्रानै नोक्कि युयर्पॆरुम् बळियै युच्चिच्
चूडुहिन् ड्रानॆन् ड्रञ्जि महोदरन् तुणिन्द नॆञ्जन्
माडुशॆन् ड्रडियिन् वीळ्न्दु वणङ्गिनिन् पुहळ्क्कु मन्ना
केडुवन् दडुत्त दॆन्ना विनैयन किळत्त लुर्रान् 3174

ओटुकिन्ड्रानै-दौड़नेवाले को; नोक्कि-देखकर; तुणिन्त नॆञ्चन्-धीरमन; मकोतरन्-महोदर; उयर् पॆरुम् पळियै-बहुत बड़ी और गहरी निन्दा को; उच्चि-सिर पर; चूटुकिन्ड्रान्-धारण करने चलता है; ऎन्ड्र अञ्चि-ऐसा डरकर; माटु चॆन्ड्र-पास जाकर; अटियिन् वीळ्न्तु-चरणों पर गिरकर; वणङ्कि-नमन करके; मन्ना-राजा; निन् पुकळ्क्कु-तुम्हारे यश पर; केटु वन्तु अटुत्ततु-हानि आ लगी है; ऎन्ना-कहकर; इत्तैयन-ऐसी बातें; किळत्तल् उर्रान्-कहने लगा। ३१७४

दौड़ते उसे धीरमन महोदर ने देखा। 'बहुत बड़े प्रचंड कलंक को सिर पर धारण करने जा रहा है।' इस डर से वह रावण के पास जाकर उसके चरणों में गिरा। नमन करके उसने कहा— राजा !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम्हारे यश की हानि हो जायगी ! ऐसा आरंभ करके उसने आगे निम्नोक्त बातें कहीं । ३१७४

मङ्गैयैक् कुलत्तु ळाळैत् तवत्तियै मुनिन्दु वाळाल्
शङ्गै यॊत्रिन्रिक् कॊन्राऱ् कुलत्तुक्के तक्का नॆन्ऱु
कङ्गैयञ् जॆन्नि यानुङ् गण्णनुङ् गमलत् तोनुम्
शॆङ्गैयुङ् गॊट्टि युन्नॆच् चिरिप्पराल् शिरिय नॆन्ना 3175

मङ्कैयै–स्त्री को; कुलत्तुळाळै–कुलीना को; तवत्तियै–तपस्विनी को; मुनिन्तु–क्रोध करके; चङ्कै ऒन्ऱु इन्रि–विना किसी हिचक के; वाळाल् कॊन्राल्–तलवार से मारोगे तो; कङ्कै अम् चॆन्नियानुम्–गंगा को अपने सुन्दर सिर पर धारण करनेवाला और; कण्णनुम्–श्रीविष्णु; कमलत्तोनुम्–कमलासन भी; कुलत्तुक्के तक्कान्–(यह राक्षस) कुल के ही योग्य है; ऎन्ऱुम्–ऐसा और; चिरियन्–क्षुद्र; ऎन्ना–ऐसा कहकर; चॆम् कैयुम् कॊट्टि–लाल हाथ पीटकर; उन्नै चिरिप्पर्–तुम पर हँसेंगे । ३१७५

एक स्त्री को, कुलीना, तपस्विनी, साध्वी को गुस्सा करके विना हिचक के तलवार से काट दो तो क्या सिर पर गंगा को धारण करनेवाला शिव, विष्णु और कमलासन तुम्हारी हँसी नहीं करेंगे ? "यह अवश्य राक्षसकुल योग्य है, अल्प है" कहते हुए तालियाँ न पीटेंगे ? । ३१७५

❀ नीरुळ दनैयुञ् जूळ्न्द नॆरुप्पुळ दनैयुम् नीण्ड
पारुळ दनैयुम् वानप् परप्पुळ दनैयुम् कालिन्
पेरुळ दनैयुम् बेराप् पॆरुम्बऴि पिडित्ति पोलाम्
पोरुळ दनैयुम् वॆन्ऱु पुहऴुळ दनैयु मुळ्ळाय् 3176

पोर् उळ तनैयुम् वॆन्ऱु–युद्ध जब तक थे तब तक; वॆन्ऱु–जीतकर; पुकऴ् उळ तनैयुम् उळ्ळाय्–यशजितने हैं सभी के पात्र; नीर् उळ तनैयुम्–जल के रहते तक; चूळ्न्त नॆरुप्पु उळ तनैयुम्–आवृत करनेवाली आग के रहते तक; नीण्ट पार् उळ तनैयुम्–विशाल भूमि के रहते तक; वानम् परप्पु उळ तनैयुम्–आकाश के विस्तार के रहते तक; कालिन् पेर्–पवन का नाम; उळ तनैयुम्–जब तक चलन में रहेगा तब तक; पेरा–अचल; पॆरुम् पऴि–बड़ा अपयश; पिटित्ति पोल् आम्–पकड़ लोगे शायद । ३१७६

युद्ध जितने थे सबमें तुमने जीत पायी । यश जो भी है उस सबके स्वामी ! जल, अनल, विशाल पृथ्वी, आकाश का विस्तार, पवन का नाम —ये जब तक होंगे, तब तक अक्षय रहनेवाली बड़ी निंदा को ग्रहण करोगे शायद ! । ३१७६

तॆळ्ळरुङ् काल केयर् शिरत्तॊडुन् दिशैक्कण् यानै
वॆळ्ळिय मरुप्पुच् चिन्द वीशिय विशयत् तॊळवाळ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वळ्ळिय मरुङ्गुल् शॆव्वाय् मादर्मेल् वॆत्त पोदु
कॊळ्ळुमो दानव् वावि नाणत्तार् कुऱैव दल्लाल् 3177

तॆळ् अरु–परखने में असाध्य; काल केयर् चिरत्तॊट्टुम्–कालकेयों के सिरों के साथ; तिचैक् कण् यानै–दिशाओं में स्थित गजों के; वॆळ्ळिय–श्वेत; मरुप्पु–दाँतों को; चिन्त–बिखेरते हुए; वीचिय–जो तुमने चलायी; विजयत्तु–विजयदायिनी; ऒळ् वाळ्–प्रकाशमय तलवार को; वळ्ळि–लता-सी; अम्–सुन्दर; मरुङ्कुल्–कमर; चॆम्मै वाय्–लाल अधरों वाली; मातर् मेल्–स्त्रियों पर; वॆत्त पोदु–जब चलाओगे तब; नाणत्ताल्–लाज से; कुऱैवतु अल्लाल्–हीन बनने के सिवा; तान्–वह; अ आवि–उन (स्त्रियों) की जानों को; कॊळ्ळुमो–हर लेगी क्या। ३१७७

तुम्हारी विजयदायी तलवार की वार से परखने में कठिन कालकेयों के सिर और दिग्गजों के श्वेत दाँत टूटकर बिखरे थे। अब उसी को तुम लता-सी सुन्दर कमर और लाल अधरों वाली स्त्री पर चलाओ तो वह शरम से अपने काम में हीन होना (चूकना) छोड़कर क्या उस स्त्री की जान हरेगी ? । ३१७७

निलत्तियल् बन्ऱु वानिन् नॆऱियन्ऱु नीदि यन्ऱु
तलत्तियल् पन्ऱु मेलोर् तरुममे लदुवु मन्ऱु
पुलत्तियन् मरबिन् वन्दु पुण्णिय मरबु पूण्डाय्
बलत्तियल् पन्ऱु मायाप् पळिहॊडु मरुहु वायो 3178

निलत्तु इयल्पु अन्ऱु–भूमि का स्वभाव नहीं; वानिन् नॆऱि अन्ऱु–स्वर्गधर्म भी नहीं; नीति अन्ऱु–नीति-सम्मत नहीं; तलत्तु–(लंका के) प्रदेश के योग्य; इयल्पु अन्ऱु–स्वभाव नहीं; मेलोर् तरुममेल्–शिष्टों का धर्म कहो तो; अतुवुम् अन्ऱु–वह भी नहीं; पुलत्तियन् मरपिन् वन्तु–पुलस्त्य-कुल में जन्म ले; पुण्णिय मरपु पूण्डाय्–पुण्य-मार्ग अवलंबन किया; बलत्तु इयल्पु अन्ऱु–पराक्रम की पहचान नहीं; माया–अक्षय; पळि कॊंडु–अपयश ग्रहण कर; मरुकुवायो–शोकसंतप्त रहोगे क्या। ३१७८

ऐसा काम न पृथ्वीवासी के योग्य स्वभाव का है, न व्योमलोकवासी के शिष्टों का धर्म मानो तो वह भी नहीं। पुलस्त्यकुल में जन्म लेकर पुण्य मार्ग का अवलंबन तुमने किया है। यह बलवान के लिए योग्य काम नहीं। अमिट अपयश लेकर सदा बेचैन रहोगे क्या ? । ३१७८

इन्ऱुनी यिवळै वाळा लॆऱिन्दुपो यिरामन् रन्ऱै
वॆन्ऱुमीण् डिलङ्गै मूदू रॆय्दिनै वॆदुम्बु वायो
पॊन्ऱिनळ् शीदै यॆन्ऱे पोवर्ह ळवर्दा मल्लाल्
वॆन्ऱिड मुडिया दॆन्नुम् वीरमो विळम्ब लॆन्ऱान् 3179

नी–तुम; इन्ऱु–आज; इवळै वाळाल् ऎऱिन्तु–तलवार से काटकर; पोय्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(युद्धरंग) जाकर; इरामन् तन्नै वॆन्ऱु–श्रीराम को परास्त करके; इलङ्कै मूतूर–लंका की प्राचीन नगरी; मीण्टुम् ऍय्तिनै–लौट आकर; चीतै पॊन्ऱिनळ् ऍन्ऱे–सीता मर गयी कहकर; वॆंतुम्पुवायो–संतप्तमन रहोगे; ताम् पोवर्–वे खुद चले जायेंगे; अवर्–वे; वॆन्ऱिट मुटियातु–जीत नहीं सकेंगे; ऍन्नुम् वीरमो–ऐसा वीरता का उपाय है क्या; विळम्पल्–कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ३१७९

तुम सीता को तलवार से काटो; फिर युद्ध में जाकर राम को जीतकर लंका आओ तो क्या करोगे ? 'सीता मर गयी' इसी विचार को लेकर चिंताकुल रहोगे ? या यह विचार करते हो कि सीता को मारने पर राम-लक्ष्मण स्वयं वापस चले जायँगे। नहीं तो उनको परास्त करना असंभव है ! क्या यह भी वीरोचित मार्ग है ? बताओ तो। महोदर ने इतना कहा। ३१७९

ऍन्नलु मॆडुत्त कूर्वा ळिरुनिलत् तिट्टु मीण्डु
मन्नवन् मैन्दन् ऱन्नै मार्ऱलर् वलिदिर् कॊण्ड
शिन्नमु मवर्हळ् तङ्गळ् शिरमुङ् गॊण्डन्ऱिच् चेर्हेन्
तॊन्नॆऱित् तयिलत् तोणि वळर्त्तुमि नॆन्नच् चॊन्नान् 3180

ऍन्नलुम्–कहते ही; मन्नवन्–राजा ने; ऍटुत्त कूर् वाळ्–ली हुई तलवार को; इरु निलत्तु इट्टु–विपुला पृथ्वी पर डालकर; मैन्तन् तन्नै–मेरे पुत्र को (मार); मार्ऱलर्–शत्रुओं के; वलितिर् कॊण्ट–बलात् प्राप्त; चिन्नमुम्–विजयचिह्न (उसके सिर) को; अवर्कळ् तङ्कळ् चिरमुम्–और उनके सिरों को; कॊण्टु अन्ऱि–विना हरण किये; मीण्टुम् चेर्केन्–वापस नहीं आऊँगा; तॊल् नॆऱि–प्राचीन प्रथा के अनुसार; तयिलत् तोणि वळर्त्तुमिन्–तैल पात्र में रखो; ऍन्न–ऐसा; चॊन्नान्–कहा। ३१८०

महोदर के यों कहने पर राजा रावण ने हाथ की ली हुई तलवार को नीचे पटक दिया। मेरे पुत्र का वध कर विजय के चिह्न के रूप में उसका सिर बलात् ले अपने पास रखते हैं शत्रु। उसको और उनके सिरों को लेकर वापस आऊँगा तो आऊँगा। नहीं तो लौट नहीं आऊँगा। इस लाश को पुरानी प्रथा के अनुसार तैलद्रोण में डाल रखो। ३१८०

29. पडैक् काट्चिप् पडलम् (सेना-संदर्शन पटल)

अत्तॊऴि लवरुञ् जॆय्दा रायिडै यन्नैत्तुत् तिक्कुम्
पॊत्तिय निरुदर् तानै कॊणरिय पोय तूदर्
ऒत्तन रणुहि वन्दु वणङ्गिन रिलङ्गै युन्नूर्प्
पत्तियि नमैन्द तानैक् किडमिलै पणियॆन् नॆन्ऱार् 3181

अ तॊऴिल्–वह काम; अवरुम् चॆयतार–उन्होंने किया भी; अव इटै–तब;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अत्तैत्तु तिक्कुम्–सभी दिशाओं में; पॊत्तिय–भरी रही; निशतर् तात्तै–राक्षस-सेना; कॊणरिय पोय तूतर्–लाने जो गये थे, उन दूतों ने; ऒत्ततर् अणुकि बन्तु–एक साथ पास आकर; वणङ्कित्तर्–नमस्कार करके; इलङ्कै उत् ऊर्–तुम्हारी लंका नगरी में; पत्तियिन्–श्रेणियों में; अमैन्त–रचित; तात्तैक्कु इटम् इलै–सेना के लिए स्थान नहीं; ऎन् पणि यातु–हमारी सेवा क्या है; ऎन्ऱार्–पूछा। ३१८१

उन्होंने (नौकरों ने) वह काम किया। तब वे दूत एक साथ आये, जो सभी दिशाओं में भरी रही सेना को लाने गये थे। नमस्कार करके उन्होंने निवेदन किया कि आपकी लंका नगरी में श्रेणी-बद्ध रूप में जो सेना खड़ी है, उसके लिए स्थान ही पर्याप्त नहीं। अब हमारे लिए क्या आज्ञा है ? । ३१८१

एम्बलुऱ् ऱॆऴुन्द मन्न नॆव्वऴि यॆय्दिऱ् ऱॆन्ऱान्
कूम्बलुऱ् ऱुयर्न्द कैय रॊरुवऴि कूऱ लामो
वाम्बुनऱ् परवै येऴु मिऱुदियिन् वळर्न्द दॆन्नात्
ताम्बॊडित् तॆऴुन्द तात्तैक् कुलहिड मिल्लै यॆन्ऱार् 3182

एम्पल् उऱ्ऱु–मुदित होकर; ऎऴुन्त–जो उठा; मन्नन्–उस राजा ने; ऎव्वऴि ऎय्तिऱ्ऱु–कहाँ रहती है; ऎन्ऱान्–पूछा; कूम्पल् उऱ्ऱु–जुड़कर; उयर्न्त कैयर्–जो उठे वैसे हाथों वालों ने; ऒरु वऴि कूऱल् आमो–एक स्थान निर्धारित किया जा सकता है क्या; वाम् पुनल्–लहरें जिस पर लपक चलती है उस जल के; परवै एऴुम्–सातों समुद्र; इऱुतियिन्–युगांत में; वळर्न्ततु–उमँग उठे; ऎन्ऩा–जैसे; ऎऴुन्त तात्तैक्कु–जो सेना उठ आयी है, उसके लिए; उलकु इटम् इल्लै–लोक में स्थान नहीं; ऎन्ऱार्–कहा। ३१८२

मुदित हो राजा उठा। उसने पूछा कि कहाँ आयी है सेना ? हाथ जोड़े सिर पर धरकर दूतों ने कहा, कैसे कहा जाय कि अमुक एक स्थान में है ? तरंगें जिस पर लपकती चलतीं ऐसे जल के सातों सागर युगांत में एक साथ उमँग आये हों; ऐसा निकल आयी इस सेना के लिए इस भू पर स्थान पर्याप्त नहीं है। ३१८२

मण्णुऱ नडन्द तात्तै वळर्न्दमात् तूळि मण्ड
विण्णुऱ नडक्किन् ऱारु मिदित्तन रेह मेन्मेऱ्
कण्णुऱ लरुमै काणाक् कऱ्पत्तिन् मुडिविऱ् कार्बोल्
ऎण्णुऱ लरिय शेन्नै यॆय्दिय दिलङ्गै नोक्कि 3183

मण् उऱ–भूमि पर लगी; नटन्त तात्तै–जो चली उस सेना से; वळर्न्त–उठकर फैली; मा तूळि मण्ट–बड़ा धूलि-पटल भरा, इसलिए; विण् उऱ नटक्किन्ऱारुम्–आकाशचारी भी; मितित्तनर्–पैर टेककर; एक–चले; कऱ्पत्तिन् मुटिविल्–कल्पांत के; कार् पोल्–(सात) मेघों के समान; ऎण्णुऱल् अरिय–गिनने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में असंभव; चेनै–वह सेना; कण् उऱल् अरुमै काणा–कठिनाई से देखी जाकर; इलङ्कै नोक्कि–लंका की तरफ़; मेल् मेल् ऍय्तियतु–उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। ३१८३

भूमि पर पैर रखकर चली वह सेना। पर उससे जो धूलि उठी, वह धूलि-राशियाँ आकाश में भी व्याप्त हो गयीं, तो वहाँ चलनेवालों को भी पैर टेककर चलना पड़ा। कल्पांतकाल के मेघों के समान अपार वह सेना आँखों से देखी न जा सकी। इस स्थिति में वह लंका की तरफ़ उत्तरोत्तर बढ़ती आयी। ३१८३

वाट्टऩिऩ् वयङ्ग मिऩ्ऩा मऴैयदि ऩिरुळ माट्टा
ईट्टिय मुरशि नार्प्पै यिडिप्पॆदिर् मुऴङ्ग माट्टा
मीट्टिऩि युवमै यिल्लै वेलैमीच् चॆऩ्ऱ वॆऩ्ऩिल्
तीट्टिय पडैयु मावु मियाऩैयुन् देरुञ् जॆल्ल 3184

बाळ तऩिऩ्–तलवार के समान; वयङ्क–शोभने; मऴै मिऩ्ऩा–मेघों के विद्युत् नहीं; ईट्टिय–एकत्रित; मुरचिऩ् आर्प्पै–भेरियों के नाद के; इडिप्पु–अशनि; ऍतिर् मुऴङ्क माट्टा–मुक़ाबले में शब्द नहीं करती; अऩिऩ्–उसके समान; मऴै–मेघ; इरुळ माट्टा–काले नहीं रहते; तीट्टिय–पैनाये गये हथियारों वाले; पटैयुम्–पदाति वीर; मावुम्–और अश्व; याऩैयुम्–गज; तेरुम्–रथ; चॆल्ल–चलने; वेलै मी चॆऩ्ऱ ऍऩ्ऩिल्–समुद्र पर चले तो; इऩि मीट्टु उवमै इल्लै–अब कोई और उपमा नहीं। ३१८४

वीरों की तलवारें चमक उठीं। उसके मुक़ाबले में मेघों की बिजलियाँ कुछ नहीं रह गयीं। एकत्रित भेरियों के नर्दन के आगे वज्र फट नहीं सके। मेघ भी उनके समान काले नहीं रह सके। तीक्ष्ण हथियारों के साथ पदाति वीर अश्व, गज, रथ सभी समुद्र पर चलते आये तो (सेना-सागर की उपमा क्या दी जाय?) अन्य कोई उपमा कहाँ मिले? । ३१८४

उलहिऩुक् कुलहु पोय्प्पो यॊऩ्ऱिऩॊऩ् ऱॊदुङ्ग लुऱ्ऱ
तॊलैवरुन् दाऩै मेऩ्मे लॆऴुन्ददु तॊडर्न्दु शुऱ्ऱ
निलविऩुक् किऱैयु मीऩु नीङ्गिऩ निमिर्न्दु निऩ्ऱाऩ्
अलरियु मुन्दु शॆल्लु माऱुनीत् तञ्जि यप्पाल् 3185

तॊलैवु अरु–अनगिनत; ताऩै–(वीरों की) सेना के; मेल् मेल् ऍऴुन्तु–उत्तरोत्तर बढ़कर; तॊटर्न्तु चूऱ्ऱ–साथ लगे घेरे आते; उलकिऩुक्कु उलकु पोय्–लोक से लोक जा; ऒऩ्ऱिऩ् ऒऩ्ऱु–एक में एक; ऒतुङ्कल् उऱ्ऱ–जा छिप गया; निलविऩुक्कु इऱैयुम्–राकापति व; मीऩुम्–नक्षत्र; निमिर्न्तु–ऊपर उठकर; नीङ्किऩ–हट गये; अलरियुम्–सूर्य भी; अञ्चि–डरकर; मुन्तु चॆल्लुम्–आगे बढ़ने का; आऱु नीत्तु–मार्ग छोड़कर; अप्पाल् निऩ्ऱाऩ्–दूर खड़ा रहा। ३१८५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वह अपार सेना उत्तरोत्तर बढ़ती आयी तो एक के ऊपर एक रहने वाले लोक भय से अपना-अपना स्थान छोड़कर दूसरे में छिपने लगे। राकापति और नक्षत्र भी ऊपर चलकर दूर हुए। सूर्य भी भय खाकर अपने मार्ग में आगे जाना छोड़कर एक ओर हट गया। ३१८५

मेऱ्पड विशुम्बै मुट्टि मेरुवित् विळङ्गि विण्ड
नाऱ्पॅरु वायि लूडु मिलङ्गैयूर् नडक्कुन् दानै
कार्क्करुङ् गडलै मऱ्ऱोर् कडत्तिडैक् कालन् ऱानै
शोर्प्पदु पोन्ऱदि याण्डुञ् जुमैपॉऱा दुलह मॅन्न 3186

मेल् पट–ऊपर छूते हुए; विचुम्पै मुट्टि–आकाश से टकराकर; मेरुवित् विळङ्कि–मेरु के समान रहकर; विण्ट–खुले; नाल्–चारों; पॅरु वायिल् ऊटुम्–बड़े द्वारों से; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर की तरफ़; नटक्कुम् तानै–चलती वह सेना; कालन् तानै–यम स्वयं; कार् करु कटलै–काले बड़े सागर को; उलकम् याण्टुम्–लोक कहीं भी; चुमै पॉऱातु–भार वहन नहीं कर सकता; अॅन्न–इस कारण से; मऱ्ऱोर् कटत्तिटै–दूसरे एक घड़े में; चोर्प्पतु–ढाल रहा हो; पोन्ऱतु–ऐसा लगा। ३१८६

ऊपर आकाश को स्पर्श करनेवाले और मेरुसदृश रहनेवाले चारों खुले द्वारों से लंका की तरफ़ जब सेना आयी, तब ऐसा लगा मानो यम काले बड़े सागर को, लोक की कहीं रख लेने में असमर्थता जानकर दूसरे घड़े में उड़ेल रहा हो। ३१८६

नॅरुक्कुडै वायि लूडु पुहुमॅनि नॅडिदु कालम्
इरुक्कुमित् तन्मै यॅन्ना मदिलिनुक् कुम्ब रॅय्दि
अरक्कन दिलङ्गै युऱ्ऱ वण्डङ्ग ळनैत्ति नुळ्ळ
करुक्कुल मेह मॅल्ला मॉरुवळिक् कलन्द दॅन्न 3187

नॅरुक्कु उटै–सँकरे; वायिल् ऊटु–द्वार से; पुकुम् अॅतिल्–घुसेंगे कहें तो; इ तन्मै–यह कार्य; नॅटितु कालम् इरुक्कुम्–बहुत काल तक होगा; अॅन्ना–सोचकर; अण्टङ्कळ् अनैत्तिन् उळ्ळ–सारे अण्डों में रहनेवाले; करुमेकन् कुलम् अॅल्लाम्–काले मेघकुल सभी; ओरु वळि कलन्ततु अॅन्न–एक स्थान पर एकत्र हों ऐसा; मतिलिनुक्कु–प्राचीर के; उम्पर् अॅय्ति–ऊपर जाकर; अरक्कनतु–राक्षस की; इलङ्कै उऱ्ऱ–लंका में पहुँचे। ३१८७

सँकरे द्वार से घुस जाने में बहुत समय लगेगा —ऐसा सोचकर वह सेना सारे अंडों के सभी काले मेघ एकत्र हुए हों, ऐसा प्राचीरों के ऊपर से राक्षस की लंका में पहुँची। ३१८७

अदुपॉळु दरक्कर् कोनु मणिहॉळ्को बुरत्ति नॅय्दिप्
पोदुवुर नोक्क लुऱ्ऱा नॉरुनॅऱि पोहप् पोह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विदिमुऱ काण्बॆं नॆन्नुम् वेट्कैयान् वेलै येऴुङ्
गदुमॆन वॊरुङ्गु नोक्कुम् पेदैयिऱ् कादल् कॊण्डान् 3188

अतु पॊऴुतु–उस समय; अरक्कर् कोनुम्–राक्षसराज भी; अणिकॊळ्–सौंदर्य-युक्त; कोपुरत्तिन् ऍय्ति–गोपुर (मीनार) पर जाकर; वेलै एऴुम्–सातों समुद्रों को; ऒरुङ्कु–एक साथ; कतुमॆन–शीघ्र; नोक्कुम्–देखना चाहनेवाले; पेतैयिन्–मूर्ख के समान; कातल् कॊण्टान्–इच्छा करके; पॊतु उऱ–आम रीति से; नोक्कल् उऱ्ऱान्–देखने लगा; ऒरु नॆऱि–(दृष्टि) एक मार्ग में; पोक पोक–ज्यों-ज्यों गयी; विति मुऱै–यथाक्रम; काण्पॆन्–देखूंगा; ऍन्नुम्–ऐसी; वेट्कैयान्–इच्छा करने लगा। ३१८८

तब राक्षसराज भी गोपुर (मीनार) के ऊपर गया। उसने सातों समुद्रों को एक साथ जल्दी देखना चाहनेवाले मूर्ख के समान सबको एक साथ देखना चाहा। आम तौर से आँख दौड़ाई। जब दृष्टि एक मार्ग से जा रही थी, तब उसने इच्छा की कि क्रम से देख लूँ। ३१८८

मादिर मॊऴिऱि निऱुऱु माऱॊरु तिशैमेन् मण्डि
ओदनीर् शॆल्व दनन तानैयै युणर्वु कूड
वेदवे दान्दङ् गूऱुम् पॊरुळिनै विरिक्किन् ऱार्बोल्
तूदुव रणिह डोऱुम् वरनुमुऱै काट्टिच् चॊन्नार् 3189

मातिरम् ऒऴिऱिल् निऱुऱ–एक दिशा से; माऱु ऒरु तिचै मेल्–दूसरी एक दिशा में; मण्टि–बहुलता से; ओतम् नीर्–समुद्रजल; चॆल्वतु अनन–जाता जैसी; तानैयै–सेना को; तूतुवर्–दूतों ने; अणिकळ् तोऱुम्–हर श्रेणी में; उणर्वु कूट–रावण की समझ में आये ऐसा; काट्टि–दिखाकर; वेतम्–वेद; वेतान्तम्–और वेदांत (उपनिषद्); कूऱुम् पॊरुळिनै–(जिस तत्त्व का) प्रतिपादन करते हैं उस तत्त्व को; विरिक्किन्ऱार् पोल–विवृत करते जैसे; वरन् मुऱै–यथाक्रम; चॊन्नार्–कहा। ३१८९

बहते समुद्रजल के समान एक दिशा से दूसरी दिशा को जा रही उस सेना को दूतों ने श्रेणी-श्रेणी रावण को दिखाकर खूब समझाया। वेद-वेदांत-प्रतिपादित तत्त्व का विवरण देते जैसे उन्होंने विस्तार से विवृत किया। ३१८९

शाहत् तीविनि नुऱैबवर् तानवर् शमैत्त
याहत् तिऱ्पिऱन् दियैन्दवर् तेवरै यॆल्लाम्
मोहत् तिऱ्पड मुडित्तवर् मायैयिन् मुदल्वर्
मेहत् तैत्तॊडु मॆय्यिन रिवरॆन विरित्तार् 3190

इवर्–ये; चाकत् तीविनिल्–शाकद्वीप में; उऱैपवर्–रहनेवाले हैं; तानवर् चमैत्त–दानव-रचित; याकत्तिल् पिऱन्तु–यज्ञ में जन्म लेकर; इयैन्तवर्–बने हैं; तेवरै ऍल्लाम्–सारे देवों को; मोकत्तिल् पट–मोहवश कराकर; मुटित्तवर्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समाप्त करनेवाले; मायैयिन् बुतल्वर्–माया में अगुए हैं; मेकतुतै तोटुम्–मेघस्पर्शी; मैय्यितर्–शरीर वाले; अॅन–ऐसा; विरित्तार्–विस्तार किया। ३१९०

"ये शाकद्वीपवासी हैं। दानवकृत यज्ञ से उत्पन्न इन्होंने सभी देवों को मोहमग्न करके उनका नाश किया था। माया रचने में अव्वल हैं। मेघस्पर्शी शरीर वाले हैं।" ऐसा उन्होंने एक पलटन को दिखाकर विवृत किया। ३१९०

कुशैयिन् ऱोविनि नुऱैबवर् कूऱ्ऱुक्कुम् विदिक्कुम्
वशैयुम् वन्मैयुम् वळर्प्पवर् वानाट् टुऱैवार्
इशैयुञ् जॅल्वमु मिरुक्कैयु मिळन्ददिङ् गिवराल्
विशैयन् दामॅन निऱ्पव रिवर्नॅडु विऱलोय् 3191

नॅटु विऱलोय्–अति बलवान; इवर्–ये; कुचैयिन् तीवितिन्–कुशद्वीप में; उऱैपवर्–रहनेवाले; कूऱ्ऱुक्कुम् वितिक्कुम्–यम और विधि के; वचैयुम् वन्मैयुम्–अपमान और बल को (क्रमशः); वळर्प्पवर्–बढ़ानेवाले; विचयम् ताम् अॅन–विजय की मूर्ति जैसे; निऱ्पवर्–रहनेवाले; इवराल्–इनसे ही; वानम् नाटु उऱैवार्–व्योमलोकवासी (देव); इचैयुम्–यश; चॅल्वमुम्-संपत्ति और; इरुक्कैयुम्–वासस्थान; इङ्कु–यहाँ; इळन्ततु–खो चुके। ३१९१

हे अतिबली! ये कुशद्वीपवासी हैं। ये यम का अपयश और विधि का बल बढ़ानेवाले हैं। साक्षात् विजयमूर्ति हैं। इन्हीं के कारण व्योमलोक-वासी देवों के यश, धन और वासस्थान उनसे दूर हुए। ३१९१

इलवत् तीविनि नुऱैबव रिवर्हळ् पण्डिमैयाप्
पुलवर्क् किन्दिरन् पॊन्नह रळिदरप् पॊरुदार्
निलवैच् चॅञ्जडै वैत्तवन् वरन्दर निमिर्न्दार्
उलवैक् काडुरु तीयॅन वॅहुळिपॅऱ् ऱुडयार् 3192

इवर्कळ्–ये; इलवम् तीविनिल्–शाल्मली द्वीप के; उऱैपवर्–वासी; इमैया–अपलक; पुलवर्क्कु इन्तिरन्–देवों के राजा की; पॊन् नकर्–स्वर्णनगरी (अमरावती) को; अळितर–नष्ट करके; पण्टु–पहले; पॊरुतार्–लड़े; निलवै–कलाचन्द्र को; चॅन् चटै–लाल जटा में; वैत्तवन्–जिन्होंने रखा है; वरम् तर–उन शिव के वर देने से; निमिर्न्तार्–उन्नतसिर हुए; उलवै काटु–सूखे तरुओं के जंगल में; उरु–लगी; ती अॅन–आग के समान; वॅकुळि पॅऱ्ऱु उटैयार्–क्रोध बहुत रखनेवाले। ३१९२

ये शाल्मली द्वीप के हैं। अपलक देवों के राजा की अमरावती को युद्ध में इन्होंने मिटाया था। चंद्रशेखर शिवजी के दिये वरों से उन्नत-सिर हैं। वे सूखे तरुओं के जंगल में लगी आग के समान दारुण कोप करनेवाले हैं। ३१९२

अन्ऱिऱ् ऱोविनि नुऱैबव रिवर् पण्डै यमरर्क्
कॅन्ऱैक् कुम्मिरुन् दुऱैविड माम्वड मेरुक्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुन्ऱक् कॊण्डु पोय्क् कुरैकड लिडवऱ्क् कुलैन्दोर्
शॆन्ऱित् तन्मैयॆत् तविरु मॆन् ऱिरन्दिडत् तीर्न्दोर् 3193

इवर्–ये; अन्ऱिल् तीवितिल्–क्रौंच द्वीप में; उऱैपवर्–रहनेवाले; पण्टै अमरर्क्कु–प्राचीन देवों का; ऍन्ऱैक्कुम् इरुन्तु–हमेशा से; उऱैविटम् आम्–जो वासस्थान है; वट मेरु कुन्ऱै–उस उत्तरी मेरु पर्वत को; कॊण्टु पोय्–ले जाकर; कुरै कटल्–शब्दायमान सागर में; इट–डालने लगे तो; अऱ कुलैन्तोर्–बहुत अस्त-व्यस्त हो; चॆन्ऱु–जाकर; इ तन्मैयै–इस कार्य को; तविरुम्–दूर करें; ऍन्ऱु–ऐसा; इरन्तिट–प्रार्थना करने पर; तीर्न्तोर्–उसे छोड़ गये। ३१९३

ये क्रौंचद्वीपवासी हैं। प्राचीन देवों के सदा के वासस्थान, उत्तरी मेरु पर्वत को वे उखाड़ लेकर शब्दायमान समुद्र में डालने का उपक्रम कर चुके थे। तब देवों ने अस्त-व्यस्त होकर इनसे प्रार्थना की कि यह कार्य छोड़ दीजिए—तभी जाकर उन्होंने वह कार्य छोड़ा। ३१९३

पवळक् कुन्ऱिनि ऩुऱैबवर् वॆळ्ळिपण् बऴिन्दोर्
कुवळैक् कण्णियङ् गिराक्कदक् कन्ऩियैक् कूड
अवळिऱ् ऱोन्ऱिऩ रैयिरु कोडियर् नॊय्दिन्
तिवळप् पाऱ्कडल् वऱळ्पडत् तेक्किऩर् शिलनाळ् 3194

पवळ कुन्ऱिनिल्–प्रवालपर्वत पर; उऱैपवर्–वास करनेवाले; वॆळ्ळि–शुक्र ने; पण्पु अऴिन्तु–गुण खोकर (कामुक बनकर); ओर्–एक; कुवळै कण्णि–उत्पलाक्षी; इराक्कतर् कन्ऩियै–राक्षस-कन्या से; अङ्कु कूट–वहाँ संगम किया; अवळिल् तोन्ऱिऩर्–तब उससे उत्पन्न; ऐयिरु कोटियर्–दस करोड़ के; तिवळ्–दोलायमान; अ पाल् कटल्–उस क्षीरसागर को; वऱळ् पट–सुखाकर; नॊय्तिन्–आसानी से; चिल नाळ् तेक्किऩर्–कुछ दिनों में पी चुके। ३१९४

ये प्रवालपर्वतवासी हैं। शुक्र ने अपना चरित्र खोकर एक राक्षस-कन्या से संगम किया। तब उस स्त्री से ये जनमे। वे दस करोड़ की संख्या के हैं। उन्होंने कुछ ही दिनों में लहरानेवाले क्षीरसागर को पीकर सोख दिया था। ३१९४

कन्द मादऩ मॆन्बदिक् करुङ्गडऱ् कप्पान्
मन्द मारुद मूर्वदोर् गिरियदिल् वाळ्वोर्
अन्दहा रत्तॊडुम् आलहा लत्तॊडुम् बिरन्दोर्
इन्द वाळॆयिऱ् ऱरक्करॆण् णऱिन्दिल मिऱैव 3195

इऱैव–राजा; इन्त–ये; वाळ् ऍयिऱु–तीक्ष्ण-दंतुले; अरक्कर्–राक्षस; इ करु कटऱ्कु अप्पाल्–इस काले सागर के उस पार; कन्त मातऩम् ऍन्पतु–गंधमादन नामक; मन्त मारुतम्–मन्द-मारुत; ऊर्वतु–जिस पर बहता है; ओर् किरि अतिल् वाळ्वार्–उस गिरि पर रहनेवाले; अन्तकारत्तॊटुम्–अन्धकार और;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आलकालत्तोटुम्–हलाहल (के रंग) के साथ; पिऱन्तोर्–पैदा हुए; अॅण् अऱिन्तिलम्–(कितने हैं) संख्या हम नहीं जानते। ३१९५

हे राजन् ! ये खड्गदंत राक्षस सातों काले समुद्रों के उस पार के मंदमारुत (मलयपवन) युक्त गंधमादन पर्वत पर वास करनेवाले हैं। उनके रंग की दृष्टि से वे अन्धकार व हलाहल के सहोदर हैं। उनकी संख्या हम नहीं जानते। ३१९५

मलय मॅऩ्बदु पॊदियमा मलैयदिऩ् मऱवोर्
निलय मऩ्ऩदु शाहरत् तीविडै निऱ्कुङ्
गुलैयु मिव्वुल हॅऩक्कॊण्डु नाऩ्मुहऩ् कूऱि
उलैवि लीरिदि लुऱैयुमॅऩ् ऱिरन्दिड वुऱैन्दार् 3196

मलैयम् ऍऩ्पतु–मलय जो है वह; पॊतिय मा मलै–'पॊदिय' का बड़ा पर्वत है; अतिल्–उस पर के; मऱवोर्–वीर; निलयम्–(इनका) वासस्थान; अऩ्ऩतु–वह; चाकरम् तीवु इटै निऱ्कुम्–सागर-मध्य द्वीपों में रहता है; इव् उलकु–यह लोक; कुलैयुम्–मिट जायगा; ऍऩ कॊण्टु–ऐसा सोचकर; नाऩ्मुकऩ्–चतुर्मुख ने; उलैवु इलीर्–अमर लोगो; इतिल् उऱैयुम्–इसमें रहो; ऍऩऱु कूऱि–ऐसा कहकर; इरन्तिट–प्रार्थना की; उऱैन्तार्–वे वहाँ रहने लगे। ३१९६

इन वीरों का जो 'पॊदिय' नाम के मलयपर्वत में पैदा हुए थे, वासस्थान सागरमध्य द्वीप है। 'इनके वास से भूमि नष्ट हो जायगी', ऐसा सोचकर ब्रह्मा ने उनसे प्रार्थना की थी कि हे अमर लोगो ! तुम यहाँ रहो। उनकी प्रार्थना मानकर ये वहाँ रहने लगे थे। ३१९६

मुऱ्क रक्कैयर् मूविलै वेलिऩर् मुशुण्डि
शक्क रत्तिऩर् शाबत्त रॅऩनिऩ्ऱ तलैवर्
नक्क रक्कड नालॊरु मूऩ्ऱुक्कु नादर्
पुक्क रप्पॅरुन् दीविडै युऱैबवर् पुहळोय् 3197

पुकळोय्–यशस्वी; मुऱ्करम् कैयर्–मुद्गरहस्त हैं; मू इलै वेलिऩर्–त्रिशूली हैं; मुचुण्टि चक्करत्तिऩर्–'मुशुण्डी' और चक्र रखनेवाले हैं; चापत्तर्–धनु के धारक हैं; ऍऩ निऩ्ऱ–ऐसे जो हैं; तलैवर्–सरदार हैं; नक्करम् कटल्–नक्र जिनमें रहते हैं ऐसे समुद्र; नाल् ऒरु मूऩ्ऱुक्कु–चार और तीन (सात) के; नातर्–स्वामी हैं; पुक्करम् पॅरुम् तीवु–पुष्कर नामक द्वीप में; इटै उऱैपवर्–वास करने वाले। ३१९७

हे यशस्वी ! ये मुद्गरहस्त हैं ! त्रिशूलधारी हैं। 'मुशुंडी' और चक्र के रखनेवाले हैं। धनुर्हस्त हैं। नक्रों के वासस्थान सातों सागरों के स्वामी हैं। पुष्करद्वीपवासी हैं। ३१९७

मऱलि यैप्पण्डु तम्बॅरुन् दाय्शॊल वलियाऱ्
पुऱनि लैप्पॅरुञ् जक्कर माल्वरैप् पॊरुप्पिऩ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विऱल्हैं डच्चिऱै यिट्टय तिरन्दिड विट्टोर्
इऱलि यप्पॅरुन् दोविडै युऱैबव रिवर्हळ् 3198

इवर्कळ्–ये; इऱलि अ पॅरु तीविटै–'इऱलि' नामक उस बड़े द्वीप में; उऱैपवर्–रहनेवाले हैं; पण्टु–पहले; तम्–अपनी; पॅरु ताय् चॊल–आदरणीय माता के कहने से; पुऱम् निलै–(सातों लोकों के) उस पार रहनेवाली; पॅरु चक्करम् माल् वरै पॊरुप्पित्–बड़ी चक्रवालगिरि पर; वलियाल्–बल से; मऱलियै–यम को; विऱल् कॆट–निर्बल बनाकर; चिऱै इट्टु–कारा में बन्द करके; अयन् इरन्तिट–ब्रह्मा के प्रार्थना करने पर; विट्टोर्–छोड़नेवाले हैं ये। ३१९८

ये 'इऱलि' (प्लक्ष !) नाम के बड़े द्वीप के वासी हैं। पहले अपनी मान्य माता की आज्ञा से इन्होंने यम को निर्बल बनाकर लोकों के उस पार के चक्रवाल पर्वत पर बंदी बनाकर रखा था। फिर ब्रह्मा के याचना करने पर उसे छुटकारा दिया। ३१९८

वेदा ळक्करत् तिवर्पण्डु पुवियिडम् विरिवु
पोदा दुन्दमक् कॆळ्वहै यायनिन्ऱ पुवनम्
पादा ळत्तुऱै वीरॆन नान्मुहन् पणिप्प
नादा पुक्किरुन् दुनक्कन्बि नालिव णडैन्दार् 3199

नाता–नाथ; वेताळम् करत्तु–'वेताल', पिशाच के-से हाथों वाले; इवर्–ये; पण्टु–पहले; पुवि इटम्–भूलोक; उन् तमक्कु विरिव पोतातु–तुम्हारे (रहने के) लिए विस्तार में पर्याप्त नहीं; एळु वकैयाय् निन्ऱ पुवनम्–सप्तविध (अधो) लोकों में एक; पाताळत्तु उऱैवीर्–पाताल में रहो; ऍन–ऐसा; नान्मुकन्–चतुर्मुख के; पणिप्प–आज्ञा देने पर; पुक्किरुन्तु–प्रवेश करके; उनक्कु अन्पिनाल्–आप पर प्रेम के कारण; इवण् नटन्तार्–यहाँ चलकर आये हैं। ३१९९

ये, जिनके हाथ वेताल, पिशाच के हाथों के समान हैं, पाताल में रहनेवाले हैं। वहाँ वे इसलिए रहते हैं कि ब्रह्मा ने उनसे कहा था कि तुम लोग सातों (अधो-)लोकों में एक पाताल में रहो, क्योंकि उन्हें डर था कि यह भूमि उनके रहने योग्य बिस्तार नहीं रखती। अब वे आपके प्रति प्रेम के कारण यहाँ चलकर आये हैं। ३१९९

निरुदि तन्कुलप् पुदल्वरनिन् कुलत्तुक्कु नेरे
परुदि तेवर्हट् कॆनत्तक्क पण्बिनर् पानक्
कुरुदि पॆऱ्ऱिल रेर्कड लेळैयुङ् गुडिप्पार्
इरुणि ऱत्तव रॊरुत्तरेळ् मलैयैयु मॆडप्पार् 3200

निरुति तन् कुलम् पुतलवर्–(ये) 'निर्ऋति' के कुल में आयी संतान हैं; निन् कुलत्तुक्कु नेर्–तुम्हारे कुल के मुक़ाबले के हैं; तेवर्कट्कु–देवों में; परुति ऍन तक्क–सूर्य कहने योग्य; पण्पिनर्–गुण वाले हैं; पानम्–पेय; कुरुति–रक्त; पॆऱ्ऱिलरेल्–न पा सकें तो; कटल् एळैपुम्–सातों समुद्रों को; कुटिप्पार्–पी लेंगे;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरुळ् निऱ्ऱुतवर्–अन्धकारवर्ण हैं; ऑरुत्तर्–एक ही; एळ् मलैयैयुम्–सातों पर्वतों को; ऍट्टुप्पार्–उठा देगा। ३२००

ये निर्ऋति के वंश में उत्पन्न वीर हैं। वे आपके कुल का मुक़ाबला करनेवाले हैं। देवों में सूर्य जैसे गुणों वाले हैं। पीने योग्य रक्त न मिले तो सातों समुद्रों को पी लेंगे। काले रंग के इनमें एक एक सात गिरियों को उठा सकेंगे ३२००

पार णैत्तवॅम् बऱ्ऱियै यऱ्बिऩार् पार्त्त
कार णत्तिऩि ऩादियाऩ् पयऩ्दपैङ् गळ्ळलोर्
पूर णत्तडऩ् दिशैतोऱुम् मिऩ्दिरऩ् पुलरा
वार णत्तिऩै निऱुत्तियै शूडिऩर् वाहै 3201

पार् अणैत्त–भूमि को जिन्होंने गले लगा लिया था उन; वॅम् पऱ्ऱियै–आकर्षक वराह को; अऱ्पिऩाल्–प्रेम से; पार्त्त कारणत्तिऩिऩ्–(भूदेवी ने) देखा, उस कारण से; आतियाऩ् पयऩ्त–आदिदेव से जनित; पचुमै कळ्ळलोर्–चोखे स्वर्ण की बनी पायलधारी है; पूरणम्–पूर्ण; तटम् तिचै तोऱुम्–विशाल दिशाओं में; पुलरा–मद जिनका सूखा नहीं है (ताजा है); वारणत्तिऩै–अपने उन गजों को; निऱुत्ति–रोककर; वाकै चूटिऩर्–विजयमाला पहन लेनेवाले; इऩ्तिरऩ् वाकै चूटिऩर्–इन्द्र को भी जीतकर विजयमाला पहन ली थी। ३२०१

श्रीमन्नारायण ने वराहावतार लेकर भूदेवी का रक्षण किया था। तब उन्होंने देवी का आलिंगन किया। भूदेवी ने उस सुन्दर रूप को प्रेम की दृष्टि से देखा। उसके फलस्वरूप ये वीर पैदा हुए। इन वीर घंटे-धारी वीरों ने सारी विशाल दिशाओं को जीता था, वहाँ अपने सदा बहनेवाले मदनीरयुक्त गजों को स्थापित किया था और इन्द्र को भी जीत कर 'वाहै' (जयमाला) पहन ली थी। ३२०१

मऱक्कण् वॅऱ्ऱिऩ मलैयॅऩ बिऩ्निऩ्ऱ वयवर्
इऱक्कङ् गीळिलाप् पादलत् तुऱैहिऩ्ऱ विहलोर्
अऱक्कण् तुऱ्ऱिल ऩायिरम् बणऩ्दलै यऩऩ्दऩ्
उऱक्कऩ् दीर्ऩ्दऩ ऩुऱैहिऩ्ऱ दिवर्ऩडऩ् दोऱुक्क 3202

मऱम् कण्–क्रूर आँखों और; वॅम् चितम्–भयंकर क्रोध के साथ; मलै ऍऩ निऩ्ऱ–पर्वत के समान जो रहते हैं; इ वयवर्–ये वीर; इऱक्कम् कीळ् इला–जिससे नीचे कुछ नहीं ऐसे; पातलत्तु उऱैकिऩ्ऱ–पाताल में रहनेवाले; इकलोर्–वैरी हैं; इवर्–ये; उऱैकिऩ्ऱतु–जहाँ रहते हैं वहाँ; नटऩ्तु ऑऱुक्क–चल-फिर कर कष्ट देते हैं, इसलिए; आयिरम् पणम् तलै–सहस्रफणी; अऩऩ्तऩ्–अनंतनाग को; उऱक्कम् तीर्ऩ्तऩऩ्–निद्रा छोड़नी पड़ी; अऱ–बिलकुल; कण् तुऱ्चिलऩ्–आँखें मूँदी ही नहीं। ३२०२

ये, जो खड़े हैं, क्रूर आँखों और भयानक क्रोध के साथ पर्वतों के समान, पाताल में रहनेवाले द्वेषपूर्ण वीर हैं। इनके आने-जाने से सहस्रफणी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनंत को निद्रा त्यागना पड़ा और उसकी आँखें बिलकुल झपती ही नहीं। ३२०२

काळि पॅप्पण्डु कण्णुदल् काट्टिय कालै
मूळ मुऱ्ऱिय शिनक्कॊडुन् दीयिडै मुळैत्तोर्
कूळि हट्कुनल् लुडन्पिऱन् दार्पॅरुङ् गुळुवाय्
वाळि मैक्कवुम् वाळॅयि ऱिमैक्कवुम् वरुवार् 3203

पण्टु–पहले; कण्णुतल्–भालनेत्र शिवजी ने; काळियै–कालीदेवी को; काट्टिय कालै–(ऊर्ध्व-तांडव नृत्य) दिखाया तब; मूळ मुऱ्ऱिय–उठाकर जो बढ़ा; चिनम्–उस क्रोध रूपी; कॊट्टु ती इटै–भयानक अग्नि से; मुळैत्तोर्–आविर्भूत हुए; कूळिकट्कु–पिशाचों के; नल्–अच्छे; उटन् पिऱन्दार्–सहोदर (-सम) हैं; वाळ् इमैक्कवुम्–तलवार चमकाते हुए; वाळ् ऍयिऱु–खड्गदंत; इमैक्कवुम्–चमकाते हुए; पॅरुकुळुवाय्–बड़ी भीड़ में; वरुवार्–आनेवाले हैं। ३२०३

एक बार भालनेत्र शिवजी ने कालिकादेवी को अपने ऊर्ध्वतांडव-नृत्य दिखाया था। तब उनकी प्रवृद्ध क्रोधाग्नि से उत्पन्न थे ये वीर ! पिशाचों के सहोदर ! तलवारें और अपने खड्ग-सम वक्र दाँत चमकाते हुए वे बड़ी भीड़ बाँधकर आनेवाले हैं। ३२०३

पावन् दोन्ऱिय कालमे तोन्ऱिय पळैयोर्
तीवन् दोन्ऱिय मुळैत्तुणै यॅन्नत्तॅऱु कण्णर्
कोवन् दोन्ऱिडिल् तायॅयु मुयिरुणुङ् गॊडियोर्
शावन् दोन्ऱिड वडतिशै मेल्वन्दु शार्वार् 3204

चावम् तोन्ऱिट–चाप का प्रदर्शन करते हुए; वट तिचै मेल् वन्तु–उत्तरी दिशा में आकर; चार्वार्–जो रहते हैं ये; पावम् तोन्ऱिय कालमे–पाप के जन्म के काल में ही; तोन्ऱिय–उदित; पळैयोर्–प्राचीन लोग हैं; तीवम् तोन्ऱिय–दीप जिनमें दिखें; तुणै मुळै ऍन्न–ऐसी गुहा के जोड़े के समान; तॅऱु कण्णर्–भयोत्पादक आँखों वाले हैं; कोवम् तोन्ऱिटिल्–कोप आया तो; तायॅयुम् उयिर् उणुम्–माँ के भी प्राण अशन करनेवाले; कॊटियोर्–क्रूर लोग हैं। ३२०४

ये जो चापहस्त वीर उत्तर दिशा में आ ठहरे हैं, तभी पैदा हुए प्राचीन लोग हैं जब पाप पैदा हुआ था। आँखें देखिए, दीपसहित गुफाओं के जोड़े के समान लगती हैं। कोप उठा तो माता के भी प्राण पीनेवाले निर्दय हैं ये वीर ! । ३२०४

शीऱ्ऱ माहिय वॅम्मुह नुलहॅलान् दीप्पान्
एऱ्ऱ मानुदल् विळियिडैत् तोन्ऱिन्न रिवराल्
कूऱ्ऱ माहिय कॊम्बिनम् बालुडैक् कॊडुमै
ऊऱ्ऱ माहप्पण् डुदित्तव रॅन्बव रुवराल् 3205

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इवर्–ये; चीऱ्ऱम् आकिय–क्रुद्ध; ऐमुकन्–पंचमुख शिव की; उलकु अँलाम् तीप्पान्–तीनों लोकों को जलाने हेतु; एऱ्ऱ–अपनायी; मा नुतल् विऴि इटै–बड़ी, भाल की आँख से; तोन्ऱितर्–उदित हैं; उवर्–उधर जो हैं; ऐम्पाल् उटै–केश वाली; कूऱ्ऱम् आकिय–यम-सी; कौम्पिन्–एक स्त्री से; कोटुमै ऊऱ्ऱम् आक–निर्दयता की (आधार) लकड़ी के रूप में; पण्टु उतित्तवर्–पहले पैदा हुए; अँन्पवर्–कहे जाते हैं। ३२०५

ये, जो इधर हैं, पंचमुख शिवजी की भाल की बड़ी आँख से प्रगट हुए जिसको कि उन्होंने त्रिपुर जलाने के लिए क्रुद्ध होकर रच लिया था। उधर वे एक ऐसी स्त्री के उदर से पैदा हुए जो केशवाले यम-सी थी। ३२०५

कालन् मार्बुऴैच् चिवन्कऴल् पडवन्ऱु कान्ऱु
वेलै येयन्न कुरुदियिल् तोन्ऱिय वीरर्
शूल मेन्दिमुन् निन्ऱवर् रिन्निन्ऱु तौहैयार्
आल कालत्ति नमिऴ्दिन्मुन् पिऱन्दपो ररक्कर् 3206

चूलम् एन्ति–शूल ले; मुन् निन्ऱवर्–सामने जो खड़े हैं वे; कालन् मार्पु उऴै–यम की छाती पर; चिवन् कऴल् पट–शिव के चरण के प्रहार करते वक्त; अन्ऱु–तब; कान्ऱु–(उस छाती ने) जो वमन किया; वेलै अन्न–उस समुद्र के समान; कुरुतियिल्–रक्त में; तोन्ऱिय वीरर्–उदित वीर हैं; इ निन्ऱ तौकैयार्–यहाँ जो खड़े हैं वह समूह; आल कालत्तिन्–हलाहल से; अमिऴ्तिन् मुन्–और अमृत से पहले; पिऱन्त–जनमे; पोर् अरक्कर्–योद्धा राक्षस हैं। ३२०६

उधर जो शूल लिये खड़े हैं, वे यम के उस समुद्र-सम रक्त से पैदा हुए जो उसने तब वमन किया था, जब शिवजी ने मार्कण्डेय को बचाने के लिए उसके वक्ष पर लात मारी थी। इधर जो बड़ी भीड़ बाँधे खड़े हैं, वे हलाहल और अमृत से पहले पैदा हुए योद्धा राक्षस हैं। ३२०६

वडवैत् तीयिनिल् वाशुहि कान्ऱमा कडुवै
इडवत् तीयिडै यॅऴुन्दव रिवर्हण् मऴैयैत्
तडवत् तीयॅन निमिर्न्दकुञ् जियरुवर् तनित्तेर्
कडवत् तीन्दवॅम् बुरत्तिडैत् तोन्ऱिय कऴलोर् 3207

इवर्–ये; वाचुकि कान्ऱ–वासुकी ने जो उगला; मा कटुवै–उस भीषण विष को; वटवै तीयिनिल् इट–बड़वाग्नि में डाला गया तब; अ ती इटै–उस अग्नि में; अँऴुन्तवर्–प्रकट हुए; कणम् मऴैयै–समूहगत मेघों को; तटव–स्पर्श करते हुए; ती अँन–अग्नि के समान; निमिर्न्त–उन्नत; कुञ्चियर्–केश वाले; उवर–वे; तनि तेर्–अनुपम रथ को; कटव–(ब्रह्मा के सारथी के रूप में) चलाते; तीन्त–(शिव द्वारा) जलाये गये; वॅम् पुरत्तिटै–भयंकर त्रिपुर में; तोन्ऱिय–प्रगट; कऴलोर्–पायलधारी हैं। ३२०७

जब समुद्रमंथन हुआ तब वासुकी ने बड़ा भयंकर विष वमन किया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

था न ! उसको जब बड़वाग्नि में डाला गया, तब जो उस विष से पैदा हुए वे हैं ये ! जब शिवजी ने ब्रह्मा द्वारा चालित रथ पर जाकर त्रिपुर जलाया, तब उस जलते त्रिपुर से जो पैदा हुए वे मेघस्पर्शी केशों वाले वीर उधर खड़े हैं, देखें । ३२०७

इऩैय रिऩ्ऩव ऱॆऩ्बदो रळविल रय
निऩैय बुङ्गुऱित् तुऱैक्कवु मऱिदिवर् निऱैन्द
विऩैय मुम्बॆरु वरङ्गळुन् दवङ्गळुम् विळम्बिऩ्
अऩैय पेरुह मायिरत् तळविऩु मडङ्गा 3208

ऐय–प्रभु; इऩैयवर्–इतने; इऩ्ऩर्–कौन; ऎऩ्पतु ओर् अळवु इलर्–कहें इसकी कोई गिनती नहीं; इवर्–इनके सम्बन्ध में; निऩैयवुम्–सोचना; कुऱित्तु उरैक्कवुम्–और स्पष्ट कहना; अरितु–कठिन है; इवर्–इनमें; निऱैन्त विऩैयमुम्–भरी वंचनाएँ; पॆरु वरङ्कळुम्–महान वर और; तवङ्कळुम्–तप; विळम्पिऩ्–कहना हो तो; अऩैय–वैसे; पेर् उकम् आयिरत्तु–हजार बड़े युगों के; अळविऩुम्–परिमाण में भी; अटङ्का–पूरा नहीं हो सकेंगे । ३२०८

प्रभु ! ऐसे वीर कितने, कैसे, कौन —इन सबका कोई हिसाब ही नहीं ! इनके संबंध में सोचना या स्पष्ट विवरण देना कठिन है । इनकी वंचनाएँ, इनसे प्राप्त महान वर, इनके तप आदि कहना चाहें तो हज़ार बड़े युग भी पर्याप्त नहीं हो सकेंगे । ३२०८

ऒरुवरे शॆऩ्ऱवु वुऱुदिऱर् कुरङ्गैयु मुरवोर्
इरुव ऱॆऩ्ऱवर् दम्मैयु मॊरुहैक्कॊण् डॆऱ्ऱि
वरुवर् मऱ्ऱिऩिप् पहर्वदॆऩ् वाऩवर्क् करिय
तिरुव वॆऩ्ऱनर् तूदुव रिरावणऩ् शॆप्पुम् 3209

वाऩवर्क्कु अरिय–देवदुर्लभ; तिरुव–श्रीमान; ऒरुवरे–एक ही; चॆऩ्ऱु–जाकर; अव्–उस; उऱु तिऱल् कुरङ्कैयुम्–अति शक्तिमान वानर को और; उरवोर् ऎऩ्ऱवर्–प्रतापी कहलानेवाले; इरुवर् तम्मैयुम्–दोनों को; ऒरु कॊण्टु–एक हाथ में पकड़कर; ऎऱ्ऱि वरुवर्–पीटता आयगा; मऱ्ऱु इऩि–और कुछ; पकर्वतु–कहना; ऎऩु–क्या; ऎऩ्ऱनर् तूतुवर्–कहा दूतों ने; इरावणऩ् चॆप्पुम्–रावण कहने लगा । ३२०९

हे देवदुर्लभ श्री के स्वामी ! इस सेना में एक, एक ऐसे हैं, जो अकेले जाकर उस अति बलवान वानर को और प्रतापी मान्य दोनों नरों को एक हाथ से पकड़कर पीटते हुए ले आ सकता है ! फिर क्या कहना ? दूतों ने यह कहा । तब रावण कहने लगा । ३२०९

ऎत्ति ऱत्तिदऱ् कॆण्णॆऩत् तॊहैवहुत् तियऩ्ऱ
अत्ति ऱत्तिऩै यऱैदिरॆऩ् ऱुरैशॆय वर्हळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒत्त वॆळ्ळमो रायिर मुळदॆन्न वुरॆत्तार्
पित्तर् इप्पडॆक् कॆण्शिरि दॆन्ऱुरैत्तार् पॆयर्न्दार् 3210

इतऱ्कु–इस सेना की; ऎण् ऎत्तिऱत्तु–संख्या कितनी; ऎत–ऐसा; तॊकै वकुत्तु इयन्ऱ–संग्रह करके; अ तिऱत्तिन्नै–उस संख्या को; अऱैतिर्–कहो; ऎन्ऱु–ऐसा; उरै चॆय–कहने पर; अवर्कळ्–उन दूतों ने; ऒत्त वॆळ्ळम्–बराबर 'वॆळ्ळम्'; ओर् आयिरम् उळतु–एक हज़ार की है; ऎत उरैत्तार्–ऐसा कहनेवाले; पित्तर्–पागल हैं; इ पटॆक्कु–इस सेना के लिए; ऎण् चिऱितु–संख्या की उच्चतम गिनती जो अब है वह छोटी है; ऎन्ऱुरैत्तार्–कहकर; पॆयर्न्तार्–हटकर खड़े हो गये। ३२१०

रावण ने पूछा कि इस सेना की संख्या को संग्रह करके कहो। दूतों ने कहा कि पूरे 'वॆळ्ळम्' के हज़ार हैं, ऐसा कहनेवाले पागल समझे जायँगे, क्योंकि संख्या में उच्चतम गिनती जो है वह इसके लिए कम है, अपर्याप्त है। कहकर वे अलग जा खड़े हुए। ३२१०

पडैप्पॆ रुङ्गुलत् तलैवरैक् कॊणरुदि रॆन्बाल्
किडैत्तु नानवर्क् कुऱ्ऱुळ पॊरुळॆलाङ् गिळत्ति
अडैत्त नल्लुरै विळम्बिन्न वळवळा यमैवुऱ्
ऱुडैत्त पूशनै वरत्मुरै यियऱ्ऱवॆन् ऱुरैत्तान् 3211

नान् किटैत्तु–मैं पास रहकर; अवर्क्कु उऱ्ऱ उळ–उन्हें मिले; पॊरुळ् ऎलाम्–विषय सब; किळत्ति–बताकर; अटैत्त–युक्त; नल् उरै–शिष्ट वचन; विळम्पिन्न्–कहकर; अमैवुऱ्ऱ–निश्चितता के साथ; अळवळाय्–संभाषण करके; उटैत्त पूचनै–योग्य सत्कार; वरत् मुरै इयऱ्ऱ–यथाक्रम करने; पटै पॆरु कुलम् तलैवरै–बड़ी संख्या में रहनेवाले सेनापतियों को; ऎन् पाल्–मेरे पास; कॊणरुतिर्–लाओ; ऎन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा कहा। ३२११

रावण ने उनसे कहा। मैं उन्हें अपने पास रखकर उनको होनेवाली सभी बातें बताना चाहता हूँ। निश्चितता के साथ शिष्ट वचन कहकर उनसे संभाषण करने की मेरी इच्छा होती है। और भी यथोचित सत्कार यथाक्रम करने की कामना रखता हूँ। इसलिए तुम लोग जाकर बड़े सेनानायकों के समूह को मेरे पास ले आओ। ३२११

तूदर् कूऱिडत् तिशैतॊऱुन् दिशैतॊऱुन् दॊडर्न्दार्
ओद वेलैयि नायह रॆवरुम्वन् दुऱ्ऱार्
पोदु तूवित्तर् वणङ्गिन्न रिरावणत् पॊलन्ऱाळ्
मोदु मोलियित् पेरॊलि वानित्तै मुट्ट 3212

तूतर्–दूतों के; कूऱिट–कहने पर; ओतम् वेलैयित्–उमगते सागर-सम विशाल; नायकर् ऎवरुम्–सेनानायक सभी; तिचै तॊऱुम् तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; तॊटर्न्तार्–श्रेणीबद्ध हो; वन्तु उऱ्ऱार्–आ पहुँचे; इरावणत् पॊलम् ताळ्–रावण के मनोरम चरणों पर; पोतु तूवित्तर्–पुष्प बिखेरकर; मोतुम् मोलियित्–टकराने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाले किरीटों का; पेर् ऒलि–बड़ा शब्द; वानिनै मुट्ट–आकाश से टकराए, ऐसा; वणङ्किनर्–विनत हुए। ३२१२

दूतों ने जाकर सेनानायकों से रावण की इच्छा बतायी। उमगते सागर के समान विशाल सेनानायकों के समूह पंक्तियों में सभी दिशाओं से आये और रावण के पास पहुँचे। उन्होंने रावण के आकर्षक चरणों में पुष्प बरसाये और नमस्कार किया। तब मुकुटों की टकराहट से जो बड़ी ध्वनि उठी, वह आकाश से जा टकरायी। ३२१२

अनैय रियावरु मरुहुशॆन् ऱडिमुऱै वणङ्गि
विनैय मेविन रिनिदिनङ् गिरुन्दोर् वेलं
निनैयुम् नल्वर वाहनुम् वरवॆन निरम्बि
मनैयु मक्कळुम् वलियरे यॆन्ऱनन् मऱवोन् 3213

अनैयर् यावरुम्–वे सभी; अरुकु चॆन्ऱु–पास जाकर; अटि मुऱै वणङ्कि–चरणों में अपनी-अपनी बारी में नमस्कार करके; विनैयम् मेविनर्–विनय के साथ रहकर; अङ्कु–वहाँ; इनितिन् इरुन्ततु–सुख से रहे; ओर् वेलै–तब; मऱवोन्–पराक्रमी रावण ने; नुम् वरवु–तुम्हारा आगमन; निनैयुम्–मेरा हित सोचनेवाला; नल् वरवु आक–शुभ आगमन हो; ऎन्ऱ–कहकर; निरम्पि–मन तृप्ति से भरकर; मनैयुम् मक्कळुम्–पत्नियाँ और संतानें; वलियरे–सकुशल हैं क्या; ऎन्ऱनन्–पूछा। ३२१३

वे सब जब रावण के पास जाकर चरणों में एक-एक करके क्रम से नमस्कार करके सुख से रहे, तब रावण ने स्वागत के वचन कहे। हे वीरो! मेरे हितैषी तुम लोगों का आगमन शुभ हो! फिर सच्चे तृप्त मन के साथ प्रश्न किया कि क्या तुम लोगों की पत्नियाँ और संतानें स्वस्थ हैं? । ३२१३

पॆरिय तिण्बुय नीयुळै तववरम् बॆरिदाल्
उरिय वेण्डिय पॊरुळॆला मुडिप्पदऱ् कॊन्ऱो
इरियल् तेवरैक् कण्डनम् बहैपिऱि दिल्लै
अरिय दॆन्नॆमक् कॆन्ऱन रवन्करुत् तऱिवार् 3214

अवन् करुत्तु–उसका आशय; अऱिवार्–समझनेवाले उन्होंने; पॆरिय–बड़े; तिण् पुयन्–सुदृढ़ कन्धों वाले आप; उळै–हैं; तवम् वरम्–तपस्या से प्राप्त वर; पॆरितु–बड़े हैं; उरिय–युक्त; वेण्टिय पॊरुळ् ऎलाम्–इच्छित मनोरथ सभी; मुटिप्पतऱ्कु–पूरा कर लेना; ऒन्ऱो–कोई (कठिन) बात है क्या; तेवरै–देवों को; इरियल् कण्टनम्–भागते देखा; पकै पिऱितु इल्लै–शत्रु दूसरा नहीं; ऎमक्कु अरियतु ऎन्–हमारे लिए कठिन क्या है; ऎन्ऱनर्–कहा। ३२१४

उसका सच्चा आशय जानकर उन्होंने उत्तर में कहा कि बड़े तथा सशक्त कंधोंवाले आप हैं! आपके तपप्राप्त महान वर हैं! फिर युक्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और इच्छित मनोरथ पूरा कर लेना कोई कठिन काम है क्या ? हमने देवों को भागते देखा है। फिर शत्रु कोई नहीं है। हमारे लिए असाध्य क्या है ? । ३२१४

माद रार्हळु मैन्दरु निन्मरुङ् गिरुन्दार्
पेदु ऱादव रिल्लैनी वरुन्दिन्नै पॅरिदुम्
यादु कारण मरुळॅन्न वन्नैयव रिशैत्तार्
शीदै कादलिऱ् पिऱन्दुळ परिशलान् दॅरित्तान् 3215

निन् मरुङ्कु इरुन्तार्–आपके पास रही; मातरार्कळुम्–स्त्रियाँ और; मैन्तरुम्–पुत्र; पेतुऱातवर् इल्लै–व्यग्र न होनेवाले नहीं हैं; नी–आप; पॅरितुम्–बहुत ही; वरुन्तिन्नै–दुःखी हुए; कारणम् यातु–कौन-सा कारण है; अरुळ्–कहने की कृपा करें; अॅन्न–ऐसा; अन्नैयवर् इचैत्तार्–उन्होंने कहा; चीतै कातलिल्–सीता के प्रेम के कारण; पिऱन्तुळ परिचु अॅलाम्–जो बीता वह सब हाल; तॅरित्तान्–बताया (रावण ने)। ३२१५

हम देखते हैं, आपके पास रही स्त्रियों और पुरुषों (पुत्र आदि) में कोई नहीं दिखता जो अशान्त नहीं हो ! आप भी बेचैन हैं ! क्या कारण है ? बताने की कृपा करें। —उन्होंने ऐसा पूछा। तब रावण ने सीता-प्रेम के फलस्वरूप जो हुआ था वह सारा हाल बता दिया। ३२१५

कुम्ब कन्नन्नॊ डिन्दिर शित्तैयुङ् गुलत्तिन्
वॅम्बु बॅञ्जिनत् तरक्करदङ् कुळुवैयुम् वॅन्ऱार्
अम्बि नाऱ्चिऱु मनिदरे नन्ऱुनम् माऱ्ऱल्
नम्ब शेन्नैयुम् वानर मेयॅन्न नक्कार् 3216

नम्प–नायक; कुम्पकन्नन्नॊटु–कुंभकर्ण के साथ; इन्तिरचित्तैयुम्–इन्द्रजित् को; कुलत्तिन्–वीरों के कुल में जनमे; वॅम्पुम्–जलनेवाले; वॅम् चिन्नत्तु अरक्कर् तम्–अति क्रुद्ध राक्षसों के; कुळुवैयुम्–दलों को; अम्पिनाल् वॅन्ऱार्–बाणों से जीतनेवाले; चिऱु मनितरे–छोटे मानव हैं क्या; नम् आऱ्ऱल् नन्ऱु–हमारा बल भी अच्छा है; चेन्नैयुम् वानरमो–सेना भी वानर की है क्या; अॅन्न नक्कार्–कहकर हँसे। ३२१६

तब वे हँसने लगे। नायक ! कुम्भकर्ण, इन्द्रजित् और राक्षसकुल के श्रेष्ठतम भयानक क्रोधी वीर —इन सबको बाणों से मारनेवाले क्या अल्प नर ही हैं ? हमारा बल भी खूब रहा ! सेना भी वानरों की है क्या ? उन्होंने हँसी की। ३२१६

उलहैच् चेडन्ऱ नुच्चिनिन् ऱॅडुक्कवन् ऱोरेळ्
मलैये वेरॊडुम् वाङ्गवन् ऱङ्गैयाल् वारि
अलैहॊळ् वेलैयैक् कुडित्तवन् ऱळॅत्तदु मलरो
डिलैहळ् कोदुमक् कुरङ्गिन्मे लेवक्कॊ लॅम्मै 3217

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऴैत्ततु–हमें बुलाना; उलकै–पृथ्वी को; चेटत् तन्–शेषनाग के; उच्चि निन्ऱु–सिर पर से; ऍटुक्क अन्ऱु–निकालने के लिए नहीं; ओर्–अनुपम; एऴ मलैयै–सप्तगिरि को; अकम् कैयाल्–हथेली से; वेरोटुम् वाङ्क अन्ऱु–जड़ से उखाड़ लेने नहीं; अलै कोळ्–तरंग-सहित; वेलैयै–सागर को; वारि कुटिक्क–उठाकर पीने के लिए; अन्ऱु–नहीं; मलरोटु इलैकळ्–पुष्प और पत्र; कोटुम्–खानेवाले; अ–उन; कुरङ्किन् मेल्–वानरों पर; ऍम्मै–हमें; एवक् कोल्–भेजने के लिए क्या। ३२१७

उन्होंने आगे पूछा कि क्या आपने इसलिए नहीं बुलाया कि हम पृथ्वी को आदिशेषनाग के सिर से उठा फेंकें ? इसलिए नहीं कि हम अपनी हथेलियों से सप्तगिरि को उखाड़ लें ? इसलिए भी नहीं कि हम समुद्र के जल को चुल्लू में भरकर पी लें ? पर क्या इसीलिए बुलाया है कि पुष्पपत्राहारी वानरों पर चढ़ जाने को प्रेरित करें ? । ३२१७

ऍन्नक् कैयॆऱिन् दिडियुरु मेऱॆन नक्कु
मिन्नुम् वॆळ्ळॆयिऱ् ऱरक्करै यङ्गैयाल् विलक्कि
वन्नि यॆन्नबवन् पुट्करत् तीवुक्कु मन्नन्
अन्न मानिडर् तम्वलि यादॆन वऱैन्दान् 3218

ऍन्न–कहकर; कै ऍऱिन्तु–ताली पीटकर; इटि उरुम् एऱु ऍन्न–अशनिराज के समान; नक्कु–हँसकर; पुट्करम् तीवुक्कु मन्नन्–पुष्कर द्वीप के राजा; वन्नि ऍन्नबवन्–वह्नि नाम के (राजा) ने; मिन्नुम्–चमकनेवाले; वॆळ् ऍयिऱु–श्वेत दाँतों वाले; अरक्करै–राक्षसों को; अम् कैयाल्–सुन्दर हाथों (के इशारे) से; विलक्कि–चुप कराके; अन्न–वैसे; मानिडर् तम् वलि–नरों का प्रताप; यातु–कैसा; ऍन्न अऱैन्तान्–ऐसा पूछा। ३२१८

ऐसा कहकर ताली पीटकर वे ठठाकर हँसने लगे, तो पुष्कर द्वीप के राजा 'वह्नि' ने उन श्वेतदंतुले राक्षसों को अपने सुन्दर हाथों के इशारे से रोका और रावण से पूछा कि ऐसे उन नरों का बल ही कैसा है ?। ३२१८

मऱ्ऱ वाशहङ् गेट्टलुम् मालिय वान्वन्
दुऱ्ऱ तन्मैयुम् मन्निदर दूऱ्ऱमु मुडनाम्
कोऱ्ऱ वानरत् तलैवर्दन् दहैमैयुम् कूऱक्
किऱ्ऱुम् केट्टिरा लॆन्ऱवन् किळत्तुवान् किळर्न्दान् 3219

मऱ्ऱु–फिर; अ वाचकम् वेट्टलुम्–वह कथन सुनते ही; मालियवान्–माल्यवान; वन्तु–आकर; उऱ्ऱ तन्मैयुम्–हुआ हाल और; मन्निदरतु–नरों का; ऊऱ्ऱमुम्–साहस; उटन् आम्–साथ रहनेवाले; कोऱ्ऱम्–विजयी; वानरर् तलैवर्तम्–वानर नायकों की; तकैमैयुम्–योग्यता; कूऱकिऱ्ऱम्–बता सकते हैं; केट्टिर्–सुनिए; ऍन्ऱु–कहकर; अवन्–वह; किळर्त्तुवान्–कहने के लिए; किळर्न्तान्–उठा। ३२१९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसका प्रश्न सुनकर माल्यवान आगे आया। उसने कहा कि हम यहाँ घटा वृत्तांत, नरों का पराक्रम, साथ रहती वानर-सेना के विजयी नायकों की योग्यता आदि समझा सकेंगे। यह कहकर वह विस्तार से कहने के लिए तैयार हो उठा। ३२१९

परिय तोळुडै विरादन्मा रीशनुम् बट्टार्
करिय माल्वरै निहर्कर तूडणर् कदिर्वेल्
तिरिशि रावर् तिरैक्कड लनपॅरुञ् जेनै
ऑरुवि लालॉरु नाळिहैप् पॉळुदिनि नुलन्दार् 3220

ऑरु विलाल्–एक ही धनु से; परिय–स्थूल; तोळ् उटै–कन्धों वाले; विरातन् मारीचनुम्–विराध और मारीच; पट्टार्–मरे; करिय–काले; माल् वरै–बड़े पर्वत; निकर्–के समान; कर तूटणर्–खर और दूषण; कतिर् वेल्–तेजोमय भाले के धारक; तिरिचिरा अवर्–त्रिशिरा नामक वे; तिरै कटल्–तरंग-सहित सागर; अन–के सदृश; पॅरु चेनै–बड़ी सेना; ऑरु नाळिकै पॉळुतिनिल्–एक घड़ी के समय में; उलर्न्तार्–मिटे। ३२२०

राम के एक ही धनु के प्रताप से स्थूलस्कन्ध विराध और मारीच मरे। काले पर्वत के समान खर और दूषण और तेजोमय भालाधारी त्रिशिरा— वे और तरंगसंकुल सागर-सम अपनी सेना के साथ एक ही घड़ी की देर में मर मिटे। ३२२०

आळि यन्ननी रऱितिरन् ऱेकड लनैत्तुम्
ऊळिक् कालॅनक् कडप्पवन् वालियॅन् बोनै
एळु कुन्ऱमु मॅडुक्कुरु मिडुक्कनै यिन्नाळ्
पाळि मार्बहम् बिळन्दुयिर् कुडित्तदोर् पहळि 3221

आळि अनन–समुद्र के समान विशाल; नीर्–तुम लोग; कटल् अनैत्तुम्–सारे सागरों को; ऊळि काल् ऍन–युगांत पवन के समान; कटप्पवन्–लाँघनेवाले; वालि ऍन्पोनै–वाली जो था उसे; अऱितिर् अन्ऱे–जानते न; एळु कुन्ऱमुम्–सातों गिरियों को; ऍटुक्कुरुम्–उठा ले सकनेवाला था; मिटुक्कनै–ऐसे उस बलवान को; इनाळ्–इस समय; ओर् पकळि–एक बाण ने; पाळि मार्पुअकम्–कठोर वक्ष प्रदेश को; पिळन्तु–चीरकर; उयिर् कुटित्ततु–प्राण पी लिये। ३२२१

तुम लोग, जिनका समूह सागर-सम बड़ा विशाल है, वाली को जानते ही हो, जो सातों समुद्रों को युगांतपवन के समान लाँघ सकता था। सातों गिरियों को उत्पाटित करने की शक्ति रखनेवाले उसके वक्ष को राम के एक बाण ने विदीर्ण करके उसके प्राण पी लिये। यह हाल का समाचार है। ३२२१

इङ्गु वन्दुनीर् विनायदॅ नॅऱितिरैप् परवै
अङ्गु वॅन्दिल दोशिऱि दऱिन्ददु मिलिरो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कङ्गै शूडितऩ् कडुञ्जिलै यॊडित्तवक् कालम्
उङ्गळ् वाऩ्शॆवि पुहुन्दिल दोमुऴङ् गोदै 3222

नीर्–तुम लोग; इङ्कु वन्तु–यहाँ आकर; विऩायतु एऩ्–पूछते क्यों; तिरै ऍरि–जिस पर तरंगे टकराती चलती हैं वह; परवै–समुद्र; अङ्कु वॆऩ्तिलतो–वहाँ (रामबाण से) जल नहीं उठा क्या; चिऱ्ऱितु अरिन्ततुम् इलिरो–कुछ जाना नहीं क्या; कङ्कै चूटि तऩ्–गंगाधर के; कटु चिलै–भीषण धनु को; ऒटित्त अ कालम्–(जिस दिन) तोड़ा गया उस दिन; मुऴङ्कु ओतै–जो उठा वह शोर; उङ्कळ् वाऩ् चॆवि–तुम्हारे बड़े कानों में; पुकुऩ्तिलतो–घुसा नहीं था क्या। ३२२२

तुम लोग इधर आकर क्या पूछते हो ? राम ने अपने बाण से समुद्र को जलाया था। तब क्या वहाँ भी समुद्र नहीं जला ? या तुमने उस पर ध्यान नहीं दिया था ? गंगाधर के धनु को जिस दिन उसने तोड़ा था, उस दिन जो तुमुल ध्वनि उठी, वह तुम्हारे बड़े कानों में नहीं घुसी क्या ? । ३२२२

आयि रम्बॆरु वॆळ्ळमुण् डिलङ्गैयि ऩळविल्
तीयिऩ् वॆय्यपो ररक्करदञ् जेऩैअच् चेऩै
पोय दन्दहऩ् पुरम्बुह निऱैन्ददु पोलाम्
एयु मुम्मैनूऩ् मार्बिऩ रॆय्दविल् लिरण्डाल् 3223

इलङ्कैयिऩ् अळविल्–लंका की सीमा में; तीयिऩ् वॆय्य–अग्नि के समान दारुण; पोर् अरक्कर् तम्–योद्धा राक्षसों की; चेऩै–सेना; आयिरम् पॆरु वॆळ्ळम्–हज़ार बड़े 'वॆळ्ळम्' की; उण्टु–रही; अ चेऩै–वह सेना; एयुम्–योग्य; मुम्मै नूल् मार्पिऩर्–त्रिसूत्री यज्ञोपवीतधारी (राम और लक्ष्मण) द्वारा; ऍयत–बाण चलाने के लिये प्रयुक्त; इरण्टु विल्लाल्–दो चापों से; अन्तकऩ् पुरम्–यमपुर; पुक पोयतु–घुस चली; निऱैन्ततु पोलाम्–वहीं भर गयी शायद। ३२२३

लंका की सीमा पर अग्नि से भी भीषण योद्धा राक्षसों की सेना, एक हज़ार 'वॆळ्ळम्' की, रहती थी। वह बड़ी सेना त्रिसूत्री यज्ञोपवीतधारी राम और लक्ष्मण के शरप्रेरक दो धनुओ के प्रताप से यमपुर में गयी और वहीं समा गयी शायद ! । ३२२३

कॊऱ्ऱ वॆञ्जिलैक् कुम्बहऩ् ननुनुङ्गळ् कोमाऩ्
पॆऱ्ऱ मक्कळुम् बिरहत्तऩ् मुदलिय पिऱरुम्
मऱ्ऱै वीररु मिन्दिर शित्तॊडु मडिन्दार्
इऱ्ऱै नाळ्वरै याऩुमऱ् ऱिवरुमे यिरुन्दोम् 3224

कॊऱ्ऱम्–विजयी; वॆम् चिलै–भयंकर धनुर्धर; कुम्पकऩ्ततुम्–कुंभकर्ण और; नुङ्कळ् कोमाऩ्–तुम लोगों के राजा के; पॆऱ्ऱ मक्कळुम्–जनित पुत्र (अतिकाय आदि) और; पिरकत्तऩ् मुतलिय पिऱरुम्–प्रहस्त आदि अन्य; मऱ्ऱै वीररुम्–अन्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीर; इन्तिर चित्तॉटुम्–इन्द्रजित् के साथ; मटिन्तार्–मर गये; इऱ्ऱै नाळ् वरै–आज दिन तक; यानुम् इरु वरुमे–मैं और दो ही; इरुन्तोम्–रह गये हैं। ३२२४

विजयी व भयंकर धनु रखनेवाला कुंभकर्ण, तुम्हारे राजा के पुत्र (अतिकाय आदि), प्रहस्त आदि, और अन्य वीर सभी इन्द्रजित् के साथ मर गये। आज तक मैं और अन्य दो ही बचे रहे हैं। ३२२४

मूलत् तानैयॅन् ऱुण्डदु मुम्मैनू ऱमैन्द
कलच् चेनैयिन् वॅळ्ळम्मऱ् ऱदऱ्कित्ऱु कुऱित्त
कालच् चॅय्हैयाल् नीर्वन्दु ळीरिनित् तक्क
शीलच् चेनैयुञ् जेनैयिन् शॅय्हैयुन् दॅरिक्किल् 3225

मूलम् तानै–मूलबल; ऍन्ऱु उण्टु–ऐसा एक है; अतु–वह; मुम्मै नूऱु अमैन्त–तीन सौ के; कूलम् चेनैयिन्–समूहों की सेना; वॅळ्ळम्–का विस्तार है; अतऱ्कु–उस सेना के लिए; इन्ऱु–आज; कुऱित्त–(युद्ध करना) निर्णीत था; कालम् चॅय्कैयाल्–काल के प्रभाव से; नीर् वन्तुळीर–तुम लोग आये हो; इत्ति–अब; तक्क चीलम् चेनैयुम्–योग्य वीरस्वभाव की सेना और; चेनैयिन् चॅय्कैयुम्–सेना का कार्य; तॅरिक्किल्–कहना हो। ३२२५

मूलबल की सेना है जिसकी संख्या तीन सौ समूहों के 'वॅळ्ळम्' की है। आज का दिन उसके युद्ध के लिए नियत था। समय का कृत्य है कि तुम लोग आ गये हो। अब योग्य वीरों की (शत्रु) सेना तथा उसका कार्य बताना हो—। ३२२५

ऑरुकु रङ्गुवन् दिलङ्गैयै मलङ्गॅरि यूट्टित्
तिरुहु वॅञ्जिनत् तक्कनै निलत्तॉडुन् देय्त्तुप्
पॉरुदु तूदुरैत् तेहिय दरक्कियर् पुलम्बक्
करुदु शेनैयाङ् गडलुमाक् कडलैयुङ् गडन्दु 3226

ऑरु कुरङ्कु वन्तु–एक वानर आकर; इलङ्कैयै–लंका को; मलङ्कु ऍरि ऊट्टि–क्षुब्ध करनेवाली आग लगाकर; अरक्कियर् पुलम्प–राक्षसियों के रोते-कलपते; तिरुकु–ऐंठे; वॅम्–भयंकर; चिनत्तु–क्रोध के; अक्कनै–अक्षयकुमार को; निलत्तॉटुम्–भूमि से; तेय्त्तु–रौंदकर; पॉरुतु–युद्ध करके; करुतु–गण्य; चेनै आम् कटलुम्–सेना रूपी सागर को (मिटाकर); तूतु उरैत्तु–संदेश का समाचार देकर; मा कटलैयुम्–बड़े सागर को भी; कटन्तु एकियतु–लाँघ कर चला गया। ३२२६

तो एक वानर लंका में आया। लंका को क्षुब्ध करते हुए आग लगायी। राक्षसियों को रुलाया। बहुत ही क्रोधी अक्षकुमार को भूमि पर डालकर रौंदा। युद्ध किया। गण्य सेना-सागर को नष्ट किया, फिर बड़े समुद्र को लाँघकर चला गया। ३२२६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्डिलीर् कॊलाङ् गडलिऩै मलैहॊण्डु कट्टि
मण्डु पोर्शॆय वाऩर रियऱ्ऱिय मार्क्कम्
उण्डु वॆळ्ळमो ऱॆऴुबदु मरुन्दॊरु नॊडियिऱ्
कॊण्डु वन्ददु मेरुविऱ् कप्पुऱङ् गुदित्तु 3227

कटलिऩै-समुद्र को; मलै कॊण्टु-पर्वतों से; कट्टि-(सेतु) बाँधकर; मण्टु पोर् वॆय्य-बड़ा युद्ध करने; वाऩरर् इयऱ्ऱिय-वानरों द्वारा बनाया गया; मार्क्कम् कण्टिलीर् कॊलाम्-मार्ग (सेतु) नहीं देखा क्या तुमने शायद; वॆळ्ळम् ओर् ऎऴुपतु-सत्तर 'वॆळ्ळम्' सेना; उण्टु-उधर है; मेरुविऱ्कु अप्पुऱम्-मेरु के उस तरफ़; कुतित्तु-झपटकर; ऒरु नॊटियिल्-एक चुटकी की देर में; मरुन्तु-औषध; कॊण्टु वन्ततु-लाया था। ३२२७

क्या तुमने उस सेतु को नहीं देखा, जिसे बड़ा युद्ध करने के लिए वानरों ने पर्वत रखकर बनाया है? उनके पास सत्तर 'वॆळ्ळम्' की सेना है। एक वानर मेरु के उस तरफ़ उछल गया और एक चुटकी की देर में ओषधि लाया। ३२२७

इदुवि यऱ्कैयॊर् शीदैयॆऩ् ऱिरुन्दवत् तियैन्दाळ्
पॊदुवि यऱ्कैदीर् कऱ्पुडैप् पत्तिऩिप् पॊरुट्टाल्
विदिवि ळैत्तदव् विल्लियर् वॆल्हनीर् वॆल्ह
मुदुमॊ ऴिप्पदञ् जॊल्लिऩॆ ऩॆऩ्ऱुरै मुडित्तान् 3228

इतु-इस युद्ध का; इयऱ्कै-होना; ओर् चीतै ऎऩ्ऱु-अनुपम सीता नाम की; इरु तवत्तु इयैन्ताळ्-बड़ी तपस्या में लीन रही; पॊतु इयऱ्कै तीर्-असाधारण; कऱ्पुटै-पातिव्रत्यशीला; पत्तिऩि-सती; पॊरुट्टाल्-के निमित्त; विति विळैत्तत्तु-विधि ने रचा है; अ विल्लियर् वॆल्क-(चाहे) वे धनुर्हस्त वीर जीतें; नीर् वॆल्क-(चाहे) तुम जीतो; मुतु मॊऴि-वृद्ध की भाषा में; पतम् चॊल्लिऩॆऩ्-जो हुआ वह बताया मैंने; ऎऩ्ऱु-ऐसा; उरै मुटित्तान्-अपनी बात समाप्त की (माल्यवान ने)। ३२२८

यह युद्ध क्योंकर हुआ? सीता नाम की बड़ी तपस्विनी, असाधारण पतिव्रता सती है। उसी को लेकर विधि ने यह युद्ध रच दिया है! चाहे वे धनुर्धर जीतें या तुम लोग ही जीतो! यह है असली हाल जिसका मैं, वृद्ध ने अपनी वाणी में वर्णन किया है! । ३२२८

वऩ्ऩि मऩ्ऩऩै नोक्किनी यिवरॆला मडिय
ऎऩ्ऩ कारण मिहल्शॆया दिरुन्ददॆऩ् ऱिशैत्तान्
पुऩ्मै नोक्किऩऩ् नाणिऩाऱ् पॊरुदिले ऩॆऩ्ऱान्
अऩ्ऩ देलिऩि यमैयुमॆङ् गडऩः(ह्) दॆऩ्ऱान् 3229

वऩ्ऩि-वहिन ने; मऩ्ऩऩै नोक्कि-राजा को देखकर; नी-आप; इवर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍलाम् मटिय–इन सबके मरते; इकल् चॅयातु–विना युद्ध किये; इरुन्ततु–रहे; ऍन्त कारणम्–क्या कारण है; ऍन्ऱु–ऐसा; इचॅत्तान्–पूछा; पुत्मै नोक्कितन्–अल्पता का विचार किया; नाणिनाल्–शरम से; पॊरुतिलेन्–युद्ध नहीं किया; ऍन्ऱान्–कहा रावण ने; अन्नतेल्–वैसा है तो; इनि–अब; ऍम् कटन्–हमारा कर्तव्य; अ.ं.तु अमैयुम्–वह युद्ध होगा; ऍन्ऱान्–कहा। ३२२९

यह सुनकर वह्नि ने रावण से पूछा कि इतने लोग मर गये हैं। यह देखते हुए आपके विना युद्ध किये चुप रह जाने का कारण क्या है? रावण ने उत्तर दिया कि शत्रु की क्षुद्रता देखी और लड़ाई की बात सोचते शरम लगी। इसलिए युद्ध करने नहीं गया। तब वह्नि ने कहा कि बात वैसी है तो अब लड़ना हमारा कर्तव्य है! । ३२२९

मूदु णर्न्द विम् मुदुमहन् कूऱिय मुयऱ्चि
शीदै यॅन्बवळ् दनैविट्टम् मनिदरैच् चेर्दल्
आदि यिन्ऱलै शॅय्दक्क दिनिच्चॅय लिळिवाल्
काद लिन्दिर शित्तैया मियाण्डिनिक् काण्डुम् 3230

मूतुणर्न्त–पुरानी बातों के ज्ञाता; इ मुतु मकन्–इस वृद्ध पुरुष से; कूऱिय मुयऱ्चि–इंगित प्रयत्न; चीतै ऍन्पवळ् तनै–सीता जो है उसको; विट्टु–छुड़ाकर; अ मनितरै–उन नरों से; चेर्तल्–मिलना; आतियिन् तलै–प्रारंभ में; चॅय् तक्कतु–करणीय था; इनि–अब; चॅयल्–करना; इळिवु–अपमानजनक होगा; कातल् इन्तिरचित्तै–प्रेम के पात्र इन्द्रजित् को; याम्–हम; याण्टु–कहाँ; इनि–आगे; काण्टुम्–देख सकेंगे। ३२३०

पुराने वृत्तांत के ज्ञाता इस वृद्ध के कहे अनुसार प्रयत्न यह होना चाहिए था कि सीता को छुड़ाकर उन नरों से संधि की जाय। पर यह आदि में ही होना चाहिए था। अब करना अपमानजनक होगा। अब हमें इंद्रजित् देखने को कहाँ मिलेगा? । ३२३०

विट्ट मायिनु मादिनै वॅञ्जमम् विरुम्बिप्
पट्ट वीररैप् पॅऱुहिलम् बॅऱुवदु पळियाल्
मुट्टि मऱ्ऱवर् कुलत्तॊडु मुडिक्कुव दल्लाल्
कट्ट मत्तॊळिल् शॅरुत्तॊळि लिनिच्चॅयुङ् गडमै 3231

मातिनै–स्त्री को; विट्टम् आयिनुम्–छोड़ भी देंगे तो; वॅम् चमम्–तुमुल युद्ध; विरुम्पि–चाहकर; पट्ट वीररै–जो मरे उन वीरों को; पॅऱुकिलम्–फिर प्राप्त नहीं करेंगे; पॅऱुवतु पळि–मिलेगा अपयश; मुट्टि–प्रयत्न करके; मऱ्ऱवर्–शत्रुओं को; कुलत्तॊटु–सकुल; मुटिक्कुवतु अल्लाल्–समाप्त करने के सिवा; अ तॊळिल्–(संधि का) वह काम; कट्टम्–कठिन है; इनि चॅयुम् कटमै–अब करने का कर्तव्य काम; चॅरु तॊळिल्–युद्ध का काम है। ३२३१

अब उस स्त्री को छोड़ भी दें तो चाव से युद्ध करके जो मरे उन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीरों को हम पुनः पा नहीं सकेंगे। जो पायँगे वह अनावश्यक अपयश ही होगा। हाँ कुछ यत्न करें और शत्रुओं को सकुल समाप्त कर दें। इसको छोड़कर संधि करना कठिन काम है। अब कर्तव्य कार्य युद्ध करना ही है!। ३२३१

अॅन्ऱॆ ऴुन्दन रिराक्कद रिरुक्कनी यामे
शॅन्ऱु मऱ्ऱवर् शिल्लुडऱ् कुरुदिनीर् तेक्कि
वॅन्ऱु मीळुदुम् वॅळ्हुदु मेन्मिड लिल्लाप्
पुन्ऱॊ ऴिऱ्कुल मादुमॅन् ऱुरॆत्तनर् पोनार् 3232

अॅन्ऱु अॅऴुन्तनन्-कहकर उठा; इराक्कतर्-राक्षस (जो साथ रहे); इ इरुक्क-यहीं रहिए; यामे चॅन्ऱु-हमीं जाकर; मऱ्ऱवर्-उन नरों के; चिल् उटल्-छोटे शरीरों के; कुरुति नीर् तेक्कि-रक्तजल पीकर; वॅन्ऱु-जीतकर; मीळुतुम्-लौट आयेंगे; वॅळ्कुतुमेल्-लज्जा करके पीछा दिखायेंगे तो; मिटल् इल्ला-बलहीनता का; पुन् तॊऴिल्-अल्प काम करनेवाले; कुलम् आतुम्-कुल के माने जायेंगे; अॅन्ऱु उरॆत्तनर्-ऐसा कहकर; पोनार्-गये। ३२३२

ऐसा कहकर वह्नि उठा। साथ रहे राक्षसों ने उससे कहा कि रहिए आप! हम जायँगे। शत्रु नरों के छोटे शरीरों का रक्त पीकर विजय के साथ वापस आयँगे। अब शरम करके लौटेंगे तो क्षुद्रकर्मी कुल के जात माने जायँगे। ऐसा कहकर वे चले गये। ३२३२

30. मूलबल वदैप् पडलम् (मूलबल-वध पटल)

वान रप्पॅरुञ् जेनैयै यानॊरु वऴिशॅन्
ऱून ऱक्कुऱैत् तुयिरुण्बॅ नीयिर्पो यॊरुङ्गे
आन मऱ्ऱव रिरुवरक् कोऱिरॆन् ऱऱैन्दान्
तान वप्पॅरुङ् गरिहळै वाट्कॊण्डु तडिन्दान् 3233

तानवर् पॅरु करिकळै-दानव रूपी बड़े गजों को; वाळ् कॊण्टु तटिम्तान्-तलवार से जिसने काटा था उस रावण ने; यान् ऒरु पऴि चॅन्ऱु-मैं एक मार्ग से जाकर; पॅरु-बड़ी; वानरर् चेनैयै-वानरों की सेना को; ऊन् अऱ कुरैतुतु-शरीर काटकर; उयिर् उण्पॅन्-प्राण खा लूंगा; नीयिर्-तुम लोग; ऒरुङ्के पोय्-मिल जाकर; मऱ्ऱवर् आन-शत्रु जो हैं; इरुवरै-उन दोनों को; कोऱिर्-मारो; अॅन्ऱु अऱैन्तान्-ऐसा कहा। ३२३३

दानव रूपी हाथियों का तलवार से विध्वंस जो कर चुका था, उस रावण ने सेनानायकों से कहा कि मैं एक मार्ग से जाकर बड़ी वानर-सेना के शरीर काटकर प्राण पी लूँगा। तुम एक साथ जाओ और दोनों शत्रु नरों को मार दो। ३२३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍऩवु रैत्तलु मॅळुन्दुतम् मिरदमे लेऱिक्
कऩैदि रैक्कडऱ् चेऩैयैक् कलन्ददु काणा
विऩैय मऱ्ऱिलै मूलमात् तानैयै विरैवो
डिऩैयर् मुऱ्चॅल वेवुहॅऩ् ऱिरावण ऩिशैत्तान् 3234

ऍऩ उरैत्तुम्–ऐसा कहते ही; ऍळुन्तु–(सेना नायक) उठे और; तम् इरतम् मेल् एऱि–अपने-अपने रथों पर सवार होकर; कऩै तिरै–शब्दायमान तरंगोंवाले; कटल् चेऩैयै–सागर-सी सेना को; कलन्ततु काणा–एकत्रित देखकर; मऱ्ऱु विऩैयम् इल्लै–अन्य कार्य नहीं; मा मूलम् तानैयै–बड़े मूल-बल की सेना को; विरैवोटु–शीघ्र; इऩैयर्–इनके; मुन् चॅल्–आगे जाय ऐसा; एवुक–कहो; ऍऩ्ऱु–ऐसा; इचैत्तान्–कहा (रावण ने)। ३२३४

लंकेश के ऐसा कहते ही वे उठे और अपने-अपने रथ पर बैठे। शब्द-तरंग-संकुल सागर-सम सेना को एकत्रित देखकर रावण ने कहा कि अब और कोई काम नहीं। हमारे मूल-बल की बड़ी सेना को इनके आगे जाने को कहो। ३२३४

एवि यप्पॅरुन् दानैयैत् तानुम्वेट् टॅळुन्दान्
तेवर् मॅय्प्पुहळ् तेय्त्तवन् शिल्लियन् देर्मेऱ्
कावन् मूवहै युलहमु मुऩिवरुङ् गलङ्गप्
पूवै वण्णत्तऩ् शेऩैमे लॊरुपुऱम् बोऩान् 3235

तेवर्–देवों के; मॅय् पुकळ्–सच्चे यश का; तेय्त्तवऩ्–मेटक; अ पॅरु तानैयै–उस बड़ी सेना को; एवि–भिजवाकर; तानुम्–खुद; वेट्टु–(युद्ध) चाहकर; ऍळुन्तान्–उठा; कावन्–अपनी रक्षा के अन्तर्गत रहनेवाले; मूवकै उलकमुम्–त्रिविध लोकों और; मुऩिवरुम्–मुनियों के; कलङ्क–डरते; चिल्लि–पहियोंदार; अम् तेर् मेल्–सुन्दर रथ पर (चढ़कर); पूवै वण्णत्तऩ्–(अतसि-) पुष्पवर्ण श्रीराम की; चेऩै मेल्–सेना पर; ऒरु पुऱम्–एक तरफ़ से; पोऩान्–(आक्रमण करने) गया। ३२३५

देवयशमेटक रावण मूलबल को भिजवाकर स्वयं युद्ध की कामना करके उठा और सुंदर पहियोंदार रथ पर आरूढ़ होकर वानर-सेना पर आक्रमण करने गया। तब उसकी रक्षा में रहे तीनों लोक और मुनिगण भयविकंपित हुए। ३२३५

ऍळह शेऩैयॅऩ् ऱियाऩैमेल् मणिमुर शॅऱ्ऱि
वळुविल् वळ्ळुवर् तुऱैतॊरुम् विळित्तलुम् वल्लैक्
कुळुवि यीण्डिय दॅऩ्बराऱ् कुवलय मुळ्दुन्
दळुवि विण्णैयुन् दिशैयैयुन् दडवुमात् तानै 3236

वळुविल्–त्रुटिहीन; वळ्ळुवर्–'वळ्ळुवर्' (ढिंढोरा पीटनेवाली जाती के)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लोगों ने; चेतै ऍऴुक-सेना उठे; ऍऩ्ऱ-कहकर; यातै मेल्-हाथी पर; मणि मुरचु-सुन्दर ढिंढोरा; ऍऱ्ऱि-पीटकर; तुऱै तोऱुम्-सभी स्थानों में; विळित्तलुम्-संदेश फैलाया तब; वल्लै-शीघ्र; कुवलयम् मुऴुतुम्-संसार भर; तऴुवि-फैलकर; विण्णैयुम्-आकाश को; तिचैयैयुम्-दिशाओं को; तटवुम्-स्पर्श करते हुए जानेवाली; मा तातै-बड़ी सेना; कुऴुवि ईण्टियतु-भीड़ लगाकर एकत्रित हुई; ऍऩ्पर्-लोग कहते थे। ३२३६

ढिंढोरा पीटनेवाली जाती के निर्दोष कार्यपटु वळ्ळुवर् लोगों ने हाथी पर ढिंढोरा चढ़ाया और 'सेना उठ चले' का संदेशा सर्वत्र फैला दिया। वह सुनकर बड़ी सेना भूमि भर व्याप्त होती हुई आकाश और दिगन्तों से लगती हुई एकत्रित हुई। ऐसा लोग कहते थे। ३२३६

अडङ्गुम् वेलैह ळण्डत्ति नहत्तहन् मलैयुम्
अडङ्गु मऩ्ऩुयि रऩैत्तुमव् वरैप्पिडै यबैबोल्
अडङ्गुमे मऱ्ऱुप् पॆरुम्बडै यरक्करद मियाक्कै
अडङ्गु मायवऩ् कुऱळुरुत् तऩ्मैयि नल्लाल् 3237

अटङ्कुम्-अंतर्निहित; वेलैकळ्-समुद्रों-सह; अण्टत्तिऩ् अकत्तु-इस अण्ड के अन्दर; अकऩ् मलैयुम्-विशाल पर्वत और; मऩ्ऩुयिर् अऩैत्तुम्-सभी नित्य जीव; अटङ्कुम्-समाये रहते हैं; मऱ्ऱुम्-और तो; अबै पोल्-उनके समान; अ वरैप्पु इटै-उस प्राचीरवलयित लंका में; पॆरुम् पटै-बड़ी सेना के; अरक्करऩ् तम् याक्कै-राक्षसों के शरीर; अटङ्कुम्-(तीनों लोक) जिसके अन्दर समाये रहते हैं उस; मायवऩ् कुऱळ् उरु-श्रीविष्णु के वामन रूप के; तऩ्मैयिल् अल्लाल्-प्रकार से नहीं तो; अटङ्कुमे-समाये रह सकेंगे क्या। ३२३७

समुद्र-समाविष्ट ब्रह्मांड के अंदर सभी विशाल पर्वत और नित्यजीव भी समाये रहते हैं। उसी प्रकार उस लंका के अंदर बड़ी राक्षस-सेना के सारे राक्षसों के शरीर समाये रहे! उस छोटी लंका में यह कैसे साध्य हुआ? वह विष्णु के वामन-रूप के अंदर सारे अण्ड के समाविष्ट रहने के प्रकार से हुआ होगा —नहीं तो कैसे? । ३२३७

अऱत्तैत् तिऩ्ऱरुङ् गरुणैयैप् परुहिवे ऱमैन्द
मऱत्तैप् पूण्डुवॆम् बावत्तै मणम्बुणर् मणाळर्
निऱत्तुक् कारऩ्ऩ नॆञ्जिऩर् नॆरुप्पुक्कु नॆरुप्पाय्प्
पुऱत्तुम् बॊङ्गिय पङ्गियर् कालऩुम् बुहळ्वार् 3238

अऱत्तै-धर्म को; तिऩ्ऱु-भोजन बनाकर; अरु करुणैयै-उत्कृष्ट करुणा को; परुकि-पीकर; वेऱु अमैन्त-(धर्म के) विरोध में रहनेवाली; मऱत्तै-क्रूरता को; पूण्टु-(आभरण के रूप में) धारण करके; वॆम् पावत्तै-भयानक पाप से; मणम् पुणर् मणाळर्-विवाह करनेवाले बरपुरुष हैं; कार् अऩ्त-मेघ के समान; निऱत्तु-रंग के; नॆञ्चिऩर्-मन वाले; नॆरुप्पुक्कु नॆरुप्पाय्-आग को आग बनकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुऱ्ऱत्तुम् पॊङ्कियऱ्–जो बाहर भी उमर आयी हो; पङ्कियर्–ऐसे केशवाले; कालत्तुम् पुकऴ्वार्–यम से भी प्रशंसित (क्रूर) हैं। ३२३८

उस सेना के वीर धर्म के भक्षण करनेवाले श्रेष्ठ थे, करुणा का पान करनेवाले थे। धर्मविरोधी क्रूरता के आभरण से भूषित, वे नृशंस पाप से विवाहित वर थे! काले मेघ-सम काले मनवाले थे। आग की आग बाहर भी प्रकट हो ऐसे केश वाले थे। स्वयं यम भी उसकी प्रशंसा करे, ऐसे (खूनी) थे। ३२३८

नीण्ड तोळ्हळाल् वेलैयैप् पुऱञ्जॆल नीक्कि
वेण्डु मीऩॊडु महरङ्गळ् वायिट्टु विऴुङ्गित्
तूण्डु वाऩुरु मेऱ्ऱिऩैच् चॆविदॊऱुन् दूक्कि
मूण्ड वाऩ्मऴै युरित्तुडुत् तुलावरु मूर्क्कर् 3239

नीण्ड तोळ्कळाल्–लम्बे हाथों से; वेलैयै–समुद्र को; पुऱम् चॆल–दूर जाय, ऐसा; नीक्कि–हटाकर; वेण्टुम् मीऩॊटु–चाही हुई मछलियों के साथ; मकरङ्कळ् मकरों को; वाय् इट्टु–मुख में डालकर; विऴुङ्कि–निगलकर; तूण्टु–(मेघ द्वारा) प्रेरित; वाऩ्–आकाश के; उरुम् एऱ्ऱिऩै–अशनिराज को; चॆवि तॊऱुम्–कानों में; तूक्कि–(आभरण के रूप में) लटकाकर; वाऩ् मूण्ट–आकाश में उठे; मऴै उरित्तु–मेघों को उधेड़कर; उट्टुत्तु–वस्त्र के रूप में पहनकर; उला वरुम्–सैर करनेवाले; मूर्क्कर्–मूर्ख हैं। ३२३९

वे मूर्ख अपने लंबे हाथों से समुद्र को हटाकर इच्छा भर मछलियों के साथ मकरों को मुख में डालकर निगल लेते। मेघ से निकले अशनिराज को कर्णभूषण के रूप में लटकाकर आकाश के मेघों को उधेड़कर वस्त्र के रूप में पहनकर सैर करनेवाले क्रूर थे। ३२३९

माल्व रैक्कुलम् बरलॆऩ मऴैक्कुलञ् जिलम्बाक्
काल्व रैप्पॆरुम् बाम्बुहॊण् डशैत्तपॆङ् गऴलार्
मेल्व रैप्पडर् कलुऴऩ्वऩ् काऱ्ऱॆऩुम् विशैयोर्
नाल्व रैक्कॊणर्न् दुडऩ्बिणित् तालऩ्ऩ नडैयार् 3240

माल् कुलम् वरै–बड़े कुलपर्वत; परल् ऎऩ–कंकड़ों के सदृश; मऴै कुलम्–मेघसमूह; चिलम्पा–पायल-सम; काल् वरै–पर्वतों के निचले प्रदेश में रहनेवाले; पॆरु पाम्पु कॊण्टु–बड़े सर्पों से; अचैत्त–बँधी हुई; पचुमै कऴलार्–विचित्र पायल-धारी हैं; मेल् वरै–आकाश की सीमा में; पटर्–उड़नेवाले; कलुऴऩ्–गरुड़ और; वल् काऱु–सशक्त पवन; ऎऩुम्–कहने योग्य; विचैयोर्–वेगवान हैं; नाल् वरै–लटकनेवाले पर्वत को; कॊणर्न्तु–लाकर; उटऩ् पिणित्ताल् अऩ्ऩ–साथ बाँधा गया हो; अऩ्ऩ नटैयार्–ऐसी चाल वाले हैं। ३२४०

उनकी पायलें बड़े कुलपर्वतों को कंकड़ों के रूप में अंदर रखकर मेघकुल के बने हुए नूपुर हैं, जो पर्वतों के निचले प्रदेश में रहनेवाले सर्पों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को रस्सी बनाकर बँधे हुए हैं। उनका वेग गरुड़ और सशक्त पवन का-सा कहा जा सकता है। लटकते मुख वाले पर्वतों के समान गजों को साथ बाँधा गया हो, ऐसी (गंभीर गज की-सी) चाल वाले हैं। ३२४०

उण्णुन् दन्मैय वून्मुऱै तप्पिडि नुडन्ने
पण्णि तिन्ऱमा लियान्नैयै वायिडुम् बशियार्
तण्णि नीर्मुऱै तप्पिडिऱ् ऱडक्कैयाऱ् ऱडवि
विण्णिन् मेहत्तै वारिवाय्प् पिऴिन्दिडुम् विडायर् 3241

उण्णुम् तन्मैय-खाने योग्य; ऊन्-मांसाहार; मुऱै तप्पिटिन्-समय पर नहीं मिला तो; उटन्ने-तुरन्त; पण्णिन् निन्ऱ-सजे-सजाये जो खड़े हैं; मालि यान्नैय-बड़े-बड़े हाथियों को; वाय् इटुम्-मुख में डाल लें; पचियार्-ऐसी भूख वाले हैं; तण् इन् नीर्-शीतल मधुर जल; मुऱै तप्पिटिन्-(मिलने का) समय चूक गया तो; तट कैयाल्-विशाल हाथ से; तटवि-टटोलकर; विण्णिन् मेकत्तै-आकाश के मेघों को; वारि-उठाकर; वाय् पिऴिन्तिटुम्-अपने मुखों में निचोड़ लें; विटायर्-ऐसी प्यास वाले हैं। ३२४१

और भी वे ऐसी भूख वाले हैं, जो समय पर मांस न मिलने पर सजे-सजाये खड़े रहनेवाले हाथियों को ही खा लेते; ऐसे प्यासे कि अगर समय पर शीतल तथा मधुर जल नहीं मिले तो हाथों से बड़े मेघों को पकड़कर अपने मुख में निचोड़ लेते। ३२४१

उऱैन्द मन्दर मुदलिय किरिहळै युरुव
ऍऱिन्दु वेन्निलै काण्बव रिन्दुवा लियाक्कै
शॊऱिन्दु तीर्वुऱु तिन्नवित्तर् मलैहळैच् चुऱ्ऱि
अऱैन्दु कऱ्ऱमात् तण्डिन्न रशनियि नार्प्पार् 3242

उऱैन्त-(भूमि पर) स्थिर रहनेवाले; मन्तरम् मुतलिय-मंदर आदि; किरिकळै-गिरियों को; उरुव ऍऱिन्तु-भेदकर चलें ऐसा चलाकर; वेल् निलै-भालों की (तीक्ष्णता की) स्थिति को; काण्पवर्-परखनेवाले हैं; इन्तुवाल्-चन्द्र से; याक्कै-शरीर को; चॊऱिन्तु-खुजलाकर; तीर्वुऱु तिन्नवित्तर्-खुजलाहट शांत करनेवाले हैं; मलैकळै-पर्वतों पर; चुऱ्ऱि अऱैन्तु-घुमा-पटकाकर; कऱ्ऱ-जो सीखी गयी; मा तण्टित्तर्-ऐसी गदा विद्या वाले हैं; अचनियिन् आर्प्पार्-अशनि के समान गरजनेवाले। ३२४२

वे अपने भालों की तीक्ष्णता को भूधरों को भेदकर चले, ऐसा फेंककर परखनेवाले हैं। खुजलाहट हो तो चंद्र द्वारा खुजलाकर उसे शांत कर लेते। गदा का अभ्यास घुमाकर पर्वतों पर पीटकर करनेवाले हैं। ३२४२

शूलम् वाङ्गिडिऱ् चुडर्मऴु वॆऱिन्दिडिऱ् चुडर्वाळ्
कोल वॆञ्जिलै पिडित्तिडिऱ् कॊऱ्ऱवेल् कॊळ्ळिन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शाल वान्तण्डु तरित्तिडिर् चक्करन् दाङ्गिन्
कालन् माल्शिवन् कुमरऩेन् ऱिवरैयुङ् गडुप्पार् 3243

चूलम् वाङ्किटिल्–शूल हाथ में लें; चुटर् मऴु–(चाहे) प्रकाशमय परशु; ऍऱिन्तिटिल्–चलायें; चुटर् वाळ्–या चमचमाती तलवार; कोलम्–आकर्षक; बॆम् चिलै–भयंकर धनु; पिटित्तिटिल्–धारण करें; कॊऱ्ऱम् वेल् कॊळ्ळिऩ्–या विजयी भाला लें; चालवान्–बहुत बड़ा; तण्टु तरित्तिटिल्–दण्ड लें; चक्करम् ताङ्किन्–या चक्रायुध को धारण करें; कालन्–यम; माल्–श्रीविष्णु; चिवन्–शिव; कुमरन्–कार्तिकेय (मुरुगन); ऍऩ्ऱ इवरैयुम्–आदि इनकी भी; कटुप्पार्–समानता करेंगे। ३२४३

वे चाहे शूल को लें, या तेजोमय परशु; चाहे चमचमाती तलवार लें या सुन्दर भयंकर धनु का व्यवहार; विजयी भाला धारण करें या बड़ी गदा; या चाहे चक्रायुध हाथ में लें —तब वे यम, विष्णु, शिव और मुरुगन (षण्मुख या कार्तिकेय का तमिऴ नाम) की भी बराबरी कर सकेंगे। ३२४३

ऑरुव रेवल्ल रोरुल हत्तिऩै वॆल्ल
इरुवर् वेण्डुव रेऴुल हत्तैयु मिरुक्कत्
तिरिव रेलुडन् तिरितरु नॆडुनिलञ् जंव्वे
वरुव रेलुडन् कडल्हळुन् दॊडर्न्दुपिन् वरुमाल् 3244

ओर् उलकत्तिऩै–एक लोक को; वॆल्ल–जीतने; ऑरुवरे वल्लर्–(उनमें) एक (एक) ही समर्थ हैं; एऴ् उलकत्तैयुम्–सातों लोकों को; इऱुक्क–मिटाने के लिए; इरुवर् वेण्टुवर्–दो ही पर्याप्त हैं; तिरिबरेल्–घूमें तो; नॆटु निलम्–बड़ी भूमि; उटन् तिरि तरुम्–उनके साथ घूमेगी; चॆव्वे वरुवरेल्–सीधे आयें तो; उटन्–साथ; कटल्कळुम्–समुद्र भी; तॊटर्न्तु–साथ लगे; पिन्वरुम्–पीछा करते आयेंगे। ३२४४

एक लोक को जीतने के लिए एक ही पर्याप्त है। सातों लोकों को मिटाना हो तो दो ही चाहिए! वे जब घूमते हैं, तब विशाल भूमि भी घूम जाय! सीधे आवें तो समुद्र साथ लगे पीछा करके आयें। ३२४४

मेह मॆत्तऩै विरिञ्जऩ्ऱ ऩण्डत्तु विरिन्द
नाह मॆत्तऩै यत्तऩै नळिर्मणित् तेर्हळ
पोह मॆत्तऩै यत्तऩै पुरवियि ऩीट्टम्
आह मॆत्तऩै यत्तऩै यवऩ्पडै यवदि 3245

विरिञ्चऩ् तऩ्–विरंचि के; अण्टत्तु–अण्ड में; बिरिन्त मेकम् ऍत्तऩै–विवृत मेघ जितने; अत्तऩै नाकम्–उतने हाथी; अत्तऩै–उतने; नळिर् मणि–शब्द करनेवाली घंटियों वाले; तेर्कळुम्–रथ; पोकम् ऍत्तऩै–भोग जितने प्रकार के; अत्तऩै–उतने; पुरवियिऩ् ईट्टम्–अश्वों के झुण्ड; आकम्–शरीर; ऍत्तऩै–जितने; अत्तऩै–उतना; अतऩ् पटै अवति–उसके पदाति वीरों का परिमाण। ३२४५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विशाल ब्रह्माण्ड में फैले हुए जितने मेघ हैं उतने हाथी थे। उतने ही क्वणनशील घंटियों-सहित रथ थे। जितने भोग के प्रकार हैं, उतने अश्व थे। शरीर जितने है, उतने पदातिक वीरों का परिमाण था। ३२४५

इत्त तत्मैय यात्तै रिवुळियॆन् रिवर्रिन्
पत्तु पल्लणम् बरुममर् रुरुप्पॊडु पलवुम्
पॊन्नु नन्नॆडु मणियुङ्गॊण् डल्लदु पुनैन्द
शित्त मुळ्ळत विल्लत मॆय्म्मुरुरुन् दॆरिन्दाल् 3246

इत्त तत्मैय-ऐसे; यात्तै-हाथी; तेर्-रथ; इवुळि-अश्व; ऎन्रु इवर्रिन्-आदि इनके; मॆय् मुरुम् तॆरिन्ताल्-शरीरों को पूर्ण रूप से जानना चाहें तो; पत्तुम्-उल्लेखनीय; पल्लणम्-ऊपर के आसन; पल उरुप्पॊटु-अनेक अंगों के साथ; मरमम्-मर्मस्थान; पॊन्नुम्-स्वर्ण और; नल् नॆटु मणियुम् कॊण्टु-श्रेष्ठ और बड़े-बड़े नगों को; अल्लतु-छोड़; चित्तम् उळ्ळत इल्लत-चित्र-चिह्नों के सहित नहीं थे। ३२४६

ऐसे गजों, रथों और अश्वों के शरीरों पर खूब दृष्टि डालेंगे तो आसन क्या, अन्य अंग क्या और मर्मस्थान क्या— सर्वत्र स्वर्ण और रत्नों का अलंकार था। उससे हीन कोई भाग नहीं दिखायी दिया। ३२४६

इप्पॆ रुम्बडॆ यॆळुन्दिरैत् तेहमे लॆळुन्द
तुप्पु नीर्त्तत तूळियिन् पडलमोत् तूर्प्पत्
तप्पिल् कार्निरन् दविर्न्ददु करिमदन् दळुव
उप्पु नीङ्गिय दोङ्गुनीर् वीङ्गॊलि युवरि 3247

इ पॆरु पटॆ-यह विशाल सेना; ऎळुन्तु इरैत्तु-उठकर शोर मचाती हुई; एक-गयी तो; ऎळुन्त-जो उठी; तुप्पु नीर्त्तत-प्रवाल-सी; तूळियिन्-लाल धूलि का; पटलम्-पटल; मी तूर्प्प-ऊपर ढँक गया, इसलिए; तप्पु इल्-अमोघ; कार्-मेघ भी; निरम् तविर्न्ततु-अपना रंग खो गये; करि-हाथियों के; मतम् तळुव-मदनीर के फैलने से; ओङ्कु नीर्-अधिक जल-पूर्ण; वीङ्कु ऒलि-और अधिक ध्वनियुक्त; उवरि-समुद्र; उप्पु नीङ्कियतु-नमक से हीन हो गया। ३२४७

इस सेना के कोलाहल के साथ उठकर चलने पर प्रवालवर्ण धूल उठी। उसका पटल सबको ढँक गया। इसलिए अमोघ काले मेघों का असली रंग दूर हो गया। गजों का मदनीर समुद्र में भर गया। इसलिए अधिक जल और शब्द से युक्त समुद्र नमकीन नहीं रह गया। ३२४७

मलैयुम् वेलैयु मरुळ पॊरुळ्हळुम् वात्तोर्
निलैयु मप्पुरत् तुलहङ्गळ् यावैयु निरम्ब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उलैवु ऱावहै युण्डुपण् डुमिळ्न्दपे रॉरुमैत्
तलैवन् वायॉत्त विलङ्गैयिन् वायिल्हळ् तरुव 3248

तरुव–(मूलबल) निकालनेवाले; इलङ्कैयिन् वायिल्कळ्–लंका के द्वार; मलैयुम्–पर्वत और; वेलैयुम्–समुद्र और; मऱ्ऱु उळ पॉरुळ्कळुम्–अन्य जो हैं वे पदार्थ; वानोर् निलैयुम्–देवों का वासस्थान और; अप्पुऱत्तु उलकङ्कळ्–दूर रहनेवाले लोक; यावैयुम्–सभी; उलैवु उऱा वकै–नष्ट न हो जायें, ऐसे; निरम्प–अपने पेट में भरकर; पण्टु उण्टु–पहले निगल लेकर; उमिळ्न्त–बाद जो उगले; पेर्–बड़े; ऑरुमै तनैवन्–अद्वितीय भगवान के; वाय् ऑत्त–मुख के समान रहे। ३२४८

जिससे यह सेना निकल आती वह लंका का द्वार उन अद्वितीय ईश्वर के मुख के समान था, जिन्होंने पर्वत, समुद्र, अन्य पदार्थ, देवों का वास-स्थान, दूर के लोक —इन सभी को अक्षय रखने के विचार से पहले निगलकर बाद को उगला था। ३२४८

कडम्बॉ ऱामदक् कळिऱुतेर् परिमिडै कालाळ्
पडम्बॉ ऱामैयि नऩन्दलै यऩन्दऩुम् बदैत्ताऩ्
विडम्बॉ ऱादिरि यमरर्पोऱ् कुरङ्गिऩ मिदिक्कुम्
इडम्बॉ ऱामैयुऱ् ऱिरिन्दुपोय् वडकरै यिऱुत्त 3249

कटम् पॉऱा–गालों से न रुककर निरन्तर बहनेवाले; मतम्–मदनीर-स्रावी; कळिऱु–हाथी; तेर्–रथ; परि–(और) अश्व; मिटै–सटे हुए; कालाळ्–पदाति वीर (इनका भार); नऩम् तलै–बड़े सिर का; अनन्तऩुम्–अनन्त-नाग भी; पटम् पॉऱामैयिऩ्–फनों पर वहन न कर सकने के कारण; पतैत्ताऩ्–छटपटाया; विटम् पॉऱातु–विष न सह सककर; इरि–भागनेवाले; अमरर् पोल्–देवों के समान; कुरङ्कु इऩम्–वानर-सेना; मितिक्कुम् इटम्–पैर जहाँ रखे खड़े थे, वहाँ; पॉऱामै उऱ्ऱु–वहाँ खड़ा न रह सककर; इरिन्तु पोय्–अलग जाकर; वट करै इऱुत्त–उत्तरी किनारे पर ठहर गये। ३२४९

अनवरुद्ध मदनीरस्रावी गज, रथ, अश्व, सटे रहे पदातिक वीर —इन सबके भार को अनन्तनाग अपने बड़े सिरों के फनों पर ढो नहीं सका; अतः छटपटाया। हलाहल को (देखना भी) न सह सककर जैसे दैव उस दिन भागे थे, वैसे ही वानर वीरों की भीड़ अपने-अपने स्थान में स्थिर खड़ी नहीं रह सकी। वे भागे और समुद्र के उत्तरी किनारे पर जा रह गये। ३२४९

आऴि माल्वरै वेलिशुऱ् ऱिडवहुत् तमैत्त
एऴु वेलैयु मिडुवलै यरक्करे यिऩमा
वाऴि कालऩुम् विदियुम्वॆव् विऩैयुमे मळ्ळर
तोऴ मामदि लिलङ्गैमाल् वेट्टमेऱ् ऱॉडर्न्दार् 3250

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऴि माल् वरै–चक्रवालगिरियाँ; वेलि चुऱ्ऱिट–चहारदीवारी के समान घेरे रहें; वकुत्तु अमैत्त–ऐसे बने; एऴु वेलैयुम्–सातों समुद्रों में; बलै इटु–जाल डालने का स्थान है; अरक्करै इऩम् मा–राक्षस ही समूहों में प्राणी हैं; कालऩुम् वितियुम्–यम और विधि; वॆम्मै वितैयुम्–निर्दय प्रारब्ध; मऴ्ऴर्–आखेटक वीर हैं; मा मतिल् तोऴम्–ऊँचे प्राचीरों के अन्दर रहे (लंका के) बाड़े में; मेल् वेट्टम् तॊटर्न्तार्–उत्कृष्ट शिकार का काम करते थे। ३२५०

चक्रवाल-गिरियों की चहारदीवारी के अन्दर बने सातों समुद्र ही जाल डालने का स्थान हैं। राक्षस ही शिकार के प्राणी हैं। यम, विधि और भयंकर प्रारब्ध ही आखेटक हैं। इन्होंने ऊँची दीवारों से घिरी लंका के बाड़े के अन्दर शिकार का कार्य बराबर किया। ३२५०

आर्त्त वोशैयो वलङ्गुते राऴियि ऩदिर्प्पो
कार्त्तिण् माल्करि मुऴक्कमो वाशियिऩ् कलिप्पो
पोर्त्त पल्लियत् तरवमो नॆरुक्किऩाऱ् पुऴङ्गि
वेर्त्त वण्डत्तै वॆडित्तिडप् पॊलिन्ददु मेऩ्मेल् 3251

नॆरुक्किऩाल्–भीड़ के कारण; पुऴङ्कि–जलन का अनुभव करके; वेर्त्त–पसीने से तर होनेवाले; अण्टत्तै वॆटित्तिट–अण्डगोल को फाड़ते हुए; मेल् मेल् पॊलिन्ततु–उत्तरोत्तर बढ़ा; आर्त्त ओचैयो–(वीरों की) गर्जन ध्वनि क्या; अलङ्कु–हिल-डलकर चलनेवाले; तेर् आऴियिऩ्–रथों के चक्रों की; अतिर्प्पो–गड़गड़ाहट क्या; कार्–काले; तिण्–तगड़े; माल् करि–बड़े गजों की; मुऴक्कमो–चिंघाड़ थी क्या; वाचियिऩ्–अश्वों की; कलिप्पो–हिनहिनाहट क्या; पोर्त्त–इन सबको दबाकर निकला; पल् इयत्तु–विविध बाजों का; अरवमो–शब्द था क्या। ३२५१

भीड़ में तपकर स्वेद से भरकर अंड फट जाय, ऐसा मजबूर किया पदातिकों के उत्तरोत्तर बढ़नेवाले गर्जन ने ? या हिल-डुलकर चलनेवाले रथों के पहियों की गड़गड़ाहट की ध्वनि ने ? या काले तगड़े बड़े गजों की चिंघाड़ ने ? या अश्वों की हिनहिनाहट ने ? या इन सब शब्दों को दबाकर जो उठा, उस विविध वाद्यों के सम्मिलित स्वर ने ? । ३२५१

वऴङ्गु पल्पडै मीऩदु मदकरि महरम्
मुऴङ्गु हिऩ्ऱदु मुरितिरैप् परियदु मुरशम्
तऴङ्गु पेरॊलि कलिपपदु तऱुकण्मा निरुदप्
पुऴङ्गु वॆञ्जिऩच् चुऱवदु निरैपुडैप् पुणरि 3252

निरैपु उटै–भरपूर; पुणरि–वह सेना-सागर; वऴङ्कु–प्रयोग योग्य; पल् पटै मीऩतु–विविध हथियार रूपी मीनों का था; मत करि–मत्त गजों के; मकरम् मुऴङ्कु किऩ्ऱतु–मकरों की ध्वनि का; मुरि–टूटनेवाली; तिरै परियतु–तरंगों रूपी अश्वों का; मुरचम् तऴङ्कु–भेरियाँ जो उठाती हैं; पेर् ऒलि–वह तुमुल स्वर; कलिप्पतु–स्वरित करनेवाला है; तऱुकण्–निडर; मा निरुतर्–बड़े राक्षसों के;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुळुङ्कुम् वॆम्चिनम्–संतापक कठोर क्रोध रूपी; चुऱावतु–'शुऱा' नामक बड़े प्राणियों का है। ३२५२

भरपूर उस सेना-सागर की मछलियाँ विविध हथियार थीं, जो प्रयोग योग्य थे। मत्तगज मकर थे, जो शब्द कर रहे थे। तीर से टकराकर टूटनेवाली लहरें ही अश्व थीं। भेरियों की ध्वनि उसका गर्जन था। बड़े निडर राक्षस वीरों का कुढ़न-सहित क्रोध ही 'शुऱा' नामक (खूनी) मछलियों का समूह था। ३२५२

तशुम्बिऱ् पॊङ्गिय तिरळ्पुयत् तरक्करदन् दानै
पशुम्बुऱ् ऱण्डल मिदित्तलिऱ् करिपडु मदत्तिन्
अशुम्बिऱ् चेऱुपट् टळऱुपट् टमिळुमा लडङ्ग
विशुम्बिऱ् चेऱलिऱ् किडन्ददव् विलङ्गन्मे लिलङ्गै 3253

अव् विलङ्कत् मेल् इलङ्कै–उस (त्रिकोण) पर्वत पर रही लंका; पचुम् पुल्–हरी घास की; तण् तलम्–शीतल भूमि को; तचुम्पिल् पॊङ्किय–घड़ों के समान खिले; तिरळ् पुयत्तु–पुष्ट कन्धोंवाले; अरक्कर् तम् तानै–राक्षसों की सेना; मितित्तलिन्–पैरों से रौंदती है, इसलिए और; करि पटु–गजों से बह निकलते; मतत्तिन्–मदनीर से; अचुम्पिन् चॆऱु पट्टु–फिसलती भूमि की मिट्टी के समान; अळऱु पट्टु–पंक बनकर; अटङ्क अमिळुम्–सभी को डुबो देती है; विचुम्पिल्–आकाश में; चेऱलिन्–चले गये, इसलिए; किटन्ततु–यों पड़ी रही। ३२५३

उस त्रिकोण पर्वत की लंका के हरी घासों से भरे शीतल स्थानों को घड़ों के समान पुष्ट कंधोंवाले राक्षस अपने पैरों से रौंद रहे थे। उस पर गजों का मदनीर बह रहा था। अतः वहाँ इतना पंक बन गया कि सारी लंका एक साथ मग्न हो जाय। पर सब आकाश में पहुँच गये थे, अतः वह सुरक्षित रह गयी। ३२५३

पडियैप् पार्त्ततनर् परवैयैप् पार्त्ततनर् पडर्वान्
मुडियैप् पार्त्ततनर् पार्त्ततनर् नॆडुन्दिशै मुळुदुम्
विडियप् पार्प्पदोर् वॆळ्ळिडै कण्डिलर् मिडैन्द
कॊडियैप् पार्त्ततनर् वेर्त्ततनर् वानवर् कुलैन्दार् 3254

वानवर्–देवों ने; पटियै पार्त्ततनर्–भूमि को देखा; परवैयै पार्त्ततनर्–समुद्र को देखा; पटर्–विस्तृत; वान् मुटियै–आकाश की चोटी को; पार्त्ततनर्–देखा; नॆटु तिचै मुळुतुम्–लम्बी सारी दिशाओं को; पार्त्ततनर्–देखा; मिटैन्त–सटी रहनेवाली; कॊटियै पार्त्ततनर्–ध्वजाओं को देखा; विटिय पार्प्पतु–सेना से हीन देखने योग्य; ओर् वॆळ् इटै–एक खाली स्थान; कण्टिलर्–नहीं देखा; वेर्त्ततनर्–पसीने से भर गये; कुलैन्तार्–काँप गये। ३२५४

देवों ने वहाँ दृष्टि डाली। भूमि, सेना, विस्तृत आकाश की चोटी,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लम्बी दिशाएँ, सटी रहनेवाली ध्वजाएँ —सभी पर दृष्टिपात किया। सब जगह सेना ही सेना थी। कोई सेना से रिक्त स्थान नहीं देख सके। ३२५४

उलहित् नामला वुरुवॅला मिराक्कद वुरुवा
अलहिल् पल्पडे पिडित्तमर्क् कॅऴुन्दवो अन्ऱेल्
विलहु नीर्त्तिरै वेलैयो रेऴुम्बोय् विदियाल्
अलहिल् पल्लुरुप् पडैत्तन वोवॅन वयिर्त्तार् 3255

उलकित्–संसार में; नाम् अला–हमारे अलावा; उरु ऍलाम्–रूप सब; इराक्कतर् उरुवा–राक्षस बनकर; अलकु इल्–असंख्य; पल् पटै पिटित्तु–विविध हथियार धारण करके; अमर्क्कु ऍऴुन्तवो–युद्धसन्नद्ध हो उठे क्या; अन्ऱेल्–नहीं तो; बिलकुम्–हटनेवाले; नीर् तिरै वेलै–जलतरंगसागर; ओर् एऴुम् पोय्–सातों जाकर; वितियाल्–क्रम से; अलकु इल्–अपार; पल् उरु–विविध रूप; पटैत्तन्नवो–धर गये क्या; ऍन्न–ऐसा; अयिर्त्तार्–संशय में पड़ गये। ३२५५

इन्हें यह संशय हो गया कि क्या हमारे सिवा सभी जीव राक्षस बनकर अपार और विविध हथियार लेकर लड़ने आ गये ? या नहीं तो क्या विच्छिन्न होनेवाले स्वभाव के जल और लहरों से भरे सातों समुद्र एक साथ क्रम से अनेक रूप धर गये ? । ३२५५

नडुङ्गि नञ्जडै कण्डनै वानवर् नम्ब
ऑडुङ्गि याङ्गरन् दुऱैविड मऱिहिल मुयिरैप्
पिडुङ्गि युण्गुव रियारिवर् पॅरुमैपण् डऱिन्दार्
मुडिन्द दॅम्वलि यॅन्ऱन रोडुवान् मुयल्वार् 3256

वानवर्–देवता लोग; नञ्चु अटै कण्टनै–विषकंठ से; नटुङ्कि–भय से काँपकर; नम्प–नायक; याम्–हम; ऑटुङ्कि–दबकर; करन्तु–छिपकर; उऱैवु इटम्–रहने का स्थान; अऱिकिलम्–नहीं जानते; उयिरै पिटुङ्कि–प्राण हथिया लेकर; उण्कुवर्–खा लेंगे; इवर् पॅरुमै–इनका बड़प्पन; पण्टु–पहले से; अऱिन्तार् यार्–कौन जानता है; ऍम् वलि–हमारी शक्ति; मुटिन्ततु–समाप्त हो गयी; ऍन्ऱन्तर्–कहते हुए; ओटुवान् मुयल्वार्–भागने का यत्न करने लगे। ३२५६

देव डर गये। उन्होंने विषकंठ के पास जाकर निवेदन किया कि हे नाथ ! हम डर से जा छिपे रहें, ऐसा स्थान भी कहीं नहीं दिखता। वे हमारे प्राण नोचकर खा लेंगे। इनका बड़ा बल पहले से कौन जानता है ? हमारी शक्ति समाप्त हो गयी। यह कहते हुए वे भागने भी लग गये। ३२५६

ऑरुव रैक्कॊल्ल वायिर मिरामर्वन् दॊरुङ्गे
इरुब दिऱ्ऱिरण् डाण्डुनिन् ऱमर्शैयदा लॅन्नाम्
निरुद रैक्कॊल्व दिडम्बॅऱ्ऱो रिडैयिनिन् ऱन्ऱो
पॊरुव दिप्पडै कण्डतम् मुयिर्पॊऱुत् तन्ऱो 3257

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒरुवर् कॊल्ल–(इनमें) एक को मारना हो; आयिरम् इरामर्–एक सहस्र राम; ऒरुङ्के वन्तु—एक साथ आकर; इरु पतिऱ्ऱु इरण्टु आण्टु–चौबीस साल; निन्ऱु–रहकर; अमर् चॆय्ताल्–युद्ध करें तो भी; ऎन् आम्–क्या होगा; निरुतरै कॊल्वतु–राक्षसों को मारना हो; इटम् पॆऱ्ऱु–स्थान पाकर; ओर् इटैयिन्–एक ओर; निन्ऱु अन्ऱो–खड़ा रहकर न; पॊरुवतु–युद्ध करना; इ पटै कण्टु–यह बड़ी सेना देखकर; तम् उयिर्–अपने प्राण; पॊऱुत्तन्ऱो–रखने पर न। ३२५७

उन्होंने आगे कहा— हज़ार राम आयें और चौबीस वर्ष युद्ध करें तो भी क्या कर सकेंगे ? इनमें एक को भी मार सकेंगे क्या ? हम निशाचरों की मारने की बात सोचें भी तो खड़ा रहने के लिए स्थान मिले तभी न सोचा जा सके ? स्थान भी मिल जाय तो भी इतनी बड़ी सेना को देखने के बाद प्राण स्थिर रखने की शक्ति हो तभी न युद्ध किया जाय ? । ३२५७

ऎन्ऱि रैञ्जलु मणिमिडऱ् ऱिऱैवनु मिन्निनीर्
ऒन्ऱु मञ्जलिर् वञ्जनै यरक्करै यॊरुङ्गे
कॊन्ऱु नीक्कुमक् कॊऱ्ऱव निक्कुल मॆल्लाम्
पॊन्ऱु विप्पदोर् विदितन्द दामॆनप् पुहन्ऱान् 3258

ऎन्ऱु इरैञ्चलुम्–ऐसा (निवेदन करके) विनय दिखाने पर; मणि मिटऱु–रत्नकण्ठ; इऱैवनुम्–ईश्वर ने भी; इन्नि–आगे; नीर् ऒन्ऱुम् अञ्चलिर्–तुम लोग कुछ मत डरो; अ कॊऱ्ऱवन्–वह विजय वीर; वञ्चनै अरक्करै–वंचक राक्षसों को; ऒरुङ्के–एक साथ; कॊन्ऱु नीक्कुम्–मारकर मिटा देंगे; इ कुलम् ऎल्लाम्–इस सारे कुल को; पॊन्ऱुविप्पतु–मरवाने; ओर् विति–एक विधि का; तन्ततु आम्–इधर लाने का विधान था; ऎन्ऱु पुकन्ऱान्–ऐसा कहा। ३२५८

इस भाँति जब उन्होंने कहकर विनय की, तब नीलमणिकंठ ने आश्वासन दिया। तुम लोग आगे कुछ मत डरो ! वह विजय वीर इन वंचक राक्षसों को एक ही क़िस्त में मार देंगे। राक्षसकुल के सारे लोगों को विधि ने ही एक दम मरवाने के लिए इधर एकत्रित लाकर छोड़ा है ! । ३२५८

पुऱ्ऱिन् निन्ऱुवल् लरविनम् बुऱप्पडप् पॊरुमि
इऱ्ऱ दॆम्वलि यॆन्नविरैन् दिरिदरु मॆलिपोल्
मऱ्ऱै वानरप् पॆरुङ्गडल् पयङ्गॊण्डु मऱुहिक्
कॊऱैऱ वीररैप् पार्त्तिल दिरिन्ददु कुलैवाल् 3259

पुऱ्ऱिन् निन्ऱु–बिल से; वल् अरवु इनम्–सबल सर्पों का झुण्ड; पुऱप्पट–जब निकला तब; पॊरुमि–व्यग्र होकर; ऎम् वलि इऱ्ऱतु–हमारी शक्ति छूट गयी; ऎन्न–कहकर; विरैन्तु–शीघ्र; इरि तरुम्–अस्त-व्यस्त भागनेवाले; ऎलि पोल्–चूहों के समान; मऱ्ऱै वानरम्–अन्य वानरों का; पॆरु कटल्–बड़ा सागर; पयम् कॊण्टु–भय खाकर; मऱुकि–भ्रमित होकर; कॊऱ्ऱम् वीररै–विजयी वीरों (श्रीराम-लक्ष्मण)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

की; पार्त्तिलतु–परवाह न करके; कुलैबाल्–भयकम्पन के साथ; इरिन्ततु–भाग गया। ३२५९

जब बिल से सर्पकुल निकलते हैं, तब चूहों के दल भय से व्यग्र होकर यह सोचते हुए जल्दी भाग जाते हैं कि अब हमारा बल छूट गया। उसी भाँति वानरों की वह बड़ी सेना भयातुर और विक्षुब्ध होकर विजयी वीर श्रीराम और लक्ष्मण की हस्ती का ख़याल भी किये विना अस्त-व्यस्त हो भाग गयी। ३२५९

अणैयिन् मेऱ्चॆन्ऱ शिलशिल वाऴियै नीन्दप्
पुणैहळ् तेडिऩ शिलशिल नीन्दिऩ पोऩ
तुणैह ळोडुम्बुक् कळुन्दिऩ शिलशिल तोन्ऱाप्
पणैह ळेऱिऩ मलैमुऴैप् पुक्कऩ पलवाल् 3260

चिल–कुछ; अणैयिन् मेल्–सेतु के ऊपर; चॆन्ऱ–गये; चिल–कुछ; आऴियै नीन्त–समुद्र तरने; पुणैकळ् तेटिऩ–डोंगी खोजने लगे; चिल चिल–कुछ-कुछ; नीन्तिऩ पोऩ–तैरते गये; चिल–कुछ; तुणैकळोटुम्–साथियों के साथ; पुक्कु अऴुन्तिऩ–घुसकर डूब गये; चिल–कुछ; तोन्ऱा–अदृश्य; पणैकळ् एऱिऩ–डालियों पर चढ़ गये; पल–अनेक; मलै मुऴै–पर्वत की गुफाओं में; पुक्क–घुसे। ३२६०

कुछ वानर वीर सेतु पर भागे। कुछ समुद्र पार करने डोंगी खोजने लगे। कुछ-कुछ तैरते गये। कुछ साथियों के साथ डूब गये। कुछ छिपे-छिपे शाखाओं पर चढ़ बैठे। अनेक वानर पर्वत-गुहाओं में घुस गये। ३२६०

अडैत्त पेरणै यळित्तदु नमक्कुयि रडैय
उडैत्तुप् पोदुमा लवर्तॊड रामलॆन् ऱुरैत्त
पुडैत्तुच् चॆल्हुवर् विशुम्बिनु मॆन्ऱुऩ पोदोन्
पडैत्त तिक्कॆलाम् बरन्दऩ रॆन्ऱुऩ पयत्ताल् 3261

अटैत्त पेर् अणै–समुद्र बाँधने के लिए रचे गये बड़े सेतु ने; नमक्कु उयिर् अळित्ततु–हमें प्राण दिये; अवर् तॊटरामल्–वे (राक्षस) पीछा न कर पायें ऐसा; अटैय उटैत्तु–पूरा तोड़कर; पोतुम्–जायँगे; ऎऩ्ऱु उरैत्त–ऐसा कुछ वानरों ने कहा; विचुम्पितुम्–आकाश में; पुटैत्तु चॆल्कुवर्–पीटकर जायँगे; ऎऩ्ऱुऩ–ऐसा कहा; पोतोऩ् पटैत्त–ब्रह्मा-सर्जित; तिक्कु ऎलाम्–सभी दिशाओं में; परन्ततर्–राक्षस फैले हैं; ऎऩ्ऱुऩ–कहा कुछ वानरों ने। ३२६१

"हमने जो रचा था, उस बड़े सेतु ने हमें प्राण दिलाये, इस पर से राक्षस हमारा पीछा करने आ सकते हैं। इसलिए हम इसे पूर्ण रूप से तोड़ दें।" ऐसा कुछ मर्कटों ने कहा। कुछ वानर डरे कि वे हमें आकाश में भी पीट चलेंगे। कुछ रोये कि ब्रह्मा-रचित सभी दिशाओं में राक्षस व्याप्त हैं। ३२६१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरियिन् वेन्दनु मनुमनु मङ्गद नवनुम्
पिरिय हिऱ्ऱिल रिऱैवनै निन्ऱनर् पिन्ऱार्
इरिय लुऱ्ऱनर् मऱ्ऱैयो रियावरु मॅऱिनीर्
विरियुम् वेलैयुङ् गडन्ददु नोक्किनन् वीरन् 3262

अरियिन् वेन्तनुम्–वानराधिपति; अनुमनुम्–और हनुमान; अङ्कतन् अवनुम्–और अंगद; इऱैवनै–भगवान श्रीराम से; पिरियकिऱ्ऱिलर्–अलग नहीं हुए; पिन्ऱार् निन्ऱनर्–विना छोड़ जाए खड़े रहे; मऱ्ऱैयोर् यावरुम्–अन्य सभी; इरियल् उऱ्ऱनर्–तितर-बितर हो गये; ॲऱि नीर्–तरंग फेंकनेवाला जल; विरियुम् वेलैयुम्–जिसमें भरा था वह समुद्र भी; कटन्ततु–विस्थापित हुआ; वीरन् नोक्किनन्–वीर श्रीराम ने देखा। ३२६२

वानरराज सुग्रीव, हनुमान और अंगद श्रीराम से अलग नहीं हुए। विना पीठ दिखाकर भागे वे स्थित थे। अन्य सभी तितर-बितर हो गये। तरंगताडित जल का समुद्र भी अपनी स्थिति में अस्थिर हुआ। श्रीराम ने यह सब देखा। ३२६२

इक्कॊ डुम्बडै यॆङ्गुळ दियम्बुदि यॆन्ऱान्
मॆय्क्कॊ डुन्दिऱल् वीडणन् विळम्बुवान् वीर
तिक्क नैत्तिनु मेळुमात् तीविनुन् दीयोर्
पुक्क ळैत्तिडप् पुहुन्दुळ दिराक्कदप् पुणरि 3263

इ कॊटुम् पटै–यह भीषण सेना; ॲङ्कु उळतु–(अब तक) कहाँ रही; इयम्पुति–कहो; ॲन्ऱान्–पूछा श्रीराम ने; मॆय्–सच्चा; कॊटुम् तिऱल्–भयंकर बली; वीटणन्–विभीषण; विळम्पुवान्–बोला; वीर–वीर; तिक्कु अनैत्तिनम्–सारी दिशाओं में; एळु मा तीविनुम्–सातों द्वीपों में; तीयोर्–दुष्ट; पुक्कु अळैत्तिट–प्रवेश कर बुला लाये; इराक्कतर् पुणरि–राक्षस-सेना-सागर; पुकुन्तु उळतु–आ पहुँचा है। ३२६३

श्रीराम ने विभीषण से पूछा कि विभीषण ! यह सेना रही कहाँ ? बताओ। तब सच्चे और क्रूर बलवान ने कहा कि हे वीर ! दुष्ट राक्षस सभी दिशाओं और सात द्वीपों में जाकर इस सेना-सागर को बुला लाये हैं। ३२६३

एळॆ नप्पडुङ् गीळुळ तलत्तिनिन् ऱेऱि
ऊळि मुऱ्ऱिय कडलॆनप् पुहुन्ददु मुळदाल्
वाळि मऱ्ऱवन् मूलमात् तानैमुन् वरुव
आळि वेऱिनि यप्पुऱत् तिल्लैवा ळरक्कर् 3264

एळ् ॲन पटुम्–सात कहलानेवाले; कीळ् उळ–नीचे के; तलत्तिनिन्ऱु–(पाताल) तल से; एऱि ऊपर आकर; ऊळि मुऱ्ऱिय–युगान्त के; कटल ॲन–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समुद्र के समान; पुकुन्ततुम्–जो प्रवेश कर गयी, वह सेना भी; उळतु–इसमें मिली है; मुन् वरुव–सामने आती हुई (सेना); मऱ्ऱवन्–और उसकी; मूलम् मा तानै–मूलबल की बड़ी सेना है; वाळ् अरक्कर्–क्रूर राक्षसों की; आऴि–सागर-सी सेना; इनि–अब; अ पुऱत्तु–उधर; वेऱु इल्लै–कुछ अन्य (बाक़ी) नहीं है; वाऴि–जय हो। ३२६४

इसमें नीचे के सात लोकों में पाताल से युगांत के समुद्र के समान जो सेना आयी है, वह भी शामिल है। सामने जो आती है, वह लंकेश की मूलबल की सेना है! क्रूर राक्षसों की, सागर-सी इस सेना के अलावा उधर कुछ बाक़ी नहीं है। जयजीव! । ३२६४

ईण्डिव् वण्डत्ति लिराक्कद रॅनुम्बॅय रॅल्लाम्
मूण्डु वन्ददु तीविनै मुन्निन्ऱु मुडुक्क
माण्डु वीऴुमिन् ऱॅन्गिन्ऱ दॅन्मदि वलियूऴ्
तूण्डु हिन्ऱदॅन् ऱडिमलर् तॊऴुदवन् शॊन्नान् 3265

तीविनै–बुरे कर्म (-फल) के; निन्ऱु–स्थित रहकर; मुन् मुटुक्क–आगे ठेलने से; इव् अण्टत्तिल–इस अण्डगोल में; इराक्कतर् अॅनुम्–राक्षस के; पॅयर् अॅल्लाम्–नामधारी सभी; ईण्टु मूण्टु वन्ततु–यहाँ मिल आये हैं; वलि ऊऴ्–प्रतापी प्रारब्ध; तूण्टुकिन्ऱतु–प्रेरित करता है; इन्ऱु–(इसलिए) अभी; माण्टु वीऴुम्–मर जायेंगे; अॅन्ऱुकिन्ऱतु–ऐसा कहता है; अॅन् मति–मेरा मन; अॅन्ऱु–कहकर; अटि मलर् तॊऴुतु–चरण-कमल की वंदना करके; अवन्–उस विभीषण ने; चॊन्नान्–कहा। ३२६५

बुरे कर्मफल के स्थित होकर आगे ठेलने से इस अंडगोल में रहनेवाले राक्षसनामधारी सभी यहाँ मिलकर उत्साह के साथ उठ आये हैं। प्रतापी प्रारब्ध प्रेरित करता है। इसलिए वीरों की यह सेना मर मिटेगी। ऐसा मेरा मन कहता है। विभीषण ने श्रीराम के चरण-कमलों की वन्दना करके यों कहा। ३२६५

केट्ट वण्णलु मुऱुवलुम् जीऱ्ऱमुङ् गिळरक्
काट्टु हिन्ऱनन् काणुदि यॊरुकणत् तॅन्ना
ओट्टिन् मेऱ्कॊण्ड तानैयैप् पयन्दुडैत् तुरवोय्
मीट्टि कॊल्लॅन वङ्गद नोडिनन् विरैन्दान् 3266

केट्ट अण्णलुम्–यह सुनकर महिमामय श्रीराम के; मुऱुवलुम्–मंदहास और चीऱ्ऱमुम्–क्रोध; किळर–प्रकट करके; ऒरु कणत्तु–एक ही क्षण में; काट्टुकिन्ऱनन्–दिखा दूँगा; काणुति–देखो; अॅन्ना–कहकर; उरवोय्–ताक़तवर; ओट्टिन् मेल् कॊण्ट–भगदड़ पर उतारू; तानैयै–सेना को; पयम् तुटैत्तु–भय दूर करके; मीट्टि कॊल्–लौटा लाओ; अॅन–कहने पर; अङ्कतन् विरैन्तान्–अंगद शीघ्र; ओटिनन्–दौड़ा। ३२६६

महिमावान श्रीराम ने जो यह सुना तो उनका एक ओर मंदहास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रगट हुआ और दूसरी ओर क्रोध उठा। उन्होंने कहा कि खैर ! एक क्षण में इनकी स्थिति जो होगी दिखा दूंगा। देखोगे। फिर अंगद को आज्ञा दी कि हे बलवान ! जो भागने पर उतारू है उस सेना को भय दूर करके लौटा लाओ। अंगद शीघ्र दौड़ा। ३२६६

शॆन्ऱु शेन्तैयै युऱ्ऱनन् शिऱैशिऱै कॆडुवीर्
निन्ऱु केट्टपि नीङ्गुमि ऩॆन्नच्चॊल्लि नेर्वान्
ऒन्ऱुङ् गेट्किल मॆन्ऱदक् कुरक्किन्न सुरैयाल्
वॆन्ऱि वॆन्दिऱ्ऱ् पडैप्पॆरुन् दलैवर्हळ् मीण्डार् 3267

चॆन्ऱु–जाकर; चेन्तैयै उऱ्ऱनन्–सेना के पास पहुँचा; चिऱै चिऱै–इधर-उधर; कॆटुवीर्–धैर्य खोकर भागनेवाले; निन्ऱु केटट पिन्–स्थिल होकर सुनने के बाद; नीङ्कुमिन्–(भागना हो तो) भागो; ऎन्न चॊल्लि–ऐसा कहकर; नेर्वान्–आगे भी बोला; अ कुरक्किन्नम्–उस वानरदल ने; ऒन्ऱुम् केट्किलम्–कुछ नहीं सुनेंगे; ऎन्ऱतु–कहा; उरैयाल्–वचनकुशलता से; वॆन्ऱि–विजय और; वॆम् तिऱल्–अधिक बल के साथ रहे; पटै पॆरुम् तलैवर्कळ्–बड़े सेनानायक; मीण्टार्–लौट आये। ३२६७

अंगद ने सेना के पास जाकर कहा कि हे अधीर होकर इधर-उधर भागनेवाले ! सुनो मेरी बात ! बाद भागना हो तो भागो ! उसने धैर्य के वचन कहे। पर वानर-सेना ने साफ़ कह दिया कि हम कुछ न सुनने के। पर अंगद ने अपनी वचनपटुता का प्रयोग किया तो बड़े विजयी या ताक़तवर सेनानायक उसके साथ लौट आये। ३२६७

मीण्डु वेलैयिन् वडहरै याण्डॊरु वॆऱ्पिन्
ईण्डि ऩार्हळै यॆन्कुऱित् तिरिवुऱ्ऱ दॆन्ऱान्
आण्ड नायह कण्डिलै पोलुनी यवरै
माण्डु शॆय्ववॆ ऩॆन्ऱुरै कूऱिनर् मऱुप्पार् 3268

मीण्टु–लौटकर; वेलैयिन्–समुद्र के; वट करै–उत्तरी कूल पर; आण्टु–वहाँ; ऒरु वॆऱ्पिल्–एक पर्वत पर; ईण्टिनार्कळै–जो एकत्र हुए उनसे; ऎन्न कुऱित्तु–किस निमित्त; इरिवु उऱ्ऱतु–भागना हुआ; ऎन्ऱान्–पूछा (अंगद ने); आण्ट नायक–शासक नाथ; नी–आपने; अवरै कण्टिलै पोलुम्–उन्हें नहीं देखा शायद; माण्टु चॆय्वतु ऎन्न–मरकर करना क्या होगा; ऎन्ऱु–कहकर; मऱुप्पार्–इन्कार करके; उरै कूऱिनर्–वचन कहे (वानरों ने)। ३२६८

लौटकर वे समुद्र के उत्तरी किनारे पर एक स्थान में एकत्रित हुए। उनसे अंगद ने पूछा कि यह भगदड़ क्यों ? उन्होंने उत्तर में कहा कि हे हमारे शासक राजा ! क्या आपने उन राक्षसों को देखा नहीं था ? व्यर्थ मरने से होगा क्या ? वे युद्ध में जाने से इन्कार करके आगे बोले। ३२६८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒरुव निन्दिर शित्तॆन वऴ्ऴव नुऴनाऴ्
शॆरुवि नुऱ्ऱवै कॊऱ्ऱव मऱत्तियो तॆरियिऱ्
पॊरुवित् मऱ्ऱव रिऱ्ऱिल रियारॊडुम् बॊरुवार्
इरुवर् विऱ्पिडित् तियाबरॆत् तडुत्तुनिन् ऱॆय्वार् 3269

इन्तिरचित्तु ऎत–इन्द्रजित् नाम का; उऴ्ऴवन्–जो था; ऒरुवन् उऴ नाऴ्–जब रहा तब; चॆरुवित् उऱ्ऱवै–युद्ध में जो हुआ; कॊऱ्ऱव–विजयी वीर; मऱत्तियो–भूल गये क्या; तॆरियिल्–विचारें तो; पॊरुवु इल्–अनुपम; मऱ्ऱवर्–वे शत्रु (राक्षस); इऱ्ऱिलर्–विना हारे; यारॊटुम् पॊरुवार्–किसी से भी लड़ेंगे; इरुवर्–दो; विल् पिटित्तु–धनु धारण कर; यावरै–किसको; तटुत्तु निऱुऱ–रोककर; ऎय्वार्–चला सकनेवाले; आवर्–हों। ३२६९

विजयी वीर ! इन्द्रजित् जब जीता रहा तब युद्ध में जो हुआ वह आपने भुला दिया क्या ? विचारें तो ये अप्रतिम वीर इन्द्रजित् से कम नहीं होंगे और किसी से भी लड़ेंगे। फिर ये दोनों श्रीराम और लक्ष्मण धनु लेकर किसको रोकेंगे और क्या बाण चलायेंगे ? । ३२६९

पुरङ्ग डन्दवप् पुनितन्ने मुदलिय पुलवोर्
वरङ्गळ् तन्दुल हळिप्पव रियावरु माट्टार्
करन्द डङ्गिन रिनिमऱ्ऱव् वरक्करैक् कडप्पार्
कुरङ्गु कॊण्डुवन् दमर्शॆयु मानुडर् कॊल्लाम् 3270

वरङ्कळ् तन्तु–वर देकर; उलकु अळिप्पवर्–लोक का पालन करनेवाले; पुरम् कटन्त–त्रिपुरांतक; अ पुनितन्ने–वे पवित्र ईश्वर; मुतलिय–आदि; पुलवोर्–देव; यावरुम्–सभी; माट्टार्–न सककर; करन्तु अटङ्कितर्–छिप दब गये; इनि–फिर; अव् अरक्करै–उन राक्षसों को; कटप्पार्–परास्त करनेवाले; कुरङ्कु कॊण्टु वन्तु–वानर लाकर; अमर् चॆय्युम्–युद्ध करनेवाले; मानुटर् कॊल् आम्–मनुष्य होंगे क्या। ३२७०

वरदायी व लोकपालक त्रिपुरांतक पवित्र परमशिव आदि देवता भी इनसे भिड़ नहीं सके और छिपे तथा दुबके पड़े हैं। फिर इनको परास्त कर सके कौन ? वानरों को सहायक बना लाकर जो युद्ध करना चाहते हैं, क्या ये मानव वीर परास्त कर सकेंगे ? । ३२७०

ऊऴि यायिर कोडिनिन् ऱुरुत्तिर नॊडुम्
आऴि यानुमऱ् ऱयनॊडु पुरन्दर नवनम्
शूऴ वोडिन रॊरुवनैक् कॊन्ऱुतन् दोळाल्
वीऴु माशॆय्य वल्लरेल् वॆन्ऱियि नन्ऱे 3271

उरुत्तिरनोटुम्–रुद्र के साथ; आऴियानुम्–क्षीर-सागरशायी और; मऱुम्–अन्य; अयनॊटु–ब्रह्मा के साथ; पुरन्तरन्–पुरन्दर; अवनुम्–वह; आयिरम् कोटि ऊऴि–हजार करोड़ युग; निऱुऱ–सामने खड़े होकर; चूऴ ओटितर्–चारों ओर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दौड़कर; ऒरुवऩै–एक को; तम् तोळाल्–अपने भुज (-बल) से; कॊऩ्ऱु–मारकर; वॆऩ्ऱियिऩ्–विजय के साथ; वीऴुमा–गिरा; चॆय्य वल्लरेल्–वे सकेंगे तो; नऩ्ऱे–अच्छा होगा। ३२७१

रुद्र, सागरशायी, ब्रह्मा और पुरंदर ये सब मिलकर हज़ार करोड़ युग तक समक्ष रहकर, चारों ओर दौड़कर अपना भुजबल दिखा दें तो भी वे इनमें एक को गिरा सकें और विजय पा सकें तो अच्छा होगा ! । ३२७१

ऎऩ्ऩप् पामऱ्ऱिव् वॆऴुबदु वॆळ्ळमु मॊरुवऩ्
तिऩ्ऩप् पोदुमो तेवरिऩ् वलियमो शिऱियेम्
मुऩ्ऩिप् पारॆलाम् बडैत्तव ऩाळॆला मुऱैनिऩ्
ऱुऩ्ऩिप् पार्त्तुनिऩ् ऱुऱैयिडक् कुऱैयुमो यूहम् 3272

ऎऩ् अप्पा–क्या, बाप रे बाप; इव् ऎऴुपतु वॆळ्ळमुम्–यह सत्तर 'वॆळ्ळम्'; ऒरुवऩ् तिऩ्ऩ–एक के खाने के लिए; पोतुमो–पर्याप्त होगा क्या; चिऱियेम्–अल्प हैं हम; तेवरिऩ् वलियमो–देवों से बलवान हैं क्या; यूकम्–यह सेना; मुऱै निऩ्ऱु–क्रम से; मुऩ्ऩि–सोचकर; इ पार् ऎलाम्–इन लोकों को; मुऩ् पटैत्तवऩ्–जिन्होंने रचा वे; नाळ् ऎलाम्–अनेक दिन; पार्त्तु निऩ्ऱु–देखकर; उऱै इट–'उऱै' रखें (गिनें) उतनी; कुऱैयुमो–कम रहेगी क्या। ३२७२

बाप रे बाप ! यह (हमारी) सत्तर हज़ार 'वॆळ्ळम्' की सेना क्या उस सेना के एक वीर के खाने के लिए पर्याप्त होगी ? हम देवों से बलवान हैं क्या ? हम अल्पबल हैं ! विधिवत् जिसने सोच-सोचकर इन सारे लोकों को रचा, वह ब्रह्मा दिन भर ध्यान से गिन ले और 'उऱै' रखे इतनी कम है क्या (राक्षसों की) वह सेना ? (उऱै— उस प्रतिनिधि संख्या को कहते हैं जो जब अत्यंत बड़ी संख्या के पदार्थों को गिनना पड़ता है, तब 'हज़ार' के लिए या सौ के लिए एक-एक के हिसाब से लगायी जाती है।) । ३२७२

नाय हऩ्तलै पत्तुळ कैयुना लैन्दॆऩ्
ऱोयु नॆऩ्जिऩ मॊरुवऩ्मऱ् ऱिवण्वन् दिङ्गुऱ्ऱार्
आयि रन्दलै यदऱ्किरट् टिक्कैय रैया
पायुम् वेलैयिऱ् कूलत्तु मणलिऩम् बलराल् 3273

नायकऩ् ऒरुवऩ्–नायक एक के; तलै पत्तु उळ–दस सिर हैं; कैयुम् नालैन्तु–हाथ भी बीस; ऎऩ्ऱु–वह सोचकर ही; ओयुम् नॆऩ्चिऩम्–शिथिलमन हैं; इङ्कु–यहाँ; इवण् वन्तु उऱ्ऱार्–अब जो आ पहुँचे हैं; आयिरम् तलै–हज़ार सिरों; अतऱ्कु इरट्टि–उनके दुगुने; कैयर्–हाथों वाले हैं; ऐया–स्वामी; पायुम्–(जिस पर तरंगें) उछलती हैं उस; वेलैयिऩ्–समुद्र के; कूलत्तु मणलिऩम्–तल के बालुओं से; पलर्–अनेक हैं। ३२७३

एक नायक है जिसके दस सिर और बीस हाथ हैं ! उसको सोचकर ही हम अधीर हुए हैं ! अब ये जो आये हैं वे हज़ार हाथों और दो हज़ार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिरों वाले हैं ! और वे, हे स्वामी ! तरंगसंचरित समुद्र के तल के बालुओं से भी संख्या में अधिक हैं । ३२७३

कुम्ब कऩ्ऩऩ् ऱुळऩ्ऩऱ्ऱिङ् गॊऱुवऩ्कैक् कॊण्ड
अम्बु ताङ्गवु मिडुक्किल मवऩ्शॆय्द वऱिदि
उम्ब रऩ्ऱिये युणर्वुडै यार्पिऱ ऱुळरो
नम्बि नीयुमुऩ् ऱऩिमैयै यऱिऩ्दिलै नडऩ्दाय् 3274

कुम्पकऩ्ऩऩ् ऍऩ्ऱु–कुंभकर्ण नाम का; इङ्कु उळऩ् ऒऱुवऩ्–जो यहाँ था एक; कै कॊण्ट–उसने हाथ में जो लिया था; अम्पु–उस बाण को; ताङ्कवुम्–झेलने की; मिटुक्कु इलम्–हमारे पास शक्ति नहीं थी; अवऩ् चॆय्ततु–उसने जो किया; अऱिति–आप जानते हैं; उम्पर् अऩ्ऱिये–देवों के बिना; उणर्वु उटैयार् पिऱर्–साहस का भाव रखनेवाले अन्य कोई; उळरो–हैं क्या; नम्पि–नायक; अऱिऩ्तिलै–आप अबोध हैं; नीयुम् तऩिमैयै–आप अकेले; मुऩ् नटऩ्ताय्–चलकर आये । ३२७४

हम कुंभकर्ण के हाथ का बाण झेलने में भी असमर्थ थे । उसका कृत्य आप जान चुके हैं । देवों के सिवा साहस का भाव रखनेवाले कौन हैं ! (वे भी तो भयभीत हैं ।) नाथ ! आप अबोध हैं । और अकेले चलकर आये हैं । ३२७४

अनुम ऩाऱ्ऱलु मरशऩ दाऱ्ऱलु मिरुवर्
तऩुवि ऩाऱ्ऱलुऩ् दम्मुयिर् ताङ्गवुञ् जाला
कऩियुङ् गाय्हळु मुणवुळ मुळैयुळ करक्क
मऩिद राळिऩै निराक्कद नाळिऩॆऩ् वैयम् 3275

अनुमऩ् आऱ्ऱलुम्–हनुमान का पराक्रम; अरचऩतु आऱ्ऱलुम्–राजा (सुग्रीव) का बल; इरुवर्–और दोनों के; तऩुविऩ् आऱ्ऱलुम्–धनुओं का प्रताप; तम् उयिर् ताङ्कवुम्–उनके प्राणों को सुरक्षित रखने के लिए; चाला–पर्याप्त नहीं; कऩियुम् काय्कळुम्–फल और तरकारी के; उणवु उळ–भोजन हैं; करक्क मुळै उळ–छिपने के लिए गुहाएँ हैं; वैयम्–भूमि पर; मऩितर् आळिऩ् ऍऩ्–मानव राज करें तो क्या; इराक्कतर् आळिऩ् ऍऩ्–राक्षस राज करें तो क्या । ३२७५

हनुमान का पराक्रम, राजा सुग्रीव का भुजबल, दोनों वीरों का धनुर्बल स्वयं उनके प्राणों की रक्षा करने में अपर्याप्त हैं । देखिए । हमारे भोजन के लिए फल और तरकारियाँ हैं । अन्य खाद्य पदार्थ हैं । छिपे रहने के लिए पर्वतकंदराएँ हैं । फिर संसार पर मानव राज करें तो क्या, राक्षस करें तो क्या ? । ३२७५

तामुळा रऩ्ऱे पुहऴिऩैत् तिरुवॊडुऩ् दरिप्पार्
यामु ळोमॆऩ्ऱि नॆङ्गिळै युळ्ळदॆम् बॆरुम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोमि नीरॆन्ऱु विडैदरत् तक्ककॆ पुरप्पोय्
शामि नीरॆन्ऱल् तरुममन् ऱॆन्ऱनर् तळर्न्दार् 3276

ताम् उळार् अन्ऱे-खुद जीवित रहें तभी न कोई; पुकळिनै-यश को; तिरुवॊट्टम् तरिप्पार्-श्री के साथ धारण कर सकेंगे; याम् उळोम् ऎनिन्-हम जीवित रहें तभी; ऎम् पॆरुम्-हमारे नाथ; ऎम् किळै उळ्ळतु-हमारे परिवार रहेंगे; पुरप्पोय्-पालक; नीर् पोमिन्-तुम जाओ; ऎन्ऱु-ऐसा; विटै तर तक्कनै-विदा देने अर्ह हैं; नीर् चामिन्-तुम मरो; ऎन्ऱल्-कहना; तरुमम् अन्ऱु-धर्म नहीं होगा; ऎन्ऱनर्-कहा; तळर्न्तार्-साहसहीन हो रहे। ३२७६

कोई ज़िन्दा रहें तभी न उसके यश और श्री के धारण करने की बात उठेगी! हे नाथ! हम बचे रहें तभी न हमारे परिवार रह सकेंगे। हे रक्षक! आपको यही कहना और विदा देना शोभा देगा कि 'तुम लोग चले जाओ!' पर 'तुम मरो' कहना धर्मसम्मत बात नहीं है! यह कहकर वे धैर्य खोये रहे। ३२७६

शाम्बनै वदन नोक्कि वालिशे यऱिवु शान्ऱोय्
पाम्बणै यमल नेमऱ् ऱिरामनॆन् ऱॆमक्कुप् पण्डे
एम्बल् वन् दॆय्दच् चॊल्लित् तेऱ्ऱिना यल्लैयोनी
आम्बलम् बहैअन् इन्नो डयिन्दिर मऱैन्दो नन्ताय् 3277

वालि चेय्-वाली के पुत्र ने; चाम्पनै-जाम्बवान से; वतनम् नोक्कि-उसका वदन देखकर; अऱिवु चान्ऱोय्-हे बुद्धिमान और योग्य; अम्-सुन्दर; आम्पल् पकैअन् तन्तोट्टु-कुवलय-शत्रु से; अयिन्तिरम् अमैन्तोन्-ऐंद्र-व्याकरण जिसने सीखा उस; अन्ताय्-हनुमान के सदृश रहनेवाले; नी-आपने; पाम्पु अणै अमलनै-शेषशायी पवित्र भगवान ही; इरामन् ऎन्ऱु-श्रीराम हैं, ऐसा; ऎमक्कु-हमें; पण्टे-पहले ही; एम्पल् वन्तु ऎय्त-संतोष दिलाकर; चॊल्लि-कहकर; तेऱ्ऱिनाय् अल्लैयो-आश्वासन दिलाया न। ३२७७

तब वाली के पुत्र ने जाम्बवान से बात की। बुद्धिमान और श्रेष्ठ पुरुष! हे उस हनुमान के तुल्य, जिसने कुवलय-शत्रु (सूर्य) से ऐंद्र-व्याकरण का अध्ययन किया था! आप ही ने हमें समझाया था कि श्रीराम स्वयं क्षीरसागरशायी पवित्रमूर्ति श्रीविष्णु हैं। आपने क्या हमें धीरज नहीं दिलाया था? । ३२७७

तॆऱ्ऱुवाय् तॆरिन्द शॊल्लाऱ् ऱॆरुट्टियित् तॆरुळि लोरै
आऱ्ऱुबा यल्लै नीयु मज्जिनै पोलु माबि
पोऱ्ऱुवा यॆन्ऱ पोदु पुहळॆन्ताम् बुलमै यॆन्ताम्
गूऱ्ऱिन्वा युऱ्ऱाल् वीरङ् गुऱैवरे यिऱैमै कॊण्डार् 3278

तॆरिन्त-चुने हुए; चॊल्लाल्-शब्दों से; इ तॆरुळ् इलोरै-इन अज्ञ वानरों को; तॆऱ्ऱि-समझाकर; तेऱ्ऱुवाय्-धीरज दिला दे; [illegible] नीयुम्-आप भी;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऱ्ऱुवाय् अल्लै–अधीर बन गये; अञ्चित्तै पोलुम्–डर गये शायद; आवि पोऱ्ऱुवाय्–प्राणों की रक्षा करो; ऍन्ऱु पोलु–ऐसा हो गये तो; पुकऴ् ऍन्ऱाम्–यश का क्या (अर्थ); पुलमै ऍन्ऱाम्–विद्वत्ता का क्या अर्थ; इऱैमै कॊण्टार्–नेतृत्व रखनेवाले; कूऱ्ऱिन् वाय् उऱ्ऱाल्–यम के मुख में पड़ जायँ तो भी; वीरम् कुऱैवरो–वीरता छोड़ देंगे क्या। ३२७८

आप इस योग्य हैं कि भ्रमित इन्हें चुने हुए और अर्थपूर्ण वचनों से समझायें और धीरज दिलायें। पर आप स्वयं साहस खोकर भय खा गये! प्राणों का ही रक्षक बन जाय कोई तो यश, विद्वत्ता आदि का क्या अर्थ होगा? नेता लोग, यम के मुख में जाना पड़े तो भी क्या अपने साहस को क्षीण होने दे सकेंगे? । ३२७८

अञ्जिताम् बऴियुम् बूण्डा मम्बुवि याण्डु मावि
तुञ्जुमा ऱन्ऱि वाऴ वॊण्णुमो नाण्मेऱ् ऱोन्ऱिन्
नञ्जुवा यिट्टा लन्न वमुदन्ऱो नम्मै यम्मा
तञ्जमॆन् ऱणैन्द वीरर् तन्मैयिऱ् चादल् नन्ऱे 3279

अञ्चिताम्–डर गये (हम); अम् पुवि–सुन्दर भूमि पर; पऴियुम् पूण्टाम्–अपयश अर्जित कर लिया; याण्टुम्–कहीं भी; नाळ् मेल् तोन्ऱिन्–आयु पर यम दिखायी देगा तो; आवि तुञ्चम् आऱु अन्ऱि–जीव चला जायगा, उसके सिवा; वाऴ ऑण्णुमो–जीते रह सकते क्या; नञ्चु वाय् इट्टाल् अन्त–विष मुख में लिये रहे; अमुतु अन्ऱो–अमृत (-से) रहेंगे न; तञ्चम् ऍन्ऱु–अभय चाहकर; अणैन्त वीरर्–आये वीरों को; तन्मैयिल्–अकेले छोड़ने से; चातल् नन्ऱु–मरना बेहतर है। ३२७९

हम कायर हो गये। अपयश अर्जन कर गये! जहाँ भी जायँ आयु क्षीण होकर मृत्यु आयगी, तो प्राण छोड़ने के सिवा जीवित भी रह सकेंगे क्या? फिर विषमिलित अमृत के समान न हो जायँगे? हमारी सहायता चाहकर जो आये हैं, उनको अकेले छोड़ जाने से मरना अधिक श्लाघ्य है! हाँ, मैया! । ३२७९

तानव रोडु मऱैच् चक्करत् तलैव नोडुम्
वानवर् कडैय माट्टा मऱिकडल् कडैन्द वालि
यानव नम्बॊन् ऱाले ययर्न्दमै ययर्त्त दॆन्नी
मीनलर् वेलै पट्ट दुणर्न्दिलै पोलु मेलोय् 3280

तानवरोटुम्–दानवों और; मऱै–और; चक्करम् तलैवनोटुम्–और चक्रधर नायक (श्रीविष्णु) और; वानवर् कटैय माट्टा–देव जिसे मथ नहीं सके; मऱि कडल्–(तीर से टकराकर) मुड़नेवाली (तरंगों वाले) समुद्र को; कटैन्त वालि आनवन्–जिसने मथा वह वाली जो था वह; अम्पु ऑन्ऱाले–एक बाण से; अयर्न्तमै–शिथिल पड़ गया, उसे; नी अयर्त्ततु ऍन्–आप भूले क्यों; मेलोय्–श्रेष्ठ; मीन् अलर वेलै–मछलियों से शोभित समुद्र; पट्टतु–जिस गति को पहुँचा उसे; उणर्न्दिलै पोलुम्–नहीं तमझा क्या। ३२८०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दानव, चक्रधारी श्रीविष्णु और देव भी जिस सागर को मथ नहीं सके उसे वाली ने मथा था। वह वाली एक ही बाण से निष्क्रिय हो गया! उस बात को आप भूले क्यों? हे श्रेष्ठ पुरुष! मछलियों से शोभित इस समुद्र का जो हाल हुआ वह आप नहीं सोचते शायद! । ३२८०

अॅत्तत्तै यरक्क रेनुन् दरुममाण् डिल्लै यन्ऱे
अत्तत्तै यऱत्तै वॅल्लुम् बावमॅन् ऱऱिन्द दुण्डो
पित्तरैप् पोल नीयु मिवरुडन् पॅयर्न्द तन्मै
ऑत्तिल दॅन्नच् चॊन्ना नवनिवै युरैप्प दाना 3281

अरक्कर् अॅत्तत्तै एनुम्–राक्षस कितने भी क्यों न हों; तरुमम्–धर्म; आण्टु–वहाँ; इल्लै अन्ऱे–नहीं है न; अत्तत्तै–उतने (अधिक); अऱत्तै–धर्म को; वॅल्लुम् पावम्–पाप परास्त करेगा; अॅन्ऱु–ऐसा; अऱिन्ततु उण्टो–कहीं जाना है क्या; पित्तरै पोल–पागलों के समान; नीयुम्–तुम भी; इवरुटन्–इन वीरों के साथ; पॅयर्न्त तन्मै–जो भाग आये वह कार्य; ऑत्तिलतु–युक्त नहीं लगता; अॅन्न–ऐसा; चॊन्नान्–कहा; अवन्–वह (जाम्बवान); इवै–यह; उरैप्पतु आनान्–कहने लगा। ३२८१

राक्षसों की संख्या चाहे जितनी हो, वहाँ धर्म नहीं है न? अधिक धर्म को पाप परास्त करे—यह आपने कहीं जाना है? पागलों के समान इनके साथ मिलकर आपका भी भागना युक्त नहीं लगता! अंगद ने यह सब कहा, तो जाम्बवान उत्तर में यों कहने लगा। ३२८१

नाणत्ताऱ् चिऱिदु पोदु नलङ्गिन निरुन्दु पिन्नर्
तूणॊत्त तिरळ्तोळ् वीर तोन्ऱिय वरक्कर् तोऱ्ऱम्
काणत्ता निऱ्कत् तानक् कऱैमिडऱ् ऱवर्क्कु मामे
कोणऱ्पू वुण्णुम् वाळ्क्कैक् कुरङ्गिन्मेऱ् कुऱ्ऱ मुण्डो 3282

नाणत्ताल्–लज्जा से; चिऱितु पोतु–कुछ देर; नलङ्किनन्–क्षुब्ध रहा; इरुन्तु–रहकर; पिन्नर्–बाद; तूण् ऑत्त–स्तंभ-सम; तिरळ् तोळ्–पुष्ट कंधों वाले; वीर–वीर; तोन्ऱिय–जो आ गये उन; अरक्कर् तोऱ्ऱम्–राक्षसों का दृश्य; काण तान्–देखना सही; निऱ्क तान्–या सामना करना ही हो; करै मिटऱ्ऱु अवर्क्कुम्–विषकण्ठ शिव के लिए भी; आमे–साध्य है क्या; कोणल्–वक्र; पू उण्णुम् वाळ्क्कै–पुष्प खानेवाला जीवन बितानेवाले; कुरङ्किन् मेल्–वानरों पर; कुऱ्ऱम् उण्टो–(जब वे भागते हैं तब) दोष लगेगा क्या। ३२८२

जाम्बवान लज्जा से कुछ देर क्षुब्ध रहा। बाद बोला। स्तंभ-सम कंधों वाले वीर! अब जो राक्षस आये हैं उनको देखना या उनके सामने खड़ा रहना विषकंठ के लिए भी साध्य है क्या? फिर वक्रशरीरी पुष्पजीवी वानर भागें तो उन पर दोष भी लगेगा क्या? । ३२८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेवरु मवुणर् तामुञ् जॅरुप्पण्डु शॅय्द कालम्
एवरे यॅन्नाऱ् काणप् पट्टिल रिरुक्कै यान
मूवहै युलहि नुळ्ळा रिवर्तुणै याऱ्ऱन् मुऱ्ऱुम्
पावह रुळरे कूऱ्ऱु मिवरुडन् पहैक्क वऱ्ऱो 3283

तेवरुम्–देवों और; अवुणर् तामुम्–दानवों ने; पण्टु–पहले; चॅरु चॅय्त–जब युद्ध किया; कालम्–तब; ऍन्नाल्–मुझसे; काणप्पट्टु इलर्–जो नहीं देखे गये; एवर्–कौन हैं; इरुक्कैयान–वास योग्य; मूवकै उलकित् उळ्ळार्–त्रिलोक में रहनेवालों में; इवर् तुणै–इनके जितने; आऱ्ऱल् मुऱ्ऱुम्–बल में बढ़े हुए; पावकर्–पातक; उळरे–हैं क्या; कूऱ्ऱुम्–यम भी; इवर् उटन्–इनसे; पकैक्कवऱ्ऱो–शत्रुता कर सकेगा क्या। ३२८३

जब देवों और दानवों ने पहले आपस में युद्ध किया था, तब कौन ऐसा था जिसको मैंने नहीं देखा हो ? वासयोग्य इन तीनों लोकों में इनके जितने बलशाली पातक हैं भी क्या ? यम भी इनसे वैर ठान सकेगा क्या ? । ३२८३

मालियैक् कण्डेन् पिन्नै मालिय वानैक् कण्डेन्
कालने मियैयुङ् गण्डे निरणियन् ऱनैयुङ् गण्डेन्
आलमा विडमुङ् गण्डेन् मदुविनै यनुश नोडुम्
वेलैयंक् कलक्कक् कण्डे निवर्क्कुळ मिडुक्कु मुण्डो 3284

मालियै कण्टेन्–माली को देखा (मैंने); पिन्नै–बाद; मालियवानै कण्टेन्–माल्यवान को देखा; काल नेमियैयुम् कण्टेन्–कालनेमी को भी देखा; इरणियन् तनैयुम् कण्टेन्–हिरण्य को भी देखा; आलम् मा विटमुम्–हलाहल विष को भी; कण्टेन्–देखा; अनुचनोटुम्–छोटे भाई (कैटभ) के साथ; मनुविनै–मधु को; वेलैयै कलक्क–समुद्र को क्षुब्ध करता; कण्टेन्–देखा; इवर्क्कु उळ–(उनका) इनका-सा; मिटुक्कुम् उण्टो–बल है क्या। ३२८४

मैंने माली को देखा है; माल्यवान को देखा है। कालनेमी और हिरण्य को देखा है। हलाहल भी मेरा देखा हुआ है ! लघुसहोदर कैटभ सहित मधु को सागर को विलोडित करता देखा था। क्या उनमें इनका-सा बल था ? । ३२८४

वलियिदन् मेले पॅऱ्ऱ वरत्तिनर् मायम् वल्लोर्
ऑलिकडन् मणलिन् मिक्क कण्क्किन रुळ्ळ नोक्किर्
कलियिनुङ् गॉडियर् कऱ्ऱ पडैक्कलक् करत्त रॅन्ऱाल्
मॅलिहुव दन्ऱि युण्डो विण्णवर् वॅरुवल् कण्डाल् 3285

वलि इतन् मेले–बल है तिस पर; पॅऱ्ऱ वरत्तिनर्–प्राप्त वर वाले हैं; मायम् वल्लोर्–माया में चतुर हैं; ऑलि कटल्–शब्दायमान समुद्र के; मणलिन् मिक्क–बालुओं से अधिक; कणक्किनर्–संख्या के हैं; उळ्ळम् नोक्किल्–इनका मन देखो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तो; कलियितुम् कॊटियर्–कलिपुरुष से भी निर्मम हैं; पटैक्कलम् कऱ्ऱ–हथियारों से अभ्यस्त; करत्तर्–हाथों वाले हैं; ऎत्ऱाल्–तो; विण्णोर्–देव भी; वॆरुवल् कण्टाल्–भयातुर हैं, इसे देखें तो; मॆलिकुवतु अत्ऱि–हमारे अशक्त होने के सिवा; उण्टो–कुछ कर सकते हैं क्या । ३२८५

ये इतने बलवान हैं ही ! तिस पर उन्हें अपार वर प्राप्त हैं ! वे माया में भी दक्ष हैं । उनकी संख्या गर्जनशील समुद्र के बालुओं से अधिक है ! इनके मन के बारे में सोचें तो वे कलिपुरुष से भी क्रूर हैं। ये विविध हथियारों से अभ्यस्त हाथों वाले हैं । व्योमवासी देव भी इन्हें देखकर डर जाते हैं । इस स्थिति में वानर अधीर हो शिथिल पड़ जाने के सिवा क्या कर सकेंगे ? । ३२८५

आहिऩु मैयम् वेण्डा वळ्ळहिदऩ् ऱमरि ऩञ्जिच्
चाहिऩुम् बॆयर्न्द तऩ्मै पळ्ळितरु नरहिऱ् ऱळ्ळुम्
एहुदु मीळ विऩ्ऩु मियम्बुव दुळदा लॆय
मेहमे यऩैयाऩ् कण्णि ऩॆङ्ङऩम् विळ्ळित्तु निऱ्ऱुम् 3286

आकिऩुम्–तो भी; चाकिऩुम्–मरना पड़े तो भी; अमरिऩ् अञ्चि–युद्ध से डरकर; पॆयर्न्त तऩ्मै–भागने का कार्य; अळ्ळितु अऩ्ऱु–सुन्दर काम नहीं; पळ्ळि तरुम्–अपयश दिला देगा; नरकिल् तळ्ळुम्–नरक में गिरा देगा; ऐयम् वेण्टा–संशय न हो; मीळ एकुतुम्–लौट जायँगे; ऐय–तात; इऩ्ऩुम्–और भी; इयम्पुवतु उळतु–कहना है; मेकमे अऩैयाऩ्–मेघ-सदृश; कण्णिऩ्–(श्रीराम के) समक्ष; ऎङ्ङऩम्–कैसे; विळ्ळित्तु निऱ्ऱुम्–आँखें खोले खड़े रहें । ३२८६

इतना होने पर भी, मरने की नौबत आ जाय तो भी, युद्ध से डरकर भाग आना सुन्दर काम नहीं था ! यह अवश्य अपयश दिलायगा । और नरक में डाल देगा । इसमें संशय नहीं ! लौट जायँगे । तात ! और एक बात है जो कहनी है । अब हम मेघश्याम श्रीराम के समक्ष आकर अपनी आँखों से उनका श्रीमुख कैसे देख सकेंगे ? । ३२८६

ऎऩ्ऱॆडुत् तॆण्गिऩ् ऱाऩैक् किऱैयव ऩियम्ब लोडुम्
वऩ्ऱिऱऱ् कुलिश मोच्चि वरैशिऱ हरिन्दु वॆळ्ळिक्
कुऩ्ऱिडै नीलक् कॊण्मू वमरन्दऩ मदत्तिण् कुऩ्ऱिऩ्
निऩ्ऱव ऩळित्त मैन्दऩ् महऩिवै निहळ्त्त लुऱ्ऱाऩ् 3287

ऎऩ्ऱु–ऐसा; ऎण्किऩ् ताऩैक्कु–रीछों की सेना के; इऱैयवऩ्–नायक के; ऎट्टुतु इयम्पलोटुम्–कहने पर; वल् तिऱल्–अतिशय शक्तिसंपन्न; कुलिचम् ओच्चि–वज्र को उठाकर; वरै चिऱकु–पर्वतों के पक्षों को; अरिऩ्तु–काटकर; वॆळ्ळि कुऩ्ऱु इटै–श्वेत पर्वत पर; नीलम् कॊण्मू–नीला मेघ; अमरन्तॆऩ–रहता हो जैसे; मतम्–मदयुक्त; तिण्–कठोर; कुऩ्ऱिऩ्–पर्वत (गज) पर; निऩ्ऱवऩ्–जो रहा उस इन्द्र का; अळित्त मैन्तऩ्–जनाया पुत्र; मकऩ्–उसके पुत्र ने; इवै निकळ्त्तल् उऱ्ऱाऩ्–ये बातें कहना आरम्भ किया । ३२८७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसा जब रीछों के राजा जाम्बवान ने दिल खोलकर कहा तब उस इन्द्र के, जिसने अतिशय शक्तिवाले वज्रायुध का प्रयोग करके पर्वतों के पक्ष काटे थे और जो श्वेत पर्वत पर विलसनेवाले नीले मेघ के समान मदमत्त पर्वत-सम ऐरावत पर आरूढ़ है, पुत्र (वाली) का पुत्र (अंगद) निम्नोक्त बातें कहने लगा। ३२८७

ऍडुत्तलुञ् जाय्दल् तानु मॅदिर्त्तलु मॅदिर्न्दोर् तम्मैप्
पडुत्तलुम् वीर वाऴ्क्कै पऱ्ऱिनर्क् कुऱ्ऱ मेनाळ्
अडुत्तदे यः(ह्)दु निऱ्क वन्ऱियु मॊन्ऱु कूऱ्ऱ्
कॅडुत्तदु केट्टीर् नीरुङ् गरुत्तुळीर् एदु नोक्किन् 3288

ऍटुत्तलुम्–(शत्रुओं पर) हावी आना; चाय्तल् तानुम्–और (उनसे) परास्त होना; ऍतिर्त्तलुम्–सामना करना; ऍतिर्न्तोर् तम्मै–सामना करनेवालों को; पटुत्तलुम्–मारना; वीरम् वाऴ्क्कै–वीरों का जीवन; पऱ्ऱिनर्क्कु–जो अपना चुके उनके लिए; मेनाळ् उऱ्ऱ–प्राचीन काल से; अटुत्तते–सहज ही है; अ··तु निऱ्क–वह एक ओर रहे; अन्ऱियुम्–अलावा; ऒन्ऱु कऱ्ऱ्कु–एक कहने के लिए; ऍटुत्ततु–जो उचित है; केट्टीर्–उसको सुना; नोक्किन्–विचार करने पर; नीरुम्–आप भी; करुत्तुळीर्–विवेकी हैं। ३२८८

शत्रुओं पर विजय पाना या उनसे हार जाना, शत्रु का सामना करना या उसे मारना —यह सब वीर-जीवियों के लिए प्राचीन दिनों से सहज ही बना है ! और भी एक बात है। आपने मेरी बात सुनी जिसको मैंने सुनाना उचित समझा। आप विवेकी हैं। ३२८८

ऒन्ऱु नीरञ्ज लैय यामॅला मॊरुङ्गे शॅन्ऱु
निन्ऱुमॊन् ऱियऱ्ऱ लाऱ्ऱेम् नेमियान् ऱाने नेर्न्दु
कॊन्ऱुपोर् कडक्कु मायिऱ् कॊळ्ळुदुम् वॅन्ऱि यन्ऱेल्
पॊन्ऱुदु मवनो डॅन्ऱान् पोदले यऴहिऱ् ऱॅन्ऱान् 3289

ऐय–तात; नीर् ऒन्ऱुम् अञ्चल्–आप कुछ न डरें; याम् ऍलाम्–हम सब; ऒरुङ्के चॅन्ऱु–एक साथ जाकर; निन्ऱुम्–खड़े रहें तो भी; ऒन्ऱु इयऱ्ऱल्–कुछ करने में; आऱ्ऱेम्–समर्थ नहीं रह सकेंगे; नेमियान् ताने–चक्रधारी श्रीराम स्वयं; नेर्न्तु–लड़कर; कॊन्ऱु–मारकर; पोर् कटक्कुम् आयिन्–युद्ध जीतेंगे तो; वॅन्ऱि कॊळ्ळुतुम्–विजय प्राप्त करेंगे; अन्ऱेल्–नहीं तो; अवनोटु–उनके साथ; पॊन्ऱुतुम्–मरेंगे; ऍन्ऱान्–कहा और; पोतले–क्या भागना; अऴकिऱ्ऱु–सुन्दर (श्लाघनीय) होगा; ऍन्ऱान्–कहा (अपनी बात समाप्त की)। ३२८९

तात ! आप कुछ न डरें। हम सब मिलकर जायँ और डटे रहें तो भी कुछ नहीं होगा। पर अगर चक्रधारी विष्णु के अवतार श्रीराम स्वयं शत्रु से युद्ध करके उनका संहार करके युद्ध समाप्त करें तो हम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विजयी बनेंगे। नहीं तो उनके साथ प्राण त्याग देंगे। इसे छोड़कर भाग जाना अच्छा होगा क्या ? । ३२८९

ईण्डिय तानै नीङ्ग निऱ्पदॅन् यामे शॅन्ऱु
पूण्डवॅम् पऴियि नोडुम् बोन्दनम् बोदु मॅन्ना
मीण्डनर् तलैव रॅल्ला मङ्गद नोडुम् वीरन्
मूण्डवॅम् बडैयै नोक्कित् तम्बिक्कु मॉऴिव दानान् 3290

ईण्टिय तानै–एकत्रित सेना; नीङ्क निऱ्पतु–भाग खड़ी हुई; अॅन्–सो क्या बात; यामे–हम खुद; चॅन्ऱु–जाकर; पूण्ट–मिले; वॅम् पऴियिनोटुम्–दुःखदायी अपयश के साथ; पोन्तनम्–लौट आये हैं; पोतुम्–चलें; अॅन्ना–कहने पर; तलैवर् अॅल्लाम्–सारे यूथप; अङ्कतनोटुम् मीण्टनर्–अंगद के साथ लौटे; वीरन्–वीर श्रीराम; मूण्ट–क्रुद्ध; वॅम्–भयानक; पडैयै नोक्कि–सेना को देखकर; तम्पिक्कु–कनिष्ठ भ्राता से; मॉऴिवतु आनान्–कहने लगे। ३२९०

एकत्रित वानर-सेना के भाग खड़ा होने के सम्बन्ध में क्या कहा जाय ? स्वयं हम मैदान छोड़कर भागे और अपयश लेकर लौटे हैं ! छोड़ो। हम सब जायँ ! इस पर सभी वानरयूथप अंगद के साथ-साथ लौट आये। उधर श्रीवीरराघव ने क्रुद्ध राक्षस-सेना को देखा और वे अपने छोटे भाई से यों कहने लगे। ३२९०

अत्तनी युणर्दि यन्ऱे यरक्करदा नवुण रेदान्
अॅत्तनै युळरॅन् ऱालु मियान्शिलै यॅडुत्त पोदु
तॉत्तुऱु कनलिन् वीऴ्न्द पञ्जॅनत् तॉलैयुन् दन्मै
ऑत्तदो रिडैयू ऱुण्डॅन् ऱुणर्विडै युदिप्प दन्ऱाल् 3291

अत्त–तात; अरक्कर् तान्–राक्षस हों या; अवुणरे तान्–दानव ही क्यों न हों; अॅत्तनै उळर् अॅन्ऱालुम्–कितने भी क्यों न हों; यान्–मैं; चिलै अॅटुत्त पोतु–धनु उठा लूँ तो; तॉत्तु उऱु–पुंजीकृत; कनलिन्–आग में; वीऴ्न्त पञ्चु अॅन–पड़ी रूई के समान; तॉलैयुम् तन्मै–(सभी) मिट जायँगे वह गति; नी उणर्ति अन्ऱे–तुम जानते हो न; ऑत्ततु–(मेरे बल के) योग्य; ओर् इटैयूऱु–एक बाधा; उण्टु अॅन्ऱु–है, ऐसा; अॅन् उणर्वु इटै–मेरी समझ में; उतिप्पतु–जो आयगा; अन्ऱु–वह कुछ नहीं है। ३२९१

तात ! दानव हों चाहे राक्षस ! वे कितने ही क्यों न हों। तुम जानते हो कि मेरे धनुष धारण करने पर वे सब किस प्रकार अग्निपुंज में पड़ी रूई के समान मिट जायँगे ! मेरी शक्ति के सदृश कोई बाधा भी हो सकती है, ऐसा मेरी बुद्धि नहीं मानती। ३२९१

काक्कुन रिन्मै कण्ड कलक्कत्ताऱ् कवियिन् शेन्नै
पोक्करप् पोहित् तत्त मुऱैविडम् बुहुद लुण्डाल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ताक्कियिप् पडयै नुऱ्ऱुन् दलैतुमिप् पळवुन् दाङ्गि
नीक्कुदि निरुद राङ्गु नॅरुङ्गुवार् नॅरुक्का वण्णम् 3292

काक्कुनर्–रक्षक का; इत्मै कण्ट–अभाव देखकर; कलक्कत्ताल्–उस भ्रांति से; कवियित् चेनै–कपि-सेना; पोक्कु अऱ–युद्ध में जाना छोड़कर; पोकि–भाग जाकर; तम् तम् उऱैवु इटम्–अपने-अपने रहने के स्थान में; पुकुतल् उण्टु–घुस जाते हैं; आल्–इसलिए; इ पटैयै ताक्कि–इस सेना पर आक्रमण करके; मुऱ्ऱम्–पूरा; तलै तुमिप्पु अळवुम्–सिर काट न लूँ तब तक; ताङ्कि–तुम सेना को सँभालकर; आङ्कु–वहाँ; नॅरुङ्कुवार्–नियरानेवाले; निरुतर्–राक्षस; नॅरुङ्का वण्णम्–पास न जायँ ऐसा; नीक्कुति–रोको। ३२९२

कपि-सेना अपने रक्षक का अभाव समझकर युद्ध पर जाना छोड़कर भाग गयी है और अपने-अपने आश्रय-स्थान में घुसे हुए हैं। इसलिए जब तक मैं इस सेना पर आक्रमण करके पूर्ण रूप से इन वीरों के सिर नहीं काट डालूँ, तब तक तुम इस वानर-सेना का रक्षण करो। उसकी तरफ़ राक्षस जायँगे तो उनको वहाँ जाने से रोक दो। ३२९२

इप्पुऱत् तिनैय शेनै येवियाण् डिरुन्द तीयोन्
अप्पुऱत् तमैन्द शूळ्च्चि यऱिन्दव नयले वन्दु
तप्परक् कॊन्ऱु नीक्कि लवनैयार् तडुक्क वल्लार्
वॅप्पुऱु हिन्ऱ दुळ्ळम् वीरनी यन्ऱि विल्लोर् 3293

इ पुऱत्तु–इस तरफ़; इनैय चेनै–इस तरह की सेना को; एवि–भिजवाकर; आण्टु इरुन्त–वहाँ जो रहा; तीयोन्–दुष्ट; अमैन्त चूळ्च्चि–युक्त तन्त्र का; अऱिन्तवन्–ज्ञाता रावण; अ पुऱत्तु–उस तरफ़; अयले वन्तु–पास आकर; तप्पु अऱ–अचूक रीति से; कॊन्ऱु नीक्किल्–मार मिटाये तो; वीर–वीर; अवनै–उसे; नी अन्ऱि–तुम्हारे सिवा; तटुक्क वल्लोर्–रोक सकनेवाले; विल्लोर्–धनुर्धर; यार्–कौन हैं; उळ्ळम्–(यह सोचने पर) मन; वॅप्पु उऱुकिन्ऱतु–तप्त होता है। ३२९३

इस तरफ़ ऐसी सेना को भेजकर दुष्ट तथा तंत्रज्ञ रावण उस तरफ़ आकर वानरों का खातमा करना सोचेगा तो हे वीर! तुम्हारे सिवा उसे रोक सकनेवाले धनुर्धर कौन हैं? यह सोचकर मेरा मन संतप्त होता है। ३२९३

मारुदि योडु नीयुम् वानरक् कोनुम् वल्ले
पेरुदिर् शेनै काक्क वॅन्नुडैत् तनिमै पेणिच्
चोरुदि रॅन्निन् वॅम्बोर् तोऱ्ऱुना मॅन्नच् चॊन्नान्
वीरन्मऱ् ऱदनैक् केट्ट विळैयवन् विळम्ब लुऱ्ऱान् 3294

मारुतियोटु–मारुति के साथ; नीयुम्–तुम भी; वानरर् कोनुम्–वानरेश भी; ऑल्ले–शीघ्र; चेनै काक्क–सेना की रक्षा करने; पेरुतिर्–चलो; ऍन् उटै तनिमै–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरी तन्हाई; पेणि–सोचकर; चोरुतिर् ऍन्तिन्–निर्बल हो जाओ तो; नाम्–हम; वॅम् पोर्–इस भयंकर युद्ध में; तोऱ्ऱुम्–हार जायँगे; अतनै केट्ट–(जिन्होंने) उसे सुना वे; इळैयवन्–कनिष्ठ लक्ष्मण; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ३२९४

मारुति, वानरेश और तुम शीघ्र जाओ सेना का संरक्षण करने। मेरी तन्हाई सोचकर अगर तुम मन मारे रह जाओगे तो हम इस भयंकर युद्ध में हार जायँगे। —श्रीराघव ने कहा। यह सुनकर लघुराज बोलने लगे। ३२९४

अन्नदे करुम मैय वन्ऱियु मरुहे निन्ऱाल्
ऍन्नुनक् कुदवि शॅय्व दिदुपडै यॅन्ऱ पोदु
शॅन्निय़िऱ् चुमन्द कैयर् तेवरे पोल यामुम्
बॊन्नडै वरिवि लाऱ्ऱल् पुऱन्निन्ऱु काण्डल् पोक्कि 3295

ऐय–प्रभु; अन्नते करुमम्–वही करणीय है; अन्ऱियुम्–और भी; पटै–राक्षस-सेना; इतु ऍन्ऱ पोतु–ऐसी जब है; तेवरे पोल–देवों के ही समान; यामुम्–हम भी; चॅन्निय़िल्–सिर पर; चुमन्त–धृत; कैयर्–हाथों वाले होकर; पॊन् उटै–स्वर्णनिर्मित; वरि विल्–सबन्ध धनु के; आऱ्ऱल्–बल को; पुऱन् निन्ऱु–अलग खड़े रहकर; काण्टल् पोक्कि–देखना छोड़कर; अरुके निन्ऱाल्–पास खड़े रहने से; उत्तक्कु चॅय्वतु–आपके प्रति किया गया; उतवि ऍन्–उपकार क्या है। ३२९५

लक्ष्मण ने श्रीराम से उत्तर में कहा कि प्रभु! वही करणीय काम है! और भी जब राक्षस-सेना का ऐसा बल है, तब मैं भी अगर देवों के समान सिर पर हाथ रखके और अलग रहकर विना स्वर्णनिर्मित धनु के बल का प्रयोग किये आपके पास खड़ा रहूँ तो आपका क्या उपकार होगा? । ३२९५

ऍन्ऱव नेह लुऱ्ऱ कालैयि नुनुम नॅन्दाय्
पुन्ऱॊळिऱ् कुरङ्गॆ नादॅन् ऱोळिन्मे लेऱिप् पुक्काल्
नन्ऱॆनक् करुदा निन्ऱेन् अल्लदु नायि नेनुन्
पिन्ऱनि निन्ऱ पोदु मडिमैयिऱ् पिळैप्पि लॅन्ऱान् 3296

ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; अवन्–उनके; एकल् उऱ्ऱ कालैयिल्–जाने का उपक्रम करते समय; अनुमन्–मारुति ने; ऍन्ताय्–मेरे प्रभु; पुन् तॊळिल्–क्षुद्रकर्म; कुरङ्कु–वानर; ऍनातु–न मानकर (ऐसी उपेक्षा न करके); ऍन् तॊळिन् मेल् एऱि–मेरे कन्धों पर चढ़कर; पुक्काल्–(युद्ध में) प्रवेश करें तो; नन्ऱु–भला होगा; ऍन–ऐसा; करुता निन्ऱेन्–सोचता हूँ; अल्लतु–नहीं तो; नायिनेन्–कुत्ते से नीच मैं; उन् पिन्–आपके बाद; तनि निन्ऱ पोतुम्–अकेला रह जाऊँ तो भी; अटिमैयिल् पिळैप्पिल्–दासता में कमी नहीं रहेगी; ऍन्ऱान्–कहा। ३२९६

लक्ष्मण यह कहकर जब जाने लगे, तब हनुमान ने निवेदन किया कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे हमारे प्रभु ! मेरी अल्पकर्म वानर कहकर उपेक्षा किये विना मेरे कंधे पर चढ़कर लघुराज युद्धभूमि में प्रवेश करें तो अच्छा होगा। मैं ऐसा ही सोचता हूँ। और कुत्ते से भी नीच मैं आपके पास रह पाऊँ, तब मुझे यह तृप्ति होगी कि दासता में कमी नहीं रही। ३२९६

ऐयनिऱ् कियला दुण्डो विरावण नयले वन्दुऱ्
ऱैय्युम्विऱ् करत्तु वीर निलक्कुवन् ऱन्नो डेऱ्ऱाल्
मॊय्यमऱ्क् कळत्ति नुन्नैत् तुणपॆऱा नॆन्निन् मुन्ब
शॆय्युमा वॆऱ्ऱि युण्डो शेनैयुञ् जिदैयु मन्ऱे 3297

ऐय–तात; निऱ्कु–तुम्हें; इयलातु–असाध्य; उण्टो–कुछ है क्या; इरावणन्–रावण; अयले वन्तु उऱ्ऱु–पास ही में आ पहुँचकर; ऍय्युम्–(बाण) चलानेवाले; विल् करत्तु वीरन्–धनुर्हस्त वीर; इलक्कुवन् तन्नोटु–लक्ष्मण के साथ; एऱ्ऱाल्–युद्ध आरम्भ करे तो; मॊय् अमर् कळत्तिन्–व्यस्त उस युद्ध के मैदान में; उन्नै तुणै पॆऱान् ऍन्निल्–तुम्हें सहायक के रूप में न प्राप्त करे तो; मुन्प–बली; चेय्युमा पॆऱ्ऱि उण्टो–की जाय ऐसी विजय-प्राप्ति भी होगी क्या; चेनैयुम्–सेना भी; चितैयुम् अन्ऱे–छितर जायगी न। ३२९७

श्रीराम ने हनुमान से कहा— तात ! तुम्हारे लिए असाध्य कुछ है क्या ? जब रावण पास आकर धनुर्हस्त लक्ष्मण से युद्ध करेगा, तब उस व्यस्त युद्धभूमि में लक्ष्मण के साथ साथी के रूप में नहीं रहोगे, तो हे बली ! विजय मिल सकेगी क्या ? और सेना भी छितर जायगी। ३२९७

एरॆक्कॊण् डमैन्द कुञ्जि यिन्दिर शित्तॆन् बान्ऱन्
पोरॆक्कॊण् डिरुन्द मुन्ना ळिळैयवन् ऱन्नैप् पोक्किऱ्
ऱारॆक्कॊण् डुन्ना लन्ऱे वॆन्ऱदङ् गवनै यिन्नम्
वीरर्क्कुम् वीर निन्नैप् पिरिहलम् वॆल्लु मॆन्बेन् 3298

एरॆक् कॊण्टु–सौंदर्य ले; अमैन्त कुञ्चि–जिसका केश बना था उस; इन्तिरचित्तु ऍन्पान् तन्–इन्द्रजित् नाम का वह; पोरॆ कॊण्टु–युद्ध में लगा; इरुन्त मुन्नाळ्–जब रहा उस पूर्व के दिन में; इळैयवन् तन्नै–लघुभ्राता को; पोक्किऱ्ऱु–भेजा था (मैंने); आरॆ कॊण्टु–किसको मानकर; अङ्कु–वहाँ; अवनै वॆन्ऱतु–उसको जीतना; उन्नाल् अन्ऱे–तुम्हारे निमित्त नहीं क्या; वीरर्क्कुम् वीर–वीरों में श्रेष्ठ वीर; निन्नै पिरिकलन्–तुमसे अलग न होकर; वॆल्लुम्–जीतेगा; ऍन् पेन्–यही सोचता हूँ। ३२९८

जिस दिन सुन्दरकेशी इन्द्रजित् से युद्ध करना था, तब मैंने लघुराज को भेजा था किसकी सहायता के बल पर ? वहाँ लक्ष्मण से विजय पायी भी तुम्हारी सहायता से न ? हे वीरों में श्रेष्ठ ! लक्ष्मण तुमसे अलग नहीं हो तभी वह जीतेगा। यही मैं कहूँगा। ३२९८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शेऩैयैक् कात्तॆऩ् बिऩ्ऩे तिरुनहर् तीर्ऩ्दु पोऩ्द
याऩैयैक् कात्तु मऱ्ऱै यिऱैवऩैक् कात्तॆण् तीर्ऩ्द
वाऩैयित् तलत्ति ऩोडु मऱैयॊडुम् वळर्त्ति यॆऩ्ऱाऩ्
एऩैमऱ् ऱुरैक्कि लादा ऩिळवल्पिऩ् ऩॆऴुऩ्दु शॆऩ्ऱाऩ् 3299

चेऩैयै कात्तु–सेना का पालन करके; ऍऩ् पिऩ्ऩे–मेरे पीछे; तिरु नकर् तीर्ऩ्तु पोऩ्त–श्रीनगर (अयोध्या) छोड़कर जो आया; याऩैयै–उस गज (लक्ष्मण) को; कात्तु–रक्षित करके; मऱ्ऱै–और; इऱैवऩै कात्तु–राजा सुग्रीव की रक्षा करके; ऍण् तीर्ऩ्त–संख्या या विचार को पार कर रहे; वाऩै–आकाश को; इ तलत्तिऩोटुम्–इस भूमि के साथ; मऱैयॊटुम्–और वेदों के साथ; वळर्त्ति–पनपने दो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा; एऩै मऱु–उत्तर में कुछ; उरैक्किलाताऩ्–न कह सककर; इळवल् पिऩ्–लघुराज के पीछे; ऍऴुऩ्तु चॆऩ्ऱाऩ्–उठ चला (हनुमान)। ३२९९

तुम जाओ। सेना की, मेरे साथ श्रीसंपन्न अयोध्या छोड़कर जो आया है उस हाथी-सम लक्ष्मण की, तुम्हारे वानरेश सुग्रीव की रक्षा करो और कल्पना से परे देवलोक के साथ इस भूतल को और वेदों को पनपने दो। हनुमान क्या उत्तर दे? विना कुछ कहे लक्ष्मण के पीछे उठ चला। ३२९९

वीडण नीयु मऱुऩ् तम्बियो डेहि वॆम्मै
कूडिऩर् शॆय्यु मायऩ् दॆरिऩ्दऩै कूऱिक् कॊऱ्ऱम्
नीडुऱु ताऩै तऩ्ऩैत् ताङ्गिऩै निल्ला यॆऩ्ऩिल्
केडुळ दाहु मॆऩ्ऱा ऩवऩदु केट्प दाऩाऩ् 3300

वीटण–विभीषण; नीयुम्–तुम भी; उऩ् तम्पियोटु–तुम्हारे छोटे भाई के साथ; एकि–जाकर; वॆम्मै कूटिऩर्–बुरे गुणों के साथ रहनेवाले राक्षस; चॆय्युम् मायम्–जो माया रचेंगे; तॆरिऩ्ततै–वह जानकर; कूऱि–कहकर; कॊऱ्ऱम् नीटु उऱु–विजय लम्बी करनेवाली; ताऩै तऩ्ऩै–सेना को; ताङ्किऩै–आधार देकर; निल्लाय्–न रहोगे; ऍऩ्ऩिल्–तो; केटु उळतु आकुम्–हानि हो रहेगी; ऍऩ्ऱाऩ्–बोले (श्रीराम); अवऩ्–विभीषण; अतु केट्पतु आऩाऩ्–उसको मानने लगा। ३३००

श्रीराम ने विभीषण से कहा कि हे विभीषण! तुम भी अपने भाई लक्ष्मण के साथ जाओ। क्रूर राक्षस जो भी माया करें उसको पहले ही जानकर लक्ष्मण को सावधान करो। अगर तुम विजय के लिए बहुत समय लड़नेवाली सेना का रक्षक बनकर नहीं रहोगे, तो हानि होने की संभावना है! विभीषण वह बात मानकर तदनुसार चलने लगा। ३३००

शूरियऩ् शेयुञ् जॆल्वऩ् शॊऱ्ऱदे यॆण्णुञ् जॊल्लऩ्
आरियऩ् पिऩ्बु पोऩा ऩऩवरु मदुवे नल्ल
कारिय मॆऩ्ऩक् कॊण्डार् कडऱ्पडै कात्तु निऩ्ऱार्
वीरियऩ् बिऩ्ऩर्च् चॆय्द शॆयलॆलाम् विरिक्क लुऱ्ऱाम् 3301

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चूरियन् चेयुम्–सूर्य का पुत्र भी; चॅल्वन्–धनी श्रीराम का; चॊऱ्ऱते–कहना; ऍण्णुम् चॊल्लन्–मानकर बात करनेवाले; आरियन् पिन्पु–आर्य लक्ष्मण के पीछे-पीछे; पोतान्–गया; अत्तॆवरुम्–सभी; अतुवे नल्ल कारियम्–वही अच्छा कार्य है; ऍन्नत् कॊण्टार्–ऐसा मानकर; कटल् पटै–सागर (विशाल) सेना का; कात्तु निन्ऱार्–रक्षा करते रहे; वीरियन्–वीर श्रीराम ने; पिन्नर्–बाद; चॆय्त चॆयल् ऍल्लाम्–जो किया वह काम सारा; विळम्पल् उऱ्ऱाम्–कहने लगे (हम, कवि)। ३३०१

सूर्यसूनु सुग्रीव भी लक्ष्मण के पीछे जाने लगा जो कि धनी श्रीराम की बात समझकर बोलनेवाले हैं। सभी उसी को उत्तम कार्य मानकर सागर (विशाल) सेना की रक्षा में लगे रहे। अब हम आगे श्रीवीरराघवकृत कार्य का वर्णन करेंगे। ३३०१

विल्लिन्तॆत् तॊऴुदु वाङ्गि येऱ्ऱिनान् विन्नाण् मेरुक्
कल्लॆन्तच् चिऱन्द देयुङ् गरुणैयङ् गडले यन्न
ऍल्लॊळि मार्बिल् वीरक् कवशमिट् टिळैया वेदच्
चॊल्लॆन्तत् तॊलैया वाळित् तूणियुम् बुऱत्तुत् तूक्कि 3302

अम् करुणै कटले–सुन्दर करुणा-सागर श्रीराम ने ही; तॊऴुतु–नमन करके; विल्लिन्तै वाङ्कि–धनु को लेकर; विल् नाण् एऱ्ऱिनान्–धनु की प्रत्यंचा चढ़ायी; मेरु कल् ऍन्त–मेरु पर्वत के समान; चिऱन्ततेयुम्–श्रेष्ठ हो तो भी; अन्न–वैसे; ऍल् ऒळि मार्पिल्–प्रकाशमय वक्ष में; वीरम् कवचम् इट्टु–वीर कवच धारण करके; इळैया वेतम् चॊल्–अपौरुषेय वेद-वचन; ऍन्त–के समान; तॊलैया–अक्षय; वाळि–बाणों-सह; तूणियुम्–तूणीर; पुऱत्तु तूक्कि–पीठ से बाँधकर। ३३०२

मनोरम करुणासागर श्रीराम ने नमन करके धनु को हाथ में लिया और प्रत्यंचा चढ़ायी। फिर मेरुपर्वत-समान श्रेष्ठ अपने छविमय वक्ष में कवच पहन लिया और अपौरुषेय वेदवाक्यों के समान अक्षय तूणीर पीठ से बाँध लिया। ३३०२

ओशन्तै नूऱ्ऱिन् वट्ट मिडैविडा दुऱैन्द शेन्तैत्
तूशिवन् दण्णल् दन्नैप् पोक्कऱ वळैन्दु शुऱ्ऱि
वीशिन्त पडैयु मम्बु मिडैदलुम् विण्णो राक्कै
कूशिन्त पॊडियाल् ऍङ्गुङ् गुमिऴ्त्तन्त वियोम कूडम् 3303

नूऱ्ऱिन् ओचन्तै वट्टम्–हजार योजन तक वर्तुलाकार फैली; इटै विटातु–निरन्तर; उऱैन्त–जो रही; चेन्तै–उस (शत्रु) सेना का; तूचि वन्तु–अग्र भाग आकर; अण्णल् तन्नै–प्रभु को; पोक्कु अऱ–जाने का मार्ग न छोड़कर; वळैन्तु–चारों ओर आकर; चुऱ्ऱि–घेरकर; वीचिन्त पटैयुम्–जो फेंकता रहा वे हथियार और; अम्पुम्–बाण; मिटैतलुम्–पास आये तो; विण्णोर् आक्कै–देवों के शरीर; कूचिन्त–संकुचित हुए; पॊटियाल्–धूल से; वियोम कूटम् ऍङ्कुम्–व्योम-भाग में सर्वत्र; कुमिळत्तन्त–भर उठा। ३३०३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सौ योजन दूर तक गोलाकार राक्षस-सेना खचाखच भरी थी। उसका अग्रभाग आकर श्रीराम को ऐसा घेर गया कि निकलने का कोई मार्ग नहीं रहा। फिर उन्होंने जो चलाये वे युद्ध के आयुध और बाण विपुल परिमाण में आने लगे तो देवों के भी शरीर संकुचित हो गये। तब जो धूलि उठी उससे व्योमलोक में सब स्थान भरकर फूल गये। ३३०३

कण्णऩे यॆळिये मिट्ट कवशमे कडले यऩ्ऩ
वण्णऩे यऱ्ऱतिऩ् वाऴ्वे मऱैयवर् वलिये माऱा
दॊण्णुमे नीय लादो रॊरुवर्क्किप् पडमे लूऩ्ऱ
ऎण्णमे मुडित्ति यॆऩ्ऩा वेत्तिऩ रिमैयो रॆल्लाम् 3304

इमैयोर् ऎल्लाम्–सभी देव; कण्णऩे–दयादृष्टि रखनेवाले; ऎळियेम् इट्ट–हम दोनों के पहने; कवचमे–कवच; कटले अऩ्ऩ–समुद्र के समान; वण्णऩे–वर्ण वाले; अऱ्ऱतिऩ् वाऴ्वे–धर्म के जीवन; मऱैयवर् वलिये–वेदज्ञों के बल; नी अलातोर्–आपके सिवा; ऒरुवर्क्कु–किसी के लिए भी; माऱातु–विना पीछे आये; इ पटै मेल् ऊऩ्ऱ–इस सेना पर आक्रमण करने की; ऒण्णुमे–शक्ति रहेगी क्या; ऎण्णमे मुटित्ति–हमारा मंशा पूरा करें; ऎऩ्ऩा–कहकर; एत्तितऱ्–स्तुति की। ३३०४

तब सभी देवों ने श्रीराम से प्रार्थना की, हे दयादृष्टि रखनेवाले! हमारे रक्षक कवच! सागरश्याम! धर्म के आश्रय! वेदज्ञ विप्रों के बल! आपको छोड़ कौन इस सेना का सामना कर सकता है? आप हमारी इच्छा पूरी करें (यानी इनका नाश कर दें)। ३३०४

मुऩिवरे मुदल्व राय वऱ्ऱतुऱै मुऱ्ऱि ऩोर्हळ्
तऩिमैयु मरक्कर् ताऩैप् पॆरुमैयुऩ् दरिक्क लादार्
पऩिवरु कण्णर् विम्मिप् पदैक्किऩ्ऱ नॆञ्जर् पावत्
तऩैवरुऩ् दोऱ्क वण्णल् वॆल्हवॆऩ् ऱाशि शॊऩ्ऩार् 3305

मुऩिवरे मुतल्वर् आय–मुनि आदि; अऱम् तुऱै मुऱ्ऱिऩोर्कळ्–धर्ममार्गनिष्ठ; तऩिमैयुम्–श्रीराम का एकाकीपन और; अरक्कर् ताऩै–राक्षसों की सेना की; पॆरुमैयुम्–बड़ाई; तरिक्कलातार्–देखकर अधीर जो बने; पऩि वरुकण्णर्–अश्रु-भरे नेत्रों वाले; विम्मि–दुःखी हो; पतैक्किऩ्ऱ–धड़कनेवाले; नॆञ्चर्–मनों के; पावत्तु अऩैवरुम्–सभी पापी; तोऱ्क–हार जायँ; अण्णल् वॆल्क–महान श्रीराम जीतें; ऎऩ्ऱु आचि चॊऩ्ऩार्–ऐसे आशीर्वचन बोले। ३३०५

मुनि और धर्मनिष्ठ लोगों ने श्रीराम की तन्हाई देखी और राक्षस-सेना की बड़ाई तो वे अधीर हो गये। उनकी आखें अश्रुपूर्ण हो गयीं और उनका हृदय दुःख से धड़कने लगा। उन्होंने शुभकामना प्रगट की कि पापी सब हार जायँ। महान् श्रीराम जीतें। ३३०५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱुम् वेऱ ऱत्तुळ् निऱ् वान नाड नॅत्तुळोर्
कॊऱ्ऱ विल्लि वॅल्ह वञ्ज मायर् वीह कुवलयत्
तुऱ्ऱ तीमै तीर्ह विऱ्ऱो डॅऱु कूऱि नार्निलम्
तुऱ्ऱ वॅम्ब डॅक्कॅ नीश रिऱ्ऱ विऱ्ऱ शॊल्लिनार् 3306

मऱुम्–और भी; वेऱु अऱत्तुळ् निऱ्ऱ–अलग धर्मरत; वानम् नाटु–व्योम-लोक के; अनॅत्तुळोर्–सब स्थानों के वासी देवों ने; कॊऱ्ऱम् विल्लि–विजयकोदण्ड-पाणी; वॅल्क–जीतें; वञ्चम् मायर्–वंचक मायावी; वीक–मरें; कुवलयत्तु उऱ्ऱ तीमै–भूमि पर आया संकट; इऱ्ऱोटु तीर्क–आज से मिट जाय; ऍऱु कूऱिनार्–ऐसा मंगल-कामना की; निलम् तुऱ्ऱ–भूमि में जो भरे रहे; वॅम् पटै कै–भयंकर हथियारों को धारण करनेवाले हाथों के; नीचर्–नीच; इऱ्ऱ इऱ्ऱ–ऐसी-ऐसी बातें; चॊल्लिनार्–बोले। ३३०६

और भी इनसे अलग सभी व्योमवासियों ने शुभकामना की कि विजय-कोदंडपाणी विजयी हों! भूमि पर आया संकट आज ही (के साथ) समाप्त हो! तब भूमि पर जो भरे आये उन भयंकर आयुधहस्त राक्षसों ने ये (निम्नोक्त) बातें कहीं। ३३०६

इरिन्द शेनै शिन्दि यारु मिऱ्ऱि येह निऱ्ऱुनम्
विरिन्द शेनै कण्डि यादु मञ्ज लिऱ्ऱि वॅञ्जरम्
तॅरिन्दु शेव हऱ्ऱि ऱम्ब लिऱ्ऱि यॅय्दु शॅय्हैयान्
पुरिन्द तन्मै वॅऱ्ऱि मेलु नऱ्ऱु मालि पॊय्क्कुमो 3307

नम्–हमारी; विरिन्त चेनै कण्टु–विस्तृत सेना देखकर; इरिन्त चेनै–जो भागी थी वह सेना; चिन्ति–अस्त-व्यस्त होकर; यारुम् इऱ्ऱि एक–कोई भी बाक़ी न छोड़कर चली गयी तो भी; यातुम् अञ्चल् इऱ्ऱि–विना किसी डर के; निऱ्ऱु–स्थित रहकर; वॅम् चरम्–भयंकर अस्त्र; तॅरिन्तु–चुन लेकर; चॅवकऱ्–वीर; तिऱम्पल् इऱ्ऱि–विना किसी विकार के; ऍय्तु–बाण चलाने के; चॅय्कैयान्–कार्य में; पुरिन्त तन्मै–जो दिखाता है वह गुण; वॅऱ्ऱि मेलुम् नऱ्ऱु–विजय से भी बढ़कर (श्लाघ्य) है; माली पॊय्क्कुमो–माल्यवान झूठ कहेगा क्या। ३३०७

हमारी बड़ी सेना को देखकर वानर-सेना अस्त-व्यस्त हो अलग-अलग भाग गयी और कोई भी वहाँ नहीं रहा। तो भी विना किसी डर के राम खड़ा रहता है, भयंकर अस्त्र चुन-चुनकर अप्रमत्त रूप से चलाता है। उसका यह कार्य विजय से भी अधिक प्रशंसनीय है! हाँ माल्यवान ने सच ही कहा था! उसका कथन झूठा हो सकता है क्या? । ३३०७

पुरङ्ग ळॅय्द पुङ्ग वऱ्कु मुण्डु तेर्पॊ रुन्दिनार्
परन्द तेवर् माय नम्मै वेर रुत्त पण्डैनाळ्
विरैन्दु पुळ्ळिन् मीदु विण्णु ळोर्ह ळोडु मेविनान्
करन्दि लन्त निन्तॊ रुत्त नेरुम् वन्दु कालिनान् 3308

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुरङ्कळ् ऍय्त–त्रिपुर पर बाण चलाया जिसने; पुङ्कवर्कुम्–उस पुंगव के पास भी; तेर् उण्टु–रथ (भूमि रूपी) है; परन्त तेवर्–बड़ी संख्या में आये देव; पॊरुन्तिनार्–साथ लगे रहे; मायन्–विष्णु ने; नम्मै–हमें; वेर् अऱुत्त–(जिस दिन) निर्मूल किया था; पण्टै नाळ्–उस पुराने दिन में; पुळ्ळिन् मीतु–पक्षी (राज गरुड़) पर; विरैन्तु–सवेग; विण्णुळोर्कळोटुम्–देवों के साथ; मेवित्तान्–आया; तनित्तु ऒरुत्तन्–अकेला एक; करन्तिलन्–नहीं छिपता; कालित्तान्–पैदल ही; वन्तु–आकर; नेरुम्–युद्ध करता है। ३३०८

त्रिपुरारी (भूमि को) रथ के रूप में ले आया, उसके साथ भी देव बड़ी संख्या में आये थे। विष्णु ने जिस दिन हमें निर्मूल किया, उस समय वह भी पक्षीराज गरुड़ पर देवों को साथ लेकर ही आया था। पर इसे देखो ! यह अकेला है, छिपता नहीं ! और पैदल आया युद्ध करता है ! । ३३०८

तेरु मावु मियानै योडु शीय मियाळि यादिया
मेरु मानु मॆय्यर् निन्ऱ वेलै येळिन् मेलवाल्
वारुम् वारु मॆन्ऱु ळैक्कु मानि डर्किम् मण्णिडैप्
पेरु माऱु नम्मि डैप्पि ळैक्कु माऱु मॆङ्ङने 3309

तेरुम्–रथ और; मावुम्–अश्व; यानैयोटु–हाथी और; चीयम्–सिंह; याळि–शरभ; आतिया–आदि; मेरु मानुम्–मेरु-तुल्य; मॆय्यर्–शरीर वाले; एळिन् वेलै मेल् निन्ऱ–सातों समुद्रों से भी अधिक हैं; वारुम् वारुम्–आओ, आओ; ऎन्ऱु–ऐसा; अळैक्कुम्–आमंत्रित करनेवाले; मानिटर्कु–मानव के लिए; इ मण् इटै–इस भूमि में; पेरुम् आऱुम्–बचकर जाने का प्रकार; नम् इटै–हमारे पक्ष में रहनेवालों के; पिळैक्कुम् आऱुम्–बचने का मार्ग; ऎङ्ङने–कैसा। ३३०९

इधर रथ, अश्व, हाथी, सिंह, शरभ आदि सेना के वीरों के साथ मेरु-सदृश शरीर वाले हैं— सब मिलकर सातों समुद्रों से भी अधिक विस्तार में हैं। तो भी वह मानव 'आओ-आओ' कहकर आमंत्रित कर रहा है ! अब भूमि में इसके बचने का मार्ग कहाँ और हम भी बचें कैसे ? । ३३०९

ऎन्ऱु शॆन्ऱि रैत्तॆ ळुन्दॊर् शीय वेऱ डर्त्ततदैक्
कुन्ऱु शूळ्व ळैत्त पोऱ्ऱॊ डर्न्द शेनै कूडलुम्
नन्ऱि दॆन्ऱु ञाल मेळु नाह मेळु मानन्दन्
वॆन्ऱि विल्लै वेद नाद नाणॆ ऱिन्द वेलैवाय् 3310

ऎन्ऱु–ऐसा कहते हुए; चॆन्ऱु–(राक्षस) जाकर; इरैत्तु ऎळुन्तु–आरव मचा उठकर; ओर् चीयम् एऱु–एक नर केसरी को; अटर्त्ततै–जिसने आक्रमण किया; कुन्ऱु–पर्वत (हाथी); शुळ् वळैत्त पोल्–चारों ओर से घेर गये जैसे; तॊटर्न्त चेनै–पीछे लगी सेना के; कूटलुम्–मिलते ही; वेतम् नानन्–वेदनाथ ने; इतु नन्ऱु–यह अच्छा है; ऎन्ऱु–कहकर; ञालम् एळुम्–(ऊपर के) सातों लोक;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

माकम् एऴुम्–नीचे के सातों लोक; मातुम्–सदृश; तन् वॆन्ऱि विल्लै–अपने विजयी धनु का; नाण् ऎऱिन्त–जब ज्यास्वन निकाला; वेलै वाय्–उस समय । ३३१०

ऐसा कहते हुए राक्षस लोग नारों के साथ श्रीराम को चारों ओर से ऐसा घेर गये जैसे एक नर केसरी को पर्वतोपम हाथी घेर लेते हों। तब वेदनायक श्रीराम ने ऊपर के और नीचे के चौदहों भुवन-सदृश अपने विजयकोदंड के डोरे को टंकृत किया। तब । ३३१०

कदम्बु लर्न्द शिन्दै वन्द कावल् यानै मालॊडु
मदम्बु लर्न्द निन्ऱ वीरर् वाय्पु लर्न्द मावॆलाम्
पदम्बु लर्न्द वेह माह वाळ रक्कर् पण्बुशाल्
विदम्बु लर्न्द दॆन्निन् वॆन्ऱ वॆन्ऱि शॊल्ल वेणुमो 3311

कावल् वन्त यानै–रक्षा देने आये हाथी; मालॊटु–नशे के साथ; मतम् पुलर्न्त–मद से हीन हो गये; चिन्तै वन्त–मन में उठे; कतम् पुलर्न्त–कोप से हीन हो गये; निन्ऱ वीरर् वाय्–वहाँ जो रहे उन वीरों के मुख; पुलर्न्त–सूख गये; मा ऎलाम्–सभी अश्व; पतम् वेकम्–पैरों के वेग में; पुलर्न्त–कम हो गये; माकम्–आकाश के समान विस्तृत; वाळ् अरक्कर्–क्रूर राक्षसों के; पण्पु–सामर्थ्य की; चाल् वितम्–उच्च स्थिति; पुलर्न्ततु–बिगड़ गयी; ऎन्निन्–तो; वॆन्ऱ–(श्रीराम ने) जो विजय पायी; वॆन्ऱि–उस विजय का हाल; चॊल्ल वेणुमो–कहना चाहिए क्या । ३३११

सेना की रक्षा के लिए जो हाथी आये उनका नशा दूर हुआ। मद भी सूख गया। उनके मन में उठा क्रोध भी ग़ायब हो गया। वहाँ जो स्थित रहे उन वीरों का मुख सूख गया। अश्वों की पदगति कम हो गयी। आकाश के समान विस्तृत सेना के क्रूर राक्षसों का युद्धसामर्थ्य भी कम हो गया। तो श्रीराम की विजय का हाल कहना भी है क्या ? । ३३११

वॆऱित्ति रिन्द वाशि योडु शीय मावु मीळियुम्
शॆऱित्त मैन्द शिल्लि यॆन्नु माऴि कूडु तेरॆलाम्
मुऱित्तै ऱिन्दु मुन्द यानै वीशु मूशु पाहरॆप्
पिऱित्ति रिन्दु शिन्द वन्दॊ राहु लम्बि ऱन्ददाल् 3312

चीयम् मावुम्–सिंह जानवर और; मीळियुम्–पिशाच; वॆऱित्तु–पागल बनकर; इरिन्त वाचियोटु–भागते अश्वों के साथ; चॆऱित्तु अमैन्त–जिनसे बाँधे गये थे; चिल्लि ऎन्नुम्–'चक्री' कहलानेवाले; आऴिकूटु–पहियोंदार; तेर् ऎलाम्–सभी रथों को; मुऱित्तु ऎऱिन्तु मुन्त–तोड़ डालकर आगे बढ़े; यानै–और हाथी; वीचुम्–(अंकुश का) प्रयोग करनेवाले; मूच पाकरै–मिले रहे पीलवानों को; पिऱित्तु–प्राणों से अलग करके; इरिन्तु चिन्त–तितर-बितर भागे; ओर् आकुलम्–एक हलचल; वन्तु पिऱन्ततु–मच गयी । ३३१२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिंह और पिशाच भ्रांत हो गये और अश्व भड़क उठे। सबने पहियोंदार रथों को तोड़ा और आगे भागे। हाथी भी अंकुशप्रयोक्ता महावतों को मारकर तितर-बितर हो गये। तब राक्षसों की सेना में एक भारी हलचल पैदा हो गयी। ३३१२

इन्नि मित्त मिप्प डैक्कि डैन्दु वन्द डुत्तदोर्
तुन्नि मित्त मॅन्ऱु कॊण्डु वानु ळोर्ह डुळ्ळिनार्
अन्नि मित्त मुऱ्ऱ पोद रक्कर् कण्ण रङ्गमेल्
मिन्नि मिर्त्त वन्न वाळि वेद नावन् वीशिनान् 3313

इ निमित्तम्–ये शकुन; इ पटैक्कु–इस सेना पर; इटैन्तु वन्तु–कष्ट आकर; अटुत्ततु–पहुँचा है, ऐसा; ओर्–अपूर्व; तुन् निमित्तम्–दुश्शकुन हैं; ॲन्ऱु कॊण्टु–ऐसा मानकर; वानुळोर्कळ्–व्योमवासी; तुळ्ळिनार्–उछले; अ निमित्तम्–वे शकुन; उऱ्ऱ पोतु–जब हुए तब; अरक्कर् कण् अरङ्क–राक्षस व्यग्र हुए और; मेल्–उन पर; मिन् निमिर्त्त अन्न–उस बिजली के समान जो कि सीधी बनायी गयी हो; वाळि–शरों को; वेतनातन् वीचिनान्–श्रीराम ने चलाये। ३३१३

देवों ने सोचा कि ये सब शकुन राक्षस-सेना पर आनेवाले बड़े संकट के सूचक दुश्शकुन हैं। इसलिए वे संतोष से उछले। तब राक्षसों को बेचैन करते हुए वेदनायक श्रीराम ने उन पर अवक्र विद्युत्-तुल्य बाण चलाये। ३३१३

आळि मेलु माळिन् मेलु मानै मेलु माडन्मा
मीळि मेलुम् वीरर् मेलुम् वीरर् तेरिन् मीदिनुम्
वाळि मेलुम् विल्लिन् मेलु मण्णिन् मेल्व ळर्न्दमात्
तूळि मेलु मेऱ वेऱ वीरन् वाळि तूविनान् 3314

वीरन्–श्रीवीरराघव; मण्णिन् मेल्–भूमि पर; वळर्न्त मा तूळि–जो उठ बढ़ी वह धूल; मेलुम् एऱ एऱ–और ऊपर-ऊपर चढ़ी तो; आळि मेलुम्–शरभों पर; आळिन् मेलुम्–सारथियों पर; आनै मेलुम्–गजों पर; आटल् मा–ताक़तवर अश्वों पर; मीळि मेलुम्–पिशाचों पर; वीरर् मेलुम्–वीरों पर; वीरर् तेरिन् मीतिनुम्–वीरों के रथों पर; वाळि मेलुम्–उनके प्रेरित शरों पर; विल्लिन् मेलुम्–चापों पर; वाळि तूविनान्–बाण बरसाये। ३३१४

भूमि पर उठी धूलि उत्तरोतर बढ़ी और ऊपर चली। तब श्रीराम के बाणों की, रथ के शरभों, सारथियों, गजों, सशक्त अश्वों, भूतों और वीरों, वीरों के रथों, उनसे प्रेरित शरों और उनके हाथ के धनुओं पर विपुल वर्षा-सी हुई। ३३१४

मलैवि ळुन्द वावि ळुन्द मान यानै मळ्ळर्शॅन्
कलैवि ळुन्द [illegible] तूम् [illegible] ताळुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिलैवि ऴुन्द वावि ऴुन्द तिण्ब दाहै तिङ्गळिन्
कलैवि ऴुन्द वावि ऴुन्द वॆळ्ळॆ यिऱ्ऱ काडॆलाम् 3315

मातम् यातै–श्रेष्ठ गज; मलै विऴुन्तवा–पर्वत गिरे जैसे; विऴुन्त–गिरे; ताय वाचि–लपक चलनेवाले घोड़े; मऴ्ळर् चॆम् तलै–वीरों के लाल सिर; विऴुन्तवा–जैसे गिरे वैसे; विऴुन्त–गिरे; ताळ् अऱम् चिलै–जिनके बाजू कटे वे धनु; विऴुन्तवा–जैसे गिरे वैसे; तिण् पताकै–सुदृढ़ पताकाएँ; विऴुन्त–कटकर गिरीं; वॆळ् ॲयिऱ काटु ॲलाम्–श्वेत दाँतों के सभी समूह; तिङ्कळिन् कलै–चन्द्रकलाएँ; विऴुन्तवा–जैसे गिरे; विऴुन्त–वैसे गिरीं। ३३१५

श्रीराम के बाणों से आहत होकर शानदार हाथी गिरते पर्वतों के समान गिरे। लपक चलनेवाले अश्व कटकर गिरते राक्षसों के लाल सिरों के समान गिरे। धनु बाजू कटकर ऐसे गिरे जैसे सुदृढ़ पताकाएँ कटकर गिरीं। राक्षसों के सफ़ेद वक्र दाँतों के समूह चन्द्र की कलाओं के समान गिरे। ३३१५

वाडै नालु पालुम् वीश माह मेह मालैवॆङ्
गोडै मारि पोल वाळि कूड वोडै यानैयुम्
आडन् मावुम् वीरर् तेरु माळु माळ्व दानवाल्
पाडु पेरु माऱु कण्डु कण्शॆल् पण्बु मिल्लैयाल् 3316

नालु पालुम्–चारों तरफ़; वाटै वीच–जब उदीची हवा बहती है; माकम्–तब आकाश की; मेकम् मालै–मेघमालाएँ; वॆम् कोटै मारि पोल–जो बरसाती हैं उस गरम ग्रीष्मकालीन वर्षा के समान; वाळि कूट–बाणों के मिलने से; ओटै यानैयुम्–मुखपट्ट से अलंकृत हाथी और; आटल् मावुम्–ताक़तवर अश्व; वीरर् तेरुम्–वीरों के रथ और; आळुम्–पदातिक वीर; माळ्वतान–मरते बने; आल्–इसलिए; पाटु–पास; पेरुम्–वहनेवाली; आऱु कण्टु–रक्त-नदी को देखकर; कण्–दृष्टि का; चॆल् पण्पुम्–दौड़ने का गुण; इल्लैयाल्–नहीं रहा। ३३१६

चारों ओर उदीची हवा के बहते वक़्त आकाश की मेघमाला से निकलनेवाली ग्रीष्मकालीन वर्षा के समान श्रीराम की शर-वर्षा होने लगी। तो मुखपट्ट से अलंकृत हाथी, ताक़तवर घोड़े, वीरों के रथ और पदाति वीर मिटे। तब पार्श्व में जो रक्त की नदी बही वह आँखों की दृष्टि के गुण को बेकार करती बही (यानी दृष्टि उसका अंत नहीं देख सकी)। ३३१६

विऴित्त कण्गळ् कैहण् मॆय्हळ् वेऱ लैक्क ऴुत्तिनिल्
तॆऴित्त वाय्हळ् शॆल्ल लुऱ्ऱ ताळ्ह डोळ्हळ् शॆल्लिनैप्
पऴित्त वाळि शिन्द निन्ऱु पट्ट वन्ऱि विट्टकोल्
कऴित्त वायु तङ्गा ळॊन्ऱु शॆयद दिल्लै कणडदे 3317

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चॅल्लिनै पळित्त–मेघ की निंदा करनेवाले; वाळि–शरों को; चिन्त–श्रीराम ने चलाया तो; विळित्त कण्कळ्–खुली आँखें; कैकळ्–हाथ; मॅय्कळ्–और शरीर; कळुत्तिनिल्–कण्ठ पर से; वॅल्तलै–जीतने की; तॅळित्त वाय्कळ्–निंदा करनेवाले मुख; चॅल्लल् उऱ्ऱ–गमनशील; ताळ्कळ्–पैर और; तोळ्कळ्–कंधे; मित्त पट्ट अऱ्ऱि–बेकार रहे इसके अलावा; विट्ट कोल्–(राक्षसों से) प्रयुक्त शरों और; कळित्त आयुतङ्कळ्– (म्यानों से) बाहर निकाले गये हथियारों को; ऑऱ्ऱु चॅय्ततु–श्रीराम की कुछ हानि करता; कण्टतु इल्लै–नहीं देखा गया। ३३१७

श्रीराम ने मेघों की वर्षा से भी अधिक शर चलाये। तब राक्षसों की खुली आँखें, हाथ, शरीर, कंठ पर रहकर डींग मारते रहे मुख, गमनशील पैर और कंधे सब बेकार रहे! इसको छोड़कर राक्षसों से प्रेरित बाणों और उठाये गये हथियारों ने श्रीराम का कुछ नहीं बिगाड़ा। ३३१७

तॉडुत्त वाळि योडु विऱ्ऱु णिन्दु वीळु मुन्ऱुणिन्
दॅडुत्त वाळ्ह ळोडु तोळ्ह ळिऱ्ऱु वीळु मऱ्ऱुडन्
कडुत्त ताळ्हळ् कण्ड माहु मॅङ्ङ नेह लन्दुनेर्
तडुत्तु वीरर् तामु मॉन्ऱु शॅय्यु माश लत्तिनाल् 3318

तॉट्त्त–चलाये गये; वाळियोट्–(राक्षसों के) शरों के साथ; विल्–धनुओं के; तुणिन्तु वीळुम् मुन्–कटकर गिरने से पहले; तुणिन्तु अॅट्त्त–साहस के साथ ली गयी; वाळ्कळोट्–तलवारों के साथ; तोळ्कळ्–कंधे; इऱ्ऱु वीळुम्–कटकर गिर जाते; मऱ्ऱु–और भी; उटन्–तुरन्त; कट्त्त ताळ्कळ्–वेगवान पैर; कण्टम् आकुम्–टुकड़े बनते; वीरर्–(राक्षस) वीर; नेर् कलन्तु–सीधे सामना करके; तट्त्तु–(श्रीराम के शरों को) रोककर; तामुम्–स्वयं; चलत्तिनाल्–कोप से; ऑन्ऱु चॅय्युमा–कुछ कर सकें, यह बात; अॅङ्ङनै–हो कैसे। ३३१८

राक्षसों के चलाये गये शर धनुषों के साथ कटकर गिरें, इसके पहले ही साहस के साथ जो तलवारें उन्होंने लीं उनके साथ उनके कंधे कटकर गिर जाते। और साथ-साथ गतिशील पैर छिन्न-भिन्न हो जाते। फिर वीर सामने आकर श्रीराम के शरों को रोकें और कोप दिखाकर कुछ करें सो कैसे हो सकता था? । ३३१८

कुरन्दु णिन्दु कण्शि दैन्दु पल्ल णङ्गु लैन्दुपेर्
उरन्दु णिन्दु वीळ्व दन्ऱि यावि योड वॉण्णुमो
शरन्दु णिन्द वॉन्ऱै नूऱु शॅन्ऱु शॅन्ऱु तळ्ळलाल्
वरन्दु णिन्द वीरर् पोरिन् मुन्द वुन्दु वाशिये 3319

तुणिन्त ऑन्ऱै–(श्रीराम ने जिसका निशाना बनाने का) निश्चय किया उस पर; चरम्–चलाया गया शर; नूऱु चॅन्ऱु–सौ बनकर जाता; तळ्ळलाल्–और गिराता, इसलिए; वरम्–वर-बल से; तुणिन्त वीरर्–साहस करनेवाले वीर; पोरिन्–युद्ध में; मुन्त–आगे; उन्तु–जिन्हें चलाते हैं वे; वाचि–अश्व; कुरम् तुणिन्तु–खुर कटवाकर; कण चितैन्तु–आँखें नष्ट करा लेकर; पल्–दाँतों के साथ; अणम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुलैन्तु–ओंठ खोकर; पेर् उरम् तुणिन्तु–बड़ी छाती कटवाकर; वीऴ्वतु अऱ्ऱि–गिरना छोड़कर; आवि–प्राणों के साथ; ओट ऒण्णुमो–दौड़ सकेंगे क्या। ३३१९

श्रीराम जिसका निशाना बाँधते उस पर उनके शर एक के सौ-सौ बनकर जाते और मार गिराते। इसलिए वर के बल से साहस के साथ जिन अश्वों को राक्षसों ने युद्ध में आगे भेजा उनके खुर कटे, आँखें छिन्न हुईं। दाँतो के साथ मुख का ऊपरी भाग कुचल गया। और बड़ी छातियाँ कट गयीं। और वे मरकर गिरे। इसके सिवा बेचारे क्या प्राण बचाकर भाग सकते थे ?। ३३१९

ऊर वुऱ्ऱिऱ् मुऱ्बु पट्टु यऱ्ऱ वॆम्बि णङ्गळाल्
पेर वॊल्व दऱ्ऱु पेरि ऩायि रम्बॆ रुञ्जरम्
तूर वॊऱ्ऱु नूऱु कूऱु पट्टु हुऱ्ऱु यक्कलाल्
तेर्ह ळॆऱ्ऱु वऱ्द पाबि यॆऱ्ऱ शॆय्है शॆय्युमे 3320

ऊर उऱ्ऱिऱ्–(रथ) धीरे-धीरे चलना आरम्भ करें तो; मुऱ्पु पट्टु–पहले युद्ध में मरकर; उयर्ऱ्त–उससे संख्या में बढ़ी; वॆम् पिणङ्कळाल्–गरम लाशों के कारण; पेर ऒल्वतु अऱ्ऱु–चल सकनेवाले नहीं हैं; पेरिऱ्–चलते तो; आयिरम्–हजार; पॆरु चरम्–बड़े शर; तूर–लग जाते हैं, इसलिए; ऒऱ्ऱु–एक-एक के; नूऱु कूऱुपट्टु–सौ-सौ टुकड़े बनकर; उकुम्–चू जाते; तुयक्कु अलाल्–बेकार होने के सिवा; परबि–बड़े विस्तार में; तेर्कळ् ऎऱ्ऱु वऱ्त–रथों का नाम ले आये वे; ऎऱ्त चॆय्युम्–क्या करते। ३३२०

रथ जाने लगते तो सामने पहले मरे वीरों की लाशों के ढेरों के रहने के कारण वे जा नहीं पाते। कुछ चलते भी तो श्रीराम के हज़ारों शर उन पर लगते और वे सौ-सौ खण्डों में कटकर चू जाते। इसलिए रह बेकार जाने के अलावा रथ का नाम धारण करके आये वे क्या काम करते ?। ३३२०

ऎट्टु वऱ्ऱि शॆक्क णिऱ्ऱ यावुम् वल्ल यावरुम्
किट्टि ऩुय्न्दु पोहि लार्ह ळॆऱ्ऱ निऱ्ऱ केळ्वियाल्
मुट्टुम् वॆङ्गण् मात ऩायै यम्बु राय मुऱ्ऱमे
पट्टु वऱ्द पोल्वि ऴुऱ्द वॆऱ्ऱ तऱ्मै पण्णुमे 3321

मुट्टुम्–चुभनेवाली; वॆम् कण्–भयंकर आँखें; मातम्–और अभिमान रखने वाले; यानै–हाथी; अम्पु उराय्–शरों के लगने से; मुऱ्ऱमे–पहले ही; पट्टु वऱ्त पोल्–मरे आये के समान; विऴुऱ्त–गिरे; ऎऱ्त तऱ्मै पण्णुमे–क्या काम कर सकते; वल् तिचै–सुदृढ़ दिशाओं; ऎट्टुक् कण् निऱ्ऱ–आठों में जो खड़े रहे; यावुम्–सभी (सेना-विभाग); वल्ल यावरुम्–सभी बलवान वीर; किट्टिऱ्–पास जायें तो; उय्न्तु पोकिलार्कळ्–बचकर नहीं जा सकेंगे; ऎऱ्त–इसलिए; केळ्वियाल् निऱ्ऱ–प्रश्न के साथ खड़े रहे। ३३२१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चुभती-सी आँखों वाले और शानदार गज शरों के लगने से ऐसे गिरते मानो वे पहले ही मरकर किसी विध चल आये हों। फिर वे क्या करते ? वे इतना ही कर सकते थे कि लोगों के मन में यह प्रश्न उठा दें कि सबल आठों दिशाओं में रही सब सेनाएँ और वीर समर्थ वीर श्रीराम के पास जायँ तो बचकर जा नहीं सकेंगे। अतः क्या करें ? । ३३२१

बावि कॊण्ड पुण्ड रीह मऩ्ऩ कण्णऩ् वाळियॊऩ्
ऱेवि ऩुण्ड नूऱु कोडि कॊल्लु मॆऩ्ऩ वॆण्णुवाऩ्
पूवि ऩण्डर् कोऩु मॆण्म यङ्गु मऩ्ऩ पोरिऩ्वन्
दावि कॊण्ड काल ऩार्ह ऱुप्पु मॆऩ्ऩ दाहुमे 3322

वावि कॊण्ट–सरोवर में उगे; **पुण्टरीकम् अऩ्ऩ**–कमलों के समान; **कण्णऩ्**–नेत्रोंवाले; **वाळि ऒऩ्ऱु एविऩ्**–शर एक चलावें तो; **उण्टे**–वह मिट्टी का गोला; **नूऱु कोटि कॊल्लुम्**–शतकोटि का हनन करता; **ऎऩ्ऩ**–इस कारण से; **ऎण्णुवाऩ्**–(मृतकों की) गिनती रखनेवाला; **पूविऩ्**–कमलवासी; **अण्टर् कोऩुम्**–देवपति भी; **मॆण् मयङ्कुम्**–गिनती में भ्रमित हो जाता; **अऩ्ऩ पोरिल्**–उस तरह के युद्ध में; **वऩ्ऩु**–आकर; **आवि कॊण्ट**–जिसने जीवों का ग्रहण किया; **कालऩार्**–उस यमदेव का; **कटुप्पुम्**–कार्य-वेग भी; **ऎऩ्ऩऩु आकुम्**–कैसा होगा। ३३२२

सरसिजाक्ष श्रीराम जब एक बाण चलावें वह मिट्टी का गोला (शर) शतकोटि का संहार करता। इसलिए कमलवासी अजदेव जो मृतकों की गिनती रखते थे, अब गिनती मे चूक गये। तो, वैसे के युद्ध में जीवग्राही यमदेव की कार्य-गति का क्या होगा ? । ३३२२

कॊडिक्कु लङ्गळ् तेरिऩ् मेल याऩै मेल कोडैनाळ्
इडिक्कु लङ्गळ् वॊऴ वॆऩ्द काडु पोलॆ रिन्दवाल्
मुडिक्कु लङ्गळ् कोडि कोडि शिऩ्द वेह मुऱ्ऱुऱा
वडिक्कु लङ्गळ् वाळि योड बायि ऩूडु तीयिऩाल् 3323

वटि वाळि कुलङ्कळ्–तीक्ष्ण बाणों के समूह; **कोटि कोटि**–कोटि-कोटि; **मुटि कुलङ्कळ्**–सिरों के ढेरों को; **चिऩ्त**–छिन्न करते हुए; **वेकम् मुऱ्ऱु उऱा**–पूर्ण वेगवान बनकर; **ओट**–दौड़े तो; **वायिऩ् ऊटु**–उनके मुख पर की; **तीयिऩाल्**–आग के कारण; **तेरिऩ् मेल**–रथ पर के और; **याऩै मेल**–गजों पर के; **कॊटि कुलङ्कळ्**–झण्डों के समूह; **कोटै नाळ्**–ग्रीष्मकाल में; **इटि कुलङ्कळ् वॊऴ**–वज्र-बून्दों के गिरने से; **वॆऩ्त**–जलनेवाले; **काटु पोल्**–जंगल के समान; **ऎरिऩ्त**–जले। ३३२३

तीक्ष्ण बाणों की पक्तियाँ कोटि-कोटि राक्षस-सिरों को छिन्न करते हुए पूर्ण वेगवान बनकर चले। तब उनके फलों में रही आग रथों पर और हाथियों पर रही पताकाओं में लगी। वे ग्रीष्मवज्र-दग्ध जंगल के समान जल उठीं। ३३२३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱ्ऱ वेलुम् वाळु मादि यायु दङ्गळ् मोदॅळुन्
दुऱ्ऱ वेह मुन्द वोडि योद वेलै यूडुऱत्
तुऱ्ऱ वॅम्मै कैम्मि हच्चु रुक्कॊ ळच्चु वैत्तदाल्
मऱ्ऱ नीर्ब ऱन्दु मीन्म ऱिन्दु मण्शॅ ऱिन्दवाल् 3324

अऱ्ऱ–रामबाण-छिन्न; वेलुम् बाळुम् आति–भाले, तलवारें आदि; आयुतङ्कळ्–हथियार; उऱ्ऱ वेकम्–लगाये गये ज़ोर के; उन्त–उकसाने से; मीतु ऎळुन्तु–ऊपर उठकर; ओतम् वेलै ऊटु–जल-सागर में; उऱ–लगे तो; तुऱ्ऱ–बड़ी; वॅम्मै कै मिक–गर्मी के अधिक हो जाने से; चुऱु कॊळ–"शुऱ्" शब्द के साथ; चुवैत्तताल्–पीने (सोखने) लगे, इसलिए; अ नीर्–वह जल; वऱन्तु–सूखकर; मीन्–मछलियाँ; मऱिन्तु–मरकर; मण् चॅऱिन्त–मिट्टी में ठस भर गयीं। ३३२४

भाले और तलवारें कट तो गयीं पर जो ज़ोर उनको चलाते समय उनमें लगाया गया था वह बाक़ी रहा। अतः वे ऊपर उठे और जलसागर पर वेग के साथ गिरे। तब गर्मी अधिक हुई और वे जल को 'शुऱ्' शब्द के साथ पीने लगे। जल सूख गया और मछलियाँ मिट्टी में घने रूप से दब गयीं। ३३२४

पोर रिन्द मन्ऱु रन्द पुङ्ग वाळि पॊङ्गिऩार्
ऊरॅ रिन्द नाट्टु रन्द वॅन्ऩ मिन्ऩि योडलाल्
नीरॅ रिन्द वण्ण मेनॅ रुप्पॅ रिन्द नीणॅडुम्
तॅरॅ रिन्द वीरर् तऱ्जि रम्बॊ डिन्दु शिन्दवे 3325

पोर् अरिन्तमन्–युद्धारिंदम्; तुरन्त–(द्वारा) प्रेरित; पुङ्कम् वाळि–तीक्ष्ण बाण; पॊङ्किऩार्–क्रुद्ध राक्षसों के; ऊर् ऎरिन्त नाळ्–त्रिपुर जब जले; तुरन्ततु–(शिव द्वारा) प्रेरित शर; ऎऩ्ऩ–के समान; मिऩ्ऩि–चमकते; ओटलाल्–चले इसलिए; नीर् ऎरिन्त वण्णमे–जैसे पहले जल जला वैसे ही; वीरर् तम् चिरम्–वीरों के सिर; पॊटिन्तु चिन्त–चूर होकर चुए, ऐसा; नॅरुप्पु ऎरिन्त–आग जली; नीळ् नॅटु–बहुत ऊँचे; तेर् ऎरिन्त–रथ जले। ३३२५

युद्धारिंदम श्रीराम-प्रेरित शर त्रिपुरदाहक शिव के शर के समान चमक के साथ गये। तब वीरों के सिरों को चूर कर चुआते हुए आग वैसे ही जली जैसे पहले समुद्र-जल जलाते समय जली थी। तब ऊँचे-ऊँचे रथ भी जल गये। ३३२५

पिडित्त वाळ्हळ् वेल्ह ळोडु तोळ्हळ् पेर रावॅऩत्
तुडित्त याऩै मीदि रुन्दु पोर्दॊ डङ्गु शूरर्तम्
मडित्त वायच्चॅ ऴुन्द लैक्कु लम्बु रण्ड वाऩिन्मिन्
इडित्त वायि ऩिऱ्ऱ माम लैक्कु लङ्ग ळॅन्ऩवे 3326

याऩै मीतु इरुन्तु–हाथियों पर रहकर; पोर् तॊटङ्कु–युद्ध आरम्भ करनेवाले; चूरर् तम् तोळ्कळ्–शूरों के कन्धे; पिटित्त–गहीत; वाळ्कळ्–तलवारों और;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेल्कळोटु–बर्छियों के साथ; पेर् अरा–बड़े सर्पों; अॅन्न–के समान; तुटित्त–तड़पे; मटित्त वाय्–मुड़े हुए अधरों के; चॅळु तलै कुलम्–बड़े सिरों के दल; वानिन् मिन्–आकाश की बिजली; इटित्त वायिन्–जहाँ गिरी वहाँ; इऱ्ऱ–टूटे; मा मलै कुलङ्कळ् अॅन्न–बड़े पर्वतदलों के समान; पुरण्ट–लोटे। ३३२६

हाथी पर सवार होकर जिन सूरों ने लड़ना आरम्भ किया था, उनकी भुजाएँ अपनी गृहीत तलवारों और बर्छियों-सहित बड़े सर्पों के समान तड़पे। मुड़े हुए अधरों के साथ बड़े सिरों के दल वज्राहत पर्वत जैसे उस स्थान पर टूटकर लोटते हैं वैसे टूटकर लोटे। ३३२६

कोर वाळि शीय मीळि कूळि योडु ञाळियुम्
पोर वाळि नोडु तेर्हळ् नूऱु होडि पॊन्नुरुमाल्
नार वाळि ञाल वाळि ञान वाळि नान्दहप्
पार वाळि वीर वाळि वेह वाळि पायवे 3327

नारम् आळि–जीवों के शासक; ञालम् आळि–भूमि के शासक; ञानम् आळि–ज्ञान के स्वामी; नान्तकम् पारम् आळि–'नन्दक' नाम की तलवार के रखनेवाले; वीरम् आळि–वीरता के स्वामी श्रीराम के; वेकम् वाळि–तेज़ शर; पाय–चले, इसलिए; कोरम् आळि–भयंकर शरभ; चीयम्–और सिंह; मीळि कूळियोटु–बलवान भूतों के साथ; ञाळियुम्–भेड़िये; आळितोटु–सारथियों-सहित; पोर–मरे तो; नूऱु कोटि तेर्कळ्–सौ करोड़ रथ; पॊन्नुरुम्–मिट जाते। ३३२७

जीवों, भूमि, ज्ञान, नंदक तलवार, और वीरता के स्वामी श्रीराम के वेगवान बाण चले तो घोर शरभ, सिंह, बलवान भूत, और सारथी सब मिट गये। फलस्वरूप उनके शतकोटि स्यंदन भी नाश को प्राप्त हो गये। ३३२७

आऴि पॆऱ्ऱ तेर ऴुन्दु माळ ऴुन्दु माळॊडच्
चूऴि पॆऱ्ऱ माव ऴुन्दुम् वाशि युञ्जु रिक्कुमाल्
पूऴि पॆऱ्ऱ वॆङ्ग ळङ्गु ऴिप्प डप्पॊ ऴिन्दबेर्
ऊऴि पॆऱ्ऱ वाऴि यॆन्न शोरि नीरि नुळ्ळरो 3328

पूऴि पॆऱ्ऱ–धूल-भरा; वॆम् कळम्–घोर युद्धभूमि; कुऴि पट–गड्ढे से भर जाय ऐसा; पॊऴिन्त–बरसात से पूरित; पेर् ऊऴि पॆऱ्ऱ–महायुगान्त में प्रगट; आऴि अॅन्न–समुद्र के समान; चोरि नीरिन् उळ्–रक्त-जल में; आऴि पॆऱ्ऱ तेर्–पहियों-सहित रथ; अऴुन्तुम्–मग्न हो जाते; आळ् अऴुन्तुम्–पदातिक धँस जाते; आळॊटु–महावतों के साथ; अ–वे; चूऴि पॆऱ्ऱ–मुखपट्टयुक्त; मा–गज; अऴुन्तुम्–मग्न हो जाते; वाचियुम्–अश्व भी; चुरियुम्–डूब जाते। ३३२८

भयंकर युद्धभूमि धूलि से भरी थी। वह महायुगसंधि के समुद्र के समान लगी, जिसमें कि मेघ ऐसे बरसे हों कि गड्ढे बन जायँ! उस रक्त-प्रवाह में पहियोंदार रथ डूब जाते; पदातिक मग्न हो जाते।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

महावतों के साथ मुखपट्ट-सहित गज ग़र्क़ हो जाते। घोड़े भी डूब जाते। ३३२८

अऱ्ऱु मेलॆ ऴुन्द वन्शि रङ्गळ् तम्मै यण्मिमेल्
ऒऱ्ऱु मॆन्न वङ्गु मिङ्गुम् विण्णु ळोरॊ डुङ्गुवार्
शुऱ्ऱुम् वीऴ्द लॆक्कु लङ्गळ् शॊल्लु कल्लिन् मारिपोल्
ऎऱ्ऱु मॆन्ऱु पारु ळोरु मेङ्गु वारि रङ्गुवार् 3329

अऱ्ऱु-कटकर; मेल् ऎऴुन्त-ऊपर उठे; वल् चिरङ्कळ्-मोटे सिर; तम्मै अण्मि-हमारे पास आकर; मेल् ऒऱ्ऱुम्-हम पर आघात करेंगे; ऎन्न-सोचकर; विण् उळोर्-व्योमवासी; अङ्कुम् इङ्कुम्-उधर और इधर; ऒतुङ्कुवार्-हट जाते; चुऱ्ऱुम्-चारों ओर; वीऴ्-गिरनेवाले; तलै कुलङ्कळ्-सिरों के समूह; चॊल्लु-कथित; ऎन्ऱु-सोचकर; पार् उळोरुम्-भूलोकवासी भी; एङ्कुवार्-भय खाकर; इरङ्कुवार्-दुःखी होते। ३३२९

'जो सिर कटकर ऊपर उठे हैं वे हम पर आकर आघात करेंगे।' ऐसा डरकर व्योमलोकवासी इधर-उधर हट गये। 'चारों ओर से गिरनेवाले ये सिरों के दल कथित प्रस्तरवर्षा के समान हमको पीट देंगे।' ऐसा सोचकर भूलोकवासी भी डरे और अधीर हुए। ३३२९

मऴैत्त मेहम् वीऴ्व वॆन्न वान मानम् वाडैयिल्
कऴित्तु वन्दु वीऴ्व वॆन्न मण्णिन् मीदु तुन्नुमाल्
अऴित्तॊ डुङ्गु काल मारि यन्न वाळि योळियाल्
विऴित्तॆ ऴुन्दु वानि नूडु मॊय्त्त पॊय्यर् मॆय्यॆलाम् 3330

अऴित्तु-नाश करने से; ऒटुङ्कु-लोक जिससे मिट जाते हैं; कालम् मारि अन्न-उस युगांत की वर्षा के समान; वाळि ओळियाल्-बाणों की पंक्तियों से; विऴित्तु ऎऴुन्तु-विस्फारित आँखों के साथ ऊपर उठकर; वानिन् ऊटु-आकाश में; मॊय्त्त-जो ठस भरे; पॊय्यर् मॆय् ऎलाम्-वे सभी वंचकों के शरीर; मऴैत्त मेकम्-वर्षण योग्य मेघ; वीऴ्व ऎन्न-गिरते जैसे और; वानम् मानम्-आकाशचारी यान; वाटैयिल्-उदीची हवा से; चुऴित्तु वन्तु-घूमते आकर; वीऴ्व ऎन्न-गिरते जैसे; मण्णिन् मीतु-धरती पर; वन्तु तुन्नुम्-आ लगते। ३३३०

पृथ्वी के नाशक युगांतकालीन वर्षा के समान जो चलती रही, उस (श्रीराम की) बाण-वर्षा से वंचक राक्षसों के शरीर ऊपर जा भर गये और जो शरीर खुली आँखों से युक्त थे। वे वर्षाकालीन मेघों और उदीची हवा से प्रताड़ित आकाशचारी यानों के समान पृथ्वी पर गिरे। ३३३०

तॆय्वनॆडुम् बडैक्कलङ्गळ् विडुवर्शिलर् शुडुकणैहळ् शिलैयिऱ् कोलि
ऎय्वर्शिल रॆऱिवर्शिल रॆऱ्ऱुवर्शुऱ् ऱुवर्मलैहळ् पलवु मेन्दिप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॅय्वर्शिलर् पिडित्तुमॅनक् कडुत्तुरुवर् पडैक्कलङ्गळ् पॅऱादु वायाल्
वैवर्शिलर् तॅळिप्पर्शिलर् वरुवर्शिलर् तिरिवर्शिलर् वयवर् मन्नो 3331

चिलर्–कुछ वीर; तॅय्वम्–दिव्य; नॅटुम् पटै कलङ्कळ्–लम्बे हथियारों को चलाते; चिलर्–कुछ; चुटु कणैकळ्–जलानेवाले शरों को; चिलैयिल् कोलि–धनु पर संधान कर; अॅय्वर्–चलाते; चिलर्–कुछ वीर; मलैकळ् पलवुम्–अनेक पर्वतों को; एन्ति–उठाकर; चुऱ्ऱुवर्–दायें और बायें घूमकर; पॅय्वर्–चलाकर; अॅऱ्ऱुवर्–प्रहार करते; पिटित्तुम् अॅन–पकड़ेंगे कहकर; कटुत्तु–सवेग; उरुवर्–आते; चिलर्–कुछ; पटै कलङ्कळ् पॅऱातु–हथियार न पाकर; वायाल्–मुख से; वैवर्–गाली देते; चिलर् तॅळिप्पर्–कुछ डाँटते; चिलर्–कुछ वीर; वरुवर्–आते; तिरिवर्–घूमते। ३३३१

कुछ वीर दिव्य और लम्बे हथियारों को ले फेंकते। कुछ धनुष से लगाकर जलानेवाले शरों को चलाते। कुछ लोग ऐसे हथियारों का प्रयोग करते जिनको दूर से फेंकना पड़ता है। कुछ वीर अनेक पर्वतों को उठाते हुए दायें-बायें पैंतरे बदलते और पीटते। कुछ यह कहते शीघ्र झपटते कि पकड़ लेंगे। कुछ हथियार न पाकर मुख से गाली देते। कुछ वीर डाँटते। कुछ जवान आते और कुछ वीर घूमते थे। ३३३१

आर्प्पर्पल रडर्प्पर्पल रडुत्तडुत्ते पडैक्कलङ्ग ळळ्ळि यळ्ळित्
तूर्प्पर्पलर् मूविलैवेल् तुरप्पर्पलर् करप्पर्पलर् शुडुदीत् तोन्ऱुप्
पार्प्पर्पलर् नॅडुवरैयॅप् परिप्पर्पलर् पहलोनॅप् पऱ्ऱिच् चुऱ्ऱुम्
कार्प्परुव मेहमॅन वेहनॅडुम् बडैयरक्कर् कणिप्पि लादार् 3332

पकलोनै–दिनकर को; पऱ्ऱि चुऱ्ऱुकिन्ऱ–घेरकर घूमनेवाले; कार् परुवम्–वर्षाकालीन; मेकम् अॅन–मेघ के समान; वेकम् नॅटुम् पटै–वेगवान लम्बे हथियारों वाले; कणिप्पिला–अनगिनत; अरक्कर्–राक्षसों में; पलर्–अनेक; आर्प्पर्–नारे उठाते; पलर्–अनेक; अटर्प्पर्–भिड़ते; पलर्–अनेक; अटुत्तु अटुत्तु–लगातार; पटै कलङ्कळ्–हथियार; अळ्ळि अळ्ळि–उठा-उठाकर; तूर्प्पर्–बरसाते; पलर्–अनेक; मू इलै वेल्–त्रिपत्री शक्तियाँ; तुरप्पर्–छोड़ते; पलर्–अनेक; करप्पर्–छिप जाते; पलर्–अनेक; चुटु ती–गरम आग; तोन्ऱुप्–प्रगट करते हुए; पार्प्पर्–तरेरते; पलर्–अनेक; नॅटुवरैयै–बड़े पर्वतों को; परिप्पर्–उखाड़ लेते। ३३३२

दिनकर को घेरकर घूमनेवाले मेघों के समान जोरदार हथियारों के चलानेवाले अनगिनत राक्षसों में अनेकों ने बड़ा कोलाहल मचाया। अनेक भिड़े। अनेकों ने हथियार निरंतर और बड़े परिमाण में चलाये। अनेकों ने शक्तियाँ (त्रिशूल) चलायीं। अनेक छिप गये। अनेक आग-भरी आँखों से तरेर रहे थे। अनेकों ने बड़े पर्वतों को उखाड़ लिया। ३३३२

अॅऱिन्दनवु मॅय्दनवु मॅडुत्तनवुम् बिडित्तनवुम् बडैह ळॅल्लाम्
मुऱिन्दनवॅङ गणैहळपड मुऱ्ऱिनशुऱ् ऱिनतेरु मूरि मावम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नॅऱिन्वत्कुञ् जिहळोडु नॅडुन्दलैह ळुरुण्डत्पे रिरुळि नीङ्गिप्
पिऱिन्दत्तवंय् यवत्तॅन्तप् पॅयर्न्दत्तत्मी दुयर्न्दतडम् बॅरिय तोळान् 3333

अॅऱिन्ततवुम्–जो फेंके गये वे; अॅय्ततवुम्–जो चलाये गये वे; अॅटुत्ततवुम्–और जो उठाये गये वे; पिटित्ततवुम्–जो पकड़े गये वे; पटैकळ् अॅल्लाम्–सारे हथियार; वॅम् कणैकळ्–भीषण अस्त्रों के; पट–लगने से; मुऱिन्तत–टूट गये; चुऱ्ऱित–जो (श्रीराम के) चारों ओर घेरे रहे; तेरुम्–रथ; मुऱ्ऱित–समाप्ति पर आये; मूरि मावुम्–बलवान गजों के भी; नॅऱिन्तत कुञ्चिकळोटु–कुंचित बालों के साथ; नॅटु तलैकळ् उरुण्टत–बड़े सिर लोट गये; मीतु उयर्न्त–ऊपर की तरफ़ उन्नत; तट पॅरिय तोळान्–विशाल बड़े कंधों वाले श्रीराम; पेर् इरुळिन् नीङ्कि–बड़े अन्धकार से छूटकर; पिऱिन्तु अत–मुक्त; वॅय्यवन् अॅन्त–सूर्य के समान; पॅयर्न्ततत्–बाहर आ प्रगट हुए। ३३३३

राक्षसों ने जो चलाये, फेंके या प्रेरित किये वे सब, श्रीराम के घातक शरों के लगने से टूट गये। श्रीराम को जो घेरे थे वे रथ मिटे। गजों एवं बलवानों के सिर अपने कुंचित बालों के साथ कटकर लोटे। तब उन्नत कंधों वाले श्रीराम अंधकार-विमुक्त दिनकर के समान बाहर प्रगट हुए। ३३३३

शॊल्लरुक्कुम् वलियरक्कर् तॊडुकवशन् दुहळ्पडुक्कुन् दुणिक्कुम् याक्कै
विल्लरुक्कुन् दलैयरुक्कु मिडलरुक्कु मडलरुक्कु मेन्मेल् वीशुम्
कल्लरुक्कु मरमरुक्कुङ् गैयरुक्कुञ् जॅय्यमळ्ळर् कमलत् तोडु
नॅल्लरुक्कुन् दिरुनाड नॅडुञ्जरमॅन् ऱालॅवर्क्कु निऱ्क लामो 3334

चॅय्य मळ्ळर्–खेतों में कृषक; नॅल्लोटु–धान के साथ; कमलम् अऱुक्कुम्–कमल काटते हैं जहाँ; तिरु नाटन्–उस श्रीसंपन्न देश के श्रीराम; नॅटु चरम्–लम्बे शर; चॊल् अऱुक्कुम्–(विवरण) वचन काट (पंगु कर) देंगे; वलि अरक्कर्–बलवान राक्षस; तॊटु कवचम्–जो पहनते हैं उन कवचों को; तुकळ् पटुक्कुम्–चूर-चूर कर देंगे; याक्कै तुणिक्कुम्–शरीरों को छिन्न करते; विल् अऱुक्कुम्–धनु काट देंगे; तलै अऱुक्कुम्–सिर काट देंगे; मिटल् अऱुक्कुम्–बल मिटा देंगे; मटल् अऱुक्कुम्–युद्धकौशल को मिटा देंगे; मेल् मेल् वीचुम्–बराबर जो फेंकते हैं; कल् अऱुक्कुम्–उन गिरियों को फोड़ देते; मरम् अऱुक्कुम्–तरुओं को काट देते; कै अऱुक्कुम्–हाथों को काटते; अॅन्ऱाल्–तो; अॅवर्क्कुम्–किसी के लिए भी; निऱ्कलामो–सामने खड़ा रहना संभव होगा क्या। ३३३४

जिस देश के कृषक लोग खेतों में धानों के साथ कमल को भी काटते थे, उस देश के वासी श्रीराम के लम्बे बाण, वर्णन-शक्ति को बेकार करते; बली राक्षसों के पहने कवचों को चूर करते। शरीरों, धनुषों, सिरों, बल, युद्धकौशल, निरंतर फेंके जानेवाले पर्वतों, तरुओं और हाथों को नष्ट कर मिटा देते। तो अब उनके सामने कौन टिक सकते हैं ? । ३३३४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कालिऴन्दुम् वालिऴन्दुङ् गैयिऴन्दुङ् गऴुत्तिऴन्दुम् बरुमक् कट्टिन्
मेलिऴन्दु मरुप्पिऴन्दुम् विऴुन्दत्तवॅन् गुरनल्लाल् वेलै यत्त
मालिऴन्दु मऴैयनैय मदमिऴन्दु कदमिऴन्दु मलैपोल् वन्द
तोलिऴन्द तॊऴिलॊन्ऱुञ् जॊन्नार्ह ळिल्लॆनॆडुञ् जुरर्ह ळॆल्लाम् 3335

नॆटु चुरर्कळ् ॲल्लाम्–मान्य सभी देव; काल् इऴन्तुम्–पैर खोकर और; वाल् इऴन्तुम्–दुम खोकर; कै इऴन्तुम्–हाथ खोकर; कऴुत्तु इऴन्तुम्–कण्ठ खोकर; परुमम् कट्टिन्–पीठ पर बँधे; मेल् इऴन्तुम्–हौदे खोकर; मरुप्पु–दाँत; इऴन्तुम्–खोकर; मलै पोल्–पर्वत के समान; वन्त तोल्–आये हाथी; विऴुन्तत्त–गिरे; ॲन्ऱुक्तर् अल्लाल्–यह कहने के सिवा; वेलै अन्त–सागर के समान विस्तृत (वे हाथी); माल् इऴन्तुम्–(विजय की) चाह खोकर; मऴै अत्तैय–बरसात के समान (बहनेवाला); मतम् इऴन्तुम्–मदनीर खोकर; कतम् इऴन्तुम्–क्रोध खोकर; इऴन्त–खोये; तॊऴिल् ऒन्ऱुम्–किसी कार्य की; चॊन्नार्कळ् इल्लै–चर्चा नहीं की। ३३३५

मान्य देवों ने यह कहा कि पैर, दुम, सूँड़, कंठ, पीठ के हौदे और दाँत, इनको खोकर आये पर्वतोपम हाथी गिरे। पर वे नहीं कहते थे कि सागर-समान विस्तृत घेरे में आये बड़ी संख्या के हाथी अपने युद्ध को चाहने की, मेघ के समान मदनीर बहने की, और कोप करने की क्रियाएँ भी खो चुके थे (क्यों कि— उन्होंने देखा नहीं)। ३३३५

वेल्शॆल्वत्त शदकोडिहळ् विण्मेन्निमिर् विशिहक्
कोल्शॆल्वत्त शदकोडिहळ् कॊलैशॆय्वत्त मलैपोल्
तोल्शॆल्वत्त शदकोडिहळ् तुरहन्दॊड रिरदक्
काल्शॆल्वत्त शदकोडिह ळॊरुवत्तवै कडिवान् 3336

चॆल्वत्त वेल्–जानेवाली शक्तियाँ; चत कोटि कळ्–सौ करोड़; विण् मेल्–आकाश में; चॆल्वत्त–जानेवाले; निमिर् विचिकम् कोल्–सीधे विशिख नाम के अस्त्र; चत कोटिकळ्–सौ करोड़; कॊलै चॆय्वत्त–वधिक; मलै पोल् चॆल्वत्त–पर्वत के समान जानेवाले; तोल्–हाथी; चत कोटिकळ्–सौ करोड़; तुरकम् तॊटर् इरतम्–अश्व-जुते रथ; काल् चॆल्वत्त–पहियों से चलनेवाले; चत कोटिकळ्–सौ करोड़; अवै कटिवान्–उनको ग़ुस्सा करके मेटते; ऒरुवन्–एकाकी श्रीराम। ३३३६

श्रीराम की ओर जानेवाले सौ करोड़ शक्तियाँ, सीधे जानेवाले विशिख, घातक व गमनशील पर्वत के समान हाथी, और अश्व-जुते पहियोंदार रथ सौ-सौ करोड़ थे। पर उनके मेटक थे एकाकी श्रीराम। ३३३६

ऒरुविल्लियै यॊरुकालैयि नुलहेऴैयु मुडऱुम्
पॆरुविल्लिहण् मुडिविल्लवर् शरमामऴै पॆय्वार्
पॊरुविल्लवर् कणैमारिहळ् पॊडियाम्वहै पॊऴियत्
तिरुविल्लिहळ् तलैपोय्नॆडु मलैपोलुडल् शिदैवार् 3337

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उलकु एऴैयुम्–सातों लोकों को; उटर्रुम्–त्रस्त करनेवाले; पॅरु विल्लिकल्–बड़े धनुर्धरों ने; मुटिवु इल्लवर्–असंख्यक; ऒरु विल्लियै–एक धनुर्धर पर; ऒरु कालैयिल्–एक साथ; मा चर मऴै–बड़ी शर-वर्षा; पॅय्वार्–करते बने; पॊरु इल्लवर्–अनुपम उनके; कर्ण मारिकळ्–शरों की वर्षा; पॊटियाम् वकै–चूर्ण बने ऐसा; पॊऴियॆ–श्रीराम बाण चलाते हैं, इसलिए; तिरु इल्लिकळ्–भाग्यहीन वे; तलै पोय्–सिर खोकर; नॆटु मलै पोल्–बड़े पर्वत के समान; उटल् चितैवार्–छिन्न-शरीर हो गये। ३३३७

सप्तभुवन-त्रासक असंख्यक राक्षस एकाकी धनुर्धर पर बड़ी शरवर्षा करते। श्रीराम अनुपम उनके शरों को चूर्ण करते हुए बाणों की वर्षा करते। तो भाग्यहीनों के सिर कट जाते और शरीर छिन्न हो जाते। ३३३७

नूऱायिर मदयाऩैयिऩ् वलियोरॆऩ नुवल्वोर्
माऱायिऩ रॊरुकोल्पड मलैपोलुडऩ् मऱिवार्
आऱायिर मुळवाहुद लऴिशॆम्बुऩ लवैपुक्
केऱादॆरि कडल्पाय्वऩ शिऩमाल्करि यिऩमाल् 3338

नूऱु आयिरम्–लाख; मतम् याऩैयिऩ्–मत्त गजों के-से; वलियोर् ऎऩ–बल से युक्त ऐसा; नुवल्वोर्–प्रशंसित राक्षस; ऒरु कोल् पट–एक बाण के लगते ही; माऱु आयिऩर्–बदल गये; मलै पोल् उटल्–पर्वतोपम शरीर; मऱिवार्–मिट जाते; अऴि–मिटने से उत्पन्न; चॆम् पुऩल्–रक्त की; आयिरम् आऱु उळ आकुतल्–हजार नदियाँ उत्पन्न हुईं, इसलिए; अवै पुक्कु–उनमें घुसकर; एऱातु–किनारे पर न चढ़ (सक) कर; चिऩम् माल् करि इऩम्–क्रुद्ध तथा मत्तगज; ऎऱि कटल् पाय्वऩ–तरंग-सागर में चले गये। ३३३८

लाख हाथियों के-से बल से युक्त कहलानेवाले वे, श्रीराम के एक बाण के लगते ही उस प्रशंसा के अयोग्य बनकर छिन्न-शरीर हो गये। उनके शरीरों से जो रक्त निकला, उसकी हज़ार नदियाँ बनीं। उनमें फँस गये हाथी। वे तीर पर चढ़ नहीं सके। क्रुद्ध और मत्त उन हाथियों के समूह तरंगसागर में तेज़ी से जा डूबे। ३३३८

मऴुवर्ऱुहु मलैयर्ऱुहुम् वळैयर्ऱुहुम् वयिरत्
तॆऴुवर्ऱुहु मॆयिऱर्ऱुहु मिलैयर्ऱुहु मॆऴुवेल्
पऴुवर्ऱुहु मदवॆङ्गरि परियर्ऱुहु मिरदक्
कुऴुवर्ऱुहु मॊरुवॆङ्गणै तॊडैपॆर्ऱदॊर् कुऱियाल् 3339

ऒरु वॆम् कर्णै–एक दारुण अस्त्र; तॊटै पॆर्ऱतु–संधान करते समय लगाये गये; ओर् कुऱियाल्–एक निशाने से; मऴु–परशु; अर्ऱु उकुम्–कटकर गिर जाते; मलै–पर्वत; अर्ऱु उकुम्–चूर होकर गिरते; वळै अर्ऱु उकुम्–'वळै' नाम के हथियार टूटकर गिरते; वयिरत्तु ऎऴु–कठिन 'ऎऴु' नाम के हथियार; अर्ऱु उकुम्–कटकर गिरते; ऎऴु वेल्–ऊपर उठी शक्ति का; इलै अर्ऱु उकुम्–फल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कटकर गिरते; ऍयिऱु अऱ्ऱु उकुम्–दाँत अलग होकर चू जाते; मतम् वॆम्किर–मत्त और खूनी गजों की; पऴु–पसलियाँ; अऱ्ऱु उकुम्–टूटकर गिरतीं; परि–अश्व; अऱ्ऱु–कटकर; उकुम्–गिरते; इरतम्–रथों के; कुऴु–दल; अऱ्ऱु उकुम्–छिन्न होकर गिर जाते। ३३३९

खूब निशाना साधकर चलाये गये थे इसलिए श्रीराम के भीषण अस्त्रों से शत्रुओं के परशु सुदृढ़ 'वलय' और 'अेऴु' नाम के हथियार, पर्वत, ऊपर उठी शक्तियाँ, उनके दाँत, मत्त गजों की पसलियाँ, अश्व और रथों के समूह —सभी टूट-फूटकर गिर जाते और मिट जाते। ३३३९

ऒरुहालैयि नुलहत्तुऱु मुयिर्यावैयु मुण्णुम्
वरुहालऩु मवऩ्दूदरु नमऩ्दाऩुमव् वरैप्पिऩ्
इरुहालुडै यवरियावरुन् दिरिन्दारिळैत् तिरुन्दार्
अरुहायिर मुयिर्कॊण्डुद मारेहल रयर्त्तार् 3340

ऒरु कालैयिऩ्–एक ही समय; उलकत्तु उऱुम्–संसार भर में रहनेवाले; उयिर् यावैयुम्–सभी जीवों को; उण्णुम्–खा सकनेवाले; अव् वरैप्पिऩ्–उस आँगन में; वरु कालऩुम्–जो आया वह यम और; अवऩ् तूतरुम्–उसके दूत; नमऩ् ताऩुम्–(यम का नायब) नम; यावरुम्–सभी; इरु काल् उटैयवर्–दो पैरों वाले थे; तिरिन्ताय्–घूम-फिरकर; इळैत्तु इरुन्तार्–थकित रहकर; अरुकु–पास के; आयिरम् उयिर् कॊण्टु–हजारों जीवों को लेकर; तम् आऱु–अपना मार्ग; एकलर्–गये नहीं; अयर्त्तार्–भ्रांत रह गये। ३३४०

एक साथ लोक के सारे जीवों के खाने के लिए उस युद्धभूमि में यम, उसके दूत, उसका नायब (जिसका नाम था) 'नम', आदि सभी आये थे। बेचारे उनके दो-दो ही पैर थे। अतः वे थककर बैठ गये। और पास से ही मिले हज़ारों जीवों को लेकर अपने मार्ग पर जा नहीं सके, भ्रांत रह गये। ३३४०

अडुक्कुऱ्ऱऩ मदयानैयु मळितेर्हळुम् बरियुम्
तॊडुक्कुऱ्ऱऩ विशुम्बूडुऱच् चुमन्दोङ्गिऩ वॆऩिनुम्
मिडुक्कुऱ्ऱऩ कवन्दक्कुल मॆऴुन्दाडलि नॆल्लाम्
नडुक्कुऱ्ऱऩ पिणक्कुऩ्ऱुह ळुयिर्नण्णिऩ वॆऩ्ऩ 3341

अटुक्कु उऱ्ऱऩ–पंक्तियों में रहे; अळि मत–मदस्रावी; यानैयुम्–गज और; तेर्कळुम् परियुम्–रथ और अश्व; तॊटुक्कुऱ्ऱऩ–एक पर एक चुन गये; विशुम्पु ऊटु उऱ–आकाश तक पहुँचें, ऐसा; चुमन्तु ओङ्किऩ–ऊँचे हुए; ऎऩिनुम्–तो भी; मिटुक्कु उऱ्ऱऩ–बलयुक्त; कवन्तम् कुलम्–कबन्धवृन्द; ऎऴुन्तु आडलिऩ्–उठकर नाचे इसलिए; पिणम् कुऩ्ऱुकळ्–लाशों की गिरियाँ; उयिर् नण्णिऩ ऎऩ्ऩ–जीवित हो गयीं समझकर; ऎल्लाम् नटुक्कुऱ्ऱऩ–सभी भयभीत हो गये। ३३४१

मत्तगज, रथ और अश्व जो पंक्तियों में रहे अब एक के ऊपर एक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चुन गये, और उनकी बनी यह अनोखी दीवार आकाश को छू गयी। तो भी सशक्त कबंधवृन्द उठकर नाचने लगे तो लोगों ने सोचा कि लाशें जीवित हो गयीं। अतः वे भय से काँपे। ३३४१

पट्टारुडऱ् पडुशॆम्बुऩल् तिरुमेऩियिऱ् पडलाल्
कट्टार्शिलैक् करुञायिऱु पुरैवाऩ्गडै युहनाळ्
शुट्टाशऱुत् तुलहुण्णुमच् चुडरोऩॆऩप् पॊलिन्दाऩ्
ऒट्टारुडऱ् कुरुदिक्कुळित् तॆऴुन्दाऩैयु मॊत्ताऩ् 3342

पट्टार्–मृतों के; उटल् पटु–शरीरों से निकले; चॆम् पुऩल्–रक्त (के); तिरु मेतियिल् पटलाल्–श्रीशरीर पर लगने से; कट्टु आर् चिलै–बन्धनयुक्त धनु के धारक; करु ञायिऱु पुरैवाऩ्–काले सूर्य-सम श्रीराम; युकम् कटै नाळ्–युगान्त के दिन; उलकु–लोकों को; चुट्टु–जलाकर; आचऱुत्तु–पूर्ण रूप से मिटाकर; उण्णुम्–खानेवाले; अ चुटरोऩ् ऎऩ–उस किरणमाली के समान; पॊलिन्ताऩ्–शोभे; ऒट्टार् उटल्–शत्रुओं की शरीरों के; कुरुति कुळित्तु–रक्त में स्नान करके; ऎऴुन्ताऩैयुम्–उठे; ऒत्ताऩ्–जैसे भी लगे। ३३४२

मरे हुए राक्षसों के शरीरों से निकला रक्त श्रीराम के श्रीशरीर पर खूब लग गया। उस स्थिति में सबंध धनुर्धर तथा असित सूर्य-सम श्रीराम युगांत के सर्वनाशक किरणमाली के समान दिखे। और ऐसा भी लगे मानो शत्रुरक्त में स्नान कर उठे हों। ३३४२

तीयॊत्तऩ वुरुमॊत्तऩ शरञ्जिन्दिडच् चिरम्बोय्
मायत्तमर् मडिहिऩ्ऱऩ रॆऩवुम्मऱङ् गुऱैया
कायत्तिडै युयिरुण्डिड वुडऩ्मॊय्त्तॆऴु कळियाल्
ईयॊत्तऩ निरुदक्कुल नऱवॊत्तऩ निऱैवऩ् 3343

ती ऒत्तऩ–अग्नि-सम; उरुम् ऒत्तऩ–वज्र-सम; चरम्–बाणों को; चिन्तिट–अधिक संख्या में लगातार चलाने से; चिरम् पोय्–सिर गये; मायम् तमर्–मायावी हमारे लोग; मटिकिऩ्ऱऩर्–मरते हैं; ऎऩवुम्–इसलिए और; मऱम् कुऱैया–वीरता में कम न होकर; कायत्तु इटै–शरीर में; उयिर्–प्राणों को; उण्टिट–(बाण) खायें ऐसा; कळियाल्–मस्ती के साथ; उटऩ् मॊय्त्तु ऎऴु–साथ लगे जो उठे; निरुतर् कुलम्–उन राक्षसों के दल; ई ऒत्तऩ–मक्खियों के समान लगे; इऱैवऩ्–भगवान श्रीराम; नऱवु ऒत्तऩऩ्–मधु के समान रहे। ३३४३

'श्रीराम ने जो शर चलाये वे अग्नि और वज्र के समान हैं। उनके लगने से हमारे लोगों के सिर कट जाते हैं और वे मर जाते हैं' यह देखकर भी वीरता में न घटकर अपने प्राणों को भी उन शरों को पीने देने के लिए जो राक्षस उन्हें घेरे थे, वे मधुमक्खियों के समान लगे और श्रीराम मधु रहे। ३३४३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मॊय्त्तारैयॊ रिमैप्पिन्ऱलै मुडुहत्तॊडु शिलैयाल्
तॆत्तानवर् कळऱ्ऱिण्पशुङ् गायॊत्तनर् शरत्ताल्
कॆत्तार्कडु कळिऱुङ्गनत् तेरुङ्गॊळत् तळुन्दक्
कुत्तानळि कुळम्बाम्वहै वळुवाच्चरक् कुळुवाल् 3344

मॊय्त्तारै–ऐसे जो मँड़राये उन राक्षसों को; ओर् इमैप्पिन् तलै–एक बार पलक मारती देर के अन्दर; मुटुक–तेजी से; तॊटु चिलैयाल्–जिससे बाण चलाये जाते हैं उस धनु से; तॆत्तान्–ढँक दिया; अवर्–वे; चरत्ताल्–(आवृत) शरों से; तिण् पचुमै–सारयुक्त व ताज़े; कळल् काय्–'कळल' नामक लता के फलों के; ऒत्ततर्–सदृश हो गये; कॆत्तार्–शत्रुओं के; कटु कळिऱुम्–तेज़ हाथियों; कतम् तेरुम्–और बड़े रथों को; वळुवा चरम् कुळुवाल्–अचूक शरों की पंक्तियों से; अळि–द्रवणशील; कुळम्पाम् वकै–पंक बनाकर; कळत्तु अळुन्त–मैदान में डूब जायें, ऐसा; कुत्तान्–मसल दिया। ३३४४

उस भाँति जो मँड़राये उन राक्षसों को श्रीराम ने पल भर में अपने शरों से आवृत कर दिया। वे शरों के अन्दर 'कळल्' लता के सारयुक्त तथा ताज़े फलों के समान लगे। श्रीराम ने शत्रुओं के वेगवान हाथियों, और पक्के रथों को अपने अचूक शरों से द्रवणशील पंक बना दिया। ३३४४

पिरिन्दार्पल रिरिन्दार्पलर् पिळैत्तार्पल रुळैन्दार्
पुरिन्दार्पलर् नॆरिन्दार्पलर् पुरण्डार्पल रुरुण्डार्
ऎरिन्दार्पलर् करिन्दार्पल रॆळुन्दार्पलर् विळुन्दार्
शॊरिन्दार्कुडल् तुऱन्दार्दलै तॊलैन्दारॆदिर् तॊडर्न्दार् 3345

पिरिन्तार् पलर्–अनेक प्राणहीन हुए; इरिन्तार् पलर्–अस्त-व्यस्त भागे कई; पिळैत्तार् पलर्–बचा गये कई; उळैत्तार् पलर्–त्रस्त हुए अनेक; पुरिन्तार् पलर्–लड़े कई; नॆरिन्तार् पलर्–पिचके कई; पुरण्टार् पलर्–लोटे अनेक; पलर् उरुण्टार्–अनेक लुढ़के; ऎरिन्तार् पलर्–जले अनेक; करिन्तार् पलर्–राख हुए कई; पलर् ऎळुन्तार्–कई उठे; पलर् विळुन्तार्–कई गिरे; कुटल् तुऱन्तार्–आँतें जिनके बाहर निकल आयीं ऐसे बहुत से थे; चॊरिन्तार्–उन्हें बाहर निकाल दिया; ऎतिर् तॊटर्न्तार्–सामने जाकर; तलै तॊलैन्तार्–सिरों से हीन हुए। ३३४५

उस युद्ध में अनेकों के प्राण छूट गये। कई अस्त-व्यस्त हो भाग गये। कई बचा गये। अनेक त्रस्त हुए। अनेकों ने चाव के साथ युद्ध किया। कइयों के शरीर पिचक गये। कई लोटे, कई लुढ़के। अनेक राख हो गये। कई उठे, कई गिरे। कइयों की आँतें भी कटीं और बाहर निकल आयीं। कइयों ने आगे जाकर अपने सिरों को कटवा लिया। ३३४५

मणिकुण्डलम् वलयङ्गुळै मॆहरञ्जुडर् मॆहुडम्
अणिहण्डिहै कवशङ्गळल् तिलहम्मुद लहलम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुणियुण्डव रुडल्शिन्दिऩ तॊडर्हिऩ्ऱऩ शुडरुम्
तिणिहॊण्डलि ऩिडैमिऩ्गुल मिऴिर्हिऩ्ऱऩ शिवण 3346

तिणि–घने; कॊण्टलिऩ् इटै–मेघमध्य; मिऩ् कुलम्–बिजली की पंक्तियाँ; मिऴिर्किऩ्ऱऩ–चमकतीं; चिवण–जैसे; तुणि उण्टवर्–छिन्न होकर जो मरे उनके; उटल्–शरीरों पर; तॊटर्किऩ्ऱऩ–लगातार; चुटरुम्–चमकनेवाले; मणि कुण्टलम्–रत्नकुंडल; वलयम्–बाहुवलय; मकरम् कुऴै–मकरकुंडल; चुटर् मकुटम्–प्रकाशमय मुकुट; अणि कण्टिकै–सुन्दर कण्ठमाला; कवचम्–कवच; कऴल्–पायलें; तिलकम्–तिलक; मुतल–आदि; कलम्–आभरण; चिन्तिऩ–अलग होकर छितरे। ३३४६

काली घटा के मध्य चमकती बिजली की पंक्तियों के समान छिन्न हुए राक्षसों के शरीरों पर रहे प्रकाशमय रत्नकुंडल, बाहुवलय, मकरकुंडल कांतिमय मुकुट, सुन्दर कंठहार, कवच, पैरों के कड़े, तिलक आदि आभरण अलग हो बिखर गये। ३३४६

मुऩ्ऩेयुळऩ् पिऩ्ऩेयुळऩ् मुहत्तेयुळ ऩहत्तिऩ्
तऩ्ऩेयुळऩ् मरुङ्गेयुळऩ् दलैमेलुळऩ् मलैमेल्
कॊऩ्ऩेयुळ ऩिलत्तेयुळऩ् विशुम्बेयुळऩ् गॊडियोर्
ऎऩ्ऩेयॊरु कडुप्पॆऩ्ऱिड विरुञ्जारिहै तिरिन्दाऩ् 3347

कॊऩ्ऩे–भय भरते हुए; मुऩ्ऩे उळऩ्–सामने स्थित है; पिऩ्ऩे उळऩ्–पीछे है; मुकऩ्ऩे उळऩ्–सेना के अग्र भाग में है; अकत्तिऩ् तऩ्ऩे उळऩ्–मध्य भाग में है; मरुङ्के उळऩ्–पार्श्व में है; तलै मेल् उळऩ्–सिर पर है; मलै मेल् उळऩ्–पर्वत पर रहता है; निलत्ते उळऩ्–भूमि पर है; विचुम्पे उळऩ्–आकाश में है; ऒरु कटुप्पु ऎऩ्ऩे–यह अद्वितीय वेग भी कैसा; ऎऩ्ऱु–कहकर; कॊटियोर्–दुष्टों के; इट–कहते; इरु चारिकै तिरिन्ताऩ्–बड़े चक्कर लगाये श्रीराम ने। ३३४७

श्रीराम (क्षण इधर, क्षण उधर) ऐसा चक्कर लगाते कि दुष्ट राक्षस लोग विस्मय के साथ कहते कि भय उत्पन्न करते हुए वह हमारे सामने है, नहीं पीछे है। सेना के अग्रभाग में है, नहीं मध्य भाग में! दोनों बाजुओं में, सिर पर, गिरि पर, भूमि पर, नहीं आकाश में है! उसका असाधारण वेग भी कैसा ?। ३३४७

ऎऩ्ऩेरिऩ ऩॆऩ्ऩेरिऩ ऩॆऩ्ऱियावरु मॆण्णप्
पॊऩ्ऩेर्वरु वरिविऱ्करत् तॊरुकोळरि पोल्वाऩ्
ऒऩ्ऩार्पॆरुम् बडैप्पोर्क्कड लुडैक्किऩ्ऱऩ ऩॆऩिऩुम्
अऩ्ऩेरल रुडऩेतिरि निऴलेयॆऩ लाऩाऩ् 3348

यावरुम्–सभी; ऎऩ् नेरिऩऩ्–मेरे सामने है; ऎऩ् नेरिऩऩ्–मेरे समक्ष है; ऎऩ्ऱु ऎण्ण–ऐसा सोचने वेते हुए; पॊऩ् नेर् वरु–स्वर्ण-सम; वरि विल् करत्तु–सबन्ध धनु के धारण करनेवाले हाथ वाले; ऒरु–असाधारण; कोळ् अरि पोल्वाऩ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बलवान सिंह के समान जो रहे वे श्रीराम; ऑन्नार्-शत्रुओं को; पॅरुम् पटॅ-बड़ी सेना रूपी; पोर्-आवरणकारी; कटल्-सागर को; उटॅक्किन्ऱनन् ऍन्निनुम्-तोड़ते तो भी; अल्-अन्धकार-सम; नेरलर् उटने-शत्रुओं के साथ; तिरिकिन्ऱ-घूमनेवाली; निळले ऍनल् आनान्-(अग्राह्य) छाया ही सम रहे। ३३४८

सेना में एक-एक यही कहता कि राम मेरे ही समक्ष है, मेरे ही समक्ष है! इस भाँति चक्कर काटते हुए स्वर्ण-सम और सबंध धनु के धारण करनेवाले श्रीराम शत्रुओं के बड़ी सेना रूपी सागर को, जो उन्हें आवृत कर रहा था, तोड़ रहे थे। तो भी वे अंधकार-वर्ण राक्षसों की छाया की तरह (उनसे अग्राह्य हो) रहे। ३३४८

पळ्ळम्बडु कडलेळिनुम् बडियेळिनुम् बहैयिन्
वॅळ्ळम्बल वुळवॅन्निनुम् विनैयम्बल तॅरियाक्
कळ्ळम्बडर् पॅरुमायैयिऱ् करन्दारुरुप् पिऱन्दार्
उळ्ळन्ऱियुम् बुऱत्तेयुमुऱ् ऱुळनामॅन वुऱ्ऱान् 3349

पळ्ळम् पटु-गहरे; कटल् एळिनुम्-सातों समुद्रों में; पटि एळिनुम्-सातों लोकों में; पकैयिन्-शत्रुओं के; पल वॅळ्ळम् उळ-अनेक 'वॅळ्ळम्' थे; ऍन्निनुम्-तो भी; पल विनैयम्-अनेक वंचक काम; तॅरिया-जानकर; कळ्ळम् पटर्-धोखे से भरी; पॅरु मायैयिल-बड़ी माया में; उरु करन्तार्-रूप छिपाये हुए; पिऱन्तार्-जो जनमे थे उन राक्षसों के; उळ् अन्ऱियुम्-अन्दर के अलावा; पुऱत्तेयुम्-बाहर भी; उऱ्ऱु उळन्-लगे रहनेवाले; आम्-हैं; ऍन-इस भाँति सोचा जाय ऐसा; उऱ्ऱान्-लगे रहे। ३३४९

गहरे सप्तसमुद्रों और सप्तलोकों में अनेक 'वॅळ्ळम्' (राक्षस) शत्रु थे। तो भी श्रीराम ऐसे युद्ध में लगे थे कि सब यही कहें कि वंचक कार्य करने वाले माया में दबे और जन्म से ही रूप छिपाकर रहनेवाले उनके अंदर ही नहीं बाहर भी विद्यमान थे। ३३४९

नानाविदप् पॅरुञ्जारिहै तिरिहिन्ऱदु नविलार्
पोनानिडै पुहुन्दानॅनप् पुलन्गॊळ्हिलर् मऱन्दार्
तानावदु मुणर्न्दानुणर्न् दुलहॅङ्गणुन् दाने
आनान्विनै तुऱन्दानॅन विमैयोर्हळ् मयिर्त्तार् 3350

पोनान्-गया; इटै पुकुन्तान्-मध्य घुस गया; ऍन-यह; पुलन् कॊळ्किलर्-समझ में न लाकर; नाना वितम्-नाना रूप से; पॅरु चारिकै-बड़े चक्करों में; तिरिकिन्ऱतु-घूमना जो था उसे; नविलार्-नहीं कहते; मऱन्तार्-भूल गये; उणर्न्तु-भावना रूप में; उलकु ऍङ्कणुम्-लोक में सर्वत्र; ताने आनान्-स्वयं जो हैं; तान् आवतुम्-वे स्वयं खुद हैं; उणर्न्तान्-यह समझकर; विनै-कार्य को; तविर्न्तान् पोलुम्-छोड़ गये शायद; ऍन-ऐसा; इमैयोर्कळुम् अयिर्त्तार्-देव भी संदेह में पड़ गये। ३३५०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम इस तरह बायें और दायें बड़े वेग से चक्कर काट रहे थे। कि यह किसी की समझ में नहीं आता था कि वे चले गये या आ गये। देव भी यह संशय करने लगे कि ये अपने को भावना रूप में सब जीवों के मन में रहनेवाले सर्वान्तर्यामी समझ गये। अतः अपना राक्षस-संहार का काम छोड़ बैठे हैं। ३३५०

शण्डक्कडु नॅडुङ्गार्रिडै तुणिन्दॅर्रिडत् तरैमेल्
कण्डप्पडु मलैपोन्नॅडु मरम्बोर्कडुन् दॊऴिलोर्
तुण्डप्पडक् कडुञ्जारिहै तिरिन्दान्शरञ् जॊरिन्दान्
अण्डत्तिन्नै यळन्दान्नॅन्नक् किळर्न्दान्निमिर्न् दहन्रान् 3351

चण्टम् कटु नॅटु कार्रु–प्रचंड, तेज और प्रबल प्रभंजन; इटै तुणिन्तु ॲर्रिट–बीच में काटता-सा ज़ोर से लगता है, इसलिए; तरै मेल्–धरती पर; कण्टम् पटुम्–खण्ड बनते; मलै पोल्–पर्वत की तरह और; नॅटु मरम् पोल्–ऊँचे पेड़ के समान; कटुम् तॊऴिलोर्–क्रूरकर्मी (राक्षस); तुण्टम् पट–खण्ड-खण्ड हो जायँ, ऐसा; कटुञ् चारिकै तिरिन्तान्–बहुत वेग से चक्कर काटते हुए; निमिर्न्तु अकन्रान्–ऊँचे और बड़े बनकर; अण्टत्तिन्नै अळन्तान् ॲन्न–(जिन त्रिविक्रम ने) अण्डों को मापा था उनके समान; किळर्न्तान्–उमँगकर; चरन् चॊरिन्तान्–(श्रीराम ने) शर-वर्षा की। ३३५१

प्रचंड, प्रखर तथा प्रबल प्रभंजन के काटते हुए ज़ोर से बहने पर जैसे भूमि पर पर्वत और तरु टूटकर गिरते हैं, वैसे ही क्रूरकर्मी राक्षस छिन्न हो जायँ, ऐसा श्रीराम चक्कर काटते हुए फिरे। त्रिलोकनायक श्रीत्रिविक्रम के समान श्रीराम ने बढ़कर शर-वर्षा की। ३३५१

कळियान्नैयु नॅडुन्देर्हळुङ् गडुम्बाय्बरिक् कणनुम्
तॅळियाळियु मुरट्चीयमुञ् जिन्नवीरर्दन् तिरुमुम्
वॅळिवान्नह मिलदाम्वहै विऴुन्दोङ्गिय पिऴम्बाल्
नळिमामलै मलैताविन् नडन्दान्कडर् किडन्दान् 3352

कटल् किटन्तान्–सागरशायी; कळि यान्नैयुम्–मत्तगज और; नॅटु तेर्कळुम्–ऊँचे रथ; कटुम् पाय् परि–सवेग दौड़नेवाले अश्वों के; कणनुम्–समूह; तॅळि याळियुम्–उत्कृष्ट बलयुक्त शरभ; मुरण् चीयमुम्–सशक्त सिंह; चिन्नम्–क्रुद्ध; वीरर् तम्–वीरों की; तिरुमुम्–पलटनें; विऴुन्तु–नीचे गिरकर; वान् अकम्–आकाश में भी; वॅळि इलताम् वकै–रिक्तस्थान नहीं रहे ऐसा; ओङ्किय–ऊँचे; पिऴम्पाल्–ढेरों के कारण; नळि मा मलै–बड़े पर्वत से; मलै ताविन्नन्–अन्य पर्वत पर उछलकर; नटन्तान्–चले (श्रीराम)। ३३५२

मत्तगज, ऊँचे रथ, वेगवान अश्वगण, साफ़ ताक़तवर शरभ, सशक्त केसरी, क्रुद्ध पदातिकों के दल आदि गिर पड़े थे और उनके अलग-अलग ढेर पड़े थे आकाश को भी पूर्ण रूप से भर कर। तब श्रीराम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन पर ज्योतिपुंज के समान एक पर्वत से जैसे दूसरे पर्वत पर उछलते हों वैसे एक से एक पर उछलते हुए गये । ३३५२

अम्ब रङ्गळ् तॊडुङ्गॊडि याडैयुम्
अम्ब रङ्ग ळॊडुङ्गळि यानैयुम्
अम्ब रङ्ग वळ्ळ्न्दिन शोरियिन्
अम्ब रङ्ग मरुङ्गल माळ्ळ्न्दॆन 3353

अम्परम् कम्–समुद्र-जल में; अरु कलम् आळ्ळ्न्तु अॆन–श्रेष्ठ पोत डूबे जैसे; अम्पु–शर; अरङ्क–घुसे इसलिए; अम्परङ्कळ् तॊटु–आकाश छूनेवाली; कॊटि आटैयुम्–ध्वजा-वस्त्र; अम्परङ्कळॊटुम्–और हौदों के साथ; कळि यानैयुम्–मत्त गज; चोरियिन्–रक्त (प्रवाह) में; अळ्ळ्न्तिन–ग़र्क़ हुए । (इसमें यमकालंकार है ।) । ३३५३

श्रीराम के शरों के लगने से मत्तगज आकाशस्पर्शी ध्वजा-वस्त्रों के साथ रक्त-प्रवाह में जो डूबे वह समुद्र-जल में पोतों के मग्न होने का दृश्य उपस्थित कर रहा था । ३३५३

तम्म नत्तिर् चलत्तर् मलैत्तलै
वॆम्मै युर्र्ॆळुन् देरुव मीळुव
तॆम्मु नैच्चॆरु मङ्गैदन् शॆङ्गैयाल्
अम्म नैक्कुल माडुव पोन्ऱुवे 3354

तम् मनत्तिल्–अपने मन में; चलत्तर्–वंचना रखनेवाले राक्षसों के; मलै तलै–पर्वतोपम सिर; वॆम्मै उऱ्ऱ–(शरों के) घातक कर्म के निशाने बनकर (कटकर); अॆळुन्तु एऱुव–जो ऊपर उठे; मीळुव–और लौटे; तॆव् मुनै–युद्ध के मैदान में; चॆरु मङ्कै–युद्ध रूपी स्त्री; तन् चॆम् कैयाल्–अपने लाल हाथों से; आटुव–जो खेलती है; अम्मनै कुलम्–'अम्मानै' के समूह ले; आटुव–खेलती; पोन्ऱ–जैसी लगी । ३३५४

कपटमन राक्षसों के पर्वतोपम शिर श्रीरामबाण के नाशक कर्म के पात्र बने और कटकर ऊपर गये । फिर वे जब लौटकर गिरे तब वे 'अम्मानै'यों (काठ की गेंदें जो स्त्रियाँ अपने हाथों में लेकर उछालती हैं —यह एक खेल है) की तरह दिखे जिन्हें मानो युद्धभूमि रूपी रमणी अपने लाल हाथों से उछाल रही हो । ३३५४

केड हङ्गण वङ्गैयॊ डुङ्गिळर्
केड हङ्गळ् तुणिन्दु किडन्दन्
केड हङ्गिळर् हिन्ऱक ळत्तनन्
केड हङ्गळ् मऱिन्दु किडन्दवे 3355

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

केटकम्–आखेट के योग्य; कङ्कणम् अम् कैयॊट्टम्–सुन्दर कंकण-हस्तों के साथ; किळर्–प्रकाशमय; केटकङ्कळ्–ढालें; तुणिन्तु किटन्तत–छिन्न होकर पड़ी थीं; केटु–बुराई; अकम् किळर्किन्ऱ–जिनके मन में खिली रहती हैं; कळत्त–मैदान में पड़े रहनेवाले; नन्कु एट–श्रेष्ठ दलों वाले (तुम्बै) फूलों की माला से अलंकृत; कम्कळ्–सिर; मऱिन्तु किटन्त–लुढ़कते पड़े रहे। ३३५५

आखेटक योग्य ढालों के रखनेवाले कंकणधारी हाथों के साथ छविमय ढालें भी छिन्न होकर गिरी पड़ी थीं। और युद्ध के मैदान में वंचक मन वाले और सुन्दर पंखुडियों के 'तुम्बै' के फूलों की माला धारण किये रहनेवाले (राक्षसों के) सिर नीचे लुढ़के पड़े थे। ३३५५

अङ्ग दङ्गळत् तऱ्ऱऴि तारॊडुम्
अङ्ग दङ्गळत् तऱ्ऱऴि वुऱ्ऱवाल्
पुङ्ग वन्कणैप् पुट्टिल् पॊरुन्दिय
पुङ्ग वन्कणैप् पुऱ्ऱर वम्बॊर 3356

पुङ्कवन्–नरपुंगव के; कणै पुट्टिल्–तूणीर में; पॊरुन्तिय–रहे; पुङ्कम्–तीक्ष्णमुखी; वल् कणै–कठोर बाण रूपी; पुऱ्ऱ अरवम्–बिल के सर्प के; पॊर–प्रहार से; अङ्कतम्–बाहुवलय; कळत्तु अऱ्ऱ–कंठ के समान (कटे) रहे; अऴि तारॊडुम्–मधु बहानेवाली मालाओं के साथ; अम् कतम्–सुन्दर क्रोध भी; कळत्तु–(युद्ध के) मैदान में; अऱ्ऱ अऴिवु उऱ्ऱत–मिटकर नाश को प्राप्त हो गये। ३३५६

नरपुंगव श्रीराम के तूणीरों के तीक्ष्ण बाण बिल के सर्पों के समान जाकर लगे तो राक्षसों के बाहुवलयों की भी स्थिति कंठों की-सी हो गयी। (यानी दोनों कट गये।) साथ-साथ मधु-भरी सुन्दर मालाएँ और क्रोध भी मिट गया। ३३५६

कयिऱु शेर्हळऱ् कार्निऱक् कण्डहर्
ऍयिऱु वाळि पडत्तुणिन् दियान्तैयिन्
वयिऱु तोऱु मऱैवत्त वान्तिडैप्
पुयल्दॊ ऱुम्बुहु वॆण्बिऱै पोन्ऱवे 3357

कयिऱु चेर्–रस्सी से बँधी; कळल्–पायलधारी; कार् निऱम् कण्टकर्–काले रंग के लोककंटकों के; ऍयिऱु–दाँत; वाळि पट–शरों के लगने से; तुणिन्तु–छिन्न होकर; यान्तैयिन् वयिऱु तोऱुम्–हाथियों के पेटों में; मऱैवत्त–जो छिपे; वान् इटै–आकाश में; पुयल् तॊऱुम्–मेघों में; पुकु–घुसनेवाले; वॆण् पिऱै–श्वेत चन्द्र-कला; पॊन्ऱ–के समान रहे। ३३५७

रस्सी से बँधी पायलोंवाले नीलवर्ण राक्षसों के वक्र दाँत श्रीराम के शरों के काटने से अलग होकर गजों के पेटों में भिदकर जो ओझल हो गये वे आकाश में मेघ-मध्य घुसनेवाले श्वेत बालचन्द्र के समान लगे। ३३५७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆन्ऱि वीर रॆंयिऱुम् विडामदक्
कुन्ऱिन् वॆळ्ळ मरुप्पुङ् गुविन्दन
ऍन्ऱु मॆन्ऱु मॆळुन्द विळम्बिऱै
ऑन्ऱि मानिलत् तुक्कवु मॊत्तवाल् 3358

वॆन्ऱि वीरर्–विजयी वीरों के; ऍंयिऱुम्–(वक्र) दांत और; विटा मतम्–निरंतर मद बहानेवाले; कुन्ऱिन्–पर्वतों (गजों) के; वॆळ्ळै मरुप्पुम्–सफ़ेद दांत; कुविन्तत–ढेर बने; ऍन्ऱुम् ऍन्ऱुम्–अनेक दिनों में; ऍळुन्त–उगे; इळम्पिऱै–बालचन्द्र; ऑन्ऱि–इकट्ठे होकर; मा निलत्तु–बड़ी भूमि पर; उक्कवुम् ऑत्त–गिरे हों ऐसे लगे। ३३५८

विजयी राक्षस वीरों के श्वेत वक्र दाँतों और पर्वत-सम हाथियों के श्वेत दाँतों के ढेर जो बने थे, वे अनेक दिनों के उदित बालचन्द्र मिलकर मानो भूमि पर गिरे पड़े हों ऐसे लगे। ३३५८

ओवि लारुड लुन्दुदि रप्पुनल्
पावि वेलै युलहु परत्तलाल्
तीवु दोऱु मिनिदुऱै शॆय्हैयर्
ईवि लाद नॆडुमलै येऱिनार् 3359

ओविलार्–लगातार जो पड़े रहे; उटल्–उन राक्षसों के शरीर; उन्तु–जो निकालते रहे; उतिरम् पुनल्–रक्त-जल; पावि–फैलकर; वेलै उलकु–समुद्रावृत भूमि पर; परत्तलाल्–व्याप्त हुआ, इसलिए; तीवु तोऱुम्–सभी द्वीपों में; इनितु उऱै–सुख से रहने के; चॆय्कैयर्–स्वभाव वाले; ईवु इलात–अमिट; नॆटु मलै एऱिनार्–ऊँचे पर्वत पर चढ़े। ३३५९

राक्षस के सिर भूमि पर बराबर पड़े हुए थे। उनसे निकला रक्त संसार भर में व्याप्त हुआ। समुद्र में भी बहा तो सुखमय द्वीपवासी ऊँचे पर्वतों पर चढ़ गये ताकि बढ़ते जल में डूब न जायँ। ३३५९

विण्णि ऱैन्दन मॆय्युयिर् वेलैयुम्
पुण्णि ऱैन्द पुनलि निऱैन्दन
मण्णि ऱैन्दन पेरुडल् वानवर्
कण्णि ऱैन्दन विऱ्ऱॊळिऱ् कल्विये 3360

मॆय् उयिर्–शरीर के जीवों से; विण् निऱैन्तन–आकाश भर गया; वेलैयुम्–समुद्र भी; पुण् निऱैन्त–व्रण से निकलकर बहे; पुनलिन् निऱैन्तत–रक्त से भर गया; मण्–भूमि; पेर् उटल्–भर गयी; विल् तॊळिल् कल्वि–धनुकर्मविद्या से; वानवर् कण्–देवों की आँखें; निऱैन्तन–भर गयीं। ३३६०

शरीरों के अन्दर के जीवों से आकाश भर गया। समुद्र भी व्रणनिर्गत रक्त से भर गया। भूमि बेहद लाशों से भर गयी। देवों की आँखें धनुर्विद्या (प्रदर्शन) से भर (खुश हो) गयीं। ३३६०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॅऱुत्त वीरर् पॅरुम्बडै शिन्दिन
पॊऱुत्त शोरि पुहक्कडल् पुक्कन
इऱुत्त नीरिऱ् चॅऱिन्दन वॅङ्गणुम्
अऱुत्तु मीन मुलन्द वनन्दमे 3361

चॅऱुत्त वीरर्–क्रुद्ध वीरों के; पॅरु पटै–बड़े-बड़े हथियार; चिन्तिन–बिखर गये; पॊऱुत्त चोरि–उन्हें धारण करते हुए रक्त; पुक–समुद्र में बहा इसलिए वे भी; कटल् पुक्कन–समुद्र में प्रविष्ट हो गये; इऱुत्त नीरिल्–वहाँ रहते जल में; चॅऱिन्तन–संकुलित होकर; ऍङ्कणुम्–सब ओर; अऱुत्तु–काटने लगे तो; उलन्त–उससे भरी; मीनम्–मछलियाँ; अनन्तमे–अनंत थीं। ३३६१

क्रोधी वीरों के हथियार बिखरे, रक्त में तिरकर उसके साथ समुद्र में पहुँच गये। संकुलित रहे उनके काटने से सर्वत्र जो (जलचर) मछलियाँ मरीं वे अनंत थीं। ३३६१

ऑल्व देयिव् वॊरुवनिव् वूहत्तैक्
कॊल्व देनिन्ऱु कुन्ऱन यामॆलाम्
वॆल्व देदु मिलामैयिन् वॆण्बलै
मॆल्व देयॆन वन्नि विळम्बिनान् 3362

इव् ऒरुवन्–यह एकाकी का; इव् ऊकत्तै–इस (राक्षस-) सेना का; निन्ऱु–सामना करके; कॊल्वतु–मारना; ऒल्वते–साध्य है क्या; कुन्ऱन–पर्वत-सम; याम् ऍलाम्–हम सब; वॆल्वतु–जीतें इसका; एतुम् इलामैयिन्–कुछ संकेत नहीं मिलता, इसलिए; वॆळ् पलै–श्वेत दाँतों को; मॆल्वते–चबाते रहें; ऍन–ऐसा; वन्नि विळम्पिनान्–वह्नि ने पूछा। ३३६२

वह्नि ने यह देखकर पूछा कि क्या एकाकी ही यह इस राक्षस-सेना का सामना करके बिलकुल नाश कर देगा? उसके हाथों यह साध्य हो जायगा क्या? पर्वतोपम हमारे जीतने का कोई आसरा नहीं दीखता। फिर क्या अपने सफ़ेद दाँतों को चबाते रह जायँ? । ३३६२

कोल्वि ऴुन्दऴुन् दामुनङ् गूडियाम्
मेल्वि ऴुन्दिडि नुम्मिवन् वीयुमाल्
काल्वि ऴुन्द मऴैयन्न काट्चियीर्
माल्वि ऴुन्दुळिर् पोलु मयङ्गिनोर् 3363

कोल्–(राम का या रावण का) शर; विऴुन्तु–गिरकर; अऴुन्ता मुनम्–(हम पर) धँसे इसके पहले; याम् कूटि–हम मिलकर; मेल् विऴुन्तिटिनुम्–उस पर गिरें उस हालत ही में; इवन् वीयुम्–यह मरेगा; काल् विऴुन्त–बरसती; मऴै अनन्त–धारदार मेघ के समान; काट्चियीर्–दृश्यमान; नीर् मयङ्कि–तुम लोग भ्रांत होकर; माल् विळुन्तुळिर् पोलुम्–मोह में फँस गये हो शायद क्या। ३३६३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसने आगे कहा— रावण का (या राम का) शर हम पर गिरकर धँस जाय इसके पहले हम उन पर एक साथ गिर जायँ, इतना काफ़ी है, वह मर जायगा। हे जलवर्षी मेघ-वर्ण वीरो ! तुम क्या भ्रांत हो मोह में फँस गये शायद ? । ३३६३

आयि रम्बॆरु वॆळ्ळ मरैपडत्, तेय निऱ्पदु पिन्निनि यॆन्शॆयप्
पायु मुऱ्ऱुड नॆयॆनप् पन्निनान्, नाय हऱ्कॊ रुदवियॆ नल्हुवान् 3364

आयिरम् पॆरु वॆळ्ळम्–हजार महा 'वॆळ्ळम्' की सेना; अरै पट–पिस जाती है; तेय निऱ्पतु–मिटने की दशा में है; इनि पिन्–अब आगे; ऎन् चॆय–क्या करना रहेगा; उटनॆ–तुरंत; उऱ्ऱु–धैर्य करके; पायुम्–(श्रीराम पर) झपटो; ऎन्न–ऐसा; नायकऱ्कु–अपने राजा की; ओर् उतवियॆ–एक सहायता; नल्कुवान् करने के लिए; पन्निनान्–कहा (वह्नि ने) । ३३६४

हजार महा वॆळ्ळम् की सेना पिसती जाती है। लगता है एक दम मिटने की दशा में है ! उसके मिटने के बाद करने के लिए क्या रह जायगा ? इसलिए तुरंत धैर्य अपनाकर राम पर झपट पड़ो। —ऐसा अपने राजा की सेवा करना चाहकर उसने कहा। ३३६४

उऱ्ऱु रुत्तॆऴु वॆळ्ळ मुडन्ऱॆऴाच्, चुऱ्ऱु मुऱ्ऱुम् वळैन्दन तूविन
ऒऱ्ऱै माल्वरै मेलुयर् तारैहळ्, पऱ्ऱि मेहम् बॊऴिन्दॆनप् पल्पडै 3365

उऱ्ऱु–उतारू होकर; उरुत्तु ऎऴु–रुष्ट हो उठी; वॆळ्ळम्–बड़ी सेना; उटन्ऱु ऎऴा–भड़क उठ; चुऱ्ऱु मुऱ्ऱुम्–चारों ओर से बिलकुल; वळैन्तन–घेर गये; ऒऱ्ऱै माल् वरै मेल्–एकाकी बड़े पर्वत पर; मेकम् पऱ्ऱि–मेघ उमड़कर; उयर् तारैकळ्–लम्बी धारें; पॊऴिन्तॆन–बरसाते जैसे; पल् पटै–अनेक हथियार; तूविन–बरसाये। ३३६५

बड़ी सेना रुष्ट होकर उठी। सारे वीर भड़ककर उठे और श्रीराम को घेर गये। फिर वे एकाकी पर्वत पर उमड़कर धार गिराते काले मेघों के समान अपने हथियारों को बरसाने लगे। ३३६५

कुऱित्तॆ ऱिन्दन वॆय्दन कूऱ्ऱुऱत्
तऱित्तुत् तेरुङ् गळिऱुन् दरैप्पडै
मऱित्त वाशि तुणित्तवर् माप्पडै
तॆऱित्तुच् चिन्दच् चरमळै शिन्दिनान् 3366

कुऱित्तु–निशाना बाँधकर; ऎऱिन्तन–फेंके जो गये उन्हें; ऎय्तन–जो चलाये गये उन्हें; कूऱु उऱ–कई टुकड़ों में; तऱित्तु–छेदकर; तेरुम् कळिऱुम्–रथों और हाथियों को; तरै पट–धराशायी करते हुए; मऱित्त–रोके हुए; वाचि–अश्वों को; तुणित्तु–छेदकर; अवर् मा पटै–उनकी अश्व-सेना को; तॆऱित्तु चिन्त–तोड़-छितराकर; चर मळै–शर-वर्षा; चिन्तिनान्–श्रीराम ने की। ३३६६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षसों ने जो निशाना बाँधकर हथियार चलाये उन्हें, और जो चलाये गये उन हथियारों को श्रीराम ने खण्डित करके हटा दिया। रथों और गजों को धराशायी कर दिया। रुके हुए अश्वों को छिन्न कर दिया। और अश्वारोही वीरों को छितरा दिया। ऐसा श्रीराम ने शरवर्षा की। ३३६६

वाय्वि ळित्तॆळु पः(ह्)ऱलै वाळियिल्
पोय्वि ळित्त कुरुदिहळ् पॊङ्गुव
पेय्क ळिप्प नडिप्पत्त पॆट्पुरुम्
तीवि ळित्तिडु तीब निहर्त्तवाल् 3367

वाय् विळित्तु–मुख से शब्द करते हुए; ऎळु–झपटनेवाले; पल् तलै वाळियिल्–अनेक सिरों वाले बाणों के कारण; विळित्त–बड़े शोर के साथ मरनेवालों का; कुरुतिकळ्–रक्त; पॊङ्कुव–उफ़न उठा; पेय् कळिप्प–भूत जो अवित होकर; नटिप्पत्त–नाचते (उनकी); विळित्तिटुम् ती–निमन्त्रण देनेवाली (मुख की) आग; पॆट्पु उरुम्–उपयोगी; तीपम् निकर्त्त–समुद्रकूल के दीपस्तम्भ के दीप के समान रही। ३३६७

मुखरित हो चलनेवाले बहुसिर शरों के लगने से राक्षस मरे। उनसे शब्द करते हुए रक्त के अनेक प्रवाह उफन उठे। उनके किनारों पर अग्निमुख भूत आनंद के साथ नाचे। वे अपने मुख की आग के कारण समुद्र के किनारे रहकर यात्रियों को सहायता देनेवाले दीपस्तम्भ के समान दिखे। ३३६७

नॆय्हॊळ् शोरि निऱैन्द नॆडुङ्गडल्
शॆय्य वाडैय ळऩ्ऩशॆञ् जान्दिऩळ्
वैय मङ्गै पॊलिन्दऩण् मङ्गलच्
चॆय्य कोलम् बुऩैन्दऩ्ऩ शॆय्हैयाळ् 3368

नॆय् कॊळ्–चर्बी से युक्त; चोरि–रक्त से; निऱैन्त–भरे; नॆटु कटल्–बड़े समुद्र रूपी; चॆय्य आडैयळ्–रक्त (वर्ण) वसना (स्त्री); अऩ्ऩ–उसी रंग के; चॆम् चान्तिऩळ्–लाल चन्दन से चर्चित; वैयम् मङ्कै–भूदेवी; मङ्कलम् चॆय्य–शुभ कार्य करने; कॊलम् पुऩैन्तऩ्ऩ–वेष धारण कर चुकी हो; चॆय्कैयाळ्–ऐसा कार्य करनेवाली के रूप में; पॊलिन्तऩळ्–शोभी। ३३६८

चर्बी-सहित रक्त से भर गया समुद्र। अतः भूमि रक्त (-वर्ण-) वसना हो गयी। उसी रंग के चंदन से भी चर्चित हुई भी लगी। तब वह उस स्त्री के समान लगी जो शुभ कार्य के अवसर पर लाल रंग के अलंकार के कार्य में लगी हो। ३३६८

उप्पुत् तेऩुनॆय् यॊण्डयिर् पाल्करुम्
बप्पुत् तानॆऩ् ऱुरैत्तऩ वाळिहळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुप्पुप् पोऱ्कुरु दिप्पुनल् शुऱ्ऱलाल्
तप्पिऱ् ऱव्वुरै यिन्ऱोर् तनुविनाल् 3369

उप्पु-लवण; तेन्-मधु; नेय्-घृत; ऑण तयिर-श्वेत दधि; पाल्-दुग्ध; करुम्पु-इक्षु; अप्पु-शुद्ध जल के; ऍन्ऱु उरैत्तत आळिकळ्-ऐसे कहे जानेवाले समुद्र; तुप्पु पोल् कुरुति-प्रवालवर्ण रक्त का; पुनल्-जल; चुऱ्ऱलाल्-घेरने से; इन्ऱु-आज; ऑर् तनुविनाल्-एक धनु के कारण; अव् उरै-(सप्त-समुद्र के) उस नाम से; तप्पिऱ्ऱु-वंचित हो गये। ३३६९

समुद्र सात हैं। वे लवण, घृत, दधि, मधु, दुग्ध, इक्षु और शुद्धजल के हैं। अब सभी में रक्त भर गया। इसलिए एक धनु के कारण सप्त (-पदार्थ-) समुद्र का नाम गुम हो गया! । ३३६९

ऑन्ऱु मेतॉडै कोलॉरु कोडिहळ्
शॅन्ऱु पाय्वन तिङ्ग ळिळम्बिरै
अन्ऱु पोलॅन लाहिय दच्चिलै
ऍन्ऱु माळ्व रॅदिर्त्त विराक्कदर् 3370

तॉटै ऑन्ऱुमे-संधानकर चलाना एक ही बार; कोल्-बाण तो; ऑरु कोटिकळ्-एक करोड़; चॅन्ऱु पाय्वत-जा लगते हैं; अ चिलै-वह धनु; अन्ऱु पोल्-उसी दिन के; इळम् पिरै तिङ्कळ् ऍन-बालचन्द्र के समान; आकियतु-(वक्र) है; ऍतिर्त्त-सामना करनेवाले; इराक्कतर्-राक्षस; ऍन्ऱु माळ्वर्-कब तक मरेंगे। ३३७०

एक ही खेप में करोड़ों अस्त्र चलते थे। वह धनु भी चन्द्रकला के समान श्रीराम के झुकाने से वक्र हो गया था। तो भी न जाने लड़नेवाले राक्षस कब तक समाप्त होंगे? । ३३७०

ऍडुन्तव रिरैत्तव रॅऱिन्दवर् शॅऱिन्दवर् मऱङ्गॉ डॅदिरे
तडुत्तवर् शलित्तवर् शरिन्दवर् पिरिन्दवर् तनिक्क ळिऱुपोल्
कडुत्तवर् कलित्तवर् कऱुत्तवर् शॅऱुत्तवर् कलन्दु शरमेल्
तॉडुत्तवर् तुणिन्दवर् तॉडर्न्दनर् किडन्दनर् तुरन्द कणैयाल् 3371

ऍटुत्तवर्-जिन्होंने हथियार उठाये वे; इरैत्तवर्-और नारे लगानेवाले; चॅऱिन्तवर्-(श्रीराम के) बहुत पास आये; ऍऱिन्तवर्-हथियार चलानेवाले; मऱम् कॉटु-वीरता के साथ; ऍतिरे-सामने से; तटुत्तवर्-(श्रीरामास्त्र को) रोकने वाले; चलित्तवर्-ऊबे हुए; चरिन्तवर् पिरिन्तवर्-हारकर अलग हुए; तति कळिऱु पोल्-और अकेले हाथी के समान; कटुत्तवर्-जोर लगानेवाले; कलित्तवर्-घमंडी; कऱुत्तवर्-क्रुद्ध; चॅऱुत्तवर्-फूत्कार करनेवाले; कलन्तु-मिल आकर; चरम् मेल् तॉटुत्तवर्-शर प्रेरित करनेवाले सभी; तुरन्त कणैयाल्-श्रीराम के प्रेरित अस्त्रों से; तुणिन्तवर्-छिन्न होकर; तॉटर्न्ततर् किटन्ततर्-बराबर पड़े रहे। ३३७१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हथियार उठानेवाले, नारे लगानेवाले, श्रीराम के पास आये हुए, हथियार फेंकनेवाले, वीरता दिखाकर श्रीराम के अस्त्र को रोकनेवाले, ऊबे हुए वीर, हारकर भागनेवाले अकेले मदमत्त के समान ज़ोर लगानेवाले, घमंडी, क्रुद्ध, फूत्कार करनेवाले और पास आकर श्रीराम पर बाण चलाने वाले सभी श्रीराम के चलाये गये अस्त्रों से छिन्न होकर बराबर मरे और भूमि पर गिरे पड़े रहे। ३३७१

तॊडुप्पदु शुडर्प्पहऴि यायिर निरैत्तवै तुरन्द तुऱैपोय्प्
पडुप्पदु वयप्पहऴि यायिररै यऱुपदि ऩायि रवरैक्
कडुप्पदु करुत्तुमदु कट्पुलऩ् मऩङ्गरुदल् कल्वि यिलवेल्
ऍडुप्पदु पडप्पॊरुव दऱ्ऱियिवर् शॆय्वदॊरु नऩ्ऱि युळदो 3372

तॊटुप्पतु–चलाये गये; चुटर् पकऴि–तेजोमय शर; आयिरम्–हज़ार; निरैत्तवै–पंक्तियों में जाते वे; तुरन्त तुऱै पोय्–प्रेरित मार्ग में जाकर; पटुप्पतु–मारते; वयप्पकऴि–विजयदायी शरों वाले; आयिररै अऱु–हज़ार को नहीं; पतितायिरवरै–दसों हज़ार वीरों को; अतु कटुप्पु–वही तीव्रता (उनकी) थी; अतु करुत्तुम्–वही (प्रेरक का) मनोरथ भी; कण् पुलऩ् मऩम्–आँख की इन्द्रिय और मन; करुतल् कल्वि–सोचने (जानने) की शक्ति से युक्त; इल–नहीं; वेल् ऍटुप्पतु–शक्ति उठाना (राक्षसों का); पट पॊरुवतु अऱ्ऱि–मरने के लिए लड़ना छोड़; इवर् चॆय्वतु–इनका कार्य; ऒरु नऩ्ऱि उळतो–एक अच्छा काम भी है क्या। ३३७२

श्रीराम चलाते एक ही हज़ार अस्त्र, पर वे पंक्तियों में जाकर मारते केवल एक हज़ार विजयशरधारक वीरों को नहीं! पर मारते दस हज़ार वीरों को! वह उनकी तेज़ी है और श्रीराम का मनोरथ भी। उन्हें आँखें या मन देख जान ही नहीं सकता! राक्षस शक्तियाँ उठाते अवश्य थे, पर वह मरने के लिए ही! उसे छोड़ वे क्या उपयोगी अच्छा कार्य कर सकते थे? । ३३७२

तूशियॊडु नॆऱ्ऱियिरु कैयिऩॊडु पेरणि कडैक्कुऴै तॊहुत्तु
ऊशिनुऴै यावहै शरत्तणि वहुक्कुमवै युणणु मुयिरै
आशैहळै युऱुरुवु मपपुऱमु मोडुम दनिपपु ऱमुळार्
ईशऩैदि रुऱुहुव दल्लदिहऩ् मुऱुवदॊर् कॊऱ्ऱ मॆवनो 3373

तूचियोटु नॆऱ्ऱि–अग्रभाग तथा भाल का भाग; इरु कैयिऩॊटु–दोनों बाजुओं के साथ; पेर् अणि–प्रधान भाग और; कटै कुऴै–अंतिम भाग; तॊकुत्तु–इनको मिलाकर; ऊचि नुऴैया वकै–सूई भी न घुस पाये ऐसा; चरत्तु अणि–शरपंक्ति; वकुक्कुम्–रचनेवाले बने श्रीराम; अवै–वे; उयिरै उणणुम्–राक्षसों की जान खा लेते; आचैकळै उऱुरु–दिशाओं में जाकर; उरुवुम्–भेद जाते; अपपुऱमुम् ओटुम्–उन्हें पार कर भी आगे जाते; अतऩ्–निशाने के; इ पुऱम् उळार्–इस तरफ़ रहनेवाले; ईचऩ्–भगवान के; ऍतिर् उऱुरु–समक्ष जाकर; उकुवतु अल्लतु–मर जाने के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिवा; इकल् मुऱुवतु–वीरता को चरम सीमा की; ओर् कॊऱ्ऱम्–विजय पाना; ऍवन्–कहाँ । ३३७३

श्रीराम ने ऐसे अस्त्र चलाये कि राक्षस-सेना के अग्रभाग, उसके पीछे का (भाल का) भाग, प्रधान अंश, पीछे का भाग, दोनों बाजू-सब ऐसे मिल गये कि सूई के घुसने का स्थान भी नहीं मिल सका। वे शर राक्षसों के प्राणों को खाते। दिशाओं में जाकर उन्हें भेदते। दिगंत के पार भी चलते। उनके निशाने के इस तरफ़ जो राक्षस थे उनका श्रीराम के सम्मुख जाकर प्राण छोड़ने के सिवा वीरता की सीमा में मिलनेवाली विजय पाना कैसे हो सकता था ? । ३३७३

ऊनहु वडिक्कणैह ळूळियन लॊत्तन वुलन्द वुलवैक्
कानह निहर्त्तन ररक्कर्मलै यॊत्तन कळित्त मदमा
मानवन् वयप्पहळि वीशुवलै यॊत्तन वळैप्पुन लुळ्वाळ्
मीनहु लमॊत्तन कडऱ्पडै यिनत्तॊडुम् विळिन्दु ऱुदलाल् 3374

ऊन् नकु–मांस के साथ शोभनेवाले; वटि कणैकळ्–तीक्ष्ण शर; ऊळि अनल् ऒत्तन–युगान्त की अग्नि के समान हैं; अरक्कर्–राक्षस; उलन्त–सूखे; उलवै कानकम्–ठूँठों के जंगल; निकर्त्तनर्–के समान थे; कळित्त मत मा–मदमत्त हाथी; मलै ऒत्तन–पर्वतों की समानता करते थे; मानवन्–मनुकुल-पुत्र श्रीराम के; वयम् पकळि–बलवान शर; वीचु वलै ऒत्तन–फेंके जानेवाले जाल के समान थे; कटल पटै–सागर-सी सेना; इनत्तॊटुम्–समूहों के साथ; विळिन्तुऱुतलाल्–मिट गयी, इसलिए; वळै पुनलुळ्–(धरती के) आवरणकारी समुद्र में; वाऴ्–वास करनेवाले; मीनम् कुलम् ऒत्तन–मत्स्यकुल के समान थी। ३३७४

मांस के साथ शोभनेवाले तीक्ष्ण शर युगांत की अग्नि के समान लगे; तो राक्षस सूखे ठूँठों के जंगल के सदृश रहे और मदमत्त हाथी पर्वतों के समान। मनुकुलपुत्र श्रीराम के बाण मछुए के जाल के समान लगे। सागर-सी सेना स-समूह मिटती, इसलिए राक्षसदल पृथ्वी के आवरणकारी समुद्र के अन्दर रहनेवाला मत्स्यकुल बना। ३३७४

ऊळियिऱु दिक्कडुहु मारुदमु मॊत्तन निराम नुडने
पूळियॆन वुक्कुदिरु माल्वरैह ळॊत्तन ररक्कर् पॊरुवार्
एऴुलहु मुऱुयिर्हळ् यावैयु मुरुक्कियिऱु दिक्क णिन्वरुम्
आळियैयु मॊत्तननम् मन्नुयिरु मॊत्तन रलैक्कु निरुदर् 3375

इरामन्–श्रीराम; ऊळि इऱुति–युगान्त में; कटुकु मारुतमुम्–प्रचण्ड बहने वाले मारुत; ऒत्तनन्–के समान रहे; उटने–तुरंत; पूळि ऍन–धूल के समान; उक्कु उतिरुम्–टूटकर गिरनेवाले; माल् वरैकळ् ऒत्तनर्–बड़े पर्वतों के सदृश थे; पॊरुवार् अरक्कर्–लड़नेवाले राक्षस; एऴु उलकुम् उऱुऱु–सातों लोकों में जाकर; उयिर्कळ् यावैयुम्–सभी जीवों को; मुरुक्कि–मारकर; इऱुतिकणिन्–आखिरकार;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वऱम्–उमगनेवाले; आऴियैयुम् ऒत्तत्तऩ्–समुद्र के समान भी रहे (श्रीराम); अलैक्कुम् निरुतर्–त्रस्त राक्षस; अ मऩ् उयिरुम्–उन नित्यजीवों; ऒत्तत्तर्–के सदृश भी रहे। ३३७५

श्रीराम युगांत के प्रचंड मारुत-सम थे। लड़नेवाले राक्षस तुरन्त धूल बनकर गिरनेवाले पर्वतों के सदृश रहे। श्रीराम युगांत में उमड़ आनेवाले सागर के समान थे जो कि सातों लोकों में पहुँचकर जीवों का अंत कर देता। त्रस्त राक्षस उन नित्यजीवों से तुल्य रहे। ३३७५

मूलमुद लायिडैयु मायिरुदि यायैवैयु मुऱ्ऱु मुयलुङ्
गालमॆऩ लायिऩऩि रामऩव्व ररक्कर्कडै नाळिल् विळियुङ्
गूलमिल् शराशर मऩैत्तिऩैयु मॊत्तत्तर् कुरैह डलैऴुम्
आलमॆऩ लायिऩऩि रामऩवर् मीऩमॆऩ लायि ऩर्हळाल् 3376

इरामऩ्–श्रीराम; मूलम् मुतलाय्–मूल कारण बनकर; इटैयुमाय्–और मध्य रहकर और; इऱुति आय्–अन्त रहकर; ऎवैयुम्–सभी प्रपंच के; मुऱ्ऱुम्–लीन होने का स्थान बनकर; मुयलुम्–यत्नशील; कालम् ऎऩल् आयिऩऩ्–युगान्तकाल के सदृश बने; अव् अरक्कर्–वे राक्षस; कटै नाळिल्–युगान्त में; विळियुम्–मरनेवाले; कूलम् इल्–असीम; चर अचरम्–चराचर; अऩैत्तिऩैयुम् ऒत्तत्तर्–सभी के समान बने; कुरै कटल् ऎऴुम्–गर्जनशील सागर से उदित; आलम् ऎऩल् आयिऩऩ् इरागऩ्–हलाहल-सम रहे श्रीराम; अवर्–वे; मीऩम् ऎऩल् आयिऩर्–मछलियों के सदृश रहे। ३३७६

श्रीराम आदि, मध्य और अंत में रहनेवाले और सब प्रपंच के लय के आश्रय, यत्नशील काल के समान रहे। तो राक्षस युगांत में विनष्ट होनेवाले चराचर सबके सदृश रहे। गर्जनशील समुद्र से उत्पन्न हलाहल के सदृश रहे श्रीराम, तो वे राक्षस (उसमें जल) मरनेवाली मछलियों के समान रहे। ३३७६

वञ्जविऩै शॆय्दुनॆडु मऩ्ऱिल्वळ मुण्डुहरि पॊय्क्कु मऱमार्
नॆञ्जमुडै योर्हळक्कुल मॊत्तत्तर रक्करऱ मॊक्कु नॆडियोऩ्
नञ्जनॆडु नीरिऩैयु मॊत्तत्त ऩडुत्तदऩै नक्कि ऩरैयुम्
बञ्जमुऱु नाळिल्वऱि योर्हळैयु मॊत्तत्त ररक्कर् पडुवार् 3377

वञ्चम् विऩै–वंचक कार्य; चॆय्तु–करके; नॆटु मऩ्ऱिल्–न्यायसभा में; वळम् उण्टु–अधार्मिक रीति से धन लेकर (घूंस पाकर); करि पॊय्क्कुम्–झूठी गवाही देनेवाले; मऱम् आर्–पापपूर्ण; नॆञ्चम् उटैयोर्कळ्–मन वालों के; कुलम् ऒत्तत्तर्–कुल के समान थे; अरक्कर्–राक्षस; नॆडियोऩ्–महिमामय श्रीराम; अऱम् ऒक्कुम्–(उस कुल के नाशक) धर्मदेवता के समान थे; नञ्चम्–विषमिश्रित; नॆटु नीरिऩैयुम्–अधिक जल के भी; ऒत्तत्तऩ्–सदृश रहे श्रीराम; अऩैत्तु अटुत्तु–उसके पास जाकर; नक्कितरैयुम्–चाटनेवालों के; पञ्चम् उऱु नाळिल्–अकाल के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समय के; वऱियोर्कळैयुम्–दरिद्रों के भी; ऒत्ततर् अरक्कर्–समान रहे निशाचर; पट्टुवार्–मिटते । ३३७७

छल-फ़रेब करके घूँस लेकर जो न्यायसभा में झूठी गवाही देता है, उस पाप-मन पुरुष के कुल के समान राक्षस बने । तो महिमावान श्रीराम धर्मदेवता के समान रहे, जोकि उस कुल का नाश कर देता है । श्रीराम विषमिश्रित जल के समान रहे तो वे राक्षस उसे चाटनेवालों के समान बने। और भी अकाल में दरिद्रों के समान भी लगे । और वे मरे । ३३७७

वॆळ्ळमीरु नूऱुपडुम् वेलैयिऩव् वेलैयुमि लङ्गै वॆळियुम्
पळ्ळमॊडु मेडुतॆरि यादवहै शोर्कुरुदि पम्बि यॆळ्ळुम्
उळ्ळुमदि लुम्बुऱमु मॊऩ्ऱुमऱि यादलऱि योडि नऱ्हळाऱ्
कळ्ळनंडु मान्विळिय रक्कियर्क लक्कमॊडु काल्हळ् कुलैवार् 3378

वॆळ्ळम् ऒरु नूऱु–एक सौ 'वॆळ्ळम्'; पटु वेलैयिऩ्–जब सेना मरती तब; अ वेलैयुम्–वह सागर; इलङ्कै वॆळियुम्–और लंका का खाली स्थान; पळ्ळमॊटु मेटु–नीची भूमि और ऊँची भूमि; तॆरियात वकै–न जानी जायँ ऐसा; चोर् कुरुति–बढ़नेवाला रक्त; पम्पि ऎळ्ळुम्–फैल उठा तो; कळ्ळम् नॆटु–वंचकता-भरी; मान् विळि–हरिणाक्षी; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; मतिल्–प्राचीरों के; उळ्ळुम् पुऱमुम्–अन्दर और बाहर; ऒऩ्ऱुम् अऱियातु–विना कुछ जाने ही; काल्कळ् कुलैवार्–पैरों की शक्ति खोकर; कलक्कमॊटु–क्षोभ के साथ; अलऱि ओटिऩर्–चिल्लाती भागीं । ३३७८

एक सौ वॆळ्ळम् की सेना जब हत हुई तब जो रक्त बहा वह ऐसा फैला कि समुद्र में और लंका के रिक्त स्थानों में यह पहचाना नहीं जा सकता था कि ऊँची भूमि कहाँ है और नीची भूमि कहाँ । तब वंचकता से भरी तथा हरिणाक्षी राक्षसियाँ कुछ जाने विना ही प्राचीरों के अन्दर और बाहर लड़खड़ाते और क्षीणशक्ति हुए पैरों के बल चिल्लाती हुई भागीं । ३३७८

नॆरुङ्गिऩर् नॆरुङ्गिऩर् मुरुङ्गिऩ रुलैन्दुलहि ऩीळु मलैपोल्
वीङ्गिऩ पॆरुम्बिणम् विशुम्बुऱ वशुम्बुपडु शोरि विरिवुऱ्
ऱोङ्गिऩ नॆडुम्बरवै यॊत्तुयर वॆत्तिशैयु मुऱ्ऱै दिरुऱत्
ताङ्गिऩर् पडैत्तलवर् नूऱुशद कोडियर् तडुत्त लरियार् 3379

नॆरुङ्किऩर्–पास जाकर लड़ाई करते; मुरुङ्किऩर्–मिटकर; उलैन्तु–विकृत होकर; नीङ्किऩर्–दुनिया से कूच कर गये; उलकिल्–संसार में; नीळुम् मलै पोल्–लम्बे बनते बड़े पर्वत के समान; पॆरुम् पिणम्–शवों के बड़े ढेर; विचुम्पु उऱ–आकाश स्पर्श करते हुए; वीङ्किऩ–ऊँचे बने; अचुम्पु पटु चोरि–बहनेवाला रक्त; विरिवुऱ्ऱु–विस्तृत बना; नॆटु परवै ऒत्तु–विशाल सागर के समान बनकर; उयर–उभरने; ऎ तिचैयुम् उऱ्ऱु–सभी दिशाओं में जाकर; ऎतिर् उऱ–सामने जाने; ओङ्किऩ–बढ़ा; तटुत्तल् अरियार्–दुर्निवार; नूऱु चत कोटियर्–सौ शतकोटि के; पटै तलैवर्–सेनापति; ताङ्किऩर्–रोके रहे । ३३७९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षस वीरों ने पास रहकर युद्ध किया। वे मरे, विकृत-रूप हुए और दुनिया से कूच कर गये। इसलिए भूमि पर लम्बी पर्वतश्रेणी के समान लाशों के ढेर बने और आकाश को छूते हुए ऊँचे बने रहे। उन लाशों से रक्त जो बह निकला वह सागर के समान सब दिशाओं में बहा और अपने में टकराकर ऊँचा बढ़ा। तब सौ शतकोटि के दुर्निवार वीर सेनापति श्रीराम को रोके खड़े रहे। ३३७९

तेरुमद मावुम्वरै याळियॊडु वाशिमिहु शोय मुदला
ऊरुमवै यावैयु नडायिऩर्ह डायिऩर् हळुन्दि ऩर्हळाऴ्
कारुमुरु मेरुमॆरि येरुनिहर् वॆम्बडयॊ डम्बु कडिदिऩ्
तूरुम्वहै तूयिऩर् तुरन्दऩर्ह ळॆय्दऩर् तॊडर्न्द ऩर्हळाल् 3380

तेरुम्–रथ और; मतम् मावुम्–मत्तगज; वरै–पर्वतीय; याळियॊटु–शरभों के साथ; वाचि–अश्व; मिकु चीयम्–बलवान सिंह; मुतला–आदि; ऊरुम्–वाहन; अवै यावैयुम्–उन सभी को; कटायिऩर्–चलाते हुए; नटायिऩर्–चले; कारुम्–मेघ; उरुम् एऱुम्–और अशनिराज; ऍरि एऱुम्–बड़ा अनल; निकर्–सदृश; वॆम् पटैयॊटु–भयंकर हथियारों के साथ; कटितिऩ्– तेज; तूरुम् वकै तूयिऩर्–(युद्ध का मैदान) पट जाय ऐसा बरसाये; तुरन्तऩर्कळ्–शीघ्र; ऍय्तऩर्–छोड़ते हुए; तॊटर्न्तऩर्कळ्–पीछा किया। ३३८०

वे लोग रथ, मत्तगज, पार्वत्य शरभ, वाजी, सशक्त सिंह आदि वाहनों को चलाते हुए आये और उन्होंने मेघ, अशनिराज और वृहत् अनल —इनके समान भयानक हथियारों को मैदान को पाटते हुए बरसाया। बरसाते हुए वे पीछा करने लगे। ३३८०

वम्मिऩड वम्मिऩॆदिर् वन्दुनुम दारुयिर् वरङ्गळ् पिऱवुन्
दम्मिऩॆऩ विऩ्ऩमॊऴि तन्दॆदिर् पॊऴिन्दऩ तडुप्प रियवाम्
वॆम्मिऩॆऩ वॆम्बहऴि वेलैयॆऩ वेयिऩऩव् वॆय्य विऩैयोर्
तम्मिऩ मऩैत्तैयु मुऩैन्दॆदिर् तडुत्तऩर् तऩित्त ऩियरो 3381

वम्मिऩ्–आओ; अट वम्मिऩ्–मैं मारूँ तदर्थ आओ; ऍतिर् वन्तु–सीधे आकर; नुमतु अरुमै उयिर्–अपने प्यारे प्राणों; वरङ्कळ्–और वरों; पिऱवुम्–और अन्य सभी को; तम्मिऩ्–दे दो; ऍऩ–यह और; इऩ्ऩ मॊऴि तऩ्तु–ऐसी बातें कहते हुए; ऍतिर् पॊऴिन्तऩ–सामने से चलाये गये और; तटुप्पु अरिय आम्–दुर्निवार; वॆम् पकऴि–भीषण अस्त्रों को; वॆम् मिऩ् ऍऩ–भयंकर बिजली के समान और; वेलै ऍऩ–समुद्र के समान; एयिऩऩ्–(अस्त्र) छोड़े; अ वॆय्य विऩैयोर्–उन क्रूर-कर्म राक्षसों ने; तऩि तऩि–अलग-अलग; ऍतिर्–समक्ष रहकर; तम् इऩम् अऩैत्तैयुम्–सभी शरसमूह को; मुऩैन्तु तटुत्तऩर्–अधिक प्रयत्न के साथ रोका। ३३८१

श्रीराम ने उनको आमंत्रित किया— आओ; मेरे हाथों मरने के लिए आओ! सीधे आओ और अपने प्यारे प्राणों और वरों को और अन्य जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भी हैं तुम लोगों के पास उन सभी को दे दो ! यह कहते हुए उन्होंने सीधे जानेवाले दुर्द्धर्ष और भीषण विद्युत्-से शरों को सागर के समान चलाया। उन क्रूरकर्म राक्षसों ने भी अलग-अलग रहकर बड़े प्रयत्न के साथ उन बाणों को रोका। ३३८१

अक्कणैयै यक्कण मरुत्तनर् शॅरुत्तिह लरक्क रडैयप्
पुक्कणैय लुऱ्ऱनर् मऱैत्तनर् पुयऱ्कदिहम् वाळि पॉऴिवार्
तिक्कणै वहुत्तन रॅनच्चल नॅरुक्किनर् शॅरुक्किन् मिहैयाल्
मुक्कणनै युऱ्ऱडि वणङ्गियिमै योरिवै मॉऴिन्द नर्हळाल् 3382

इकल् अरक्कर् अटैय–सभी वैरी राक्षसों ने; पुक्कु–घुसकर; अणैयल् उऱ्ऱनर्–मिले; अ कणैयै–उन शरों को; चॅरुत्तु–रोष दिखाकर; अ कणम्–उसी क्षण में; अऱत्तनर्–काट देकर; पुयऱ्कु अतिकम्–मेघ से अधिक; वाळि–अस्त्रों को; पॉऴिवार्–बरसाकर; मऱैत्तनर्–(श्रीराम को) ओझल कर दिया; तिक्कु–दिशाओं के लिए; अणै वकुत्तनर्–सेतु (या पुल) बना दिया; अॅन–जैसे; मिकै चॅरुक्किनाल्–अधिक अभिमान के साथ; चॅल नॅरुक्किनर्–बहुत पास से त्रस्त किया; इमैयोर्–देवों ने; मुक्कणनै–त्रिनेत्र के; उऱ्ऱु–पास जाकर; अटि वणङ्कि–चरणों में नमस्कार करके; इवै मॉऴिन्तनर्कळ्–ये वचन कहे। ३३८२

वैरी राक्षसों ने बहुत पास जाकर उन शरों को उसी क्षण काट दिया। फिर वे खुद मेघों से भी अधिक परिमाण में शर बरसाते हुए श्रीराम को ओझल करके घेर गये। दिशाओं पर पुल बाँध दिया हो, ऐसा वे दर्प के साथ घेरकर खड़े हो गये। तब देवों ने त्रिनेत्र शिवजी के पास जाकर उनके चरणों पर नमस्कार किया। फिर वे यों कहने लगे। ३३८२

पडैत्तलैव रुऱ्ऱॊरुवर् मुम्मडि यिरावण नॅनुम्ब डिमैयोर्
किडैत्तन रवर्क्कॊरु कणक्किलै वळैत्तनर् किळर्न्दु लहॅलाम्
अडैत्तनर् तॅऴित्तन रऴित्तनर् तनित्तुळ निराम नवरो
तुडैत्तनरॅम् वॅऱ्ऱियॅन वुऱ्ऱन रिनिच्चॅयल् पणित्ति शुडरोय् 3383

पटै तलैवर् उऱ्ऱु–सेनानायकों में रहे; ऒरुवर्–एक-एक; मुम्मटि इरावणन्–तिगुना रावण; अॅनुम् पटिमैयोर्–कह सकते हैं, ऐसे हैं; किटैत्तनर्–(युद्ध में) आये; अवर्क्कु–उनका; ऒरु कणक्कु इलै–कोई हिसाब नहीं; वळैत्तनर्–घेरकर; किळर्न्तु–उमगकर; उलकु अॅलाम्–सारे लोकों में; अटैत्तनर्–व्यापकर; तॅऴित्तनर्–डाँटते हुए; अऴित्तनर्–नष्ट करने लगे; इरामन्–श्रीराम; तनित्तु उळन्–अकेला है; अवरो–व (वानर) तो; अॅम् वॅऱ्ऱि तुटैत्तनर्–हमारी विजय को पोंछ दिया; अॅन–मानो यह सोचकर; उऱ्ऱनर्–चुप रहे; चुटरोय्–अनलवर्ण; इनि–अब; चॅयल्–कार्य; पणित्ति– कहने की करें। ३३८३

जो लड़ने आये हैं उनमें एक-एक 'तिगुना रावण' कहने योग्य हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनकी संख्या का कोई हिसाब नहीं। वे श्रीराम को घेर गये हैं। उमँग कर वे सारे लोकों पर छा गये हैं। डाँटते-डपटते नाश करने लगे हैं। श्रीराम एकाकी रह गये। वानरों ने सोच लिया कि हमारी विजय को राक्षसों ने पोंछ दिया है। इसलिए वे चुप रह गये। अनलवर्ण ! कहिए क्या होना है ? । ३३८३

अॅय्दकणै यॅय्दुवदन् मुन्बिडै यऱुत्तिवर्ह ळऴु लहमुम्
मॉय्हॉऴ्कणै मामुहि लॅन्नुम्बडि वळैत्तनर् मुन्निन्द नर्हळाल्
वॅदुहॉलि नल्लदु मऱप्पडै कॉडिप्पडै कडक्कुम् वलितान्
शॅय्यतिरु मालिन्नॉ डुन्नक्कुमरि दॅन्ऱुऱर् तिहैत्तु विऴुवार् 3384

अॅय्त कणै–(श्रीराम द्वारा) प्रेषित शर; अॅय्तुवतन् मुन्पु–आ लगे उसके पहले ही; इटै–बीच में ही; अऱुत्तु–उसे काटकर; इवर्कळ्–ये राक्षस; एऴु उलकमुम्–सातों लोकों पर; मॉय् कॉऴ्–मँड़रानेवाले; कणै–एकत्रित; मा मुकिल् अॅन्नुम् पटि–बड़े मेघों के समान; वळैत्तनर्–घेरकर; मुन्निन्तनर्कळ्–क्रुद्ध हैं; वॅदु कॉलिम् अल्लतु–शाप देकर मारने के सिवा; मऱम् पटै–वीरतायुक्त; कॉटि पटै–पदातिक वीरों की सेना लेकर; कटक्कुम् वलि–हराने का बलवान कार्य; चॅय्य तिरुमालिन्नॉटु–श्रेष्ठ श्रीविष्णु के साथ; उन्नक्कुम् अरितु–आप के लिए भी कठिन है; अॅन्ऱुऱर्–कहकर; तिकैत्तु विऴुवार्–भयातुर हो गिर पड़े। ३३८४

श्रीराम जो शर चलाते हैं, वे आ लगें, इसके पहले ही उन्होंने उन्हें काट दिया है। सातों लोकों को आच्छादित करनेवाले एकत्रित मेघों के समान वे घेरे रहते हैं और बहुत ही रुष्ट रहते हैं ! शाप देकर मारा जाय तभी मरेंगे। नहीं तो वीरों की सहायता उन्हें जीतने का बलापेक्षी कार्य श्रेष्ठ श्रीविष्णु के साथ आपके लिए भी असाध्य है ! यों कहते हुए वे भयभ्रांत होकर गिरने लग गये। ३३८४

अञ्जलिन्नि याङ्गवर्ह ळॅत्तनैव रायिडिनु मत्त नैवरुम्
पञ्जियॅरि युऱ्ऱदॅन्न वॅन्दळिव रिन्दवुरै पण्डु मुळदाल्
नञ्जममिऴ् दत्तैनन्नि वॅन्ऱिडिनु नल्लऱ नडक्कु मदनै
वञ्जविन्नै पॉय्क्करुमम् वॅल्लिनुमि रामनैयम् मायर् कडवार् 3385

इन्नि अञ्चल्–अब मत डरो; अवर्कळ्–वे; आङ्कु–वहाँ; अॅत्तनैवर् आयिडिनुम्–कितने ही क्यों न हों; अत्तनैवरुम्–वे सभी; पञ्चि अॅरि उऱ्ऱतु अॅन्न–रुई में आग लगी हो जैसे; वॅन्तु अळिवर्–जलकर मरेंगे; इन्त उरै–यह कथन; पण्टुम् उळतु–पहले से है; नञ्चम्–विष; अमिऴ्तत्तै–अमृत को; वॅन्ऱिडिनुम्–जीते तो भी; नटक्कुम् नल् अऱम् अतनै–वर्तमान श्रेष्ठ धर्म को; वञ्चम् विनै–वंचक कर्म; पॉय् करुमम्–असत्य कार्य; वॅल्लिनुम्–जीत जाय तो भी; अम् मायर्–वे मायावी राक्षस; इरामनै–श्रीराम को; कटवार्–जीत नहीं सकेंगे। ३३८५

तब शिवजी ने आश्वासन दिया। देवो ! अब डरना छोड़ दो। वे,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कितने ही क्यों न हों, सभी आग-लगी रूई के समान जलकर मिट जायेंगे। यह बात पहले ही से स्थिर है ! चाहे अमृत को विष खूब हरा दे; माया तथा झूठा कार्य चाहे वर्तमान धर्म को परास्त कर दे, पर वे मायावी राक्षस श्रीराम को जीत नहीं सकेंगे। ३३८५

अरक्करुळ रार्शिलरव् वीडण नलादुलहि नावि युडैयार्
इरक्कमुळ दाहिनदु नल्लर् मॅळुन्दुवळर् हिन्र् दिनिनीर्
करक्कमुळै तेडियुळल् हिन्रिलिर्ह ळिन्रॊरु कडुम्ब हलिले
कुरक्किन्मुद नायहनै याळुडैय कोळुळुवै कॊल्लु मिवरै 3386

अ वीटणन् अलातु–उस विभीषण के सिवा; उलकिन्–पृथ्वी में; आवि उटैयार्–जीवंत; अरक्कर्–राक्षसों में; यार् चिलर् उळर्–कौन (जो हैं वे भी) कम हैं; इरक्कम् उळतु आकिन्–दया हो तो; अतु–उससे; नल् अरम्–अच्छा धर्म; ॲळुन्तु वळर्किन्रतु–उठकर बढ़ता है; इनि–अब; नीर्–तुम लोग; करक्क–छिपने के लिए; मुळै तेटि–गुहाएँ खोजते; उळल्किन्रिलिर्कळ्–मत फिरो; इन्रु–आज; ऒरु–एक; कटुम पकलिले–मध्याह्न में; कुरक्किन् मुतल् नायकनै–वानरों के राजा को; आळुटैय–जो सेवक के रूप में रखते हैं वे; कोळ्–सबल; उळुवै–व्याघ्र- (श्रीराम); इवरै कॊल्लुम्–इन्हें अन्त कर देंगे। ३३८६

उस विभीषण को छोड़कर जीवंत राक्षसों में कितने रहते हैं ? बहुत कम ही रहते हैं। संसार में करुणा रहे तो धर्म बढ़ता है। अब तुम लोगों को छिपने के लिए गुहाओं की खोज में कष्ट उठाना नहीं पड़ेगा। आज मध्याह्न के अन्दर वानरेंद्र के स्वामी बलवान व्याघ्र श्रीराम उन सबका अंत कर देंगे। ३३८६

ॲन्रुपर मन्बहर नान्मुहनु मन्नपॊरु ळेयि शैदलुम्
निन्रुनिलै यारिन्रर्हळ् वानवरु मानवनु नेमि यॅनलाम्
तुन्रुनॆडु वाळिमळै मारियिनु मेलन् तुरन्दु विरैविर्
कॊन्रुकुल माल्वरैहण् मानुदलै मामलैहु वित्त नन्रो 3387

ॲन्रु–ऐसा; परमन् पकर–परमेश्वर के कहने पर; नान्मुकनुम्–चतुर्मुख के भी; अन्न पॊरुळे–उसी बात से; इचैतलुम्–सम्मत होने पर; वानवरुम्–देव भी; निन्रु–स्थिर होकर; निलै आरिन्रर्कळ्–धीर हुए; मानवनुम्–श्रीराम ने भी; नेमि ॲनलाम्–चक्रायुध-सम भयंकर; तुन्रु–घनी; नॆटु वाळि मळै–लम्बी शर-वर्षा; मारियिनुम् मेलन्–वर्षा से अधिक; तुरन्नु–छुड़ा के; विरैविन् कॊन्रु–शीघ्र हत करके; कुल माल् वरैकळ् मानुम्–बड़ी कुलगिरियों-सदृश; मा तलै मलै–बड़े सिरों के पर्वतों के; कुवित्तानन्–ढेर बना दिये। ३३८७

परमेश्वर ने ऐसा कहा। तब चतुर्मुख ने भी उसी को सही बताया। उससे देव आश्वस्त हो धीर बने। श्रीराम ने चक्रायुध-सम अस्त्रों की,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेघों से अधिक परिमाण में वर्षा करायी और शीघ्र राक्षसों को निहत करके कुल-गिरियों के-से बड़े सिरों के ढेर लगा दिये । ३३८७

महर मऱिकडलिन् वळैयुम् वयनिरुदर्
शिहर मऩैयवुडल् शिदऱि इऱुवरुयिर्
पहर वरियपदम् विरव वमरर्पऴ
नहर मिडमरुह नवैयर् नलिवुपड 3388

मकरम्–मकर-भरे; मऱि–टकरानेवाली लहरों से भरे; कटलिन्–समुद्र के समान; वळैयुम्–(श्रीराम को) घेरे रहनेवाले; वयम्–बलवान; नवैयर् निरुतर्–दोषपूर्ण राक्षसों की; उयिर्–आत्माएँ; पकर अरिय–अवर्ण्य; पतम्–स्वर्ग-पद को; विरव–पहुँचीं; अमरर्–देवों का; पऴ नकरम्–प्राचीन नगर में; इटम् अरुक–स्थान नहीं रह गया; चिकरम् अऩैय उटल्–(पर्वत-) शिखर-सम शरीर; चितऱि–छिन्न-भिन्न हो; नलिवु पट–संकटग्रस्त हो गये, इस रीति से; इऱुवर्–मिटे । ३३८८

मकरों और प्रत्यावर्तनशील तरंगों से युक्त समुद्र के समान जो दोषपूर्ण राक्षस श्रीराम को घेर गये थे उनकी आत्माएँ अवर्णनीय स्वर्ग में पहुँच गयीं और देवों का प्राचीन नगर ठस भर गया जिससे कि कहीं रिक्त स्थान ही प्राप्त नहीं रहा । उनके पर्वतशिखर-सम शरीर छिन्न-भिन्न हो गये । तड़पकर वे राक्षस मर मिटे । ३३८८

उहळु मिवुळितलै तुमिय वुऱुकऴल्हळ्
अहऴि यऱवलिय तलैह ळऱुतलैवर्
तुहळि नुडल्हळ्विऴ वुयिर्हळ् शुररुलहिन्
महळिर् वऩमुलैहळ् तऴुवि यहमहिऴ 3389

उऱु कऴल्कळ्–सारयुक्त पैरों से; अकऴि अऱ–परिखा पटी; तलैकळ् अऱ–सिर-कटे; तलैवर् उटल्कळ्–नायकों के शरीर; तुकळिन् विऴ–धूल बनकर गिरे; उयिर्कळ्–उनके जीव; चुरर् उलकिन्–देवलोक की; मकळिर्–स्त्रियों के; वऩम् मुलैकळ् तऴुवि–सुन्दर स्तनों (छातियों) का आलिंगन करके; अकम् मकिऴ–आनंदित-मन हुए; इवुळि–उनके अश्व; तलै तुमिय–सिर के कट जाने से; उकळुम्–तड़पकर गिरते । ३३८९

राक्षसों के ताक़तवर पैरों से परिखा पटी । सबल सिरों से हीन नायकों के शरीर धूल बनकर भूमि पर गिरे । उनके जीवात्माओं ने सुरलोकबालाओं के स्तनों का आलिंगन करके आनंद लूटा । उनके अश्व सिरों के कट जाने से तड़पकर गिरे । ३३८९

मलैयु मऱिकडलुम् वऩमु मरुनिलमुम्
उलैवि लमररुऱै युलहु मुयिर्हळॊडु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तलैयु मुडलुमिडै तळुव तवळ्हुरुदि
अलैयु मरियदॊरु तिशैयु मिलदणुह 3390

मलैयुम्–पर्वतों; मऱि कटलुम्–और तीर से टकराती मुड़ आती तरंगों वाले सागरों; वनमुम्–पर्वतों; मरु निलमुम्–खेतों; उलैवु इल–अविनाशी; अमरर् उऱै उलकुम्–देवों के वास के लोक में; तलैयुम् उटलुम्–सिरों और शरीरों को; इटै तळुवुम्–मध्य में लेकर; तवळ् कुरुति–फैलनेवाली रक्त की; अलैयुम्–लहरें; उयिर्कळॊटुम्–और जीव; अरियतु–जहाँ नहीं रहें; ऒरु तिचैयुम्–ऐसी एक दिशा; अणुक इलतु–पास जाने योग्य कोई नहीं रही। ३३९०

पर्वतों में, या तीर से मुड़कर टकराती तरंगों वाले सागर में; चाहे वनों में या खेतों की भूमि में; चाहे अमर देवों के लोक में कहीं भी शरीर तथा सिरों को अपने मध्य लिये रहनेवाले रक्त-सागर और जीवों से हीन कोई भी दिशा नहीं रही जहाँ पहुँचा जा सके। ३३९०

इनैय शॆरुनिहळु मळवि नॆदिर्पॊरुव
विनैय मुडैमुदल्व रॆवरु मुडन्विळिय
अनैय पडैनॆळिय वमरर् शॊरिमलर्हळ्
ननैय विशैयिनॆळु तुवलै मळैहलिय 3391

इनैय–ऐसा; चॆरु निकळुम् अळविन्–युद्ध जब चला तब; ऎतिर् पॊरुत–सामने जो लड़े; विनैयम् उटै–षड्यन्त्र-समर्थ; मुतल्वर् ऎवरुम्–सभी नायक; उटन् विळिय–एक साथ मरे; अनैय पटै–वैसी सेना; नॆळिय–छटपटायी तो; अमरर् चॊरि–देवों द्वारा बरसाये गये; मलर्कळ्–फूलों की; ननैव–कलियों से; विचैयिन् ऎळु–जोर से जो उठे; तुवलै–उन मधुकणों की; मळै–वर्षा; कलिय–(जब) बढ़ी। ३३९१

ऐसा युद्ध चला और षड्यंतकारी सभी राक्षससेनापति एक साथ मर गये। उनकी सेना छटपटायी। तब देवों ने इतने फूल बरसा दिये कि कलियों से मधु की वर्षा खूब हुई। ३३९१

इरिय लुऱुपडैयै निरुव रिडैविलहि
ऎरिहळ् शॊरियुनॆडु विळिय रिळुदैयर्हळ्
तिरिह तिरिहवॆन वुररु तॆळिकुरलर्
करिह ळरिहळ्परि कडिदि नॆदिर्कडव 3392

निरुतर्–राक्षस; इटै विलकि–बीच में अलग जाकर; इरियल् उऱु–अस्त-व्यस्त भागनेवाली; पटैयै–सेना को; ऎरिकळ् चॊरियुम्–आग निकालती; नॆटु विळियर्–लम्बी आँखों वाले और; इळुतैयर्कळ्–मूर्खों; तिरिक तिरिक–लौटो, लौटो; ऎन–ऐसा; उरऱु–डाँटनेवाले; तॆळि कुरलर्–कर्कश स्वर वाले (वीरों की सेना); करिकळ्–गजों; अरिकळ्–सिंहों; परि–और अश्वों को; कटितिन्–त्वर; ऎतिर् कटव–समक्ष चलाते। ३३९२

जो राक्षस वीर अस्त-व्यस्त हो भागे थे वे अब आपस में 'मूर्खो,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लौटो' कहते हुए, आँखों से आग निकालते और डाँटते कर्कश-स्वर वाले बनकर गजों, सिंहों और अश्वों को श्रीराम पर प्रेरित करते हुए (लौट आये)। ३३९२

उलहु शॅविडुपड मऴॆह ऴुदिरवुयर्
अलहिन् मलॆकुलॆय वमरर् तलॆयदिर
इलहु तॉडुपडॆह ऴिडियॉ डुरुमनॆय
विलहि यदुतिमिरम् वळॆयुम् वहैविळॆय 3393

उलकु चॆविटु पट–लोक को बहरा बनाकर; मऴॆकळ्–मेघों को; उतिर–नीचे गिराते; उयर्–ऊँचे; अलकु इल्–अमाप; मलॆ कुलॆय–पर्वतों को अस्थिर करते; अमरर्–देवों के; तलॆ अतिर–सिरों को कँपाते हुए; इलकु–प्रकाश देनेवाले; तॉटु पटॆकळ्–हाथ से फेंके जानेवाले हथियारों को; इटियॉटु–वज्र के साथ; उरुम् अनॆय–बिजली के समान; तिमिरम् वळॆयुम् वकॆ–तिमिरावृत हो, ऐसा; विळॆय–कार्य करके; विलकियतु–लौट आयी। ३३९३

वे इतने धूमधाम से लौटे कि लोक बहरा हो गया; मेघ चू पड़े। ऊँचे अपार पर्वत ढह गये। देवों के सिर काँप उठे। जो हथियार हाथ में ले चलाते थे वे बिजली और वज्र के समान लगे। अंधकार घेरता हो, ऐसा वे आकर श्रीराम को घेर गये। ३३९३

अऴहि दऴहिदॆन वऴह नुवहैयॉडु
पऴहु मतिदियरै यॆदिर्हॉळ् परिशुपड
विऴैवि नॆदिरवदि रॆरिकॉळ् विरिपहऴि
मऴैहळ् मुऱैशॉरिय वमरर् मलर्शॉरिय 3394

अऴकन्–सुन्दरमूर्ति; अऴकितु अऴकितु–सुन्दर है, सुन्दर; अॆन–ऐसा; उवकैयॉटु–आनंद के साथ; पऴकुम् अतितियरै–परिचित अतिथियों की; अॆतिर् कॉळ् परिचु–अगवानी करने की-सी रीति; पट–बरत कर; विऴैवुटन्–चाव के साथ; अॆतिर अतिर्–अगवानी के लिए शब्द करनेवाले; अॆरि कॉळ्–अग्निमुखी; बिरि पकऴि–विस्तृत शरों की; मऴैकळ्–वर्षाएँ; मुऱै चॉरिय–लगातार बरसायीं तो; अमरर्–देवों के; मलर् चॉरिय–फूलों को बरसाते। ३३९४

सुन्दरमूर्ति श्रीराम ने भी विस्तृत रूप से शरों की वर्षा की। वे शर सुन्दर-सुन्दर कहते हुए परिचित अतिथियों के समान उनकी अगवानी में शब्द करते चलनेवाले अग्निमुखी बाण थे। तब देवों ने पुष्प बरसाये। ३३९४

तिनह रनॆयणवु कॉडिहळ् तिशैयडैव
शिनवु पॉरुपरिहळ् शॆऱिव वणुहवुयर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनह नॊडुममरिन् मुडुहि यॆदिरवॆळु
कनह वरॆपॊरुव कदिर्हॊळ् मणियिरदम् 3395

तिनकरनै–दिनकर को; अणवु–छूनेवाली; कॊटिकळ्–ध्वजाओं के; तिचै अटैय–दिशाओं में जा पहुँचते; चिनवु पॊरु–क्रुद्ध, युद्धरत; परिकळ्–अश्वों के; अणुक चॆऱिव–पास आकर लड़ते; कतिर् कॊळ्–छविमय; मणि इरतम्–रत्नजड़ित रथों ने; उयर् अनकनॊटु–उत्कृष्ट अनघ श्रीराम के साथ; अमरिन्–युद्ध में; मुटुकि–तेजी से; ऎतिर ऎऴु–भिड़ते उठे हुए; कनकम् वरै–कनकगिरियों की; पॊरुव–समता की। ३३९५

तब दिनकरस्पर्शी ध्वजाएँ दिशाओं में व्यापीं। क्रुद्ध व युद्धरत अश्व युद्ध करने पास आये। दीप्तिमान व रत्नजड़ित रथ उन कनकगिरियों के समान चढ़ आये जो कि उत्कृष्ट अनघ श्रीराम से भिड़ने शीघ्र उठ आये हों। ३३९५

पाऱु पडुशिऱहु कळुहु पहळिपड, नीऱु पडुमिरद निरैयि नुडल्दळुवि
वेऱु पडरपडर विर्वि शुडर्वलैयम्, माऱु पडवुलह निरैह ळळऱुपड 3396

पाऱु–बाज और; पटु–सुघड़ित; चिऱकु कळुकु–पक्षों के गीध; पकळि पट–अस्त्रों के लगने से; नीऱु पटु–चूर हो गिरनेवाले; इरतम् निरैयिन्–रथ पंक्तियों में रहे; उटल् तळुवि–शरीरों को लेकर; वेऱु पटर् पटर–दूसरी दिशा में जाने; विरवि–लगे; चुटर् वलैयम्–सूर्य का प्रकाशवलय; माऱु पट–बदला; उलकम् निरैकळ्–लोकपंक्तियाँ; अळऱु पट–कीच बन गयीं। (ऐसा)। ३३९६

श्रीराम-बाणों से रथों की पंक्तियाँ चूर हो जाती थीं। बाज और सुघड़ पंखोंवाले गीध उनसे राक्षस-शरीरों को ले उड़ जाते थे। उनकी तेज गति के कारण सूर्य का प्रकाशमंडल निष्प्रभ हो गया। लोकपंक्तियाँ कीच बन गयीं। ३३९६

अरुहु कडल्तिरिय वलहिन् मलैकुलैय, उरुहु शुडर्हळिडै तिरिय वुरनुडैय
इरुहै यॊरुकळिऱु तिरिय विडुहुयवर्, तिरिहै यॆनवुलहु मुळुदु मुऱैतिरिय 3397

इरु कै–दो हाथों के; ऒरु–अनोखे; उरन् उटैय–सशक्त; कळिऱु–गज (श्रीराम) के; तिरिय–घूमने से; अरुकु कटल्–पास रहा सागर; तिरिय–विलोडित हुआ; अलकु इल्–अनगिनत; मलै–पर्वत; कुलैय–ढहे; उरुकु–पिघलानेवाले; इरु चुटर्कळ्–दो प्रकाशपुंज; इटै तिरिय–आकाश में मार्ग बदले; इटु कुयवर्–मिट्टी के काम करनेवाले कुम्हारों के; तिरिकै ऎन–चक्र के समान; उलकु मुळुतुम्–सारा लोक; मुऱै तिरिय–क्रम बदला, ऐसा। ३३९७

अनोखे द्विहस्त सबल गज (श्रीराम) के घूमने से पास का समुद्र क्षुब्ध हो गया। अनगिनत पर्वत ढह गये। पिघलानेवाले दो तेजपुंज स्थान बदल गये। कुम्हार के चाक के समान सारा लोक विचलित हुआ। ३३९७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिवनु मयनुमॆळु तिहिरि यमरर्पदि, यवनु ममरर्कुल मॆवरु मुनिवरॊडु
कवन मुरुकरण मिडुवर् कळुदिनमुम्, नमनुम् वरिशिलैयु मऱनु नडनविल 3398

कळुतु इनमुम्–भूतगण भी; नमनुम्–और यम; वरि चिलैयुम्–(श्रीराम के) सबंध धनु और; अऱनुम्–धर्मदेवता के; नटम् नविल–आनन्दनृत्य करते; चिवनुम् अयनुम्–शिव और ब्रह्मा और; ॲळु–युद्धसन्नद्ध; तिकिरि–चक्र वाले; अमरर् पति–देवपति; अवनुम्–विष्णु और; अमरर् कुलम् ॲवरुम्–सारे देवगण; मुनिवरॊटु–मुनियों के साथ; कवनम् उऱु–(आनंदाधिक्य से) सत्वर; करणम् इटुवर्–सिर औंधा भूमि पर रखकर शरीर को चक्राकार करके पीठ की तरफ़ घुमाने और खड़ा हो जाने की क्रिया करने लगे। ३३९८

तब भूतगण, यम, श्रीराम का सबन्ध धनु और धर्मदेवता— इन सबने आनंदनृत्य किया। शिव, अज, चक्रधर देवदेव विष्णु, सभी देवगण और मुनि आनंदाधिक्य से जल्दी-जल्दी 'करण' करने लगे। ३३९८

तेवर् तिरिबुवन निलैयर् शॆरुविदनै, एव रऱिवुरुव रिऱुदि मुदलऱिविन्
मूवर् तलैहळ्पॊदि रॆऱिव रऱमुदल्व, पूवै निऱववॆन वेद मुऱैपुहळ 3399

तिरिपुवनम् निलैयर्–तीनों भुवनों में वास करनेवाले; तेवर्–देवों में; यावर्–कौन; चॆरु इतनै–इस युद्ध का; इऱुति–अंत (क्या होगा, यह); अऱिवु उऱुवर्–जान सकते; मुतल् अऱिविन् मूवर्–आदि ज्ञेय तीन; तलैकळ् पॊतिर् ॲऱिवर्–सिर हिला देते; अऱम् मुतल्व–धर्म के नाथ; पुवै निऱव–अतसि-पुष्पवर्ण; ॲन–ऐसा; वेतम् मुऱै पुकळ–वेदों ने यथाक्रम स्तुति की (ऐसा)। ३३९९

वेदपुरुष ने स्तुति की! हे धर्म के आदि आश्रय! अतसीवर्ण! तीनों भुवनों में रहनेवाले देवों में कौन ही यह जाने कि इस युद्ध का अंत कब होगा, क्या होगा? श्रेष्ठ ज्ञानी त्रिदेव भी सिर हिला देते हैं!। ३३९९

ॲय्यु मॊरुपहळि येळु कडलुमिड़, वॆय्य कळिऱुपरि याळॊ डिरदम्विळ
ॲय्य वॊरुहदियि नोड वुणरमरर्, कय्ह ळॆनववुणर् काल्हळ् कदिहुलैव 3400

ॲय्युम्–(श्रीराम से) प्रेषित; ॲरु पकळि–अनुपम अस्त्र से; एळु कटलुम्–सातों समुद्रों में; इटु–अलंकृत; वॆय्य कळिऱु–भीषण हाथी; परि–अश्व; आळॊटु इरतम्–वीरों के साथ रथ की चतुरंगिनी सेना; वीळु–जा गिरी; ॲय्य–वेग के साथ; ॲरु कतियिन्–एक गति में; ओटु अवुणर्–जो दौड़े उन दानवों और; अमरर्–देवों के; कैकळ् ॲन–हाथों के समान; अवुणर् काल्कळ्–दानवों के पैर; कति कुलैव–क्षीणगति हुए। ३४००

श्रीराम-प्रेरित एक शर अलंकृत व भीषण गजों, अश्वों, वीरों और रथों की चतुरंगिनी सेना को सातों समुद्रों में गिरा देता! राक्षसों के पैर उन देवों और दानवों के हाथों के समान क्षीणबल पड़ गये जो एक तेज़ गति के साथ (क्षीरसागर मथने) दौड़े थे। ३४००

अण्णल् विडुपहळि यानै यिरदमयल्, पण्णु पुरविपडै वोरर् तॊहुपहुदि
पुण्णि नॊडुकुऱिहळ् पुळ्ळियॆन विरैविन्, ॲण्ण वनवनैय वॆल्लै यिलनुळैव 3401

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अण्णल्–महिमामय श्रीराम से; विटु पकळि–छोड़े गये शर; अयल्–पास में रहे; यानै–गज; इरतम्–रथ; पण्णु पुरवि–कोतल घोड़े; पटै बीरर्–पदातिक वीर; तोंकु पकुति–ये जहाँ रहे उन भागों में; पुण्णिनोटु–व्रणों के साथ; कुरिकळ्–दाग़; पुळ्ळि अँन–बिंदियों के समान दिखे; विरैंबिन् अँण्णुवन अनैय–शीघ्र गिनते से; अँल्लै इल–अपार संख्या के; नुळैव–घुसे। ३४०१

महिमावान श्रीराम के शरों के लगने से पास रहे गजों, रथों, सज्जित घोड़ों और पदाति वीरों पर व्रण और दाग़ लगे थे। वे व्रण और दाग़ गिनते वक़्त स्मरण के लिए लगायी गयी बिंदियों के समान लगे और असंख्यक शर जल्दी-जल्दी गिनते हुए चलते जैसे लगे। ३४०१

शुरुक्कमुर् इदुपडै शुरुक्कत् तालिनिक्
करक्कुमुर् इरुपुरत् तँन्नुङ् गण्णिनाल्
अरक्करुक् कन्नुशंल् वरिय दाम्वहै
शरक्कोंडु नेंडुमदिल् शमैत्तिट् टानरो 3402

पटै–सेना; चुरुक्कम् उर्रतु–घट गयी; चुरुक्कत्ताल्–घटने से; इनि–अब आगे; ओंद पुरत्तु–एक तरफ़; उर्रु–जाकर; करक्कुम्–छिपेंगे; अँन्नुम् कण्णिनाल्–ऐसे विचार से; अन्नु–तब; अरक्करुक्कु–राक्षसों को; चेंलवु अरियतु आम् वकै–जाना कठिन हो जाय ऐसा; चरम् कोंटु–अस्त्रों से; नेंटु मतिल्–लम्बी चहारदीवारी; चमैत्तिट्टान्–रच ली। ३४०२

राक्षस-सेना घट गयी। "इस तरह घटती रहे तो राक्षस वीर एक ओर जाकर छिप जायँगे" यह सोचकर श्रीराम ने शरों की एक लम्बी चहारदीवारी रच ली ताकि उनका निकल जाना कठिन हो जाय। ३४०२

मालियै मालिय वानै माल्वरै
पोलुयर् कयिडनै मबुवैप् पोन्नुळार्
शालिहै याक्कैयर् तणिप्पिल् वेंज्जर
वेलियैक् कडन्दिल रुलहै वेंन्नुळार् 3303

उलकै वेंन्नुळार्–लोकविजयी; मालियै–माली और; मालियवानै–माल्यवान के और; माल् वरै पोल्–बड़े पर्वत के समान; उयर्–ऊँचे; कयिटनै–कैटभ के; मतुवै–मधु के; पोन्नु उळार्–सदृश रहनेवाले; चालिकै याक्कैयर्–कवचरक्षित शरीर वाले; तणिप्पु इल–निरंतर चलनेवाले; वेंम् चरम्–भीषण शरों की; वेलियै–चहारदीवारी को; कटन्तिलर्–लाँघ नहीं सके। ३ ०३

लोकविजयी और माली, माल्यवान, पर्वतोन्नत कैटभ, मधु आदि राक्षसों के सदृश और कवचरक्षित शरीरवाले वे निरंतर चलते बाणों की बनी उस प्राचीर को लाँघ नहीं जा सके। ३४०३

माण्डवर् माण्डनर् मर्रु ळोरैलाम्
मीण्डन रोरुतिशै येळु वेलैयुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मूण्डऱ मुरुक्किय वूऴिक् कालत्तिल्
तूण्डुऱु शुडर्शुडच् चुरुङ्गित् तॊक्कपोल् 3404

माण्टबर् माण्टतर्–जो मरे सो मरे; मऱ्ऱुळोर् ऍलाम्–बचे जो रहे वे सभी; तूण्टुऱु–उकसाये जाकर; चुटर्–प्रकाशमान बड़वाग्नि; मूण्टु–जल उठकर; अऱ–बिलकुल; मुरुक्किय–जब नाश करती है; ऊऴि कालत्तिल्–उस युगांत के समय में; चुट–जलाने से; एऴु वेलैयुम्–सातों समुद्र; चुरुङ्कि–घटकर; तॊक्क पोल्–छोटे हो मिल जायँ जैसे; ऒरु तिचै–एक दिशा में; मीण्टतर्–लौट चले। ३४०४

जो मरे वे मरे। पर जो बचे वे भी युगांत की सर्वनाशक बड़वाग्निदग्ध सप्तसमुद्र जैसे सूखकर छोटे बनते हैं, वैसे घटकर एक ओर जाने लगे। ३४०४

पुरञ्जुडु कडवुळुम् बुळ्ळिऩ् पाहऩुम्
अरञ्जुडु कुलिशवे लमरर् वेन्वऩुम्
उरञ्जुडु हिर्किल रॊरुव ऩामुडै
वरञ्जुडुम् वलिशुडुम् वाऴु नाळ्शुडुम् 3405

पुरम् चुटु कटवुळुम्–त्रिपुरदाहक परमेश्वर और; पुळ्ळिऩ् पाकऩुम्–गरुड़वाहन विष्णु; अरम् चुटु–तपाकर रेती से पैनाये गये; कुलिचम् वेल्–कुलिश भाला; अमर् अमरर् वेन्तऩुम्–(रखनेवाला) देवेंद्र; उरम् चुटुकिर्किलर्–हमारा बल तोड़ नहीं सके; ऒरुवऩ्–एकाकी; नाम् उटै–हमारे; वरम्–वर; चुटुम्–मिटाता है; वलि चुटुम्–बल का नाश करता है; वाऴु नाळ् चुटुम्–आयु का अंत कर देता है। ३४०५

(राक्षसों ने आपस में कहा—) त्रिपुरदाहक, गरुड़वाहन, रेती से तेज़ किये हुए कुलिश के स्वामी देवेंद्र आदि भी हमारा बल नहीं तोड़ सकते थे। पर अब यह एकाकी राम, लगता है, हमारे वर, बल और आयु —इन सबका नाश कर देगा। ३४०५

आयिर वॆळ्ळमुण् डॊरुव राऴिशूऴ्, मायिरु ञालत्तै मऱिक्कुम् वऩ्मैयोर्
एयिऩ पॆरुम्बडै यिदऩै योर्विलाल्, एयॆऩु मात्तिरत् तॆय्दु कॊऩ्ऱऩऩ् 3406

ऒरुवऱ–एक ही; आऴि चूऴ्–सागरावृत; मा इरु ञालत्तै–बड़े विशाल संसार को; मऱिक्कुम्–रोक सकनेवाली; वऩ्मैयोर्–शक्ति से संपन्न है ऐसे; आयिरम् वॆळ्ळम् उण्टु–हज़ार 'वॆळ्ळम्' हैं; एयिऩ–ऐसों से युक्त; पॆरुम् पटै इतऩै–बड़ी सेना इसे; ओर् विलाल्–एक चाप लेकर; ए ऍऩुम् मात्तिरत्तु–'ए' कहने की देर में; ऍय्तु कॊऩ्ऱऩऩ्–शर चलाकर निहत करा दिया (राम ने)। ३४०६

हमारी सेना में हज़ार 'वॆळ्ळम्' ऐसे वीर थे जिनमें एक-एक समुद्रावृत विपुला पृथ्वी को रोककर युद्ध कर सकता था। ऐसे वीरों से युक्त इस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सेना को राम ने एक ही चाप की सहायता से 'ए' कहने की देर में नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। ३४०६

इडैपडुम् बडादत विमैप्पि लोर्पडै
पुडैपड वलङ्गॊडु विलङ्गिप् पोहुमाल्
पडैपडु कोडियर् पहळि याऱ्पळिक्
कडैपडु मरक्कर्दम् बिऱवि कट्टमाल् 3407

इमैप्पु इलोर्–अपलक देवों की; पटै–सेना भी; इटै पटुम्–(इस राक्षस-सेना के सामने) हारकर मर जाती; पटातत–जो नहीं मरती; पुटै पट–पिट जाती; वलम् कॊटु–(राक्षस-सेना) विजय पाकर; विलङ्कि पोकुम्–हट जाती; पटै पटु–ऐसी सेना में लगे रहनेवाले; कोटियोर्–करोड़ों वीर; पकळियाल्–राम के एक ही शर से; कटै पटुम् पळि–बहुत ही निकृष्ट अपमान पाकर; अरक्कर् तम् पिऱवि–राक्षस-जन्म; कट्टम्–कष्टदायक हो गया। ३४०७

अपलक देवों की सेना भी हमारी सेना के हाथ मर जाती। नहीं मरती तो भी खूब पिट जाती और हमारी सेना विजय पाकर हट जाती। ऐसी इस सेना के करोड़ वीर राम के शर से नष्ट हो जायँ —यह बहुत ही निकृष्ट अपमान जिसे मिल गया है, वह राक्षस-जन्म अवश्य कष्टदायक है ! । ३४०७

पण्डुल हुय्त्तव नॊडुम् बण्णमै
कुण्डैयिन् पाहनुम् बिऱरुङ् गूडिनार्
अण्डर्हळ् विशुम्बिनिन् ऱार्क्किन् ऱारुळैक्
कण्डिल मिवनॊडु मायक् कळ्वनाल् 3408

पण्टु–पहले; उलकु उय्त्तवनॊटुम्–लोक की सृष्टि जिन्होंने की उन (ब्रह्मा) के साथ; पण् अमै–ज़ीन से युक्त; कुण्टैयिन् पाकनुम्–ऋषभ चलानेवाले; पिऱरुम्–और अन्य; कूटिनार्–मिले और; विचुम्पिन् निन्ऱु–आकाश में खड़े होकर; आर्क्किनृऱार्–आनन्दारव जो करते हैं; अण्टर्कळ् उळ्ळै–उन देवों के मध्य; कण्टिलम्–(श्रीविष्णु को) नहीं देखते; इवन्–यह; नॆटु मायम्–वही बड़ा मायावी; कळ्वन्–चोर होगा। ३४०८

पुरातन लोकसर्जक के साथ ज़ीन-कसे ऋषभ पर आरूढ़ शिव और अन्य देवता आकाश में एकत्रित रहकर आनन्द का कोलाहल मचा रहे हैं। पर उनमें हम (विष्णु को) नहीं देख पाते। अतः यही राम वह बड़ा मायावी चोर विष्णु होगा। ३४०८

कॊत्ऱन निनियॊरु कोडि कोडिमेऱ्
ऱन्ऱॆनिऱ् पदुममेऱ् ऱाहिल् वॆळ्ळमाय्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निन्ऱदु निन्ऱिनि निनैव वॆन्पिऱ
ऒन्ऱॆन वुणर्हॆन वन्नि योदिनान् 3409

इनि–अब; ऒरु कोटि कोटि मेऱ्ऱु–एक करोड़ करोड़ से अधिक; अन्ऱु ऍनिल्–नहीं तो; पतुमम् मेऱ्ऱु–पद्म से अधिक; कॊन्ऱनन्–मारा है (इसने); आकिल्–इसलिए; वॆळ्ळमाय्–'वॆळ्ळम्' की संख्या में; निन्ऱतु–जो रही; पिऱ–अन्य किसी को; ऒन्ऱु ऍन–कोई चीज; इनि निन्ऱु–अब खड़े होकर; निनैवतु–मानना; ऍन्–क्या अर्थ (रखेगा); उणर्क–कहो; ऍन–ऐसा; वन्नि–वह्नि; ओतिनान्–बोला। ३४०९

अब एक करोड़ के ऊपर, न, पद्म के अधिक लोगों को श्रीराम ने मार दिया है ! इसलिए हमारी सेना केवल वॆळ्ळमों की संख्या में आकर रह गयी है। अब फिर हमें कोई चीज़ मानने का क्या क्या अर्थ ? विचार करो। (यों कहनेवाले राक्षसों का) वह्नि ने उत्तर दिया। ३४०९

विऴित्तुमो विरावणन् मुहत्तु मीण्डियाम्
पऴित्तुमो नम्मैनाम् बडुव दञ्जिनाल्
अऴित्तुमोर् पिऱप्पुऱा नॆऱिशॆन् ऱुण्मयाम्
कऴित्तुमिव् वाक्कैयैप् पुहऴैक् कण्णुऱ 3410

नाम् पटुवतु अञ्चिनाल्–हम मरने से डरेंगे तो; याम्–हम; मीण्टु–लौट जाकर; इरावणन् मुकत्तु–रावण के मुख पर; विऴित्तुमो–दृष्टि डाल सकेंगे क्या; नम्मै नाम्–हम अपनी; पऴित्तुमो–निंदा करते रहें क्या; पुकऴैक् कण् उऱ–यश देखें; अऴित्तुम्–अपने को मरवाकर भी; ओर् पिऱप्पु उऱा–दूसरा जन्म न लें, ऐसा; नॆऱि–मार्ग; याम् चॆन्ऱु चेर–हम जा पहुँचें; इव् याक्कैयै–(तदर्थ) इस शरीर को; कऴित्तुम्–त्याग दें। ३४१०

मरने से डरकर हम रावण को मुँह दिखा सकेंगे क्या ? हम अपनी ही निंदा करवा लें ? नहीं। यशार्जनार्थ हम अपना नाश कराके ही सही पुनर्जन्म न हो, ऐसा मार्ग चुनें और अपने शरीर की बलि दे दें। ३४१०

इडुक्किनिप् पॆयर्न्दुऱै यॆण्णु वेमॆनिन्
अडुत्तकूर् वाळियि नरण नीङ्गलोम्
अॆडुत्तोरु मुहत्तिना लॆय्दि यामिनिक्
कॊडुत्तुनम् मुयिरॆन वॊरुमै कूऱिनान् 3411

इ इटुक्किन्–इस नाजुक हालत में; पॆयर्न्तु उऱै–हटकर रहने की बात; ऍण्णुवेम् ऍनिन्–सोचें तो; अटुत्त–पास रहती; कूर् वाळियिन्–तीक्ष्ण शरों की; अरणम्–चहारदीवारी से बाहर; नीङ्कलोम्–नहीं जा सकेंगे; याम् इनि–हम अभी ही सही; ऒरु मुकत्तिनाल् ऍय्ति–एक साथ जाकर; ऍटुत्तु–युद्ध आरम्भ करके; नम् उयिर् कॊटुत्तुम्–अपने प्राणों की बलि दे दें। ३४११

इस नाजुक स्थिति से बचकर अलग जा रहने की बात सोचें तो वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भी साध्य नहीं है, क्योंकि हम तीक्ष्ण शरों की बनी चहारदीवारी से बाहर न जा पायेंगे। इसलिए एक साथ युद्ध आरम्भ करके प्राणों की बलि दे दें। वह्नि ने निश्चित एक बात कही। ३४११

इळक्करु नॆडुवरै यीर्क्कु माऱ्ऱलाम्
अळक्करिऱ् पाय्न्दॆऩप् पदङ्ग मारळल्
विळक्किऩिल् वीळ्न्दॆऩ विदिहॊ डुन्दलाल्
वळॆत्तिरैत् तडर्त्तऩर् मलैयिऩ् मेऩियार् 3412

इळक्क अरु–कठोर; नॆटु वरै–लम्बे पर्वत को; ईर्क्कुम्–खींच ले जानेवाली; आऱु ऎलाम्–सभी नदियाँ; अळक्करिल् पाय्न्तु ऎऩ–समुद्र में जा गिरी हों ऐसे; पतङ्कम्–पतंग; आर् अळल्–अच्छी ज्वाला से युक्त; विळक्किऩिल् वीळ्न्तु ऎऩ–दीप में गिरे जैसे; विति कॊटु उन्तलाल्–विधि के उकसाने से; मलैयिऩ् मेऩियार्–पर्वत (या मेघ) के समान आकार वाले या रंग वाले; वळैत्तु–घेरकर; इरैत्तु–शब्द करते हुए; अटर्त्तऩर्–आक्रमण करने लगे। ३४१२

कठोर पर्वतों को भी खींच ले जानेवाली नदियाँ जैसे समुद्र में जा मिलती हैं; पतंग जैसे ज्वालायुक्त दीप में गिरते हैं, वैसे ही विधि के उकसाने से पर्वतोपम (या मेघसदृश) शरीरी वे राक्षस हो-हल्ला मचाते हुए घेरकर लड़ने लगे। ३४१२

मऴुवॆऴुन् दण्डुकोल् वलयम् नाञ्जिल्वाळ्
ऎऴुवयिऱ् कुन्दवे लीट्टि तोमरम्
कऴुविहऱ् कप्पण मुदल कॆप्पडै
तॊऴुविऩिऱ् पुलियऩा ऩुडलिऱ् रूविऩार् 3413

मऴुवुम्–परशु; ऎऴुम्–प्रयोग में आनेवाले; तण्टु–दण्ड; कोल्–और शर; वलयम्–वलय; नाञ्चिल्–हल; वाळ्–तलवार; ऎऴु–'ऎऴु' नामक हथियार; अयिल्–तीक्ष्ण; कुन्तम्–कुंत; वेल्–'वेल्'; ईट्टि–प्रास; तोमरम्–तोमर; कऴु–'कऴु' नामक हथियार; इकल्–कठोर; कप्पणम्–काँटेदार गदा; मुतल–आदि; कॆ पटै–हथियारों को; तॊऴु विऩिल्–बाड़े के अंदर; पुलि अऩाऩ्–व्याघ्र-सम श्रीराम के; उटलिल्–शरीर पर; तूविऩार्–बरसाये। ३४१३

बाड़े में रहे व्याघ्र के जैसे श्रीराम पर उन लोगों ने परशु, युद्धयोग्य दण्ड, बाण, वलय, हल, तलवार, ऎऴु, तीक्ष्ण कुंत, 'वेल्', प्रास, तोमर, 'कऴु', काँटेदार गदा आदि हथियारों को अधिकता से फेंका। ३४१३

कान्दरुप् पम्मॆऩुङ् गडवुण् माप्पडै
वेन्दरुक् करशऩुम् विल्लि ऩूक्किऩाऩ्
पान्दळुक् करशॆऩप् पऱवैक् केऱ्ऱॆऩप्
पोऩ्ऱुरुत् तदुनॆरुप पऩैय पोर्क्ककणै 3414

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कान्तरुप्पम् ऍत्तुम्–गांधर्व नाम के; कटवुळ् मा पटै–दिव्य महान अस्त्र; वेन्तरुक्कु अरचतुम्–राजाओं के राजा ने भी; विल्लिन् ऊक्किनान्–धनु से छोड़ा; पोर् नॅरुप्पु अनैय–युद्धाग्नि-सम; कणै–वह शर; पान्तळुक्कु अरचु ऍन–सर्प-राज के समान; पऱवैक्कु एऱु ऍनवुम्–पक्षीराज (गरुड़) के समान; पोन्तु–गया और; उरुत्ततु–क्रुद्ध हुआ। ३४१४

तब राजाधिराज श्रीराम ने गांधर्व नाम के महान व दिव्य अस्त्र को धनु से निकाला। युद्धाग्नि के समान वह शर सर्पराज आदिशेष (के समान फूत्कार के साथ) और पक्षीराज गरुड़ के समान (तेज़ी से) निकल चला। वह बड़ा क्रोधी (भीषण) बना रहा। ३४१४

मून्ऱुकण् णमैन्दन मुहमैन् दुळ्ळन, आन्ऱमॅय् तळ्ळन पुनलु माडुव
वान्तॊड निमिर्वन वाळि मामळै, तोन्ऱिन पुरञ्जुडु मॊरुवन् तोऱ्ऱत्त 3415

मून्ऱु कण् अमैन्तन–तीन नेत्रों से युक्त; मुकम् ऐन्तु उळ्ळन–और पाँच मुखों वाले; आन्ऱ मॅय्–ऊँचे शरीर जिनके; तळल् अन–अनल-सम थे; पुनलुम् आडुव–जल में गोते लगानेवाले; वान् तॊट–आकाश को छूते; निमिर्वन–ऊँचे बने; वाळि मा मळै–उस शर से निकले वर्षा-समान शर; पुरम् चुटुम् ऒरुवन्–त्रिपुरदाहक एक ईश्वर के-से; तोऱ्ऱत्त–दृश्य के साथ; तोन्ऱिन–दिखे। ३४१५

उससे कितने शर निकले ! त्रिनेत्र, पंचमुखी, अनलाकार, जलमग्न, गगनस्पर्शी —उन शरों का विपुल समूह बना और वे त्रिपुरदाहक अनुपम शिव के समान दृश्यमान हो चले। ३४१५

ऐयिरु कोडिय ररक्कर् वेन्दर्हळ्, मॊय्वलि वीरर्ह ळॊळिय मुऱ्ऱु
ऍय्यॅन् मात्तिरत् तविन्द दॅन्बराल्, शॅय्दवत् तिरावणन् मूलच् चेनैये 3416

ऐयिरु कोटियर्–दस करोड़ के; अरक्कर् वेन्तर्कळ्–राक्षसराजा; मॊय्वलि–तगड़े शरीर वाले; वीरर्कळ्–वीर; मुऱ्ऱु ऒळिय–बिलकुल मिट जायँ ऐसा; चॅय्तवत्तु–पूर्वकृत तपस्या वाले; इरावणन् मूलम् चेनै–रावण के मूलबल की सेना; ॲ ऍन्तुम् मात्तिरत्तु–'ॲ' कहने की देरी में; अविन्ततु–खाक में मिल गयी; ऍन्पर्–कहते हैं। ३४१६

दस करोड़ राक्षसराजा, जो अतिशय तगड़े वीर थे, 'ॲ' कहने की देर में निश्शेष समाप्त हो गये। वे रावण के मूलबल के वीर थे, जिसे रावण ने तपस्या करके प्राप्त किया था। ३४१६

माप्पॅरुन् दीवुह ळेऴु मादिरम्, पाप्परुम् बावलत् तुळ्ळुम् बल्वहैक्
काप्परु मलैहळुम् बिऱवुङ् गाप्पवर्, याप्पुऱु कादल रिराव णर्क्कवर् 3417

मा पॅरु–बहुत बड़े; तीवुकळ् एऴुम्–सातों द्वीप; मातिरम्–(आठों) दिशाओं में; पाप्पु–नागों के; अरु–अपूर्व; पातलत्तु उळ्ळुम्–पाताल में; पल् बकै–विविध; काप्पु अरु–रक्षित करने में कठिन; मलैकळुम्–पर्वतों में; पिऱवुम्–अन्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

स्थानों में; काप्पवर्–रक्षण-कार्य में लगे; इरावणऱ्कु–रावण के; याप्पु उऱु–सुदृढ़; कातलर्–भक्त हैं; अवर्–वे। ३४१७

फिर और वीर आये। वे विपुल सप्तद्वीप, आठों दिशाओं, नागलोक, पाताल और अरक्षित पर्वतों और अन्य प्रदेशों से आये। वे रावण पर अकाट्य प्रेम रखनेवाले थे। ३४१७

मात्तड मेरुवै वळैन्द वान्शुडर्, कोत्तहन् मार्बिडै यणियुङ् गॊळ्हैयार्
पूत्तवि शुहन्दवन् पुहन्ऱ पॊय्यऱु, नात्तळुम् बेऱिय वरत्तर् नण्णिनार् 3418

मा तट मेरुवै–बहुत विशाल मेरु को; वळैन्त–घूम आनेवाले; वान् चुटर्–वो बड़े तेजपुंजों को; कोत्तु–गूँथकर; अकल् मार्पिटै–विशाल वक्षःस्थल में; अणियुम् कॊळ्कैयार्–पहनने की प्रकृतिवाले; पू तविचु–कमल के आसन के; उकन्तवन्–प्रेमी ब्रह्मा के; पुकन्ऱ–कहे हुए; पॊय् अऱु–जो झूठे नहीं हो सकते ऐसे और; नाळुम्पु एऱिय–मन्त्रजाप से जीभ में गट्ठे पड़ गये, ऐसा जपकर प्राप्त; वरत्तर्–वरों वाले; नण्णिनार्–आये। ३४१८

महामेरु की परिक्रमा करनेवाले दोनों तेजपुंजों, सूर्य और चन्द्र को गूँथकर विशाल वक्ष पर पहनने के स्वभाव वाले थे वे। मंत्र का जप ऐसा करके कि जिह्वा में घट्ठा पड़ जाय, ब्रह्मा से उन्होंने बड़े-बड़े वर प्राप्त किये थे। वे आये। ३४१८

नम्मुळीण् डॊरुवनै वॆल्लु नन्गॆनिन्, वॆम्मुनै यिरावणन् तनैयुम् वॆल्लुमाल्
इम्मॆन वुडनॆडुत् तॆळुन्दु शेऱुमो, शॆम्मैयिल् तनित्तनिच् चॆय्दु मोशॆऱु 3419

ईण्टु–अब; नम्मुळ्–हममें; ऒरुवनै–एक को; नन्कु वॆल्लुम् ऎनिन्–खूब जीतेगा तो; वॆम् मुनै–दारुण युद्ध-भूमि में; इरावणन् तनैयुम्–रावण को भी; वॆल्लुम्–जीतेगा; इम्मॆन–'इम्' कहने की देर में; उटन् ऎऴुन्तु–एक साथ उठकर; ऎटुत्तु चेऱुमो–लड़ने जायँ क्या; चॆम्मैयिल्–योग्य रीति से; तनि तनि–एक-एक जाकर; चॆऱु चॆय्तुमो–लड़ें क्या (पूछा उन लोगों ने वह्नि से)। ३४१९

उन्होंने वह्नि से पूछा कि हममें अब एक को राम जीते तो वह भयंकर युद्धभूमि में रावण को भी जीत लेगा। 'इम्' कहने की देरी में हम सब जाकर लड़ें? या उचित रीति से एक-एक करके लड़ें?। ३४१९

ऎल्लो मॆल्लो मिन्ऱु वळैन्दिन् नॆडियोनै
वल्ले वल्ल पोर्वलि कॊण्डु मलैयोमेल्
वॆल्लोम् वॆल्लो मॆन्ऱुऱनन् वन्नि मिडलोरुम्
तॊल्लोन् शॊल्ले नन्ऱॆन्न वः(ह्)वे तुणिवुऱ्ऱार् 3420

ऎल्लोम्–सभी; ऎल्लोम्–सारे; इन्ऱु वळैन्तु–आज घेरकर; इ नॆटियोनै–इस लम्बोतरे को; वल्ले–शीघ्र; वल्ल–कठोर; पोर् वलि कॊण्टु–युद्ध-बल से; मलैयोमेल्–नहीं लड़ें तो; वॆल्लोम् वॆल्लोम्–नहीं जीतेंगे, नहीं जीतेंगे; ऎन्ऱुऱनन् वन्नि–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहा वह्नि ने; मिटलोरुम्–बलवान राक्षसों ने भी; तॊल्लोन् चॊल्ले–वृद्ध का कथन हो; नन्ऱु–अच्छा है; ऎन्ऱ–कहकर; अ.ंते तुणिवुऱ्ऱार्–वही निश्चय किया। ३४२०

वह्नि ने कहा कि अगर हम सभी एक साथ मिलकर इस लंबोतरे को घेरकर अपना सारा युद्ध-बल लगाकर आक्रमण नहीं करेंगे, तो हम नहीं जीतेंगे, नहीं जीतेंगे। सबने सम्मत होकर कहा कि इस वृद्ध का कहना ही ठीक है! और उसी के अनुसार करने का निश्चय कर लिया। ३४२०

अन्ऱार् तामु मार्हलि येऴु मॆन्ऱवार्त्तार्
मिन्ऱार् वान मिऱ्ऱुऱु मॆन्ऱे विळिशङ्गम्
कॊन्ऱे यूदित् तोळ्पुडै कॊट्टिक् कॊडुशार्न्दार्
ऎन्ऱाम् वैय मॆन्बडु मालित् तिशैयेताम् 3421

अन्ऱार् तामुम्–उन्होंने भी; आर् कलि एऴुम् ऎन्ऱ–सातों समुद्रों के समान; आर्त्तार्–नर्दन किया; मिन् आर् वानम्–बिजली-सहित आकाश; इऱ्ऱु उऱुम्–फटकर गिरेगा; ऎन्ऱे–ऐसा; विळि चङ्कम्–शब्द करनेवाले शंख को; कॊन्ऱे ऊति–भय से भरते हुए फूंककर; तोळ् पुटै कॊट्टि–कन्धों को ठोंककर; चार्न्तार्–आ पहुँचे; वैयम् ऎन् आम्–दुनिया का क्या हो; इ तिचै ताम्–इन दिशाओं का भी; ऎन् पटुम्–क्या हाल हो। ३४२१

उन्होंने सातों समुद्रों के समान नर्दन किया। सबने मन में भय भरकर शंख लेकर बजाया, जिससे यह भय व्याप्त हुआ कि विद्युत्-सहित आकाश फटकर गिर जाय! कंधे ठोंककर वे आ नियराये। इस दुनिया का क्या हाल हो? इन दिशाओं की भी क्या दशा होगी? । ३४२१

आर्त्ता रन्ऩा रन्ऩ कणत्ते यवराऱ्ऱल्
तीर्त्ता ऩुन्दऩ् वॆञ्जिलै नाणैत् तॆऱिवुऱ्ऱाऩ्
बेर्त्ताऩ् बेर्त्ताऩ् मुऱ्ऱु मळन्दाऩ् पिऱळ्शङ्गम्
आर्त्ता लॊत्त दव्वॊलि यॆल्ला वुलहुक्कुम् 3422

अन्ऱार्–उन्होंने; आर्त्तार्–घोष किया; अन्ऱ कणत्ते–उसी क्षण में; अवर् आऱ्ऱल्–उनके बल को; तीर्त्ताऩुम्–मिटानेवाले (श्रीराम) भी; तऩ्–अपने; वॆम् चिलै–भयंकर कोदण्ड के; नाणै तॆऱिवुऱ्ऱाऩ्–डोरे को टंकोरा; अव् ऒलि–वह ध्वनि; पेर्त्ताऩ् पेर्त्ताऩ्–डग भर-भरकर; मुऱ्ऱुम्–सारे लोकों को; अळन्ताऩ्–जिन्होंने मापा था उनके; पिऱळ् चङ्कम्–विशिष्ट (सुदर्शन) शंख के; ऎल्ला उलकुक्कुम्–सारे लोकों में; आर्त्तल्–नाद; ऒत्ततु–के समान रहा। ३४२२

उन राक्षसों ने नारे लगाये। उसी क्षण राक्षस-बल-नाशक श्रीराम ने अपने उग्र कोदंड के डोरे को टंकोरा। वह शब्द लोकों भर में डग भरकर मापनेवाले त्रिविक्रमदेव के विशिष्ट शंख की ध्वनि के समान सारे लोकों में व्याप्त हुआ। ३४२२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पल्लायिर कोडियर् पल्हलैनूल्, वल्लारवर् मॅय्म्मै वळङ्गवलार्
ॲल्लावुल हङ्गळु मेरियपोर्, विल्लाळ ररक्करिन् मेदहैयार् 3423

पल् आयिरम् कोटियर्–अनेक हज़ार कोटियों के; पल् कलै–अनेक कलाओं के; नूल वल्लार्–शास्त्र-निपुण; अवर्–वे; मॅय्म्मै–सत्य-मार्ग में; वळङ्क वलार्–हथियार चलाने में निपुण; ॲल्ला उलकङ्कळुम्–सारे लोकों में; एरिय–अधिक प्रशंसा-प्राप्त; पोर् विल्लाळर्–युद्धधनुर्दक्ष; अरक्करिन् मेतकैयार्–राक्षसों में श्रेष्ठ। ३४२३

वे अनेक हज़ार करोड़ों की संख्या के थे। अनेक कलाओं के शास्त्रों में निपुण थे। सीधे मार्ग पर हथियार चलानेवाले, सर्वलोक-शंसित, युद्धधनुनिपुण और राक्षसों में श्रेष्ठ। ३४२३

वॅन्ड्रारुल हङ्गळै विण्णवरो, डॉन्ड्रावुयर् तानव रोदमॅलाम्
कॉन्ड्रार्निमिर् कूर्ड्रॅन वॅव्वुयिरुम्, तिन्ड्रारंदिर् शॅन्ड्रु शॅरिन्दनराल् 3424

उलकङ्कळै–लोकों को; वॅन्ड्रार्–जीतनेवाले; विण्णवरोटु–देवों के साथ; ऑन्ड्रा–एक साथ; उयर् तानवर्–बल में उत्कृष्ट दानवों के; ओतम् ॲलाम्–सागर-सम विशाल दलों को; कॉन्ड्रार्–मारनेवाले; निमिर् कूर्ड्रु ॲन–उद्यत यम के समान; ॲव् उयिरुम्–सभी जीवों को; तिन्ड्रार–खानेवाले; चॅन्ड्रु–जाकर; ॲतिर् चॅरिन्ततर्–सामने पहुँचे। ३४२४

लोकविजयी, देवों और बलविशिष्ट दानवों के संहारक और उद्योगशील यम के समान सर्वजीवभक्षक —वे राक्षस समक्ष जाकर जुटे। ३४२४

वळैत्तार् मदयानैयै वन्ड्रॉळुविर्, ड्रळैत्ता रॅनवन्दु तनित्तनिये
उळैत्ता रुरुमेड्रॅन वॉन्ड्रलपोर्, विळैत्ता रिमैयोर्हळ् वॅदुम्बिनराल् 3425

वन्तु–आकर; मत यानैयै–मत्त हाथी को; वल् तॉळुविल्–सुनिर्मित गजशाला में; तळैत्तार् ॲन्–बाँध दिया हो जैसे; वळैत्तार्–घेर गये; तनि तनिये–अलग-अलग; उरुम् एरु ॲन–भयंकर अशनि के समान; उळैत्तार्–नर्दन किया; ऑन्ड्रु अल–एक तरह का नहीं; पोर् विळैत्तार–युद्ध किया; इमैयोर्कळ्–देव; वॅतुम्पिनर्–संतप्त हुए। ३४२५

उन्होंने मत्तगज को गजशाला के अन्दर करके (आलान से) बाँधनेवालों के समान श्रीराम को घेर लिया। अलग-अलग अशनिराज के समान नर्दन करते हुए अनेक प्रकार से युद्ध किया। यह देव संतप्तमन हो गये। ३४२५

विट्टीय वळङ्गिय वॅम्बडैयिर्, चुट्टीय निमिर्न्द शुडर्च्चुडरुम्
कट्टीयु मॉरुङ्गु कलन्दॅळलाल्, उट्टीयुर् वॅन्दन वेळलहुम् 3426

विण् तीय–आकाश जल जाय ऐसा; वळङ्किय–(राक्षसों से) प्रयुक्त; वॅम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पटैयिल्–भीषण हथियारों में; चुट्टीय निमिर्न्त–जलाती उठी; चुटर्–ज्वालामय; चुटरुम्–आग; कण् तीयुम्–और आँखों की आग; ऒरुङ्कु कलन्तु–एक साथ मिलकर; ऎऴलाल्–उठी, इसलिए; एऴु उलकुम्–सातों लोक; ती उळ् उर्–आग में हो; वॆन्तत–झुलसे। ३४२६

स्वर्ण को भी जलानेवाले भीषण हथियारों से दाहक ज्वालामय अग्नि निकली। उनकी आँखों से कोपाग्नि छूटी। दोनों के मिलकर उठने से सातों लोक आग में फँसकर झुलसे। ३४२६

तेरार्प्पॊलि वीरर् तॆऴिप्पॊलियुम्
तारार्प्पॊलि युङ्गऴल् ताक्कॊलियुम्
पोरार्शिलै नाणि पुडैप्पॊलियुम्
कारार्पॊलि युङ्गळि ऱार्प्पॊलियुम् 3427

तेर् आर्प्पु ऒलि–रथों की घरघराहट की ध्वनि; वीरर्–और वीरों के; तॆऴिप्पु ऒलियुम्–डाँटने का शब्द; तार्–दामों की; आर्प्पु ऒलियुम्–बजने की ध्वनि और; कऴल् ताक्कु ऒलियुम्–कड़ों के टकराने की ध्वनि; पोर् आर् चिलै–युद्ध योग्य धनुओं के; नाणि पटैप्पु ऒलियुम्–डोरे से उठनेवाला शब्द; कारार् पॊलियुम्–मेघ-सम शोभित; कळिऱु आर्प्पु ऒलियुम्–गजों के चिंघाड़ने की ध्वनि। ३४२७

रथों की घरघराहट की ध्वनि, वीरों के डाँटने का शब्द, दामों की घंटियों का नाद, कड़ों के टकराने की ध्वनि, युद्ध योग्य धनुओं के डोरों की टंकार, मेघवर्ण हाथियों के चिंघाड़ने का स्वर (सब सुनायी दिये)। ३४२७

ऎल्लारु मिरावण ऩेयऩैयार्, वॆल्लावुल हिल्लवर् मॆय्वलियार्
तॊल्लार् पडैवन्दु तॊडर्न्दवदॆऩा, नल्लाऩु मुरुत्तॆदिर् नण्णिऩऩाल् 3428

ऎल्लारुम्–सभी; इरावणऩे अऩैयार्–रावण ही सम; वॆल्ला उलकु–अजित लोक; इल्लवर्–नहीं, ऐसे हैं; मॆय् वलियार्–सच्चे बली हैं; तॊल्लार् पटै–प्राचीनों की सेना; वन्तु तॊटर्न्ततु–आ गयी; ऎऩा–सोचकर; नल्लाऩुम्–उत्तम श्रीराम भी; उरुत्तु–रोष करके; ऎतिर् नण्णिऩऩ्–सामने गया। ३४२८

सभी राक्षस रावण ही सम थे। कोई लोक नहीं था जिसे उन्होंने नहीं जीता हो। सच्चे ताक़तवर थे। श्रीराम समझ गये कि प्राचीन राक्षसों की सेना आ पहुँची है। वे सामने आये। ३४२८

ऊऴिक्कऩल् पोल्बव रुन्दिऩपोर्, आऴिप्पडै यम्बॊडु मऱ्ऱहलप्
पाऴिक्कडै नाळ्विडु पऩ्सऴैपोल्, वाऴिच्चुडर् वाळि वऴङ्गिऩऩाल् 3429

ऊऴि कऩल् पोल्पवर्–युगान्त की अग्नि के समान हैं; उन्तिऩ–उनसे प्रेषित; पोर्–युद्ध के; आऴि पटै–चक्रायुध; अम्पॊटुम्–बाणों के साथ; अऱु अकल–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

टूटकर दूर हो जायँ, ऐसा; पाळि–सशक्त; कटै नाळ् बिटु–युगान्त में बरसनेवाली; पल् मळै पोल्–विपुल वर्षा के समान; चुटर् वाळि–प्रकाशमय शर; वळङ्कितन्–श्रीराम ने छोड़े। ३४२९

प्रलयाग्नि-सम उन राक्षसों ने जो युद्धयोग्य चक्रायुध, अस्त्र आदि चलाये उनको काटकर हटाने के निमित्त श्रीराम ने युगांत की वर्षा के समान प्रकाशमय बाणों को छोड़ा। ३४२९

शूरोडु तॉडर्न्द शुडर्क्कणैदान्, तारो डहलङ्गळ् तडिन्दिडलुम्
तेरोडु मडिन्दनर् शॅङ्गदिरोन्, ऊरोडु मडिन्दन नॉत्तुरवोर् 3430

चुरोटु तॉटर्न्त–बलसंयुक्त; चुटर्–तेजोमय; कणै तान्–बाणों के; तार् ओट्–विजयमाला-सहित; अकलङ्कळ्–विशाल वक्षों को; तटिन्तिटलुम्–भेदते ही; चॅम् कतिरोन्–लाल किरणमाली; ऊरोटुम्–परिवेश के साथ; मटिन्तनन् ऑत्तु–गिर गया जैसे; उरवोर्–बलवान वे; तेरोटुम्–रथों के साथ; मटिन्तनर्–मिट गये। ३४३०

बल-प्रकाश-संयुक्त श्रीराम-शरों के विजयमाला से अलंकृत राक्षसों के विशाल वक्षों पर लगते ही वे परिवेश के साथ गिरते किरणमाली के समान रथों के साथ गिरे और मिटे। ३४३०

कॉल्लोडु शुडर्क्कणै कूर्ट्रिनिणप्, पल्लोडु तॉडर्न्दन पाय्दलिनाल्
शॅल्लोडॅळु मामुहिल् शिन्दिनपोल्, विल्लोडुम् विळुन्द मिडर्करमे 3431

कॉल् ओटु–संहारक; चुटर् कणै–प्रकाशमय शर; कूर्ट्रिन्–यम के-से; निणम्–चर्बी-लगे; पल्लोटु–दाँतों से; तॉटर्न्तन–अनुसृत; पाय्तलिनाल्–चलने से; विल्लोटुम्–चाप के साथ; विळुन्त मिटल् करम्–नीचे गिरे कठोर हाथ; चॅल्लोटु ऍळु–बिजली के साथ उठे; मा मुकिल्–बड़े मेघ; चिन्तिन पोल्–झर पड़े जैसे (दिखे)। ३४३१

श्रीराम के घातक, प्रकाशमय और मांसयुक्त यमदंत-से दाँतों से युक्त पिछले भाग के शर उनको काट चले तो राक्षसों के हाथ धनुओं के साथ कटकर गिरे, तब वे विद्युत्-सह झरते मेघों के समान लगे। ३४३१

शॅम्बो डुदिरत्तिरै शिन्दुविन्वाय्, वॅम्बो डरवक्कुल मेल्निमिरुम्
कॉम्बोडुम् विळुन्दन वॉत्तकुरैन्, दम्बोडु विळुन्द वडर्करमे 3432

कुरैन्तु–छिन्न होकर; अम्पोटु–बाण के साथ; चॅम्पोटु–लालीयुक्त; उतिरम् तिरै–रक्त-तरंग के; चिन्तुविन् वाय्–समुद्र में; विळुन्त–जो गिरे; अटल् करम्–वे तगड़े हाथ; वॅम्पु ओटु–भय खाकर भागनेवाले; अरवम् कुलम्–सर्पबल; मेल् निमिरुम्–ऊपर उठी; कॉम्पोटुम्–शाखाओं के साथ; विळुन्तन ऑत्त–गिरे-जैसे लगे। ३४३२

कटकर बाणों के साथ लाल रंग की रक्त-लहरों से भरे समुद्र में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गिरने जब वे तगड़े हाथ चले, तब वे डर से अपने वासाश्रय की उन्नत तरुशाखाओं के साथ भागकर गिरते सर्पदलों के समान लगे। ३४३२

मुऩ्ऩो डुदिरप्पुऩऩ् मूदुलहैप्, पिऩ्ऩोडि वळैन्द पॆरुङ्गडल्वाय्
मिऩ्ऩोडुम् विऴुन्दऩ मेहमॆऩप्, पॊऩ्ऩोडै नॆडुङ्गरि पुक्कऩवाल् 3433

पॊऩ् ओटै–स्वर्णपट से अलंकृत; नॆटु करि–ऊँचे हाथी; मुऩ् ओटु–सामने बहने वाले; उतिरम् पुऩल्–रक्तजल का; पिऩ् ओटि–पीछा करके दौड़कर; मुतुमै उलकै–प्राचीन दुनिया को; वळैन्त–जो घेरे रहता है, उस; पॆरु कटल् वाय्–बड़े समुद्र में; मिऩ्ऩोटुम्–बिजली के साथ; विऴुन्तऩ–जो गिरे हों; मेकम् ऎऩ–उन मेघों के समान; पुक्कऩ–घुसे। ३४३३

स्वर्णमुखपट्ट से अलंकृत गज सामने बहनेवाले रक्त का पीछा करते पुरातन पृथ्वी को घेरे रहनेवाले बड़े समुद्र में, विद्युत्सह गिरते बड़े मेघों के समान घुसे। ३४३३

मऱवॆऱ्ऱि यरक्कर् वलक्कैयॊडुम्, नऱवक्कुरु दिक्कडल् वीऴ्नहैवाळ्
शुऱवॊत्तऩ मीदु तुडित्तॆऴलाल्, इऱवॊत्तऩ वावु मिऩप्परिये 3434

नऱवस्–गंधयुक्त; कुरुति कटल्–रक्त-सागर में; मऱम् वॆऱ्ऱि–वीर और विजयी; अरक्कर्–राक्षसों के; वलम् कैयॊटुम्–दायें हाथों के साथ; वीऴ्–गिरे; नकै वाळ्–छविमय खड्ग; मीतु–ऊपर; तुटित्तु–तड़पकर; ऎऴलाल्–उठे इसलिए; चुऱवु ऒत्तऩ–'शुऱा' (समुद्र में रहनेवाला मत्स्यकुल का एक भयंकर प्राणी) के समान लगे; वावुम् इऩम्–सरपट चलनेवाले परिवार के; परि–अश्व; इऱवु–'इऱव' मत्स्य; ऒत्तऩ–के समान लगे। ३४३४

गंधयुक्त रक्त-सागर में वीरतापूर्ण तथा विजयी राक्षसों के दायें हाथों के साथ जो तेजोमय तलवारें गिरीं, वे तड़पकर ऊपर उठीं। तब वे 'शुऱा' मत्स्य के समान लगीं; और सरपट दौड़नेवाले अश्व 'इऱा' मत्स्य के समान दिखे। ३४३४

तामच्चुडर् वाळि तडिन्दहलप्, पामक्कुरु दिप्पडि हिऩ्ऱपडैच्
चेमप्पडर् केडह माल्हडल्शेर्, आमैक्कुल मॆत्तऩै यत्तऩैयाल् 3435

तामम् चुटर् वाळि–अत्युज्ज्वल बाणों से; तटिन्तु अकल–छिन्न होकर गिरने से; पाम्–फैले; अ कुरुति–उस रक्त में; पटिकिऩ्ऱ–जो पड़े रहे; पटै पटर्–सेना के वीरों की; चेमम् केटकम्–रक्षा में प्रयुक्त ढालें; माल् कटल् चेर्–बड़े समुद्र के; आमै कुलम्–कछुओं के समूह; ऎत्तऩै–जितने; अत्तऩै–उतनी। ३४३५

अत्युज्वल शरों से कटकर राक्षसों की रक्षक ढालें उस विस्तृत रक्त-प्रवाह में गिरी थीं। उनकी संख्या बड़े समुद्र में रहे कच्छप दलों की उतनी थी। ३४३५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काम्बोडु पदाहैहळ् कारुदिरप्, पाम्बोडु कडर्पडि वुर्रुत्तवाल्
वाम्बोर्नॆडु वाडै मलैन्दहलक्, कूम्बोडुयर् पाय्हळ् कुरैन्दत्तपोल् 3436

वाम् पोर्–उछल-उछलकर किये जानेवाले युद्ध में; नॆटु वाडै–प्रखर उदीची हवा से; मलैन्त–चालित; कलम् उयर्–पोतों में के ऊँचे; पाय्कळ्–पाल; कूम्पोटु–मस्तूलों के साथ; मूळ्कियत्त पोल्–डूबे जैसे; काम्पोटु–(बाँस के) मूठों के साथ; पताकैकळ्–पताकाएँ; कार् निर्म्–काले रंग के; उतिरम् पाम्पु–रक्त के विस्तार के; ओटु–हिलते; कटल्–समुद्र में; पटिवुर्रुत्त–डूबीं। ३४३६

उछल-उछलकर किये जानेवाले उस युद्ध में काले रंग से युक्त रक्त से मिले, हिलनेवाले सागर में बाँस की मूठों-सहित पताकाएँ डूबीं। वे प्रचंड उदीची हवा से चालित पोतों के मस्तूलों के साथ डूबनेवाले पालों के समान लगीं। ३४३६

मण्डप्पडु शोरियिन् वारियिन्वीळ्, कण्डत्त करत्तॊहै कव्वियदाल्
मुण्डक्किळर् तण्डत्त मुट्टॊहुवन्, तुण्डच्चुर् वॊत्त तुडित्तत्तवाल् 3437

मण्टप्पटु–बहुत बहनेवाले; चोरियिन् वारियिन्–रक्त-प्रवाह में; वीळ्–गिरे; कण्टत्तु–छिन्न; करम् तॊकै–हाथों के समूहों को; कव्वियताल्–बाण ग्रसते रहे अतः; मुण्टम् किळर्–कमल से शोभित; तण्टु अत्त–नाल के समान; मुळ् तॊकुवत्त–काँटों से युक्त; तुण्टम्–'सूँड़' के; चुरवु ऒत्त–'शुरा' मत्स्य के समान; तुटित्तत्त–तड़पे। ३४३७

अत्यधिक विस्तार के रक्त-प्रवाह में छिन्न होकर गिरे राक्षसों के हाथों को शर ग्रस रहे थे। तब वे कमलनाल के समान काँटेदार 'सूँड़' से युक्त 'शुरा' मत्स्य के समान तड़प रहे थे। ३४३७

तॆळिवुर्रु पळिङ्गुरु शिल्लिहॊळ्तेर्, विळिवुर्रुर वेरुर वीळ्वत्तताम्
अळिमुर्रिय शोरिय वाळियिलाळ्, ऒळिमुर्रिय तिङ्गळै यॊत्तुळवाल् 3438

तॆळिवु उर्रु–शुद्ध; पळिङ्कु उरु–स्फटिक के; चिल्लि कॊळ् तेर्–पहियोंदार रथ; विळिवु उर्रु उर–मिटे जब; वेरु उर–अलग होकर; वीळ्वत्त ताम्–गिरने वाले वे (पहिये); अळि मुर्रिय–बाणों के कारण खूब प्रगट; चोरिय–रक्त से मिलकर; आळियिल् आळ्–समुद्र में डूबनेवाले; ऒळि मुर्रिय–पूर्ण-प्रकाश; तिङ्कळै–चन्द्र के; ऒत्तुळ–समान दिखे। ३४३८

पारदर्शी स्फटिक के बने पहियोंदार रथ मिटे तो वे पहिये अलग हो गिरे। श्रीराम-बाणों के हत्याकार्य से उत्पन्न रक्त में मिलकर समुद्र में जाकर डूबे। तब वे पूर्णप्रकाश चंद्र के समान दिखे। ३४३८

निलै कोडलिल् वॆन्रि यरक्करैनेर्, कॊलै कोडलिन् मन्गुरि कोळुरुमेल्
शिलै कोडिय तोरु शिरत्तिरळ्वन्, मलै कोडियिन् मेलु मरिन्दिडुमाल् 3439

निलै कोटल् इल्–सद्धर्म के अग्राही; वॆन्रि अरक्करै–(अब तक जो) विजयी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(रहे) उन राक्षसों को; नेर् कॊलै कोटलिन्-सीधे हत करने को; मन्-श्रीराम ने; कुऱि कोळ्-लक्ष्य बनाना; उऱुमेल्-चाहा, इसलिए; चिलै-धनुष; कोटिय तोऱुम्-जब-जब झुका; चिरम् तिरळ्-सिरों के समूह; वल् मलै-कठोर पर्वत; कोटियिन्-मेलुम्-करोड़ों से भी ऊपर; मऱिन्तिटुम्-मरते बन गये। ३४३९

अब तक जो विजयी रहे उन अधर्मी राक्षसों को मारने का श्रीराम ने दृढ़ संकल्प कर लिया था। इसलिए जब-जब उनका धनु झुका (उन्होंने चाप झुकाकर शर छोड़े), तब कटे सिरों के करोड़ों कठोर पर्वतों से अधिक (ढेर) बन गये। ३४३९

तिण्मार्बिन् मिशैच्चॆऱि शालिहैयिन्, कण्वाळि कडैच्चॆऱि कानुऴैन्
वॆण्वायुऱ मॊय्त्तन वित्तऱैयु, ऱुण्वाय्वरि वण्डिन मॊत्तनवाल् 3440

तिण् मार्पिन् मिचै-सुदृढ़ छाती पर; चॆऱि-सटे लगे; चालिकैयिन् कण्-कवच में; वाळि-बाणों के; कटै-अन्तिम भाग के (नोक के); चॆऱि कानम्-घने समूह; नुऴैन्तु-घुसकर; ऍण् वाय् उऱ-गिने जाने योग्य रीति से; मॊय्त्तन-जो रहे; इन् नऱै उऱु-मधुर मधु से भरकर; उण् वाय्-खानेवाले मुखों के; वरि वण्टिन्-धारीदार भ्रमरों के; इनम् ऒत्तन-समूहों के समान लगे। ३४४०

सुदृढ़ वक्ष पर कसकर बँधे कवच पर शरों के अग्र भाग चुभे थे। गिनने योग्य रीति से चुभे रहे उनके समूह मधुर मधु पीनेवाले धारीदार भ्रमरों के झुंडों के समान लगते थे। ३४४०

पाऱाडु कळत्तॊरु वन्पहलिन्, कूऱाहिय नालिलॊर् कूऱिडैये
नूऱायिन योशनै नूऴिल्हळ्शाल्, माऱादुऴल् शारिहै वन्दनन्नाल् 3441

पाऱु आटु-बाज जहाँ संचार करते हैं; नूऱु योचनै आयिन-सौ योजन के; कळत्तु-युद्ध के मैदान में; ऒरुवन्-एकाकी ने; पकलिन्-अह्न के; नालिल् ओर् कूऱु-चौथांश के; आकिय कूऱिटैयै-समय-भाग में; नूऴिल्कळ् चाल्-संहारक कार्य-योग्य; माऱातु उऴल्-निरन्तर घूमते हुए; चारिकै वन्तनन्-चक्कर काटे। ३४४१

बाज जहाँ संचार करते थे, उस सौ योजन विस्तार की युद्धभूमि में श्रीराम अकेले रहकर अह्न के चौथांश के समय के अन्दर सभी राक्षसों को मारते हुए चक्कर काट रहे थे। ३४४१

निन्ऱारुड निन्ऱु निमिर्न्दयले, शॆन्ऱारॆदिर् शॆन्ऱु तिरिन्दिडलाल्
तन्दादैयै योर्वुऱु तन्महनॆर्, हॊन्ऱानव नॆयिव नॆन्ऱुकॊळ्वार् 3442

निन्ऱार् उटनै निन्ऱुम्-जो खड़े रहे उनके साथ खड़े रहकर; अयले-पास ही; निमिर्न्तु-पैर उठाकर; चॆन्ऱार्-गये तो; ऍतिर् चॆन्ऱुम्-सामने जाकर; तिरिन्तिटलाल्-घूमते रहे इसलिए; ओर्वु उऱु-विवेकशील; तन् मकन् नेर्-उसके ही पुत्र के समक्ष; तन् तातैयै-उसके पिता को; कॊन्ऱान्-जिन्होंने मारा था; अवनै-वे ही भगवान नरसिंह; इवन्-ये हैं; ऍन्ऱु कॊळ्वार्-ऐसा मानते हैं। ३४४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वे स्थित लोगों के सामने खड़े रहते; पैर बढ़ाकर जानेवालों के सामने जाते; इस तरह घूमते रहे। अतः लोग यही कहने लगे कि ये राम वे ही नरसिंह-मूर्ति हैं, जिन्होंने उसके ही विवेकी पुत्र के सामने हिरण्य को मारा था। ३४४२

इङ्गेयुळ निङ्गुळ निङ्गुळऩॆऩ्, ऱङ्गेयुणर् हिऩ्ऱ वलन्दलैवाय्
वॆङ्गोब नॆडुम्बडै वॆञ्जरम्विट्, टॆङ्गेऩुम् वळङ्गुव रेहुवराल् 3443

इङ्कु उळऩ्–यहाँ है; इङ्के उळऩ्–यहीं रहता है; इङ्कु उळऩ्–यहाँ है; ऎऩ्ऱ–ऐसा; अङ्के–वहाँ; उणर्किऩ्ऱ–सोचने की; अलम् तलैवाय्–भ्रान्त दशा में; वॆम् कोपम्–बहुत क्रोध के साथ; नॆटु पटै–लम्बे धनु से; वॆम् चरम्–भीषण बाणों को; विट्टु–चलाकर; ऎङ्केऩुम् वळङ्कुवर्–कहीं भेज देते; एकुवार्–और स्वयं हत हो जाते। ३४४३

श्रीराम सर्वत्र दिखायी देते थे। अतः लोगों ने कहा कि यहीं है, यहीं है, यहीं है। इस तरह भ्रांत दशा में राक्षसों ने क्रुद्ध होकर भीषण शर चलाये तो वे शर श्रीराम के पास न जाकर अन्यत्र चले जाते थे। पर वे राक्षस हत हो जाते थे। ३४४३

ऒरुवऩ्ऩॆऩ वुऩ्ऩुमु णर्च्चियिलार्, इरवऩ्ऱिदु वोर्पह लॆऩ्बर्हळाल्
करवऩ्ऱि दिरामर् कणक्किलराल्, परवैमण लिऱ्पल रॆऩ्बर्हळाल् 3444

इतु इरवु अऩ्ऱ–यह रात का समय नहीं; ओर् पकल्–एक अहन है; ऎऩ्पर्कळ्–कहते; ऒरुवऩ्–अकेला एक; ऎऩ–ऐसा; उऩ्ऩुम्–सोच; उणर्च्चि इलार्–समझ नहीं; इतु करवु अऩ्ऱ–यह धोखा नहीं; इरामर्–राम; परवै मणलिल्–समुद्र के बालुओं के समान; पलर्–अनेक; कणक्किलर्–अनगिनत; ऎऩ्पर्कळ्–कहते। ३४४४

(श्रीराम के शरों से तेज़ प्रकाश फैला रहता। अतः) राक्षस कहते कि यह रात नहीं। दिन है! वे राम को एकाकी समझ नहीं सके। इसलिए विश्वास के साथ कहते कि यह धोखा नहीं; असल में रामों की संख्या सागर के बालुओं की संख्या से अधिक है। ३४४४

ऒरुवऩ्ऩॊरु वऩ्मलै पोलुयर्वोऩ्, ऒरुवऩ्पडै वॆळ्ळमॊ रायिरमे
ऒरुवऩ्ऩॊरु वऩ्ऩुयि रुण्डवलाल्, ऒरुवऩ्ऩुयि रुण्डदु मुळ्ळदुवो 3445

ऒरुवऩ् ऒरुवऩ्–हर एक; मलै पोल् उयर्वोऩ्–पर्वत के समान ऊँचा; ऒरु वल् पटै–अनुपम बलवान सेना; ओरायिरम् वॆळ्ळम्–एक हज़ार 'वॆळ्ळम्' की; ऒरुवऩ् ऒरुवऩ्–एक-दूसरे की; उयिर् उण्टतु अलाल्–जान पी गया, नहीं तो; ऒरुवऩ्–अद्वितीय श्रीराम ने; उयिर् उण्टतुवुम् उळ्ळतुवो–जान पी थी क्या। ३४४५

इस सेना का हर वीर पर्वत के समान बहुत ऊँचा था। ऐसे एक हज़ार वॆळ्ळम् वीरों की सेना थी वह। श्रीराम के धोखे में परस्पर मार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लेने से सब मरे। वही सच्ची बात थी। नहीं तो श्रीराम के द्वारा हत जीव भी थे क्या ? । ३४४५

तेर्मेलुळर् मावॊडु शॆन्दरुहट्, कार्मेलुळर् माकडन् मेलुळरिप्
पार्मेलुळ रुम्बर् परन्दुळराल्, पोर्मेल विरामर् पुहुन्दिडुवार् 3446

पोर् मेल–युद्ध अपनाकर; पुकुन्तिटुवार्–घुसकर संहार करनेवाले; इरामर्–श्रीराम; तेर् मेल् उळर्–रथ पर हैं; मावॊटु–अश्व के साथ; तरु–घातक; चॆम् कण्–लाल आँखों के; कार् मेल्–मेघ (हाथी) पर; उळर्–हैं; मा कटल् मेल्–बड़े सागर पर; उळर्–हैं; इ पार् मेल् उळर्–इस भूमि पर हैं; उम्पर्–आकाश में; परन्तु उळर्–व्याप्त हैं। ३४४६

युद्धोद्यत हो घुसकर संहार करनेवाले श्रीराम के सम्बन्ध में राक्षस कहने लगे कि वे रथ पर हैं; अश्व पर हैं। घातक लाल आँखों वाले मेघ-सम मातंग पर हैं। वे इस भूमि पर हैं; नहीं, आकाश में व्याप्त हैं ! । ३४४६

ऍन्नुम्बडि यॆङ्गणु मॆङ्गणुमाय्त्, तुन्नुञ्जुळ लुन्दिरि युञ्जुडरुम्
बिन्नुम्मरु हुम्मुड लुम्बिरियान्, मन्नन्मकन् वञ्जर् मयङ्गिनराल् 3447

ऍन्नुम् पटि–ऐसा कहा जाय ऐसा; मन्नन् मकन्–राजा के पुत्र; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; ऍङ्कणुमाय्–सर्वव्यापी बन; पिन्नुम्–पीछे; अरुकुम्–समीप; उटलुम्–शरीर से; पिरियान्–अलग न होकर; तुन्नुम्–सट जाते; चुळलुम्–घूमते; तिरियुम्–इधर-उधर भटकते; चुटरुम्–तेजोमय रहते; वञ्चर्–वंचक (राक्षस); मयङ्किनर्–भ्रांत हुए। ३४४७

इस तरह उन्हें भ्रम में डालते हुए राजा के पुत्र श्रीराम सर्वत्र रहे। पीछे रहे। पास रहे। शरीर से भी अलग न होकर सटे रहे ! घूमते, फिरते और तेजोमय स्थित रहते। ३४४७

पडुमद करिपरि शिन्दिन पत्तिवरै यिरदम विन्दन
विडुतिशै शॆविडुपि ळन्दन विरिहड लळरदॆ ळुन्दन
अडुपुलि यवुणर्द मङ्गैय रलर्विऴि यरुविहळ् शिन्दिन
कडुमणि नॆडियवॆ नुञ्जिलै कणकण कणक णॆनुन्दॊरुम् 3448

नॆटिय ऍन्नुम् चिलै–दीर्घ कथित धनु की; कटुमणि–कड़ी ध्वनिवाली घंटियाँ; कण कण कणकन्–क्वणन क्वणन क्वणन की; ऍन्नुम् तॊरुम्–जब-जब ध्वनि निकालती थीं; मतम् पटु करि–मदनीरसहित मातंग; परि–अश्व; चिन्तित–हत हुए; पत्ति वरै–हिमालय से; इरतम् अविन्तत–रथ नष्ट हुए; विटु तिचै–विशाल दिशाएँ; चॆविटु पिळन्तत–बहरी हुईं; विरि कटल्–विस्तृत सागर; अळऱु अतु ऍळुन्तत–पंकिल बने; अटु पुलि–खूनी व्याघ्र-सम; अवुणर् तम्–राक्षसों की; मङ्कैयर्–स्त्रियों की; अलर् विऴि–बड़ी आँखों से; अरुविकळ् चिन्तित–अश्रु-नदियाँ बह निकलीं। ३४४८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनके दीर्घ धनु की कठोर ध्वनिवाली घंटियों के क्वणन-क्वणन-क्वणन के स्वर के निकलते हर बार मदस्रावी मातंग मरे। अश्व मिटे! हिमालय-से रथ नष्ट हुए। विस्तृत दिशाएँ बहरी हुईं। विस्तृत सागर पंकिल बन गया। घातक व्याघ्र-सम दानवों की दयिताओं के विशाल नेत्रों से अश्रु-नदी उठकर बही। ३४४८

ऊनेऱु पडैक्कै वीर रॅदिरॅदि रुरुवन् दोऱुम्
कूनेऱु शिलैयुन् दानुङ् गुदिक्किन्ऱ कडुप्पिन् कॉट्पाल्
वानेऱि नार्हळ् तेरु मलैहिन्ऱ वयवर् तेरुम्
तानेऱि वन्द तेरे याक्कितान् तनिये ऱन्नान् 3449

तनि एऱु अन्नान्–अप्रतिम केसरी-तुल्य श्रीराम; ऊन् एऱु–मांसल; पटै कै वीरर्–आयुध-हस्त वीरों के; ऍतिर् ऍतिर्–आमने-सामने; उरुवम् तोऱुम्–हर एक के रूप में; कून् एऱु–झुके हुए; चिलैयुम्–धनु को; तानुम्–ले स्वयं; कुतिक्किन्ऱ–कूद पड़ते उस; कटुप्पिन्–तेजी के; कॉट्पाल्–प्रकार से; वान् एऱिनार्कळ् तेरुम्–स्वर्गारोही वीरों के रथ; मलैकिन्ऱ–युद्ध करनेवाले; वयवर् तेरुम्–वीरों के रथों को; तान् एऱि वन्त–जिस पर वे स्वयं चढ़ आये थे; तेर् आक्कितान्–उस रथ में बदल दिया (यानी मिट्टी बना दिया)। ३४४९

नर केसरी-सम श्रीराम मांसलिप्त हथियार रखनेवाले राक्षसों में एक-एक के सामने उस-उसके आकार के अनुसार अपने झुके धनुष के साथ इस तेज़ी से कूदे कि स्वर्गारोही वीरों के रथ और युद्ध करनेवालों के रथ सारे वह रथ बन गये जिस पर वे स्वयं आये थे (यानी मिट्टी हो गये थे)। ३४४९

कायिरुञ् जिलैयॉन् ऱेनुङ् गणैप्पुट्टि लॉन्ऱ देनुम्
तूयॅऴु पहऴि मारि मऴैत्तुळित् तॉहैयिन् मेल
आयिरङ् गैहळ् शॅय्द शॅय्दन वमलन् शॅङ्गै
आयिरङ् गैयुङ् गूडि यिरण्डुकै याय वाऱे 3450

काय्–शत्रु-दाहक; इरु चिलै–बड़ा धनुष; ऑन्ऱे ऍनिनुम्–एक ही था तो भी; कणै पुट्टिल्–तूणीर; ऑन्ऱतेनुम्–एक रहा तो भी; तूय् ऍऴु–उनसे चलाये जाकर जो उठी; पकऴि मारि–शरों की वर्षा; मऴै तुळि तॉकैयिन्–वर्षा की बूंदों की संख्या से; मेल–अधिक हैं; अमलन्–विमल श्रीराम के; चॅम् कै–दो लाल हाथों ने; आयिरम् कैकळ् चॅय्त–जिसे हज़ार हाथों ने किया; चॅय्तन–वह किया; आयिरम् कैयुम् कूटि–हज़ार हाथ मिलकर; इरण्टु कै आय आऱु–दो हाथ बने, यह (विचित्र) बात। ३४५०

शत्रुतापक धनु एक ही था, तूणीर एक ही था। तो भी शर जो निकले वे वर्षा की बूँदों से भी अधिक संख्या के थे। अमल भगवान श्रीराम के दो लाल हाथों ने उतना काम किया जितना कि हज़ार हाथों ने किया। हज़ार हाथ कैसे दो हाथ हुए? । ३४५०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊय्यॊरु मुहत्त ऩाहि मऩिदऩाम् बुणर्प्पि दऩ्ऱाल्
मॆय्युऱ वुणर्न्दोम् वॆळ्ळ मायिर मिडैन्द शेऩै
शॆय्युऱु विऩैय मॆल्ला मॊरुमुहन् दॆरिव दुण्डे
ऐयिरु नूऱु मल्ल वऩन्दमा मुहङ्ग ळम्मा 3451

ऒरु मुकत्तऩ् आकि–इकानन बनकर; मऩितऩाम् पुणर्प्पु–मानव के रूप में रहने का; इतु–यह दृश्य; अऩ्ऱु–(सच) नहीं; पॊय्–झूठा है; मॆय् उऱ उणर्न्तोम्–सत्य ही जान लिया है हमने; आयिरम् वॆळ्ळम्–हजार 'वॆळ्ळम्' की; मिटैन्त चेऩै–घनी सेना; चॆय्युऱु–जो करती रही; विऩैयम् ऎल्लाम्–वह युद्धकार्य सब; ऒरु मुकम्–एक मुख; तॆरिवतु उण्टे–जान ले, यह संभव है क्या; ऐयिरु नूऱुम् अल्ल–पाँच के दो के सौ भी नहीं; मुकङ्कळ् अऩन्तम् आम्–अनंत मुख हैं। ३४५१

इकानन मानव का यह दृश्य सच नहीं है। झूठा ही है। हमने सचमुच जान लिया। हज़ार वॆळ्ळम् की सेना जो युद्ध-कार्य करती रही, उस सबको एक मुख से जाना कैसे जा सकता है ? इनके एक हज़ार मुख ही नहीं, अनंत मुख हैं। ३४५१

कण्णुदऱ् परमऩ् ताऩु नाऩ्मुहक् कडवुळ् ताऩुम्
ऎण्णुदुन् दॊडर वॆय्द कोलॆऩ वॆण्ण लुऱ्ऱार्
पण्णैयाल् वहुक्क माट्टार् तऩित्तऩिप् पार्क्क लुऱ्ऱार्
ऒण्णुमो कणिक्क वॆऩ्बा रुवहैयि नुयर्न्द तोळार् 3452

कण् नुतल् परमऩ् ताऩुम्–भालनेत्र परमेश्वर और; नाल् मुकम्–चतुर्मुख; कटवुळ् ताऩुम्–भगवान और; ऎय्त कोल्–(श्रीराम द्वारा) चलाये गये अस्त्रों को; तॊटर ऎण्णुतुम्–बराबर गिन लेंगे; ऎऩ–कहकर; तऩि तऩि–अलग-अलग; पार्क्कल् उऱ्ऱार्–देखते; ऎण्णल् उऱ्ऱार्–गिनने लगे; पण्णैयाल्–समूह की विपुलता के कारण; वकुक्क माट्टार्–न गिन सके; उवकैयिऩ्–आनन्द से; उयर्न्त तोळार्–उन्नत कन्धों वाले बनकर; कणिक्क ऒण्णुमो–गिना जा सकता है क्या; ऎऩ्पार्–बोले। ३४५२

भालनेत्र परमेश्वर और चतुर्मुख देवता ने कहा कि हम श्रीराम-प्रेरित शरों को बराबर गिनकर संख्या बता देंगे। अलग-अलग रहकर खूब ध्यान लगाकर गिनने लगे। पर शरों की संख्या इतनी विपुल थी कि वे गिन नहीं सके। उनके कंधे आनंद से फूल उठे और उन्होंने गर्व के साथ कहा कि गिना भी जा सकता है ? (नहीं)। ३४५२

वॆळ्ळ मीरैन्दु नूऱे विडुहण यवर्ऱिऩ् मॆय्ये
उळ्ळवा ऱुळवा मॆऩ्ऱो रुरैकणक् कुरैत्तु मेऩुम्
कॊळ्ळैयो रुरुवै नूऱु कॊण्डऩ पलवाऱ् कॊऱ्ऱ
वळ्ळले वऴङ्गि ऩाऩो वॆऩ्ऱुऩर् मऱ्ऱै वाऩोर् 3453

वॆळ्ळम्–'वॆळ्ळम्'; ईरैन्तु नूऱे–हजार ही; अवर्ऱिऩ्–उन पर; विटु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चलाये गये; कणै–शर; उळ्ळ आऱु–सेना जितनी थी उतने; उळवाम्–थे; ऍन्ऱु–ऐसा; ओर् उरै–कथन के लिए; उरैत्तु मेनुम्–कहें तो भी; मॅय्ये–वह सत्य होगा क्या; कॊळ्ळै–युद्ध में हत; ओर् उरुवै–एक शरीर के; नूऱु कॊण्टन–सौ (खण्ड) किये; पल–अनेकों ने; कॊऱ्ऱम्–विजयी; वळ्ळल्–उदार प्रभु ने ही; वळङ्कित्तान्तो–(उन्हें) चलाया क्या; ऍन्ऱुऱ्ऱर्–कहा; मऱ्ऱै वान्तोर्–अन्य देवों ने। ३४५३

राक्षस वीरों की संख्या एक हज़ार वॆळ्ळम् की ही थी। पर उन पर चलाये गये शरों की संख्या भी उतनी —ऐसा कहने के लिए कहा जाय तो वह क्या सच हो सकता है ? नहीं। क्यों ? युद्ध में अपार रीति से जो लड़ते रहे उनमें एक-एक शरीर के सौ-सौ टुकड़े बनानेवाले शर अवश्य अधिक रहे हैं ! क्या विजयी व उदार प्रभु ने ही वे सारे शर चलाये थे ? आश्चर्य ! । ३४५३

कुडैक्कॆलाङ् गॊडिहट् कॆल्लाङ् गॊण्डन कुविन्द कॊऱ्ऱप्
पडैक्कॆलाम् बहळिक् कॆल्लाम् यानैदेर् परिमा वादिक्
कडैक्कॆलान् दुरन्द वाळि कणित्तदऱ् कळवै काट्टि
अडैक्कला मऱिञर् यारे यॆन्ऱुऱ्ऱर् मुनिव रप्पाल् 3454

अप्पाल्–दूसरी तरफ़; मुनिवर्–मननशील मुनियों ने; कुटैक्कु ऍलाम्–सारे छत्रों; कॊटिकट्कु ऍल्लाम्–सारे झंडों; कॊण्टन–युद्धभूमि में फैले; कुविन्त–एकत्रित; कॊऱ्ऱम् पटैक्कु ऍल्लाम्–विजयदायी सारे हथियारों; पकळिक्कु ऍल्लाम्–सारे बाणों; यानै–हाथी; तेर्–रथ; परि–अश्व से लेकर; कटैक्कु ऍलाम्–पदातिक वीरों तक के (मारने के) लिए; तुरन्त वाळि–श्रीराम ने जितने शर छोड़े उनको; कणित्तु–गिनकर; अतऱ्कु अळैवै काट्टि–उसके लिए एक संख्या कहकर; अटैक्कलाम् अऱिञर्–निर्धारित करनेवाले विद्वान्; यारे–कौन ही; ऍन्ऱुऱ्ऱर्–कहा। ३४५४

उधर मननशील मुनियों ने कह दिया कि छत्र, ध्वजाएँ, युद्धभूमि में इकट्ठे पाये गये शर, गज, रथ, अश्व, पदाति वीर जितने थे उन सभी पर श्रीराम ने जितने शर छोड़े उनकी संख्या निर्धारित कर बतानेवाले विद्वान् भी कौन हैं ? (कोई नहीं)। ३४५४

कण्डत्तुङ् गळुत्तु मीदाय्क् कबालत्तुङ् गडक्क लुऱ्ऱ
शण्डप्पो ररक्कर् तम्मैत् तॊडर्न्दुकॊन् ऱमैन्द तन्मै
पिण्डत्तिऱ् करुवान् दन्बे रुरुक्कळैप् पिरमन् दन्द
अण्डत्तै निऱैयप् पॆय्दु कुलुक्किय दनैय दान 3455

चण्टम् पोर्–प्रचंड युद्ध करते रहे; अरक्कर् तम्मै–राक्षसों को; तॊटर्न्तु–पीछा करके; कण्टत्तुम्–कंठ में; कळुत्तु–गले में; मीताय्–ऊपर; कपालत्तुम्–कपाल में; कटक्कल् उऱ्ऱ–भेद जो चले उन शरों का; कॊन्ऱु अमैन्त तन्मै–मार डालने का प्रकार; पिण्टत्तिल् करुवाम्–गर्भाशय में रहे; तन् पेर् उरुक्कळै–बड़े

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(अंगों के) रूपों को; पिरमन् तन्त–ब्रह्मा द्वारा रचित; अण्टत्तै–अण्ड में; निऱैय पॅय्तु–भरकर; कुलुक्कियतु अनैय–हिला दिया जैसे; आन–रहे। ३४५५

प्रचंड उस युद्ध में श्रीराम के शर राक्षसों का पीछा करके उनके कंठों, गलों, कपालों को भेद चले। वे राक्षस मरे पड़े थे। वह दृश्य ऐसा लगा मानो ब्रह्मा-रचित गर्भस्थ सभी अंगों को अंड में डालकर हिला दिया गया हो! । ३४५५

कोडियै यिरण्डु तॉक्क पडैक्कल मळ्ळर् कूवि
ओडियोर् पक्क माह वुयिरिऴन् दुलत्त लोडुम्
वीडिनिन् ऱऴिव दॅन्ने विण्णवर् पडैहळ् वीशि
मूडुदु मिवनै यॅन्ऱि यावरु मुडुहि मॉय्त्तार् 3456

ऐयिरण्टु कोटि तॉक्क–दस करोड़ के बने; पटैक्कलम् मळ्ळर्–अस्त्रधारी वीर; कूवि–प्रलाप करते हुए; ओर् पक्कमाक ओटि–एक ओर भागें; उयिर् इऴन्तु–प्राण खोकर; उलत्तलोटुम्–मर गये तो; वीटि निन्ऱु–हत होकर; अऴिवतु ऍन्ने–मिटना क्यों; विण्णवर् पटैकळ् वीचि–देवताओं के अस्त्र चलाकर; इवनै मूटुतुम्–इसको ढँक दें; ऍन्ऱु–सोचकर; यावरुम्–सभी; मुटुकि–जल्दी; मॉय्त्तार्–सटे। ३४५६

दस करोड़ अस्त्रधारी वीर एक ओर प्रलाप करते हुए भागे, मरे और मिटे। तब दूसरों ने सोचा कि साधारण हथियार चलाकर क्या लाभ? मरेंगे, इतना ही! अतः देवों के अस्त्र चलाकर इसके शरीर को एक दम ढँक दें। यह कहते हुए वे सब चढ़ आये। ३४५६

विण्डुवित् पडैये यादि मेवयन् पडैयी ऱाहक्
कॉण्डॉरुङ् गुडने विट्टार् कुलुङ्गिय दमरर् कूट्टम्
अण्डमुङ् गीऴ मेला वाहिय ददनै यण्णल्
कण्डॉरु मुऱुवल् काट्टि यवऱ्ऱिनै यवऱ्ऱार् कात्तान् 3457

विण्टुवित् पटैये आति–विष्णु के अस्त्र आदि; मेवु–श्रेष्ठ; अयन् पटै ईराक–ब्रह्मास्त्र तक; कॉण्टु–लेकर; उटने–तुरन्त; ऑरुङ्कु विट्टार्–एक साथ छोड़े; अमरर् कूट्टम्–देववृन्द; कुलुङ्कियतु–काँपे; अण्टमुम्–अंड भी; कीऴ मेला आकियतु–निचला ऊपर का हो गया; अतनै–उसको; अण्णल्–प्रभु; कण्टु–देखकर; ऑरु मुऱुवल् काट्टि–एक हँसी प्रगट करके; अवऱ्ऱै–उनको; अवऱ्ऱाल्–उनसे; कात्तान्–रोका। ३४५७

नारायणास्त्र से लेकर ब्रह्मास्त्र तक के सभी अस्त्रों को लेकर राक्षसों ने तुरंत एक साथ छोड़ा। उसे देख देवगण काँप उठे। अंड का नीचे का भाग ऊपर का हो गया और ऊपर का नीचा! प्रभु श्रीराम ने उसे देखा। एक हँसी उनके अधरों पर दिखायी दी। उनको उन्हीं से रोका। ३४५७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तानवै तॊडुत्त पोदु तडुप्परि दुलहन् दान
पूनत्ति वडवैत् तीयिड् पुक्कंनप् पॊरिन्दु पोमॆन्
ड्रानदु तॆरिन्द वळ्ळ लळप्परुङ् गोडि यम्बाल्
एनैयर् तलैह ळॆल्ला मिडियुण्ड मलैयि निट्टान् 3458

तान्–उन्होंने; अवै–उन्हें; तॊदुत्त पोतु–जब छोड़ा तब; तटुप्परितु–उनको रोकना कठिन है; पू उलकम् तानै–भूलोक खुद; वटवै तीयिल्–बड़वाग्नि में; नत्ति पुक्कु ऍन–खूब घुस गया हो ऐसा; पॊरिन्तु पोम्–भुन जायगा; ऍन्ऱु–ऐसा; आनतु तॆरिन्त–जो था उसको जानते थे; वळ्ळल्–उन प्रभु ने; अळप्पु अरुम्–अपार; कोटि अम्पाल्–कोटि अस्त्रों से; एनैयर् तलैकळ् ऍल्लाम्–सभी राक्षसों के सिरों को; इटि उण्ट मलैयिन्–वज्र के शिकार बने पर्वतों के समान; इट्टान्–भूमि पर गिरा दिया। ३४५८

अगर वे वही अस्त्र चलाते तो सारी पृथ्वी बड़वाग्नि में घुसी-सी भुन जाती। यह सोचकर प्रभु ने अनगिनत अन्य साधारण अस्त्र चलाकर उनके सिरों को वज्राहत पर्वत के समान काटकर भूमि पर गिरा दिया। ३४५८

आयिर वॆळ्ळत् तोरु मडुहळत् तविन्दु वीळ्न्दार्
मायिरु ञालत् ताळ्दन् वन्बॊऱैप् पार नीङ्गि
मीयुयर्न् वॆळुन्दा ळन्ऱे वीङ्गॊलि वेलै निन्ऱुम्
पोयॊरुङ् गण्डत् तोडुङ् गोडियो शनैहळ् पॊङ्गि 3459

आयिरम् वॆळ्ळत्तोरुम्–हज़ार 'वॆळ्ळम्' के सभी; अटुकळत्तु–समरांगन में; अविन्तु वीळ्न्तार्–मरकर गिरे; मा इरु ञालत्ताळ्–मान्या भूदेवी; तन्–अपना; वल् पॊऱै पारम्–कठोर भारी बोझ से; नीङ्कि–मुक्त होकर; वीङ्कु ऑलि–वर्धनशील गर्जन के; वेलै निन्ऱुम्–समुद्र से; ऑरुङ्कु पोय्–एक साथ जाकर; अण्टत्तोटुम्–अंड के साथ; कोटि योचनैकळ्–करोड़ योजन; पॊङ्कि–उफनकर; मी उयर्न्तु–ऊपर बढ़; ऍळुन्ताळ्–उठी। ३४५९

हज़ार वॆळ्ळम् के सभी वीर भुनकर मर गये! मान्या भूदेवी कठोर भार से मुक्त हुई। वर्धनशील गर्जन के सागर के और ब्रह्माण्ड के साथ फूली और करोड़ योजन ऊपर की ओर बढ़ उठी। ३४५९

आनै यायिरन् देर्पदि नायिर मडर्परि यॊरुकोडि
शेनै कावल रायिरम् बेर्बडिर् कवन्दमॊन् ऱॆळुन्दाडुम्
कान मायिरङ् गवन्दनिन् ड्राडिडिर् कविन्मणि कणिलॆन्नुम्
एनै यम्मणि येळुरै नाळिहै याडिय दिनिदन्ऱे 3460

आनै आयिरम्–हज़ार हाथी; तेर् पतिनायिरम्–दस हज़ार रथ; अटर् परि–आक्रामक अश्व; ऑरु कोटि–एक करोड़; वेनै कावलर्–सेनारक्षक; आयिरम् पेर्–हज़ार; पटिन्–मर जायँ तो; कवन्तम् ऑन्ऱु–एक कबंध; ऍळुन्तु आटुम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उठकर नाचे; कानम्-जंगल के समान; आयिरम् कवन्तम्-हज़ार कबन्ध; निन्ऱु आटिटिल्-उठकर नाचे तो; कविन् मणि-(श्रीराम के कोदण्ड की) एक घंटी; कणिल् ऍन्तुम्-'कवण' की ध्वनि उठायगी; एन्ऱै-और; अ मणि-वह घण्टी; इन्ऱितु-आराम से; एऴरै नाऴिकै-साढ़े सात घड़ियों; आटियतु-हिलती रही। ३४६०

जब हज़ार हाथी, दस हज़ार रथ, करोड़ आक्रामक अश्व और हज़ार सेनारक्षक वीर नष्ट हों, तब एक कबंध उठ नाचे। जंगल के समान विपुल संख्या में हज़ार कबंध नाचे, तब एक बार श्रीराम के कोदंड की घंटी बजे। अब वह घंटी साढ़े सात घड़ियाँ हिलती (बजती) रही। ३४६०

निनैन्दन मुडित्ते मॅन्ना वानवर् तुयर नीत्तार्
पुनैन्दनॅन वाहै यॅन्ना विन्दिर नुवहै पूत्तान्
वनैन्दन वल्ला वेदम् वाऴ्वुपॅऱ् ऱुयर्न्द मादो
अनन्दनुन् दलैह ळेन्दि यर्वुयिर्त् तवलन् दीर्न्दान् 3461

वानवर्-देवगण ने; निनैन्तन-जो सोचा; मुटित्तेम्-हमने पूरा हुआ देख लिया; ऍन्ना-जानकर; तुयरम् नीत्तार्-दुःख छोड़ दिया; वाकै पुनैन्तनैन्-जयमाला पहन ली; ऍन्ना-सोचकर; इन्तिरन्-इन्द्र; उवकै पूत्तान्-खुश हुआ; वनैन्तन अल्ला-अपौरुषेय (जो किसी से न रचे गये); वेतम्-वे वेद; वाऴ्वु पॅऱ्ऱु-(सुरक्षित) जीवन पाकर; उयर्न्त-फूल उठे; अनन्तनुम्-आदिशेषनाग भी; तलैकळ् एन्ति-(भारनिवृत्ति से) सिर उठाकर; अयर्वु उयिर्त्तु-साँसें छोड़ते हुए; अवलम् तीर्न्तान्-कष्ट से मुक्त हुआ। ३४६१

देवों को यह आनन्द हो गया कि जो उन्होंने चाहा था वह पूरा हो गया। देवेंद्र ने 'जयमाला पहन ली' कहकर आनंद मनाया। अपौरुषेय वेद सुरक्षितता पाकर फूल उठे। आदिशेष ने भी सिर उन्नत करके दुःखनिवृत्ति की सुखद साँस ली। ३४६१

ताय्बडैत् तुडैय शॅल्व मीहॅन्नत् तम्बिक् कीन्दु
वेय्बडैत् तुडैय कानम् विण्णवर् तवत्तान् मेवित्
तोय्बडैत् तॊऴिलाल् यार्क्कुन् दुयर्तुडैत् तानै नोक्कि
वाय्बडैत् तुडैया रॅल्लाम् वाऴ्त्तिनार् वणक्कञ् जॅय्दार् 3462

ताय्-माता के; पटैत्तु उटैय-प्राप्त; चॅल्वम्-राजधन को; ईक-दे दो; ऍन्न-कहने पर; तम्पिक्कु ईन्तु-छोटे भाई को देकर; वेय् पटैत्तुटैय-बाँसों से पूरित; कानम्-वन में; विण्णवर् तवत्तान्-देवों की तपस्या के कारण; मेवि-आकर; तोय्-मन लगाकर; पटै तॊऴिलाल्-अस्त्र के कार्य से; यार्क्कुम्-सभी का; तुयर् तुटैत्तानै-दुःख मिटानेवाले को; नोक्कि-देखकर; वाय् पटैत्तु उटैयार् ऍल्लाम्-सभी ने जिनके मुख थे; वाऴ्त्तिनार्-साधुवाद दिया; वणक्कम् चॅयतार्-स्तुति की। ३४६२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

माता कैकेयी ने आज्ञा दी कि अपने प्राप्त राजधन को अपने कनिष्ठ भ्राता के पास सौंप दो। श्रीराम ने दे दिया; देवों के तप के कारण जंगल आये। अब मन लगाकर अस्त्र-कौशल दिखाकर सभी का कष्ट पोंछ दिया। ऐसे श्रीराम को, उन सभी जीवों ने जिनके मुख थे, साधुवाद दिया और उनकी स्तुति की। ३४६२

तीमॊय्त्त वत्तैय शॆङ्ग णरक्करै मुळुदुञ् जिन्निप्
पूमॊय्त्त करत्त राहि विण्णवर् पोऱ्ऱ निन्ऱान्
पेय्मॊय्त्तु नरिह ळीण्डिप् पॆरुम्बिणम् बिऱङ्गित् तोन्ऱुम्
ईमत्तुळ् तमिय निन्ऱ कऱमिडऱ् ऱिऱैव नॊत्तान् 3463

ती मॊय्त्त अत्तैय–आग मिली; अत्तैय–जैसे; चॆम् कण्–लाल नेत्रों वाले; अरक्करै–राक्षस; मुळुतुम् चिन्ति–सभी का नाश करके; पू मॊय्त्त–पुष्प-भरे; करत्तर् आकि–हाथों वाले बनकर; विण्णवर् पोऱ्ऱ–देवों के साधुवाद देते (उसका पात्र बनकर); निन्ऱान्–जो रहे श्रीराम; पेय् मॊय्त्तु–भूतगणों से आवृत; नरिकळ् ईण्टि–सियारों की भीड़ के साथ; पॆरुम् पिणम्–बड़ी लाशें; पिऱङ्कि–अधिक संख्या में; तोन्ऱुम्–जहाँ दिखीं; ईमत्तुळ्–उस स्मशान में; तमियन् निन्ऱ–अकेले जो खड़े रहते; करै मिटऱ्ऱ–गले में कलंक वाले; इऱैवन्–(नीलकंठ) ईश्वर; ऒत्तान्–के समान रहे। ३४६३

आग जलती-जैसे नेत्रों वाले सभी राक्षसों को श्रीराम ने निहत कर दिया। तो देवों ने हाथों में पुष्प भर लेकर उनकी स्तुति की। तब युद्ध-भूमि में खड़े रहे वे उस श्मशान में स्थित नीलकंठ देव के समान लगे, जहाँ भूतगण भरे रहते, सियारों का जमघट होता और बड़ी लाशें अधिक संख्या में विद्यमान रहतीं। ३४६३

अण्डमाक् कळमुम् वीन्द वरक्करे वुयिरु माहक्
कॊण्डदो रुरुवन् दन्ना लिऱुदिनाळ् वन्दु कूड
मण्डुनाण् मऱित्तुङ् गाट्ट मन्नुयि रत्तैत्तुम् वारि
उण्डवन् तान्ने यान्न दन्नॊरु मूर्त्ति यॊत्तान् 3464

मा कळ–बड़ा समरांगन; अण्टमुम्–अण्ड हो और; वीन्त–मरे; अरक्करे–राक्षस ही; उयिरुम् आक–जीव बने; कॊण्टतु ओर् उरुवम् तन्नाल्–लिये हुए रूप से; इऱुति नाळ् वन्तु कूट–युगांत के दिन के आने पर; मण्टुम् नाळ्–सृष्टि के दिन में; मऱित्तुतुम्–फिर; काट्ट–सृष्ट करने के निमित्त; मन् उयिर्–नित्य जीव; अत्तैत्तुम् वारि–सबको उठाकर; उण्टवत् तात्तैयान्त–जिन्होंने उदरस्थ कर लिया; तन् ऒरु मूर्त्ति ऒत्तान्–स्वयं उनके समान (श्रीराम) लगे। ३४६४

युगांत में महाविष्णु अंडों के सभी जीवों को उदरस्थ कर लेते हैं, फिर सृष्टिकाल में बाहर निकाल देते हैं। अब श्रीराम (अपने ही रूप के) उन विष्णु के समान रहे। युद्धस्थल अण्ड के समान था और मरे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीर जीवों के समान। उन पर प्रलय आ गया और श्रीराम प्रलयमूर्ति बने रहे। ३४६४

आहुलन् दुऱन्द तेव रळ्ळिनर् शॊरिन्द वॆळ्ळच्
चेहरु मलरुञ् जान्दुञ् जॆरुत्तॊऴिल् वरुत्तन् दीर्क्क
माहॊलै शॆय्द वळ्ळल् वाळमर्क् कळत्तैक् कॆविट्
टेहिन्त निळव लोडु मिरावण नेऱ्ऱ कॆम्मेल् 3465

आकुलम् तुऱन्त तेवर्–व्याकुलता से मुक्त देवों ने; अळ्ळिनर्–उठाकर; चॊरिन्त–जो बरसाये; वॆळ्ळम्–विपुल परिमाण के; चेकु अऱु मलरुम्–अनिंद्य फूलों के; चान्तुम्–और चंदन; चॆरु तॊऴिल् वरुत्तम्–युद्धकार्य में उत्पन्न श्रम को; तीर्क्क–दूर करते; मा कॊलै–बड़ा संहार-कार्य; चॆय्त–जिन्होंने किया वे; वळ्ळल्–करुणामय प्रभु; वाळ् अमर् कळत्तै–तलवार से युद्ध जहाँ किया जाता है, उस समरांगन को; विट्टु–छोड़कर; इळवलोटुम्–कनिष्ठ के साथ; इरावणन् एऱ्ऱ–जिस भाग पर रावण लड़ता रहा; कै मेल्–उस भाग में; एकिनन्–गये। ३४६५

देवों ने व्याकुलता से मुक्त होकर आनन्द से प्रेरित होकर अपने दोनों हाथों में अनिंद्य फूल उठा-उठाकर श्रीराम पर बरसाये, जिससे उनका युद्धपरिश्रम दूर हुआ। तब बड़े संहार-कार्य में जो लगे रहे, वे समरांगण के उस भाग की तरफ़ गये जहाँ लघुराज लक्ष्मण से रावण ने युद्ध छेड़ा था। ३४६५

इव्वऴि यियन्ऱ वल्ला मियम्बिना मिरिन्दु पोन
वॆव्वऴि याऱ्ऱल् वॆऱ्ऱिच् चेनैयिन् शॆयलुञ् जॆन्ऱु
वॆव्वऴि यरक्कर् कोमान् शॆय्हैयु मिळैय वीरन्
ऎव्वमि लाऱ्ऱऱ् पोरु मुऱ्ऱुना मियम्ब लुऱ्ऱाम् 3466

इ वऴि–यहाँ; इयन्ऱ ऎल्लाम्–जो हुआ, वह सब; इयम्पिनाम्–वर्णन किया हमने; इरिन्तु पोन–अस्त-व्यस्त जो भागे; तॆव् अऴि–शत्रु को मिटाने में; आऱ्ऱल्–शक्त; वॆऱ्ऱि चेनै–विजयवाहिनी का; चॆयलुम्–कृत्य और; चॆन्ऱु–सामने गये; वॆम्मै वऴि–नृशंस मार्गावलंबी; अरक्कर् कोमान्–राक्षसराज का; चॆय्कैयुम्–कृत्य; इळैय वीरन्–लघुराज वीर (लक्ष्मण के); ऎव्वम् इल्–निर्दोष; आऱ्ऱल् पोरुम्–घमासान युद्ध; मुऱ्ऱुम्–पूरा; नाम्–हम; इयम्पल् उऱ्ऱोम्–कहने लगते हैं। ३४६६

अब तक (कवि) हमने यहाँ का हाल बताया। अब हम अस्त-व्यस्त भागे वानरविजयवाहिनी के कृत्य, नृशंसमार्गावलंबी रावण का कार्य और लघुराज का अनिंद्य बलप्रदर्शक युद्ध —इनका बखान करने लगते हैं। ३४६६

पॆरुम्बडैत् तलैवर् यारुम् बॆयर्न्दिलर् पॆयर्न्दु पोय्नाम्
विरुम्बिनम् वाळ्क्कै यॆन्ऱाल् यारिडै विलक्कर् पालार्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वरुम्बऴि तुडैत्तुम् माण्डु वैहुदुम् वानि नॅन्ना
इरुङ्गडल् पॅयर्न्द दॅन्नत् तानैयु मीण्ड दिप्पाल् 3467

पॅरुम् पटै तलैवर् यारुम्–बड़े सेनानायक सभी; पॅयर्न्तिलर्–युद्धस्थल से न जाकर; पॅयर्न्तु पोय्–हट जाकर; नाम्–हम; वाऴ्क्कै विरुम्पिनम् ऍन्ऱाल्–जीना चाहें तो; इटै विलक्कल् पालार्–बीच में रोकनेवाले; यार्–कौन हैं; आयितुम्–तो भी; वरुम् पऴि तुटैत्तुम्–होनेवाली निन्दा को दूर करेंगे; माण्टु–मर कर; वानिन् वैकुतुम्–(वीर-) स्वर्ग में जायँ; ऍन्ना–कहकर; इरु कटल्–बड़ा सागर; पॅयर्न्ततु–स्थान छोड़कर गया; ऍन्न–ऐसा; तानैयुम्–सेना भी; इप्पाल् मीणटतु–इस ओर आयी। ३४६७

बड़े वानरसेना-नायकों ने, भागने से लौटते हुए आपस में धीरज के वचन कहे। "हम भाग जाकर जीना चाहें तो रोकनेवाला कौन है ? पर निंदा होगी। उस अपयश से बचने के लिए हम जायँ; और लड़ाई में मरें तो हम भी वीर-स्वर्ग में स्थान पा लेंगे।" वे लौट आये, तब उस दल का आना सागर के स्थान बदलकर आने के समान लगा। ३४६७

31. वेलेऱ्ऱ पडलम् (शक्ति-सहन पटल)

शिल्लि यायिरञ् जिल्लुळैप् परियॊडुञ् जेर्न्द
ऍल्ल वन्गदिर् मण्डिल माऱुकॊण् डिमैक्कुञ्
जॅल्लुन् देर्मिशैच् चॅन्ऱनन् तेवरैत् तॊलैत्त
विल्लुम् वॅङ्गणैप् पुट्टिलुङ् गॊऱ्ऱमुम् विळङ्ग 3468

आयिरम् चिल्लि–हज़ार पहियों के साथ; चिल् उळै–छोटे अयालों वाले; आयिरम् परियॊटुम् चेर्न्त–हज़ार अश्वों के साथ जुता; ऍल्लवन्–सूर्य के; कतिर्मण्टिलम्–प्रभामण्डल से; माऱु कॊण्टु–होड़ लगाकर; इमैक्कुम्–जो प्रकाशमय हो; चॅल्लुम् तेर् मिचै–चलता था, उस रथ पर; तेवर् तॊलैत्त–देवमेटक; विल्लुम्–धनु के और; वॅम् कणै–भीषण शरों के; पुट्टिलुम्–तूणीर के; कॊऱ्ऱमुम्–और विजयश्री के; विळङ्क–विलसते; चॅन्ऱनन्–गया (रावण)। ३४६८

रावण सहस्रचक्र, छोटे अयाल वाले हज़ार अश्वों से युक्त तथा सूर्य के प्रभामंडल से होड़ लगानेवाले रथ पर देवसंहारक धनुष को और भीषण शरों के तूणीर को साथ लेकर युद्धभूमि में गया। ३४६८

नूऱु कोडित्तेर् नॊऱिल्परि नूऱ्ऱिरु कोडि
याऱु पोन्मद माहरि यॆयिरु कोडि
एऱु कोळुरु पदादियु मिवऱ्ऱिवऱ् ऱिरटटि
शीऱु कोळरि येऱ्ऱा नुडनन्ऱु शॅन्ऱ 3469

नूऱु कोटि तेर्–सौ करोड़ रथ और; नॊऱिल्–तीव्रगति; नूऱु इरु कोटि–दो सौ करोड़; परि–अश्व; याऱु पोल्–नदी के समान; मतम्–मद बहानेवाले; ऐयिरु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कोटि मा करि–दस करोड़ बड़े गज; इवऱ्ऱु इवऱ्ऱु इरट्टि–इन इनका दुगुना; एऱु कोळ् उऱु–नर केसरी के समान बल से युक्त; पतातियुम्–पदाति; चीऱु–कोपिष्ठ; कोळ् अरि एऱु अत्तान्–बलवान, राजसिंह के समान; उटन्–(रावण) के साथ; अन्ऱु–उस दिन; चॆन्ऱु–गये। ३४६९

सौ करोड़ रथ, दो सौ करोड़ तीव्रगामी अश्व, नदी-सम मदस्रावी दस करोड़ बड़े-बड़े गज, इनके दुगुने नर केसरी-सम पदाति वीर आदि सशक्त राजसिंह के समान रावण के साथ गये। ३४६९

मून्ऱु वैप्पिनु मप्पुऱत् तुलहिनु मुत्तैयिन्
एन्ऱु कोळुऱुम् वीरर्हळ् वम्मिन्नन् ऱिशैक्कुम्
आन्ऱ पेरियु मदिर्हुरऱ् चङ्गमु मशनि
ईन्ऱ काळमु मेळॊडे ळुलहमु मिशैप्प 3470

मून्ऱु वैप्पिनुम्–तीनों लोकों में; अ पुऱत्तु उलकिनुम्–उनके बाहर के लोक में; मुत्तैयिन्–युद्धभूमि में; एन्ऱु–सामना करके; कोळ् उऱुम्–प्राणहरण करनेवाले; वीरर्कळ्–राक्षस वीर; वम्मिन् ऎन्ऱु–'आओ' ऐसा; इचैक्कुम्–शब्द करनेवाली; आन्ऱ पेरियुम्–उत्कृष्ट भेरियाँ; अतिर् कुरल्–उच्चनाद करनेवाले; चङ्कमुम्–शंख और; अचनि ईन्ऱ–अशनि-से स्वर का जनक; काळमुम्–काहल; एळॊटु एळु उलकमुम्–चौदहों भुवनों में; इचैप्प–स्वर फैलाते गये। ३४७०

तीनों लोकों और बाह्यलोक में भी युद्ध में शत्रु-प्राणहारी राक्षस वीर साथ गये। 'आओ'-सी ध्वनि निकालनेवाली बड़ी भेरियाँ, उच्चनादी शंख, अशनि-सा स्वर निकालनेवाले काहल —ये सब बजते गये और उनका स्वर चौदहों भुवनों में गूंजता रहा। ३४७०

अत्तैय राहिय वरक्करक्कु मरक्कनै यवुणर्
वित्तैय वानवर् वॆव्विनैप् पयत्तितै वीरर्
नित्तैयु नॆञ्जिनैच् चुडुमदोर् नॆरुप्पित्तै निमिर्न्दु
कत्तैयु मॆण्णैयुङ् गडप्पदोर् कडलित्तैक् कण्डार् 3471

अवुणर् वित्तैयम्–दानवों की वंचना में; वानवर्–फँसे देवों के; वॆम् वित्तैप्पयत्तितै–दारुण दुर्भाग्य के समान; वीरर्–वीरों के; नित्तैयुम् नॆञ्चित्तै–स्मरणकारी मन को; चुटुमतु–जलानेवाली; ओर् नॆरुप्पित्तै–एक आग-सा जो था; अत्तैयर् आकिय–वैसे ही स्वभाव के; अरक्करक्कुम् अरक्कनै–राक्षसों में बड़े राक्षस (रावण) को; ऎण्णैयुम्–गिनती के भी; कटप्पतु ओर्–पार रहनेवाले; ओर्–एक; निमिर्न्तु कत्तैयुम्–ऊँचे शोर मचानेवाले; कटलित्तै–(सेना-) सागर को; कण्टार्–(वानरों ने) देखा। ३४७१

वानरों ने दानवाक्रांत देवों के दुर्भाग्य-सम, वीरों के स्मरण-शक्ति-निलय मन को जलाती आग, और वैसे स्वभाव वाले राक्षसों में प्रबल राक्षस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रावण को और उसके साथ ऊँची आवाज में नर्दन करती आनेवाली अपार सेना को देखा। ३४७१

कण्डु कैहळो डणिवहुत् तुरुमुरळ् कर्कळ्
कॊण्डु कूऱ्ऱमु नडुक्कुऱत् तोळ्पुडै कॊट्टि
अण्ड कोळङ्ग ळडुक्कळिन् दुलैवुऱ वार्त्तार्
मण्डु पोरिडै मडिवदे नलमॆन्न मदित्तार् 3472

कैकळोटु कण्टु–पार्श्व के व्यूहों के साथ देखकर; अणि वकुत्तु–खुब व्यूहों में बँटकर; मण्टु पोरिटै–घोर युद्ध में; मटिवते–जान देना ही; नलम् ऎन्न–अच्छा, ऐसा; मतित्तार्–निश्चय करके; कूऱ्ऱमुम् नटुक्कु उऱ–यम को भी कँपाते हुए; तोळ् पुटै–कन्धों को; कॊट्टि–ठोंककर; उरुम् उऱळ्–अशनि-सम; कऱ्कळ् कॊण्टु–पर्वतों को उठा लेकर; अण्टम् कोळङ्कळ्–अण्डगोल; अटुक्कु अळिन्तु–तटों का क्रम खोकर; उलैवु उऱ–थर्रा जायँ, ऐसा; आर्त्तार्–गरज उठे। ३४७२

पार्श्व के व्यूहों के साथ आते राक्षस तथा उसकी सेना को देखकर वानर वीरों ने अपने में व्यूह रचा। घोर युद्ध में मरना ही उत्तम समझनेवाले उन्होंने यम को भयभीत करते हुए कंधे ठोंके; और अशनि-सम पर्वतों को हाथ में उठा लेते हुए ऐसा तुमुल नाद उठाया कि अंडों के तहों के क्रम में परिवर्तन हो गया और खलबली मच गयी। ३४७२

अरक्कन् शेनैयु मारुयिर् वळङ्गुवा नमैन्द
कुरक्कु वेलैयु मॊन्ऱॊडॊन् ऱॆदिरॆदिर् कोत्तु
नॆरुक्कि नेर्न्दन नॆरुप्पिमैप् पॊडित्तन नॆरुप्पिन्
उरुक्कु शॆम्बॆन वम्बरत् तोडिन दुदिरम् 3473

अरक्कन् चेनैयुम्–राक्षस (राज) की सेना और; अरुमै उयिर्–प्यारे प्राणों की; वळङ्कुवान्–बलि देने; अमैन्त कुरक्कु वेलैयुम्–जो प्रस्तुत हुए थे, उन वानरों का सागर; ऒन्ऱोटु ऒन्ऱु–एक दूसरे के; ऎतिर् ऎतिर् कोत्तु–आमने-सामने आकर; नॆरुक्कि नेर्न्तत–भिड़कर लड़े; इमै–आँखों में; नॆरुप्पु पॊटित्तत–आग उठी; नॆरुप्पिन्–आग में; उरुक्कु चॆम्पु ऎन्न–पिघले ताम्र के समान; उतिरम्–रक्त; अम्परत्तु–समुद्र की तरफ़; ओटिन्नतु–बहा। ३४७३

राक्षस-सेना और प्यारे प्राणों की बलि देने को उद्यत वानर-सेना आमने-सामने आकर गुँथ गयी। उनकी आँखों में आग उठी और पिघले ताम्र के समान रक्त बहा और समुद्र की तरफ़ गया। ३४७३

अऱ्ऱ वन्ऱलै यऱुकुऱै यॆळुन्दॆळुन् दण्डत्
तॊऱ्ऱ वानह मुदयमण् डिलमॆन्न वॊळिरच्
चुऱ्ऱु मेहत्तॆत् तॊत्तिय कुरुदिनीर् तुळिप्प
मुऱ्ऱुम् वैयहम् बोर्क्कळ मामॆन्न मुयन्ऱ 3474

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱ्ऱवन् तलै–कटे हुए कठोर सिर; अऱु कुऱै–कटे रुंडों से; ऎऴुन्तु ऎऴुन्तु–उछल-उछलकर; अण्टत्तु–आकाश से; ऒऱ्ऱ–लगे; वान् अकम्–(और) आकाश में; उतयम् मण्टिलम् ऎऩ–उदयमण्डल के समान; ऒळिर–प्रकाशमय रहे; चुऱ्ऱुम् मेकत्तै–चारों ओर रहे मेघों में; तोत्तिय–उनसे लटकनेवाले; कुरुति नीर्–रक्त-जल को; तुळिप्प–बूंदें टपकीं; वैयकम् मुऱ्ऱुम्–भू भर में; पोर् कळम् ऎऩ–युद्धभूमि बनाने की; मुयऩ्ऱ–कोशिश करती-सी; आम्–लगीं। ३४७४

कटे शरीर से अलग जो सिर चले वे उछल-उछलकर आकाश में जा लगे। वहाँ वे उदयमंडल के समान लगे। चारों ओर रहे मेघों में उनसे रक्त की बूँदें जा भर गयीं। वे बूँदें भूमंडल पर गिरीं तो ऐसा लगा कि वे बूँदें सारे भूमंडल को युद्धभूमि बनाने का प्रयास कर रही हों। ३४७४

तूवि यम्बॆडै यरियिऩ मऱिदरच् चूऴि
तूवि यम्बॆडै शोऱ्ऱ्दऩ शॊरियुडऱ् चुरिप्प
मेवि यम्बडै पडप्पडक् कुरुदियिऩ् वीऴ्न्द
मेवि यम्बडैक् कडलिडैक् कुडरॊडु मिदन्द 3475

अम्–मनोहर; पटै कटल् इटै–सेना-सागर-मध्य; मेवि–रहकर; अमपु ऎटै–शर निकालते समय (लक्ष्मण के); तूवि–कोमल परों की; अम् पॆटै अरि इऩम्–सुन्दर भ्रमरियों-सह भ्रमरों का वृन्द; मऱि तर–जब लौटे; चूऴि–मुखपट्ट को; तूवि–फेंककर; चोऱ्ऱ्ऩत्त–थककर; वियम्मे–मान्य; पटै–(लक्ष्मण के) अस्त्र; पट पट–ज्यों-ज्यों लगे; कुरुतियिऩ्–रक्त में; चॊरि उटल्–खूब सने शरीरों को; चुरिप्प–खूब मग्न करके; वीऴ्न्त–गिरकर; कुटरॊटुम्–आँतों के साथ; मितन्त–तिरे। ३४७५

उस सेना-सागर-मध्य रहकर लक्ष्मण गजों पर बाण चला रहे थे। गजों पर जब वे बाण लगे, तब उनका मदनीर पीने कोमल परोंवाली भ्रमरियों के साथ जो आये थे वे भ्रमर हट गये। गज मुखपट्ट को फेंक कर थक गये। ज्यों-ज्यों लक्ष्मण के मान्य शर उन पर लगते, त्यों-त्यों उनके शरीर रक्त के प्रवाह में डूब जाते और वे आँतों के साथ तिरते। ३४७५

कण्डि ऱ्ऱन्दऩर् णवर्तम् मुहत्तवा मुऱुवल्
कण्डि ऱ्ऱन्दऩर् मडन्दैय रुयिरॊडुङ् गलन्दार्
पण्डि ऱ्ऱन्दऩ पऴम्बुणर् वहम्बुहप् पऩिप्
पण्डि ऱ्ऱन्दऩ पुलम्बॊलि शिलम्बॊलि पऩिप्प 3476

मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; कण् तिऱ्ऱन्तऩर्–खुली आँखों वाले; कणवर् तम्–पतियों के; मुकत्त आम्–मुख पर प्रगट; मुऱुवल्–मुस्कुराहट को; कण्टु–देखकर; पण्टु इऱ्ऱन्तत–पहले बीते; पऴम् पुणर्बु–पुराने संगम-स्मरण के; अकम् पुक–मन में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उठने पर; पन्नि–कहकर; पण् तिऱ्नतु–श्रेष्ठ रागों में; अत–(गाती) सी; पुलम्पु–प्रलाप के; ओलि–स्वर के साथ; चिलम्पु–नूपर की ध्वनि के; पनिप्प–उठते; इऱ्नततर्–मरीं; उयिरोटुम् कलन्तार्–(पतियों की) आत्माओं के साथ (स्वर्ग में जा) मिल गयीं। ३४७६

राक्षसियों ने अपने पतियों के मुखों पर, जिनकी आँखें थोड़ी देर के लिए खुलीं, हास देखा तो उन्हें पुराने संगम के स्मरण ताज़ा हुए। वे उनकी चर्चा करते हुए रोयीं और उनका प्रलाप सुन्दर रागों के गाने के समान रहा। अपने नूपुरों को क्वणित करते हुए वे दुःख के आधिक्य से मरीं और स्वर्ग में जाकर अपने पतियों की आत्माओं से मिल गयीं। ३४७६

एऴु मेऴुमॆन् ऱिशैक्किऩ्ऱ वुलहङ्गळ् याबुम्
ऊऴि पोवदे यॊप्पदो रुलैवुऱ वुडऱ्ऱुम्
नूऴिल् वॆञ्जम नोक्कियव् विरावण ऩुवन्ऱान्
दाऴि लॆन्बडै तरुक्करु मॆन्बदोर् तन्मै 3477

एऴुम् एऴुम्–सात और सात; ऎन्ऱु इचैक्किऩ्ऱ–ऐसा कथित; उलकङ्कळ् याबुम्–सभी लोक; ऊऴि–युगांत में; पोवते ऒप्पतु–मिट जाते ही जैसे; ओर्–एक; उलैवु–नाश को; उऱ–लाते हुए; उटऱ्ऱुम्–जो किया जाता है; नूऴिल्–जहाँ मारने का काम होता है; वॆम् चमम्–वह भयानक समरांगन; नोक्कि–देखकर; अव् इरावणन्–उस रावण ने; ताऴ् इल्–जो निर्बल नहीं; ऎन् पटै–उस मेरी सेना का; तरुक्कु अऱ्ऱम्–गर्व चूर होगा; ऎन्पतु ओर् तन्मै–ऐसा एक विचार; नुवन्ऱान्–प्रगट किया। ३४७७

रावण ने देखा कि चौदहों भुवनों के नाशक युगांतकाल के नाशकार्य के समान इस युद्धभूमि में संहारक काम हो रहा है! उसने यह विचार प्रकट किया कि अब मेरी सेना का घमंड चूर हो जायगा। ३४२७

मरमुङ् गल्लुमे विल्लॊडु वाण्मऴुच् चूलम्
अरमुङ् गल्लुम्वेल् मुदलिय वयिऱ्पडै यडक्किच्
चिरमुङ् गल्लॆऩच् चिन्दलिऱ् चिदैन्द शेनै
उरमुङ् गल्वियु मुडयवन् शॆरुनिन्ऱ दॊरुबाल् 3478

मरमुम् कल्लुमे–तरुओं और पत्थरों ने ही; विल्लॊटु–धनु और; वाळ्–तलवारें; मऴु–परशु; चूलम्–शूल; अरमुम्–आरा; कल्लुम्–और पत्थर; वेल्–शक्ति; मुतलिय–आदि; अयिल् पटै–तीक्ष्ण हथियारों को; अटक्कि–बेकार करके; चिरमुम्–(राक्षसों के) सिरों को; कल् ऎऩ–'गल्' शब्द के साथ; चिन्तलिल्–गिरा दिया इसलिए; अ चेनै–वह सेना; चितैन्ततु–छिन्न-भिन्न हो गयी; उरमुम्–शारीरिक बल; कल्वियुम्–युद्धविद्या (का ज्ञान); उटैयवन्–जिनके पास थे; चॆरु–उन (लक्ष्मण का) युद्ध; ऒरु पाल्–एक ओर; निन्ऱतु–चलता रहा। ३४७८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वानर केवल तरुओं और पत्थरों को फेंक रहे थे और उनसे राक्षसों के धनुष, तलवारें, परशु, शूल, आरे, शक्तियाँ आदि तीक्ष्ण हथियार बेकार हो जाते थे और राक्षसों के सिर 'गल्' की ध्वनि के साथ गिर जाते थे; और वह सेना तहस-नहस हो गयी। उधर लक्ष्मण का, जो शरीर-बल और युद्ध-विद्या दोनों के स्वामी थे, युद्ध भी चल रहा था। ३४७८

अऴलुङ् गट्कळिऱ् ऱणियॊडु तुणिपडु माबि
कऴलुम् बल्परित् तेरॊडु पुरवियुञ् जुऱ्ऱच्
चुऴलुञ् जोरिनी राऱ्ऱॊडुङ् गडलिडैक् कलक्कुम्
कुऴलु नूलुम्बो लनुमनुन् दानुमक् कुमरन् 3479

अनुमनुम्–मारुति; अ कुमरन् तानुम्–और वह कुँअर; कुऴलुम् नूलुम् पोल्–नाली और सूत के समान; अऴलुम्–आग निकालती; कण्–आँखों के; कळिऱु अणियॊटु–गजों की श्रेणियों से; तुणि पटुम्–कट जाने से; आबि चुऴलुम्–जिनके प्राण झूलते थे; पल् परि–अनेक अश्वों और; तेरॊटु–रथों के साथ; पुरवियुम्–अकेले अश्व; कऴलुम्–बहते; चोरि नीर् आऱ्ऱॊटुम्–रक्त की नदी के साथ; कटल् इटै कलक्कुम्–समुद्र में जा मिलते। ३४७९

हनुमान और वे कुँअर लक्ष्मण नाली और सूत्र के समान अपृथक् रूप से घूमते थे। और फलस्वरूप आग निकालती आँखों वाले गजों की श्रेणियाँ, कटकर जिनके प्राण झूलते थे, ऐसे रथों के जुते अश्व और अकेले अश्व सभी बहते रक्त-प्रवाह के साथ समुद्र में जा मिले। ३४७९

विल्लुङ् गूऱ्ऱुवऱ् कुण्डॆनत् तिरिहिन्ऱ वीरन्
कॊल्लुङ् गूऱ्ऱॆनक् कुऱैक्कुमिन् निऱैपॆरुङ् गुऴुवै
ऒल्लुङ् गोळरि युरुमनन्न कुरङ्गिन्न दुहिरुम्
पल्लुङ् गूऱ्क्किन्ऱ कूऱ्क्किला वरक्करदम् बडैहळ् 3480

कूऱ्ऱुवऱ्कु–यम के (हाथ में); विल्लुम् उण्टु ऎन्न–धनु भी है ऐसा; तिरिकिन्ऱ–जो घूमते हैं; वीरन्–वे वीर लक्ष्मण; इ निऱै–इस पूर्ण; पॆरु कुऴुवै–बड़ी सेना का; कॊल्लुम् कूऱ्ऱु ऎन्न–संहार करनेवाले यम के समान; कुऱैक्कुम्–मिटा देंगे; ऒल्लुम्–खूनी; कोळ् अरि–सशक्त सिंह की; उरुम्–अशनि की; अन्नन–समानता करनेवाले; कुरङ्किन्नतु–वानर के; उकिरुम् पल्लुम्–नख और दाँत; कूऱ्क्किन्ऱ–बढ़ते हैं; अरक्कर् तम् पटैकळ्–राक्षसों के हथियार; कूऱ्क्किला–नहीं बढ़ते। ३४८०

क्या यम हाथ में भी धनु है? ऐसा संदेह पैदा करते हुए लक्ष्मण घूम रहे थे। वे अवश्य इस पूर्ण तथा बड़ी सेना को संहारक यम के समान मारकर मिटा देंगे। खूनी सिंह-सम तथा अशनि के समान वानर हनुमान के नख और दाँत बढ़ते हैं। पर राक्षसों के हथियार कहाँ बढ़ते! नहीं बढ़ते। ३४८०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्डु निन्ऱिऱैप् पॊऴुदिऩिक् कालत्तैक् कऴिप्पिऩ्
उण्डु कॆविडुङ् गूऱ्ऱुव ऩिरुदर्बे रुयिरै
मण्डु वॆञ्जॆरु नाऩॊरु कणत्तिडै मडित्ते
कॊण्डु मीळ्हुवॆऩ् कॊऱ्ऱमॆऩ् ऱिरावणऩ् कॊदित्ताऩ् 3481

इऱै पॊऴुतिऩ्–कुछ देर; कण्टु निऩ्ऱु–देखता खड़ा रहा; इति–अब; कालत्तै कऴिप्पिऩ्–समय काट दें तो; कूऱ्ऱुवऩ्–यम; निरुतर् पेर् उयिरै–राक्षसों के बड़े प्राणों को; उण्टु–खाकर; कॆ विटुम्–त्याग देगा; मण्टु वॆम् चॆऱु–घमासान भयंकर युद्ध में; ऒरु कणत्तिटै–एक क्षण में; नाऩ्–मैं; मटित्तु–(शत्रुओं को) मारकर; कॊऱ्ऱम् कॊण्टु–विजय लेकर; मीळ्कुवॆऩ्–लौटूँगा; ऎऩ्ऱु–यह विचार कर; इरावणऩ् कॊतित्ताऩ्–रावण उबल पड़ा। ३४८१

रावण कुछ देर यह हाल देखता हुआ खड़ा रहा। फिर विचार किया कि अब समय बर्बाद करूँ तो यम सारे राक्षसों के प्राण लेकर युद्धभूमि छोड़ जायगा। इसलिए इस घोर युद्ध में मैं एक ही क्षण के अंदर शत्रुओं का संहार करूँगा और विजय लेकर लौटूँगा। रावण खौल उठा। ३४८१

ऊदै पोल्वऩ वुरुमुऱऴ् तिऱलऩ वुरुविप्
पूद रङ्गळैप् पिळप्पऩ वण्डत्तैप् पॊदुप्प
मादि रङ्गळै यळप्पऩ माऱ्ऱुरुङ् गूऱ्ऱिऩ्
दूदु पोल्वऩ शुडुहणै मुऱैमुऱै तुरन्दाऩ् 3482

ऊतै पोल्वऩ–पवन-तुल्य; उरुम् उऱऴ्–अशनि से होड़ लगाने की; तिऱलऩ–शक्ति रखनेवाले; पूतरङ्कळै–भूधरों को; उरुवि–भेदकर; पिळप्पऩ–फाड़नेवाले; अण्टत्तै–अण्ड में; पॊतुप्प–छेद लगानेवाले; मातिरङ्कळै अळप्पऩ–दिशाओं को नापनेवाले; माऱ्ऱुरुम्–अवार्य; कूऱ्ऱिऩ्–यम के; तूतु पोल्वऩ–दूतों के समान रहनेवाले; चुटु कणै–तापक बाणों को; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; तुऱन्ताऩ्–(रावण ने) चलाये। ३४८२

उसने बारी-बारी से पवन-सम तेज़, अशनि से होड़ लगानेवाले बलवान, भूधरभेदी, अण्डछेदक, दिशाओं के मापक और अवार्य यम के दूतों के समान अस्त्रों को छोड़ा। ३४८२

आळि पोऩ्ऱुळ ऩॆदिर्न्दपो दमर्क्कळत् तडैन्द
आळि पोऩ्ऱुळ ऩॆऩ्बदॆ नळ्ळिरु ळडैन्द
काळि पोऩ्ऱऩ ऩिरावणऩ् वॆळ्ळिडैक् करन्द
पूळै पोऩ्ऱदप् पॊरुशिऩत् तरिहळ्दम् बुणरि 3483

आळि पोऩ्ऱु उळऩ्–सिंह (या शरभ) तुल्य जो था; ऎतिरऩ्त पोतु–(वह रावण) जब लड़ा तब; अमर् कळत्तु–युद्धाजिर में; अटैऩ्त–आये (वानर); आळि पोऩ्ऱु–कुत्तों के समान; उळ ऎऩ्पतु–रहे, यह कहना; ऎऩ्–क्या; नळ् इरुळ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अर्धरात्रि में; अटैन्त–आयी; काळि पोन्ऱतन्–हवा के समान रहा; इरावणन्–रावण; वॆळ् इटै–खाली आकाश में; करन्त–छिपे; पूळै पोन्ऱतु–'पूळै' (नामक) पौधों के समान रहा; अ–वह; पॊरु चिनत्तु–युद्ध क्रोध का; अरिकळ् तम् पुणरि–वानरों का सेना-सागर। ३४८३

रावण लड़ाई करते समय सिंह (या शरभ) रहा और युद्धभूमि में आये वानर कुत्ते —ऐसा कहना क्या ? अर्धरात्रि में प्रचंड पवन-सा रहा रावण और क्रुद्ध वानर-सागर उसके सामने उड़कर छिपनेवाले 'पूळै' नाम के पौधों के फूलों के समान रहा। ('पूळै' के फूल बहुत छोटे और हलके होते हैं।)। ३४८३

इरियल् पोहिन्ऱ शेनैयै यिलक्कुवन् विलक्कि
अरिह ळञ्जन्मि नञ्जन्मि नॆन्ऱरुळ् वळङ्गित्
तिरियु मारुदि तोळॆन्नुन् देर्मिशैच् चॆन्ऱान्
ऍरियुम् वॆञ्जिनत् तिरावण नॆदिर्पुहुन् देऱ्ऱान् 3484

इलक्कुवन्–लक्ष्मण; इरियल् पोकिन्ऱ–अव्यवस्थित रूप से भागनेवाली; चेनैयै–सेना को; विलक्कि–रोककर; अरिकळ्–वानरो; अञ्चन्मिन् अञ्चन्मिन्–मत डरो, मत डरो; ऍन्ऱु अरुळ् वळङ्कि–ऐसा कृपावचन कहकर; तिरियुम् मारुति–संचार करनेवाले मारुति के; तोळ् ऍन्नुम्–कंधों रूपी; तेर् मिचै–रथ पर; चॆन्ऱान्–गये; ऍरियुम्–जलनेवाले; वॆम् चिनत्तु–दारुण क्रोध के; इरावणन्–रावण ते; ऍतिर् पुकुन्तु–समक्ष जाकर; एऱ्ऱान्–(और लक्ष्मण ने) रोका। ३४८४

लक्ष्मण ने अस्त-व्यस्त भागते वानरों को यह कृपा-वचन कहकर रोका कि हे वानरो ! मत डरो। मत डरो। फिर वे संचार करनेवाले मारुति के कंधों रूपी रथ पर बैठे रावण के समक्ष आये और उसका सामना करने लगे। ३४८४

एऱ्ऱुक् कोडलु मिरावण नॆरिमुहप् पहळि
नूऱ्ऱुक् कोडियिन् मेऱ्चॆलच् चिलैकॊडु नूक्कक्
कार्ऱुक् कोडिय पञ्जॆनत् तिशैतॊऱुङ् गरक्क
वेऱ्ऱुक् कोल्हॊडु विलक्किन निलक्कुवन् विशैयाल् 3485

एऱ्ऱु कोटलुम्–सामना करके लड़े जब; इरावणन्–रावण के; ऍरिमुकम्–अग्निमुखी; पकळि–शरों को; नूऱु कोटियिन् मेल् चॆल–सौ करोड़ से अधिक; चिलै कॊटु–धनु से; नूक्क–चलाने पर; कार्ऱुक्कु–हवा के आगे; ओटिय–उड़ी; पञ्चु ऍत–रुई के समान; तिचै तॊऱुम् करक्क–दिशा-दिशा में जा छिपें, ऐसा; इलक्कुवन्–लक्ष्मण ने; विचैयाल्–तेजी के साथ; वेऱु कोल् कॊटु–अन्य बाणों से; विलक्कितन्–निवार दिया। ३४८५

जब लक्ष्मण ने युद्ध ठाना तब रावण ने सौ करोड़ से भी अधिक अग्निमुखी बाण चलाये। लक्ष्मण ने अन्य बाणों को छोड़कर उनको रोका,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तो वे पवन-चालित रूई के समान उड़ गये और दिशा-दिशा में जाकर अदृश्य हो गये। ३४८५

विलक्कि ऩान्दडन् दोळिऩु मार्बिऩुम् विशिहम्
उलक्क वुय्त्तऩ ऩिरावण ऩेन्दॊडेन् दुरुवक्
कलक्क मुऱ्ऱिल ऩिळवलु मुळ्ळत्तिऱ् कऩऩ्ऱाऩ्
अलक्क णॆय्दुवित् ताऩड लरक्कऩै यम्बाल् 3486

विलक्कित्तान्–जिन्होंने रोका उनके; तट तोळिऩुम्–विशाल कंधों पर; मार्पिऩुम्–वक्ष में; बिचिकम्–विशिखों को; इरावणऩ्–रावण ने; उलक्क–चुभें ऐसा; उय्त्तऩऩ्–चलाया; ऐन्तॊटु ऐन्तु उरुव–दस शर भेद चले; कलक्कम् उऱ्ऱिलऩ्–(तो भी) शिथिल न पड़े; इळवलुम्–लघुराज ने; उळ्ळत्तिल् कऩऩ्ऱाऩ्–मन में गुस्सा करके; अटल् अरक्कऩै–ताक़तवर राक्षस को; अम्पाल्–बाण से; अलक्कण् ऍय्तुवित्ताऩ्–त्रस्त कर दिया। ३४८६

अस्त्रनिवारक सुमित्रासुत के विशाल कंधों और वक्ष में रावण ने चुभाते हुए अस्त्र चलाये। दस अस्त्र भेद निकले भी। तो भी लक्ष्मण शिथिल नहीं हुए और क्रोध करके अपने अस्त्रों से रावण को खूब त्रस्त कर दिया। ३४८६

काक्क लाहलाक् कडुप्पिऩिऱ् ऱॊडुप्पऩ कणैहळ्
नूक्कि ऩाऩ्गणै नुऱुक्किऩा ऩरक्कऩु नूळिल्
आक्कुम् वॆञ्जमत् तरिदिवऩ् ऱऩैवॆल्व दम्मा
नीक्कि यॆऩ्ऩिऩिच् चॆय्वदॆऩ् ऱिरावण ऩिऩैन्दाऩ् 3487

काक्कल् आकला–रोका न जा सके ऐसी; कटुप्पिऩिल्–तेज़ी से; तॊटुप्पऩ–चलाये गये; कणैकळ्–शरों को; नुऱुक्किऩाऩ्–जिसने चूर किया; अरक्कऩुम्–राक्षस; इरावणऩ्–रावण ने; नूळिल् आक्कुम्–शत्रु-संहार के; वॆम् चमत्तु–भयंकर युद्ध में; इवऩ् तऩै–इसको; वॆल्वतु–जीतना; अरितु–कठिन है; नीक्कि–इसे छोड़कर; इऩि–अब; चॆय्वतु ऍऩ्–करना क्या है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; इरावणऩ् निऩैन्ताऩ्–रावण ने विचार किया (अम्मा–आश्चर्य)। ३४८७

दुर्वार वेग से आनेवाले उन शरों को रावण ने चूर कर दिया। उसने एक बात सोची : संहारक युद्ध में इसको परास्त करना दुर्लभ है! अब इसके लिए क्या किया जाय, री मैया ?। ३४८७

कडवुण् माप्पडै तॊडुक्किऩ्मऱ् ऱवैमुऱ्ऱुङ् गडक्क
विडवु माऱ्ऱवुम् वल्लऩऩ्ऱि यारैयुम् वॆल्लुम्
तडवु माऱ्ऱलैक् कूऱ्ऱैयुऩ् दमैयऩैप् पोलच्
चुडवु माऱ्ऱुमॆव् वुलहैयु मॆवऩुक्कुऩ् दोलाऩ् 3488

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कटवुळ् मा पटै–देवताओं के नामधारी बड़े अस्त्रों को; तॊटुक्किन्–चलायें तो; अवै मुऱ्ऱुम्–उन सबको; कटक्क विटवुम्–भेद जाने देने में और; आऱ्ऱवुम्–सहने में; वल्लन् अन्ऱि–समर्थ है इसके अलावा; यारैयुम् वॆल्लुम्–सबको जीतेगा; कूऱ्ऱैयुम्–यम का भी; आऱ्ऱलै तटवुम्–बल परास्त कर देगा; तमैयन्नै पोल–बड़े भाई की तरह; ऎव् उलकैयुम्–किसी भी लोक को; चुटवुम् आऱ्ऱुम्–जला भी सकता है; ऎवन्क्कुम्–किसी से भी; तोलान्–नहीं हारेगा। ३४८८

देवों के नामधारी अस्त्र छोड़ता हूँ, तो वे भेद जाते हैं, पर यह उससे प्रभावित नहीं होता। यह उनको झेलने में भी समर्थ रहता है। यह सबको जीतेगा। यम के बल को भी बेकार कर देगा। अपने ज्येष्ठ भ्राता के समान यह किसी भी लोक को जला सकता है! यह किसी से हारेगा भी नहीं। ३४८८

मोह मॊन्ऱुण्ड मुदलवन् वहुत्तदु मुन्ऩा
ळाह मऱ्ऱदु कॊऱ्ऱमुञ् जिवन्दऩै यऴिप्प
देह मुऱ्ऱिय विञ्जैयै यिवन्वयि ऩेविक्
काह मुऱ्ऱुऴल् कळत्तिनिऱ् किडत्तुवॆन् कडिदिन् 3489

मोकम् ऒन्ऱु उण्टु–मोहनास्त्र एक है; मुन्ऩाळ्–प्राचीन काल में; मुतल्वन् वकुत्ततु–आदिभगवान का रचित; आकम् अऱ्ऱतु–दृश्य रूप का नहीं; चिवन् तनै–शिव की भी; कॊऱ्ऱमुम् अऴिप्पतु–विजय को हरनेवाला; एकम्–अद्वितीय; विञ्चैयै मुऱ्ऱिय–मंत्र-भरा; इवन् वयिन् एवि–(वह अस्त्र) इस पर चलाकर; काकम् उऱ्ऱु उऴल्–जहाँ कौए आकर मँड़राते; कळत्तिनिल्–इस युद्धभूमि में; कटिदिन्–शीघ्र; किटत्तुवॆन्–लिटा दूँगा। ३४८९

आदिभगवान का प्राचीन काल में रचित मोहनास्त्र एक है! वह अरूप है। शिव की विजय को भी हर लेनेवाला है! मंत्रपूरित अद्वितीय उसे इस पर चलाऊँगा और उस समरांगन में जल्दी लिटा दूँगा, जिस पर कि कौए मँड़राते हैं। ३४८९

ऎन्ऩब दुऩ्ऩियव् विञ्जैयै मऩत्तिडै यॆण्णि
मुन्बन् मेल्वरत् तुरन्दऩ ऩदुहण्डु मुडुहि
अन्बिन् वीडण ऩाऴियान् पडैयिऩि ऩऱुत्ति
ऎन्ऩब दोदिऩ ऩिलक्कुव ऩदुतॊडुत् तॆय्दान् 3490

ऎन्बतु उऩ्ऩि–यह सोचकर; अव् विञ्चैयै–उस मोहन मन्त्र को; मऩत्तिटै ऎण्णि–मन में स्मरण करके; मुन्पन् मेल् वर–बलवान लक्ष्मण पर चलने; तुरन्ततऩ्–छोड़ा; अतु कण्टु–उसको देखकर; वीटणन्–विभीषण ने; अन्पिन्–प्रेम के कारण; मुटुकि–जल्दी आकर; आऴियान् पटैयिन्–चक्रधारी के अस्त्र से; अऱुत्ति–काटो; ऎन्पतु–ऐसा; ओतिऩन्–कहा; इलक्कुवन्–लक्ष्मण ने भी; अतु तॊटुत्तु–वह लगाकर; ऎय्तान्–चलाया। ३४९०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसा सोचकर रावण ने उस मोहनास्त्र का स्मरण किया और बलवान लक्ष्मण पर प्रेरित किया। विभीषण ने यह देखा तो प्रेम से प्रेरित हो लक्ष्मण के पास जल्दी जाकर समझाया कि इसे चक्रधारी के विष्णु-अस्त्र चलाकर काटिए। लक्ष्मण ने वही चलाया। ३४९०

वीड णन्शॉल विण्डुवित् पडक्कलम् विट्टान्
मूडु वॅज्जिन मोहत्तै नीक्कलु मुनिन्दान्
माडु निन्ऱव नुबायङ्गण् मदित्तिड वन्द
केडु नन्दमक् कॅन्बदु मनङ्गॉण्डु किळर्न्दान् 3491

वीटणन् चॉल–विभीषण के कहने पर; विण्टुवित्–विष्णु के; पटै कलम्–अस्त्र को; विट्टान्–चलाकर; मूटुम्–आच्छादक; वॅम् चिनम्–कठोर क्रोधी; मोकत्तै–मोहनास्त्र को; नीक्कलुम्–दूर करते ही; मुनिन्तान्–क्रुद्ध होकर (रावण); माटु निन्ऱवन्–पार्श्वस्थित (विभीषण) के; उपायङ्कळ् मतित्तिट–उपाय सोचने से; नन्तमक्कु वन्त केटु–हम पर आया उपद्रव; ॲन्पतु–यह; मनम् कॉण्टु–मन में लाकर; किळर्न्तान्–उग्र हो उठा। ३४९१

विभीषण के कहने से लक्ष्मण ने श्रीविष्णु का अस्त्र छोड़ा। उसने आच्छादक तथा क्रोध-भरे मोहनास्त्र को हटा दिया। तब क्रुद्ध रावण यह सोचकर उग्र हो गया कि पार्श्वस्थित मेरे भाई के सोचकर बताने से यह हानि हमारी हो गयी। ३४९१

मयन्गॉ डुत्तदु महळॉडु वयङ्गनल् वेळ्वि
अयन् पडैत्तुळ दाळियुङ् गुलिशमु मनैय
दुयर्न्द कॉऱ्ऱमु मूळियुङ् गडन्दुळ दुरुमिऱ्
चयन्द नैप्पॉरुन् दम्बियै युयिर्हॉळच् चमैन्दान् 3492

मयन् मकळॉटु कॉटुत्ततुम्–जिसे मय ने अपनी सुता के साथ दिया था; वयङ्कु–तेजोमय; अनल् वेळ्वि–अग्नि के यज्ञ में; अयन् पटैत्तुळतु–ब्रह्मा द्वारा रचित; आळियुम्–चक्र; कुलिचमुम्–और कुलिश; अनैयतु–के सदृश; उयर्न्त कॉऱ्ऱमुम् उन्नत विजय को; ऊळियुम्–और युगांत की अग्नि को; कटन्तुळतु–पीछे छोड़ चुका (जो) उस शक्ति से; उरुविल्–रूप में; चयन्ततै–जयंत के; पॉरुवुम्–सदृश रहनेवाले; तम्पियै–छोटे भाई के; उयिर् कॉळ–प्राणों को हरने पर; चमैन्तान्–तुल गया। ३४९२

तब उसने उस शक्ति को चलाकर जयंत-सदृश अपने रूप वाले भाई का प्राणांत कर देने का विचार किया, जिसे मय ने सुता के विवाह के अवसर पर रावण को दिया था; जो ब्रह्मा द्वारा यज्ञ में रची गयी थी; जो चक्र और कुलिश से तुल्य थी; और जो किसी की भी विजय को और युगांत की अग्नि को भी परास्त कर चुकी थी। ३४९२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विट्ट पोदिनि नॉरुवन वीट्टिये मीऴुम्
पट्ट पोदव नान्मुह नायिनुम् बडुक्कुम्
वट्ट वेलदु वलङ्गोडु वाङ्गिनन् वणङ्गि
ऍट्ट निऱ्कलात् तम्बिमेल् वल्विशैत् तॅऱिन्दान् 3493

विट्ट पोतिनिल्–जब उसे छोड़ा; ऑरुवनै–वह किसी को भी; वीट्टिये–मारकर ही; मीऴुम्–लौटता; पट्ट पोतु–जब लगता; अवन्–वह; नान् मुकन् आयिनुम्–चतुर्मुख हो तो भी; पटुक्कुम्–उसे मार देता; अतु वेल्–उस तरह की शक्ति को; वट्टम् वलम् कोंटु–परिक्रमा करके; वणङ्कि–नमस्कार करके; वाङ्कितन्–ग्रहण कर; ऍट्ट निऱ्कला–जो दूर नहीं खड़ा रहा उस; तम्पि मेल्–छोटे भाई पर; वल् विचैत्तु–खूब जोर लगाकर; ऍऱिन्तान्–प्रेरित किया। ३४९३

वह ऐसा आयुध था जो जब छोड़ा गया तो मारकर ही लौटता। चाहे पात्र चतुर्मुख ही क्यों न हो! उस शक्ति की परिक्रमा करके रावण ने उसको नमस्कार किया और जो दूर नहीं खड़ा था उस अपने छोटे भाई पर ज़ोर देकर चला दिया। ३४९३

अऱिन्द कालैयिल् वीडण नदनिलै यॅल्लाम्
अऱिन्द शिन्दैय नैयवी दॅन्नुयि रऴिक्कुम्
पिऱिन्दु शॅय्यलाम् बॉरुळिलै यॅन्ऱलुम् बॅरियोन्
अऱिन्दु पोक्कुव लञ्जल्नी यॅन्ऱिडै यणैन्दान् 3494

ऍऱिन्त कालैयिल्–जब चलाया तब; अतन् निलै ऍल्लाम्–उसकी सारी गतिविधि; अऱिन्त चिन्तैयन् वीटणन्–जो जानता था उस मन के विभीषण ने; ऐय–प्रभु; ईतु–यह; ऍन् उयिर्–मेरे प्राणों का; अऴिक्कुम्–नाश कर देगा; पिऱिन्तु–रोकने के अर्थ; चॅय्यलाम् पॉरुळ्–करने का कार्य; पिऱितु इलै–अन्य कुछ नहीं; ऍन्ऱलुम्–कहा तो; पॅरियोन्–मान्य लक्ष्मण; अऱिन्तु–सोचकर; पोक्कुवल्–दूर करूँगा; नी अञ्चल्–तुम मत डरो; ऍन्ऱु–कहकर; इटै अणैन्तान्–उस स्थल पर गया। ३४९४

जब उसने उसे चलाया तब विभीषण ने, जिसे उसके सम्बन्ध में सारी बातें मालूम थीं, लक्ष्मण से कहा कि प्रभु! यह मेरे प्राण लेकर ही छोड़ेगा। निवारण का कोई रास्ता नहीं। तब मान्य लक्ष्मण 'उपाय सोचकर निवारूँगा। तुम मत डरो' —कहते हुए उसके स्थान पर गया। ३४९४

ऍय्द वाळियु मेयिन पडैक्कलम् यावुम्
शॅय्द मादवत् तॉरुवनैच् चिऱुतॉऴिऱ् ऱीयोन्
वैद वैविनि लॉऴिन्दन वीडणन् माण्डान्
उय्द लिल्लैयॅन् ऱुम्बरुम् बॅरुमन मुलैन्दार् 3495

ऍय्त वाळियुम्–प्रेरित शर और; एयिन पटै कलम्–चलाये गये हथियार; यावुम्–सभी; चॅय्त मातवत्तु–तपस्वी; ऑरुवनै–किसी को; चिऱु तॉऴिल्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्षुद्र कर्म करनेवाले; तीयोन्-बुरे मनुष्य के; वेत वेविविनिल्-दिये गये शाप-वचनों के समान; ऑछिन्तत-बेकार हुए; उम्परुम्-देव भी; वीटणन् माण्टान्-विभीषण मर गया; उय्तल् इल्लै-बचाव नहीं; ऍन्ऱ-कहकर; पॅरु मतम् उलैन्तार्-बहुत व्यग्र हुए। ३४९५

लक्ष्मण ने उसके विरुद्ध अनेक अस्त्र प्रेरित किये। हथियार फेंके। पर वे सभी तपस्वी के प्रति नीच कर्म करनेवाले बुरे आदमी के दिये गये शाप के समान निरर्थक हो गये। तब देव यह सोचकर बहुत दुःखी हुए कि अब विभीषण मर गया! कोई बचाव का मार्ग नहीं। ३४९५

तोऱ्प नॅन्निनुम् बुहळ्निऱ्कुन् दरुममुन् दॉडरुम्
आऱ्प्पर् नल्लव रडैक्कलम् बुहुन्दव नळियप्
पाऱ्प्प दॅन्नॅडुम् बळिवन्दु पडर्वदन् मुन्नम्
एऱ्प नॅन्तनि मार्बिनॅन् ऱिलक्कुव नॅदिर्न्दान् 3496

तोऱ्पन् ऍन्नुनिनुम्-(प्राण) हार जाऊँ तो भी; पुकळ् निऱ्कुम्-यश रहेगा; तरुममुम् तॉटरुम्-धर्म लगा रहेगा; नल्लवर् आऱ्प्पर्-सज्जन हल्ला मचा देंगे; अटैक्कलम् पुकुन्तवन्-शरणागत को; अळिय पाऱ्प्पतु-नष्ट होता देखना; ऍन्-कैसा; नॅटु पळि-लम्बा अपयश आकर; तॉटर्वतन् मुन्नम्-लग जाय, इसके पूर्व; ऍन् तनि मार्पिन्-अपने अनुपम वक्ष पर; एऱ्पन्-झेल लूँगा; ऍन्ऱ-कहकर; इलक्कुवन्-लक्ष्मण; ऍतिर्न्तान्-सामने गये। ३४९६

लक्ष्मण ने निश्चय किया कि प्राण हारना पड़े तो भी यश स्थायी रहेगा। धर्म लगा रहेगा। सज्जन खूब प्रशंसा करेंगे। शरणागत को मरता देखता रहना क्या बात है? दीर्घ कलंक आ लगे इसके पूर्व ही अपने अनुपम वक्ष में यह झेल लूँगा। वे 'वेल्' के समक्ष गये। ३४९६

इलक्कु वऱ्कुमुन् वीडणन् पुहुमिरु वरैयुम्
विलक्कि यङ्गदन् मेऱ्चॅलु मवनैयुम् विलक्किक्
कलक्कुम् वानरक् कावल ननुमन्मुन् कडुहुम्
अलक्क णन्नदै यिन्नदॅन् ऱुरैशॅय लामो 3497

इलक्कुवऱ्कु मुन्-लक्ष्मण के आगे; वीटणन् पुकुम्-विभीषण गया; इरुवरैयुम् विलक्कि-दोनों को रोककर; अङ्कतन् मेल् चॅलुम्-अंगद आगे गया; अवनैपुम् विलक्कि-उसे भी हटाकर; वानरर् कावलन्-वानर राजा; कलक्कुम्-मिल गया; अनुमन्-हनुमान; मुन् कटुकुम्-आगे जल्दी गया; अन्नतु अलक्कण्-वैसे दुःख का; इन्नतु ऍन्ऱ-कैसा यह; उरै चॅयल् आमो-कहा जा सकता है क्या। ३४९७

तब विभीषण उनके आगे गया। दोनों को रोककर अंगद गया। अंगद को पीछे छोड़कर वानरराज आगे गया। हनुमान उसके भी आगे जा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चुका ! तब जो दुःखपूर्ण वातावरण पैदा हुआ वह कैसा था ? क्या कहा जा सकता है ? । ३४९७

मुन्निन् ऱारॅलाम् बिन्नुऱक् कालिनिन् मुडुहि
निन्मिन् यानिदु विलक्कुवॅ नॅन्ऱुरै नेरा
मिन्नुम् वेलिनै विण्णवर् कण्पुडैत् तिरङ्ग
पॊन्निन् मार्बिडै येऱ्ऱनन् मुदुहिडैप् पोह 3498

मुन् निन्ऱार् अॅलाम्–सामने स्थित सभी को; पिन् उऱ–पीछे छोड़कर; कालिनिन्–पवन के समान; मुटुकि–जल्दी जाकर; निन्मिन्–खड़े रहो; यान्–मैं; इतु विलक्कुवन्–इसे रोक दूंगा; अॅन्ऱु–ऐसा; उरै नेरा–वचन कहकर; विण्णवर्–देवों को; कण् पुटैत्तु–आंख पीटकर; इरङ्क–रोने देकर; मुतुकिटै पोक–पीठ से होकर निकल जाय ऐसा; मिन्नुम् वेलिनै–चमकती शक्ति को; पॊन्निन् मार्पिटै एऱ्ऱनन्–स्वर्ण-सम वक्ष पर झेल लिया । ३४९८

अपने सामने जो थे उन सभी के आगे पवनगति में लक्ष्मण जा पहुँचे । उनसे कहा कि रह जाओ ! मैं इसे रोक दूंगा । उन्होंने उस शक्ति को अपने वक्ष में घुसने दिया और वह पीठ से बाहर चली गयी । देव इसको देखकर अपनी आँखें पीटते हुए रोये । ३४९८

अॅङ्गु नीङ्गुदि नीयॅन्न वीडण नॅळुन्दान्
शिङ्ग वेऱॅन्न शीऱ्ऱत्ता निरावणन् तेरिल्
पॊङ्गु पाय्परि शारदि यॊडुम्बडप् पुडैत्तान्
शङ्ग वानवर् तलैयॅडुत् तिडनॅडुन् दण्डाल् 3499

वीटणन्–विभीषण ने; नी अॅङ्कु नीङ्कुति–तुम कहाँ जाओ; अॅन्न–कहते हुए; अॅळुन्तान्–उठा; चिङ्क एऱु अन्न–नर केसरी के समान; चीऱ्ऱत्तान्–क्रुद्ध; इरावणन्–रावण के; तेरिल्–रथ के; पॊङ्कु पाय् परि–उमगकर लपकनेवाले अश्व; चारति यॊटुम्–सारथी के साथ; पट–मरकर गिरें ऐसा; चङ्कम् वानवर्–दलबद्ध देव; तलै अॅट्तिट–सिर उन्नत कर लें, यह सम्भव करते हुए; नॅट् तण्टाल्–लम्बे दण्ड से; पुटैत्तान्–पीटा । ३४९९

विभीषण ने रावण को ललकारा— तुम कहाँ जाओगे ? नर केसरी के समान कुपित होकर उसने अपनी लंबी गदा से पीटा । तब रावण के रथ के लपकते चलनेवाले अश्व और सारथी मरकर गिर गये । ३४९९

शेय्वि शुम्बिनि निमिर्न्दुनिन् ऱिरावणन् शीऱिप्
पाय्ह डुङ्गणैप् पत्तव नुडल्पुहप् पाय्चचि
आयि रञ्जर मनुमन्ऱ नुडलिनि नळुत्तिप्
पोयि नन्शॅरु मुडिन्दवॅन् ऱिलङ्गैयूर् पुहुवान् 3500

इरावणन्–रावण; चेय विचुमपितिल–दूर आकाश में; निमिर्न्तु निन्ऱु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जा खड़े होकर; चीऱि–गुस्सा करके; पाय्–लपक चलनेवाले; पत्तु कट्टुम् कर्ण–दस कठोर शरों को; अवऩ् उटल पुक–उसके शरीर को भेदते हुए; पाय्चचि–चलाकर; अनुमऩ् तऩ् उटलिऩिल्–हनुमान के शरीर में; आयिरम् चरम् अऴुत्ति–हज़ार शर धँसाकर; चॅऱु मुटिन्ततु–युद्ध पूरा हो गया; ऍऩ्ऱु–कहता हुआ; इलङ्कॆ ऊर् पुकुवाऩ्–लंका नगर में प्रविष्ट होने के लिए; पोयितऩ्–गया। ३५००

रावण आकाश में दूर गया। वहाँ से उसने विभीषण पर दस वेगवान बाण चलाये और वे उसके शरीर में चुभ गये। फिर हनुमान के शरीर में हज़ार शर चुभा दिये। 'बस! युद्ध का अंत हो गया।' कहते हुए वह लंका में प्रवेश करने चला गया। ३५००

तेडिच् चेऱ्न्दवॅऩ् पॊऱुट्टिऩा ऩुलहुडैच् चल्वऩ्
वाडिप् पोयिऩ ऩीयिऩि वञ्जऩै मदियाल्
ओडिप् पोहुव ऎङ्गडा वुऩ्ऩॊडु मुडऩै
वीडिप् पोवऩॆऩ् ऱ्ऱक्कऩ्मेल् वीडणऩ् वॆहुण्डाऩ् 3501

तेटि चेऱ्न्त–शरण माँगकर आये; ऍऩ् पॊऱुट्टिताल्–मेरे ही निमित्त; उलकुटै चॆल्वऩ्–लोक के स्वामी; वाटि पोयिऩऩ्–मुरझा गये; इऩि–अब; नी–तुम; वञ्चऩै मतियाल्–वंचक मन ले; ऍङ्कु अटा–कहाँ रे; ओटि पोकुवऩु–जा पहुँचो; उऩ्ऩॊटुम् उटऩै–तुम्हारे ही साथ; वीटि पोवऩ्–मर जाऊँगा; ऍऩ्ऱु–कहकर; अरक्कऩ् मेल्–राक्षस से; वीटणऩ् वॆकुण्टाऩ्–विभीषण कुपित हुआ। ३५०१

"शरणागत मेरे कारण लोकस्वामी लक्ष्मण मुरझा गये हैं। अब वंचकमति तुम कहाँ जाओगे रे? तुम्हें मार दूँगा और तुम्हारे साथ मैं भी मरूँगा" —यह कहते हुए विभीषण ने गुस्सा दिखाया। ३५०१

वॆऩ्ऱि यॆऩ्वय माऩदु वीडणप् पशुवॆक्
कॊऩ्ऱि ऩिप्पय मिल्लैयॆऩ् ऱिरावणऩ् कॊण्डाऩ्
निऩ्ऱि लऩ्ऩॊऩ्ऱु नोक्किलऩ् मुऩिवॆला नीत्ताऩ्
पॊऩ् तिणिन्दऩ मदिलुडै यिलङ्गैयूर् पुक्काऩ् 3502

वॆऩ्ऱि–विजय; ऍऩ् वयम् आऩतु–मेरे वश की हो गयी; वीटणऩ् पशुवॆ–विभीषण रूपी गाय को; इऩि–अब; कॊऩ्ऱु–मारकर; पयम् इल्लै– कोई) फल नहीं; ऍऩ्ऱु–ऐसा; इरावणऩ् कॊण्टाऩ्–रावण विचार करके; निऩ्ऱिलऩ्–खड़ा नहीं रहा; ऒऩ्ऱुम् नोक्किलऩ्–कुछ देखा नहीं; मुऩिवु ऍलाम्–सारा क्रोध; नीत्ताऩ्–छोड़कर; पॊऩ् तिणिन्ऩऩ्–स्वर्णमय; मतिल् उटै–प्राचीरों-सहित; इलङ्कॆ ऊर्–लंका नगर में; पुक्काऩ्–प्रविष्ट हुआ। ३५०२

रावण को संतोष हो गया कि विजय मेरी होकर रह गयी है! फिर यह विभीषण गऊ है! उसको मारने से क्या लाभ? इसलिए रावण डटा नहीं रहा; न ही उसने उसकी तरफ़ आँख उठाकर देखा। सारा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कोप त्यागकर वह स्वर्णप्राचीर-वलयित लंका नगर में प्रविष्ट हो गया। ३५०२

अरक्क नेहिनन् वीडणन् वाय्दिऱन् दरऱ्ऱि
इरक्कन् दानॅन विलक्कुव निणैयडित् तलत्तिल्
करक्क लाहलाक् कादलन् वीऴ्न्दनन् कलुऴ्न्दान्
कुरक्कु वॅळ्ळमुन् दलैवरुन् दुयरिडैक् कुळित्तार् 3503

अरक्कन् एकितन्–रावण चला गया; वीटणन्–विभीषण; करक्कल् आकला–जिसको छिपाया नहीं जा सकता, वैसे; कातलन्–प्रेम से अभिभूत हो; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱि–प्रलाप करके; इरक्कम् तान् ऍन–करुणा की साक्षात् मूर्ति-मान्य होकर; इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; इणै अटि तलत्तिल्–चरणद्वय-तल में; वीऴ्न्तनन्–गिरकर; कलुऴ्न्तान्–रोया; कुरक्कु वॅळ्ळमुम्–वॅळ्ळम् की संख्या के वानर; तलैवरुम्–और नायक; तुयरिटै–दुःख में; कुळित्तार्–डूबे। ३५०३

राक्षस राजा चला गया। विभीषण अपने उमड़ते स्नेह को दबा नहीं सका। मुख खोलकर प्रलाप करके मूर्तिमान करुणा की तरह वह लक्ष्मण के चरणद्वय-तल पर गिरा और खूब रोया। विशाल वानरदल और वानर-यूथप भी दुःखमग्न हुए। ३५०३

पॊन्नि रुम्बुरु तार्प्पुयप् पॊरुप्पिनान् पॊन्ऱु
ऍन्नि रुन्दुना निऱप्पॅनिक् कणत्तॅनै याळुम्
मन्नि रुन्दिनि वाऴ्हिल नॅन्ऱनन् मऱुह
निन्नि लंन्ऱनन् शाम्बव नुरैयॊन्ऱु निहऴ्त्तुम् 3504

पॊन् इरुम्पु–काले स्वर्ण लोहे के समान; उऱुम्–(सुदृढ़) रहनेवाले; तार्–माला से अलंकृत; पुयम् पॊरुप्पिनान्–भुजा रूपी कन्धोंवाले; पॊन्ऱु–जब मर गये तब; नान् इरुन्तु–मैं जीवित रहूँ उससे; ऍन्–क्या फ़ायदा; इ कणत्तु–इसी क्षण; इऱप्पॅन्–मरूँगा; इनि–अब; ऍनै आळुम्–मेरे शासक; मन्–राजा राम; इरुन्तु–(जीवित) रहकर; इनि वाऴ्किलन्–आगे नहीं जियेंगे; ऍन्ऱनन्–कहकर; मऱुक–क्षुब्ध हुआ; निल् निल्–बस, बस; ऍन्ऱनन्–कहकर; चाम्पवन्–जाम्बवान ने; उरै ऒन्ऱु–एक वचन; निकऴ्त्तुम्–कहा। ३५०४

स्वर्ण-लोहे की तरह सुदृढ़ तथा माला से अलंकृत कंधोंवाले चल बसे। फिर मेरे जीवित रहने से क्या लाभ ? मैं भी इसी क्षण मरूँगा। और मेरे शासक श्री राजा राम भी जीवित नहीं रहेंगे। यह कहकर वह क्षुब्ध हुआ। तब जाम्बवान ने उसे रोका कि 'ठहरो, ठहरो।' जाम्बवान आगे बोला। ३५०४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनुम निऱ्कना मारुयिऱ् किरङ्गुव दऱिवो
निनैयु मत्तुणै मात्तिरत् तुलहॅला निमिर्वान्
विनैयि नन्मरुन् दळिक्किन्ऱा नुयिर्क्किन्ऱान् वीरन्
तिनैयु मल्ललुऱ् ऱळुङ्गन्मि नॅन्ऱिडर् तीर्त्तान् 3505

निनैयुम् अ तुणै मात्तिरत्तु–स्मरण करने मात्र की देरी में; उलकु ॲलाम्–सारे लोक में; निमिर्वान्–सिर ऊँचा करके चलनेवाला; विनैयिन्–यत्न से; नल् मरुन्तु–अच्छी ओषधि; अळिक्किन्ऱान्–ला देनेवाला; अनुमन् निऱ्क–हनुमान जब है तब; नाम–हमारा; आर् उयिर्क्कु–प्यारे प्राणों के लिए; इरङ्कुवतु–दुःखी होना; अऱिवो–बुद्धिमत्ता है क्या; वीरन्–वीर (लक्ष्मण); उयिर्क्किन्ऱान्–साँसें ले रहे हैं; तिनैयुम्–जरा भी; अल्लल् उऱ्ऱु–दुःखी होकर; अळुङ्कन्मिन्–मत लटो; ॲन्ऱु–कहकर; इटर् तीर्त्तान्–संकट दूर किया। ३५०५

विभीषण ! स्मरण-मात्र से सारे लोकों में सिर उन्नत करके घूमकर आनेवाला हनुमान है। प्रयत्न करके औषध ला दे सकनेवाला है ! तब हम प्यारे (लक्ष्मण के) प्राणों के लिए रोयें क्यों ? यह बुद्धिमत्ता नहीं होगा। और भी देखो ! लक्ष्मण साँस ले रहे हैं ! रंच भी दुःखी होकर मत लटो। जाम्बवान ने उनका दुःख दूर किया। ३५०५

मरुत्तिन् कादलन् मार्बिडै यल्बॅलाम् वाङ्गि
इरुत्ति योकडि देहलै यिळवलै यिन्नम्
वरुत्तङ् गाणुमो मन्नव नॅन्नलु मन्नान्
गरुत्तै युन्नियम् मारुदि युलहॅलाङ् गडन्दान् 3506

मरुत्तिन् कातलन–मरुतनन्दन के; मार्पिटै अम्पु ॲलाम्–वक्ष के सारे अस्त्र; वाङ्कि–निकालकर; इळवलै–लक्ष्मण को; इन्नम् वरुत्तम्–संकट में पड़ा; मन्नवन्–श्रीराजाराम; काणुमो–देख (सह) सकेंगे क्या; कटितु एकलै–जल्दी न जाते; इरुत्तियो–यहीं रहोगे क्या; ॲन्नलुम्–कहने पर; अन्नान् करुत्तै–उसका आशय; उन्नि–सोचकर; अ मारुति–वह मारुति; उलकु ॲलाम्–सारे लोक को; कटन्तान्–पार कर गया। ३५०६

जाम्बवान ने हनुमान की छाती से चुभे रहे सारे बाण निकाल दिये और कहा कि श्रीराम अपने छोटे भाई को इस संकट की स्थिति में देखकर सह नहीं सकेंगे। इसलिए तुम शीघ्र नहीं जाओगे क्या ? विलंब करते रह जाओगे ? हनुमान जाम्बवान का आशय समझा और तुरन्त लोक के सारे प्रदेशों को पार कर जाने लगा। ३५०६

उय्त्तॊरु तिशैमे लोडि युलहॅलाङ् गडक्कप् पाय्नदु
मॅय्त्तहु मरुन्दु तन्नै वॅऱ्पॊडुङ् गॊणर्न्द वीरन्
पोय्त्तलिल् कुऱिहळ् तान्ने पॊदुवऱ् नोक्किप् पॊन्बोल्
वैत्तदु वाङ्गिक् कॊण्ड वरुदलिल् वरुत्त मुण्डो 3507

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उय्त्तु–मन (औषध पर) लगाकर; ऑरु तिचै मेल् ओटि–विशिष्ट उत्तर दिशा में भागकर; उलकु ऍलाम् कटक्क–सारे लोक को पार करते; पाय्न्तु–लपककर; मॅय् तरु–सच्ची शक्ति से पूर्ण; मरुन्तु तन्तॅ–औषध को; वॅऱ्पोटुम्–पर्वत के साथ; कॉणर्न्त–जो पहले लाया था वह; वीरन्–वीर; पॉय्त्तल् इल्–अचूक; कुऱिकळ्–निशानों को; तान्ते–स्वयं; पोतु अऱ–असाधारण रीति से; नोक्कि–देखकर; पॉन् पोल्–स्वर्ण के समान; वैत्ततु–(जिसको) सुरक्षित रखा था; वाङ्कि कॉण्टु–लेकर; वरुतलिल्–आने में; वरुत्तम् उण्टो–कष्ट है क्या। ३५०७

पहले वह उत्तम उत्तर दिशा में सारे प्रदेशों को पार कर उड़ चला था और अमोघ शक्तिशाली उस ओषधि को पर्वत-सहित लाया था। वे सब निशान मालूम थे जो झूठे नहीं हो सकते थे। वह गुप्तधन के समान उसे रख आया था। फिर उसे लाने में कष्ट हो सकता था क्या ? । ३५०७

तन्दतन् मरुन्दु तन्तैत् ताक्कुदन् मुन्ते योहम्
वन्ददु माण्डार्क् कॅल्ला मुयिर्तरुम् वलत्त दॅन्ऱाल्
नॉन्दवर् नॉय्वु तीर्क्कच् चिऱिदन्ऱो नॉडित्तन् मुन्ते
इन्दिर नुलह मार्क्क वॅळुन्दन ऩिळैय वीरन् 3508

मरुन्तु–ओषधि-पर्वत को; तन्ततन्–ला दिया; तन्तै ताक्कुतल् मुन्ते–अपने पर लगने से पहले; योकम् वन्ततु–जागरण आ गया; माण्टार्क्कु ऍल्लाम्–सभी मृतकों को; उयिर् तरुम् वलत्ततु–प्राण देने की शक्ति रखनेवाला था; ऍन्ऱाल्–तो; नॉन्तवर्–पीड़ित की; नोय्वु तीर्क्क–वेदना दूर करने में; चिऱितु अन्ऱो–अल्पता थी न; नॉटित्तल् मुन्ते–चुटकी बजाने की देर में; इन्तिरन् उलकम्–देवेंद्र के लोक के; आर्क्क–आनन्दनाद करते; इळैय वीरन्–छोटे वीर; ऍऴुन्ततन्–उठ गये। ३५०८

वह ओषधिपर्वत लाया। उसकी गंध के भूमि पर लगने से पहले ही जागरण आ गया। मृतकों को जीवन दे सकती थी वह ओषधि ! फिर केवल पीड़ितों की पीड़ा का निवारण उसके लिए सुगम काम था न ? चुटकी बजाने की देर में वीर लक्ष्मण इन्द्रलोक के देवों को आनन्दनाद उठाने देते हुए जाग उठे। ३५०८

ऍऴुन्दुनिन् ऱनुमन् ऱन्तै यिरुहैयार् ऱऴुवि यॅन्दाय्
विऴुन्दिल नन्ऱो मऱ्ऱव् वीडण नॅन्ऱु विम्मित्
तॉऴुन्दुणै यवन्तै नोक्कित् तुणुक्कमुन् बुयरु नोक्किक्
कॉऴुन्दियु मीण्डाळ् पट्टा नरक्कनॅन् ऱुवहै कॉण्डान् 3509

ऍऴुन्तु निन्ऱु–उठ खड़े होकर; अनुमन् तन्तै–हनुमान को; इरु कैयाल्–दोनों हाथों से; तऴुवि–आलिंगन करके; ऍन्ताय्–मेरे पिता (तुल्य); अव् वीटणन्–वह विभीषण; विऴुन्तिलन् अन्ऱो–नहीं गिरा न; ऍन्ऱु–पूछकर जानकर; विम्मि–सिसककर; तॉऴुम्–नमस्कार करते; तुणैयवन्तै–भाई (विभीषण) को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नोक्कि–देखकर; तुणुक्कमुम्–भय और; तुयरुम्–दुःख; नीङ्कि–त्यागकर; कोळुन्तियुम्–भाभी भी; मीण्टाळ्–पुनः मिल गयीं; अरक्कन् पट्टान्–राक्षस मर गया; ऎन्ऱु–ऐसा; उवक्कॆ कोण्टान्–संतुष्ट हुए। ३५०९

लक्ष्मण ने उठकर हनुमान को दोनों हाथों से आलिंगन में लिया और पूछा कि विभीषण नहीं मरा है न! पास में विभीषण सिसकता खड़ा था। अपने बड़े भाई-सदृश उसे देखकर लक्ष्मण ने अपना भय और दुःख छोड़ दिया। उन्हें विश्वास हो गया कि अब भाभी के लौट आने में कोई संशय नहीं। राक्षस मर गया! वे बहुत मुदित हुए। ३५०९

तरुममॆन् ऱऱिञर् शॊल्लुन् दन्निप्पॊरुळ् तन्ऩै यिन्ऩे
करुममॆन् ऱनुम ऩाक्किक् काट्टिय तन्मै कण्डाल्
अरुमैयॆन् ऩिरामऱ् कम्मा वऱम्वॆल्लुम् बावन् दोऱ्कुम्
इरुमैयु नोक्कि ऩॆन्ऩा विरामऩ्बा लॆऴुन्दु शॆन्ऱार् 3510

तरुमम्–(विग्रहवान) धर्म; ऎन्ऱु–ऐसा; अऱिञर्–विद्वान् लोग; चॊल्लुम्–जिसे कहते; तन्नि पॊरुळ् तन्ऩै–उस पर वस्तु को; इन्ऩ–अभी; करुमम् ऎन्ऱु–कर्तव्य कहकर; अनुमन् आक्कि काट्टिय–हनुमान ने जो बना के दिखाया; तन्मै कण्टाल्–उस कार्य-रीति को देखें तो; इरामऱ्कु–श्रीराम के लिए; अरुमै ऎन्–कठिन क्या है; इरुमैयुम् नोक्किन्–दोनों (इह, पर) को देखते समय; अऱम् वॆल्लुम्–धर्म जीतेगा; पावम् तोऱ्कुम्–पाप हारेगा; ऎन्ऩा–कहकर; इरामन् पाल्–श्रीराम के पास; ऎऴुन्दु–उठ; चॆन्ऱार्–चले। ३५१०

पंडित लोग श्रीराम को (विग्रहवान) धर्म ही मानते हैं। ऐसे उनके प्रति धर्म समझकर कर्तव्य का निश्चय करके हनुमान ने जो कर दिखाया, उसको लेकर सोचा जाय तो श्रीराम के लिए कठिन क्या रहेगा? इह-पर की बात लेकर विचार करें तो धर्म विजयी होगा और पाप हार जायगा। यह कहते हुए सब उठे और श्रीराम के पास चले। ३५१०

ऒन्ऱल पलवॆन् ऱोङ्गु मुयर्पिणत् तुम्ब रॊन्ऱु
कुन्ऱुहळ् पलवुञ् जोरिक् कुरॆहड लऩॆत्तुन् दाविच्
चॆन्ऱडॆन् दिरामन् तन्ऩैत् तिरुवडि वणक्कञ् जॆय्दार्
वॆन्ऱियिन् तलैवर् कण्ड विरामऩॆन् विणॆन्द दॆन्ऱान् 3511

ऒन्ऱु अल–एक नहीं; पल ऎन्ऱु–अनेक मान्य; ओङ्कुम् उयर्–बहुत ऊँचे; पिणत्तु–लाशों के; उम्पर् ऒन्ऱु–आकाश छूते हुए; कुन्ऱुकळ् पलवुम्–पर्वत अनेक; तावि चॆन्ऱु–लाँघ चोरि–रक्त के; कुरे कटल्–गरजते सागर; अऩॆत्तुम्–सारे; चॆन्ऱु–लाँघ जा; अटन्तु–पहुँचकर; इरामन् तन्ऩै–श्रीराम के; तिरुवटि–चरणों में; वन्ऱियिन् तलैवर्–विजयी वीरों ने; वणक्कम् चॆय्तार्–नमस्कार किया; कण्ड इरामन्–देखकर श्रीराम ने; विळैन्ततु ऎन्–हुआ क्या; ऎन्ऱान्–ऐसा पूछा। ३५११

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लाशों के ऊँचे गगनस्पर्शी पर्वतों और रक्त के गरजते सागरों को लाँघकर वे श्रीराम के पास पहुँचे। और वीरराघव के चरणों में नमस्कार किया। उनको देखकर श्रीराम ने पूछा कि क्या हुआ ?। ३५११

उऱ्ऱदु मुऴुदु नोक्कि यॊऴिवर् वुणर्वु ऴूऱ्च्
चॊऱ्ऱमन् शाम्बन् वीर ऩनुमऩैत् तॊडरप् पुल्लिप्
पॆऱ्ऱऩै ऩुऩ्ऩै यॆऩ्ऩै पॆऱादऩ पॆरियो यॊऩ्ऱुम्
मऱ्ऱिडै यूऱु शॆल्ला वायुळै यादि यॆऩ्ऱाऩ् 3512

उऱ्ऱदु मुऴुदुम्–बीता सारा; नोक्कि–मन में स्मरण करके; ऒऴिवु अऱ–विना कुछ छोड़े; उणर्वु उळ् ऊऱ–समझ में आवे ऐसा; चाम्पऩ् चॊऱ्ऱऩऩ्–जाम्बवान ने कहा; वीरऩ्–श्रीवीरराघव भी; अनुमऩै तॊटर पुल्लि–हनुमान का लगातार आलिंगन करके; उऩ्ऩै पॆऱ्ऱऩैऩ्–तुमको पाया है; पॆरियोय्–बड़े; पॆऱातऩ–न पाया; ऎऩ्ऩै–क्या ही; मऱ्ऱु–फिर; ऒऩ्ऱुम्–कुछ भी; इटैयूऱु चॆल्ला–बाधा जिसमें न हो; आयुळै–जीवन वाले; आति–बने रहो; ऎऩ्ऱाऩ्–आशीर्वाद दिया। ३५१२

जाम्बवान ने सारी बीती बातें क़ायदे से सोचकर विना किसी बात को छोड़े खूब समझाते हुए बतलायीं। तब श्रीवीरराघव ने हनुमान का लगातार आलिंगन किया और कहा कि सम्मान्य मारुति ! तुमको पाकर अब मुझे मिला क्या नहीं ? (सब प्राप्त हो गये।) फिर से कहता हूँ तुम अबाध जीवन के चिरंजीव बनो ! श्रीराम ने आशीर्वाद दिया। ३५१२

पुयल्पॊऴि यरुबिक् कण्णऩ् पॊरुमलऩ् बॊङ्गु हिऩ्ऱाऩ्
उयिर्पुऱत् तॊऴिय निऩ्ऱ वुडलऩ्ऩ वुरुवत् तम्बि
तुयर्तमक् कुदवि मीळात् तुऱक्कम्बोय् वन्द तॊल्लैत्
तयरदऱ् कण्डा लॊत्ताऩ् तम्मुनैत तॊऴुदु शार्वाऩ् 3513

पुयल् पॊऴि–मेघ-समान बरसानेवाली; अरुवि कण्णऩ्–अश्रुसरिता की आँखों वाले; पॊरुमलऩ्–भावातिरेक में जो रहे; पॊङ्कुकिऩ्ऱाऩ्–उमंग में आये हुए; उयिर् पुऱत्तु ऒऴिय–प्राणों के अलग रहते; निऩ्ऱ–अलग खड़े रहे; उटल् अऩ्ऩ–शरीर-सम जो रहे; उरुवम्–वे सुन्दर; तम्पि–कनिष्ठ भ्राता; तुयर्–दुःख; तमक्कु उतवि–उन्हें देकर; यीळा तुऱक्कम् पोय्–स्वर्ग जाकर; वन्त–जो लौटे; तॊल्लै–वृद्ध; तयरतऩ् कण्टाल्–दशरथ को देखा हो; ऒत्ताऩ्–जैसे बने; तम् मुनै–अपने ज्येष्ठ भ्राता को; तॊऴुतु–नमस्कार करके; चार्वाऩ्–पास गये। ३५१३

सुन्दर लघु भ्राता लक्ष्मण की आँखों से मेघों-से जैसे अश्रुधारा बह रही थी। आनन्द-विभोर थे और उमंग-भरे थे। प्राणों से पृथक् रहे शरीर के समान रहे वे श्रीराम को पास देखकर ऐसा आनंदित हुए मानो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन्हें दुःख देकर जो स्वर्ग सिधार गये थे, उन दशरथ को देख चुके हों। उन्होंने भाई के चरणों में नमस्कार किया। ३५१३

इळवलैत् तळुवि यैय विरवितऩ् कुलत्तुक् केऱ्ऱ
वळवित मडैन् दोर्क्काहि मऩ्ऩुयिर् कॊडुत्त वण्मैत्
तुळवियल् तॊङ्ग लाय्नी यऩ्ऩदु तुणिन्दा यॆऩ्ऱाल्
अळविय लऩ्ऱु शॆय्दऱ् कडुप्पदे याहु मऩ्ऱे 3514

इळवलै–छोटे भाई को; तळुवि–गले से लगाकर; ऐय–तात; अटैन्तोर्क्कु आकि–शरणागत के लिए; मऩ् उयिर्–स्थायी जीव को; कॊटुत्त–दया उस; वण्मै–उदारता के कारण; इरवि तऩ्–रवि के; कुलत्तुक्कु–कुल के; एऱ्ऱ–योग्य; वळवितम्–उदार-चरित्र बन गये; तुळवु इयल्–तुलसी की; तॊङ्कलाय्–माला-धारी; नी–तुमने; अऩ्ऩतु–वह कार्य; तुणिन्ताय्–दृढ़चित्त से किया; ऎऩ्ऱाल्–तो; अळवियल्–बड़ा काम; अऩ्ऱु–नहीं; चॆय्तऱ्कु अटुप्पते–करने के लिए आवश्यक; आकुम्–था। ३५१४

श्रीराम ने उन्हें गले से लगा लिया और कहा कि तात! शरणागत के लिए अपनी जान दी, इस उदार-कार्य से हम रविकुल के योग्य गुण वाले साबित हो गये! हे तुलसीमालाधारी! तुमने वह कार्य दृढ़ चित्त से किया तो इसको बड़ा अपार गौरव मत मानो! यह अवश्य कर्तव्य-काम ही था। ३५१४

पुऱवॊऩ्ऱिऩ् पॊरुट्टा याक्कै पुण्णुऱ वरिन्द पुत्तेळ्
अऱवऩ् मैय निऩ्ऩै निहर्क्किल नप्पाल् निऩ्ऱ
पिऱविऩै युरैप्प दॆऩ्ऩै पेररु ळाळ रॆऩ्बार्
कऱवैयुङ् गऩ्ऱु मॊप्पार् तमर्क्किडर् हाण्गि लॆऩ्ऱाऩ् 3515

ऒऩ्ऱु–एक; पुऱविऩ् पॊरुट्टा–कबूतर के निमित्त; याक्कै–शरीर को; पुण् उऱ–व्रण करते हुए; अरिन्त–जिन्होंने काटा; पुत्तेळ् अऱवऩुम्–धर्मात्मा (शिवि) और; ऐय–तात; निऩ्ऩै–तुम्हारी; निकर्क्किलऩ्–समता नहीं करेंगे; अप्पाल् निऩ्ऱ–परे जो हैं; पिऱविऩै उरैप्पतु–अन्य कार्यों का कहना; ऎऩ्ऩै–काहे के लिए; पेर् अरुळाळर् ऎऩ्पार्–कृपालु जो कहे जाते हैं; तमर्क्कु–अपने मनुष्यों का; इटर काण्किल्–दुःख देखें तो; कऱवैयुम् कऩ्ऱुम्–गाय और बछड़; ऒप्पार्–के समान बन जायँगे; ऎऩ्ऱाऩ्–बोले। ३५१५

तो भी एक कबूतर की जान बचाने के लिए जिन शिवि ने अपने शरीर को व्रणपूर्ण करते हुए काटके दिया था, वे भी तुम्हारी समानता नहीं कर सकेंगे। फिर उससे किसी अन्य कार्य की बात क्यों उठायी जाय? बड़े कृपालु कहलानेवाले लोग जब अपनों पर कोई संकट आया देखते हैं तब बछड़े की माता गाय के समान बन जाते हैं। ३५१५

शालिहै मुदल वाऩ पोर्प्परऩ् दाङ्गिऱ् ऱॆल्लाम्
नोल्निऱ नायि ऱऩ्ऩ नॆडियवऩ् मुऱैयि नीक्किक्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कोल्शॊरि तनुवुङ् गॊऱ्ऱ वनुमन्कै कॊडुत्तुक् कॊण्डल्
मेल्निऱै कुन्ऱ मॊन्ऱिन् मॆय्म्मॆलि वाऱ्ऱ लुऱ्ऱान् 3516

चालिकै मुतल आन-कवच आदि; पोर्-युद्ध के लिए; परम् ताङ्किऱ्ऱ ऎल्लाम्-जो भार ढोते रहे उन सबको; मुऱैयिन् नीक्कि-क्रम से उतारकर; नील् निऱ नायिऱु अन्न-नीलवर्ण के सूर्य के समान; नॆटियवन्-श्रीराम; कोल् चॊरि-शरवर्षी; तनुवुम्-कोदण्ड को; कॊऱ्ऱम्-और विजयी; अनुमन् कै कॊटुत्तु-हनुमान के हाथ में देकर; कॊण्टल् मेल्-मेघ जिस पर; निऱै-आश्रय पा रहा था; कुन्ऱम् ऒन्ऱिन्-एक पर्वत पर; मॆय् मॆलिवु-शरीर का श्रम; आऱ्ऱल् उऱ्ऱान्-दूर करने लगे। ३५१६

फिर श्रीराम ने कवच आदि युद्ध-भार-वस्तुएँ क्रम से उतारीं। नीलवर्ण सूर्य-सम उन्होंने शरवर्षी कोदण्ड को विजयी हनुमान के हाथ में दिया। फिर एक पर्वत पर विश्राम करने गये, जो मेघों का आश्रय बना रहता था। ३५१६

32. वानरर् कळङ्गाण् पडलम् (वानर-समरांगण-दर्शन पटल)

आयपिन् कवितन् वेन्ऱु मळप्परुन् दानै योडु
मेयिन निरामन् पादम् विदिमुऱै वणङ्गि वीन्द
तीयवर् पॆरुमै नोक्कि नडुक्कमुन दिहैप्पु मुऱ्ऱार्
ओय्वुऱु मनत्ता रॊन्ऱु मुणर्न्दिलर् नाण मुऱ्ऱार् 3517

आयपिन्-इस घटना के बाद; कवि तन् वेन्तुम्-कपिराज भी; अळप्पु अरु-अपार; तानैयोटुम्-सेना के साथ; इरामन् पातम्-श्रीराम के चरणों में; विति मुऱै-यथाविधि; वणङ्कि-प्रणमन करके; मेयितन्-पास आया; वीन्त-जो मरे उन; तीयवर् पॆरुमै-दुष्टों का गौरव; नोक्कि-देखकर; नटक्कमुम्-भय; तिकैप्पुम्-और चकितता; उऱ्ऱार्-पा गये; ओय्वु उऱु मनत्तार् ऒन्ऱुम् उणर्न्तिलर्-कुछ सोच नहीं सके; नाणम् उऱ्ऱार्-शर्मिन्दा हुए। ३५१७

इसके बाद कपिराज अपनी अपार सेना लेकर श्रीराम के पास आया और उनके चरणों में यथाविधि प्रणमन किया। मरे हुए दुष्ट राक्षसों की विपुलता देखकर उन्हें भय और विस्मय हुआ। शिथिलमन होकर वे लज्जित हुए। ३५१७

मूण्डॆऴु शेनै वॆळ्ळ मुलहॊरु मून्ऱु मुऱ्ऱि
नीण्डुळ वदनै यॆय वॆङ्कन निमिर्न्द वॆन्ऱान्
दूण्डिरण् डनैय दिण्डोट् चूरियन् शिऱुवन् शॊल्लक्
काण्डिनो यरक्कर् वेन्दन् रन्नॊडुङ् गळत्तै यॆन्ऱान् 3518

तूण् तिरण्टनैय-खम्भे के समान पृथुल; तिण् तोळ्-सुदृढ़ कंधों वाले; चूरियन् चिऱुपन्-सूर्य के पुत्र ने; मूण्टु ऎऴु-तत्पर हो उठा; चेनै वॆळ्ळम्-सेना का प्रवाह; उलकु ऒरु मून्ऱुम् तीनों लोकों में; मुऱ्ऱि-भरकर; नीण्टु उळ-उनसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भी आगे फैला है; ऐय-प्रभु; अतत्तै-उसके; अँङ्ङतम्-कैसे; निमिर्न्ततु-पार हुए; अँन्ऱ्ऱान्-पूछा; चॉल्ल-पूछने पर; अरक्कर् वेन्तत् तन्तॉट्टुम्-राक्षस राजा के साथ; नी कळत्तै काण्टि-तुम मैदान का संदर्शन करो; अँन्ऱ्ऱान्-कहा (श्रीराम ने)। ३५१८

खम्भे के समान पुष्ट स्थूल कंधों वाले सूर्यसूनु ने श्रीराम से पूछा कि हे प्रभु ! युद्धतत्पर राक्षस-सेना तीनों लोकों में व्याप्त होकर बाहर भी चली थी। आपने उसे पार पाया सो कैसे ? तब श्रीराम ने कहा कि चलो ! राक्षसराज को साथ लेकर युद्धस्थल को देख आओ। ३५१८

तॉळुदत्तर् तलैव रॅल्लान् दोन्ऱ्ऱिय काद ऱूण्ड
अॅळुहॅन्न विरैविर् चॅन्ऱा रिरावणऱ् किळव लोडुङ्
कळुहॉडु परुन्दुम् बाऱुम् बेय्हळुङ् गणङ्गण् मऱ्ऱुङ्
गुळुविय कळत्तैक् कण्णि नोक्किन्तर् दुणुक्कङ् गॉण्डार् 3519

तलैवर् अॅल्लाम्-सभी यूथपों ने; तॉळुततर्-वन्दना की; तोन्ऱ्ऱिय कातल्-उठी इच्छा की; तूण्ट-प्रेरणा से; इरावणऱ्कु इळवलोट्टुम्-रावण के कनिष्ठ भ्राता के साथ; अॅळुक अॅन्न-उठो कहकर; विरैविल्-जल्दी; चॅन्ऱार्-गये; कळुकॉट्टु-गीधों के साथ; परुन्तुम्-बाज और; पाऱुम्-चील; पेय्कळुम्-और भूत; मऱ्ऱुम्-और अन्य; कणङ्कळुम्-गण; कुळुविय कळत्तै-जहाँ भीड़ों में थे उस युद्धस्थल को; कण्णिन्-तोक्किन्तर्-आँखों से देखकर; तुणुक्कम् कॉण्टार्-भयभीत हुए। ३५१९

यूथपों ने श्रीराम का नमस्कार किया। इच्छा उकसाती रही तो उठो कहकर उठे और रावण के छोटे भाई विभीषण के साथ उस युद्धस्थल को जाकर देखा, जहाँ बाज, गीध, चील, भूत और अन्य जीव भीड़ लगाये घूम रहे थे। उन्हें भय लगा। ३५१९

एङ्गिन्नार् नडुक्क मुऱ्ऱा रिरैत्तिरैत् तुळ्ळ मेऱ
वीङ्गिन्नार् वॅरुव लुऱ्ऱार् विम्मिन्ना रुळ्ळम् वॅम्ब
ओङ्गिन्नार् मॅळ्ळ मॅळ्ळ वुयिर्निलैत तुवहै यून्ऱ
आङ्गव रुऱ्ऱ तन्मै यार्हॉलो पहरऱ् पालार् 3520

एङ्किन्तार्-व्यग्र हुए; नडुक्कमुऱ्ऱाम्-कांपे; इरैत्तु इरैत्तु-लगातार हल्ला मचाकर; उळ्ळम् एऱ-मन में भय के बढ़ने से; वीङ्किन्तार्-फूले; वॅरुवल् उऱ्ऱार्-(भय प्रकट करनेवाले शब्द) बकने लगे; उळ्ळम् वॅम्प-मन तप्त हुआ तो; विम्मिन्तार्-सिसके; मॅळ्ळ मॅळ्ळ-धीरे-धीरे; उयिर् निलैत्तु-प्राण स्थिर हुए; उवकै ऊन्ऱ-संतोष स्थिर हुआ; ओङ्किन्तार्-सिर ऊँचा किया; आङ्कु-तब; अवर् उऱ्ऱ तन्मै-उनका जो हाल हुआ; यार् कॉलो-वह कौन हो; पकरऱ् पालार्-वर्णन कर सकेंगे। ३५२०

उनका विचित्र हाल हुआ। पहले व्यग्र हुए, काँपे। निरंतर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हल्ला मचाया। भय अधिक बढ़ा तो फूल गये। बकने लगे। मन तप्त हुआ तो सिसके। फिर धीरे-धीरे प्राण स्थिर हुए तो आनन्द उमँग आया। तब वे सिर उन्नत किये खड़े रहे। तब उनकी जो स्थिति हुई रही उसका वर्णन कौन ही कर सकता है? (कोई नहीं।)। ३५२०

आयिरम् परुवङ् गण्डुङ् गाट्चिक्कोर् करैयिऱ् ऱन्ऱाल्
मेयिऩ तुऱैह डोऱुम् विस्मिऩार् निऱ्प दल्लाल्
पाय्दिरैप् परवै येऴुङ् गाण्गुऱुम् बदह रॆऩ्ऩ
नीयिरुन् दुरैत्ति यॆऩ्ऱार् वीडण ऩॆऱियिऱ् चॊल्वान् 3521

पाय् तिरै–झपटनेवाली तरंगों के; परवै एऴुम् ऍऩ्ऩ–सात समुद्रों के समान; काण्कुऱुम्–दिखनेवाले; पतकर्–पातक; मेयिऩ–जहाँ-जहाँ रहे उन; तुऱैकळ् तोऱुम्–सभी स्थलों में; विम्मिऩार्–सिसकते; निऱ्पतु अल्लाल्–खड़े रहने के सिवा; आयिरम् परुवम् कण्टुम्–हजार साल देखें तो भी; काट्चिक्कु–देखने के लिए; ओर् करैयिऱ्ऱ अऩ्ऱु–कोई सीमा वाला नहीं; नी–तुम; इरुन्तु–सावधानी से; उरैत्ति–कहो; ऍऩ्ऱार्–कहा वानरों ने; वीटणऩ्–विभीषण ने; ऩॆऱियिल् चॊल्वाऩ्–क्रम से बखाना। ३५२१

उछलकर चलनेवाली तरंगों से पूर्ण सातों समुद्र सम्मिलित हों, ऐसे दिखनेवाले पातक राक्षस जहाँ-जहाँ रहे उन स्थलों को देखने पर वानर सिसककर खड़े रह जाने के सिवाय पूर्ण रूप से देख लें, यह हजार साल में भी सम्भव नहीं लगता था। अतः वानरों ने विभीषण से कहा कि तुम ही इसका विवरण बता दो। विभीषण ने क्रम से कहना शुरू किया। ३५२१

काहप् पन्दर्च् चॆङ्गळ मॆङ्गुऴ् जॆऱिकाल
वेहत् तम्बिऱ् पॊऩ्ऱिऩ वेनु मुडलॊऩ्ऱि
मेहच् चङ्गन् दॊक्कऩ वीऴुम् वॆळियिऩ्ऱि
नाहक् कुन्ऱम् निन्ऱऩ काण्मिन् नमरङ्गाळ 3522

नमरङ्काळ्–हे हमारे लोगो; काकम् पन्तर्–कौओं के वितान के नीचे; चॆ कळम् ऍङ्कुम्–(रक्त से) लाल समरांगन में; चॆऱि–घने; कालम् वेकत्तु अम्पिल्–यम-सम वेगवान अस्त्र से; पॊऩ्ऱिऩ एऩुम्–मरे पड़े हैं तो भी; उटल् ऒऩ्ऱि–शरीरों के मिले रहने से; मेकम् चङ्कम्–मेघसमूह; तॊक्कऩ वीऴुम्–मिलकर जहाँ रहते हैं; नाकम् कुन्ऱम्–हाथियों से भरे पर्वत; वॆळियिऩ्ऱि–बिना खाली स्थान के; निन्ऱऩ काण्मिन्–खड़े हैं, देखो। ३५२२

हे हमारे लोगो! कौओं के वितान के नीचे रक्त के कारण लाल दिखनेवाले युद्धस्थल में श्रीराम के यम के समान अस्त्रों से आहत होकर हाथी मरे पड़े हैं। उनके शरीर सटे रहते हैं। वे उन पर्वतों के समान दिखते हैं जिन पर मेघ आश्रय पाते हैं। देखो। ३५२२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆन्ऱिच् चॆङ्गण् वॆम्मै यरक्कर् विशैयूर्व
ऒन्ऱिऱ् कॊन्ऱुऱ् ऱम्बु तलैप्पट् टुयिर्नुङ्गप्
पॊन्ऱिच् चिङ्ग नाह वडुक्कल् पॊलिहिन्ऱ
कुन्ऱिऱ् ऱुञ्जुन् दन्मै निहर्क्कुङ् गऱिकाणीर् 3523

वॆन्ऱि–(पहले) विजयी; चॆ कण्–लाल आँखों वाले; वॆम्मै अरक्कर्–क्रूर राक्षस; विचै ऊर्व–सवेग जानेवाले; ऒन्ऱिऱ्कु ऒन्ऱु उऱु–परस्पर आगे जानेवाले; अम्पु–रामबाणों ने; तलैप्पट्टु–उन पर लगकर; उयिर् नुङ्क–प्राण खाये, इसलिए; पॊन्ऱि–मरकर; नाकम् अट्क्कल्–सर्प-समेत पास की उपगिरियों के साथ; पॊलिकिन्ऱ–जो शोभायमान है; कुन्ऱिल्–उस पर्वत में; तुञ्चुम्–जो सोता है; चिङ्कम् तन्मै–उस सिंह के स्वभाव से तुल्य; निकर्क्कुम् कुऱि काणीर–स्वभाव देखो। ३५२३

उन अरुणाक्ष क्रूर राक्षसों को देखो जो पहले विजयी ही रहे हैं। श्रीराम के परस्पर होड़ लगाकर आगे चलनेवाले वेगवान अस्त्रों के उनके प्राणों को सोख देने से वे मरे पड़े हैं। वे ऐसे सोते हुए शेरों के समान दिखते हैं, जो नागों से पूर्ण उपगिरियों के साथ रहनेवाले पर्वत में सोते हों। वैसे लक्षणों से युक्त उन्हें देखो। ३५२३

अळियिऱ् पॊङ्गु मङ्गण ऩेवु मयिल्वाळिक्
कळियिऱ् पट्टार् वाण्मुह मिऩ्ऩुङ् गरैयिल्लाप्
पुळिऩत् तिट्टिऱ् कण्णहऩ् वारिक् कडल्पूत्त
नळिऩक् काडे यॊप्पऩ काण्मिऩ् ऩमरङ्गाळ् 3524

नमरङ्काळ्–हमारे लोगो; अळियिल् पॊङ्कुम्–दया-भरे; अम् कणऩ्–सुन्दराक्ष; एवुम्–द्वारा प्रेरित; अयिल् वाळि–तीक्ष्ण शर; कळियिल् पट्टार्–खुशी से जो मरे उनके; वाळ् मुकम्–उज्ज्वल मुख; मिऩ्ऩुम्–जहाँ चमकते हैं; करै इल्ला–उन अपार; पुळिऩम् तिट्टिऩ्–बालू के टीलों से युक्त; कण् अकल्–विशाल; वारि–जल के; कटल् पूत्त–समुद्र में खिले; नळिऩम् काटे ऒप्पऩ–कमलवन ही के समान दिखते; काण्मिऩ्–देखो। ३५२४

हे बंधुजनो! दयालु श्रीराम द्वारा प्रेरित अस्त्रों से आहत होकर भी जो खुशी से मरे उनके उज्ज्वल मुख अपार चमकीले पुलिनों से युक्त जल-सागर पर खिले कमलों के समान दिखते हैं। देखो। ३५२४

पूवाय् वाळिच् चॆल्लॆऱि कालैप् परिपॊन्ऱक्
कोवार् विण्वाय् वॆण्गॊडि तिण्पा यॊडुकूड
मावार् तिण्डेर् मण्डुव लाऩीर् मऱिवेलै
नावाय् माऩच् चॆल्वऩ काण्मिऩ् ऩमरङ्गाळ् 3525

नमरङ्काळ्–बंधुजनो; को आर्–अतिश्रेष्ठ; विण्वाय्–गगनस्पर्शी; वॆळ् कॊटि–श्वेत ध्वजा वाले; मा आर्–अश्व-जुते; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथ; पू

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाय्–तीक्ष्णमुखी; वाळि–शर रूपी; चॅल् ऍऱि कालै–अशनि जब फटी; परि पॊन्ऱ–(रस्सी से बँधे) अश्व मर गिरे; मण्टुतलाल्–विपुल परिमाण में चले; नीर् मऱि वेलै–(अतः) जलतरंगें जहाँ टकराकर मुड़ती हैं उस समुद्र में; तिण् पायॊटु कूट–मजबूत पाल के साथ; नावाय् मान–नौकाओं के समान; चॅल्वन–जाते; काण्मिन्–देखो। ३५२५

हे बंधुओ ! जब श्रेष्ठ, गगनस्पर्शी ध्वजाओं से अलंकृत व अश्वों से जुते रथों पर रामबाण अशनियों के समान गिरे, तब अश्व मरे। वे रथ रक्त में बहकर समुद्र में गये हैं। वे टकराती तरंगों के सागर पर पालों-सहित नौकाओं के समान दिखते हैं। देखो। ३५२५

ऒऴुहिप् पायु मुम्मद वेऴ मुयिरोडुम्
ऍऴुहिऱ् किल्लाच् चॆम्बुनल् वॆळ्ळत् तिडैयिऱ्ऱ
पऴहिऱ् ऱल्लाप् पः(ह्)ऱिरै तूङ्गुम् बडर्वेलै
मुऴुहित् तोन्ऱु मीनर शॊक्कुम् मुऱैनोक्कीर् 3526

ऒऴुकि पायुम्–स्रव कर बहनेवाले; मुम्मतम् वेऴम्–त्रिमद के हाथी; उयिरोटुम्–जीवंत हैं तो भी; ऍऴुकिऱ्किल्ला–उठ नहीं पाते; चॆम् पुनल् वॆळ्ळत्तु इटै–लाल जल (रक्त) के प्रवाह-मध्य; इऱ्ऱ–फँसकर मरे; पऴकिऱ्ऱु अल्ला–अपरिचित; पल् तिरै तूङ्कुम्–अनेक तरंगें जिस पर उठती-गिरती उस; पटर् वेलै–विशाल सागर में; मुऴुकि तोन्ऱुम्–डूबते-उतराते; मीन् अरचु–मत्स्यराज के; ऒक्कुम् मुऱै–समान दिखने का प्रकार; नोक्कीर्–देखो। ३५२६

त्रिविध (कपाल, गाल और बीज का) मद बहानेवाले हाथी शिथिल पड़े, जीवित रहने पर भी उठ नहीं पाये। इसलिए रक्त-प्रवाह में फँस गये। वे अपरिचित, टकराती-मुड़ती तरंगों वाले विशाल सागर में डूबते-उतराते मत्स्यराज के समान लगते हैं। देखो। ३५२६

कडक्का रॆन्नप् पॊङ्गु कवन्दत् तॊडुकैहळ्
तॊडक्का निऱ्कुम् बेयिल यत्तित्तु ऱॊऴिल्पण्णि
मडक्को विल्ला वार्कडि मक्कूत् तमैविप्पान्
नडक्काल् हाट्टुङ् गण्णुळ रॊक्कुन् नमरङ्गाळ् 3527

नमरङ्काळ्–बंधुजनो; कटम् कार् ऍन्नत–शरीर मेघ के समान हैं; पॊङ्कु–उमंग के साथ उठनेवाले; कवन्तत्तॊटु–कबंधों के साथ; कैकळ्–हाथ; तॊडक्का निऱ्कुम्–लगाये जो रहे; पेय्–वे भूत; इलयत्तित्तु तॊऴिल् पण्णि–लयकार्य करके मटक्कु ओवु इल्ला–बिना मोड़ के; वार् पटिमम् कूत्तु–लम्बी प्रतिमा-नाच को; अमैविप्पान्–रचने को; नटम् काल् नाट्टुम्–नृत्य-चरण-मुद्रा बनानेवाले; कण्णुळर् ऒक्कुम्–नृत्याचार्य के समान दिखते। ३५२७

हे हमजनो ! मेघ-सम शरीरों के साथ कबंध उठते हैं। भूत उन पर हाथ डाले लयसहित नृत्य-मुद्रा में खड़े हैं। वे नृत्याचार्य के समान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लगते हैं, जो अपने शिष्यों को अभंग प्रतिमा नृत्य की मुद्रा दिखाने के लिए चरणभंगिमा दिखाते हों। ३५२७

मऴुविऱ् कूर्वाय् वऩ्ब लिडुक्किऩ् वयवीरर्
कुऴुविऱ् कॊण्डार् नाडि तॊडक्कप् पॊऱिकूट्टत्
तऴुविक् कॊळ्ळक् कळ्ळ मऩप्पे यवैतळ्ळि
नऴुविच् चॆल्लु मियल्बिऩ काण्मिऩ् ऩमरङ्गाळ् 3528

नमरङ्काळ्–बंधुजनो; वाय्–मुख में; मऴुविल् कूर् वऩ्–परशु से भी तीक्ष्ण; पल्–दाँतों के और; इटुक्कु इल्–सुदृढ़; वयम् वीरर्–विजयी वीर; कुऴुविल् कॊण्टार्–दलबद्ध (उनकी); नाटि––नसें; तॊटक्कम्–बाँधनेवाले; पॊऱि–यन्त्र के समान; कूट्ट–फँसाकर; तऴुवि कॊळ्ळ–लपेटे रहे तो; कळ्ळम् मऩम् पेय्–वंचक-मन भूत; अवै तळ्ळि–उनको दूर ढकेलकर; नऴुवि चॆल्लुम्–फिसल जाने के; इयल्पिऩ–स्वभाव वाले को; काण्मिऩ्–देखो। ३५२८

बंधुजनो ! उन विजयी वीरों को देखो, जिनके मुख में परशु के जैसे तीक्ष्ण दाँत हैं ! भीड़ में पड़े रहते उनकी नसें निकली हैं और यंत्र के समान फँसाने के प्रयास में भूतों को लपेट लेती हैं। पर वे वंचक मन वाले भूत उनको हटाकर किसी विध पकड़ से फिसल जाते हैं। देखो। ३५२८

पॊऩ्ऩिऩ् ऩोडै मिऩ्पिऱऴ् ऩॆऱ्ऱिप् पुहर्वेऴम्
पिऩ्ऩुम् मुऩ्ऩुम् मारिऩ वीऴ्विऱ् पिणैयुऱ्ऱ
तऩ्ऩिऩ् ऩेरा मॆय्यिरु पालुऩ् दलैपॆऱ्ऱ्
ऎऩ्ऩुऩ् दऩ्मैक् केय्वऩ पल्वे ऱिवैकाणीर् 3529

पॊऩ्ऩिऩ् ओटै–स्वर्णमुखपट्ट की; मिऩ् पिऱऴ्–छवि से शोभित; ऩॆऱ्ऱि–भाल पर; पुकर्–लाल बिंदियों से युक्त; वेऴम्–दो हाथी; वीऴ्विल्–जब (मरकर) गिरे; पिऩ्ऩुम् मुऩ्ऩुम् मारिऩ–आगे-पीछे मुड़कर; पिणै उऱ्ऱ–बद्ध हो गये; तऩ्ऩिऩ् ऩेरा–परस्पर सम; मॆय् इरु पालुम्–शरीर के दोनों तरफ़; तलै पॆऱ्ऱ–सिर प्राप्त (विचित्र जानवर); ऎऩ्ऩुम् तऩ्मैक्कु–कहलाने योग्य; ऐय्वऩ–जो रहते हैं; पल्वेऱु–विविध; इवै काणीर्–इनको देखो। ३५२९

मुखपट्टशोभित भाल पर लाल बिंदिया लिये हाथी जब गिरे तब आपस में गुँथकर बेतरह गिरे हैं। ऐसी विचित्र दशा में गिरे हैं कि लगता है शरीर के दोनों तरफ़ सिर लगे हों। ऐसे अनेक पड़े हैं। देखो। ३५२९

नामत् तिण्पोर् मुऱ्ऱिय कोबऩ् नहैनाऱुम्
पामत् तॊऩ्ऩी रऩ्ऩ निऱ्ऱत्तोर् पहुवाय्हळ्
तूमत् तोडुम् वॆङ्गऩ लिऩ्ऩुऩ् जुडर्हिऩ्ऱ
ओमक् कुण्ड मॊप्पऩ पल्वे ऱिवैकाणीर् 3530

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नामम्–डरावने; तिण् पोर्–कठोर युद्ध में; मुऱ्ऱिय कोपम्–बढ़ा-चढ़ा कोप; नकै नाऴम्–हँसी में प्रकट; पाम्–विस्तृत; अ–उस; तोल् नीर् अऩ्ऩ–प्राचीन जल-भरे समुद्र के समान; निऱत्तु–रंग वाले; ओर्–अपूर्व; पकु वाय्कळ्–विभक्त मुख; तूमत्तोटुम्–धुएँ के साथ; वेम् कनल्–भयंकर आग; इऩ्ऩुम् चुटर्किऩ्ऱ–जिनमें अब भी जलती है उन; ओमम् कुण्टम् ऒप्पऩ–होमकुंडों के समान हैं; पल् बेऱु–विविध अनेक; इवै काणीर्–ये देखो। ३५३०

अतिभयंकर व कठोर युद्ध में निपट क्रोध और हास से भरे, पुरातन जलपूर्ण सागर के समान रंग के और फटे से खुले राक्षसों के मुखों को देखो जो धुएँ और जलती दारुण अग्नि के साथ रहते होमकुंडों के समान दिखते हैं। ३५३०

मिऩ्ऩुम् मोडै याडल् वयप्पोर् मिडल्वेळ्क्
कऩ्ऩम् मूलत् तऱ्ऱऩ वॆण्चा मरैकाणीर्
मऩ्ऩुम् मानीर्त् तामरै मानुम् वदऩत्त
अऩ्ऩम् मॆल्लत् तुञ्जुव वॊक्कुम् मवैहाणीर् 3531

मिऩ्ऩुम्–ज्वलन्त; ओटै–मुखपट्ट; आटल्–और नृत्यशील; वयम् पोर्–विजयी युद्ध में; मिटल्–बल दिखाते जो रहे; वेळ्म्–हाथियों के; कऩ्ऩम् मूलत्तु–कर्णमूल से; अऱ्ऱऩ–निकले दिखनेवाले; वॆण् चामरै–श्वेत चँवर; काणीर्–देखो; मऩ्ऩुम्–नित्य; मा नीर्–बहुत जल में; तामरै मानुम्–कमलपुष्प-सदृश; वतऩत्तु–वदनों पर लगे; अवै–वे चँवर; अऩ्ऩम्–हंस; मॆल्ल–धीरे से; तुञ्चुव ऒक्कुम्–सोते जैसे लगते हैं। ३५३१

चमकदार मुखपट्ट से अलंकृत, नृत्यशील उन हाथियों के, जिहोंने कठोर युद्ध में अपना बल दिखाया था, कनपटी से गिरे हुए चामरों को देखो। श्रेष्ठ जल में के खिले कमलों के समान लगनेवाले वीरों के मुखों पर पड़े रहते वे चामर धीरे से सोते हंसों के समान लगते हैं, देखो। ३५२१

ओळिऩ् मुऱ्ऱा दुऱ्ऱुयर् वेळत् तॊळिर्वॆणगो
डाळिऩ् मुऱ्ऱाच् चॆम्बुऩल् वॆळ्ळत् तवैहाणीर्
कोळिऩ् मुऱ्ऱाच् चॆक्करिऩ् मेहक् कुळुविऩ्गण्
नाळिऩ् मुऱ्ऱा वॆण्बिऱै पोलुन् नमरङ्गाळ् 3532

नमरङ्काळ्–साथियो; ओळिऩ्–श्रेणियों में; मुऱ्ऱातु–बिना घेरे; उऱ्ऱ उयर्–(अलग-अलग) आक्रमण करके जो बढ़े; वेळत्तु–उन गजों के; ऒळिर् वॆण् कोटु–सुन्दर श्वेत दाँत; आळिऩ् मुऱ्ऱा–वीरों से न भरे; चॆम् पुऩल् वॆळ्ळत्तवै–रक्त-प्रवाह में जो देखे गये; कोळिऩ्–जल से; मुऱ्ऱा–न भरा; चॆक्करिऩ्–लाल रंग के; मेकम् कुळुविऩ् कण्–मेघ-समूह-मध्य; नाळिऩ् मुऱ्ऱा–जिसके दिन नहीं बढ़े थे; वॆण् पिऱै पोलुम्–उस बालचन्द्र के समान थे। ३५३२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्ऱु काणिनुङ् गाट्टिनु मीदिऱैक्, कुन्ऱु काणिनुङ् गोळिल दादलाल्
निन्ऱु काणुदु नेमियि न्नानुळैच्, चॅन्ऱु काण्डुमॅन् ऱेहिन्तर् शॅव्वियोर् 3551

ऍन्ऱु–ऐसा; काणिनुम्–हम स्वयं देखें या; काट्टिनुम्–तुम दिखाओ तो भी; ईतु–यह (मूलबल); कुन्ऱु इऱै–नगाधिराज (हिमालय) को; काणिनुम्–देखा जा सकता है; कोळ् इलतु–(देखने में) आ जाय ऐसा नहीं; आतलाल्–इसलिए; निन्ऱु काणुतुम्–रुककर (पीछे) देख लेंगे; नेमियिन्नान् उळै–चक्रधारी के पास; चॅन्ऱु–जाकर; काण्टुम्–उनके दर्शन कर लें; ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; चॅव्वियोर्–सीधे-सादे वानर; एकिन्तर्–गये। ३५५१

वानरों ने कहा कि चाहे हम ही स्वयं देख लें या तुम्हारे दिखाते, नगाधिराज को देखा जा सके तो देखा जाय, पर, यह मूलबल पूर्ण रूप से देखा जाय ऐसा नहीं लगता। इसलिए पीछे सावधानी से देख लें। अब चक्रधर श्रीराम के पास जाकर उनसे मिलें। वे सीधे-सादे वीर चले। ३५५१

आरि यऱ्ऱॊळु दाङ्गवन् बाङ्गरुम् पोरि यऱ्कै निनैन्दॆळु पॊम्मलार्
पेरु यिर्प्पॊ डिरुन्दनर् पिन्बुऱु, कारि यत्ति निलैमै करुदुवार् 3552

आरियन्–आर्य श्रीराम को; तॊळुतु–वंदना करके; आङ्कु–वहाँ; अवन् पाङ्कु–उनके (पास); अरु–श्रेष्ठ; पोर् इयऱ्कै–युद्धतन्त्र; निनैन्तु–जानकर; ऍळु पॊम्मलार्–उठते अनुतापवाले; पेर् उयिर्प्पॊटु–बड़े निःश्वास छोड़ते; इरुन्ततर्–रहे; पिन्पु उऱु–आगे होनेवाले; कारियत्तिन् निलैमै–कार्य की गति; करुतुवार्–सोचने लगे। ३५५२

वे आर्य श्रीराम के पास गये। उनको, श्रीराम के युद्ध-परिश्रम का खयाल करके अपार दुःख हुआ। बड़े निःश्वास छोड़ते हुए आगे के कार्य की गतिविधि सोचते रहे। ३५५२

33. इरावणन् कळङ्गाण् पडलम् (रावण-युद्धस्थल-संदर्शन पटल)

अलक्क ऩॅय्दि यमर रऴिन्दिड, उलक्क वानर वीररै योट्टियव्
विलक्कु वन्ऱनै वीट्टि यिरावणन्, तुलक्क मॅय्दिनन् दोमिल् कऴिप्पिनै 3553

अमरर्–देवों को; अलक्कण् ऍय्ति–दुःखी होकर; अऴिन्तिट–क्षीण बनाकर; वानर वीररै–वानर वीरों को; उलक्क–निर्बल हो; ओट्टि–भाग जाने को मजबूर करके; अव् इलक्कुवन् तनै–उन लक्ष्मण को; वीट्टि–मारकर; तोम् इल्–अनिंद्य; कऴिप्पिनै–आनन्द से; इरावणन्–रावण; तुलक्कम् ऍय्तिनन्–प्रसन्नचित्त रहा। ३५५३

रावण देवों को दुःखी और अस्त-व्यस्त करके वानरों को बलहीन बनाकर भगा चुका था। फिर लक्ष्मण को मार चुका था। स्वाभाविक था कि वह एक अनिंद्य आनन्द से भर गया और वह प्रसन्नचित्त रहा। ३५५३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊरुन्दु पोर्प्पॆरुङ् गोलत्तिऱ् पोर्त्तॊऴिल्
वरुन्दि नर्क्कुत्त मन्बिनिन् वन्दवर्
अरुन्दु दऱ्कमै वायित्त वाक्कुवान्
विरुन्द मैक्क मिहुहिन्ऱ वेट्कैयान् 3554

तम् अत्पिनिन् वन्तवर्क्कु–उस पर प्रेम के कारण आकर; पॊरुन्तु–युक्त; पॆरुम् पोर् कोलत्तिल्–बड़े युद्धवेश में; पोर् तॊऴिल्–युद्ध-कार्य में; वरुन्तिनर्क्कु–जो दुःखी हुए थे उन्हें; अरुन्तुतऱ्कु अमैवु आयित्त–भोज देने योग्य; आक्कुवान्–(पदार्थ) बनाकर; विरुन्तु अमैक्क–दावत देने की; मिकुकिन्ऱ–बढ़ती; वेट्कैयान्–इच्छा का हुआ। ३५५४

उसके मन में तीव्र इच्छा पैदा हुई कि मैं अपने प्रति प्रेम के कारण युक्त योद्धावेश में जो आये थे और लड़ाई में संकट भोग चुके थे उन्हें एक दावत दूँ और भोग्य पदार्थ खिलाऊँ। ३५५४

वान्त नाट्टै वरुहॆन्त वल्विरैन्
देन्तै नाट्टव रोडुम्वन् दॆय्दिनार्
आन्त नाट्टन्द पोह् ममैत्तीर्मर्
रून्त नाट्टि निऴत्ति रुयिरॆन्ऱान् 3555

वानम् नाट्टै–व्योमलोकवासियों को; वल् विरैन्तु–बहुत शीघ्र; वरुक ऎन्त–आओ कहने पर; एन्तै नाट्टवरोटुम्–अन्य लोकों के जनों के साथ; वन्तु ऎय्तिनार्–आ पहुँचे; अन्त नाट्टु आन्त पोकम्–उस लोक का भोज; अमैत्तीर्–बना लो; मऱ्ऱ–विपरीत; ऊनम् नाट्टिन्–कमी दिखाओ तो; उयिर् इऴत्तिर्–प्राण गँवाओगे; ऎन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ३५५५

उसने देवलोकवासियों को 'आओ जल्दी' कहकर बुलाया। वे अन्य लोकों के लोगों के साथ आये। रावण ने आज्ञा दी कि आपके लोक में जैसा भोज बनता है, वैसा यहाँ भी प्रबंध करा दो। उसने चेतावनी दी कि अगर कुछ दोष रह गया तो सिर गँवाओगे। ३५५५

नऱवु मूनु नवैयऱ नल्लन, पिऱवु माडैयुञ् जान्दमुम् बॆय्म्मलर्त्
तिऱमु नानप् पुनलॊडु शेक्कैयुम्, पुऱमु मुऴ्ऴुम् निऱैयप् पुहुन्दवाल् 3556

नल्लत–अच्छे; नऱवुम् ऊनुन्–मद्य और मांस; पिऱवुम्–और अन्य; आटैयुम्–और वस्त्र; चान्तमुम्–चंदन; पॆय् मलर् तिऱमुम्–बरसाये गये फूलों के प्रकार; नानम् पुनलॊटु–और स्नान योग्य जल के साथ; चेक्कैयुम्–शय्या सब; पुऱमुम् उऴ्ऴुम्–बाहर और भीतर; निऱैय–भरपूर; नवैयऱ–बिना किसी त्रुटि के; पुकुन्त–आ पहुँचे। ३५५६

श्रेष्ठ मांस, मद्य, अन्य खाद्य पदार्थ, वस्त्र, चंदन, बरसाने की तरह तरह के फूल, स्नान योग्य जल, शय्या —सारे पदार्थ बाहर और भीतर, सर्वत्र भरपूर आ गये और कहीं कोई कमी नहीं पायी गयी। ३५५६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नात नॅय्नन् गुरैत्तु नऱुम्बुनल्, आत कोदऱ वाट्टि यमुदॊडुम्
बात मूट्टिच् चयनम् बरप्पवुम्, वात नाडिय रियावरुम् वन्दनर् 3557

नातम् नॅय्–स्नान-तेल को; नन्कु उरैत्तु–खूब मलकर; नऱुम् पुनल्–सुबासित जल से; आत–शरीर पर लगे; कोतु अऱ–मैल को दूर करके; आट्टि–नहलाकर; अमुतॊटुम्–भोज-पदार्थों के साथ; पातम् ऊट्टि–पान कराकर; चयनम् परप्पवुम्–शय्या बिछाने; वात नाटियर् यावरुम्–व्योमवासिनियाँ, सभी; वन्तनर्–आयीं। ३५५७

फिर व्योमवासिनी अप्सरायें आयीं— स्नान-तेल खूब मलकर सुबासित जल में शरीर के मैल को दूर करते हुए स्नान कराने, खाने के साथ पान कराने, और शय्या बिछाने के निमित्त। ३५५७

पाडु वार्हळ् पयिल्नडम् बावहत्, ताडु वार्ह ळमळियि लन्बुऱक्
कूडु वार्हण् मुदलुङ् गुऱैवऱन्, देडि नारॅनप् पण्णैयिऱ् चेर्न्दवाल् 3558

पाटुवार्कळ्–गातीं; पयिल् नटम्–अभ्यस्त नृत्य; पावकत्तु आटुवार्कळ्–भावप्रदर्शन के साथ दिखातीं; अमळियिल्–पलंग पर; अन्पु उऱ–राग के साथ; कूटुवार्कळ्–संगम करतीं; मुतलुम् कुऱैवु अऱ–पूंजी भी कम न हो ऐसा; तेटिनार् अॅन–संपत्ति जिन्होंने अर्जन की थी, उनको जैसे; पण्णैयिल्–उस रमणीवृन्द में; चेर्न्त–अनेक भोग मिले। ३५५८

कुछ अप्सरायें गातीं! कुछ अभ्यस्त नृत्य भावप्रदर्शन के साथ खूब करतीं। कुछ पलंग में राग के साथ संगम करतीं। उस रमणी-वृन्द में उन वीरों को वैसे भोग मिले, जो उन लोगों को मिलता है जिनके पास उतनी पूंजी जमा हो जितनी के लाभ से ही सारा भोग मिल सकता है और पूंजी को छूने की आवश्यकता नहीं पड़ती। (यानी बड़े भाग्यवानों को जो मिलता है वह आनंदभोग मिला)। ३५५८

अरश रादि यडियव रन्दमा, वरैशॅय् मेनि यिराक्कदर् वन्दुळार्
विरैवि निन्दिर पोहम् विळैवुऱक्, करैयि लाद पॅरुवळङ् गण्णिनार् 3559

अरचर् आति–राजा से लेकर; अटियवर् अन्तमा–दासों तक; वन्तुळार्–जो आये थे; वरै चॅय् मेनि–वे पर्वतोपम शरीरी; इराक्कतर्–राक्षस; विरैवित्–अति शीघ्र; इन्तिर पोकम्–इन्द्रभोग; विळैवु उऱ–प्राप्त होने से; करै इलात–अपार; पॅरु वळम्–उस बड़े भोग में; कण्णिनार्–दत्तचित्त रहे। ३५५९

राजा से लेकर दास तक जितने आये थे, उन पर्वतोपम शरीरी राक्षसों को इन्द्रभोग बहुत शीघ्र प्राप्त हो गया और वे अपार रूप से खूब भोग में लग गये। ३५५९

इन्न तन्मै यमैत्त विराक्कदर्
मन्नन् माडुवन् दॅय्दि वणङ्गिनार्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्त शेन्नै कळप्पट्ट वाऱ्ऱैलाम्
तुन्नु तूदर् शॆवियिडैच् चॊल्लुवार् 3560

इत्त तन्मै अमैत्त–इस प्रकार जिसने प्रबन्ध कराया था, उस; इराक्कतर् मन्नन् माटु–राक्षस राजा के पास; वन्तु ऍय्ति–आ पहुँचकर; वणङ्कित्तार्–विनत होकर; अन्त चेन्नै–वह सेना; कळप्पट्ट आऱ ऍलाम्–खेत जैसे रही वह सारा हाल; चॆवि इटै–उसके कानों में; तुन्नु तूतर्–अंगरक्षक दूतों ने; चॊल्लुवार्–कहना आरम्भ किया। ३५६०

इस भाँति जिसने अच्छा प्रबंध कराया था, उस रावण के पास अंगरक्षक दूत आ पहुँचे और उन्होंने उसके कानों में मूलबल के पूर्ण रूप से खेत रहने का सारा हाल बताया। ३५६०

नडुङ्गु हिन्ऱ वुडलिन्तर् नावुलर्न्
दॊडुङ्गु हिन्ऱ वुयिर्प्पिन्न रुळ्ळऴिन्
दिडुङ्गु हिन्ऱ विऴियिन्न रेङ्गिन्तार्
पिडुङ्गु हिन्ऱ वुरैयिन्तर् पेशुवार् 3561

नटुङ्कुकिन्ऱ–काँपते; उटलिन्तर्–शरीर वाले; ना उलर्न्तु–जीभ सूखकर; ऒटुङ्कुकिन्ऱ–क्षीण होनेवाली; उयिर्प्पिन्तर्–साँसों वाले; उळ् अऴिन्तु–मन के क्षय से; इटुङ्कुकिन्ऱ–सँकरी होती; विऴियिन्तर्–आँखों वाले; पिटुङ्कुकिन्ऱ–कष्ट के साथ जिन्हें खींच-से लेते; उरैयिन्तर्–ऐसे शब्दों के वक्ता; एङ्गिन्तार्–तरसते हुए; पेचुवार्–कहने लगे। ३५६१

उनके शरीर काँप रहे थे। जीभ सूख गयी। श्वास क्षीण हो रहे थे। मन क्षीण था, जिसके फलस्वरूप आँखें सँकरी हो रही थीं। बहुत कठिनता से बात करते थे कि लगता था कि वे शब्दों को जबरदस्ती खींच ला रहे हों। वे तरस के साथ बोले। ३५६१

इन्ऱियार् विरुन्दिङ् गुण्बा रिहन्मुहत् तिमैयोर् नन्द
वॆन्ऱिया येवच् चॆन्ऱ वायिर वॆळ्ळच् चेन्नै
निन्ऱुळार् पुऱत्ता राह विरामन्कै निमिर्न्द शाबम्
ऒन्ऱिन्ताल् नाल्गु मून्ऱु कडिहैयि नुलन्द दॆन्ऱार् 3562

इकल् मुकत्तु–युद्ध में; इमैयोर् तन्त–देवों द्वारा दत्त; वॆन्ऱियाय्–विजयी; एव चॆन्ऱ–आपकी प्रेरणा से जो गयी; आयिरम् वॆळ्ळम् चेन्नै–वह हजार 'वॆळ्ळम्' की सेना; पुऱत्तार् आक–युद्ध-स्थल में रही; इरामन् कै–श्रीराम के हाथ के; निमिर्न्त चापम् ऒन्ऱिन्ताल्–एक उन्नत चाप से; नान्कु मून्ऱु–चार और तीन (सात); कटिकैयिन्–घड़ियों में; उलन्ततु–मिट गयी; इन्ऱु–आज; इङ्कु विरुन्तु उण्पार्–दावत खानेवाले; यार्–जो हैं; निन्ऱुळार्–वे ही बचे हैं; ऎन्ऱार्–ऐसा कहा (दूतों ने)। ३५६२

युद्ध में देवों की दी हुई विजय के स्वामी! आपकी आज्ञा ले जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सेना गयी, वह युद्धस्थल में खड़ी ही हुई थी कि राम के एक ऊँचे चाप से सात घड़ियों में मिट गयी। अब इधर जो दावत खाते हैं वे ही बचे हैं। ३५६२

वलिक्कडऩ् वाऩु ळोरक् कॊण्डुनी वहुत्त पोहम्
कलिक्कड ऩळिप्प नॆऩ्ऱु निरुदर्क्कुक् करुदि ऩायेल्
पलिक्कड ऩळिक्कऱ् पालै यल्लदुऩ् कुलत्तिऩ् पालोर्
ऑलिक्कड लुलहत् तिल्लै यूरुळा रुळरे युळ्ळार् 3563

बलि कटऩ्–बल के क्रम से; वाऩुळोर्–व्योमवासियों को; कॊण्टु–काम में नियुक्त करके; वकुत्त पोकम्–विविध प्रकार के बने भोगों को; निरुतर्क्कु–राक्षसों को; कलि कटऩ्–संतोष का कर्तव्य मानकर; अळिप्पऩ्–दूंगा; ऎऩ्ऱु–ऐसा; नी करुतिऩायेल्–आप विचार करें तो; ऊर् उळार्–नगर में जो हैं; उळरे उळ्ळार्–वे ही रहे हैं; अल्लतु–उनके सिवा; उऩ्कुलत्तिऩ् पालोर्–आपके कुल के; ऑलि कटल्–शब्दायमान सागर-वलयित; उलकत्तु इल्लै–संसार में (कोई) नहीं हैं; पलि कटऩ्–बलि का कर्तव्य; अळिक्कल् पालै–देने अर्ह हैं। ३५६३

आप सोचते हैं कि अपने पराक्रम से व्योमवासियों के द्वारा इन राक्षसों को प्रीतिभोज का इंतिज़ाम करा दूं! तो इस नगर में जो रह गये हैं वे ही बाक़ी हैं। उनके अलावा आपके कुल का कोई भी इस ध्वनियुक्त समुद्रवलयित भू में कहीं नहीं रहता। अतः मृतबलि का प्रबंध कर सकते हैं (न कि भोज!)। ३५६३

ईट्टरु मुवहै यीट्टि यिरुन्दव ऩिशैत्त माऱ्ऱम्
केट्टलुम् वॆहुळि योडु तुणुक्कमु मिळवुङ् गिट्टि
ऊट्टरक् कुण्ड शॆङ्गण् नॆरुप्पुह वुयिर्प्पु वीङ्गत्
तीट्टिय पडिव मॆऩ्ऩत् तोऱ्ऱिऩऩ् तिहैत्त नॆञ्जत् 3564

ईट्ट अरुम्–सम्पादन-दुर्लभ; उवकै–संतोष; ईट्टियिरुन्तवऩ्–जिसने पा लिया था; इचैत्त माऱ्ऱम्–(उस रावण के) दूतों के कहे वचनों को सुनते ही; वॆकुळियोटु–क्रोध के साथ; तुणुक्कमुम्–भय और; इळवुम्–खोने का दुःख भी; किट्टि–पाकर; ऊट्टु अरक्कु–लगायी गयी लाख से; उण्ट चॆम् कण्–भरी-सी लाल आँखें; नॆरुप्पु उक–आग निकालने लगीं; उयिर्प्पु वीङ्क–श्वास बढ़ा; तिकैत्त नॆञ्चत्–(इन विभावों के साथ) ठिठके मनवाला बन; तीट्टिय पटिवम् ऎऩ्ऩत–लिखित चित्र के समान; तोऱ्ऱिऩऩ्–दिखा। ३५६४

रावण संपादन-दुर्लभ संतोष में इतरा रहा था। इसे सुनते ही उसे अपार क्रोध, भय और दुःख हुए। लाख के समान लाल आँखों से आग बरसने लगी। श्वास फूले। मन ठिठका। और वह लिखित चित्र के समान दिखा। ३५६४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्निनुम् वलिय रान विराक्कव रियारुम् वीयार्
उन्निनु मुलप्पि लाद रुवरियिन् मणलि नीळ्वार्
पिन्नोरु पॅयरु मिन्ऱि माण्डन रॅन्ऱु शॊन्न
इन्निलै यिदुवो पॊय्म्मै विळम्बिनीर् पोलु मॅन्ऱान् 3565

ऍन्निनुम् बलियर् आन–मुझसे भी बलवान रहे; इराक्कतर् यारुम्–उन राक्षसों में कोई; वीयार्–नहीं मरेंगे; उन्निनुम्–अनुमान लगाने पर भी; उलप्पु इलातार्–जो गिने नहीं जा सके; उवरियिन् मणलिन् नीळ्वार्–ऐसा, समुद्र के बालुओं से भी अधिक रहे; पिन् ऒरु पॅयरुम् इन्ऱि–फिर कोई एक न रहा ऐसा; माण्टनर्–सब मरे; ऍन्ऱु चॊन्न–ऐसा जो कहा जाता है; इ निलै इदुवो–यह स्थिति यहाँ है क्या; पॊय्म्मै–असत्य; विळम्पिनीर् पोलुम्–बोले शायद; ऍन्ऱान्–कहा रावण ने। ३५६५

"मूलबल वीर मुझसे बलवान थे! वे नहीं मरेंगे। हिसाब, प्रयत्न करने पर भी नहीं लगाया जाय, ऐसा समुद्र के बालुओं से भी अधिक संख्या के थे। फिर कहते हो कि एक भी बचा नहीं; सभी हत हो गये! (यह) स्थिति सचमुच यही है? या शायद झूठ कह गये?" रावण ने पूछा। ३५६५

केट्टय लिरुन्द मालि यीदॊरु कीळ्मैत् तामो
ओट्टुरु तूदर् पॊय्ये युरैप्परो वुलहम् याबुम्
वीट्टुव दिमैप्पि नन्ऱे वीङ्गॆरि विरिन्द वॆल्लाम्
माट्टुव नॊरुव नन्ऱे यिऱुदियिन् मनत्ता लॆन्ऱान् 3566

केट्टु–सुनकर; अयल् इरुन्त मालि–पास जो रहा उस माल्यवान ने; ईतु–यह समाचार; कीळ्मैत्तु आमो–अविश्वास योग्य होगा क्या; ओट्टुरु तूतर्–भागे जो आये वे दूत; पॊय्ये उरैप्परो–झूठ ही कहेंगे क्या; उलकम् याबुम्–सभी लोकों में; विरिन्त ऍलाम्–विस्तृत रूप से रहनेवाले सभी को; इऱुतियिन्–युगांत में; मनत्ताल्–संकल्प मात्र से; माट्टुवन्–मिटानेवाला; ऒरुवन् अन्ऱे–अद्वितीय अकेले ही न; वीङ्कु ऍरि–अधिक जलनेवाली आग द्वारा; इमैप्पिन्–पल भर में; नन्ऱे वीट्टुवतु–मिटा देता है; ऍन्ऱान्–कहा। ३५६६

यह सुनता हुआ माल्यवान पास में रहा। उसने रावण को यों समझाया। क्या यह समाचार अविश्वास योग्य है? भागे हुए जो आये हैं वे भी असत्य बोलेंगे क्या? युगांत के विस्तृत-लोकसंहारक (रुद्र) तो अकेले ही युगांत की आग की सहायता से संकल्प मात्र से सारे लोकों को पल भर में मिटा देता है। ३५६६

अळप्परु मुलहम् याबु मळित्तुक्काट् तळिक्किन् ऱान्तन्
उळप्पॆरुन् दहैमै तन्ना लॊरुवनॆन् ऱुणमै वेदम्
किळप्पदु केट्टु मन्ऱे यरविन्मेर् किडन्दु मेन्ताळ्
मुळैत्तपे रिराम नॆन्ऱ वीडणन् मॊळिपॊय्त् तामो 3567

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तन् उळम्–अपने मन के; पॆरु तर्कमै तन्नाल्–बड़े (संकल्प-) बल से; अळप्परुम् उलकम् यावुम्–सभी अगणित लोकों को; अळित्तु–सृष्ट करके; कात्तु–रक्षण कर; अळिक्कित्रान्–संहार करता है; ऒरुवन्–अद्वितीय है; ऎन्ऱ–ऐसा; वेतम्–वेद; उण्मै–सत्य; किळप्पतु–बताते हैं यह; केट्टुम् अन्ऱे–सुनते हैं न; मेताळ्–प्राचीन दिनों में; अरवित् मेल् किटन्तु–सर्प पर लेटकर; मुळैत्त–अब यहाँ जो प्रगट हुआ है; पेर् इरामन्–वह मान्य राम; ऎन्ऱ–ऐसा जिसने बताया; वीटणन् मॊळि–विभीषण का वचन; पॊय्त्तु आमो–झूठा बनेगा क्या। ३५६७

सत्यवाक् वेद यह बताते हैं कि अपने मन के संकल्प के अपार बल से अद्वितीय एक (भगवान) ही अपार लोकों की सृष्टि करके उनको पालता है और उनका संहार करता है। क्या यह हमने नहीं सुना है ? वही देवदेव क्षीरसागर का शेषशायी अब श्रीराम के रूप में प्रकट मान्य श्रीराम है —यह जो विभीषण कह रहा था, झूठा हो सकता है क्या ? । ३५६७

ऒन्ऱिडि नदनै युण्णु मुलहत्ति नुयिर्क्कॊन् ऱाद
निन्ऱन वॆल्लाम् बॆय्दा लुडनुङ्गु नॆरुप्पुङ् गाण्डुम्
कुन्ऱोडु मरनुम् बुल्लुम् बल्लुयिर्क् कुळ्ळुवुङ् गॊल्लुम्
वन्ऱिऱर् काऱ्ऱुङ् गाण्डुम् वलिक्कॊरु वरम्बु मुण्डो 3568

ऒन्ऱु इटिन्–एक पदार्थ (मुख में) डाल दो तो; अतनै उण्णुम्–उसे खानेवाले; उलकत्तिन् उयिर्क्कु–लोक के जीवों को; ऒन्ऱात–जो उचित नहीं; निन्ऱन–रहते; ऎल्लाम्–उन सभी को; पॆय्ताल्–डाला जाय तो; उटन् नुङ्कुम्–एक साथ कवलित करनेवाली; नॆरुप्पुम् काण्टुम्–आग हमने देखी है; कुन्ऱोटु–पर्वत के साथ; मरनुम् पुल्लुम्–तरु, घास और; पल् उयिर् कुळ्ळुवुम्–अनेक जीवों के झुण्डों को; कॊल्लुम्–मारनेवाले; वल् तिऱल्–बहुत प्रबल; काऱ्ऱुम् काण्टुम्–पवन भी हमने देखा है; बलिक्कु–बल की; ऒरु वरम्पु उण्टो–कोई सीमा भी है क्या। ३५६८

जीव अपने योग्य आहार मिलने पर ही उसे खाते हैं। किन्तु, अग्नि ऐसी होती है, जो अखाद्य को भी डालें तो उसको भस्म कर देती है। उसे हमने देखा है। युगांत का पवन है, जो पर्वत, तरु, घास और विविध जीवों का नाश कर देता है। वैसा प्रबल पवन हमने देखा है। फिर बल की कोई सीमा भी है ? । ३५६८

पट्टदु मुण्डे युन्नै यिन्दिरच् चॆल्वम् बऱ्ऱु
विट्टदु मॆय्म्मै यैय मीण्डॊरु वित्तैयु मिल्लैक्
कॆट्ट दुन् पॊरुट्टिन्नाले निन्नुडैक् केळि रॆल्लाञ्
चिट्टदु शॆय्दि यॆन्ऱा नदऱ्कवन् शीऱ्ऱञ् जॆय्दान् 3569

उन्नै–तुम्हारे साथ; इन्तिर चॆल्वम्–इन्द्रनिधि; पट्टतुम् उण्टु–लगी रही वह सही है; पऱ्ऱु विट्टतु–अब नाता तोड़ दिया (उसने); मॆय्म्मै–सच; ऐय–तात; मीण्ट–फिर अब; ऒरु वित्तैयुम् इल्लै–एक भी काम न रहा; उन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊरुट्टिताले–अपने ही कारण; निन् उटै–तुम्हारे; केळिर् ऍल्लाम्–बांधव सभी; कॆट्टतु–मिट गये; चिट्टतु–शिष्ट काम; चॆय्ति–करो; ऍन्ऱान्–कहा (माल्यवान ने); अतऱ्कु–उससे; अवन्–रावण ने; चीऱ्ऱम् चॆय्तान्–क्रोध किया। ३५६९

तुम्हारे साथ इन्द्रनिधि लगी थी। अब उसने नाता तोड़ लिया। हे तात ! अब करणीय काम कुछ नहीं रहा। तुम्हारे ही कारण तुम्हारे सब बंधु-बांधव मिट गये। अब ही सही शिष्ट काम करो। माल्यवान ने यह कहा तो रावण ने गुस्सा किया। ३५६९

इलक्कुवन् तन्नै वेला लॆऱिन्दुयिर् कूऱुक्क् कीन्देन्
अलक्कणिऱ् ऱलैव रॆल्ला मऴुन्दिन रदनैक् कण्डाल्
उलक्कुमा लिरामन् पिन्न रुयिर्प्पॊऱै युहवा नुऱ्ऱ
मलक्कमुण् डाहि नाह वाहैयेन् वयत्त देन्ऱान् 3570

इलक्कुवन् तन्नै–लक्ष्मण को; वेलाल् ऍऱिन्तु–शक्ति से मारकर; उयिर्–उसके प्राणों को; कूऱुक्कु ईन्तेन्–यम को दे दिया था; तलैवर् ऍल्लाम्–सभी वानरयूथप; अलक्कणिल्–दुःख में; अऴुन्तितर्–डूबे; अतनै कण्टाल्–उसको देखे तो; पिन्नर् उयिर् पॊऱै–प्राणभार-वहन; उकवान्–न चाहकर; इरामन् उलक्कुम्–राम मरेगा; उऱ्ऱ–(मूलबलहत्या के कारण) मुझे प्राप्त; मलक्कम्–संकट; उण्टु आकिल्–हो तो; आक–हो; वाकै–विजय तो; ऍन् वयत्ततु–मेरी रही; ऍन्ऱान्–कहा रावण ने। ३५७०

रावण ने कहा। मैंने लक्ष्मण पर शक्ति चलाकर उसको मौत का मेहमान बना दिया था। वानरयूथप सभी दुःख में मग्न हुए। उसे देखकर राम प्राणभार-वहन करना नहीं चाहेगा और आत्महत्या कर लेगा। फिर क्या मूलबल के नाश का दुःख अवश्य होगा पर जीत तो मेरी ही रही। ३५७०

आण्डदु कण्डु निन्ऱ तूदुव रैय मॆय्ये
मीण्डदव् वळवि नावि मारुदि मरुन्दु मॆय्यिल्
तीण्डवुन् दाऴ्त्त दिल्लै यारुमच् चॆङ्ग णानैप्
पूण्डनर् तऴुविप् पुक्कार् काणुदि पोदि यॆन्ऱार् 3571

आण्टु–वहाँ; अतु–(लक्ष्मण का जी उठना) वह; कण्टु निन्ऱ–देखते जो रहे; तूतुवर्–उन दूतों ने; ऐय–स्वामी; मारुति–मारुति; मरुन्तु–(जो लाया था वह) संजीवनी; मॆय्यिल् तीण्टवुम्–शरीर पर लगे तब तक भी; ताऴ्त्ततु इल्लै–बिलम्ब नहीं हुआ; अव् अळविल्–उतने में ही; आवि मीण्टतु–जीवन लौट गया; मॆय्ये–सच; यारुम्–सभी; अ चॆम् कणानै–उस अरुणाक्ष को; पूण्टनर्–घेरकर; तऴुवि–मिलकर; पुक्कार्–जा पहुँचे हैं; काणुति–देखें; पोति–जायें; ऍन्ऱार्–कहा। ३५७१

तब दूत, जो कि तब वहाँ की घटना को देखते रहे थे, बोले।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे हमारे लोगो ! हाथी पंक्तियों में न घेरकर अलग-अलग लड़ते रहे। उनके श्वेत दाँत उस रक्त-प्रवाह में तिरते हैं, जिसमें वीरों की लाशें नहीं हैं। वे जल से हीन व लाल रंग के मेघसमूह-मध्य बालचन्द्र के समान दिखते हैं, देखो। ३५३२

कॊडियुम् विल्लुङ् गोलॊडु वेलुङ् गुवितेरुन्
दुडियिन् पादक् कुन्ऱिन् मिशैत्तोल् विशियिन्गट्
टॊडियुम् वॆय्योर् कण्णॆरि शॆल्ल वुडन्वॆन्द
तडियुण् डाडिक् कूळि तडिक्किन् ऱन्काणीर् 3533

कॊटियुम्–ध्वजा और; विल्लुम्–धनु; कोलॊटु–और शर; वेलुम्–'वेल्'; कुवि–जिसमें भरपूर थे; तेरुम्–उस रथ में; तुटियिन् पातम्–'तुडि' नामक भेरी के समान चरण भाग वाले; कुन्ऱिन् मिचै–पर्वतों (गजों) पर; तोल् विचियिन् कट्टु–चमड़े के बने हौदे पर; ओटियुम्–(रामबाण से आहत हो) मरे; वॆय्योर्–दुष्टों (राक्षसों) की; कण् ॲरि–आँख से निकली अग्नि; चॆल्ल–लगी इसलिए; उटन् वॆन्त–जो एक साथ पक्का; तटि उण्टु–मांस खाकर; कूळि–भूत; आटि–नाचकर; तटिक्किन्ऱन्–मोटे बनते हैं; काणीर्–देखो। ३५३३

ध्वजा, धनु, शर, शक्तियाँ —ये जिसमें भरी हैं, उस रथ पर और 'तुडि' नामक भेरी के समान पैरोंवाले गजों के चमड़े के बने हौदों पर रहकर जो राम-बाण से मरे, उन वीरों की आँखों से निकली आग से मांस एक साथ पका और उस मांस को खाकर भूतगण नाचते हैं ! वह हाल देखो। ३५३३

शहरम् मुन्नीर्च् चॆम्बुनल् वॆळ्ळन् दडुमाऱा
महरन् नन्मीन् वन्दन कण्डु मनमुट्किच्
चिहरम् मन्न यावैहॊ लॆन्नच् चिलनाणि
नहरम् नोक्किच् चॆल्वन काण्मिन् नमरङ्गाळ् 3534

नमरङ्काळ्–हमराहो; चकरम् मुन्नीर्–सगरपुत्रखनित सागर में; चॆम् पुनल् वॆळ्ळम्–रक्त का प्रवाह; तटुमाऱा–डोलायमान है, इसलिए; चिल मकरम्–कुछ मकर; नन् मीन्–और अच्छे मत्स्य; वन्तन–जो आये; कण्टु–उन्हें देखकर; चिकरम् अन्त–शिखर-सम; यावै कॊल्–ये कौन हैं; ॲन्त–सोचकर; मनम् उट्कि–मन में भय का अनुभव करके; नाणि–शरमाकर; नकरम् नोक्कि–नगर की तरफ़; चॆल्वन–जाते हैं (गज); काण्मिन्–देखो। ३५३४

हे बंधुओ ! सागर में रक्त-प्रवाह जाकर टकराता है और दोलायमान रहता है। उसमें लौटती धारा के साथ कुछ मकर और मत्स्य आ जाते हैं। उन्हें देखकर गज सोचते हैं कि ये शिखर-सम प्राणी क्या हैं ? उनसे डरते हैं और शरमाकर वे नगर की ओर जाते हैं। उनको देखो। ३५३४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विण्णिऱ् पट्टार् वॆऱ्पुऱऴ् कायम् बलमॆन्मेल्
मण्णिऱ् चॆल्वार् मेनियिन् वीऴ मडिवुऱ्ऱार्
ऍण्णिऱ् ऱीरा वन्नवै तीरु मिडलिल्लाक्
कण्णिऱ् ऱीयार् विम्मि युळैक्कुम् बडिकाणीर् 3535

विण्णिल् पट्टार्–आकाश में जो मरे उनके; वॆऱ्पु उऱऴ्–पर्वतोपम; कायम्–शरीर; पल–अनेक; मॆन् मेल्–उत्तरोत्तर; मण्णिल् चॆल्वार्–भूमि पर जानेवाले लोकों के; मेनियिन् वीऴ शरीरों पर गिरते, इसलिए; मडिवुऱ्ऱार्–मर जाते हैं; ऍण्णिल् तीरा–गिनती में नहीं आ सकते; अन्नवै–उनसे; तीरुम् मिटल् इल्ला–हटने की शक्ति न होने से; कण्णिल् तीयार–आँखों में अग्नि के साथ; विम्मि–रोते हुए; उळैक्कुम्पटि–दुःखी होते हैं वह हाल; काणीर्–देखो। ३५३५

आकाश में जो मरे उनके शरीर लगातार ऊपर से नीचे गिरते रहते हैं। तब नीचे भूमि पर जानेवाले वीरों पर वे गिरते हैं तो वे मर जाते हैं। उनकी संख्या गिनती में नहीं आती। और उन गिरती लाशों के नीचे दबकर अलग न हट सकने के कारण लोग आँखों में अंगारे भरकर रोते-सिसकते दुःखी होते हैं। उनका हाल देखो। ३५३५

अच्चिऱ् ऱिण्डे रानैयिन् मामे लहन्वानिन्
मॊय्च्चुच् चॆन्ऱार् मॊय्हुरु दित्ता रैहळमुट्ट
उच्चिच् चॆन्ऱा नायिनुम् वॆय्यो नुदयत्तिन्
कुचचिच् चॆन्ऱा नॊत्तुळ नाहुङ् गुऱिकाणीर् 3536

अच्चिन् तिण् तेर्–धुरी-सहित सुदृढ़ रथ पर और; आनैयिन्–हाथियों पर; मा मेल्–अश्वों पर; अकल् वानिन्–विशाल आकाश में; मॊय्च्चु–भीड़ लगाकर; चॆन्ऱार्–जो गये उनके; मॊय् कुरुति तारैकळ्–पुष्ट रक्त की धाराएँ; मुट्ट–उस पर बहीं इससे; वॆय्योन्–किरणमाली; उच्चि–(आकाश-मध्य) ऊँचे स्थान में; चॆन्ऱान् आयिनुम्–पहुंच गया तो भी; उतयत्तिन् कुच्चि–उदयाचल की चोटी पर; चॆन्ऱान् ऒत्तु–गया जैसा; उळन्–रहता है; आकुम् कुऱि काणीर्–वह दृश्य देखो। ३५३६

धुरी-सहित सुदृढ़ रथों पर और गजों और अश्वों पर जो वीर थे और जो आकाश में चलते थे वे मरे और उनका पुष्ट रक्त-प्रवाह सूर्य पर लगा तो किरणमाली मध्याह्न में आकाश की चोटी पर रहते हुए भी उदयाचलस्थ के समान लगता है। वह लक्षण देखो। ३५३६

काऱोय् मेनिक् कण्डहर् कण्डप् पडुकालै
आऱो वॆन्न विण्पडर् शॆञ्जो रियदाहि
वेऱोर् निन्ऱ वॆण्मदि शॆङ्गेऴ् निऱम्विम्मि
माऱोर् वॆय्योन् मण्डिल मॊक्किन् ऱदुहाणीर् 3537

काल् तोय्–पवनगति वाले; मेनि–शरीरों वाले; कण्टकर्–कंटक; कण्टम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पटु कालै–जब खण्डित हुए तब; विण् पटर्–आकाश में जो व्यापा; चॆं चोरि अतु–वह लाल रक्त; आऱो ऎऩ्ऩ आकि–नदी क्या, ऐसा बना, इससे; वेऱु निऩ्ऱ–अलग जो रहा वह; ओर् वॆळ् मति–विशिष्ट श्वेत चन्द्र; चॆम् केळ् निऱम्–लाल रंग से; विम्मि–खूब भरकर; माऱ–उससे भिन्न; ओर् वॆय्योऩ् मण्टिलम्–एक सूर्यण्मडल के; ऒक्किऩ्ऱतु–के समान; काणीर्–देखो। ३५३७

पवनगति कंटक जब छिन्न हुए तब रक्त आकाश में व्यापा। वह नदी का भ्रम पैदा करते हुए बह चला। तब वहाँ रहा चन्द्र रक्त में भीगकर लाल रंग से अधिक रंजित होकर विरुद्ध सूर्यमंडल के समान दिखता है, देखो। ३५३७

वाऩऩैय मण्णऩैय वळर्न्दॆऴुन्द पॆरुङ्गुरुदि महर वेलै
ताऩऩैय वुऱ्ऱऴुम्बा रवैतॆळित्त पुदुमऴैयिऩ् ऱ्ळ्ळि ताङ्गि
मीऩऩैय नऱुम्बोदुम् विरैयरुन्दुऱ् जिऱ्वण्डु निऱम्वे ऱैय्दिक्
काऩहमुङ् गडिपॊऴिलु मुऱियीऩ्ऱ पोऩ्ऱॊळिर्व काण्मिऩ् काण्मिऩ् 3538

वाऩ् नऩैय–आकाश भिगोते हुए; मण् नऩैय–भूमि भिगोते हुए; वळर्न्तु ऎऴुन्त–भर जो उठा; पॆरु कुरुति–उस विपुल रक्त से; मकर वेलै ताऩ्–मकरालय को भी; नऩैय–भिगोते हुए; उऱ्ऱ ऎऴुम्–लाशों से निकले; तॆळित्त–छिड़के हुए; पुतु मऴैयिऩ् तुळ्ळि–नवीन वर्षा के कणों को; पारवै–भूमि के थल; ताङ्कि–धारण करते इसलिए; मीऩ् अऩैय–नक्षत्र-सम; नऱु पोतुम्–सुगंधित फूल; विरै अरुन्तुम्–मधुपायी; चिऱै बण्टुम्–पंखों से युक्त भ्रमर; निऱम् वेऱु ऎय्ति–दूसरा रंग पा जाते हैं; कानकमुम्–वनस्थल; कटि पॊऴिलुम्–सुगन्ध-भरे उपवन; मुऱि ईऩ्ऱ पोऩ्ऱु–कोपलें निकालते-से; ऒळिर्व–शोभायमान हैं; काण्मिऩ् काण्मिऩ्–देखो, देखो। ३५३८

आकाश और भूमि को भिगोते हुए रक्त उमड़ा और उसने समुद्र को भी रंजित कर दिया। लाशों के नव मेघों से छिड़की बूंदों को भूमि धारण करती रही। तब नक्षत्र-सम फूल, और फूलों का मधु पीनेवाले सपंख भ्रमर रंग बदल गये। तो वन और उपवन नयी कोंपलें निकालते-से लगते हैं, देखो। ३५३८

वरैबॊरुद मदयाऩ वळैमरुप्पुङ् गिळर्मुत्तु मणियुम् वारित्
तिरैपॊरुदु पुऱङ्गुविप्पत् तिऱङ्गॊळ्पणै मरमुरुट्टिच् चिऱैप्पुळ् ळार्प्प
नुरैक्कॊडियुम् वॆण्कुडैयुञ् जामरेयु मॆऩ्चुमऩ्दु पिणत्ति ऩोऩ्मैक्
करैपॊरुन्दुङ् गडऩ्मडुक्कुङ् गडुङ्गुरुदिप् पेराऱु काण्मिऩ् काण्मिऩ् 3539

वरै पॊरुत–पर्वतों से लड़ आये; मतम् याऩै–मत्त हाथी के; वळै मरुप्पुम्–वक्र दाँत और; किळर् मुत्तुम्–छिटके हुए मोती; मणियुम्–रत्न; वारि–खींच लेकर; तिरै–तरंगें; पॊरुतु–टकराकर; पुऱम् कुविप्प–एक ओर ढेरों में लगा देती हैं; तिऱम् कॊळ्–विभक्त; पणै–डालों-सहित; मरम्–तरु को; उरुट्टि–लुढ़काती हैं;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिऱै पुळ् आर्प्प-(इसलिए) पक्षी कलरव करते; कॊटियुम्-ध्वजा; वॆण् कुटैयुम्-और श्वेत छत्र; चामरैयुम्-चामर इनकी; नुरै अॆत-फेनों के समान; चुमन्तु-धारण कर; पिणत्तिन्-लाशों के; नोन्मै-सुदृढ़; करै पॊरुन्तुम्-किनारों के अंदर (बहकर); कडल् मट्टुक्कुम्-समुद्र में जो पहुँचाती हैं; कटु कुरुति पेर् आऱ-वेगवान रक्त की बड़ी नदी; काण्मिन् काण्मिन्-देखो, देखो। ३५३९

लहरें टकराती हैं और पर्वत से टकरानेवाले मत्त गजों के वक्र दाँतों, कांतिमय मुक्ताओं और रत्नों को बहा ले जाकर उनकी राशियाँ लगा रही हैं। टूटे और डालों-सहित पेड़ों को लुढ़काती हैं और पक्षीगण शोर मचाते हैं। रक्त की तरंग-सहित नदियाँ ध्वजाओं-श्वेतछत्रों और चामरों को फेनों के समान ले जा रही हैं। उनकी लाशों के सुदृढ़ किनारे बने हैं। वे वेग से जाकर समुद्र में मिलती हैं। उन बड़ी-बड़ी नदियों को देखो। ३५३९

कैक्कुन्ऱुप् पॆरुङ्गरैय निरुदर्पुयक् कऱ्चॆऱिन्द कदलिक् कानम्
मॊय्क्किन्ऱ परित्तिरैय मुरट्करिक्कैक् कोण्माव मुळरिक् कानिन्
नॆय्क्किन्ऱ वाण्मुहत्त विळुङ्गुडरिन् पाशडैय निणमेऱ् चेऱ्ऱ
उय्क्किन्ऱ वुदिरनिऱक् कळङ्गुळङ्ग ळुलप्पिऱन्द वुवैयुङ् काण्मिन् 3540

कै-हाथ (सूंड़) वाले; कुन्ऱम्-पर्वतों (गजों) को; पॆरु करैय-बड़े किनारों के रूप में जो पाये हुए हैं; निरुतर् पुयम्-राक्षसों के हाथों के; कल् चॆऱिन्त-उपल-भरे; कतलि कानम् मॊय्क्किन्ऱ-ध्वजा-समूह-युक्त; परि तिरैय-अश्व-तरंग भरे; मुरण्-परस्पर विरुद्ध; करि कै-गज सूंड़ के; कोळ् माव-नक्रों से भरे; मुळरि कानित्-कमल-वन के समान; नॆय्क्किन्ऱ-स्निग्धता-भरे; वाळ् मुकत्त-उज्ज्वल-मुखी; विळुम्-ढलती; कुटरिन्-आँतों के रूप में; पचुमै अटैय-सेवार से युक्त; मिणम् मेल् चेऱ्ऱ-मज्जा रूपी तल के कीचड़ से भरे; उय्क्किन्ऱ-अन्दर खींच लेने वाले; निऱम्-लाल रंग के; कळम्-स्थलों रूपी; उतिरम् कुळङ्कळ-रक्त के तालाब; उलप्पु इऱन्त-अनगिनत हैं; उवैयुम् काण्मिन्-उनको भी देखो। ३५४०

इस युद्धभूमि के विविध थलों में विचित्र रक्त तालाब बने हैं, देखो। सूंड़वाले पर्वताकार गज उनके किनारे बने हैं। राक्षसों की भुजाएँ उपल हैं जिनसे वे भरे हैं। ध्वजासहित अश्व तरंगें हैं। हाथी की सूंड़ें बलवान नक्र हैं। कमल वन के समान, चिकने उज्ज्वल और ढलनेवाली आँतें सेवार हैं। मज्जा ही तल का कीचड़ है! ऐसे, उनमें गिरनेवाले लोगों को अपने अंदर डुबो लेनेवाले तालाबों को देखो। ३५४०

नॆडुम्बडैवा णाञ्जिलुळ् निणच्चेऱ्ऱि नुदिरनीर् निऱैन्द काप्पिर्
कडुम्बहडु पडितोय्न्द कडुम्बरम्बि तिनमळ्ळर् कलन्द कैयिर्
पडुङ्गमल मलर्नाऱु मुडिपरन्द पॆरुङ्गिडक्कैप् परन्द पणैत्
तडम्बणैयि नऱुम्बळनन् दळ्वियदे यॆनप्पॊलियुन् दहैयुङ् गाणमिन् 3541

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नॆटु वाळ् पटै–लम्बी तलवार हथियार रूपी; नाञ्चिल्–हल से; उळु–जोती जानेवाली; निणम् चेऱ्ऱिन्–मज्जा रूपी पंक में; उतिरम् नीर्–रक्त-जल के; निऱैन्त काप्पिन्–भरे जलाशय और; कटु–तेज; पकटु–गज रूपी भैंसे; पटि–मग्न होकर; तोय्न्त–जिसमें रहते हैं; परन्त–व्यापनेवाले; इन्नम् मळ्ळर्–समूहबद्ध वीर रूपी; कटुम् परम्पिन्–कठिन 'हेंगा' चलानेवाले; पण्णै–कृषकों का समूह; कलन्त–फैले रहे; कैपिल्–दोनों पार्श्वों में; पटुम्–प्रगट; कमलम् मलर्–कमल-पुष्प के; नाऱुम्–सुवास से मिले; मुटि–सिर रूपी अंकुरों की गाँठें; परन्त–जहाँ फैली रहीं; पॆरु किटक्कै–वह बड़ा युद्धस्थल; परन्त पण्णै–विशाल स्त्रीसमूह से भरे; तटम् पणैयिन्–बड़े खेतों की; नऱ पळतम्–सुरभित मरुदम प्रदेश की प्रकृति को; तळुवियते ऎन्न–प्राप्त कर चुका क्या, ऐसा (संशय पैदा करते हुए); पॊलियुम् तकैयुम्–विद्यमान रहता है वह हाल भी; काण्मिन्–देखो। ३५४१

यह युद्धभूमि बड़े-बड़े खेतों से भरी 'मरुदम्' भूप्रदेश के समान है, देखो। (खेतों में हल चलाये जाते हैं, पंकिल जलाशय हैं, भैंसे या बैल पाये जाते हैं। हेंगा चलाया जाता है। अंकुरों की गाँठें पायी जाती हैं, जिनसे पौधे लेकर कृषक-स्त्रियाँ रोपती हैं। इधर—) लम्बी तलवार रूपी हल चलाये गये हैं। मज्जे रूपी पंकिल भूमि में रक्तजल के गड्ढे पाये जाते हैं, जिनमें वेगवान गज रूपी भैंसे पड़े हैं। दलबद्ध वीर ही समूहगत कृषक हैं, जिन्होंने हेंगा चलाया है। दोनों ओर सुवासित कमल के समान राक्षस वीरों के सिर रूपी अंकुर की गाँठें पड़ी रहती हैं। यह विचित्र 'मरुदम्' की भूमि को देखो। ३५४१

वॆळिऱीर्त्त वरैपुरैयु मिडलरक्क रुडल्विळुवुम् वीरन् विल्लिन्
ऒळिऱीर्त्त मुळनॆडुना णुरुमेरु पलपडवु मुलहङ् गीण्डु
नळिऱीर्त्त नाहपुरम् बुक्किळिन्द पहळिवळि नदियि नोडिक्
कळिऱीर्त्तुप् पुहमण्डुङ् गरुङ्गुरुदित् तडञ्जुळिहळ् काण्मिन् काण्मिन् 3542

वॆळिल्–खूँटे को; तीर्त्त–जिसने तोड़ा उस; वरै पुरैयुम्–पर्वत (हाथी) सदृश; मिटल् अरक्कर्–बलवान राक्षसों के; उटल्–शरीर के; विळुवुम्–गिरते ही; वीरन्–श्रीवीरराघव के; ऒळिऱ ईर्त्त–शोभायमान और कान तक खींचे हुए; विल्लिन्–धनु के; मुळु नॆटु नाण्–पूर्ण दीर्घ डोरे से; पल–अनेक; उरुम् एऱ–वज्रराजों के; पटवुम्–(स्वन) निकलते ही; उलकम् कीण्टु–संसार को चीरकर; नळिल्–मध्य में; तीर्त्त–फटे; नाकपुरम्–पाताल में; पुक्कु इळिन्त–जो चला; पकळि वळि–उस बाण से बने मार्ग से; नतियिन् ओटि–नदी के समान बहकर; कळिऱ ईर्त्तु–गजों को खींचता हुआ; पुक मण्टुम्–अधिक जो बनीं; करु कुरुति तट चुळिकळ्–काले रक्त की बड़ी भौंरियों को; काण्मिन् काण्मिन्–देखो, देखो। ३५४२

आलान तोड़नेवाले मत्तगज-सदृश बलवान राक्षसों के शरीरों को गिराते हुए श्रीराम ने शर चलाये हैं। श्रीवीरराघव ने अपने कान तक कोदंड के लम्बे पूरे डोरे को खींचकर स्वन निकाले थे, जो अशनिराज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के समान फटे ! वे पृथ्वी को चीरकर विद्ध पाताल में पहुँचे थे। जिस रास्ते से उनका शर चला था, उस रास्ते से रक्त नदी के रूप में बहता है। उसमें गज तिरते हैं और उसमें काले रक्त की भौंरियाँ उठती हैं। उन्हें देखो। ३५४२

कैत्तलमुङ् गात्तिरमुङ् गरुङ्गळत्तु नॅडुम्बुयमु मुरमुङ् गण्डित्
तॅय्त्तिलपोय्त् तिशैहडोऱ् मिरुनिलत्तॅक् किळित्तिळिन्द दॅन्नि लल्लाल्
मत्तकरि वयमावित् वाणिरुदर् पॅरुङ्गडलिन् मऱ्ऱिव् वाळि
तॅत्तुळदाय् निन्ऱदॅन्न वॉन्ऱेयुङ् गाण्बरिय तहैयुङ् गाण्मिन् 3543

कैतलमुम्–हाथों को; कात्तिरमुम्–अगले पैरों को; करु कळुत्तुम्–काले कण्ठों को; नॅटु पुयमुम्–लम्बी भुजाओं को; उ मुम्–और छातियों को; कण्डित्तु–छिन्न करके; अॅय्त्तिल–बाज न आकर; तिचैकळ् तोऱम् पोय्–सारी दिशाओं में जाकर; इरु निलत्तॅ–बड़ी भूमि को; किळित्तु–फाड़कर; इळिन्ततु–नीचे चले; अॅन्तिन् अल्लाल्–ऐसा कहा जाय तो कहा जा सकता है नहीं तो; मत्त करि–मत्त गजों के; वयम् मावित्–विजयी अश्वों में; वाळ् निरुतर्–असिधारी राक्षसों के; पॅरु कटलिन्–बड़े सागर में; इ वाळि ऑन्ऱेयुम्–यह शर एक ही; तॅत्तु उळताय्–चुभा; निन्ऱतु–रहा; अॅन्न–ऐसा; काण्परिय तकैयुम्–अदृष्टपूर्व हाल; काण्मिन्–देखो। ३५४३

श्रीराम-बाण हाथों, अगले पैरों, काले कंठों और लम्बी भुजाओं को छेदकर भी बाज नहीं आये। फिर बड़ी भूमि को छेदकर चला। यही सच है। कहने का विषय रहा। इसे छोड़ यह नहीं कह पायँगे कि कोई शर मत्त गजों, विजयी अश्वों या असिधारी राक्षस वीरों के बड़े सागर में किसी में चुभा और वहीं रह गया ! ऐसा दृश्य अदृश्य है, देखो। ३५४३

कुमुद नाऱु मदत्तन कूऱ्ऱन, शमुद रोडु मडिन्दन शार्दरुम्
तिमिर मावन्न शॅय्हैय वित्तिऱम्, अमिर्दिन् वन्दन वैयिरु कोडियाल् 3544

कुमुतम् नाऱम्–कुमुद-से गंधवाले; मतत्तन–मदनीर से युक्त; कूऱ्ऱन–यम-सदृश; चमुतरोटु मटिन्तन–महावतों के साथ मरे हुए; चार् तरुम्–ढँकते आनेवाले; तिमिरम् मा–अंधकारवर्ण सुअर के; अन्न चॅय्कैय–सदृश काम करनेवाले; इ तिऱम्–इस प्रकार के; ऐयिरु कोटि–दस करोड़ (हाथी); अमिर्तिन् वन्तन–अमृत के साथ आये। ३५४४

उन दस करोड़ गजों को देखो। उनका मदनीर कुमुद-सुमन का-सा गंध लिये है। वे यम के समान हैं। वे अपने महावतों के साथ ही मर गये हैं। वे अंधकारवर्ण सुअरों का-सा कर्म करनेवाले हैं। ऐसे उन गजों पर दृष्टि डालो। ३५४४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एऱु नान्मुहन् वेळ्वि यॅळुन्दत
ऊऱु मारियु मोङ्गलै योदमुम्
माऱु मायिनु मामद माय्वरुम्
आऱु मारिल वारिरु कोडियाल् 3545

ऊऱुम्–स्रोत बनानेवाली; मारियुम्–वर्षा और; ओङ्कु अलै–उन्नत तरंगों का; ओन्मुम्–सागर; माऱुम् आयिनुम्–बदल (जलहीन हो) जाय तो भी; मा मतमाय् वारुम्–मदनीर के रूप में आनेवाली; आऱु मारिल–नदियाँ बदल नहीं सकतीं, ऐसी नदियों के; आरिरु कोटि–बारह करोड़ हाथी; एऱुम्–उत्कृष्ट; नान्मुकन् वेळ्वि–चतुर्मुख के यज्ञ में से; ऍळुन्दत–प्रकट हुए। ३५४५

उन बारह करोड़ हाथियों को देखो। चाहे सदापूर्ण मेघ सूख जायँ, चाहे बढ़ती तरंगों वाला सागर ! पर इनका मदनीर, जो नदी के रूप में बहता रहता है, कभी नहीं सूखता —ऐसे ये चतुर्मुखमखोत्पन्न गज हैं ! । ३५४५

उयिर्व ऱन्दु मुदिरम् वऱन्दुतम्
मयर्व ऱन्दु मदमऱ वादत
पुयल वन्ऱिशैप् पोर्मद वानैयिन्
इयल्प रम्बरै येऴिरु कोडियाल् 3546

एऴिरु कोटि–चौदह करोड़ (हाथी); उयिर् वऱन्तुम्–प्राण सूख जायँ तो भी; उतिरम् वऱन्तुम्–रक्त सूख जाय तो भी; तम् मयर् वऱन्तुम्–मस्ती सूख जाय तो भी; मतम् अऱवातत–मदनीर उनका नहीं सूखता; पुयलवन्–मेघपति (इन्द्र) की; तिचै–दिशा में; पोर्–योद्धा; मतम्–मत्त; यानैयिन् इयल्–गज की-सी प्रकृति वाली; परम्परै–परंपरा के हैं। ३५४६

(इधर देखो) चौदह करोड़ गज ! प्राण, रक्त या मस्ती भी चाहे सूख जाय, मदनीर उनका नहीं सूखता। देवेंद्र की (पूर्व) दिशा के मत्त योद्धा गज की-सी प्रकृति वाली परंपरा के हैं। ३५४६

कॊडादु निऱ्ऱलिऱ् कॊऱ्ऱ नॆडुन्दिशै
ऍडादु निऱ्पत नाट्ट मिमैप्पिल
वडादु तिक्किन् मदवरै यिन्वऴिक्
कडामु हत्त मुऴरिक् कणक्कवाल् 3547

कॊटातु निऱ्ऱलिल्–(जिम्मा) नहीं दिया गया, इसीलिए; कॊऱ्ऱम् नॆटु तिचै–विजयी लम्बी दिशाओं को; ऍटातु निऱ्पत–नहीं ढोते रहते; नाट्टम् इमैप्पु इल–पलकें नहीं झपकते; वटातु तिक्किन्–उत्तरी दिशा के; मतम् वरैयिन् वऴि–मत्त पर्वत (गज-सार्वभौम) के वंश के; कटाम् मुकत्त–मदनीरयुक्त मुख वाले; मुऴरि कणक्क–'पद्म' की संख्या के हैं। ३५४७

(उधर देखो—) पद्म की संख्या में जो गज हैं वे दिशाओं को इसलिए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नहीं ढो रहे कि उन्हें वह काम सौंपा नहीं गया था ! अपलक व मदनीर-मुखी वे उत्तरी दिशा के सार्वभौम नाम के गज के वंश के हैं। ३५४७

वाऩ वर्क्किऱै वऩ्ऱिऱै तऩ्दऩ
आऩ वर्क्कमो रायिर कोडियुऩ्
दाऩ वर्क्किऱै वऩ्ऱिऱै तऩ्दऩ
एऩ वर्क्कङ् गणक्किल विव्वॆलाम् 3548

वाऩवर्क्कु इऱैवऩ्–देवेंद्र (द्वारा); तिऱै तऩ्तऩ–कर के रूप में दिये; आऩ–जो गये हैं; वर्क्कम्–गजवर्ग हैं; ओरायिरम् कोटि–एक हज़ार करोड़ हैं; इव् ऍलामुम्–ये सभी; ताऩवर्क्कु इऱैवऩ्–दानव राजा द्वारा; तिऱै तऩ्तऩ–कर के रूप में जो दिये गये; एऩ वर्क्कम्–गजवृन्द है; कणक्किल–असंख्यक हैं। ३५४८

ये (इधर) देवेंद्र द्वारा कर के रूप में दिये गये थे। ये एक हज़ार करोड़ हैं। उधर जो हैं, वे दानवेंद्र द्वारा कर के रूप में दिये गये थे। वे असंख्य हैं। ३५४८

पार्क डर्पण् डमिऴ्दम् बयन्दनाळ्, आर्त्तॆ ऴुन्दऩ वायिर मायिरम्
मार्क णप्परि यिङ्गिवै मारुवै, मेऱ्किऩ् वेलै वरुणऩै वॆऩ्ऱवाल् 3549

पण्टु–पहले; पाल् कटल्–क्षीरसागर ने; अमिऴ्तम् पयन्त नाळ्–(जिस दिन) अमृत दिया था, उस दिन; आर्त्तु ऍऴुन्तऩ–घोष के साथ जो प्रगट हुए; आयिरम् आयिरम्–हज़ार-हज़ार; माल् कणप् परि–बड़े-बड़े झुण्डों के अश्व; इङ्कु इवै–इधर ये हैं; मारु उवै–सामने वे; मेऱ्किऩ् वेलै–पश्चिमी सागर के; वरुणऩै वॆऩ्ऱ–वरुण को जीतकर पाये गये। ३५४९

उन हज़ार-हज़ार झुंडों में रहते अश्वों को देखो। वे उस दिन घोष के साथ प्रगट हुए थे, जिस दिन क्षीरसागर ने अमृत निकाला था। ये जो उनके सामने हैं, पश्चिमी सागर में वरुण को युद्ध में हराकर प्राप्त किये हुए हैं। ३५४९

इरुनि दिक्किऴ वऩ्ऩिऴऩ् देहिऩ, अरिय वप्परि यायिर मायिरम्
विरिशि नऩ्तिहल् विञ्जैयर् वेन्दऩैप्, पॊरुदु पऱ्ऱिय तामरै पोलुमाल् 3550

इरुनिति किऴवऩ्–बड़ी निधि के देवता; इऴन्तु–जिनसे हाथ धोकर; एकिऩ–चला गया; अरिय–अपूर्व; अ परि–वे अश्व; आयिरम् आयिरम्–हज़ारों हैं; विरि–विस्तृत; चिऩऩ्तु–क्रोध के साथ; इकल्–वीरता रखनेवाले; विञ्चैयर् वेन्तऩै–विद्याधर राजा को; पॊरुतु–लड़ाई में हराकर; पऱ्ऱिय–ग्रहण किये गये; तामरै पोलुम्–पद्मों की संख्या में हैं शायद। ३५५०

वे हज़ारों-हज़ारों अश्व निधिनाथ कुबेर ने हारकर छोड़ दिये थे ! वे क्रोधी तथा बहादुर विद्याधर राजा को हराकर हथिया लिये गये थे और उनकी संख्या पद्मों की होगी अवश्य ! । ३५५०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

स्वामी ! हनुमान की लायी संजीवनी की शरीर पर लगने की देर तक का भी विलंब नहीं हुआ। उतने में ही लक्ष्मण के गये प्राण लौट आये। यह सत्य बात है। सभी वीर लक्ष्मण को घेर उसे लेकर चले गये। आप देखें जाकर। ३५७१

तेऱिल नाद लाऩे मऱुहुऱु शिन्वै तेऱु
एऱिऩन् कऩहत् तारैक् कोबुरत् तुम्ब रय्दि
ऊऱिऩ शेऩै वॆळ्ळ मुलन्दपे रुण्मै यॆल्लाम्
काऱिऩ वुळ्ळ नोवक् कण्गळाऱ् ऱॆरियक् कण्डाऩ् 3572

तेऱिलऩ्–विश्वास न कर सका; आतलाऩे–इसीलिए; मऱुकुऱु चिन्तै–घबड़ाया दिल; तेऱु–सँभले, इसलिए; कऩकम् तारै–स्वर्णिम छटा बिखेरनेवाले; कोपुरत्तु उम्पर् ॲय्ति–गोपुर (मीनार) के पास जा; एऱिऩऩ्–उस पर चढ़ा; ऊऱिऩ–उत्तरोत्तर बढ़ आनेवाली; चेऩै वॆळ्ळम्–सेना के प्रवाह के; उलमृत–सूखने का; पेर् उण्मै ॲल्लाम्–सच्चा वृत्त सारा; काऱिऩ उळ्ळम्–वैरी मन को; नोव–वेदना देते हुए; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; तॆरिय कण्टाऩ्–खूब देख लिया। ३५७२

रावण विश्वास नहीं कर सका। दिल घबड़ाया हुआ था। उसे धीरज देने के विचार से वह स्वर्णछटावाले गोपुर (मीनार) पर चढ़ा। उसने वहाँ से देखा कि उत्तरोत्तर प्रवाह के समान बढ़ आनेवाली सेना मरकर पड़ी है। उसका वरी मन पीड़ा से भर गया। उसने संदेह दूर करते हुए खूब देख लिया। ३५७२

कॊय्दलैप् पूशऱ् पट्टोर् कुलततियर् कुवळै तोऱ्ऱु
नॆय्दलै वॆऩ्ऱु वाट्कण् कुमुदत्ति ऩीर्मै हाट्टक्
कैतलै वैत्त पूशल् कडलॊऴु निमिरुङ् गालैच्
चॆय्दलै युऱ्ऱ वोशैच् चॆयलदुञ् जॆवियिऱ् केट्टाऩ् 3573

कॊय् तलै–भिन्नशीर्ष हो; पूचल् पट्टोर्–युद्ध में मरे वीरों की; कुलत्तियर्–गृहिणियाँ; कुवळै तोऱ्ऱु–कुवलय हराकर; नॆय्तलै वॆऩ्ऱु–उत्पलविजयी; वाळ् कण्–तलवार-सम आँखों में; कुमुतत्तिऩ् नीर्मै काट्ट–कुमुद की-सी लालिमा दिखाते हुए; कै तलै वैत्त–हाथों को सिर पर रखकर; पूचल्–(जो मचा रही थी) वह चिल्लाहट; कडलॊऴु निमिरुम् कालै–जब समुद्र से होड़ लगा रही थी; चॆय्तलै उऱ्ऱ ओचै–उनके वैसा करने से निकले नाद का; चॆयलतुम्–कृत्य भी; चॆवियिल् केट्टाऩ्–कानों से सुना। ३५७३

वीरों के सिर कटे थे। उनकी गृहिणियाँ वहाँ आकर कुवलय -उत्पल विजयी अपनी तलवार-सी आँखों को रोने के कारण कुमुद (लाल) बनाते हुए, सिर पर हाथ रखे रोती कलपती रहती थीं। वह शोर समुद्र से होड़ लगा रहा था। रावण ने वह स्वर और उनके स्वर निकालने का वह काम देखा। ३५७३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅण्णुनीर् कडन्द यानप् पॅरुम्बिण मेन्दि याणर्
मण्णिनी रळवुङ् गल्लि नॅडुमलै पऱित्तु मण्डुम्
पुण्णिनी राऱुम् बल्पेय् पुदुप्पुन लाडुम् बॉम्मल्
कण्णिनी राऱु माऱाक् करुङ्गडन् मडुप्पक् कण्डान् 3574

अॅण्णुम् नीर्–सोचने की शक्ति; कटन्त यानै–खोकर रहे गजों की; पॅरुम् पिणम् एन्ति–बड़ी लाशों को धारण करके; मण्णिन्–पृथ्वी के; नीर् अळवुम् कल्ल–जल के रहते भाग तक खोदकर; नॅटु मलै पऱितुतु–बड़े पहाड़ों को उखाड़ लेते हुए; मण्टुम्–विपुल परिमाण में बहनेवाले; याणर् पुण्णिन् नीर्–व्रणों के ताजे रक्त की; आऱुम्–नदियों को; पल् पेय्–अनेक प्रेत; पुतु पुनल् आटुम्–ताजे (रक्त-) जल में स्नान करते उनके; पॉम्मल्–समूहों को; कण्णिन्–आँखों से; माऱा–निरन्तर बहनेवाली; नीर् आऱु–अश्रुजल की नदी को; करुङ्कटल् मटुप्प–काले सागर में पहुँचने देते हुए; कण्टान्–देखा । ३५७४

उसने यह भी देखा कि संज्ञाहीन गजों की लाशों को बहा लेती हुई, भूमि के भीगे भागों को निकालती हुई और पर्वतों को उखाड़ लेती हुई व्रणों के ताज़े रक्त की नदी बह रही है। अनेक प्रेत ताज़े (रक्त-) जल में स्नान कर रहे हैं। यह सब देखा तो उसकी आँखों से अश्रु की धारा बह चली और समुद्र से जा मिली। ३५७४

मुऱ्ऱियऱ् चिलैव लाळन् मॉय्क्कणै तुमिप्प वावि
पॅऱ्ऱियल् पॅऱ्ऱि पॅऱ्ऱा मॅन्नवा ळरक्कर् याक्कै
शिऱ्ऱियऱ् कुरुङ्गा लोरिक् कुरल्हॉळै यिशैयाप् पल्बेय्
कऱ्ऱियल् पाणि कॉट्टक् कळिनडम् बयिलक् कण्डान् 3575

चिऱु इयल्–छोटी बनावट और; कुऱु काल्–नाटे पैर वाले; ओरि कुरल्–सियार का स्वर; कॉळै इचैया–गाने का राग बना; पल् पेय्–अनेक प्रेतों के; कऱ्ऱु इयल्–अपनी शिक्षा के अनुसार; पाणि कॉट्ट–करताल लगाते; मुऱ्ऱु इयल्–पूर्णता-प्राप्त; चिलै वलाळन्–धनुर्विद्यादक्ष श्रीराम के; मॉय् कणै–घने बाणों के; तुमिप्प–काटने से; आवि पॅऱ्ऱु–जीवन पाकर; इयल्–हिलाने की; पॅऱ्ऱि पॅऱ्ऱाम्–स्थिति पा गये; अॅन्न–कहकर; वाळ् अरक्कर् याक्कै–क्रूर राक्षसों के झुंड; कळि नटम्–मस्ती से नृत्य; पयिल–कर रहे थे; कण्टान्–देखा । ३५७५

रावण ने देखा कि छोटे आकार और नाटे पैरों के सियारों के स्वर को गाना मानकर विविध प्रेतों के करताल के लय में राक्षस कबंध इस आनन्द के साथ नाच रहे हैं कि पूर्ण धनुकुशल श्रीराजाराम के अपूर्व धनु से कटने के कारण हम में यह नाचने की शक्ति आयी ! । ३५७५

विण्गळिऱ् चॅन्ऱ वन्ऱोट् कणवरै यलहै वॅय्य
पुण्गळिऱ् कैहळ् नीट्टिप् पुदुनिणङ् गवर्व नोक्कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मण्गळिऱ् ऱॊडर्न्दु वाळिऱ् पिडित्तु वळ्ळुहिरिन् मानक्
कण्गळैच् चूऱ्ऱु नीक्कु मरक्कियर् हुळामुङ् गण्डान् 3576

विण्कळिऱ् चॆऱ्ऱ–स्वर्गलोकों में जो गये; बल् तोळ् कणवऱ्–बलवान कन्धों वाले पतियों को; अलकॆ–प्रेत; वॆय्य पुण्कळिल्–कठोर व्रणों में; कैकळ् नीट्टि–हाथ डालकर; पुतु निणम्–ताजे मज्जे; कवर्व–ले रहे हैं, उसे; नोक्कि–देखकर; मण्कळिल् तॊटर्न्तु–भूमि पर पीछा करके; वाळिल्–तलवार से; वळ् उकिरिन्–और तेज नाखून से; पिटित्तु–पकड़कर; मानम् कण्कळै–बड़ी आँखों को; चूऱ्ऱु नीक्कुम्–खोद लेनेवाली; अरक्कियर् कुळामुम्–राक्षसियों के समूहों को भी; कण्टान्–देखा रावण ने। ३५७६

राक्षस वीरों के जीव स्वर्ग चले गये। इधर युद्धभूमि पर पड़े उनके शरीर के ताज़े व्रणों में प्रेत हाथ डालकर मज्जे निकालने लगे। इसको उन वीरों की पत्नियों ने देखा तो उन्हें असत्य लगा। वे भूमि पर दौड़ती गयीं और अपनी-अपनी तलवारों से या अपने तेज़ नाखूनों से अपनी बड़ी आँखें नोच लेने लगीं। रावण ने ऐसी राक्षसियों के समूहों को देखा। ३५७६

कुमिळिनी रोडुञ् जोरिक् कनलॊडुङ् गॊळिक्कुङ् गण्णान्
तमिळ्नॆऱि वळ्क्किन् मन्नन् दनिच्चिलै वळङ्गच् चाय्न्दार्
अमिळ्बॆरुङ् गुरुदि वॆळ्ळ माऱ्ऱुवाय् मुहत्तिऱ् ऱेक्कि
उमिळ्वदे यॊक्कुम् वेलै योदम्वन् दुडऱ्ऱ् कण्डान् 3577

कुमिळि नीरोटुम्–भँवरों-सह (अश्रु-) जल के साथ; कनलॊटु–आग और; चोरि–रक्त; कॊळिक्कुम्–से भरी; कण्णान्–आँखों वाले रावण ने; तमिळ् नॆऱि वळ्क्किल्–तमिळ-संप्रदाय के अनुसार; मन्नन् तनि चिलै–श्री राजाराम के अतिशय धनु के कारण; वळङ्क चाय्न्तार्–जो मरे; अमिळ्–उनके डुबानेवाले; पॆरु–बड़े; कुरुति वॆळ्ळम्–रक्त के प्रवाह को; तेक्कि–पीकर; आऱ्ऱुवाय् मुकत्तिल्–नदी के मुख-द्वार से; उमिळ्वते ऒक्कुम्–उगल रहा हो ऐसा दिखनेवाले; वेलै ओतम्–समुद्र के प्रवाह को; वन्तु उटऱ्ऱ्–आकर लहराता; कण्टान्–देखा। ३५७७

रावण की आँखें भँवर-सहित अश्रुजल, अनल और रक्त से भर गयीं। उसने देखा कि तमिळवासियों की उदारता के समान श्रीराजाराम के अत्यंत उदारता के साथ प्रेरित शरों से आहत होकर जो मरे, उनका रक्त-प्रवाह इतना गहरा था कि वह किसी को भी अपने अन्दर मग्न कर ले सकता था। समुद्र ऐसा लहराता था मानो वह इस रक्त को पीकर नदीमुखद्वार के ज़रिए उगल रहा हो। ३५७७

विण्पिळन् दॊल्ह वार्त्त वानरर् वीक्कङ् गणडान्
मण्पिळन् वळुन्द वाडुङ् गवन्दत्तिन् वरुक्कङ् गणडान्
कण्पिळन् दॊक्क वार्क्कुम् वान्मुनि कणङ्गळ् कण्डान्
पुण्पिळन् दनैय नॆञ्जन् कोबुरत् तिळिन्दु पोन्दान् 3578

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विण् पिळन्तु–आकाश फटकर; ऑल्क–हिल जाय ऐसा; आर्त्त–नाद उठानेवाले; वानर् वीक्कम्–वानरों की भीड़; कण्टान्–देखी; मण् पिळन्तु–भूमि फटकर; अऴुन्त–नीचे जाय ऐसा; आटुम्–नाचनेवाले; कवन्तत्तिन् वरुक्कम्–कबन्ध का वर्ग; कण्टान्–देखा; कण् पिळन्तु–आँखें फाड़कर; ऑक्क आर्क्कुम्–एक साथ आनन्दरव मचानेवाले; वान् मुनि कणङ्कळ्–श्रेष्ठ मुनियों के वृन्दों को; कण्टान्–देखा; पुण् पिळन्तनैय नॅञ्चन्–खुले व्रण के समान मनवाला रावण; कोपुरत्तु–गोपुर से; इऴिन्तु पोन्तान्–उतरकर चला। ३५७८

उसने आकाश फाड़ते हुए चिल्लानेवाले वानर-झुंड देखे। भूमि को फाड़कर पाताल में पहुँचाते हुए नाचनेवाले कबंधवृन्दों को देखा। आँखें फाड़कर देखते हुए आनंदरव उठानेवाले श्रेष्ठ मुनियों के समूह देखे। उसका मन खुले व्रण के जैसा हो गया। वह गोपुर से उतरकर चला। ३५७८

नहैपिऱक् किन्ऱ वायन् नाक्कॊडु कडैवाय् नक्कप्
पुहैपिऱक् किन्ऱ मूक्कन् पॊऱिपिऱक् किन्ऱ कण्णन्
मिहैपिऱक् किन्ऱ नॅञ्जन् वॅञ्जिनत् तीमेल् वीङ्गिच्
चिहैपिऱक् किन्ऱ शॊल्ल नरशिय लिरुक्कै शेर्न्दान् 3579

नकै पिऱक्किन्ऱ वायन्–हासमुख; ना कॊटु–जीभ से; कटैवाय् नक्क–मुख के कोनों को चाटते हुए; पुकै पिऱक्किन्ऱ–धुआँ जिससे निकले; मूक्कन्–ऐसी नाक वाला; पॊऱि पिऱक्किन्ऱ–अंगारे जिससे निकलें; कण्णन्–ऐसी आँखों वाला; मिकै पिऱक्किन्ऱन–अतिक्रमजनक; नॅञ्चन्–चित्त वाला; वॅम् चिनम्–भयंकर क्रोध को; ती–अग्नि; मेल् वीङ्कि–ऊँची बढ़कर; चिकै पिऱक्किन्ऱ–ज्वालाएँ पैदा करे ऐसा; चॊल्लन्–बचन वाला; अरचियल् इरुक्कै–राज्यासन (मण्डप); चेर्न्तान्–पहुँचा। ३५७९

उसका मुख क्रोध की हँसी से युक्त हुआ। जीभ मुख के कोनों को चाट रही थी। नाक से धुआँ निकला और आँखों से अंगारे छूटे। मन में अतिक्रम के भाव उठ रहे थे। शब्द ऐसे लगे मानो कोपाग्नि के बढ़ने से उठी ज्वालायें हों। वह इस स्थिति में मंत्रणा-मण्डप में गया और राजासन पर बैठा। ३५७९

34. इरावणन् तेरेऱु पडलम् (रावण-रथारोहण पटल)

पूदर मनैय मेनिप् पुहैनिऱप् पुरुवच् चॅङ्गण्
मोदर नॅन्नु नामत् तॊरुवनै मुऱैयि नोककि
एदुळ दिऱन्दि लाद दिलङ्गैयू रिरुन्द शेनै
यादेयु मॅळुहॅन् ऱानै यणिमुर शेऱु हॅन्ऱान् 3580

पूतरम् अनैय मेनि–भूधर-सा शरीर; पुकै निऱ–धुएँ के-से रंग की; पुरुव–भौंहें; चॅम् कण्–लाल आँखें; मोतरन् ऍन्नुम् नामत्तु–(जिसकी थीं उस) महोदर नाम के;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑरवत्तै–एक राक्षस को; मुऱैयिन् नोक्कि–क्रम से देखकर; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर में; इऱन्तिलाततु इरुन्त–जो मरी नहीं हैं; चेनै–सेनाएँ; एतु उळतु–जितनी हैं; यातैयुम्–उन सभी को; ऍऴुक ऍन्ऱु–कूच करो ऐसा; आनै–हाथी पर; अणि मुरचु–सुन्दर भेरी; एऱ्ऱक–चढ़ाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ३५८०

रावण ने महोदर पर जो भूधर के-से आकार का था, जिसकी भौंहें धुएँ के रंग की थीं और जिसकी आँखें लाल थीं, ठीक प्रकार से देखकर आज्ञा सुनायी कि जो भी सेनाएँ बची हैं, वे सब युद्ध में जाएँ। हाथी पर नगाड़ा चढ़ाओ और बजाकर यह संदेश फैला दो। ३५८०

ऍऱ्ऱिन मुरशि नोडु मेऴिरु नूऱु कोडि
कॊऱ्ऱवा णिरुदर् शेनै कुऴीइयदु कॊडित्तिण् डेरुञ्
जुऱ्ऱुरु तुळैक्कै मावुन् दुरहमुम् बिऱवुन् दॊक्क
वऱ्ऱिन वेलै यॆन्न विलङ्गैयूर् वऱळिऱ् ऱाह 3581

मुरचु ऍऱ्ऱिन ओटुम्–नगाड़े के बजते ही; एऴु इरु नूऱु कोटि–सात के दो (चौदह) सौ करोड़; कॊऱ्ऱम् वाळ् निरुतर् चेनै–विजयी तलवारधारी वीरों की सेना; कुऴीइयतु–एकत्र हुई; वऱ्ऱिन वेलै ऍन्न–शुष्क सागर के समान; इलङ्कै ऊर्–लंका नगर; वऱळिऱुरु आक–खाली करते हुए; कॊटि तिण् तेरुम्–ध्वजायुक्त सबल रथ; चुऱ्ऱुरु–उनको घेरकर; तुळै कै मावुम्–रंध्रसहित सूँड़ वाले हाथी; तुरकमुम्–तुरग; पिऱवुम्–और अन्य; तॊक्क–जमा हुए। ३५८१

मुनादी के पिटने पर चौदह सौ करोड़ विजयभूषित, तलवारधारी वीरों की राक्षस पदाति सेना इकट्ठी हुई। लंकानगर जलशुष्क सागर के समान रिक्त हो जाए, ऐसा ध्वजा से अलंकृत सुदृढ़ रथों के साथ नली से युक्त सूँड़वाले हाथी, घोड़े और अन्य इकट्ठे हुए। ३५८१

ईशनै यिमैया मुक्क णिऱैवनै यिरुमैक् केऱ्ऱु
पूशनै मुऱैयिऱ् चॆय्दु तिरुमऱै पुहन्ऱु दानम्
वीशिन नियऱ्ऱि मऱ्ऱुम् वेट्टन वेट्टोर्क् कॆल्लाम्
आशऱु नल्हि यॊल्हाप् पोर्त्तॊऴिऱ् कमैव दानान् 3582

ईचनै–ईश्वर; इमैया–अपलक; मुक्कण इऱैवनै–त्रिनेत्र देव को; इरुमैक्कु एऱ्ऱु–इह-पर के योग्य; पूचनै–पूजा को; मुऱैयिन् चॆय्तु–यथाक्रम करके; तिरु मऱै पुकन्ऱु–उत्तम वेदोक्त; तानम्–दानों को; वीचिनन् इयऱ्ऱि–लुटाते हुए करके; मऱ्ऱुम्–और; वेट्टोर्क्कु ऍल्लाम्–सभी चाहनेवालों को; वेट्टन–उनकी चाह की वस्तुओं को; आचु अऱु–निर्दोष रीति से; नल्कि–देकर; ऑल्का–अक्षय (दीर्घ); पोर् तॊऴिऱ्कु–युद्धकृत्य के लिए; अमैवतु आनान्–तैयार हुआ। ३५८२

रावण ने अपलक त्रिनेत्र शिव की इह-पर-हितार्थ आवश्यक पूजा की। वेदोक्त दान उदारता के साथ दिए। और भी जिन्होंने जो जो चाहा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन्हें वह सभी दिया। फिर वह दीर्घ युद्ध के लिए तैयारी करने लगा। ३५८२

अरुवि यञ्जनक् कुन्ऱिडै यायिर मरुक्कर्
उरुवि नोडुम्वन् दुदित्तन राम्ऍन वॊळिरक्
करुवि नान्मुहन् वेळ्वियिऱ् पडैत्तदुङ् गट्टिच्
चॆरुवि लिन्दिरन् इन्दपॊऱ् कवशमुञ् जेर्त्तान् 3583

अरुवि–नदियों-सहित; अञ्चन कुन्ऱिटै–काले पर्वत में; आयिरम् अरुक्कर्–सहस्र सूर्य; उरुवि नोडुम्–अपने उज्ज्वल रूप में; वन्तु उतित्तनर् आम्–आ उदित हों; ऍन–जैसे; ऒळिर–प्रकाश फैलाकर; नान्मुकन्–चतुर्मुख; वेळ्वियिल्–यज्ञ में; पटैत्तनु–कृत; करुवि उम्–कवच; कट्टि–बाँधकर; चॆरुविल्–युद्ध में; इन्तिरन् तन्त–इन्द्रदत्त; पॊन् कवचमुम्–स्वर्ण-कवच भी; चेर्त्तान्–लगाकर बाँध लिया। ३५८३

स्वकृत यज्ञ में चतुर्मुख द्वारा सृष्ट एक कवच पहन लिया। वह कवच अपने उत्कृष्ट रूप में नदियों-सहित पर्वत पर उदित सहस्र सूर्यों का-सा प्रकाश छिटका रहा था। उस पर वह स्वर्ण कवच भी बाँध लिया जो कि (विजित) इन्द्र-दत्त था। ३५८३

वाळ्व लम्बड मन्दरञ् जूळ्न्दमा शुणत्तिन्
ताळ्व लन्दॊळिर् दमनियक् कच्चॊडुञ् जार्त्तिक्
कोळ्व लन्दन कुविन्दन वामॆनुङ् गॊळ्है
मीळ्विल् किम्बुरि मणिक्कडि शूत्तिरम् वीक्कि 3584

मन्तरम् चूळ्न्त–मंदर पर लिपटे; माचुणत्तिन्–(वासुकी) नाग के समान; ताळ्–रस्सी से; वलन्तु–लपेट बाँधकर; ऒळिर्–प्रकाश छिटकानेवाली; तमनियम् कच्चॊडुम्–स्वर्ण के कमरबन्द के साथ; वाळ्–तलवार को; वलम् पट–दाहिनी तरफ़; चार्त्ति–लगा लेकर; कोळ्–ग्रह; कुविन्तन–एकत्र हो; वलन्तन–चारों ओर लगे रहे; आम् ऍनुम् कॊळ्कै–ऐसा मान्य रीति से; मीळ्वु इल्–अमिट; किम्पुरि–किंपुरी नामक आभरण और; मणि कटि चूत्तिरम्–रत्ननिर्मित कटि-सूत्र भी; वीक्कि–बाँधकर। ३५८४

फिर स्वर्ण का कमरबन्द पहन लिया, जो मंदरपर्वत को लपेटकर बाँधे गये वासुकी नाग के समान रस्सी से खूब बाँधा गया था। दायीं तरफ़ तलवार लटका ली। सभी ग्रह चारों तरफ़ से एकत्रित हों—ऐसा 'किंपुरी' नामक आभरण पहन लिया। उसके ऊपर कटिसूत्र बाँध लिया। ३५८४

मऱैवि रित्तॆन्न वाडुऱु मानमाक् कलुळन्
शिऱैवि रित्तॆन कॊय्शह मरुङ्गुऱुच् चेर्त्ति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुऱैवि रित्तॅऩ्ऩ मुऱुक्किय कोशिह मरुङ्गिऱ्
पिऱैवि रित्तऩ्ऩ वॅळ्ळॅयिऱ् ऱरवमुम् बिणित्तु 3585

मऱै विरित्तु अॅऩ्ऩ–वेद को फैलाकर रखा हो जैसे; आटु उऱ–हिलनेवाले; मात मा कलुऴत्–गुरु महा गरुड़ के; चिऱै विरित्तॅऩ्ऩ–पंख फैले हों जैसे; कॉय्चकम्–शिकनों को; मरुङ्कु उऱ–वस्त्र में पार्श्व में हों ऐसे; चेर्त्ति–पहनकर; मुऱै विरित्तॅऩ्ऩ–क्रम माने गये हों जैसे; मऱुक्किय–ऐंठन लगे; कोचिकम्–कौशेय को; मरुङ्किल्–कमर में (लपेटकर); पिऱै विरित्तॅऩ्ऩ–अर्धचन्द्र फैला हो जैसे; वॅळ् ऍयिऱु अरवुम्–सफ़ेद दाँतों वाले सर्प को; पिणित्तु–लपेटकर। ३५८५

वेदविस्तार के समान (पक्ष फैलाकर) नाचनेवाले शालीन गरुड़ के पक्ष फैले हों, ऐसी वस्त्र की शिकनों से लगी नीवि को उचित रीति से बाँध लिया। क्रमबद्ध-रूप से ऐंठे हुए कौशेय वस्त्र को अनेक बार कमर से लपेट लिया। उसके ऊपर अर्द्धचंद्रों का फैलाव हो जैसा सफ़ेद दाँतोंवाले सर्प को बाँध लिया। ३५८५

मऴैक्कु लत्तिडै वविय़ुमिऩ् ऩिऩङ्गळै वारि
इऴैत्तॅ डुत्तॅऩ वऩैन्दिडु मुडैमणि यिशैत्तु
मुऴैक्कि डऩ्दपल् लरियिऩ मुऴङ्गु पोरार्प्पिऱ्
ऱऴैक्कु मित्ऩौळिप् पॊऩ्मणिच् चदङ्गैयुञ् जात्ति 3586

मऴै कुलत्तिटै–मेघसमूहमध्य; वतियुम्–रहनेवाली; मित् इऩङ्कळै–बिजलियों के समूहों को; वारि–एक साथ मिलाकर; इऴैत्तु अॅदुत्तु अॅऩ–बनाया गया हो जैसे; वऩैत्तिटुम्–निर्मित; उटै मणि–'कमरघण्टी'; इचैत्तु–बाँधकर; मुऴै किटऩ्त–कंदराओं में पड़े रहे; पल् अरि इऩम्–अनेक सिंहवृन्द; मुऴङ्कु पोर् आर्प्पिऩ्–एक साथ गरज रहे हों, ऐसा उठे नाद से; तऴैक्कुम् मित् औळि–समृद्ध बिजली के-से प्रकाशवाले; पॊऩ् मणि चतङ्कैयुम्–स्वर्णघुंघुरुओं की लड़ियाँ; चात्ति–साथ बाँधकर। ३५८६

मेघसमूहमध्य चमकनेवाली बिजली-समूहों को एक साथ मिलाकर बनायी गयी हो—ऐसी "वस्त्रघंटी" पहन ली। उस पर कंदरा-स्थित अनेक सिंहों के गर्जन के समान शब्द उठानेवाली और पुष्कल प्रकाशमय घुंघुरुओं की लड़ी पहन ली। ३५८६

उरुमि डित्तपो दरवुऱु मऱुक्कम्बा ऩुलहित्
इरुनि लत्तिडै यॅव्वुल हत्तिडै यारुम्
पुरिद रप्पडुम् पॊलङ्गळ् लिलङ्गुऱप् पूट्टिच्
चरियु डैच्चुडर् शाय्नलञ् जार्वुऱच् चात्ति 3587

उरुम् इटित्त पोतु–वज्र जब टूटता हो; अरवु उऱु मऱुक्कम्–तब सर्प जो बेचैनी पाता है वह; वात् उलकिऩ्–व्योमलोक में; इरु निलत्तिटै–और बड़े भूलोक में; अॅ उलकत्तिटै–किसी भी लोक में; यारुम्–सभी; पुरि तर–(व्याकुलता)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पा जाएँ ऐसा; पॊलम् कऴल्-स्वर्ण-कड़ों को; इलङ्कु उऱ्-शोभा दें, ऐसा; पूट्टि-पहनकर; चरि उटै-ढीले अधोवस्त्र की; चुटर्-छटा; चाय्-(पायल की) छवि के; नलन्-प्रभाव से; चार्वु उऱ्-संयुक्त रहे ऐसा; चात्ति-बाँधकर। ३५८७

फिर उसने स्वर्ण-पायल पहन ली। वह ऐसी थी, जिसका नाद आकाश-लोक, भूलोक क्या सभी लोकों के वासियों को ऐसा त्रास दे सकता, जो वज्रनाद-सर्प को देता है! उसकी छवि अधोवस्त्र की छटा से मेल खाकर खूब रही थी। ३५८७

नालञ् जाहिय करङ्गळि नऩन्दलै यऩन्दन्
आलञ् जार्मिडर् ऱरुङ्गऱै किडन्दॆऩ विलङ्गुम्
कोलञ् जार्नॆडुङ् गोदैयुम् बुट्टिलुङ् गट्टित्
तालञ् जार्न्दमा शुणमॆनक् कङ्गणन् दऴुव 3588

नाल् अञ्चु आकिय-(४×५) बीस; करङ्कळिल्-हाथों में; नऩ तलै-बड़े सिरों के; अतन्तऩ्-आदिशेषनाग के; आलम् चार्-विष के स्थान; मिटङ्-गले का; अरुम् कऱै-अपूर्व कलंक; किटन्तु ऎऩ-रहता जैसा; इलङ्कुम्-विद्यमान; कोलम् चार्-सुन्दर; नॆटु कोतैयुम्-लम्बे चमड़े के हस्तत्राण; पुट्टिलुम्-और अंगुलीत्राण; कट्टि-लगा लेकर; तालम्-तालवृक्ष पर; चार्न्त-लिपटे; माचुणम् ऎऩ-सर्प के समान; कङ्कणम्-कंकण; तऴुव-बलयित रहे ऐसा। ३५८८

बीसों हाथों में चमड़े के हस्तत्राण लगा लिये। वे मोटे आदि-शेषनाग के कंठ के विष के धब्बे के समान लगते थे। फिर अंगुलित्राण भी लगा लिये। ताल-तरु से लिपटे सर्प के समान कंकण भी पहन लिये। ३५८८

कटल्ह डॆन्दमाल् वरैयिऩैच् चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱिऩ्
अडल्ह डन्ददो ळलङ्गुपोर् वलयङ्ग ळिलङ्ग
उडल्ह डॆन्दना ळॊळियव ऩुदिर्न्दपॊऱ् कदिरिऩ्
शुडर्द यङ्गुऱक् कुण्डलञ् जॆवियिडैत् तूक्कि 3589

कटल् कटॆन्त-समुद्रमथनकारी; माल् वरैयिऩै-बड़े पर्वत को; चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱिऩ्-जो लिपटा रहा उस (वासुकी) नेति के; अटल् कटन्त-बल से अधिक बलवान; तोळ्-कंधों पर; अलङ्कु-हिलनेवाले; पोर् वलयङ्कळ्-युद्ध के समय पहने जानेवाले बाहुवलय; इलङ्क-शोभित रहे; उटल् कटॆन्त नाळ्-(सूर्य का) शरीर जब मथा गया तब; ऒळियवऩ्-किरणमाली ने; उतिर्त्त-जो गिरायीं; पॊऩ् कतिरिऩ्-स्वर्णमय किरणों का-सा; चुटर्-प्रकाश; तयङ्कुऱ-आता रहे ऐसा; चॆवियिटै-कानों में; कुण्टलम् तूक्कि-कुंडल लटकाकर। २५८९

भुजाओं पर बाहुवलय पहने जो समुद्रमथनकारी मंदर पर्वत के चारों ओर लिपटे वासुकी-नेति के समान लगे। कानों में कुंडल पहन लिये जिनसे उसी भाँति स्वर्णमय रोशनी छूटती थी जिस भाँति सूर्य से तब किरणें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

छूटीं जब उसके शरीर को मथा (तराशा) गया था। [यह एक विचित्र कहानी है। उसका उल्लेख स्कंदपुराण, वेळूर् पुराण आदि में है। कहानी यों है। एक सुंदर मुनिपत्नी थी जिसके अति प्यारे पति जब कभी बाहर उसे छोड़कर जाते तब उसके प्राण अलग करके अपने साथ ले जाया करते थे। एक दिन इन्द्र और सूर्य उससे संभोग की कामना करके उसके पास आये और इंद्र उसका प्राण हुआ और सूर्य ने उसे भोग लिया। मुनि ने आकर समाचार जाना तो शाप दिया कि सूर्य प्रकाशहीन हो जाए। फिर विश्वकर्मा ने सूर्य को मथकर (तराशकर) प्रकाशमय बना दिया।]। ३५८९

उदयक् कुन्ड्रत्तो डत्तत्ति नुलावुङ्ग कदिरिन्
तुदैयुङ् गुङ्गुमत् तोळोडु तोळिडत् तोडरप्
पुदैयि रुट्पहैक् कुण्डलञ् जॅविदोऱुम् बॉलियच्
चिदैवि ऱिङ्गळु मीनुम्बोन् मुततिन्न् दिहळ 3590

कुङ्कुमम् तोळोटु तोळिटै–कुंकुमचर्चित कंधों में; तोटर–लगातार; पुतै इरुळ् पक्कै–संसार को ढँकनेवाले अन्धकार का शत्रु; कुण्डलम्–कुंडल; उदय कुन्ड्रत्तोटु–उदयाचल से; अत्तत्तिन्–अस्ताचल तक; उलावुङ्ग–घूमनेवाले; कतिरिन्–सूर्य के समान; तुतैयुम्–घने बने; चॅवि तोडम्–हर-कान में; पॉलिय–शोभायमान रहे; चितैवु इल्–अक्षय; तिङ्कळुम्–चन्द्र और; मीनुम् पोल्–नक्षत्र के समान; मुत्तु इनम्–मुक्ताहारों के; तिकळ–शोभायमान रहते। ३५९०

कुंकुमचर्चित कंधों पर उदयाचल और अस्ताचल के मध्य घूमने वाले किरणमाली के समान लोकाच्छादक अन्धकार के शत्रु लगे हिलने वाले कुंडल कान-कान में शोभ रहे थे। फिर मुक्ताहार पहन लिये जिनके मोती अक्षयदीप्तिराशि सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की-सी छटा से युक्त थे। ३५९०

वेलै वाय्वन्दु वॅय्यव रनैवरुम् विडियुङ्
गालै युऱ्ऱन रामॅनक् कदिर्मुडि कालुम्
मालै पत्तिन्मेन् मदियमु नाळिडैप् पलवाय्
एल मुऱ्ऱिय वनैयमुत् तक्कुडै यिमैप्प 3591

वॅय्यवर् अनैवरुम्–सभी सूर्य; विटियुम् कालै–प्रातःकाल में; वेलै वाय् वन्दु उऱ्ऱतर्–सागर में आ पहुँचे; आम् ऑन–हों जैसे; कतिर् कालुम्–किरणजाल निःसृत करनेवाले; मालै मुटि पत्तिन् मेल्–पंक्ति में रहे दसों किरीटों पर; मुन् नाळ् इटै–पूर्व (शुक्ल) पक्ष-मध्य; पल आय्–विविध जो कलाएँ हैं उनके; एल–साथ; मुऱ्ऱिय मतियम्–पूर्णचन्द्र; अनैय–के समान; मुत्त कुटै–मोतियों के झालरों के साथ; इमैप्प–शोभायमान रहा (उसके ऐसा रहते)। ३५९१

उसके माला से अलंकृत दसों किरीटों से ऐसा प्रकाश छूट रहा था,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पा जाएँ ऐसा; पॊलम् कऴल्-स्वर्ण-कड़ों को; इलङ्कु उऱ-शोभा दें, ऐसा; पूट्टि-पहनकर; चरि उटै-ढीले अधोवस्त्र की; चुटर्-छटा; चाय्-(पायल की) छवि के; नलन्-प्रभाव से; चार्वु उऱ-संयुक्त रहे ऐसा; चात्ति-बाँधकर। ३५८७

फिर उसने स्वर्ण-पायल पहन ली। वह ऐसी थी, जिसका नाद आकाश-लोक, भूलोक क्या सभी लोकों के वासियों को ऐसा त्रास दे सकता, जो वज्रनाद-सर्प को देता है! उसकी छवि अधोवस्त्र की छटा से मेल खाकर खूब रही थी। ३५८७

नालञ् जाहिय करङ्गळि ऩऩन्दलै यऩन्दन्
आलञ् जार्मिडऱ् ऱरुङ्गऱै किडन्दॆऩ विलङ्गुम्
कोलञ् जार्नॆडुङ् गोदैयुम् बुट्टिलुङ् गट्टित्
तालञ् जार्न्दमा शुणमॆऩक् कङ्गणन् दऴुव 3588

नाल् अञ्चु आकिय-(४×५) बीस; करङ्कळिल्-हाथों में; ऩऩ तलै-बड़े सिरों के; अऩन्तऩ्-आदिशेषनाग के; आलम् चार्-विष के स्थान; मिटऱु-गले का; अरुम् करै-अपूर्व कलंक; किटन्तु ऎऩ-रहता जैसा; इलङ्कुम्-विद्यमान; कोलम् चार्-सुन्दर; नॆटु कोतैयुम्-लम्बे चमड़े के हस्तत्राण; पुट्टिलुम्-और अंगुलीत्राण; कट्टि-लगा लेकर; तालम्-तालवृक्ष पर; चार्न्त-लिपटे; माचुणम् ऎऩ-सर्प के समान; कङ्कणम्-कंकण; तऴुव-बलयित रहे ऐसा। ३५८८

बीसों हाथों में चमड़े के हस्तत्राण लगा लिये। वे मोटे आदि-शेषनाग के कंठ के विष के धब्बे के समान लगते थे। फिर अंगुलित्राण भी लगा लिये। ताल-तरु से लिपटे सर्प के समान कंकण भी पहन लिये। ३५८८

कटल्ह डैन्दमाल् वरैयिऩैच् चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱिऩ्
अडल्ह डन्ददो ळलङ्गुपोर् वलयङ्ग ळिलङ्ग
उडल्ह डॆन्दना ळॊळियव ऩुदिर्न्दपॊऱ् कदिरिऩ्
शुडर्द यङ्गुऱक् कुण्डलञ् जॆविय्यिडैत् तूक्कि 3589

कटल् कटैन्त-समुद्रमथनकारी; माल् वरैयिऩै-बड़े पर्वत को; चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱिऩ्-जो लिपटा रहा उस (वासुकी) नेति के; अटल् कटन्त-बल से अधिक बलवान; तोळ्-कंधों पर; अलङ्कु-हिलनेवाले; पोर् वलयङ्कळ्-युद्ध के समय पहने जानेवाले बाहुवलय; इलङ्क-शोभित रहे; उटल् कटैन्त नाळ्-(सूर्य का) शरीर जब मथा गया तब; ऒळियवऩ्-किरणमाली ने; उतिर्न्त-जो गिरायीं; पॊऩ् कतिरिऩ्-स्वर्णमय किरणों का-सा; चुटर्-प्रकाश; तवङ्कुऱ-आता रहे ऐसा; जॆविय्यिडै-कानों में; कुण्डलम् तूक्कि-कुंडल लटकाकर। २५८९

भुजाओं पर बाहुवलय पहने जो समुद्रमथनकारी मंदर पर्वत के चारों ओर लिपटे वासुकी-नेति के समान लगे। कानों में कुंडल पहन लिये जिनसे उसी भाँति स्वर्णमय रोशनी छूटती थी जिस भाँति सूर्य से तब किरणें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

छूटीं जब उसके शरीर को मथा (तराशा) गया था। [यह एक विचित्र कहानी है। उसका उल्लेख स्कंदपुराण, वेळूर् पुराण आदि में है। कहानी यों है। एक सुंदर मुनिपत्नी थी जिसके अति प्यारे पति जब कभी बाहर उसे छोड़कर जाते तब उसके प्राण अलग करके अपने साथ ले जाया करते थे। एक दिन इन्द्र और सूर्य उससे संभोग की कामना करके उसके पास आये और इंद्र उसका प्राण हुआ और सूर्य ने उसे भोग लिया। मुनि ने आकर समाचार जाना तो शाप दिया कि सूर्य प्रकाशहीन हो जाए। फिर विश्वकर्मा ने सूर्य को मथकर (तराशकर) प्रकाशमय बना दिया।]। ३५८९

उदयक् कुन्ऱत्तो डत्तत्ति नुलावुऱु कदिरिन्
तुदंयुङ् गुङ्गुमत् तोळोडु तोळिडत् तॊडरप्
पुदैयि रुट्पहैक् कुण्डलञ् जॆविदॊऱुम् बॊलियच्
चिदैवि ऱिङ्गळु मीनुम्बोन् मुततिन्नन् दिहळ 3590

कुङ्कुमम् तोळोटु तोळिटं–कुंकुमचर्चित कंधों में; तॊटर–लगातार; पुतै इरुळ् पकै–संसार को ढँकनेवाले अन्धकार का शत्रु; कुण्डलम्–कुंडल; उतय कुन्ऱत्तोटु–उदयाचल से; अत्तत्तित्–अस्ताचल तक; उलावुऱु–घूमनेवाले; कतिरिन्–सूर्य के समान; तुतैगुम्–घने बने; चॆवि तॊऱम्–हर कान में; पॊलिय–शोभायमान रहे; चितैवु इल्–अक्षय; तिङ्कळुम्–चन्द्र और; मीनुम् पोल्–नक्षत्र के समान; मुत्तु इनम्–मुक्ताहारों के; तिकळ–शोभायमान रहते। ३५९०

कुंकुमचर्चित कंधों पर उदयाचल और अस्ताचल के मध्य घूमने वाले किरणमाली के समान लोकाच्छादक अन्धकार के शत्रु लगे हिलने वाले कुंडल कान-कान में शोभ रहे थे। फिर मुक्ताहार पहन लिये जिनके मोती अक्षयदीप्तिराशि सूर्य, चंद्र और नक्षत्रों की-सी छटा से युक्त थे। ३५९०

वेलै वाय्वन्दु वॆय्यव रनैवरुम् विडियुङ्
गालै युऱ्ऱन रामॆनक् कदिर्मुडि कालुम्
मालै पत्तित्मेन् मदियमु नाळिडैप् पलवाय्
एल मुऱ्ऱिय वनैयमुत् तक्कुडै यिनैप्प 3591

वॆय्यवर् अनैवरुम्–सभी सूर्य; विडियुम् कालै–प्रातःकाल में; वेलै वाय् वन्दु उऱ्ऱनर्–सागर में आ पहुँचे; आम् ऎन–हों जैसे; कतिर् कालुम्–किरणजाल निःसृत करनेवाले; मालै मुटि पत्तित् मेल्–पंक्ति में रहे दसों किरीटों पर; मुत् नाळ् इटै–पूर्व (शुक्ल) पक्ष-मध्य; पल आय्–विविध जो कलाएँ हैं उनके; एल–साथ; मुऱ्ऱिय मतियम्–पूर्णचन्द्र; अनैय–के समान; मुत्त कुटै–मोतियों के झालरों के साथ; इनैप्प–शोभायमान रहा (उसके ऐसा रहते)। ३५९१

उसके माला से अलंकृत दसों किरीटों से ऐसा प्रकाश छूट रहा था,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मानो सभी सूर्य एक साथ समुद्र पर उदित होकर किरणजाल फैला रहे हों। उनके ऊपर सभी कलाओं से युक्त पूर्णचंद्र जैसे मोतियों के झालरों के साथ श्वेत छत्र शोभायमान था। ३५९१

पहुत्त पल्वळक् कुन्ऱिनिन् मुऴैयन्न पहुवाय्
वहुत्त वान्कडत् तिशैतोऱुम् वळैयॆयिऱ् ऱीट्टम्
मिहुत्त नीलवान् मेहञ्जूऴ् विशुम्बिडैत् तशुम्बू
ङुहुत्त शॆक्करिऱ् पिऱैक्कुल मुळैत्तन वॊक्क 3592

पल् वळम् पकुत्त–विविध श्रेणियों में विभक्त; कुन्ऱिनिन्–पर्वत में; मुऴै अन्न–कन्दराओं के समान; वकुत्त पकुवाय्–अलग-अलग फटे से मुंह के; वान्–बड़े; कटै–कोरों में; तिचै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में दिखनेवाले; वळै ऍयिऱ ईट्टम्–समूह के वक्र दाँत; मिकुत्त नीलम्–अति नीले; वान् मेकम् चूऴ्–जल-भरे मेघों से आवृत; विशुम्पु इटै–आकाश में; तशुम्पु ऊटु उकुत्त चॆक्करिल्–एक घड़ा द्वारा ढाले गये लाल गगन में; पिऱै कुलम्–तीज के चाँद; मुळैत्तन ऒक्क–उग आये जैसे लगे (उनके ऐसा लगते)। ३५९२

उसके फटे-से मुख विविध श्रेणीबद्ध पर्वतों में की कंदराओं के समान थे। उनके कोनों में जो वक्रदाँत लगे थे वे सभी दिशाओं में फैले थे और वे ऐसे लगे मानो नीले रंग के मेघावृत आकाश में एक घड़े से ढाली गयी लाली के मध्य तीज के चाँदों की राशि उगी हो। ३५९२

ऒत्त तन्मैयि नॊळिर्वन्न तरळत्ति नॊक्कत्
तत्तु हित्ऱन्न वीरपट् टत्तॊहै तयङ्ग
मुत्त वोडैयिन् मुरट्टिशै मुम्मद यानै
पत्तु नॆऱ्ऱियुञ् जुऱ्ऱिय पेरॆऴिल् पडैप्प 3593

पत्तु नॆऱ्ऱियुम्–दसों भालों पर; चुऱ्ऱिय–लपेटकर बाँधी हुई; ऒत्त तन्मैयिन् ऒळिर्वन्न–और एक-सम छविमय; तरळत्तिन्–मोतियों की बनी; ऒक्क तयङ्कि तत्तुकित्ऱन्न–एक साथ प्रकाश निःसृत करनेवाली; वीर पट्ट तॊकै–वीर-पट्टियों की राशि; मुरण्–विलक्षण; मुम्मत–त्रिमद; तिचै यानै–दिग्गजों के; मुत्त ओडैयिन्–मोतियों के पट्टों की-सी; पेरॆऴिल् पटैप्प–बड़ी छवि दरसाते रहे (ऐसे रहते)। ३५९३

उसके भालों पर पट्टियाँ बँधी थीं जो एक-सम चमक रही थीं। वे एक-सम उज्ज्वल मोतियों से निर्मित थीं। उनकी छबि विलक्षण और त्रिविध-मद बहानेवाले दिग्गजों के मुक्तामय वीरपट्टों की-सी थी। ३५९३

पुलवि मङ्गैयर् पूञ्जिलम् बरऱ्ऱुडि पोक्कित्
तलैमै कण्णिन्ऱत् ताऴ्हिला मणिमुडित् तलङ्गळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उलह मॊऩ्ऱिऩै विळक्कुरुङ् गदिरिऩै योट्टि
अलहि लॆव्वुल हत्तिऩुम् वयङ्गिरु ळहऱ्ऱ 3594

पुलवि–रूठी; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; पूम्–सुन्दर; चिलम्पु–नूपुर; अरऱ्ऱु–जिनमें रहकर क्वणित होते हैं उन; अटि–चरणों को; पोक्कि–छोड़कर; तलैमै कण्णिऩर्–(अन्य) बड़ाई के अभिलाषी किसी के भी सामने; ताऴ्किला–न झुकने वाले; मणि मुटि तलङ्कळ्–रत्नकिरीटों के स्थान; उलकम् ऒऩ्ऱिऩै–एक लोक को; विळक्कुरुम्–प्रकाश देनेवाले; कतिरिऩै–सूर्य को; ओट्टि–भगाकर; अलकु इल्–अनगिनत; ऎ उलकत्तिऩुम्–सभी लोकों में; वयङ्कु–रहनेवाले; इरुळ्–अन्धकार को; अकऱ्ऱ–हटाते रहे (हटाते)। ३५९४

उसके रत्न-किरीटाश्रय-स्थल (माथे) रूठी हुई स्त्रियों के चरणों के अलावा किसी भी बड़ाई चाहनेवाले के सामने झुके नहीं थे। वे केवल एक लोक को प्रकाश देनेवाले सूर्य को भगाकर अनंत सभी लोकों के अन्धकार को दूर कर रहे थे। ३५९४

नाह नाऩिल नाऩ्मुह ऩाऎऩ नयन्द
पाह मूऩ्ऱैयुम् वॆऩ्ऱुकॊण् डमरर्मुऩ् पणिन्द
वाहै मालैयिऩ् मरुङ्गुऱ वरिवण्डॊ डळवित्
तोहै यऩ्ऩवर् विऴितॊडर् तुम्बैयुञ् जूट्टि 3595

नाकम्–नागलोक; नाऩिलम्–चतुर्विधा भूमि का भूलोक; नाऩ्मुकऩ् नाटु–ब्रह्मा का (सत्य-) लोक; ऎऩ–आदि; नयन्त–इच्छित; पाकम्–भाग; मूऩ्ऱैयुम्–तीनों को; वॆऩ्ऱु कॊण्टु–जीत लेकर; मुऩ्पु–प्राचीनकाल में; अमरर् अणिन्त–देवों द्वारा पहनायी गयी; वाकै मालैयिऩ्–विजयमाला के; मरुङ्कु उऱ–पास लगी रहे ऐसा; वरि वण्टोटु–लकीरों-सह भ्रमरों के साथ; तोकै अऩ्ऩवर्–कलापी-सी स्त्रियों की; अळावि–मिश्रित होकर; विऴि तॊटर्–दृष्टियाँ जिसका पीछा करती हैं; तुम्पैयुम्–उस 'तुंबै' की माला को; चूट्टि–पहने हुए। ३५९५

नागलोक, चतुर्विधा भू-लोक और चतुर्मुखलोक आदि प्राप्ति की इच्छा के योग्य त्रिविध लोकों की जीतकर रावण ने देवों से दी गयी 'वाहै' की विजयमाला पहनी थी। उसके बग़ल में अब "तुंबै" (फूलों) की विजयमाला (जो युद्ध में जाने के चिह्न के रूप में पहनी जाती है) पहन ली, जिसका लकीरों से युक्त भ्रमर और कलापी-सी स्त्रियों के आतुर नेत्र पीछा कर रहे थे। (दोनों उस पर मँड़राते जाते थे।) ३५९५

अहळम् वेलैयि ऩहलत्तै यळक्करनुण् मणलै
निहळु मानिल विञ्जैयै निऩैप्पदे ऩिऩ्ऱ
इहळ्विल् पूदङ्ग ळिऱप्पिऩु मिऱुदिशॆल् लात्तऩ्
पुहळॆ ऩच्चरन् दॊलैविलात् तूणियुम् बूट्टि 3596

अकळम् वेलैयिऩ–जनित समुद्र के; अकलत्तै–विस्तार को; अळक्करर्–समुद्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

की; नुण् मणलै-महीन बालुकाओं को; मा निलम् निकऴुम्-बड़ी भूमि में प्रचलित; विल्चैयै-विद्याओं को; निनैप्पतु एन्-स्मरण करना क्यों; निन्ऱ-स्थायी; इकऴ्वु इल्-अनिंद्य; पूतङ्कळ्-(पाँचों) भूत; इऱप्पिनुम्-मिट जाएँ तो भी; इऱुति चॆल्ला-जो अन्त को प्राप्त नहीं हों; तन् पुकऴ् ऍन्-उसके ही यश के समान; अ चरम्-उन शरों के; तॊलै इला-अक्षय; तूणियुम्-तूणीर को; पूट्टि-बाँध लेकर। ३५९६

(सगरपुत्र-)खनित सागर के विस्तार को या उसकी महीन बालुकाओं को या विपुला पृथ्वी पर प्रचलित विद्याओं का स्मरण करना क्यों ? स्थायी रहनेवाले पाँचों भूतों का विनाश ही हो क्यों न जाए; पर रावण का यश अक्षुण्ण था और उसी प्रकार उसका तूणीर था जिसके शर अक्षय थे। ऐसे तूणीर को उसने धारण कर लिया। ३५९६

वरुह तेरॆन्न वन्ददु वैयमुम् वानुम्
उरह तेयमु मॊरुङ्गुड नेऱिनु मुच्चिच्
चॊरुहु पूवन्न शुमैयदु तुरहमिन् ऱॆनिनुम्
निरुदर् कोमह निनैन्दुळिच् चॆल्वदो रिमैप्पिल् 3597

तेर् वरुक-रथ आये; ऍन्न-आज्ञा देने पर; वैयमुम्-भूलोक; वानुम्-व्योमलोक और; उरक तेयमुम्-उरगलोक; ऒरुङ्कु-एक साथ; उटन् एऱिनुम्-एक साथ सवार हों तो भी; उच्चि चॊरुकु पू अन्न-चोटी में खोंसे जानेवाले फूल को जैसे; चुमैयतु-भारवाही; तुरकम् इन्ऱु ऍनिनुम्-घोड़े (जुते) न हों तो भी; निरुतर् को मकन्-राक्षसराज के; निनैन्तुळि-विचार करने पर; ओर् इमैप्पिल्-एक क्षण में; चॆल्वतु-जा सकता था (वह रथ); वन्ततु-आ गया। ३५९७

ऐसा सजकर रावण ने आज्ञा दी कि रथ आये। वह ऐसा रथ था जिसके लिए नाकलोक, भूलोक और नागलोक का सम्मिलित भार भी चूडा-पुष्प जैसा हलका लगे; विना घोड़ों के ही वह रावण की इच्छा के अनुसार पल भर में जा पहुँच सकता था। वह आया। ३५९७

आयि रम्बरि यमुदॊडु वन्दवु मरुक्कन्
पाय्व यप्पशुङ् गुदिरैयिन् वळियवुम् बडर्नीर्
वाय् मडुक्कुमा वडवयिन् वयिऱ्ऱिन्वन् काऱ्ऱिन्
नाय हऱ्कुवन् दुदित्तवुम् बूण्डदु नलत्तिन् 3598

नलत्तिन्-सुन्दरता के साथ; अमुतॊटु-अमृत के साथ; वन्तवुम्-जो प्रगट हुए और; अरुक्कन्-सूर्य के; पाय्-चौकड़ी भरनेवाले; वयम्-विजयदायी; पचुम् कुतिरैयिन्-हरे घोड़ों के; वळियवुम्-वंशज; पटर्-फैले रहे; नीर्-समुद्र-जल को; वाय् मटुक्कुम्-अपने मुख से पी लेनेवाले; मा-बड़े; वटवैयिन्-वडवा के अश्व की; वयिऱ्ऱिन्-कोख में; वल्-बलवान; काऱ्ऱिन् नायकऱ्कु-पवनदेव के द्वारा; वन्तु उतित्तवुम्-जो जनमे थे; आयिरम् परि-वे हजार घोड़े; पूण्टतु-जुते थे। ३५९८

उससे हज़ार घोड़े जुते थे। सूर्य के रथ से जुते हरे, ससौंदर्य अमृत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के साथ जनमे, सरपट दौड़नेवाले और विजयदायी अश्वों के वंशज थे। और वे समुद्रजलपायी वडवा के अश्व के पेट में वायु के वीर्य से पैदा हुए थे। ३५९८

पारिऱ् चॆल्वदु विशुम्बिडैच् चॆल्वदु परन्द
नीरिऱ् चॆल्वदु नॆरुप्पिनुऱ् जॆल्वदु निमिर्न्द
पोरिऱ् चॆल्वदु पोय्नॆडु मुहट्टिडै विरिञ्जऩ्
ऊरिऱ् चॆल्वदॆव् वुलहिनुऱ् जॆल्वदो रिमैप्पिऩ् 3599

ओर् इमैप्पिऩ्–पल भर में; पारिल् चॆल्वतु–भूमि पर जानेवाले; विचुम्पिटै चॆल्वतु–आकाश में जानेवाले; परन्त नीरिल्–विस्तृत (सागर-) जल पर; चॆल्वतु–जानेवाले; नॆरुप्पिनुम् चॆल्वतु–आग में जानेवाले; निमिर्न्त–बढ़े; पोरिल् चॆल्वतु–युद्ध में जानेवाले; पोय्–जाकर; नॆटु मुकटु इटै–आकाश की लम्बी चोटी में; विरिञ्चऩ् ऊरिल्–विरंचि के नगर में; चॆल्वतु–जानेवाले; ॲ उलकिनुम्–किसी भी लोक में; चॆल्वतु–जानेवाले। ३५९९

उनमें एक-एक एक पल में भूमि पर, आकाश में, विशाल सागर पर, आग पर और घोर युद्ध में, क्यों ऊँचे विरंचि-लोक में कहीं भी किसी लोक में भी जा सकता था। ३५९९

ॲण्डि शैप्पॆरुङ् गळिऱ्ऱिडै मणियॆऩ विशैक्कुम्
कण्डै यायिर कोडियिऩ् ऱीहैयदु कदिरोऩ्
मण्डि लङ्गळै मेरुविऱ् कुवित्तॆऩ वयङ्गुम्
अण्डम् विऱ्कुनऩ् काशिनङ् गुयिऱ्ऱिय दडङ्ग 3600

ॲण् तिचै पॆरुम् कळिऱु इटै–बड़े अष्ट दिग्गजों की; मणि ॲऩ–घंटियों के समान; इचैक्कुम्–बजनेवाली; कण्टै–बड़ी घंटियाँ; आयिर कोटियिऩ् तॊकैयतु–हजार करोड़ की राशि की थीं; कतिरोऩ् मण्टिलङ्कळै–सूर्यमण्डलों को; मेरुविल् कुवित्तु ॲऩ–मेरु पर जमा किया गया हो ऐसा; वयङ्कुम्–शोभायमान; अटङ्क–सारे; अण्टम् विऱ्कुम्–अण्डों को अपना मूल्य बनानेवाले; नल्–श्रेष्ठ; काचु इनम्–रत्नराशियाँ; कुयिऱ्ऱियतु–(जिसमें) जड़ित थीं (वैसा रथ था वह)। ३६००

उसमें हज़ार करोड़ घंटियाँ बँधी थीं। वे बड़े दिग्गजों की बड़ी घंटियों के समान शब्द करनेवाली थीं। ऐसे रत्नों से सजे थे जो मेरु पर सूर्यमंडलों को एकत्रित किया गया हो ऐसा शोभित थे और उनका मूल्य सारा अंड भी भर नहीं सकता था। ३६००

मुऩैवर् वाऩवर् मुदलिऩ रण्डत्तु मुदल्वर्
ॲऩैव रीन्दवु मिहलिऩि लिट्टवु मियम्बा
विऩैयिऩ् वॆय्यऩ पडैक्कलम् वेलैयॆऩ् ऱिशैक्कुऩ्
जुऩैयि नषमणार् दॊडैयऩ् शुमन्दवु तॊकक् 3601

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुऩैवर्–मुनि; वाऩवर्–देव; मुऩलिऩर्–आदि; अण्टत्तु मुऩल्वर्–अण्ड के नायक त्रिदेव; ऍऩैवर्–सभी के; ईऩ्ऩऩवुम्–दिये गये; इकलिऩिल्–युद्ध में; इट्टवुम्–(हारकर) छोड़े गये; विऩैयिऩ्–कर्म में; इयम्पा–अकथनीय; वॆय्यऩ–कठोर; पटैक्कलम्–हथियारों को; वेलॆऍऩ्ऱु इचैक्कुम्–सागर-कथित; चुऩैयिल्–जलाशय में; नुण् मणल् तॊकैयऩ–महीन बालुकाओं-सी राशियों वाले (असंख्यक); तॊक्कु चुमन्ततु–एक साथ ढोता रहा (वह रथ)। ३६०१

उस पर अपार अस्त्र-शस्त्र लदे थे। मुनियों, देवों और आदिदेव त्रिदेवों द्वारा वर के रूप में दिये गये; युद्ध में शत्रुओं से छीने गये, सब मिलकर अकथनीय रीति से संतापक वे अस्त्र समुद्र की बालुकाओं से भी अधिक संख्या में थे। ३६०१

कण्ण नॆमियुङ् गण्णुदल् कणिच्चियुङ् गमलत्
तण्णल् कुण्डिहैक् कलशमु मऴियिऩु मऴियात्
तिण्मै शाऩ्ऱदु तेवरु मुणर्वरुञ् जॆय्है
उण्मै यामॆऩप् पॆरियदु वॆऩ्ऱियि ऩुऱैयुळ् 3602

वॆऩ्ऱियिऩ् उऱैयुळ्–विजय का आगार (वह); कण्णऩ् नेमियुम्–विष्णु का चक्र; कण्णुतल् कणिच्चियुम्–भालनेत्र शिवजी का परशु; कमलत्तु अण्णल्–कमलासन देव का; कुण्टिकै कलचमुम्–कमंडल-जैसा जलपात्र; अऴियिऩुम्–नाश को प्राप्त हों तो भी; अऴिया–(यह) न नष्ट हो ऐसा; तिण्मै चाऩ्ऱदु–सुदृढ़ है; तेवरुम् उणर्वु अरु–देव भी जान न सकें; चॆय्कै–ऐसी कारीगरी; उण्मै आम् ऍऩ–है, ऐसा कहने योग्य; पॆरियदु–अतिश्रेष्ठ है। ३६०२

वह विजय का आगर था। विष्णु का चक्र, त्रिनेत्र का परशु और कमलासन का कुण्डल आदि का नाश भले ही हो जाय, किन्तु यह अविनश्वर था और सुदृढ़ था। उसकी कारीगरी ऐसी थी कि देवता लोग भी जान नहीं पाएँ। ३६०२

अऩैय तेरिऩै यरुच्चऩ वरऩ्मुऱै याऱ्ऱि
इऩैय रॆऩ्बदोर् कणक्किला मऱैयव रॆवर्क्कुम्
विऩैयि ऩऩ्ऩिदि मुदलिय वळप्परुम् वॆरुक्कै
निऩैयि नीण्डदोर् पॆरुङ्गॊडै यरुङ्गड ऩेर्न्दाऩ् 3603

अऩैय तेरिऩै–उस रथ को; वरऩ्मुऱै–क्रमागत रीति से; अरुच्चऩै आऱ्ऱि–अर्चना (पूजा) करके; इऩैयर्–'इतने'; ऍऩ्पतु ओर् कणक्किला–ऐसी कोई संख्या जिसकी नहीं; मऱैयवर् ऍवर्क्कुम्–ब्राह्मण रहे सभी को; विऩैयिऩ्–योग्य अनुष्ठान के साथ; नल् निति–श्रेष्ठ पदार्थ; मुदलिय–आदि; अळप्परुम् वॆरुक्कै–अपार संपत्तियाँ; निऩैयिऩ् नीण्टतु–कल्पना से भी अधिक; ओर् पॆरु कॊटै–बड़े दान का; अरु कटऩ्–उत्तम कर्तव्य; नेर्न्ताऩ्–पूरा किया। ३६०३

रावण ने उस रथ की यथावत् पूजा की। बेशुमार सभी लोगों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को विना कोई भेद किये बहुमूल्य पदार्थों का कल्पनातीत दानकर्म अदा किया। ३६०३

मऩ्ऱु लङ्गुऴऱ् चऩहितऩ् मलर्क्कैयाऩ् वयिऱु
कॊऩ्ऱु लऩ्दलैक् कॊडुनॆडुऩ् दुयरिडैक् कुळित्तल्
अऩ्ऱि दॆऩ्ऱिडिऩ् मयऩ्मह ळत्तॊऴि लुऱुदल्
इऩ्ऱि रण्डिऩॊऩ् ऱाक्कुवऩ् ऱलैप्पडि ऩॆऩ्ऱाऩ् 3604

मऩ्ऱल् अम् कुऴल्–सुगंधित व सुन्दर-केशिनी; चऩकि–जानकी का; तऩ् मलर् कैयाल्–अपने कमलहस्त से; वयिऱु कॊऩ्ऱु–पेट को कष्ट देकर; अलम्–दुःख को; तलै कॊऴु–सिर पर लेकर; नॆटु तुयरिटै–दीर्घ दुःख में; कुळित्तल्–मग्न रहना; इतु अऩ्ऱु ऍऩ्ऱिटिऩ्–यह नहीं होता हो तो; मयऩ् मकळ्–मयसुता मंदोदरी का; म तॊऴिल् उऱ्ऱतल्–वह काम करना; इऩ्ऱु तलैप्पटिऩ्–आज युद्ध में लग जाऊँ तो; इरण्टिऩ् ऒऩ्ऱु–इन दो में एक; आक्कुवॆऩ्–करा दूंगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ३६०४

तब उसने यह सौगंद खायी। आज मैं युद्ध करने जाता हूँ। तो सुगंधित सुकेशिनी जानकी अपना पेट पीटती हुई, दुःख में आमस्तक डूबेगी या मयसुता मंदोदरी उसी स्थिति को प्राप्त हो जायगी। इन दो में एक करा दूंगा। यह निश्चित है। ३६०४

एऱि ऩाऩ्ऱॊऴु दिऩ्दिरऩ् मुदलिय विमैयोर्
तेऱि ऩार्हळुऩ् दियङ्गिऩार् मयङ्गिऩार् तिहैत्तार्
वेऱु ताञ्जॆयुम् विऩैयिलै मॆय्यिऩैम् पुलऩुम्
आऱि ऩार्कळु मञ्जिऩा रुलहॆला मऩुङ्ग 3605

तॊऴुतु–रथ को नमस्कार करके; एऱिऩाऩ्–सवार हुआ; तेऱिऩार्कळुम्–जो डर से छूट गये थे वे; इऩ्तिरऩ् मुतलिय–इन्द्र आदि; इमैयोर्–देव भी; तियङ्किऩार्–निर्बल हुए; मयङ्किऩार्–सुधिहीन हुए; तिकैत्तार्–भ्रान्त हुए; उलकॆलाम्–सभी लोकों के सारे जीव; अऩुङ्क–दुःखी हुए; मॆय्यिऩ्–शरीर की; ऐम् पुलऩुम्–पंचेंद्रिय को; आऱिऩार्कळुम्–जिन्होंने शान्त किया था वे (ऋषि) भी; अञ्चिऩार्कळ्–डर गये; ताम्–उन्हें स्वयं; चॆय्युम् विऩै–करने का काम; वेऱु इलै–और कुछ नहीं था। ३६०५

यह प्रतिज्ञा करके रावण रथ पर सवार हुआ। तो देव, जो पहले थोड़ा आश्वस्त हुए थे, अब फिर से चिंतित हुए, निर्बल हुए, क्षुब्ध हुए और भ्रांत हुए। सारे लोक दुःखी हुए; पंचेंद्रिय-निग्रही ऋषि, मुनि आदि भी डर गये। उनके पास कर्तव्य और कोई कार्य नहीं रहा। ३६०५

पलह ळऩ्दलै मौलियो डिलङ्गलिऱ् पः(ह्)ऱॊळ्
अलह ळऩ्दऱि यानॆडुम् बडैहळो डलङ्ग
विलह ळऩ्वरु कडऱ्ऱरै विशुम्बॊडु वियप्प
उलह ळऩ्दवऩ् वळऱ्ऩ्दऩ ऩामॆऩ वुयर्ऩ्दाऩ् 3606

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पल कळम्–अनेक कण्ठों पर; तलै–सिर; मौलियोटु–किरीटों के साथ; इलङ्कलित्–प्रकाशमान रहे और; पल् तोळ्–अनेक हाथ; अलकु अळन्तु अऱियाजिनका माप मापना कठिन है उन; नॆटु–लम्बे; पटैकळोटु–हथियारों के साथ; अलङ्क–हिलते रहे; विलकु–अलग रहे; अळम्–लोनारों को (नमक के खेतों को); तऱ–अपने पास रहनेवाले; कटल्–समुद्र से; चूऴ्न्त–वलयित; तऱै–भूमि के वासी; विचुम्पोटु–आकाश (वासियों) के साथ; वियप्प–आश्चर्य करते; उलकु अळन्तवन्–लोकमापक (त्रिविक्रम); वळर्न्तसन् आम् ऎन–प्रवृद्ध हुआ जैसे; उयर्न्तान्–(रथ पर) ऊँचा हुआ (दिखा)। ३६०६

रावण के कंधों के ऊपर के दसों सिर किरीटों के साथ शोभे। बीसों हाथ अमाप हथियार लिये हिल रहे थे। अपने तीर पर लोनारों के साथ रहनेवाले समुद्र से आवृत भूलोक के वासी और आकाशवासी विस्मित हो रहे थे। ऐसी स्थिति में रावण लोकमापक श्रीत्रिविक्रमदेव के समान रथ पर ऊँचा प्रगट हुआ। ३६०६

विशुम्बु विण्डिरु कूऱुऱक् कऱ्कुलम् वॆडिप्पप्
पशुम्बुण् विण्डॆऩप् पुविपडप् पहलवन् पशुम्बॊऩ्
तशुम्बि निऩ्ऱिडैन् दिरिन्दिड मदितहै यमिऴ्दिऩ्
अशुम्बु शिन्दिनॊन् दुलैवुऱत् तोळ्पुडैत् तार्त्तान् 3607

विचुम्पु–आकाश; विण्टु–फटा; इरु कूऱु उऱ–और उसके दो भाग हो गये; कल् कुलम्–पर्वतसमूह; वॆटिप्प–टूटे; पुवि–भूमि; पचुम् पुण्–ताजा व्रण; विण्टु ऎऩ–खुला जैसे; पट–हो गयी; पकलवन्–दिनकर; पचुम् पॊऩ् तचुम्पिऩ् निऩ्ऱ–चोखे स्वर्ण के घड़े से (रथ से); इटैन्तु इरिन्तिट–श्लथ हो इधर-उधर भागा; मति–चाँद; तकै–स्वाभाविक; अमिऴ्तिऩ् अचुम्पु–अमृत की बूँदें; चिन्ति–निकालकर; नॊन्तु–दुःखी हो; उलैवु उऱ–क्षुब्ध हुआ, ऐसा बनाते हुए; तोळ् पुटैत्तु–अपने कंधे ठोंककर; आर्त्तान्–घोष किया (रावण ने)। ३६०७

उसने कंधे ठोंकते हुए उच्च नाद किया तो मानो आकाश फटकर दो खण्ड हुआ। पर्वतकुल टूटे। भूमि का व्रण खुल गया। दिनकर अपने चोखे स्वर्ण के घड़े से (रथ से) निकलकर अस्त-व्यस्त भाग खड़ा हुआ। और चाँद अपने स्वाभाविक अमृत की बूँदें निकालते हुए शिथिल और दुःखी हुआ। ३६०७

नणित्तु वॆञ्जम मॆऩ्बदो रुवहैयि नलत्ताल्
तिणित्त डङ्गिरि वॆडित्तुहच् चिलैयैना णॆऱिन्दाऩ्
मणिक्कॊ डुङ्गुऴै वाऩवर् ताऩवर् महळिर्
तुणुक्क मॆय्दिऩर् मङ्गल नाण्गळैत् तॊट्टार् 3608

वॆम् चमम्–भयंकर युद्ध; नणित्तु–पास है; ऎऩ्पतु ओर्–ऐसे एक; उवकैयिऩ्–आनन्द के; नलत्ताल्–भले से; तिणि तट–कठोर और विशाल; किरि वॆटित्तु–गिरि फट; उक–गिर जाए ऐसा; चिलैयै–धनु के; नाण् ऎऱिन्दाऩ्–डोरा टंकोरा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मणि–रत्नमय; कॊट्टु–गोल; कुळै–कुंडलों से अलंकृत; वानवर् तानवर् मकळिर्–देव-दानव-दयिताएँ; तुणुक्कम् ऍय्तिनर्–दहल उठीं; मङ्कल नाण्कळै–और मंगलसूत्रों को; तॊट्टार्–स्पर्श (करके मंगल की प्रार्थना) करने लगीं। ३६०८

रावण ने पास आये युद्ध के विचार से फूलकर अपने धनु का डोरा टंकोरा तो कठोर और बड़ी-बड़ी गिरियाँ मानो टूटकर चूर हो गयीं। रत्न-वक्र-कुंडल-धारिणी देव-दानव-दयिताओं ने अपने मंगलसूत्र स्पर्श किए और प्रार्थना की कि ये अहिवात न टूटें। ३६०८

तूङ्कु मण्डलन् दूङ्गुनीर्च् चुरिप्पुर वीङ्ग
इरैक्कुम् बल्लुयि रियावैयु नडुक्कमुर् रिरियप्
परित्ति लन्पुवि पडर्शुडर् मणित्तलै पलवुम्
विरित्तॆ ळुन्दन ननन्दन्मी दॆन्बदोर् मॆय्यान् 3609

तूङ्कु नीर्–हिलनेवाला (लहरानेवाला) समुद्रजल; चुरिप्पु उर–घूम जाए, ऐसा; चुरिक्कुम् मण्टलम्–उसको आवृत कर रहनेवाला भूमंडल; वीङ्क–अधिक हो जाए; इरैक्कुम्–शब्द करनेवाले; पल् उयिर् यावैयुम्–अनेक जीव सभी; नटुक्कमुट्रु–डरकर; इरिय–भाग जायँ ऐसा; अनन्तन्–आदिशेषनाग; पुवि परित्तिलन्–भू का वहन न करके; पटर्–विशाल; चुटर्–उज्ज्वल; मणि तलै–रत्नसहित सिर; पलवुम्–अनेक; विरित्तु–फैलाकर; मीतु–ऊपर; ऍळुन्तनन्–उठा हो; ऍन्पतु ओर् मॆय्यान्–वैसा दिखनेवाले शरीर का (रावण)। ३६०९

रावण के रथ के चलने से लहरायमान समुद्र का विस्तार कम हो गया। भूमि बढ़ी। सभी जीव डर से शब्द करते हुए भागे। आदिशेष भू का भार वहन न करके अपने फनों को फैलाकर ऊपर आ खड़ा हो ऐसा दिख रहा था रावण। ३६०९

तोन्रि नान्वन्दु शुरर्हळो डशुररे तॊडङ्गि
मून्रु नाट्टिनु मुळ्ळव रियावरु मुडिय
ऊन्रि नान्शॆरु वॆन्रुयि रुमिळ्दर वुदिरङ्
गान्रु नाट्टङ्गळ् वडवनर् किरुमडि कनल 3610

चुरर्कळोडु–देवों के साथ; अचुररे तॊटङ्कि–असुर आदि; मून्रु नाट्टिनुम् उळ्ळवर्–त्रिलोकवासी; यावरुम् मुडिय–सभी तक; चॆरु ऊन्रिनान् मॆन्रु–युद्ध में दृढ़ रूप से लग गया, कहकर; उयिर् उमिळ् तर–प्राणों के बाहर निकलते; उतिरम् कान्रु–रक्त वमन करके; नाट्टङ्कळ्–आँखों के; वट अनलुक्कु–बड़वाग्नि को; इरु मटि–दुगुनी; कनल–आग निकालते; वन्तु तोन्रिनान्–आ प्रगट हुआ रावण। ३६१०

रावण निश्चित रूप से रण में लग गया —यह जानकर सभी देवों, दानवों और सभी त्रिलोकवासियों के प्राण मानो निकलने को हुए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और रक्त बह आया। रावण अपनी आँखों से बड़वा की तिगुनी आग उगलता हुआ-सा दिखायी दिया। ३६१०

उलहिर् ऱोन्ऱिय मऱुक्कमु मिमैप्पिल रुलैवुम्
मलैयुम् वानमुम् वैयमु मऱुहुऱु मऱुक्कुम्
अलैहोळ् वेलैह ळञ्जिन शलिक्किन्ऱ वयर्वुम्
तलैव नेमुदर् ऱण्डलि लोरॅलाङ् गण्डार् 3611

उलकिल्–संसार में; तोन्ऱिय–प्रकट; मऱुक्कमुम्–अशांति और; इमैप्पिलर् उलैवुम्–अपलक (देवों) की बुरी स्थिति; मलैयुम्–पर्वत; वानमुम्–आकाश और; वैयमुम्–भूमि; मऱुकुऱुम् मऱुक्कुम्–इनकी जो बुरी दशा हुई वह दुर्दशा; अलै कोळ् वेलैकळ्–तरंग-भरे सागर; अञ्चिन–डरें और; चलिक्किन्ऱ अयर्वुम्––और उनकी विचलित थकान; तलैवन मुतल्–नायक सुग्रीव से लेकर; तण्टल् इलोर् ऍलाम्–विषमता-रहित सभी तक ने; कण्टनर्–देखी। ३६११

इससे संसार में एक खलबली मच गयी। देवों में बेचैनी फैली। पर्वत, आकाश और पृथ्वी काँप गयी। तरंगाकीर्ण सागर डरे, विचलित हुए और निर्बल हुए। यह सब वानरपति सुग्रीव से लेकर सारे वानर वीरों ने समान रूप से देखा। ३६११

पोरिऱ्ऱा मण्ड मॅन्बदो राहुलम् बिऱक्क
वेऱिट् टोर्पॅरुङ् गम्बलै पम्बिमेल् वीङ्ग
मारिप् पल्पॊरुळ् माय्वुऱुङ् गालत्तुण् मऱुक्कम्
एऱिऱ् ऱुऱ्ऱुळ दॅन्नैहो लोवॅन् वॅळुन्दार् 3612

अण्टम् पोरिऱ्ऱु आम्–अण्डगोल फट गया हो; ऍन्पतु ओर्–ऐसा एक; आकुलम् पिऱक्क–अस्त-व्यस्तता पैदा हो गयी तो; वेऱिट्टु–विलक्षण; ओर्–एक; पॅरुम् कम्पलै–बड़ा शोर; पम्पि मेल् वीङ्क–पैदा हुआ, ऊपर उठा और स्फीत हुआ; पल् पॊरुळ्–विविध पदार्थ; मारि–विकार पाकर; माय्वुऱुम् कालत्तुळ्–जब मिट जाते हैं तब; उऱ्ऱुळतु–जो होता है वह; मऱुक्कम्–अव्यवस्था; एऱिऱ्ऱु–उठ बढ़ी; ऍन्नै कॊलो–क्या कारण है; ऍन–पूछते हुए; ऍळुन्तार्–(वे वानर) उठे। ३६१२

"अण्ड फट गया जैसे एक आकुलता उठी और बड़ा हलचल मच गया। वह विलक्षण शोर पैदा हुआ, उठा और स्फीत हुआ। प्रपञ्च के विविध पदार्थों के नाश होते समय जो खलबली मचेगी, ऐसी अव्यवस्था उठी है। यह क्यों ?" ऐसा कहते हुए वे सब उठे। ३६१२

कडलह ळियावैयुङ् गन्मलैक् कुलङ्गळुङ् गारुन्
दिडल् हॊणमेरुवम् विशुम्बिडैच चॅलुवन शिवण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अडल्हॊळ् शेनैयु मरक्कनुन् देरुम्वन् दार्क्कुङ्
गडल्हॊळ् पेरॊलिक् कम्बलै यॆन्बदुङ् गण्डार् 3613

कटल्कळ् यावैयुम्–सागर सभी; कल् मलै कुलङ्कळुम्–और प्रस्तरपर्वतकुल; कारुम्–मेघ; तिटल् कॊळ् मेरुवम्–ऊबड़-खाबड़ मेरु और; विचुम्पिटै चॆल्वत चिवण–आकाश में चलनेवाले जैसे; अटल् कॊळ् चेनैयुम्–बलसंयुक्त सेना और; अरक्कनुम्–रावण; तेरुम्–और उसका रथ; वन्तु आर्क्कुम्–जो आकर मचाते हैं, वह शोर; कटल् कॊळ्–समुद्र में उत्पन्न; पेर् ऑलि कम्पलै–उच्च गर्जन का शोर (जैसा नाद); ऍन्पतुम्–है यह; कण्टार्–देखा (वानर वीरों ने जाना)। ३६१३

सारे समुद्र, प्रस्तर-पर्वत-कुल, मेघ, ऊबड़-खाबड़ मेरु, आकाशगामी-सी सेनाएँ, रावण और उसका रथ —इन सबमें सुग्रीव को तुमुलनादी समुद्र का भान हुआ (उन्होंने वैसा दृश्य देखा और नाद सुना)। ३६१३

एळुन्दु वन्दन निरावण निराक्कदत् तानैक्
कॊळुन्दु मुन्दुवन् दुऱ्ऱदु कॊऱ्ऱव कुलुङ्गुऱ्
ऱळुन्दु हिन्ऱदु नम्बल ममररु मञ्जि
विळुन्दु शिन्दिन रॆन्ऱनन् वीडणन् विरैवान् 3614

वीटणन्–विभीषण; कॊऱ्ऱव–विजयी राजा; इरावणन् ऍळुन्तु वन्ततन्–रावण उठ आया है; इराककतत् तानै कॊळुन्तु–राक्षस-सेना का किसलय (अग्रभाग); मुन्तु वन्तु उऱ्ऱतु–पहले आ गया है; नम् पलम्–हमारी सेना; कुलुङ्कुऱ्ऱु–विकंपित हो गयी; अळुन्तुकिन्ऱतु–हतोत्साह होती है; अमररुम्–देव भी; अञ्चि विळुन्तु–डरकर गिरकर; चिन्तितर्–बिखर गये; विरैवान्–तेजी से जाकर; ऍन्ऱनन्–बोला। ३६१४

तब विभीषण ने झट आकर श्रीराम से निवेदन किया कि विजयी राजा! रावण उठ आया है। राक्षस-सेना का अग्रभाग पहले आ गया है। हमारी सेना कंपित हो रही है। निर्बल हो रही है। देव भी डर के मारे इधर-उधर भागते हैं। ३६१४

35. इरामपिरान् तेरेरु पडलम् (श्रीराम-रथारोहण पटल)

तॊळुङ्गैयॊडु वाय्कुळऱि मॆय्मुऱै तुळङ्ग
विळुन्दुकवि शेनैयिडु पूशन्मिह विण्णोर्
अळुन्दवर वत्तमळि यञ्जलॆन वननाळ्
ऍळुन्दपडि येकडि दॆळुन्दन निरामन् 3615

कवि चेनै–कपि-सेनाएँ; तॊळुम् कैयॊटु–अंजलिबद्ध हाथों के साथ; वाय् कुळऱि–वाणी के लड़खड़ाते; मॆय्–शरीरों के; मुऱै तुळङ्क–बारी-बारी से काँपते; विळुन्तु–भूमि पर गिरकर; इटु पूचल्–जो होहल्ला मचाते हैं उसके; मिक–बढ़ते;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरामन्–श्रीराम; अन्नाळ्–उस दिन; विण्णोर् अऴुन्त–देवों के शिथिल पड़ते; अञ्चल् ऍन–मत डरो कहते हुए; अरवत्तु अमळि–शेष-शय्या से; ऍऴुन्त पटिये–जैसे उठे ठीक उसी प्रकार; कटितु ऍऴुन्ततन्–झट उठे। ३६१५

कपिसेना अंजलिबद्धहस्त हो, जीभ के लड़खड़ाते, शरीरों के थर्राते नीचे गिरी और चीखने-चिल्लाने लगी। वह तुमुलनाद बढ़ उठा तो श्रीराम झट उस दिन जैसे उठे वैसे उठे जिस दिन वे दुःखी देवों को 'मत डरो का अभयदान' करते हुए शेष-शय्या पर से उठे थे। ३६१५

कडक्कळि ऱॆन्तत्तहैय कण्णऩॊरु कालन्
विडक्कयि ऱॆन्पिऱऴुम् वाळ्वलन् विशित्तान्
मडक्कॊडि तुयर्क्कुनॆडु वानिनुऱै वोर्दम्
इटर्क्कड लिनुक्कुमुडि विन्ऱॆन विशैत्तान् 3616

कट कळिऱु ऍन तकैय–मदमत्तगज-मान्य; कण्णन्–सर्वनेत्र श्रीविष्णु; ऒरु–अप्रतिम; कालन्–यम का; विट कयिऱु ऍन–विषपाश के समान; पिऱऴुम्–शोभायमान; वाळ्–तलवार को; वलन्–दायीं ओर; विचित्तान्–बाँधकर; मटक्कॊटि–व्रीड़ायुक्त लतासमाना सीताजी के; तुयर्क्कुम्–दुःख का और; नॆटु–लम्बे; वानिन् उऱैवोर्–आकाश के वासी; तम्–(देवों) के; इटर् कटलिनुक्कुम्–दुःख-सागर का; इन्ऱु मुटिवु–आज अंत है; ऍन–ऐसा; इचैत्तान्–बोले। ३६१६

मत्तगज-सम सर्वनेत्र श्रीराम ने अद्वितीय यम के विषपाश-सी शोभायमान तलवार को कमर में दायीं ओर बाँध लिया। कहा कि आज का दिन बाला लता सीताजी के दुःख का और आकाशवासी देवों के दुःख-सागर का अन्तिम दिन होगा। ३६१६

तन्नह वशत्तुलहु तङ्गवॊरु तन्निऱ्
पिन्नह वशत्तपॊरु ळिल्लैपॆरि योनै
मन्नह वशत्तुऱ वरिन्दॆनिन् मादो
इन्नह वशत्तैयुमॊ रीशनॆन लामाल् 3617

उलकु–सारे लोकों के; तन्न–उनके अपने में; कवचत्तु–कवच (रक्षण) में; तङ्क–रहते; ऒरु तन्निल्–अप्रतिम उनको छोड़; पिन्नक वचत्त–भिन्न शेषी (नियामक); पॊरुळ् इल्लै–परमतत्त्व नहीं; पॆरियोनै–त्रिविक्रम को; मन्–दृढ़ रूप से; अक वचत्तु उऱ–अपने पूर्ण वश में रखकर; वरिन्ततु–बाँध लिया; ऍनिन्–तो; इन्न कवचत्तैयुम्–इस तरह के कवच को भी; ओर् ईचन्–एक ईश्वर; ऍन्नल् आम्–कह सकते हैं। ३६१७

सारे लोकों के वे कवच हैं यानी पूर्णरक्षक हैं। उनके अलावा दूसरे परमतत्त्व नहीं हैं। ऐसे उनको कवच ने अपने अन्दर बाँध लिया तो उसे भी ईश्वर कह सकते हैं। (श्रीराम ने कवच धारण कर लिया)। ३६१७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुट्टिलॉडु कोदैहळ् पुळुङ्गियॅरि कूऱ्ऱिन्
अट्टिलॅन्न यायमल रङ्गैयि नडङ्गक्
कट्टियुल हिऱ्पॉरु ळॅन्नक्करैयिल् वाळि
वट्टिल्पुऱम् बैत्तयल् वयङ्गुऱ वरिन्दान् 3618

कूऱ्ऱिन्–यम के; पुऱ्ऱुङ्कि ॲरि–पक्की रीति से जलनेवाली; अट्टिल् ॲन्नल् आय–अँगीठी कहने योग्य; मलर् अङ्कैयिल्–कमल-हस्त में; पुट्टिलॉडु–अंगुलित्राणों और; कोतैकळ्–हस्तत्राण; अटङ्क–खूब; कट्टि–पहन लेकर; उलकिल् पॉरुळ् ॲन्न–लोक के सारे पदार्थ समा जाएँ ऐसा; करैयिल्–अक्षय; वाळि–बाणों का; वट्टिल्–तूणीर; पुऱम् अयल्–पीठ पर; वयङ्कुऱ वैत्तु–ठीक तरह से रखकर; वरिन्तान्–बाँध लिया (श्रीराम ने)। ३६१८

श्रीराम ने यम को जलती अँगीठी-सम अपने हस्तों में अंगुलित्राण और हस्तत्राण पहने। अपनी पीठ से लगाकर अपना अक्षय बाणों का इतना भरा तूणीर बाँध लिया कि जिसमें के संसार सारे विविध पदार्थ समा सकें। ३६१८

इत्तहैय नाहियिहल् शॅय्दिवनै यित्ते
कॉत्तुमुडि कॉय्वनॅन्न निन्ऱॅदिर् कुऱित्तु
तत्तमुऱु वऱ्चॅय ऱविर्न्दॅन्न वानिल्
शित्तर्हण् मुनित्तलैवर् शिन्दैमहिळ् वुऱ्ऱार् 3619

चित्तर्कळुम्–सिद्ध; मुनि तलैवर्–और मुनि श्रेष्ठ; इ तकैयन् आकि–इस भाँति बने; इकल् चॅय्तु–युद्ध करके; इन्ते–अभी; इवनै–इस (रावण) के; कॉत्तु मुटि–गुच्छे के सिरों को; कॉय्वन्–तोड़ लेंगे; ॲन्न–ऐसा और; तत्तम्–अपना-अपना; उऱुवल् चॅयल्–दुखने का काम; तविर्न्ततु–छूट गया; ॲन्न–ऐसा; वानिल् ॲतिर् निन्ऱु–आकाश में समक्ष खड़े होकर; कुऱित्तु–(अपना मंतव्य) प्रगट करके; चिन्तै–मन में; मकिळ्वुऱ्ऱार्–आनंद से भर गये। ३६१९

सिद्ध और मुनिश्रेष्ठों ने यह साज देखा तो उन्हें विश्वास हो गया कि इस भाँति तो अवश्य वे रावण के शीषगुच्छे को काट गिरा देंगे। हमारा दुःख का काम समाप्त हो गया। आकाश में वे आमने-सामने खड़े होकर यह आनंदभाव प्रगट करते हुए उदित हुए। ३६१९

मूण्डशॅरु वित्ऱळवित् मुऱुमिनि वऱ्ऱि
आण्डहैय दुण्मैयिनि यच्चमहल् वुऱ्ऱीर्
पूण्डमणि याळिवय मानिमिर् पॉलन्दॅर्
ईण्डविडु वीरमर रीरॅन्ऱय तिशैत्तान् 3620

अयत्–अज; अमररीर्–हे अमरगण; मूण्ट चॅरु–छिड़ा युद्ध; इन्ऱु अळवित्–आज तक में; मुऱुम्–पूरा हो जायगा; इनि–आगे; वॅऱ्ऱि–विजय; उण्मैयिन्–सत्यमय; [illegible]–[illegible]; अच्चम अकलव उऱ्ऱीर–भयविमुक्त

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Ravishankar Vidya Mandir Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हुए; मणि पूण्ट-घंटियों को पहने हुए; वयम् मा-बलवान अश्वों से जुते; आऴि-पहिये; निमिर्-जिसके उत्तम है; पॊलम् तेर्-उस सुन्दर रथ को; ईण्ट-जल्दी; विट्बीर्-भिजवाओ; ऎन्ऱु इचॆत्तान्-ऐसा बोले। ३६२०

तब (चतुर्मुख) अजदेव ने देवों से कहा कि हे देवो ! यह युद्ध जो छिड़ा है आज एक दिन में समाप्त हो जायगा— और विजय पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम की होगी। भय छोड़ दो। और घंटियों से अलंकृत अश्वों के जुते और श्रेष्ठ पहियोंदार स्वर्णरथ को शीघ्र श्रीराम के पास भिजवाओ। ३६२०

तेवरदु हेट्टिदु शॆयऱ्कुरिय दॆन्ऱार्
एवल्पुरि मादलियॊ डिन्दिर तिशैत्तान्
मूवुलहु मङ्गॊरु कणत्तिन्मिशै मुऱ्ऱिक्
कावल्पुरि तेर्कडिदु नीकॊणर्दि यॆन्ऱे 3621

अतु-उसे; तेवर् केट्टु-देवों ने सुनकर; इतु चॆयऱ्कु अरियतु-यह करणीय है; ऎन्ऱार्-कहा; इन्तिरन्-देवेंद्र ने; एवल् पुरि-आज्ञाकारी; मातलियोटु-मातलि से; ऒरु कणत्तिन् मिचै-एक क्षण में; मूवुलकुम् मुऱ्ऱि-तीनों लोकों में घूमकर; अङ्कु-वहाँ; कावल् पुरि-पहरा देते रहे; तेर्-रथ को; नी कटितु कॊणर्ति-तुम जल्दी लाओ; ऎन्ऱु इचॆत्तान्-ऐसा कहा। ३६२१

वह वचन सुनकर देवों ने कहा कि यह करणीय है ! देवेंद्र ने अपने सारथी मातलि से कहा कि तीनों लोकों में घूमकर पहरा देनेवाले रथ को जल्दी लाओ। ३६२१

मादलि कॊणर्न्दनन् महोददि वळावुम्
पूदल मॆऴुन्दुपडर् तन्मैय पॊलन्देर्
शीदमदि मण्डलमु मेनैयुळ वुन्दन्
पादमॆन निन्ऱदु पडिन्ददु विशुम्बिल् 3622

महोतति वळावुम् पूतलम्-महोदधि-वलयित भूतल; ऎऴुन्तु-उठकर; पटर् तन्मैय-उसमें फैल जाए इस रीति के; पॊलम् तेर्-स्वर्णरथ को; मातलि कॊणर्न्तनन्-मातलि लाया; चीतम् मति मण्टलमुम्-शीतल चन्द्रमण्डल; एनै उळवुम्-और अन्य जो हैं वे; तन् पातम् ऎन-उसके चरण बनें ऐसा; निन्ऱतु-खड़ा रहा (वह रथ); विचुम्पिल् पटिन्ततु-आकाश को छूता रहा। ३६२२

बड़े समुद्र से घिरी भूमि से उठकर सर्वत्र चल सकनेवाले स्वर्णरथ को मातलि ले आया। शीतल चंद्रमंडल और अन्य व्योम के मंडल उनके पैरों के तल में रहें, ऐसा वह आकाश में स्थित था। ३६२२

कुलक्किरिह ळेऴिन्वलि कॊण्डुयर् कॊडिञ्जुम्
अलैक्कुमुयर् पारिन्वलि याऴियिनि नचचुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कलक्कर वहुत्तदु कदत्तरव मॅट्टुम्
वलक्कयिरु कट्टियदु मुट्टियदु वानै 3623

कुल किरिकळ् एळिन्–सातों कुलगिरियों का; वलि कॊण्टु–बल लेकर; उयर्–ऊँचा जो रहा; कॊटिञ्चुम्–वह 'कॊडिञ्जु' (नामक कमल के आकार का हाथ रखने का अंग) और; उयर् पारिन्–उन्नत भूमि का; वलि अलैक्कुम्–बल मिटानेवाले; आळियितिन्–चक्रों की; अच्चुम्–धुरी और; कलक्कु अऱ–न हिलें ऐसा; वकुत्ततु–बनाये गये थे ऐसा रथ था; कतत्तु अरवम् ऍट्टुम्–क्रोधी स्वभाव के आठों सर्पों को; वल कयिऱु–कठोर रस्सी के रूप में; कट्टियतु–बाँधा गया था, ऐसा रथ; वानै–आकाश से; मुट्टियतु–टकरानेवाला। ३६२३

उसके 'कॊडिञ्जु' नामक (विश्रांति के लिए या हिलकर गिरने से बचाने के लिए जिस पर रथी अपना हाथ रख लेते हैं उस कली-से) भाग में सातों कुलगिरियों का-सा बल था। उन्नत भूमि के बल को तोड़ने की शक्ति रखते थे उसके पहिये और धुरी सुस्थिर बनी थी; उसकी रस्सियाँ क्रोधी अष्ट महानाग थीं। वह आकाश से टकराता था। (सात कुलगिरियाँ : कैलास, हिमालय, मन्दर, विंध्य, निषध, हेमकूट और नील। अष्ट महानाग : वासुकी, अनंत, दक्ष, शंखपाल, गुलिक, पद्म, महापद्म और कार्कोटक)। ३६२३

आण्डिऱॊडु नाळिरुदु तिङ्गळिव यॆन्ऱु
मीण्डऩवु मेलऩवुम् विट्टुविरि तट्टिन्
पूण्डुळदु तारहै मणिप्पॊरुविल् कॊवै
नीण्डपुऩै तारिऩदु निन्ऱुळदु कुन्ऱिन् 3624

आण्टिऩोटु–वर्षों और; नाळ्–दिन; इरुतु–ऋतुएँ; तिङ्कळ्–मास; इवै–ये कालांश; मीण्टऩवुम्–भूत; मेलऩवुम्–भविष्य; विट्टु–इनको; विरि–विस्तार के; तट्टिन्–पीठ में; पूण्टुळतु–उसके अंगों के रूप में रखकर निर्मित था वह रथ; तारकै–नक्षत्रों को; पॊरुवु इल्–अनुपमेय; मणि कॊवै–रत्नहारों की तरह; पुऩै–रखनेवाले; नीण्ट तारिऩतु–लम्बे दामों से अलंकृत था; कुन्ऱिन्–पर्वत के समान; निन्ऱुळतु–आ खड़ा हुआ। ३६२४

उसके पीठ के वर्ष, दिन, मास, भूत भविष्य आदि अंग थे। नक्षत्रों रूपी रत्नों के बने दाम उसको अलंकृत कर रहे थे। वह पर्वत के समान इन्द्र के सामने आ खड़ा हुआ। ३६२४

मादिर मऩैत्तैयु मणिच्चुवर्ह ळाहक्
कोदऱ वहुत्ततु मळैक्कुळुवै यॆल्लाम्
मीदुऱु पदाहैयॆऩ वीशियदु मॆय्ममैप्
पूदमवै यॆन्दिऩवलि यिऱ्पॊलिव दम्मा 3625

मातिरम् अऩैत्तैयुम्–सभी दिशाओं को; मणि–मणिमय; चुवर्कळाक–भित्तियों के रूप में लेकर; कोदु मऱ–विविध प्रकार के; वकुत्तत–निर्मित हैं; मळै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुऴुवं ऍल्लाम्–सारे मेघकुलों को; मीतु उऱ–ऊपर रहनेवाली; पताकै ऍऩ–पताकाओं के रूप में; वीचियतु–हिलानेवाला; पूतम् ऐन्तिऩ्–पाँचों भूतों के; मॆय्म्मै वलियिऩ्–सच्चे बल के साथ; पॊलिवतु–विद्यमान; अम्मा–आश्चर्य री माँ। ३६२५

उसकी मणिमय भित्तियाँ दिशाओं से सुनिर्मित थीं। वह मेघों को अपनी पताकाओं के समान हिलाता था। वह पाँचों भूतों के यथार्थ बल-से बल के साथ शोभता था। ३६२५

मरत्तॊडु मरुन्दुलहिल् यावुमुळ वारित्
तरत्तॊडु तॊडुत्तकॊडि तङ्गियदु शङ्गक्
करत्तॊडु तॊडुत्तकडऩ् मीदुनिमिर् कालत्तु
उरत्तॊडु कडुत्तकद ऴोदॆयद ऩोदॆ 3626

उलकिल् उळ–संसार में प्राप्य; मरुन्तु यावुम्–सभी ओषधियाँ; वारि–उठाकर; मरत्तॊटु–खंभों पर; तरत्तॊटु–श्रेणीबद्ध रीति से; तॊटुत्त–बाँधी गयी; कॊटि–लताओं से; तङ्कियतु–संयुत था; शङ्क–शंख लानेवाले; करत्तॊटु–हाथों (लहरों) से; तॊटुत्त–युक्त; कटल्–समुद्र; मीतु निमिर् कालत्तु–जब (लोकनाश करते हुए) बढ़ आता है उस समय; उरत्तॊटु–ज़ोर के साथ; कडुत्त–तेज़ी के साथ उठनेवाले; कतऴ्–उग्र; ओतै–शब्द; अतऩ् ओतै–उसकी ध्वनि है। ३६२६

उसके खंभों से संसार की ओषधि-मान्य सभी लताएँ ठीक तरह से बँधी थीं। उसकी गड़गड़ ध्वनि युगांत में हाथों रूपी शंखवाही लहरों के साथ उठकर प्रचण्ड रूप से बढ़नेवाले समुद्र के गर्जन के समान थी। ३६२६

पण्डरिद नुन्दियऩ् वन्दपऴ मुन्दॆप्
पुण्डरिह मॊट्टऩॆय मॊट्टिऩदु पूदम्
उण्डुतऩ् वयिऱ्ऱिडै यॊडुक्कि युमिऴ्हिऱ्पोऩ्
अण्डशऩ् मणिच्चयऩ मॊप्प दहलत्तिऩ् 3627

पण्टु–प्राचीन समय में; अरि–हरि; तऩ् उन्ति–अपनी नाभी में; अयऩ् वन्त–ब्रह्मा के प्रगट होने के समय; पऴ मुन्तै–बहुत प्राचीनकाल में प्रकट; पुण्टरिक मॊट्टु अऩॆय–कमल-कोरक के समान; मॊट्टिऩतु–'मुकुल' नाम के अंग का है; अकलत्तिऩ्–चौड़ाई में; पूतम् उण्टु–(पंच-) भूतों (तथा भौतिक पदार्थों) को खाकर; तऩ् वयिऱ्ऱिटै ऒटुक्कि–उदर में समा लेकर; उमिऴ्किऱ्पोऩ्–फिर बाहर निगलने वाले (प्रकट करानेवाले) श्रीविष्णु के; अण्टचऩ्–अण्डज आदिशेष रूपी; मणि–सुन्दर; चयतम् ऒप्पतु–शय्या के समान है। ३६२७

उसका मुकुल नामक अंग ब्रह्मोद्भव के समय की श्रीविष्णु के नाभिकमल की कली के आकार का था। अपने विस्तार में वह श्रीविष्णु की दिव्य शय्या आदिशेष के सदृश था, जो (विष्णु) प्रपञ्च के सारे भूत और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भौतिक जीवों और पदार्थों को अपने उदर में समाहित करके सृष्टिकाल में प्रगट करा देते हैं। ३६२७

वेदमॊरु नालुनिऱै वेळ्विहळुम् वॆव्वे
ऱोदमवै येळुमलै येळुमुल हेळुम्
पूदमवै यैन्दुमॆरि मून्ऱुनऩि पॊय्दीर्
मादवमु मावुदियु मैम्बुलऩु मऱ्ऱुम् 3628

वेतम् ऒरु नालुम्–चारों वेद; निऱै वेळ्विकळुम्–और पूर्ण याग; वॆव्वेऱ–अलग-अलग; ओतम् एळुम्–समुद्र सात और; मलै एळुम्–सातों गिरियाँ; उलकु एळुम्–सातों लोक; पूतम् ऐन्तुम्–पाँचों भूत; ऎरि मून्ऱुम्–तीन अग्नियाँ; नऩि–खब; पॊय् तीर्–निर्दोष; मा तवमुम्–दीर्घ तपस्या; आवुतियुम्–और आहुतियाँ; ऐम्पुलऩुम्–पाँचों इंद्रियाँ; मऱ्ऱुम्–और अन्य। ३६२८

चार वेद, पूर्ण यज्ञ, अलग-अलग सातों (क्षीर,दधि, घृत, इक्षु, मधु, मदिरा और लवण के) समुद्र, सातों पर्वत, पाँचों भूत, तीन अग्नियाँ, निष्कलंक दीर्घ तप, आहुतियाँ, पाँच इन्द्रियाँ आदि—। ३६२८

अरुङ्गरण मैन्दुशुड रैन्दुतिशै नालुम्
ऒरुङ्गुकुण मून्ऱुमुळल् वायुवॊरु पत्तुम्
बॆरुम्बहलु नीळिरवु मॆन्ऱिवै पिणिक्कुम्
पॊरुम्बरिह ळाहनऩि पूण्डदु पॊलन्देर् 3629

पॊलम् तेर्–स्वर्ण-रथ; अरुमै करणम् ऐन्तुम्–श्रेष्ठ पाँचों करण; चुटर् ऐन्तुम्–पाँचों ज्वालाएँ; तिचै नालुम्–और चारों दिशाएँ; ऒरुङ्कु कुणम् मूऱुम्–एकत्रित तीनों गुण; उळल्–संचरणशील; वायु ऒरु पत्तुम्–दसों पवन; पॆरुम् पकलुम्–बड़ा अहन और; नीळ् इरवु–लम्बी रात्रि; ऎन्ऱ इवै–आदि इनको; पिणिक्कुम्–जुते; पॊरुम् परिकळाक–युद्ध करनेवाले अश्वों के रूप में; नऩि–खूब; पूण्टदु–बाँध लिये रहता है। ३६२९

उस स्वर्णरथ के योद्ध अश्व थे:— पाँच अन्तःकरण, पाँच ज्वालाएँ (या पंचाग्नि), चार दिशाएँ, तीन गुण, संचरणशील दस पवन, लम्बा दिन और लम्बी रात। ३६२९

वन्ददऩै वाऩवर् वणङ्गि वलियोय्नी
ऎन्दैतर वन्दऩै यॆमक्कुदवु हिऱ्पाय्
तन्दरुळ्वै वॆन्ऱियॆऩ निऩ्ऱुतहै मॆन्बूच्
चिन्दिऩर्हळ् मादलि कडाविनऩि शॆन्ऱात् 3630

वन्ततऩै–आये उसे; वाऩवर्–देवों ने; वणङ्कि–प्रणाम करके; वलियोय्–शक्तिमान; नी–तुम; ऎम्तै तर–हमारे पिता तुल्य (इन्द्र) के बुलाने पर; वन्ततऩै–आये; ऎमक्कु–हमें; उतवकिऱ्पाय्–सहायता दो; वॆन्ऱि तन्तरुळ्वै–विजय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विलाओ; अॅत-कहकर; निऩ्ऱु-पास रहकर; तकै मॅऩ् पू-श्रेष्ठ कोमल फूल; चिऩ्तितऱ्कळ्-समर्पित किये; मातलि-मातलि; नति कटाबि-उसे अच्छी तरह चलाता; चॅऩ्ऱाऩ्-गया। ३६३०

इस तरह आये रथ को देखकर देवों ने नमस्कार किया और प्रार्थना सुनायी कि हे शक्तिमान् रथ ! तुम हमारे स्वामी इन्द्र के कहने से आये हो। हमारा उपकार करो। विजय दिलाओ। उन्होंने पुष्पों से अर्चना की। मातलि उसे चलाता गया। ३६३०

विऩैप्पहै मिशैक्कॊडु विशुम्बुऱैवि माऩम्
मऩत्तिऩ्विशै पॅऱ्ऱुळदु वऩ्ददॅऩ वाऩो
डऩैत्तुलह मुऩ्दॊऴ वडैऩ्द दमलऩ्पाल्
निऩैप्पुमिडै पिऱ्पड निमिऱ्ऩ्ददु नॅडुऩ्देर् 3631

विचुम्पु उऱै विमाऩम्-आकाशवासी विमान; विऩै मिचै-बुरे कर्म पर; पकै कॊटु-शत्रुता ले; मऩत्तिऩ् विचै पॅऱ्ऱुळतु-मनोगति पाकर; वऩ्ततु अॅत-आया जैसे; नॅटु तेर्-वह ऊँचा रथ; वाऩोटु-व्योमलोक और; अऩैत्तु उलकमुम्-सारे लोकों से; तॊऴ-स्तुत हो; अमलऩ् पाल्-विमल श्रीराम के पास; निऩैप्पुम्-चिंतन भी; इटै पिऱ्पट-स्थान में पीछे छोड़कर; अटैऩ्ततु-पहुँचा; निमिऱ्ऩ्ततु-ऊँचा खड़ा रहा। ३६३१

आकाशवासी दिव्य विमान, कोई पापों पर गुस्सा करके मन की गति-सी गति में आया हो जैसे वह बड़ा रथ व्योमलोक और अन्य लोकों की स्तुति का पात्र बनकर, सोचने की तेज़ी को भी कम करता हुआ विमल श्रीराम के पास आया और ऊँचा खड़ा रहा। ३६३१

अलरितऩि याऴिपुऩै तेरिदॅऩि लऩ्ऱाल्
उलहिऩ्मुडि विऱ्पॅरिय वूऴॊऴि यिदऩ्ऱाल्
निलैहॊणॅडु मेरुकिरि यऩ्ऱुनॅडि दम्मा
तलैवरॊरु मूवर्तऩि माऩमिदु ताऩो 3632

अलरि-सूर्य का; तऩि आऴि-एक चक्र से; पुऩै तेर् इतु-युक्त रथ है यह; अॅऩिऩ्-कहें तो; अऩ्ऱु-नहीं; उलकिऩ् मुटिविल्-संसार के प्रलयकाल में; ऊऴ् पॅरिय ऒऴि-होनेवाली बड़ी युगज्योति; इतु अऩ्ऱु-यह नहीं; निलै कॊऴ्-सुस्थापित; नॅटु-बड़ा; मेरु किरि अऩ्ऱु-मेरुपर्वत नहीं; नॅटितु-बहुत ऊँचा है; अम्मा-आश्चर्य री माँ; ऒरु मूवर्-सर्वोत्तम तीन; तलैवर्-देवनायकों का; तऩि माऩम्-अनुपम यान; इतु ताऩो-क्या यही होगा। ३६३२

श्रीराम ने सोचा— क्या इसे सूर्य का अनुपम एकचक्र रथ माना जाय ? नहीं ! युगांत की ज्योति है ? नहीं ! चिरस्थायी मेरु गिरि भी नहीं ! कितना ऊँचा है ! मैया री ! त्रिदेवों का विमान यही होगा क्या ? । ३६३२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅन्नैयिदु नम्मैयिडै यॅय्दलॅन्न वॅण्णा
मन्नवर्द मन्नन्महन् मादलियै वन्दाय्
पॊन्निन्नॊळिर् तेरिदुकॊ डार्पुहल वॅन्ड्रान्
अन्नवनु मन्नदनै याहवुरै शॅय्दान् 3633

मन्नवर् तम् मन्नन् मकन्–राजाधिराज (दशरथ) के पुत्र ने; नम्मै इटै अॅय्तल्–हमारे पास आनेवाला; अॅन्नै इतु–यह क्या है; अॅन्न अॅण्णा–ऐसा सोचकर; मातलियै–मातलि से; पॊन्निन् ऒळिर्–स्वर्णप्रकाश के; इतु तेर् कॊटु–इस रथ को लेकर; आर् पुकल–किसके कहने से; वन्ताय्–आये; अॅन्ड्रान्–पूछा; अन्नवनुम्–उसने भी; अन्नतनै–वह कारण; आक–ठीक-ठीक; उरै चॅय्तान्–बतलाया। ३६३३

चक्रवर्तीसुत ने यह सोचकर कि हमारे पास आया यह रथ कौन सा है ? मातलि से प्रश्न किया कि यह स्वर्णमय रथ लेकर किसके कहने से आये हो ? मातलि ने हेतु बताया। ३६३३

मुप्पुर मॅरित्तवनु नान्मुहनु मुन्नाळ्
अप्पह लियर्ड्रियुळ दायिर मरुक्करक्
कॊप्पुडैय दूळितिरि कालुमुलै विल्ला
इप्पॊरुवि ड्रेर्वरुव दिन्दिरनि लॅन्दाय् 3634

अॅन्ताय्–हमारे पालक; मुन् नाळ्–प्राचीन समय में; अ पकल्–उस अहम में; मुप् पुरम् अॅरित्तवनुम्–त्रिपुरदहन और; नान्मुकनुम्–चतुर्मुख के द्वारा; इयर्ड्रियुळतु–निर्मित; आयिरम् अरुक्करक्कु–सहस्र सूर्यों के; ऒप्पुडैयतु–समान (प्रकाशमान) है; ऊळि–युग; तिरि कालुम्–परिवर्तन के समय में भी; उलैवु इल्ला–न मिटनेवाला; पॊरुविल्–अप्रतिम; इ तेर्–यह रथ; इन्तिरनिल् वरुवतु–इन्द्र से आता है। ३६३४

मेरे पितातुल्य देव ! यह प्राचीन काल में त्रिपुरदहन और ब्रह्मा के द्वारा निर्मित था। सहस्रार्क-सम प्रकाशमान यह रथ जो युगपरिवर्तन के अवसर पर भी नहीं मिटेगा, इन्द्र की आज्ञा पर आया है। ३६३४

अण्डमिदु पोल्वत्त वळप्पिल वडुक्किक्
कॊण्डुपॅय रुङ्गुरुहु नीळुमवं कोळुर्
रुण्डवत् वयिर्ड्रिनैयु मॊक्कु मुवमैक्कुप्
पुण्डरिह निन्शर मॅनक्कडिदु पोमाल् 3635

पुण्टरिक–पुण्डरीक; इतु पोल्वत्त–इस (अण्ड) के समान; अण्टम्–अण्डों को; अळप्पिल् अटुक्कि–असंख्यक रीति से चुनकर; कॊण्टु–उन्हें ढो लेकर; पॅयरुम्–स्थान से स्थान जा सकता है; कुरुकुम् नीळुम्–(आवश्यकतानुसार) घट सकता है, बढ़ सकता है; अवै–उन (अण्डों) को; कोळुर्रु–लेकर; उण्टवत्–जिन्होंने समा लिया था उनके; वयिर्ड्रिनैयुम् उवमैक्कु ऒक्कुम्–उदर के समान भी होगा; निन् चरम् अॅन्न–आपके बाण के समान; कटितु पोम्–तेज जा सकता है। ३६३५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे पुण्डरीक ! यह इस अण्ड के समान अनेक अण्डों को एक साथ चुन रखकर ढो ले जानेवाला है ! यह आवश्यकतानुसार चौड़ा या छोटा हो सकता है ! इसकी तुलना भुवनभोक्ता श्रीविष्णु के उदर से की जा सकती है। यह आपके शर की ही भाँति तेज़ी से जा सकता है। ३६३५

कण्णुमऩ मुङ्गडिय कालुमिवै कण्डाल्
उण्णुम्विशै यालुणर्वु पिऱ्पडर वोडुम्
विण्णुनिल नुम्मॅऩ विशेडमिल दः(ह्)दे
ॲण्णुनॅडु नीरिनु नॅरुप्पिडैयु मॅन्दाय् 3636

कण्णुम् मऩमुम्–आँखों और मन; कटिय कालुम्–तेज़ हवा आदि; इवै कण्टाल्–इनको देखे तो; विचैयाल् उण्णुम्–अपनी गति से (उनकी गति को) खा लेगा (उनसे आगे बढ़ जायगा); उणर्वु–भावना भी; पिऩ् पटर–पीछे दौड़े, ऐसा; ओडुम्–खूब आगे निकल जायगा; ॲऩ्ताय्–पिता (सम); विण्णुम् निलऩुम् ॲऩ–आकाश या भूमि ऐसी; विचैटम् इलतु–फ़र्क़ नहीं है; ॲण्णुम्–सोचने योग्य; नॅटु नीरिऩुम्–लम्बे समुद्र में; नॅरुप्पिटैयुम्–और आग में; अ..ते–उसी भाँति। ३६३६

दृष्टि, मन, तेज़ हवा —इनको भी अपनी तेज़ी से खा (हरा) सकता है। भावना भी उससे पिछड़ जायगी; यह आगे निकल जायगा। मेरे विधाता ! इसके सामने आकाश, भूतल का कोई विशेष भेद नहीं रहता। यह गण्य सागर में भी जा सकेगा, और आग में भी। ३६३६

नीरुमुळ वेयवैयॊ रेऴुनिमिर् हिऱ्कुम्
पारुमुळ वेयदि ऩिरट्टियवै पण्बिऱ्
पेरुमॊरु कालैयॊरु कालुमिडै पेरात्
तेरुमुळ देयिदु वलालुलहु शॅय्दोय् 3637

उलकु चॅय्तोय्–लोकनिर्माता; ओर् एऴु नीरुम् उळवे–सप्त सागर हैं न; अतिऩ् इरट्टि–उसके दुगुने; निमिर्किऱ्कुम्–उठे रहनेवाले; पारुम् उळवे–भुवन हैं न; अवै–वे; ऒरु कालै–कभी; पण्पिल्–अपनी रचना में; पेरुम्–बदल सकते हैं; ऒरु कालुम् इटै पेरा–कभी न बदलनेवाला; तेरुम्–रथ; इतु अलाल्–इसको छोड़कर; उळते–(अन्य) है क्या। ३६३७

हे लोकनिर्माता ! सात समुद्र हैं और चौदह भुवन ! वे भी कभी अपनी रचना में परिवर्तित (विघटित) हो जाते हैं। पर कभी भी न बदलने वाला इस रथ के सिवा कोई है क्या ? । ३६३७

तेवरु मुऩित्तलैव रुञ्जिवऩु मेऩाळ्
मूवुलहळित्त ववऩुम् मुदल्व मुऩ्ऩित्
ऱेविऩर् शुरर्क्किऱैव ऩीन्दुळदि दॅऩ्ऩा
माविऩ्मऩ मॊप्पवुणर् मादलि वलित्ताऩ् 3638

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुतल्व–सरदार; तेवरुम्–देव; मुनि तलैवरुम्–मुनिवर; चिवनुम्–शिव; मेल् नाळ्–प्राचीनकाल में; मूवुलकु अळितूत अवनुम्–त्रिलोक की सृष्टि जिन्होंने की वे (ब्रह्मा); मुन्निन्रु एविनर्–(इन्होंने) सामने स्थित होकर प्रेरित किया; इतु–इसे; चुरर्क्कु इरैवन्–सुरेन्द्र ने; ईन्तुळतु–जिसे भेजा वह यह है; ऍन्ना–ऐसा; माविन् मनम्–अश्वों के मन को; ऑप्प उणर्–सम रूप से जाननेवाले; मातलि–मातलि ने; वलित्तान्–कहा। ३६३८

नाथ ! देवों, मुनिवरों, शिव और पुरातन त्रिलोकसर्जक ब्रह्मा ने सामने आकर प्रेरित किया। तब सुरेंद्र ने इसे आपके पास भेजा है। अश्वों का मन जाननेवाले मातलि ये बातें कहीं। ३६३८

ऐयनिदु केट्टिह लरक्कनदु मायच्
चॅय्हैहॊ लॅनच्चिरिदु शिन्दैयि निनैन्दान्
मॅय्यव नुरैत्तदॅन देयिरद मेवुम्
मॊय्युळै वयप्परि मॊळिन्दमुदु वेदम् 3639

ऐयन्–स्वामी ने; इतु केट्टु–यह सुनकर; इकल् अरक्कततु–शत्रु राक्षस की; माय चॅय्कै कॊल्–माया का कार्य है क्या; ऍन–ऐसा; चिन्तैयिन्–मन में; चिरितु निनैन्तान्–थोड़ा विचारा; अवन् उरैत्ततु–उसका कहना; मॅय् ऍनवे–सच ही है ऐसा; इरतम् मेवुम्–रथ से युक्त; मॊय् उळै–घने अयालों के साथ रहे; वय परि–विजयी अश्वों ने; मुतु वेतम्–प्राचीन वेदों को; मॊळिन्त–स्वरित किया। ३६३९

श्रीराम ने यह सुना और थोड़ा मन में संशय किया कि क्या यह शत्रुता बरतनेवाले राक्षस का मायाकार्य तो नहीं है ! तब रथ के जुते अश्वों ने पुरातन-वेदघोष करके मातलि के वचन को सच्चा प्रमाणित किया। ३६३९

इल्लैयिनि यैयमॅन वॅण्णिय विरामन्
नल्लवनै नीयुनदु नामनविल् हॅन्न
वल्लिदनै यूर्वदॊरु मादलि यॅनप्पेर्
शॊल्लुव रॅनत्तॊळुदि इरैञ्जियिवै शॊन्नान् 3640

इति ऐयम् इल्लै–अब संशय नहीं; ऍन ऍण्णिय–ऐसा जिन्होंने सोचा; इरामन्–श्रीराम के; नल्लवनै–भलेमानुस से; नी–तुम; उनतु नामम्–अपना नाम; नविल्क–बताओ; ऍन्न–कहने पर; वल्लि तनै–जुए के सिर पर; ऊर्वतु–बैठकर (रथ) चलानेवाला; ऑरु मातलि–एक (सारथी) मातलि; ऍन–ऐसा; पेर् चॊल्लुवर्–नाम बताते हैं (लोग); ऍन–कहकर; तॊळुतु इरैञ्चि–स्तुति तथा विनय करके; इवै चॊन्नान्–यों बोला। ३६४०

श्रीराम को लगा कि अब कोई संशय नहीं है। उन्होंने भलेमानुस मातलि से पूछा कि तुम अपना नाम बतलाओ। मातलि ने निवेदन किया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कि मुझे 'सारथी मातलि' कहते हैं। नमस्कार करके वह (श्रीराम से) यों बोला। ३६४०

मारुदियै नोक्कियिळ वाळरियै नोक्कि
नीर्हरुदु हिन्ऱदै निहऴ्त्तुमॅन्न निन्ऱान्
आरियन्व णङ्गियव रैयमिलै यैया
तेरिदु पुरन्दरन्न दॅन्ऱन्नर् तॅळिन्दार् 3641

मारुतियै नोक्कि–मारुति को देखकर; इळ वाळ् अरियै–बाल और क्रूर सिंह (सदृश लक्ष्मण) को; नोक्कि–देखकर; नीर् करुतुकिन्ऱतै–तुम जो सोचते हो वह; निकऴ्त्तुम् अॅन्न–कहो ऐसा पूछकर; निन्ऱान्–स्थित रहे; तॅळिन्तार् अवर्–अपने मन में निर्णय करनेवाले उन्होंने; आरियन् वणङ्कि–आर्य श्रीराम को नमस्कार करके; ऐया–स्वामी; ऐयम् इलै–संदेह नहीं; इतु तेर्–यह रथ; पुरन्तरनतु–पुरन्दर का है; अॅन्ऱन्नर्–कहा। ३६४१

(फिर भी) श्रीराम ने मारुति और क्रूर बालकेसरी (-सदृश लक्ष्मण) से पूछा कि तुम्हारी राय क्या है? बताओ। तब उन दोनों ने खूब सोचकर निर्णय के साथ आर्य को नमस्कार करके उत्तर दिया कि प्रभु! इसमें संशय की गुंजाइश नहीं है। ३६४१

विऴुन्दुपुर डीविन्नै निलत्तॊडु वॅदुम्बत्
तॊऴुन्दहैय नल्विन्नै कळिप्पिन्नॊडु तुळ्ळ
अऴुन्दुतुय रत्तमर रन्दणर्कै मुन्दुऱ्
ऱॆऴुन्दुतलै येऱविन्नि देऱिन्न निरामन् 3642

विऴुन्तु पुरळ्–गिरकर लोटनेवाले; ती विन्नै–पापों के; निलत्तॊटु–भूमि के साथ; वॅतुम्प–जल जाते; तॊऴुम् तकैय–स्तुत्य; नल् विन्नै–पुण्यकर्मों के; कळिप्पिन्नॊटु–आनन्द के साथ; तुळ्ळ–उछलते; अऴुन्तु तुयरत्तु–मग्नकारी दुःख से पीड़ित; अमरर्–देवों के; अन्तणर्–विप्रों के; कै–हाथों के; मुन्तु उऱ्ऱु–आगे बढ़कर; अॅऴुन्तु–उठकर; तलै एऱ–सिर पर चढ़ते; इरामन्–श्रीराम; इनितु एऱिनन्–सुख से (रथ पर) चढ़े (सवार हुए)। ३६४२

श्रीराम रथ पर इत्मीनान के साथ सवार हुए तो पाप नीचे भूमि पर गिरकर भूमि के साथ जल गये; पुण्य मोद के साथ नाचने लगा। दुःख-मग्न देवों और विप्रों के हाथ स्वतः आगे बढ़े और जुड़कर सिर पर (नमस्कार करने) चढ़े। ३६४२

36. इरावणन् वदैप् पडलम् (रावण-वध पटल)

आऴियन् दडन्देर् वीर नेऱलु मलङ्गल् शिल्लिप्
पूऴियिऱ् चुरित्त तन्मै नोक्किय पुलव रॅल्लाम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊळिवॆङ् गाऱ्ऱिऩ् वॆय्य कलुळऩ यॊऩ्ऱुञ् जॊल्लार्
वाळिय वऩुमऩ् तोळै येत्तिऩार् मलर्हळ् तूवि 3643

वीरऩ्–श्रीवीरराघव; आळि–पहियेदार; अम्–मनोहर; तटम् तेर्–बड़े रथ पर; एऱुम्–चढ़े त्योंही; अलङ्कल् चिल्लि–प्रकाशमय पहिये; पूळियिल्–धूलि में; चुरित्त–जो धँस गये; तऩ्मै–वह हाल; नोक्किय–जिन्होंने देखा; पुलवर् ऎल्लाम्–उन सारे देवों ने; ऊळि वॆम् काऱ्ऱिऩ–युगान्त के गरम पवन से भी; वॆय्य कलुळऩै–आतंककारी गरुड़ को; ऒऩ्ऱुम् चॊल्लार्–कुछ न कहकर; अनुमऩ् तोळै–हनुमान के कंधों पर; मलर्कळ् तूवि–फूल डालकर; एत्तिऩार्–उनकी प्रशंसा की। ३६४३

देवों ने श्रीराम के उस पहियोंदार विशाल और मज़बूत रथ पर चढ़ते ही रथ का धूलि में धँसने का प्रकार देखा तो उन्हें गरुड़ और हनुमान की शक्ति का ख़याल आया। उन्होंने गरुड़ के बल का कुछ नहीं कहा पर हनुमान के कंधों पर फूल डालकर उनकी सराहना की। ३६४३

ऎऴुहतेर् शुमक्क वॆल्लोम् वलियुम्बुक् किऩ्ऱे यॊऩ्ऱि
विऴुहपो ररक्कऩ् वॆल्ह वेन्दर्क्कु वेन्दऩ् विम्मि
अऴुहपो ररक्कि मारॆऩ् ऱार्त्तऩ रमर राळि
मुऴुहिमी दॆऴुन्द दॆऩ्नच् चॆऩ्ऱदु मूरित् तिण्डेर् 3644

तेर् ऎऴुक–रथ बढ़े; इऩ्ऱे–आज ही; ऎल्लोम् वलियुम्–(हमारे) सभी का बल; पुक्कु–इसमें समाहित हो; ऒऩ्ऱि–जमकर; चुमक्क–धारण करे; पोर् अरक्कऩ्–युद्धप्रिय राक्षस; विऴुक–मिट जाए; पोर् अरक्किमार्–युद्धप्रिय राक्षसियाँ; विम्मि अऴुक–सिसक-सिसक रोयें; ऎऩ्ऱु–ऐसा; अमरर् आर्त्तऩर्–देवों ने नाद किया; मूरि–शक्तिमान; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथ; आळि–समुद्र में; मुऴुकि–डुबकी लगाकर; मीतु ऎऴुन्ततु ऎऩ्ऩ–ऊपर उठा हो जैसे; चॆऩ्ऱदु–(धूलि-समुद्र चीरकर) गया। ३६४४

देवों ने ज़ोर के साथ कहा कि रथ उठे। हमारा सारा बल उसमें प्रविष्ट हो जाए। युद्धप्रिय राक्षस का नाश हो। युद्ध चाहनेवाली राक्षसियाँ दुःख से भरकर रोएँ। तब बलवान सुदृढ़ वह रथ समुद्र में मग्न हो फिर उठकर चलता हो जैसे (धूलि-सागर को चीरकर) चलने लगा। ३६४४

अऩ्ऩदु कण्णिऱ् कण्ड वरक्कऩु ममर रीन्दार्
मऩ्ऩॆडुन् देरॆऩ् ऱुऩ्ऩि वाय्मडित् तॆयिऱु तिऩ्ऱाऩ्
पिऩ्ऩदु किडक्क वॆऩ्ऩात् तऩ्ऩुडैप् पॆरुन्दिण् डेरै
मिऩ्ऩिवर् वरिविऱ् चॆङ्गै यिरामऩ्मेल् विडुदि यॆऩ्ऱाऩ् 3645

अऩ्ऩतु–उसे; कण्णिल् कण्ट–अपनी आँखों से देखकर; अरक्कऩ्म्–राक्षस रावण ने भी; मऩ्–सुदृढ़; नॆटुम् तेर्–ऊँचा रथ; अमरर् ईन्तार्–देवों ने दिया है; ऎऩ्ऱु उऩ्ऩि–ऐसा सोचकर; वाय मटित्तु–ओंठ काटकर; ऎयिऱु तिऩ्ऱाऩ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बाँत काटे; पिन्–बाद; अतु किटक्क–वह रहे; अॅन्ना–कहकर; तन् उटै–मेरे; पॅरुम् तिण् तेरै–बड़े कठोर रथ को; मिन् इवर्–रोशनदार; वरिविल्–सबन्ध धनुर्धर; चॅम् कै इरामन् मेल्–लाल हाथवाले राम पर; विटुति–चलाओ; अॅन्ऱान्–कहा (सारथी से) रावण ने। ३६४५

राक्षस रावण ने उसे अपनी आँखों से देखा। मालूम हो गया कि यह उन्नत रथ देवों का दिया हुआ है। दाँत पीसे। फिर कहा कि रहे वह! अपने सारथी से कहा कि मेरे मज़बूत व बड़े रथ को विद्युत्प्रकाश सबंध धनुर्हस्त श्रीराम की तरफ़ चलाओ। ३६४५

इरिन्दवान् कविह ळॅल्ला मिमैयव रिरद मीन्दार्
अरिन्दमन् वॅल्लु मॅन्ऱर् कैयुऱ विल्लॅन् ऱञ्जार्
तिरिन्दनर् मरमुङ् गल्लुञ् जिन्दिनर् तिशैयो डण्डम्
पिरिन्दन होल्लॅन् ऱॅण्णप् पिऱन्ददु मुळक्किन् पॅऱ्ऱि 3646

इरिन्त–जो अस्त-व्यस्त भागे थे वे; वान् कविकळ् ऍल्लाम्–वानर सभी; इमैयवर्–देवों ने; इरतम् ईन्तार्–रथ दिया है; अरिन्तमन् वॅल्लुम्–अरिंदम जीतेंगे; ऍन्ऱऱ्कु–ऐसा कहने को; ऐयुऱवु इल्–संशय नहीं; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; अञ्चार्–निडर हो; तिरिन्ततर्–घूमे-फिरे; मरमुम् कल्लुम् चिन्तितर्–तरु और पत्थर चलाये; तिचैयोटु–दिशाओं के साथ; अण्टम्–अण्ड; पिरिन्तन कॉल्–क्या अस्त-व्यस्त हो गये; ऍण्ण–ऐसा सोचने योग्य रीति से; मुळक्किन् पॅऱ्ऱि–उनके शोर का हाल; पिऱन्ततु–दिखा। ३६४६

जो पहले भागे थे वे सब वानर यह जानकर लौट गये कि देवों ने रथ दिया है और अरिंदम श्रीराम की विजय निश्चित है। निडर होकर इधर-उधर घूमे और पर्वत और तरु फेंके। ऐसा नर्दन किया कि यह संशय हो कि दिशाओं के साथ अंड फट गया क्या ?। ३६४६

वार्प्पॉलि मुरशि नोदै वाय्प्पुडै वयव रोदै
पोर्त्तॉळिर् कळत्तै मुऱ्ऱुञ् जुऱ्ऱिय पॉम्म लोदै
आर्त्ततलि नियारुम् बार्वीळ्न् दडङ्गिन रिरुव राडल्
तेर्क्कुर लोदै पॉङ्गच् चॅविमुऱ्ऱुञ् जॅविडु शैय्य 3647

वार् पॉलि–फ़ीतों से बद्ध छीवमय; मुरचिन् ओतै–भेरियों का नाद; वाय् पुडै–मुखर; वयवर् ओतै–वीरों का शब्द; पोर् तॉळिल् कळत्तै–युद्धकार्य के मैदान को; मुऱ्ऱुम् चुऱ्ऱिय–घेरे रही सेनाओं का; पॉम्मल ओतै–हर्षनाद; इरुवर्–दोनों (श्रीराम और लक्ष्मण) के; आटल् तेर्–युद्ध करने को सवार रथ के; कुरल् ओतै–गड़गड़ाहट का शब्द; चॅवि मुऱ्ऱुम्–कानों को पूर्णरूप से; चॅविडु चॅय्य–बहरा बनाते हुए; आर्त्ततलिन्–उठ रहे थे इसलिए; यारुम्–सभी; पार् बिळुन्तु–भूमि पर गिरकर; अटङ्किनर्–संज्ञाशून्य पड़े रहे। ३६४७

फ़ीतों के बंधन से युक्त भेरियों की ठनक, मुखर वीरों का नाद, युद्ध-मैदान में सर्वत्र रही सेनाओं की हर्षध्वनि, और श्रीराम और लक्ष्मण के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रथों की गड़गड़ाहट —आदि सभी ध्वनियाँ बहरा करते हुए उठीं तो वहाँ रहे सभी गिरे और संज्ञाहीन हो रहे। ३६४७

मादलि वदन नोक्कि मामऱै यमलन् माऱाक्
कादलोय् करुम मॊन्ऱु केट्टियाऱ् कळित्त शिन्दै
एदलन् मिहुदि यॆल्ला मियऱ्ऱिय पिन्ऱै यॆन्ऱन्
शोदनै नोक्किच् चॆय्दि तुडिप्पिलै यॆन्नच् चॊन्नान् 3648

मा मऱै अमलन्–उत्कृष्ट वेदपुरुष विमल श्रीराम ने; मातलि वतनम् नोक्कि–मातलि का वदन देखकर; माऱा कातलोय्–अचल स्नेही; करुमम् ऒन्ऱुम्–कार्य एक; केट्टि–सुनो; कळित्त चिन्तै–मुदितमन; एतलन्–शत्रु (रावण); मिकुति ऎल्लाम्–सभी बुराइयाँ; इयऱ्ऱिय पिन्ऱै–करने के बाद; ऎन् तन् चोतनै नोक्कि–मेरा संकेत देखकर; चॆय्ति–अपना काम करो; तुटिप्पु इलै–त्वरा मत करो; ऎन्न चॊन्नान्–ऐसा कहा। ३६४८

तब उत्तमवेदपुरुष विमल श्रीराम ने मातलि का वदन देखकर उससे कहा हे अचल स्नेही ! एक कार्य सुन लो। मोदपूर्ण शत्रु रावण सभी बुरे कृत्य कर ले, उसके बाद मेरा संकेत देखकर तुम कार्य करो। जल्दी न करो। ३६४८

वळ्ळनिन् करुत्तु माविन् शिन्दैयु माऱ्ऱु लाऱ्दम्
उळ्ळमु मिहैयु मुऱ्ऱु कुऱ्ऱमु मुऱुदि तानुम्
कळ्ळमिल् कालप् पाडुङ् गरुममुङ् गरुदे नाहिल्
तॆळ्ळिदॆन् विञ्जै यॆन्ऱा नमलनुञ् जीरि दॆन्ऱान् 3649

वळ्ळल्–उदार प्रभु; निन् करुत्तुम्–आपका विचार और; माविन्–अश्वों के; चिन्तैयुम्–मन; माऱ्ऱलाऱ् तम् उळ्ळमुम्–शत्रुओं के अभिप्राय; मिकैयुम्–उनकी विशेषताएँ; उऱ्ऱु–उनसे होनेवाले; कुऱ्ऱमुम्–अपराध (संकट); उऱुति तानुम्–और निश्चय; कळळम् इल्–वंचना-रहित; कालप्पाडुम्–काल की बात; करुममुम्–कार्य; करुतेनाकिल्–सोचूँ नहीं तो; ऎन् विञ्चै–मेरी (सारथ्य-) विद्या; तॆळ्ळितु–साफ़ होगी; ऎन्ऱान्–कहा (मातलि ने); अमलनुम्–विमल देव ने भी; चीरितु–उत्तम बात है; ऎन्ऱान्–कहा। ३६४९

मातलि ने उत्तर में निवेदन किया— हे उदार प्रभु ! आपका अभिप्राय, अश्वों का रुख, शत्रुओं का मन, उनकी ज़्यादती, उसका बुरा फल, सभी का दृढ़ संकल्प, काल की ऋजुस्थिति, अपना कार्य —यह सब न सोचूँ तो मेरी सारथिविद्या भी ठीक होगी न ! (नहीं।) विमल देव ने भी कहा कि अच्छा, उत्तम है। ३६४९

तोन्ऱिन निराप नीदाऱ् पुरन्दरन् तुरहत् तेर्मेल्
एन्ऱिरु वीर्क्कुम् वॆम्बो रॆय्दिय दिडैये यानोर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शान्ऱैत निऱ्ऱल् कुऱ्ऱन् दरुदियाल् विडैयीण् डॅन्ऱान्
वान्तॊडर् कुन्ऱ मन्न महोदर निलङ्गै मन्नै 3650

वान् तॊटर् कुन्ऱम् अन्न–आकाशस्पर्शी पर्वत के समान; मकोतरन्–महोदर ने; इलङ्कै मन्नै–लंकेश से; ईदु–यह; पुरन्तरन्–इन्द्र के; तुरकम् तेर् मेल्–अश्वों के (चालित) रथ पर; इरामन् तोन्ऱिनन्–राम प्रकट हुआ; एन्ऱु–सामना करने; इरुवीर्क्कुम्–आप दोनों में; वॅम् पोर्–कठोर युद्ध; ऍय्तियतु–आ गया है; इटैये–बीच में; यान् ओर् चान्ऱु ऍन्–मैं एक साक्षी के रूप में; निऱ्ऱल्–(चुप) खड़ा रहना; कुऱ्ऱम्–ग़लती होगा; ईण्टु–अब; विटै–आज्ञा (लड़ने की); तरुति–दें; ऍन्ऱान्–कहा। ३६५०

उधर आकाशस्पर्शी पर्वत-सदृश महोदर ने लंकेश रावण को समझाया। देखिए! राम देवेंद्र के रथ पर प्रगट हो गया। आप दोनों में घमासान युद्ध होने को है। केवल साक्षीवत् मैं खड़ा रहूँ —यह अपराध होगा। मैं युद्ध करूँ, इसकी आज्ञा दें। ३६५०

अम्बुय मनैय कण्णन् तन्नैया नरियि नेऱु
तुम्बियैत् तॊलैत्त दॅन्नत् तॊलैक्कुवॅन् तॊडर्न्दु निन्ऱ
तम्बियैत् तडुत्ति यायिर् ऱन्दनै कॊऱ्ऱ मॅन्ऱान्
वॅम्बिय लरक्क नः(ह्)दे शॅय्वनॅन् ऱयलिन् मीण्डान् 3651

अम्पुयम् अनैय कण्णन् तन्नै–कमल-सी आँखोंवाले को; यान्–मैं; अरियिन् एऱु–नर केसरी ने; तुम्पियै तॊलैत्ततु ऍन्न–मर्दन किया हो जैसे; तॊलैक्कुवॅन्–मिटा दूंगा; तॊटर्न्तु निन्ऱ–पास लगे जो खड़ा है; तम्पियै–उसके छोटे भाई को; तडुत्तियायिन्–रोक सको तो; कॊऱ्ऱम् तन्नतनै–विजय (तुमने) दिलवा दी; ऍन्ऱान्–कहा रावण ने; वॅम्पु इयल् अरक्कन्–क्रोधतप्त स्वभाव का राक्षस; अ.ं.ते चॅय्वॅन्–वही करूँगा; ऍन्ऱु–कहकर; अयलिन्–एक तरफ़; मीण्टान्–लौटा। ३६५१

रावण ने कहा कि पंकजाक्ष का नाश मैं गज को सिंह-जैसे कर लूँगा! उसके पीछे आनेवाले उसके छोटे भाई को तुम रोक लो तो तुम मुझे विजय दिलवा दोगे। क्रोधतप्त राक्षस महोदर ने कहा कि मैं वही करूँगा। वह एक ओर मुड़ चला। ३६५१

मीण्डव निळवल् निन्ऱ पाणियिन् विलङ्गा मुन्नम्
आण्डहै तॅय्वत् तिण्डे रणुहिय दणुहुङ् गालै
मूण्डॅळु वॅहुळि योडु महोदरन् मुनिन्दु मुट्टत्
तूण्डुदि तेरै यॅन्ऱान् शारदि तॊळुदु शान्नान् 3652

मीण्टवत्–जो मुड़ चला वह; इळवल्–लघुराज; निन्ऱ पाणियिन्–जहाँ खड़े रहे उस तरफ़; विलङ्का मुन्नम्–जाए इसके पहले ही; आण्टकै–वीर श्रीराम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

का; तैय्वम् तिण् तेर्–दिव्य सुदृढ़ रथ; अणुकियतु—पास आया; अणुकुम् कालै–पास आते समय; मकोतरन्–महोदर ने; मूण्टु ऍळु–उभर उठते; वॆंकुळियोटु–क्रोध के साथ; मुनिन्तु–डाँटकर; तेरै–अपने रथ को; मुट्ट तूण्टुति–टकराने को चलाओ; ऍन्ऱान्–कहा; चारति–सारथी ने; तॊळुतु–नमस्कार करके; चॊल्तान्–कहा। ३६५२

रावण से हटकर वह लघुराज लक्ष्मण की तरफ़ जाए, इसके पहले ही श्रीवीरराघव का मज़बूत व दिव्य रथ उसके पास आ गया। यह देख महोदर ने गुस्से के साथ सारथी से कहा कि तुम हमारे रथ को ऐसा चलाओ कि वह उसके रथ को ठोकर लगा दे। सारथी ने विनय के साथ यों कहा। ३६५२

ऍण्णरुङ् गोडि वॆङ्ग णिरावण रेयु मिन्ऱु
नण्णिय पॊळुदु मीण्डु नडप्परो किडप्प दल्लाल्
अण्णरन् तोऱ्ऱङ् गण्डा लैयनो कमल मन्न
कण्णनै यॊळिय विप्पाऱ् चॆल्वदे करुम मॆन्ऱान् 3653

ऐय–स्वामी; अण्णल् तन्–महिमावान (श्रीराम) का; तोऱ्ऱम्–(मनोहर) रूप; कण्टाल्–देख लें तो; ऍण् अरुम्–असंख्य; कोटि–करोड़; वॆम् कण् इरावणरेयुम्–क्रूर आँखों के रावण भी; इन्ऱु नण्णिय पॊळुतु–अब पास जाएँ तो; किटप्पतु अल्लाल्–मरकर गिर जाने के सिवा; मीण्टु नटप्परो–बचकर आगे बढ़ सकेंगे क्या; नी–आप; कमलम् अन्न कण्णनै–कमलाक्ष को; इ पाल् ऒळिय–इस ओर छोड़कर; चॆल्वते–चले, यही; करुमम्–करने योग्य कार्य होगा; ऍन्ऱान्–कहा। ३६५३

स्वामी ! महिमावान श्रीराम का रूप देख लें तो (एक रावण क्या) असंख्य करोड़ों की संख्या के क्रूर आँखों वाले रावण भी, पास जाने पर तो मरकर गिर जायँगे। उसको छोड़कर क्या वे बच निकल सकेंगे ? इसलिए आप पंकजाक्ष को यहीं छोड़कर दूसरी तरफ़ निकल जाइए। ३६५३

ऍन्ऱलु मॆयिऱुप् पेळुवाय् मडित्तॆडा वॆडुत्तु निन्नैत्
तिन्ऱनै नॆनिन्तु मुण्डाम् बळियॆन्नच् चीऱ्ऱञ् जिन्दुम्
कुन्ऱन्न तोऱ्ऱत् तान्ऱन् कॊडिनॆडुन् वेरि नेरे
शॆन्ऱदव् विरामन् तिण्तेर् विळैन्ददु तिमिलत् तिण्पोर् 3654

ऍन्ऱलुम् (सारथी के) यों कहने पर; ऍयिऱु पेळुवाय् मटित्तु–घोर दाँतों के अपने मुख को मोड़कर; ऍटा–रे; निन्नै–तुझे; ऍटुत्तु–उठाकर; तिन्ऱनैत्–खा लूँ; ऍन्निनुम्–तो; पळि उण्टाम्–निंदा होगी; ऍन्–ऐसा; चीऱ्ऱम्–कोप को; चिन्तुम्–गिरनेवाले; कुन्ऱन्न तोऱ्ऱत्तान् तन्–पर्वताकार उसके; कॊटि नॆडु तेरिन् नेरे–ध्वजायुक्त बड़े रथ के सामने; अ इरामन् तिण् तेर्–उन श्रीराम का सुदृढ़ रथ; चॆन्ऱतु–गया; तिमिलम् तिण् पोर्–तुमुल और कठोर युद्ध; विळैन्ततु–चल गया। ३६५४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सारथी के ऐसा कहते पर महोदर ने ओंठ काटते हुए कहा कि रे ! तुमको उठाकर खा लूँ तो निंदा होगी ! ऐसा कहते हुए जो अपना अपार कोप दिखा रहा था, उस पर्वताकार महोदर के ध्वजा से अलंकृत रथ के सामने श्रीराम का मज़बूत रथ आ गया। युद्ध छिड़ गया। ३६५४

पॊऱ्ऱडन् देरु मावुम् बूट्कैयुम् बुलवु वाट्कैक्
कऱ्ऱडन् दिरडो ळाळु नॆरुङ्गिय कडल्ह ळॆल्लाम्
वऱ्ऱिय विरामन् वाळि वडवनल् परुह वन्ना
ळुऱ्ऱवन् तडन्दे रोट्टि महोदर नॊरुवन् शॆन्ऱान् 3655

पॊत् तटम् तेरुम्–बड़े-बड़े स्वर्णरथ और; मावुम्–अश्व; पूट्कैयुम्–और हाथी; पुलवु बाळ् कै–मांसगंध तलवारधारी हाथों के; कल् तटम् तिरळ् तोळ्–और पत्थर-सम बड़े और पुष्ट कंधोंवाले; आळुम्–(पदाति) वीर; नॆरुङ्किय–जिनमें भरे थे; कटल्कळ् ऎल्लाम्–वे सारे सेना-सागर; अ नाळ्–उस दिन; इरामन् वाळि–राम-बाण रूपी; वट वनल् पऱुक–बड़वानल के पीने से; वऱ्ऱिय–शुष्क हो गये; मकोतरन्–महोदर; उऱ्ऱ–अपना जो बना था; वत्–कठोर; तटम्–विशाल; तेर्–रथ; ओट्टि–चलाता हुआ; ऒरुवन्–अकेला; चॆन्ऱान्–(श्रीराम के पास) गया। ३६५५

(फल क्या हुआ ?) स्वर्ण-निर्मित रथ, अश्व, गज, मांसगंध-हथियार-धारी, प्रस्तर-सम पुष्ट विशाल भुजा वाले पदाति वीर —इनकी भरी चतुरंगिनी सेनाओं रूपी सारे सागर श्रीराम के शर रूपी बड़वा के सोखने से सूख गये। केवल महोदर बचा रहा। वह अपने मज़बूत रथ को चलाता हुआ अकेले आगे बढ़ आया। ३६५५

अशनिये ऱिरुन्द कॊऱ्ऱक् कॊडियिन्मे लरवत् तेर्मेर्
कुशैयुऱु पाहन् तन्मेर् कॊऱ्ऱवन् कुलवुत् तोण्मेल्
विशैयुऱु पहळि मारि वित्तिन्ऱान् विण्णि नॊडु
तिशैहळुङ् गिळिय वार्त्तान् तीर्त्तनु मुऱुवल् शॆय्दान् 3656

अचनि एऱु इरुन्त–अशनि-अंकित; कॊऱ्ऱ कॊटियिन् मेल्–विजयी ध्वजा पर; अरवम् तेर् मेल्–शब्दायमान रथ पर; कुचै उऱु–लगाम पकड़नेवाले; पाकन् तन् मेल्–सारथी पर; कॊऱ्ऱवन्–विजयी राजा राम के; कुलवु–मनोरम; तोळ् मेल् कंधों पर; विचै उऱु–वेगवान; पकळि मारि–शरों की वर्षा; वित्तिन्ऱान्–बीज बोता-सा बरसा दी; विण्णिनॊटु–आकाश के साथ; तिचैकळुम्–दिशाओं को; किळिय–फाड़ते हुए; आर्त्तान्–घोष किया; तीर्त्तनुम्–तीर्थ श्रीराम भी; मुऱुवल् चॆय्तान्–मुस्कुराये। ३६५६

महोदर ने अशनि-अंकित ध्वजा पर, ध्वनि करनेवाले रथ पर, लगाम रखनेवाले सारथी पर और विजयराघव के शोभायमान कंधों पर बाणों की वर्षा-सी करा दी। फिर ऐसा नर्दन किया कि आकाश और दिशाएँ फट जायँ। तीर्थ श्रीराम मुस्कुराये। ३६५६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विल्लॊन्ऱाऱ् कवश मॊन्ऱाल् विऱलुडैक् करमो ऱॊन्ऱाऱ्
कल्लॊन्ऱु तोळु मॊन्ऱाऱ् कळुत्तॊन्ऱाऱ् कडिदिन् वाङ्गि
शॆल्लॊन्ऱु कणैह् ळैयन् शिन्दिनान् शॆप्पि वन्द
शॊल्लॊन्ऱायच् चॆय्है यॊन्ऱायत् तुणिन्दन नरक्कन् तुञ्जि 3657

ऐयन्–प्रभु ने; ऒन्ऱाल्–एक (शर) से; विल्–(महोदर के) धनु को; ऒन्ऱाल् कवचम्–एक से कवच; ओर् ऒन्ऱाल्–एक-एक से; विऱल् उटै–विजयी; करम–हाथ को; ऒन्ऱाल्–एक से; कल् ऒन्ऱु–प्रस्तर-सम; तोळुम् कंधों–को; ऒन्ऱाल्–एक से; कळुत्तु–कंठ; चॆल् ऒन्ऱु–गतिशील; कणैकळ्–शरों को; कटितिन् वाङ्कि–शीघ्र लेकर; चिन्तितान्–चलाया; अरक्कन्–राक्षस (महोदर); चॆप्पि वन्त चॊल्–जो कह आया वह वचन; ऒन्ऱाय्–एक हो और; चॆय्कै ऒन्ऱाय्–(जो हुआ वह) काम दूसरा हो, ऐसा; तुञ्चि–मरा; तुणिन्तनन्–खण्डित हुआ। ३६५७

प्रभु श्रीराम ने सवेग अस्त्रों को चलाया और एक-एक से क्रम से उसके धनु, कवच, हाथों, पर्वतस्कंध, और गले को काट गिराया। महोदर जो कह आया वह एक रहा पर यहाँ जो हुआ वह दूसरा बन गया। वह मरा और उसका शरीर कट गया। ३६५७

मोदरन् मुडिन्द वण्ण मूवहै युलहत् तोडु
मादिर मॆवैयुम् वॆन्ऱ वन्तॊळि लरक्कन् कण्डान्
शेदनै युण्णक् कण्डान् शॆलविडु शॆलवि डॆन्ऱान्
शूदनु मुडुहित् तूण्डच् चॆन्ऱदु तुरहत् तिण्डेर् 3658

मू वकै उलकत् तोटुम्–त्रिविध लोकों के साथ; मातिरम् ऎवैयुम्–सारी दिशाओं को; वॆन्ऱ–जिसने जीता था उस; वत् तॊळिल् अरक्कन्–क्रूरकर्म रावण ने; मोतरम् मुटिन्त वण्णम्–महोदर के मरने का हाल; कण्टान्–देखा; चेतनै उण्ण कण्टान्–छिन्न हुआ रहना भी देखा; चॆलविटु चॆलविटु–चलाओ, चलाओ; ऎन्ऱान्–कहा; तुरक तिण् तेर्–अश्वसहित मजबूत रथ; चूततुम् मुटुकि तूण्ट–सूत के जल्दी उकसाने से; चॆन्ऱतु–चला। ३६५८

त्रिलोक तथा दिग्जयी रावण ने महोदर का छिन्न होना और मरना देखा। उसने सारथी से कहा कि 'बढ़ाओ, बढ़ाओ।' साश्व सबल रथ के सारथी ने उकसाया और रथ आगे चला। ३६५८

पनिप्पडा निन्ऱ वॆन्तप् परक्किन्ऱ शेनै पाऱित्
तनिप्पडा नाहि निन्नन् दाळ्हिल नॆन्नुन् दन्मै
नुनिप्पडा निन्ऱ वीर नवनॊन्ऱु नोक्का वण्णम्
कुनिप्पडा निन्ऱ विल्ला लॊल्लैयि नूऱिक् कॊन्ऱान् 3659

पनि पटर निन्ऱतु ऎन्न–ओस फैली रही जैसे; परक्किन्ऱ– व्याप्त; चेनै–सेना; पाऱि–बिखर जाय; तनिप्पट्टान् आकिन्–(रावण) अकेला रह जाय;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्तम् ताऴ्किलन्–तब तक और नहीं झुकेगा; ऍन्तुम् तन्मै–वह तथ्य; नुत्तिप्पटा नित्र्–जिन्होंने विवेक करके जाना उन; वीरन्–श्रीवीरराघव ने; अवन् ऑन्रुम् नोक्का वण्णम्–वह कुछ देख न पाये ऐसा; कुत्तिप्पटा नित्र् विल्लाल्–झुके धनुष से; ऑल्लैयिल्–सवेग; नूऱि कॉन्ऱाऩ्–छिन्न-भिन्न करके मार दिया। ३६५९

श्रीराम ने सोचकर विचार किया कि ओस-सम फैली इसकी सेनाएँ मिटें और यह अकेला हो जाय ! नहीं तो यह नहीं झुकेगा। उन्होंने अपने झुकाये गये धनुष से सेनाओं को इस भाँति मार मिटाया कि रावण देख भी न सके। ३६५९

अडल्वलि यरक्कर् कप्पोऴ् तण्डङ्ग ळऴुन्द मण्डुम्
कडल्हऴुम् वऱ्ऱ वॅऱ्ऱिक् काल्हिळर्न् दुडर्रुङ् गालै
वडवरै मुदल वान मलैक्कुलञ् जलिप्प मान
शुडर्मणि वलयञ् जिन्दत् तुडित्तन विडत्त पॉऱ्ऱोळ् 3660

अ पोऴ्तु–उस समय; अटल् वलि अरक्कर्कु–बहुत बलवान राक्षस को; अण्टङ्कळ् अऴुन्त–अंडों को धँसाते हुए; मण्टुम् कटल्कळुम् वऱ्ऱ–सभी सागर सूख जायँ ऐसा; वॅऱ्ऱि काल्–विजयी पवन; किळर्न्तु–उमग उठकर; उटर्रुम् कालै–जब हिला देता है, तब; वटवरै मुतल आन–उत्तरी मेरु आदि; मलैक् कुलम्–पर्वतगण; चलिप्प मान–जैसे काँप जाते हैं वैसे; चुटर् मणि–तेजोमय रत्नों के; वलयम् चिन्त–बाहुवलय आदि गिर जायँ ऐसा; इटत्त–बायीं; पॉन् तोळ्–सुंदर भुजाएँ; तुटित्तन–फड़कीं। ३६६०

तब अंडों को धँसाते हुए, उमगते सागरों को सुखाते हुए सर्वजयी युगांतपवन से त्रस्त होकर चलित होनेवाले उत्तरी दिशा के मेरु आदि पर्वतकुल के समान रावण की मनोरम वाम भुजाएँ फड़क उठीं जिससे प्रकाशमय रत्नखचित बाहुवलय आदि गिर गये। ३६६०

उदिर मारि शॊरिन्द दुलहॆलाम्, अदिर वान मिडित्त दरुवरै
पिदिर वीऴ्न्द दशनि यॊळिपॆऱाक्, कदिर वन्ऱनै यूरुङ् गलन्ददाल् 3661

उलकु ऍलाम्–सारे लोक में; उतिर मारि–रुधिर-वर्षा; चॊरिन्ततु–हुई; वानम्–मेघ; अतिर–कँपाते हुए; इटित्ततु–कड़के; अचनि–अशनि; अरु वरै पितिर–गौरवमय पर्वतों को तोड़ते हुए; वीऴ्न्ततु–गिरी; ऑळि पॆऱा–प्रभाहीन; कतिरवन् तनै–सूर्य को; ऊरुम्–परिवेश भी; कलन्ततु–मिल गया। ३६६१

सारे लोक में रुधिर-वर्षा हुई। मेघ थर्राते हुए कड़के। अशनि गिरी और पर्वत टूटे। निष्प्रभ सूर्य को परिवेश मिल गया। ३६६१

वावुम् वाशिह डूङ्गिन वाङ्गलिल्, एवुम् वॅञ्जिलै नाणिडै यिऱ्ऱन
नावुम् वायु मुलर्न्दन नाण्मलर्प्, पूवित् मालै पुलाल्वॅऱि पूत्तवाल् 3662

वावुम्–लपकनेवाले; वाचिकळ्–अश्व; तूङ्किन–सोये; एवुम्–शर-प्रेषक;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆम् चिलै–कठोर धनु; वाङ्कलिन्–(डोरा खींचने) झुकाने पर; नाण्–डोरे; इटै–बीच में; इऱ्ऱन–कट गये; नावुम् वायुम्–उसकी जीभें और उसके मुख; उलर्न्तन–सूखे; नाळ् मलर्–तद्दिनविकसित फूलों की; पूविन् मालै–पुष्प-माला; पुलाल् वॆऱि पूत्त–मांसगंध देती रही। ३६६२

रावण के गतिमान अश्व सोये। धनु के डोरे खींचते समय बीच में टूट गये। उनकी जीभें और मुख सूख गये। ताज़े फूलों की मालाओं से मांसगंध निकली। ३६६२

ऎऴुदु वीणैकॊ डेन्दु पदाहैमेल्, कऴुहुङ् गाहमु मॊय्त्तन कण्गणीर्
ऒऴुहु हिन्ऱन वोडिह लाडन्मात्, तॊऴुविल् निन्ऱन पोन्ऱन शूऴिमा 3663

ऎऴुतु वीणै कॊटु–लिखित वीणा के साथ; एन्तु–उसको उठाये रहनेवाली; पताकै मेल्–पताका पर; कऴुकुम् काकमुम्–गीध और कौए; मॊय्त्तन–बैठे; ओटु–दौड़नेवाले; इकल्–युद्धोपयोगी; आटल् मा–घोड़ों की; कण्कळ्–आँखों से; नार–(अश्रु-) जल; ऒऴुकुकिन्ऱन–स्रवता है; शूऴि मा–मुखपट्टों से अलंकृत हाथी; तॊऴुविल्–पिंजरों में बद्ध; निन्ऱन पोन्ऱन–खड़े हों जैसे थे। ३६६३

वीणा से अंकित पताका पर गीध और काग बैठे। दौड़नेवाले युद्ध-योग्य अश्वों की आँखों से अश्रु बह निकला। मुखपट्टालंकृत हाथी पिंजरे में बद्ध जैसे श्रांत खड़े रहे। ३६६३

इन्न वाहि यिमैयवर्क् किन्बञ्जॆय्
तुन्नि मित्तङ्गळ् तोन्ऱिन तोन्ऱवुम्
अन्न दॊन्ऱु निनैन्दिल नार्ऱुमो
ऎन्नै वॆल्ल मनित्तनन् ऱॆण्णुवान् 3664

इमैयवर्क्कु–देवों को; इन्पम् चॆय्–सुख देनेवाले; तुन् निमित्तङ्कळ्–बुरे शकुन; इन्न आकि–ऐसे बने; तोन्ऱिन–दिखे; तोन्ऱवुम्–प्रकट हुए तो; ऎन्नै वॆल्ल–मुझे जीतने में; मनित्तन् आऱ्ऱुमो–नर समर्थ होगा क्या; ऎन्ऱु ऎण्णुवान्–ऐसा सोचता; अन्नतु ऒन्ऱुम्–उनमें किसी एक पर भी; निनैन्तिलन्–मन नहीं लगाया। ३६६४

रावण के ये दुःशकुन हुए जो देवों को आनंद देनेवाले थे। पर रावण के ध्यान में कुछ नहीं आया, क्योंकि उसका विचार था कि क्या नर में मुझे जीतने का सामर्थ्य है ?। ३६६४

वीङ्गु तेर्शॆलुम् वेहत्तु वेलैनीर्, ओङ्गु नाळि नॊदुङ्गु मुलहुपोल्
ताङ्ग लाऱ्ऱ हिलार्तङु माऱित्ताम्, नीङ्गि नारिरु पालु नॆरुङ्गिनार् 3665

वेलै नीर्–सागर-जल के; ओङ्कु नाळिस्–बढ़ते आते (युगांत के) दिन; ऒतुङ्कुम्–हटनेवाली; उलकु पोल्–पृथ्वी के समान; इरु पालुम् नॆरुङ्किनार्–दोनों ओर से सटकर मिले लोग; वीङ्कु–तेर्–(रावण के) तेज रथ के; चॆलुम् वेकत्तु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाने के वेग को; ताङ्कल् आऱ्ऱकिलार्–सह नहीं सके; तटुमाऱि–अस्तव्यस्त हो; नीङ्कितार्–हट गये । ३६६५

जब युगांत में समुद्र बढ़ आता है तब जैसे भूमि दोनों ओर हट चलती है, वैसे ही दोनों ओर खड़े रहे लोग रावण के रथ की तेज़ी से हड़बड़ाकर दोनों ओर दूर हट गये । ३६६५

करुम मुङ्गडैक् काण्गुऱु ञानमुम्
अरुमै शेरु मविञ्जैयुम् विञ्जैयुम्
बॅरुमै शाल्कॊडुम् बावमुम् बेर्हलात्
तरुम मुम्मॅनच् चॅन्ऱॅदिर् ताक्किनार् 3666

करुममुम्–कर्म; कटै–(और साधना के) अंत में; काण्कुऱु–प्रगट होनेवाले; ञानमुम्–ज्ञान की तरह; अरुमै चेरुम्––अभाव-मिलित; अविञ्चैयुम्–अविद्या; विञ्चैयुम्–और विद्या की तरह; पॅरुमै चाल्–बड़ा; कॊटुम्–हानिकारक; पावमुम्–पाप; पेर्कला–अचल; तरुमुम्–धर्म; ऍन–इनकी भाँति; ऍतिर् चॅनऱु–आमने-सामने जाकर; ताक्कितार्–टकराये । ३६६६

श्रीराम और रावण कर्म और साधना के पूर्ण होने पर मिलनेवाला ज्ञान; अभाव पर आधारित अविद्या और विद्या; और बड़ा पाप और अचल धर्म— ये जोड़े टकराए-जैसे आपस में लड़े । ३६६६

शिरमॊ रायिरन् दाङ्गिय शेडनुम्, उरवु तोऱ्ऱत् तुवणत् तरशनुम्
पॊरवॆ दिर्न्दनर् पोलप् पॊलिन्दनर्, इरवु नण्बह लॅन्नवु मायिनर् 3667

ओरायिरम् चिरम् ताङ्किय–एक सहस्रशीर्ष; चेटनुम्–शेषनाग; उरवु तोऱ्ऱतु–और भारी आकार का; उवणतु अरचनुम्–गरुड़राज; पॊर–लड़ने; ऍतिर्न्त पोल–सामना करते जैसे; पॊलिन्ततर्–शोभे; इरवुम् नण् पकल् ऍन्नवुम्–रात और मध्याह्न जैसे भी लगे । ३६६७

वे सहस्रशीर्ष आदिशेष और बलवान भीमाकार के गरुड़ परस्पर भिड़ने आये हों जैसे भी लगे । और भी रात और मध्याह्न के समान भी दिखे । ३६६७

वॆन्ऱि यन्दिशै यानै वॆहुण्डुड, नॊन्ऱै यॊन्ऱु मुनिन्दवु मॊत्तनर्
अन्ऱि युन्दर शिङ्गमु माडहक्, कुन्ऱ मन्नव नुम्बॊरुङ् गॊळ्हैयार् 3668

वॆन्ऱि–विजयी; अम्–सुन्दर; तिचै यानै–दिग्गज; ऒन्ऱै ऒन्ऱु–एक-दूसरे से; वॆकुण्डु–कोप करके; उटन् मुनिन्नवुम्–परस्पर रोष दिखाते; ऒत्तनर्–बैसे रहे; अन्ऱियुम्–और भी; आटकम् कुन्ऱम् अन्नवनुम्–स्वर्णगिरि-सा हिरण्य और; नरचिङ्कमुम्–नरसिंह; पॊरुम् कॊळ्कैयार्–जैसे भिड़े उस प्रकार के बने (ये दोनों) । ३६६८

विजयी और सुन्दर दिग्गज आपस में क्रोध, रोष और वैर के साथ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गुँथने खड़े हों, वैसे भी रहे। और भी स्वर्ण-पर्वताकार हिरण्य और नृसिंहदेव युद्ध ठानकर खड़े हों वैसे भी लगे। ३६६८

तुवन्न विल्लिन् बॉरुट्टॉरु तॉल्लैनाळ्
अॅवन्न विल्वलित् तॅन्ऱिमै योर्तॉळप्
पुवन्न मून्ऱुम् बॉलङ्गळ लार्ऱॉडुम्
अवनु मच्चिव नम्मॅन लायिनार् 3669

तॉल्लै–प्राचीन काल में; ऑरु नाळ्–एक दिन; तुवन्न–ध्वनिपूर्ण; विल्लिन् पॉरुट्टु–(दो) धनुओं के निमित्त; इमैयोर्–व्योमवासियों के; अॅवन्न विल्–किसका धनु; वलित्तु–अधिक बलवान है; अॅन्ऱु–पूछकर; तॉळ–नमस्कार करने पर; पुवन्न मून्ऱुम्–तीनों भुवनों को; पॉलन् कळलाल्–स्वर्णपायलधारी श्रीचरणों से; तॉटुम्–जिन्होंने स्पर्श किया (नापा); अवनुम्–उन (त्रिविक्रम) और; अ चिवनुम् अॅनल्–उन शिवजी के समान; आयिनार्–बने। ३६६९

पहले कभी देवों ने ज़ोरदार दो धनुओं में 'कौन सा धनु अधिक बलवान है ?' यह जानना चाहा। उन्होंने शिव और विष्णु से विनय की। तब, जिन्होंने तीनों लोकों को अपने स्वर्ण-पायलधारी श्रीचरण से मापा था, उन विष्णु और शिव में घमासान युद्ध छिड़ गया। तब के दोनों देवों के समान भी वे दिखे। ३६६९

कण्ड शङ्गर नान्मुहर् कैत्तलम्
विण्ड शङ्गत् तॉल्लण्डम् वॅडित्तिड
अण्ड शङ्गत् तमरर्द मार्प्पॅलाम्
उण्ड शङ्ग मिरावण नूदिनान् 3670

कण्ट–देखते हुए; चङ्कर नान्मुकर्–शंकरजी और ब्रह्माजी; कैत्तलम्–हाथ; विण्टु–अलग हों; अचङ्क–काँपें ऐसा; तॉल् अण्टम्–प्राचीन ब्रह्माण्ड में; वॅटि–फटने का शब्द; पट–हो ऐसा; अण्टम्–व्योमलोक में; चङ्कत्तु अमरर्तम्–देवसमूह का; आर्प्पॅलाम्–आनंद का सारा आरव; उण्ट–जिसने निगल लिया; चङ्कम्–उस शंख को; इरावणन् ऊतिनान्–रावण ने बजाया। ३६७०

तब रावण ने व्योमलोक-मोद के शब्द को दबानेवाले शंख को ले बजाया तो दर्शक शंकर और ब्रह्मा के हाथ हिलकर काँपे और ब्रह्माण्ड से फूटने का शब्द निकला। ३६७०

शॉन्न शङ्गिन दोशै तुळक्कुऱ
अॅन्न शङ्गॅन् ऱिमैयव रेङ्गिड
अन्न शङ्गॅप् पॉरामै यिनालरि
दन्न वॅण्शङ्गन् दानु मुळङ्गिर्राल् 3671

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अत्त चङ्कै–उस शंख को; पॊऱामैयिताल्–ईर्ष्या से (न सहकर); चॊत्त–उक्त; चङ्किनतु ओचै–शंख की ध्वनि; तुळक्कुऱ–काँप जाए ऐसा; इमैयवर्–देव; ऍत्त चङ्कु ऍन्ऱु–यह कैसा शंख है ऐसा; एङ्किट–संशय करें ऐसा; अरि तत्त–हरि का; वॆण् चङ्कम् तानुम्–श्वेत (पांचजन्य) शंख भी; मुऴङ्किऱ्ऱु–स्वतः बज उठा। ३६७१

यह शंखनाद सुनकर श्रीविष्णु का पांचजन्य नामक शंख जल उठा। वह उस शंखनाद को ही कँपाते हुए स्वरित हो उठा, जिसे सुनकर स्वयं देव पूछ बैठे कि यह कैसा शंख है ? । ३६७१

ऐय नैम्बडै तामु मडित्तॊऴिल्, शॆय्य वन्दयल् निन्ऱन तेवरिन्
मॆय्य नन्नवै कण्डिलन् वेदङ्गळ्, पॊय्यि ऱन्नैप् पुलन्ऱॆरि यामैपोल् 3672

ऐयन्–प्रभु के; ऐम् पटै तामुम्–पाँचों (प्रकार के : चक्र, शंख, गदा, असि और धनु) अस्त्र; अटि तॊऴिल् चॆय्य–चरण-सेवा करने; वन्तु–आकर; अयल्–पास में; निन्ऱन–खड़े रहे; वेतङ्कळ्–वेद; पॊय्यिल् तन्नै–सच्चे उनको; पुलन् नॆरियामै पोल्–नहीं जान पाते जैसे; अत्तवै–उन्हें; तेवरिन् मॆय्यन्–देवों के सत्यतत्त्व ने; कण्टिलन्–नहीं देखा। ३६७२

तब प्रभु श्रीराम (श्रीविष्णु) के (शंख, चक्र, दण्ड, खड्ग और कोदण्ड) पाँचों आयुध चरणसेवार्थ पास आये रहे। पर वेद जैसे उस सत्यतत्त्व को पहचान नहीं पाये वैसे ही देवों की सच्ची वस्तु, वे परम पुरुष उन्हें देख नहीं पाये। ३६७२

आशै युम्विशुम् बुम्मलै याऴियुम्
तेश मुम्मलै युन्नॆडुन् देवरुम्
कूश वण्डङ् गुलुङ्गक् कुलङ्गॊळ्तार्
वाश वन्शङ्ग मादलि वाय्वैत्तान् 3673

आचैयुम्–दिशाएँ; विचुम्पुम्–और आकाश; अलै आऴियुम्–और तरंग-सहित सागर; तेचमुम्–देश; मलैयुम्–पर्वत; नॆटु तेवरुम्–और महान देव; कूच–संकुचित हुए; अण्टम् कुलुङ्क–अण्ड हिल उठे; कुलम् कॊळ् तार्–राशियों में रहे फूलों की माला के; वाचवन् चङ्कै–वासव के शंख को; मातलि–मातलि ने; वाय् वैत्तान्–अपने मुख पर रखकर बजाया। ३६७३

तब मातलि ने पुष्पबहुल मालाधारी वासव के शंख ले फूंका, जिसकी ध्वनि सुनकर दिशाएँ, आकाश, तरंगपूर्ण समुद्र, देश, पर्वत और उत्कृष्ट देव –सारे सकुचा गये। और अण्ड भी अस्त-व्यस्त हो गया। ३६७३

शॆन्ऱ तेरॊ रिरण्डॊडुञ् जेर्त्तिय, कुन्ऱि वॆङ्गट् कुदिरै कुदिप्पन
ऍन्ऱै यॊन्ऱुऱ् ऱॆरियुह नोक्किन, तिन्ऱु तोर्वन पोलुञ् जिनत्तन 3674

ऍन्ऱ–जो गये उन; तेर् ओर इरण्डॊटुम्–दो अपूर्व रथों के साथ; चेर्त्तिय–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जुते; कुन्ऱि–घुँघुचियों के समान (लाल); वॅम् कण् कुतिरै–भयोत्पादक आँखों वाले अश्व; कुतिप्पत्त–उछलने-कूदनेवाले; ऑन्ऱै ऑन्ऱु उऱ्ऱु–परस्पर पास आकर; ऍरि उक–आग उगलते हुए; नोक्किन–देखनेवाले; तिन्ऱु तीर्वन पोलुम्–खा जायँगे ऐसा; चिनत्तत–क्रोधी (बने)। ३६७४

दोनों रथों के जुते घुँघुची-सम लाल तथा भयोत्पादक आँखों वाले अश्व उछलकर परस्पर पास गये। आँखों से आग उगलते हुए ऐसा क्रोध दिखाया मानो वे एक दूसरे को खा डालेंगे। ३६७४

कॉडियिन् मेलुरै वीणैयुङ् गॉऱ्ऱमा, इडियु नेऱु मुरैयि निडित्तन
पडियुम् विण्णुम् बरवयुम् बन्मुरै, मुडियु मॅन्बदॉर् मूरि मुऴक्किनाल् 3675

कॉटियिन् मेल् उरै–ध्वजा में रहनेवाली; वीणै–वीणा और; कॉऱ्ऱम्–विजयी; मा इटियिन् एऱुम्–बड़ा अशनिराज; पटियुम्–पृथ्वी; विण्णुम्–और आकाश; परवैयुम्–समुद्र; मुटियुम्–मिट जायँगे; ऍन्पतु–ऐसा संशय उत्पन्न करनेवाले; ओर् मूरि मुऴक्किनाल्–भारी शब्द के साथ; मुरैयिन्–बारी-बारी से; पन्मुरै इटित्तन–अनेक बार टकराये। ३६७५

दोनों ध्वजाओं की वीणा और विजयी अशनिराज भी भयंकर शोर के साथ अनेक बार आपस में ऐसा टकराए कि लगा कि पृथ्वी, आकाश और समुद्र नष्ट हो जायँ। ३६७५

एऴु वेलैयु मार्प्पॅडुत् तॅन्नलाम्, वीऴि वॅङ्ग णिरावणन् विल्लॉलि
आऴि नादन् शिलैयॉलि यण्डम्विण्, डूऴि पेर्वुऴि मामऴै यॉत्तदाल् 3676

वीऴि–'वीऴी' के फल के समान (लाल); वॅम् कण्–भयोत्पादक आँखोंवाले; इरावणन्–रावण के; विल् ऑलि–धनु की ध्वनि; एऴु वेलैयुम्–सातों समुद्र; आर्प्पु ऍटुत्त–गरजे; ऍन्नलाम्–ऐसा कही जा सकती है; आऴिनातन्–चक्रधारी नाथ श्रीराम के; चिलै ऑलि–धनु की ध्वनि; अण्टम् बिण्टु–अंड फाड़कर; ऊऴि पेर्वु उऴि–युगांत के समय के; मा मऴै ऑत्ततु–बड़े मेघों के गर्जन के समान थी। ३३७६

'वीऴी' के फल के समान लाल और क्रूर आँखों वाले रावण के धनु की ध्वनि सातों समुद्रों के गर्जन के समान थी। चक्रधारी श्रीराम के धनु का शब्द अंडविदारक युगांतकालीन मेघों के गर्जन का-सा रहा। ३६७६

आङ्गु निन्ऱ वनुमनै यादियाम्, वीङ्गु वॅञ्जिन वीरर् विऴुन्दनर्
एङ्गि निन्ऱ दलालॉन् ऱिऴैत्तिलर्, वाङ्गु शिन्दैयर् शॅय्है मऱन्दुळार् 3677

आङ्कु निन्ऱ–वहाँ जो खड़ा रहा; अनुमनै आतियाम्–हनुमान आदि; वीङ्कु–स्फीत; वॅम्–भयानक; चिन वीरर्–क्रोध के वीर; वाङ्कु चिन्तैयर्–शांतमन होकर; एङ्कि निन्ऱतु अलाल्–तरसते खड़े रहे, उसके सिवा; वॅय्कै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱन्तुळार्–कार्य भूले; ऒन्ऱु इऴैत्तिलर्–कुछ न करके; विऴुन्ततर्–गिर पड़े। ३६७७

इनका शब्द सुनकर हनुमान आदि वर्धनशील क्रोध से अभिभूत वानरवीर भी श्रांतमन हो गये। उनका मन म्लान हो गया। किंकर्तव्यविमूढ और निष्क्रिय होकर गिर गये। ३६७७

आव वॆन्ऩॆहॊ लामॆन् ऱऱिहिलार्, एवर् वॆल्वरॆन् ऱॆण्णल रेङ्गुवार्
पोवर् मीळ्वर् पदैप्पर् पॊरुमलाल्, तेव रुन्दङ्गळ् शॆय्है मऱन्दनर् 3678

तेवरुम्–देव भी; ऎन्ऩॆ कॊल् आवतु आम्–क्या ही होगा; ऎन्ऱु–यह; अऱिकिलार्–न जान सके; ऎवर् वॆल्वर्–कौन जीतेंगे; ऎन्ऱु ऎण्णलर्–यह सोच नहीं सके; एङ्कुवार्–म्लान रहे; तङ्कळ् चॆय्कॆ मऱन्ततर्–अपना कृत्य भूल गये; पॊरुमलाल्–(मन में) दुःख के भरने से; पोवर्–जाते; मीळ्वर्–लौटते और; पतैप्पर्–बेचैन होते थे। ३६७८

देव भी यह नहीं जान सके कि क्या होगा ? यह नहीं सोच सके कि किसकी जीत होगी ? स्थित होकर म्लान हो रहे, अपनी क्रियाएँ भूल गये। दुःख से भरकर जाते-आते और बेचैनी दिखाते थे। ३६७८

नीण्ड मिऩ्ऩॊडु वाऩॆडु नीलविल्
पूण्डि रण्डॆदिर् निऩ्ऱवुम् बोऩ्ऱऩ
आण्ड विल्लितन् विल्लु मरक्कऩ्ऱऩ्
तीण्ड वल्लव रिल्लाच् चिलैयुमे 3679

आण्ट–लोकरक्षक; विल्लि तऩ्–कोदण्डपाणी का; विल्लुम्–धनुष और; अरक्कऩ् तऩ्–राक्षस (राज) का; तीण्ट वल्लवर् इल्लाचिलैयुम्–ऐसा चाप जिसे अन्य कोई छू भी नहीं सके; नील वाऩ्–नीले गगन में; इरण्टु नॆटु विल्–दो लंबे इन्द्रधनुष; नीण्ड मिऩ्ऩॊटु पूण्टु–लंबी विद्युत् (प्रत्यंचा) से युक्त होकर; ऎतिर् निऩ्ऱवुम्–आमने-सामने रहते हों; पोऩ्ऱऩ–जैसे भी रहे। ३६७९

लोकरक्षक श्रीराम का कोदण्ड और राक्षसराज का चाप, जिसे कोई स्पर्श भी नहीं कर सकता था, दोनों नीले आकाश में आमने-सामने प्रकट दो बड़े इंद्रधनुषों के समान, जिनसे विद्युत् के डोरे बँधे हों, दिखे। ३६७९

अरक्क नऩ्ऱॆडुत् तार्त्तऩ वार्प्पुमोर्
शिरिप्पु माविर् ऱॆऴिप्पुमुण् डेहॊलाम्
कुरैक्कुम् वेलैयु मेहक् कुळाङ्गळुम्
इरैत् तिडिक्किऩ्ऱ वित्ऱुमॊ रीऱिल 3680

कुरैक्कुम् वेलैयुम्–गरजते सागर और; मेक कुळाङ्कळुम्–मेघसमूह; इऩ्ऱुम्–आज भी; ओर् ईऱ् इल–बिना अंत के; इरैत्तु–गरजकर; इटिक्किऩ्ऱ–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कड़कते हैं; अन्ऱु–उस दिन; अरक्कन्–राक्षस ने; ऍट्टुत्तु आर्त्तत्त–जो उठाकर शब्द किया; आर्प्पुम्–वह घोष; ओर् चिरिप्पुम्–और एक अट्टहास; विल् तॆऴिप्पुम्–और धनु का शोर; उण्टे कॊल् आम्–आज होंगे क्या। ३६८०

गरजते सागर और मेघसमूह आज भी गरजते रहते हैं। पर उस दिन रावण का नर्दन, अट्टहास और उसके चाप का शब्द जो उठे वे आज प्राप्य हैं क्या ? । ३६८०

मण्णिऱ् काट्टुव वान्निडि येऱ्ऱिनम्
ऍण्णिऱ् चून्मऴै यल्ल विरावणन्
कण्णिऱ् चिन्दिय तीक्कडु वॆम्बॊऱि
विण्णिऱ् चॆल्वत्त विण्णिन्ऱु वीऴ्वत्त 3681

वान् इटि एऱ इत्तम्–आकाश के अशनिराज-समूहों का; मण्णिल् काट्टुवत्त–भूमि पर प्रगट होना; ऍण्णिन्–सोचें तो; चूल् मऴै अल्ल–जलगर्भ-मेघ (जनित) नहीं; इरावणन्–(पर) रावण ने; कण्णिन् चिन्तिय–आँखों से जो गिराये; ती कटु वॆम् पॊऱि–वे अग्नि-सम भयानक अंगारे; विण्णिल् चॆल्वत्त–जो आकाश में जाते रहे और; विण् निन्ऱु–आकाश से; वीऴ्वत्त–गिरते रहे। ३६८१

"अशनियाँ तो आकाश में होती हैं। अब भूमि पर भी दिखाई देती क्यों ?" यह अन्वेषण करें तो मालूम होगा कि वे वज्र जलगर्भ मेघ-जनित नहीं। पर वे रावण की आँखों से निकले गरम अंगारे हैं, जो आकाश में जाते तथा नीचे आते रहे। ३६८१

इक्क णत्तु मॆऱिप्प तडित्तॆत्त
चॆक्कर् मेहत् तुदिक्कुम् नॆरुप्पॆत्तप्
पक्कम् वीशुम् बडॆच्चुडर् पः(ह्)ऱिशै
पुक्कुप् पोहप् पॊडिप्पत्त पोक्किल 3682

पक्कम्–पार्श्वों में; वीचुम्–प्रकाश निकालनेवाले; पटै–हथियारों के; चुटर्–प्रकाश-कण; पल् तिचै पुक्कु पोक–अनेक दिशाओं में घुस चले तो; पॊटिप्पत्त–वहाँ के पदार्थों को भस्म कर गये; पोक्किल–वे मिटे नहीं; इ कणत्तुम्–अब भी; चॆक्कर् मेकत्तु–लाल मेघ में से; उतिक्कुम्–जनित; नॆरुप्पु ऍत्त–आग के समान; तटित्तु ऍत्त–तड़ित के समान; ऍऱिप्प–चलते रहते हैं। ३६८२

रावण के पार्श्वों में रहे हथियारों के प्रकाशकण सभी दिशाओं में चले और वहाँ के पदार्थों को भस्म कर गये। पर वे स्वयं नहीं मिटे। आज भी वे ही लाल मेघजन्य आग (बिजली) और तडित् के रूप में चलते रहते हैं। ३६८२

माल्क लङ्गलिल् शिन्दैयिन् मादिरम्
नाल्क लङ्ग नहुन्दॊऱु नावॊडु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कालक लङ्गुवर् तेवर् कणमळैच्
चूलक लङ्गु विलङ्गल् तुलङ्गुमाल् 3683

कलङ्कलिल् चिन्तैयिल्-अचंचलमन; माल्-श्रीविष्णु के समान रहनेवाली; नाल् मातिरम् कलङ्क-चारों दिशाओं को कँपाते हुए; नकुम् तोरुम्-(रावण के) हँसते हर समय; तेवर्-देव; नावोटु-जीभों के साथ; काल्-पैर में; कलङ्कुवर्-लड़खड़ाते; चूल्-(जल-) गर्भ; कण मळै-मेघसमूह; कलङ्कुम्-डर जाते; विलङ्कल्-(त्रिकूट) पर्वत; तुलङ्कुम्-काँप जाता। ३६८३

श्रीविष्णु के मन के समान रहनेवाली अचल दिशाओं को भी चलित करते हुए जब-जब रावण हँसा, तब देवों की जीभें और पैर लड़खड़ाये। जलगर्भ मेघसमूह अस्त-व्यस्त हुए; और त्रिकूट पर्वत भी चलित हुआ। ३६८३

कुऱ्ऱम् विर्कोडु कॊल्लुदल् कोळिलाच्
चिऱ्ऱै याळनैत् तेवर्दन् देरॊडुम्
पऱ्ऱि वानिर् चुळऱ्ऱिप् पडियिन्मेल्
ऍऱ्ऱु वेनॆन् ऱुरैक्कु मिरैक्कुमाल् 3684

कोळ् इला-निर्बल; चिऱ्ऱै याळनै-छोकरे को; विर्कोटु-धनु लेकर; कॊल्लुतल्-मारना; कुऱ्ऱम्-गलत है; तेवर् तम् तेरोटुम्-देव-रथ के साथ; पऱ्ऱि-पकड़कर; वानिल् चुळऱ्ऱि-आकाश में घुमाकर; पटियिन् मेल्-भूमि पर; ऍऱ्ऱुवेन्-पटक दूँगा; ऍन्ऱु उरैक्कुम्-यह कहता (रावण); इरैक्कुम्-चिल्लाता। ३६८४

'निर्बल छोकरे पर धनु का प्रयोग करके उसे मारना हीनता है। इसलिए मैं उसे देवरथ के साथ पकड़कर आकाश में घुमाकर भूमि पर पटक दूँगा' —ऐसा रावण चिल्लाकर कहता। ३६८४

तडित्तु वैत्तनन्न वॆङ्गणै ताक्कुऱ
वडित्तु वैत्तदु मानुडऱ् कोवलि
ऒडित्तुत् तेरै युदिर्त्तॊरु विल्लॊडुम्
बिडित्तुक् कॊळ्वन् शिऱैयॆनप् पेशुमाल् 3685

तटित्तु-गाज को; वैत्त अन्न-रखकर निर्मित किया हो ऐसे; वॆम् कणै-भयानक शरों के; ताक्कुऱ-जोर से लगने पर; वलि-(सहने की) शक्ति; मानुटऱ्को-क्या मानव को; वटित्तु वैत्ततु-बनी रखी है; ऒटित्तु-तोड़कर; तेरै उतिर्त्तु-रथ को चूर कर; ऒरु-श्रेष्ठ; विल्लॊटुम्-धनु के साथ; चिऱै पिटित्तु कॊळ्वन्-बंदी बना लूँगा; ऍन्न पेचुम्-यह कहता। ३६८५

"वज्रनिर्मित-से कठोर अस्त्रों को झेलने की शक्ति क्या मानव को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिली है ? उसे तोड़ दूँगा; रथ को चूर कर दूँगा; उसे उसके श्रेष्ठ कोदण्ड के साथ पकड़कर बंदी बना लूँगा।" —रावण ऐसा कहता। ३६८५

पदैक्किन्ऱदॊऱ् मनमुम्मऴल् पडर्हिन्ऱदॊऱ् शिनमुम्
विदैक्किन्ऱन पॊऱिपॊङ्गिन विऴियुम्मुडै वॆय्योन्
कुदैक्कुन्ऱॆन निमिर्वॆञ्जिलै कुऴैयक्कडुङ् गॊडुङ्गाऱ्
ऱुदैक्किन्ऱन शुडुवॆङ्गणै युरुमेऱॆन वॆय्दान् 3686

पतैक्किन्ऱतु–विकंपित; ओर् मनमुम्–एक मन; अऴल् पटर्किन्ऱतु–आग-फैलते; ओर् चिनमुम्–एक क्रोध; वितैक्किन्ऱन–(सभी दिशाओं में) बिखरते; पॊऱि–अंगारों से भरी; विऴियुम्–आँखें; उटै–जिसकी थीं; वॆय्योन्–उस क्रूर रावण ने; कुतै–'कुदै' सहित; कुन्ऱ ऍन–पर्वत-सम; निमिर्–तनकर रहे; वॆम् चिलै–भयंकर धनुष; कुऴैय–झुकाकर; कटु कॊटु काऱ्ऱु–तेज भयंकर पवन द्वारा; उतैक्किन्ऱन–चालित; उकुम् एऱु ऍन–अशनिराज के समान; चुटु वॆन् कणै–गरम क्रूर शर; ऍय्तान्–चलाये। ३६८६

अशांतमन, अग्नि-सम फैलता क्रोध, और अंगारे छितरनेवाली आँखें —इनसे युक्त क्रूर रावण ने कुदै- (बाण रखने का डोरे पर स्थान) सहित पर्वत के समान तने रहे धनु को झुकाया और प्रचंड पवनचालित अशनिराजों के समान जलानेवाले भयावह बाणों को छोड़ा। ३६८६

उरुमॊप्पन कनलॊप्पन वूऱ्ऱन्दरु कूऱ्ऱिन्
मरुमत्तिनु नुऴैहिऱ्पन मऴैयॊप्पन वानोर्
निरुमित्तन पडैपऱ्ऱन निमिर्वुऱ्ऱऱ वमिऴ्दप्
पॆरुमत्तिनै मुऱैशुऱ्ऱिय पॆरुम्बाम्बिनुम् बॆरिय 3687

उरुम् ऒप्पन–वज्र-सम थे; कनल् ऒप्पन–अग्नि-सरीखे; ऊऱ्ऱम् तरु–हानिकारक; कूऱ्ऱिन्–यम के भी; मरुमत्तिनुम्–मर्म (वक्ष) में; नुऴैकिऱ्पन–घुस सकनेवाले; मऴै ऒप्पन–वर्षा-सम; वानोर् निरुमित्तन–देव-रचित; पटै–(शत्रु के) हथियारों को; पऱ्ऱु अऱ–तोड़ते हुए; निमिर्वु उऱ्ऱन–सिर तानकर चलनेवाले; अमिऴ्तम् पॆरु मत्तितै–अमृत निकालने में लगायी गयी; मत्तितै–मथानी (मेरु) को; मुऱै–ठीक प्रकार से; चुऱ्ऱिय–जो लिपटा रहा; पॆरुम् पाम्पिनुम्–उस बड़े नाग (वासुकी) से भी; पॆरिय–बड़े थे। ३६८७

रावण-प्रेरित शर वज्र-सम थे। आग-से थे। घातक यम के मर्म को भेद सकनेवाले थे। मेघ-सम थे। देवनिर्मित थे। शत्रुओं के हथियारों को निर्मूल करते हुए शान के साथ चलनेवाले थे। अमृत निकालने को लगायी गयी मथानी (मेरु) पर जो लिपटा रहा, उस मोटे बड़े सर्प वासुकी के समान स्थूल और बड़े थे। ३६८७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुण्डप्पड नॆडुमेरुवैत् तॊळैत्तुळ्ळुऱै तॊङ्गा
तण्डत्तैयुम् बॊदुत्तेहुमॆन् ऱिमैयोर्हळु मयिर्त्तार्
कण्डत्तॆऱु कणैमारियै करुणैक्कडल् कनहच्
चण्डच्चिलैच् चरङ्गॊण्डवै यिडैयेयऱत् तडुत्तान् 3688

नॆटु मेरुवै–लंबे मेरु को; तुण्टप्पट–खण्ड-खण्ड बनाते हुए; तॊळैत्तु–छेदकर; इऱै–कुछ देर भी; उळ् तॊङ्कातु–अंदर न रहकर; अण्टत्तैयुम्–अंड को भी; पॊतुत्तु–भेदकर; एकुम् ऎन्ऱु–जायँगे (रावण के बाण) ऐसा; इमैयोर्कळुम्–देव भी; अयिर्त्तार्–भ्रमित हुए; करुणै कटल्–करुणासागर; अ तॆऱु कणै मारियै–उस गरम शरवर्षा को; कण्टु–देखकर; चण्टम्–प्रचंड; कनकम् चिलै–स्वर्ण-धनुष से; चरम् कॊण्टु–शर चलाकर; अवै इटैये अऱ–उनको बीच में काट कर; तटुत्तान्–रोक दिया। ३६८८

उन्हें देखकर देवगण भी भ्रमित हुए कि ये बड़े मेरु को भी छेदकर विना कुछ देर भी ठहरे निकल जायँगे; अण्ड को भी भेदकर निफर जायँगे। तब करुणासागर श्रीराम ने अपने प्रचंड कनक-चाप से शर चलाये और उन गरम वर्षा के-से शरों को बीच में ही काटकर रोक दिया। ३६८८

उडैमान्मुयन् ऱुऱुकारिय मुऱुतीविनै युडऱ्ऱ
इडैयूऱुऱच् चिदैन्दाङ्गॆनच् चरञ्जिन्दिन विऱलुम्
तॊडैयूऱिय कणैमारिहळ् तॊहैतीर्न्दन तुरन्दान्
कडैनाळुऱु कणमामळै काल्वीळ्न्दॆनक् कडियान् 3689

उटैयान्–कोई स्वामी; मुयऱ्ऱु उऱु–जो प्रयत्न करके साधता है वे; कारियम्–कार्य; उऱु तीविनै–(उसे) मिले पापों के; उटऱ्ऱ–नष्ट करने पर; इटैयूऱु उऱ–जब बाधाएँ पड़ती हैं; चितैन्त ऎन–जैसे (वे कार्य) असफल हो जाते हैं वैसे; चरम्–(रावण के) शर; विऱलुम् चिन्तिन–अपनी शक्ति खो गये; कटियान्–निर्मम रावण ने; तॊटै उऱिय–चलाने से बल-प्राप्त; तॊकै तीर्न्तन–असंख्यक; कणै मारिकळ्–शरों की वर्षाओं को; कटै नाळ् उऱु–युगांत में चलनेवाली; कण मा मळै–बड़े मेघों के समूह; काल् वीळ्न्तु ऎन–नीचे उतरे हों जैसे; तुरन्तान्–छोड़ा। ३६८९

मानो कि कोई प्रयत्नवान खूब यत्न करके कार्य साधता है और बहुत क्रूर प्रारब्ध आकर बाधा देता है तो वे कार्य मिट जाते हैं। वैसे ही क्रूर रावण के शर व्यर्थ बने। रावण के चलाने से बलवान हुए वे असंख्यक शर बल खोकर युगांत के मेघ नीचे गिरे जैसे नीचे गिर गये। ३६८९

विण्पोर्त्तन तिशैपोर्त्तन मलैपोर्त्तन विमैयोर्
कण्पोर्त्तन कडल्पोर्त्तन पडिपोर्त्तन कलैयोर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍण्पोर्त्तत्त वॅरिपोर्त्तत्त विरुळ्पोर्त्तत्त वॅन्नॅ
तिण्पोर्त्तॉळि लॅन्ड्रानॅयि नुरिपोर्त्तवन् तिहैत्तान् 3690

आनॅयित् उरि पोर्त्तवन्—गजचर्माम्बरधारी (शिव) ने; विण्—आकाश; पोर्त्तत्त—आच्छादित कर गये (रावण-शर); तिचै पोर्त्तत्त—दिशाओं को ढँक गये; मलै पोर्त्तत्त—पर्वतों को ढाँप दिया; इमैयोर् कण् पोर्त्तत्त—देवों की आँखों पर छा गये; कटल् पोर्त्तत्त—समुद्रों को ढँक दिया; पटि पोर्त्तत्त—भूमि को ढाँप दिया; कलैयोर्—कलाविदों के; ऍण्—संख्याज्ञान को; पोर्त्तत्त—बेकार कर दिया; ऍरि पोर्त्तत्त—अग्नि को ढाँप दिया; इरुळ् पोर्त्तत्त—अन्धकार पर छा गये; तिण्—कठोर; पोर् तॉळिल् इतु—युद्धकर्म यह; ऍन्ड्रो—कौन-सा है; ऍन्ड्रान्—पूछा (आश्चर्य से)। ३६९०

गजचर्माम्बरधारी शिवजी ने यह आश्चर्य देखा कि उन शरों ने आकाश को, दिशाओं को, पर्वतों, देवों की आँखों, समुद्रों और भूमि सबको ढाँप दिया। गणितज्ञों के संख्याज्ञान को भी उन्होंने आच्छादित कर दिया! आग व अधिकार भी ढँक गया। शिव चकित हुए कि ऐसा कठोर युद्धकर्म है कैसा ?। ३६९०

अल्लानॅडु पॅरुन्देवरु मऱैवाणरु मञ्जि
ऍल्लार्हळुङ् गरङ्गॉण्डिरु विळिपॉत्तित्त रिरिन्दत्तर्
शॅल्लायिरम् विळुङ्गालुहुम् विलङ्गॉत्तदु शेत्तै
विल्लाळत्तु मदुहण्डवै विलक्कुम्बडि विरैन्दान् 3691

अल्ला—(शिवजी से) अन्य; नॅटु पॅरु तेवरुम्—बहुत श्रेष्ठ देव और; मऱै वाणरुम्—वेदविप्र; ऍल्लार्कळुम्—सभी; अञ्चि—डरकर; करम् कॊण्टु—हाथों से; इरु विळि—दोनों आँखों को; पॉत्तित्तर्—मूंदकर; इरिन्तत्तर्—भाग गये; चेत्त—सेना (वानरों की); आयिरम् चॅल्—हजार वज्र; विळुम् काल्—जब गिरें तब; उकुम्—चूर होनेवाले; विलङ्कु—पर्वत; ऑत्ततु—के समान बन गयी; अतु कण्टु—उसको देखकर; विल्लाळत्तुम्—धनुर्धर श्रीराम भी; अवै—उन्हें; विलक्कुम्पडि—रोकने को; विरैन्तान्—आतुर हुए। ३६९१

शिव के अतिरिक्त अन्य देवता लोग, ब्राह्मण लोग आदि सभी भयातुर होकर अपनी आँखों को अपने हाथों से मूंदते हुए इधर-उधर भाग गये। वानर-सेना भी सहस्र वज्राहत गिरि के समान छिन्न-भिन्न हो गयी। धनु के स्वामी श्रीराम ने यह हालत देखी तो उनमें उन बाणों को रोकने की आतुरता पैदा हो गयी। ३६९१

शॅन्दीवित्तै मऱैवाणनुक् कॊरुवन्शिरु विलैनाळ्
मुन्दीन्दवॊ रुणवित्पय नॅतलायित्त मुदल्वन्
वन्दीन्दत्त वडिवॅङ्गणै यत्तैयान्वहुत् तमैत्त
वॅन्दीवित्तैप् पयत्तॉत्तत्त वरक्कन्शॊरि विशिहम् 3692

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुतल्वऩ्-आदिनाथ श्रीराम ने; वन्तु-आकर; ईन्तत-जो चलाये; वटि वॅम् कणै-तीक्ष्ण तापक शर; ऑरुवऩ्-किसी (दाता) के; मुन्तु-पहले किसी दिन; चॅम् ती विऩै-लाल तीनों "अग्नि" पालनेवाले; मऱै वाणऩुक्कु-वेदविप्र को; चिऱु विलै नाळ्-अकाल में; ओर् उणविऩ्-एक भोजन; ईन्ततु-देने का; पयऩ् ऍतल्-फल जैसा; आयिऩ-बढ़ गये; अरक्कऩ् चॉरि विचिकम्-राक्षसप्रेरित विशिख; अतैयाऩ्-उसके; वकुत्तु अमैत्त-संकलित; वॅम् तीविऩै-कठोर पापों के; पयऩ् ऑत्तऩ-फल के समान हुए। ३६९२

श्रीराम ने मैदान में आकर तीक्ष्ण और दाहक जो अस्त्र चलाये, वे अकाल के समय किसी दाता द्वारा याजी ब्राह्मण को दिये गये भोजन के फल के समान बढ़ गये। उधर रावण के प्रेषित बाण उसके ही रचित पापों के फल के समान (क्षीण) हो रहे। ३६९२

नूऱायिरम् वडिवॅङ्गणै नॉडियॉऩ्ऱिऩिऩ् विडुवाऩ्
आऱाविऱऩ् मऱवोऩवै तऩिनायह ऩऱुप्पाऩ्
कूऱायिऩ कऩल्शिन्दिऩ कुडिक्कप्पुऩल् कुऱुहिच्
चेऱायिऩ पॉडियायिऩ तिडरायिऩ कडलुम् 3693

आऱा विऱल्-अक्षुण्ण विजय के; मऱवोऩ्-वीर रावण; नॉटि ऑत्ऱिऩिल्-चुटकी बजाने की देर में; नूऱायिरम्-एक लाख; वटि वॅम् कणै-तीक्ष्ण तापक शर; विटुवाऩ्-छोड़ता; अवै-उन्हें; तऩि नायकऩ्-बेजोड़ सरदार श्रीराम; अऱुप्पाऩ्-काट देते; कूऱायिऩ-छिन्न हुए वे; कऩल् चिन्तिऩ-आग छोड़ते हुए; कुडकि-आकर; पुऩल्-जल को; कुटिक्क-पी (सोख) लेते तो; कटलुम्-समुद्र; चेऱु आयिऩ-पंक बनते फिर; पॉटि आयिऩ-धूलि बनते और; तिटर् आयिऩ-टीले बनते। ३६९३

अक्षुण्ण विजयी रावण एक क्षण में सहस्र तीक्ष्ण कठोर शर चलाता। अप्रतिम नायक श्रीराम उन्हें काट देते। कटे वे आग उगलते हुए जाकर जल को सोख लेते तो समुद्र पंक बनते, फिर धूलि बनते और फिर टीले बन जाते। ३६९३

विल्लाऱ्चरन् दुरक्किऩ्ऱवऱ् कुडऩेमिडल् वॅम्बोर्
वल्लाऩॅळु मऴुत्तोमर मणित्तण्डिरुप् पुलक्कै
तॉल्लार्मिडल् वळैशक्करञ् जूलम्मिवै तॉडक्कत्
तॅल्लानंडुङ् गरत्तालंडुत् तॅऱिन्दाऩ्शॅरु वऱिन्दाऩ् 3694

विल्लाल्-धनु से; चरम्-बाणों को; तुरक्किऩ्ऱवऱ्कु-जो चलाते थे उन (श्रीराम) पर; चॅरु अऱिन्ताऩ्-युद्धतंत्रज्ञ; मिटल् वॅम् पोर् वल्लाऩ्-और भयंकर क्रूर युद्ध-समर्थ रावण ने; उटऩे-तुरंत; ऍळु मऴु तोमरम्-लोहस्तंभ, परसे और तोमर; मणित्तण्टु इरुम्पु उलक्कै-मणिदंड, और लोहे के मूसल; तॉल् आर्-प्राचीन; मिटल्-मजबूत; वळै-शंख; चक्करम्-चक्र; चूलम् इवै तॉटक्कत्तु-शूल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आदि; ऎल्लाम्–सभी; नॆटुम् करत्ताल्–लंबे हाथों से; ऎट्टत्तु ऎरिन्तान्–ले चलाये। ३६९४

रावण युद्धतंत्रज्ञ था और घोर युद्धसमर्थ भी। उसने शरप्रेषक श्रीराम पर अस्त्र चलाने के साथ-साथ लौहस्तंभ, परसे, दंड, तोमर प्राचीन व शक्तिमान शंख, चक्र, शूल आदि भी अपने लंबे हाथों से चलाये। ३६९४

वेलायिर मऴुवायिर मॆऴुवायिरम् विशिहक्
कोलायिरम् बिऱवायिर मॊरुकोल्पडक् कुऱैव
कालायिन कनलायिन वुरुमायिन कदिय
शूलायिन मऴैयन्नवन् तॊडैपल्वहै तॊडुक्क 3695

चूलायिन मऴै अन्नवन्–घनश्याम के; काल् आयिन–पवन-सम; कनल् आयिन–अग्नि-सम; उरुम् आयिन–वज्र-सम; कतिय–तेज; पल् वकै–विविध प्रकार के; तॊटै तॊटुक्क–अस्त्र के चलाते; ऒरु कोल् पट–उनमें एक बाण के लगने पर; आयिरम् वेल्–हजार शक्तियाँ; आयिरम् मऴु–हजार परसे; आयिरम् ऎऴु–हजार "ऎऴु"; आयिरम् विचिकम् कोल्–हजार विशिख शर; आयिरम् पिऱ–और हजार अन्य (हथियार); कुऱैव–मिट जाते। ३६९५

घनश्याम ने पवन, अग्नि और वज्र —इनके समान और तेज चलनेवाले बाण चलाये। उनमें एक-एक ने सहस्र-सहस्र भालों, परसों, लौहदंडों, विशिखों को और अन्य हथियारों को हीन करा दिया। ३६९५

ऒत्तुच्चॆरु विळैक्किऱ्ऱदॊ रळविऱ्ऱलै युडने
पत्तुच्चिलै यॆडुत्तान्कणै तॊडुत्तान्पल मुहिल्काल्
तॊत्तुप्पडु नॆडुन्दारैहळ् शॊरिन्दालॆनत् तुरन्दान्
कुत्तुक्कॊडु नॆडुङ्गोल्पडु कळिऱामॆनक् कॊदित्तान् 3696

ऒत्तु–समता के साथ; चॆरु विळैक्किऱ्ऱु ओर् अळविऱ् तलै–युद्ध जब करते तब; नॆटुम् कुत्तु कोल् कॊटु–लंबी (लोहे की नोकवाली) चुभीली छड़ी से; पटु–आहत; कळिऱ आम् ऎन–हाथी के समान; कॊतित्तान्–जो खौल उठा उस (रावण) ने; उटने–तत्काल; पत्तु चिलै ऎटुत्तान्–दस धनु लिये; कणै तॊटुत्तान्–उन बाणों को चलाया; पल मुकिल्–अनेक मेघों से; काल्–निकलने वाली; तॊत्तु पटु–राशीकृत; नॆटु तारैकळ्–लंबी धारें; चॊरिन्ताल् ऎन–गिरती जैसे; तुरन्तान्–(अस्त्र) बरसाये। ३६९६

रावण यह देखकर कि श्रीराम लड़ाई में उसकी समता कर रहे हैं, ऐसा खौल उठा जैसे चुभीले काँटेदार छड़ी के काँटे की चुभन पाकर हाथी बौखला जाता है। उसने तुरन्त दस धनु लेकर ऐसी शरवर्षा करा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दी जैसे अनेक मेघ मिलकर अत्यधिक घनी राशियों में धारें गिराते हों। ३६९६

ईशन्विडु शरमारियु मॅरिशिन्दुऱु तऱुकण्
नीशन्विडु शरमारियु मिडैयॅङ्गणु नॅरुङ्गत्
तेशम्मुद लॅम्बूदमुन् दिडुक्कुऱ्ऱन तिहैत्तुक्
कूशुम्बडि युडल्वानवर् कुलैन्दार्मन मुलैन्दार् 3697

ईचन् विटु-ईश्वर (श्रीराम) के चलाये; चर मारियुम्-शरों की वर्षा और; ॲरि-आग; चिन्तुऱु-निकालनेवाली; तऱु कण्-क्रूर आँखों के; नीचन्-नीच राक्षस की; विटु चर मारियुम्-प्रेषित शर-वर्षा; इडै ॲङ्कणुम्-सभी स्थानों में; नॅरुङ्क-भर गयी तो; तेचम्-भूमि; मुतल् ऐम् पूतमुम्-आदि पाँचों भूत; तिकैत्तु-भ्रमित हो; तिटुक्कुऱ्ऱन-भयभीत हो गये; वानवर्-देव; उटल् कूचुम्पटि-शरीर को संकुचित करते हुए; मनम् कुलैन्तार्-व्यग्रमन हो गये; उलैन्तार्-बेचैन हुए। ३६९७

श्रीरामेश्वर द्वारा प्रेषित शर और जो शर आग निकालती आँखों वाले नीच राक्षस छोड़ रहा था, वे दोनों मिलकर सब जगह भर गये। तो भूमि आदि पाँचों भूत भ्रमित व चकित हुए। देव संकुचित शरीर वाले और व्यग्र मन वाले होकर विचलित हुए। ३६९७

मन्दरक् किरियॅन मरुन्दु मारुदि
तन्दवप् पॊरुप्पॅनप् पुरङ्ग डामॅनक्
कन्दरुप् पन्नहर् विशुम्बिऱ् कण्डॅन
अन्दरत् तॅऴुन्ददव् वरक्कन् तेररो 3698

अ अरक्कन् तेर्-उस राक्षस का रथ; विचुम्पिल् कण्ट-आकाश में वृष्ठ; मन्तर किरि ॲन-मंदर पर्वत के समान; मारुति तन्त-मारुति द्वारा जो लाया गया; अ मरुन्तु पॊरुप्पु ॲन-उस ओषधि-पर्वत के समान; पुरङ्कळ् ताम् ॲन-त्रिपुर के समान; कन्तरुप्प नकर् ॲन-गंधर्व नगर के समान; अन्तरत्तु ॲऴुन्ततु-आकाश में उठ चला। ३६९८

तब रावण का रथ आकाश में चढ़कर आकाशस्थित मंदरगिरि के समान, मारुति द्वारा लायी गयी ओषधिगिरि के समान, त्रिपुरों में एक-एक के समान और गंधर्वनगर के समान भी लग रहा था। ३६९८

ॲऴुन्दुयर् तेर्मिशै यिलङ्गै कावलन्
पॊऴिन्दन शरमऴै युरुविप् पोदलाल्
ऒऴिन्ददु मॊऴिहिल दॅन्न वॊल्लॅनक्
कऴिन्ददु कविक्कुल मिरामन् काणवे 3699

इलङ्कै कावलन्-लंकापति (ने); उयर तेर् मिचै-ऊँचे रथ पर; ॲऴुन्तु-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(आकाश में) उठकर; पॊऴिन्ततत्त–जो बरसायी; चर मऴै–वह शर-वर्षा; उरुबि–(वानरों को) भेदकर; पोतलाल्–चली, इसलिए; ऒल्लॆत्त–शीघ्र; ऒऴिकिलतु–क्षीण न होनेवाला; ऒऴिन्ततु–क्षीण हो गया जैसा; कविक्कुलम्–वानरगण; इरामन् काणवे–श्रीराम के देखते ही ; कऴिन्ततु–छीजे । ३६९९

लंकेश ने वहाँ से शरों की वर्षा करा दी । वे वानरों के शरीरों को भेद चले तो 'अमिट भी मिट गया' की स्थिति पैदा करते हुए कपिकुल नष्ट हुआ । यह श्रीराम के देखते ही हुआ । ३६९९

मुऴविडु तोळॊडु मुडियुम् बः(ह्)ऱलै
विऴुविडु वेन्निनि विशुम्बिऱ् चेममा
मऴविडै यत्तैयनम् बडैञर् माण्डनर्
ऎऴुविड तेरैयॆन् ऱिरामन् कूऱिनान् 3700

इरामन्–श्रीराम ने; मऴ–तरुण; विटै अत्तैय–ऋषभ-सम; नम् पटैञर्–हमारी सेना के वीर; माण्टनर्–मर गये; मुऴवु इटु तोळॊटु–मर्दल-सम कंधों के साथ; मुटियुम्–किरीट और; पल् तलै–अनेक सिरों को; विऴु–गिराते हुए; इनि विटुवेन्–अब चलाऊँगा (शर); तेरै–रथ को; चेममा–सुरक्षित रूप से; विचुम्पिल् ऎऴ विटु–आकाश में चलने दो; ऎन्ऱु कूऱिनान्–ऐसा कहा । ३७००

यह देखकर श्रीराम ने मातलि से कहा कि देखो ! हमारे तरुण ऋषभ-से सैनिक मर गये । अब मैं अपने बाण रावण के मर्दल-सम कंधों, किरीटों और अनेक सिरों को काटने के लिए ही चलाऊँगा । तुम सुरक्षित रूप से रथ को ऊपर आकाश में उठ जाने दो । ३७००

अन्दुशॆय् हुवॆन्नॆन वऱिन्द मादलि
उन्दिनन् तेरॆन्नु मूऴिक् काऱ्ऱिनै
इन्दुमण् डिलत्तित्मे लिरवि मण्डिलम्
वन्दॆन्न वन्ददम् मानत् तेररो 3701

अऱिन्त मातलि–समझकर मातलि; अन्तु चॆय्कुवॆन्–वही करूँगा; ऎन्ऱु–कहकर; तेर् ऎन्नुम् ऊऴि काऱ्ऱिनै–रथ रूपी युगांतपवन को; उन्तितन्–ऊपर चलाया; अ मान तेर्–वह बड़ा रथ भी; इरवि मण्टलत्तित् मेल्–सूर्यमंडल के ऊपर; इन्तु मण्टिलम्–चंद्रमंडल; वन्तॆन्न–आया जैसे; वन्ततु–आया । ३७०१

श्रीराम का मन जानकर मातलि ने 'वैसा ही करूँगा' कहकर रथ रूपी युगांत पवन को ऊपर चलाया । वह बड़ा रथ भी सूर्यमंडल के ऊपर चंद्रमंडल आया हो, ऐसा आ गया । (अन्तु —तमिऴ का शब्द नहीं । शायद तॆलुगु का शब्द है ! उसका अर्थ 'वैसा' है । इधर रविमंडल के ऊपर चंद्रमंडल अर्थ लगाया गया है । यद्यपि पद्य में "चंद्रमंडल के ऊपर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रवि-मंडल" की बात ही है। यह उ-वे-सु स्वामीनाथय्यर जी का संशोधन है, जो अन्य तमिऴ-ग्रंथों के आधार पर किया गया है।) । ३७०१

इरिन्दन मऴैक्कुल मिऴुहित् तिक्कॆलाम्
उरिन्दन वुडक्कुल मुदिर्न्दु शिन्दिन
नॆरिन्दन नॆडुवरैक् कुडुमि नेर्मुऱै
तिरिन्दन शारिहै तेरुन् देरुमे 3702

तेरुम् तेरुम्–(श्रीराम का) रथ और (रावण का) रथ; नेर् मुऱै–ठीक-ठीक; चारिकै तिरिन्तन–चक्कर काटने लगे; मऴै कुलम्–मेघवृन्द; तिक्कु ऍलाम्–सारी दिशाओं में; इऴुकि–सरककर; इरिन्तन–अस्त-व्यस्त हुए; उटु कुलम्–तारागण; उरिन्तन उतिर्न्तु चिन्तिन–चूर होकर चू गये; नॆटु वरै–ऊँचे पर्वतों के; कुटुमि–शिखर; नॆरिन्तन–फटे। ३७०२

जब वे दोनों (राम और रावण के) रथ चक्कर काटते रहे, तब मेघवृन्द सारी दिशाओं में तितर-बितर होकर बिखर गये। उडुगण-समूह चूर-चूर होकर चू गये। और ऊँचे पर्वतों के शिखर फट गये। ३७०२

वलम्वरु मिडम्वरु मऱुहि वानॊडु
निलम्वरु मिडम्वल निमिरुम् वेलैयुम्
अलम्वरुङ् गुलवरै यनैत्तु मण्डमुम्
शलम्वरुङ् गुयमहन् तिहिरित् तन्मैपोल् 3703

वलम् वरुम्–एक-दूसरे को कभी दायीं ओर से घूम आता; इटम् वरुम्–कभी बायीं ओर से घूम आता; मऱुकि–संचरण कर; वानॊटु निलम् वरुम्–आकाश से भूमि पर आ जाता; इटम् वलम् निमिरुम्–बायीं या दायीं ओर ऊपर उठता; वेलैयुम्–पर्वत; कुलवरै अनैत्तुम्–सारी कुलगिरियाँ और; अण्टमुम्–यह अंड; चलम् वरुम्–घूमनेवाले; कुयमकन् तिकिरि तन्मै पोल्–कुलाल के चक्र के स्वभाव के समान; अलम् वरुम्–घूमते और; चलम् वरुम्–काँप उठते। ३७०३

वे दोनों रथ एक दूसरे की 'कभी' दायीं तरफ़ से आते तो कभी बायीं तरफ़ से, कभी आकाश में रहते, कभी भूमि को स्पर्श कर आते। कभी बायें उठते, कभी दायें उठते। इससे समुद्र, कुलपर्वत और अंड कुलालचक्र के समान घूमते और हिल जाते। ३७०३

ऍऴुम्बुह ऱिऴैवन्ते ररक्कन् तेरिदॆन्
ऱुऴन्दुरुळ् पॊऴुदिनॆव् वुलहुञ् जेर्वन
तऴुम्बिय तेवरुन् दॆरिवु तन्दिलर्
पिऴुम्बिन तिरिवन वॆन्नुम् बॆऱ्ऱियार् 3704

उऴुन्तु उरुळ् पॊऴुतिन्–उड़द की लुढ़कती ढेर में; ऍ उलकुम् चेर्वन–किसी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भी लोक में पहुँच सकनेवाले (रथों के संबंध में); तळुम्पिय तेवरुम्–अभ्यस्त देव भी; पिळम्पित–पिंडाकार हैं; तिरिवत–घूम रहे हैं; ऍत्रुम्–(इतना ही) कहने की; पॅट्रियार्–स्थिति में थे; ऍळुम्–उपर उठनेवाला; इतु–यह रथ; पुकळ् इरैवन् तेर्–प्रशंसा योग्य श्रीराम का रथ है; अरक्कन् तेर् इतु–यह राक्षस का रथ है; ऍत्रु तॅरिवु तन्तिलर्–ऐसा पहचान नहीं सके। ३७०४

उड़द की लुढ़कती देर में वे रथ किसी भी लोक में पहुँच जाते। अभ्यस्त देव भी यही समझने की स्थिति में रहे कि 'हाँ कुछ पिण्डवत् आकार हैं, घूमते हैं'। पर यह पहचान नहीं पाते कि उत्तरोत्तर बढ़ता यह रथ प्रकीर्तित श्रीराम का है या राक्षसराज का। ३७०४

उक्किला वुडुक्कळु मुरुळ्हळ् ताक्कलिन्
नॅक्किला मलैहळु नॅरुप्पुच् चिन्दलिन्
वक्किलात् तिशैहळु मुदिरम् वाय्वळिक्
कक्किला वुयिर्हळु मिल्लै काण्बन् 3705

उरुळ्कळ्–पहियों के; ताक्कलिन्–टकराने से; उक्किला–जो नहीं गिरे; उडुक्कळुम्–वे तारे भी; नॅरुप्पु चिन्तलिन्–आग निकालते इसलिए; नॅक्कु इला मलैकळुम्–जो टूटे नहीं थे वे पर्वत भी; वक्कु इला तिचैकळुम्–जो जली नहीं थी वे दिशाएँ भी; उतिरम् वाय् वळि–रुधिर मुख से; कक्किला–वमन जो न करते वे; उयिर्कळुम्–जीव भी; काण्पत–दिखें; इल्लै–नहीं। ३७०५

पहिये टकराये। इसलिए ऐसे नक्षत्र नहीं रहे जो नहीं गिरे हों। आग के फैलने से ऐसे पर्वत नहीं रह गये जो चूर नहीं हुए; ऐसी दिशा नहीं रही जो नहीं जली। ऐसे जीव नहीं रहे जो अपने मुख से रक्त वमन नही करते हों। ३७०५

इन्दिर नुलहत्ता रॅन्ब रॅन्रवर्
चन्दिर नुलहत्ता रॅन्बर् तामरै
यन्दण नुलहत्ता रॅन्ब रल्लराल्
मन्दर मलैयिन्ना रॅन्बर् वान्वर् 3706

वानवर्–व्योमवासी; इन्तिरन् उलकत्तार् ऍन्पर्–इंद्रलोक के हैं कहते; ऍन्रवर्–ऐसा कहनेवाले; चन्तिरन् उलकत्तार् ऍन्पर्–चंद्रलोक में हैं कहते; ऍन्पर्–ऐसा कहनेवाले ही; तामरै अन्तणन्–कमलदेव ब्राह्मण के; उलकत्तार् ऍन्पर्–लोक में हैं कहते; अल्लर्–अन्य; मन्तर मलैयिन्तार् ऍन्पर्–मंदर पर्वत पर हैं कहते। ३७०६

देवगण कभी कहते कि वे इंद्रलोकस्थ हैं। तुरंत बदलते और कहते कि नहीं, वे चंद्रलोक में हैं। फिर कहते कि कमलदेव ब्रह्मा के लोक में हैं। ऐसों से अन्य लोग कहते कि वे मंदर पर्वत में रहते हैं। ३७०६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाऱ्कडल् नडुवणो रॅन्बर् पल्वहै
माऱ्कड लिनुक्कुमव् वरम्बिन्ना रॅन्बर्
मेऱ्कड लारॅन्बर् किळक्कुळा रॅन्बर्
आऱ्पुडै यिदुवॅन्ब रऱियुन् देवरुम् 3707

अऱियुम् तेवरुम्–दूरदृष्टि रखनेवाले देव भी; पाऱ्कटल् नटुविणोर् (वे दोनों) क्षीरसागर-मध्य हैं; ऍन्पर्–कहते; पल् वकै–(कभी) अनेक; माल् कटलि नुक्कुम् अ वरम्पिन्नार् ऍन्पर्–बड़े बाह्य सागरों के उस पार हैं कहते; मेल् कटलार् ऍन्पर्–पश्चिमी सागर पर के बतलाते; किळक्कु उळार् ऍन्पर्–पूर्वी सागरस्थ हैं कहते; आऱ्पु उटै इतु–उनकी ध्वनि है यह; ऍन्पर्–कहते। ३७०७

दूरदर्शी देव भी यह कहते कि दोनों क्षीरसागर-मध्य हैं। फिर कहते कि बाह्य सागरों के उस पार हैं। कभी कहते कि पश्चिमी सागर के तीर पर हैं। तुरंत कहते कि 'देखा पूर्वी सागर पर हैं। रथों की ध्वनि यह सुनो'। ३७०७

मीण्डन वोवॅन्बर् विशुम्बु विण्डुहक्
कीण्डन वोवॅन्बर् कीळ वोवॅन्बर्
पूण्डन पुरवियो पुदिय काऱ्ऱॅन्बर्
माण्डन वुलहमॅन् ऱणङ्गुम् वायिन्नार् 3708

उलकम् माण्टन–(इन रथों के घूमने से) लोक ध्वंस हुए; ऍन्ऱु–सोचकर; अणङ्कुम् वायिन्नार्–रोते मुख वाले; मीण्टनवो–(भूमि को) लौट गये क्या; ऍन्पर्–कहते; विचुम्पु–आकाश; विण्टु उक–कटकर चू जाए ऐसा; कीण्टनवो–चिर गया क्या; ऍन्पर्–संशय करते; कीळवो–नीचे चले गये क्या; ऍन्पर्–कहते; पूण्टन–रथ में जो जुते हैं वे; पुरवियो–अश्व हैं; पुतिय–या अपूर्व; काऱ्ऱु–पवन; ऍन्पर्–बतलाते। ३७०८

"इनके चक्करों से लोक ध्वंस हो गये" —ऐसा सोचकर दुःखी हुए देवों ने बारी-बारी से कहा कि क्या ये भूमि को लौट गये ? आकाश चिर कर खण्ड हो गया क्या ? नीचे उतर गये क्या ? इनसे जुते अश्व अश्व हैं क्या ? नहीं ये कोई अनोखे अपूर्व पवन ही हैं ! ३७०८

एळुडैक् कडलिनुन् दीवो रेळिनुम्
एळुडै मलैयिनु मुलहो रेळिनुम्
शूळुडै यण्डत्तिन् शुवर्ह ळॅल्लैया
ऊळिय काऱ्ऱॅनत् तिरिन्द वोविल 3709

एळुटै कटलिनुम्–सातों समुद्रों से; तीवु ओर् एळिनुम्–सातों द्वीपों से; एळुटै मलैयिनुम्–पर्वत सप्तक से; उलकु ओर् एळिनुम्–(वो) सात लोकों से; चूळ् उटै–विस्तृत बने; अण्टत्तिनु–अंड को; चुवर्कळ् ऍल्लैया–भित्तियों तक;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊळिय कार्रु अॅत–युगांतपवन के समान; ओवु इल–निरंतर; तिरिनृत–घूमे। ३७०९

सप्त समुद्र, सप्त द्वीप, सप्त पर्वत, सप्त लोक —इनके मिले अंड की भित्तियों तक पवन के समान वे रथ निरंतर घूमे। ३७०९

उडैक्कड लेळिनु मुलह मेळिनुम्
इडैप्पडु तीविनु मलैयॉ रेळिनुम्
अडैक्कलप् पॉरुळॅत वरक्कन् वीशिय
पडैक्कल मळ्ळपडु तुळियिन् पान्मैय 3710

कटल् एळिनुम्–सातों समुद्रों में; उटै उलकम् एळिनुम्–उनको वस्त्र के रूप में प्राप्त सातों पृथ्वी भागों में; इटै पटु तोविनुम्–मध्यस्थ द्वीपों में; मलै ओर् एळिनुम्–सातों पर्वतों पर; अटैक्कलम् पॉरुळ् अॅत–(रावण के रखे) धरोहर-पदार्थों के समान; अरक्कन् वीचिय–राक्षस-प्रेरित; पटै कलम्–हथियार्; मळ्ळै पटु–मेघ से निकली; तुळियिन् पान्मैय–बूंदों के समान हो रहे। ३७१०

सप्त समुद्र, समुद्रवसन सप्त भूखंड, सप्त पर्वत और मध्य-मध्य रहे द्वीप —इन सभी पर रावण ने जो अपने धरोहर के समान हथियार छोड़े वे मेघों की वर्षा की बूंदों के समान गिरे। ३७१०

उऱुत्तुल हनैत्तैयु मुळ्ळुम् बोरिडै
इऱुत्तिह लिरावण नॅऱिन्व वॅय्दन
अऱुत्तदुन् दडुत्तदु मन्ऱ यारियन्
शॅऱुत्तॊरु तॊळिलिडैच् चॅय्द दिल्लैयाल् 3711

उलकु अनैत्तैयुम्–सभी लोकों पर; उऱुत्तु–गुस्सा करके; उळ्ळुम् पोर् इटै–होनेवाले युद्ध में; इकल् इरावणन्–बलवान रावण द्वारा; इऱुत्तु ऍऱिन्त–जोर लगाकर फेंके गये; ऍय्तत–चलाये गये हथियारों को; आरियन्–आर्य श्रीराम ने; अऱुत्ततुम् तटुत्ततुम् अन्ऱि–काटा और रोका इसके अलावा; इटै–बीच में; चॅऱुत्तु–गुस्सा करके; ऒरु तॊळिल्–दूसरा काम; चॅय्ततु इल्ले–नहीं किया। ३७११

सारे लोकों से वैर करके रावण लड़ रहा था। पराक्रमी उसने अस्त्र चलाये और हथियार फेंके। आर्य राम ने उन्हें काटा और रोका। इसके अलावा उन्होंने गुस्सा करके कुछ दूसरा काम नहीं किया। ३७११

विलङ्गलुम् वेलैयु मेलुङ् गीळ्ळरुम्
अलङ्गॊळि तिरितरु मुलह नैत्तैयुम्
कलङ्गुऱत् तिरिन्ददो रूळिक् कालक्कार्
ऱिलङ्गैयै यॅय्दिन दिमैप्पिन् वन्दरो 3712

विलङ्कलुम्–पर्वतों को; वेलैयुम्–समुद्रों को; मेलुम्–ऊपर के लोकों;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कीऴ्रुम्–नीचे के लोकों; अलङ्कु ऒळि–किरणमाली; तिरि तरुम्–जहाँ घूमता है; उलकु अनैत्तैयुम्–उन सारे लोकों को; कलङ्कुऱ–हिलाते हुए; तिरिन्ततु–जो चला; ओर् ऊऴि काल काऱ्ऱु–उस युगांतपवन (रूपी रथों का जोड़ा); इमैप्पिन् वन्तु–पल भर में आकर; इलङ्कैयै ऎय्तिनतु–लंका पहुँचा। ३७१२

दोनों के रथों के अश्व रूपी युगांत पवन पर्वतों, समुद्रों, ऊपर के भुवनों, नीचे के लोकों और सूर्य के घूमने के दायरे के अंदर रहनेवाले सारे प्रदेशों को हिलाकर एक पल भर में लंका पहुँच गया। ३७१२

उय्त्तुल हनैत्तितु मुऴन्ऱ शारिहै
मॊय्त्तुयर् कडलिडै मणलिन् मुम्मैय
वित्तहर् कडविय विशयत् तेर्प्परि
ऎय्त्तिल वियर्त्तिल विरण्डु पालवुम् 3713

मॊय्त्तु–सटकर; उयर् बढ़नेवाले; कटलिटै मणलिन्–समुद्र के बालुओं से; मुम्मैय–तिगुने; उलकु अनैत्तितुम्–सारे लोकों में; उय्त्तु–चलाये जाकर; उऴन्ऱ–जो चले; चारिकै–चक्कर काटे; वित्तकर्–रथसारथ्य-विद्या में निपुणों द्वारा; कटविय–चलाये गये; इरण्टु पालवुम्–दोनों पक्षों के; विचय तेर् परि–विजयी रथों के अश्व; ऎय्त्तिल–थके नहीं; वियर्त्तिल–स्वेद-भरे भी नहीं हुए। ३७१३

घने रूप से भरे और अधिक परिमाण के होते जानेवाले समुद्र के बालुओं के तिगुने प्रदेशों में घूमते चक्कर काटते रहने के बाद भी दोनों विजयी पक्षों के सारथ्य-विशारदों से चालित अश्व नहीं थके; न उनके शरीर में स्वेद ही झलक आया। ३७१३

इन्दिरन् तेरिन्मे लुयर्न्द वॆन्दॊऴिल्
उन्दरुम् बॆरुवलि युरुमि नेऱ्ऱिनैच्
चन्दिर नतैयदोर् शरत्ति नाऱ्ऱरैच्
चिन्दिन निरावण नॆरियुऱ् जॆङ्गणान् 3714

ऎरियुम्–जलती; चॆम् कणान् इरावणन्–लाल आँखों वाले रावण ने; इन्तिरन् तेरिन मेल्–इंद्र के रथ के ऊपर; उयर्न्तु–ऊँचे रहे; वॆम् तॊऴिल्–त्रासक काम करनेवाले; उन्त अरुम् पॆरुम् वलि–अप्रतिहत शक्तिशाली; उरुमिन् एऱ्ऱिनै–अशनिराज को; चन्तिरन् अनैयतु–चंद्राकार; ओर् चरत्तिनाल्–एक अस्त्र से; तरै–भूमि पर; चिन्तिनन्–काटकर गिरा दिया। ३७१४

जलती लाल आँखों वाले रावण ने इन्द्र के रथ के ऊपर की संतापक व काटने में दुस्साध्य वज्र-ध्वजा को चंद्राकार बाण से काटकर भूमि पर गिरा दिया। ३७१४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शाय्न्दवल् लुरुमुपो यरवत् ताळ्हडल्
पाय्न्दवॅङ् गनलॅन मुळङ्गिप् पाय्दलुम्
काय्न्दपे रिरुम्बिन्वन् कट्टि काय्वऱत्
तोय्न्दनी रामॅनच् चुरुङ्गिऱ् ऱाळ्ळिये 3715

चाय्नूत-गिरी; वल्-कठोर; उरुमु-वज्रध्वजा; पोय्-जाकर; अरवत्तु-गरजते; आळ् कटल्-गहरे समुद्र में; पाय्नतु-उछलकर गिरी; वॅम् कनल् अॅन-गरम आग के समान; मुळङ्कि-शब्द करते हुए; पाय्तलुम्-झपटी तो; काय्नत-तप्त; पेर् इरुम्पिन् वन् कट्टि-बड़ा लौहपिंड; काय्वु अऱ-गरमी छोड़ने के लिए; तोय्नत नीर् आम् अॅन-मग्न जिसमें हुआ उस जल के समान; आळि-समुद्र; चुरुङ्किऱ्ऱु-सूख चला। ३७१५

वह भयंकर वज्र कटकर चला और गरजते गहरे सागर में झपटकर क्रूर गरम आग के समान शोर के साथ गिरकर डूब गया। तब तप्त लोहे के डूबकर शांत होने पर जल जैसे सूख जाता है वैसे ही सागर सूख गया। ३७१५

अळुत्तॅनच् चिदैविला विरामन् तेर्प्परिक्
कुळुत्तनै कूर्ङ्गणैक् कुप्पै याक्किनेर्
वळुत्तरु मादलि वयिर मार्बिडै
अळुत्तितन् कॊडुञ्जर माऱॊ डाऱरो 3716

अॅळुत्तु अॅन-अक्षर के समान; चितैवु इला-अक्षय; इरामन्-श्रीराम के; तेर् परि कुळु तनै-रथ के अश्वसमूह को; कूर् कणै कुप्पै आक्कि-तीक्ष्ण शरों की राशि बनाकर; नेर्-सीधे; वळुत्त अरु-अस्तुत्य; मातलि-मातलि के; वयिरम् मार्पु इटै-वज्रवक्ष में; कॊटु चरम्-घातक शर; आऱॊटु आऱु-छः और छः (बारह को); अळुत्तितन्-गड़ा दिया। ३७१६

अक्षर (ॐ, वेद) के समान अक्षयपुरुष श्रीराम के रथ के अश्व तीक्ष्ण शरों के समूह के समान दिखे। रावण ने ऐसा उनको शरों से ढककर प्रत्यक्ष स्तुति के परे रहनेवाले मातलि के वज्र-सम वक्ष पर बारह शर गड़ा दिये। ३७१६

नील्निऱ् निरुदर्को नॅय्द नीदियिन्
शाल्बुडै मादलि मार्बिऱ् ऱैत्तन
कोलिनु मिलक्कुवन् कोल मार्बिन्वीळ्
वेलिनुम् वॅम्मैये विळैन्द वीरर्कु 3717

नील् निऱ्-काले रंग के; निरुतर् कोत्-राक्षसराज ने; अॅय्त-जो चलाया; इलक्कुवन् कोल मार्पिन्-लक्ष्मण के सुन्दर वक्ष पर; वीळ्-और जो गिरा; वेलिनुम्-उस सांग के समान; नीतियिन् चाल्पु उटै-नीति में भरे; मातलि मार्पिल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॆत्तत्त–मातलि की छाती में लगे; कोलित्तुम्–शरों ने भी; वीरऩ्कु–श्रीवीरराघव को; वॆम्मॆये विळैन्त–ताप दिया। ३७१७

तब श्रीराम के मन को उन रावण-प्रेरित और मातलि पर लगे शरों ने लक्ष्मण के सुन्दर वक्ष पर लगे रावण के साँग से भी अधिक साल दिया। ३७१७

मण्डिल् वरिशिलै वाऩ विल्लॊडु
तुण्डवॆण् पिऱैयॆऩत् तोऩ्ऱत् तूविय
उण्डैवॆङ् गडुङ्गणै यॊरुङ्गु मूडलाल्
कण्डिल रिरामऩै यिमैप्पिल् कण्णिऩार् 3718

मण्टिल वरि चिलै–मंडलाकार व सबंध धनु; वाऩ विल्लॊटु–इंद्रधनुष और; तुण्ट–चिरे; वॆण् पिऱै ऍऩ–श्वेत चंद्र के समान; तोऩ्ऱ–बिखकर; तूविय–जो चलाए गये; उण्टै–राशि के; वॆम् कटुम् कणै–भयंकर व तेज बाणों के; ऒरुङ्कु–एक साथ; मूटलाल्–आच्छादित करने से; इमैप्पिल् कण्णिनार्–अपलक देवों ने; कण्टिलर्–उन्हें देखा नहीं। ३७१८

रावण ने धनु को मंडलाकार और अर्धचंद्र-सम झुकाकर धड़ाधड़ जो शर चलाये, उन तापक व तीक्ष्ण शरों की राशियों ने श्रीराम को आच्छादित कर दिया तो अपलक देव भी उन्हें देख नहीं सके। ३७१८

तोऱ्ऱऩ ऩॆयिऩि यॆऩ्ऩुन् दोऱ्ऱत्ताल्
आऱ्ऱल्शा लमररु मच्च मॆय्दिऩार्
वेऱ्ऱव रार्त्तऩर् मेलुङ् गीऴुमाय्क्
कार्ऱियक् कऱ्ऱदु कलङ्गिऱ् ऱण्डमे 3719

आऱ्ऱल् चाल्–बलसंयुक्त; अमररुम्–देव; इऩि–अब; तोऱ्ऱऩऩे–हार गये तो; ऍऩ्ऩुम् तोऱ्ऱत्ताल्–ऐसे दृश्य से; अच्चम् ऍय्तिऩार्–डर गये; वेऱ्ऱवर्–शत्रुओं ने; आर्त्तऩर्–नर्दन किया; काऱ्ऱ–पवन; मेलुम् कीऴुमाय्–ऊपर और नीचे; इयक्कु अऱ्ऱतु–चलना बंद हुआ; अण्टम्–अण्ड; कलङ्किऱ्ऱ–क्षुब्ध हो गया। ३७१९

देव भी यह सोचकर डर गये कि श्रीराम अब हारे! शत्रुओं ने आनंद-नर्दन किया। पर पवन अचल हुआ और अण्ड अस्त-व्यस्त हुआ। ३७१९

अङ्गियुन् दऩ्ऩॊळि यडङ्गिऱ् ऱार्हलि
पॊङ्गिल तिमिर्त्तऩ विशुम्बिऱ् पोक्किल
वॆङ्गदिर् तण्कदिर् विलङ्गि मीण्डऩ
मङ्गुलुम् ऩॆडमऴै वऱ्ऱुदु शायऩ्ददाल 3720

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अङ्कियुम्–अग्नि भी; तन् ऑळि–अपनी ज्योति से; अटङ्किऱु–हीन हुई; आर् कलि–समुद्र; पॊङ्किल–नहीं उमँगे; तिमिर्त्तत–भ्रमित रहे; वॆम् कतिर्–गरम सूर्य भी; तण् कतिर्–शीतल-किरण (चंद्र) भी; विचुम्पिल् पोक्किल–आकाश में संचरण खोकर; विलङ्कि–हटे और; मीण्टन–लौटे; मङ्कुलुम्–मेघ भी; नॆटु मऴै–अधिक वर्षा से; वऱन्तु पोय्–सूखकर; चाय्न्ततु–शुष्क हो गये। ३७२०

अग्नि कांतिहीन हो गयी। समुद्र नीरव होकर भ्रमित रहे। उष्ण-किरण तथा शीतल-किरण दोनों मार्ग से हटे और लौटे। मेघ भी जलशुष्क हो रहे। ३७२०

तिशैनिलै कडहरि शॆरुक्कुच् चिन्दिन
अशैविल वेलैह ळार्क्क वऱ्जिन
विशैहॊडु विशाहत्तै नॆरुक्कि येऱिनन्
कुशनॆन मेरुवुङ् गुलुक्क मुऱ्ऱदे 3721

कुचन्–अंगारक; विचै कॊटु–तेजी के साथ; विचाकत्तै नॆरुक्कि–विशाखा नक्षत्र पर आक्रमण करके; एऱिनन्–चढ़ गया; ऎन–इसलिए; तिचै निलै–दिशाओं में स्थित; कट करि–मत्त गजों ने; चॆरुक्कु चिन्तिन–दंभ छोड़ दिया; वेलैकळ्–समुद्र; अचैवु इल–न हिले; आर्क्क अञ्चित–गरजने से डरे; मेरुवुम्–मेरु भी; कुलुक्कम् उऱ्ऱतु–कंपन पा गया। ३७२१

('आक्रम्य अंगारकः तस्थौ विशाखामंबरे') अंगारक विशाखा पर आक्रमण करके उस पर चढ़ गया। दिग्गज सत्त्वहीन हो गये। समुद्र हिलना छोड़कर गरजने से डरे। अचल मेरु भी चंचल हो गया। ३७२१

वानरत् तलैवनु मिळैय मैन्दनुम्
एनैयत् तलैवनैक् काणगि लेमॆनक्
कानहक् करियॆनक् कलङ्गि नार्कडल्
मीनॆनक् कलङ्गिनार् वीरर् वेऱुळार् 3722

वानरर् तलैवनुम्–वानरपति और; इळैय मैन्तनुम्–लघुवीर; एनै–और अन्य; अ तलैवनै–उन नायक (श्रीराम) को; काण्किलेम्–देख नहीं सके; ऎन–कहकर; कानकम् करि ऎन–जंगली हाथी के समान; कलङ्किनार्–व्यग्र हुए; वेऱुळार् वीरर्–अन्य वीर; मीन् ऎन–(सेतुबंधन के समय की) मछलियों के समान; कलङ्किनार्–क्षुब्ध हुए। ३७२२

वानरपति, लघुराज और अन्य वीर श्रीराम को न देख सककर जंगली हाथी के समान कांप उठे। अन्य वीर (सेतुबंधन के अवसर पर जैसी) मछलियों के समान छटपटाये। ३७२२

ऎय्दन शरमॆला मिमैप्पिन् मुन्दुऱक्
कॊयदन नहऱ्ऱिवॆङ् गोलिन् कोवैयाल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नॊय्दॆऩ बरक्कऩै नॆरुङ्ग नॊन्दऩ
शॆय्दऩ निराहवऩ् तेवर् तेऱिऩार् 3723

ऍय्तऩ-(रावण-) प्रेरित; चरम् ऍलाम्-सभी बाणों को; इमैप्पिऩ् मुनुतुऱ्-पल भर के समय के अंदर ही; वॆम् कोलिऩ् कोवॆयाल्-तापक शरराशि से; कॊय्तऩऩ् अकऱ्ऱि-काटकर दूर करके; इराकवऩ्-श्रीराघव ने; नॊय्तॆऩ अरक्कऩै-(लंकेश) राक्षस को; नॆरुङ्क-लगकर; नॊन्तऩ चॆय्तऩऩ्-दुःख दे ऐसा कर दिया; तेवर्-देव; तेऱिऩार्-आश्वस्त हुए। ३७२३

श्रीराम ने सभी रावणप्रेरित कठोर शरों को काटकर दूर कर दिया। और लंकेश को क्षुब्ध करा दिया। ३७२३

तूणुडै निरैपुरै करमवै तॊऱुमक्
कोणुडै मलैनिहर् शिलैयिडै कुऱैयच्
चेणुडै निहर्कणै शिदऱिऩ नुणर्वॊ
डूणुडै युयिर्तॊऱु मुऱैवुऱु मॊरुवऩ् 3724

उणर्वॊटु-ज्ञान के साथ; ऊण् उटै-उनको (ज्ञान) भोग का विषय माननेवाले; उयिर् तॊऱुम्-ज्ञानी जीवों में; उऱैवुऱुम्-जो "आत्मा ही" बनकर रहते हैं; ऒरुवऩ्-उन अप्रतिम श्रीराम ने; तूण् उटै निरै पुरै-खंभों की पंक्ति के समान; करम् अवै तॊऱुम्-हाथ-हाथ में; अ-वह; कोण् उटै-वक्र सिरवाले; मलै निकर् चिलै-पर्वत-सम धनु; इटै कुऱैय-बीच से टूट जाए ऐसा; चेण् उटै-दूरगामी; निकर् कणै-उज्ज्वल अस्त्रों को; चितऱिऩऩ्-बिखेर (-सा) दिया। ३७२४

ज्ञान भोग्य (ज्ञानगम्य) श्रीराम ने दूरगामी उज्ज्वल अस्त्र छोड़े और रावण के खंभों-सम हाथों में धृत वक्रशीर्ष तथा पर्वतोपम धनु बीच से कट गये। ३७२४

पडैयुह विमैयवर् परुवरल् कॆडवन्
दिडैयुऱु तिशैतिशै यिऱुकुऱ् विऱैवऩ्
अडैयुऱु कॊडिमिशै यणुहिऩ नळविल्
कडैयुह मुडिकॆऴु कडल्पुरै कलुऴऩ् 3725

युकम् कटै-युगांत में; मुटि कॆऴु-उमँगकर बढ़नेवाले; अळविल् कटल् पुरै-अपार समुद्र-सम; कलुऴऩ्-गरुड़; पटै उक-(रावण के) हथियारों (धनुओं) के कटते; इमैयवर् परुवरल् कॆट-देवों का दुःख दूर करते हुए; वऩ्तु-आकर; इटै उऱु-विशाल; तिचै तिचै इऱुकुऱ्-दिशाओं को स्थिर करते हुए; इऱैवऩ्-ईश्वर श्रीराम को; अटै उऱु-(रथ पर) बनी; कॊटि मिचै-ध्वजा पर; अणुकिऩऩ्-आ बैठ गया। ३७२५

जब उसके धनु कटे तब युगांत के उमग आते समुद्र के समान रहनेवाला बड़ा गरुड श्रीराम के रथ पर लगी पताका पर आकर बैठ गया,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जिससे देवों का दुःख दूर हो गया और सारी दिशाएँ स्थिरता को प्राप्त हुईं। ३७२५

कयिल्विरि वऱवरु कवशमु मुरुविप्
पयिल्विरि कुरुदिहळ् परुहिड वॆयिलॊ
डयिल्विरि शुडुहणै कडवित्त नऱिवित्
तुयिल्वुऴि युणर्दरु शुडरॊळि यॊरुवत् 3726

तुयिल्वुऴि–(योग-) निद्रा करते-करते; अऱिवित्–अपने ज्ञान द्वारा; उणर् तरु–(सब) समझनेवाले; चुटर् ऒळि–उज्ज्वल ज्योति; ऒरुवत्–अद्वितीय श्रीराम ने; कयिल् विरिवु अऱ वरु–संधियाँ जिसकी टूटी नहीं है उस; कवचमुम्–कवच को; उरुवि–भेदकर; पयिल् विरि कुरुतिकळ्–(शरीर में) व्याप्त अधिक रक्त को; परुकिट–पीनेवाले; वॆयिलोटु–प्रकाश के साथ; अयिल् विरि–तीक्ष्णता जिनमें खूब थी; चुटु कणै–जलानेवाले शरों को; कटवित्तत्–चलाया। ३७२६

योगनिद्रा में रहते हुए सारी बातों को जाननेवाले श्रीराम ने ऐसे प्रकाशमय और तीक्ष्ण शर चलाये जो सुदृढ़ संधिबद्ध कवच को भेदकर शरीर में पुष्कल रूप से व्याप्त रक्त पी सकें। ३७२६

तिशैयुऱु तुहिलदु शॆऱिमळै शिदऱुम्
विशैयुऱु मुहिऴदु विरितरु शिरनॊ
डिशैयुऱु करुवियि तिनिदुऱै कॊडियैत्
तशैयुऱु कणैकॊडु तरैयुऱ विडलुम् 3727

तिचै उऱु–दिशा में लगे; तुकिलतु–वस्त्र वाले; चॆऱि–घने; मळै चितऱुम्–वर्षा को बिखेरनेवाले; विचै उऱु–सवेग; मुकिऴतु–कली-से अंगवाले; बिरि तरु–विशाल; चिरनॊटु–सिर के साथ; इचै उऱु करुवियित्–संगीतोत्पादक बाजा (वीणा); इनितु उऱै–जिसमें मनोरम रूप से रहती है; कॊटियै–उस ध्वजा को; तचै उऱु–मांसयुक्त; कणै कॊटु–शर से; तरै उऱ विटलुम्–धरा में जब गिराया तब। ३७२७

श्रीराम ने रावण की पताका को मांसलिप्त शर चलाकर काटा और भूमि पर गिरा दिया; जिस पताका में वह संगीतोत्पादक वीणा थी, जो दिग्वसना थी, जिसका कली-सा भाग वर्षा-सा बिखेरनेवाला था और जिसका सिर बड़ा था। ३७२७

पण्णव नुयर्कॊडि यॆनवॊरु परवैक्
कण्णह नुलहिनै वलम्वरु कलुऴत्
नण्णलु मिमैयवर् नमदुऱु करुमम्
ऍण्णल मुनिवित्त निवऱित्त नॆनवै 3728

ऒरु–अनुपम; परवै–समुद्रवसना; कण्णकत् उलकिनै–विशाल पृथ्वी को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वलम् वरु कलुळत्-दायीं ओर से घूम आनेवाला गरुड़; पण्णवन्-भगवान श्रीराम की; उयर् कोटि ऍत्त-उत्कृष्ट ध्वजा को चाहकर; नण्णलुम्-आया तब; इमैयवर्-देव; नमतु उरु करुमम्-हमारा करने योग्य काम; इत्ति ऍण्णलम्-अब नहीं सोचेंगे; मुत्तिविलत्-(गरुड़) क्रुद्ध होकर; इवरित्तत्-चढ़ गया (ध्वजा पर); ऍत्त-बोले तब। ३७२८

और समुद्र-मेखला पृथ्वी की परिक्रमा करके आनेवाला गरुड़ भगवान की पताका को उत्तम समझकर उस पर आकर बैठा। तब देवों ने विश्वास कर लिया कि अब हम, क्या करना है, यह नहीं सोचेंगे (क्योंकि आवश्यकता नहीं है)। क्योंकि गरुड़ क्रुद्ध होकर श्रीराम के रथ पर चढ़ बैठा है। ३७२८

आयदो रमैदियि नरिविनि नरिवान्
नायह नॊरुवनै नलिहिल दुणर्वान्
एयित्त निरुळुरु शरमळै यॆनुमत्
तीविनै तरुपडै तॆरुतॊळिन् मरुवोन् 3729

आयतु ओर् अमैतियिन्-वैसे एक समय में; तॆरु तॊळिल् मरुवोन्-संहारक कार्य की चाह करके पाप करनेवाला रावण; अरिविनित्त् अरिवान्-ज्ञानगम्य; ऒरुवनै-अद्वितीय; नायकन्-जगन्नाथ श्रीराम का; नलिकिलतु-अपने शर का कुछ कर न सकना; उणर्वान्-जानकर; इरुळ् उरु-अंधकारकारी; चरम् मळै ऍनुम्-शर-वर्षा के; अ तीविनै तरु पटै-उस हानिकारक अस्त्र को; एयित्तन्-प्रेषित किया। ३७२९

उस समय मारक कार्य पर तुले पापी रावण ने देखा कि मेरे बाण ज्ञानगम्य आदिदेव का कुछ अहित नहीं करते। तो उसने तामसास्त्र नामक अस्त्र प्रेरित किया जो शर-वर्षा-सी करके बड़े घातक कार्य करनेवाला था। ३७२९

तीमुह मुडैयन शिलमुह मुदिरन्, दोय्मुह मुडैयन शुरर्मुह मुडैय
पेय्मुह मुडैय पिलमुह नुळैयुम्, वाय्मुहम् वरियर वनैयन वरुव 3730

चिल मुकम्-कुछ के मुख (फल); ती मुकम्-अग्नि के मुखों के; उडैयन-रखने-वाले; उतिरम् तोय्-रक्तरंजित; मुकम् उडैयन्-मुखोंवाले (कुछ); चुरर् मुकम् उडैय-देवों के मुखों के; पेय् मुकम् उडैयन-पिशाचमुखी; पिलम् मुकम्-बिल के द्वार पर; नुळैयुम्-घुसनेवाले; वाय् मुखम्-मुख के साथ के आननों के साथ; वरि अरवु-लकीरों वाले सर्पों; अनैयन-के समान; वरुवन-आनेवाले। ३७३०

उससे उत्पन्न हो जो बढ़े उनमें अग्निमुखी, रक्तमुखी, देवमुखी, पिशाचमुखी और बिल-प्रवेशक-सर्पमुखी थे। वे बढ़ते गये। ३७३०

ऒरुतिशै मुदल्कडै यॊरुतिशै यळवुम्
इरुतिशै यॆयिरुर वरुवन पॆरिय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करुदिय करुदिय पुरिवन कनलुम्
परुदियै मदियोडु परुहुव पहळि 3731

पकळि–वे शर; ऒरु तिचै मुतल्–एक दिशा से; कटै ऒरु तिचै अळवुम्–विपरीत दिशा के अंत तक; इरु तिचै–दोनों दिशाओं में; ऎयिऱु उऱ–दाँतों को गड़ाकर; वरुवन–आनेवाले हैं; पॆरिय–बहुत बड़े हैं; करुतिय करुतिय पुरिवन–(प्रेरक) जो चाहता वही करनेवाले हैं; कनलुम्–जलानेवाले; परुतियै–सूर्य को; मतियोटु–चंद्र के साथ; परुकुव–पी सकनेवाले। ३७३१

वे एक दिशा से दूसरे दिगंत तक दोनों बाजुओं की दिशाओं में अपने विषदंतों को लगाते हुए आ रहे थे। बहुत बड़े-बड़े थे। रावण के सोचे कार्य को पूर्ण करनेवाले थे। जलानेवाले सूर्य और चंद्र को पी सकनेवाले थे। ३७३१

इरुळॊरु तिशैयॊरु तिशैवॆयिल् विरियुम्
शुरुळॊरु तिशैयॊरु तिशैमळै तॊडरुम्
उरुळॊरु तिशैयॊरु तिशैयुरु मुरलुम्
मरुळॊरु तिशैयॊरु तिशैशिलै वरुडम् 3732

ऒरु तिचै इरुळ्–एक दिशा में अंधकार; ऒरु तिचै–दूसरी दिशा में; वॆयिल् विरियुम्–धूप फैलती; ऒरु तिचै चुरुळ्–एक दिशा में बवंडर; ऒरु तिचै मळै तॊडरुम्–दूसरी दिशा में वर्षा होती; ऒरु तिचै उरुळ्–एक दिशा में चक्र; ऒरु तिचै–एक दूसरी दिशा में वज्र; मुरलुम्–नाद करता; ऒरु तिचै मरुळ्–एक दिशा में भ्रम; ऒरु तिचै–दूसरी दिशा में; शिलै वरुटम्–पत्थर की वर्षा होती। ३७३२

और भी वे एक दिशा में अंधकार और दूसरी दिशा में धूप फैला सकनेवाले; एक दिशा में बवंडर और दूसरी दिशा में वर्षा करनेवाले थे। उनके कारण एक ओर चक्र चलते और दूसरी ओर वज्र गिरते। एक दिशा में माया फैलती और दूसरी दिशा में पत्थर की वर्षा होती। ३७३२

इनैयन निहळ्वुऱ वॆळुवहै युलहुम्
कनैयिरुळ् कदुविड वमरर्हळ् कदऱ
विनैयुरु तॊळिलिडै विरवलुम् विमलन्
निनैवुरु तहैमैयि नॆऱियुरु मुऱैयिन् 3733

इनैयन–ऐसी बातें; निकळ्वु उऱ–जब होती रहीं; कनै इरुळ्–घने अंधकार के; ऎळुवकै उलकुम्–सातों प्रकार के लोकों को; कतुविट–आच्छादित करते; अमरर्कळ् कतऱ–देवों के चिल्लाते; विनै उऱ–पाप से उत्पन्न-से; तॊळिल् इटै–कार्य में; विरवलुम्–संसार का फँसना; विमलन्–विमल श्रीराम के; नॆऱि उऱ मुऱैयिन्–सीधे मार्ग में; निनैवुऱम् तकैमैयिन्–सोचने के अच्छे गुण के कारण। ३७३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब ये सब होते रहे, और घना अंधकार सातों लोकों को आच्छादित कर गया, देव चिल्ला उठे और भुवन पापकर्म में फँस गया जैसा रहा, तब विमलमूर्ति श्रीराम ने, जो सद्धर्मचित्त थे, । ३७३३

कण्णुद लॊरुवऩ दडुपडै करुदिप्
पण्णवऩ् विडुदलु मदुनऩि परुह
ऎण्णुऱु कऩविऩॊ डुणर्वॆऩ विमैयिल्
तुण्णॆऩु निलैयिऩि ऩॆऱिपडै ऩॊलैय 3734

कण्णुतल् ऒरुवततु–ललाटनेत्र उत्तम भगवान के; अटुपटै–संहारक अस्त्र को; करुति–परख लेकर; पण्णवऩ्–भगवान श्रीराम के; विटुतलुम्–छोड़ते ही; अतु–उस शर ने; नति परुक–(अंधकारकारी तामसास्त्र को) खूब पी लिया; ऎण्णुऱु–चिंत्य; कऩविऩोटु उणर्वु ऎऩ–स्वप्न के साथ-साथ जागरण के समान; इमैयिल्–पल भर में; तुण्णॆऩु निलैयिऩिल्–सभी की भयभीत दिशा में; ऎऱि पटै ऩॊलैय–प्रेरित (तामस्-) अस्त्र के मिटते । ३७३४

सोचकर भालनेत्र शिव का पाशुपतास्त्र छोड़ा । तो उसने तामसास्त्र को सोख दिया । रावण ने देखा कि उसका चलाया अस्त्र एक क्षण में जागने पर स्वप्न जैसे मिट जाता है वैसे सबको भय में डालते हुए नष्ट हो गया । ३७३४

विरिन्द तऩ्पडै मॆय्कण्ड पॊय्यॆऩ वीय्न्द
ऎरिन्द कण्णिऩ ऩॆयिऱ्ऱिडै मडित्तवा यिऩन्दऩ्
ऩॆरिन्द वॆङ्गणै कङ्गवॆञ् जिऱैयऩ्ऩ तिऱत्ताऩ्
अरिन्द मऩ्तिरु मेऩिमे लऴुत्तिनिऩ् ऱार्त्ताऩ् 3735

विरिन्त–विस्तृत; तऩ् पटै–उसका तामसास्त्र; मॆय् कण्ट–सत्य देखकर; पॊय् ऎऩ–असत्य के समान; वीय्न्त–मिटा तो; ऎरिन्त कण्णिऩऩ्–जलती आँखों वाले; ऎयिऱु इटै–दाँतों के मध्य; मटित्त वायिऩऩ्–दबाये हुए अधरों वाले ने; वॆम् कङ्कम्–भयंकर बाज के; चिऱै अऩ्ऩ–बँधे से; ऩॆरिन्त–चुने हुए; तऩ्–अपने; वॆम् कणै–क्रूर अस्त्रों को; तिऱत्ताऩ्–ज़ोर से; अरिन्तमऩ्–अरिंदम (श्रीराम) के; तिरु मेऩि मेल्–श्रीशरीर में; अऴुत्ति निऩ्ऱु–गड़ाकर; आर्त्ताऩ्–नर्तन किया । ३७३५

अपने अस्त्र को सत्य के सामने की मिथ्या के समान मिटते देखकर अग्निवर्षक आँखों वाले रावण ने दाँतों के मध्य अधरों को दबाते हुए चुने हुए, कंकपक्ष अस्त्रों को ज़ोर से अरिंदम श्रीराम के श्रीशरीर में गड़ा दिया । ३७३५

आर्त्तु वॆञ्जिऩत् ताशुरप् पडैक्कल ममरर्
वार्त्तै युण्डविऩ् ऩुयिर्हळाऩ् मऱलितऩ् वयिऱ्ऱैत्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तूर्त्त दिन्दिरन् तुणुक्कुऱु तॊऴिलदु तॊडुत्तुत्
तीर्त्तन् मेल्वरत् तुरन्दन ऩुलहॆलान् दॆरिय 3736

आर्त्तु–भीमनाद करके; अमरर् बार्त्तै उण्टतु–देवों के यश को जिसने खा लिया था; इऩ् उयिर्कळाल्–मधुर जीवों से; मऱलि तऩ् वयिऱ्ऱै–यम के पेट को; तूर्त्ततु–जिसने भरा था; इन्तिरन्–इंद्र को; तुणुक्कुऱु–ठिठकानेवाला; तॊऴिलतु–कार्य जो करता था; वॆम् चिनत्तु–(उस) भयंकर क्रोधी; आचुरर् पटैक्कलम्–असुरास्त्र को; उलकु ऍलाम् तॆरिय–सभी लोकों की दृष्टि के सामने; तीर्त्तऩ् मेल् वर–तीर्थ श्रीराम पर लगे ऐसा; तुरन्तऩ्–चलाया। ३७३६

फिर रावण ने बड़े हुंकार के साथ तीर्थ श्रीराम पर बहुत प्रचंड आसुरास्त्र छोड़ा जो देवयशभक्षी था, जिसने यम के पेट को जीवों से भर दिया था और जिसने देवेंद्र को भयातुर कर दिया था। ३७३६

आशु रप्पॆरुम् बडैक्कल ममररै यमरिऩ्
एशु विप्पदॆव् वुलहमु मॆवरैयुम् वॆऩ्ऱु
वीशु वॆऱ्पिऱत् तुरन्दवॆङ् गणैयदु विशैयिऩ्
पूशु रर्क्कॊरु कडवुण्मेऱ् चॆऩ्ऱदु पोलाम् 3737

अमररै–देवों को; अमरिऩ्–युद्ध में; एचुविप्पतु–अपयश दिलानेवाला; ऍ उलकमुम्–सभी लोकों में; ऍवरैयुम् वॆऩ्ऱु–चाहे कोई हो उसे जीतकर; वीचु–फेंके गये; वॆऱ्पु–पर्वतों को; इऱ–तोड़ते हुए; तुरन्त–चलाया गया; विचैयिऩ्–वेगवान; वॆम्–भयंकर; कणैयतु–अस्त्र; आचुरर् पॆरुम् पटैक्कलम्–आसुरास्त्र; पूचुरर्क्कु–भूसुरों के; ऒरु–अकेले; कटवुळ् मेल्–(आराध्य-) देवता पर; चॆऩ्ऱतु–गया। ३७३७

देवनिंदाक्षयी, सर्वलोकविजयी वह शर उस पर फेंके गये सभी पर्वतों को भेदता हुआ आ रहा था। उसके कई भयंकर उपास्त्र थे। वह बड़ा भयंकर अस्त्र भूसुरों के पूज्य अद्वितीय भगवान श्रीराम पर जा रहा था। ३७३७

नुङ्गु हिऩ्ऱदिव् वुलहैयोर् नॊडिवर यॆऩ्ऩ
ऍङ्गु निऩ्ऱुनिऩ् ऱलमरु ममरर्हण् डिरैप्प
मङ्गुल् वल्लुरु मेऱ्ऱिऩ्मे लॆरिमडुत् तॆऩ्ऩ
अङ्गि तऩ्ऩॆडुम् बडैतॊडुत् तिराहव नऱुत्ताऩ् 3738

इ उलकै–इस लोक को; ओर् नॊटि वरै–एक पल में; नुङ्कुकिऩ्ऱतु ऍऩ्ऩ–निगलता है ऐसा कहकर; ऍङ्कुम्–सब ओर; निऩ्ऱु निऩ्ऱु–खड़े-खड़े रहकर; अलमरुम्–भ्रांत; अमरर्–देवों के; कण्टु–देखकर; इरैप्प–आनंदरव उठाते; मङ्कुल–मेघमध्य; वल्–कठोर; उरुम् एऱ्ऱिऩ् मेल्–अशनिराज पर; ऍरि मटुत्तॆऩ्ऩ–आग लगा दी गयी हो ऐसा; अङ्कि तऩ्–अग्नि के; नॆटु–लंबे; पटै तॊटुत्तु–अस्त्र चलाकर; इराकवऩ् अऱुत्ताऩ्–श्रीराघव ने काट दिया। ३७३८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसको देखकर देववृन्द सब ओर खड़े होकर इस डर से चिल्लाने लगे थे कि देखो यह लोक को एक पल में खा डालता है। तब श्रीराघव ने, मेघ के अशनिराज पर अग्नि डाल दी गयी हो ऐसा उस पर आग्नेयास्त्र चलाकर उसे विफल कर दिया। अब देवों ने खुश होकर उच्चनाद किया। ३७३८

कूऱ्ऱुक् कोडिऩुङ् गोडल कडलॅलाङ् गुडिप्प
नीऱ्ऱुक् कुप्पैयिऩ् मेरुवै नूऱुव नॅडिय
काऱ्ऱुप् पिऩ्शॅलच् चल्वऩ वुलहॅलाङ् गडप्प
नूऱ्ऱुक् कोडियम् बॅय्दऩ ऩिरावण ऩॊडियिल् 3739

कूऱ्ऱु-यम (चाहे); कोटिऩुम्-डिग जाए; कोटल-जो चूकते नहीं; कटल् ऍलाम् कुटिप्प-जो सारे समुद्रों को पी सकें; मेरुवै-मेरु पर्वत को; नीऱु कुप्पैयिऩ्-धूलिराशि में; नूऱुव-तोड़कर बदलनेवाले; नॅटिय-लंबे; काऱ्ऱु पिऩ् चॅल-हवा को पीछे आने देकर; चॅल्वऩ-आगे जानेवाले; उलकॅलाम् कटप्प-सारे लोकों को लाँघनेवाले; नूऱु कोटि अम्पु-सहस्र कोटि शर; इरावणऩ्-रावण ने; ऩॊडियिल्-एक चुटकी की देर में; ऍय्तऩऩ्-चलाये। ३७३९

तब रावण ने एक पल में सौ करोड़ ऐसे बाण चलाये जो यम के चूक जाने की दशा में भी चूकते नहीं थे; जो सारे सागर-जल को सोख सकते थे; जो मेरु को चूर-चूर कर सकते थे; जो लंबे थे; जो पवन से भी तेज़ जाते और जो सारे लोकों को लाँघ सकते थे। ३७३९

ऍऩ्ऩ कॅक्कडुप् पोवॅऩ्बर् शिलर्शिल रिवैयुम्
अऩ्ऩ मायमे यम्बल वॅऩ्बरव् वम्बुक्
किऩ्ऩ मुण्डुहॊ लिडमॅऩ्बर् शिलर्शिल रिहर्पोर्
मुऩ्ऩ मित्तऩै मुयऩ्ऱिल ऩामॅऩ्बर् मुऩिवर् 3740

मुऩिवर् चिलर्-कुछ मुनिगण; ऍऩ्ऩ कै कटुप्पो-क्या ही हस्त-लाघव; ऍऩ्पर्-कहते; चिलर्-कुछ; इवैयुम्-ये भी; अऩ्ऩ मायमे-वैसी ही माया है; अम्पु अल-बाण नहीं; ऍऩ्पर्-कहते; चिलर्-कुछ; अव् अम्पुकट्कु-उन शरों के लिए; इऩ्ऩम् इटम्-और स्थान; उण्टु कॊल्-है क्या; ऍऩ्पर्-कहते; चिलर्-कुछ लोग; मुऩ्ऩम्-पहले; इकल् पोर्-विरोध के किसी युद्ध में; इत्तऩै-इतना; मुयऩ्ऱिलऩ् आम्-प्रयत्न नहीं किया है; ऍऩ्पर्-कहते। ३७४०

यह रावण-शर की तेज़ी देखकर कुछ मुनिवरों ने विस्मय किया कि यह क्या हस्तलाघव है? कुछ मुनियों ने विश्वास के साथ कहा कि ये माया हैं अस्त्र ही नहीं! कुछ लोगों ने प्रश्न किया कि क्या आज भी ऐसे अस्त्रों के लिए स्थान है? कुछ लोगों ने विचार व्यक्त किया कि इसके पूर्व रावण ने किसी भी युद्ध में इतना प्रयत्न नहीं किया था। ३७४०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱैमु दऱ्ऱनि नायहन् वानिनै मऱैत्त
शिऱैयु डैक्कॊडुञ् जरमॆला मिमैप्पॊऩ्ऱिऱ् ऱिरियप्
पॊऱैशि हैप्पॆरुन् दलैनिन्ऱुम् पुङ्गत्ति ऩळवुम्
पिऱैमु हक्कडु वॆञ्जर भवैहॊण्डु पिळन्दाऩ् 3741

मऱै मुतल्–वेदादि; तनि नायकन्–अद्वितीय स्वामी ने; वानिनै मऱैत्त–आकाश को ढँकनेवाले; चिऱै उटै–पक्षसहित; कॊटु चरम् ऎलाम्–क्रूर सभी शरों को; इमैप्पु ऒऩ्ऱिल्–एक पल में; तिरिय–विकृत करते हुए; पिऱैमुकम्–अर्धचन्द्र के; कटु–वेगवान; वॆम् चरम् अवै–भयंकर शरों को; कॊण्टु–लेकर; पॊऱै–भारी; चिक्कॆरु तलै निऩ्ऱुम्–चोटी-सह बड़े सिर से लेकर; पुङ्कत्तिऩ् अळवुम्–पुंख तक; पिळन्ताऩ्–चीर दिया। ३७४१

वेदहेतु आदिनायक श्रीराम ने आकाशगोपक पक्षों वाले सभी भयानक शरों को एक ही पल में कठोर अर्धचंद्र बाण छोड़कर सिर से पुंख तक चीरकर विफल कर दिया। ३७४१

अयऩ्प डैत्तपे रण्डत्ति ऩरुन्दव मार्ऱिप्
पयऩ्प डैत्तव रियारिऩुम् बडैत्तवन् पल्पोर्
वियऩ्प डैक्कलन् दॊडुप्पॆऩा ऩितियॆऩ विरैन्दाऩ्
मयऩ्प डैक्कलन् दुरन्दऩऩ् तयरदऩ् महऩ्मेल् 3742

अयऩ् पटैत्त–अज-सृष्ट; पेर् अण्टत्तिऩ्–बड़े अण्ड में; अरु तवम् आऱ्ऱि–असाध्य तपस्या करके; पयऩ् पटैत्तवर्–जिन्होंने सुफल पाया; यारिऩुम्–उनमें किसी से भी; पटैत्तवऩ्–अधिक फल जिसने पाया या उस रावण ने; इऩि–अब; पल् पोर्–अनेक युद्धों में प्रयुक्त; वियऩ् पटै कलम्–गौरवमय अस्त्र को; नाऩ् तॊटुप्पॆऩ्–मैं चलाऊँगा; ऎऩ–कहकर; विरैन्ताऩ्–जल्दी करके; तयरतऩ् मकऩ् मेल्–दशरथ के पुत्र पर; मयऩ् पटै कलम्–मयास्त्र को; तुरन्तऩाऩ्–चलाया। ३७४२

ब्रह्मरचित अंड भर में जिन लोगों ने तपस्या करके फल प्राप्त किया था, उनमें रावण ने सबसे अधिक फल प्राप्त किया था। उस रावण ने निश्चय किया कि अब अनेक युद्धों में प्रयुक्त बड़े ही गौरवमय बाण का प्रयोग करूँगा। उसने शीघ्रता से दशरथ-सुत पर मयास्त्र चलाया। (यहाँ दशरथ की याद करना इसलिए कि वैसे प्रतापी तथा लोकस्वामी के पुत्र की आज यह दयनीय स्थिति हो गयी। उस ओर संकेत किया जाय)। ३७४२

विट्ट ऩऩ्विड् पडैक्कलम् वेरॊडु मुलहैच्
चुट्ट ऩऩ्ऩॆऩ्त् तुणुक्कमुर् ऱमररुञ् जुरुण्डार्
कॆट्ट तम्मॆऩ वाऩरत् तलैवरुङ् गिळिन्दार्
शिट्टर् तऩ्दऩित् तेवऩु मदऩिलै तॆरिन्दाऩ् 3743

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विट्टतन्–प्रेरक के; विटु–प्रेरित; पटे कलम्–अस्त्र से; उलकै–लोक को; वेरोटु चुट्टतन्–जड़ के साथ जला दिया; ऍन–ऐसा; अमरसम्–देव भी; तुणुक्कम् उऱ्ऱु–भयभीत होकर; चुरुण्टार्–लोटे; कॅट्टतम्–मिटे हम; ऍन–ऐसा डरकर; वानरर् तलैवरुम्–वानरयूथप भी; किऴिन्तार्–अस्त-व्यस्त हो भागे; चिट्टर् तम्–शिष्ट लोगों के; तनि तेवतुम्–अकेले देवता श्रीराम ने भी; अतन् निलै–उसका स्वभाव; तॅरिन्तान्–जान लिया। ३७४३

'रावण-प्रेरित उस अस्त्र से उसने सारे लोकों को जला दिया।' देव यह सोचकर लोट गये। वानर वीर भी 'मरे हम' कहते हुए अस्त-व्यस्त भाग गये। शिष्टों के अद्वितीय देव श्रियःपति सीताराम जी ने उसका स्वभाव जान लिया। ३७४३

पान्दट् पः(ह्)ऱलैप् परन्दहन् पुवियिडैप् पयिलुम्
मान्दर्क् किल्लैयाल् वाऴ्वॅन वरुहिन्ऱ वदनैक्
कान्दर्प् पम्मॅनुङ् गडुङ्गॊडुङ् गणैयिनार् कडन्दान्
एन्दर् पन्मणि यॅऱुऴ्वलित् तिरळ्पुयत् तिरामन् 3744

पान्तळ्–(आदिशेष-) नाग के; पल् तलै–अनेक सिरों पर; परन्तु–फैलकर; अकल्–विस्तृत रहती; पुवि इटै–भूमि पर; पयिलुम्–रहनेवाले; मान्तर्क्कु–जीवों का; वाऴ्वु इल्लै–जीवन नहीं होगा; ऍन–ऐसा; वरुकिन्ऱ–जो आता था; अतनै–उस मयास्त्र को; एन्तल्––पर्वतोपम; पल् मणि–बहुरत्न; ऍऱुऴ्वलि–कठोर बलसंयुक्त; तिरळ्–पुष्ट; पुयत्तु इरामन्–भुजाओं वाले श्रीराम ने; कान्तर्प्पम् ऍन्तुम्–गांधर्वास्त्र नाम के; कटु–वेगवान; कॊटु–क्रूर; कणैयिनाल्–अस्त्र से; कटन्तान्–बेकार किया। ३७४४

'आदिशेषनाग के अनेक सिरों पर फैली भूमि में रहनेवाले जीवों (तथा श्रीराम) का जीवन अब समाप्त हो गया।' ऐसा लोगों के मन में भय उत्पन्न करते हुए आनेवाले उस शर को पर्वतोपम बहुरत्नाभरणभूषण-योग्य तथा पुष्ट कंधोंवाले श्रीराम ने गंधर्वास्त्र नाम के कठोर और तेज बाण चलाकर नष्ट कर दिया। ३७४४

पण्डु नान्मुहन् पडैत्ततु कनहनिप् पारैत्
तॊण्डु कॊण्डडु मदुवॅनु मवुणन्मुन् तॊट्ट
दुण्डिङ् गॅन्वयि नदुतुरन् दुयिरुण्बॅ नॅन्नात्
तण्डु कॊण्डॅऱिन् दानैन्दॊ डैन्दुडैत् तलैयान् 3745

पण्टु–पहले; नान्मुकन् पटैत्ततु–जो चतुर्मुख ब्रह्मा द्वारा रचा गया; कनकन्–हिरण्य ने; इ पारै–इस भूमि को; तॊण्टु कॊण्टतु–(जिससे) दास बना लिया था; मतु ऍन्तुम् अवुणन्–मधु नाम का राक्षस; मुन् तॊट्टतु–पहले जिसका प्रयोग करता था; इङ्कु–यहाँ; ऍन् वयित्–मेरे पास; उण्टु–(एक दंड) है; अतु तुरन्तु–उसको चलाकर; उयिर् उण्पॅन्–इसके प्राण खा (हर) लूंगा; ऍन्ना–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहकर; ऐन्तोटु ऐन्तुटै–पाँच और पाँच; तलैयान्–सिरों वाले (रावण) ने; तण्टु कोण्टु–दंड लेकर; ऍरिन्तान्–चलाया। ३७४५

रावण ने विचारा। 'मेरे पास वह चतुर्मुखसृष्ट गदा है जो हिरण्य के भूमि के वशीकरण में बड़ी सहायता दे चुकी थी और जो मधु द्वारा प्रयुक्त रहती थी। उसको चलाकर मैं श्रीराम के प्राणों को निकाल दूँगा।' ऐसा सोचकर दशग्रीव ने वह गदा चलायी। ३७४५

तारु हन्पण्डु तेवरैत् तहर्त्ततु तन्निमा
मेरु मन्दरम् पुरैवदु वॅयिलन्न वॉळिय
दोरु हन्दन्नि नुलहनिन् रुरुट्टिनु मुरुळाच्
चीरु हन्बदु मुहन्ददु वान्नवर् शिरङ्गळ् 3746

पण्टु पहले; तारुकन्–दारुक के; तेवरै तकर्त्ततु–देवों के हराने में सहायक जो रहा; तन्नि–अनुपम; मा–बड़े; मेरु मन्तरम् पुरैवतु–मेरु और मंदर पर्वत के समान जो रहता है; वॅयिल् अन्न–सूर्य के समान; ऑळियतु–प्रकाशमान; ओर् उकम् तन्निल्–एक युग तक; उलकम् निन्रु–सारे लोक मिलकर; उरुट्टिनुम्–लुढ़का दें तो भी; उरुळा–जो लुढ़क नहीं सकता; चीर् उकन्ततु–श्रेष्ठता के कारण प्रशंसित; वान्नवर्–देवों के; चिरङ्कळ्–सिरों को; मुकन्ततु–उठा लेनेवाला। ३७४६

वह गदा ऐसी थी जिससे दारुक ने देवों को त्रस्त किया था, जो मेरु या मंदर पर्वत के समान थी; सूर्य के समान उज्ज्वल थी और जो ऐसी शक्तिसंपन्न थी कि उसे सारे लोकों के मिलकर लुढ़काने का प्रयत्न करने पर भी वह लुढ़के नहीं। वह श्रेष्ठता के कारण प्रशंसित गदा देवों के सिरों के भी ग्राहक रही थी। ३७४६

पशुम्बु नर्पॅरुम् बरवैपण् डुण्डदु पन्निप्पुर्
रशुम्बु पाय्हिन्र दरुक्कन्नि नॉळिर्हिन्र दण्डम्
तशुम्बु पोलुडैन् दॉळियुमॅन्न् रन्नैवरुन् दळर
विशुम्बु पाळ्पड वन्बदु मन्दरम् वॅरुव 3747

पचु पुन्नल्–हरे जल के; पॅरु परवै–बड़े सागर को; पण्टु उण्टतु–पहले जिसने सोख लिया था; पन्निप्पु उरुरु–शीतलता-सहित; अचुम्पु पाय्किन्रतु–नमी से युक्त; अरुक्कन्निन्–सूर्य से भी अधिक; ऑळिर्किन्रतु–प्रकाश छिड़काने वाला वह दण्ड; अण्टम्–यह अंड; तचुम्पु पोल्–जलघट के समान; उटैन्तु ऑळियुम्–टूटकर मिटेगा; ऍन्रु–ऐसा; असैवरुम् तळर–सब अशक्त हो जायें ऐसा; विचुम्पु–आकाश; पाळ् पट–उजड़ जाय ऐसा; मन्तरम् वॅरुव–मंदर भी दहल उठे ऐसा; वन्ततु–आया। ३७४७

उसने कभी हरे (ताज़े) जल के समुद्र को सोख लिया था। उसमें नमी और शीतलता थी। सूर्य से भी उज्ज्वल थी। वह गदा इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मंदर पर्वत को भी भयभीत करते हुए आयी कि लोगों ने विचारा कि अब यह अंड जलघट के समान टूट जानेवाला है। ३७४७

कण्ड तामरैक् कण्णन्नक् कडवुण्माक् कदैदान्
अण्डर् नायह नायिरङ् गण्णिनु मडङ्गाप्
पुण्ड रीहत्तिन् मुहैयन्न पुहर्मुहम् विट्टान्
उण्डै नूऱुडै नूऱुपट् टुळदॅन्न वुदिर्त्तान् 3748

कण्ट–उसको देखकर; तामरै कण्णन्–कमलाक्ष ने; अ–उस; कटवुळ् मा कतै–उस दिव्य बड़ी गदा को; अण्टर् नायकन्–अण्डनायक इंद्र के; आयिरम् कण्णिनुम् अटङ्का–हजारों नेत्रों में भी न समानेवाले; नूऱु उण्टै उटै–सौ गोलों के साथ रहनेवाले; पुण्टरीकत्तिन् मुकै अन्न–कमल-कली-तुल्य; पुकर् मुकम्–तेजोमुख; विट्टान्–(अस्त्र) चलाकर; नूऱु पट्टु उळतु–सौ टुकड़े (पहले ही) हो गये थे; अॅन्न–ऐसा; उतिर्त्तान्–चूर कर दिया। ३७४८

कमलाक्ष ने उसे देखा। उन्होंने देवेंद्र की हज़ार दृष्टियों में भी न समा सकनेवाले हज़ार मृद्गोलों से जुड़ा हुआ कमल-कली-सा उज्ज्वल-मुख अस्त्र छोड़ा और उस दंडायुध को ऐसा चूर कर दिया कि लोगों को यह भ्रम पैदा हुआ कि क्या यह 'घड़ा' पहले ही सौ खंडों में फूटा था ?। ३७४८

तेय निन्ऱवन् शिलैवलङ् गाट्टिन्नान् तीराप्
पेयै यॅन्पल तुरप्पदिङ् गिवन्पिळै यामल्
आय तन्पॅरुम् बडैयॊडु मडुहळत् तविय
मायै यिन्पडै तॊडुप्पनॅन् ऱिरावणन् मदित्तान् 3749

तेय निन्ऱवन्–क्षय होने को जो था (उसने); चिलै वलम् काट्टिन्नान्–धनु-बल दिखाया है; तीरा–अवार्य; पेयै–पिशाच-सम; पल–अनेक अस्त्रों को; तुरप्पतु ऍन् पलन्–छोड़ने से क्या लाभ; इङ्कु–यहाँ; इवन्न–यह; पिळैयामल् आय–अचूक बने; तन् पॅरु पटैकलत्तोटुम्–अपने बड़े अस्त्रों के साथ; अटुकळत्तु–युद्ध के मैदान में; अविय–बुझ जाय ऐसा; मायैयिन् पटै–माया का अस्त्र; तॊटुप्पन्–चलाऊँगा; अॅन्ऱु–ऐसा; इरावणन् मतित्तान्–रावण ने ठाना। ३७४९

क्षयोन्मुख रावण ने विचारा— असाधारण धनु-दक्षता दिखानेवाले इस पर पिशाच-सम अनेक अस्त्रों को चलाने से क्या लाभ है जो इसे मार नहीं सकें। यह इसके अपने अमोघ अस्त्र-शस्त्रों के साथ इस युद्ध के मैदान में मिट जाय —ऐसा मैं अपना माया-अस्त्र छोड़ूँगा। ३७४९

पूशनॅत्तॊळिल् पुरिन्दुतान् मुऱैमैयिऱ् पोऱ्ऱुम्
ईशनॅत्तॊळु दिरुडियुञ् जन्दमु मॅण्णि
आशै पत्तिनु मन्दरप् परप्पिनु मडङ्गा
वीशिनन्शॅल विल्लिडैत् तॊडैहॊडु विट्टान् 3750

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूचनै तॊळिल्–पूजा-कर्म; पुरिन्दु–संपन्न करके; तान्–स्वयं; मुऱैमैयिल्–यथारीति; पोऱ्ऱुम्–जिनकी स्तुति करता था; ईचनै–ईश्वर की; तॊळुदु–वंदना करके; इरुटियुम् चन्तमुम् ऍण्णि–मंत्र के ऋषि और छंद का स्मरण करके; आचै पत्तितन्–दसों दिशाओं में; अन्तरम् परप्पिनुम्–अंतरिक्ष के विस्तार में; अटङ्का–समा नहीं सके ऐसा; चॆल–चलने; विल् इटै तॊटै कॊटु–धनु में संधान कर; वीचितन् विट्टान्–जोर से चलाया। ३७५०

उसने ऐसा निश्चय करके वह अस्त्र लिया। उसकी यथावत् पूजा की। फिर अपने इष्टदेव परमेश्वर की स्तुति की और उसके योग्य मंत्र के निर्माता ऋषि और उसके छंद का स्मरण कर धनु में संधान करके उसे चलाया जो ऐसा व्याप्त होकर चला कि लगता था कि दसों दिशाओं और आकाश के विस्तार में भी वह समा नहीं सके। ३७५०

मायै पॊत्तिय वयप्पडै विडुदलुम् वरम्बिल्
काय मॆत्ततै युळनॆडुङ् गायङ्गळ् कदुव
आय मुऱ्ऱॆळुन् दारॆन वार्त्ततन रमरिल्
तूय कॊऱ्ऱवर् शुडुशरत् तान्मुन्बु तुणिन्दार् 3751

मायै पॊत्तिय–मायापूर्ण; वयम् पटै–विजयदायी अस्त्र; विडुतलुम्–छोड़ने पर; तूय–पवित्र; कॊऱ्ऱवर्–प्रतापी श्रीराम और लक्ष्मण के; चुटु चरत्तान्–दाहक अस्त्रों से; मुन्बु–पहले; अमरिल्–युद्ध में; तुणिन्तार्–जो कट मरे उनके; वरम्पिल् कायम्–असंख्य शरीर; ऍत्ततै उळ–जितने हैं; मॆटु कायङ्कळ् कदुव–(वे सब) उसी आसमान को छूते हुए; आयम् उऱ्ऱु–(जीव) लाभ पाकर; ऍऴुन्तार् ऍन–उठे कहकर; आर्त्ततर्–शोर मचा उठे। ३७५१

माया-भरे विजयदायी अस्त्र को चलाने पर विजयी वीर, श्रीराम और लक्ष्मण द्वारा पहले युद्ध में हत होकर जितने वीरों के शव पड़े थे, वे सभी जीवित होकर आकाश स्पर्श करते हुए मानो जी उठे। यह देखकर सबने यह कहते हुए आनंदनर्दन किया कि सब जी उठे। ३७५१

इन्दि रऱ्कॊरु पहैञनु मवऱ्किळै योरुम्
तन्दि रप्पॆरुन् दलैवरुन् दलैत्तलै योरुम्
मन्दि रच्चुऱ्ऱत् तवर्हळुम् वरम्बिलर् पिऱरुम्
अन्द रत्तितनै मऱैत्ततर् मऴैयुह वार्प्पार् 3752

इन्तिरऱ्कु–इंद्र का; ऒरु–एक; पकैञनुम्–शत्रु (इंद्रजित्) और; अवऱ्कु इळैयोरुम्–छोटे भाई; पॆरुम्–बड़े; तन्तिर तलैवरुम्–सेनापति; तलै तलैयोरुम्–अन्य मुखिये; मन्तिरम् चुऱ्ऱत्तवर्कळुम्–मंत्रीमंडल के लोग; वरम्पु इलर् पिऱरुम्–और अगणित अन्य सभी; अन्तरत्तितनै–आकाश को; मऱैत्ततर्–छिपाते हुए; मऴै उक–मेघों को भी चुआते हुए; आर्प्पार्–घोष उठाने लगे। ३७५२

इन्द्रशत्रु इन्द्रजित्, उसके भाई अतिकाय, कुंभ, निकुंभ आदि बड़े-बड़े

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सेनापति, अन्य मुखिये, मंत्री लोग और अन्य असंख्य राक्षस आकाश को छिपाते हुए ऐसे शोर मचा उठे कि मेघ भी छितर गये । ३७५२

कुडप्पॆ रुञ्जॆविक् कुन्ऱमु मऱ्ऱुळ कुऴुवुम्
पडैत्त मूलमात् तानैयु मुदलिय पट्ट
विडैत्तॆ ऴुन्दन यानैतेर् परिमुदल् वॆव्वे
ऱडैत्त वूर्दिह ळनैत्तुम्वन् दव्वऴि यडैय 3753

कुटम् पॆरु चॆवि–कुंभ के समान बड़े कानोंवाले; कुन्ऱमुम्–पर्वत (सम कुंभकर्ण और); मऱ्ऱुळ कुऴुवुम्–अन्य दल; पटैत्त–जो उसका हो रहता था वह; मूल मा तानैयुम्–मूलबल की सेना; मुतलिय पट्ट–आदि जो मर चुके; यानै तेर् परि–हाथी, रथ और अश्व; मुतल्–आदि; वेऱु वेऱु अटैत्त ऊर्तिकळ्–और और बहुत वाहन; अनैत्तुम् वन्तु–सब आकर; अ वऴि अटैय–जब वहाँ पहुँचे; विटैत्तु ऍऴुन्तन–क्रोध के साथ उठे । ३७५३

कुंभ-सम बड़े कानों वाला कुंभकर्ण और अन्य वीर, और मूलबल के वीर, गज, तुरग, रथादि सभी वाहन उठे और वहाँ आकर इकट्ठे हुए । और क्रोध दिखाने लगे । ३७५३

आयि रम्बॆरु वॆळ्ळमॆन् ऱऱिञरे यऱैन्द
काय्शि नप्पॆरुङ् गडऱ्पडै कळप्पट्ट वॆल्लाम्
ईश निऱ्पॆऱ्ऱ वरत्तिना लॆय्दिय वॆन्नत्
तेश मुऱ्ऱवञ् जॆऱिन्दन तिशैहळुन् दिहैक्क 3754

पॆरु आयिरम् वॆळ्ळम् ऍन्ऱु–बड़ा सहस्र वॆळ्ळम्, ऐसा; अऱिञरे अऱैन्त–शास्त्रज्ञ-गणित; कळम् पट्ट–मैदान में जो मरे पड़े थे; काय् चिनम्–संतापक क्रोधी; पॆरु कटल्–बड़े सागर-सम; पटै ऍल्लाम्–सारी सेना; ईचनिल् पॆऱ्ऱ वरत्तिनाल्–परमेश्वर से प्राप्त वर से; ऍय्तिय ऍन्ऱ–जीव लाभ पाये, ऐसा; तिचैकळुम् तिकैक्क–दिशाओं के लोगों को चकित करते हुए; तेच मुऱ्ऱवुम्–देश भर में; चॆऱिन्तन–ठस भर गये । ३७५४

गणितज्ञों द्वारा बड़ा हज़ार वॆळ्ळम् गणित मृतक शरीर, सभी क्रुद्ध वीरों की सेना का सागर मानो परमेश्वर से प्राप्त वर के बल से जीवंत हों ऐसे उठकर देश भर में व्याप गये जिसको देखकर सारी दिशाएँ चकित हो गयीं । ३७५४

शॆन्ऱ वॆङ्गणुन् देवरु मुनिवरुञ् जिन्द
वॆन्ऱ वॆङ्गळैप् पोलुम्याम् विळिवदु मुळदे
इन्ऱु काट्टुदु मॆय्दुमि नॆय्दुमि नॆम्नाक्
कॊन्ऱ कॊऱ्ऱवर् तम्बॆयर् कुऱित्तऱै कवि 3755

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆन्ऱ्ऱु–जीता; ऍङ्कळैपोलुम्–हमें क्या; याम्–हम; विळिवतुम् उळते–मरेंगे भी क्या; इन्ऱु काट्टुतुम्–आज दिखा देंगे; ऍय्तुमिन् ऍय्तुमिन्–आओ-आओ; ऍन्ऱा–कहकर; कॊन्ऱ–जिन्होंने मारा; कॊऱ्ऱवर्तम्–उन वीरों के; पॆयर् कुऱित्तु–नाम साफ़ कहते हुए; अऱै कूवि–ललकार करके; तेवरम् मुनि वरम् चिन्त–देवों और मुनियों को भागने देते हुए; ऍङ्कणुम् चॆन्ऱ–(वे जीवित हुई सेनाएँ) सर्वत्र गयीं। ३७५५

वे वीर अपने-अपने घातकों से यह ललकार करते हुए सर्वत्र बढ़े आये कि क्या हम पर जीत पाये ? क्या हम भी यों मर जायँगे ? अब आओ, आओ। इससे देव और मुनिगण तितर-बितर हो गये। ३७५५

पारि डन्दुकॊण् डॆळुन्दन पाम्बॆनुम् बडिय
पारि डन्दुनैन् दॆळुन्दन मलैयन्न पडिय
पेरि डङ्गदु वरिदिनि विशुम्बंनप् पिऱन्द
पेरि डङ्गरिन् कॊडुङ्गुळै यणिन्दन पेय्हळ् 3756

पाम्पु (वासुकी) आदि नाग; पार् इटन्तु कॊण्टु–भूमि को भेदते हुए; ऍळुन्तन–निकले; ऍनुम् पटिय–ऐसे और; पेर् इटम्–बड़ी पृथ्वी; कतुवरितु–रहने के लिए पर्याप्त नहीं; इति–अब; विचुम्पु–आकाश ही; ऍन–मानो ऐसा; मलै अन्न पटिय–पर्वतों के समान; पारिटम्–भूत; तुनैन्तु–जल्दी; ऍळुन्तन–ऊपर उठे; पेर् इटङ्करिन्–बड़े ग्राहों के समान; कॊटु कुळै–वक्रकुंडल; अणिन्तन–जिन्होंने पहन रखे थे वे; पेय्कळ्–पिशाच; पिऱन्त–उदित हुए। ३७५६

भूत शीघ्र उठ आये और वे वासुकी आदि सर्पों के समान लगे जो भूमि को फाड़कर बाहर निकले हों। उनके शरीर पर्वतों के समान थे जिसको देखकर ऐसा लगता था कि अब भूमि में स्थान नहीं, आकाश में ही रहना होगा। फिर पिशाच भी आये जो कि बड़े ग्राहों के समान थे और जो कि वक्र कुंडल पहने हुए थे। ३७५६

ताम शत्तिनिऱ् पिऱन्दव रऱन्दॆरुन् दहैयर्
ताम शत्तिनिऱ् चॆल्हिलाच् चदुमुहत् तवऱ्कुत्
ताम शत्तिरञ् जॆय्बवर् परिन्दनर् तळरत्
ताम शत्तिरञ् जित्तिरम् बॊरुन्दिनर् तयङ्ग 3757

तामचत्तिनिल् पिऱन्तवर्–तामसास्त्र से उद्भूत; अऱम् तॆऱुम् तकैयर्–धर्म-नाशक गुण वाले; ताम्–स्वयं; अचत्तिनिल्–बुरे मार्ग पर; चॆल्किला–जो न जाते; चतु मुकत्तवऱ्कु–चतुर्मुख ब्रह्मा के लिए; उत्तामम्–उत्तम; चत्तिरम्–यज्ञ; चॆय्पवर्–जो करते हैं वे मुनि; परिन्तनर्–व्यग्र होकर; तळर–निर्बल पड़ें ऐसा; उत्तमम्–उत्तम; चत्तिरम्–हथियारों को; तयङ्क–चमकाते हुए; चित्तिरम्–विचित्र; पॊरुन्तिनर्–दिखे। ३७५७

मायास्त्र से उद्भूत, धर्मनाशक शक्तियुक्त, ये लोग उज्ज्वल अस्त्र-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शस्त्रों के साथ अनोखे रूप से आतंकमय लगे और बुरे मार्ग पर न जाने वाले, चतुर्मुख की तृप्त्यर्थ उत्तम यज्ञ करनेवाले मुनिगण उद्विग्न होकर निर्बल पड़ गये। ३७५७

ताम विन्दुमी ऍऴुन्दवर्क् किरट्टियिन् तहैयर्
ताम विन्दुविन् पिळवॆन्त् तयङ्गुवा ळॆयिऱ्ऱर्
ताम विञ्जैयर् कडऱ्पॆरुन् दहैयिन्तर् तरळत्
ताम विञ्जैयर् तुवन्ऱिन्तर् तिशैतोऱुन् दरुक्कि 3758

ताम् अविन्तु–खुद मरकर; मीतु–फिर; ऍऴुन्तवर्क्कु–जो जीवित हो गये उनके; इरट्टियिन् तकैयर्–दुगुने; तामम्–उज्ज्वल; विन्तुविन्–चंद्र के; पिळवु ऍन्त–टुकड़े के समान; तयङ्कुम्–शोभनेवाले; वाळ् ऍयिऱ्ऱर्–दाँतों से युक्त; ताम्–लाँघनेवाली; अविञ्चैयर्–माया करने में समर्थ; कटल्–समुद्र के समान; पॆरु तकैयिन्तर्–बड़े परिणाम के (असुर); तरळम् तामम्–मोती-माला-धारी; विञ्चैयर्–विद्याधर; तिचै तोऱुम्–सभी दिशाओं में; तरुक्कि–सदंभ; तुवन्ऱिन्तर्–भीड़ लगाकर आये। ३७५८

इनके अलावा सागर-सम बड़ी संख्या में सुर भी आये। वे मरकर जी उठे राक्षसों के दुगुने बल रखते थे। अर्धचंद्र-सम उज्ज्वल दाँतों वाले थे और छलाँग मारने की मायाशक्ति रखनेवाले थे। फिर मुक्तमाला-मंडित विद्याधर आये। सभी सदंभ सारी दिशाओं में भीड़ लगाते हुए आये। ३७५८

ताम डङ्गलु मुडङ्गुळै याळियुन् दहुवार्
ताम डङ्गलु नॆडुन्दिशै युलहॊडुन् दहैवार्
ताम डङ्गलुङ् गडलुमॊत् तार्दरुन् दहैयार्
ताम डङ्गलुङ् गॊडुञ्जुडर्प् पडैहळुन् दरित्तार् 3759

ताम्–छलाँग मारनेवाले; मटङ्कलुम्–सिंह की; मुटङ्कु उळै–और वक्र अयालवाले; याळियुम्–शरभों की; तकुवार्–समानता करनेवाले और; ताम् अटङ्कलुम्–आप सारा; नॆटु तिचै–लंबी दिशाओं को; उलकॊटुम्–पृथ्वी के साथ; तकैवार्–रोक सकनेवाले; ता–सशक्त; मटङ्कलुम्–युगांत की अग्नि की; कटलुम्–और समुद्र की; ऒत्तु–समानता करके; आर् तरुम्–सर्वत्र भर के; तकैयार्–योग्य रहनेवाले वे; ताम्–उज्ज्वल; मटङ्कलुम्–वज्रों और; कॊटु–क्रूर; चुटर्–ज्वलंत; पटैकळुम्–हथियारों को; तरित्तार्–धारण किये रहे। ३७५९

वे सभी छलाँग मारनेवाले सिंहों के और वक्र अयालवाले शरभों के सदृश थे। वे सभी दिशाओं को पृथ्वी के साथ मेटने की शक्ति रखते थे। युगांत की अग्नि तथा सागर के समान थे और समरभूमि भर में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

व्याप सकनेवाले थे। वे ज्वलंत अशनि और क्रूर उज्ज्वल हथियार धारण किये हुए थे। ३७५९

इनैय तन्मैयै नोक्किय विन्दिरै कॉळुनन्
विनैय मऱ्ऱिदु मायमो विदियदु विळैवो
वनैयुम् वन्कळ लरक्कर्तम् वरत्तिनो मऱ्ऱो
निनैदि यामॅनिऱ् पहरॅन मादलि निहळ्त्तुम् 3760

इनैय–ऐसी; तन्मैयै–स्थिति को; नोक्किय–देखकर; इन्तिरै कॉळुनन्–इन्दिरापति ने; इतु–यह; विनैयम् मायमो–मायाकार्य है क्या; वितियतु विळैवो–विधि का विधान; वनैयुम्–धृत; वल् कळल्–कठोर पायलधारी; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; वरत्तिनो–वर से; मऱ्ऱो–अन्य क्या; निनैतियाम् ॲनिल्–जानते हो तो; पकर्–बताओ; ॲन–पूछा तो; मातलि निकळ्त्तुम्–मातलि बोले। ३७६०

इस बात को देखकर इन्दिरापति श्रीराम ने अपने सारथी मातलि से पूछा कि यह माया का कृत्य है? या विधि की लीला? या धृत पायल-धारी राक्षसों के वर का फल है? या कोई अन्य हेतु है? अगर तुम जानो तो बताओ। तब मातलि बोला। ३७६०

इरुप्पुक् कम्मियऱ् किळैनुळै यूशियॉन् रियऱ्ऱि
विरुप्पिऱ् कोडियाल् विलैक्कॅनुम् बदडियित् बिट्टान्
करुप्पुक् कार्मळै वण्णवक् कडुन्दिशैक् कळिऱ्ऱिन्
मरुप्पुक् कल्लिय तोळवन् मोळरु मायम् 3761

करुप्पु–अकाल में उठ आये; कार् मळै–काले मेघ-सम; वण्ण–रंग वाले; इरुम्पु कम्मियऱ्कु–लुहार के लिए; इळै नुळै–सूत्र जिससे निकलता है; ऊचि ऑनऱु–ऐसी एक सूई; इयऱ्ऱि–बनाकर; विरुप्पिन्–चाव के साथ; विलैक्कु कोटियाल्–खरीद लो; ॲनुम्–कहनेवाले; पतटियित्–मूर्ख के समान; अ–उन; कटु–कठिन मन; तिचै कळिऱ्ऱिन्–दिग्गजों के; मरुप्पु–दाँतों से; कल्लिय–जो नोचे गये; तोळवन्–वैसे कंधोंवाले रावण ने; मोळ्वरुम्–अप्रतिहत; मायम्–मायास्त्र; विट्टान्–प्रेरित किया। ३७६१

अकाल में उठ आये मेघ के समान वर्णवाले! (अत्यंत आनंद-दायक मेघश्याम!) लुहार के पास जाकर जो कहे कि यह तागा घुसने देने वाली सूई क्रय कर लो उस वेवकूफ़ के समान इस रावण ने, जिसके कंधे कठोर दिग्गजों के दाँतों से नोच लिया गया था, यह मायास्त्र छोड़ा है। उसका निवारण साधारण रूप से दुस्साध्य है ही। ३७६१

वीक्कु वायियल् वॅळ्ळॅयिऱ् ऱरवित्वॅव् विडत्तै
मायक्कु मानॅडु मन्दिरन् दन्ददोर् वलियिन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नोय्क्कु नोय्तरु विनैक्कुनिन् पॅरुम्बॅयर् नॉडियिन्
नीक्कु वायुनै निनैक्कुवार् पिऱप्पॅन नीङ्गुम् 3762

नोय्क्कुम्–भवरोग (-निवारण) के लिए; नोय् तरु विनैक्कुम्–उस रोग को देनेवाले कर्मों को दूर करने के लिए; निन् पॅरुम् पॅयर्–आपके श्रेष्ठ नाम का; नॉटियिन्–उच्चारण करें तो; नीक्कुवाय्–उनको दूर करनेवाले; वाय्–मुख में; अयिल्–तीक्ष्ण; वॅळ् ॲयिऱु–श्वेत दाँत (जिसके हैं); अरविन्–सर्प के; वीक्कुम् वॅव्विटत्तै–मारक भयंकर विष को; माय्क्कुम्–विफल करनेवाले; मॅट्टु मन्तिरम्–उत्तम मंत्र द्वारा; तन्तुतु–दत्त; ओर् वलियिन्–एक बल के समान; उनै निनैक्कुवार्–आपके स्मरण करनेवाले के; पिऱप्पु ॲन–जन्मके समान; नीङ्कुम्–हट जाएगा (ऐसा मातलि ने कहा)। ३७६२

भवरोग तथा भवरोग के हेतु कर्म के भी, नाम-स्मरण मात्र से नाशक हे नाथ ! तीक्ष्ण श्वेत दाँतों के सर्प के विष को विफल करनेवाले श्रेष्ठ मंत्रदत्त बल के समान आपके अस्त्र के प्रभाव से यह मायास्त्र आपके स्मरणकर्ता के जन्म के समान दूर हो जायगा। ३७६२

वरत्ति नायिनु मायैयि नायिनुम् वलियोन्
उरत्ति नायिनु मुण्मैयि नायिनु मोडत्
तुरत्ति यालॅन आनमाक् कडुङ्गणै तुरन्दान्
शिरत्तिनान् मऱै यिऱैञ्जवुन् देडवुञ् जेयोन् 3763

नान् मऱै–चतुर्वेदों के; चिरत्तिन्–शीर्ष (उपनिषदों) से; इऱैञ्चवम्–स्तुति करने और; तेटवुम्–अन्वेषण के लिए; चेयोन्–दूर के श्रीराम ने; वलि योन्–बलवान जो है उसको; वरत्तिन् आयिनुम्–वर से सही या; मायैयिन् आयिनुम्–माया से ही सही; उरत्तिन् आयिनुम्–या अपने शरीर-बल से ही; उण्मैयिन् आयिनुम्–या सत्य से; ओट–भागे ऐसा; तुरत्ति–भगा दी; ॲन–कहकर; मा–बड़े; कटु–तेज जानेवाले; आनम् कणै–ज्ञानास्त्र; तुरन्तान्–चलाया। ३७६३

तब चतुर्वेदशीर्ष, उपनिषदों के भी अन्वेषण तथा स्तुति के परे रहने वाले श्रीराम ने बहुत बड़े तथा तीक्ष्ण ज्ञानास्त्र को छोड़ा और संकल्प किया कि वर से हुई हो, चाहे माया से; शरीर-बल से चाहे सत्य से, इस माया को भगा दो। ३७६३

तुऱत्त लाऱ्ऱु आनमाक् कडुङ्गणै तॉडर
अऱत्त लादुशॅल् लादुनल् लऱिवुवन् दणुहप्
पिऱत्त लाऱ्ऱुम् बेदैमै पिणिप्पुऱत् तम्मै
मऱत्त लाऱ्ऱुन्द मायैयिन् मायन्बदु मायम् 3764

तुऱत्तलाल्–छोड़ने से; तुऱ–घना; कटु–तेज; मा–बड़े; आनम् कणै–ज्ञानास्त्र के; तॉटर–पीछा करने से; अऱत्तु अलातु–अधार्मिक रीति से; चॅल्लातु–न जाकर; नल् अऱिवु वन्तु अणक–अच्छे ज्ञान के आने पर; पिऱत्तलाल्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जन्म से; तुऱम्-गंभीर; पेतैमै-अज्ञान के; पिणिप्पु उऱ-बंधन के होने से; तम्मै मऱत्तलाल्-आत्म-विस्मृति से; तन्त-उद्भूत; मायैयिन्-माया (जाने) के समान; मायम् माय्न्ततु-माया हट गयी। ३७६४

श्रीराम से प्रेरित होकर वह कठोर ज्ञानास्त्र चला तो अधार्मिक मार्ग पर जाने से रोकते हुए जब ज्ञान आ जाता है तब जैसे अविद्या-जनित आत्म-विस्मृति-दत्त माया छिप जाती है, वैसे माया दूर हट गयी। ३७६४

नीलङ् गॊण्डार् कण्डऩु नेमिप् पडैयोऩुम्
मूलङ् गॊण्डार् कण्डह् रावि मुडिविप्पाऩ्
कालङ् गॊण्डार् कण्डऩ मुऩ्ऩे कऴिविप्पाऩ्
शूलङ् गॊण्डा ऩण्डरै यॆल्लाऩ् दॊऴिल् कॊण्डाऩ् 3765

नीलम् कॊण्टु आर्-नीले रंग के; कण्टऩुम्-कंठ वाले शिव और; नेमि पटैयोऩुम्-चक्रायुधधर श्रीविष्णु; मूलम् कॊण्टार्—नाभी कमलोत्पन्न ब्रह्मा; कण्टकर् आवि मुटिप्पाऩ्-कंटकों के प्राणहरणार्थ; कालम् कॊण्टार्-काल-निर्णय कर चुके; अण्टरै ऎल्लाम्-सभी देवों को; तॊऴिल् कॊण्टाऩ्-जिसने अपना कर्मचारी बना लिया था उसने; मुऩ्ऩे कण्टऩ-सामने दृष्ट (सब) को; कऴिविप्पाऩ्-मिटाने हेतु; चूलम् कॊण्टाऩ्-शूल लिया। ३७६५

नीलकंठ शिव, चक्रधर विष्णु और उनके नाभिकमलोत्पन्न ब्रह्मा—इन तीनों ने कंटकों के नाश का काल निर्णय कर दिया है! इसलिए देवों को अपने दास बना रखनेवाले रावण ने अपने सामने रहे सभी जीवों का नाश कर देने के विचार से शूल को अपने हाथ में ले लिया। ३७६५

कण्डा हुलमुऱ् ऱायिर मार्क्किऩ् ऱदुकण्णिऱ्
कण्डा हुलमुऱ् ऱुम्ब रयिर्क्किऩ् ऱदुवीरर्
कण्डा हुलमुऱ् ऱुञ्जुडु मॆऩ्ऱुक्कऴल् वॆय्योऩ्
कण्डा हुदऩ्मुऩ् शॆल्लवि शॆत्तुळ् ळदुकण्डाऩ् 3766

आयिरम् कण्ट आकुलम्-हजार घंटियों का समूह; मुऱ्ऱुम्-पूर्ण रूप से; आर्क्किऩ्ऱतु-स्वरित हों ऐसा; उम्पर्-व्योमवासी; कण्टु-(जिसको) देखकर; आकुलम् उऱ्ऱु-व्याकुल होकर; अयिर्क्किऩ्ऱतु-भ्रांत होते हों; वीरर् कण्-वीरों के; ता-बल को; कुलम्-और कुल को; मुऱ्ऱुम् चुटुम्-एक दम जला देगा; ऎऩ्ऱु-ऐसा; अ कऴल् वॆय्योऩ्-उस पायलधारी क्रूर लंकाधिप ने; कण् ताकुतल् मुऩ्-आँखों से देखने के पहले ही; चॆल्ल-जाने के लिए; विचॆत्तु उळ्ळतु-जोर से जिसको चलाया था उस शूल को; कण्टाऩ्-श्रीराम ने देखा। ३७६६

उस शूल में हजार घंटियाँ बँधी थीं जो क्वणित हो रही थीं। देवगण उसे देखकर व्यग्र हुए और संशयमिश्रित भय करने लगे कि क्या होनेवाला है? उसे लंकाधिपति ने यह संकल्प करके छोड़ा कि सामने के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीरों का सारा बल और कुल जला दो। दृष्टि लगने से पूर्व ही रावण से प्रेरित उस शूल को श्रीराम ने देखा। ३७६६

ऍरिया निऱ्कुम् बः(ह्)ऱलै मूनऱु मॅरियञ्जत्
तिरिया निऱ्कत् तेवर्ह ळोडत् तिरळोड
इरिया निऱ्कु मॅव्वुल हुन्दन् नॉळियेयाय्
बिरिया निऱ्कु निऱ्किल दार्क्कुम् विऴिशॅल्ला 3767

ऍरिया निऱ्कुम्–जो जलता है वह; पल् तलै–वह त्रिशूल; ऍरि मूनऱुम् अञ्च–तीनों अग्नियों को भयभीत करते हुए; तिरिया निऱ्क–घूमता आया, तब; तेवर्कळ् ओट–देव भागे ओर; तिरळ् ओट–वानरयूथ भागे; इरिया निऱ्कुम्–अस्त-व्यस्त; ऍव् उलकुम्–सभी लोकों में; तन् ऒळियेयाय्–अपनी ही ज्योति को; बिरिया निऱ्कुम्–फैलाये जो रहा; आर्क्कुम्–(वह) किसी को भी; विऴि चॅल्ला निऱ्किलतु–दृष्टि में ठहरे बिना जाता रहा। ३७६७

वह त्रिशूल जलता हुआ, तीनों अग्नियों को भी भयभीत करता हुआ और घूमता हुआ आ रहा था। उसको देखकर देव भागे। वानरयूथ भागे। अस्त-व्यस्त सभी लोकों को प्रकाश से भरते हुए स्वयं तेज ही बनकर वह कहीं रुका नहीं और लोक में किसी की दृष्टि उस पर पड़ ही नहीं सकती थी। ३७६७

शॅल्वा यॅन्नच् चॅल्ल विडुत्ता निदुतीर्त्तऱ्
कॉल्वाय् नीये बेऱॊरु वर्क्कुम् मुडैयादाल्
वल्वाय् वॅङ्गट् चूल मॅनुङ्गा लनैवळ्ळाल्
वॅल्वाय् वॅल्वा यॅन्ऱनर् वानोर् मॅलिहिन्ऱार् 3768

वानोर्–देव; मॅलिकिन्ऱार्–म्लान होते हैं; चॅल्वाय्–चलो; ऍन्न–कहकर; चॅल्ल विटुत्तान्–चलाया; इतु तीर्त्तऱ्कु–इसे मिटाने के लिए; नीये ऒल्वाय्–आप ही योग्य हैं; वेऱु ऒरुवर्क्कुम् उटैयातु–और किसी से नहीं टूटेगा; वल् वाय्–कठोरमुख; वॅम् कण्–सर्वनाशक; चूलम् ऍनुम् कालनै–शूल रूपी काल को; वळ्ळाल्–करुणामय (प्रभु); नीये वॅल्वाय्–आप ही जीतें; ऍन्ऱनर्–ऐसी प्रार्थना की। ३७६८

देवगणों को म्लान होने देते हुए रावण ने उसे 'चलो' कहकर छोड़ दिया। देवों ने श्रीराम से विनय की कि आप ही इसे दूर कर सकते हैं। यह किसी से तोड़े नहीं टूटेगा। हे करुणामय प्रभु! कठोर-मुख, भयानक इस शूल-यम को आप ही जीतें। ३७६८

तुनैयुम् वेहत् तालुरु मेरुन् दुण्णॅन्न
वनैयुङ् गालिर् वॅलुवन् वनै मऱवाये

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निऩैयु ञाऩक् कण्णुडै यार्मेल् निऩयादार्
विऩैयम् बोलच् चिन्दिऩ वीरऩ् शरम्वॆय्य 3769

तुऩैयुम् वेकतुताल्–जाने की गति से; उरुम् एऱ–अशनिराज भी; तुण् ऍऩ्ऩ–दहल उठे ऐसा; वऩैयुम्–घूमनेवाले; काल् ऍऩ्ऩ–वात के समान; चॆल्वऩ–जानेवाले; वॆय्य चरम्–(श्रीराम के) कठोर शर; तऩ्ऩै मऱवाते निऩैयुम्–बिना भूले स्मरण करनेवाले; ञाऩम् कण् उडैयार् मेल्–ज्ञानचक्षुओं पर; निऩैयातार्–ईश्वर-स्मरण न करनेवालों के; विऩैयम्–षड्यंत्र; पोल–के समान; चिन्ऩिऩ–गिरे। ३७६९

अतिवेग के साथ अशनिराज को भी भय में डालते हुए चक्रवात के समान जानेवाले श्रीराम के शर ईश्वरस्मरण-कर्ता ज्ञानियों पर ईश्वर-विमुख बुरे लोगों के षड्यंत्र जैसे कुछ असर नहीं कर पाते वैसे ही शूल पर गिरे और व्यर्थ हुए। ३७६९

ऍय्यु मॆय्युन् देव रुडैत्तिण् पडै यॆल्लाम्
पॊय्युन् दुय्यु मॊत्तवै शिन्दुम् बुवि तन्दान्
वॆयुञ् जाब मॊप्पॆऩ् वॆप्पिन् वलि कण्डान्
ऐय निऩ्ऱान् शॆय्वहै यॊन्ऱु मऱि हिल्लान् 3770

पुवि तन्तान्–भूपाल श्रीराम ने; तेवर् उडै–देवों के; तिण् पडै ऍल्लाम्–सभी सशक्त अस्त्रों को; ऍय्युम् ऍय्युम्–बिना छोड़े चलाया; अवै–वे; पॊय्युम् तुय्युम् ऒत्तु–असत्य और रुई के समान; चिन्तुम्–गिर गये; ऐयऩ्–प्रभु ने; वॆयुम् चापम् ऒप्पु ऍऩ–गाली के शाप के समान; वॆप्पिऩ्–गरम उस शूल का; वलि कण्टाऩ्–बल देखा; चॆय् वकै ऒत्तुऱुम्–करने योग्य प्रकार कुछ; अऱिकिल्लाऩ्–नहीं सोच सके; निऩ्ऱाऩ्–खड़े रहे। ३७७०

भूपाल श्रीराम ने सारे दिव्यास्त्र लगातार छोड़े। पर वे असत्य और रूई के समान बिखर गये। श्रीराम ने देखा कि शाप के समान वह शूल अमोघ रूप से नाशकारी है। उसका बल जानकर वे किंकर्तव्यविमूढ़ खड़े रहे। ३७७०

मऱन्दाऩ् शॆय्है माऱॆदिर् शॆय्युम् वहैयॆल्लाम्
तुऱन्दा ऩॆऩ्ऩा वुम्बर् तुणुक्कन् दॊडर्बुऱ्ऱार्
अऱन्दा ऩञ्जिक् काल्कुलै यत्ता ऩऱियादे
पिऱन्दाऩ् निऩ्ऱाऩ् वन्ददु शूलम् बिऱरञ्ज 3771

चॆय्कै मऱन्ताऩ्–कुछ करना भूलकर; माऱ–विपरीत; ऍतिर् चॆय्युम् वकै ऍल्लाम्–सामना करने के सारे प्रकारों को; तुऱन्ताऩ्–छोड़ गये; ऍऩ्ऩा–कहकर; उम्पर्–देवगण; तुणुक्कम् तॊटर्बु उऱ्ऱार्–भयग्रस्त हुए; अऱम् अञ्चि–धर्म डरा; काल् कुलैय–उसके पैर कंपित हुए; पिऱन्ताऩ्–(मनुष्य-रूप में) अवतरित जो हुए थे वे; अऱियाते निऩ्ऱाऩ्–बिना जाने खड़े रहे; शूलम् पिऱर् अञ्च–शूल, अन्य (सबों) को भय में डालते हुए; वन्ततु–आया। ३७७१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देवगण यह कहते हुए भयग्रस्त हुए कि श्रीराम कुछ करना भूल गये। उसके आगे उसके विपरीत किये जायँ ऐसे सभी उपायों को उन्होंने छोड़ दिया है। धर्म भी डर गया और उसके पैर काँपने लग गये। मनुष्य के रूप में प्रकट श्रीराम विना (अपना परत्व) जाने खड़े रह गये। शूल सबको भयभीत करता हुआ आया। ३७७१

शङ्गा रत्ताऱ् कण्डै यॊलिप्पत् तळल्शिन्दप्
पॊङ्गा रत्तान् मार्बॆदि रोडिप् पुहलोडुम्
वॆङ्गा रॊत्तान् मुऱ्ऱु मुऩिन्दान् वॆहुळिप्पेर्
उङ्गा रत्ता लुक्कदु पऩ्ऩू ऱुदिराहि 3772

चङ्कारत्ताल्—संहार-कार्य से; कण्टै ऒलिप्प—घंटियों के बजते; तळल् चिन्त-आग के गिरते; पॊङ्कु कारत्तान्—उभरनेवाले क्रोध के साथ; मार्पु ऎतिर् ओटि—वक्ष के सामने जाकर; पुकलोटुम्—जब घुसा तभी; वॆम् कार् ऒत्तान्—क्रूर मेघ-सम; मुऱ्ऱुम् मुऩिन्तान्—बिलकुल नाराज हुए; वॆकुळि—क्रोध से उत्पन्न; पेर् उङ्कारत्ताल्—हुंकार से; पल् नूऱु—अनेक सौ; उतिर् आकि—खंड होकर; उक्कतु—गिर गया। ३७७२

संहारकार्य पर घंटियों के स्वर के साथ आग छितराते हुए वह उभरते क्रोध के श्रीराम के वक्ष के सामने आया और ज्योंही वह उनके वक्ष में घुसा, त्योंही घनश्याम ने क्रोध के साथ 'हुंकार' किया। उसकी ध्वनि से वह शूल अनेक सौ खण्डों में टूटकर चू गया। ३७७२

आऱ्प्पा राऩा रच्चमुमऱ्ऱा रलर्मारि
तूऱ्प्पा राऩाऱ् तुळ्ळल् पुरिन्दार् तॊऴुहिऩ्ऱार्
तीऱ्प्पाय् नीये तीयॆऩ वेऱाय् वरुतीमै
पेऱ्प्पाय् पोला मॆऩ्ऱऩर् वाऩो रुयिर्पॆऱ्ऱार् 3773

वाऩोर्—व्योमवासियों की; उयिर् पॆऱ्ऱार्—जान में जान आयी; आऱ्प्पार् आऩार्—शब्द कर उठे; अच्चमुम् अऱ्ऱार्—भयविमुक्त हुए; अलर् मारि—पुष्प-वर्षा; तूऱ्प्पार् आऩार्—करनेवाले बने; तुळ्ळल् पुरिन्तार्—उछल-कूद मचायी; तॊऴुकिऩ्ऱार्—विनय करते; तीऱ्प्पाय् नीये—मेटनहार आप ही; ती ऎऩ—अग्नि के समान; वेऱाय् वरु तीमै—अलग आनेवाले संकट; पेऱ्प्पाय् पोलाम्—दूर करनेवाले बनेंगे; ऎऩ्ऱऩर्—। ३७७३

यह देखकर देवों की जान में जान आयी। उन्होंने आनंदनर्दन किया। भयविमुक्त होकर पुष्पवर्षा करायी। उछल-कूद मचाकर स्तुति की कि शूलहर्ता आप ही और आनेवाले सभी अग्नि-सम संकटों को दूर करनेवाले बन गये। ३७७३

वॆऩ्ऱा ऩॆऩ्ऱे पुळ्ळम् वॆयर्त्तान् विडुशूलम्
बॊऩ्ऱा ऩॆऩ्ऩिऱ् पोहल दॆऩ्ऩम बॊरुळकॊणडान्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒन्ऱा मुङ्गा रत्तिडै युक्को डुदल्काणा
निन्ऱा नन्नाळ् वीडण नार्शॊल् निन्नवुऱ्ऱान् 3774

विटु चूलम्–जो शूल मैं छोड़ता; पॊन्ऱान् ऎन्निल् पोकलतु–नहीं मरेगा तो दूर नहीं होगा; ऎन्नुम् पॊरुळ्–यह सिद्धांत; कॊण्टान्–जो मन में रखता था; ऒन्ऱु आम्–एक अपूर्व; उङ्कारत्तिटै–हुंकार से; उक्कु ओटुतल्–टूटकर चला यह बात; काणा निन्ऱान्–देखकर स्तब्ध रहकर; वॆन्ऱान्–हम पर यह विजय पा चुका; ऎन्ऱे–सोचकर; उळ्ळम्–मन में; वॆयर्त्तान् (डर से) स्वेद से युक्त हो गया; अन् नाळ्–उस दिन का; वीटणनार् चॊल्–विभीषण का कथन; निनैवुऱ्ऱान्–स्मरण किया। ३७७४

रावण ने यही सिद्धांत बना लिया था कि मेरी शक्ति राम का अंत किये विना हटेगी नहीं। पर उसने देखा कि एक ही हुंकार में वह टूटकर छिन्न-भिन्न हो गयी। सन्न बनकर उसने ताड़ लिया कि अब वह मुझे हरा देगा। तब उसका शरीर पसीने से भर गया। उसे उस दिन विभीषण ने जो कहा था वह कथन स्मरण हो आया। ३७७४

शिवनो वल्लन् नान्मुह नल्लन् तिरुमालाम्
अवनो वल्लन् मॆय्वर मॆल्ला मडुहिन्ऱान्
तवनो वॆन्निऱ् चॆय्दु मुडिक्कुन् दरनल्लन्
इवनो तानव् वेद मुदऱ्का रणनॆन्ऱान् 3775

मॆय् वरम् ऎल्लाम्–सच्चे सभी वरों को; अटुकिन्ऱान्–मटियामेट करता है; चिवनो अल्लन्–यह शिव नहीं; नान् मुकन् अल्लन्–चतुर्मुख नहीं; तिरुमालाम् अवनो अल्लन्–श्रीविष्णु नहीं; तवनो ऎन्निल्–बड़े तपस्वियों में एक है क्या; चॆय्तु मुटिक्कुम् तरन् अल्लन्–कर चुकने योग्य नहीं लगता; इवन्–यह; अ वेतम् मुतल् कारणनो–क्या वह वेदमूल भगवान है; ऎन्ऱान्–(ऐसा संशयवचन) कहा। ३७७५

'यह मेरे सभी सच्चे वरों को एक दम बेकार कर रहा है। यह क्या शिव है? नहीं। चतुर्मुख भी नहीं। श्रीविष्णु नहीं। बड़ा तपस्वी भी होने योग्य नहीं दिखता।' यह तर्क करके रावण ने संशय किया कि क्या यह वेदमूल नारायण तो नही? । ३७७५

यारे नुन्दा नाहुक यानॆन् तनियाणमै
पेरे निन्ऱे वॆन्ऱि मुडिप्पॆन् पॆयर्हिल्लेन्
नेरे शॆल्वन् कॊल्लॆ नरक्क निमिर्वॆय्दि
वेरे निऱ्कु मीळ्हिलॆ नॆन्ऱा विडलुऱ्ऱान् 3776

यारेनुम् तान् आकुक–कोई भी हो; यान्–मैं; ऎन्–अपना; तनि आणमै पेरेन्–अपनी निजी वीरता से नहीं हटूंगा; निन्ऱे–स्थिर रहकर; वॆऱ्ऱि मुटिप्पॆन्–विजय पूरा करूँगा; पॆयर्किल्लेन्–पीछे नहीं हटूंगा; कॊल्ल–मारे जाने के लिए (हो तो भी); नेरे चॆल्वन् –सीधे जाऊँगा; ऎन् अरक्कन्–कहनेवाले रावण ने;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निमिरवु ऍय्ति–तनकर; वेर् निऱ्कुम्–(विजय की) जड़ मेरे पास स्थिर रहेगी; मीळ्किलॅन्–नहीं लौटूंगा; ऍन्ना–कहकर; विटल् उऱ्ऱान्–शर छोड़ने लगा। ३७७६

(उसे तामस बुद्धि ने घेर लिया :) 'कोई भी हो ! मैं अपनी वीरता को नहीं छोड़ूंगा। विजयी बनूंगा। हटूंगा नहीं। मारे जाने के लिए भी हो तो समक्ष जाऊँगा।' ऐसा सोचकर रावण नयी उमंग से भर गया। उसने कहा, विजय की जड़ मेरे पक्ष में जमेगी। नहीं तो लौटूंगा नहीं। रावण उत्तरोत्तर बाण चलाने लगा। ३७७६

निरुदित् तिक्कि निन्ऱवन् वॅन्ऱिप् पडैनॅञ्जिल्
करुदित् तन्बाल् वन्द दवन्गैक् कॉडुकालन्
विरुदॅच् चिन्दुम् विल्लिन् वलित्तुच् चॅलविट्टान्
कुरुदिच् चॅङ्गण् तीयुह ञालङ् गुलैवॅय्द 3777

निरुति तिक्किल्–नैर्ऋत (दक्षिण-पूर्व) दिशा में; निन्ऱवन्–स्थित (दिग्पाल) के; वन्ऱि पटै–विजयदायी हथियार को; नॅञ्चिल् करुति–स्मृत करके; तन्पाल् वन्ततु–अपने पास आये उसको; अवन्–रावण ने; कै कॉटु–हाथ में लेकर; कालन् विरुतै चिन्तुम्–कालदेव के विरुदों को बिखेरनेवाले; विल्लिल् वलित्तु–धनु में रखकर खींचकर; कुरुति चॅम् कण्–रक्त-सम लाल आँखों से; ती उक–आग के निकलते; ञालम् कुलैवु ऍय्त–संसार के जर्जर होते; चॅल विट्टान्–चलाया। ३७७७

उसने नैर्ऋत (दक्षिणी पूर्व) दिग्पाल का स्मरण किया। उसका बिजयदायी अस्त्र आया। उसने उसे हाथ में ग्रहण किया। यमविरुद-भक्षक अपने धनु पर चढ़ाया और प्रेरित किया। तब उसकी रक्तवर्ण आँखों से आग-सी निकल रही थी और संसार कंपायमान हो उठा। ३७७७

वैयन् दुञ्जुम् वन्पिडर् नाह मन्नञ्जप्
पैयुङ् गोडिप् प:(ह)ऱलै योडु मळविल्ला
मॅय्युम् वायुम् बॅऱ्ऱन मेरुक् किरिशाल
नॉय्दॅन् ऱोदुन् दन्मैय वाह नुळैहिन्ऱ 3778

वैयम् तुञ्चुम्–संसार जिस पर स्थिर रहता है; वल् पिटर् नाकम्–कठोर फनों का नाग; मन्नम् अञ्च–मन में भय का अनुभव करे; कोटि–पंक्तिबद्ध; पल् तलैयोटुम्–अनेक सिरों के साथ; पैयुम्–फन; अळवु इल्ला मॅय्युम्–अपार बड़ा शरीर; वायुम् पॅऱ्ऱन–और मुख जिसके हों; मेरु किरि–वह मेरु पर्वत भी; चाल नॉय्तु ऍन्ऱु–बहुत ही छोटा है ऐसा; ओतुम् तन्मैय आक–कहने योग्य रीति के; नुळै किन्ऱ–बनकर आये। ३७७८

(उस अस्त्र के अनेकानेक सर्प बने। वे कैसे थे ?) एक एक को देखकर धरावाहक बड़े फनों वाला आदिशेषनाग भी मन में भय का अनुभव करे, ऐसे। अनेक सिरों, फनों से युक्त भीमकाय थे। मेरु भी उनके सामने हलका लगे, ऐसा बनके आ रहे थे। ३७७८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाय्वाय् तोऱु माकडल् पोलुम् विडवारि
पोय्वार् हिन्ऱ पॊङ्गनल् कण्णिऱ् पॊळिहिन्ऱ
मीवा यॆङ्गुम् वॆळ्ळिडै यिन्ऱि मिडैहिन्ऱ
पेय्वा यॆन्न वॆळ्ळॆयि ऱॆङ्गुम् बिऱळ्हिन्ऱ 3779

वाय् वाय् तोऱुम्–हर मुख में; मा कटल् पोलुम्–बड़े समुद्र के समान; विटम् वारि–विष-जल; पोय् वार्किन्ऱ–बहता है; पॊङ्कु अनल्–धधकती आग; कण्णिल्–आँखों से; पॊळि किन्ऱ–बहुत निकालनेवाले; मी वाय् ऍङ्कुम्–ऊपर कहीं; वॆळ् इडै इन्ऱि–रिक्त स्थान न हो ऐसा; मिटैकिन्ऱ–सटे हुए जानेवाले; पेय् वाय् ऍन्न–पिशाचों के मुखों के समान; ऍङ्कुम्–सब ओर; वॆळ् ऍयिऱ–सफ़ेद दाँत; पिऱळ्किन्ऱ–छवि के साथ प्रकट करनेवाले। ३७७९

हर सर्प के हर मुख में समुद्र के समान विषजल स्रव रहा था। आँखों से धधकती आग निकल रही थी। वे इतनी भीड़ लगाकर आ रहे थे कि ऊपर कहीं कुछ रिक्त स्थान न दिखायी दिया। पिशाच के मुख के समान उनके मुख में सब ओर सफ़ेद दाँत विलस रहे थे। ३७७९

कडित्ते तीरुङ् गण्णहन् ञालङ् गडलोडुम्
कुडित्ते तीरु मॆन्ऱल हॆल्लाङ् गुलैहिन्ऱ
मुडित्ता नन्ऱो वॆङ्ग णरक्कन् मुळुमुऱुम्
बॊडित्ता नाहु मिप्पॊळु दॆन्नप् पुहैहिन्ऱ 3780

कटित्ते तीरुम्–काटकर ही छोड़ेगा; कण् अकल् ञालम्–विशाल संसार को; कटलोटुम्–समुद्र के साथ; कुटित्ते तीरुम्–पीकर ही छोड़ेगा; ऍन्ऱ–ऐसा सोचकर; उलकु ऍल्लाम्–सारे लोक; कुलैकिन्ऱ–काँपे उसके कारण बनकर; वॆम् कण्–दारुणाक्ष; अरक्कन्–राक्षस रावण; मुळु मुऱुम् मुटित्तान्–पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया; इप्पॊळुतु–इसी समय; पॊटित्तान् आकुम्–चूर कर दिया रहेगा; अन्ऱो–न; ऍन्न पुकॆकिन्ऱ–ऐसा धधकनेवाले। ३७८०

वे ऐसे भयंकर थे कि लोगों के मन में यह त्रास पैदा हो गया कि यह श्रीराम को काटे विना नहीं छोड़ेगा। विशाल पृथ्वी को समुद्र के साथ पिये विना नहीं रहेगा। 'भीषण आँखों वाला राक्षस इसी क्षण दुनिया को चूर करके तहस-नहस करनेवाला है' —ऐसा प्रभाव पैदा करके वे गुँगुआते हुए आये। ३७८०

अव्वा रुऱ्ऱ वाडर वङ्गा लहल्वायाल्
कव्वा निन्ऱ माल्वरै मुऱ्ऱु मवैकण्डान्
ऍव्वाय् तोऱु मॆय्दिन वॆन्ना वॆदिरॆय्दान्
तव्वा वुण्मैक् कारुड मॆन्नुम् बडैतन्नाल् 3781

अव्वाङ उऱ्ऱ–वैसे बने; आटु अरवम्–फन फैलाकर नाचनेवाले नाग; काल्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विष वमन करनेवाले; अकल् वायाल्–चौड़े मुखों से; कव्वा नित्र्–ग्रस्त; माल् वरै अवै–विशाल सीमा वाले स्थानों को; मुऱ्ऱुम्–पूरा; कण्डाल्–जिन्होंने देखा उन श्रीराम ने; ऍव्वाय् तोऱुम् ऍय्तिन्–सभी स्थानों में आ गये; ऍन्ऩा–सोचकर; तव्वा–अचूक; उण्मै–सत्यनिष्ठ; कारुटम् ऍन्ऩुम् पटै तन्नाल्–'गारुड़' नामक अस्त्र से; ऍतिर् चॅय्तान्–विरोध किया। ३७८१

श्रीराम ने देखा कि फन फैलाकर नाचनेवाले, विष वमन करनेवाले उन सर्पों के विशाल मुखों से बहुत विस्तृत पृथ्वी और आकाश का भाग ग्रस्त है! 'ओह! ये सब ओर आ जुड़े हैं!' यह सोचकर श्रीराम ने उसके विरोध में अमोघ और सच्चे गरुड़ास्त्र को प्रेरित किया। ३७८१

ऍवणॅत् तन्मैत् तेहिऩ नाहत् तिऩमॅन्ऩप्
पवणत् तऩ्ऩ वॅञ्जिऱै वेहत् ताऴिल्पम्बच्
चुवणक् कोलत् तुण्ड नहन्दॊल् शिऱैवॅल्पोर्
उवणप् पुळ्ळे यायिऩ वाऩो रुलहॅल्लाम् 3782

नाकत्तु इऩम्–नागसमूह; ऍवण्–कहाँ; ऍ तन्मैत्तु एकिऩ–जैसे गये; ऍन्ऩ–वैसे ही; पवणत्तु अऩ्ऩ–पवन के समान; वॅञ् चिऱै–भीषण पक्षों के; वेकम् तॊऴिल् पम्प–वेग के कार्य के बढ़ते; चुवणम् कोलम्–स्वर्णवर्ण और; तुण्टम्–चोंचें और; नकम्–नख और; तॊल् चिऱै–प्राचीन पंख (इनके) साथ; पोर् वॅल्–युद्धविजय-कारी; उवणम् पुळ्ळे–गरुड़ पक्षी-मय; वाऩोर् उलकु ऍल्लाम्–सब स्वर्गलोक; आयिऩ–बन गये। ३७८२

तब देवलोक ही गरुड़ों से भर गये। (वे गरुड़ कैसे निकले?) बिलकुल उन नागों के ही सम, उनके पहुँचे स्थानों में सर्वत्र वे आये। उनके पक्षों से पवन निकालने का काम प्रचंड रीति से चल रहा था। स्वर्ण-वर्ण शरीर और उसी रंग की चोंच से और प्राचीन पक्षों के साथ एक-एक शोभता था। वे युद्धविजयी स्वभाव के थे। ३७८२

अळक्करुम् बुळ्ळिऩ मडैय वारऴल्
तुळक्करुम् वाय्तॊऱु मॅरियत् तॊट्टऩ
इळक्करु मिलङ्गैत्ती यिडुदु मीण्डॅऩ
विळक्किऩ मॅडुत्तऩ पोऩ्ऱ विण्णॅलाम् 3783

अळक्क अरुम्–असंख्य; पुळ्ळिऩम् अटैय–पक्षी सब; तुळक्क अरुम्–अचल; वाय् तॊऱुम्–मुख-मुख पर; आर् अऴल्–भरी आग; ऍरिय तॊट्टऩ–जलती रखने वाले; इळक्क अरु–पिघलाने में कठिन; इलङ्कै–लंका में; ईण्टु–तेजी से; ती इट्टुम्–आग लगा देंगे; ऍऩ–ऐसा; विण् ऍलाम्–सभी व्योमलोकवासी; विळक्कु इऩम्–दीप-समूह को; ऍटुत्तऩ पोऩ्ऱ–ले रहे जैसे लगे। ३७८३

असंख्यक गरुड़ पक्षी-समूह मिलकर आये। हर गरुड़ के अचल मुख में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विपुल आग विद्यमान थी। वे देवों के लिये हुए दीपों के समान लगे जिनको देवों ने यह सोचकर उठाया हो कि लंका में, जिसको साधारण प्रकार से पिघलाना कठिन है, एक साथ अनेक दीपों से पिघला देंगे। ३७८३

कुयिऩ्ऱऩ शुडर्मणि कऩलिऩ् कुप्पैयिर्
पयिऩ्ऱऩ शुडर्तरप् पदुम नाळङ्गळ्
वयिऩ्ऱौऱुङ् गवर्ऩ्वॆऩत् तुण्ड वाळ्हळाल्
अयिऩ्ऱऩ पुळ्ळिऩ मुहिरि ऩळ्ळिऩ 3784

कुयिऩ्ऱऩ–जड़ित; चुटर् मणि–उज्ज्वल रत्न; कऩलिऩ् कुप्पैयिऩ्–अग्निपुंजों के समान; पयिऩ्ऱऩ–लगे; चुटर् तर–प्रकाश देते रहे; पुळ् इऩम्–पक्षीगण; पतुमम् नाळङ्कळ्–कमल-नालों को; वयिऩ् तौऱुम्–स्थान-स्थान में; कवर्ऩ्तॆऩ–ग्रसे हों जैसे; उकिरिऩ् अळ्ळिऩ–नाखूनों से ग्रहण करके; तुण्टम् वाळ्कळाल्–चोंच रूपी तलवारों से; अयिऩ्ऱऩ–छेदकर खाया। ३७८४

गरुड़ पक्षीगणों ने उन सिरों पर जड़ित रत्नों के प्रकाश के साथ रहे सर्पों को यत्र-तत्र कमलनालों के समान अपने नखों से उठाकर अपने असि-सम चोंचों से नोच खाया। ३७८४

आयिडै यरक्कऩु मळऩ्ऱ ऩॆञ्जिऩऩ्
तीयिडैप् पॊडिऩ्दळ्ळु मुयिर्प्पऩ् शीऱ्ऱत्तऩ्
मायिरु ञालमुम् विशुम्बुम् वैप्पऱत्
तूयिऩऩ् शुडुशर मुरुमिऩ् तोऱ्ऱत्त 3785

आयिटै–तब; अरक्कऩुम्–राक्षस ने भी; अळऩ्ऱ ऩॆञ्चिऩऩ्–तपते मन का; ती–आग; इटैये–मध्य-मध्य; पॊटिऩ्तु ऎळुम्–अंगारे बन छितरे ऐसा; उयिर्प्पऩ्–सांसें छोड़नेवाला; चीऱ्ऱत्तऩ्–क्रोधी; मा इरु ञालमुम्–बहुत बड़ी पृथ्वी और; विचुम्पुम्–आकाश; वैप्पु अऱ–विना खाली स्थान के; उरुमिऩ् तोऱ्ऱत्त–वज्र के आकार के; चुटु चरम्–गरम शरों को; तूयिऩऩ्–बहुत संख्या में चलाया। ३७८५

तब राक्षस का मन खौल उठा, साँसें आग के साथ छूटीं। बहुत ही क्रुद्ध होकर उसने बड़ी भूमि और आकाश को कहीं अंतर न देकर वज्र के आकार के जलानेवाले शर छोड़े। ३७८५

अङ्गवॆङ् गडुङ्गण यियिलिऩ् वायऩौऱुम्
वॆङ्गणै पडप्पड विशैयिऩ् वीळ्ऩ्दऩ
पुङ्गमे तलैयॆऩप् पुक्क पोलुमाल्
तुङ्गवा ळरक्कऩ तुरत्तिऱ् ऱोऱ्ऱल 3786

अङ्कु–वहाँ; अ–वे; वॆम्–दारुण; कटु कणै–वेगवान शर; अयिलिऩ् वाय् तौऱुम्–अपने तीक्ष्ण मुखों में; वॆम् कणै पट–ज्यों-ज्यों श्रीराम के संबाहक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शर लगते; विचैयित्-त्यों-त्यों शीघ्र; वीळ्न्तत्त-गिरे; तुङ्कम्-ऊँचे; वाळ् अरक्कत्तु उरत्तिल्-भयानक राक्षस की छाती में; पुङ्कमे तलै अँत-पुंख ही सिर हों ऐसे; पुक्क-घुसे; तोऱ्ऱल-दिखायी नहीं दिये। ३७८६

वे गरम और वेगवान शर, ज्यों-ज्यों उनके तीक्ष्ण मुखों पर श्रीराम के भयानक शर लगे, त्यों-ज्यों वेग के साथ ऊपर से नीचे आये और पुंख ही सिर को बनाकर उन्नत रावण के बक्ष में घुसे और अदृश्य हो रहे। ३७८६

ऑक्कनिन् ऱ्ऱिदिरम रुडऱ्ऱुङ् गालैयिन्
मुक्कणान् तडवरै यॆडुत्त मॊय्म्बऱ्कु
नॆक्कत्त विञ्जैहळ् निलैयिऱ् ऱीर्न्दत्त
मिक्कत्त विरामऱ्कु वलियुम् वीरमुम् 3787

ऑक्क निन्ऱु-समान रूप से स्थित होकर; ऍतिर्-विरोध में; अमर् उटऱ्ऱम् कालैयिन्-युद्ध करते समय; मुक्कणान्-त्रिनेत्र शिव के; तट वरै-विशाल पर्वत को; ऍटुत्त-जिसने उठाया उस; मॊय्म्पऱ्कु-उस भुजबली की; विञ्चैकळ्-(माया की) विद्याएँ; नॆक्कत-च्युत होकर; निलैयिल् तोर्न्तत्त-अपनी स्थिति से हट गयीं; इरामऱ्कु-श्रीराम के; वलियुम् वीरमुम्-बल और वीरता; मिक्कत्त-बढ़ी। ३७८७

श्रीराम के विरुद्ध समानता के साथ जब रावण लड़ रहा था, तब त्रिनेत्र शिव के कैलासहारी भुजबली रावण की सीखी हुई माया की विद्याएँ भूल गयीं और अपनी स्थिति से हट गयीं (बेकार हो गयीं)। पर श्रीराम का बल और साहस बढ़ चला। ३७८७

वेदियर् वेदत्तु मॆय्यन् वॆय्यवर्क्
कादिय ऩणुहिय वऱ्ऱु नोक्कित्तान्
शादियि ऩिमिर्न्ददोर् तलैयैत् तळ्ळिऩान्
पादियिन् मदिमुहप् पहळि यॊन्ऱिऩाल् 3788

वेतियर् वेतत्तु मॆय्यन्-वेदविदों के वेदसत्यतत्त्व श्रीराम ने; वॆय्यवर्क्कु-लोकत्रासकों के; आतियन्-आदि राक्षस के; अणुकिय अऱ्ऱम्-पास आने का समय; नोक्कित्तान्-देखकर; चातियिल्-वृन्द में; निमिर्न्ततु-उन्नत रहे; ओर् तलैयै-एक सिर को; पातियिन् मति-अर्धचंद्र; मुकम्-मुखों; पकळि ऑन्ऱिऩाल्-एक अस्त्र से; तळ्ळिऩान्-काट दिया। ३७८८

वेदविदों के वेदसत्य श्रीराम ने राक्षसाधिपति के पास आने का संदर्भ देखा तो अपने वृन्द में उन्नत रहे एक सिर को एक अर्धचंद्र बाण चलाकर काट गिराया। ३७८८

मेरुवित् कॊडुमुडि वीशु कालॆऱि
पोरिडै यॊडितदपोयप पुणरि पुक्कॆऩ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आरियन् शरम्बड वरक्कन् वन्ऱलै
नीरिडै विळुन्दवु नॅरुप्पो डन्ऱुपोय् 3789

वीचु काल्–बहनेवाले पवनदेव के साथ; ऍऱि–टकराते; पोर् इटै–युद्ध में; मेरुवित् कॉटुमुटि–मेरु का शिखर; ऑटिन्तु पोय्–टूट गया और; पुणरि पुक्कॅत–समुद्र में घुसा जैसे; आरियन् चरम् पट–श्रीराम-शर के लगने से; अरक्कन् वल् तलै–राक्षस का कठोर सिर; नॅरुप्पॉटु–आग के साथ; अन्ऱु–उस दिन; पोय्–जाकर; नीरिटै वीळ्न्ततु–समुद्र में गिरा। ३७८९

जब बहनेवाले पवनदेव और आदिशेष के बीच घोर युद्ध हुआ, तब मेरु का शिखर टूटकर समुद्र में जा गिरा। उसके समान आर्य श्रीराम के शर के आघात से राक्षस का कठोर सिर आग के साथ उस दिन जाकर समुद्र-जल में गिरा। ३७८९

कुदित्तनर् पारिडैक् कुन्ऱु कूट्टऱ
मिदित्तनर् वडमुहन् दूशुम् वीशिनार्
तुदित्तनर् पाडिन राडित् तुळ्ळिनार्
मदित्तन रिरामनै वानु ळोरॅलाम् 3790

वानु उळोर् ऍलाम्–आकाशवासी सभी (देव)। कुतित्तनर्–कूदे; पार् इटै–भूमि पर; कुन्ऱु–(त्रिकूट) पर्वत; कूट्टऱु अऱ–संधियों को तोड़ते; मितित्तनर्–रौंदे; वटकमुम् तूचुम्–उतरीय और वस्त्र को; वीचिनार्–फेंका; तुतित्तनर्–स्तुति की; पाटिनर–गाये; आटि–नाचे; तुळ्ळिनार्–उछले; इरामनै–श्रीराम का; मतित्तनर्–आदर किया। ३७९०

यह देखकर आकाशवासी भूमि पर त्रिकूट पर्वत पर कूदकर उसके संधिबंधों को तोड़ते हुए रौंद दिया। अपने उत्तरीय को और वस्त्र को उठाकर उछाला। श्रीराम की स्तुति की, नाचे, उछले। श्रीराम का मान किया। ३७९०

इऱन्ददो रुयिरुडन् करुमत् तीट्टिनार्
पिऱन्बुळ दामॅनप् पॅयर्त्तु मत्तलै
मऱन्बिल वॅळुन्दवु मडित्त वायवु
शिऱन्ददु तवमलार् चॅयलुण् डाहुमो 3791

इऱन्ततु–मृत; ओर् उयिर–एक जीव; करुमत्तु ईट्टिनाल्–कर्मभाग्य-संग्रह से; उटन्–तुरंत; पिऱन्तुळतु आम्–जन्म ले चुका; ऍन–जैसे; पॅयर्त्ततुम्–फिर; मऱन्तिलतु–बिना भूले; मटित्त वामतु–मुड़े अधर के साथ; अ तलै–वह सिर; ऍळुन्तत्–उठा; चिऱन्ततु–श्रेष्ठ; तवम् अलाल्–तपस्या के बिना; चॅयल्–ऐसा कार्य; उण्टाकुमो–साध्य होगा क्या। ३७९१

मृत जीव ने कर्मभाग्यसंग्रह से फिर जन्म लिया हो, ऐसा वह सिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुड़े हुए अधर के साथ फिर प्रगट हुआ। बड़ी उत्तम तपस्या के विना यह कार्य सफल कैसे हो ? । ३७९१

कॊय्ददु कॊय्दिल दॆन्नुङ् गॊळ्हैयिन्
ऍय्दवन् दक्कणत् तॆऴुन्द दोर्शिरम्
शॆय्दवॆञ् जिनत्तुडन् शिऱक्कुञ् जॆल्वनै
वैददु तॆऴित्तदु मऴैयि नार्प्पिनाल् 3792

कॊय्ततु–तोड़ा जाकर भी; कॊय्तिलतु–न तोड़ा गया हो; ऍन्नुम् कॊळ्कैयिन्–विचार पैदा करते हुए; ऍय्त अ कणत्तु–प्रेरित उसी क्षण में; ऍऴुन्ततु ओर् चिरम्–प्रगट हुआ एक सिर; चॆय्त वॆम् चिनत्तुटन्–उठे बहुत क्रोध के साथ; चिऱक्कुम् चॆल्वनै–श्रेष्ठ धनी श्रीराम को; मऴैयिन् आर्प्पिनाल्–मेघ-गर्जन-से शोर के साथ; वैततु तॆऴित्तदु–गाली देकर डाँटा। ३७९२

यद्यपि सिर तोड़ा गया था तो भी तोड़ा ही नहीं गया हो, ऐसा भ्रम पैदा करते हुए उसी क्षण में, जब काटा गया था, वह सिर उग आया। वह बहुत प्रचंड कोप दिखाते हुए मेघगर्जन के-से स्वर में श्रीराम को डाँटा-डपटा। ३७९२

इडन्ददु किरिक्कुव डॆन्न वॆङ्गणुम्
पडर्न्ददु कुरैकडल् परुहुम् पण्बदु
विडन्दरु विऴियदु मुडुहि वेलैयिल्
किडन्ददु मार्त्ततु मऴैयिन् केऴदु 3793

विटम् तरु–विषवर्षक; विऴियतु–आँखों का होकर; मुटुकि–शीघ्र; वेलैयिल् किटन्ततुम्–जो समुद्र में रहा वह भी; किरि कुवटु–गिरिशिखर; इटन्तु ऍन्न–अलग तोड़ लिया गया हो, ऐसा रहकर; ऍङ्कणुम् पटर्न्ततु–सर्वत्र जाकर; मऴैयिन् केऴतु–मेघ-सम; कुरै कटल्–शब्दायमान समुद्र के जल को; परुकुम् पण्पतु–पीने का स्वभाव पाकर; आर्त्ततु–शोर मचा उठा। ३७९३

उधर कटे पर्वत-शिखर के समान जो समुद्र में गिरा था, वह सिर विषवमन करनेवाली आँखों के साथ सर्वत्र गया और मेघ के समान समुद्रजल को पीता हुआ शोर मचाने लगा। ३७९३

विऴुत्तितन् शिरमॆनुम् वॆहुळि मीक्कॊळ
वॆऴुत्तितन् नुयिर्हळिन् मुदलिन् वैत्तवोर्
ऍऴुत्तितन् तोळ्हळि नॆऴी डॆऴुहोल्
अऴुत्तितन् नशनिये रयिर्क्कु मार्प्पिनान् 3794

अचनि एऱु–अशनिराज को; अयिर्क्कुम् आर्प्पिनान्–डराते गर्जन वाले का; चिरम्–शिर; विऴुत्तितन् ऍन्नम्–गिरा दिया यह; वॆकुळि–क्रोध; मीकॊळ–बढ़ा तो; वॆऴुत्तितन्–प्रशंसित; उयिर्कळिन् मुतलिन्–स्वरों के आदि में; वैत्त–रखे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हुए; ओर्-एक; अॅळुत्तिनॅन्-(अकार) अक्षर रूप के; तोळ्कळिन्-कंधों पर; एळोट्टु एळु कोल्-चौदह शर; अळुत्तिनॅन्-गड़वाये। ३७९४

वज्र-भीकर गर्जनकारी रावण का क्रोध उत्तरोत्तर बढ़ता गया, क्योंकि उसके सिर को श्रीराम ने काट गिराया। उसने सर्वलोकशंसित, आदि अक्षर ओंकार वाच्य उनके कंधों पर चौदह शर गड़वा दिये। ३७९४

तलैयऱिऱ् ऱुरुवदोर् तवमु मुण्डॅन
निलैयुरु नेमिया नऱिन्दु नीशनैक्
कलैयुरु तिङ्गळिन् वडिवु काट्टिय
शिलैयुरु कैयैयुन् दलत्तिऱ् चेर्त्तिनान् 3795

तलै अऱिन्-सिर कटे तो; तरुवतु-दिलानेवाला; ओर् तवमुम्-अपार तप; उण्टु-है; अॅन अऱिन्तु-यह जानकर; निलै उरुम्-शाश्वत; नेमियान्-चक्रधारी ने; नीचनै-नीच रावण को; कलै उरु-कलादार; तिङ्कळिन्-चंद्र का; वटिवु काट्टिय-रूप रखनेवाले; चिलै उरु-धनुर्युक्त; कैयैयुम्-हाथ को भी; तलत्तिल्-भूमि पर; चेर्त्तिनान्-गिराया। ३७९५

"रावण के पास कटे सिर को पुनः पाने की तपश्शक्ति है।" यह जानकर शाश्वत चक्रधारी श्रीराम ने उस नीच के अर्धचंद्राकार बने और धनुर्धर हाथ को काटकर भूमि पर गिरा दिया। ३७९५

कॉऱ्ऱवॅऱ् जरम्बडक् कुऱैन्दु पोनकै
पऱ्ऱिय किडन्ददु शिलैयैप् पाङ्गुऱ
मऱ्ऱॊऱ्है पिडित्तदु पोल वव्विय
दऱ्ऱकै पिऱन्ददै यार ऱिन्दुळार् 3796

कॉऱ्ऱम्-विजयी; बॅम् चरम् पट-शर के लगने से; कुऱैन्तु पोन कै-कटा हाथ; पऱ्ऱिय किटन्ततु चिलैयै-जिसको पकड़े रहा उस धनु को; पाङ्कु उऱ-मनोहर रीति से; मऱ्ऱु ओर् कै-दूसरे एक हाथ ने; पिटित्तत्तु पोल-पकड़ा हो जैसे; बव्वियतु-पकड़ा (नये प्रकट) हाथ ने; अऱ्ऱ कै-कटा हाथ; पिऱन्तते-फिर जनमा; अऱिन्तुळार् यार्-किसने जाना। ३७९६

श्रीराम के विजयशर के लगने से जो हाथ कटकर गिरा उस कर की पकड़ में रहे धनुष को नये पैदा हुए हाथ ने इतने कम समय में पकड़ लिया मानो किसी दूसरे हाथ ने पकड़ा हो! कटा हाथ कब फिर लगा? —यह किसने जाना। ३७९६

पॊन्कयिऱ् ऱूर्दियान् वलियैप् पोक्कुवान्
मुन्कैयिऱ् ऱुरुमयिर् मुळ्ळिऱ् ऱुळ्ळुऱ
मिन्कैयिर् कॉण्डॅन विल्लै विट्टिला
वन्कैयैत् तन्कैयिन् वलियिन् वाङ्गिनान् 3797

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोत् कयिऱु ऊर्तियात्–आकर्षक बागडोर पकड़, रथ चलानेवाले मातलि के; वलियै पोक्कुवात्–बल को तोड़ने के लिए; मुत् कैयिल्–हाथ के अगले भाग में; तुऱुम् मयिर्–घने बालों के; मुळ्ळिल् तुळ्ळुऱ–कांटों के समान फड़कते; मिन्–बिजली; कैयिल् कोण्टॅत–हाथ में लिये रहते जैसे; विल्लै–धनु को; विट्टिला–जो नहीं चला रहा था; वल् कैयै–उस सबल हाथ को; तत् कैयित्–अपने हाथ से; बलियित् वाङ्कित्तात्–बलात् उठा फेंका। ३७९७

रावण ने सोचा कि मनोहारी बागडोर के सहारे जो रथ को चला रहा था उस मातलि को बलहीन कर देना चाहिए। उसने उस कठोर हाथ को उठाकर, जिसके अगले भाग में बाल काँटों के समान फड़क रहे थे और जो धनु को चला नहीं रहा था, मातलि पर ज़ोर से फेंका। ३७९७

विळङ्गॊळि वयिरवा ळरक्कत् वीशिय
तळङ्गिळर् तडक्कैतत् मार्बिऱ् ऱाक्कलुम्
उळङ्गिळर् पॆरुवलि युलैवित् मादलि
तुळङ्गित्तत् वाय्वऴि युदिरत् तूवुवात् 3798

विळङ्कु ऒळि–ज्वलंत शोभा वाली; वयिरम् वाळ् अरक्कत्–वज्र-तलवार के राक्षस के; वीचिय–फेंके गये; तळत् किलर्–मोटे और प्रफुल्ल; तट कै–विशाल हाथ के; तत् मार्पिल्–अपने वक्ष पर; ताक्कलुम्–लगते ही; उळम् किळर्–मन में उठा; पॆरु वलि–बड़ा दर्द; उलैविल् मातलि–अक्षय मातलि; वाय् वऴि–मुख से; उतिरम् तूवुवात् तुळङ्कित्तत्–रक्त बहाता हुआ अस्थिर हुआ। ३७९८

ज्वलंत प्रकाशमय वज्र-असि-धारी रावण का फेंका वह मोटा हाथ उसकी छाती पर जा टकराया तो अचल मातलि अपने मुख से रक्त वमन करता हुआ चलित हो गया। ३७९८

मामरत् तार्कैयाल् वरुन्दु वात्तैयोर्
तोमरत् तालुयिर् तॊलैप्पत् तूण्डित्तत्
तामरत् ताऱ्पॊरात् तहैहॊळ् वाट्पडै
कामरत् ताऱ्चिवत् करत्तु वाङ्गित्तात् 3799

अरत्ताल् पॊऱा–रेती से जो पैनाया नहीं गया; तकै कॊळ्–वैसे प्रकार का; वाळ्पटै–तलवार के हथियार को; कामरत्ताल्–'श्रीकामर' राग से; चिवत् करत्तु–शिवजी के हाथ से; वाङ्कित्तात्–जिसने पाया था; मा मरत्तु आर्–बड़े तरु के समान; कैयाल् वरुन्तुवात्तै–हाथ (के लगने) से दुःखते को; ओर् तोमरत्ताल्–एक तोमर से (को); उयिर् तॊलैप्प–प्राण लेने; तूण्टित्तत्–प्रेरित किया। (ताम्–पूरक ध्वनि)। ३७९९

जिस तलवार को रेत से पैनाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी, उस तलवार को रावण ने 'श्रीकामर' राग गाकर शिवजी से प्राप्त किया था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस रावण ने उस मातलि पर मारने के उद्देश्य से एक तोमर को चलाया, जो बड़े तरु के समान रावण के हाथ के प्रहार से छटपटा रहा था। ३७९९

माण्ड दिन्ऱ्ऱोडु मादलि वाळ्वॅन्न
मूण्ड वॅन्दळल् शिन्द मुडुक्कलुम्
आण्ड विल्लियो रॅम्मुह वॅङ्गणै
तूण्डि नान्तुह ळान्दु तोमरम् 3800

मातलि वाळ्वु–मातलि की आयु; इन्ऱ्ऱोटु माण्टतु–आज समाप्त; अॅन्न–ऐसा; मूण्ट वॅम् तळल् चिन्त–प्रज्वलित उग्र अनल निकालते हुए; मुडुक्कलुम्–जब प्रेरित किया तब; आण्ट विल्लि–स्वामी कोदंडपाणी ने; ओर्–एक; ऐ मुकम् वॅम् कणै–भयंकर पंचमुख बाण को; तूण्टितात्–चलाया; तोमरम् तुकळ् आनतु–तोमर चूर हुआ। ३८००

'मातलि की आयु आज हो गयी समाप्त !' ऐसी स्थिति की संभावना पैदा करते हुए रावण ने कोपाग्नि निकालते हुए जब तोमर चलाया तब सर्वशेषी कोदंडपाणी श्रीराम ने एक अप्रतिम पंचमुखी शर छोड़ा। उससे तोमर चूर हो गया। ३८००

ओय्व हन्ऱ दॊरुतलै नूऱुऱप्, पोय हन्ऱु पुरळप् पॊरुकणै
आयि रन्दॊडुत् तानऱि विन्ऱऱिन्, नाय हन्कैक् कडुमै नडत्तुवान् 3801

अऱिविन् तति नायकन्–ज्ञानैकनायक ने; कै कटुमै–हाथ का जोर; नटत्तुवान्–लगाकर; ओय्वु अकन्ऱतु–निरंतर; ऒरु तलै नूऱु उऱ–एक सिर के सौ होने पर भी; अकन्ऱु पोय्–वे हट दूर जायें; पुरळ–और लोटें, ऐसा; पॊरुकणै–घातक बाण; आयिरम् तॊटुत्तान्–हजार चलाये। ३८०१

ज्ञानैकनाथ ने बड़ा हस्तलाघव का प्रदर्शन करके सहस्र युद्धकारी शर चलाये, जिन्होंने एक-एक के सौ के रूप में उगनेवाले सिरों को काटकर भूमि पर गिराया, और वे सिर लोटने लगे। ३८०१

नीर्त्त रङ्गळ् तोऱु निलन्दॊऱुम्
शीर्त्त माल्वरै तोऱुन् दिशैतॊऱुम्
पार्त्त पार्त्त विडन्दॊऱुम् पः(ह)ऱलै
आर्त्तु वीळ्न्द वशनिहळ् वीळ्न्दॅन्न 3802

पल् तलै–अनेक सिर; नीर् तरङ्कङ्कळ् तोऱुम्–सागर की तरंग पर; निलम् तॊऱुम्–भूमियों पर; चीर्त्त–उत्कृष्ट; माल् वरै तोऱुम्–बड़े-बड़े पर्वतों पर; तिसै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में; पार्त्त पार्त्त इडन्तॊऱुम्–देखी जगह-जगह में; अचनिकळ् वीळ्न्तॅन्न–वज्र गिरे हों जैसे; आर्त्तु वीळ्न्त–शोर करते हुए गिरे। ३८०२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसे कटे सिर सागरतरंगों, भूमि के भागों, बड़े-बड़े पर्वतों, दिशाओं और प्रगट सभी स्थानों पर वज्र के समान बड़े शब्द के साथ गिरे। ३८०२

तहर्न्दु माल्वरै शाय्वुऱ्त् ताक्किन
मिहुन्द वान्मिशै मीन मलेन्दन
पुहुन्द मामह रक्कुलम् बोक्कऱ
मुहन्द वायिऱ् पुनलिनै मुऱ्ऱुऱ 3803

तकर्न्तु–फटकर; माल् वरै–बड़े पर्वतों को; चाय्वु उऱ ताक्किन–गिराते टकराये; मिकुन्त वान् मिचै–विशाल आकाश पर; मीनम् मलेन्तन–नक्षत्रों से टकराये; पुकुन्त–सागर में घुसकर; मा–बड़े; मकरम् कुलम्–मकरकुलों को; पोक्कु अऱ–गन्तव्यस्थान रिक्त कर; पुनलिनै–जल को; मुऱ्ऱुऱ–पूर्ण रूप से; वायिल् मुकन्त–मुख में पी लिया। ३८०३

वे सिर फटकर पर्वतों से टकराये और वे पर्वत गिर गये। आकाश में जा नक्षत्रों से टकराये। और भी उन्होंने समुद्र में घुसकर सारे जल को निगल लिया और मकरकुल कहीं जा नहीं पाये। ३८०३

पॊऴुदु नीट्टिय पुण्णियम् बोनपिन्
पऴुदु शॆल्लुमन् ऱेमऱ्ऱप् पण्बॆलाम्
तॊऴुदु शूऴ्वन कऴुदु शून्ऱु विरावणन् कण्णॆलाम् 3804

पॊऴुतु नीट्टिय–लंबे काल तक (भुक्त); पुण्णियम् पोन पिन्–पुण्य क्षय होने के बाद; मऱ्ऱु पण्पु ऎलाम्–अन्य यश आदि सभी गुण; पऴुतु चॆल्लुम् अन्ऱु–व्यर्थ हो जाते हैं न; तॊऴुतु-चूऴ्वन कऴुतु–नमन करते परिक्रमा करनेवाले पिशाचों ने; मुन् निन्ऱु–सामने रहकर; तोन्ऱु–खुले रूप से; इरावणन् कण् ऎलाम्–रावण की सभी आँखों को; चून्ऱु–नोच लिया। ३८०४

दीर्घकाल तक फल जो देता रहा वह पुण्य भुक्त हो चुकने के बाद जब क्षीण हो जाता है, तब यश आदि सारी अच्छी बातें व्यय हो जाती हैं न ? वैसे ही वे पिशाच, जो रावण की परिक्रमा, स्तुति आदि करते थे, अब आमने-सामने खड़े रहकर प्रगट रूप से रावण की आँखों को नोचते रहे। ३८०४

वाऴुम् वेलु मुलक्कैयुम् वच्चिरक्
कोऴुन् दण्डु मऴुवॆन्ऱु गूऱ्ऱमुम्
तोळिन् पत्तिहळ् तोऱुम् चुमन्दन
मीळि मॊयम्ब नुरुमॆन वीशिनान् 3805

मीळि मॊय्म्पन्–महाबली रावण ने; तोळिन् पत्तिकळ् तोऱुम्–कंधों की पंक्तियों पर; चुमन्तन–जिन्हें धारण करता रहा; वाऴुम् वेलुम् उलक्कैयुम्–तलवारें, भाले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और मूसल; वच्चिरम् कोळुम्-सशक्त वज्र; तण्टु-गदाएँ; मळु अॅतुम् कूऱ्ऱमुम्-परशु नामक यम; उरुम् अॅत वीचितात्-(इनको) अशनि के समान फेंका। ३८०५

अतिबली रावण ने, अपने कंधों की पंक्तियाँ पर जो हथियार थे, तलवारें, भाले, मूसल, सशक्त वज्र, गदाएँ, परशु नामक मौत आदि, उनको वज्र के समान उठाकर फेंका। ३८०५

अत्तैय शिन्दिड वाण्डहै वीरतुम्, वित्तैय मॅत्तिनि यादुहॉल् वॅल्लुमो
निन्तैवॅ नॅत्त निशशरत् मेत्तियैप्, पुत्तैवत् वाळियि नालॅत्तप् पॉङ्गित्तात् 3806

अत्तैय-वैसे हथियारों को; चिन्तिट-जब उसने फेंका, तब; आण् तकै वीरतुम्-पुरुषश्रेष्ठ वीर श्रीराम भी; इति वित्तैयम् अॅत्-अब करना क्या है; वॅल्लुमा यातु कोल्-जीतने का उपाय क्या; नित्तैवॅत्-खोजूँगा; अॅत्त-कहकर; निचाचरत्-राक्षस के; मेत्तियै-शरीर को; वाळियित्ताल् पुत्तैवत्-शरों से अलंकृत करूँगा; अॅत्त पॉङ्कित्तात्-ऐसा विचार कर भड़क उठे। ३८०६

रावण के वैसे चलाने पर पुरुषश्रेष्ठ वीर श्रीराम ने मन में विचारा कि अब क्या करना चाहिए ? विजय का उपाय क्या होगा ? फिर निश्चय किया कि निशाचर के शरीर को अस्त्रों से सजा दूँगा। वे उबल पड़े। ३८०६

मञ्ज रङ्गिय मार्बितुत् दोळितुम्, नञ्ज रङ्गिय कण्णितु नावितुम्
वञ्जत् मेत्तियै वार्कणै यट्टिय, पञ्ज रम्मत्त लाम्बहै पण्णित्तात् 3807

मञ्चु अरङ्किय-मेघपरास्तकारी (काले) रंग के; मार्पितुम् तोळितुम्-वक्ष पर और कंधों पर; नञ्चु अरङ्किय-विषपरास्तकारी; कण्णितुम् नावितुम्-आँखों और जीभों पर; वञ्चत् मेत्तियै-वंचक के शरीर को; वार्कणै-लंबे शरों के; अट्टिय-रहने योग्य; पञ्चरम् अॅत्तलाम् वकै पण्णित्तात्-पंजर कहने की स्थिति दिलायी। ३८०७

मेघपरास्तकारी काले रंग के उसकी छाती और कंधों पर, विष-परास्तकारी नेत्रों और जीभों में अस्त्र चलाकर उन्होंने वंचक रावण के शरीर को लंबे शरों का पिंजरा-सा बना डाला। ३८०७

वाय्नि ऱैन्दत्त कण्गळ् मऱैन्दत्त, मीनि ऱङ्गळि नॅङ्गु मिडैन्दत्त
तोय्वु ऱुङ्गणै शॅम्बुत्तल् तोय्न्दिल, पोय्नि ऱैन्दत्त वण्डप् पुऱमॅलाम् 3808

वाय् निऱैन्तत्त-मुखों में भरे; कण्कळ् मऱैन्तत्त-आँखों को छिपानेवाले; मी-श्रेष्ठ; निऱङ्कळित् अॅङ्कुम्-वक्ष पर सर्वत्र; मिटैन्तत्त-जो सटे रहे; तोय्वु उऱुम् कणै-गड़े हुए शर; चॅम् पुतल् तोय्न्तिल-रुधिर में न सनकर (उसके शरीर से निकरकर); अण्टम् पुऱम् अॅलाम्-अण्ड और बाहर सर्वत्र; पोय् निऱैन्तत्त-जा भर गये। ३८०८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुखों में भरकर, आँखों को ढँककर, उन्नत वक्ष में सर्वत्र जो घने रूप से शस्त्र गिरे वे विना रक्त के सने ही निफरे और अंड तथा बाहर सब स्थानों में जा भर गये। ३८०८

मयिरिन् कारॊऱुम् वार्हणै मारिपुक्
कुयिरुन् दोर वुरुविऩ वोडलुम्
शॆयिरुञ् जोऱ्ऱमु निऱ्कत् तिऱल्तिरिन्
दयर्वु तोऩ्ऱत् तुळङ्गि यऴुङ्गिऩान् 3809

मयिरिन् काल् तॊऱुम्–हर रोम-कूप में; वार् कणै मारि–लंबे शरों की वर्षा; पुक्कु–घुसकर; उयिरुम् तोर–श्वास को रोकते हुए; ऊटुरुविऩ–निफर गये; ओटलुम्–आगे दौड़े; चॆयिरुम्–वैर और; चोऱ्ऱमुम्–क्रोध; निऱ्क–रहे; तिऱल् तिरिन्तु–बल नष्ट हुआ; अयर्वु तोऩ्ऱ–थकावट आयी; तुळङ्कि अऴुङ्किऩान्–थर-थर काँपकर लटा। ३८०९

सारे रोमकूपों में भी शर-वर्षा जा घुसी तो रावण दम भी भर नहीं सका। वे भेदकर चले। रावण का वैर और क्रोध रह गये पर थकावट के कारण काँपते हुए रावण बहुत जर्जर हो गया। ३८०९

वारि नीर्निन् ऱॆदिर्मह रम्बडच्, चोरि शोर वुणर्वु तुळङ्गिऩान्
तेरिन् मेलिरुन् दाऩ्पण्डु तेवर्दम्, ऊरिन् मेलुम् बवऩि युलावुवान् 3810

पण्डु–पहले; तेवर् तम् ऊरिन् मेलुम्–देवलोक में भी; पवऩि उलावुवान्–विजय यात्रा जो करता था वह; वारि नीर् निऩ्ऱु–समुद्र-जल से; ऎतिर्–सामने जो आये उन; मकरम् पट–मकरों को मारते हुए; चोरि चोर–रक्त के बहते; उणर्व तुळङ्किऩान्–प्रज्ञा खोयी; तेरिऩ् मेल् इरुन्ताऩ्–रथ पर स्थिर रहा। ३८१०

देवलोकविजययात्री रावण के शरीर से रक्त ऐसा उग्र रूप से बहा कि समुद्रजल के मकर भी मर गये जो उससे टकरा गये। वह संज्ञाहीन हो रथ पर लेट गया। ३८१०

आर्त्तुक् कॊण्डॆऴुन् दुम्बर्ह ळाडिऩार्
वेर्त्तुत् तीविऩै वॆम्बि विऴुन्ददु
पोर्त्तुप् पोयन्दऩ नॆऩ्ऱु पॊलङ्गॊळ्तेर्
पेर्त्तुच् चारदि पोयिऩऩ् पिऩ्ऱुवान् 3811

आर्त्तु कॊण्टु–कोलाहल मचाकर; ऎऴुन्तु–उठकर; उम्पर्कळ् आटिऩार्–देव नाचे; तीविऩै वॆम्पि–पाप संतप्त होकर; वेर्त्तु विऴुन्ततु–स्वेद से भरकर गिरा; चारति–(रावण का) सारथी; पोर्तुप्पु ओयन्ततऩ्–युद्ध करने की शक्ति खो दी; ऎऩ्ऱु–कहकर; पिऩ्ऱुवाऩ्–पीछे हटकर; पॊलम् कॊळ् तेर्–मनोरम रथ को; पेर्त्तु–पोयिऩाऩ्–हटा ले गया। ३८११

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देव यह देख कोलाहल मचाकर नाच उठे। पाप भी संतप्त हो गिर गया। रावण का सारथी रावण को युद्ध करने की क्षमता से शून्य पाकर स्वर्णमय रथ को पीछे की ओर हटा ले गया। ३८११

कैतु ऱन्द पडैयिनन् कण्णहन्, मॅय्तु ऱन्द वुणर्वितन् वीळ्दलुम्
ॲय्दि ऱन्दविर्न् दानिमै योर्हळै, उय्दि ऱन्दुणिन् दानऱ मुन्नुवान् 3812

इमैयोर्कळै–देवों को; उय्तिऱम् तुणिन्तान्–उत्थान के मार्ग में चलने में सहायता देने के विचार वाले ने; कै तुऱन्त पडैयितन्–अस्त्र-रिक्त हाथोंवाला; कण् अकन्–विशाल; मॅय् तुऱन्त उणर्वितन्–प्रज्ञाहीन शरीरवाला बनकर; वीळ्तलुम्–नीचे ज्यों ही गिरा; अऱम् उन्नुवान्–धर्म की बात सोचकर; ॲय्तिऱम् तविर्न्तान्–अस्त्र चलाना रोक लिया। ३८१२

देवों को उत्थान में सहायता देने का निश्चय जिन्होंने किया था उन श्रीराम ने रावण को हस्तच्युत हथियारवाला और संज्ञाहीन बड़े शरीर वाला बना गिरा देखते ही धर्ममार्ग का विचार कर अस्त्र चलाने का काम रोक लिया। ३८१२

तेरि नाऱ्पिन्नै यादुञ् जॅयऱ्करि, दूऱु तानुऱ्ऱ पोदे युयर्तवन्
नूऱु वायॅन मादलि नूक्कितान्, एऱु शेवह नुम्मि दियम्बितान् 3813

मातलि–मातलि ने (श्रीराम से); उयर् तवन्–उत्कृष्ट तपस्वी रावण; तेरिनाल्–होश में आया; पिन्नै यातुम्–फिर कुछ भी; ॲयऱ्कु अरितु–करना दुर्वार होगा; ऊऱु उऱ्ऱपोते–संकटग्रस्त है, तभी; नूऱुवाम्–मार दें; ॲन–कहकर; नूक्कितान्–उकसाया; एऱु चेवकनुम्–सिंह-सम वीर ने; इतु इयम्पितान्–यह बात कही। ३८१३

मातलि ने श्रीराम को समझाया कि रावण उत्कृष्ट तपस्वी है। होश में आयगा तो कुछ (हानि) करना असंभव हो जायगा। जब वह कष्ट में है तभी उसे मिटा दें। उसने उन्हें उकसाया। पर वर्धन-शील बलवान श्रीराम ने यों उत्तर दिया। ३८१३

पडैतु ऱन्दु मयङ्गिय पण्बिना, निडैतॅ ऱुम्बडि पार्त्तिहल् नीदियिन्
नडैतु ऱन्दुयिर् कोडलु नन्मैयो, कडैतु ऱन्दडु पोरॅन् करुत्तॅन्ऱान् 3814

पडै तुऱन्तु–निरस्त्र; मयङ्किय पण्पितान् इडै–संज्ञा-हीन स्थिति में रहनेवाले के प्रति; तॅऱुम्पटि पार्त्तु–मिटाने का मौका देख; इकल् नीतियिन्–युद्धनीति का; नडै तुऱन्तु–मार्ग छोड़कर; उयिर् कोडलुम्–प्राण हर लेना; नन्मैयो–भला होगा क्या; ॲन् करुत्तु–मेरा विचार; पोर्–युद्ध को; कडै तुऱन्तु–पूर्ण रूप से छोड़ गया; ॲन्ऱान्–कहा। ३८१४

निरस्त्र और बेहोश रावण को मिटाने की स्थिति में पाकर उसका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

युद्धधर्मविरुद्ध रीति से प्राणनाश करना श्लाघ्य होगा क्या ? अब मेरा अभिप्राय बिलकुल युद्ध से दूर चला गया है । ३८१४

कूवि रञ्जॅऱि पॊऱ्कॊडित् तेरॊडुम्, पोव रञ्जिऩ रऩ्ऩदॊऱ् पोऴ्दिऩिऩ्
एव रञ्जलि यादव रॅण्णुडॆत्, तेव रञ्ज विरावणऩ् तेऱिऩाऩ् 3815

कूबिरम् चॆऱि–कूबर से युक्त; पॊऩ् कॊटि तेरॊटुम्–स्वर्ण-ध्वजावाले रथों पर; पोवर्–जानेवाले राक्षस; अञ्चित्तर्–डर गये; अऩ्ऩतु ओर् पोऴ्तितिऩ्–उस समय; एवर् अञ्चलियातवर्–कौन थे, जिन्होंने श्रीराम का नमन नहीं किया हो; ॲण् उटॆ–आदर करनेवाले; तेवर् अञ्च–देवों को भय में डालते हुए; इरावणऩ् तेऱिऩाऩ्–रावण होश में आ गया । ३८१५

उनका व्यवहार देखकर जो राक्षस अपने कूबर-सहित, स्वर्णध्वजा से अलंकृत अपने रथों में भय से भाग रहे थे उनमें कौन थे जिन्होंने उन्हें नमस्कार नहीं किया हो ? तब रावण देवों को भय में डालते हुए जाग उठा । ३८१५

उऱक्क नीङ्गि युणर्च्चियुऱ् ऱाऩॆऩ
मऱक्कण् वञ्ज ऩिरामऩै वाऩ्ऱिशैच्
चिऱक्कुऩ् देरॊडुङ् गण्डिलऩ् शीऱ्ऱत्तीप्
पिऱक्क नोक्किऩऩ् पिऩ्ऩुऱ नोक्किऩाऩ् 3816

मऱम् कण् वञ्चऩ्–क्रूराक्ष, वंचक रावण ने; उऱक्कम् नीङ्कि–मूर्च्छा से जागकर; उणर्च्चि उऱ्ऱाऩ् ॲऩ–होश में आया तो; वाऩ् तिचै–उन्नत दिशाओं में; चिऱक्कुम् तेरॊटुम्–श्रेष्ठ रथ के साथ; इरामऩै कण्टिलऩ्–श्रीराम को देख नहीं पाया; पिऩ् उऱ नोक्किऩाऩ्–पीछे की ओर देखकर; चीऱ्ऱम् ती पिऱक्क–कोपाग्नि जताते हुए; नोक्किऩाऩ्–दृष्टि डाली (अपने सारथी पर) । ३८१६

क्रूर आँखोंवाला रावण मूर्च्छा से जाग संज्ञा प्राप्त ही कर रहा था कि उसने श्रेष्ठ रथ के साथ श्रीराम को देख न पाकर पीछे की तरफ़ देखा और सारथी को कोपाग्नि पैदा करते हुए तरेरा । ३८१६

तेऱ्ऱि रित्तऩै तेवरुङ् गाणवे, वीर विऱ्कै यिरामऱ्कु वॆण्णहै
पेर वुय्त्तऩै येपिऴैत् तायॆऩाच्, चार दिप्पॆय रोऩैच् चलिप्पुऱा 3817

तेवरुम् काण–देवों के देखते; तेर् तिरित्तऩै–रथ लौटाया; वीरम् विल्कै इरामऱ्कु–वीर धनुर्हस्त (कोदंडपाणी) राम को; वॆळ् नकै–श्वेत मुस्कुराहट के; पेर उय्त्तऩै–आने का मौक़ा दिलाया; पिऴैत्ताय्–अपराध किया; ॲऩा–कहकर; चारति पॆयरोऩै–सारथी पदवीधारी से; चलिप्पु उऱा–झल्लाकर । ३८१७

'देवों के देखते मेरे रथ को फिरा दिया । तुमने वीर कोदंडपाणी श्रीराम को श्वेत मुस्कुराहट (हँसी) दिखाने का मौक़ा दिला दिया । तुमने घोर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अपराध किया है !' कहते हुए रावण सारथीपदविभूषित उस पर झल्लाहट दिखायी । ३८१७

तञ्ज नानुनैत् तेऱ्ऱत् तरिक्किला, वञ्ज नीपॅरुञ् जॅल्वत्तु वैहिनै
अञ्जि नेनैनच् चॅय्दनै यादलाल्, उञ्जु पोदिहो लामॅन् ऱुरुत्तॅळा 3818

तरिक्किला वञ्च–अक्षम्य वंचक; तञ्चम्–शरण देकर; नान् उनै तेऱ्ऱ–मैं तुम्हें पालता रहा और; नी पॅरुम् चॅल्वत्तु–तुम बड़े वैभव के साथ; वैकिनै–जीते रहे; अञ्चिनेन् अॅन चॅयतनै–कायर बना दिया मुझे; आतलाल्–इसलिए; उञ्चु पोति कॉल्–बचोगे क्या; अॅन्ऱु–कहकर; उरुत्तु अॅळा–कोप करके उठा । ३८१८

'अक्षम्य वंचक हो । मैंने तुम्हें शरण दिलायी और तुम बड़े वैभव भोग कर रहे थे । मुझे कायर का नाम दिला दिया । अब तुम बचोगे क्या ?' यह कहकर वह क्रोध के साथ उठा । ३८१८

वाळ्क डैक्कणित् तोच्चलुम् वन्दवन्, ताळ्क डैक्कणि यात्तलै ताळ्वुऱा
मूळ्क डैक्कडुन् दीयिन् मुनिवॉळि, कोळ्क डैक्कणित् तॅन्ऱवन् कूऱुवान् 3819

वाळ् कटै कणित्तु–तलवार को तिरछी नजर से देख; ओच्चलुम्–उसे ऊपर उठाया तो; अवन्–उसने; वन्तु–पास आकर; ताळ्कटै कणिया–चरणों को देखकर; तलै ताळ्वु उऱा–सिर झुकाकर; कोळ् कटै कणित्तु–मेरा अभिप्राय जानकर; कटै–युगांत की; कटु तीयिन्–प्रचंड आग के समान; मूळ्–उठते; मुनिवु–क्रोध को; ऑळि–दूर करें; अॅन्ऱवन्–कहा और; कूऱुवान्–आगे बोला । ३८१९

रावण ने ज्योंही तलवार पर कटाक्षपात करके ऊपर उठाया, त्योंही सारथी ने आकर चरणों पर दृष्टि डाले सिर झुकाकर निवेदन किया कि मेरा अभिप्राय जानने की कृपा करें । और युगांत की अग्नि के समान भभक उठनेवाले अपने कोप को शांत कर लीजिए । ३८१९

आण्डॊ ळिऱ्ऱुणि वोय्न्दनै याण्डिऱै
ईण्ड निऱ्ऱिडि नैयनै निन्नुयिर्
माण्ड दक्कण मॅन्ऱिडर् माऱ्ऱुवान्
मीण्ड दित्तॊळि लॅम्विनै मॅय्म्मैयाल् 3820

ऐयनै–प्रभु; आण् तॊळिल्–वीरकृत्य के; तुणिवु ओय्न्तनै–धैर्य खो गये थे; आण्टु–वहाँ; इऱै–थोड़ी देर; ईण्ट निऱ्ऱिटित्–पास खड़े रहें तो; निन् उयिर्–आपके प्राण; अक्कणम् माण्टतु–तभी अंत हो जायेंगे; अॅन्ऱु–ऐसा सोचकर; इटर् माऱ्ऱुवान्–संकट दूर करने के लिए; मीण्टतु इ तॊळिल्–लौटाने का यह काम; अॅम् विनै–हमारा कर्तव्य; मॅय्म्मै–सच । ३८२०

प्रभु ! आप वीरता के कार्य से विरत हो गये थे । वहाँ एक क्षण भी रहते तो आपके प्राण चले जाते । अतः आपको कष्टमुक्ति दिलाने के विचार से आपको फिरा ले आना हमारा कर्तव्य हो गया । ३८२०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ओय्वु मूऱ्ऱमु नोक्कि युयिर्प्पॊऱैच्
चाय्वु नोक्कुदल् शारदि तन्मैत्ताल्
माय्वु निच्चयम् वन्दुळि वाळिनाऱ्
काय्वु तक्कदन् ऱाऱ्कडै काण्डियाल् 3821

चारति तन्मैत्तु–सारथी का स्वाभाविक कार्य; ओय्वुम्–थकावट और; ऊऱ्ऱमुम्–बल को; नोक्कि–देखकर; माय्वु–मृत्यु; निच्चयम् वन्तुळि–निश्चित आयी तो; उयिर् पॊऱै–प्राणभार का; चाय्वु नोक्कुतल्–हलका होना (मरना) दूर करना; वाळिनाल् काय्वु–तलवार से मारना; तक्कतु अन्ऱु–योग्य काम नहीं; कटै काण्टियाल्–अंत में जानेंगे। ३८२१

सारथी का धर्म है स्वामी की थकावट, उनका बल आदि पर निगाह रखना; और मौत की संभावना आयी तो उनके शरीर को दुःख पहुँचाए विना अलग ले जाना। इसलिए यह काम इस योग्य नहीं कि आप तलवार से मेरा काम तमाम कर दें। आप अंत में सत्य जान लेंगे। ३८२१

ऎन्ऱि ऱैञ्जलु मॆण्णि यिरङ्गिनान्, वॆन्ऱि यन्दडन् देरिनै मीट्कॆनच्
चॆन्ऱॆ विर्न्दडु तेरुमत् तेर्मिशै, निन्ऱ वञ्ज निरामनै नेर्वुऱा 3822

ऎन्ऱु–ऐसा कहकर; इऱैञ्चलुम्–याचना करते ही; ऎण्णि–सोचकर; इरङ्कितान्–दया करके; वॆन्ऱि–विजयदायी; अम् तट–सुन्दर, विशाल; तेरिनै मीट्क–रथ को फिरा चलाओ; ऎन–ऐसा कहा तो; तेरुम्–रथ भी; चॆन्ऱु ऎतिर्न्ततु–जाकर (श्रीराम के) सामने हुआ; अ तेर् मिचै निन्ऱ–उस रथ पर स्थित; वञ्चन्–वंचक रावण ने; इरामनै नेर्वु उऱा–श्रीराम का सामना करके। ३८२२

सारथी के इतना कहकर विनय दरसाने पर रावण ने रहम खाकर आज्ञा सुनायी कि रथ फिराकर चलाओ। रावण का रथ श्रीराम के सामने आया। उस रथ पर स्थित वंचक रावण ने श्रीराम के प्रति—। ३८२२

कूऱ्ऱिन् वॆङ्गणै कोडियिन् कोडिहळ्,
तूऱ्ऱि नान्वलि मुम्मडि तोऱ्ऱिनान्
वेऱ्ऱॊर् वाळरक् कन्नॆन बॆम्मैयाल्
आऱ्ऱि नान्शॆरुक् कण्डव रञ्जिनार् 3823

कूऱ्ऱिन्–यम से भी; वॆम् कणै–भयानक शर; कोटियिन् कोटिकळ्–कोटि-कोटि; तूऱ्ऱिनान्–बरसाये; वेऱ ओर् वाळ् अरक्कन्–अन्य एक क्रूर राक्षस है क्या; ऎन–ऐसा; मुम्मटि वलि तोऱ्ऱिनान्–तिगुने बल के साथ दिखा; वॆम्मैयाल्–उग्र रूप से; चॆरु आऱ्ऱिनान्–युद्ध किया; कण्टवर् अञ्चिनार्–दर्शक सहम गये। ३८२३

मौत से भी दारुण कोटि-कोटि बाण चलाये। उसका बल तिगुना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हुआ था कि संशय होने लगा कि यह कोई दूसरा राक्षस है ! उसने बहुत उग्र रूप से युद्ध किया। दर्शक लोग सहम गये। ३८२३

ऍल्लुण् डाहि ऩॅरुप्पुण् डॅऩुमिदॉर्, शॉल्लुण् डायदु पोलवऩ् तोळिडै
विल्लुण् डाहिऩ् वॅलऱ्करिदामॅऩाच्, चॅल्लुण् डालऩ्ऩ दोर्हणै शिऩ्दिऩान् 3824

ऍल् उण्टाकिल्–धुआँ हो तो; ऩॅरुप्पु उण्टु–आग होगी; ऍऩुम्–ऐसा; इतु ओर् चॊल्–यह एक मसल; उण्टायतु पोल्–जैसे है वैसा; अवऩ्–उसके; तोळ् इटै–कंधों पर; विल् उण्टु आकिल्–धनु हो तो; वॅलऱ्करितु आम्–जीतना असंभव है; ऍऩा–सोचकर; चॅल् उण्टाल् अऩ्ऩतु–वज्रगर्भ-सा; ओर् कणै चिऩ्तिऩाऩ्–एक बाण चलाया। ३८२४

पुराना मसल हो गया कि धुआँ होगा तो वहाँ अग्नि का भी अस्तित्व होगा। वैसे ही रावण के कंधे पर जब तक धनु होगा तब तक उसको जीतना असंभव होगा ! यह सोचकर श्रीराम ने वज्रगर्भ-सा एक अस्त्र प्रेरित किया। ३८२४

नार णऩ्पडै नायह ऩुय्प्पुऱाप्, पार णङ्गिऩैत् ताङ्गुऱुम् बल्वहै
वार णङ्गळै वॅऩ्ऱवऩ् वार्शिलै, आर णङ्गै यिरुतुणि याक्किऩाऩ् 3825

नारणऩ् नायकऩ्–श्रीमन्नारायण नायक; पटै उय्प्पु उऱा–हथियार चलाकर; पार् अणङ्किऩै–भूदेवी के; ताङ्कुऱुम्–धारण करनेवाले; पल्वकै–विविध; वारणङ्कळै वॅऩ्ऱवऩ्–हाथियों के विजेता के; वार् चिलै–लम्बे धनु को; आर् अणङ्कै–भयकारी पदार्थ को; इरु तुणि आक्किऩाऩ्–दो भागों में खण्डित किया। ३८२५

श्रीराम ने अस्त्र चलाकर भूभारवाही गजों के विजेता रावण के लंबे धनु रूपी डरावनी चीज़ के दो टुकड़े कर दिये। ३८२५

अयऩ्प डैत्तविल् लायिरम् बेरिऩाऩ्
वियऩ्प डैक्कलत् तालऱुऱु वीळ्दलुम्
उयर्ऩ्ऩु यर्ऩ्ऩु कुदित्तऩ रुम्बराल्
पयऩ्प डैत्तऩम् बः(ह्) ऱवत् तालॅऩ्ऱार् 3826

अयऩ् पटैत्त विल्–ब्रह्मारचित धनु; आयिरम् पेरिऩाऩ्–सहस्रनामी के; वियऩ् पटैकलत्ताल्–विशिष्ट हथियार से; अऱुऱु वीळ्दलुम्–कट गिरा तो; उम्पर्–देव; उयर्ऩ्ऩु उयर्ऩ्ऩु कुतित्तऩर्–उछल-उछल कूदे; पल् तवत्ताल्–विविध तपस्या से; पयऩ्–फल; पटैत्तऩम्–प्राप्त किया; ऍऩ्ऱार्–कहा देवों ने। ३८२६

ब्रह्मा-रचित धनुष सहस्रनामी के बड़े अस्त्र से कटकर गिरा तो देव ऊँचे-ऊँचे उछले। कहने लगे कि 'हमारे विविध तप का फल मिला'। ३८२६

मारि मारि वरिशिलै वाङ्गिऩाऩ्, नूऱु नूऱिऩॊ डैयिरु नूऱवै
वेऱु वेऱु तिशैयुऱ वॅङ्गणै, नूऱि नूऱि यिराम ऩुऱुक्किऩाऩ् 3827

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मारि मारि–बारी-बारी से; वरिचिलै वाङ्कितान्–सबन्ध धनु लिये रहा; इरामन्–श्रीराम ने; नूऱु नूऱितोटु–सौ-सौ के; ऐयिऱु नूऱु अवै–दस (करोड़) को; वेऱु वेऱु तिचै उऱ–अलग-अलग दिशा में भेजते हुए; वॅम् कणै–दारुण अस्त्रों से; नूऱि नूऱि–काट-काट करके; नुऱुक्कितान्–चूर करा दिया। ३८२७

रावण बारी-बारी से नया धनुष लेता रहा। श्रीराम ने उन करोड़ धनुओं को भीषण अस्त्रों से चूर किया और दिशा-दिशा में उड़ा दिया। ३८२७

इरुप्पु लक्कैवेल् तण्डुको लीट्टिवाळ्, नॅरुप्पु लक्क वरुनॅडुङ् गप्पणम्
तिरुप्पु लक्कवुयत् तान्तिशै यानैयित्, मरुप्पु लक्क वळङ्गिय मार्बितान् 3828

तिचै यानैयित्–दिग्गजों के; मरुप्पु उलक्क–दाँतों को तोड़ते हुए; वळङ्किय–जो ताना था; मार्पितान्–वैसे वक्ष वाला रावण; तिरु–श्रीराम की श्री; पुलक्क–रूठ चला जाय ऐसा; इरुम्पु उलक्कै–लोहे का मूसल; वेल्–शक्ति; तण्टु–दण्ड; कोल्–साँग; ईट्टि–भाला; वाळ्–तलवार; नॅरुप्पु–आग आदि; उलक्क–जलाने; वरु–आनेवाली; नॅटु–लम्बी; कप्पणम्–काँटेदार गदा; उयत्तान्–आदि फेंका। ३८२८

दिग्गज-दन्त-भंजक-वक्ष रावण ने (वक्षःस्थलनिवासिनी) श्री को श्रीराम के वक्ष से गुस्साकर भागने को लाचार करते हुए लोहे का मूसल, दंड, साँग, भाला आदि की गरमी कम करते हुए जानेवाले लंबे 'कप्पण' (काँटेदार गदा ?) नामक अस्त्र को चलाया। ३८२८

अवैय नैत्तु मऱुत्तहन् वेलैयिऱ्, कुवैय नैत्तु मॅनक्कुवित् तान्कुऱित्
तिवैय नैत्तु मिवनैवॅल् लावॅना, नवैय नैत्तुन् दुऱन्दव नाडिनान् 3829

अवै अनैत्तुम्–उन सभी को; अऱुत्तु–काटकर; अनैत्तुम्–उन सभी को; अकल् वेलैयिल्–बड़े समुद्र में; कुवै ऍन कुवित्तान्–ढेर के समान ढेर लगा दिया; नवै अनैत्तुम्–सभी दोषों से; तुऱन्तवन्–विमुक्त श्रीराम; इवै अनैत्तुम्–ये सब; इवनै वॅल्ला–इसे जीत नहीं सकेंगे; ऍना–ऐसा; कुऱित्तु–मन में निर्णय करके; नाटिनान्–(उपाय) खोजने लगा। ३८२९

श्रीराम ने उन सबको रोककर काट दिया और सागर में उनके ढेर बना दिये। अनिंद्य अर्कवंशज ने यह सोच लिया कि ये सब अस्त्र इसे नहीं मार सकते। फिर उन्होंने तर्क किया कि क्या किया जाय ?। ३८२९

कण्णि नुण्मणि यूडु कळिन्दन, ऍण्णि नुण्मण लिऱ्पल वॅङ्गणै
पुण्णि नुण्णुळैन् दोडिय पुन्दियोर्, ऍण्णि नुण्णिय वॅन्शैयऱ् पाऱ्ऱॅना 3830

ऍण्णिन्–विचार करें तो; नुण् मणलिल् पल–बारीक बालुओं से अधिक; पुन्तियोर्–पण्डितों के; ऍण्णिन् नुण्णिय–ज्ञान से सूक्ष्म; वॅम् कणै–क्रूर शर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णिन् उळ् मणि ऊटु कळिन्ततन–आँख की पुतली को भेद चले; पुण्णिन् उळ् नुळैन्तु ओटिय–व्रणों में घुसकर चले; अॅन् चॅयल् पाऱ्ऱु–क्या कहना उचित है; अॅना–ऐसा सोचकर। ३८३०

विचारो तो बारीक बालुओं से संख्या में अधिक और ज्ञानी के विवेक से भी अधिक सूक्ष्म भीषण शर आँखों की पुतलियों में घुसकर चले थे। व्रणों में घुसकर चले थे! उन्होंने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा था। इसलिए उन्हें सोचना पड़ा कि क्या किया जाय। ३८३०

नार णन्तिरु वुन्दियि नान्मुहन्, पार वॅम्बडै वाङ्गियिप् पादहन्
मारि नॅय्वॅनॅन् ऱॅण्णि वलित्तनन्, आरि यन्नव नावि यहऱ्ऱुवान् 3831

आरियन्–आर्य श्रीराम; अवन् आवि अकऱ्ऱुवान्–उसके प्राणों का नाश करने; नारणन्–श्रीमन्नारायण की; तिरु उन्तियिल् नान्मुकन्–श्रीनाभि में उदित चतुर्मुख का; पारम् वॅम्पडै वाङ्कि–भारी भयंकर अस्त्र लेकर; इ पातकन्–इस पातक के; मारिन् अॅय्वॅन्–वक्ष पर चलाऊँगा; अॅन्ऱु अॅण्णि वलित्ततन्–ऐसा सोचकर मन में ठान लिया। ३८३१

आर्य श्रीराम ने उसके प्राणों का अंत करने के विचार से श्रीमन्नारायण की श्रीनाभी से उदित ब्रह्मा का भारी व भीषण अस्त्र लेकर ठाना कि इस पातक के वक्ष पर यह अस्त्र चलाऊँगा। ३८३१

मुन्दि वन्दुल हीन्ऱ मुदऱ्पॅयर्, अन्द णन्पडै वाङ्गि यरुच्चियाच्
चुन्द रन्शिलै नाणिऱ् ऱॊडुप्पुऱा, मन्द रम्बुरै तोळुऱ वाङ्गिनान् 3832

मुन्ति वन्तु–पहले प्रगट होकर; उलकु ईन्ऱ–जिसने लोक रचा उस; मुतल–आदि; पॅयर्–नामी; अन्तणन्–ब्राह्मण ब्रह्मा के; पडै वाङ्कि–हथियार लेकर; अरुच्चिया–अर्चना (पूजा) करके; चिलै नाणिल्–धनु के डोरे पर; तॊटुप्पु उऱा–संधान करके; चुन्तरन्–सुन्दरराज; मन्तरम् पुरै–मन्दरतुल्य; तोळ् उऱ–कंधे तक; वाङ्किनान्–खींचा (डोरा)। ३८३२

आदि-सृष्टि, लोकसर्जक ब्राह्मण ब्रह्मा का अस्त्र लेकर श्रीराम ने उसकी यथावत् पूजा की। डोरे पर संधाना और मंदरतुल्य अपने कंधे तक डोरा खींचा। ३८३२

पुरञ्जु डप्पण् डमैत्तदु पॊऱ्पणै, मरन्दु ळैत्तदु वालियै माय्त्तुळ
दरञ्जु डच्चुडर् नॅञ्ज नरकक्र्होन्, उरञ्जु डच्चुड रोन्महन् नुन्दिनान् 3833

पुरम् चुट–त्रिपुर जलाने हेतु; पण्टु अमैत्ततु–पहले रचित; पॊन् पणै मरम् तुळैत्ततु–सुन्दर डालों वाले सालवृक्ष को जिसने भेदा था; वालियै माय्त्तुळतु–बाली को जिसने मारा, उसे; अरम् चुट–(हथियार की) रेती से जलाने पर; चुटर्–ज्वलंत बननेवाला; नॅञ्चन्–मन से युक्त; अरक्कर् कोन्–राक्षसराजा के; उरम् चुट–वक्ष पर लगने; चुटरोन् मकन् उन्तिनान्–सूर्यवंश के पुत्र ने चलाया। ३८३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

त्रिपुरदहन के लिए पूर्व में रचित, सुंदर डालोंदार सालवृक्ष का भेदक और वाली का हननकारी जो था उस अस्त्र को सूर्यवंशज श्रीराम ने राक्षसराजा रावण के वक्ष से टकराये, ऐसा छोड़ा। रावण का वक्ष ऐसा था, जो ज्यों-ज्यों अस्त्र लगते त्यों-त्यों शोभा में बढ़ता । ३८३३

कालुम् वॅङ्गन लुङ्गडै काण्गिला, मालुङ् गॊण्ड वडिक्कणै मामुहम्
नालुङ् गॊण्डु नडन्ददु नान्मुहन्, मूल मन्दिरन् .दन्नॊडु मूट्टलाल् 3834

मालुम्–श्रीविष्णु ने; कॊण्ट–जो हाथ में लिया; कालुम्–पवन और; वॅम्कतलुम्–भयंकर आग; कटै काण्किला–जिसकी गति न देख सकें; वटि कणै–वह तीक्ष्ण बाण; नान् मुकन्–चतुर्मुख के; मूलम् मन्तिरम् तन्नॊटु मूट्टलाल्–बीज-मंत्र से अभिमंत्रित कर भेजने से; मा मुकम् नालुम् कॊण्टु–चारों बड़े मुखों को लेकर; नटन्ततु–चला। ३८३४

श्रीमन्नारायण के हाथ में लिया गया वह तीक्ष्ण अस्त्र इतना वेगवान था कि पवन और आग भी उसका सिरा न देख सकें। वह चतुर्मुख-मंत्र से अभिमंत्रित था। तो वह चार मुखों को अपनाकर चला। ३८३४

आऴि माल्वरैक् कप्पुऱत् तप्पुऱुम्, बाऴि माक्कड लुम्वॅळिप् पाय्न्ददाल्
ऊऴि आयिऱु मिन्मिनि यॊप्पुऱ, वाऴि वॅञ्जुडर् पेरिरुळ् वारवे 3835

वॅम् चुटर्–आतंकमयी प्रकाश से; पेर् इरुळ् वार–बड़े अंधकार को दूर करने में; ऊऴि आयिऱुम्–युगांत का सूर्य भी; मिन्मिनि ऒप्पुऱ–खद्योत-सम बन गया, ऐसे; माल् आऴि वरै–बड़ी चक्रवालगिरि के; अप्पुऱत्तु–उस पार; अप्पु उऱुम्–जल से भरे; पाऴि मा कटलुम्–बहुत बड़ा समुद्र भी; वॅळि पाय्न्ततु–बाहर निकल बहने लगा। ३८३५

जब वह अपने भीषण प्रकाश से अंधकार को दूर कर रहा था, तब वह युगांत के सूर्य को इतना निष्प्रभ बना रहा था कि सूर्य उसके सामने केवल खद्योत-सम लगे। और चक्रवाल गिरि के उस पार का सागर भी बाहर निकल बहा। ३८३५

अक्क णत्ति नयन्पडै याण्डहै, चक्क रप्पडै योडुन् दऴीइच्चॅन्ऱु
पुक्क दक्कॊडि योन्ऱुरम् बूमियुम्, तिक्क नॆत्तुम् विशुम्बुन् दिरिन्दवे 3836

अक्कणत्तिन्–उस समय; अयन् पटै–ब्रह्मास्त्र; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ के; चक्करम् पटैयोटुम्–चक्रास्त्र के साथ; तऴीइ चॅन्ऱु–मिलकर गया; अ कॊटियोन्–उस क्रूर की; उरम् पुक्कतु–छाती में घुसा; पूमियुम्–भूमि और; अनॆत्तु तिक्कुम्–सारी दिशाएँ; विचुम्पुम्–और आकाश; तिरिन्त–विचलित हुए। ३८३६

उस समय ब्रह्मास्त्र पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के चक्रास्त्र के साथ मिल चला और उस नृशंस के वक्ष में घुसा। तब भूमि, आकाश और सभी दिशाएँ विचलित हो घूमने लगीं। ३८३६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुक्कोडि वाणाळु मुयन्रुडैय पॅरुन्दवमु मुदल्वन् मुन्नाळ्
ॲक्कोडि यॅवरालुम् वॅलप्पडा यन्नक्कॊडुत्त वरमु मेन्त्
तिक्कोडु मुलहन्नॅत्तुञ् जॅरुक्कडन्द पुयवलियुन् दित्रु मार्बिर्
पुक्कोडि युयिर्परुहिप् पुरम्बोयिर् रिराहवन्रन् पुन्निद वाळि 3837

इराकवन् तन्–श्रीराघव का; पुन्नित वाळि–पवित्र अस्त्र; मुक्कोटि वाळ्नाळुम्–तीन करोड़ (वर्ष) की आयु और; मुयन्रु उटैय–परिश्रम-प्राप्त; पॅरु तवमुम्–बड़ी तपस्या-फल; मुतल्वन्–आदि ब्रह्मा के; मुन्न् नाळ्–पहले; ॲक्कोटि ॲवरालुम्–कितने ही करोड़ के किसी से; वॅलप्पटाय्–न हराये जाओगे; ॲन्न कॊटुत्त वरमुम्–कहकर दिये गये वर; एन्नै–अन्य; तिक्कु ओटुम्–दिशाओं के साथ; अन्नैत्तु–सभी; उलकुम्–लोकों को; चॅरु कटन्त–युद्ध में परास्त करनेवाला; पुयम् वलियुम्–भुजबल और; तिन्रु–हड़पकर; मार्पिल् पुक्कु–छाती में घुसकर; ओटि–जाकर; उयिर् परुकि–प्राण पीकर; पुरम् पोयिर्रु–बाहर चला गया। ३८३७

श्रीराम का पवित्र अस्त्र रावण की तीन करोड़ (वर्ष) की आयु, परिश्रम से प्राप्त तप-फल, आदिदेव का यह कहकर दिया गया वर कि किसी भी देव-जाती के किसी से मारे नहीं जाओगे, और दिग्-लोक-विजयी भुजबल —इन सबको मिटाकर उसके शरीर में सर्वत्र घुस चला और प्राण लेकर निफर गया। ३८३७

आर्क्किन्रु वानवरु मन्दणरु मुन्निवर्हळु माशि कूरित्
तूर्क्किन्रु मलर्मारि तॊडरप्पोय्प् पार्कडलिर् क्रूय्नी राडित्
तेर्क्कुन्रु विरावणन्तन् शॅळुङ्गुरुदिप् पॅरुम्बरवॅत् तिरैमेर् चॅन्रु
कार्क्कुन्रु मन्नैयान्रन् कडुङ्गणैप्पुट् टिलिन्नडुवट् करन्द दम्मा 3838

आर्क्किन्रु वानवरुम्–हो-हल्ला मचानेवाले देव और; अन्तणरुम्–ब्राह्मण; मुन्निवर्कळुम्–और मुनिगण; आचि कूरि–आशीर्वाद कहकर; तूर्क्किन्रु–जो बरसाने लगे; मलर् मारि–वह पुष्पवर्षा; तॊडर पोय्–पीछा करे ऐसे जाकर; पाल् कटलिल्–क्षीरसागर में; तूय् नीराटि–पवित्र स्नान करके; कुन्रुम् तेर्–पर्वत-सम रथ के; इरावणन् तन्–रावण के; चॅळु कुरुति–पुष्ट रक्त के; पॅरु परवै–बड़े समुद्र की; तिरै मेल् चॅन्रु–तरंगों पर जाकर; कार् कुन्रुम्–काले पर्वत के; अन्नैयान् तन्–समान रहनेवाले श्रीराम के; कटुकणै–वेगवान अस्त्रों के; पुट्टिलिन् नटुवण्–तूणीर-मध्य; करन्ततु–छिप गया। ३८३८

वह अस्त्र कोलाहलकारी देवों के और ब्राह्मणों के आशीर्वाद के साथ डाले गये फूलों के आगे-आगे चला। क्षीरसागर में पवित्र स्नान करके, पर्वतोपम रथ के स्वामी रावण के पुष्ट रक्त से भरे समुद्र की तरंगों के ऊपर से होकर नीलगिरि-तुल्य श्रीराम के वेगवान बाणों के तूणीर के अंदर जा छिप गया। ३८३८

कार्निन्रु मळैनिन्रु मुरुमुदिर्व वॅन्नत्तिणितोट् काट्टि निन्रुम्
तारनिन्रु मलैनिन्रुम् वणिककुलमु मणिककुलमुन् दहरन्बु शिन्दप्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोर्निन्ऱ विऴिनिन्ऱुम् बॊऱिनिन्ऱु पुहैयोडुङ् गुरुदि पॊङ्गत्
तेर्निन्ऱु नॆडुनिलत्तुच् चिरमुहङ्गीऴ्प् पडविऴुन्दान् शिहरम् बोल्वान् 3839

चिकरम् पोल्वान्–शिखर-तुल्य रावण; कार् निन्ऱ–काले रंग के; मऴै निन्ऱुम्–मेघ से; उरुम् उतिर्व अॆन–गाज गिरती जैसे; तिणि–बलवान; तोळ् काट्टिन् निन्ऱुम्–कन्धों के वन से; तार् निन्ऱ–माला से अलंकृत; मलै निन्ऱुम्–पर्वत से भी; पणि कुलमुम्–रत्नकुल और; मणि कुलमुम्–आभरणराशियाँ; तकर्न्तु चिन्त–टूटकर गिरीं; पोर् निन्ऱ–युद्ध पर लगी; विऴि निन्ऱुम्–दृष्टि से; पॊऱि निन्ऱु–अंगारे निकलकर; पुकैयोटुम्–धुएँ के साथ; कुरुति पॊङ्क–रुधिर उमग आया; तेर् निन्ऱु–रथ से; नॆटु निलत्तु–बड़ी भूमि पर; चिरम् मुकम्–सिर और मुख; कीऴ् पट–नीचे की ओर रहें ऐसा; विऴुन्तान्–गिरा। ३८३९

राक्षसवंश रूपी पर्वत के शिखर के समान रावण के कंधों के वन से और हारालंकृत वक्ष से मेघों से गिरते वज्रों के समान रत्नों और आभरणों की राशियाँ टूटकर गिरीं। आँखों से अंगारे निकले और धुएँ के साथ रक्त उमँग आया। इस स्थिति में वह रथ से विस्तृत भूमि पर सिर और मुख को नीचा किये औंधा गिर गया। ३८३९

वॆम्मडङ्गल् वॆहुण्डनैय शिनमडङ्ग मनमडङ्ग विनैयम् वीयत्
तॆम्मडङ्गप् पॊरुतडक्कॆच् चॆयलडङ्ग मयलडङ्ग वाऱ्ऱल् तेयत्
तम्मडङ्गु मुनिवरैयुन् दलैयडङ्ण निलैयडङ्गच् चाय्त्त नाळिन्
मुम्मडङ्गु पॊलिन्दनवम् मुऱैतुऱन्दा नुयिर्तुऱन्द मुहङ्ग ळम्मा 3840

वॆम् मटङ्कल्–भीषण सिंह; वॆकुण्डनैय–क्रुद्ध हुआ जैसे; चिनम् अटङ्क–क्रोध के थमते; मनम् अटङ्क–मन के थमते; विनैयम् वीय–कार्यों के रुक जाते; तॆम् मटङ्क–शत्रु मिटाकर; पॊरु तड कॆ–युद्ध करनेवाले विशाल हाथों के; चॆयल् अटङ्क–निष्क्रिय होते; मयल् अटङ्क–कामांधता के मिटते; आऱ्ऱल् तेय–शक्ति खोकर; उयिर् तुऱन्त–जिसने प्राण छोड़े; अम् मुऱै तुऱन्तान्–उस अतिक्रमी के; मुकङ्कळ्–दसों मुख; तम् अटङ्कु–अपने अधीनस्थ; मुनिवरैयुम्–मुनियों को; तलै अटङ्क–सिर झुकाकर; निलै अटङ्क–स्थिति बिगाड़कर; चाय्त्त–जिस दिन परास्त किया था; नाळिन्–उस दिन से; मुम्मटङ्कु–तिगुने; पॊलिन्तन–शोभे। ३८४०

भीषण सिंह क्रुद्ध हो उठा हो वैसा क्रुद्ध जो था उसका क्रोध थम गया। मन रुक गया। कार्य-शक्ति खो गयी। शत्रुत्रासक योद्धा और विशाल हाथों का काम रुक गया। सीता पर प्रेम दूर हो गया। बल मिट गया। इस तरह जो मर गया उस अधर्मी रावण के मुख अब उस दिन से तिगुने छविमय रहे, जिस दिन उन्होंने अपने अधीनस्थ मुनियों का सिर नवाया था और गौरव बिगाड़ा था। ३८४०

पूदलत्ति नाक्कुवाय् नीविडुमिप् पॊलन्देरं यॆन्ऱु पोदिन्
मादलिप्पे रवनकडव मणडलवत्ति नपपॊळ्दे वरुद लोडुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मीदलत्त परुन्दारै विशुम्बळप्पक् किडन्दान्तन् मेनि मुऱुङ्
गादलित्त वुरुवाहि यऱम्वळर्क्कुङ् गण्णाळन् तॅरियक् कण्डान् 3841

नी विटुम्–तुम जो चलाते हो; इ पॊलम् तेरै–इस सुन्दर रथ को; पूतलत्तिन्–भूमि पर; आक्कुवाय्–लगाते चलाओ; ऎन्ऱ पोतिन्–जब श्रीराम ने कहा; मातलि पेरवन्–तब मातलि श्रेष्ठ के; कटव–चलाने से; मण्टलत्तिन्–भूमंडल में; अप्पॊऴुते–तभी; वरुतलोटुम्–आया तो; तन् मेनि मुऱुम्–जिनका सारा शरीर; कातलित्त उरुवाऴि–प्रेम का पात्र बना रहा; अऱम् वळर्क्कुम्–धर्मसंवर्धक; कण्णाळन्–दयालु ने; मीतु अलैत्त–ऊपर जो लहरें मारता रहा; पॆरु तारै–वह रक्त की बड़ी धारा; विचुम्पु अळप्प–आकाश तक गया; किटन्तान्–ऐसा जो पड़ा रहा; तॅरिय कण्टान्–उसे खूब देखा। ३८४१

श्रीराम ने मातलि को हिदायत दी कि तुम जो रथ चला रहे हो उसे भूमि पर लगे चलाओ। मातलि भूतल पर आया। तब रावण के शरीर से रक्त उछलकर धर्मसंवर्धक, दयालु, सर्व-काम्य-विग्रह श्रीराम पर लगता हुआ आकाश तक गया और वह शरीर नीचे पड़ा रहा। श्रीराम ने उसे खूब देखा। ३८४१

तेरिन्नैनी कॊडुविशुम्बिऱ् चॆल्हॆन्न मादलियैच् चॆलुत्तिप् पिन्नर्प्
पारिडमी दिनिन्नणुहित् तम्बियॊडुम् बडैत्तलैव रॆवरुञ् जुऱ्ऱप्
पोरिडैमीण् डॊरुवरुक्कुम् बुऱङ्गाडाप् पोर्वीरन् पॊरुदु वीऴ्न्द
शीरिन्नैये मनमुवप्प बुरुमुऱुन् दिरुवाळन् तॅरियक् कण्डान् 3842

नी तेरिन्नै कॊटु–तुम रथ लेकर; विचुम्पिल् चॆल्क–स्वर्गलोक चले जाओ; ऎन्ऱ–कहकर; मातलियै–मातलि को; चॆलुत्ति–बिदा देकर; पिन्नर्–बाद; पार् इटम् मीतिन्नि–भूमि पर; अणुकि–पास आकर; तिरुवाळन्–श्रीनाथ; तम्पियॊटुम्–अपने भाई के साथ; पटै तलैवर्–सेनापति; ऎवरुम् चुऱ्ऱ–सभी के घेरे आते; पोर् इटै मीण्टु–युद्ध से हटकर; ऒरुवर्क्कुम् पुऱम् कॊटा–किसी को भी पीठ न दिखानेवाले; पोर् वीरन्–योद्धा वीर; पॊरुदु वीऴ्न्त–जो लड़कर गिरा था; चीरिन्नैये–उसकी श्रेष्ठता को; मनम् उवप्प–मन में आनन्द के साथ; उरु मुऱुम्–सारे शरीर पर; तॅरिय कण्टान्–खूब दृष्टि डालकर देखा। ३८४२

फिर श्रीराम ने मातलि को आज्ञा दी कि रथ को स्वर्ग में ले चलो। बाद श्रीनाथ श्रीराम भूमि पर आये। भाई लक्ष्मण और घेरे आये सेनापतियों के साथ वे और पास आये और उस महावीर रावण के युद्ध करके गिरे रहने का शान मोद के साथ देखा जो अब तक कभी युद्धस्थल से पीठ दिखाकर नहीं लौटा था। उन्होंने उसके शरीर के अंग-अंग को पूर्ण रूप से निहारा। ३८४२

अलैमेवुङ् गडलुपुडैशू ऴवत्तियॆलाङ् गात्तळिक्कु मडर्क्कै वीरन्
शिलैमेवुङ् गुडुङ्गणैयार् पडुहळत्ते मनत्तोमै शिदैन्दु वीऴ्न्दोन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तलैमेलुन् दोण्मेलुन् दडमुदुहिऱ् पडर्पुयत्तुन् दावि येऱि
मलैमेनिन् ऱाडुवपो लाडिनवाल् वानरङ्गळ् वरम्बि लाद 3843

अलै मेवुम्–तरंगाकीर्ण; कटल् पुटै चूऴ्–समुद्र की घिरी; अवनि ऍलाम्–सारी भूमि का; कात्तु अळिक्कुम्–रक्षक व सहायक; अटल् कै वीरन्–सबल भुजा वाले के; चिलै मेवुम्–धनु में लगे; कटुकणैयाल्–वेगवान अस्त्र से; पटु कळत्ते–युद्ध के मैदान में; मनम् तीमै चितैन्तु–मन की बुराई मिटाकर; वीऴ्न्तोन्–जो गिरा रहा उसके; तलै मेलुम्–सिरों पर; तोळ् मेलुम्–और कंधों पर; तट मुतुकिल्–विशाल पीठ में; पटर् पुयत्तुम्–विशाल हाथों पर; तावि एऱि–उछल, चढ़कर; वरम्पु इलात–असीम; वानरङ्कळ्–वानर; मलै मेल् निन्ऱु–पर्वत पर रहते; आडुव पोल्–नाचते जैसे; आटिन–नाचे। ३८४३

तरंगाकीर्ण-समुद्रावृत लोकों के पालक और सहायक सबल भुजाओं के स्वामी श्रीराम के धनु पर से निकले क्रूर अस्त्र से हत होकर रावण युद्धस्थल में पड़ा रहा। उसके मन की बुराई नष्ट हो गयी थी। वानर उसके सिरों, कंधों, विशाल पीठ और विस्तृत भुजाओं पर उछल-उछल चढ़े। और वे असंख्यक वानर पर्वत पर नाचते जैसे नाचे। ३८४३

तोडुऴुद नऱुन्दॊडैयऱ् ऱॊहैयुऴुद किळैवण्डिन् शुऴियत् तॊङ्गऱ्
पाडुऴुद पडर्वॆरिनिन् पणियुऴुद वणिनिहर्प्पप् पणैक्कै यानैक्
कोडुऴुद नॆडुन्दऴुम्बिन् कुवैतऴुवि यॆऴुमेहक् कुऴुविन् कोवैक्
काडुऴुद कॊऴुम्बिऱैयिऱ् करैकऴुन्ऱु किडन्दनपोऱ् किडक्ककक् कण्डान् 3844

तोटु उऴुत–पंखुड़ियों-सह; नऱु तॊटैयल–सुगंधित पुष्पमाला की; तॊकै उऴुत–पुष्पराशियों पर रहे; किळै–शाखाओं-सहित; वण्टिन्–भ्रमरावृत; चुऴियल् तॊङ्कल्–'वक्र' मालाएँ; पाटुऴुत–पार्श्व में पड़ी रहीं; पटर्–विशाल; वॆरिन्–पीठ; इन् पणि उऴुत–अच्छी कारीगरी से युक्त; अणि निकर्प्प–आभरण के समान रही; पणै कै–मोटी सूंड़ों के; यानै कोटु उऴुत–गजों के दाँतों के छेदने से बने; नॆटु तऴुम्पिन्–बड़े दाग़ों की; कुवै तऴुवि–राशियों से युक्त; ऍऴुम् मेकम् कुऴुविन्–उठते मेघसमूहों की; कोवै–पंक्तियों का; काटु–वन; उऴुत–जिसमें रहा; कॊऴुम् पिऱैयिल्–उस पुष्ट कलाचन्द्र के साथ; करै कऴुन्ऱु–कलंक-रहित; किटन्तत पोल्–पड़ा रहा जैसे; किटक्क कण्टान्–पड़ा रहा रावण, उसको देखा श्रीराम ने। ३८४४

श्रीराम ने रावण की पीठ देखी। आसपास पंखुड़ियों-सहित सुन्दर फूलों की मालाएँ बिखरी पड़ी थीं और उन पर भ्रमर बैठे कुरेद रहे थे। उसकी पीठ पर दिग्गजों के भेदने से दाग़ लगे हुए थे। वे लंबे-चौड़े दाग़ उठते मेघ-मध्य शोभित पुष्ट तथा कलंक-हीन कलाचंद्र के समान आभरण-सा भास देते हुए पड़े हुए थे। श्रीराम ने उन निशानों को निहारा। ३८४४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तळिरियल् पॊरुट्टिन् वन्द शीऱ्ऱमुन् दरुक्कि नॊन्ऱन्
किळरिय लुरुवि नॊडुङ् गिळिप्पुऱक् किळर्न्दु तोन्ऱुम्
वळरियल् वडुविऱ् चॆम्मैत् तन्मैयु मरुव निन्ऱ
मुळरियङ् गण्णन् मूरन् मुऱुवलन् मॊळिव दानान् 3845

मरुव निन्ऱ–पास स्थित; मुळरि अम् कण्णन्–पंकजाक्ष; तळिर् इयल्–पल्लव-सम सीता के; पॊरुट्टिन् वन्त–कारण उत्पन्न; चीऱ्ऱमुम्–क्रोधी और; तरुक्कितोत् तन्–गर्वीले रावण के; किळरियल्–शोभित; उरुवितोडुम्–आकार के साथ; किळिप्पु उऱ–चिर, मिट गया; किळर्न्तु तोन्ऱुम्–प्रफुल्लित दिखनेवाले; वळर् इयल्–वर्धनशील; वटुविल्–दाग़ से; चॆम्मैत्तु अन्मैयुम्–श्रेष्ठता से रहितता जान; मूरल् मुऱुवलन्–मंदहासयुक्त हो; मॊळिवतु आनान्–(श्रीराम) कहने लगे। ३८४५

रावण के बहुत समीप खड़े थे पंकजाक्ष श्रीराम। पल्लव-तुल्य सीतादेवी के कारण रावण क्रोधी और घमंडी बना था। अब उसका सुंदर शरीर चिरकर विकृत हो गया था। उस पर विलसनेवाला दाग़ वर्धित होता लगता था। श्रीराम ने सोचा कि इस दाग़ ने उनकी वीरता को श्रेष्ठता से रहित बना दिया। अतः वे मुस्कुराते हुए बोले। ३८४५

वॆन्ऱिया नुलह मून्ऱु मॆय्म्मै यान्मेवि नालुम्
पॊन्ऱिऱा नॆन्ऱु तोळैप् पॊदुवऱ नोक्कुम् बॊऱ्पुम्
कुन्ऱिया शुऱ्ऱ दन्ऱे यिवनॆदिर् कुऱित्त पोरिऱ्
पिन्ऱियान् मुदुहिऱ् पट्ट पिळम्बुळ तळुम्बि नम्मा 3846

उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों को; मॆय्म्मैयान्–सच्चे रूप से; वॆन्ऱियाल्–जीतकर; मेवितालुम्–बड़ा बना रहा तो भी; पॊन्ऱिऱान्–मर गया; ऎन्ऱु–कहकर; तोळै–भुजबल को; पॊतु अऱ नोक्कुम्–विशेष रीति से दिखनेवाला; पॊऱ्पुम्–गौरव; इवन्–यह; ऎतिर् कुऱित्त पोरिल्–सामने की लड़ाई में; पिन्ऱियान्–पीछे मुड़ने से; मुतुकिऱ् पट्ट–पीठ पर लगे; तळुम्पिन् उळ–दाग़ के रूप में रहते; पिळम्पु–गोल से; कुन्ऱि–घटकर; आचु–कलंक से; उऱ्ऱतु–लगा हो गया; अन्ऱे–न। ३८४६

रावण सच ही त्रिलोक-विजय-प्रतापी था। तो भी वह मर गया। उससे मेरे भुजबल को गौरव प्राप्त हुआ। पर समक्ष चले उस युद्ध में पीठ दिखाने की वजह से उसकी पीठ पर दाग़ लग गया। रे! उस दाग़ के पुंज ने मेरे गौरव को कलंकित कर दिया न ?। ३८४६

कार्त्तवी रियनॆन् बानाऱ् कट्टुण्डा नॆन्नक् कऱ्कुम्
वार्त्तैयुण् डदनैक् केट्ट नाणुऱु मनत्ति नेऱ्कुप
पोर्त्तलैप् पुऱहिट् टेऱ्ऱ पुण्णुडैत् तळुम्बुम् बोलाम्
नेर्त्तवुङ् गाण लुऱ्ऱ वीशना रिरुक्कै निऱ्क 3847

कार्त्तत वीरियन्–कार्तवीर्य; ऎन्पानाल्–जो था उससे; कट्टुण्डान्–बद्ध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हुआ; अॅत्त कऱ्कुम्-ऐसा कहा; वार्त्तै उण्टु-वृत्तांत है; अतनै केट्टु-उसे सुनकर; नाण् उऱु-लज्जायुक्त; मनत्तिनेऱ्कु-मन वाले मुझे; पोर्तलै-युद्ध में; पुऱकिट्टु-पीठ दिखाकर; एऱ्ऱ-प्राप्त; पुण् उटै तऴुम्पुम्-व्रण का दाग भी; नेर्त्ततुम्-हुआ; काणल् उऱ्ऱ-देखना हो गया; ईचतार् इरुक्कै निऱ्क-परमेश्वर का स्थान रहे। ३८४७

कार्तवीर्य द्वारा यह बद्ध हुआ था —यह एक वृत्तांत मैंने सुना था। उसी से मैं लज्जित हुआ था। तिस पर युद्ध में पीठ पर व्रण का निशान लग गया है। इसको मिलाकर देखता हूँ तो हालत और भी बिगड़ जाती है। (अपने से हीन व्यक्ति के साथ मुझे युद्ध में जीत मिली। यह कोई शालीनता नहीं!) ईश्वर का वासस्थान कैलास भी रहा एक ओर ही। ३८४७

माण्डॊऴिन् दुलहि निऱ्कुम् वयङ्गिशै मुयङ्ग माट्टा
दूण्डॊऴि लुहन्दु तॆव्वर् मुऱुवलॆन् पुहऴै युण्णप्
पूण्डॊऴि लुडैय मार्बा पोर्प्पुऱङ् गॊडुत्तोर्प् पोन्ऱु
आण्डॊऴि लोरिऱ् पॆऱ्ऱ वॆऱ्ऱियु मवत्त मॆन्ऱान् 3848

पूण् तॊऴिल्-आभरणभरणकार्य; उटैय मार्पा-के वक्षवाले; ऊण् तॊऴिल् उकन्तु-खाने का कार्य चाहकर; तॆव्वर् मुऱुवल्-शत्रु के हास के; ऎन् पुकऴै-मेरे यश को; उण्ण-चाट लेते; पोर्-युद्ध में; पुऱम् कॊटुत्तोर्-पीठ दिखानेवाले; पोन्ऱु-के समान; आण् तॊऴिलोरिन्-पौरुष के कार्य के इस; पॆऱ्ऱ वॆऱ्ऱियुम्-की प्राप्त विजय; अवत्तम्-अ (गौरव) युक्त है; माण्टु ऒऴिन्ततु-मर गया इसलिए; उलकिल् निऱ्कुम्-लोक में स्थापित; वयङ्कु इचै-विशेष यश; मुयङ्क माट्टातु-मेरे पास नहीं आयगा; ऎन्ऱान्-कहा श्रीराम ने। ३८४८

आभरणधारणकारी वक्षवाले विभीषण! भोग की कामना करके शत्रु की मुस्कुराहट ने मेरे यश को पोंछ दिया। युद्ध में पीठ दिखायी हो, ऐसा रावण की पीठ पर दाग़ लग गया है! इस वीर रावण पर जो जीत हुई है वह निपट अबद्ध है! रावण का मरण स्थायी रहेगा। और यश भी मेरे पास नहीं आ रहेगा। श्रीराम ने यों श्रीवचन उच्चारण किया। ३८४८

अव्वुरै युरैप्पक् केट्ट वीडण नऱुविक् कण्णन्
वॆव्वुयिर्प् पोडु नीण्ड विम्मलन् वॆदुम्बु नॆञ्जन्
शॆव्वियिऱ् ऱॊडर्न्द वल्ल शॆप्पलै शॆल्व वॆन्ऱा
ऎव्वुयिर्प् पॊऱैयु नीङ्गि विरङ्गिनिन् ऱिनैय शॊन्ऱान् 3849

अव् उरै-वह कथन; उरैप्प-कहते; केट्ट-जिसने सुना; वीटणन्-वह बिभीषण; अऱुवि कण्णन्-सरिता-सी आँखों वाला; वॆम्मै नीण्ट-अधिक गर्मी से युक्त; उयिर्प्पोटु-निःश्वास के साथ; विम्मलन्-सिसकता; वॆतुम्पुम् नॆञ्चन्-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उत्तप्तमन; चॆल्व-धनी; चॆव्वियिल् तॊटरन्त अल्ल-श्रेष्ठता से असंबद्ध; चॆप्पलै-मत बोलें; ऍन्ना-कहकर; ऍव् उयिर् पॊऱैयुम्-किसी भी जन्मभार से; नीङ्कि निन्ऱ-हटकर जो खड़ा था; इरङ्कि-(उस चिरंजीव ने) करुणार्द्र होकर; इन्नैय चॊन्नान्-ये बातें कहीं। ३८४९

वह कथन सुनकर विभीषण की आँखों से सरिता के समान अश्रु-धारा बहने लग गयी। गरम लंबी साँसें छोड़ते हुए क्षोभ के साथ उसने कहा कि धनी! आप ऐसी बातें मत कहें जो सीधी नहीं। फिर चिरंजीव विभीषण ने निम्नोक्त बातें कहीं। ३८४९

आयिरन् दोळि नानुम् वालियु मरिदि नैय
मेयिन् वॆन्ऱि विण्णोर् शाबत्तिन् विळैन्द मॆय्म्मै
तायिनुन् दॊळत्तक् काण्मेऱ् ऱङ्गिय कादऱ् ऱन्मै
नोयुनिन् मुनिवु मल्लाल् वॆल्वरो नुवलऱ् पालार् 3850

ऐय-प्रभु; आयिरम् तोळिनानुम्-सहस्रभुज कार्तवीर्य और; वालियुम्-बाली को; अरितिन् मेय-कष्ट के साथ मिली; वॆन्ऱि-विजय; विण्णोर् चापत्तिन्-देवों के शाप के कारण; विळैन्त-मिली थी; मॆय्म्मै-सच; तायिनुम्-माता से भी; तॊळ तक्काळ् मेल्-पूजनीया पर; तङ्किय-ठहरा; कादल् तन्मै नोयुम्-प्रेम-रोग; निन् मुनिवुम् अल्लाल्-और आपका कोप, इनके बिना; नुवलल् पालार्-गण्य कोई; वॆल्वरो-जीत सकेंगे क्या। ३८५०

हे प्रभु! सहस्रबाहु (कार्तवीर्य) और वाली ने इस पर जो परिश्रम से विजय पायी थी वह देवों के शाप का फल था। माता से भी वंदनीया सीता पर इसने जो प्रेम रखा था उसका रोग, और आपका बाण, ये दोनों नहीं रहे तो गण्य कोई भी इसको परास्त करनेवाला है क्या? । ३८५०

नाडुळ दनयु मोडि नण्णलार् काण्गि लामऱ्
पीडुळ कुन्ऱम् बोलुम् बॆरुन्दिश यॆल्लै यानैक्
कोडुळ दनैयुम् बुक्कुक् कॊडुम्बुऱत् तळुन्दु पुण्णिन्
पाडुळ दन्ऱित् तॆव्वर् पडैक्कलम् बट्टॆन् शॆय्युम् 3851

नाटुळ तनैयुम् ओटि-लोक-सीमा तक दौड़कर; नण्णलार् काण्किलामल्-शत्रुओं को न पाकर; पीटु उळ कुन्ऱम् पोलुम्-शानदार पर्वत के समान; पॆरु तिशै ऍल्लै यानै-बड़े दिग्गजों से (लड़ने पर); कोटु-उनके दाँत; उळतनैयुम्-जितने लम्बे थे उतने; पुक्कु-घुसकर; कॊटु-वक्र; पुऱत्तु-पीठ के पीछे; अळुन्तु-घुसे इसलिए; पुण्णिन्-व्रण-दाग; पाटु उळतु-पीठ पर है; अन्ऱि-नहीं तो; तॆव्वर्-शत्रुओं के; पडै कलम् पट्टु-हथियार लगकर; ऍन् चॆय्युम्-क्या कर सकते होंगे। ३८५१

यह जहाँ तक स्थल रहा वहाँ तक दौड़ा। फिर वहाँ कोई शत्रु न मिले। तब शानदार पर्वतोपम दिग्गजों से जा टकराया। उनके दाँत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जितने लंबे थे उतने सारे इसके वक्ष में घुस गये, और पीठ तक आ गये। वही दाग़ इसकी पीठ पर हैं। नहीं तो शत्रु का हथियार इसका क्या कर सकेगा ? । ३८५१

अप्पणै यऩत्तु मार्बुक् कणियॅऩक् किडन्द वीरक्
कॆप्पणै मुऴङ्ग मेऩा ळमरिडैक् किडैत्त कालऩ्
तुप्पिणै वयिर वाळि विशैयिनुङ् गालिऩ् तोऩ्ऱल्
वॆपपणै कुत्ति ऩालुम् वॅरिनिडैप् पोय वऩ्ऱे 3852

अ पणै अऩैत्तुम्–वे सभी दाँत; मार्पुक्कु–छाती के; अणि अॅऩ किटन्त–आभरण के समान रहे; मेऩाळ्–प्राचीन दिन में; वीरम्–वीरता के प्रदर्शन में; कॆ पणै मुऴङ्क–हाथ के शंख के बजते; अमर् इटै–युद्ध में; किटैत्त–जो आया; कालऩ्–उस काल के; तुप्पु इणै–बलसंयुक्त; वयिरम् वाळि–वज्र बाणों के; विचैयिनुम्–वेग से और; कालिऩ् तोऩ्ऱल्–वायुपुत्र के; वॆम् पणै–संतापक; कुत्तिऩालुम्–घूँसे से; वॅरिन् इटै पोय–पीठ में भेद चले। ३८५२

वे सब दाँत इसके वक्ष के शृंगार के रूप में रहे। फिर प्राचीन दिन में वीरता प्रदर्शित करते हुए, शंख बजाते हुए इसने जब यम से युद्ध किया, तब यम के सबल शरों ने और बाद वायुपुत्र के भीषण घूँसों से ये दाँत पीठ में जाकर रह गये। ३८५२

अव्वडु वऩ्ऱि यिन्द वण्डत्तुम् बुऱत्तु मान्ऱ
तॆव्वडु पडैह ळञ्जा दिवऩ्वयिऱ् चॆल्लिऱ् ऱेव
वॆव्विड मीशऩ् तऩ्ऩै विऴुङ्गिनुम् बऱवै वेन्दै
अव्विड नाह मॆल्ला मणुहिनु मणुह लाऱ्ऱा 3853

तेव–देव; चॆल्लिल्–विचार करें तो; अ वटु अऩ्ऱि–उस दाग़ के अलावा; वॆव्विटम्–दारुण विष; ईचऩ् तऩ्ऩै–परमेश्वर को; विऴुङ्किनालुम्–निगल जाय तो भी; पऱवै वेन्तै–पक्षी-राज को; अव्विटम् नाकम् ऍल्लाम्–सभी आशी-विष; अणुकिनुम्–पास जायें तो भी; इन्त अण्टत्तुम्–इस अण्ड में और; पुऱत्तुम्–बाहर; आऩ्ऱ–उत्कृष्ट; तॆव् अटु–शत्रुघातक; पटैकळ्–हथियार; अञ्चातु–बेखटके; इवऩ् वयिऩ्–इसके पास; अणुकल् आऱ्ऱा–भटक नहीं सकते। ३८५३

देव ! विचार करें तो वह वही दाग़ है; नहीं तो हलाहल ही परमेश्वर को क्यों न निगल जाय, गरुड़ को चाहे सारे आशीविष सता दें, पर इस अंड में या बाहर उत्कृष्ट शत्रुघातक युद्ध के हथियार इसे कुछ कष्ट देने पास भी न भटक सकेंगे ! । ३८५३

वॆऩ्ऱियाय् पिऱिदु मुण्डो वेलैशूऴ् ञाल माण्डोर्
पऩ्ऱिया यॆयिऱ्ऱुक् कॊण्ड परम्बरऩ् मुवल पल्लोर्
ऍऩ्ऱिया मिडुक्कण् डीर्व दॆऩ्गित्ऱा रिवऩिऩ् ऱुऩ्ताल्
पॊऩ्ऱिऩा ऩॆऩ्ऱु पोदुम् तुलप्पडार् पॊयकॊ लॆऩ्बार् 3854

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॅन्ऱियाय्–विजयी; पिऱितुम् उणटो–अन्य है क्या; वेलै चूळ् ञालम्–समुद्रावृत भूमि को; आण्टु–पालन करके; ओर्–अनुपम; पन्ऱियाय्–वाराह बनकर; अॅयिऱ्ऱु कॉण्ट–दाँतों पर लेनेवाले; परम्परन् मुतल–परात्पर विष्णु आदि; पल्लोर्–अनेक; याम् इट्टुक्कण–हम दुःख से; तीर्वतु अॅन्ऱु–छूटें किस दिन; अॅन्ऱिकिन्ऱार्–ऐसा कहते; उन्ताल् इवन्–आपसे यह; इन्ऱु पॉन्ऱिनान्–आज मरा; अॅन्ऱु पोतुम्–कहने पर भी; पॉय् कॉल्–झूठ है क्या; अॅन्पार्–कहनेवाले; पुलप्पटार्–अदृश्य (कई) रहते हैं। ३८५४

विजयी ! और कोई बात है क्या ? उस परात्पर भगवान विष्णु से लेकर, जिन्होंने उस दिन समुद्रावृत भूमि को वाराहावतार लेकर अपने वक्र दाँतों पर उठाया था, अनेक सारे देव यही पूछते रहते हैं कि हमारा संकट दूर होगा किस दिन ? 'आपसे यह आज मर गया।' यह सुनने पर भी जो संशय करते हैं कि क्या यह झूठ तो नहीं, वे कितने ही लोग अदृश्य रहते हैं। ३८५४

अन्नदो वॅन्ना वीश नैयमु नाणु नीङ्गित्
तन्नदो ळिणैयै नोक्कि वीडणा तक्क दन्ऱाल्
अॅन्नदो विऱन्दु ळान्मेल् वयिर्त्तल्नी यिवनुक् कीण्डच्
चॉन्नदोर् विदियि नाले कडन्शॅयत् तुणिदि यॅन्ऱान् 3855

अन्नतो–वैसा क्या; अॅन्ना–कहकर; ईचन्–भगवान; ऐयमुम् नाणुम्–संदेह व लज्जा; नीङ्कि–त्यागकर; तन्न–अपने; तोळ् इणैयै–भुजद्वय को; नोक्कि–देखकर; वीटणा–विभीषण; इऱन्तुळान् मेल्–मृतक पर; वयिर्त्तल् अॅन्नतो–वैर करना क्या है; तक्कतु अन्ऱु–योग्य नहीं; नी–तुम; इवनुक्कु–इसके प्रति; ईण्ट–जल्दी; चॉन्नतोर्–शास्त्रोक्त; वितियिनाले–प्रकार से; कटन् चॅय्य–अपर कर्म करने; तुणिति–तैयार हो जाओ; अॅन्ऱान्–कहा। ३८५५

भगवान श्रीराम ने कहा कि क्या ऐसी बात है ? उनका संशय और उनकी शरम दूर हुई। अपने कंधों के जोड़े पर दृष्टि डालते हुए (मन में प्रफुल्लित होकर) श्रीराम ने कहा कि विभीषण ! जो मर गया उस पर वैर दिखाना क्या काम है ? वह उचित नहीं। तुम शीघ्र शास्त्रोक्त रीति से रावण का दाहकर्मादि करने को तैयार हो जाओ। ३८५५

अव्वहै यरुळि वळ्ळ लनैत्तुल हङ्ग ळोडुम्
अॅव्वहै युळ्ळ तेव रियावरु मिरैत्तुप् पॉङ्गिक्
कव्वैयिऱ् ऱीर्न्दार् वन्दु वीळ्हिन्ऱार् तम्मैक् काणच्
चॅव्वैयि नवर्मुऱ् चॅन्ऱान् वीडण निदनैच् चॅय्दान् 3856

वळ्ळल्–प्रभु; अव्वकै अरुळि–उस तरह आज्ञा करके; इरैत्तु पॉङ्कि–कोलाहल व उत्साह करके; कव्वैयिल्–दुःख से; तीर्न्तार्–छूटे लोग; वन्तु वीळ्किन्ऱार्–जो आकर नमस्कार करते; अनैत्तु उलकङ्कळोटुम्–सभी लोकवासियों के साथ; अॅव्वकै उळ्ळ तेवर्–सभी प्रकार के देव; यावर् तम्मैयुम्–सभी लोगों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के; काण–देखते; चॆव्वॆयिन्–सीधे; अवर् मुन्–उनके सामने; चॆन्ऱान्–आये; वीटणन् इतनै चॆय्तान्–विभीषण ने यह किया। ३८५६

श्रीराम उसे वह आज्ञा सुनाकर उन देवों और अन्य लोगों के सामने सीधे ढंग से गये, जो संकटविमुक्त होकर कोलाहल और उत्साह के साथ आकर उनके चरणों में नमस्कार करने आये थे। तब विभीषण ने निम्नोक्त काम किया। ३८५६

पोऴ्न्दॆन्न वरक्कन् शॆय्द पुन्ऱॊऴिल् पॊऱैयिऱ् ऱामाल्
वाऴ्न्दनी यिवनुक् केऱ्ऱ वरन्मुऱै वहुत्ति यॆन्नत्
ताऴ्न्ददोर् करुणै तन्नाऱ् ऱलैमह नरुळत् तळ्ळि
वीऴ्न्दन्न नवन्मेल् वीऴ्न्द मलैयिन्मेन् मलैवीऴ्न् दॆन्न 3857

पोऴ्न्तॆन्न–चीर दिया जैसे; अरक्कन् चॆय्त–राक्षसकृत; पुल् तॊऴिल्–क्षुद्र काम; पाऱैयिऱ्ऱु आम्–क्षम्य नहीं; वाऴ्न्त नी–जयजीव तुम; इवनुक्कु एऱ्ऱ–इसके योग्य दाहकर्मादि; वरन् मुऱै–उचित क्रम से; वकुत्ति–करो; ऍन्नत–ऐसा; ताऴ्न्ततु–पक्व; ओर करुणै तन्नाल्–एक करुणा से; तलै मकन्–नायक श्रीराम के; अरुळ–कृपा-वचन कहने पर; वीऴ्न्त मलैयिन् मेल्–गिरे पड़े रहे पर्वत पर; मलै वीऴ्न्तॆन्न–पर्वत गिरा जैसे; तळ्ळि–दुःखचालित हो; अवन् मेल्–उस पर; वीऴ्न्तनन्–गिरा। ३८५७

'हृदय को चीरता-सा राक्षस रावण ने जो काम किया वह अक्षम्य है! पर तुम उत्कृष्ट जीवन बितानेवाले हो। तुम दाहकर्म उचित क्रम से संपन्न करो।' श्रीराम ने दयापूर्ण करुणा से यह आज्ञा जब सुनायी तब विभीषण दुःख से उकसाया जाकर गिरे पड़े रहे पर्वत पर दूसरा पर्वत गिरता हो ऐसा रावण पर गिरा। ३८५७

ओवरु मुलहत् तॆल्ला वुयिर्हळु मिरङ्गि येङ्गत्
तेवरु मुनिवर् तामुञ् जिन्दैयि निरक्कञ् जेरत्
तावरुम् बॊऱैयि नान्ऱु नऱिविनैत् तहैन्दु निऱ्कुम्
आवलुम् तुयरुन् दीर वरऱ्ऱिनान् पहुवा यार 3858

ओवु अरुम्–अक्षय; उलकत्तु–लोकों के; ऍल्ला उयिर्कळुम्–सारे जीव; इरङ्कि एङ्क–दुःखी और शोकाकुल हुए; तेवरुम्–देव और; मुनिवर् तामुम्–मुनि भी; चिन्तैयिन्–मन में; इरक्कम् चेर–दया करने लगे; ता अरुम्–अमिट; पॊऱैयिनान्–क्षमाशील विभीषण; तन् अऱिविनै–अपनी बुद्धि को; तकैन्तु निऱ्कुम्–रोकते रहने वाली; आवलुम्–इच्छा और; तुयरुम्–दुःख को; तीर–छोड़ने; पकुवाय् आर–खले मुख-भर; अरऱ्ऱिनान्–रोया। ३८५८

अक्षय क्षमाशील विभीषण ने अपनी संज्ञा को रोकते रहनेवाले प्रेम और दुःख को दूर करते हुए विलाप करने लगा, जिसको देखकर अक्षय लोकों के सारे जीव दुःख और शोक से भर गये। देव और मुनि भी दयार्द्र हुए। ३८५८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उण्णादे युयिरुण्णा दॊरुनञ्जु शत्तहियॆन्नुम् बॆरुनञ् जुन्नॆक्
कण्णाले नोक्कवे पोक्कियदे युयिर्नीयुङ् गळप्पट् टाये
ऍण्णादे नॆण्णियशॊ लिन्ऱिनित्ता नॆण्णुदियो वॆण्णि लाऱ्ऱल्
अण्णावो वण्णावो वशुरर्हळ्तम् बिरळयमे यमरर् कूऱ्ऱे 3859

ऍण् इल् आऱ्ऱल्–अपार बलशाली; अण्णावो अण्णावो–हे ज्येष्ठ भाई, भ्राता; अचुरर्कळ् तम्–असुरों के; पिरळयमे–प्रलय-तुल्य; अमरर् कूऱ्ऱे–देवों के यम; ऒरु नञ्चुम्–कोई भी विष; उण्णाते–बिना खाये; उयिर् उण्णातु–जान नहीं खाता; चत्तकि ऍत्तुम्–जानकी रूपी; पॆरु नञ्चु–घोर विष; कण्णाले–आँख से; नोक्कवे–देखते ही; उन्नॆ–तुम्हें; उयिर् पोक्कियते–प्राणहीन कर चुका तो; नीयुम्–तुम भी; कळप्पट्टाये–युद्ध में मर गये; ऍण्णातेन्–(भाई का) मान न करके; ऍन्नुडैय–(जो गया) उस मेरे; ऍण्णिय चॊल्–विवेक-वचन पर; इत्तऱ इत्ति तान्–आज अभी सही; ऍण्णुतियो–ध्यान दोगे क्या। ३८५९

अपार बलशाली हे मेरे ज्येष्ठ भ्राता ! बड़े भैया ! असुरों के प्रलय-रूप ! देवों के यम ! कोई भी विष बिना खाये किसी को नहीं मारता ! पर जानकी बहुत घोर विष है ! उसने आँख से देखते ही तुम्हारा काम तमाम कर दिया ! हाय ! तुम भी युद्ध के मैदान में मर गये ! तुम्हें न मानकर मैं चला गया था। क्या अब ही सही मेरी बात पर ध्यान दोगे ? । ३८५९

ओरादे यॊरुवन्ऱ नुयिराशै कुलमहणमे लुऱ्ऱ कादल्
तीराद वशैयॆन्ऱे नॆन्नै मुनिन्द मुनिवारित् तेऱि नायो
पोराशैप पट्टॆळुन्द कुलमुऱ्ऱुम् बॊन्ऱ वुन्दान् पॊङ्गि निन्ऱ
पेराशै पॆयर्न्ददो पॆयर्न्दाशैक् करियिरियप् पुरुवम् बेर्त्ताय् 3860

आचै करि–दिग्गज; पॆयर्न्तु इरिय–अस्थिर हो भागें ऐसा; पुरुवम् पेर्त्ताय्–भौंहें ताननेवाले; ओराते–बिना सोचे; ऒरुवन् तन्–अन्य की; उयिर् आचै–प्राणप्यारी; कुलमकळ् मेल्–कुलीन स्त्री पर; उऱ्ऱ कादल्–रखा प्रेम; तीरात–अमिट; वचै–कलंक; ऍन्ऱेन्–बताया; ऍन्नै मुनिन्त–मुझपर जो किया; मुनिवु आऱि–वह कोप शांत कर; तेऱिनायो–बात समझे क्या; पोर्–युद्ध में; आचै पट्टु–चाह करके; ऍळुन्त–उठा; कुलम् मुऱ्ऱुम्–सारा कुल; पॊन्ऱवुम्–मिट गया तब; पॊङ्कि निन्ऱ–उमँगती रही; पेर् आचै–लालसा; पॆयर्न्ततो–दूर हुई क्या। ३८६०

दिग्गजों को अस्त-व्यस्त करते भौंहें ताननेवाले ! बिना विचारे दूसरे की प्राणप्यारी पत्नी, कुलीन स्त्री पर मोह रखना मैंने अमिट कलंक बताया। तुमने मुझ पर गुस्सा किया। क्या वह कोप शांत हुआ और तुम्हें बात ठीक लगी ? युद्ध की चाह कर जो कुल उठा उस कुल का संपूर्ण नाश हो गया। क्या अब तुम्हारी उत्तरोत्तर बढ़ती लालसा शांत हुई ? । ३८६०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्ऱॆरियिल् विऴुवेद वदियिवळ्का णुलहुक्को रन्नै यॆन्ऱु
कुन्ऱनैय नॆडुन्दोळाय् कूऱिनै नदुमनत्तुट् कॊळ्ळा देपोय्
उन्ऱनदु कुलमडङ्ग वुरुत्तमरिऱ् पडक्कण्डु मुऱवा हादे
पॊन्ऱिनैये यिराहवनार् पुयवलियै यित्ऱऱिन्दु पोयि नाये 3861

अन्ऱु–उस दिन; ऎरियिल्–अग्नि में; विऴु–जो प्रविष्ट हुई; वेतवति–वह वेगवती; उलकुक्कु ओर् अन्नै–संसार की अप्रतिम माता; इवळ् काण्–यह है, देखो; ऎन्ऱु–ऐसा; कुन्ऱु अनैय–पर्वतोपम; नॆटु तोळाय्–उन्नत कंधों वाले; कूऱिनेन्–मैंने कहा; अतु–वह; मनत्तुळ्–मन में; कॊळ्ळाते पोय्– न ले जाकर; उन् तनतु–तुम्हारे; कुलम् अटङ्क–सारे कुल नष्ट होकर; अमरिल् उरुत्तु–युद्ध में गुस्साकर; पट कण्टुम्–मिट गये, देखकर भी; उऱवु आकाते–नाता न जोड़कर; पॊन्ऱिनैये–मरे तो; इराकवनार–श्रीराघव के; पुयम् वलियै–भुजबल को; इन्ऱु–आज; अऱिन्तु पोयिनाये–जानकर गये ही। ३८६१

"हे पर्वतोपम उन्नत कंधोंवाले ! उस दिन जो (तुमको शाप देकर) अग्नि में प्रवेश कर गयीं वे ही संसार की अप्रतिम जननी यह हैं जानो।" मैंने कहा। पर तुमने नहीं माना। पर क्रुद्ध हो लड़ने गये। तुम्हारा सारा कुल युद्ध में मिटा। यह देखकर भी तुमने श्रीराम से मित्रता नहीं की और मौत बुला ली ! पर अच्छा हुआ कि श्रीराम का पराक्रम प्रत्यक्ष जान पाये तभी मरे। ३८६१

मन्ऱन्मा मलरोनुम् वडिमऴुवाट् पडैयोनुम् वरङ्ग ळीन्द
ऒन्ऱला दनवुडैय मुडियोडुम् बॊडियाहि युदिर्न्दु पोन
अन्ऱुता नुणर्न्दिलैये यानालुम् वानाट्टै यणुहा नित्ऱ
इन्ऱुता नुणर्न्दनैये यिरामना रियावरुक्कु मिऱैव नादल् 3862

मन्ऱल्–सुगंधित; मा मलरोनुम्–बड़े कमल का वासी; वटि–और तीक्ष्ण; मऴुवाळ्–परशु नाम के; पटैयोनुम्–हथियार के धारक; ईन्त–द्वारा दत्त; वरङ्कळ्–वर; ऒन्ऱु अलातन उटैय–एक नहीं अनेक (दस); मुटियोटुम्–सिरों के साथ; पॊटि आकि–चूर हुए; उतिर्न्तु पोन–चू गये; अन्ऱु तान्–उस दिन; उणर्न्तिलैये–नहीं समझे; आनालुम्–तो भी; वान् नाट्टै–स्वर्गलोक को; अणुका नित्ऱ–पहुँच जो गये; इन्ऱु तान्–आज ही; इरामनार्–श्रीराम का; यावर्क्कुम्–सभी का; इरैवन् आतल्–ईश्वर रहना; उणर्न्तनैये–समझे तो। ३८६२

सुगंध-कमल-वासी और तीक्ष्ण परशुधर शिव के द्वारा दत्त वर, दस सिर —सभी चूर हुए और बिखर गये। पहले तुमने नहीं जाना था सही ! क्या कम से कम आज, जब तुम वीरस्वर्ग पहुँच गये हो, समझ पाये कि श्रीराम सर्वेश्वर हैं ? । ३८६२

वीरना डुऱ्ऱायो विरिञ्जनाम् यावरुक्कु मेला मुन्ऱन्
पेरना डुऱ्ऱायो पिऱैशूडुम् बिञ्जहन्तन् पुरम् बॆऱ्ऱायो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आरणा वुन्तुयिरै यञ्जादै कॊण्डहन्ऱा रवॆला निऱ्क
मारन्तार् वलियाट्टन् दविर्न्दारो कुळिर्न्दान्तो मदिय मॆन्बान् 3863

वीरर् नाटु–वीरों के (स्वर्ग) लोक; उऱ्ऱायो–पहुँचे क्या; विरिञ्चन् आम्–विरंचि; यावरुक्कुम् मेलाम्–सर्वश्रेष्ठ; उन्ऱन्–तुम्हारे; पेरन् नाटु–दादा के लोक; उऱ्ऱायो–पहुँचे; पिऱै चूटुम्–चन्द्रधर; पिञ्ञकन् तन्–शिव के; पुरम् पॆऱ्ऱायो–लोक पहुँचे; अणा–बड़े भैया; उन् उयिरै–तुम्हारे प्राणों को; अञ्चाते–बेखटके; कॊण्टु अकन्ऱार्–ले जो गया; आऱ्–वह कौन है; अतु ऍलाम्–वह सब; निऱ्क–एक ओर रहे; मारन्तार्–मारदेव; वलि आट्टम्–अपने बल का नाच; तविर्न्तारो–छोड़ गये क्या; मतियम् ऍन्पान्–चन्द्र जो है वह; कुळिर्न्तान्तो–शीतल बना क्या। ३८६३

क्या तुम वीरस्वर्ग चले हो ? या अपने दादा विरंचि के लोक पहुँचे हो ? या चंद्रकलाधर शिवजी के स्थान को ? हे मेरे बड़े भैया ! तुम्हारे प्राणों को, बेखटके ले जानेवाला कौन है ? वह रहे ! क्या मारदेव ने अपने पराक्रम का नाच (प्रदर्शन) अभी छोड़ दिया ? चाँद भी शीतल हो गया क्या ? । ३८६३

कॊल्लाद मैत्तुन्नैक् कॊन्ऱायॆन् ऱदुकुऱित्तुक् कॊडुमै शूळ्न्दु
पल्लाले यिदळ्दुक्कुङ् गॊडुम्बाबि नॆडुम्बारिऱ् पळितीर्न् दाळो
नल्लारुन् दीयारु नरहत्तार् शॊर्क्कतार् नम्बि नम्मो
डॆल्लारुम् बहैञरे यार्मुहत्ते विळिक्किन्ऱा यॆळियै यान्ताय् 3864

कॊल्लात–न मारने योग्य; मैत्तुन्नै–बहनोई को; कॊन्ऱाय्–तुमने मारा; ऍन्ऱु कुऱित्तु–यह सोचकर; कॊटुमै चूळ्न्तु–वैर साधकर; पल्लाले–दाँतों से; इतळ् अतुक्कुम्–अधर काटनेवाली; कॊटु पावि–क्रूर पापिनी ने; नॆटु पारिल्–बड़ी भूमि पर; पळि तीर्न्ताळो–बदला चुकाया क्या; नम्पि–हे पुरुषश्रेष्ठ; नरकत्तार्–नरकवासी और; चॊर्क्कत्तार्–स्वर्गवासी; तीयारुम्–बुरे लोग; नल्लारुम्–अच्छे लोग; ऍल्लारुम्–सभी; नम्मोटु–हमारे विरोधी; पकैञरे–शत्रु ही हैं; यार् मुकत्ते–किसके मुख पर; विळिक्किन्ऱाय्–दृष्टि डालते हो; ऍळिमै आन्ताय्–हलके बन गये। ३८६४

तुमने अपने बहनोई (विद्युज्जिह्वा) को, जिसे मारना उचित नहीं था, मार दिया था। उससे पापिनी बहिन शूर्पणखा खफ़ा हुई और क्या उसने अधर दाँतों से काटते हुए तुमसे इस विशाल भूमि पर बदला ले लिया ? हे पुरुषश्रेष्ठ ! नरकवासी क्या, स्वर्गवासी; बुरे लोग क्या, अच्छे लोग —सभी तुमसे शत्रुता करनेवाले ही हैं ! फिर अब किसके मुख पर दृष्टि डालोगे ? तुम हलके हो गये ! । ३८६४

पोर्महळैक् कलैमहळैप् पुहळ्महळैत् तळुवियकै पॊऱामै कूरच्
चीर्महळैत् तिरुमहळैत् तेवर्क्कुन् दॆरिवरिय दॆय्बक् कऱ्पिन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पेर्महळैत् तऴुवुवा नुयिर्हॊडुत्तुप् पऴिहॊण्ड पित्ता पिन्नैप्
पार्महळैत् तऴुवित्तैयो तिशैयाऩै मरुप्पिऱुत्त पणैत्त मार्बाल् 3865

पोर् मकळै–विजयश्री को; कलै मकळै–सरस्वती को; पुकऴ्मकळै–यशश्री को; तऴुविय कै–आलिंगन करनेवाले हाथ; पॊऱामै कूर–ईर्ष्या में बढ़कर; चीऱ्मकळै–श्रेष्ठ देवी; तिरुमकळै–श्री को; तेवर्क्कुम्–देवों से भी; तॆरिवु अरिय–अज्ञेय; तॆय्वम् कऱ्पिन्–दिव्य पातिव्रत्य की; पेर्मकळै–बड़ी देवी को; तऴुवुवान्–गले लगाने हेतु; उयिर् कॊटुत्तु–प्राण देकर; पऴि कॊण्ट–कलंक लेकर; पित्ता–हे उन्मत्त; तिचै यानै–दिग्गजों के; मरुप्पु इऱुत्त–दाँत तोड़नेवाले; पणैत्त माऱ्पाल्–स्थूल वक्ष से; पिन्नै–फिर; पार्मकळै–भूदेवी को; तऴुवित्तैयो–लगा लिया क्या। ३८६५

तुम्हारे हाथों ने विजयश्री को, सरस्वती को और यश की देवी को आलिंगन किया था। पर उन्हें ईर्ष्यावश कराके श्रेष्ठ देवी, श्रीलक्ष्मी, देवों से भी अज्ञेय पातिव्रत्य को देवी सीता का आलिंगन करना चाहने लगे। पर जान देकर निंदा कमा लेनेवाले हे उन्मत्त ! फिर दिग्गज-दंत-भंजक मोटी छाती से भूदेवी का आलिंगन करके पड़े रहते हो क्या ? । ३८६५

ऎन्ऱेङ्गि यरऱ्ऱवान् तन्नैयॆडुत्तुच् चाम्बवन्ना मॆण्गिन् वेन्दन्
कुन्ऱोङ्गु नॆडुन्दोळाय् विदिनिलैयै मदियाद कॊळ्हैत् ताहिच्
चॆन्ऱोङ्गु मुणर्वित्तैयो तेऱादे यऴुन्दुदियो वॆन्नत् तेऱि
निन्ऱानप् पुऱत्तरक्क निलैकेट्टाळ् मयन्पयन्द नॆडुङ्गट् पावै 3866

ऎन्ऱु एङ्कि–ऐसा दुःख करके; अरऱ्ऱवान् तन्नै–विलापनेवाले उसे; ऎटुत्तु–उठाकर; चाम्पवन्ताम्–जाम्बवान; ऎण्किन् वेन्तन्–ऋक्षराज ने; कुन्ऱु ओङ्कु–पर्वतोन्नत; नॆटु तोळाय्–विशाल भुजावाले; विति निलैयै–विधि का विधान; मतियात–न मानने के; कॊळ्कैत्तु आकि–सिद्धान्त वाला बनकर; चॆन्ऱु ओङ्कुम्–जाकर बढ़नेवाले; उणर्वित्तैयो–भाव के हो गये क्या; तेऱाते–न सँभलकर; अऴुन्तितियो–मग्न हो जाओगे; ऎन्ऱ–ऐसा कहा तब; तेऱि–सँभलकर; अ पुऱत्तु–एक ओर; निन्ऱान्–खड़ा हो गया; मयन् पयन्त–मय-दुहिता; नॆटु कण् पावै–आयताक्षी प्रतिमा-सी मंदोदरी ने; अरक्कन् निलै–राक्षस का हाल; केट्टाळ्–सुना। ३८६६

दुःख से विभीषण विलाप करता रो रहा था। ऋक्षराज जाम्बवान ने उसे उठाया और धीरज दिलाया। हे पर्वतोन्नत कंधोंवाले ! विधि की गति को न मानने का सिद्धांत अपना लेकर अपनी इच्छानुसार चलनेवाले विचार-भाव के हो गये हो क्या ? सँभलोगे नहीं और दुःख में मग्न हो रहोगे क्या ? तब विभीषण सँभला और एक ओर खड़ा रह गया। तब मयसुता, आयताक्षी प्रतिमा-सी सुंदरी मंदोदरी ने रावण का हाल सुना। ३८६६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनन्दनू ऱायिर मरक्कर् मङ्गैमार्
पुनैन्दपूङ् गुऴल्विरित् तरऱ्ऱुम् बूशलार्
इनन्दोडर्न् दुडन्वर येहिना ळेन्ब
निनैन्ददु मऱन्ददु मिलाद नेञ्जिनाळ् 3867

अनन्तम् नूऱु आयिरम्–अनंत लाख; अरक्कर् मङ्कैमार्–राक्षसस्त्रियाँ; पुनैन्त–अलंकृत; पू कुऴल्–नरम केश; विरित्तु अरऱ्ऱुम्–खोलकर विलाप करते; पूचलार्–शोर के साथ; इनम् तोटर्न्तु–भीड़ में पीछा करके; उटन् वर–साथ आयीं ऐसा; निनैन्ततुम् मऱन्ततुम्–स्मरण, विस्मरण; इलात नेञ्चिनाळ्–से रहित मनवाली (मंदोदरी); एकिनाळ्–आयी। ३८६७

वह स्मरण या विस्मरण से रहित मनवाली बनकर आयी और उसके चारों ओर अनंत लाख राक्षसियाँ अलंकृत अपने नरम केश खोल बिखेरकर रोती-कलपती हुई, उसे घेरे साथ आयीं। ३८६७

इरक्कमुन् दरुममुन् दुणैक्कोण् डिन्नुयिर्
पुरक्कुनन् कुलत्तुवन् दोरुवन् पूण्डदोर्
परक्कऴि यामेनप् परन्दु नीण्डदाल्
अरक्कियर् वाय्तिऱन् दरऱ्ऱु मोदैये 3868

इरक्कमुम्–अनुताप; तरुममुम्–और धर्म को; तुणै कोण्टु–साथी बनाकर; इन् उयिर्–प्यारे प्राणों का; पुरक्कुम्–पालन करनेवाले; नल् कुलत्तु–श्रेष्ठ कुल में; वन्त ओरुवन्–उदित एक ने; पूण्टतु ओर्–जो अर्जन किया; परक्कऴि–उस अपयश; आम् ऐन–के समान; अरक्कियर्–राक्षसियों का; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱुम् ओतै–क्रंदन करने का स्वर; परन्तु नीण्टतु–फैला और बढ़ा। ३८६८

दया, धर्म आदि को अपना साथी बनाकर जीवरक्षण में अपना जीवन बितानेवाले सत्कुल-जात किसी के द्वारा अर्जित कलंक के समान राक्षसियों का खुले मुख से निर्गत विलाप का स्वर खूब फैला और वर्धित हुआ। ३८६८

नूबुरम् बुलम्बिडच् चिलम्बु नोन्दऴक्
कोबुरन् दोऱुम्बुऱङ् गुऱुहि नार्शिलर्
आबुरन् दरन्पहै यऱ्ऱ दामेना
माबुरन् दविर्न्दुविण् वऴिच्चेन् ऱार्शिलर् 3869

नूपुरम् पुलम्पिट–नूपुर बोले; चिलम्पु–पायलें; नोन्तु अऴ–दुःखी हो रोयीं; कोपुरम् तोऱुम्–गोपुर-गोपुर से; पुऱम्–बाहर; चिलर् कुऱुकिनार्–कुछ आयीं; चिलर्–कुछ; पुरन्तरन्–पुरंदर; पकै–शत्रु से; अऱ्ऱतु आम्–रहित हो गया; ऐना–ऐसा कहकर; मा पुरम्–अपने शरीर; तविर्न्तु–छोड़कर; विण्वऴि–आकाश-मार्ग में; चेन्ऱार्–गयीं। ३८६९

उनके नूपुर रुदन-स्वर निकाल रहे थे। पायलें विलाप रही थीं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गोद्वारों से कुछ आयीं; अन्य कुछ राक्षसियाँ 'पुरन्दर शत्रुहीन हो गया, हाय !' कहते हुए अपने बहुत तगड़े शरीरों को छोड़कर स्वर्ग के मार्ग में चली गयीं। ३८६९

अऴैप्पॊलि मुऴक्कॆऴ वऴहु मिन्निडक्
कुऴैप्पॊलि नल्लणिक् कुलङ्गळ् विल्लिड
उऴैप्पॊलि वुण्गणीर्त् तारै मीदुह
मऴैप्पॆरुङ् गुलमॆन वान्वन् दार्शिलर् 3870

अऴैप्पु ऒलि–पुकार का स्वर; मुऴक्कु ऎऴ–वज्र के समान उठा; अऴकु मिन्निट–सुन्दरता बिजली-सी चमकी; कुऴै–कुंडल; पॊलि–छविमय; नल् अणि–श्रेष्ठ आभरण; कुलङ्कळ्–समूह; विल् इट–धनु के समान विलसे; उऴै पॊलि–हरिण-सम; उण् कण्–काजल-लगी आँखें; नीर् तारै–अश्रुधारा; मीतु उक–शरीर पर गिरि; मऴै पॆरु–बड़ी वर्षा के; कुलम् ऎन–समूहों के समान; चिलर्–कुछ; वान् वन्तार्–आकाश-मार्ग से आयीं। ३८७०

कुछ पुकार मचाती आयीं। उनका स्वर वज्र के समान सुनायी दे रहा था। सुंदरता चमक रही थी। छविमय कुंडल आदि आभरणों का समूह प्रकाश का धनु छिटका रहे थे। हरिणों की-सी काजल-लगी आँखों से अश्रुधारा निकलकर उनके शरीर पर गिर रही थी। इस स्थिति में वर्षा के बड़े समूहों के समान कुछ राक्षसियाँ आकाश के मार्ग से आयीं। ३८७०

तलैमिशैत् ताङ्गिय करत्तर् तारैनीर्
मुलैमिशैत् तूङ्गिय मुहत्तर् मॊय्त्तुवन्
वलैमिशैक् कडलिन्वी ळन्नम् बोलवन्
मलैमिशैत् तोळ्हळ्मेल् वीऴ्न्दु माऴ्हिनार् 3871

तलै मिचै–सिरों पर; ताङ्किय–धृत; करत्तर्–हाथोंवालियाँ; तारै नीर्–धारा के अश्रु; मुलै मिचै–स्तनों पर; तूङ्किय–गिरें ऐसा; मुकत्तर्–(विनत) बदन वालियाँ; मॊय्त्तु वन्तु–भीड़ लगाती आकर; कटलिन्–समुद्र की; अलै मिचै–तरंगों पर; वीऴ्–गिरते; अन्नम् पोल्–हंसों के समान; अवन्–उस रावण के; मलै मिचै–पर्वत से भी उन्नत; तोळ्कळ् मेल्–कन्धों पर; वीऴ्न्तु–गिरकर; माऴ्कितार्–मूर्च्छित हुईं। ३८७१

वे स्त्रियाँ, जिनके हाथ सिर पर रखे हुए थे और जिनके मुख अवनत थे, जिसके कारण उनके अश्रु की धाराएँ स्तनों के अग्र भाग पर गिर रही थीं, समुद्र की तरंगों पर गिरनेवाले हंसों के समान रावण के पर्वतोन्नत कंधों पर गिरीं और मूर्छित हुईं। ३८७१

तऴुविनर् तऴुविनर् तलैयुन् वाळ्हळुम्
ऎऴुवयर् पुयङ्गळ मारबु मॆङ्गणम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुळुवित्तर् मुऱैमुऱै कूऱु कूऱुकॊण्
डळुदत्त रयर्त्तत्त ररक्कि मार्हळे 3872

अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; कुळुवित्तर्–भीड़ में; तलैयुम्–सिरों; ताळ्कळुम्–पैरों; ॲळु–लोहस्तंभ के समान; उयर्–उन्नत; पुयङ्कळुम्–भुजाओं को; मार्पु–छाती; ॲङ्कणुम्–सर्वत्र; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; कूऱु कूऱु कॊण्टु–अलग-अलग भाग बनाकर; तळुवित्तर् तळुवित्तर्–अपने से लगा-लगाकर; अळुत्तत्तर्–रोयीं; अयर्त्तत्तर्–जर्जर हुईं। ३८७२

राक्षसियाँ भीड़ लगाकर आयीं। रावण के सिरों, पैरों, स्तंभ-सम कंधों और छाती आदि अंगों का बारी-बारी से उन पर अपना हक़ निश्चित करके गले लगा-लगाकर रोयीं और जर्जर हुईं। ३८७२

वरुत्तमे ॲत्तित्तदु पुलवि वॆहलुम्
बॊरुत्तमे वाळ्वॆत्तप् पॊळुदु पोक्कित्तार्
ऒरुत्तर्मे लॊरुत्तर्वीळुन् दुयिरिर् पुल्लित्तार्
तिरुत्तमे यत्तैयवन् शिहरत् तोळ्हळ्मेल् 3873

वरुत्तम् एतु–दुःख क्या; ॲत्तित्–पूछो तो; अतु पुलवि–वह रूठन थी; वॆकलुम्–रूठन के समय में भी; वाळ्वु–जीवन; पॊरुत्तमे–योग्य ही है; ॲत्त–मानकर; पॊळुतु पोक्कित्तार्–समय बिता रही थीं; तिरुत्तमे अत्तैयवत्–(वीरता के) घाट के समान उसके; चिकरम् तोळ्कळ् मेल्–शिखरोपम कंधों पर; ऒरुत्तर् मेल्–एक के ऊपर; ऒरुत्तर् वीळुन्तु–एक गिरकर; उयिरिल् पुल्लित्तार्–प्राणों के समान कस लिया। ३८७३

उनके दुःख का हेतु क्या था ? वह उनकी रूठन था। रूठते हुए भी वे जीवन को जीने योग्य मानती थीं इस अभिमान से कि हम रावण की प्रेमिकाएँ हैं। वीरता के घाट के समान रहे रावण के शिखरोपम कंधों पर एक-एक करके वे गिरीं औरअपने प्राणों को जैसे कसकर पकड़ा। ३८७३

इयक्किय ररक्किय रुरह रेळैयर्
मयक्कमिल् शित्तियर् विज्जै मङ्गैयर्
मुयक्कियत् मुऱैकॆड मुयङ्गि त्तार्हळ्तम्
तुयक्किला वत्बुमूण् डॆवरुञ् जोरवे 3874

इयक्कियर्–यक्षस्त्रियाँ; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; उरकर् एळैयर्–उरग-कन्याएँ; मयक्कम् इल्–अभ्रांत; चित्तियर्–सिद्धस्त्रियाँ; विज्जै मङ्कैयर्–विद्याधर-महिलाएँ; ॲवरुम्–सभी; तम्–अपने; तुयक्कु इला–भक्षय; अत्पु मूण्टु–प्रेमाधिक्य से; चोर–जर्जर बनकर; मुयक्कियल्–आलिंगन का; मुऱै कॆट–क्रम भंग करके; मुयङ्कित्तार्कळ्–आलिंगन करतीं। ३८७४

यक्षबालाएँ, राक्षसियाँ, उरगकन्याएँ, अभ्रांत सिद्धस्त्रियाँ, विद्याधर-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रमणियाँ —सभी अपने अक्षय प्रेम की प्रेरणा से मृत रावण को देखकर शिथिल हुईं और (आलिंगन का) क्रम भंग करके आलिंगन करके रोयीं। ३८७४

अऱन्दॊलै वुऱमनत् तडैत्त शीदैयै
मऱन्दिलै योविनु मॆमक्कुन् वाय्मलर्
तिऱन्दिलै विऴित्तिलै यरुळुञ् जॆय्हिलै
इऱन्दनै योबॆन विरङ्गि येङ्गिनार् 3875

अऱम्–धर्म का; तॊलैवु उऱ–नाश करके; मनत्तु–मन में; अटैत्त–बंद की हुई; चीतैयै–सीता को; इनुम्–अब भी; मऱन्तिलैयो–भूले नहीं क्या; ऍमक्कु–हमें; उन् वाय् मलर्–अपने मुख का फूल; अळित्तिलै–(वचन) नहीं देते; विऴित्तिलै–आँखें नहीं खोलते; अरुळुम् चॆय्किलै–दया नहीं करते; इऱन्तनैयो–मर गये क्या; ऍन–ऐसा; इरङ्कि–दुःख करके; एङ्किनार्–रोयीं। ३८७५

वे मुख खोलकर कलपने लगीं ! धर्म का क्रम नष्ट करके तुमने अपने मन में सीता को बंद कर रखा था ? क्या अब भी तुम उसे नहीं भूले ? हमें अपने मुख का (वाणी रूपी) फूल नहीं देते ! आँख खोलकर नहीं देखते ! दया नहीं करते ! क्या तुम सचमुच मर गये ? । ३८७५

तरङ्गनीर् वेलैयिऱ् ऱडित्तु वीऴ्न्दॆन
उरङ्गिळर् मदुहैया नुरत्ति नुऱ्ऱनळ्
मरङ्गळु मलैहळु मुरुह वाय्तिऱन्
दिरङ्गिनळ् मयन्मह ळिनैय पन्निनाळ् 3876

मयत् मकळ्–मय-सुता मंदोदरी ने; उरम् किळर्–दृढ़चित्त; मतुकैयान्–बलवान रावण के; उरत्तिन्–वक्ष पर; तरङ्कम् नीर्–तरंग-सहित जल के; वेलैयिल्–सागर पर; तडित्तु वीऴ्न्तॆन–बिजली गिरी जैसे; उऱ्ऱनळ्–लगकर; मरङ्कळुम्–तरु और; मलैकळुम्–पर्वत; उरुक–पिघल जायं ऐसा; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; इरङ्किनळ्–व्याकुलता के साथ; इनैय पन्निनाळ्–ये बातें कहीं। ३८७६

मयतनया मंदोदरी शरीर व मनोबल युक्त रावण की छाती पर तरंग-संकुल समुद्र पर गिरती तड़ित् के समान गिरी और मुख खोलकर निम्नोक्त प्रकार से विलाप करती रोयीं जिसे सुनकर तरु और पर्वत भी पिघलने लगे। ३८७६

अन्नेयो वन्नेयो वाकॊडियेऱ् कडुत्तवा ऱरक्कर् वेन्दन्
पिन्नेयो बिऱप्पदुमुन् पिडित्तिरुन्द करुत्तदुवुम् बिडित्ति लेनो
मुन्नेयो विऴुन्वदुवु मुडित्तलैयो पडित्तलैय मुहङ्गळ् तानो
ऍन्नेयो वॆन्नेयो विरावणनार् मुडिन्दपरि शिदुवो पावम् 3877

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऩ्ऩेयो अऩ्ऩेयो–हाय, हाय; कॊटियेऱ्कु–कठोर मुझे; अट्टुत्तवारु आ–क्या ही हो गया; अरक्कर् वेन्तऩ्–राक्षसराजा के; पिऩ्ऩेयो इऱप्पतु–बाद ही क्या मुझे मरना था; मुऩ्–पहले से; पिटित्तिरुन्त–जो (विचार) रखती थी; करुत्ततुवुम्–वह विचार; पिटित्तिलेऩो–दृढ़ता से नहीं रखती थी क्या; मुऩ्ऩेयो–सामने; विऴुन्ततुवुम्–गिरे जो पड़े हैं; मुटि तलैयो–वे क्या (रावण के) मुकुट-मंडित सिर हैं; पटि तलैय–भूमि पर दिखनेवाले; मुकङ्कळ् तानो–उनके मुख हैं क्या; इरावणऩार्–रावण के; मुटिन्त परिचु–अंत का प्रकार; इतुवो–क्या यही; ऎऩ्ऩेयो ऎऩ्ऩेयो–क्या ही, क्या ही। ३८७७

हाय, हाय ! मैं क्रूरा हूँ ! मुझे जो हुआ वह हाल भी कैसा (संकट-मय) है ! राक्षसराज के मरने के बाद ही मेरी मृत्यु का होना था क्या ? पहले से जो विचार (एक साथ मरने का) रखती थी उसको बीच में मैंने छोड़ दिया था क्या ? हाय ! मेरे समक्ष जो पड़े रहते हैं क्या वे सचमुच मुकुटमंडित सिर हैं ? भूमि पर जो पड़े दिखते क्या वे मेरे प्राणनाथ के मुख हैं ? रावण का अंत भी ऐसा हुआ ? क्या ही अनर्थ हो गया ? कैसी (बात है), कैसा (विपरीत) है ? । ३८७७

वॆळ्ळॆरुक्कऩ् जडैमुडियान् वॆऱ्पॆडुत्त तिरुमेऩि मेलुङ् गीऴुम्
ऎळ्ळिरुक्कु मिडमिऩ्ऱि युयिरुक्कु मिडनाडि यिऴैत्त वाऱो
कळ्ळिरुक्कु मलर्क्कून्दऱ् चाऩहियै मऩच्चिऱैयिऱ् करन्द कादल्
उळ्ळिरुक्कु मॆऩक्करुदि युडल्पुहुन्दु तडवियदो वॊरुवऩ् वाळि 3878

ऒरुवऩ् वाळि–अप्रतिम श्रीराम का शर; वॆळ्–सफ़ेद; ऎरुक्कम्–अर्क-भूषित; चटं मुटियान्–जटाधारी सिर के शिव के; वॆऱ्पु–(कैलास) पर्वत को; ऎडुत्त–जिन्होंने उठाया; तिरुमेऩि–उनके शरीर को; मेलुम् कीऴुम्–ऊपर और नीचे; ऎळ् इरुक्कुम्–तिल रखने का; इटम् इऩ्ऱि–स्थान न छोड़कर; उयिर् इरुक्कुम्–प्राणों के रहने का; इटम् नाटि–स्थान खोजकर; इऴैत्त आऱो–करने का प्रकार क्या; कळ् इरुक्कुम्–मधु जिसमें रहता है; मलर् कून्तल्–ऐसे फूलों के केशवाली; चाऩकियै–जानकी को; मऩम् चिऱैयिल्–मन की कारा में; करन्त कातल्–जिसने छिपा रखा था वह प्रेम; उळ् इरुक्कुम्–अंदर रहेगा; ऎऩ करुति–ऐसा सोचकर; उडल् पुकुन्तु–शरीर में घुसकर; तटवियतो–टटोला क्या। ३८७८

श्वेत मदार के पुष्पों से शोभायमान जटा के धारक श्रीशिवजी के कैलास पर्वत को जिन्होंने उठाया था उन रावण के श्रीशरीर के अंदर और बाहर, ऊपर और नीचे तिल भर का स्थान न छोड़कर क्या अप्रतिम नायक श्रीराम का शर प्राणों का स्थान खोजता फिरा ? यह हाल उसी सिल्सिले में हुआ था क्या ? या उस शर ने यह सोचकर टटोला था कि मधुपूरित सुमनमंडित केशवाली सीता को मन की कारा में बंद रखनेवाला प्रेम इसी शरीर के अंदर तो कहीं छिपा रहेगा ! ३८७८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आरम्बोर् तिरुमार्बै यहन्मुऴैह ळॅनत्तिऱन्दिव् वुलहुक् कप्पाल्
तूरम्बो यिनवॊरुवन् शिलैतुरन्द शडङ्गळे पोरिऱ् ऱोऱ्ऱुम्
वीरम्बो युरङ्गुऱैन्दु वरङ्गुऱैन्दु विऴुन्दनैये वेऱे कॅट्टेन्
ओरम्बो युयिर्परुहिऱ् ऱिरावणनै मानुडव नूऱ्ऱु मीदो 3879

ऒरुवन् चिलै–अद्वितीय श्रीराम का धनु; तुरन्त चरङ्कळ्–जो निकालता था वे शर; आरम् पोर्–हारालंकृत; तिरुमार्पै–श्रीवक्ष को; अकल् मुऴैकळ्–खुली गुहाओं; ऍन्त–के समान; तिऱन्तु–खोलकर; इव् उलक्ककु–इस लोक के; अप्पाल्–बाहर; तूरम् पोयिन–बहुत दूर चले गये; पोरिल् तोऱ्ऱुम्–युद्ध में दिखं; वीरम् पोय्–वीरता गयी; उरम् कुऱैन्तु–शक्ति क्षीण हुई; वरम् कुऱैन्तु–वर क्षीण हुए; एऱे–केसरी; विऴुन्ततैये–मर गये तो; ओरम् पोय्–पक्षपात छोड़कर; इरावणनै–रावण के; उयिर् परुकिऱ्ऱु–प्राण पी गये; मानुटवन्–मनुष्य का; ऊऱ्ऱम्–साहस; ईतो–क्या यही है। ३८७९

अद्वितीय श्रीराम के शर हारशोभित श्रीवक्ष को खुली गुहाओं के समान विदीर्ण करके इस लोक के बाहर दूर चले गये। युद्ध में जो दिखाते थे वह वीरता खोकर साहस से हाथ धोकर और वर भी गँवाकर, हे केशरी-सम पतिदेव ! तुम चल बसे ! श्रीराम के शरों ने निष्पक्ष होकर तुम्हारे प्राण पी लिये ! क्या मनुष्य का भी इतना बल होगा ? (अब तक जानती ही नहीं थी)। ३८७९

कान्दैयरुक् कणियनैय शानहियार् पेरऴहु मवर्दङ् गऱ्पुम्
एनदुपुयत् तिरावणनार् कादलुमच् चूर्प्पणहै यिऴुन्द मूक्कुम्
वेन्दर्पिरान् तयरदनार् पणियिनाल् वॅङ्गानिल् विरदम् बूण्डु
पोन्ददुवुङ् गडमुऱैये पुरन्दरनार् पॅरुन्दवमाय्प् पोयिऱ् ऱम्मा 3880

कान्तैयरुक्कु–स्त्रियों के; अणि अनैय–श्रृंगार-रूप; चानकियार्–जानकी की; पेर अऴकुम्–बड़ी सुन्दरता; अवर् तम् कऱ्पुम्–और उनका पातिव्रत्य; एनतु पुयततु–और उन्नत भुजावाले; इरावणनार् कातलुम्–रावण का प्रेम; अ चूर्पणकै–उस शूर्पणखा की; इऴुन्त मूक्कुम्–खोयी नाक; वेन्तर् पिरान्–और राजाधिराज के; तयरतनार्–दशरथ के; पणियिनाल्–हुक्म से; वॅम् कानिल्–भयंकर वन में; विरतम् पूण्टु–व्रत धारण कर; पोन्ततुवुम्–आना और; कटै मुऱैये–आखिरकार; पुरन्तरनार्–पुरंदर का; पॅरुन्तवमाय्–बड़ा तप; पोयिऱ्ऱु–बन गये। ३८८०

स्त्रियों का श्रृंगार रूप जो हैं उन सीता की अपार सुन्दरता, उनका पातिव्रत्य, उन्नत भुजाओंवाले रावण का प्रेम, शूर्पणखा की खोयी नाक, राजाधिराज दशरथ की आज्ञा से भयंकर जंगल में कठोर व्रत धारण करके राम का आना —यह सब आखिर पुरंदर की तपस्या के फल हो गया। ३८८०

तेवर्क्कुन् विशैक्करिक्कुञ् जिवनार्क्कु मयनार्क्कुञ् जॅङ्गण् माऱ्कुम्
एवर्क्कुम् वलियातुक् कॅन्ऱुण्डा मिऱुदियॅन्त वेमाप् पुऱ्ऱेन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आवऱ्क णीयुळऩ्ऱ वरुन्दवत्तिऩ् पॅरुङ्गडऱ्कुम् वरमॅऩ् ऱाऩ्ऱ
कावऱ्कुम् वलियाऩोऱ् माऩुडव ऩुळऩॅऩ्ऩक् करुदि ऩेऩो 3881

तेवर्क्कुम्–देवों का; तिचै करिक्कुम्–दिग्गजों का; चिवऩार्क्कुम्–शिव का; अयऩार्क्कुम्–ब्रह्मा का; चॅम् कण्–अरुणाक्ष; माऱ्कुम्–श्रीविष्णु का; एवर्क्कुम्–अन्यों का; वलियाऩुक्कु–बलवान का; इऱुति ऍऩ्ऱु–अंत कहाँ; उण्टाम्–होगा (होगा नहीं); ऍऩ–ऐसा; एमाप्पु–गर्व; उऱ्ऱेऩ्–करती रही; नी आवल् कण्–तुम उत्साह के साथ; उळऩ्ऱ–कष्ट करके; अरु–कठिन; पॅरु कटल्–बड़े सागर; तवत्तिऱ्कुम्–(के समान) तपस्या का और; वरम् ऍऩ्ऱु–वर रूपी; आऩ्ऱ कावऱ्कुम्–श्रेष्ठ रक्षा का (अंत); ओर्–अनुपम; वलियाऩ्–बलवान; माऩुटवऩ्–मनुष्य; उळऩ् ऍऩ्ऩ–है ऐसा; करुतिऩेऩो–सोचा था क्या (मैंने)। ३८८१

देवों, दिग्गजों, शिव, अज, अरुणाक्ष श्रीमन्नारायण और सबसे बलवान रावण का अंत होगा कब (होगा ही नहीं) ? ऐसा मैं गर्व के साथ सोचती रही। तुमने बहुत क्लेश उठाकर सागर-सा विशाल तप किया था और अनेक वर पाये थे। उन सबका अंतक एक मानव है, मैंने ऐसा सोचा था क्या ?। ३८८१

अरैकडैयिट् टमैवुऱ्ऱ मुक्कोडि यायुवुम्बे रऱिञर्क् केयुम्
उरैकडैयिट् टळप्परिय पेराऱ्ऱऱ् ऱोळाऱ्ऱऱ् कुलप्पो विल्लै
तिरैकडैयिट् टळप्परिय वरमॅऩ्ऩुम् बाऱ्कडलैच् चीदै यॅऩ्ऩुम्
पिरैकडैयिट् टऴिप्पदऩै यऱिन्देऩो तवप्पयऩिऩ् पॅरुमै पार्प्पेऩ् 3882

अरै कटैयिट्टु–आधे को मिलाकर; अमैवुऱ्ऱ–जो रहती है; मुक्कोटि आयुवुम्–तीन करोड़ आयु; पेर् अऱिञर्क्केयुम्–बड़े पण्डितों के लिए भी; उरै–शब्दों से; कटै इट्टु–अन्त लगाकर; अळप्पु अरिय–आँकने में कठिन; पेर् आऱ्ऱल्–बड़े बली; तोळ् आऱ्ऱऱ्कु–कंधों के प्रताप का; उलप्पु इल्लै–अंत नहीं; तवम् पयऩिऩ्–तपस्या के फल की; पॅरुमै पार्प्पेऩ्–महिमा सोचती रही; तिरै कटै इट्टु–तरंगों का अंत बताकर; अळप्पु अरिय–अमाप; वरम् ऍऩ्ऩुम्–वर रूपी; पाल् कटलै–क्षीर-सागर को; चीतै ऍऩ्ऩुम्–सीता नाम का; पिरै–जामन; कटै इट्टु–अंत में डालकर; अऴिप्पतऩै–मिटाना; अऱिन्तेऩो–क्या मैंने जाना था। ३८८२

साढ़े तीन करोड़ की आयु का और बड़े-बड़े ज्ञानी विद्वानों के कथनों से भी अमाप तुम्हारे भुजबल का नाश कभी नहीं होगा ! ऐसा सोचती रही मैं। तुम्हारी तपस्या पर इतराती रही। पर तुम्हारे वर रूपी अनंत तरंगों से पूर्ण क्षीरसागर को सीता रूपी जामन आखिर नष्ट कर देगा— यह मैं जान ही नहीं सकी थी। ३८८२

आरऩा रुलहियऱ्कै यऱित्तक्का रवैयेऴु मेऴु मञ्जुम्
वीरऩा रुडल्तुऱऩ्दु विण्पुक्कार् कण्पुक्क वेळ विल्लाल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नारनाण् मलर्क्कणैयाल् नाळॆल्लान् दोळॆल्ला नैय वॆय्युम्
मारनार् तनियिलक्कै मनित्तनना रऴित्तनरे वरत्तिनाले 3883

उलकु इयऱ्कै–लोक की गति; अऱितक्कार्–जानने की क्षमता; अनार्–रखनेवाले; आर्–कौन हैं; अवै–उन; एऴुम् एऴुम्–चौदहों भुवनों के; अञ्चुम्–भय का पात्र; वीरनार्–वीर भी; उटल् तुऱन्तु–शरीर छोड़कर; विण् पुक्कार्–स्वर्ग पहुँच गये; कण् पुक्क–गाँठों-सहित; वेऴाम् विल्लाल्–ईख के धनु से; नारम्–(भ्रमरों के) डोरे के; नाण् मलर्–ताजे फूलों के; कणैयाल्–शरों से; नाळ् ऎल्लाम्–सदा; तोळ् ऎल्लाम्–कंधे सारे; नैय–म्लान हों ऐसा; ऎय्युम्–जो चला रहे थे; मारनार्–कामदेव के; तनि इलक्कै–अकेले निशाने को; मनित्तनार्–मनुष्यों ने; वरत्तिनाल्–उत्कृष्ट वर से; अऴित्तनरे–मिटा दिया न। ३८८३

लोक-गति के जानने की क्षमता रखनेवाले कौन हैं ? चौदहों भुवन जिनसे डरते थे वे वीर भी मरकर स्वर्ग पहुँच गये। आखिर एक मानव ने अपने वर के बल से मारदेव के उस निशाने को मिटा तो दिया जिस पर मन्मथ सदा गाँठों-सहित ईख के धनु के भ्रमरों के डोरे पर पुष्पशर संधान कर चलाता रहा और सदा सताता रहा ! । ३८८३

आरा वमुदा यलैहडलिऱ् कण्वळरुम्
नारा यणनॆन् ऱिरुप्पे निरामनैनान्
ओरादे कॊण्डहन्ऱा युत्तमनार् तेवितनैप्
पारायो निन्नुडैय मार्बहलम् बट्टवॆल्लाम् 3884

नान्–मैं; इरामनै–श्रीराम को; आरा अमुताय्–न उबारनेवाला अमृत; अलै कटलिल्–तरंग-सागर पर; कण् वळरुम्–निद्रामग्न; नारायणन्–श्रीनारायण; ऎन्ऱु इरुप्पेन्–ऐसा सोचती रहती; ओराते–बिना विचारे; उत्तमनार् तेवि तनै–उन उत्तम की पत्नी को; कॊण्टु–हर ले; अकन्ऱाय्–दूर आये; निन्नुडैय–तुम्हारे; मार्पु अकलम् पट्ट–बक्ष के विस्तार पर लगे; ऎल्लाम् पारायो–(कष्ट) सब नहीं देखोगे। ३८८४

श्रीराम ऐसा अमृत है जिससे कोई कभी नहीं अघाता। हिलते रहनेवाले क्षीरसागर पर सोनेवाले श्रीमन्नारायण है ! ऐसा मानकर रही मैं। बिना विचारे उन उत्तम देव की पत्नी को तुम हर लेकर बहुत दूर आ गये। पर तुम्हारी चौड़ी छाती के विशाल प्रदेश का क्या हाल हो गया ! देखते नहीं। ३८८४

ऎन्ऱु ऴैत्तनळ् ळेङ्गि यॆऴुन्दवन्, पॊन्ऱु ऴैत्त पॊरुवरु मार्बिनैत्
तन्ऱु ऴैक्कैह ळाऱ्ऱऴ वित्तनि, निन्ऱु ऴैत्तुयिर्त् ताऴुयर् नीङ्गिनाळ् 3885

ऎन्ऱु अऴैत्तनळ्–ऐसा विलापती; एङ्कि–रोकर; ऎऴुन्तु–उठी; अवन्–उसके; पॊन् तऴैत्त–स्वर्णबहुल; पॊरु अरु–अनुपम; मार्पिनै–वक्ष को; तन्–अपने; तऴै कैकळाल्–पुष्ट हाथों से; तऴुवि–आलिंगन करके; तति निन्ऱु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अकेली खड़ी हो; अऴैत्तु–पुकारकर; उयिर्त्ताळ्–लम्बी साँसें छोड़ती; उयिर नीङ्कित्ताळ्–प्राण त्याग दिये। ३८८५

मंदोदरी ने इस भाँति विलाप किया। शोकाक्रांत हुई। रावण के स्वर्णालंकृत अनुपम वक्ष को अपने पृष्ट हाथों से लपेटकर आलिंगन किया। अकेली खड़ी रहकर नाम ले पुकारा। फिर निःश्वास छोड़कर वह प्राण-हीन हो गयी। ३८८५

वान मङ्गैयर् विञ्जैयर् मऱुमत्, तान मङ्गैय रुन्दवप् पालवर्
आन मङ्गैय रुम्मरुङ् गऱ्पुडै, मान मङ्गैयर् तामुम् वऴुत्तिनार् 3886

वानम् मङ्कैयर्–व्योमलोक की स्त्रियाँ; विञ्चैयर्–और विद्याधरियाँ; मऱुम्–और; अ–वे; तान मङ्कैयरुम्–दानवस्त्रियाँ; तवम् पालवर्–तपस्या के पक्ष में; आन–रहनेवाली; मङ्कैयर्–(मुनि-) स्त्रियाँ; अरु कऱ्पुटै–श्रेष्ठ पतिव्रता; मानम् मङ्कैयर् तामुम्–मानव-स्त्रियों ने; वऴुत्तिनार्–प्रशंसा की। ३८८६

व्योमवासिनी देवांगनाओं ने, विद्याधरियों ने, दानवस्त्रियों ने, तपस्विनी ऋषि-पत्नियों ने और पतिव्रता मानवस्त्रियों ने उसकी प्रशंसा और स्तुति की। ३८८६

पिन्नर् वीडणन् पेऱॆऴिऱ् ऱम्मुनै, वन्नि कूवि वरन्मुऱै यान्मऱै
शॊन्न वीम विदिमुऱै याऱ्ऱॊहुत्, तिन्न नॆञ्जिनॊ डिन्दनत् तेनाऱ्ऱिन् 3887

पिन्नर्–बाद; वीटणन्–विभीषण; वान्मुऱैयान्–यथाक्रम; वन्नि कवि–अग्नि को निमंत्रण दे; मऱै चॊन्न–वेदोक्त; ईम विति मुऱैयाल्–अपरकर्मा के क्रम में; तॊकुत्तु–पूरा करके; इन्नल् नॆञ्चित्तोटु–दुःखपूरित मन के साथ; पेर ऎऴिल्–वीरता के सौंदर्य में बढ़े; तम् मुनै–अपने ज्येष्ठ को; इन्नतत्तु–ईंधन पर; एऱ्ऱिनान्–चढ़ाया। ३८८७

बाद विभीषण ने यथाविधि अग्नि का आवाहन किया। वेदोक्त क्रम से दाहसंस्कार संपन्न किये। दुःखपूरित मन के साथ उसने वीरता के सौंदर्य में बढ़े अपने ज्येष्ठ भाई को चिता पर चढ़ाया। ३८८७

इन्द नत्तहिल् शन्दन मिट्टुमेल्, अन्द मानत् तऴहुऱत् तानमैत्
तॆन्द वोशैयुङ् गीऴुऱ वार्त्तिडै, मुन्दु शङ्गॊलि यॆङ्गु मुऴङ्गिड 3888

इन्तनत्तु–ईंधन पर; अकिल् चन्तनम् इट्टु–अगरु और चंदन डालकर; मेल्–ऊपर; अन्त मानत्तु–उस विमान पर; अऴकु उऱ–सुन्दर रीति से; तान् अमैत्तु–उस पर रखकर; ऎन्त ओचैयुम्–सभी शब्दों को; कीऴ् उऱ–नीचे दबाकर; इटै आर्त्तु–रह-रहकर बजने; मुन्तुम्–उठनेवाले; चङ्कु ऒलि–शंखध्वनि; ऎङ्कुम् मुऴङ्किट–सर्वत्र शब्द करे ऐसा। ३८८८

चिता में अगरु और चंदन की लकड़ियाँ रखीं। उस यान के रूप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में सजी चिता पर रावण के पार्थिव शरीर को रखा। रह-रहकर शंख बजाया, जिसकी ध्वनि इतनी ऊँची थी कि सभी अन्य शब्द उसमें दब गये। ३८८८

कॊऱ्ऱु वॆण्कुडै योडु कॊडिमिडैन्, दुऱ्ऱ वीम विदियि नुडम्बडीइच्
चऱ्ऱ मादर् तॊडर्न्दुडन् शूऴ्वर, मऱ्ऱु वीरन् विदियिन् वऴङ्गिनान् 3889

कॊऱ्ऱम् वॆण्–विजयी श्वेत; कुडै ऒडु–छत्र के साथ; कॊटि मिटैन्तु उऱ्ऱ–ध्वजा मिली रही; ईमम् वितियिन्–दाहकर्म के; उटम्पटी इ–अनुसार; चुऱ्ऱम्–रिश्तेदार; मातर्–और स्त्रियाँ; तॊटर्न्तु–पीछा करके; उटन्–साथ; चूऴन्तु वर–घेरे आयीं; मऱ्ऱु–और; अ वीरन्–उस वीर ने; वितियिन्–विधिवत्; वऴङ्किनान्–दाहसंस्कार कराया। ३८८९

विजयी श्वेत छत्र ताना गया था। ध्वजाएँ फहर रही थीं। सभी बंधु-बांधव एकत्रित थे। स्त्रियाँ भी एकत्रित हुईं। विभीषण ने विधिवत् चिता में आग लगवाकर दाहसंस्कार कराया। ३८८९

कडन्गळ् शॆय्दु मुडित्तुक् कणवनो
डुडैन्दु पोन मयन्मह ळोडुडन्
अडङ्ग वॆङ्गन लुक्कवि याक्किनान्
कुडङ्गॊळ् नीरिनुङ् गण्शोर् कुमिऴियान् 3890

कुटम् कॊळ्–घड़ों भर के; नीरिनुम्–जल से अधिक; कुमिऴियान्–बुलबुलों के साथ; कण् चोर्–अश्रु बहाते; कटन्कळ् चॆय्तु–(विभीषण ने) कृत्य करके; मुटित्तु–पूरा करके; कणवनोटु–पति के साथ; उटैन्तु पोन–जो मर गयी उस; मयन् मकळोटु उटन्–मयसुता भी; अटङ्क–राख बने ऐसा; वॆम् कनलुक्कु–गरम अग्नि का; आवि आक्किनान्–हवि बना दिया (विभीषण ने)। ३८९०

विभीषण की आँखों से घड़ों के माप का अश्रुजल बुलबुलों के साथ निकल बहता था। उसने जल-क्रिया समाप्त की। पति के साथ-साथ जो मरी उस मयसुता मंदोदरी के शरीर को भी राख बनाते हुए उसने अग्नि का हवि बना दिया। ३८९०

मऱ्ऱै योर्क्कुम् वरन्मुऱै याल्वहुत्, तुऱ्ऱ तीक्कॊडुत् तुण्गुऱु नीरुहुत्
तॆऱ्ऱै योर्क्कु मिवनल दिल्लॆन्ना, वॆऱ्ऱि वीरन् कुरैकऴल् मेविनान् 3891

मऱ्ऱैयोर्क्कुम्–अन्यों का भी; वरन् मुऱैयाल्–विधिवत्; वकुत्तु–कर्म करके; उऱ्ऱ–युक्त रीति से; ती कॊट्टुत्तु–अग्नि-कर्म करके; उण्कुऱु–ग्राह्य; नीर् उकुत्तु–जलतर्पण करके; ऎऱ्ऱैयोर्क्कुम्–सबके लिए; इवन् अलतु–इसके सिवा; इल् ऎन्ना–कोई नहीं ऐसा; वॆऱ्ऱि वीरन्–विजयी वीर; कुरै कऴल्–ध्वनित पायलधारी श्रीराम के; मेविनान्–(चरणों में) आकर विनत हुआ। ३८९१

अन्य मरे हुए वीरों के लिए भी विभीषण ने अग्निसंस्कार, जलसंस्कार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन में जो अति गंभीर आनंद हुआ वह मधु की मधुरिमा में भी प्राप्य हो सकेगा क्या ? । ३९१५

अनैय ळाहि यनुमनै नोक्किनाळ्, इनैय विन्त दियम्बुव ऍन्बदोर्
निनैवि लादु नॅडिदिरुन् दाळ्नॅडु, मनैयिन् माशु तुडैत्त मनत्तिनाळ् 3916

नॅटु मनैयिन्–गौरवमय गृहस्थी के; माचु तुडैत्त–कलंक दूर करके; मनत्तिनाळ्–(निश्चित हुए) मनवाली ने; अनैयळ् आळि–उस स्थिति में आकर; अनुमनै–हनुमान पर; नोक्किनाळ्–दृष्टि डाली; इनैयतु–ऐसी; इन्नतु–अमुक बातें; इयम्पुवतु ऍन्पतु–कहना, यह; ओर् निनैवु–एक विचार; इलातु–न रहा, ऐसा; नॅटितु इरुन्ताळ्–बहुत देर चुप रहीं । ३९१६

गौरवपूर्ण गृहस्थी पर लगा-सा रहा कलंक दूर हो गया । इस आनंद में आयी सीता ने मन और शरीर से फूलकर हनुमान पर दृष्टि डाली । क्या कहना ? कैसे कहना ? कुछ निश्चय नहीं कर सकीं । अतः वे लंबी देर तक चुप रहीं । ३९१६

यादि दर्कॉन् रियम्बुव लॅन्बदु
मीदु यर्न्द वुवहैयिन् विम्मलो
तूदु पॉय्क्कुमॅन् रोवॅनच् चॉल्लिनान्
नीदि वित्तह नङ्गै निहळ्त्तिनाळ् 3917

नीति वित्तकन्–नयज्ञ (हनुमान); मीतु उयर्न्त–अपार; उवकैयिन् विम्मल्–आनंद के आधिक्य से; इतर्कु–इसका; यातु ऑन्रु–क्या कुछ उत्तर; इयम्पुवल्–कह देगी; ऍन्पतु–यह कारण क्या; तूतु पॉय्क्कुम्–दूत का वचन झूठा हो; ऍन्रो–ऐसा सोचकर क्या; ऍन–ऐसा; चॉल्लिनान्–पूछा; नङ्कै निकळ्त्तिनाळ्–देवी बोलीं । ३९१७

नयज्ञ हनुमान ने यह प्रश्न किया कि अपार हर्ष के आधिक्य के कारण योग्य उत्तर नहीं सूझता ! इसलिए वे चुप हैं ? या दूत का वचन झूठा हो —इस संशय के कारण देवी अवाक् हैं ? देवी ने उत्तर में (यों) कहा । ३९१७

मेक्कु नीङ्गिय वॅळ्ळ वुवहैयाल्, एक्क मुर्ऱॉन् रियम्बुव दियादॅन
नोक्कि नोक्कि यरिदॅन नीन्दुळेन्, पाक्कि यम्बॅरुम् बित्तुम् बयक्कुमो 3918

मेक्कु नीङ्किय–जिसके ऊपर कुछ नहीं; वॅळ्ळ उवकैयाल्–बाढ़ के मोद से; एक्कम् उर्ऱु–स्तब्ध होकर; इयम्पुवतु–कहना; ऑन्रु यातु–कुछ क्या; ऍन–ऐसा; नोक्कि नोक्कि–विचार कर करके; अरितु–दुस्साध्य; ऍन–ऐसा; नीन्दुळेन्–चिंतित हूँ; पाक्कियम्–सौभाग्य; पॅरुम् पित्तुम्–बड़ा पागलपन; पयक्कुमो–दिखा देगा क्या । ३९१८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन्होंने न कहने योग्य वचन कहे थे। जल्दी दौड़कर आपके ऊपर गिरी थीं और धमकी दी थीं कि 'तुझे निगल लेंगी'। ऐसे उनके पर्वतोपम शरीर को अपने तेज़ नाखून से चीरना चाहूँगा; और यम को भोज दिलाना चाहूँगा। ३९२४

कुडल्कु ऱैत्तुक् कुरुदि कुडित्तिवर्, उडल्मु रुक्किय़िट् टुण्गुवॅ ऩॅन्ऱुलुम्
अडल रक्किय रत्ऩैनित् पादमे, विडल मॅय्च्चर णॅऩ्ऱु वॅरुवलुम् 3925

इवर्–इनकी; कुडल् कुऱैत्तु–आँतें नोच लेकर; कुरुति कुडित्तु–रक्त पीकर; उडल्–शरीर को; मुरुक्कि इट्टु–ऐंठकर छिन्न कर; उण्कुवॅन्–खा लूंगा; ऍऩ्ऱुलुम्–कहते ही; अडल् अरक्कियर्–सशक्त राक्षसियाँ; अऩ्ऩै–माताजी; नित् पातमे–तुम्हारे चरणों में ही; मॅय् चरण्–हमारा सच्चा आश्रय है; विडलम्–नहीं छोड़ेंगी; ऍऩ्ऱु–ऐसा; वॅरुवलुम्–डरते ही। ३९२५

इनकी आँतें निकाल दूँ; रक्त पी लूँ; शरीर ऐंठकर छिन्न-भिन्न करा दूँ और खा जाऊँ। जब हनुमान ने इस भाँति अपनी इच्छा प्रकट की तो तगड़ी राक्षसियाँ यह कहते हुए सीता की शरण में गयीं कि हे अंब! आपके चरण ही हमारे लिए सच्चा आश्रय हैं। हम उन्हें न छोड़ेंगी। वे भयातुर थीं। ३९२५

अऩ्ऩै यञ्जऩ्मि ऩञ्जऩ्मिऩ् नीरेऩो, मऩ्ऩु मारुदि मामुह नोक्किवे
ऱैऩ्ऩ तीमै यिवरिऴैत् तारवऩ्, शॊल्ऩ शॊल्लिऩ वल्लदु तूय्मैयोय् 3926

अऩ्ऩै–जगज्जननी; नीर्–तुम लोग; अञ्चऩ्मिऩ्–मत डरो; अञ्चऩ्मिऩ्–मत डरो; मऩ्ऩुम् मारुति–चिरंजीव मारुति का; मामुकम् नोक्कि–बड़ा मुख देखकर; तूय्मैयोय्–पवित्र पुरुष; इवर्–इन्होंने; अवऩ् चॊऩ्ऩ–उसकी कही; चॊल्लिऩ–आज्ञा; अल्लतु–के सिवा; वेऱु–और; ऍऩ्ऩ–कौन; तीमै इऴैत्तार्–बुराई की। ३९२६

जगज्जननी ने उन्हें यह कहकर आश्वस्त किया कि डरो मत! तुम लोग डरो नहीं। फिर चिरंजीव मारुति के बड़े मुख पर दृष्टि डालकर कहा कि पवित्र पुरुष! इन लोगों ने रावण की आज्ञा के अनुसार काम करने के सिवा कौन सी अन्य बुराई की थी? । ३९२६

यानि ऴैत्त विऩैयिऩि ऩिव्विडर्, तान ऱुत्तदु तायिऩु मऩ्बिऩोय्
कूनि यिऱ्कॊडि यारल रेयिवर्, पोऩ वप्पॊरुळ् पोऱ्ऱलै पुन्दियोय् 3927

तायिऩुम्–माता से भी; अऩ्पिऩोय्–प्रेम करनेवाले; यान्–मैंने; इऴैत्त–जो किया; विऩैयिऩिऩ्–उस बुरे कर्म से; इव् इटर्–यह संकट; अटुत्ततु–आया; इवर्–ये; कूनियिऩ्–कुब्जा से; कॊटियार् अलर्–क्रूर नहीं; पुन्तियोय्–बुद्धिमान; पोऩ–जो बीत गया; अ पॊरुळ्–वह कार्य; पोऱ्ऱलै–मानो मत। ३९२७

माता से भी अधिक प्रेम कर सकनेवाले! यह संकट मेरे कुकर्म के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

फलस्वरूप आया था। ये बेचारी राक्षसियाँ कुब्जा (मंथरा)-सी क्रूर नहीं ! हे बुद्धिमान ! बीती बातों की परवाह मत करो। ३९२७

अॅनक्कु नोयरु ळिव्वरन् दीविनै, तनक्कु वाळ्विड माय शळक्कियर्
मनक्कु नोय्शॅय लॅन्ऱनळ् मामदि, तनक्कु मामऱुत् तन्द मुहत्तिनाळ् 3928

तो विनै–बुराई; तनक्कु–के लिए; वाळ्विटम् आय–आगार जो है; चळक्कियर्–इन राक्षसियों के; मनक्कु–मन को; नोय् चॅयल्–दुःख मत दो; नी अॅनक्कु–तुम मुझे; इव् वरम्–यह वर; अरुळ्–देने की कृपा करो; अॅन्ऱनळ्–कहा; मामति तनक्कु–श्रेष्ठ चन्द्र को; मामऱु–बड़ा कलंक; तन्त मुकत्तिनाळ्–जिसने दिया वैसे मुख वाली ने। ३९२८

पापागार इन राक्षसियों का मन मत दुखाओ। मुझे यह वर दो ! ऐसा कहा मान्य चंद्र को भी (क्रम सौंदर्य का) कलंक जिन्होंने दिलाया था उन सुंदर मुखवाली ने ! । ३९२८

अॅन्ऱु पोदि निऱैञ्जिन नॅम्बिरान्, तन्ऱु णैप्पॅरुन् देवि तयावॅना
निन्ऱु कालै नॅडियवन् वीडण, शॅन्ऱु तानम तेवियॅच् चीरॊडुम् 3929

अॅन्ऱु पोतिल्–कहने पर; अॅम्पिरान् तन्–मेरे नाथ की; तुणै पॅरु–संगिनी बड़ी; तेवि–देवी की; तया–दया; अॅना–कहकर; इऱैञ्चिनन्–विनय करके; निन्ऱु कालै–जब खड़ा रहा, तब; नॅटियवन्–त्रिविक्रम ने; वीटण–विभीषण; चॅन्ऱु–जाकर; नम् तेवियै–मेरी देवी को; चीरॊटुम् ता–शृंगार के साथ लाओ। ३९२९

जब उन्होंने ऐसा कहा तब मारुति ने कहा कि मेरे भगवान श्रीराम की संगिनी आदरणीय देवी की दया (जैसी हो यही हो)। जब यह कह कर हनुमान विनय के साथ इधर खड़ा रहा, तब उधर त्रिविक्रम के अवतार श्रीराम ने विभीषण से कहा कि हे विभीषण ! जाओ हमारी देवी को शृंगार करके लिवा लाओ। ३९२९

अॅन्नुङ् गालै यिरुळुम् वॅयिलुङ्गार्, मिन्नुङ् गालै यियर्कैय वीडणन्
उन्नुङ्गालैक् कॊणर्दियॅन् ऱोदुमप्, पॊन्निन् कार्ऱळिर् शूडिनन् पोन्दुळान् 3930

अॅन्नुम् कालै–जब कहा तब; इरुळुम् वॅयिलुम्–अंधकार और धूप; कार् मिन्नुम्–मेघ में बिजली; काल्–निकालनेवाले; ऐ इयर्कैय–सुन्दर स्वभाव वाले; वीटणन्–विभीषण ने; पोन्नुळान्–आकर; उन्नुम् कालै–सोचने की देर में; कॊणर्ति–लाओ; अॅन्ऱु–ऐसा; ओतुम्–जिसके सम्बन्ध में कहा गया; अ पॊन्निन्–उन लक्ष्मी के; काल् तळिर्–चरणपल्लव को; चूटिनन्–अपने सिर पर लगा लिया। ३९३०

उनके यों कहने पर अंधकार, धूप और मेघमध्य बिजली (क्रमशः शरीर, आभरणों और किरीट से) निकालनेवाले आकार-सौंदर्य का विभीषण अशोक वन में गया ; और जिनके संबंध में श्रीराम ने कहा था उन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीलक्ष्मी के चरणपल्लवों पर गिरकर उन्हें अपने सिर पर धारण कर लिया (दंडवत् की)। ३९३०

वेण्डिऱ्ऱु मुडिन्द दन्ऱे वेदियर् वेद निन्ऱैक्
काण्डऱ्कु विरुम्बु हिन्ऱा नुम्बरुङ् गाण निन्ऱार्
पूण्डहक् कोलम् वल्लै पुनैन्दनै वरुत्तम् बोक्कि
ईण्डुक् कोण् डणैदि यॆन्ऱा नॆऴुन्दरु ळिऱैवियॆन्ऱान् 3931

इऱैवि–भगवती; वेण्टिऱ्ऱु–चाही हुई (जीत); मुटिन्ततु–मिल गयी; वेतियर् वेतत्–वेदवेद्य; निन्ऱैक् काण्टऱ्कु–आपसे मिलना; विरुम्पुकिन्ऱान्–चाहते हैं; उम्परुम्–देव भी; काण निन्ऱार्–दर्शनार्थ खड़े हैं; ईण्टु–यहाँ; कॊण्टु अणैति–ले आओ; ऍन्ऱान्–कहा है; वरुत्तम् पोक्कि–दुःख छोड़कर; वल्लै–शीघ्र; पूण्टक कोलम्–आभरणों से युक्त शृंगार; पुनैन्तनै–करा लें; ऍऴुन्तरुळ्–पधारें; ऍन्ऱान्–कहा (विभीषण ने)। ३९३१

विभीषण ने निवेदन किया। भगवती! मनोकामना पूरी हो गयी। वेदवेद्य श्रीराम आपसे मिलना चाहते हैं। देवगण भी आपके दर्शन की चाह लेकर खड़े हैं। श्रीराम ने आज्ञा दी है कि उन्हें लिवा ले आओ। आप दुःख दूर करके शीघ्र शृंगार कर लें और पधारें। ३९३१

यानिव णिरुन्द वण्णम् यिमैयवर् कुऴुवु मॆङ्गळ्
कोनुमम् मुनिवर् तङ्गळ् कूट्टमुङ् गुलत्तुक् केऱ्ऱ
वानुयर् कऱ्पिन् माद रीट्टमुङ् गाण्डल् माट्चि
मेनिनै कोलङ् गोडल् विऴुमिय दन्ऱु वीर 3932

वीर–वीर; यान्–मैं; इवण्–इधर; इरुन्त वण्णम्–जैसी रही उसी प्रकार; इमैयवर् कुऴुवुम्–देवगण और; ऍङ्कळ् कोनुम्–हमारे राजा; अ मुनिवर् तङ्कळ्–उन मुनियों के; कूट्टमुम्–समूह; कुलत्तुक्कु एऱ्ऱ–कुल के योग्य; कऱ्पिन्–पातिव्रत्यशीला; मातर्–स्त्रियों की; ईट्टमुम्–जमात; काण्टल–देखें यही; माट्चि–गौरव है; मेल्–फिर; निनै कोलम्–तुम जैसे सोचते वैसा शृंगार; कोटल्–करना; विऴुमियतु अन्ऱु–श्लाघ्य नहीं। ३९३२

(देवी ने कहा—) हे वीर! मैं जैसे रहती हूँ उसी स्थिति में सुर लोग, हमारे ईश्वर, मुनिवृन्द और कुलोचित पातिव्रत्य-शीला नारियाँ देखें—यही गौरव-दायी है! इतना होने के बाद जैसे तुम सोचते हो, वैसा शृंगार कर लेना श्लाघ्य नहीं। ३९३२

ऍन्ऱन ळिऱैवि केट्ट विराक्कदर्क् किऱैव नीलक्
कुन्ऱन तोळि नान्ऱन् पणियितिऱ् कुऱिप्पि दॆन्ऱान्
नन्ऱॆन नङ्गै नेर्न्दाळ् नायहक् कोलङ् गॊळ्ळच्
चॆन्ऱनर् वान नाटट्त् तिलोत्तमै मुदलोर् शेर 3933

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्ऱ्ऱळ्–कहा; इऱैवि–भगवती ने; केट्ट–सुनकर; इराक्कतर्क्कु–राक्षसों के; इऱैवन्–राजा ने; नीलम् कुन्ऱु–नील-पर्वत; अत–के समान; तोळिनान् तत्–कन्धोंवाले की; पणियित्तिल्–आज्ञा का; कुऱिप्पु इतु–संकेत यही; ऍन्ऱात्–कहा; नङ्कै–देवी ने; नन्ऱु–अच्छा; ऍत–ऐसा कहकर; नेर्न्ताळ्–सम्मति दिलायी; नायकम्–अतिश्रेष्ठ; कोलम् कॊळ्ळ–श्रृंगार कर लें, इस वास्ते; वान नाट्टु–व्योमलोक की; तिलोत्तमै मुतलोर्–तिलोत्तमा आदि; चेर चॆन्ऱनर्–मिलकर आयीं। ३९३३

देवी के ऐसा कहने पर राक्षसाधिपति ने निवेदन किया कि नील-पर्वतोपम कंधों वाले श्रीराम की आज्ञा का संकेत यही है ! तब देवी 'ठीक है' कहकर सम्मत हुईं। उन्हें उत्कृष्ट रीति से श्रृंगार किया जाय, इस वास्ते व्योमलोक की तिलोत्तमा आदि अप्सराएँ एक साथ मिलकर आयीं। ३९३३

मेनहै यरम्बै मऱ्ऱ युरुप्पशि वेऱु मुळ्ळ
वानह नाट्टु मादर् यारुमञ् जनत्तुक् केऱ्ऱु
नानॆय् यूट्टप् पट्ट नवैयिलाक् कलवै ताङ्गिप्
पोनहन् दुऱन्द तॆयल् मरुङ्गुऱ नॆरुङ्गिप् पुक्कार् 3934

मेनकै–मेनका; अरम्पै–रंभा; मऱ्ऱै उरुप्पयि–और उर्वशी; वेऱम् उळ्ळ–अन्य जो थीं; वानकम् नाट्टु–व्योमलोक की; मातर् यारुम्–सभी स्त्रियाँ; मञ्चनत्तुक्कु एऱ्ऱ–स्नान योग्य; नानम् नॆय्–कस्तूरी का; ऊट्टप्पट्ट–मिलाया गया; नवै इला–अनिंद्य; कलवै ताङ्कि–लेप धरकर; पोनकम् तुऱन्त–आहार जो नहीं करती थीं; तॆयल्–उन देवी के; मरुङ्कु उऱ–पास; नॆरुङ्कि पुक्कार्–सटकर आयीं। ३९३४

मेनका, रंभा, उर्वशी और अन्य व्योमवासिनियाँ स्नान योग्य कस्तूरी आदि का अनिंद्य लेप आदि लेकर उन देवी के पास आयीं जो कि दस महीनों से आहार त्याग कर रही थीं। ३९३४

काणियैप् पॆण्मैक् कॆल्लाङ् गऱ्पिनुक् कणियैप् पॊऱ्पिन्
आणियै यमिऴ्दिन् वन्द वमिऴ्दिनै यऱ्ऱतिन् तायैच्
चेणयर् मऱैयै यॆल्ला मुऱैशॆय्द शॆल्व नॆन्न
वेणियै यरम्बै मॆल्ल वरन्मुऱै शुहिर्त्तु विट्टाळ् 3935

पॆण्मैक्कु ऍल्लाम्–सभी स्त्री के लक्षणों की; काणियै–जनक-भूमि को; कऱ्पिनुक्कु–पातिव्रत्य के; अणियै–श्रृंगार को; पॊऱ्पिन् आणियै–सौंदर्य की कसौटी को; अमिऴ्तिन् वन्त–अमृत के साथ आयी; अमिऴ्तिनै–अमृत को; अऱ्ऱतिन् तायै–धर्म की माता को; वेणियै–(उनके) केश को; चेण् उयर् मऱैयै–बहुत उत्कृष्ट वेदों; ऍल्लाम्–सभी के; मुऱै चॆय्त–व्यवस्थाकारी; चॆल्वन् ऍन्न–धनी श्रीविष्णु के समान; अरम्पै–रम्भा ने; मॆल्ल–धीरे से; वरन् मुऱै–यथाक्रम; चुकिर्त्तु विट्टाळ्–सँवार दिया। ३९३५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रंभा ने पहले उन स्त्रियों के लक्षणों की जनक-भूमि, पातिवृत्य के शृंगार, अमृत के साथ निकले अमृत, और धर्म की जननी सीता का केश सँवारा, उसी प्रकार जिस प्रकार श्रीविष्णु ने सारे वेदों को क्रमबद्ध किया था। ३९३५

पाहडर्न् दमुदु पिल्हुम् बवळवाय्त् तरळप् पत्ति
शेहऱ विळक्कि नात्तन् दीट्टिमण् शेर्न्द काशै
वेहडञ् जॅय्यु मापोल् मञ्जन विदियिन् वेदत्
तोहैमङ् गलङ्गळ् पाड वाट्टिन रुम्बर् मादर् 3936

उम्पर् मातर्–देवललनाओं ने; पाकु अटर्न्तु–मधुरता से भरकर; अमुतु पिल्कुम्–अमृतमय वाणी कहनेवाले; पवळम्–प्रवाल-सम; वाय्–मुखों के; तरळम् पत्ति–मुक्ता-सम दंतावली को; चेकु अऱ–मैल छुड़ाते हुए; विळक्कि–माँजकर; नातम्–सुवासित तेल; तीट्टि–(सिर पर) मलकर; मण् चेर्न्त–मैले; काचै–रत्न को; वेकटम् चॅय्युमापोल्–तराशा जाय जैसे; वेतत्तु–वेदविहित प्रकार से; मञ्चनम् वितियिन्–स्नान-सन्ध्या विधिवत; ओकै–आनंद के साथ; मङ्कलङ्कळ् पाट–मंगलगीतों को गाते हुए; आट्टिनर्–स्नान कराया। ३९३६

देवललनाओं ने अमृतभाषी प्रवालाधरों के मुख की मुक्ता-सम दंत-पंक्ति को मैल दूर करते हुए माँज दिया। फिर सुगंधित तेल को सिर पर मलकर मैले रत्न को तराशा जाता हो ऐसा वेदोक्त रीति से मज्जन कराया। तब मगल-गीत गाये जा रहे थे। ३९३६

उरुविळै पवळ वल्लि पालुरै युण्ड दॅन्न
मरुविळै कलबै यूट्टिक् कुङ्गुम मुलैयिन् माट्टिक्
करुविलै मलरिन् काट्चिक् काशऱु तूशु कामन्
तिरुविळै यल्हुऱ् केऱ्प मेहलै तळुवच् चॅय्दार् 3937

उरुविळै–बहुत सुन्दर; पवळ वल्लि–प्रवाल-लता; पाल् नुरै–दुग्धफेन से; उण्टतु ऍन्न–ढका हो जैसे; मरुविळै–सुगंधित; कलबै ऊट्टि–चोवा मलकर; कुङ्कुमम्–कुंकुम-लेप को; मुलैयिन् माट्टि–स्तनों पर चर्चित कर; करुविळै मलरिन्–नीलोत्पल-सम; काट्चि–दृश्यमान; काचु अऱ–निर्दोष; तूचु–रेशमी वस्त्र; कालन् तिरुविळै–मन्मथ-भोगश्री से; अलकुऱ्कु–युक्त भग-प्रदेश के; एऱ्प–योग्य; मेकलै–मेखला को; तळुव चॅय्तार्–युक्त रीति से पहनाया। ३९३७

उन्होंने देवी के श्रीशरीर पर चंदन-चर्चा की तब वे दुग्धफेन से आच्छादित प्रवाल-लता के समान लगीं। स्तनों पर कुंकुम लेप लगाया। नीलोत्पल-सम पवित्र वस्त्र पहनाया तथा काम-भोग-योग्य वरांग को अलंकृत करते हुए मेखला पहनायी। ३९३७

चन्दिरन् तेवि मारिऱ् ऱैयुऱु तरळप् पैम्बूण्
इन्दिरै तेविक् केऱ्प वियैवन पूट्टि याणर्च्च

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिन्दुरप् पवळच् चॅव्वायत् तेम्बशुम् बाहु तीऱ्ऱि
मन्दिरत् तयिनि नीराल् वलञ्जॅय्दु काप्पु मिट्टार् 3938

इन्तिरै तेविक्कु–देवी इंदिरा (सीता) के; एऱ्प–योग्य; इयैवन–युक्त; चन्तिरन्–चन्द्र की; तेविमारिल्–पत्नियों के समान; तकै उऱु–सुन्दर; तरळम्–मोती के और; पैम् पूण्–चोखे स्वर्ण के आभरण; पूट्टि–पहनाकर; याणर्–ताजे; चिन्तुरम्–सिंदूर के समान; पवळम्–प्रवाल-सम; चॅव्वाय्–लाल अधरों पर; तेम्–मधुर; पचुम्–नवीन; पाकु–तांबूलरस; तीऱ्ऱि–लगाकर; मन्तिरत्तु–मंत्रोच्चारण के साथ; अयिनि नीराल्–अन्नमिश्रित जल को; वलम् चॅय्तु–दायीं ओर से घुमाकर; काप्पुम् इट्टार्–रक्षा-बन्धन किया। ३९३८

श्रीदेवी सीता के योग्य, चंद्रपत्नी नक्षत्रिकाओं के समान मुक्ताओं की तथा स्वर्णनिर्मित आभरण पहनाये। नये, सिंदूर तथा प्रवाल-सम अधरों पर मधुर तथा नवीन 'तांबूल सार' लगाया। फिर मंत्रोच्चारण के साथ अन्नमिश्रित जल की थाली घुमायी और उसी जल से भाल पर 'दृष्टिदोष' से रक्षित करने के लिए बिंदी लगायी। ३९३८

मण्डल मदियि नाप्पण् मानिरुन् दॅन्न मानम्
कॊण्डन रेऱ्ऱि वान मडन्दैयर् तॊडर्न्दु कूड
मण्डिवा नररु मोड वरक्करुम् बुऱञ्जूळ्न् दोड
अण्डर्ना यहन्पा लण्णल् वीडण नरुळिऱ् चॅन्ऱान् 3939

मतियिन्–चन्द्र; मण्टलम् नाप्पण्–मंडलमध्य; मान् इरुन्तॅन्न–हरिण रहता जैसे; मानम्–यान पर; कॊण्टतर् एऱ्ऱि–ले रखकर; वानम् मटन्तैयर्–देव-ललनाएँ; तॊटर्न्तु कूट–साथ गयीं; वानररुम्–वानर भी; मण्टि ओट–एकत्र, साथ आये; अरक्करुम्–राक्षस भी; पुऱम्–बाजू में; चूळ्न्तु ओट–घेरकर दौड़े आये; अण्टर्–देवों के; नायकन् पाल्–नायक के पास; अण्णल् वीटणन्–महिमावान विभीषण; अरुळिल् चॅन्ऱान्–श्रीरामाज्ञा के अनुसार गया। ३९३९

चंद्रमंडल के मध्य जैसे हरिण रहता हो वैसे उन्होंने सीताजी को यान पर चढ़ाया। देवस्त्रियाँ साथ रहीं। विभीषण उन्हें अंडनायक श्रीराम के पास उनकी आज्ञा के अनुसार ले चलने लगा। तब वानर वीर पास रहते गये और राक्षस लोग चारों ओर भीड़ लगाकर तेज चलने लगे। ३९३९

इप्पुऱत् तिमैयवर् मुनिव रेळैयर्
तुप्पुऱच् चिवन्दवाय् विञ्जैत् तोहैयर्
मुप्पुऱत् तुलहिनु मॅण्णिन् मुऱ्ऱिनोर्
ऒप्पुऱक् कुविन्दन रोहै कूऱुवार् 3940

इ पुऱत्तु–इधर; इमैयवर्–देव; मुनिवर्–ऋषि; एळैयर्–पत्नियाँ; तुप्पु उऱ–प्रवाल-सम; चिवन्त–लाल; वाय्–अधरों वाली; विञ्चै तोकैयर्–विद्याधारियाँ;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मु पुऱत्तु–त्रिविध; उलकिऩुम्–लोकों के; ऍण्णिल्–गिनती में; मुऱ्ऱिऩोर्–बढ़ी (स्त्रियाँ); ओर्क कूऱुवार्–संतोष-समाचार कहते हुए; ऑप्पुर्–एक साथ; कुविन्तऩर्–आकर भीड़ में मिले। ३९४०

इधर देव, ऋषि, उनकी पत्नियाँ, प्रवाल-सम अधर वाली विद्याधर-वनिताएँ और त्रिलोकवासिनी असंख्यक रमणियाँ आपस में संतोष समाचार कहते हुए एक साथ आकर जुटीं। ३९४०

अरुङ्गुलक् कऱ्पिऩुक् कणियै यण्मिऩार्
मरुङ्गुपिऩ् मुऩ्शेल वऴियिऩ् ऱॆऩ्ऩलाय्
नॆरुङ्गिऩर् नॆरुङ्गुऴि निरुद रोच्चलाल्
करुङ्गडऩ् मुऴक्कॆऩप् पिऱन्द कम्बलै 3941

अरु कुलम्–श्रेष्ठकुल-जाता; कऱ्पिऩुक्कु–पातिव्रत्य के; अणियै–श्रृंगार को; अण्मिऩार्–पास आकर; मरुङ्कु–पास में; पिऩ् मुऩ्–पीछे और आगे; चॆल–हटने; वऴि इऩ्ऱु–मार्ग नहीं; ऍऩ्ऩलाय्–ऐसी रीति से; नॆरुङ्किऩर्–सटे; नॆरुङ्कु उऴि–सटते समय; निरुतर् ओच्चलाल्–राक्षसों के वेत्र उठाकर भगाने से; करु कटल्–काले सागर के; मुऴक्कु ऍऩ–गर्जन के समान; कम्पलै पिऱन्त–हो-हल्ला मचा। ३९४१

इस भाँति सभी लोग पातिव्रत्य के श्रृंगार, कुलीना सीताजी को चारों ओर से पास से घेरकर आगे, पीछे, पार्श्वों में सर्वत्र जाने लगे और इधर-उधर हटने के लिए स्थान नहीं रहा। तब भीड़ को रोकने के लिए राक्षसों ने छड़ी घुमायी तो काले सागर के गर्जन के समान बड़ा हल्ला मच गया। ३९४१

अव्वऴि यिरामऩु मलर्न्द तामरैच्
चॆव्विवाण् मुहङ्गॊडु शॆयिर्त्तु नोक्कुऱा
इव्वॊलि यावदॆऩ् ऱियम्ब विऱ्ऱॆऩाक्
कव्वॆयिऩ् मुऩिवरर् कऴऱि नाररो 3942

अव्वऴि–तब; इरामऩुम्–श्रीराम ने भी; अलर्न्त–प्रफुल्लित; तामरै–कमल-सम; चॆव्वि–अच्छे; वाळ् मुकम् कॊटु–प्रकाशमय मुख पर; चॆयिर्त्तु–क्रोध का भाव लाकर; नोक्कुऱा–देखकर; इव् ऑलि–यह शोर; यावऩु–क्या; ऍऩ्ऱु इयम्प–ऐसा पूछा; कव्वॆयिऩ्–उच्च स्वर में; मुऩिवरर्–मुनिवरों ने; इऱ्ऱु ऍऩा–यही है; कऴऱिऩार्–ऐसी बात बतायी। ३९४२

तब श्रीराम का अरुण कमल के समान सुन्दर श्रीमुख पर कोप का भाव जग गया। कोप के साथ देखकर श्रीराम ने पूछा कि यह शोर काहे का? तब उच्च आवाज़ में मुनिवरों ने 'उसका कारण अमुक है' बताया। ३९४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुनिवरर् वाशहङ् गेट्पु ऱादमुन्
नतियिदऴ् तुडित्तिड नहैत्तु बीडणन्
तत्तैयॅऴ नोक्किनी तहाद शॅय्दियो
पुत्तिदनूल् कऱ्ऱुणर् पुन्दि योयॅन्ऱान् 3943

मुनिवार्–मुनिवरों के; वाचकम्–वचनों को; केट्पुऱात मुन्–सुनने के पूर्व ही; इतऴ्–अधरों के; नति–खूब; तुटित्तिट–फड़कते; नकैत्तु–हँसकर; बीटणन् तत्तै–विभीषण को; ऍऴ नोक्कि–मुख उठा देख; पुत्तित नूल्–पवित्र ग्रंथ; कऱ्ऱ उणर्–पढ़कर ज्ञानमय; पुन्तियोय्–बुद्धिवाले; नी–तुम; तकात–अनुचित कार्य; चॅय्तियो–करो क्या; ऍन्ऱान्–पूछा। ३९४३

मुनिवरों का उत्तर सुनते ही श्रीरामजी क्रोध की हँसी हँसे, तब उनके सुंदर अधर खूब फड़के। विभीषण से पूछा कि हे पवित्र शास्त्रज्ञ बुद्धिमान ! तुम भी अनुचित कार्य करोगे क्या ? । ३९४३

कडुन्दिऱ लमर्क्कळङ् गाणु माशैयाल्
नॅडुन्दिशैत् तेवरु नित्ऱ यावरुम्
अडैन्दन्न रुवहैयि नडैहित् ऱार्हळैक्
कडिन्दिड यार्शॊन्नार् करुदु नूल्वलाय् 3944

करुतुम्–अन्वेषण योग्य; नूल् वलाय्–ग्रंथों में चतुर; कटु तिऱल्–कठोर बल-प्रदर्शन के; अमर् कळम्–युद्धाजिर को; काणुम्–देखने की; आचैयाल्–इच्छा से; उबकैयित्–उत्साह के साथ; अटैकित्ऱार्कळै–आनेवालों को; नॅटु तिचै–लम्बी दिशाओं में; तेवरुम्–रहनेवाले देवों को; नित्ऱ यावरुम्–अन्य स्थित लोगों को; कटिन्तिट–डाँटने को; चॊन्नार्–कहनेवाला; यार्–कौन था। ३९४४

अन्वेषण योग्य शास्त्रनिपुण हे विभीषण ! बहुत क्रूरता के साथ जहाँ युद्ध किया गया था उस युद्धभूमि को देखने की उत्कट इच्छा से, उत्साह ले जो आ रहे हैं, उन लंबी दिशाओं के देवों और अन्य लोगों को डाँट-डपटकर दूर करने की आज्ञा किसने दी ? । ३९४४

परशुडैक् कडवुऴ् नेमिप् पण्णवन् पदुमत् तण्णल्
अरशुडैत् तॅरिवै मारै यित्ऱियै यमैव दुण्डो
करैशॅयऱ् करिय तेव रेत्तैयोर् कलन्दु काण्बात्
विरशुऱित् विलक्कु वारो वेऱुळार्क् कॅन्गोल् वीर 3945

वीर–वीर; परचु उटै–परशुधर; कटवुऴ्–ईश्वर; नेमि–चक्रायुध; पण्णवत्–के धारक; पतुमत्तु अण्णल्–पद्मासन देव; अरचु उटै–ऐश्वर्यमयी; तॅरिवै मारै–अपनी-अपनी स्त्रियों के; इत्ऱि–बिना; अमैवतु–रहें; उण्टो–ऐसा होगा क्या; वेऱुळार्क्कॅन् कोल्–फिर अन्यों की बात क्या; करै चॅयऱ्कु–सीमा जानने में; अरिय–कठिन; तेबर्–देवता; एत्तैयोर्–और अन्य; कलन्तु–मिलकर; काण्पात्–देखने; विरचुरित्–पास आयें तो; विलक्कुवारो–हटायेंगे क्या। ३९४५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे वीर ! परशुधर शिव, चक्रधर विष्णु और पद्मासन ब्रह्मा विना अपनी पत्नियों को साथ लिये रहते हैं क्या ? फिर अन्यों की बात क्या ? (स्त्रियाँ साथ आयेंगी ही !) अपार देव और अन्य मुनिगण आदि मिलकर देखने के लिए आयें तो उन्हें कोई हटायेंगे क्या ? । ३९४५

आदला ऩरक्कर् कोवे यडुप्पदन् ऱुऩक्कु मिऩ्ऩे
शादुहै मान्दर् तम्मैत् तडुप्पदन् ऱुरुळिच् चॆङ्गण्
वेदना यहऩ्ऱा निऱ्प वॆय्दुयिर्त् तलक्क णॆय्दिक्
कोदिला मऩऩु मॆय्युङ् गुलैन्दऩन् कुणङ्गळ् तूयोऩ् 3946

आतलाल्–इसलिए; अरक्कर् कोवे–राक्षसराज; इऩ्ऩे–अभी; चातु कै–साधु-प्रकृति के; मान्तर् तम्मै–लोगों को; तटुप्पतु–रोकना; उऩक्कु–तुम्हारे लिए; अटुप्पतु–उचित; अऩ्ऱु–नहीं; ऎऩ्ऱु अऱुळि–ऐसा कहकर; चॆम् कण्–अरुणाक्ष; वेत नायकऩ्–वेदनायक के; निऱ्प–स्थित होते; कुणङ्कळ्–गुणों में; तूयोऩ्–पवित्र; अलक्कण्–दुःख; ऎय्ति–पाकर; वॆय्तुयिर्त्तु–निःश्वास छोड़कर; कोतिला–निर्दोष; मऩऩुम्–मन और; मॆय्युम्–शरीर से; कुलैन्तऩऩ्–काँपने लगा । ३९४६

इसलिए हे राक्षसराज ! उन साधु-व्यवहार लोगों को रोकना तुम्हारे लिए उचित काम नहीं । अभी आने दो । —इस तरह अरुणाक्ष वेद-नायक श्रीराम ने कृपा से आज्ञा सुनायी । पवित्र गुणों वाला विभीषण दुःखी हुआ ! लम्बी साँसें छोड़ता हुआ काँपने लगा यद्यपि शरीर और मन से वह अनिंद्य था । ३९४६

अरुन्ददि यऩैय नङ्गै यमर्क्कळ मणुहि याडऱ्
परुन्दॊडु कळुहुम् बेयुम् पशिप्पिणि तीरु माऱु
विरुन्दिडु विल्लिऩ् शॆल्वऩ् विळावणि विरुम्बि नोक्किक्
करुन्दडङ् गण्णु नॆञ्जुङ् गळित्तिड विऩैय शॊऩ्ऩाळ् 3947

अरुन्तति–अरुन्धती; अऩैय–समाना; नङ्कै–देवी ने; अमर् कळम्–युद्धाजिर; अणुकि–के पास आ; आटल्–सशक्त; परुन्तॊटु–बाजों के साथ; कळुकुम्–गीधों और; पेयुम्–भूतों के; पचि पिणि–भूख का रोग; तीरुमाऱु–निवारण हो ऐसा; विरुन्तिटु–दावत जिन्होंने दी; विल्लिऩ् चॆल्वऩ्–उन कोदंडपाणी के; अणि विळा–सुन्दर उत्सव को; विरुम्पि–चाह के साथ; नोक्कि–देखकर; करु–काली; तट–विशाल; कण्णुम्–आँखों और; नॆञ्चुम्–मन के; कळित्तिट–मुदित होते; इऩैय–ये वचन; चॊऩ्ऩाळ्–कहे । ३९४७

अरुंधती-सी सीताजी युद्धभूमि के पास आयीं । बाज़ों, गीधों और भूतों की भूख मिटाते हुए जिन्होंने उन्हें अच्छी दावत का प्रबंध कराया था, उन कोदण्डपाणी के युद्धोत्सव-दृश्य का चाव के साथ संदर्शन किया । फिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन में आनंद के साथ, जो उनकी काली और बड़ी आँखों में भी प्रगट हो रहा था, उन्होंने ये (निम्नोक्त) बातें (आप ही आप) कहीं। ३९४७

शीलमुङ् गाट्टियॅन् कणवन् शेवहक्
कोलमुङ् गाट्टियॅन् कुलमुङ् गाट्टियिऴ्
ञालमुङ् गाट्टिय कविक्कु नाळऱाक्
कालमुङ् गाट्टुङ्गो लॅन्ऱन् कऱ्पॅन्ऱाळ् 3948

चीलमुम्—मेरी सुशीलता; नाट्टि–साबित करके; अॅन् कणवन्–मेरे पति के; चेवकम्–वीरता के; कोलमुम्—दृश्य को; काट्टि–दिखाकर; अॅन् कुलमुम्–मेरे कुल को; काट्टि–दिखाकर; इञ्ञालमुम्–इस लोक को भी; काट्टिय–जिसने दिखाया; कविक्कु–उस वानर को; अॅन् तन्–मेरा; कऱ्पु–पातिव्रत्य; नाळ् अऱा–निरंतर; कालमुम्—काल तक जीना; काट्टुम् कॊल्–दिखा देगा क्या। ३९४८

इस हनुमान ने मेरे शील को साबित किया। मेरे पति की वीरता के दृश्य को लोकों के जानने में सहायता की। मेरे कुल की महिमा को प्रगट कराया। इस संसार को भी स्थिति दिलायी। इस वानर को क्या मेरा पातिव्रत्य चिरंजीवता दिला सकेगा? (इस पद्य में 'काट्टु'— दिखाना या प्रगट करना —शब्द विविध अर्थों में प्रयुक्त किया गया है।)। ३९४८

अॅच्चिलॅन् नुडलुयि रेहिऱ् ऱेयिनि
नच्चिलै यॅन्बदोऱ् नवैयि लाळॅदिऱ्
पच्चिलै वण्णमुम् पवळ वायुमाय्क्
कैच्चिलै येन्दिनिन् ऱदनैक् कण्णुऱ्ऱाळ् 3949

अॅन् उटल्–मेरा शरीर; अॅच्चिल्–अपवित्र बन गया; उयिऱ्–प्राण; एकिऱ्ऱे–गये ही (समझो); इनि–अब; नच्चु–कोई इच्छा; इल्लै–नहीं; अॅन्पदु ओऱ्–ऐसे विचार की; नवै इलाळ्–पवित्र देवी; अॅतिऱ्–सामने; पचु इलै–तमाल; वण्णमुम्–वर्ण; पवळ वायुम् आय्–प्रवालाधर बन; कै चिलै एन्ति–हाथ में धनु लेकर; निन्ऱनतै–जो स्थित थे उन्हें; कण्णुऱ्ऱाळ्–देखा। ३९४९

मेरा शरीर (राक्षस की कारा में रहने से) जूठा (अपवित्र) हो गया है! प्राण ही गये हैं! अब मेरी कोई अभिलाषा न रही। निर्दोष सीताजी ने ऐसा एक भाव लेकर अपने सामने तमालवर्ण, प्रवालाधरयुक्त कोदंडपाणी के दर्शन किये। उन्हें अपनी आँखों से देखा। ३९४९

मानमी दरम्बैयऱ् शूळ वन्बुळाळ्
पोनपे रुयिरिनैक् कण्ड पॊय्युडल्
तानदु कवर्वऱुन् दन्मैत् तामॅन
आननङ् गाट्टुऱ् ववनि यॅय्दिनाळ् 3950

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरम्पैयर्–अप्सराओं के; चूळ–घेरे आते; मानम् मीतु–यान पर; वन्तुळाळ्–जो आयीं वे; पोन–छूटकर गये; पेर् उयिरिनै–बड़े प्राणों को; कण्ट–फिर देखकर; पॊय्युडल्–भंगुर शरीर; तान्–स्वयं; अतु–उन प्राणों को; कवर्वुरुम्–फिर से अपना ले; तन्मैत्तु–ऐसी रीति; आम्–हो; ऎन–मानो; आननम्–आनन; काट्टुर–दिखाने; अवनि–भूमि पर; ऎय्तिनाळ्–उतरीं । ३९५०

अप्सराओं से आवृत, यान पर जो आयी थीं वे अपने आनन से ऐसा भाव दिखाते हुए यान से उतरीं जिसमें पहले छूटे प्राणों को फिर से देखकर जड़ शरीर उन्हें अपना लेने की त्वरा दिखा रहा हो ! । ३९५०

पिरप्पिनुन् दुणैवनैप् पिरविप् पेरिडर्
तुरप्पिनुन् दुणैवनैत् तॊळुदु नानिनि
मरप्पिनु नन्रिदु मारु वेरुवीळ्न्
दिरप्पिनु नन्रॆन वेक्क नीङ्गिनाळ् 3951

पिरप्पिनुम्–(किसी भी) जन्म में; तुणैवनै–संगी जो होंगे उन्हें; पेर् पिरवि–बड़ी, जन्म की; इटर् तुरप्पिनुम्–बाधा छूटे तब भी; तुणैवनै–सहायक को; नान्–मैं; तॊळुदु–नमस्कार करती; इनि–आगे; मरप्पिनुम्–भूल जाऊँ तो भी; नन्रु–अच्छा है; इतु मारु–इसके विपरीत; वेरु–अन्य रीति से; वीळ्न्तु–गिरकर; इरप्पिनुम्–मर जाऊँ तो भी; नन्रु–अच्छा ही होगा; ऎन–ऐसा सोचकर; एक्कम्–दुःख; नीङ्किनाळ्–छोड़ दिया । ३९५१

देवी ने सोचा कि मैं इनके दर्शन कर चुकी जो कि मेरे किसी भी भावी जन्म में जीवनसंगी रहेंगे और जन्म के कठोर दुःख के अंत होने के बाद भी मेरे संगी होंगे ! इनकी पूजा करने के बाद उन्हें भूल जाऊँ तो भी भला समझूँगी; या मरकर गिर जाऊँ तो भी अच्छा ! वे दुःख से छूट गयीं । ३९५१

कर्पिनुक् करशियैप् पॆण्मैक् काप्पिनैप्
पॊर्पिनुक् कळ्हिनैप् पुहळ्निन् वाळ्क्कैयैत्
तर्पिरिन् दरुळ्पुरि तरुमम् पोलियै
अर्पिनत् तलैवनु मैय नोक्किनान् 3952

तलैवनुम्–नायक श्रीराम ने; कर्पिनुक्कु–पातिव्रत्य की; अरचियै–रानी को; पॆण्मै–स्त्रीगुणों के; काप्पिनै–रक्षण को; पॊर्पिनुक्कु–सुन्दरता के; अळ्किनै–सौन्दर्य को; पुकळ्निन्–यश की; वाळ्क्कैयै–जीवनधात्री को; तन् पिरिन्तु–अपने से अलग; अरुळ् पुरि–कृपा करनेवाली; तरुमम्–धर्म के; पोलियै–समान रहने वाली को; अर्पिन्–प्रेम से; मैय–खूब; नोक्किनान्–देखा । ३९५२

नायक श्रीराम ने भी सीताजी को प्रेम के साथ खूब निहारा, जो कि पातिव्रत्य की रानी थीं, स्त्रीगुणों की रक्षक थीं, सुंदरता की सुंदरता थीं,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यश की जीवनदायिनी थीं और जो उनसे अलग रहकर कृपा करते रहे धर्म समान थीं। ३९५२

शुणङ्गुऱु तुणैमुलै मुन्ऱिऱ् ऱूङ्गिय
अणङ्गुऱु नॆडुङ्गणी ऱाऱु पाय्दर
वणङ्गियन् मयिलिनै माशिल् कऱ्पिनै
पणङ्गिळ ररवॆन बॆळुन्दु पार्प्पुऱा 3953

चुणङ्कु उऱु–पांडुरता से युक्त; तुणै मुलै–स्तनद्वय के; मुन्ऱिल्–अग्रभाग पर; तूङ्किय–गिरे हुए; अणङ्कु उऱु–दुःख-प्रदर्शक; नॆटु कणीर्–लम्बी अश्रु-धारा की; आऱु पाय् तर–नदी के बहते; वणङ्कु–विनत; इयल्–छटा में; मयिलिनै–कलापी-सी सीता को; माचिल् कऱ्पिनै–अनिंद्य पतिव्रता को; पणम् किळर्–फन फैलाये; अरवु ऍनै–सर्प के समान; ऍळुन्तु–कोप के साथ; पार्प्पुऱा–देखकर। ३९५३

पांडुरता से भरे सुंदर स्तनद्वय के अग्रभाग पर आँखों से अश्रु की नदी-सी बहाते हुए छटा में कलापी-सी रहनेवाली सीताजी नमस्कार कर रही थीं,। उन अनिंद्य पतिव्रता को फन फैलाकर उठनेवाले सर्प के के समान सिर उठाकर श्रीराम ने देखा और। ३९५३

ऊण्डिऱ भुवन्दनै यॊळुक्कम् बाळ्पड
माण्डिलै मुऱैतिऱम् बरक्कन् मानहर्
आण्डुऱैन् दडङ्गिनै यच्चन् दीर्न्दिवण्
मीण्डदॆन् निनैवॆनै विरुम्बु मॆन्बदो 3954

मुऱै तिऱम्पु–अक्रमी; अरक्कन्–राक्षस के; मा नकर्–बड़े नगर में; आण्टु–वहाँ; उऱैन्तु–वास करके; अटङ्किनै–अधीन रहीं; ऊण् तिऱम्–भोजन; उवन्तनै–भोगा; ऒळुक्कम्–चरित्र के; पाळ् पट–बिगड़ने पर भी; माण्डिलै–मरीं नहीं; अच्चम्–डर; तीर्न्तु–छोड़कर; इवण्–यहाँ; मीण्टतु–फिर आयीं जो; ऍन् निनैवु–वह क्या सोचकर; ऍनै–मुझे; विरुम्पुम्–चाहेगा; ऍन्पतो–यह विचार क्या। ३९५४

निष्ठुरता के साथ कहा कि अनीतिमान राक्षस के लंका नगर में बहुत दिन वास करती अधीन रहीं। यहाँ का भोजन तुम्हें भोग्य रहा। चरित्र नष्ट हो गया तो भी मरीं नहीं! सारा भय छोड़कर तुम मेरे पास लौटीं क्या सोचकर? तुमने सोच लिया कि राम मुझे चाहेगा?। ३९५४

उन्नैमीट् पान्पॊरुट् टुवरि तूर्त्तॊळिर्
मिन्नैमीट् टुऱुपडै यरक्कर् वेरऱप्
पिन्नैमीट् टुऱुपहै कडन्दि लेन्पिळै
ऍन्नैमीट् पान्पॊरुट् टिलङ्गै यॆय्विनेन् 3955

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनृतै–तुम्हें; मीट्पात्–छुड़ाने; पॊरुट्टु–के लिए; उवरि–सागर; तूर्त्तु–पाटकर; ऒळिर्–उज्ज्वल; मिन्नै–बिजली को; मीट्टुऱु–भगानेवाले; पटै–हथियारों के; अरक्कर्–राक्षसों को; वेर् अऱ–मूल से काटकर; पिन्नै–फिर भी; मीट्टु–आगे भी; उऱु पकै–बने शत्रु को; कटन्तिलेन्–मारा नहीं; पिऴै–अपराध से; ऎन्नै–मुझे; मीट्पान् पॊरुट्टु–छुड़ा लेने के लिए; इलङ्कै–लंका में; ऎय्तिनेन्–आया। ३९५५

मैंने सागर पाटा; विद्युत्प्रहासी हथियार वाले राक्षसों को निर्मूल किया। उत्तरोत्तर युद्ध करके शत्रुसंहार किया —यह सब किया, तुम्हें छुड़ाने के वास्ते नहीं! पर मुझे अपने को (पत्नी के अपहारी को न मारने के) दोष से छुड़ा लेना था। उसी के निमित्त मैं लंका आया। ३९५५

मरुन्दिनु मिनियमन् नुयिरिन् वान्ऱशै, अरुन्दिनै येनऱ् वमैय वुण्डिये
इरुन्दनै येयिनि यॆमक्कु मेऱ्पन, विरुन्दुळ वोवुरै वॆम्मै नीङ्गिनाय् 3956

वॆम्मै–प्यार; नीङ्किनाय्–छोड़ चुकी; मन्नु उयिरिन्–नित्य जीवों के; वान् तचै–श्रेष्ठ मांस को; मरुन्तिनुम्–अमृत से भी; इनिय–मधुर मानकर; अरुन्तिनैये–खाया न; नऱवु–मद्य; अमैय–खूब; उण्टिये–पिया; इरुन्तनैये–इस तरह रहीं; इनि–अब; ऎमक्कुम्–हमारे भी; एऱ्पन–योग्य; विरुन्तु–भोज; उळवो–हैं क्या; उरै–कहो। ३९५६

मुझ पर प्रेम को हे छोड़ चुकनेवाली! जीवंत जीवों के श्रेष्ठ मांस को अमृत से भी मधुर मानकर खाती रहीं! मद्य खूब दिल अघाकर पीती रहीं! इस भाँति मज़े में रहीं न! फिर क्या हमारे लिए भी योग्य भोज का इंतिज़ाम होगा? बताओ। ३९५६

कलत्तिनिऱ् पिऱन्दमा मणियिऱ् कान्दुऱु
नलत्तिनिऱ् पिऱन्दन नडन्द नन्मैशाल्
कुलत्तिनिऱ् पिऱन्दिलै कोळिल् कीडम्बोल्
निलत्तिनिऱ् पिऱन्दमै निरप्पि नायरो 3957

कलत्तिनिल्–आभरणों में; पिऱन्त–जड़ित होनेवाले; मामणियिल्–मूल्यवान रत्नों के समान; कान्तुऱु–कांतिमय; नलत्तिनिल्–श्रेष्ठता के साथ; पिऱन्तन–उत्पन्न; नटन्त–चले; नन्मै चाल्–उत्तम; कुलत्तिनिल्–कुल में; पिऱन्तिलै–जनमीं न हो ऐसे; कोळ् इल्–दुर्बल; कीटम् पोल्–कीड़े की तरह; निलत्तिनिल्–भूमि में; पिऱन्तनै–जनमने का गुण; निरप्पिनाय्–दिखा दिया। ३९५७

आभरण-मध्य जड़ित होनेवाले रत्नों के समान उज्ज्वल तथा श्रेष्ठता के लिए रचित अच्छे गुण तुम्हें छोड़ गये हैं! तुम भूमि से उत्पन्न हुईं और श्रेष्ठ कुल में पैदा न होकर धरती में उपजे निर्बल कीड़े के समान उसका-सा गुण दिखा दिया! । ३९५७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पण्मैयुम् बॅरुमैयुम् बिऱप्पुङ् गऱ्पॅनुम्
तिण्मैयु मॉळुक्कमुन् दॅळिवुञ् जीर्मैयुम्
उण्मैयु नीयॅनु मॉरुत्ति तोन्ऱलाल्
वण्मैयिन् मन्नवन् पुहळिन् माय्न्ददाल् 3958

पॅण्मैयुम्–स्त्रियोचित गुण; पॅरुमैयुम्–गौरव; पिऱप्पुम्–जन्म; कऱ्पॅनुम्–पातिव्रत्य; तिण्मैयुम्–की दृढ़ता; ऑळुक्कम्–शील; तॅळिवुम्–निर्णय; चीर्मैयुम्–यश और; उण्मैयुम्–सत्य; नी ऍनुम्–तुम जो; ऑरुत्ति–एक; तोन्ऱलाल्–पैदा हुई तो; वण्मैयिल्–अनुदार; मन्नवन्–राजा के; पुकळिन्–यश के समान; माय्न्ततु–मिट गये। ३९५८

(शरम, अबोधता, भय आदि) स्त्री के लिए उचित सारे गुण-गौरव, कुलीनता, पातिव्रत्यदृढ़ता, सच्चरित्र मन की निर्णयशीलता, यश, सत्य —ये सब तुम एक के जन्म के कारण अनुदार राजा के यश के समान मिट गये। ३९५८

अडैप्परैम् बुलन्गळै यॉळुक्क माणियाच्
चडैप्परन् दहैन्ददोर् तहैविन् मातवम्
बडैप्पर्वन् दिडैयॉरु पळिवन् दालवु
तुडैप्पर् तम्मुयिरॉडुङ् गुलत्तिऱ् ऱोहैमार् 3959

कुलत्तिल्–कुलीन; तोकैमार्–रमणियाँ; ऐम् पुलन्कळै–पंचेंद्रिय को; अटैप्पर्–रोकती हैं; ऑळुक्कम्–चरित्र को; आणिया–दृढ़ता से; चटै परम्–जटा-भार; तकैन्ततु–बनाकर; ओर् तकविन्–एक सुयोग्य; मातवम्–महान तप; पटैप्पर्–करती है; इटै–बीच में; ऑरु–एक; पळि वन्ताल्–निंदा लगे तो; उयिरॉडुम्–प्राण त्याग; वन्तु–के साथ आ; अतु–वह; तुटैप्पर्–पोंछ देंगी। ३९५९

कुलीन कलापीनिभ रमणियाँ वियोगावस्था में पंचेंद्रिय दमन करतीं, शील का सुदृढ़ पालन करके केश को जटाभार बनाके रखतीं और महान तपस्या में लीन रहतीं। बीच में कोई निंदा लगती तो प्राणों से उसको पोंछ लेतीं। (ये गुण तुम्हारे पास तो रहे ही नहीं।) । ३९५९

यादिया नियम्बुव दुणर्वै यीडऱच्
चेदिया निन्ऱदुन् नॉळुक्कञ् जॅय्वदु
शादिया लन्ऱॅतिऱ् ऱक्क दोर्नॅऱि
पोदिया लॅन्ऱनन् पुलवर् पुन्दियान् 3960

पुलवर्–ज्ञानियों के; पुन्तियान्–ज्ञान रूपी श्रीराम; यान्–मैं; इयम्पुवतु–कहूँ; यातु–कौन सा है; उन् ऑळुक्कम्–तुम्हारा चरित्र; उणर्वै–तुम्हारी बुद्धि को; ईटु अऱ–निर्बल बनाकर; चेतिया निन्ऱतु–छिन्न करता है; चॅय्वतु–करना (यही); चाति–मरो; अन्ऱु ऍनिल्–नहीं तो; तक्कतु–अपने योग्य; ओर् नॅऱि–किसी मार्ग में; पोति–जाओ। ३९६०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ज्ञनियों के ज्ञानदेव ने आगे जारी रखा— अब आगे कहने के लिए मेरे पास क्या है ? तुम्हारा अनुचित चरित्र मेरे (या तुम्हारे) मन को काटता है ! अब तुम्हारे लिए करना यही है कि मरो। वह नहीं हो सकेगा तो अपने योग्य किसी स्थान में चली जाओ। ३९६०

मुऩैवरु ममररु मऱ्ऱु मुऱ्ऱिय, निऩैवरु महळिरु निरुद रॅऩ्ऱुळार्
ऍऩैवरुम् वानरत् तॅवरुम् वेऱुळार्, अऩैवरुम् वाय्तिऱन् दरऱ्ऱि ऩाररो 3961

मुऩैवरुम्–मुनिवर और; अमररुम्–देव; मऱ्ऱुम्–और अन्य; मुऱ्ऱिय–पूर्ण-पक्व; निऩैवु अरु–ज्ञान से भी अगम; मकळिरुम्–स्त्रियाँ; निरुतर्–राक्षस; ऍऩ्ऱु–जो; उळार्–हैं; ऍऩैवरुम्–सभी; वानरत्तु–वानर के; ऍवरुम्–सभी; वेऱु उळार्–अन्य; अऩैवरुम्–सभी; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱिऩार्–रोने लगे। ३९६१

यह सुनकर मुनिवर, देव, अननुभित स्त्रियाँ, राक्षस जो थे वे, वानर जो थे वे और अन्य जाम्बवान आदि सभी असहनीय वेदना से तड़पते मुख खोलकर रोये। ३९६१

कण्णिणै युदिरमुम् बुऩलुम् कान्ऱुह
मण्णिऩै नोक्किय मलरिऩ् वैहुवाळ्
पुण्णिऩैक् कोलुऱुत् तऩैय पॊम्मलाळ्
उण्णिऩैप् पोविनिऩ् ऱुयिर्प्पु वीङ्गिऩाळ् 3962

मण्णिऩै नोक्किय–भूमि पर दृष्टि डाले; मलरिऩ् वैकुवाळ्–कमलासना; पुण्णिऩै–व्रण में; कोल्–छड़ी; उऱुत्तु–घसी; अऩैय–जैसे; पॊम्मलाळ्–दुःख से; कण्णिणै–अक्षद्वय से; उतिरमुम्–रक्त; पुऩलुम्–और जल; कान्ऱु उक–अधिक गिराते हुए; उळ् निऩैप्पु–प्रज्ञा; ओवि निऩ्ऱु–खोकर; उयिर्प्पु वीङ्किऩाळ्–लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। ३९६२

कमलासना सीताजी ने भूमि पर दृष्टि दिये, व्रण में छड़ी घुस गयी हो —ऐसी वेदना के साथ, अपनी आँखों से रक्त और आँसुओं को अधिक परिमाण में बहाते हुए संज्ञाहीन स्थिति में लंबी साँसें लीं। ३९६२

परुन्दडर् शुरत्तिडैप् परुहु नीर्नशै
वरुन्दरुन् दुयरिऩान् माळ लुऱ्ऱमान्
इरुन्दडङ् गण्डदि ऩॅय्दु ऱावहैप्
पॅरुन्दडै युऱ्ऱॅऩप् पेदुऱ् ऱाळरो 3963

परुन्तु अटर्–बाजों से भरे; चुरत्तु इटै–मरु प्रदेश में; नीर् परुकुम्–जल पीने की; नचै–इच्छा से; वरुन्तु–पीड़ा के; अरु–कठोर; तुयरिऩाल्–दुःख से; माळल्—मरणोन्मुख दशा को; उऱ्ऱ मान्–प्राप्त हरिण; इरु तटम्–विशाल तट; कण्टु–देखकर; अतिऩ्–उसके पास; ऍय्तुऱा वकै–न जा सके ऐसी; पॅरु तटै–बड़ी बाधा; उऱ्ऱु–पा गया; ऍऩ–जैसे; पेतुऱ्ऱाळ्—भ्रांत हुई। ३९६३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बाज़ों से भरे मरु प्रदेश में पिपासा से मरणोन्मुख मृग किसी विशाल तट को पा जाय पर उसे वहाँ जाने से रोकते हुए कोई बाधा उपस्थित हो जाय —उस हरिण की-सी स्थिति में आकर देवी भ्रांत हुईं । ३९६३

उऱ्ऱुनिन् ऱुलहिनै नोक्कि योडरि, मुऱ्ऱुऱु नॆडुङ्गणी रालि मॊय्त्तुह
इऱ्ऱदु पोलुम्या निऱुन्दु पॆऱ्ऱपे, ऱुऱ्ऱदा लॆन्ऱव मिन्ऱॆन् ऱोदुबाळ् 3964

उऱ्ऱु निन्ऱु–भ्रांत रहकर; ओटु–चंचल; अरि मुऱ्ऱुऱुम्–डोरे से युक्त; नॆटुङ्कण्–लम्बी आँख से; नीर् आलि–अश्रुधारा; मॊय्त्तु उळ–घने रूप से गिराते हुए; उलकिनै नोक्कि–संसार को देखकर; यान्–मैं; इरुन्तु–(अच्छी) रहकर; पॆऱ्ऱ पेऱु–जो पायी उसका फल; इऱ्ऱतु–व्यर्थ गया; ऍन् तवम्–मेरी तपस्या; इन्ऱु–आज; उऱ्ऱतु–गयी; ऍन्ऱु–कहकर; ओतुवाळ्–बोलीं । ३९६४

इस तरह भ्रांतचित्त होकर, लाल डोरे के साथ शोभती आँखों से अश्रुकणों को निरंतर ढलकाते हुए आम रूप से लोकों को व्यथा जतायी कि जीवित रहकर पाया यही फल ! मेरी तपस्या आज गयी ! फिर श्रीराम से बोलीं । ३९६४

मारुदि वन्दॆनैक् कण्डु वळ्ळनी
शारुदि यीण्डॆनच् चमैयच् चॊल्लिनान्
यारिनु मॆय्म्मैया निशत्त दिल्लैयो
शोरुमॆन् निलैयवन् तूदु मल्लनो 3965

वळ्ळल्–उदार प्रभु; मारुति–मारुति ने; वन्तु–आकर; ऍनै कण्टु–मुझे देख; नी–तुम; ईण्टु–इधर; चारुति–आओ; ऍन–ऐसा; चमैय–धीरज देकर; चॊन्नतान्–कहा; यारिनुम्–सबों में; मेन्मैयान्–श्रेष्ठ उसने; चोरुम्–घुलती; ऍन् निलै–मेरी दशा; इचैत्ततु–बतायी; इल्लैयो–नहीं क्या; तूतुम्–क्या वह दूत; अल्लतो–नहीं था । ३९६५

हे वदान्य ! मारुति ने आकर मुझसे धैर्य के साथ कहा कि तुम इधर आओ । सर्वश्रेष्ठ उसने मेरी दीन-हीन स्थिति आपसे नहीं बतायी क्या ? क्या वह उत्तम दूत नहीं था शायद ? । ३९६५

ऍत्तव मॆन्नल मॆन्न कऱ्पुनान्
इत्तनै कालमु मुळन्द वीवॆलाम्
बित्तॆन लायवम् बिळैत्त दालन्ऱे
उत्तम नीमनत् तुणर्न्दि लामैयाल् 3966

उत्तम–पुरुषोत्तम; इत्तनै कालमुम्–इतना समय; नान् उळन्त–मैंने कष्ट उठाकर जो किया; ऍत्तवम्–वह सारा तप; ऍ नलम्–वह सारा सुकृत्य; ऍन्न कऱ्पुम्–मेरा श्रेष्ठ चरित्र; ईतु ऍलाम्–यह सब; नी मनत्तु–आपने मन में; उणर्न्तिलामैयाल्–नहीं जाना, इसलिए; पित्तु–पागल; ऍनल्–कहने योग्य जो; आय–रहा उसका; वम्पु–निरर्थक काम; इळैत्ततु–किया जैसा रहा । ३९६६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे पुरुषोत्तम ! मैं अब तक जो साधना करती रही वह कितना बड़ा तप, कितना बड़ा शील, कितना उत्तम पातिव्रत्य वह सब आप समझ नहीं सके। इसलिए वह सारा किया कराया पागलों के कार्य के समान उपेक्षणीय हो गया। ३९६६

पार्क्कॅलाम् बत्तिनि पदुमत् तानुक्कुम्,
पेर्क्कलाम् जिन्दैय ळल्लळ् पेदैयेन्
आर्क्कलाङ् गण्णव नन्रॅन् ऱालदु
तीर्क्कलान् दहैयदु तॅय्वन् देऱुमो 3967

पेतैयेन्–बेचारी मैं; पार्क्कु ॲलाम्–सारे लोक में; पत्तिति–पतिव्रता; पतुमत्तानुक्कुम्–पद्मासन के लिए भी; पेर्क्कलाम्–बदल जाय ऐसे; चिन्तैयळ्–मनवाली; अल्लळ्–नहीं हूं; पार्क्कॅलाम्–सारे लोकवासी; आर्क्कलाम्–वाह-वाही दे, ऐसी; कण्णवन्–दयालु आँख वाले श्रीराम; अन्ऱु ॲन्ऱाल्–'नहीं' कहें तो; अतु–वह राय; तीर्क्कलाम्–दूर किये जाने; तकैयतु–योग्य होगी क्या; तॅय्वम्–देव भी; तेऱुमो–समझेगा क्या। ३९६७

वराकी मुझे सारा संसार पतिव्रता मानता है ! पद्मासन भी मुझे डिगा नहीं सकते। तो भी सभी लोकों द्वारा साधुवाद के उच्च स्वर में प्रशंसित श्रीराम मानें कि वह सच नहीं तो उस राय को कोई देव भी दूर कर सकेगा क्या ? । ३९६७

पङ्गयत् तॊरुवनुम् बशुविन् पाहनुम्
शङ्गुकैत् ताङ्गिय तरुम मूर्त्तियुम्
अङ्गैयि नॆल्लिपो लनैत्तु नोक्किनुम्
मङ्गैयर् मनिलै युणर वल्लरो 3968

पङ्कयत्तु–पंकज के; ऒरुवनुम्–अनुपम देव और; पचुविस् पाकनुम्–ऋषभवाहन; चङ्कु–शंख; कै–हाथ में; ताङ्किय–धरनेवाले; तरुम मूर्त्तियुम्–धर्ममूर्ति; अङ्कैयिन्–करतल के; नॆल्लि पोल्–आँवले के समान; अनैत्तुम्–सबको; नोक्किनुम्–देख सकें तो भी; मङ्कैयर्–स्त्रियों की; मन निलै–चित्त-स्थिति; उणर वल्लरो–समझ सकेंगे क्या। ३९६८

पंकजासन, ऋषभवाहन पशुपति, शंखधर धर्ममूर्ति विष्णु —ये सब किसी भी वस्तु को करतलामलकवत् देख सकते हैं। पर वे भी क्या स्त्रियों की चित्तस्थिति को समझ सकेंगे ? । ३९६८

आदलिऱ् पुऱत्तिनि यारुक् काहबॆन्
कोदऱु तवत्तिनैक् कूऱिक् काट्टुहेन्
शादलिऱ् चिऱन्दबॊन् ऱिल्लै तक्कदै
वेदनिन् पणियदु विदियु मॆन्ऱनळ् 3969

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेत–वेदपुरुष; आतलाल्–इसलिए; इति–अब; अॅन् कोतु अऱु–मेरे अनिंद्य; तवत्तिनै–तप को; पुऱत्तु–बाहर; यारुक्कु आक–किसके लिए; कूऱि–कह; काट्टुकेन्–दिखाऊँ; चातलिल्–मरने से; चिऱन्ततु–श्लाघनीय; ओऱु–कुछ; इल्लै–नहीं है; निन् पणि–आपकी आज्ञा; तक्कते–उचित ही है; बितियुम् अतु–मेरी विधि वही; अॅऱ्ऱनळ्–कहा (देवी ने)। ३९६९

वेदपुरुष ! इस स्थिति में अपने अनिंद्य पातिव्रत्य की तपस्या की, पवित्रता को अन्य किसको कह सुनाऊँगी ? इसलिए मरने से श्लाघ्य कुछ नहीं ! आपकी आज्ञा बिलकुल उचित है ! मेरा प्रारब्ध भी वही है शायद ! देवी ने ऐसा कहा। ३९६९

इळैयवत् इऱैयळैत् तिडुदि तीयॅऩ
वळैयॊलि मुऩ्गैयाळ् वायिऱ् कूऱलुम्
उळैवुऱु मऩत्तव ऩुलहम् यावुक्कुम्
कळैकणैत् तॊऴवत् कण्णिऱ् कूऱिऩाऩ् 3970

वळै ऒलि–क्वणित कंकणों वाले; मुऩ् कैयाळ्–अग्रहस्त वाली के; इळैयवत् तऩै–लघु भ्राता को; अऴैत्तु–बुलाकर; तीं–आग; इडुति–जलाओ; अॅऩ–ऐसा; वायिल्–मुख से; कूऱलुम्–कहने पर; उळैवु–दुःख से; उऱु–पीड़ित; मऩत्तवऩ्–मन वाले ने; उलकम्–लोकों; यावुक्कुम्–सारे के; कळै कणै–आश्रय की; तॊऴ–वन्दना करने पर; अवऩ्–उन्होंने; कण्णिल्–आँखों के इशारे से; कूऱिऩाऩ्–जताया। ३९७०

फिर क्वणित-कंकण-हस्ता ने लघुराज को बुलाया और खुल्लम-खुल्ला कहा कि आग रचो। उसे सुनकर व्यग्रमन लक्ष्मण ने लोकाश्रय श्रीराम के चरणों में नमस्कार किया (और उनकी आज्ञा जाननी चाही)। श्रीराम ने भी आँखों के इशारे से अपना अभिप्राय जता दिया। ३९७०

एङ्गिय पॊऱुमलि ऩिऴिह णीरिऩऩ्, वाङ्गिय वुयिरिऩ ऩऩैय मैन्दऩुम्
आङ्गॆरि विदिमुऱै यमैवित् तानदऩ्, पाङ्गुऱ नडन्दऩळ् पदुमप् पोदिऩाळ् 3971

वाङ्किय उयिरिऩऩ्–हत-प्राणों वाले के; अऩैय मैन्ततुम्–समान हुए कुँअर ने; एङ्किय पॊऱुमलिऩ्–व्यग्रता के दुःख के कारण; इऴि कणीरिऩऩ्–बहनेवाले अश्रु के हो; आङ्कु–वहाँ; अॅरि–आग को; विति मुऱै–यथाविधि; अमैवित्ताऩ्–रच दी; पदुमम् पोतिऩाळ्–कमलासना; अतऩ् पाङ्कु उऱ–उसके पास लगी; नटन्ततळ्–चलीं। ३९७१

लक्ष्मण हतप्राण-से हो गये। दुःखतप्तमन से आँखों से आँसू बहाते हुए उन्होंने यथाविधि आग का प्रबंध करा दिया। कमलासना देवी उसके पास गयीं। ३९७१

तीयिडै यऱुहुऱच् चऩ्ऱु तेवऱ्क्कुम्
ताय्तऩिक् कुऱुहलुऩ् दरिक्कि लामैयाल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाय्तिऱन् दरऱ्ऱिऩ मऱैहळ् नाऩ्गॊडुम्
ओय्विऩल् लऱमुमऱ् ऱुयिर्हळ् यावैयुम् 3972

तेवर्क्कुम्–देवों की; ताय–अंबा के; तऩि–अकेले; ती इटै–आग के; मऱुकु उऱ–बहुत पास; चॆऩ्ऱु–जा; कुऱुकलुम्–पहुँचते ही; तरिक्किलामैयाल्–सह न सकने से; नाऩ्कु मऱैकळॊटुम्–चारों वेदों के साथ; ओय्विल्–अक्षय; नल् अऱमुम्–धर्म; मऱ्ऱु–और; उयिर्कळ् यावुम्–सभी जीव; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱिऩ–आहत स्वर में चिल्लाये। ३९७२

देवों की भी अंबा अकेली आग के पास गयीं तो चारों वेद, अक्षय धर्म और सभी जीव यह सह नहीं सके और मुख खोलकर प्रलाप करने लगे। ३९७२

वलम्वरु मळवैयिऩ् मऱुहि वाऩ्मुदल्
उलहमु मुयिर्हळु मोल मिट्टऩ
अलम्वर लुऱ्ऱऩ वलऱि यैयविच्
चलमिदु तक्किल ऎऩ्ऩच् चाऱ्ऱिऩ 3973

वलम् वरुम्–दायें घूमते; अळवैयिऩ्–समय में; वाऩ् मुतल्–स्वर्ग आदि; उलकमुम्–लोक; उयिर्कळुम्–और जीव; मऱुकि–घुलकर; अलम् वरल् उऱ्ऱऩ–अस्त-व्यस्त घूमकर; ओलमिट्टऩ–चिल्लाये; अलऱि–चिल्लाकर; ऐय–प्रभु; इ चलम् इतु–यह कोप; तक्किलतु–उचित नहीं; ऎऩ्ऩ–ऐसा; चाऱ्ऱिऩ–कहा। ३९७३

जब वे अग्नि की परिक्रमा करने लगीं, तब स्वर्गादि लोक और उनके सभी जीव क्षुब्ध हुए, अस्त-व्यस्त हुए और उच्च स्वर में चिल्लाये। बिलाप करते हुए उन्होंने श्रीराम से विनय की कि हे प्रभु ! यह कोप उचित नहीं। ३९७३

इऩ्दिरऩ् तेवियर् मुदल वेळैयर्
अऩ्दर वाऩिऩिऩ् ऱरऱ्ऱु हिऩ्ऱवर्
शॆऩ्दळिर्क् कैहळाऱ् चेय रिप्पॆरुऩ्
जुऩ्दक्र कण्गळै यॆऱ्ऱिऩ् तुळ्ळिऩार् 3974

इऩ्तिरऩ्–इन्द्र की; तेवियर्–पत्नियाँ; मुतल एळैयर्–आदि स्त्रियाँ; अऩ्तरम्–अंतरिक्ष के; वाऩिऩ् निऩ्ऱु–आकाश में खड़ी होकर; अरऱ्ऱुकिऩ्ऱवर्–बिलाप करतीं; चॆ तळिर् कैकळाल्–लाल पल्लवहस्तों से; चॆम्मै अरि–लाल डोरों-सह; पॆरु–बड़ी; चुऩ्तरम्–सुन्दर; कण्कळै–आँखों पर; ऎऱ्ऱि–पीटकर; तुळ्ळिऩार्–तड़पीं। ३९७४

इंद्राणी आदि देवियाँ आकाश में खड़ी रहकर रोयीं और अरुण-पल्लव हाथों से अपनी सुंदर बड़ी आँखों को पीटकर तड़पीं। ३९७४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नडुङ्गिनर् नान्मुहन् मुदल नायहर्
पडङ्गुरैन् ददुपडि शुमन्द पाम्बुवाय्
विडम्बरन् दुळदंन वॅदुम्बिऱ् ऱालुल
हिडन्दिरिन् दनशुडर् कडल्ह ळेङ्गिन 3975

नान्मुकन्–चतुर्मुख; मुतल–आदि; नायकर्—मुख्य देव; नटुङ्किनर्–काँपे; पटि चुमन्त–भूमि को ढोनेवाला; पाम्पु–साँप; पटम्–फन; कुऱैन्ततु–समेटकर; उलकु इटम्–भूतल में; वाय्–मुख से; विटम् परन्तु उळतु–निकला विष फैला हो; अॅन–ऐसा; वॅतुम्पिऱ्ऱु–तप्त हुआ; चुटर्–तेजपुंज; इटम्–स्थान; तिरिन्तन–बदले; कटल्कळ्–सागर; एङ्किन–रोये। ३९७५

चतुर्मुख आदि प्रमुख देवता काँपे। धरणीधर शेषनाग का फन संकुचित हो गया। भूतल सारा उसके मुख से निःसृत विष से ढँका जैसा तप्त हो गया। सूर्य आदि ज्योतिमंडल स्थान बदल गये। समुद्र तरस उठे। ३९७५

कनत्तिनाऱ् कडैन्दपूण् मुलैय कैवळै
मनत्तिनाल् वाक्किनान् मऱुवुऱ् ऱेनॅनिन्
शिनत्तिनाऱ् चुडुदियाऱ् ऱीच्चॅल् वावॅन्ऱाळ्
पुनत्तुळाय्क् कणवऱ्कुम् वणक्कम् बोक्किनाळ् 3976

कनत्तिनाल्–स्वर्ण से; कटैन्त पूण्–तराशकर बनाये गये आभरण-भूषित; मुलैय–स्तनों वाली; कैवळै–कंकणहस्ता सीता ने; ती चॅल्बा–अग्निदेव; मनत्तिनाल्–मन से; वाक्किनाल्–वाक् से; मऱु उऱ्ऱेन्–कलंकित हो गयी; अॅनिन्–तो; चिनत्तिनाल्–कोप के साथ; चुटुति–जला दो; अॅन्ऱाळ्–कहा; पुनम् तुळाय्—वन-तुलसीधारी; कणवऱ्कुम्–पति को भी; वणक्कम् पोक्किनाळ्–नमस्कार किया। ३९७६

तराशे हुए स्वर्ण से निर्मित आभरणधारिणी कंकणहस्ता सीता ने अग्नि से निवेदन किया कि हे अग्निदेव ! मन से कलंकित हो रही तो तुम मुझे कोप के साथ जला दो। फिर वनतुलसीमालाधारी श्रीराम की भी वन्दना की। ३९७६

नीन्दरुम् बुनलिडै निवन्द तामरै
एय्न्ददन् कोयिले यॅय्दु वाळॅनप्
पाय्न्दनळ् पाय्दलुम् बालिन् पञ्जॅनत्
तीन्ददव् वॅरियवळ् कऱ्पिन् तीयिनाल् 3977

नीन्त अरु–अतरणशक्य; पुनल् इटै–जलाशय में; निवन्त–ऊँचे उठे; तामरै–कमल रूपी; एय्न्त–योग्य; तन् कोयिले–अपने मंदिर में; अॅय्तुवाळ् अॅन–जाती जैसे; पाय्न्तनळ्–वेग से कूदीं; पाय्तलुम्–कूदते हो; अव् अॅरि–वह अग्नि।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अवळ् कऱ्पिन्-उनके पातिव्रत्य की; तीयिनाल्-आग से; पालिन् पञ्चु ऍन-शुद्ध रूई के समान; तीन्ततु-जली। ३९७७

फिर वे शीघ्र अग्नि में कूदीं मानो वे अपने ही अतरणयोग्य जल में ऊँचे उठे कमल रूपी मंदिर में पहुँच रही हों! उनके उसमें कूदते ही अग्नि उनके पातिव्रत्य की आग में दुग्ध-धवल रूई के समान जल गया। ३९७७

अऴुन्दिनळ् नङ्गैमऱ् ऱङ्गै यार्चुमन्
वॆऴुन्दन नङ्गिवॆन् दॆरियु मेनियान्
तॊऴुङ्गरत् तुणैयिनन् शुरुदि ञानत्तिन्
कॊऴुन्दिनैप् पूशलिट् टरऱ्ऱुङ् गॊळ्हैयान् 3978

अऴुन्तिनळ्-दुःखिनी; नङ्कै-देवी की (पातिव्रत्य की); अङ्कि-आग में; वॆन्तु-झुलसकर; ऍरियुम् मेनियान्-जलती देह वाला अग्नि; चुरुति ञानत्तिन्-वेदज्ञान के; कॊऴुन्तिनै-शिखर को; पूचल इट्टु-उच्च स्वर में बुलाकर; अरऱ्ऱुम्-रोने के; कॊळ्कैयान्-कार्य में लगा; तॊऴुम्-नमस्कार में जुड़े; करम् तुणैयिनन्-हस्तद्वय वाला; अङ्कैयाल्-अपने हाथों में; चुमन्तु-धारण करके; मॆऴुन्तनन्-उठा। ३९७८

दुःखिनी सीता के पातिव्रत्य के ताप से जल-भुनकर जलते शरीर के साथ अग्नि श्रुतिज्ञान के शिखर भाग श्रीराम की दुहाई में उच्च स्वर में रोते-चिल्लाते हुए अंजलिबद्ध अपने सुंदर हाथों में देवी को ले प्रगट हुआ। ३९७८

ऊडिन शीऱ्ऱत्ता लुदित्त वेर्हळुम्
वाडिन विल्लैया लुणर्त्तु माऱुण्डो
पाडिय वण्डॊडुम् बनित्त तेनॊडुम्
शूडिन मलर्हणीर् तोय्त्त पोन्ऱवाल् 3979

ऊटिन-झुंझलाहट से; चीऱ्ऱत्ताल्-(पति के) उत्पन्न क्रोध से दुःखी होने के कारण; उतित्त-झलक आये; वेर्कळुम्-स्वेदकण; वाडिन इल्लै-सूखे नहीं; उणर्त्तुम्-समझाने के वास्ते; माऱु-कोई प्रमाण; उण्टो-चाहिए क्या; चूटिन-धृत; मलर्कळ्-पुष्प; पाटिय-गाते; वण्डॊडुम्-भ्रमरों के साथ; पनित्त-रसते; तेनॊटुम्-मधु के साथ; नीर्-जल में; तोय्त्त पोन्ऱ-भिगोये-से लगे। ३९७९

सीतादेवी के शरीर पर श्रीराम के रुष्ट कोप के कारण उठे स्वेदकण भी न सूखे थे। फिर समझाने को क्या है? तो भी कहूँ। उन्होंने जो फूल धारण किये थे, वे उन पर गुंजार करते रहे भ्रमरों और उनसे झरते मधु के साथ वैसे ही नवीन रहे मानो वे जल में भिगोये गये हों। ३९७९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरिन्दन वुलहमुञ् जॅव्व तिन्ऱन, परिन्दव रुयिरॅलाम् बयन्द विर्न्दन
अरुन्ददि मुदलिय महळि राडुदल्, पुरिन्दनर् नाणमुम् बॉऱैयु नीङ्गिनार् 3980

तिरिन्तन–अस्त-व्यस्त; उलकमुम्–लोक; चॅव्वन्–अब ठीक; तिन्ऱन–स्थित हुए; परिन्तवर्–रोनेवाले; उयिर् ॲलाम्–जीव सभी; पयम्–भय; तविर्न्तन–छोड़ चुके; अरुन्तति–अरुन्धती; मुतलिय–आदि; मकळिर्–देवियाँ; आटुतल्–नृत्य; पुरिन्ततर्–करने लगीं; नाणमुम्–शरम और; पॉऱैयुम्–संयम भी; नीङ्कितार्–छोड़ दिया। ३९८०

जो लोक अस्त-व्यस्त हुए थे वे सब अब स्थिर हो गये। दुःखी हुए जीव सभी भयविमुक्त हुए। अरुन्धती आदि शीलवतियाँ आनंद के कारण शरम और संयम त्यागकर नाच उठीं। ३९८०

कनिन्दुयर् कऱ्पॅनुङ् गडवुट् टीयिनाल्, निनैन्दिलै यॅन्वलि नीक्कि नायॅन
अनिन्दनै यङ्गिनी ययर्वि लॅन्नैयुम्, मुनिन्दनै यामॅन मुऱैयिट् टानरो 3981

नी–आप; निनैन्तिलै–बिना सोचे; कनिन्तु–पक्व हो; उयर्–उठे; कऱ्पॅनुम्–पातिव्रत्य रूपी; कडवुळ्–दिव्य; तीयिनाल्–आग से; ॲन्–मेरा; बलि–बल; नीक्कॅनाय्–हटा दिया; अ निन्ततै–अपचार कर; अयर्विल्–जो बुरा न किया; ॲन्नैयुम्–उस मुझसे भी; मुनिन्ततै–कोप किया; आम्–हाँ; ॲन–ऐसा; मुऱैयिट्टान्–निवेदन किया; अङ्कि–अग्नि ने। ३९८१

अग्नि ने श्रीराम से शिकायत की। आपने विना सोचे ही पातिव्रत्य रूपी दिव्य घने ताप से मुझे निर्बल बना दिया। मैंने तुम्हारे प्रति कोई अपराध नहीं किया था। आदर करने में स्थिर हूँ। तो भी आपने मुझ पर क्रोध दिखाया शायद! । ३९८१

इन्नदोर् कालॅयि निरामन् यारॅनी
ॲन्नॅनी यियम्बिय दॅरियुळ् तोन्ऱियिप्
पुन्मैशा लॉरुत्तियॅच् चुडादु पोऱ्ऱिनाय्
अन्नदार् शॉल्लवी दऱैदि यालॅन्ऱान् 3982

इन्नतोर्–ऐसे; कालॅयिल्–समय में; इरामन्–श्रीराम ने; नी यारै–तुम कौन हो; नी–तुम; ॲरियुळ्–आग में; तोन्ऱि–प्रकट होकर; इयम्पियतु–कहते; ॲन्नै–क्या हो; इ–इस; पुन्मैयाल्–नीचता की; ऑरुत्तियै–एक स्त्री को; चुटातु–न जलाकर; पोऱ्ऱिनाय्–रक्षित किया; अन्नतु–वह; आर् चॉल्ल–किसके कहने से; ईतु अऱैति–यह कहो; ॲन्ऱान्–कहा। ३९८२

जब अग्नि ने ऐसा आर्त वचन कहा तब श्रीराम ने प्रश्न किया कि तुम हो कौन? अग्नि से बाहर निकल आकर कहते क्या हो? इस नीचता-युक्त स्त्री को न जलने देकर रक्षित किया —वह किसके कहने से? यह बताओ। ३९८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अङ्गिया नॆन्नैयिव् वन्नै कर्पॆनुम्
पॊङ्गुवॆन् दीच्चुडप् पॊऱुक्कि लामैयाल्
इङ्गणॆन् देनुऱु मियर्कॆ नोक्कियुम्
शङ्गिया निर्रियो वॆवर्क्कुञ् जान्ऱुळाय् 3983

यान्–मैं; अङ्कि–अग्नि हूँ; ऎन्नै–मुझे; इव् अन्नै–इन लोकमाता के; कर्पु ऎनुम्–पातिव्रत्य रूपी; पॊङ्कु–भभकनेवाली; वॆम् ती–गरम आग ने; चट–जलाया; पॊरुक्किलामैयाल्–सह नहीं सका, इसलिए; इङ्कु–यहाँ; अणॆन्नॆन्–आयी; ऎवर्क्कुम्–सबके; चान्ऱुळाय्–साक्षी-रूप; उऱुम्–मुझ पर आया; इयर्कै–यह हाल; नोक्कियुम्–देखकर भी; चङ्किया–शंका करते; निर्रियो–रहेंगे क्या। ३९८३

अग्नि ने निवेदन किया कि मैं अग्नि हूँ ! लोकमाता इनके पातिव्रत्य की आग ने मुझे जला दिया। मैं सह नहीं सका और इधर आया। हे सर्वसाक्षी ! मुझ पर बीती स्थिति देखकर भी आप शंका करेंगे क्या ? । ३९८३

वेट्पदु मङ्गैयर् विलङ्गि नारॆनिल्
केट्पदुम् बल्पॊरुट् कैयङ् गेडऱ
मीट्पदु मॆन्वयि नॆन्नु मॆय्प्पॊरुळ्
वाट्पॆरुन् दोळिनाय् मऱैहळ् शॊल्लुमाल् 3984

वाळ्–तलवार चलाने में; पॆरु तोळिनाय्–अभ्यस्त उन्नत कंधों वाले; वेट्पतुम्–विवाह करना; मङ्कैयर्–स्त्रियाँ; विलङ्कितार्–(गृहस्थ-धर्म से) अलग हुई; ऎनिल्–तो; केट्पतुम्–पूछना; पल् पॊरुट्कु–अनेक बातों के संबंध में; ऐयम् केटु–संदेह और अन्याय; अऱ–दूर करके; मीट्पतुम्–शंका दूर करना; ऎन् वयित्–मेरे समक्ष होते; ऎन्नुम्–ऐसा; मॆय् पॊरुळ्–सत्य तथ्य; मऱैकळ्–वेद; चॊल्लुम्–कहते हैं। ३९८४

असिविद्याप्रवीण कंधोंवाले ! स्त्रियों का विवाह, स्त्रियों के डिगने पर विचारना, अनेक बातों में संदेह और अपराध से मुक्ति दिलाना —ये सब मेरे सान्निध्य में ही होते हैं। यह तथ्य वेदों द्वारा कहा जाता है। ३९८४

ऐयुऱु पॊरुळ्हळै याशिन् माशॊरीइक्, कैयुऱु नॆल्लियिन् कनियिर् काट्टुमॆन्
मॆय्युऱु कट्टुरै केट्टु मीट्टियो, पॊय्युऱा मारुदि युरैयुम् बोऱ्ऱलाय् 3985

पॊय् उऱा–जो असत्य नहीं बोलता; मारुति–उस मारुति का; उरैयुम्–कथन; पोऱ्ऱलाय्–आपने नहीं माना; ऐयुऱु–संदेहास्पद; पॊरुळ्कळै–विषयों को; आचिल्–शीघ्र; माचु–मैल; ऒरीइ–दूर करके; कै उऱु–कर में रखे; नॆल्लियिन् कनियिल्–आमलक फल के समान; काट्टुम्–दिखानेवाले; ऎन्–मेरा; मॆय् उऱु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सत्य के; कट्टुरै–वचन को; केट्टुम्–सुनकर ही; मीट्टियो–देवी को अपना लेंगे (न)। ३९८५

आपने असत्य के अभाषी मारुति के कथन को नहीं माना ! मैली वस्तुओं को शीघ्र मैल से छुड़ाकर करतलामलकवत् दिखाने की प्रकृति वाले मेरे सत्यवचन को सुनकर (ही सही) आप देवी को अपना लेंगे ? । ३९८५

तेवरु मुनिवरु तिरिव निऱ्पवुम्, मूवहै युलहमुङ् गण्गण् मोदिनिन्
ऱावॆनल् केट्किलै यऱत्तै नीक्किवे, ऱेवमॆन् ऱोरुपॊरुळ् याण्डुक् कॊण्डियो 3986

तेवरुम्–देव और; मुनिवरुम्–मुनिगण; तिरिव निऱ्पवुम्–चराचर; मूवकै उलकमुम्–तीनों लोकों के वासी; कण्कण्–आँखें; मोति निनऱु–पीटते हुए; आ ॲनल्–'हाय' कहके रोते हैं; केट्किलै–नहीं सुनते; अऱत्तै नीक्कि–धर्ममार्ग छोड़कर; वेऱु–विपरीत; एवम् ॲन्ऱु–पाप नाम के; ऒरु पॊरुळ्–एक तथ्य को; याण्टु–कहाँ से; कॊण्टियो–अपनाया। ३९८६

देखिए— देव, मुनि, चराचर प्रपंच सभी आँखें पीटकर 'हाय' कहते रो रहे हैं —यह नहीं सुनते क्या ? धर्म छोड़कर धर्मेतर, पाप, के मार्ग को कहाँ से अपनाया आपने ? । ३९८६

पॆय्युमे मऴैपुवि पिळप्प दन्ऱियै, शॆय्युमे पॊऱैयऱम् नॆऱियिऱ् चॆल्लुमे
उय्युमे युलहिव ळुणर्वु शीऱिनाल्, वैयुमेल् मलर्मिशै ययनु मायुमे 3987

इवळ्–ये; उणर्वु चीऱिनाल्–मन में गुस्सा करें; मऴै पॆय्युमे–तो बरसात होगी क्या; पुवि–भूमि: पिळप्पतु—फटेगी; अन्ऱि–उसके सिवा; पॊऱै–भार वहन; चॆय्युमे—करेगी क्या; अऱम् नॆऱियिल्–धर्म अपने मार्ग में; चॆल्लुमे–चलेगा क्या; उलकु उय्युमे–संसार जीवित रहेगा क्या; वैयुमेल्–ये शाप दें तो; मलर् मिचै—कमल पर रहनेवाले; अयनुम्–अजदेव भी; मायुमे–मर जायगा न। ३९८७

ये देवी मन से रुष्ट हों तो क्या बारिश हो सकती है ? भूमि फट जायगी न, नहीं तो भारवहन करेगी क्या ? धर्म सही मार्ग पर जा सकेगा क्या ? पृथ्वी बचेगी ? ये शाप देंगी तो कमलभव भी मिट जायगा न ! । ३९८७

पाडुऱु पन्मॊऴि यिनैय पन्निनिन्, ऱाडुऱु तेवरो डुलह मार्त्तॆऴच्
चूडुऱु मेनिय वलरि तोहैयै, माडुऱक् कॊणर्न्दनन् वळ्ळल् कूऱुवान् 3988

चटु उऱु–गरमीयुक्त; मेनि–शरीर वाला; अव् अलरि–वह अग्नि; इनैय–ऐसे; पाटु उऱु–गौरवपूर्ण; पल् मॊऴि–अनेक वचन; पन्नि निनऱु–कहकर; आटुऱु–नाचनेवाले; तेवरोटु–देवों के साथ; उलकम्—लोकों के; आर्त्तु ॲऴ–आनन्दरव कर उठते; तोकैयै–कलापीनिभ देवी को; माटु उऱ–पास लगाकर; कॊणर्न्ततन्–लाया; वळ्ळल्–उदार प्रभु; कूऱुवान्–बोले। ३९८८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तापदग्धशरीरी अग्नि ऐसे गुरु और अनेक कथन कहकर कलापी-निभ देवी को श्रीराम के पास सौंपने ले आया। तब देव नर्तन कर उठे और सारे लोक नर्दन कर उठे। उदार प्रभु यों बोले। ३९८८

अऴिप्पिल शान्ऱुनी युलहुक् कादलाल्
इऴिप्पिल शॊल्लिनी यिवळै यादुमोर्
पऴिप्पिल ळॆन्ऱनै पऴियु मिन्ऱिनिक्
कऴिप्पिल ळॆन्ऱनन् करुणै युळ्ळत्तान् 3989

करुणै उळ्ळत्तान्–करुणहृदय ने; नी उलकुक्कु–तुम लोकों के; अऴिप्पिल–अक्षय; चान्ऱु–साक्षी हो; आतलाल्–इसलिए; इऴिप्पु इल–अनिंद्य; चॊल्लि–कहकर; नी–तुमने; इवळै–इसे; यातुम् ओर्–किसी भी; पऴिप्पिलळ्–निंदा से रहित; ऎन्ऱनै–बताया; पऴियुम्–कलंक भी; इन्ऱु–नहीं; इनि–अब; कऴिप्पिलळ्–निवारणीय नहीं; ऎन्ऱनन्–कहा। ३९८९

करुणहृदय श्रीराम ने कहा कि हे अग्नि! तुम लोकों के अक्षय साक्षी हो! वैसे तुमने अनिंद्य वचन कहकर इसे अकलंक बता दिया। इसलिए इसमें कोई अपराध नहीं है (यह साबित है)। अब वह अत्याज्या हो गयी। ३९८९

उणर्त्तु वायुण्मै यॊऴिवित्ऱु कालम्वन् दुळबाल्
पुणर्त्तु मायैयिऱ पॊंदुवुऱ नित्ऱवै युणरा
इणर्त्तु ळाय्त्तॊङ्ग लिरामऱ्कॆन् ऱिमैयव रिशैप्पत्
तणप्पिल् तामरैच् चदुमुह नुरैशॆयच् चमैन्दान् 3990

पुणर्तुम्–अपनी ही रची; मायैयिल्–माया में; पॊंतु उऱ नित्ऱु–सामान्य रहकर; अवै–उन बातों को; उणरा–नहीं जानते जैसे; इणर् तुळाय्–गुच्छों की तुलसी; तॊङ्कल्–मालाधारी; इरामऱ्कु–श्रीराम के लिए; कालम् वन्तुळताल्–उचित समय आ गया, अतः; उण्मै–सत्य; ऒऴिवित्ऱु–बिना छिपाये; उणर्त्तुवाय्–बता दें; ऎन्ऱु–ऐसा; इमैयवर्–देवों के; इचैप्प–कहने पर; तणप्पिल्–बिना हटे; तामरै–कमल पर रहनेवाले; चतुमुकन्–चतुर्मुख; उरै चॆय–बताने में; चमैन्तान्–लग गये। ३९९०

तब देवों ने ब्रह्मा से कहा कि समय आ गया जब स्वरचित माया के चक्कर में सामान्य जीवों के समान बरत कर, उन्हें न जानते से रहनेवाले गुच्छों-सहित तुलसीमाला के धारणकर्ता श्रीराम का रहस्य प्रकट किया जा सके। अतः सच्ची स्थिति को बिना दुराव के बताइए। यह सुनकर नाभीकमल को कभी न छोड़नेवाले चतुर्मुख ब्रह्मा श्रीराम के सच्चे रूपों के कथन में प्रवृत्त हुए। ३९९०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन्नर् तोल्हुलत् तवरिन्नत् तुणैयॊरु मन्निदन्
ऎन्न वुन्नलै युन्नैनी यिरामके ळिदनैच्
चॊन्न नान्मऱै मुडिविनिऱ् रुणिन्दमॆय्त् तुणिवु
निन्न लादिल्लै निन्निन्वे ऱुळदिलै नॆडियोय् 3991

इराम्–श्रीराम; नॆटियोय्–महान (त्रिविक्रम); उन्नै–अपने को; तॊल् कुलत्तवर्–प्राचीन कुल के; मन्नर् इनम् तुणै–राजवंश में उत्पन्न; ऒरु मनितन्–एक मानव हैं; ऎन्न–ऐसा; उन्नलै–नहीं समझें; नी–आप; इतनै–यह; केळ्–सुनिए; चॊन्न–प्रशंसित; नाल् मऱै–चारों वेदों के; मुडिविनिल्–अंत में (वेदान्त में); तुणिन्त मॆय्–निर्णीत तत्त्व; तुणिवु–निर्णय; निन् अलातु–आपको छोड़कर; इल्लै–कुछ नहीं; निन्निन् वेऱु–आपसे अलग; उळतु इलै–रहनेवाली वस्तु कुछ नहीं। ३९९१

हे श्रीराम ! महान पुरुष (त्रिविक्रमदेव) ! आप अपने को एक पुरातन सूर्यवंश के राजकुल में उत्पन्न केवल एक मानव नहीं मान लें। आप ये बातें सुनिएगा। प्रकीर्तित वेदों के शीर्षस्थ वेदांत द्वारा निर्णीत परतत्त्व आपके सिवा अन्य कोई नहीं। आपसे परे कोई तत्त्व भी नहीं। ३९९१

पहुदि यॆन्ऱुळ दियादिनुम् बळैयदु पयन्द
विहुदि याल्वन्द विळैवुमऱ् ऱदऱ्कुमेल् निन्ऱु
पुहुदि यावर्क्कु मरियवप् पुरुडनु नीयिम्
मिहुदि युन्पॆरु मायैयि नाल्वन्द वीक्कम् 3992

यातिनुम् पळैयतु–सबसे पुरातन; पकुति ऎन्ऱु–प्रकृति नाम का; उळतु–(तत्त्व) है; पयन्त–उससे निकली; विकुतियाल् वन्त–विकृति से आये; विळैवुम्–कार्य-तत्त्व; मऱ्ऱु–और; अतऱ्कु मेल् निन्ऱु–उन तत्त्वों से परे जो हैं; यावर्क्कुम्–सबके लिए; पुकुति अरिय–अज्ञेय; अ पुरुटनुम्–वे पुरुष; नी–आप ही; इम् मिकुति–यह प्रपंच; उन्–आपकी; पॆरु मायैयिनाल्–बड़ी माया से; वन्त वीक्कम्–निकला विस्तार है। ३९९२

सबसे पुरातन तत्त्व मूलप्रकृति है ! उसके विकार के कार्यरूप तत्त्व और उनसे परे सबके लिए अवेद्य वह पुरुष भी आप ही हैं ! यह चराचर प्रपंच आपकी महान माया का विस्तार ही है। ३९९२

मुन्बु पिन्बिरु पुडैयॆन्नुङ् गुणिप्परु मुऱैमैत्
तन्बॆ रुन्दन्मै तान्दॆरि मऱैहळिन् तलैहळ्
मन्बॆ रुम्बर मार्त्तमॆन् ऱुरैक्किन्ऱ मार्ऱम्
अन्ब निन्नैयल् लान्मऱ्ऱिङ् गियारैयु मऱैया 3993

अन्प–दयालु; मुन्पु–पहले (आदि); पिन्पु–(बाद) और अन्त; इव पुटै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍऩुम्–दो सीमाओं के; कुणिप्पु अरु–अननुमेय; मुऱैमै–क्रम की; तम् पॆरु तऩ्मै–अपनी महानता को; ताम्–स्वयं; तॆरि–जाननेवाले; मऱैकळिऩ्–वेदों के; तलैकळ्–शीर्ष; मऩ् पॆरु परमार्त्तम्–अति महान परमार्थ; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उरैक्किऩ्ऱ–जो कहते; माऱ्ऱम्–वे वचन; निऩ्ऩै अल्लाल्–आपको छोड़; इङ्कु–यहाँ आये रहे; यारैयुम्–किसी को; अऱैया–नहीं इंगित करते। ३९९३

जीवप्रेमी ! आदि और अंत की दो सीमा के अंदर अगण्य क्रम के अंदर आपकी महिमा को वेदान्त ही जानते हैं और वे आपको परमार्थ (परमतत्त्व) कहते हैं। वह कथन आपकी ओर ही संकेत करना छोड़ यहाँ के (आये) किसी को द्योतित नहीं करता। ३९९३

ऍऩक्कु मॆण्वहै यॊरुवऱ्कु मिमैयवर्क् किऱैवऩ्
तऩक्कुम् बल्पॆरु मुऩिवर्क्कु मुयिरुडऩ् तऴीइय
अऩैत्ति ऩुक्कुनी येपर मॆऩ्बदै यऱिन्दार्
विऩैत्तु वक्कुडै वीट्टरुन् दळैनिऩ्ऱु मीळ्वार् 3994

ऍऩक्कुम्–मुझे और; ऍण् वकै ऒरुवर्क्कुम्–अष्टमूर्ति शिव के; इमैयवऱ्कु–देवों के; इऱैवऩ् तऩक्कुम्–राज के; पल्–अनेक; पॆरु मुऩिवर्क्कुम्–बड़े मुनियों के; उयिरुडऩ्–जीवन से; तऴी इय–युक्त; अऩैऩ्तिऩुक्कुम्–सभी के; नीये परम्–आप ही परम; ऍऩ्ऩपॆ–यह बात; अऱिन्तार्–जाननेवाले; विऩै तुवक्कु उडै–कर्मों के कारण बने; वीट्ट अरुम्–अनिवार्य; तळै निऩ्ऱु–बन्धन से; मीळ्वार्–मुक्त होंगे। ३९९४

जो यह सूक्ष्म बात जानते हैं कि आप ही मेरे, अष्टमूर्ति शिव के देवेंद्र के और अनेक मुनिगणों के, क्यों समस्त जीवराशि के परे रहनेवाले परमतत्त्व हैं, कर्मद्वय के बंधन से छूट जाते हैं जो अन्यथा अवार्य हैं। ३९९४

ऍऩ्ऩैत् तान्मुद लाहिय वुरुवङ्ग ळॆवैयुम्
मुऩ्ऩैत् ताय्तऩ्दै यॆऩुम्बॆरु मायैयिऩ् मूळ्हित्
तऩ्ऩैत् तानऱि यामैयिऱ् चलिप्पवच् चलन्दीरऩ्
दुऩ्ऩैत् तादैयंऩ् ऱुणर्हुव मुत्तिवित् तॊऴिन्द 3995

ऍऩ्ऩै मुतलाकिय–मुझसे लेकर; उरुवङ्कळ् ऍवैयुम्–सारे रूप (जीव); मुऩ्ऩै–जन्म-हेतु; ताय् तऩ्दै ऍऩुम्–माँ-बाप आदि की; मायैयिऩ् मूळ्कि–माया में डूबकर; तऩ्ऩै तान्–आप अपने को; अऱियामैयिऩ्–नहीं समझते इस कारण; चलिप्प–चंचल व दुःखी हैं; अ चलम्–वह अविद्या; तीरऩ्तु–दूर करके; ऒऴिन्त–अलग रहे जो; उऩ्ऩै–वे आपको; तातै ऍऩ्ऱु–पिता ऐसा; उणर्कुव–जानकर; मुत्ति वित्तु–मोक्ष के मूल हैं। ३९९५

मुझसे लेकर सारे जीव रूप अपने जन्म के हेतु माता-पिता आदि के बंधन रूपी माया में मग्न रहकर आत्मज्ञान खो देते हैं। इसलिए चंचल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और दुःखी होते हैं। उस अविद्या से जो छूटे हैं वे, जो आपको धाता (तथा आदिकारण) समझते हैं, मोक्ष के बीज बनते हैं। ३९९५

ऐयञ् जाहिय तत्तुवन् दॆरिन्दरिन् दवऱ्ऱिन्
मॆय्यॆञ् जावहै मेनिन्ऱ निनक्कुमेल् यादुम्
पॊय्यॆञ् जाविल दॆन्नुमी दरुमऱै पुहलुम्
वैयञ् जान्ऱिनिच् चान्ऱुक्कुच् चान्ऱिलै वळक्काल् 3996

ऐयञ्चु–पाँच के पाँच; आकिय–जो हैं वे; तत्तुवम्–तत्त्व; तॆरिन्तु अऱिन्तु–विचारकर जानें तो; अवऱ्ऱिन्–उनके; मॆय् ऎञ्चा वकै–सत्य को अक्षय रखकर; मेल् निन्ऱ–उनके ऊपर स्थित; निनक्कु मेल्–आपके ऊपर; यातुम्–कोई; पॊय्–असत्य; ऎञ्चा इलतु–न बने; ऎन्नुम्–ऐसा जो कहा जाय; ईतु–यह सत्य; अरु मऱै–श्रेष्ठ वेद; पुकलुम्–कहते हैं; वैयम् चान्ऱु–भूलोक साक्षी है; इनि–अब; वळक्काल्–व्यवहार में; चान्ऱुक्कु–साक्षी के लिए; चान्ऱिलै–साक्षी नहीं। ३९९६

पचीस तत्त्व हैं। (पाँच तन्मात्राएँ, पाँच भूत, पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँच ज्ञानेंद्रिय, मन, चित्त, अहंकार, महत्— फिर जीव —ये पचीस तत्त्व हैं।) ये सब सत्य हैं। उनके परे आप हैं। आपसे परे कोई सत्य तत्त्व नहीं। यह श्रेष्ठ वेदों की सीख है। इसके सभी भूलोकवासी साक्षी हैं। फिर आपके कोई प्रमाण की आवश्यकता नहीं। क्योंकि प्रमाण का प्रमाण नहीं होता। ३९९६

अळवै यालळन् दामन्ऱॆन् ऱऱिवुरु ममैदि
उळवै यावैयु मुनक्किल्लै युपनिडत् तुनदु
कळवै याय्नदुऱत् तॆळिन्दिल दायिनुङ् गण्णाल्
तुळवै याय्मुडि यायुळै नीयॆनत् तुणियुम् 3997

आय्—सुन्दर; तुळवै मुडियाय्–तुलसी से अलंकृत केशवाले; अळवैयाल्–प्रमाणों के आधार पर; अळन्तु–माप कर; आम् अन्ऱु–है, या नहीं; ऎन्ऱु–ऐसा; अरिवुरुम्–जाने जायँ; अमैत–वे व्यवस्थायें; उळवै–जो हैं; यावैयुम्–वे सब; उनक्कु इल्लै–आपके विषय में नहीं; उपनिटत्तु–उपनिषद्; उसतु कळवै–आपकी माया को; आय्न्तु–खूब अन्वेषण करके; उऱ–ठीक-ठीक; तॆळिन्तिलतु–नहीं जानते; आयिनुम्–तो भी; कण्णाल्–(ज्ञान-) चक्षु से; नी उळै–आप हैं; ऎन–ऐसा; तुणियुम्–निश्चित रूप से कहते। ३९९७

सुंदर तुलसी से शोभित केशवाले! आप प्रमाणों द्वारा हाँ, या नहीं के रूप में स्थिर करनेवालों में नहीं! उपनिषदों ने आपकी माया की विचारणा करके ठीक तरह से जाना नहीं तो भी ज्ञानचक्षु द्वारा ज्ञेय बताया है। ३९९७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करण मॅन्ऱुळ वुऩ्ऩैवन् दऱिवुका णामे
अरण मल्लवर्क् किवैकडन् दऱिवरि दाह
मरणन् दोऱ्ऱमॅन् ऱिवऱ्ऱिडै मयङ्गुब ववर्क्कुन्
शरण मल्लदोर् शरणिल्लै यऩ्ऩवै तविर्प्पाऩ् 3998

अरणम्–आपकी शरण; अल्लवर्क्कु–जिन्हें नहीं मिली; अऱिवु वऩ्ऩु–ज्ञान हो और; काणामे–आपके दिव्य रूप न दिखे ऐसा; करणम् ऍऩ्ऱु–'करण' उळ–हैं; इवै–इन्हें; कटऩ्ऩु–पार करके; उऩ्ऩै–आपको; अऱिवु अरिताक–जानना कठिन है, इसलिए; मरणम्–मरण; तोऱ्ऱम्–जन्म; ऍऩ्ऱु–जो हैं; इवऱ्ऱिटै–इनके मध्य; मयङ्कुप–भ्रमित रहते हैं; अवर्क्कु–उन्हें; अऩ्ऩवै–उनसे; तविर्प्पाऩ्–दूर होने के लिए; उऩ् चरणम्–आपके श्रीचरणों के; अल्लतु–अलावा; ओर्–कोई; चरण् इल्लै–आश्रय नहीं। ३९९८

आपका शरणागत होकर जिसने अनुभवगम्य ज्ञान प्राप्त नहीं किया है, उससे आपके दिव्य रूप को छिपा देते उसके करण कलेवर! इनसे परे जाकर आपको पहचानना कठिन रहता है। इसलिए जन्म-मरण के चक्कर में फँसे भ्रमित रहते हैं। उनसे बचने के लिए आपकी शरण के सिवा अन्य कोई शरण नहीं! । ३९९८

तोऱ्ऱु मॅन्बदॊऩ् ऱुऩक्किल्लै निऩ्कणे तोऱ्ऱुम्
आऱ्ऱल् शाऩ्मुदऱ् पहुदिमऱ् ऱदऩुळाम् बण्बाल्
काऱ्ऱै मुऩ्ऩुडैप् पूदङ्ग ळवैशॅऩ्ऱु कडैक्काल्
वीऱ्ऱु ळीऱ्ऱुऱ्ऱु वीवुऱु नीयॅऩ्ऱुम् विळियाय् 3999

उऩक्कु–आपका; तोऱ्ऱम् ऍऩ्पतु–जन्म ऐसा; ऒऩ्ऱु इल्लै–कुछ नहीं; आऱ्ऱल् चाल्–बलसंयुक्त; मुतल् पकुति—मूलप्रकृति; निऩ् कणे–आपसे ही; तोऱ्ऱुम्–प्रगट होती है; मऱ्ऱु–और; अतऩ् उळाम् पण्पाल्–उससे उत्पन्न होने से; काऱ्ऱै मुऩ् उटै–वायु आदि; पूतङ्कळ् अवै–पाँच भूत जो हैं वे; कटैकाल्–युगक्षय में; चॅऩ्ऱु–जाकर; वीऱु वीऱु उऱ्ऱु–अलग-अलग हो; वीवु उऱुम्–मिट जायेंगे; नी–आप; ऍऩ्ऱुम्–सदा; विळियाय्–नहीं मरते। ३९९९

आप अजन्मा हैं। सर्वशक्त मूल प्रकृति आप ही से प्रगट होती है। अन्य प्रपंच उसी से निकलते हैं। इसलिए वायु से लेकर सभी भूत और अन्यत त्व युगक्षय के अवसर पर चूर होकर मिट जाते हैं। ३९९९

मिऩ्ऩैक् काट्टुदल् पोल्वऩ्ऩु विळियुमिव् बुलहम्
तऩ्ऩैक् काट्टवुऩ् दरुमत्तै नाट्टवुऩ् दऩिये
ऍऩ्ऩैक् काट्टुदि यिऱुदियुङ् गाट्टुदि यॅऩक्कु
मुऩ्ऩैक् काट्टलै यॊळिक्किऩु मिलैमऱै युरैयाल् 4000

मिऩ्ऩै–बिजली को; काट्टुतल् पोल्–प्रकट करता जैसे; वऩ्ऩु–आकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विळियुम्–मिटनेवाला; इव् उलकम् तन्नै–इस संसार को; काट्टवुम्–प्रगट कराना और; तरुमत्तै–धर्म; नाट्टवुम्–संस्थापना करना; नी तनियै–आप अकेले; ऍन्नै–मुझे; काट्टुति–प्रगट कराते हैं; इऱुतियुम्–अंत को भी; काट्टुति–दिखाते हैं; ऍनक्कु–मुझे भी; उन्नै–अपने को; काट्टलै–नहीं दिखाते; ऑळिक्किनुम्–अदृश्य रहें तो भी; मऱै उरैयाल्–वेदवचन-ज्ञान के कारण; इलै–नहीं (अ-जाने) रहते। ४०००

मेघों द्वारा प्रगट विद्युत् के समान प्रगट होकर अदृश्य होनेवाले इस प्रपंच को प्रगट कराने और धर्मसंस्थापन करने के लिए आप केवल मुझे रच देते हैं। फिर सबका अंत भी करा देते हैं। तो भी आप मुझे अपने रूप को नहीं दिखाते। आप अगोचर रहें तो भी वेदवाक्यों के आधार पर मैं आपको पहचान लेता हूँ, इसलिए आप मेरे लिए अज्ञात नहीं रहते। ४०००

ऍन्नु रुक्कॊडिव् वुलहिनै यीनुदि यिडैये
उन्नु रुक्कॊडु पुहुन्दुनित् ऱोम्बुदि युमैयोन्
तन्नु रुक्कॊडु तुडैत्तिमऱ् ऱिदुतति यरुक्कन्
मुन्नु रुक्कॊडु पहल्शॆयुन् दरत्ततु मुदलोय् 4001

मुतलोय्–आदिदेव; ऍन्–मेरा; उरु कॊटु–रूप धरकर; इव् उलकिनै–इस संसार को; ईनुति–सृष्ट करते हैं; उन्–अपने; उरु कॊटु–रूप में आकर; इडैये–मध्य में; पुकुन्तु–प्रवेश करके; निन्ऱु ओम्पुति–स्थिति देकर पालन करते हैं; उमैयोन् तन्–उमापति का; उरु कॊटु–रूप धरकर; तुडैत्तति–संहार कराते हैं; इतु–यह; तनि अरक्कन्–विशिष्ट सूर्य; मुन्–समक्ष के; उरु कॊटु–रूप से; पकल्–अहन; चॆयुम्–जो बनाता; तरत्तत्तु–उस-सरीखा है। ४००१

हे आदिदेव! मेरा रूप ले आप इस संसार को जनाते हैं। अपना रूप लेकर उसे स्थिति देकर मध्य रहकर पालते हैं। फिर उमापति का रूप लेकर उसे पोंछ लेते हैं। यह वैसा है जैसा अर्क सबके समक्ष रहकर अहन बना लेता हो। ४००१

तिरुक्कु वान्मलि शॆल्वत्तुच् चॆरुक्कुवेन् दिऱत्तुत्
तरुक्कु माय्वुऱत् तानव ररक्कर्वॆञ् जमरिल्
इरिक्क माळ्हिनोन् दुनैप्पुहल् याम्बुह वियैयाक्
करुक्कु ळाय्वन्दु तोऱ्ऱुदि यीङ्गिदु कडनो 4002

तिरुकुवाल्–श्री ढेर में हो; मलि–ऐसी अधिक; चॆल्वत्तु–निधि से; चॆरुक्कुवेम्–घमंड जो करते ऐसे हमारे; तिऱत्तु–पास के; तरुक्कु–गर्व को; माय्वु उऱ–मिटाते हुए; तानवर्–दानवों; अरक्कर्–और राक्षसों के; वॆम् चमरिल्–कठोर युद्ध में; इरिक्क–हमें भगाने पर; याम्–हम; माळ्कि–क्षुब्ध होकर; नोनतु–वेदना पाकर; याम् उनै–हम आपकी; पुकल् पुक–शरण में आये तो; इयैया–बिलकुल बेमेल रूप से; करुक्कुळ–गर्भ में जन्म; आय् वन्तु–ले आकर; ईङ्कु–यहाँ; तोऱ्ऱुति–प्रगट होते हैं; इतु कटनो–यह आपके लिए फ़र्ज़ है क्या। ४००२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीसंपन्नता से हम गर्वीले हो जाते हैं। वैसे हमारे गर्व को तोड़ने के हेतु देव-दानव युद्ध में हमें हारकर भागने की गति देते हैं। हम क्षुब्ध होकर आपकी शरण आते हैं तो आप अपने लिए निपट अनमेल रूप से गर्भ में आकर यहाँ अवतार लेते हैं। यह आपका फ़र्ज़ है क्या ? । ४००२

ओङ्गा रप्पॊरुळ् तेरुवोर् तामुन्नै युणर्वोर्
ओङ्गा रप्पॊरु ळॆन्ऱुणर्न् दिरुविनै युहुप्पोर्
ओङ्गा रप्पॊरु ळामन्ऱॆन् ऱूऴिशॆन् ऱालुम्
ओङ्गा रप्पॊरु ळॆपॊरु ळॆन्गला वुरवोर् 4003

ओङ्कारम्–ओंकार (प्रणव) का; पॊरुळ्–अर्थ के; तेरुवोर् ताम्–ज्ञाता लोग; उन्नै–आपको; उणर्वोर्–जानते हैं; ओङ्कारप् पॊरुळ्–ओंकार-तत्त्व; ऎन्ऱु–ऐसा; उणर्न्तु–जानकर; इरु विनै–दोनों कर्मों को; उकुप्पोर्–दूर कर देते हैं; ओङ्कारप् पॊरुळे–हे प्रणव-तत्त्व ही; पॊरुळ्–तत्त्व है; ऎन्कला–ऐसा जो नहीं जानें; उरवोर्–ऐसे लोग; ओङ्कारप् पॊरुळे–प्रणव-तत्त्व आपको; आम् ऎन्ऱुम्–हैं, ऐसा; अन्ऱु ऎन्ऱु–नहीं ऐसा; ऐयुऱ्ऱु–संशय करके; ऊऴि ऴॆन्ऱालुम्–युग-युग बीतें तो भी। ४००३

प्रणवार्थ जाननेवाले आपको प्रणवरूप जानते हैं, अतः कर्मद्वय के बंधन से छूट जाते हैं। प्रणवार्थ को ही परमार्थ न समझ सकनेवाले प्रणवरूप आपके संबंध में, हाँ या नहीं के संशय में रहते हैं और युग के युग बीत जाते हैं। (पर उनका निस्तार नहीं होता।) ४००३

इनैय दाहलि नॆमैयुमून् ऱुलहैयु मीन्ऱु
मनैयिन् माट्चियै वळर्त्तवॆम् मोयिनै वाळा
मुनैय लॆन्ऱवु मुडित्तनन् मुन्दुनीर् मुळैत्त
शिनैयिन् पन्दमुम् बहुदिह ळनैत्तैयुञ् जॆय्दोन् 4004

मुन्तु नीर्–सर्वपुरातनता के; मुळैत्त–नाभिकमलोत्पन्न; चिनैयिन् पन्तमुम्–(जीवों के) शरीर-बंधन और; पकुतिकळ् अनैत्तैयुम्–विविध विभागों को; चॆय्तोन्–जिसने रचाया; इनैयतु–आपका रूप ऐसा है; आकलिन्–इसलिए; ऎन्नैयुम् मून्ऱु उलकैयुम्–मुझे और तीनों लोकों को; ईन्ऱु–जनाकर; मनैयिन् माट्चियै–गृहस्थी की महिमा को; वळर्त्त–गृहस्थी चलाकर बढ़ानेवाली; ऎम् ओयिनै–हमारी जननी से; वाळा मुनैयल्–व्यर्थ कोप न करें; ऎन्ऱु–ऐसा; अतु–अपना अभिप्राय जो था उसे; मुटित्तनन्–कहकर समाप्त किया। ४००४

सबसे पुरातन (श्रीविष्णु) के नाभीकमल से उत्पन्न और जीव-शरीर-बंधन और जीवों के विविध विभागों के रचयिता ब्रह्मा ने कहा कि यही आपका सच्चा स्वरूप हैं। इसलिए आप सीताजी से व्यर्थ कोप न करें,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जिन्होंने हमें और तीनों लोकों को जनाया और जो कि आज गृहस्थ धर्म पाल रही हैं। ब्रह्मा ने यह कहकर अपनी बात समाप्त की। ४००४

ऎन्नु मात्तिरत् तेऱमर् कडवुळु मिशैत्तान्
उन्नै नीयॊन्ऱु मुणर्न्दिलै पोलुमा लुरवोय्
मुन्नै यादिया मूर्त्तिनी मूवहै युलहिन्
अन्नै शीदेया मादुनिन् मार्बिन्वन् दमैन्दाळ् 4005

ऎन्नु मात्तिरत्तु–कहने पर; एऱ–ऋषभ पर; अमर्–आसीन; कटवुळुम्–ईश्वर ने; इचैत्तान्–कहा; उरवोय्–पराक्रमी; नी–आप; उन्नै–अपने को; ऒन्ऱुम्–कुछ; उणर्न्तिलै पोलुम्–नहीं समझे शायद; नी–आप; मुन्नै–बहुत; आतियाम् मूर्त्ति–आदिमूर्ति हैं; मूवकै उलकिन्–त्रिविधि लोकों की; अन्नै–माता; चीतैयाम् मातु–सीतादेवी; निन्–आपके; मार्पिन्–श्रीवक्ष पर; वन्तु अमैन्ताळ्–आ रहनेवाली लक्ष्मी ही हैं। ४००५

ब्रह्मा के यह कह चुकने पर ऋषभवाहन शिवजी ने अपनी ओर से निम्नोक्त बातें कहीं। हे पराक्रमी! आप अपने को कुछ नहीं जानते क्या? आप अनादि परब्रह्म हैं। ये देवी त्रिलोकमाता आपके श्रीवक्ष की निवासिनी ही हैं। ४००५

तुऱक्कुन् दन्मैय ळल्लळाऱ् ऱॊल्लैयॆव् वुलहुम्
पिऱक्कुम् बॊन्वयिऱ् ऱन्नैयिप् पॆय्वळै पिळैक्किन्
इऱक्कुम् बल्लुयि रिऱैवनी यिवळ्तिऱत् तिहळ्च्चि
मऱक्कुन् दन्मैय वॆन्ऱनन् वरदर्क्कुम् वरदन् 4006

इऱैव–सर्वेश्वर; तॊल्लै–पुरातन; ऎव् उलकुम्–सभी लोक; पिऱक्कुम्–जनम जहाँ से ले; पॊन् वयिऱ्ऱु अन्नै–ऐसे सुन्दर पेट की माता; तुऱक्कुम्–त्याज्य हों; तन्मैयळ्–ऐसी स्थिति की; अल्लळ्–नहीं हैं; इ पॆय्वळै–इन कंकणहस्ता के प्रति; पिळैक्किन्–ग़लत भाव रखेंगे तो; पल् उयिर्–अनेक जीव; इऱक्कुम्–मर जायेंगे; नी–आप; इवळ् तिऱत्तु–इनके प्रति; इकळ्च्चि–अपमान का भाव; मऱक्कुम्–भुलाने; तन्मैयतु–योग्य है; ऎन्ऱनन्–कहा; वरतर्क्कुम्–वरदों के भी; वरतन्–वरद ईश्वर ने। ४००६

सर्वेश्वर! सर्वलोकोद्भवस्थान, सुंदर-गर्भ की माता सीता त्याज्या नहीं! इन कंकणहस्ता के प्रति आप ग़लत धारणा करेंगे तो अनेक जीव मर जायँगे। आपका इनके प्रति ग़लत भाव भूलने योग्य है। वरदवरद ने ऐसा कहा। ४००६

पिन्नु नोक्कितान् पॆरुन्बहैप् पुदल्वनैप् पिरिन्द
इन्न लालुयिर् तुऱन्दिरुन् दुऱक्कत्तु ळिरुन्द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन्नऱ् चन्ऱुनिन् मैन्दनै मनङ्गॊळत् तॆरुट्टि
मुन्नै वान्ऱुयर् नीक्कुदि मॊय्म्बिनो यॆन्ऱान् 4007

पिन्नुम्-और भी; नोक्कितान्-विचार करके; पॆरुतकै-महान योग्य; पुतल्वनै-अपने पुत्र से; पिरिन्त-बिछुड़े रहे; इन्नलाल्-दुःख से; उयिर् तुऱन्तु-प्राण छोड़कर; इरु तुऱक्कत्तुळ्-श्रेष्ठ मोक्ष में; इरुन्त-जो रहे; मन्नन् चॆन्ऱु-उन (दशरथ) राजा के पास जाकर; मॊय्म्पिनोय्-बलवान; निन् मैन्तनै-आपके पुत्र को; मनम् कॊळ-धीरज धरने; तॆरुट्टि-धैर्य दें; मुन्नै-पहले से रहे; वान् तुयर्-बड़े दुःख को; नीक्कुति-दूर कर लें; ऎन्ऱान्-कहा। ४००७

परमेश्वर ने और सोचा। फिर वे दशरथ के पास गये जो पुत्र-वियोगदुःख से प्राण त्यागकर महान श्रीवैकुण्ठलोक (मोक्ष) में रहे। उनसे कहा कि बलवान ! आप अपने पुत्र के पास जायँ और उन्हें समझायें और अपना गहरा दुःख दूर करें। ४००७

आदि यान्पणि यरुळपॆऱ्ऱ वरशरुक् करशन्
कादन् मैन्दनैक् काणिय वुबन्ददोर् करुत्ताल्
पूद लत्तिडैप् पुक्कनन् पुहुदलुम् बॊरुविल्
वेद वेन्दनु मवन्मलर्त् ताळ्मिशै विळुन्दान् 4008

आतियान्-आदि ईश्वर की; पणि अरुळ् पॆऱ्ऱ-कृपापूर्ण आज्ञा जिन्होंने पायी; अरचर्क्कु अरचन्-उन राजा के राजा; कातन् मैन्तनै-प्रिय पुत्र को; काणिय-देखने की; उवन्ततु-चाह करके; ओर् करुत्ताल्-उस राय के साथ; पूतलत्तु-भूतल; इटै पुक्कनन्-मध्य आये; पुकुतलुम्-आते ही; पॊरु इल्-अनुपम; वेतम् वेन्तनुम्-वेद नाथ भी; अवन्-उनके; मलर् ताळ्-कमल-चरणों; मिचै-पर; विळुन्तान्-गिरे। ४००८

राजाधिराज दशरथ आदिनाथ, शिवजी की कृपाज्ञा पाकर अपने पुत्र को देखने की मोदपूर्ण इच्छा से भूमि पर आये। उनके आते ही अप्रतिम वेदपति ने उनके चरणकमलों में गिरकर दण्डवत् की। ४००८

वीळ्न्द मैन्दनै यॆडुत्तुत्तन् विलङ्गला हत्तिन्
आळ्न्द ळुन्दिडत् तळुवित्तन् कण्णिनी राट्टि
वाळ्न्द शिन्दैयिन् मनङ्गळुङ् गळिप्पुऱ मन्नन्
पोळ्न्द तुन्बङ्गळ् पुऱप्पड निन्ऱिवै पुहन्ऱान् 4009

मन्नन्-राजा दशरथ; वीळ्न्त-गिरे; मैन्तनै-पुत्र को; ऎटुत्तु-उठाकर; तन्-अपने; विलङ्कल्-पर्वतोपम; आकत्तिन्-वक्ष से; आळ्न्तु-खूब; अळुन्तिट-दबाकर; तळुवि-लगाकर; तन्-अपनी; कण्णिन्-आँखों के; नीर् आट्टि-जल से नहलाकर; वाळ्न्त-जो गये ऐसे; चिन्तैयिन्-विचार के साथ; मनङ्कळुम्-अंतःकरणों के भी; कळिप्पु उऱ-आनंद विभोर होते; पोळ्न्त-काटते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रहे; तुन्पङ्कळ्-दुःखों के; पुऱप्पट-बाहर निकलते; निन्ऱु-खड़े रहकर; इवै पुकन्ऱाम्-ये बातें बोले। ४००९

दशरथ ने उनको उठाया और अपने पर्वतोपम वक्ष से खूब दबाते हुए गाढ़ालिंगन किया। अपने अश्रु से उन्हें नहला-सा दिया। उन्हें लगा कि मेरा उद्धार हो गया और मेरा जीवन सार्थक हो गया। उनके अंतःकरण आनंदविभोर हो गये और उन्हें तोड़ते रहे दुःख दूर हुए। वे यों बोले। ४००९

अन्ऱु केहयन् महळ्कॊण्ड वरमॆन्ऩु यियिल्वेल्
इन्ऱु काऱुमॆन् निदयत्ति निडैनिन्ऱ दॆन्ऩैक्
कॊन्ऱु नीङ्गल दिप्पॊळु दहन्ऱदुन् कुलप्पूण्
मन्ऱ लाहमाङ् गान्दमा मणियिन्ऱु वाङ्ग 4010

अन्ऱु-उस समय; केकयन् मकळ्-केकयतनया ने; कॊण्ट-जो पाया; वरम् ऎन्ऩुम्-वह वर रूपी; अयिल् वेल्-तीक्ष्ण भाला; इन्ऱु काऱुम्-आज तक; ऎन्-मेरे; इतयत्तिन् इटै-हृदय-मध्य; निन्ऱतु-स्थित है; ऎन्ऩै-मुझे; कॊन्ऱु-मरवाकर भी; नीङ्कलतु-छोड़ता नहीं था; उन् कुलम् पूण् मन्ऱल्-तुम्हारे श्रेष्ठ आभरणधारी तथा सुगंधपूर्ण मालाधारी; आकमाम्-वक्ष रूपी; कान्तम् मा मणि-लोहकांतामणि ने; इन्ऱु वाङ्क-आज खींच लिया, तो; इप्पॊळुतु-अब; अकन्ऱतु-दूर हुआ। ४०१०

उस दिन केकयसुता ने जो वर मुझसे लिया या वह वर रूपी शूल आज तक मेरे वक्ष में चुभा रहा। मेरे मरने के बाद भी वह दूर नहीं हुआ था। पर आज तुम्हारे आभरणमंडित तथा सुगंध-माला-विभूषित वक्ष रूपी लोहकांतामणि ने (आलिंगन के समय) उसे निकाल बाहर कर दिया। ४०१०

मैन्द रैप्पॆऱ्ऱु वान्ऩुयर् तोऱ्ऱत्तु मलर्न्दार्
शुन्द रप्पॆरुन् दोळिऩा यॆन्तुणैत् ताळिन्
पॆन्दु हट्कळु मॊक्किल रामॆन्ऩप् पडैत्ताय्
उय्न्द वर्क्करुन् दुऱक्कमुम् बुहळुम्बॆऱ् ऱुयर्न्दॆन् 4011

चुन्तरम्-सुन्दर; पॆरु तोळिऩाय्-बड़ी भुजा वाले; मैन्तरै-पुत्रों को; पॆऱ्ऱु-पाकर; वान्ऩुयर्-आकाश-सम उन्नत; तोऱ्ऱत्तु-दृश्य के साथ; मलर्न्तार्-जो शोभित रहे वे भी; ऎन्-मेरे; तुणै ताळिन्-चरणद्वय की; पॆन्तुकळ्कळुम्-छोटी धूलि की; ऒक्किलर्-समानता नहीं कर सकें; आम् ऎन्ऩ-हाँ, ऐसा; पडैत्ताय्-मुझे गौरव दिलाया; उय्न्तवर्क्कु-कर्ममुक्तों के लिए भी; अरु-दुर्लभ; तुऱक्कमुम्-मोक्ष (वैकुंठ) लोक और; पुकळुम्-यश; पॆऱ्ऱु-पाकर; उयर्न्तॆन्-बड़ा हो गया। ४०११

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुन्दर-महा-बाहु ! पुत्र पाकर गगनोन्नत गौरव के साथ जो शोभित थे, वे भी मेरे चरणद्वय की धूलि के बराबर नहीं हो सके, ऐसा गौरव तुमने मुझे दिलाया था। और भी कर्मविमुक्त भाग्यवानों के लिए भी दुर्लभ मोक्ष और अपर यश पाकर मैं बहुत उत्कृष्ट हो गया। ४०११

पण्डु नान्तॊऴुन् देवरु मुनिवरुम् बाराय्
कण्डु कण्डॆनैक् कैत्तलङ् गुबिक्किन्ऱ काट्चि
पुण्ड रीहत्तुप् पुरादनन् तन्नॊडुम् बॊरुन्दि
अण्ड मूलत्तॊ राशनत् तिरुत्तिनै यऴह 4012

अऴक-सुन्दरमूर्ति; पण्टु-पहले; नान्-मैं; तॊऴुम्-जिन्हें नमस्कार करता था; तेवरुम्-वे देव; मुनिवरुम्-और मुनि; ऎनै-मुझे; कण्टु कण्टु-देख-देखकर; कै तलम्-करतल; कुबिक्किन्ऱ-जोड़ते; काट्चि-वह दृश्य; पाराय्-देखो; पुण्टरीकत्तु-नाभीकमलोत्पन्न; पुरातनन् तन्नॊटुम्-पुरातन ब्रह्मा के साथ; पॊरुन्ति-सम रहकर; अण्टम् मूलत्तु-अण्डगोल के ऊपर; ओर्-एक; आचनत्तु-आसन पर; इरुत्तिनै-विराजित करा दिया। ४०१२

सुंदरमूर्ति ! देखो। पहले जिन्हें मैं नमस्कार करता था वे देव और ऋषि अब मेरी ओर बार-बार दृष्टि देकर हाथ जोड़ रहे हैं। तुमने मुझे पुरातन देवता श्रीविष्णु के नाभीकमल से उद्भूत ब्रह्मा के समकक्ष अंडगोल के ऊपर एक आसन पर विराजमान करा दिया है ! । ४०१२

ऎन्ऱु मैन्दनै यॆडुत्तॆडुत् तिऱुहुऱत् तऴुविक्
कुन्ऱु पोन्ऱुऴ तोळिनान् शीदैयैक् कुऱुहत्
तन्ऱु णैक्कऴल् वणङ्गलुङ् गरुणैयाऱ् ऱऴुवि
निन्ऱु मऱ्ऱिवै निहऴ्त्तिना निहऴ्त्तरुम् बुहऴोन् 4013

ऎन्ऱु-कहकर; मैन्तनै-पुत्र को; कुन्ऱु पोन्ऱु-पर्वत के समान; उऴ तोळिनान्-रहे कंधोंवाले; ऎटुत्तु ऎटुत्तु—बार-बार उठाकर; इरुकुऱ तऴुवि-खूब गले लगाकर; चीतैयै कुऱुक-सीता के पास गये; तन् तुणै कऴल्-तो उनके चरणद्वय पर; वणङ्कलुम्-नमस्कार करने पर; निकऴ्त्तरुम्-अकथनीय; पुकऴोन्-यशस्वी; करुणैयाल्-कृपा के साथ; तऴुवि निन्ऱु-आलिंगन करके रहकर; इवै-ये; निकऴ्त्तिनान्-कहे। ४०१३

यह सब कहकर पर्वतोपम कंधों वाले दशरथ ने अपने पुत्र को बार-बार उठाकर गाढ़ालिंगन कर लिया। फिर सीतादेवी के पास गये तो उन्होंने उनके चरणों पर नमस्कार किया। अवर्णनीय यशस्वी दशरथ ने उन्हें करुणा के साथ आलिंगन में लेकर निम्न बातें कहीं। ४०१३

नङ्गै मऱ्ऱनिन् कऱ्पिनै युलहुक्कु नाट्ट
अङ्गि पुक्किडॆन् ऱणरत्तिय बदुमनत् तडैयेल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शङ्गै युऱ्ऱवर् तेऱुव दुण्डदु शरदम्
कङ्गै नाडुडैक् कणवऩै मुऩिवुऱक् करुदेल् 4014

नङ्कै–देवी; निऩ् कऱ्पिऩै–तुम्हारे पातिव्रत्य को; उलकुक्कु–लोक में; नाट्ट–स्थापित कराने; अङ्कि–आग में; पुक्किटु–प्रवेश करो; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उणर्त्तिय–जो कहा; अतु–वह बात; मऩत्तु अटैयेल्–मन में मत रखो; चङ्कै–शंका; उऱ्ऱवर्–करनेवाले; चरतम्–सत्य कराकर; अतु तेऱुवतु उण्टु–उससे समाधान पाने की प्रथा है; कङ्कै नाटु–गंगासिंचित देश के; उटै कणवऩै–स्वामी पति से; मुऩिवु उऱ–कोप करना; करुतेल्–मत सोचो। ४०१४

देवी ! तुम्हारे पातिव्रत्य की महिमा को लोक में प्रगट कराने के निमित्त ही राम ने जो कहा कि अग्नि में प्रवेश करो उस बात को मन में मत रखो। कभी शंका पैदा हो तो शंका के पात्र से सत्य को प्रमाणित करने को कहना और शंका निवारण करा लेना —यह प्रचलित बात ही है ! इसलिए गंगासिंचित कोसल देश के स्वामी अपने पति से गुस्सा करने की बात मन में मत लाओ। ४०१४

पॊऩ्ऩैत् तीयिडैप् पॆय्वदप् पॊऩ्ऩुडैत् तूय्मै
तऩ्ऩैक् काट्टुदऱ् कॆऩ्बदु मऩक्कॊळल् तहुदि
उऩ्ऩैक् काट्टिऩऩ् कऱ्पिऩुक् करशियॆऩ् ऱुलहिल्
पिऩ्ऩैक् काट्टुव दरियदॆऩ् ऱॆण्णियिप् पॆरियोऩ् 4015

पॊऩ्ऩै–स्वर्ण को; ती इटै–आग में; पॆय्वतु—डालना; अ पॊऩ् उटै–उस स्वर्ण की; तूय्मै तऩ्ऩै–शुद्धता को; काट्टुतऱ्कु–दिखाने हेतु; ऍऩ्पतु–यह बात; मऩम् कॊळल्–मन में रखना; तकुति–उचित है; इ पॆरियोऩ्–यह महापुरुष; उलकिल्–लोक में; पिऩ्ऩै–बाद को; काट्टुवतु अरियतु–प्रगट कराना कठिन; ऍऩ्ऱु–ऐसा; ऍण्णि–समझकर; कऱ्पिऩुक्कु अरचि–पातिव्रत्य की रानी; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उऩ्ऩै काट्टिऩऩ्–तुम्हें दिखाया। ४०१५

'स्वर्ण को आग में तपाना उसकी शुद्धता को प्रमाणित कराने के निमित्त ही' —यह बात मन में धारण करने अर्ह है ! महिमावान राम ने सोचा कि पीछे कभी तुम्हारी महिमा प्रकट कराने के संदर्भ का आना कठिन है। इसलिए सभी लोकों को प्रमाणित करा दिया कि तुम पतिव्रताओं में रानी हो। ४०१५

पॆण्पि ऱऩ्दव ररुऩ्ददि येमुदऱ् पॆरुमैप्
पण्पि ऱऩ्दबऱ्क् करुङ्गल माहिय पावाय्
मण्पि ऱऩ्दह मुऩक्कुनी वातिऩ्ऱुम् वऩ्दाय्
ऍण्पि ऱऩ्दऩिऩ् कुणङ्गळुक् किऩियिऱुक् किलैयाल् 4016

पॆण् पिऱऩ्ऩवर्–स्त्री-जाति; अरुऩ्ततिये मुतल–अरुंधती आदि; पॆरुमै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पण्पु–महिमामय पातिव्रत्य गुण; इऱन्तवर्क्कु–जिनमें खूब है उनके लिए; अरु कलम् आकिय–अतिश्रेष्ठ आभरण; पावाय्–(सम) देवी सीता; उनक्कु–तुम्हारा; पिऱन्तकम्–जन्मस्थान; मण्–पृथ्वी है; नी–तुम; वानिन्ऱुम्–आकाश से; वन्ताय्–आयीं; इनि–अब; निन् ऍण्पु इऱन्त–तुम्हारे अगणित; कुणङ्कळुक्कु–गुणों की; इऴुक्कु इलै–कोई कमी नहीं। ४०१६

हे अरुंधती आदि अपार चारित्र्यवती स्त्रियों के श्रेष्ठ श्रृंगार-सी देवी ! प्रतिमा-सी सीते ! तुम (परमपद) वैकुंठ से आयीं और पृथ्वी से प्रकट हुईं। फिर तुम्हारे अनगिनत सद्गुणों पर क्या बट्टा लगेगा ? नहीं लगेगा। ४०१६

ऍन्नक् कूऱिड वेन्दिळै तिरुमनत् तियादुम्
उन्नच् चॆय्बदोर् मुनिविन्मै मनङ्गॊळा वुवन्दाळ्
पिन्नैच् चॆम्मलब् बिळवलै युळ्ळन्बु पिणिप्पत्
तन्नैत् तानॆनत् तळुवितन् कण्गणीर् तबुम्ब 4017

ऍन्न कूऱिट–ऐसा कहने पर; अव् एन्तिळै–उस आभरणालंकृता के; तिरुमनत्तु–श्रीमन में; यातुम्–कोई; उन्न चॆय्बतु–याद कराये ऐसे; ओर्–एक; मुनिविन्मै–क्रोध की हीनता को; मनम् कॊळा–मन में बना लेकर; उवन्ताळ्–मुदित हुईं; पिन्नै–बाद; चॆम्मल्–श्रेष्ठ राजा ने; उन् अन्पु पिणिप्प–अंदर के प्रेम के बंधन से; कण्कळ् नीर् ततुम्प–आँखों में अश्रु के भरते; अव् इळवलै–उन लघुराज को; तन्नै तान् ऍन–स्वयं आप अपने को जैसे; तळुवितन्–आलिंगन कर लिया। ४०१७

दशरथ ने ये बातें कहीं तो वे आभरणभूषिता सीताजी अपने उन्नत मन में किसी भी स्मरणीय क्रोध की हीनता का अनुभव करके खुश हुईं। फिर श्रेष्ठ राजाधिराज दशरथ ने आंतरिक प्रेम से बद्ध होकर, आँखों से स्नेहाश्रु बहाते हुए श्रीराम के कनिष्ठ को, अपने-आप को ही आलिंगन कर रहे हों, ऐसा (दोनों को एक बनाते हुए) कसकर आलिंगन कर लिया। ४०१७

कण्णि नीर्प्पॆरुन् दारैमर् इवन्शडैक् कऱ्ऱै
मण्णि नीत्तमॊत् तिऴितरत् तळीइनिन्ऱु मैन्द
ऍण्णि नीक्करुम् बिऱवियु मॆन्नॆञ्जि निऱन्द
पुण्णु नीक्किनै युमैयनैत् तॊडर्न्दुडन् पोन्दाय् 4018

कण्णिन् नीर्–आँखों के जल की; पॆरु तारै–बड़ी धारा; अवन्–उनकी; कऱ्ऱै चटै–जटाजूट को; मण्णिन् नीत्तम्–स्नान कराने पर बहते जल; ऒत्तु–के जैसे; इऴि तर–बहते; तळी इ निन्ऱु–आलिंगन करके खड़ा रहकर; मैन्त–पुत्र; उमैयनै–बहुत प्रेम का; तॊडरन्तु–अनुसरण करते; उडन् पोन्दाय्–साथ आये;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍण्णिल्–असंख्य; नीक्क अरु पिऱविगुम्–दुर्वार जन्म और; ऍन् नॅञ्चिन्–मेरे मन के; इऱन्त–अपार; पुण्णुम् नीक्किनै–दुःखों को दूर कर दिया। ४०१८

उनकी आँखों से आँसू की धारा मानो लक्ष्मण की जटाजूट को नहलाकर नीचे उतरे, ऐसा आलिंगन करके उन्होंने कहा। हे मेरे पुत्र ! अपने भाई का अनुगमन करके तुम उसके साथ वन में आये हो ! इससे तुमने अपने अनंत जन्मों को और मेरे मन के व्रणों को काट दिया। ४०१८

पुरन्द रन्पॅरुम् बहैञनैप् पोर्वॅन्ऱु वुन्ऱन्
परन्दु यर्न्दतो ळाऱ्ऱले तेवरुम् बलरुम्
निरन्द रम्बुहल् हिन्ऱ्ऱु नीयिन्द वुलहिन्
अरन्दै याम्बहै तुडैत्तऱु निऱुत्तिनै यॅय 4019

ऐय–तात; पुरन्तरन्–पुरंदर के; पॅरु पकैञनै–बड़े शत्रु को; पोर् वॅन्ऱु–युद्ध में हरानेवाले; उन्तन्–तुम्हारे; परन्तु उयर्न्त तोळ्–विशाल उन्नत कंधों का; आऱ्ऱले–बल ही; तेवरुम्–देवों और; पलरुम्–अन्य अनेकों का; निरन्तरम्–निरंतर; पुकल्किन्ऱ्ऱु–कथन-विषय है; नी–तुम; इन्त उलकिन्–इस संसार को; अरन्तै–त्रास देनेवाला; आम् पकै–जो है उस शत्रु को; तुटैत्तु–दूर करके; अऱम् निऱुत्ति–धर्म स्थापित कर गये। ४०१९

हे सुंदरमूर्ति ! इन्द्र के बड़े शत्रु इन्द्रजित् को युद्ध में हराकर मारने वाले तुम्हारे विशाल और उन्नत कंधे ही देवों की सतत प्रशंसा के विषय रहते हैं ! तुमने लोकशत्रु को मिटाया और धर्म को स्थापित करा दिया। ४०१९

ऍन्ऱु पिन्नरु मिरामनै यानुनक् कीव
दॊन्ऱु कूऱुदि युयर्कुणत् तोयॅन् वुनैयान्
शॅन्ऱु वानिडैक् कण्डिडर् तीर्वॅन्न् ऱिरुन्देन्
इन्ऱु काणप्पॅऱ् ऱेनिनिप् पॅऱुवदॅन् नॅन्ऱान् 4020

ऍन्ऱु–कहकर; पिन्नरुम्–फिर भी; इरामनै–श्रीराम से; उयर् कुणत्तोय्–उत्कृष्ट गुणोंवाले; यान् उनक्कु–मैं तुम्हें; ईवतु–जो दूं; ऒन्ऱु–वह एक; कूऱुति–कहो; ऍन्ऱ–ऐसा कहने पर; यान्–मैं; उनै–आपको; वान् इटै चॅन्ऱु–स्वर्ग में जाकर; कण्डु–देखकर; इटर् तीर्वॅन्–क्लेश दूर कर लूंगा; ऍन्ऱु–ऐसा; इरुन्तेन्–सोचता रहा; इन्ऱु–आज; काण पॅऱ्ऱेन्–दर्शन पा गया; इनि पॅऱुवतु ऍन्–फिर पाऊँ क्या; ऍन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। ४०२०

यह कहकर फिर दशरथ ने श्रीराम की ओर मुखातिब होकर पूछा कि हे उत्कृष्ट गुणों वाले ! मैं तुमको दूं ऐसा कोई वर माँग लो। श्रीराम ने उत्तर में निवेदन किया कि मैं ही स्वर्गलोक में आकर अपनी मनोव्यथा दूर करा लेने का विचार कर रहा था। अब आपसे भेंट करने का सौभाग्य मिल गया ! फिर क्या है जो पाने को रह गया ? । ४०२०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयि नुम्मुत्तक् कमैन्ददॊन् ऱुरैयॆत वऴहन्
तीय ळॆन्ऱुनी तुऱन्दवॆन् तॆय्वमु महनुम्
तायुन् दम्बियु माम्वरन् दरुहॆत्त् ताऴ्न्दान्
वाय्ति ऱन्दॆऴुन् दार्त्तत वुयिरॆलाम् वऴुत्ति 4021

आयितुम्–तो भी; उत्तक्कु–तुम्हें; अमैनततु–जो जँचे; ऒन्ऱु उरै–वह कोई कहो; ऎत–कहने पर; अऴकन्–सुन्दरमूर्ति ने; तीयळ् ऎन्ऱु–दुष्टा कहकर; नी तुऱन्त–आपने जिन्हें त्यागा; ऎन् तॆय्वमुम्–मेरी आराध्या देवी; मकनुम्–और उनका पुत्र; तायुम्–माता और; तम्पियुम्–कनिष्ठ भ्राता; आम्–बने रहें ऐसा; वरम् तरुक–वर दें; ऎत–ऐसा; ताऴ्न्तान्–कहकर नमन किया; उयिर् ऎलाम्–सारी जीवराशियों ने; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; ऎऴुन्तु–उच्च स्वर में; आर्त्तत–हाहाकार किया। ४०२१

तो भी दशरथ ने कहा। 'तुम जो जँचे वह वर माँग लो)' श्री सुंदर राम ने कहा। आपने जिन्हें दुष्टा कहकर त्याग दिया था, उन मेरी आराध्या देवी कैकयी को और उनके पुत्र को पुनः क्रमशः मेरी माँ और मेरा भाई बनाने का वर प्रदान करें। यह कहकर उन्होंने पिता के चरणों में प्रणमन किया तो भूलोक की सारी जीवराशियाँ मुख खोलकर वाहवाही का हाहाकार करने लगीं। ४०२१

वरद केळॆत्त् तयरद नुरैशॆय्वान् मऱ्ऱिल्
परद नन्नवु पॆऱुहतान् मुडियिनॆप् परित्तिव्
विरद वेडमर् ऱुदविय पाविमेल् विळिवु
शरद नीङ्गल दामॆन्ऱान् ऱऴीइयकै तळर 4022

वरत–हे वरद; केळ्–सुनो; ऎत–कहकर; तयरतन्–दशरथ; उरै ऎय्वान्–बोले; मऱु इल्–अकलंक; परतन्–भरत; अन्नतु पॆऱुक–वह वर प्राप्त करे; मुटियिनै पऱित्तु–मुकुट छीनकर; तान् इव्विरतम् वेटम्–यह व्रत-वेष तुम्हें; उतविय–जिसने दिलाया; पावि मेल्–उस पापी पर; विळिवु–मेरा क्रोध; चरतम्–निश्चय; नीङ्कलतु आम्–दूर नहीं होगा; ऎन्ऱान्–कहा; तऴी इय–आलिंगित के; कै तळर–हाथों को ढीला करते हुए। ४०२२

दशरथ ने उत्तर में कहा कि हे वरद! मेरी बात सुनो। अकलंक भरत को वह भाग्य प्राप्त हो। पर तुम्हारे मुकुट को छीनकर जिसने तुम्हें यह तपस्वी का वेश दिला दिया उस पापिनी पर मेरा कोप निश्चय ही दूर नहीं होगा। जब उन्होंने यह कहा तब भावातिरेक से उनके आलिंगन के हाथ भी ढीले पड़ गये। ४०२२

ऊन्पि ळॆक्किला वुयिर्नॆडि दळिक्कुनी ळरशै
वान्पि ळॆक्किदु मुदलॆन्ऱा ताळ्वन् मदित्तु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Lazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यान्पि ऴैत्तदल् लालॆन्नै यीन्ऱवॆम् बिराट्टि
तान्पि ऴैत्तदुण् डोवॆन्ऱा नवन्शलन् दविर्न्दान् 4023

ऊन्–शरीर को; पिऴैक्किला–जो नहीं छोड़ते; उयिर्–उन जीवों का; नॆटितु–खूब; अळिक्कुम्–पालन करनेवाले; नीळ् अरचॆ–श्रेष्ठ राज्य-स्वत्व को; इतु–यह; वान्–बड़ी; पिऴैक्कु–ग़लती का; मुतल्–हेतु; ऎन्नातु–न मानकर; आळ्वुऱ–शासन करना; मतित्तु–चाहकर; यान्–मैंने; पिऴैत्तत्तु अल्लाल्–ग़लती की, नहीं तो; ऎन्नै ईन्ऱ–मेरी जननी; ऎम्पिराट्टि–मेरी आराध्या ने; तान्–स्वयं; पिऴैत्तत्तु–अपराध किया; उण्टो–था क्या; ऎन्ऱान्–कहा श्रीराम ने; अवन्–उन (दशरथ) ने; चलम्–क्रोध; तविर्न्तान्–त्याग दिया। ४०२३

श्रीराम ने कहा कि शरीरबद्ध जीवों का खूब पालन करने का ज़िम्मेवार कार्य है बड़ा शासनाधिकार ! वह बड़े-बड़े अपराधों का हेतु बन सकता है। इसका विचार किये विना ही राजपद को मानकर मैंने जो स्वीकारा वह मेरा अपराध था। नहीं तो इसमें मेरी जननी मान्या कैकेयी का इसमें दोष हुआ है क्या ? तब दशरथ कोप छोड़कर शांत हुए। ४०२३

ऎव्व रङ्गळुङ् गडन्दव नप्पॊरु ळिशैप्पत्
तॆव्व रम्बरु कान्निडैच् चॆलुत्तिनाट् कीन्द
अव्व रङ्गळु मिरण्डवे याऱ्ऱिनाऱ् कळित्त
इव्व रङ्गळु मिरण्डॆन्ऱार् तेवरु मिरङ्गि 4024

ऎव्वरङ्कळुम्–सभी वरों से; कटन्तवत्–परे (श्रीराम के); अ पॊरुळ्–वह विषय; इचैप्प–कहते समय; तेवरुम्–देवों ने; इरङ्कि–सहानुभूति करके; वरम्पु अऱु–असीम; तॆव्कान् इटै–शत्रु से भरे कानन में; चॆलुत्तिनाट्कु–जिसने भेजा उसको; ईन्त–दिये गये; अव्वरङ्कळुम्–वे वर भी; इरण्टु–दो; अवै–उनके अनुसार; आऱ्ऱिनाऱ्कु–जिन्होंने किया; अळित्त–उन्हें दिये गये; इव्वरङ्कळुम्–ये वर भी; इरण्टु–दो हैं; ऎन्ऱार्–कहा। ४०२४

जब सभी वरों से परे रहनेवाले श्रीराम ने वह वाक्य कहा तब देवों को उन पर तरस आयी। उन्होंने कहा कि असीम शत्रुओं से भरे कानन में जिसने इन्हें भेजा उसे भी दो वर मिले। उन वरों को मानकर जो जंगल में आये उन्हें दिये गये वर भी दो ही हैं। ४०२४

वरमि रण्डळित् तळहत्तै यिळवलै मलर्मेल्
विरव् पॊन्नित्तै मण्णिडै निऱुत्तिविण् णिडैये
उरवु मानमी देहित्त नुम्बरु मुलहुम्
परवु मॆय्यिनुक् कुयिरळित् तुऱुपुहळ् पडैत्तोन् 4025

उम्परुम्–व्योमवासी और; उलकुम्–अन्य लोकवासी; परवुम्–जिनकी स्तुति करते; मॆय्यिनुक्कु–सत्य के लिए; उयिर् अळित्तु–जान का उत्सर्ग करके; उऱु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुकऴ्–योग्य यश; पटैत्तोन्–जिन्होंने अर्जन किया था; इरण्टु–उन्होंने दो; वरम्–वर; अळित्तु–देकर; अऴकतै–सुन्दर राम को; इळवलै–और कनिष्ठ को; मलर् मेल्–कमल पर; विरवु पोन्निलै–रहनेवाली श्री को; मण् इटै–भूमि में; निऱुत्ति–छोड़कर; उरवु–सबल; मानम् मीतु–यान पर; विण् इटैये–आकाश-मध्य; एकिनन्–चले गये। ४०२५

सत्यपालनार्थ जीवनदाता तथा देवों और अन्य लोकवासियों से स्तुत और विपुल यश प्राप्त दशरथ दो वरों को देने के बाद श्री सुंदर राम, उनके कनिष्ठ और कमलासनस्था श्रीदेवी को पृथ्वी पर ही छोड़कर एक सबल यान पर सवार हो व्योममध्य चले गये। ४०२५

कोट्टु वार्शिलैक् कुरिशिलै यमरर्तङ् गुऴाङ्गळ्
मीट्टु नोक्कुऱा वीरनी वेण्डुव वरङ्गळ्
केट्टि यालॆन्न वरक्करहळ् किळप्परुञ् जॆरुविल्
वीट्ट माण्डुळ कुरङ्गॆला मॆऴुहॆन्न विळम्बि 4026

अमरर् तम्–देवों के; कुऴाङ्कळ्–समूह; कोट्टु–झुके हुए; वार् चिलै–लम्बे धनुष के; कुरिचिलै–प्रभु को; मीट्टुम्–फिर एक बार; नोक्कुऱा–देखकर; वीर–वीर; नी–तुम; वेण्टुव–इच्छित; वरङ्कळ्–वर; केट्टि–माँगो; ऎन्न–ऐसा; किळप्पु अरुम्–अवर्णनीय; चॆरुविल्–युद्ध में; अरक्करकळ्–राक्षसों के; वीट्ट–मारने से; माण्टुळ–जो मरे; कुरङ्कु ऎलाम्–वे सारे कपि; ऎऴुक–जी उठें; ऎन्न–ऐसा; विळम्पि–कहकर। ४०२६

देवों के वृन्दों ने कुंचित-धनुर्हस्त महिमावान श्रीराम को फिर से देखकर कहा कि हे वीर! आप जो चाहें वे वर माँग लें। श्रीराम ने कहा कि अवर्णनीय भयंकर युद्ध में राक्षसों के हाथ जो मरे वे सब वानर जी उठें। ४०२६

पिन्नु मोर्वरम् वानरप् पॆरुङ्गडल् पॆयर्न्दु
मन्नु पल्वन माल्वरैक् कुलङ्गळ्मऱ् ऱिन्न
तुन्नि डङ्गळ्काय् कनिकिळङ् गोडतेन् ऱुऱ्ऱ
इन्नु णीरुळ वाहॆन्न वियम्बिडु हॆन्ऱान् 4027

वानरर्–वानरों का; पॆरु कटल्–बड़ा सागर; पॆयर्न्तु–जाकर; मन्नुम्–नित्य; पल् वनम्–अनेक वन; माल् वरै कुलङ्कळ्–बड़े-बड़े पर्वत; मऱ्ऱु–और; इन्न–ऐसे; तुन्न इटङ्कळ्–वासयोग्य स्थान; काय् कनि किळङ्कोटु–तरकारी, फलों, कंदों व; तेन् तुऱ्ऱ–मधुछत्तों से भरे; इन्–मधुर; उण् नीर् उळ–पेयजल-युक्त; आकॆन्न–बनें ऐसा; पिन्नुम्–और; ओर् वरम्–एक वर; इयम्पिटुक–कहिए; ऎन्ऱान्–कहा। ४०२७

उन्होंने और भी माँगा— वानर जाकर बसें ऐसे वन, बड़े पर्वत और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसे अन्य वासस्थान हों; और तरकारी, फल, मूल कंद, मधु के छत्ते और मधुर पेय जल उनमें भरपूर रहें। ४०२७

वरन्द रुम्मुदन् मऴुवलान् मुन्निवरर् वान्नोर्
पुरन्द रादिमऱ् ऱेन्नैयोर् तन्नित्तन्निप् पुहऴ्न्दाङ्
गरन्दे वॆम्बिऱप् परुक्कुना यहनिन्न दरुळाऱ्
कुरङ्गि नम्बॆऱु हॆन्ऱ्रन्न रुळ्ळमुङ् गुळिर्प्पार् 4028

वरम् तरुम्–वरदायी; मऴुवलान् मुतल्–परशुधर शिव आदि; वान्नोर्–देवता लोग; मुन्निवरर्–मुनिवर; पुरन्तराति–पुरंदर आदि; मऱ्ऱु–और; एन्नैयोर्–अन्य; तन्नि तन्नि–अलग-अलग; पुकऴ्न्तु–स्तुति करके; उळ्ळमुम्–मन में; कुळिर्प्पार्–शीतल (सुखी) बनकर; आङ्कु–वहाँ; अरन्तै–दुःखजनक; वॆम्पिऱप्पु–भयंकर जन्मबाधा; अऱुक्कुम्–काटनेवाले; नायक–नायक; निन्नतु अरुळाल्–आपकी कृपा से; कुरङ्कु इन्नम्–वानरगण; पॆऱुकॆन्ऱ्रनर्–प्राप्त करें; ऎन्ऱ्रनर्–कहा (उन्होंने)। ४०२८

वरद परशुधर शिव, देवता लोग, मुनिवर और पुरंदरादि प्रधान देवों ने अलग-अलग उनकी स्तुति की और वरवचन कहा कि दुःखमूल भवव्याधि हरनेवाले हे नाथ ! आपकी ही कृपा से वानरगण आपके माँगे वर प्राप्त करें। ४०२८

मुन्दै नाण्मुदऱ् कडैमुऱै यळवैयु मुडिन्द
अन्द वानर मडङ्गलु मॆऴुन्दुड न्नार्त्तुच्
चिन्दै योडुकण् कळिप्पुऱच् चॆरुवॆला निन्नैया
वन्दु तामरैक् कण्णनै वणङ्गिन्न महिऴ्न्दु 4029

मुन्तै नाळ् मुतल्–आरंभ के दिन से; कटै मुऱै–आखिरी दिन; अळवैयुम्–तक; मुटिन्त–जो मरे; अन्त वानरम्–वे वानर; अटङ्कलुम्–सभी; उटन् ऎऴुन्तु–झट जी उठकर; चॆरु ऎलाम्–सारे युद्ध का; निन्नैया–स्मरण करके; आर्त्तु–दुहाई देकर; चिन्तैयोटु–मन के साथ; कण्–आँखें भी; कळिप्पु–आनंद से; उऱ–भरकर; तामरै कण्णनै–अरुणाक्ष के; वन्तु–पास आकर; मकिऴ्न्तु–मुदित होकर; वणङ्किन्न–विनत हुए। ४०२९

युद्ध के आरम्भ से लेकर अंतिम दिन तक जितने वानर मरे थे वे सब जी उठे। युद्ध-संबंधी सारी बातों का स्मरण करने से मन और आँखों में उदित आनंद के साथ कमलाक्ष श्रीराम के पास आये और मोद के साथ उनको नमस्कार किया। ४०२९

कुम्ब कन्नन्नो डिन्दिर शित्तुवॆङ् गुलप्पोर्
वॆम्बु वॆञ्जिनत् तिरावणन् मुदलिय वीरर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अम्बिन् माण्डुळ वानर मङ्गुबवन् दार्प्प
उम्बर् यावरु मिरामनैप् पार्त्तिवै युरैत्तार् 4030

कुम्पकन्तन्नोटु–कुंभकर्ण के साथ; इन्तिर चित्तु–इन्द्रजित्; वॆम् कुलम् पोर्–भयंकर श्रेष्ठ युद्ध में; वॆम्पु–खौलते; वॆम् चित्तत्तु–भयंकर क्रोध का; इरावणन्–रावण; मुतलिय वीरर्–आदि वीरों के; अम्पिन्–शरों से; माण्टु उळ–जो मरे थे; वानरम्–वे वानर; अङ्कु–वहाँ; वन्तु–आकर; आर्प्प–जयकार करने लगे; उम्पर् यावरुम्–सभी देवों ने; इवै–ये बातें; उरैत्तार्–कहीं। ४०३०

कुम्भकर्ण, इंद्रजित्, खौलते क्रोध का रावण आदि वीरों के अस्त्रों से आहत सभी वानर आये और उच्च स्वर में जय-जयकार किया तो देवों ने श्रीराम से निम्न बातें कहीं। ४०३०

इडैयु वाविनिर् चुवेलम्वन् दिरुत्तॆयि लिलङ्गैप्
पुडैय वावुऱ्ऱच् चेनैयै वळैप्पुऱप् पोक्किप्
पडैय वावुरु मरक्करदङ् गुलमुऱ्ऱुम् बडुत्तुक्
कडैयु वाविनि लिरावणन् तन्नैयुङ् गट्टु 4031

इटै उवाबिनिल्–अपर (कृष्ण) पक्ष-मध्य; चुवेलम्–सुवेल पर्वत पर; वन्तु इऱुत्तु–आकर ठहरकर; ऎयिल्–प्राचीरों-सहित रहते; इलङ्कै–लंका के; पुटै–चारों ओर; चेनैयै–सेना को; अवा उऱ–उत्साह के साथ; वळैप्पु उऱ–घेरने; पोक्कि–भेजकर; पटै–हथियार; अवाउरुम्–चाहनेवाले; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; कुलम् मुऱ्ऱुम्–सारे वर्ग; पटुत्तु–मारकर; कटै उवाबिनिल्–अन्तिम दिन में; इरावणन् तन्नैयुम्–रावण को भी; कट्टु–निहत कर। ४०३१

कृष्णपक्ष अष्टमी तिथि के दिन आप सुबेल पर्वत पर आ ठहरे थे। प्राचीरवलयित लंका को घेरने हेतु उत्सुक वानरों को भेजा। फिर आपने अस्त्राभिलाषी राक्षसों का कुल निर्मूल करके अंतिम दिन में रावण का भी हनन किया। ४०३१

वञ्ज रिल्लैयिव् वण्डत्ति नॆनुम्बडि मडित्त
कञ्ज नाण्मलर्क् कैयिना यन्नैशॊऱ् कडवा
अञ्जॊ डञ्जुनान् गॆन्ऱॆनु माण्डुपोय् मुडिन्द
पञ्ज मिप्पॆयर् पडैत्तुळ तिदियिन्ऱु पयन्द 4032

इव् अण्टत्तिल्–इस अंड में; वञ्चर्–वंचक राक्षस; इल्लै–नहीं रहे; ऎनुम्पटि–ऐसा; मटित्त–अंत करनेवाले; नाळ् कञ्चम् मलर्–तद्दिन विकसित कंजपुष्प; कैयिनाय्–हस्त वाले; अन्नै चॊल्–मातृवचन को; कटवा–उल्लंघन किये बिना; अञ्चॊट् अञ्चु नान्कु–पाँच, पाँच, चार (चौदह); ऎन्ऱु ऎनुम्–समझे जानेवाले; आण्टु–वर्ष; पोय् मुटिन्त–जो बीत गये; इन्ऱु–आज के दिन ने; पञ्चमि पॆयर् पटैत्तु उळ–पंचमी नाम की जो है; तिति पयन्त–वह तिथि बनायी है। ४०३२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इस संसार में अब वंचक राक्षस ही नहीं रहे। इसे प्रशस्त करते हुए उनका काम तमाम करनेवाले हे तद्दिन्विकसित कमल-से हस्तवाले ! आप मातृवचन का उल्लंघन न करके जंगल आये आपको आज चौदह साल पूरे हो गये। आज पंचमी तिथि है। ४०३२

इन्ऱु शॆन्ऱुनी परदनै यॆय्दिलै यॆन्निल्
पॊन्ऱु मालव नॆरियिडै यन्नदु पोक्क
वॆन्ऱि वीरनी पोदिया लॆन्बदु विळम्बा
निन्ऱ तेवऱ्हळ् नीङ्गिना रिरागव निनैन्दान् 4033

वॆन्ऱि वीर–विजयी वीर; नी–आप; इन्ऱु–आज; चॆन्ऱु–जाकर; परतनै–भरत के पास; ऍय्तिलै–पहुँचेंगे नहीं; ऍन्निल्–तो; अवन्–वह; ऍरि इटै–आग में; पॊन्ऱुम्–मर जायगा; अन्नतु–उसे; पोक्क–रोकने के लिए; पोति–जाइएगा; ऍन्पतु–यह बात; विळम्पा–कहकर; निन्ऱ तेवर्कळ्–जो रहे वे देव; नीङ्किनार्–चले गये; इराकवन्–श्रीराघव ने; निनैन्तान्–विचार किया। ४०३३

विजयी वीर ! आज जाकर आप भरत से नहीं मिलेंगे तो भरत जलती आग में कूदकर आत्महत्या कर लेगा। उसे रोकने के वास्ते आप आज ही जायँ ! देव यह कहकर चले गये। श्रीराघव ने विचार किया। ४०३३

आण्डु पत्तॊडु नालुमिन् ऱोडऱु मायिन्
माण्ड दामिनि यॆन्कुलम् बरदनै मायिन्
ईण्डुप् पोहवो रूर्दियुण् डोवॆन्न विन्ऱे
तूण्डु मानमुण् डॆन्ऱुडल् वीडणन् शॊन्नान् 4034

आण्टु–वहाँ; पत्तॊटु नालुम्–दस और चार, चौदह साल; इन्ऱोटु–आज के साथ; अऱुम् आयिन्–समाप्त हो जायँ तो; परतन् मायिन्–भरत मरें तो; इति–आगे; ऍन् कुलम्–मेरा वंश; माण्टतु आम्–मरा हो जायगा; ईण्टु–यहाँ; पोक–जाने का; ओर्–कोई; ऊर्ति–वाहन; उण्टो–है क्या; ऍन्न–ऐसा पूछा तो; वीटणन्–विभीषण ने; इन्ऱे–आज ही; तूण्टुम्–ले जाने का; अटल्–बलवान; मानम्–यान; उण्टु–है; ऍन्ऱु–ऐसा; चॊन्नान्–कहा। ४०३४

आज चौदह साल समाप्त हो जायँगे। भरत मर जायगा तो मेरा कुल ही नष्ट हो गया ! "अभी जाने के लिए कोई वाहन मिलेगा क्या ?" श्रीराम ने विभीषण से पूछा तो विभीषण ने उत्तर दिया कि हाँ; आज ही पहुँचा सकनेवाला एक सशक्त विमान है। ४०३४

इयक्कर् वेन्दनुक् करुमऱैक् किळवनन् ऱीन्द
तुयक्कि लादवर् मनमॆन्न तूयदु शुरर्हळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वियक्क वान्शॆलुम् बुट्पह विमानमुण् डॆन्ऱे
मयक्कि लान्शॊलक् कॊणरुदि वल्लैयि नॆन्ऱान् 4035

इयक्कर् वेन्ततुक्कु–यक्षराज कुबेर को; अरु मऱै किळवन्–उत्तम वेदों के रक्षक ब्रह्मा ने; अन्ऱु–उस दिन; ईन्त–जो दिया था; तुयक्कु–बंधन; इलातवर्–रहित लोगों के; मनम् ऍन–मन के समान; तूयतु–पवित्र; चुरर्कळ–देवों को भी; वियक्क–विस्मित करके; वान् चॆलुम्–आकाश में चलनेवाला; पुट्पक विमानम्–पुष्पकयान; उण्टु–है; ऍन्ऱु–ऐसा; मयक्कु–भ्रम; इलान्–रहित विभीषण के; चॊल–कहने पर; वल्लैयिन्–जल्दी; कॊणर्ति–लाओ; ऍन्ऱान्–ऐसा कहा श्रीराम ने। ४०३५

वह चतुर्वेद ब्रह्मा का यक्षराज कुबेर को (जिस दिन उसने तपस्या की थी उस दिन) दिया हुआ है। वह निर्लिप्त ज्ञानी के मन के समान पवित्र है। सुरों को भी विस्मयाभिभूत करते हुए आकाश में चलनेवाला पुष्पक विमान यहाँ है। भ्रमरहित मनवाले विभीषण के ऐसा कहने पर श्रीराम ने आज्ञा दिलायी कि लाओ जल्दी उसे। ४०३५

अण्ड कोडिह ळनन्दमॊत् तायिर मरुक्कर्
विण्ड दामॆन विशुम्बिडैत् तिशैयॆलाम् विळङ्गक्
कण्डे यायिर कोडिह ळॊलिप्पुऱक् कञलक्
कॊण्ड णैन्दन नॊडियिनि नरक्कर्दङ् गोमान् 4036

अनन्तम्–अनंत; अण्ट कोटिकळ्–कोटि अण्ड; ऒत्तु–मिलकर; विचुम्पु इटै–आकाश में; आयिरम्–हज़ार; अरुक्कर्–सूरज; विण्टतु आम्–निकले हों; ऍन–ऐसा; तिचै ऍलाम्–सारी दिशाओं में; विळङ्क–प्रकाश देते; आयिरम् कोटि–हज़ार करोड़; कण्टैकळ्–घंटियाँ; ऒलिप्पु उऱ–शब्द हो ऐसे; कञल–बजतीं; अरक्कर् तम् कोमान्–राक्षसपति; नॊडियिनिल्–एक 'चुटकी' की देर में; कॊण्टु अणैन्ततन्–ले आया। ४०३६

राक्षसपति विभीषण चुटकी बजाते देर में वह यान लाया। अनंत कोटि अण्डों का मिला-सा आकार लिये आकाश में उदित हज़ार सूर्य का सम्मिलित प्रकाश सारी दिशाओं में छिटकाते हुए वह आया और उसमें हज़ार करोड़ घंटियाँ बजकर ध्वनि उठा रही थीं। ४०३६

अनैय पुट्पह विमानम्वन् दवनियै यणुह
इनिय शिन्दनै यिराहव नुवहैयो डिनिनम्
विनैय मुऱ्ऱिय वॆन्ऱुकॊण् डेऱिनन् विण्णोर्
पुनैम लर्शॊरिन् दार्त्तन राशिहळ् पुहन्ऱे 4037

अनैय–वैसा; पुट्पक विमानम्–पुष्पकविमान; अवनियै–भूमि पर; वन्तु–आ; अणक–जब पहुँचा; इनिय चिन्ततै–मधुर भाववाले; इराकवन्–श्रीराघव; उवकैयोटु–आनंद के साथ; ईनि–अब; नम्–हमारी; विनैयम्–कार्य; मुऱ्ऱियतु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

संपन्न हो गया; अॅन्ऱु कॊण्टु–ऐसा मानकर; एऱितन्–चढ़े; विण्णोर्–आकाशवासी (देवों) ने; आचिकळ्–आशीर्वचन; पुकऱ्ऱु–कहकर; पुऩै मलर्–सुन्दरपुष्प; चॊरिन्तु–बरसाकर; आर्त्ततर्–जय-जयकार किया। ४०३७

जब वह विमान भूमि पर उतरा तब मधुर भावनाओं से भरे मनवाले श्रीराघव ने आनंद के साथ यह आश्वासन लेकर आरोहण किया कि अब हमारा कार्य सिद्ध हो गया। व्योमवासियों ने आशीर्वचन कहे, पुष्प बरसाये और जय-जयकार किया। ४०३७

वणङ्गु नुण्णिडैत् तिरिशडै वणङ्गवान् कर्पिर्
किणङ्ग रिन्मैया णोक्कियो रिडरिन्ऱि यिलङ्गैक्
कणङ्गु तान्ऩॆन विरुत्तियंन् ऱैयन्माट् टणैन्दाळ्
मणङ्गॊळ् वेलिळङ् गोळरि मानमीप् पडर्न्दान् 4038

वान् कर्पिर्कु–श्रेष्ठ पातिव्रत्य में; इणङ्कर्–सानी; इन्मैयाळ्–न रखने वाली देवी; वणङ्कुम्–लचीली; नुण् इटै–पतली कमरवाली; तिरिचटै–त्रिजटा के; वणङ्क–उन्हें नमस्कार करने पर; नोक्कि–देखकर; ओर् इटर् इन्ऱि–बिना किसी संकट के; इलङ्कैक्कु–लंका की; अणङ्कु तान् अॅन–एक देवी के समान; इरुत्ति–रहो; अॅन्ऱु–ऐसा कहकर; ऐयन् माट्टु–प्रभु श्रीराम के पास; अणैन्ताळ्–पहुँचीं; मणम् कॊळ्–मांस-गंधयुक्त; वेल्–शक्ति के; इळ कोळरि–बालकेसरी (लक्ष्मण); मानम् मी–विमान पर; पटर्न्तान्–चढ़े। ४०३८

अतिश्रेष्ठ पातिव्रत्यपालिका, जिनकी टक्कर की कोई नहीं थी वे सीताजी, अपने सामने विनत लचीली कमरवाली त्रिजटा को यह आशीर्वाद दिया कि तुम विना किसी संकट के लंका की देवी के समान रहो और तब श्रीराम के पास आयीं। मांसगंधवह भालाधारी बालकेसरी (-सम) लक्ष्मण भी विमान पर आरूढ़ हुए। ४०३८

अण्ड मुण्डवत् मणियणि युदरमॊत् तन्निलन्
शण्ड वेहमुङ् गुऱैतर निनैवॆनुन् दहैत्ताय्
विण्ड लन्दिहळ् पुट्पह विमानमा मदन्मेऱ्
कॊण्ड कॊण्डल्तन् तुणैवरैप् पार्त्तिवै कुणित्तान् 4039

अण्टम्–अण्ड के; उण्टवत्–उदरस्थ करनेवाले के; मणि अणि–सुन्दरतायुक्त; उतरम् ऒत्तु–उदर के समान; अनिलन्–पवन के; चण्टम् वेकमुम्–उग्र वेग को; कुऱै तर–कम करते हुए; निनैवु ऎनुम्–मनोवेग कहने; तकैत्ताय्–योग्यरीति से; विण् तलम्–आकाशतल में; तिकळ्–प्रकाशमान; पुट्पक विमानम् आम्–पुष्पक विमान जो था; अतन् मेल् कॊण्ट–उस पर जो चढ़े वे; कॊण्टल्–मेघ-श्याम ने; तन् तुणैवऱै–अपने साथियों को; पार्त्तु–देखकर; इवै–ये वचन; कुणित्तान्–सोचकर बताये। ३०३९

प्रलय के अवसर पर सारे अंडों को अपने उदर में लय करा लेने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाले श्रीविष्णु के अति सुन्दर उदर के समान जो रहा, जो अनल गति को भी कम बनानेवाली मनोगति से युक्त था और जो आकाश में अत्यद्भुत छवि के साथ रह रहा था, उस पर आरूढ़ होकर मेघश्याम ने अपने साथियों से निम्नोक्त विचार प्रकट किये। ४०३९

वीड णन्ऱ्ऱै यन्बुऱ् नोक्कुऱा विमलन्
तोड णैन्दतार् मवुलियाय् शॊल्वदॊन् ऱुळदुन्
माड णैन्दवर्क् किन्बमे वऴङ्गिनी ळरशिन्
नाड णैन्दवर् पुहऴ्न्दिड वीऱ्ऱिरु नलत्ताल् 4040

विमलन्–विमल श्रीराम; वीटणन् तन्नै–विभीषण को; अन्पुऱ–सस्नेह; नोक्कुऱा–देखकर; तोटु–पंखुड़ियों-सहित; अणैन्त तार्–माला पहने; मवुलियाय्–मुकुटधारी; चॊल्वतु–कहना; ऒन्ऱु–एक; उळतु–है; उन् माटु–तुम्हारे पास; अणैन्तवर्क्कु–जो आते उन्हें; इन्पमे वऴङ्कि–सुख ही देकर; नाटु अणैन्तवर्–देशवासी; पुकऴ्न्तिट–प्रशंसा करें ऐसा; नीळ् अरचिल्–बड़े इस शासन में; नलत्ताल्–भलाइयों के साथ; वीऱ्ऱिरु–विराजमान रहो। ४०४०

विमलमूर्ति ने विभीषण को सस्नेह देखकर कहा कि दलसंकुल पुष्प-मालाधारी ! तुमसे कहने की एक बात है। तुम्हारे पास जो आये हैं, उनका हित करो। देशवासियों की प्रशंसा का पात्र बने रहो और इस बड़े शासन-कार्य में सब तरह की भलाइयों के साथ विराजमान रहो। ४०४०

नीदि यारॆऩत् तॆरिवुऱु निलैमैपॆऱ् ऱुडैयाम्
आदि नान्मऱैक् किळवऩिन् कुलमॆऩ वमैन्दाय्
एदि लार्तॊऴु मिलङ्गैमा नहरिनु ळिऩिनी
पोदि यालॆऩप् पुहन्ऱुऩन् नान्मऱै पुहन्ऱान् 4041

नीति आऱु–नीति-नदी; ऎऩ–के समान; तॆरिवुऱु–माने जाने की; निलैमै–स्थिति; पॆऱ्ऱु उडैयाय्–पा चुके हो; आति–अनादि; नान्मऱै किळवऩ्–चतुर्वेद ब्रह्मा; निन् कुलम्–तुम्हारे कुलजनक हैं; ऎऩ–ऐसा; अमैन्ताय्–पैदा हुए हो; नी–तुम; एतिलार्–शत्रु से; तॊऴुम्–स्तुत; इलङ्कै–लंका; मा नकरिनुळ्–(के) बड़े नगर (के अंदर); पोति–जाओ; ऎऩ–ऐसा; पुकऩ्ऱतऩ्–कहा; नान्मऱै–चतुर्वेद के; पुकऩ्ऱान्–प्रकाशक ने। ४०४१

नीति-नदी-मान्य स्थिति में रहनेवाले ! अनादि वेदों का ब्रह्मा जिस कुल का आदिपुरुष है, उस कुल में पैदा हुए हो। शत्रुप्रशंसित लंका नगर को लौट जाओ। ऐसा कहा चतुर्वेदप्रकाशक श्रीराम ने। ४०४१

शुक्कि रीवनिन् तोळुडै वऩ्मैयाऱ् ऱॆशन्दॊ
हक्कि रीवऩैत् तडिन्दुवॆम् ब्रडैयिऩा लशैत्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिक्क वानरच् चेनैयि निळैप्पऱ मीण्डूर्
पुक्कु वाळ्हेनप् पुहन्ऱन नीऱिलाप् पुहळोन् 4042

ईऱ इला–असीम; पुकळोन्–यश के स्वामी ने; चुक्किरीव–सुग्रीव; निन्–तुम्हारे; तोळ् उटै–वन्मैयाल्–भुजबल से; तॅचम् तॉकु–दस के; अ किरीवनै–ग्रीवा वाले को; तटिन्तु–मारकर; वॅम् पटैयिनाल्–भयंकर अस्त्रों से; अचैन्त–अस्त-व्यस्त; मिक्क–बहुत; वानर चेनैयिन्–वानरसेना की; इळैप्पु अऱ–थकावट दूर करके; मीण्टु–फिर से; ऊर् पुक्कु–नगर में जाकर; वाळ्क–रहो; ॲन पुकन्ऱनन्–ऐसा कहा। ४०४२

अनंतयशस्वी श्रीराम ने सुग्रीव से यह कहा:— सुग्रीव ! तुम्हारे भुजबल के कारण ही दशग्रीव का हनन कर सका। तुम भयंकर अस्त्रों से अस्त-व्यस्त तथा शिथिल जो हो गये थे उन वानरों की सेना को लेकर अपने नगर में लौट जाओ और रहो। ४०४२

वालि शेयिनैच् चाम्बनैप् पनशनै वयप्पोर्
नील नादिय नॅडुम्बडैत् तलैवरै नॅडिय
कालिन् वेलैयैत् ताविमीण् डरुळिय करुणै
पोलुम् वीरनै नोक्किमऱ् ऱिम्मॉळि पुहन्ऱान् 4043

वालि चेयिनै–वालीपुत्र को; चाम्पनै–जाम्बवान को; पनचनै–पनश को; वयम् पोर्–बलवान योद्धा; नीलन् आतिय–नील आदि; नॅटु पटै–बड़ी सेना के; तलैवरै–नायकों को; नॅटिय–बड़े; कालिन्–पैरों के बल; वेलैयै–समुद्र को; ताबि–लाँघकर; मीण्टु अरुळिय–लौट जो आया; करुणैपोलुम्–उस मूर्तिमान करुणा-सम; वीरनै–वीर हनुमान को; नोक्कि–देखकर; इ मॉळि–यही बात; पुकन्ऱान्–कही। ४०४३

फिर श्रीराम ने वालीपुत्र, जाम्बवान, पनस, विजयी नील आदि बड़े योद्धायूथप, हनुमान, जिसने कि अपने लम्बे पैरों के बल समुद्र को लाँघकर लौट आने की कृपा की थी, और जो मूर्तिमान करुणा के समान था —इन सब पर कृपादृष्टि डालकर वही बात दुहरायी। ४०४३

ऐय निम्मॉळि पुहन्ऱिडत् तुणुक्कमो डवर्हळ्
मॅय्यु माबियुङ् गुलैतर विळिहणीर् तदुम्बच्
चॅय्य तामरैत् ताळिणै मुडियुऱच् चेर्त्ति
उय्हि लेनिनै नोङ्गिनॅन् ऱिनैयन वुरैत्तार् 4044

ऐयन्–प्रभु के; इ मॉळि–यह बात; पुकन्ऱिट–कहने पर; अवर्कळ्–उन्होंने; तुणुक्कमोटु–घबड़ाकर; मॅय्युम्–शरीर; आबियुम्–और प्राणों के; कुलै तर–काँपते; विळिकळ्–आँखों में; नीर् ततुम्प–आँसू छलकते; चॅय्य–अरुण; तामरै ताळिणै–पद्मचरणों को; मुटिउऱ–सिर पर लगें ऐसा; चेर्त्ति–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिलाकर; नित्तै नीङ्किन्–आपसे अलग होंगे तो; उय्किलेम्–जियेंगे नहीं; ऍन्ऱु–ऐसा; इन्नैयन्–और ये बातें; उरैत्तार्–कहीं। ४०४४

प्रभु के यह वचन कहते ही सुग्रीवादि घबड़ा गये, उनके शरीर और प्राण काँप गये। आँखों से अश्रु बहने लगा। उन्होंने अपने सिरों को श्रीराम के अरुणपद्मचरणों पर रखकर निवेदन किया कि अगर हमें आपसे अलग होना पड़ा तो हम जीवित नहीं रहेंगे। आगे भी उन्होंने कहा। ४०४४

पार मामदि लयोत्तियि ऩैय्दिनिन् पैम्बॊन्
आर मामुडिक् कोलमुञ् जॆव्वियु मऴहुम्
शोर्वि लादियाङ् गाण्गुऱु मऴवैयुन् दॊडर्न्दु
पेर वेयरु ळॆन्ऱन्न रुळ्ळन्बु पिणिप्पार् 4045

उळ्ळन्पु–सच्चे मन के; पिणिप्पार्–प्रेमबद्ध; पारम्–भारी; मा मतिल्–बड़े प्राचीरों की; अयोत्तियिन्–अयोध्या में; ऍय्ति–जाकर; निन्–आपके; पैम् पॊन् आरम्–चोखे स्वर्ण से निर्मित तथा हारयुक्त; मा मुटि कोलमुम्–बड़े किरीट-धारण की झाँकी; चॆव्वियुम्–तथा उत्सव; अऴकुम्–सौंदर्य; चोर्विलातु–क्षोभ दूर हो ऐसा; याम्–हम; काण्कुऱुम्–देखें; अऴवैयुम्–उतने समय तक; तॊटर्न्तु–पीछे आकर के; पेरवे–लौटें; अरुळ्–यह करुणा करें; ऍन्ऱनर्–बोले (विभीषण आदि)। ४०४५

मन के अधिक स्नेह से जो श्रीराम को बाँध सकते थे, उन्होंने श्रीराम से कहा कि हम बड़े प्राचीरों वाली अयोध्या में आकर आपके मुकुटधारण उत्सव में आपका, खरे स्वर्ण से निर्मित और हारों से अलंकृत मुकुट धारण करना, अन्य वैभव और तब की आपकी सुन्दरता देखना चाहते हैं। तभी हमारी थकावट दूर होगी। तब तक आपके साथ आने, उसके बाद लौटने की कृपा की आज्ञा दें। ४०४५

अन्बि ऩालवर् मॊऴिन्दवा शहङ्गळु मवर्हळ्
तुन्ब मॆय्दिय नडुक्कमु नोक्किनीर् तुळङ्गल्
मुन्बु नाऩिनैन् दिरुन्ददप् परिशुनुम् मुयऱ्चि
पिन्बु काणुमा ऱुरैत्तदॆन् ऱुरैत्तऩन् पॆरियोन् 4046

पॆरियोन्–सम्मान्य श्रीराम; अन्पिनाल्–प्रेम से; अवर्–उनके; मॊऴिन्त–कहे; वाचकङ्कळुम्–वचन और; अवर्कळ्–उनका; तुन्पम्–(वियोग) दुःख से; ऍय्तिय–प्राप्त; नटुक्कमुम्–कंपन; नोक्कि–(सुन और) देखकर; नीर्–तुम लोग; तुळङ्कल्–भय मत करो; मुन्पु–पहले; नान्–मैं; निनैन्तिरुन्ततु–जो सोचता था; अप्परिचु–वह उसी प्रकार का था; पिन्पु–बाद (ऐसा); उरैत्ततु–कहना; मुम् मुयऱ्चि–तुम्हारा प्रबन्ध; काणुमाऱु–जानने के लिए; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैत्तऩन्–बोले। ४०४६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम ने उनका स्नेहार्द्र वचन सुना और उनका दुःख और भय देखा, कहा कि डरो मत। मैंने पहले वही सोचा था। पर जानना चाहा कि आपका कोई दूसरा प्रबंध तो नहीं। इसलिए मैंने वह बात कही थी। ४०४६

ऐयन् वाशहङ् गेट्टलु मरिकुलत् तरशुम्
मॉय्हॉळ् शेनैयु मिलङ्गैयर् वेन्दनु मुदलोर्
वैय माळुडै नायहत् मलर्च्चरण् वणङ्गि
मॅय्यि नोडरुन् दुऱक्कमुऱ् ऱारॅन वियन्दार् 4047

ऐयन्–प्रभु का; वाचकम्–वचन; केट्टलुम्–सुनते ही; अरिकुलत्तु–अरिकुल के; अरचुम्–राजा और; मॉय्कॉळ्–धनी; चेनैयुम्–सेना; इलङ्कैयर्–लंकावासियों का; वेन्तनुम्–राजा; मुतलोर्–आदि लोग; वैयम्–भुवन के; आळ् उटै–शासक; नायकन्–नायक श्रीराम के; मलर् चरण्–कमल-चरणों में; वणङ्कि–नमस्कार करके; मॅय्यिनोटु–सशरीर; अरु–अगम; तुऱक्कम्–मोक्षलोक; उऱ्ऱार्–पहुँच गये; ऍन–जैसे; वियन्तार्–विस्मित हुए। ४०४७

प्रभु का वचन सुनते ही अरिकुलराज, घनी सेना, लंकापति आदि भुवननिकायपति श्रीराम के चरणों में विमत हुए। उन्हें ऐसा विस्मय तथा आनंद हो गया मानो उन्हें सशरीर ही स्वर्ग मिल गया हो। ४०४७

अनैय दाहिय शेनैयो डरशनै यनिलन्
तनय नादियाम् बडैप्परुन् दलैवर्हळ् तम्मै
वनैयुम् वार्हळ् लिलङ्गैयर् मन्ननै वन्दिङ्
गिनिदि नेऱुमिन् यिमानमॅन् ऱिराघव निशैत्तान् 4048

अनैयतु–वैसी स्थिति में; आकिय–आयी; चेनैयोटु–सेना के साथ; अरचनै–राजा सुग्रीव को; अनिलन्–और पवनदेव के; तनयन्–पुत्र; आतियाम्–आदि; पटै पॅर–सेना के बड़े; तलैवर्कळ् तम्मै–नायकों को; वनैयुम्–पहनी; वार् कळल्–बड़ी पायलधारी; इलङ्कैयर्–लंका के; मन्ननै–राजा को; इङ्कु–यहाँ; वन्तु–आकर; इनिनिन्–प्रसन्नता के साथ; विमानम्–यान पर; एऱुमिन्–चढ़ो; ऍन्ऱु–ऐसा; इराकवन्–श्रीराघव ने; इचैत्तान्–कहा। ४०४८

उस तरह विस्मित सेना को श्रीराम ने राजा सुग्रीव, अनिलसुत आदि बड़े वानरयूथपों और पायलधारी विभीषण को 'अंदर सुख से आ बैठो' कहकर बुला लिया। ४०४८

शॉन्न वाशहम् बिऱ्पडच् चूरियन् महनुम्
मन्नु वीररु मॅळ्बदु वॅळ्ळवा नररुम्
कन्नि मामदि लिलङ्गैमन् नॉडुकडऱ् पडैयुम्
तुन्नि नार्नॅडम् बुट्पह मिशैयॉरु शूळल् 4049

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चॊत्त वाचकम्–उनका कहा वचन; पिऱ्पट–पिछड़ जाय ऐसा; चूरियन् मकनुम्–सूर्यपुत्र और; मन्नुम्–युक्त; वीररुम्–वीर; ऎऴुपतु–सत्तर; वॆळ्ळम्–वॆळ्ळम्; वानररुम्–वानर; कन्नि–अक्षय; मामतिल्–बड़े प्राचीरों की; इलङ्कै मन्नॊटु–लंका के राजा के साथ; कटल् पटैयुम्–समुद्र-सम सेना; नॆटु–बड़े; पुट्पकम्–पुष्पक-विमान; मिचै–पर; ऒरु चूऴल्–एक गोल में; तुन्नित्तार्–सटे हुए बैठ गये। ४०४९

कहने की भी देरी न रही कि सूर्यसूनु, अन्य यूथप, सत्तर 'वॆळ्ळम्' वानर वीर, अक्षय प्राचीरों वाली लंका का राजा और उसकी सागर-सम विशाल सेना —सभी उस बड़े पुष्पक यान पर आये और एक गोल पंक्ति में सटे हुए बैठ गये। ४०४९

पत्तु नालॆत्त वडुक्किय वुलहङ्गळ् पलवित्
मॆत्ति योत्तिह् लेऱिनुम् वॆऱ्ऱिड मिहुमाल्
मुत्त रान्नव रिदनिलै मॊऴिहुव दल्लाल्
इत्त रादलत् तियम्बुदऱ् कुरियवर् यारे 4050

पत्तु नालॆत्त–दस और चार; अटुक्किय–एक-दूसरे के ऊपर रहे; उलकङ्कळ् पलवित्–अनेक लोकों के; मॆत्ति–बहुत; योत्तिकळ्–जीव; एऱिनुम्–चढ़ें तो भी; वॆऱ्ऱिटम्–खाली स्थान; मिकुम्–अधिक रहेगा; इतत् निलै–इसका हाल; मुत्तर् आत्तवर्–मुक्त लोग; मॊऴिकुवतु–कहें तो कहें; अल्लाल्–नहीं तो; इ तरातलत्तु–इस भूमि के वासियों में; इयम्पुतऱ्कु–कहने; उरियवर्–योग्य; यार्–कौन हैं। ४०५०

वह यान ऐसा था कि उसमें चौदहों भुवनों के सारे अनेक जीव सवार हों तो भी बहुत स्थान खाली रहे। मुक्त लोगों को छोड़ कोई इसके हाल का वर्णन कर सके, ऐसा कोई नहीं। ४०५०

ऎऴुबदु वॆळ्ळत् तोरु मिरविकान् मुऴैयु मॆण्णिन्
वऴविला विलङ्गै वेन्दुम् वान्पॆरुम् बडैयुञ् जूऴत्
तऴुवुशी रिळैय कोवुञ् जनहन्मा मयिलुम् बोऱ्ऱ
विऴुमिय कुणत्तु वीरन् विळङ्गितन् विमानत् तुम्बर् 4051

ऎऴुपतु–सत्तर; वॆळ्ळत्तोरुम्–वॆळ्ळम् के सभी वीर; इरवि–और रवि का; कान् मुऴैयुम्–पुत्र; ऎण्णिल्–मन में; बऴु–दोष; इला–न रहा (जिसके); इलङ्कै वेन्दुम्–वह लंकेश; वान्–श्रेष्ठ; पॆरु–बड़ी; पटैयुम्–सेना के; चूऴ्–घेरे रहते; चीर् तऴुवु–महत्तायुक्त; इळैय–छोटे; कोवुम्–राजा और; चनकन्–जनक की; मा मयिलुम्–(दुहिता) बड़ी कलापीनिभ देवी के; पोऱ्ऱ–स्तुति करते; विऴुमिय–श्रेष्ठ; कुणत्तु–गुणों के; वीरन्–वीर श्रीराम; विमानत्तु उम्पर्–पुष्पक विमान पर; विळङ्कितन्–शोभायमान रहे। ४०५१

सत्तर वॆळ्ळम् सेनावीर, रविपुत्र, अकलंकमन लंकापति, उसकी श्रेष्ठ बड़ी सेना —सब घेरे रहे। बड़े यशस्वी छोटे राजा लक्ष्मण, जनकसुता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कलापीनिभ जानकी की स्तुति को अपनाते हुए बड़े उत्तम गुणवान श्रीराम पुष्पकयान पर शोभित रहे। ४०५१

अण्डमे पोन्ऱु दैयन् पुट्पह मण्डत् तुम्बर्
ऍण्डरुङ् गुणङ्ग ळिन्ऱि मुदलिडै यीऱिन् ऱाहिप्
पण्डैनान् मऱैक्कु मॅट्टाप् परञ्जुडर् पॉलिवदेपोऱ्
पुण्डरी हक्कण् वॅन्ऱिप् पुरवलन् पॉलिन्दान् मन्नो 4052

ऐयन्–प्रभु का; पुट्पकम्–पुष्पकयान; अण्टमे–अण्ड के; पोन्ऱुतु–ही समान था; पुण्टरीकम्–पुण्डरीक-सम; कण्–आँखें और; वॅन्ऱि–विजय के स्वामी; पुरवलन्–पालक श्रीराम; अण्टत्तु–भूमि के; उम्पर्–ऊपर; ऍण् तरु–गिनती में आये; कुणङ्कळ्–गुणों के; इन्ऱि–विना; मुतल्–जन्म; इटै–मध्यायु; ईऱु–मरण; इन्ऱु–के विना; आकि–रहकर; पण्टै–पुरातन; नान् मऱैक्कुम्–चारों वेदों से भी; ऍट्टा–अग्राहप; परम् चुटर्–परमज्योति; पॉलिवते पोल्–दमकती जैसे; पॉलिन्तान्–छविमय रहे। ४०५२

प्रभु का पुष्पक अंड के समान था; पुण्डरीकाक्ष, विजयी, रक्षक भगवान श्रीराम सभी लोकों के ऊपर (परमपद वैकुण्ठ में) असंख्यगुणगणपरिपूर्ण होकर अनादिमध्यांत, पुरातन चतुर्वेदागोचर परम वस्तु जैसे ज्योतिर्मय रहती हैं वैसे ही जाज्वल्यमय रहे। ४०५२

तेनुडै यलङ्गन् मौलिच् चॅङ्गदिर्च् चॅल्वन् शेयुम्
मीनुडै यहळि वेलै यिलङ्गैयर् वेन्दुम् वॅऱ्ऱित्
तानैयुम् बिऱरु मऱ्ऱैप् पडैप्पॅरुन् दलैवर् तामुम्
मानुड वडिवङ् गॊण्डार् वळ्ळल्तन् वाय्मै तन्नाल् 4053

तेन् उटै–मधुयुक्त; अलङ्कल्–पुष्पमाला से युक्त; मौलि–किरीटवाला; चॅ कतिर्–लाल किरणों के; चॅल्वन्–धनी सूर्य का; चेयुम्–पुत्र; मीन् उटै–मछलियों-सहित; वेलै–समुद्र की; अकळि–खाई वाली; इलङ्कैयर् वेन्तुम्–लंका का पति; वॅऱ्ऱि–विजयी; तानैयुम्–सेना; पिऱरुम्–अन्य; मऱ्ऱै–और; पडै–सेना के; पॅरु–बड़े; तलैवर् तामुम्–नायक; वळ्ळल् तन्–प्रभु के; वाय्मै तन्नाल्–वचन के अनुसार; मानुट–मनुष्य के; वटिवम्–रूप; कॊण्टार्–ले लिये (सभी ने)। ४०५३

तब उदार प्रभु श्रीराम की प्रकट कही आज्ञा के अनुसार मधुयुक्त पुष्पमाला से अलंकृत मुकुटधारी, लाल किरणों के स्वामी सूर्य का पुत्र, मकरालय-परिखा लंका के वासियों का राजा और दोनों विजयी सेनाओं के वीर और अन्य सभी यूथप —सभी ने मानव रूप धर लिया। ४०५३

कुडतिशै मऱैन्द पिन्नर्क् कुणतिशै युदयञ् जॅय्वान्
वडतिशै ययन मुन्नि वरुवदे कडुप्प मानम्
तडैयॊरु शिऱिदिन् ऱाहित् ताविवान् पडरुम् वेलै
पडैयमै विळियाट् कैय तिनैयन पहर लुऱ्ऱान् 4054

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुट तिचै–पश्चिम दिशा में; मऱैन्त पित्तऱर्–अस्त होने के बाद; कुण तिचै–पूरब दिशा में; उतयम् चॅय्वान्–उदित होनेवाला; वट तिचै–उत्तर दिशा के; अयऩम्–मार्ग में; मुन्ति–(जाना) सोचकर; वरुवतु–आता हो; कटुप्प–जैसे; मानम्–विमान; तटै–बाधा; ऑरु चिऱितु–कोई छोटी भी; इन्ऱु आकि–न होकर; वान्–आकाश में; ताबि–लाँघकर; पटरुम् बेलै–जाता रहा तब; ऐयन्–प्रभु; वेलै पटै–भाला हथियार; अमै विऴियाट्कु–के समान आँखों वाली को; इऩैयस–ये; पकरल्–कहने; उऱ्ऱान्–लगे। ४०५४

पश्चिम दिशा में अस्त होकर पूर्व दिशा में उदय होता रहा सूर्य मानो उत्तर दिशा के मार्ग में जाता हो, ऐसा पुष्पकयान अबाध गति से आकाश-मार्ग में जाता रहा। तब श्रीराम भाला-सी आँखों वाली सीता को निम्नलिखित विषय बताने लगे। ४०५४

इन्दिरऱ् कञ्जि मेना ळिरुङ्गडल् पुक्कु नीङ्गाक्
कन्दर शयिलन् दऩैक् कण्डवर् विनैह डीर्क्कुङ्
गन्दमा दनमॅन् ऱोदुङ् गिरियिवण् किडप्पक् कण्डाय्
पैन्दॊडि यडैत्त शेदु पावऩ माय दॅन्ऱान् 4055

पैन्तॊटि–खरे स्वर्ण से निर्मित कंकणधारिणी; मेनाळ्–पहले; इन्तिरऱ्कु–इन्द्र से; अञ्चि–डरकर; इरु कटल्–बड़े समुद्र में; पुक्कु–घुसकर; नीङ्का–जो बाहर नहीं आया; कन्तरम्–कंदरासहित; चयिलम् तऩै–शैल को; कन्तमाततम्–गंधमादन; ऍऩ्ऱ–'इति'; ओतुम्–जो कहा जाता है; कण्टवर्–दर्शक के; विनैकळ् कर्मों को; तीर्क्कुम्–दूर करनेवाले; किरि–पर्वत को; इवण्–इधर; किटप्प–पड़ा हुआ; कण्टाय्–देखो; अटैत्त–बँधे हुए; चेतु–सेतु के कारण; पावऩम्–पवित्र; आयतु–बना; ऍऩ्ऱान्–कहा प्रभु ने। ४०५५

खरे स्वर्णकंकणहस्ते ! पहले इंद्र से डरकर कंदराओं-सह गंधमादन नामक पर्वत बड़े समुद्र में छिपा और वहीं रह गया। दर्शकों के कर्ममेटक उस गिरि को इधर पड़ा हुआ देखो। उसी से हमारा बाँधा सेतु पावन हुआ। श्रीराम ने वह कहा। ४०५५

कङ्गैयोटु–गंगा और; यमुनै–यमुना; कोताविरि–गोदावरी; नरुमनै–नर्मदा; कावेरि–कावेरी आदि; नीर् पॊङ्कुम्–जलसमृद्ध; नतिकळ्–नदियाँ; यावुम्–सभी में; पटिन्तलाल्–स्नान किये विना; पुऩ्मै–पाप (नीचता); पोका–नहीं छूटता; चङ्कु ऍऱि–शंख फेंकती; तरङ्कम्–तरंगाकुल; वेलै–समुद्र; तट्ट–रोककर; चेतु ऍऩ्ऱुम्–सेतु नामक; इङ्कु–यहाँ; इतिऩ्–इसके; ऍतिर्न्तोर्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो दर्शन करते उनका; पुनमै–मल; यावैयुम्–सारा; नीक्कुम्–दूर कर देगा। ४०५६

गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा और कावेरी आदि नदियाँ, उनमें स्नान करो तभी पाप हरती हैं। पर शंख उछालती तरंगों से पूर्ण इस समुद्र में बाँधे गये इस 'सेतु' के तीर्थ का जिन्होंने दर्शन किया उनका पाप (उनकी नीच भाव) दूर हो जाता है। ४०५६

मरक्कल मियङ्ग वेण्डि वरिशिलैक् कुदैयाऱ् कीऱित्
तरुक्किय विडत्तुप् पञ्ज पादह रेनुञ् जारिऱ्
पॅरुक्किय वेळु मूनऱु पिऱवियुम् बिणिह णीङ्गि
नॅरुक्किय वमरर्क् कॅल्ला नीणिदि याव रनऱे 4057

मरक्कलम्–नौकाएँ; इयङ्क वेण्टि–चलें यह चाहकर; वरिचिलै–सबन्ध धनु के; कुतैयाल्–छोर से; कीऱि–चीरकर; तरुक्किय–जहाँ मैंने गहरा बनाया; इटत्तु–उसको; पञ्च पातकर् एनुम्–पंचमहापातकी भी क्यों न हों; चारिल्–आकर स्नान करें; एळु मूनऱु पॅरुक्किय–तो इक्कीस; पिऱवियुम्–जन्मों के; पिणिकळ् नीङ्कि–रोग दूर होंगे और; नॅरुक्किय–भीड़ के; अमरर्क्कु ॲल्लाम्–सभी देवों के लिए भी; नीळ् निति–बड़ी संपत्ति; आवर्–बनेंगे। ४०५७

मैंने यहाँ नौकाओं के चलने की सुविधा के लिए अपने सबंध धनु के नोक से मार्ग बनाया था। वहाँ पंचमहापातकी भी आकर स्नान करें, तो उनका इक्कीस जन्मों का पाप-रोग दूर हो जायगा। और उन्हें देव भी अपनी संपत्ति (सम्मान्य विभूति) मानेंगे। ४०५७

नॅऱ्ऱियि नऴलुञ् जॅङ्ग णीऱणि कडवु णीडु
कऱ्ऱैयञ् जडैयित् मेवु कङ्गैयुञ् जेदु वाहप्
पॅऱ्ऱिल मॅन्ऱु कॊण्डु पॅरुन्दवम् बुरिहिन् ऱाळाल्
मऱ्ऱिदत् तूय्मै यॅव्वा ऱुरैप्पदु मलर्क्कण् वन्दाय् 4058

मलर् कण्–कमल से; वन्ताय्–उत्पन्न श्रीमती; नॅऱ्ऱियित्–भाल पर; अऴलुम्–जलती; चॅकण्–लाल आँखों से; नीऱु अणि–भभूत से भूषित; कटवुळ्–ईश्वर के; नीडु–लंबे; कऱ्ऱै अम् चटैयित्–कपर्द पर; मेवुम्–रहनेवाली; कङ्कैयुम्–गंगा भी; चेतुवाक–सेतु; पॅऱ्ऱिलम्–हम नहीं बन पायी; ॲन्ऱु कॊण्टु–ऐसा सोचकर; पॅरु तवम्–बड़ी तपस्या; पुरिकिन्ऱाळाल्–करती तो; इतन् तूय्मै–इसकी पवित्रता का; ॲव्वाऱु–कैसा; उरैप्पतु–वर्णन किया जाय। ४०५८

हे कमले! भाल में जलती आँख से और शरीर पर भभूत से विभूषित शिव के कपर्द पर रहनेवाली गंगा भी पछताती हैं कि हम सेतु नहीं बनीं। वे तदर्थ बड़ी तपस्या कर रही हैं! तो इसकी पवित्रता का कैसा वर्णन हो? । ४०५८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॆव्वडुऴ् ज़िलैक्क वीरऩ् शेदुविऩ् पॆरुमै यावुम्
वॆव्विडम् बॊरुदु नीण्डु मिळिर्दरुङ् गरुङ्गट् चॆव्वाय्
नॊव्विडै मयिल ऩाट्कु नुवऩ्ऱुळि वरुण ऩोऩा
दिव्विडै वऩ्दु कण्डाय् शरणॆऩ वियम्बिऱ् ऱॆऩ्ऱाऩ् 4059

तॆव् अटुम्–शत्रु-संहारक; चिलै कै–कोदण्डपाणी; वीरऩ्–वीर ने; चेतुविऩ्–सेतु की; पॆरुमै यावुम्–सभी महिमा; वॆव्विटम्–भयंकर विष से; पॊरुतु–लड़कर; नीण्टु–(कान तक) लम्बे; मिळिर् तरुम्–उज्ज्वल; करु कण्–नीले नेत्र; चॆव्वाय्–लाल अधर; नॊव् इटै–पतली कमर; मयिल् अऩाट्कु–कलापीनिभ देवी को; नुवऩ्ऱुळि–जब बतायी; इव् इटै–यह स्थल; वरुणऩ्–वरुण ने; नोऩातु–सह न सककर; वऩ्तु–आकर; चरण् अॆऩ–"शरण" चाहता हूँ; इयम्पिऱ्ऱु–ऐसा कहा; कण्टाय्–देखो (यह स्थान); ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ४०५९

परंतप कोदंडपाणी श्रीवीरराघव ने कठोर विष से लड़नेवाली और कानों तक लंबी रही नीली आँखें और लाल अधरों से युक्त सीताजी को सेतु की बड़ी महिमा बतायी। (तब वरुण-नमस्कार का स्थल आ गया तो) "देखो, यही स्थल है जहाँ वरुण आग्नेयास्त्र का प्रभाव न सहकर आकर बोला था कि 'मैं आपकी शरण में आया हूँ'। —श्रीराम ने कहा।" ४०५९

इदुतमिऴ् मुऩिवऩ् वैहु मियऱहु कुऩ्ऱ मुऩ्ऩाऩ्
अदुवळर् मणिमे लोङ्ग लप्पुऱत् तुयर्ऩ्दु तोऩ्ऱुम्
अदितिह ळऩन्द वॆऱ्पॆऩ् ऱरुडर वनुमऩ् ऱोऩ्ऱिऱ्
ऱॆदुवॆऩ वणङ्गै नोक्कि यिऱ्ऱॆऩ विरामऩ् शॊऩ्ऩाऩ् 4060

इरामऩ्–श्रीराम; इतु–यह; तमिऴ् मुऩिवऩ्–"तमिऴ" के महर्षि; वैकुम्–जहाँ रहते हैं; इयल् तकु–वह योग्य; कुऩ्ऱम्–पर्वत है; अतु–वह; मुऩ्ऩाऩ् वळर्–आदिदेव जहाँ रहते; मणि मेल्–रत्नगर्भ; ओङ्कल्–पर्वत (तिरु मालिरुञ् जोलै मलै); अति तिकळ्–बहुत छविमय; अऩन्त वॆऱ्पु–अनंत पर्वत (श्री वेंकटाद्रि); अ पुऱत्तु–उस ओर; उयर्ऩ्तु तोऩ्ऱुम्–ऊँचा दिखता है; ऎऩ्ऱु–ऐसा; अरुळ् तर–कहने पर; अनुमऩ्–हनुमान; तोऩ्ऱिऱ्ऱु–सामने आया; ऎतु–कहाँ; ऎऩ–ऐसा कहने पर; अणङ्कै नोक्कि–देवी को देखकर; इऱ्ऱु–यहाँ; ऎऩ–ऐसा; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा (श्रीराम ने)। ४०६०

श्रीराम ने आगे दिखाया। "यही तमिऴ (वैयाकरण) ऋषि अगस्त्य का वासस्थल गिरि है। आदिभगवान श्रीविष्णु का वह रत्नमय 'तिरुमालिरुञ् जोलै मलै' नाम का पर्वत है। उधर श्री वेंकट गिरि ऊँचा दिखती है।" उनके यह कहने पर देवी ने प्रश्न किया कि हनुमान आपसे मिला कहाँ? श्रीराम ने ऋष्यमूक पर्वत को दिखाकर कहा कि 'यहीं'। ४०६०

वालियॆऩ् ऱळवि लाऱ्ऱल् वऩ्मैयाऩ् महर नोऱ्शूळ्
वेलैयॆक् कडक्कप् पायुम् विऱलुडै यवऩै वीट्टि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नूलियऱ् ऱरुम नीदि नुऩित्तऱङ् गुणित्त मेलोर्
पोलियऱ् ऱबऩन् मैन्द ऩुऱैतरुम् बॉऱैयी दॅऩ्ऱान् 4061

अळविल् आऱ्ऱल्–अमित विक्रम; वऩ्मैयाऩ्–बलवान; मकरम्–मकर-भरे; नीर्चूळ्–जलपूर्ण; वेलैयै–समुद्र को; कटक्क–लाँघते; पायुम्–झपटने का; विऱल् उटै–बल जिसमें था; वालि ऍऩ्ऱ अवऩै–वाली नाम के उसे; वीट्टि–मारकर; नूल् इयल्–शास्त्रोक्त; तरुमन्–धर्म; नीति–नीति आदि; नुऩित्तु–गुनकर; अऱम् कुणित्त–धर्मरत; मेलोर्–उत्तम लोगों; पोल् इयल्–के समान स्वभाववाला; तपऩन् मैन्तऩ्–सूर्य का पुत्र; उऱै तरुम्–जहां रहता; पॉऱै ईतु–वह चट्टान यह है; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (श्रीराम ने)। ४०६१

श्रीराम ने उसका वर्णन यों किया। अपार बलशाली, मकरजलाशय समुद्र को लाँघ सकनेवाले साहसी वाली को मारनेवाला और शास्त्रोक्त नीतिधर्म आदि गुनकर धर्मावलम्बी रहनेवाले उत्तम लोगों के-से स्वभाववाला, सूर्य का पुत्र यहीं रहता है। यही उसके वास का पर्वत है। ४०६१

किट्किन्दै यिदुवे लैय केट्टिया लॅऩदु पॅण्मै
मट्कुन्दा ऩाय वॅळ्ळ महळिरिऩ् ऱाहि वाऩोर्
उट्कुम्बोर् शेऩै शूऴ् वॉरुत्तिये ययोत्ति यॅय्दिन्
कट्कॉन्दार् कुऴलि ऩारै येऱ्ऱुदल् कडऩ्मैत् तॅऩ्ऱाळ् 4062

ऐय–प्रभु; इतु–यह; किट्किन्तैयेल्–किष्किंधा हो तो; केट्टियाल्–सुनिए; ताऩ्–वे; वॅळ्ळम् आय–'वॅळ्ळमों' में; वाऩोर्–देवों को भी; उट्कुम्–भयभीत होने देकर; पोर्–योद्धाओं की; चेऩै चूऴ्–सेना के चारों ओर रहते; मकळिर्–स्त्रियाँ; इऩ्ऱाकि–नहीं हैं; ऑरुत्तिये–मैं अकेली; अयोत्ति–अयोध्या; ऍय्तिऩ्–जाऊँ तो; ऍऩतु–मेरा; पॅण्मै–स्त्री गौरव; मट्कुम्–कम हो जायगा; कळ्कॉऩ्तु आर्–मधु-सह गुच्छों को पहनी हुई; कुऴलिऩारै–केशिनियों को; एऱ्ऱल्–इसमें चढ़ा लेना; कडऩ्मैत्तु–करणीय है; ऍऩ्ऱाळ्–कहा (देवी ने)। ४०६२

तब सीता ने कहा। यही किष्किंधा हो तो सुनिए। पुरुष वॅळ्ळमों की संख्या में हैं और स्त्री मैं अकेली एक हूँ। अयोध्या में जब पहुँचूँ तब मेरे स्त्रीत्व की कमी मानी जायगी। मधुमिश्रित पुष्प-गुच्छों से अलंकृत केशवाली तन्वियों को ले जाना ही ठीक काम होगा। ४०६२

अम्मॉऴि यिरवि मैन्दऱ् कण्णऱा ऩुरैप्प वऩ्ऩाऩ्
मॅय्म्मैशे रनुमऩ् इऩ्ऩै नोक्किनी विरैविऩ् वीर
मैम्मलि कुऴलि ऩारै मरबिऩाऱ् कॉणर्दि यॅऩ्ऩाच्
चॅम्मैशे रुळ्ळत् तण्णल् कॉणर्ऩ्दऩऩ् शॅऩ्ऱु मऩ्ऩो 4063

अ मॉऴि–वह वचन; अण्णल्–प्रभु ने; इरवि मैन्तर्क्कु–सूर्यपुत्र से; उरैप्प–कहा तो; अऩ्ऩाऩ्–उसने; मॅय्म्मै चेर्–सत्यवादी; अनुमऩ् तऩ्ऩै–हनुमान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को; नोक्कि–देखकर; बीर–वीर; नी–तुम; विरैवित्–जल्दी; मै मलि–काली; कुऴलिऩारै–केशिनियों को; मरपिऩाल्–क्रम के अनुसार; कॊणर्ऩि–लाओ; ऍऩ्ऩा–कहा तो; चॆऩ्मै चेर्–सीधे-सादे; उळ्ळत्तु–मन का; अण्णल्–श्रेष्ठ हनुमान; चॆऩ्ऱु–जाकर; कॊणर्ऩ्ऩऩऩ्–लाया। ४०६३

श्रीराम ने सुग्रीव से उनकी राय कही। सुग्रीव ने सत्यसंध हनुमान से कहा— वीर ! जाओ। जल्दी काली केशिनियों को उचित रीति से बुला लाओ। सीधे-सादे मन वाला हनुमान गया और उन्हें बुला लाया। ४०६३

वरिशैयिऩ् वऴामै नोक्कि मारुदि मादर् वॆळ्ळम्
करैशॆय लरिय वण्णङ् गॊणर्ऩ्दऩऩ् कणत्तिऩ् मुऩ्ऩम्
विरैशॆऱि कुऴलि ऩार्तम् वेऩ्दऩै वणङ्गिप् पॆण्मैक्
करशियै यॆय ऩोडु मडियिणै तॊऴुदु निऩ्ऱार् 4064

मारुति–मारुति; करै चॆयल्–सीमा बनाना; अरिय वण्णम्–मुश्किल हो, इतना; मातर् वॆळ्ळम्–स्त्री-समूह; कणत्तिऩ् मुऩ्ऩम्–पल भर में; वरिचॆयिऩ्–आदर में; वऴामै–दोष न हो ऐसा; नोक्कि–ध्यान देकर; कॊणर्ऩ्ऩऩऩ्–लाया; विरैचॆऱि–सुगंधमय; कुऴलिऩार् तम्–केशोंवाली; वेऩ्दऩै वणङ्कि–राजा को नमस्कार करके; ऐयऩोट्टम्–प्रभु राजाराम और; पॆण्मैक्कु–स्त्रियों में; अरचियै–रानी के; इणै अटि–चरणद्वय; तॊऴुदु निऩ्ऱार्–नमस्कार करके रहीं। ४०६४

मारुति पल भर में असीम वानरियों को उचित गौरव के साथ ध्यान से ला चुका। सुगंधित केशिनियाँ वे पहले अपने राजा को नमस्कार करके फिर प्रभु और स्त्रीत्व की श्रृंगार सीताजी को नमस्कार करके खड़ी हुईं। ४०६४

मङ्गल मुदला वुळ्ळ मरबिऩिऱ् कॊणर्ऩ्द यावुम्
अङ्गवर् वैत्तुप् पॆण्मैक् करशियैत् तॊऴुदु शूऴ
नङ्गैयु मुवन्दु वेऱोर् नवॆयिलै यिऩिमऱ् ऱॆऩ्ऱाळ्
पॊङ्गिय विमाऩऩ् दाऩु मऩमॆऩ वॆऴुन्दु पोऩ 4065

अङ्कु अवर्–तब वे; मरपिऩिल्–जिस रीति से; कॊणर्ऩ्त–लायी गयीं; मङ्कलम्–अष्टमंगल द्रव्य; मुतला उळ्ळ–आदि जो थे; यावुम्–उन सबको; वैत्तु–रखकर; पॆण्मैक्कु–स्त्री-गुणों की; अरचियै–रानी को; तॊऴुदु–नमस्कार करके; चूऴ–घेरकर खड़ी रहीं; नङ्कैयुम्–देवी ने भी; उवन्दु–खुश होकर; इऩि–अब; वेऱ ओर्–और कोई; नवॆ इलै–त्रुटि नहीं है; ऍऩ्ऱाळ्–कहा; पॊङ्किय–उज्ज्वल; विमाऩम्–विमान; ताऩुम्–स्वयं; मऩम् ऍऩ–मन की गति में; ऍऴुन्दु पोऩ–उठ चला। ४०६५

वे नियमानुसार जो अष्टमंगल द्रव्य (चामर, दीप, पूर्णकुंभ, आईना आदि) लायी थीं उन्हें यथोचित रीति से अर्पित करके स्त्रीरत्न सीताजी के चारों ओर खड़ी हो गयीं। तब सीतादेवी ने कहा कि अब कोई त्रुटि नहीं ! ज्वलंत विमान उठा और मनोगति में चलने लगा। ४०६५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोदा विशुम्बिऱ् ऱिहळ्पुट्पहम् बोद लोडुम्
शूदार् मुलैत्तोहैयै नोक्किमुन् ऱोन्ऱु शूळल्
कोदा विरिमऱ् ऱदन्माडुयर् कुन्ऱु निन्ऱेप्
पेदाय् पिरिवुत् तुयर्पीळै पिणित्त ऍन्ऱान् 4066

पोता–उठकर; विचुम्पिल् तिकळ्–आकाश में दिखनेवाला; पुट्पकम्–पुष्पक; पोतलोटुम्–जब जाता रहा तब; चूतु आर् मुलै–गोटे के समान स्तनों वाली; तोकैयै नोक्कि–कलापीनिभ सीता को देख; पेताय्–अबोध; मुन् तोन्ऱु–सामने दिखनेवाला; चूळल्–स्थान; कोताविरि–गोदावरी है; अतन् माटु उयर्–उसके पास उन्नत; कुन्ऱु निन्ऱे–पर्वत ने ही तुम्हें; पिरिवु तुयर्–विरह-दुःख की; पीळै–पीड़ा; पिणित्ततु–में डाल दिया; ऍन्ऱान्–कहा। ४०६६

जब पुष्पक आकाश में जा रहा था तब (जुए के) गोटों के समान स्तनों वाली सीता को देखकर श्रीराम ने बताया कि अबोध प्यारी ! सामने जो दिखता है वह गोदावरी तट है ! उसके पास ऊँचा जो पर्वत है उसी ने तुम्हें वियोग-दुःख में डाला। ४०६६

शिरत्तु वाशवण् डलम्बिडु तॅरिवैके ळिदुनीळ्
तरत्तु वाशवर् वेळ्वियर् तण्डह मदुतान्
वरत्तु वाशवन् बणङ्गुऱु शित्तिर कूडम्
बरत्तु वाशव नुऱैविड मिदुवॅन्ऱप् पहर्न्दान् 4067

चिरत्तु वाचम्–केश की सुगंधि के कारण; बण्टु–भ्रमर (जिसके केश पर); अलम्पिटु–गुंजार करते रहें; तॅरिवै–ऐसी रमणी; केळ्–सुनो; इतु–यह; नीळ् तरत्तु–बहुत योग्य; वाचवर्–उपासक और; वेळ्वियर्–याजी (ऋषियों का); तण्टकम्–दंडक वन है; अतु–वह; वरत्तु–महिमावान; वाचवन्–वासव द्वारा; वणङ्कुऱु–पूजित; चित्तिर कूटम्–चित्रकूट है; इतु–यह; परत्तुवाचवन्–भरद्वाज का; उऱैविटम्–वासस्थान है; ऍन्ऱ पकर्न्तान्–ऐसा कहा। ४०६७

श्रीराम ने आगे कहा— सिर की गंध के कारण भ्रमर जिस पर गुंजार करते हैं ऐसे केशवाली हे रमणी ! सुनो। यही दंडकवन है जहाँ सुयोग्य उपासक और याजी वास करते हैं। वही चित्रकूट है जो वासववंद्य है ! यह भरद्वाजाश्रम है। ४०६७

मिन्ऱै नोक्कियव् वीरऱी दियम्बिडुम् वेलै
तन्ऱै नेरिला मुनिवर नुणर्न्दुतन् ऱहत्तिन्
ऍन्ऱै याळुडै नायह नॅय्दिन ऱॅन्ऱान्
तुन्ऱु मादवर् शूळ्तर वॅदिर्कॊळ्वान् ऱॊडर्न्दान् 4068

मिन्ऱै–विद्युत् (-सी देवी) को; नोक्कि–देखकर; अ वीरऱ्–उन वीर के; ईतु–यह; इयम्पिटुम् वेलै–बताते समय; तन्ऱै नेर् इला–अनुपम; मुनिवरऱ्–मुनिवर का; उणर्न्तु–जानकर; तन् अकऱ्ऱित्–मेरे स्थान में; ऍन्ऱै–मेरे;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आळ् उटै–स्वामी; नायकन्–प्रभु; ऍय्तितन्–आये; ऍन्ना–कहकर; ऍतिर् कोळ्वान्–अगुवानी के लिए; तुन्नुम्–निकट के; मातवर्–महान तपस्वियों के; चूळ्तर–घेरे आते; तॊटर्न्तान्–गये । ४०६८

जब श्रीराम विद्युच्छवि सीता से यह बता रहे थे, तब उधर अनुपम मुनिवर भरद्वाज यह जानकर कि मेरे स्वामी प्रभु श्रीराम आ गये, उनकी अगुवानी के लिए निकट के तपोधनों के साथ आये । ४०६८

आद पत्तिरङ् गुण्डिहै यॊरुकैयि नणैत्तुप्
पोद मुऱ्ऱिय तण्डॊरु कैयिऩिऱ् पॊलिय
माद वप्पय नुरुवुकॊण् डॆदिर्वरु मापोल्
नीदि वित्तह नडन्दमै नोक्किऩ नॆडियोऩ् 4069

आत पत्तिरम्–आतपत्र (छाता); कुण्टिकै–कमण्डल; ऒरु कैयिऩ्–एक हाथ में; अणैत्तु–लेकर; तण्टु–दण्ड; ऒरु कैयिऩिल्–एक हाथ में; पॊलिय–रहा, ऐसा; पोतम् मुऱ्ऱिय–आत्मज्ञानपक्व; नीति–नीतिमान; वित्तकन्–विद्वान्; मा तवम्–महान तपस्या का; पयन्–फल; उरुवु कॊण्टु–मूर्तिमान होकर; ऍतिर् वरुमा पोल्–सामना आता जैसे; नटन्तमै–आना; नॆटियोऩ्–त्रिविक्रम् देव ने; नोक्कितन्–देखा । ४०६९

एक हाथ में छत्र और कमंडल और दूसरे हाथ में ब्रह्मदण्ड के साथ शोभायमान, आत्मबोधपक्व, नीतिमान तथा विद्वान् मुनि को मूर्तिमान तपस्या के फल के समान अपने सामने आता हुआ श्रीराम ने देखा । ४०६९

ऍट्प हत्तितै यळवैयुङ् गरुणैयो डिशैन्द
नट्प हत्तिला वरक्करै नरुक्किमा मेरु
विट्प हत्तुऱै कोळरि यॆऩप्पॊलि वीरन्
पुट्प हत्तिऩै वदिहॆऩ निऩैन्दनऩ् पुविय़िल् 4070

करुणैयोटु–दया के साथ; इचैन्त–मिश्रित; नट्पु–मित्रता; तित्तै अळवैयुम्–बहुत कम भी; अकत्तु–मन में; इला–(जिनका) न रहा; अरक्करै–उन राक्षसों को; नरुक्कि–दबोकर; ऍण् पक–छिन्नमन कर; मा मेरु–बड़े मेरु की; विट्पु अकत्तु–दरार में; उऱ–रहनेवाले; कोळरि–केसरी; ऍऩ–के समान; पॊलि–शोभित; वीरऩ्–वीर ने; पुट्पकत्तिऩै–पुष्पक को; पुविय़िल्–भूमि पर; वतिळ–रोकूं; ऍऩ–ऐसा; निऩैन्ततऩ्–सोचा । ४०७०

दया, मित्रता आदि जिनके मन में थोड़ी मात्रा में भी नहीं थी, उन राक्षसों के हंता श्रीराम ने, जो कि महान मेरु की दरार के वासी, केसरी के समान शोभते थे, मन में यह भाव किया कि पुष्पक भूमि पर उतरे । ४०७०

उऩ्ऩु मात्तिरत् तुलहिऩै यॆडुत्तुम्ब रोङ्गुम्
पॊऩ्ऩि ऩाडवन् दिळिन्दॆऩप पुट्पहन् दाळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्नै याळुडै नायहन् वल्लैयि ऩॅदिर्पोय्प्
पन्नु मामऱैत् तबोदऩन् ऱाण्मिशैप् पणिन्दान् 4071

उन्नु मातुतिरत्तु–मन में विचार लाते ही; पुट्पकम्–पुष्पक; उलकिऩै–संसार को; ऍटुत्तु–ढोकर; उम्पर्–आकाश में; ओङ्कुम्–ऊपर चलनेवाली; पॊन्नितु नाटु–अमरावती; वन्तु इऴिन्तॆऩ–आ उतरी जैसे; ताऴ–नीचे आयी तो; ऍन्नै–मेरे; आळुटै नायकन्–प्रभु श्रीनाथ; वल्लैयिन्–तुरन्त; ऍतिर् पोय्–सामने जाकर; पन्नुम्–पारायणगत; मामऱै तपोतऩन्–चतुर्वेदों के तपस्वी के; ताळ् मिचै–चरणों में; पणिन्तान्–विनत हुए। ४०७१

ज्योंही वे अपने मन में यह भाव लाये त्योंही संसार के लोगों को धारण करते हुए आकाश में चलनेवाली अमरावती नगरी नीचे उतर आयी हो, ऐसा वह पुष्पक नीचे आया। तब हमारे (कवि के और भक्त हमारे) नियंता स्वामी श्रीराम ने सत्वर जाकर सतत वेद के पाठ में लगे रहनेवाले तपोधन भरद्वाज के चरणों में गिरकर नमस्कार किया। ४०७१

अडियिन् वीऴदलु मॆंडत्तुनल् लाशियो डणैत्तु
मुडियै मोयिऩ निन्ऱुऴि मुळरियङ् गण्णत्
शडिल नीडुह ळॊऴितरत् तऩदुकण् णरुवि
ऩॆडिय काइलङ् गलशम दाट्टिऩ ऩॆडियोन् 4072

अटियिन् वीऴ्तलुम्–चरणों पर गिरते ही; ऩॆटियोन्–महात्मा ने; ऍटुत्तु–उठाकर; नल् आचियोटु–मंगल वचनों के साथ; अणैत्तु–गले लगाकर; मुटियै–सिर को; मोयिऩन्–सूंघा; निन्ऱुऴि–और खड़े रहे तब; मुळरि–पद्म-सम; अम् कण्णत्–सुन्दर आँखों वाले की; चटिलम्–जटाजट पर की; नीऴ् तुकळ्–घनी धूलि; ऒऴि तर–दूर हो ऐसा; ऩॆटिय कातल्–गहरे स्नेह के; तऩतु–अपने; कण् अरुवि–आँखों के आँसू के; कलचमतु–कलश से; आट्टिऩत्–नहलाया। ४०७२

ज्योंही श्रीराम गिरे त्योंही महान तपस्वी ने उन्हें उठाया और आशीर्वचन कहते हुए आलिंगन करके सिर को सूंघा (जो वात्सल्य-प्रदर्शन का एक उपाय है)। फिर अरुणपद्माक्ष श्रीराम की जटा की धूल को हटाते हुए अपने गहरे स्नेह से उमड़ते आये अश्रुजल के कलश से नहला दिया। ४०७२

करुहुम् वार्हुळर् चऩहियो डिळवल्कै ऩॊऴुदे
अरुहु शार्दर वरुन्दव ऩाशिहळ् वऴङ्गि
उरुहु कादलि ऩॊऴुहुकण् णीरिऩ नुवहै
परुहु मारमिऴ् वीत्तुळङ् गळित्तऩन् परिवाल् 4073

करुकुम्–काले; वार् कुळल्–लम्बे केशवाली; चऩकियोटु–जानकी के साथ; इळवल्–कनिष्ठ लक्ष्मण के; कै ऩॊऴुतु–हाथ जोड़कर; अवकु चार् तर–पास आने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पर; अरु तवत्–श्रेष्ठ तपस्वी; आचिकळ्–आशीर्वाद; वऴङ्कि–देकर; उरुकु कातलित्–पिघलते प्रेम से; ऒऴुकु–बहनेवाले; कण्णीरितत्–आँसू की आँखोंवाले; उवकै परुकुम्–चाव के साथ पेय; अरुमै–अपूर्व; अमिऴ्तु ऒत्तु–अमृत के समान; परिवाल्–स्नेह से; उळम्–मन में; कळित्ततत्–संतोषपूरित हुए। ४०७३

काले तथा लंबे केश वाली जानकी और कनिष्ठ लक्ष्मण उनके पास हाथ जोड़ते हुए गये। तो भरद्वाज ने आशीर्वाद दिये। उनका दिल श्रीराम आदि को देखते-देखते स्नेह से पिघल जाता था। आनंदाश्रु बहाते हुए वे मानो चाव के साथ पेय अमृत के पान-से स्नेह के कारण आनंदभाव-विभोर हो गये। ४०७३

वान रेशनुम् वीडणक् कुरिशिलु मऱ्ऱै
एन्नै वीररुन् दॊऴुन्दॊऱु माशिह ळियम्बि
आन नादनैत् तिरुवॊडु नन्मनै कॊणर्न्दान्
आन मादवर् कुऴात्तॊडु मरुमऱै पुहन्ऱे 4074

वानरेचनुम्–वानरेश्वर और; वीटणन्–विभीषण; कुरिचिलुम्–राजा; मऱ्ऱै–और; एन्नै वीररुम्–अन्य वीर; तॊऴुन्तोऱुम्–ज्यों-ज्यों झुकते; आचिकळ्–त्यों-त्यों आशीर्वाद; इयम्पि–देकर; आन मातवर्–अपने महान तपस्वी; कुऴात्तॊटुम्–दलों के साथ; अरु मऱै–श्रेष्ठ वेदों का; पुकन्ऱे–पारायण करते हुए; आन नातनै–ज्ञाननाथ को; तिरुवॊटु–श्री के साथ; नन्मनै–अपने श्रेष्ठ आश्रम में; कॊणर्न्तान्–लाये। ४०७४

वानरेश, राजा विभीषण और अन्य वीरों ने भरद्वाज को नमस्कार किया। वे उन्हें आशीर्वाद देकर अपनी मंडली के साथ वेदपाठ करते हुए ज्ञानगम्य श्रीराम को श्री के साथ अपने सुंदर आश्रम में लिवा लाये। ४०७४

पन्न शालैयुट् पुहुन्दुनी डरुच्चनै पलवुम्
शॊन्न नीदियिऱ् पुरिन्दपिन् शूरियन् मरुमान्
तन्नै नोक्कितन् पन्मुऱै कण्गणीर् तदुम्बप्
पिन्नॊर् वाशह मुरैत्ततन् तबोदरिऱ् पॆरियोन् 4075

तपोतरिल् पॆरियोन्–तपोधनों में श्रेष्ठ; पन्नचालैयुट् पुकुन्तु–पर्णशाला में प्रवेश करके; नीटु अरुच्चनै–श्रेष्ठ सत्कार; पलवुम्–अनेक तरह के; चॊन्न नीतियिल्–यथोक्त रीति से; पुरिन्त पिन्–करने के बाद; चूरियन् मरुमान् तन्नै–सूर्यवंशी राम को; कण्कळ्–आँखों में; नीर् ततुम्प–जल छलकाते हुए; पन्मुऱै–अनेक बार; नोक्कितन्–देखा; पिन्–बाद; ऒरु वाचकम्–एक वचन; उरैत्ततन्–कहा। ४०७५

तपोधनशिरोमणि ने पर्णशाला में आकर उचित सत्कार विविध प्रकार के और अच्छे, यथावत् रीति से किये। फिर सूर्यवंशी श्रीराम पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनके मुकुट को धुलाता हुआ अभिषेक-जल नीचे गिरेगा और उसका अंजाम भरत देख लेंगे। अब तो वे अपने आँसुओं का अंत नहीं देख पाये। ४०९५

अऩैय ऩाय बरद ऩलङ्गलिऱ्, पुऩैयुन् दम्मुऩार् पादुहैप् पूशऩै
निऩैयुङ् गालै निऩैत्तऩ ऩामरो, मऩैयिन् वन्दव ऩैय्द मदित्त नाळ् 4096

अऩैयऩ् आय परतऩ्–ऐसे भरत ने; अलङ्कलिल्–पुष्पमाला से; पुऩैयुम्–अलंकृत; तम्मुऩार्–अपने बड़े भाई की; पादुकै पूचऩै–पादुका की पूजा का; निऩैयुम् कालै–जब स्मरण किया तब; अवऩ्–उनके; मऩैयिऩ्–गृह में; वन्तु ऍय्त–आ जाने के लिए; मतित्त नाळ्–निश्चित दिन का; निऩैत्तऩऩ्–स्मरण किया। ४०९६

(एक दिन) ऐसे भरत ने पुष्पमाला से अलंकृत, अपने ज्येष्ठ भ्राता की पादुकाओं की पूजा करने का स्मरण किया तो उन्हें विचार आया कि यही दिन है जब श्रीराम ने लौट आने को निश्चित किया था। ४०९६

याण्डु वन्दिङ् गिऱुक्कुमॆऩ् ऱॆण्णिऩाऩ्, माण्ड शोदिड वाय्मैप् पुलवरै
ईण्डुक् कूय्त्तरु हॆऩ्ऩवन् दॆय्दिऩार्, आण्ड हैक्किऩ् ऱुदियॆऩ् ऱाररो 4097

याण्टु—कब; इङ्कु वन्तु–यहाँ पधारकर; इऱक्कुम्—रहेंगे; ऍऩ्ऱु—ऐसा; ऍण्णिऩाऩ्–सोचा; माण्ट—गौरवयुक्त; चोतिटम्—ज्योतिष में; वाय्मै–तथा भाषण में; पुलवरै–निपुणों को; ईण्टु–यहाँ; कूय् तरुक–बुला लाओ; ऍऩ्ऩ–ऐसा कहने पर; वन्तु–आ; ऍय्तिऩार्–पहुँचे; आण्टकैक्कु–पुरुषश्रेष्ठ के (आने के) लिए; इऩ्ऱु–आज; अऱुति–अंतिम दिन है; ऍऩ्ऱार्–कहा। ४०९७

उसे प्रश्न उठा कि कब आ रहे हैं इधर ? उन्होंने भृत्यों से कहा, गौरवयुक्त तथा सत्यवादी हमारे ज्योतिषियों को बुला लाओ। ज्योतिषी आये और बोले कि पुरुषोत्तम के वनवास का अंतिम दिन और इधर आ पहुँचने का दिन आज ही है। ४०९७

ऍऩ्ऱ पोदत् तिरामऩ् वऩत्तिडैच्, चॆऩ्ऱ पोदत्त दव्वुरै शॆल्वत्तै
वॆऩ्ऱ पोदत्त वीरऩुम् वीळ्ऩ्दऩऩ्, कॊऩ्ऱ पोदत् तुयिर्प्पुक् कुऱैन्दुळाऩ् 4098

ऍऩ्ऱ पोतत्तु–ऐसा कहने पर; चॆल्वत्तै–धन (की इच्छा) को; वॆऩ्ऱ पोतत्त–जीतनेवाले ज्ञानी; वीरऩुम्–वीर; इरामऩ्–श्रीराम के; वऩततिडै–वन में; चॆऩ्ऱ–जाने के; पोतत्तु–समय; अव्वुरै–(कहे) वे वचन; कॊऩ्ऱ पोतत्तु–जब मारने (सताने) लगे; उयिर्प्पु–साँसें; कुऱैन्तुळाऩ्–कम हुई; वीळ्ऩ्ततऩ्–गिर गये। ४०९८

जब उन्होंने वह कहा तो धन के आकर्षण को जो जीत चुके थे उनके मन में भी वनगमन के अवसर पर श्रीराम से उक्त वचन स्मरण हो आये। तो उनकी साँसें क्षीण होने लगीं और वे मूर्च्छित होकर गिर गये। ४०९८

मीट्टॆ ऴुन्दु विरिन्दशॆऩ् दामरैक्, काट्टै वॆऩ्ऱैऴु कण्कलु ऴिप्पुऩल्
ओट्ट वळळ मुयिरिऩ यूशऩित्, ऱाट्ट वुम्मव लत्तऴिऩ् दाऩरो 4099

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मीट्टु ऎऴुन्तु–फिर उठकर; विरिन्त–विशाल; चॆं तामरै काट्टै–अरुण-कमल-वन को; वॆन्ऱु–जीत; ऎऴुकण्–जो उठी उन आँखों के; कलुऴि–क्षुब्ध; पुनल्–जल को; ओट्ट–बहाते; उळ्ळम्–मन के; निन्ऱु–रहकर; उयिरिनै–प्राणों को; ऊचल् आट्ट–हिलाते; अवलत्तु–व्यग्रता से; अऴिन्तान्–निर्बल हुए। ४०९९

कुछ देर बाद वे होश में आकर उठे। विशाल अरुण-कमल को जीतकर मनोहारिता में बढ़ी आँखों में दुःखविलोडित आँसू की धारा बह निकली। मन हर तरफ़ से प्राणों को दोलायमान करने लगा। अपार दुःख में मग्न होकर मिटे-से रहे। ४०९९

ऎनक्कि यम्बिय नाळुमॆन् निन्नलुम्
तनैप्प यन्दवळ् नेयमुन् दाङ्गियव्
वनत्तु वैहल्शॆय् यात्वन् दडुत्तदोर्
विनैक्कॊ डुम्बहै युण्डॆन विम्मिनान् 4100

ऎनक्कु–मेरे पास; इयम्पिय–जो कहा; नाळुम्–वह दिन; ऎन्–मेरा; इन्नलुम्–दुःख; तनै–उनकी; पयन्तवन्–जननी का; नेयमुम्–स्नेह; ताङ्कि–सहकर; अव्वनत्तु–उस वन में; वैकल्–ठहरना; चॆय्यान्–न करेंगे; वन्तु अटुत्ततु–जो आया हो; ओर्–वह एक; कॊटु–भयंकर; विनै पक्कै–कर्म का शत्रु; उण्टु–होगा; ऎन–ऐसा; विम्मिनान्–रोये। ४१००

(भरत ने विचार किया—) श्रीराम, मेरे पास कहा वचन, मेरा दुःख, उनकी जननी, उन पर वात्सल्य आदि भूलकर तथा उनसे जनित दुःख सहते हुए वन में ठहरनेवाले नहीं हैं। अवश्य कोई निरोधक घटना शत्रु के रूप में घटी है। यह सोचकर वे बहुत व्यग्र हुए। ४१००

मूव हैत्तिरु मूर्त्तिय रायिनुम्, पूव हत्तिल् विशुम्बिऱ् पुऱत्तिनिल्
एवर् किऱ्प रॆदिर्निऱ्क वॆन्नुडैच्, चेव हऱ्कॆन वैयमुन् देऱिनान् 4101

ऎन्नुटै–मेरे; चेवकऱ्कु–बड़े वीर का; ऎतिर् निऱ्क–सामना करने; मू वक्कै–तीन; तिरु मूर्त्तियर्–श्रेष्ठ मूर्ति भी; आयिनुम्–क्यों न हों; पू अकत्तिल–भूतल में; विचुम्पिल्–आकाश में; पुऱत्तिनिल्–अन्य (पाताल) में; एवर् निऱ्पर्–कौन शक्त हैं; ऎन–सोचकर; ऐयमुम्–शंका से; तेऱिनान्–मुक्त हुआ। ४१०१

"मेरे प्रभु वीर को सामना करने में, त्रिमूर्ति क्या, भूमि पर, आकाश में या पाताल में कौन समर्थ होगा?" यह विश्वास मन में आया तब वे संदेहमुक्त हुए। ४१०१

ऎन्नै यिन्नु मरशिय लिच्चैयान्, अन्न ताहि नवनदु कॊळ्हवॆन्
ऱन्नि नान्कॊ लुऱुवदु नोक्किनान्, इन्न वेनल नॆन्ऱिरुन् दानरो 4102

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्नै–मेरे सबन्ध में; अन्नन्–वह (भरत); इन्नुम्–और भी; अरचियल्–शासन की; इच्चैयान्–इच्छा रखनेवाला है; आकिल्–तो; अवन्–वह; अतु कॊळ्क–वही ले; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्निनान् कॊल्–सोच लिया क्या; ऍन्ऱु–ऐसा; उऱवतु–जो करना; नोक्कितान्–सोचा; इन्नते–यही; नलन्–भला है; ऍन्ऱु इरुन्तान्–ऐसा निर्णय कर लिया। ४१०२

(उन्हें और एक संदेह हो गया—) मेरे संबंध में शायद श्रीराम ने यह सोच लिया कि भरत राजभोगेच्छा रखता है। तो वही राज्य ले ले! तो उन्होंने विचारा कि अब क्या करना है ? फिर यह दृढ़ संकल्प कर लिया कि हाँ वही भला है। ४१०२

अनैत्ति लङ्गॊन्ऱु मायिनु माहुक, वनत्ति रुक्कविव् वैयम् बुहुदुह
निनैत्ति रुन्दु तुयर मुळक्किलेन्, मनत्तु माशॆन् नुयिरॊडुम् वाङ्गुवेन् 4103

वनत्तु इरुक्क–वन में ही रहें; इव् वैयम्–इस देश में; पुकुतुक–आयँ; अनैत्तिल्–उनमें; अङ्कु–वहाँ; ऒन्ऱुम्–कुछ भी; आयिनुम्–हो तो; आकुक–हो; निनैत्तिरुन्तु–सोचते-सोचते; तुयरम्–कष्ट में; उळक्किलेन्–पिसूंगा नहीं; ऍन् उयिरॊडुम्–अपनी जान के साथ; मनत्तु माचु–मन का कलंक; वाङ्कुवेन्–दूर करूँगा। ४१०३

वे जंगल में ही रहें; चाहे देश में आ जायँ। उन (बातों) में वहाँ कुछ भी हो जाय! सोचते-सोचते दुःख में घुलना नहीं चाहता। अपने प्राणों के साथ अपने मन का कलंक भी निकाल लूँगा। ४१०३

ऍन्नप् पन्नि यिळवलै यॆन्नुळैत्, तुन्नच् चॊल्लुदि रॆन्ऱलुन् दूदर्पोय्
उन्नैक् कूयिन नुम्मु नॆन्नामुनम्, मुन्नर्च् चॆन्ऱनन् मूवर्क्कुम् पिन्नुळान् 4104

ऍन्नप–ऐसा; पन्नि–विविध प्रकार से कहकर; ऍन् उळै–मेरे पास; इळवलै–मेरे कनिष्ठ को; तुन्नच चॊल्लुतिर्–निकट आने को कहो; ऍन्ऱलुम्–कहते ही; तूतर्–दूत; पोय्–गये; उम्मुन्–आपके ज्येष्ठ ने; उन्नै–आपको; कूयिनन्–बुलाया; ऍन्ना–कहने के; मुनम्–पहले; मूवर्क्कुम्–तीनों के; पिन् उळान्–अनुज; मुन्नर्–आगे; चॆन्ऱनन्–गये। ४१०४

इस भाँति विविध प्रकार से बातें कहकर उन्होंने भृत्यों से कहा कि जाओ मेरे छोटे भाई से इधर मेरे समीप आने को कहो। दूतों ने शत्रुघ्न से जाकर कहा कि आपके ज्येष्ठ भ्राता ने आपको बुलाया है। कहते ही तीनों के छोटे भाई भरत के समक्ष गये। ४१०४

तॊळुदु निन्ऱनन् तम्बियैत् तोय्कणीर्, ऍळुदु मार्बत् तिरुहत् तळुविनान्
अळुदु वेण्डुव दुण्डॆय वव्बरम्, बळुदि लामैयि नाऱ्ऱरर् पाऱ्ऱॆन्ऱान् 4105

तॊळुतु निन्ऱ–नमस्कार करके जो खड़ा था; तन्–उस अपने; तम्पियै–लघुभ्राता को; तोय् कण्–नीर-झरते अश्रुजल; ऍळुदु–जिसमें गिरता था;

CC-0. In Public Domain. U.P. State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मार्प्तुतु–उस वक्ष से; इऱुक–कसकर; तऴुवितान्–लगा लेकर; अऴुतु–रोये; ऐय–तात; बेण्टुवतु उण्टु–माँग एक है; अव् वरम्–वह वर; पऴुतिलामैयित्–व्यर्थ न करके; तरल् पाऱ्ऱु–देने योग्य है; ऍन्ऱान्–कहा। ४१०५

आकर जो नमस्कार करके खड़े रहे उन छोटे भाई को भरत ने अपने वक्ष से कसकर लगा लिया, जिस पर कि आँखों का जल गिरता रहा। कहा कि तात ! एक वर माँगूँगा। वह अक्षय रूप से दिला देने योग्य है। ४१०५

ऍन्न दाहुङ्गो लव्वर मॅन्ऱियेल्, शॊन्न नाळि लिरागवन् तोन्ऱिलन्
मिन्नु तीयिडै यानिनि वीडुवॅन्, मन्न नादियॅन् शॊल्लै मऱादॅन्ऱान् 4106

अ वरम्–वह वर; ऍन्नतु–क्या; आकुम् कॊल्–होगा; ऍन्ऱियेल्–ऐसा पूछो तो; चॊन्न–निर्णीत; नाळिल्–दिन में; इराकवन्–श्रीराघव; तोन्ऱिलन्–आये नहीं; इनि–अब; मिन्नु–चमक, जलती; तीइटै–आग में; यान्–मैं; वीटुवॅन्–मरूँगा; ऍन् चॊल्लै–मेरे वचन को; मऱातु–अस्वीकार न कर; मन्नन् आनि–राजा बन जाओ; ऍन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१०६

क्या, पूछते हो कि वह वर क्या है ? कहूँगा। श्रीराम ने जो दिन निश्चित बताया था उस दिन में नहीं आये। मैं अपने वचन के अनुसार ज्वलंत आग में कूदकर प्राण त्यागूँगा। मेरी बात की अवज्ञा मत करो। तुम राजा बन जाओ। ४१०६

केट्ट तोन्ऱल् किळर्तडक् कैहळाल्, तोट्ट तन्शॆवि पॊत्तित् तुणुक्कुऱा
ऊट्टु नञ्जमुण् डाऩॊत् तुयङ्गिऩान्, नाट्टमुम् मनमुन् नडुङ्गा निन्ऱान् 4107

केट्ट–श्रोता; तोन्ऱल्–राजकुमार; किळर् तट–शोभित विशाल; कैकळाल्–हाथों से; तोट्ट–छेद-सहित; तन्–अपने; चॆवि–कान को; पॊत्ति–ढँककर; तुणुक्कुऱा–ठिठककर; ऊट्टुम्–खिलाया गया; नञ्चम्–विष; उण्टान् ऒत्तु–निगल गया जैसे; उयङ्किऩान्–दुःखी हुआ; नाट्टमुम्–आँखें और; मनमुम्–मन; नडुङ्का निन्ऱान्–काँप जायें ऐसा हो गये। ४१०७

यह सुनते ही राजकुमार ने अपने विशाल हाथों से कर्णरंध्रों को ढँक लिया। वे एक दम ठिठक गये। खिलाया गया विष पी चुके जैसे क्षुब्ध हुए। उनकी आँखें और मन काँप गया। ४१०७

विऴुन्दु मेक्कुयर् विम्मलन् वॆय्दुयिर्त्
तॆऴुन्दु नानुनक् कॆन्न पिऴैत्तुळॆन्
अऴुन्दु तुन्बत्ति नायॆन् ऱर्ऱिनान्
कॊऴुन्दु विट्टु निमिर्हिन्ऱ कोबत्तान् 4108

विऴुन्तु–गिरकर; मेक्कुयर्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाली; विम्मलन्–सिसकियों के; वॆय्तु–गरम; उयिरत्तु–साँस छोड़ते; ऎऴुनतु–उठकर; कॊऴुनतु विट्टु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj, Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ज्वाला-सहित; निमिर्किन्ऱ-जलनेवाले; कोपत्तान्-क्रोध के होकर; अल्लुनतु-जिसमें मग्न हों ऐसे दुःख से; तुन्पत्तिताय्-दुःखी; नान् उनक्कु-मैंने आपका; ऍन्न-क्या; पिऴैत्तुळेन्-अपराध किया था; ऍन्ऱु-ऐसा; अरऱ्ऱिनान्-विलाप किया। ४१०८

वे गिर गये। सिसकियाँ अधिक होती गयीं। गरम साँसें छोड़ते हुए वे उठे। भभकनेवाली कोपाग्नि के साथ उन्होंने भरत से कहा कि हे दुःखमग्न भाई! मैंने तुम्हारा क्या अपराध किया था (कि तुमने मुझसे यह बात कही)?। ४१०८

❀ कानाळ निलमहळैक् कैविट्टुप् पोनानैक् कात्तुप् पिन्बु
पोनानु मॊरुतम्बि पोनवर्हळ् वरुमवदि पोयिऱ् ऱॆन्ना
आनाद वुयिर्विडवॆन् ऱमैवानु मॊरुतम् ब यये नाणा
यानामिव् वरशाळ्वॆ नॆन्नेयिव् वरशाट्चि यितिदे यम्मा 4109

निलमकळै-भूदेवी को; कै विट्टु-त्यागकर; कान् आळ-वनराज को; पोनानै-जो गये; कात्तु-उनकी रक्षा के लिए; पिन्पु-अनुगमन कर; पोनानुम्-जो गया; ऒरु-वह एक; तम्पि-छोटा भाई है; पोनवर्कळ्-जो गये; वरुम् अवति-उनके आने की अवधि; पोयिऱ्ऱु-बीत गयी; ऍन्ना-कहकर; आनात-अशांत; उयिर्विट-प्राण त्यागूं; ऍन्ऱु-ऐसा; अमैवानुम्-जो तैयार हुए; ऒरु तम्पि-वे भी एक लघु सहोदर हैं; अयले यान्-अन्य मैं; नाणातु-बेशरम; इव् अरचु-यह राज्य; आळ्वॆन् आम्-शासन लूंगा, हाँ; ऍन्ने-क्या ही खूब; इव् अरचाट्चि-यह राज्य-शासन; इनितु-(कितना) मधुर है। ४१०९

भू का शासन छोड़कर जंगल में जानेवाले की रक्षा करते हुए जो गया वह भी एक छोटा सहोदर है! 'जो गये उनके लौट आने की अवधि बीत चुकी' कहकर अशांत होकर प्राण त्यागने को तैयार हो गया, वह भी एक छोटा सहोदर है! पर मैं भी एक छोटा सहोदर हूँ जो निर्लज्ज होकर यह राज करूँगा! यही न बात! वाह! यह राज्यशासन भी अवश्य सुखद है!। ४१०९

मन्निऱ्पिन् वळनहरम् बुक्किरुन्दु वाळ्न्दाने परद नॆन्नुम्
शॊन्निऱ्कु मॆन्ऱञ्जिप् पुऱत्तिरुन्दु मरुन्दवमे तॊडङ्गि नाये
ऍन्निऱ्पिन् निवनुळता मॆन्ऱेयुन् नडिमैयुनक् किरुन्द देनु
मुन्निऱ्पिन् निरुन्ददुवु मॊरुहुडैक्की ळिरुप्पदुवु मॊक्कु मॆन्ऱान् 4110

मन्निन् पिन्-राजाराम के पीछे; परतन्-भरत; वळम् नकरम्-समृद्ध नगर में; पुक्कु इरुन्तु-प्रवेश करके; वाळ्न्ताने-जीवित रहे; ऍन्नुम्-ऐसा; चॊल् निऱ्कुम्-अपमान स्थिर रहेगा; ऍन्ऱु अञ्चि-ऐसा डरकर; पुऱत्तु इरुन्तु-बाहर रहकर; अरु तवमे-कठिन तपस्या; तॊटङ्किनाये-आपने आरम्भ की; ऍन्निन् पिन्-मेरे (मरने के) बाद; इवन्-यह; उळन् आम्-है; ऍन्ऱे-ऐसा सोचकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ही; उन्-तुम्हारे; अटिमै-दास के संबंध में; उऩक्कु-तुम्हारा विचार; इरुन्ततेऩुम्-रहा तो भी; उऩ्ऩिऩ् पिऩ्-तुम्हारे बाद; इरुन्ततुवुम्-जीवित रहना और; ऒरु कुटै कीऴ्-एक श्वेत छत्र के नीचे; इरुप्पतुवुम्-रहना; ऒक्कुम्-समान रहेगा; ऎऩ्ऱाऩ्-कहा शत्रुघ्न ने। ४११०

'राजाराम के वनगमन के बाद भी भरत समृद्ध नगर में आकर जीवित रहा न!' यह अपमान की बात स्थिर रहेगी —इस संभावना से डरकर तुमने बाहर के नंदिग्राम में रहकर तपस्या का जीवन बिताना आरम्भ कर दिया! शायद आपने सोच लिया कि मेरे बाद यह शत्रुघ्न रहेगा। मुझ दास के संबंध में तुम्हारा ऐसा विचार भी रहा हो! तो भी तुम्हारे मरने के बाद मेरे जीवित रहने में और श्वेतछत्र के नीचे राजा बनकर रहने में क्या अंतर है? दोनों बराबर हैं। —कहा शत्रुघ्न ने। ४११०

मुत्तुरुक्कॊण् डमैन्दऩैय मुऴुवॆळ्ळिक् कॊऴुनिऱत्तु मुळरिच् चॆङ्गण्
शत्तुरुक्क ऩः(ह्)दुरैप्प ववऩिङ्गुत् ताऴ्क्किऩ्ऱ तऩ्मै याऩिङ्
गॊत्तिरुक्क लालऩ्ऱे युऴन्दाऱ्पि ऩिव्वुलहै युलैय वॊट्टाऩ्
अत्तिरुक्कुङ् गॆडुमुडऩे पुहुन्दाळु मरशॊरपो यमैक्क वॆऩ्ऱाऩ् 4111

मुत्तु उरु कॊण्टु-मोती का रूप लेकर; अमैन्तऩैय-बना जैसा; मुऴु वॆळ्ळि-खरी चाँदी के; कॊऴु निऱत्तु-समृद्ध वर्ण और; मुळरि चॆङ्कण्-कमल-सी लाल आँखों के; चत्तुरुक्कऩ्-शत्रुघ्न के; अ.ऩ्तु उरैप्प-वह कहने पर; अवऩ्-वे; इङ्कु-यहाँ; ताऴ्क्किऩ्ऱ-विलम्ब करते; तऩ्मै-कारण; याऩ्-मेरे; इङ्कु-यहाँ; ऒत्तु इरुक्कलाल्-सम्मत रहने से; अऩ्ऱे-न; उलऩ्ताल्-मर जाऊँ तो; पिऩ्-बाद; इव् उल्कै-इस पृथ्वी को; उलैय ऒट्टाऩ्-संकट उठाने न देंगे; अ तिरुक्कुम्-वह विषमता; कॆटुम्-दूर होगी; उटऩे पुकुऩ्तु-तुरन्त आकर; अरचु-राज्य; आळुम्-शासन करेंगे; पोय्-जाकर; ऎरि-आग; अमैक्कळ-बनाओ; ऎऩ्ऱाऩ्-कहा। ४१११

मुक्ता-रूप तथा खरी चाँदी के रंगवाले कमलाक्ष शत्रुघ्न के ऐसा कहने पर भरत ने कहा कि श्रीराम के विलम्ब करने का कारण मेरा इधर सम्मत होकर रहना है न? मैं मर जाऊँ तो वे संसार को संकट सहने नहीं देंगे। यह विषमता दूर हो जायगी। तुरंत आकर राज्य-शासन सँभाल लेंगे। इसलिए जाओ और अग्नि जला दो। ४१११

अप्पॊऴुदि ऩव्वुरैशॆऩ् ऱयोत्तियिऩि ऩिशैत्तलुमे यरियै यीऩ्ऱ
ऒप्पॆऴुद वॊण्णाद कऱ्पुडैयाळ् वयिऱुपुडैत् तलमन् देङ्गि
इप्पॊऴुदे युलहिऱक्कुम् याक्कैयिऩै मुडित्तॊऴिन्दाऩ् महऩे यॆऩ्ऩा
वॆप्पॆऴुदि ऩालऩ्ऩ मॆलिवुडैयाळ् कडिदोडि विलक्क वन्दाळ् 4 12

अ पॊऴुतिऩ्-उस समय; अ उरै-वह शब्द; अयोत्तियिऩिल्-अयोध्या में; चॆऩ्ऱु-जाकर; इचैत्तलुमे-सुनाई दिया तो; अरियै ईऩ्ऱ-हरि की जननी; ऒप्पु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍळुत–उपमा कहने में; ऑण्णात–असमर्थ; कऱ्पुटैयाळ्–पतिव्रता; वयिऱु–पेट; पुटैत्तु–पीटती हुई; अलमन्तु–भ्रमित होकर; एङ्कि–तरसकर; मकऩे–पुत्र; याक्कैयिऩै–शरीर का; मुटित्तु–अंत कर; ऑऴिन्ताल्–मरोगे तो; इप्पॊऴुते–अभी; उलकु–धरती; इऱक्कुम्–मिट जायगी; ऍऩ्ऩा–कहती हुई; वॆप्पु–ताप से; ऍऴुतिताल्–बनी; अऩ्ऩ–जैसे; मॆलिवु उटैयाळ्–कृश बनीं; विलक्क–रोकने के लिए; कटितु–तेज़ी से; ओटि वन्ताळ्–दौड़कर आयीं। ४११२

तब वह समाचार अयोध्या पहुँच गया। उसके वहाँ पहुँचते ही हरि (श्रीराम) की जननी अनुपम पतिव्रता देवी कौसल्या भ्रांतमन होकर पेट पीटती हुई निकलीं। 'मेरे पुत्र ! तुम शरीर को आग में डालकर प्राण त्याग दोगे तो सारे लोकवासी भी मर जायँगे।" —ऐसा विलापती हुई, अन्तर्ताप से गल गयी हो ऐसा कृश होती उसे रोकने के निमित्त तेज़ी से दौड़कर आयीं। ४११२

मन्दिरियर् तन्दिरियर् वळनहरत् तवर्मऱैयोर् मऱुऱ् जुऱ्ऱच्
चुन्दरिय रॆऩैप्पलरुङ् गैतलैयिऱ् पॆय्दिरङ्गित तॊडर्न्दु तुऱ्ऱ
इन्दिरऩे मुदलाय विमैयवरु मुऩिवररु मिऱैञ्जि येत्त
अन्दरमङ् गैयर्वणङ्ग वळ्दरऱ्ऱिप् परदऩैवन् दडैन्दा ळऩ्ऱे 4113

मन्तिरियर्–मंत्री और; तन्तिरियर्–सेनापति और; चुऱ्ऱम्–बन्धुजन; चुन्तरियर्–सुन्दरी स्त्रियाँ; मऱैयोर्–विप्र; वळम्–समृद्ध; नकरत्तवर्–नगर के वासी; मऱुम्–और; एऩै–अन्य; पलरुम्–अनेक; कै–हाथ; तलैयिल्–सिर पर; पॆय्तु–रखकर; इरङ्कि–रोते हुए; तॊटर्न्तु–पीछे लगे; तुऱ्ऱ–आते; इन्तिरऩे–इन्द्र ही; मुतलाय–आदि; इमैयवरुम्–देवों और; मुऩिवरुम्–मुनियों के; इऱैञ्जि–विनय करके; एत्त–स्तुति करते; अन्तरम्–आकाशवासिनी; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; वणङ्क–नमन करते; अऴुतु–रोती; अरऱि–कलपती; वन्तु–आकर; परतऩै–भरत के पास; अटैन्ताळ्–पहुँचीं। ४११३

तब मंत्री, सेनापति, रिश्ते की सुन्दरी स्त्रियाँ, ब्राह्मण, समृद्ध अयोध्या नगर के वासी-सभी सिर पर हाथ रखे, रोते हुए उनको घेरकर आये। इंद्रादि देवों ने और ऋषियों ने नमस्कार कर स्तुति की। आकाशलोक-वासिनी अप्सराओं ने उनको नमस्कार किया। इस स्थिति में कौसल्या रोती-कलपती भरत के पास आ पहुँचीं। ४११३

ऍरियमैत्त मयानत्तै यॆय्दुहित्ऱ कादलऩै यिडैये वन्दु
विरियमैत्त नॆडुवेणि पुऱत्तशैन्दु वीऴ्न्दॊशिय मेऩि तळ्ळच्
चॊरिवमैप्प दरिदाय मऴैक्कण्णाळ् तॊडरुदलुन् दुणुक्क मॆय्दाय्
परिवमैत्त तिरुमनत्ता ऩडितॊऴुदा ऩवळ्पुहुन्दु पऱ्ऱिक् कॊण्डाळ् 4114

चॊरिवु–बहना; अमैप्पतु–रोकना; अरितु आय–कठिन जो था; मऴै कण्णाळ्–वारिश-सी आँखवाली; विरि अमैत्त–बिखरे हुए; नॆटु वेणि–लम्बे केश;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुऱत्तु–पार्श्व में; अचैन्तु–हिलते; वीऴ्न्तु–गिरते; ऑचिय–लचकते; मेनि–शरीर; तळ्ळ–लड़खड़ाता; ऍरि अमैत्त–आग-रचित; मयानत्तै–श्मशान में; ऍय्तुकित्ऱ–जाते; कातलनै–पुत्र को; इटैये–मध्य में; वन्तु–आकर; तॊटरुतलुम्–साथ लगीं तो; परिवु–प्रेम से; अमैत्त–भरे; तिरुमनत्तान्–मनवाले से; तुणुक्कम्–ठिठक; ऍय्ता–पाकर; अटि तॊऴुतान्–चरणों में नमस्कार किया; अवळ्–उन्होंने; पुकुन्तु–पास आकर; पऱ्ऱि–पकड़; कॊण्टाळ्–लिया। ४११४

उनकी आँखों से अबाध गति से आँसू बह रहा था। लंबे केश खुले, बिखरे और पीछे तथा पार्श्व में लटके हिल रहे थे। शरीर लड़खड़ा रहा था। वे भरत के पास आ लग गयीं, जो कि श्मशान को जा रहे थे जहाँ आग का प्रबंध हुआ था। श्रीराम-प्रेम-परिपूर्ण-मन भरत उनको देखते ही ठिठक गये। उन्होंने माता के चरणों में नमस्कार किया तो देवी ने झट जाकर उन्हें पकड़ लिया। ४११४

मन्नि ऴैत्तदु मैन्द निऴैत्तदुम्, मुन्नि ऴैत्त विदियिन् मुयऱ्चियाल्
पिन्नि ऴैत्तदु मॆण्णिलप् पॆऱ्ऱियाल्, ऍन्नि ऴैत्तनै यॆन्मह नेयन्ऱाळ् 4115

मन् इऴैत्ततुम्–राजा (दशरथ) का कृत्य; मैन्तन्–पुत्र का; इऴैत्ततुम्–कृत्य; मुन् इऴैत्त–पहले कृत; बितियिन्–मेरे कर्मों के; मुयऱ्चियाल्–विधान से हुए; ऍण्णिल्–सोचा जाय तो; पिन् इऴैत्ततुम्–बाद का कृत्य; अ पॆऱ्ऱियाल्–उसी से; ऍन् मकनै–मेरे पुत्र; ऍन्–क्या ही; इऴैत्तनै–कर दिया; ऍन्ऱाळ्–पूछा। ४११५

देवी ने कहा कि राजा दशरथ ने जो किया, फिर (मेरे) पुत्र ने जो किया, वह सब मेरे पूर्वकृत दुष्कर्मों का विधान था। विचारा जाय तो पीछे जो हुआ, वह भी उसी का फल है। अब तुम यह क्या काम करने चले ?। ४११५

नीयि ऍण्णिनै येल्नॆडु नाडॆरि, पायु मन्नरुञ् जेनैयुम् बाय्वराल्
ताय रॆम्मळ वन्ऱु तन्नियऱम्, तीयिन् वीऴु मुलहुन् दिरियुमाल् 4116

नी–तुमने; इतु–यह; ऍण्णिनैयेल्–विचार किया तो; नॆटु नाटु–बड़ा देश; ऍरि पायुम्–आग में घुसेगा; मन्नरुम्–राजा और; चेनैयुम्–सेना के लोग; पायवर्–घुसेंगे; तायर्–माता; ऍम् अळवु–हमीं तक; अन्ऱु–नहीं रुकेगा; तन्नि अऱम्–विशिष्ट धर्म भी; तीयिन्–आग में; वीऴुम्–गिर जायगा; उलकुम् तिरियुम्–संसार भी अस्त-व्यस्त होगा। ४११६

अगर तुमने ऐसा करना ठान लिया तो समझ लो यह दीर्घ कीर्तिवाला बड़ा देश आग में घुस जायगा। हमारे मित्र राजा लोग और सेना के वीर सब आग में गिर मर जायँगे। केवल हम माताओं तक बात नहीं रुकेगी। स्वयं अनुपम धर्म भी अग्निप्रवेश कर लेगा। सारा लोक अस्त-व्यस्त हो जायगा। ४११६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तरुम नीदियिन् ऱ्ऱ्पय तावदुन्, करुम मेयन्ऱिक् कण्डिलङ् गण्गळाल्
अरुमै यॊन्ऱु मुणर्न्दिलै यैयनिन्, पॆरुमै यूऴि तिरियिनुम् बेरुमो 4117

ऐय–तात; उन् करुमम्–तुम्हारा कार्य; तरुमम् नीतियिन् तन्–धर्म तथा नीति का; पयन्–सार; आवतु–रहता है; अन्ऱि–उसके सिवा; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; कण्टिलम्–हमने नहीं देखा; अरुमै–अपनी उत्कृष्टता; ऒन्ऱुम्–कुछ भी; उणर्न्तिलै–तुमने नहीं पहचानी; निन्–तुम्हारी; पॆरुमै–महत्ता; ऊऴि–युग; तिरियिनुम्–परिवर्तन में भी; पेरुमो–बदल सकेगी क्या। ४११७

तात ! तुम्हारा कार्य धर्म-नीति-सम्मत ही रहा करता है। दूसरे ढंग का होता हमने नहीं देखा। पर अब तुम अपनी महत्ता को पहचानते नहीं दिखते। तुम्हारी महानता युगपरिवर्तन की अवस्था में भी बदल सकेगी क्या ? । ४११७

ऎण्णिल् कोडि यिरामर्ह ळॆन्निनुम्, अण्णल् निन्नरु ळुक्करु हावरो
पुण्णि यम्मॆनु निन्नुयिर् पोयिनाल्, मण्णुम् वानु मुयिर्हळुम् वाऴमो 4118

अण्णल्–महिमावान; ऎण्णिल्–सोचा जाय तो (या असंख्य); कोटि–करोड़; इरामर्कळ्–राम भी; ऎन्निनुम्–एक साथ मिलें; निन्–तुम्हारी; अरुळुक्कु–कृपा के; अरुकु–पास; आवरो–आनेवाले बनेंगे क्या; पुण्णियम्–पुण्य ही; ऎनुम्–सम; निन् उयिर्–तुम्हारी जान; पोयिनाल्–चली गयी तो; मण्णुम्–भूमि और; वानुम्–आकाश; उयिर्कळुम्–और जीव; वाऴुमो–जीते रहेंगे क्या। ४११८

महिमावान ! सोचा जाय तो (असंख्य) करोड़ राम भी एक साथ मिलें तो तुम्हारी कृपा के पास भी नहीं आ सकेंगे। साक्षत् पुण्य-सम रहनेवाले तुम्हारे प्राण चले जायँ तो भूमि तथा आकाश और जीव जीवित रहेंगे क्या ? । ४११८

इन्ऱु वन्दिल नेयॆनि नाळैये, ऒन्ऱुम् वन्दुनै युन्नि युरैत्तशॊल्
पिन्ऱु मॆन्ऱुण रेऱ्पिऴैत् तानॆनिल्, पॊन्ऱुन् दन्मै पुहुन्ददु पोयॆन्ऱाळ् 4119

इन्ऱु–आज; वन्तिलनै–नहीं आया; ऎनिन्–तो; नाळैये–कल ही; उनै वन्तु–तुम्हारे पास आ; ऒन्ऱुम्–लगेगा; उन्नि–सोचकर; उरैत्त–जो कहा; चॊल्–वह कथन; पिन्ऱुम्–तोड़ देगा; ऎन्ऱु–ऐसा; उणरेल्–मत समझो; पिऴैत्तान्–उल्लंघन करे; ऎनिल्–तो; पॊन्ऱुम्–मृत्यु का; तन्मै–हाल; पोय् पुकुन्ततु–आ गया (ऐसी स्थिति होगी); ऎन्ऱाळ्–कहा देवी ने। ४११९

राम आज नहीं आया तो कल ही आ जायगा तुम्हारे पास। उसने खूब विचारकर जो कहा है उस वचन से वह मुकरेगा, यह मत सोचो। वचनभंग करेगा तो मृत्यु की संभावना उसमें निहित है। कौसल्या ने यह कहा। ४११९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒरुवऩ् माण्डऩ नॆऩ्ऱुकॊण् डूऴिवाऴ्, पॆरुनि लत्तुप् पॆऱलरु मिऩ्ऩुयिर्क्
करुवु माण्डऱक् काणुदि योकलॆत्, तरुम नीयल दिल्लॆऩुन् दऩ्मैयाय् 4120

कलै तरुमम्–शास्त्रोक्त धर्म; नी अलतु इल्–तुम्हारे सिवा कोई नहीं; ऎऩुम् तऩ्मैयाय्–ऐसी महिमा वाले; ऒरुवऩ्–एक; माण्टऩऩ्–मर गया होगा; ऎऩ्ऱु कॊण्टु–ऐसा समझकर; ऊऴि वाऴ्–युगांत तक जीने योग्य; पॆरु निलत्तु–बड़ी भूमि में; पॆऱल् अरु–दुर्लभ; इऩ् उयिर्–प्यारे प्राणों को; करुवुम् माण्टु–गर्भस्थित जीवों तक; अऱ–मरें यह; काणुतियो–देखोगे क्या। ४१२०

शास्त्रोक्त धर्म ही तुम हो! तुम्हारे सिवा कुछ नहीं। इस भाँति रहनेवाले हे भरत! यह अनुमान करके कि राम मर गया होगा क्या तुम युगांत तक जी सकनेवाले दुर्लभ प्राणों को, गर्भस्थ जीवों तक को मरते देखना चाहते हो? । ४१२०

इऱक्कै युऱ्जिल रेहलु मोहत्ताल्, पिऱक्कै युङ्गड नॆऩ्ऱुपिऩ् पाशत्तै
मऱक्कै युम्मह ऩेवलि यावदु, तुऱक्कै तानुमॆऩ् ऱाळ्मऩऩ् ऱूय्मैयाळ् 4121

मकऩै–पुत्र; चिलर्–कुछ का; इऱक्कैयुम्–मरना; एकलुम्–छोड़ जाना; मोकत्ताल्–मोह से; पिऱक्कैयुम्–जन्म लेना; कटऩ् ऎऩ्ऱु–कर्तव्य समझकर; पिऩ्–फिर; पाचत्तै–स्नेहपाश को; मऱक्कैयुम्–भूलना; तुऱक्कै तानुम्–संग तोड़ना; वलियावतु–भला होगा; ऎऩ्ऱाळ्–कहा; मऩम्–मन की; तूय्मैयाळ्–पवित्र देवी ने। ४१२१

हे पुत्र! कुछ का मरना, कुछ का चला जाना, कुछ का मोह के फलस्वरूप जन्म लेना आदि लोक सामान्य कार्य हैं—ऐसा मानकर अपना स्नेह-बंधन भूल जाना ही धीरता है। पवित्र हृदय वाली देवी कौशल्या ने कहा। ४१२१

मैन्द नॆऩ्ऩै मऱुत्तुरैत् तानॆऩल्, ऎऩ्दै मॆय्म्मैयु मिक्कुलच् चॆय्हैयुम्
नैन्दु पोह वुयिर्निलै नच्चिलेऩ्, मुन्दु शॆय्द शबद मुडिप्पॆऩाल् 4122

ऎऩ्ऩै–मेरे तात राम की; मॆय्म्मैयुम्–सत्यवादिता और; इ कुलम्–इस कुल के; चॆय्कैयुम्–कृत्यों को; नैन्तु पोक–क्षीण हो मिटने देकर; उयिर् निलै–प्राणों की स्थिति; नच्चिलेऩ्–नहीं चाहती; मुन्तु–पहले; चॆय्त–कृत; चपतम्–शपथ; मुटिप्पॆऩ्–पूरा करूँगा; मैन्दऩ्–पुत्र ने; ऎऩ्ऩै–मेरी बात; मऱुत्तुरैत्तान्–अस्वीकार की; ऎऩल्–ऐसा मत कहिए। ४१२२

भरत ने माता से कहा— मैं अपने पितृ-सम श्रीराम के सत्य को और इस वंश के कार्यों को नाश होने देते हुए जीना नहीं चाहता। मैंने जो शपथ खायी थी, पहले वह अभी पूरा कर दूंगा। आप यह न मानें कि मेरे पुत्र ने मेरी बात को अस्वीकार दिया। ४१२२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यानु मॅय्यितुक् कित्तुयि रीन्दुपोय्
वानु ळॅय्दिय मत्तवत् मैन्दनाल्
कानु ळॅय्दिय काहुत्तर् केकडन्
एनै योर्क्कि दिळुक्किल् वळुक्कन्रो 4123

यानुम्–मैं भी; मॅय्यितुक्कु–सत्य के लिए; इन् उयिर्–प्यारी जान; ईन्तु–देकर; पोय्–जाकर; वानुळ्–मोक्ष; ॲय्तिय–जो पहुँचे हैं; मत्तवत्–उन चक्रवर्ती का; मैन्तन् आल्–पुत्र हूँ न; कानु उळ्–वन में; ॲय्तिय–जो गये उन; काकुत्तर्के–काकुत्स्थ के लिए; कटत्–कर्तव्य; एनैयोर्क्कुम्–अन्यों के लिए; इतु–यह; इळुक्कु इल्–अकलंक; वळुक्कु अन्रो–व्यवहार नहीं है क्या। ४१२३

मैं भी तो उस राजा का पुत्र हूँ, जो कि सत्य की वेदी पर प्राणों का उत्सर्ग कर स्वर्ग पहुँचा ! वन में गये काकुत्स्थ श्रीराम का यह कार्य हो सकता है ! पर अन्यों के लिए (शपथ का न रखना) कलंककारी है न ? । ४१२३

ताय्शॊर् केट्टलुन् दन्दैशॊर् केट्टलुम्
पाशत् तन्बिनैप् पर्रर् नोक्कलुम्
ईशर् केकडन् यानः(ह्) दिळैक्किलॅन्
माशर् रेनिदु काट्टुवॅन् माण्डॅन्रान् 4124

ताय् चॊल्–मातृ-वचन का; केट्टलुम्–सुनना (पालन) और; तन्तै चॊल्–पिता का कहना; केट्टलुम्–सुनना; पाचत्तु अन्पिनै–बन्धन के प्रेम को; पर्रु अर्–संग काटकर; नीक्कलुम्–दूर करना; ईचर्के–ईश्वर का ही; कटत्–कार्य है; यान्–मैं; अ.'तु–वह; इळैक्किलॅन्–नहीं करूँगा; माण्टु–मरकर; माचर्रेन्–कलंकहीन होकर; इतु–यह; काट्टुवॅन्–साबित करूँगा; ॲन्रान्–कहा भरत ने। ४१२४

राम ईश्वर हैं। पितृवचन-पालन, मातृवचन-पालन और प्रेम-भंजन आदि उन्हें कर्तव्य लग सकता है ! पर मैं वह नहीं करूँगा। मरूँगा और अपना कलंक धुलवा लूँगा। ऐसा करके यह दिखा दूँगा। ४१२४

ॲन्रु तीयिनै यॅय्दि यिरैत्तॅळुन्, दॊन्रु पूश लिडुमुल होरुडन्
नित्रु पूशनै शॅय्हित्र नेशर्कुक्, कुन्रु पोल्नॅडु मारुदि कूडिनान् 4125

ॲन्रु–यह कहकर; तीयिनै ॲय्ति–आग के पास जाकर; इरैत्तु–शोर करते; ॲळुन्तु–उठते; ॲन्रु–और मिलते; पूचल् इटुम्–हाहाकार मचाते; उलकोरुटन्–लोकवासियों के साथ; नित्रु–खड़े होकर; पूचनै–पूजा; चॅय्किन्र–करनेवाले; नेचर्कु–(श्रीराम के) भक्त से; कुन्रु पोल्–पर्वत-सम; नॅटु मारुति–लंबोतरा मारुति; कटिनान्–अकस्मात आ मिला। ४१२५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इस भाँति कहकर भरत आग के बहुत निकट गये। सारे लोकवासी भी शोरगुल मचाते हुए वहीं खड़े थे। उनके साथ रहकर भरत अग्नि की पूजा कर ही रहे थे कि उन श्रीरामभक्त से पर्वताकार दीर्घकाय हनुमान अकस्मात् प्रगट होकर मिल गया। ४१२५

ऐयन् वन्दन नारियन् वन्दनन्, मॅय्यिन् मॅय्यनन निन्नुयिर् वीट्टिनाल्
उय्यु मेयव नॅन्नुरैत् तुट्पुहाक्, कैयि नालॅरि यॅक्करि याक्किनान् 4126

ऐयन्—प्रभु श्रीराम; वन्तनन्—आ गये; आरियन् वन्तनन्—आर्य आ गये; मॅय्यिन्—सत्य के; मॅय् अन्न—सत्य-सम; निन् उयिर्—अपने प्राण; वीट्टिनाल्—त्याग देंगे तो; अवन्—वे; उय्युमे—जीते रहेंगे क्या; ऍन्नु—ऐसा; उरैत्तु—कहकर; उळ् पुका—अंदर घुसकर; कैयिनाल्—हाथ से; ऍरियै—आग को; करि—राख; आक्किनान्—बना दी। ४१२६

हनुमान ने भीड़ में घुसकर ज़ोर से कहा कि प्रभु आ गये; आर्य आ गये। सत्य के सत्य रूप आप अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दें तो क्या वे (श्रीराम) जीवित रहेंगे? यह कहते हुए आग को अपने हाथों से बुझाकर राख बना दी। ४१२६

आक्कि मऱ्ऱव नाय्मलर्त् ताळ्हळैत्
ताक्कत् तन्तलै ताळ्न्बु वणङ्गिक्कै
वाक्किऱ् कूडप् पुदैत्तॊरु मार्ऱनी
तूक्किक् कॊळ्ळत् तहुमॅनच् चॊल्लिनान् 4127

आक्कि—बनाकर; अवन्—उन (भरत) के; आय् मलर् ताळ्कळै—सुन्दर कमल-चरणों से; ताक्क—लगाकर; तन् तलै—अपने सिर को; ताळ्न्तु—नवाया; वणङ्कि—झुककर; वाक्किल्—मुख पर; कै कूट—हाथ लगाकर; पुतैत्तु—ढँककर; ऒरु मार्ऱम्—एक बात; नी—आप; तूक्कि कॊळ्ळत् तकुम्—मान लेने अर्ह हैं; ऍन—ऐसा; चॊल्लिनान्—कहा। ४१२७

राख बनाकर हनुमान ने भरत के सुंदर कमल-चरणों पर सिर लगे, ऐसा सिर नवाया। मुख पर हाथ रखकर विनम्रता से बोला। एक बात कह रहा हूँ जिसे आपको मानना पड़ेगा। ४१२७

इन्न नाळिहै यॅण्णॅन् दुळवैय, उन्नै मुन्नम्वन् दॅय्द वुरैत्तनाळ्
इन्न दिल्लै यॅनिनडि नायिनेन्, मुन्नम् वीळ्न्दिव् वॅरियिन् मुडिवॅनाल् 4128

ऐय—प्रभु; उन्नै—आपके पास; वन्तु—आ; ऍय्त मुन्नम्—पहुँचे, इसके पहले; उरैत्त नाळ्—कथित दिन में; इन्नम्—अब भी; ऍण् ऐन्तु नाळिकै—चालीस घड़ियाँ; उळ—बाक़ी हैं; इन्नतु—यह; इल्लै—नहीं; ऍनिन्—तो; अटि—दास; नायिनेन्—कुत्ता-सम मैं; मुन्नम्—पहले; इव्—इस; ऍरियिन्—अग्नि में; वीळ्न्तु—कूदकर; मुडिवॅन्—मर जाऊँगा। ४१२८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रभु ! जिस दिन श्रीराम ने आपसे आने का वादा किया था, उस दिन के बीत जाने में अभी चालीस घड़ियाँ बाक़ी हैं। यह मेरा कथन झूठा साबित किया जाय तो मैं ही आपके पहले इस आग में कूदकर मर जाऊँगा। ४१२८

ऑन्ऱु तानुळ दुन्नडि येन्शॊलाल् निन्ऱु ताळ्त्तरुळ् नेमिच् चुडर्कुणक्
कुन्ऱु तोन्ऱळ वुम्मिदु कुन्ऱुमेऱ्, पॊन्ऱु नीयु मुलहमुम् बॊय्यिलाय् 4129

पॊय्यिलाय्–असत्य से दूर रहनेवाले; ऑन्ऱु तान्–एक ही बात; उळतु–है; नेमि–गोल; चुटर्–किरणमाली; कुणक्कु कुन्ऱु–पूर्व की उदयगिरि में; तोन्ऱु अळवुम्–उदित हो तब तक; उन्–आपके; अटियेन्–दास मेरे; चॊलाल्–कथन से; निन्ऱु–रुककर; ताळ्त्तु अरुळ्–विलंब करने की कृपा करो; इतु कुन्ऱुमेल्–यह नहीं होगा तो; नीयुम्–आप और; उलकमुम्–संसार; पॊन्ऱुम्–नाश होंगे। ४१२९

असत्य से दूर रहनेवाले ! एक ही बात है। गोल किरणमाली सूर्य पूर्व की उदयगिरि पर जब तक उदित न हो तब तक मेरी बात पर विश्वास करके रुक जाने की कृपा कीजिए। यह अवधि बीत जायगी तो निश्चित है कि आप ही नहीं सारा लोक भी नष्ट हो जायगा। ४१२९

ऍङ्ग णायहर् किन्नमु दीहुवान्, पङ्ग यत्तुप् परत्तुवन् वेण्डलाल्
अङ्गु वैहिन नल्लदु ताळ्क्कुमो, इङ्ग णल्लदॊन् ऱिन्नमुङ् गेट्टियाल् 4130

पङ्कयत्तु–कमलमणि-मंडित; परत्तुवन्–भरद्वाज को; ऍङ्कळ् नायकर्कु–हमारे नायक को; इन्–मधुर; अमुतु–भोज; ईकुवान् वेण्टलाल्–देने की प्रार्थना से; अङ्कु–वहाँ; वैकिनत् अल्लतु–ठहर गये, नहीं तो; ताळ्क्कुमो–देर करेंगे क्या; इङ्कण्–यहाँ; इन्नमुम्–अब भी; नल्लतु–और अच्छी बात; ऑन्ऱु–एक; केट्टि–सुनिए। ४१३०

कमलमणि-भूषित भरद्वाज ने प्रार्थना की कि हम यहाँ मधुर भोज देना चाहते हैं। उसी से श्रीराम वहाँ ठहर गये। नहीं तो कहीं विलंब करेंगे क्या ? अब और भी एक शुभ समाचार कहता हूँ। सुनिये। ४१३०

अण्डर् नाद नरुळि यळित्तुळ, दुण्डॊर् पेरडै याळ मुन्क्कदु
कॊण्डु वन्दनॆन् कोदऱ्ऱ शिन्दैयाय्, कण्डु कॊण्डरुळ् वायॆनक् काट्टिनान् 4131

अण्टर् नातन्–अंडनायक ने; अरुळि–देने की; अळित्तुळतु–कृपा जो की; ओर्–एक; पेर्–बड़ा; अटैयाळम्–अभिज्ञान; उण्टु–है; उनक्कु–आपको; अतु–वह; कॊण्टु–ले; वन्तनॆन्–आया हूँ; कोतु अऱ्ऱ–निर्दोष; चिन्तैयाय्–मन वाले; कण्टु कॊण्टु–देख लेने को; अरुळ्वाय्–कृपा करें; ऍन्–ऐसा कहकर; काट्टिनान्–दिखाया। ४१३१

अंडनायक ने मुझ पर कृपा करके एक श्रेष्ठ अभिज्ञान दिया है। मैं उसे आपके लिए लाया हूँ। अकलंकमन ! देखने की कृपा करें, कहकर हनुमान ने उस मुँदरी को दिखाया। ४१३१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काट्टिय मोदिरङ् गण्णिऱ् काण्डलुम्, ऊट्टिय वल्विड मुऱ्ऱु मुऱ्ऱुवार्क्
कूट्टिय नऩमरुऩ् दोऩ्त दामरो, ईट्टिय वुलहुक्कु मिळैय वेन्दऱ्कुम् 4132

काट्टिय मोतिरम्–दिखायी गयी मुँदरी; कण्णिल् काण्टलुम्–आँखों से देखने पर; ईट्टिय–एकत्रित; उलकुक्कुम्–लोकवासियों को; इळैय–छोटे; वेन्तऱ्कुम् राजा को; ऊट्टिय–खिलाये गये; वल् विटम्–कठोर विष; उऱ्ऱु–के कारण; मुऱ्ऱुवार्क्कु–मरणोन्मुख को; ऊट्टिय–खिलाये गये; नल् मरुन्तु–अच्छे अमृत; ओऩ्ततु–के समान साबित; आम्–हुआ। ४१३२

हनुमान की दिखायी अँगूठी को देखते ही वहाँ एकत्रित लोगों के लिए और भरत के लिए कठोर विष खाकर संतप्त रहे लोगों को खिलाये गये अच्छे अमृत के समान रही वह मुँदरी। ४१३२

अऴुहिऩ्ऱ वायॆला मार्त् तॊऴुन्दऩ, विऴुहिऩ्ऱ कण्णॆलाम् वॆळ्ळ माऱिऩ
उऴुहिऩ्ऱ तलैयॆला मुयर्न्दॆ ऴुन्दऩ, तॊऴुहिऩ्ऱ कैयॆलाङ् गालिऩ् तोऩ्ऱलै 4133

अऴुकिऩ्ऱ–जो रोते थे; वाय् ॲलाम्–वे सभी मुख; आर्त्तु–आनंदरव; ॲऴुन्तत–कर उठे; विऴुकिऩ्ऱ–(आँसू) गिरानेवाली; कण् ॲलाम्–सभी आँखें; वॆळ्ळम् माऱिऩ–प्रवाह से मुक्त हुईं; उऴुकिऩ्ऱ–झुके हुए; तलै ॲलाम्–सभी सिर; उयर्न्तु ॲऴुन्तत–उन्नत हो उठे; कै ॲलाम्–सभी हाथ; कालिऩ् तोऩ्ऱलै–पवन-सुत को; तॊऴुकिऩ्ऱ–नमस्कार करते हैं। ४१३३

तब जो रोते रहे वे सभी मुख आनंद-रव कर उठे। आँसू गिराती रही सभी आँखों के आँसू सूख गये। झुके रहे सभी सिर उन्नत हो उठे। सभी (के) हाथों ने हनुमान को नमस्कार किया। ४१३३

मोदिरम् वाङ्गित्तऩ् मुहत्तिऩ् मेलणैत्, तादरम् बॆऱुवदऱ् काक्कै योवॆऩा
ओदिऩर् नाणुऱ वोङ्गि नाऩ्तॊऴुम्, तूदऩै मुऱैमुऱै तॊऴुदु तुळ्ळुवाऩ् 4134

तॊऴुम् तूतऩै–दूत को; मुऱै मुऱै तॊऴुतु–बार-बार नमस्कार कर; तुळ्ळुवाऩ्–आनंद से उछलते; मोतिरम्–मुँदरी को; वाङ्कि–लेकर; तऩ् मुकत्तिऩ् मेल्–अपने मुख पर; अणैत्तु–रख लेकर; आतरम्–श्रीराम का प्रेम; पॆऱुवतऱ्कु–धारण करने; आक्कैयो–योग्य शरीर क्या; ॲऩा–ऐसा; ओतिऩर् नाण् उऱ–जो कहते थे, वे लजा जायँ, ऐसा; ओङ्कितान्–फूल गये। ४१३४

नमस्कार करते हनुमान को भरत ने बार-बार नमस्कार किया। आनंद से उछलकर मुँदरी का ग्रहण किया। फिर उसे अपने मुख से लगा लिया। तब उनका शरीर एकदम फूल उठा और उनको पहले देखकर जो यह सोच रहे थे कि क्या इसका यह कृश शरीर श्रीराम के प्रेम के भार को सह सकेगा, अब लज्जा का अनुभव करने लगे। ४१३४

आदिवॆन् दुयरला लरुन्द लिन्मैयाल्
ऊदुऱप् पऱपपदा युलरन्द याक्कैपोय्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एदिल नॊरुवन्कॊ लॆन्न लायदु
मादिरम् वळर्न्दन वयिरत् तोळ्हळे 4135

आति–तबसे; वॆम्–कठोर; तुयर्–दुःख; अलाल्–के सिवा; अरुन्तल्–खाना-पीना; इन्मैयाल्–न रहा इसलिए; ऊतुर्–फूंकने पर; पर्प्पताय्–उड़ जाय, ऐसा; उलर्न्त–सूखा; याक्कॆ–शरीर; पोय्–बदल गया; ऍतिलन् ऒरुवन् कॊल्–दूसरा एक है क्या; ऍन्नतल्–ऐसा कहने योग्य; आयतु–बने; वयिरम् तोळ्कळ्–वज्र (-सम) सुदृढ़ कंधे; मातिरम् वळर्न्तत–पर्वतों के समान स्थूल हुए। ४१३५

तभी से भरत दुःख को छोड़ अन्य किसी का भोग नहीं करते थे। फूंको तो उड़ जाय, ऐसा उनका शरीर कृश हो गया था। पर अब वे ऐसे स्थूल हो गये कि देखनेवाले समझें कि यह कोई दूसरा है। उनके वज्र-सम कन्धे पर्वतों के समान फूल उठे। ४१३५

अळुनहु मनुमनै याळिक् कैहळाल्
तॊळुमॆळुन् दुळ्ळुम्वॆङ् गळितु ळक्कलाल्
विळुमळिन् देङ्गुम्बोय् वीङ्गुम् वेर्क्कुमक्
कुळुवॊडुङ् गुनिक्कुन्दन् तडक्कै कॊट्टुमाल् 4136

वॆम् कळि–अधिक आनंद के; तुळक्कलाल्–उकसाने से; अळुम्–रोते; नकुम्–हँसते; अनुमनै–हनुमान को; आळि कैकळाल्–मुंदरी-सहित हाथों से; तॊळुम्–नमस्कार करते; ऍळुम्–उठते; तुळ्ळुम्–उछलते; विळुम्–गिरते; अळिन्तु–घुलकर; एङ्कुम्–तरसते; पोय् वीङ्कुम्–फूल जाते; वेर्क्कुम्–स्वेद से भर जाते; अ कुळुवॊटुम्–(वहाँ रहे) उस समूह के साथ; कुनिक्कुम्–नाचते; तन्–अपने; तट कै–विशाल हाथ; कॊट्टुम्–पीटते (ताली बजाते)। ४१३६

भरत की स्थिति विचित्र हो रही। आनंद के प्रभाव से वे कभी रोते, कभी हँसते। हाथ में मुँदरी के साथ हनुमान को बार-बार नमस्कार करते। ऊपर उठते, उछलते, कूदते, गिरते, थककर रोते। फूल जाते और स्वेद से भर जाते। वहाँ रही उस भीड़ के साथ तालियाँ बजाते। ४१३६

आडुमि नाडुमि नॆन्नु मैयन्पाल्, ओडुमि नोडुमि नॆन्नु मोङ्गिश
पाडुमिन् पाडुमि नॆन्नुम् बाविहाळ्, शूडुमिन् शूडुमिन् तूदन् ताळॆनुम् 4137

पापिकाळ्–पापी लोगो; आडुमिन् आडुमिन्–नाचो-नाचो; ऍन्नुम्–कहते; ऐयन् पाल्–प्रभु के पास; ओडुमिन् ओडुमिन्–भागो-भागो; ऍन्नुम्–कहते; मोङ्कु इचै–वर्धित यश; पाडुमिन् पाडुमिन्–गान करो, गाओ; ऍन्नुम्–कहते; तूतन् ताळ्–दूतों के चरणों को; चूडुमिन् चूडुमिन्–(सिर पर) धारण कर लो, धारण करो; ऍनुम्–कहते। ४१३७

कहते कि हे पापियो! नाचो, नाचो। प्रभु के पास दौड़ो, दौड़ो।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रभु का उन्नत यशगान करो। कभी यह कहते कि दूत (हनुमान) के पैरों को सिर पर धारण कर लो। ४१३७

वञ्जनै यियऱ्ऱिय मायक् कैहैयार्
तुञ्जुव रिनियॅनत् तोळैक् कॉट्टुमाल्
कुञ्जिद वडिहळ्मण् डिलत्तिऱ् कूट्टुऱ्
अञ्जनक् कुऱ्ऱिनिऱ् ऱाडुम् बाडुमाल् 4138

वञ्चनै–वंचना; इयऱ्ऱिय–जिसने की वह; माय कैकेयार्–मायाविनी कैकेयी; इनि–अब; तुञ्चुवार्–शिथिल होंगी; ऍन–ऐसा कहकर; तोळै कॉट्टुम्–कंधे ठोंकते; कुञ्चित–झुके; अटिकळ्–पैर; मण्टलत्तिल्–चक्राकार; कूटु उऱ्–मिल जायें ऐसा; अञ्चनम् कुऱ्ऱिऱ्–अंजन-पर्वत के समान; निऱ्ऱु–रहकर; आटुम् पाटुम्–नाचते-गाते। ४१३८

यह कहकर कंधे ठोंकते कि अब वंचकी कैकेयी दब जायगी। पैर झुकाकर, चक्राकार घुमाकर अंजनपर्वत के समान भरत नाचे और गाये। ४१३८

❀वेदियर् तमैत्तॊऴुम् वेन्द रैत्तॊऴुम्
तादियर् तमैत्तॊऴुन् दन्नैत् तान्तॊऴुम्
एदुमॊन्ऱु ऱुणर्हुऱा दिरुक्कु निऱ्कुमाल्
कादलॆन् ऱदुवुमोर् कळ्ळिऱ् तोऱ्ऱमे 4139

वेतियर् तमै–ब्राह्मणों को; तॊऴुम्–नमस्कार करते; वेन्तरै तॊऴुम्–राजाओं को नमस्कार करते; तातियर् तमै–दासियों को; तॊऴुम्–नमस्कार करते; तन्नै तान्–अपने ही आपको; तॊऴुम्–नमस्कार करते; एतुम् ऒन्ऱु–कुछ भी; उणर्कुऱातु–न जानते से; इरुक्कुम्–रहते; निऱ्कुम्–स्थिर रहते; कातल् ऍन्ऱु–प्रेम जो है; अतुवुम् ओर्–वह भी एक; कळ्ळिऱ् तोऱ्ऱमे–मद्य के स्वभाव का है। ४१३९

भरत ब्राह्मणों को नमस्कार करते। राजाओं को, दासियों को और फिर अपने-आप को नमस्कार करते। ऐसे विना कुछ समझे-बूझे स्तब्ध खड़े रहते। स्नेह भी मद्य की प्रकृति का ही है! । ४१३९

अत्तिऱत् ताण्डहै यनुमन् तन्नैनी
ऍत्तिऱत् तायॆमक् कियम्बि योदियाल्
मुत्तिऱत् तबरुळे यॊरुवन् मूर्त्तिवे
ऱीत्तिरुन् दायॆन् वुणर्हिऱ् ऱेनॆन्ऱाल् 4140

अ तिऱत्तु–उस भाँति के; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; अनुमन् तन्नै–हनुमान से; नी–तुम; ऍ–किस; तिऱत्ताय्–तरह के हो; ऍमक्कु–हमें; इयम्पि ईति–कहने की कृपा करो; मुत्तिऱत्तबर् उळे–त्रिमूर्ति में; मूर्त्ति वेऱु ऒरुवन्–एक अलग वेश में;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒत्तिरुन्ताय्–के समान रहे; ऎत–ऐसा; उणर्किन्ऱेन्–मैं समझता हूँ; ऎन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१४०

इस भाँति जो रहे, उन भरत ने हनुमान से पूछा कि तुम कैसे आदमी हो ? कृपाकर यह बताओ। अलग तो दिखते तो भी मुझे तो त्रिमूर्ति में एक ही हो पर अलग रूप में दिखते हो। ४१४०

मऱैयवर् वडिवुकॊण् डणुह् वन्दनै
इऱैवरि नॊरुत्तनॆन् ऱॆण्णु हिन्ऱनॆन्
तुऱैयॆनक् कियादॆनच् चॊल्लु शॊल्लॆन्ऱान्
अऱैकळ् लनुमनु मऱियक् कूऱुवान् 4141

मऱैयवर्–वेदज्ञ (ब्राह्मण) का; वटिवु–रूप; कॊण्टु–लेकर; अणक–मिलने; वन्ततै–आये हो; इऱैवरिन्–त्रिदेवों में; ऒरुत्तन्–एक हो; ऎनुऱ–ऐसा; ऎण्णुकिन्ऱनॆन्–सोचता हूँ; तुऱैयातु–वृत्तांत क्या है; ऎत–ऐसा; ऎनक्कु–मेरे पास; चॊल्लु चॊल्लु–कहो, कहो; ऎन्ऱान्–कहा; अऱैकळल्–क्वणनशील पायलधारी; अनुमनुम्–हनुमान ने भी; अऱिय–समझाकर; कूऱुवान्–कहा। ४१४१

तुम ब्राह्मण का वेश धरकर आये हो। पर त्रिदेवों में एक मानता हूँ। असल में तुम्हारा वृत्तांत क्या है ? मुझे बताओ। जल्दी कहो। भरत ने सुनना चाहा। क्वणित पायलधारी हनुमान ने समझाकर कहा। ४१४१

काऱ्ऱिनुक् करशन्पाऱ् कविक्कु लत्तिनुळ्
नोऱ्ऱनळ् वयिऱ्ऱिन्वन् दुदित्तु नुम्मुनाऱ्
केऱ्ऱिला वडित्तॊळिल् लेव लाळनॆन्
माऱ्ऱिनॆ नुरुवॊरु कुरङ्गु मन्नयान् 4142

मन्न–राजा; यान्–मैं; ऒरु–एक; कुरङ्कु–वानर हूँ; काऱ्ऱिनुक्कु–पवन के; अरचन् पाल्–देवता द्वारा; कवि कुलत्तिनुळ्–वानरकुल में; नोऱ्ऱनळ्–तपस्या करनेवाली (अंजना) के; वयिऱ्ऱिल्–गर्भ से; वन्तु उतित्तु–जनम लेकर; एऱ्ऱिला–उपमाहीन; नुम्मुनाऱ्कु–आपके ज्येष्ठ भ्राता के; अटि तॊळिल्–दासता-कृत्य का; एवल्–सेवक; आळनॆन्–मनुष्य हूँ; उरु माऱ्ऱिनॆन्–रूप बदलकर आया हूँ। ४१४२

राजा ! मैं एक वानर हूँ। पवनदेव का अंजनादेवी के गर्भ में से आया। —जो कि वानर जाति की थीं और जिसने पुत्र के लिए तपस्या की। अनुपम आपके ज्येष्ठ भ्राता की दासता करनेवाला सेवक हूँ। रूप बदलकर मैं इधर आया। ४१४२

अडित्तॊळिल् नायिनै नऱ्प याक्कैयॆक्
कडिततडन् दामरैक् कण्णि नोक्कॆनाप्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिडित्तपॉय् युरुवित्तैप् पॅयर्त्तु नोक्किनान्
मुडित्तलम् वानवर् नोक्किन् मुन्नुवान् 4143

अटि तॊळिल्–दासकृत्य करनेवाला; नायिनेन्–कुत्ता (-सा) हूँ; अऱ्प याक्कैयै–अल्प शरीर को; कटि तट–सुगंधित विशाल; तामरै कण्णिन्–कमल-सी आँखों से; नोक्कु–देख लें; ऍन्ना–कहकर; पिटित्त–धृत; पॊय् उरुवित्तै–मिथ्या रूप को; पॅयर्त्तु नोक्किनान्–छोड़ दिया; मुटि तलम्–सिर का भाग; वानवर् नोक्किन्–देवों के समक्ष; मुन्नुवान्–बढ़ता गया। ४१४३

दास, कुत्ते से भी नीच (यह विनम्रतासूचक तमिळ मुहावरा है) मेरे क्षुद्र शरीर को आप सुगंधपूर्ण कमल-सम आँखों से निहार लें। ऐसा कहकर हनुमान ने अपने गृहीत मिथ्या ब्राह्मण-रूप को दूर फेंक दिया। वह इतना ऊँचा बढ़ने लगा कि देवता लोग (अपने लोक में रहकर) उसके सिर को (अपने समक्ष) देख सकें। ४१४३

वॅञ्जिलै यिरुवरुम् विरिञ्जन् मैन्दनुम्
ऍञ्जलि लदिशय मिदुवॅन् ऱॅण्णिनार्
तुञ्जिल दायिनुञ् जेनै तुण्णॅन
अञ्जिन दञ्जनै शिऱुव नाक्कैयाल् 4144

अञ्चनै चिऱुवत्–अंजना-सुत के; आक्कैयाल्–शरीर को देखकर; वॅम् चिलै–कठोर धनुर्धर; इरुवरुम्–दोनों और; विरिञ्चन् मैन्तनुम्–विरंचिसुत वसिष्ठ; इतु–यह रूप; ऍञ्चल् इल्–अक्षय; अतिचयम्–अतिशय रूप है; ऍन्ऱु ऍण्णिनार्–ऐसा सोचने लगे; चेनै–सेना; तुञ्चिलतु–मरी तो नहीं; आयिनुम्–फिर भी; तुण् ऍन–ठिठककर; अञ्चिनतु–डर गयी। ४१४४

अंजना-सुत के विश्वरूप के शरीर को देखकर धनुर्धर वीर दोनों भाई, भरत और शत्रुघ्न, और विरंचिसुत वसिष्ठ ने विस्मय किया कि यह अतिशय अद्भुत रूप है! पास रही सेना मरी तो नहीं पर गंभीर रूप से भयभीत हो गयी। ४१४४

ईङ्गुनिन् ऱियामुनक् किशैत्त माऱ्ऱमत्
तूङ्गिरुङ् गुण्डलच् चॅवियिऱ् चूळ्वर
ओङ्गलिल् उयर्प्पुऱु मुलप्पिल् याक्कैयै
वाङ्गुवि विरॅन्दॅन मन्नन् वेण्डिनान् 4145

अ–सुन्दर; ईङ्कु निन्ऱु–इधर खड़े होकर; याम्–हम; उनक्कु–तुमसे; इचैत्त–जो कहेंगे; माऱ्ऱम्–वे शब्द; तूङ्कु–लटकते; इरु–दो; कुण्टलम्–कुंडलों वाले; अ चॅवियिल्–उन कानों में; चूळ्वर्–घूमें (पड़ें); ओङ्कलिल्–पर्वत-सम; उयर्प्पु उऱुम्–ऊँची रहते; उलप्पिल्–इस अक्षय; याक्कैयै–शरीर को; वाङ्कुति–छोटा कर लो; ऍन–ऐसा; मन्नन्–राजा ने; वेण्टिनान्–प्रार्थना की। ४१४५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राजा भरत ने तब हनुमान से प्रार्थना की कि तुम अपने पर्वतोपम उन्नत रूप को छोटा कर लो, ताकि हमारे कहे शब्द तुम्हारे लटकते कुण्डलों से भूषित कानों में पड़ सकें। ४१४५

शुरुक्किय वुरुवत्तात् तॊऴुदु मुन्निन्ऱ
अरुक्कन्मा णवहन्तुक् कॆय नन्बित्ताल्
पॊरुक्कॆन्न निदियमुम् बुन्नैपॊऱ् पूण्गळिन्
वरुक्कमुम् वरम्बिल नन्निव ळङ्गिनान् 4146

ऐयन्–प्रभु भरत; अन्पित्ताल्–प्रेम से; चुरुक्किय–अपना शरीर छोटा कर; उरुवत्ता–उस रूप में; तॊऴुतु–नमस्कार करके; मुन् निन्ऱ–जो समक्ष रहा उस; अरुक्कन्–सूर्य भगवान के; माणवकन्कुकु–शिष्य को; पॊरुक्कॆन्न–झट; नितियमुम्–निधियाँ; पुन्नै–पहनने योग्य; पॊन्–स्वर्ण; पूण्कळिन्–आभरणों की; वरुक्कमुम्–राशियाँ; वरम्पिल–असीम; नन्नि–खूब; वळङ्कित्तान्–भेंट किया। ४१४६

हनुमान ने भरत की इच्छा के अनुसार अपना रूप छोटा कर लिया। फिर नमस्कार करके उनके समक्ष खड़ा रहा। तब उस अर्क-शिष्य को भरत ने झट निधियाँ, धारण योग्य अनेक आभरणों की राशियाँ आदि अपार रूप में खूब दान किया। ४१४६

कोवॊडु तूशुनऱ् कुलम णिक्कुऴाम्, मावॊडु परिक्कुलम् वादु तेरिन्नम्
तावुनी रुडुत्तनऱ् ऱरणि तन्नुडन्, एवरुञ् जिलैवलान् यावु नल्हित्तान् 4147

एवरुम्–शर-प्रेषक; चिलै वलान्–धनुर्विद्या में दक्ष; कोवॊटु–गायों के साथ; तूशु–वस्त्र; नल् कुलम् मणि–उत्तम जाति के रत्नों के; कुऴाम्–समूह; मावॊटु–हाथी और; कुलम्परि–श्रेष्ठ अश्व; वादु–तेज जानेवाले; तेर् इनम्–रथवृन्द; तावुम् नीर्–उछल जाते जल से; उडुत्त–आवृत; नल् तरणि तन्नुटन्–श्रेष्ठ भूमि के साथ; यावुम् नल्कित्तान्–सभी दान में दिया। ४१४७

बाण-प्रेषण-धनुर्निपुण भरत ने और भी गायें, वस्त्र, हाथी, उत्तम रत्नों के ढेर, कुलीन अश्व, तेज चलनेवाले रथों के वृन्द और उछलकर बहने वाले जल से आवृत उत्तम भूमि आदि भी दान में दिया। ४१४७

इळवलै यण्णलुक् कॆदिर्हॊण् मॆन्नुनम्
वळैमदि लयोत्तियिल् वाऴु माक्कळॆक्
किळैयॊडु मेहॆन्नक् किळत्ति यॆङ्गणुम्
अळैयॊलि मुरशिन्न मऱैविप् पायॆन्ऱान् 4148

इळवलै–छोटे भाई से; वळै मतिल्–गोलाकार प्राचीर वाली; अयोत्तियिल् वाऴुम्–अयोध्या में रहनेवाले; माक्कळै–लोगों को; अण्णलुक्कु–महिमावान प्रभु को; ऎतिर् कॊणम्–अगवानी करें; ऎन्नुम्–ऐसा और; किळैयॊटुम्–परिवारों के साथ; एकु–चलो; ऎन्न–ऐसा; किळत्ति–बताने के लिए; ऎङ्कणुम्–सर्वत्र;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अळै ऑलि–गूंजनेवाली ध्वनि की; मुरचु इतम्–भेरियों के समूह को; अऱैविप्पाय्–पिटवा दो; ऍन्ऱान्–ऐसा कहा। ४१४८

तब भरत ने अपने कनिष्ठ भ्राता शत्रुघ्न से कहा। आवरणयुक्त अयोध्या के वासियों को बड़ी ध्वनि निकलनेवाली भेरियाँ पिटवाकर खबर दो कि वे महिमावान प्रभु के आवभगत में जायँ और अपने बंधु-बांधवों को भी साथ लायें। ४१४८

तोरण नट्टुमेऱ् तुहिल्पॊ दिन्दुनऱ्, पूरणप् पॊऱ्कुडम् बॊलिय वैत्तुनीळ्
वारण मिवुळितेऱ् वरिशै तान्वळाच्, चीरणि यणिहॆनच् चॆप्पु वायॆन्ऱान् 4149

तोरणम् नट्टु–तोरण आदि गाड़कर; मेल्–खम्भों के ऊपर; तुकिल्–वस्त्रों से; पॊतिन्तु–आच्छादित करके; नल्–श्रेष्ठ; पूरणम् पॊन् कुटम्–स्वर्णपूर्ण कुंभ; पॊलिय–शोभायुक्त; वैत्तु–रखकर; नीळ्–बड़े; वारणम्–गजों; इवुळि–अश्वों और; तेर–रथों को; वरिचै वळा–क्रम भंग न करके; चीर् अणि–श्रेष्ठ अलंकार; अणिक ऍत–अलंकृत करो, ऐसा; चॆप्पुवाय–कहो; ऍन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१४९

तोरण गाड़कर उन पर वस्त्राच्छादन करें। सुंदर पूर्णकुंभ तैयार कर रखें। बड़े गजों को, अश्वों को और रथों को उचित रीति से पंक्तियों में रखकर नगर को श्रेष्ठ अलंकारों से अलंकृत करें। —यह सब मुनादी पिटवा दो। भरत ने यों कहा। ४१४९

परत्तुव तुऱैविडत् तळवुम् बैम्बॊन्नीळ्
शिरत्तॊहै मदिऱ्पुऱत् तिरुदि शेऱ्दर
वरत्तहु तरळमॆन् पन्दर् वैत्तुवान्
पुरत्तॆयुम् बुदुक्कुमा पुहऱि पोयॆन्ऱान् 4150

परत्तुवत्–भरद्वाज के; उऱैविटत्तु अळवुम्–आश्रम से लेकर; पॆम् पॊन्निन्–श्रेष्ठ स्वर्ण के; नीळ्–लंबे; चिरम्–शिखरों के; तॊकै–समूह के; मतिल् पुऱत्तु–प्राचीर के; इरुति अळवुम्–अंत तक; चेर् तर–मिलाकर; वरम् तर–श्रेष्ठ, युक्त; तरळम्–मोतियों का; मॆल् पन्तर् वैत्तु–सुखद (मृदु) वितान बनाकर; वान् पुरत्तॆयुम्–उत्तम नगर को भी; पुतुक्कुमा–नवीन बना लेने को; पोय् पुकऱि–जाकर कह दो; ऍन्ऱान्–कहा। ४१५०

स्वर्णशिखरसहित अयोध्या के प्राचीरों के छोर से भरद्वाज जी के वासस्थान तक श्रेष्ठ मोतियों का वितान तनवा दो। अयोध्या का नवीनीकरण करा दें —यह भी कहो। ४१५०

ऍन्ऱलु मवनडि यिऱैञ्जि यॆय्दियक्
कुन्ऱुऱळ् वरिशिलैक् कुववुत् तोळिन्तान्
नन्ऱुणर् केळ्विय नवैयिल् शॆय्हैयन्
तन्ऱुणैच् चुमन्दिरऱ् करियच् चाऱ्ऱिनान् 4151

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्ऱुलुम्–कहते ही; वरिचिलै–सबंध धनुर्धर; अ कुन्ऱु उऱ्ऱ–वे पर्वतोपम; कुवव्–पुष्ट; तोळिनान्–कंधों वाले; अवन्–उनके; अटि–चरणों में; इऱैञ्चि ऍय्ति–नमस्कार करके जाकर; नन्ऱु उणर्–खूब ज्ञात; केळ्वियन्–श्रौतज्ञान वाले; मवै इल्–अनिंद्य; चॅय्कैयन्–कार्यों के कर्ता; तन् तुणै–अपने मित्र; चुमन्तिरऱ्कु–सुमन्त्र के पास; अऱिय–समझाकर; चाऱ्ऱिनान्–बोल दिये। ४१५१

भरत के यों कहने पर सबंध धनुर्धर पर्वतोपम कंधों वाले शत्रुघ्न भरत के चरणों में नमस्कार करके गया और श्रौतज्ञान के समृद्ध, निर्दोष कार्य करनेवाले अपने मित्र सुमंत्र से भरत की आज्ञा सुना दी। ४१५१

अव्वुरै केट्टलु मऱिवित् वेलैयान्
कव्वैयि लन्बिनाऱ् कळिक्कुऱ् जिन्दैयान्
वॅव्वॅयि लॅऱिमणि वीदि यॅङ्गणुम्
ऍव्वमिन् ऱुऱैपऱै यॅऱ्ऱु हॅन्ऱिड 4152

अऱिवित् वेलैयान्–ज्ञान-सागर के; अव् उरै–वह वचन; केट्टलुम्–सुनते ही; कव्वै इल्–निर्दोष; अन्पिनाल्–प्रेम से; कळिक्कुम्–मुदित; चिन्तैयान्–मन से; वॅव्वॅयिल् ऍऱिमणि–प्यारी छवि बिखेरनेवाले रत्नों से पूर्ण; वीति ऍङ्कणुम्–सभी वीथियों में; ऍव्वम् इन्ऱु–दोषहीन रीति से; अऱै पऱै–पिट सकनेवाले ढिंढोरे; ऍऱ्ऱुक–पीटो; ऍन्ऱिट–कहने पर। ४१५२

ज्ञानसागर सुमंत्र का निर्दोष मन यह वचन सुनकर उत्साह से भर गया। उसने 'वळ्ळुवर' लोगों को आज्ञा दी कि उज्ज्वल रत्नमय वीथियों में ठीक तरह से बजनेवाली भेरियाँ हाथियों पर लेकर पीटो और मुनादी करा दो। ४१५२

वानैयुन् दिशैयैयुङ् गडन्द वान्पुहळ्क्
कोनैयित् ऱॅदिर्हॊळ्वान् कोल मानहर्त्
तानैयु मरशरु मॅळुह तानॅना
यानैयित् वळ्ळुवर् मुरश मॅऱ्ऱिनार् 4153

वानैयुम्–आकाश को; तिचैयैयुम्–और दिशाओं को; कटन्त–जो पार कर चुका; वान् पुकळ्–ऐसे श्रेष्ठ यश के भाजन; कोनै–राजा की; इन्ऱु–आज; ऍतिर् कॊळ्वान्–अगवानी करने के लिए; कोलम्–सुन्दर; मा नकर्–महान नगर की; तानैयुम्–सेना; अरचरुम्–राजा लोग; ऍळुक–उठें; ऍना–ऐसा; यानैयित्–गजों पर से; वळ्ळुवर्–'वळ्ळुवर' लोगों ने; मुरचम्–ढिंढोरा; ऍऱ्ऱिनार्–पिटवाया। ४१५३

"आकाश-दिशा-पार यशस्वी श्रीराम की अगवानी के लिए सुंदर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तथा बड़े नगर अयोध्या की सेना और अयोध्या के राजा लोग उठ आयें।" ऐसा हाथियों पर रहकर 'वळ्ळुवरों' ने ढिंढोरा पीटा। ४१५३

मुरशॊलि केट्टलु मुऴङ्गु मानहर्
अरशरु मान्दरु मन्द णाळरुम्
करैशॆय लरियदो रुवहै कॆतरत्
तिरैशॆऱि कडलॆत वॆऴुन्दु शॆन्ऱवाल् 4154

मुरचु ऒलि–ढिंढोरे की ध्वनि; केट्टलुम्–सुनते ही; करै चॆयल्–सीमा बाँधना; अरियतु–जिसका कठिन हो; ओर् उवकै–ऐसा एक संतोष; कॆ तर–अधिक हुआ; अरचरुम्–राजा और; मान्तरुम्–प्रजाजन और; अन्तणाळरुम्–ब्राह्मण लोग; मुऴङ्कुम्–कोलाहलमय; मा नकर्–बड़ा नगर; तिरै चॆऱि–तरंगाकीर्ण; कटल्–सागर; ऍत–सम; ऍऴुन्तु चॆन्ऱ–उठ चला। ४१५४

ढिंढोरे की ध्वनि सुनते ही सबके मन में अपार हर्ष उमड़ा। राजा लोग, प्रजाजन और ब्राह्मणों के साथ कोलाहलमय वह अयोध्या नगर तरंगाकुल समुद्र के समान उठ चला। ४१५४

अनहनै यॆदिर्हॊळ्हॆन् ऱऱैन्द पेरिनऱ्
कनहनल् कूर्न्दवर् कैप्पट् टॆन्नवुम्
शनहन दूर्क्कॆन मुन्नम् जाऱ्ऱिय
वनैकडिप् पेरियु मॊत्त वामरो 4155

अनकनै–अनघ श्रीराम का; ऍतिर् कॊळ्क–आवभगत करें; ऍन्ऱु–ऐसा; पेरि–भेरियाँ; नल् कनकम्–श्रेष्ठ स्वर्ण; नल् कूर्न्तवर्–दरिद्र को; कै पट्टु–मिल गया; ऍन्नवुम्–जैसा और; चनकनतु–जनक के; ऊर्क्कु–नगर को (जाओ); ऍत–ऐसा; मुन्नम् चाऱ्ऱिय–पहले पीटी गयी; वनै–सुंदर बनी; कडि पेरियुम्–विवाह-भेरी; ऒत्त आम्–के समान रही। ४१५५

'अनघ श्रीराम की अगवानी के लिए उठ आयें' —यह जो मुनादी उस दिन पीटी गयी, वह उस दिन का स्मरण दिलाती थी— जिस दिन जनक-राज के नगर को उठ जाने की आज्ञा कही गयी; और दरिद्र को निधि प्राप्त होने पर जो आनंद होगा वैसा आनंद दिलाती थी। ४१५५

अऱुबदि नायिर मक्कु रोणियॆन्
ऱिऱुदिशॆय् शॆनैयु मेनै वेन्दरुम्
शॆऱिनहर् मान्दरुन् वॆरिवै मार्हळुम्
उऱुपॊरु ळॆविर्न्दॆन वुवन्दु पोयिनार् 4156

अऱुपतिनायिरम्–साठ हजार; अक्कुरोणि–अक्षौहिणी; ऍन्ऱु–ऐसा; इऱुति चॆय्–गिनी हुई; चेनैयुम्–सेना और; एनै वेन्तरुम्–अन्य राजा; चॆऱि नकर्–समृद्ध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नगर के; मान्तरुम्-वासी और; तॆरिवॆमार्कळुम्-स्त्रियाँ; उऱु पॊरुळ्-इच्छित वस्तु; ऍतिर्न्तॆत-मिली जैसे; उवन्तु पोयित्तार्-खुश होकर गये। ४१५६

निश्चित रूप से साठ हज़ार अक्षौहिणी की सेना और राजा, समृद्ध अयोध्यावासी प्रजाजन, स्त्रियाँ --सभी मानो इच्छित वस्तु की प्राप्ति की अभिलाषा से, उत्साह के साथ गये। ४१५६

अन्नैयर् मूवरु मम्मरर् पोऱ्ऱिडप्
पॊन्नियल् शिविहैयि नॆळुन्दु पोयपिन्
तन्निहर् मुनिवरुन् दमरुञ् जूळ्तर
मन्नवन् मारुदि मलर्क्कै पऱ्ऱुऱा 4157

अन्नैयर् मूवरुम्-तीनों जननियाँ; अमरर् पोऱ्ऱिट-देवों के स्तुति करते; पॊन् इयल्-स्वर्णनिर्मित; चिविकैयिन्-शिविका में; ऍळुन्तु-उठकर; पोय पिन्-गयीं फिर; मन्नवन्-राजा; तम् निकर्-स्वोपम; मुनिवरुम्-मुनियों और; तमरुम्-परिवारों के; चूळ् तर-घेरे आते; मारुति-मारुति का; मलर् कै-कमल-हस्त; पऱ्ऱुऱा-पकड़े। ४१५७

तीनों जननियाँ, देवों की स्तुति सुनते हुए स्वर्णनिर्मित शिविकाओं में निकल चलीं। बाद राजा भरत स्वोपम मुनिगण और अपने परिवारों के साथ हनुमान के कमल-चरण को हाथ में लिये हुए (चले)। ४१५७

तिरुवडि यिरण्डुमे शॆम्बॊन् मौलिया, इरुपुऱञ् जामरै यिरट्ट वेळ्कडल्
वॆरुवरु मुळक्कॆन वेळ मार्त्तॆळप्, पॊरुवरु वॆण्कुडै निळऱ्ऱप् पोयित्तान् 4158

तिरुवटि इरण्टुम्-दोनों पादुकाओं को; चॆम् पॊन्-लाल स्वर्ण के; मौलिया-किरीट का स्थान देकर; इरु पुऱम्-दोनों बाजुओं में; चामरै-चामरों के; इरट्ट-डुलते; एळु कटल्-सात समुद्रों को; वॆरुवरु-भयभीत करनेवाली; मुळक्कु-ध्वनि; ऍन-जैसी; वेळम्-बाजाओं के; आर्त्तु ऍळ-बजते; पॊरु अरु-अनुपम; वॆण् कुटै-श्वेतछत्र के; निळऱ्ऱ-छाँह देते; पोयित्तान्-गये। ४१५८

उनके सिर पर किरीट के स्थान पर खरे सोने की (श्रीराम-) पादुकाएँ थीं। दोनों बाजुओं में चामर डुलता था। सातों समुद्रों के सम्मिलित गर्जन की-सी ध्वनि में बाजे बजते जाते थे। उनके ऊपर श्वेतछत्र छाया दे रहा था। ४१५८

ऍल्लवन् मऱैन्दन नॆत्तै याळुडै
विल्लियै यॆदिर्हॊळप् परदन् मीच्चॆल्वान्
अल्लियङ् गमलमे यळैय ताळ्हळिल्
कल्लदर् शुडुन्दन कदिरि नॆत्तवे 4159

परतन्-भरत; ऍन्तै-मेरे; आळ् उटै-शासक (श्रीराम); विल्लियै-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कोदंडपाणी का; ऍतिर् कॊळ्–आवभगत करने; मीच् चॆल्बान्–भूमि पर चलते हैं; अल्लि–दलसंकुल; अम्–सुंदर; कमलमे–कमल ही; अन्नैय–सम; ताळ्कळिल्–पैरों में; कल् अतर्–कंकड़ीला मार्ग; तन् कतिरिल्–अपनी किरणों से; चुटुम्–जलायगा; ऍन्न–समझकर; ऍल्लवन्–सूर्य; मऱैन्ततन्–छिप गया। ४१५९

"भरत हमारे (कवि के) शासक कोदंडपाणी के स्वागत के लिए भूमि पर पैदल जा रहा है। उसका पथरीला मार्ग, मेरी किरणों से ताप पाकर उसके दलसंकुल कमल-सम चरणों को जला देगा।" —(यह होने देना नहीं चाहिए) यह समझकर सूर्य डूब गया। ४१५९

अव्वळि मारुदि यङ्गै पऱ्ऱिय
शॆव्वळि युळ्ळत्तान् तिरुवि नायहन्
ऍव्वळि युऱैन्ददच् चॆयलॆ लाम्विरित्
तिव्वळि यॆमक्कुनी यियम्बु वायॆन्ऱान् 4160

अव् वळि–तब; मारुति–मारुति के; अम्–सुंदर; कै–हाथ को; पऱ्ऱिय–पकड़े रहे; चॆव्वळि–सीधे-सादे; उळ्ळत्तान्–मनवाले भरत ने; तिरुविन् नायकन्–श्रियःपति; ऍ वळि उऱैन्ततु–कहाँ ठहरे थे; अ चॆयल्–वह हाल; ऍलाम्–सारा; नी–तुम; ऍमक्कु–हमें; इ वळि–अब; विरित्तु इयम्पुवाय्–विस्तार से कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ४१६०

तब आर्जव-मन भरत ने, जो कि हनुमान का हाथ पकड़े जा रहे थे, उससे कहा कि वन में श्रियःपति कहाँ-कहाँ ठहरे, क्या-क्या किया ? —आदि बातें विस्तार के साथ तुम अभी हमें बताओ। ४१६०

ऍन्ऱलु मारुदि वणङ्गि यॆम्विरान्, मन्ऱलर् तॊडैयिना ययोत्ति मानहर्
निन्ऱदु मणविनै निरप्पि मीण्डुकान्, शॆन्ऱदुम् नायिनॆन् शॆप्पल् वेण्डुमो 4161

ऍन्ऱलुम्–कहने पर; मारुति–मारुति; वणङ्कि–नमन करके; मन्ऱ–सुगन्धपूर्ण; अलर्–खिले फूलों की; तॊडैयिनाय्–मालाधारी; ऍम्पिरान्–हमारे प्रभु का; मा अयोत्ति नकर्–महा अयोध्या नगर में; निन्ऱदुम्–वास; मणम्–विवाह; विनै निरम्पि–कार्य पूरा करके; मीण्टु–लौटकर आने के बाद; कान् चन्ऱदुम्–जंगल जाना; नायिनॆन्–मुझ दास को; चॆप्पल्–कहना; वेण्टुमो–चाहिए क्या। ४१६१

यह सुनकर हनुमान ने उत्तर दिया। सुगंधित तथा प्रफुल्लित पुष्पों की मालाधारी ! हमारे प्रभु का अयोध्यावास, विवाहोपरांत अयोध्या में प्रत्यागमन, फिर वनगमन आदि वृत्तांत, मुझ कुत्ते को कहना पड़ेगा क्या ? नहीं न ! । ४१६१

शित्तिर कूडत्तॆत् तीर्न्द पिन्शिरम्
पत्तुडै यवनुडन् विळैन्द पण्बॆलाम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इत्तलै यडन्ददु मिरुदियाय पोर्
वित्तहत् तूवनुम् विरिक्कुञ् जिन्दैयान् 4162

चित्तिर कूटत्तै–चित्रकूट को; तीर्न्तपिन्–छोड़ने के बाद; चिरम् पत्तु उटै–दशग्रीव से सम्बंधित; विळैन्त–जो हुआ; पण्पु ऍलाम्–वह सारा हाल; इ तलै–यहाँ तक; अटैन्ततुम्–आने का हाल; इरुतियाक–(तब) तक; पोर् वित्तकम्–समर्थ योद्धा; तूततुम्–दूत; विरिक्कुम्–वर्णन करने का; चिन्तैयान्–विचार किया (हनुमान ने)। ४१६२

हनुमान ने सोचा कि चित्रकूट-त्याग से लेकर श्रीराम-दशग्रीव-वृत्तांत और अपने यहाँ आने का हेतु और हाल बखानूँ। ४१६२

कुन्रुरळ् वरिशिलैक् कुरिशि लॅम्बिरान्
तॅन्रिशैच् चित्तिर कूडन् दीर्न्दपिन्
वन्रिरल् विरादनै मडित्तु मादवर्
तुन्रिय तण्डह वनत्तुळ् तुन्निनान् 4163

कुन्रु उरुळ्–पर्वतोपम; वरिचिलै–सबंध कोदण्ड के; कुरिचिल्–धारक राजाराम; ऍम्पिरान्–हमारे प्रभु; तॅन् तिचै–दक्षिण दिशा के; चित्तिर कूटम्–चित्रकूट को; तीर्न्त पिन्–छोड़ने के बाद; वल् तिरल्–कठोर बली; विरातनै–विराध को; मडित्तु–मारकर; मातवर्–महा तपस्वियों से; तुन्रिय–पूर्ण जो रहता है; तण्टक वनत्तुळ्–उस दण्डकवन में; तुन्निनान्–गये। ४१६३

पर्वत-सदृश तथा सबंध धनु के धारक, हमारे पुरुषोत्तम दक्षिण दिशा में चित्रकूट को छोड़ जाने के बाद कठोर बलवान विराध का संहार करके महातपस्वियों से भरे दंडकवन में पहुँचे। ४१६३

आङ्गुरै तबोदन रक्करक् काऱ्ऱलेम्
नीङ्गिनन् दवत्तुरै नीदि योयॅनत्
तीङ्गुशॅय् बवर्हळैच् चॅहुत्तल् तिण्णनीर्
वाङ्गुमिन् मनत्तुयर् वाय्मै यालॅन्ऱान् 4164

आङ्कु उरै–वहाँ रहे; तपोतनर्–तपोधनों के; नीतियोय्–नीतिमान; अरक्करक्कु–राक्षसों (के अत्याचार) को; आऱ्ऱलेम्–नहीं सह सकते; तवम् तुऱ नीङ्किनम्–तपस्या का मार्ग छोड़ चुके; अॅन–ऐसा करने पर; तीङ्कु चॅय्पवर्कळै–आततायियों को; चॅकुत्तल्–मारना; तिण्णम्–ध्रुव है; वाय्मैयाल्–मेरे सत्य-वचन से; नीर्–आप लोग; मनम् तुयर्–मन का दुःख; वाङ्कुमिन्–छोड़ दें; ऍन्ऱान्–कहा। ४१६४

वहाँ के वासी, तपोधनों ने श्रीराम से अपना कष्ट निवेदन किया। हे नीतिमान ! राक्षसों द्वारा दिये जानेवाले कष्टों को हम नहीं सह पाते। हम अपने तप के मार्ग से हट ही गये हैं। तब श्रीराम ने आश्वासन दिया

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कि आततायियों का दमन निश्चय होगा। आप हमारे वचन के बल पर निश्चित हो जायँ। ४१६४

आऱुना लाण्डवण् वैहि यप्पुऱत्
तीऱिला मुनिवर रेय वाणैयाल्
माऱिलात् तमिऴ्मुनि वनत्तै नण्णिनान्
ऊऱिला मुनिवर नुबन्दु मुन्वर 4165

आऱु नाल् आण्टु–छः और चार (दस) साल; अवण्–वहाँ; वैकि–रहकर; अ पुऱत्तु–उसके पश्चात; ईऱु इला–अनंत; मुनिवरर्–मुनिवरों की; एय–कही हुई; आणैयाल्–आज्ञा के अनुसार; माऱु इला–अप्रतिम; तमिऴ् मुनि वनत्तै–तमिऴ ऋषि (अगस्त्य) के वन में; ऊऱु इला–दुःखहीन; मुनिवरन्–मुनिवर के; उवन्तु–खुशी से; मुन्वर–आवभगत करने पर; नण्णिनान्–गये। ४१६५

श्रीराम दस साल वहाँ रहे। बाद अपार मुनिपुंगवों की हिदायत के अनुसार अप्रतिम तमिऴ ऋषि (अगस्त्य) के आश्रम गये। चिंताहीन मुनि-पुंगव ने आनंद के साथ उनका आवभगत किया। ४१६५

कुडङ्गैयिल् वारिदि यणैत्तुक् कॊण्डवन्
तडङ्गणान् तनैयेदिर् तऴुविच् चाबमुम्
कडुङ्गणैप् पुट्टिलुङ् गवशन् दानुमत्
तिडम्बडु शुरिहैयुञ् जेर वीन्दनन् 4166

कुटङ्कैयिल्–हथेली में (अंजलि में); वारिति–वारिधि को; अणैत्तुक् कॊण्टवन्–जिन्होंने समा लिया था; तट कणान् तनै–उन्होंने विशालाक्ष श्रीराम का; ऎतिर् तऴुवि–सामने से आलिंगन करके; चापमुम्–धनु और; कटुकणै–तेज बाणों से भरे; पुट्टिलुम्–तूणीरों को; कवचम् तानुम्–और कवच को; अ–उतने; तिटम् पटु–सुदृढ़; चुरिकैयुम्–छुरे; चेर–के साथ; इन्ननन्–प्रदान किये। ४१६६

अगस्त्य मुनि ने, जिन्होंने अंजलि में समुद्र को उठाकर आचमन किया था, विशालाक्ष श्रीराम को आलिंगन कर लिया। और उन्हें चाप, तेज़ शरों के (दो) तूणीर, कवच और सुदृढ़ छुरा —यह सब प्रदान किया। ४१६६

अप्पुऱत् तॆरुवैयि नरशैक् कणणुऱात्
तुप्पुऱच् चिवन्दवाय्त् तोहै तनुनुडन्
मॆय्प्पुहऴ्त् तम्बियुम् वीरन् तानुम्बोय्
मैप्पॊऴि लुऱुपऱ्ज वडियिन् वैहिनार् 4167

अ पुऱत्तु–उसके बाद; तुप्पु उऱ–प्रवाल-सम; चिवनत वाय्–लाल अधरों की; तोकै तनुनुटन्–कलापी-सी देवी के साथ; मॆय् पुकऴ्–सच्चे यशस्वी; तम्पियुम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कनिष्ठ सहोदर के साथ; वीरन्-वीर; तानुम्-भी; पोय्-जाकर; ऍरुमैयिन् अरचै-गीधों के राजा से; कण् उऱा-भेंटकर; मै उऱु-मेघाश्रय; पोऴिल्-वनों से पूर्ण; पञ्चवटियिन्-पंचवटी में; वैकिनार्-ठहरे। ४१६७

उसके बाद प्रवालाधरा कलापी-सी सीताजी, सच्चे यशस्वी वीर लक्ष्मण और श्रीराम आगे गये और उन्होंने गीधों के राजा जटायु से भेंट की। फिर मेघाश्रय वनों से पूर्ण पंचवटी में जा ठहरे। ४१६७

पल्पह लिऱन्द पिन्ऱैप् पादह वरक्कि तोन्ऱि
मॆल्लिय विडैयि नाळै वॆहुण्डुऴि यिळैय वीरन्
अल्हिय तिरुवैत् तेऱ्ऱि यवळुडैच् चॆवियु मूक्कुम्
मल्हिय मुलैयुङ् गॊय्दान् मऱित्तवळ् करऱ्कुच् चॊन्नाळ् 4168

पल् पकल्-अनेक दिन; इऱन्त पिन्ऱै-बीते, बाद; पातक अरक्कि-पातकिनी राक्षसी; तोन्ऱि-प्रगट होकर; मॆल्लिय इटैयिनाळै-पतली कमर वाली सीता से; वॆकुण्टुऴि-द्वेष करने लगी तो; इळैय वीरन्-छोटे वीर; अल्किय-दुःखी हुई; तिरुवै-श्रीसीता को; तेऱ्ऱि-आश्वासन देकर; अवळ् उटै-उसके; चॆवियुम् मूक्कुम्-कान और नाक को; मल्किय-स्थूल; मुलैयुम्-स्तनों को; कॊय्तान्-काट दिया; अवळ्-उसने; मऱित्तु-बाद; करऱ्कु-खर को; चॊन्नाळ्-बताया। ४१६८

वहाँ अनेक दिन बीते। वहीं राक्षसी शूर्पणखा आयी और उसने क्षीणकटि सीता से द्वेष किया। सीताजी दुःखी हुईं तो छोटे वीर लक्ष्मण ने उनको आश्वस्त करके उस राक्षसी के कानों, नाक और स्थूल स्तनों को काट दिया। वह जाकर खर से बोली। ४१६८

करनॊडु तिरिशि रावुङ् गडियतू डणनुङ् गान्दि
ऍरियुमून् ऱनले यॊप्पा रॆऴुन्दुवॆञ् जेनै योडुम्
विरविन रैयन् शॆङ्गै विल्लिनै नोक्कु मुन्बोर्
ऍरितवळ् पञ्जि नुक्का ररक्कियु मिलङ्गै पुक्कान् 4169

करनॊटु-खर के साथ; तिरिचिरावुम्-त्रिशिरा और; कटिय-क्रूर; तूटणनुम्-दूषण; कान्ति-खौलकर; ऍरियुम्-जलती; मूनुऱ अनने ऒप्पार्-तीन अग्नियों के समान; ऎऴुन्तु-उठकर; वॆम्-भयंकर; चेनैयोटुम्-सेना लेकर; विरविनर्-मिले आये; ऐयन्-प्रभु के; चॆ कै-लाल हाथ के; विल्लिनै-धनु को; नोक्कुम् मुन्पु-देखने से पहले; ऍरि-आग में; तवळ्-गिरी; पञ्चिन्-रूई के समान; उक्कार्-अदृश्य हो गये; अरक्कियुम्-राक्षसी भी; इलङ्कै पुक्काळ्-लंका जा पहुँची। ४१६९

खर, त्रिशिरा और क्रूर दूषण तीनों त्रिदंड के समान मिलकर तीनों अग्नियों के समान आये। उनके साथ भयंकर विराट् सेना भी आयी। श्रीराम अपने सुन्दर धनु को निहारें (लड़ें) इसके पहले ही अग्निगत रूई के समान वे राक्षस मिट गये। बाद राक्षसी लंका पहुँची। ४१६९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरुपदु तडक्कै यान्माट् टिशैत्तलु मॅऴुन्दु पॊङ्गि
ऒरुपदु तिशैयु मुट्क वञ्जह वुऴैयॊन् ऱेवित्
तरुपदञ् जमैन्द मुक्कोऱ् ऱाबद वडिवङ् गॊण्डु
तिरुविनै निलत्तॊ डेनदित् तॆन्ऱिशै यिलङ्गै पुक्कान् 4170

इरुपतु तटकैयान् माट्टु–बीस बड़े-बड़े हाथों वाले रावण के पास; इचैत्तुलुतम्–उसके कहते ही; पॊङ्कि ऎऴुन्तु–खौल उठकर; ऒरु पतु–दसों; तिचैयुम्–दिशाओं को; उट्क–भयभीत करते हुए; वञ्चकम् उऴै–मायामृग; ऒन्ऱु एवि–एक भेजकर; तरु पतम्–ऐन समय पर; चमैन्त–(तीन सिरों का) बना; मुक्कोल्–त्रिदण्डधारी; तापतन्–तपस्वी का; वटिवु कॊण्टु–वेश धरकर; तिरुविनै–श्री सीताजी को; निलत्तॊटु एन्ति–भूमि के साथ उठाकर; तॆन् तिचै–दक्षिण दिशा में; इलङ्कै पुक्कान्–लंका पहुँचा। ४१७०

बीस भुजाओं वाले रावण के पास शूर्पणखा के शिकायत करने पर वह बौखला उठा। दशों दिशाओं में भय भरते हुए उसने एक मायामृग को भेजा। वह हरिण श्रीराम को बहका ले जाता रहा। मौक़ा पाकर त्रिदंडी संन्यासी का रूप धरकर रावण आया और सीता को भूमि के साथ उठा लेते हुए लंका पहुँचा। ४१७०

पोहिन्ऱ कालै येऱ्ऱ शडायुवैप् पॊरुदु वीट्टि
वेहिन्ऱ वुळ्ळत् ताळै वॆञ्जिऱै यदनिन् वैत्तान्
एहिन्ऱ वञ्ज मान्मा रीशऱ्कॊन् ऱिळव लोडु
पाहिन्ऱ कीर्त्ति यण्णल् तन्दैयैप् परिविऱ् कण्डान् 4171

पोकिन्ऱ कालै–जाते समय; एऱ्ऱ–सामने जो आया; चटायुवै–उस जटायु से; पॊरुतु–लड़कर; वीट्टि–संहार कर; वेकिन्ऱ–तप्त; उळ्ळत्ताळै–मन वाली सीताजी को; वॆम् चिऱै अतनिन्–कठोर कारा में; वैत्तान्–बंद रखा; पाकिन्ऱ–फैलते; कीर्त्ति अण्णल्–यश के स्वामी; एकिन्ऱ–बहका ले जानेवाले; वञ्चम्मान्–मायामृग के रूप में जो था उस; मारीचन् कॊन्ऱु–मारीच का हनन करके; इळवलोटु–लक्ष्मण के साथ; तन्तैयै–पिता (जटायु) को; परिविल्–प्यार के साथ; कण्टान्–मिले। ४१७१

जब वह देवी को अपहरण करके ले जा रहा था तब जटायु रोकने आया। रावण ने उसे काट गिराया। तप्त मनवाली सीता को कठोर कारा में रख दिया। उधर विस्तारशील यशस्वी श्रीराम ने माया-मृग के रूप में रहे मारीच को मार दिया जो कि उन्हें बहका ले जा रहा था। फिर वे लघुराज के साथ गये और पिता (-सम) जटायु को मिले। ४१७१

अन्नवन् तन्नक्कु वेण्डु मरुङ्गडन् मुऱैयि नाऱ्ऱि
नन्नुदल् तन्नैत् तेडित् तॆन्ऱिशै नडक्कु मैयत्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन्नित्य कवन्दन् तन्नै युयिरोडु शाब माऱ्ऱित्
तन्नैये मऱप्पि लाद शबरिपू शनैयुङ् गोण्डान् 4172

अन्नवन् तनक्कु–उस जटायु के; वेण्टुम्–कर्तव्य; अरु कटन्–दाहकर्म आदि; मुऱैयिन् आऱ्ऱि–यथाक्रम पूरा करके; मल् नुतल् तन्नै–श्रेष्ठ भाल वाली को; तेटि–खोजते हुए; तॆन् तिचै–दक्षिण दिशा में; नटक्कुम् ऐयन्–जो गये वे श्रीराम; मन्नित्य–आ जो लगा उस; कवन्तन् तन्नै–कबंध को; उयिरोटु–प्राणों के साथ; चापम् माऱ्ऱि–शाप बदलकर (आगे गये और); तन्नै–उनको; मऱप्पु इलात–जो नहीं भूलती थीं; चबरि–उस शबरी को; पूचनैयुम्–पूजा को भी; कोण्टान्–स्वीकार कर लिया। ४१७२

मृत जटायु का दाहकर्म यथाविधि संपन्न करके श्रीराम और लक्ष्मण सुन्दर भालवाली सीता की खोज में दक्षिण दिशा में गये। रास्ते में कबंध के प्राणों तथा उसके शाप का अंत किया। फिर श्रीराम ने शबरी का पूजा-सत्कार स्वीकार किया जो कि उन्हें कभी भूलती नहीं थी। ४१७२

आङ्गवळ् तनदु शॊल्ला लरुक्कन्मा महनै यण्मिप्
पाङ्गुऱ नट्टु वालि परुवरल् कॆडुप्प लॆन्ना
ओङ्गिय मरमुम् वालि युरमुमू डुरुब वॆय्दिट्
टाङ्गवन् तनक्कुच् चॆल्व मरशॊडु मरुळि नीन्वान् 4173

आङ्कु–वहाँ; अवळ् तनतु–उसके; चॊल्लाल्–कथनानुसार; अरुक्कन्–सूर्य के; मा मकनै–श्रेष्ठ पुत्र के; अण्मि–पास जाकर; पाङ्कुऱ–उचित रीति से; नट्टु–मित्रता करके; वालि–वाली का (दिया); परुवरल्–संकट; कॆटुप्पल्–दूर करूँगा; ऍन्ना–कहकर; ओङ्किय मरमुम्–उन्नत (साल) वृक्षों; वालि उरमुम्–और वाली के वक्ष को; ऊटुरुब–भेदते हुए; ऍय्तिट्टु–बाण चलाकर; आङ्कु–वहाँ; अवन् तनक्कु–उसे; चॆल्वम्–राजधन; अरचॊटुम्–शासन के साथ; अरुळिन्–कृपा से; ईन्तान्–दिया। ४१७३

तब उसने जो कहा, उस कथनानुसार वे सूर्य के उत्तम पुत्र के पास आये। उनसे उत्तम रीति से मित्रता बना ली। वादा किया कि वाली रूपी कंटक को निकाल दूँगा। फिर उन्होंने सातों ऊँचे साल वृक्षों और बाली के वक्ष को भेदते हुए शर चलाया और वचन के अनुसार सुग्रीव को राज्य-धन के साथ शासनाधिकार भी दिलाया। ४१७३

कालमा मारि नीङ्गक् कवयनो डिडबन् कान्दु
नीलन्मा मयिन्दन् शाम्बन् शदवलि पनश नीडु
वालिमा मैन्द नॆन्ऱिव् वानरत् तलैव रोडु
कूलवान् शेनै शूळ वडैन्दन नॆङ्गळ् कोमान् 4174

मा मारि कालम्–लंबा वर्षाकाल; नीङ्क–बीत गया; कवयनोटु–गवय के साथ; इटपन्–ऋषभ; कान्तुम्–क्रुद्ध; नीलन्–नील और; मा–बड़ा;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मयिन्तन्-मैंद; चाम्पन्-जाम्बवान; चतवलि पनचन्-शतबली, पनस; नीट-यशोवृद्ध; वालि मा मैन्तन्-वाली का बड़ा पुत्र; ऍन्ऱ्-आदि; इव्वानरर्-ये वानर; तलैवरोटु-यूथपों के साथ; कूलम्-दल के दल; वान् चेनै-श्रेष्ठ सेना के; चूळ-घेरे आते; ऍङ्कळ्-हमारे; कोमान्-राजा; अटैन्तनन्-उस (श्रीराम के पास) पहुँचे। ४१७४

फिर लंबी वर्षाऋतु बीती। हमारे राजा गवय, ऋषभ, क्रोधी नील बड़ा मैंद, जाम्बवान, शतबली, पनस तथा बड़े यशस्वी वाली का महान पुत्र अंगद आदि यूथपों और विपुल वानर-सेना के साथ प्रभु के पास आये। ४१७४

ऍळुबदु वॆळ्ळत् तुऱ्ऱ कुरङ्किन मॆळुन्दु पॊङ्गि
अळुवनोर् वेलै यॆन्न वडैन्दुळि यरुक्कन् मैन्दन्
तळुविय तिशैहळ् तोऱुन् दनित्तनि यिरण्डु वॆळ्ळम्
पॊळुदिऱै तडादु मीळप् पोक्किनन् तिरुवै नाड 4175

ऍळुपतु-सत्तर; वॆळ्ळत्तु उऱ्ऱ-वॆळ्ळम् के; कुरङ्कु इनम्-वानरगण; पॊङ्कि ऍळुन्तु-उत्साह से उठकर; अळुवम् नीर्-बड़े जल-विस्तार के; वेलै ऍन्न-सागर के समान; अटैन्तुळि-जब आये तब; अरुक्कन् मैन्तन्-सूर्यपुत्र ने; तळुविय-सब ओर लगी; तिचैकळ् तोऱुम्-सभी दिशाओं में; तिरुवै नाट-श्री (सीता) को खोजने; तनि तनि-अलग-अलग; इरण्टु वॆळ्ळम्-दो वॆळ्ळम्; पॊळुतु-अवधि का; इऱै तटातु-कुछ भी उल्लंघन किये विना; मीळ-लौटने की आज्ञा से; पोक्किनन्-भिजवाया। ४१७५

जब सत्तर 'वॆळ्ळम्' की सेना के वानर वीर उत्साह और कोप के साथ विस्तृत जल-सागर के समान उठ आये तब सूर्यपुत्र सुग्रीव ने चारों दिशाओं में श्रीसीतादेवी के अन्वेषण के कार्य में अलग-अलग दो-दो 'वॆळ्ळम्' नियत करके भेजा। यह आज्ञा दी कि नियत अवधि का उल्लंघन न हो। ४१७५

तॆन्ऱिशै यिरण्डु वॆळ्ळञ् जेनैयुम् वालि शेयुम्
वन्ऱिऱल् चाम्ब नोडु वाविन रेव नायेन्
कुन्ऱिडै यिलङ्गै पुक्कुत् तिरुविनैक् कुऱित्तु मीण्ड
पिन्ऱैवन् दळक्कर् वेलै पॆरुम्बडै यिऱुत्त दन्ऱे 4176

इरण्टु वॆळ्ळम्-दो वॆळ्ळम्; चेनैयुम्-सेना के वीर; तॆन् तिचै-दक्षिण दिशा में; वाविनर्-गये; वालि चेयुम्-वाली का पुत्र और; वल् तिऱल्-कठोर बलिष्ठ; चाम्पनोटु-जाम्बवान ने; एव-मुझे प्रेरित किया; नायेन्-कुत्ता-सम मैं; कुन्ऱिटै-महेंद्रपर्वत से; इलङ्कै पुक्कु-लंका जाकर; तिरुविनै-श्री को; कुऱित्तु-देखकर जानकर; मीण्ट पिन्ऱै-वापस आया, बाद; वेलै पॆरु पटै-सागर-सम बड़ी सेना; अळक्कर् वन्तु-समुद्र के किनारे आकर; इऱुत्तत-ठहरी। ४१७६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दक्षिण दिशा में दो 'वॅळ्ळम्' की सेना गयी, जिसके साथ वालीपुत्र और अतिबली जाम्बवान थे। उनके कहने से मैं महेंद्रपर्वत से उछलकर लंका पहुँचा और श्रीदेवी का समाचार लेकर लौट आया। बाद वानर-सेना-सागर सागरतीर पर आ ठहरा। ४१७६

अऱिविनुक् कऱिवु पोल्वान् वीडण नलङ्गऱ् ऱोळान्
शॅऱिपुयत् तरक्कन् तम्बि तिरुविन्नै विडुदि यन्ऱेल्
इऱुदियुऱ् ऱनिन् वाणा ळॅनवव नुरैप्पच् चीऱिक्
कऱुवुऱप् पॅयर्न्दु पोन्दु करुणैयान् शरणम् बूण्डान् 4177

अऱिविनुक्कु–ज्ञान के; अऱिवु–जो ज्ञान के; पोल्वान्–समान हैं; अलङ्कल् तोळान्–मालाधारी कंधोंवाला; चॅऱि पुयत्तु–घने हाथों वाले; अरक्कन्–राक्षस का; तम्पि–छोटा भाई; वीटणन्–विभीषण; तिरुविन्नै–श्रीदेवी को; विटुति–छोड़ दो; अन्ऱेल्–नहीं तो; निन्–तुम्हारी; वाळ् नाळ्–आयु के दिन; इऱुति–पूरे; उऱ्ऱन–हो गये; अॅन–ऐसा बोला; अवन्–वह (रावण); चीऱि उऱैप्प–गुस्सा कर बोला तो; कऱुवु उऱ–वैर करके; पॅयर्न्दु–अलग हट; पोन्दु–जाकर; करुणैयान्–दयालु के; चरणम्–चरणों को; पूण्डान्–धारण कर लिया (विभीषण ने)। ४१७७

उधर ज्ञानी के ज्ञान के समान रहनेवाला मालाधारी कंधों वाला अधिक संख्या की भुजाओं वाले रावण का छोटा भाई विभीषण जो था, उसने अपने बड़े भाई को समझाया कि श्री को छोड़ दो। नहीं तो तुम्हारी आयु का अन्त हो जायगा। पर रावण क्रोध से बोला तो उसके साथ वैर ठानकर विभीषण दयालु श्रीराम की शरण में आ गया। ४१७७

आङ्गवऱ् कवय नल्हि यरशॊडु मुडियु मीन्दु
पाङ्गिनाल् वरुणन् तन्नै यळैत्तिडप् पदैप्पि लादु
ताङ्गिनन् शिऱिदु पोदु तामरै नयनञ् जेप्प
ओङ्गुनी रेळु मन्ना नुडलमुम् वॅन्द वन्ऱे 4178

आङ्कु–तब; अवऱ्कु–उसे; अवयम्–अभय; नल्कि–प्रदान करके; अरचॊदु–राज्य और; मुडियुम्–मुकुट; ईन्दु–देकर; वरुणन् तन्नै–वरुण को; पाङ्कितान्–उचित रीति से; अळैत्तिट–निमंत्रित करने; पदैप्पु इलातु–उतावली के बिना; चिऱिदु पोदु–कुछ समय तक; ताङ्कितान्–(दर्भशयन में) ठहरे; तामरै नयनम्–कमल-से नेत्र; चेप्प–लाल हुए; अन्ऱे–तभी; ओङ्कुम्–तरंगें जिनमें ऊँची उठतीं; नीर् एळुम्–वे सातों समुद्र और; अन्नान्–उस (वरुण) का; उडलमुम्–शरीर; वॅन्द–जल गये। ४१७८

तब श्रीराम ने उसे अभयदान के साथ लंका का राज्य दिया और मुकुट धारण करा दिया। फिर वरुण को निमंत्रित करने की इच्छा से दर्भशयन में कुछ समय रहे। (वह नहीं आया तो) प्रभु की आँखें लाल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हुई ही थीं कि उधर उत्तुंग तरंगोंवाले सातों समुद्र उस वरुण के शरीर के साथ जल गये। ४१७८

मऱ्ऱव नवय मॅऩ्ऩ मलर्च्चर णडैन्द वेलै
वॅऱ्ऱिवा नरर्हळ् पॊङ्गि वॅऱ्पिऩाल् वेलै तट्टल्
मुऱ्ऱुऱ नऩ्गि यऱ्ऱि मॊय्यॊळि यिलङ्गै पुक्कुप्
पऱ्ऱिऩर् शुऱ्ऱि यार्त्तार् वाऩवर् पयङ्गळ् तीर्न्दार् 4179

मऱ्ऱु–बाद; अवऩ्–उसके; अवयम्–अभय; ऍऩ्ऩ–(माँगने) कहने पर; मलर् चरण्–कमल-चरण में; अटैन्त वेलै–आये समय; वॅऱ्ऱि–विजयी; वानरर्कळ्–वानरों ने; पॊङ्कि–उत्साह के साथ; वॅऱ्पिऩाल्–पर्वतों से; वेलै तट्टल्–समुद्र पर बाँध बनाना; नऩ्कु–अच्छी तरह; मुऱ्ऱुऱ–पूरा; इयऱ्ऱि–करके; मॊय् ऒळि–भरे प्रकाशमय; इलङ्कै पुक्कु–लंका में घुसकर; चुऱ्ऱि–चारों ओर; पऱ्ऱिऩर्–घेरकर; आर्त्तार्–नर्दन किया; वाऩवर्–देव; पयङ्कळ्–भय से; तीर्न्तार्–मुक्त हुए। ४१७९

उसके बाद वरुण अभयदान माँगता हुआ आया और भगवान के कमल-चरणों में लग लगा। तो विजयी वानर उत्साह के साथ उमंगित हुए। बहुत सुचारु रूप से समुद्र पर सेतुबंधन संपन्न करके प्रकाशमय लंका में गये और उसे घेरकर भीम-युद्ध ललकार-नाद करने लगे। देव भयमुक्त हुए। ४१७९

मलैयिऩै यॆडुत्त तोळु मदमलै तिळैत्त मारबुम्
तलैयॊरु पत्तुम् जिन्दित् तम्बितऩ् ताळुन् दोळुम्
कॊलैत्तॊळि लरक्क रायोर् कुलत्तॊडु निलत्तु वीळच्
चिलैयिऩै वळैवित् तैयन् तेवर्ह ळिडुक्कण् तीर्त्ताऩ् 4180

ऐयऩ्–प्रभु श्रीराम ने; मलैयिऩै–(कैलास) पर्वत को; ऍडुत्त–जिन्होंने उठाया; तोळुम्–वे कंधे; मतम्मलै–मत्त, पर्वतोपम गजों से; तिळैत्त–गुंथे; मारपुम्–वक्ष को; तलै–सिर; ऒरु पत्तुम्–एक दस को; तम्पि तऩ्–उसके छोटे भाई के; तोळुम्–कंधों और; ताळुम्–पैरों को; कॊलै तॊळिल्–घातक काम; अरक्कर्–करनेवाले राक्षस; आयोर्–जो थे उन्हें; कुलत्तॊडुम्–कुल के साथ; चिन्ति–मारकर; निलत्तु वीळ–भूमि पर गिराते; चिलैयिऩै–धनु को; वळैवित्तु–झुकाकर; तेवर्कळ्–देवों का; इटुक्कण्–संकट; तीर्त्ताऩ्–मिटाया। ४१८०

श्रीराम ने धनुष झुकाकर रावण के कैलासपर्वतोत्पाटक हाथों, मत्त-दिग्गज-विद्ध वक्ष, और दसों सिरों को, उसके भाई के हाथों और पैरों को और सकुल खूनी राक्षसों को मारकर भूमि पर गिराया और देवों का संकट मिटाया। ४१८०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इलक्कुवन् पहलि यॉन्ड्रा लिन्दिर शित्तॅन् ड्रोदुम्
विलक्करु वलत्ति नान् मिळैञरुङ् गिळैयुम् वीळ्न्दार्
मलक्कमुण् डुळलुन् देवर् मलर्मळै तूवि यार्त्तन्
ड्रलक्कुनर् कुळुक्कळ् तोरु मुडर्कुरै याडल् कण्डार् 4181

इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; पकलि ऑन्ड्राल्–एक शर से; इन्तिरचित्तु–'इन्द्रजित्'; ऍन्ड्र–ऐसा; ओतुम्–प्रकीर्तित; विलक्क अरु–अवार्य; वलत्तिनानुम् बलवाला; इळैञरुम्–युवा वीर; किळैयुम्–बन्धु-बान्धव; वीळ्न्तार–मरे गिरे; मलक्कम्–अस्त-व्यस्तता; उण्टु–(खाकर) पाकर; उळलुम् तेवर्–व्यग्र रहे देवों ने; मलर् मळै तूवि–पुष्प-वर्षा करके; आर्त्तु–नर्दन करके; अन्ड्र–उन दिनों में; उलक्कुनर्–मृतकों के; कुळुक्कळ् तोरुम्–दल-दल में; उटल् कुरै–कबंधों का; आटल् कण्टार्–नाचना देखा। ४१८१

श्रीलक्ष्मण के एक ही शर से प्रकीर्तित इंद्रजित्, उसके जवान वीर और बंधु मरकर गिर गये। क्षुब्ध तथा व्यग्र देवों ने पुष्पवर्षा की। और आनंद नर्दन-क्रिया। उन दिनों उन्होंने मृतकों के दल-दल में कबंधों को नाचता देखा। ४१८१

तेवरु मुनिवर् तामुञ् जित्तरुन् दॅरिवै मारुम्
मूवहै युलहु ळोरु मुरैमुरै तॉळुदु मॉय्प्पप्
पूवपोल् निड्रत्ति नानुम् वीडणप् पुलवर् कोमाड्रकु
यावैयु मियम्बि माण्डार्क् कियड्रुदि कडन्ग ळॅन्ड्रान् 4182

तेवरुम्–देवों; मुनिवर् तामुम्–मुनियों; चित्तरुम्–सिद्धों; तॅरिवै मारुम्–स्त्रियों और; मू वकै उलकुळोरुम्–त्रिविध लोकवासियों के; मुरै मुरै–बारी-बारी से; तॉळुतु मॉय्प्प–स्तुति कर घेरते; पूवै पू–अतसी पुष्प के; निड्रत्तिनानुम्–रंगवाले श्रीराम; पुलवर् कोमान्–ज्ञानियों में राजा; वीटणड्कु–विभीषण से; यावैयुम् इयम्पि–सभी बातें कहकर; माण्टार्क्कु–मृतकों का; कटन्कळ्–अपर कर्म; इयड्रुति–करो; ऍन्ड्रान्–कहा। ४१८२

देवगण, मुनिवृंद, सिद्ध और उनकी पत्नियाँ बारी-बारी से स्तुति करते आकर घेर गयीं। तब अतसीपुष्पवर्ण अयोध्याधिपति ने ज्ञानियों में श्रेष्ठ विभीषण को समझा-बुझाकर कहा कि मृतकों का अपर कर्म करो। ४१८२

नान्मुहन् विडैयै यूरु नारियोर् पाहत् तण्णल्
मान्मुहन् मुदला युळ्ळ वानवर् तॉळुदु पोड्रु
ऊन्मुहङ् गॅळुवु वेला युम्बर्ना यहियैच् चीड्रित्
तेन्मुह मलरुन् दारा नॅरिशॉलच् चीड्रुन् दीर्न्दान् 4183

ऊन् मुकम्–मांस, मुख में; कॅळुवु वेलाय्–लगे रहे ऐसे माल वाले; तेन् मुकम्–मधुयुक्त; मलरुम्–पुष्पित; तारान्–माला वाले; नान् मुकन्–चतुर्मुख; विटैयै–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऋषभ पर; ऊरुम्-सवार; नारियोर् पाकत्तु-अर्धांगी; अण्णल्-भगवान और; मान् मुकत्-हरिण-मुख; मुतलाय् उळ्ळ-मय आदि जो रहे; वानवर्-उन देवों के; तोऴुतु पोऱ्ऱ-स्तुति तथा बधाई देते; उम्पर् नायकियै-देवों की ईश्वरी से; चीऱि-कुपित होकर; ऍरि चॊल-अग्नि के कहने से; चीऱ्ऱम् तीर्न्तान्-कोप से शांत हुए। ४१८३

हे मांसलिप्त भालेवाले! मधुयुक्त पुष्पमालाधारी श्रीराम की जब चतुर्मुख, वृषभवाहन अर्धनारीश्वर और हरिणमुख मय आदि स्तुति कर रहे थे, तब श्रीराम ने देवों की ईश्वरी सीता पर गुस्सा किया। तब अग्नि ने देवी की पवित्रता के संबंध में कहा तो वे कोप छोड़कर शांत हुए। ४१८३

मॆय्यिनुक् कुयिरै यीन्द वेन्दर्कोन् विमानत् तॆय्द
ऐयनु मिळैय कोवु मन्नमु मडियिल् वीऴक्
कैयिनाऱ् पॊरुन्दप् पुल्लिक् कण्णिनीर्क् कलश माट्टिच्
चॆय्यवट् करुळह् वॆन्ऱान् तिरुविना यहनुङ् गॊण्डान् 4184

मॆय्यिनुक्कु-सत्य के लिए; उयिरै-जीवन को; ईन्त-जिन्होंने दिया; वेन्तर् कोन्-वे चक्रवर्ती; विमानत्तु-विमान पर; ऍय्त-आये तो; ऐयनुम्-प्रभु और; इळैय कोवुम्-लघुराज और; अन्नमुम्-हंस-सी देवी; अटियिल् वीऴ्-चरणों में गिरे; कैयिनाल्-हाथों से; पॊरुन्त-कसकर; पुल्लि-आलिंगन करके; कण्णिन् कलचम् नीर्-अक्ष-कलश-जल से; आट्टि-मज्जन कराके; चॆय्यवट्कु-श्रीदेवी पर; अरुळ्क-कृपा करो; ऍन्ऱान्-बोले; तिरुविन्-लक्ष्मी के; नायकनुम्-पति भी; कॊण्टान्-सम्मत हुए। ४१८४

तब सत्य के लिए जिन्होंने अपने प्राणों की बलि दी थी वे दशरथ विमान पर सवार हो पधारे। श्रीराम, लघुराज और हंस-सी देवी ने उनके चरणों पर गिरकर दंडवत् की। दशरथ ने इनका खूब आलिंगन किया और अक्ष-कलश-जल से नहला दिया। उन्होंने श्रीराम से कहा कि सुंदरी श्रीसीता पर कृपा रखो। श्रियःपति ने भी सम्मति दिला दी। ४१८४

ऍन्नैनन् करुणै तन्ना लीन्ऱॆडुत् तिनिदु पेणुम्
अन्नैयु महनु मुन्बो लाहंन वरुळि नीन्दु
मन्नवन् पोय पिन्ऱै वानरम् वाऴ्वु कूरप्
पॊन्नॆडु नाट्टि नुळ्ळार् वरम्बल वऴङ्गिप् पोनार् 4185

ऍन्नै-मुझे; नल् करुणै तन्नाल्-अच्छी दया से; ईन्ऱ ऍटुत्तु-जना लेकर; इनितु-सुख से; पेणुम्-पालनेवाली; अन्नैयुम्-देवी को; मकनुम्-और पुत्र (भरत) को; मुन्पोल्-पूर्ववत्; आक-बना लें; ऍन्-ऐसा प्रार्थना करने पर; अरुळिन् ईन्तु-कृपा से सम्मति देकर; मन्नवन्-राजा के; पोय पिन्ऱै-जाने के बाद; नॆट-विशाल; पॊन् नाट्टिल-देवलोक में; उळ्ळार्-वास करनेवाले;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वानरम्–और वानर; वाळ्वु कूर–अच्छा जीवन पावें; वरम्–यह वर; वळङ्कि–देकर; पोनार्–गये। ४१८५

'मेरी दयामयी जननी, सुख से पालनेवाली कैकेयी को और उनके पुत्र को पूर्ववत् स्थान दिला दें।' —यह वर श्रीराम ने माँगा तो दशरथ ने कृपा करके दिया। फिर वे चले गये। उसके बाद देव वानरों को यह वर देकर चले गये कि उनका जीवन सदा सुख-सुविधा-पूर्वक रहे। ४१८५

वॆळ्ळमो रेळु पत्तु विलङ्गरुम् वीर राहि
उळ्ळव ररुबत् तेळु कोडियु मॊऱ्ऱै याळि
वळ्ळऱन् महनु मुळ्ळ महिळ्वुऱ विमान मीन्दान्
ॲळ्ळलि लाद कीर्त्ति वीडण निलङ्गै वेन्दन् 4186

ॲळ्ळल् इलात–अनिंद्य; कीर्त्ति–यशस्वी; इलङ्कै वेन्तत्–लंकापति ने; एळु पत्तु–सत्तर; वॆळ्ळम्–'वॆळ्ळम्'; विलङ्करुम्–वानर; वीरर् आकि–(राक्षस) वीर; अऱु पत्तु एळु कोटियुम्–सड़सठ करोड़ और; ऒऱ्ऱै आळि–एक-चक्र-रथी; वळ्ळल् तन् मकनुम्–भगवान सूर्य के पुत्र; उळ्ळम्–मन में; मकिळ्वु उऱ–संतोष करें, ऐसा; विमानम्–पुष्पक यान; ईन्तान्–दिया। ४१८६

अनिंद्य यशस्वी लंकापति ने पुष्पकविमान दिया, जिससे सत्तर सहस्र वानर वीर, सड़सठ करोड़ राक्षस वीर और एकचक्ररथ के स्वामी सूर्य के पुत्र मुदित हुए। ४१८६

आरियन् पिन्नै निन्नै यन्बिनाल् निनैन्दु कादल्
शूरियन् महनुन् दॊल्लैत् तुणैवरु मिलङ्गै वेन्दुम्
पेरियऱ् पडैयुञ् जूळप् पॆण्णिनुक् करशि योडुम्
शीरिय विमानत् तेऱिप् परत्तुव निरुक्कै शेर्न्दान् 4187

आरियन्–आर्य श्रीराम; पिन्नै–बाद; निन्नै–आपका; अन्पिनाल्–प्यार से; निनैन्तु–स्मरण करके; चूरियन्–सूर्य के; कातल् मकनुम्–प्यारे पुत्र; तॊल्लै–और पुरातन; तुणैवरुम्–साथी और; इलङ्कै वेन्तुम्–लंकाधिपति; पेर् इयल्–उत्कृष्ट; पटैयुम्–सेना के; चूळ–घेरे रहते; पॆण्णिनुक्कु–स्त्रियों में; अरचियोडुम्–रानी के साथ; चीरिय–बहुत श्रेष्ठ; विमानत्तु एऱि–विमान पर चढ़कर; परत्तुवन्–भरद्वाज के; इरुक्कै–आश्रम; चेर्न्तान्–आये। ४१८७

श्रीराम प्यार के साथ आपसे मिलने की त्वरा से सूर्यनंदन सुग्रीव, पुराने संगी-साथी, लंकाधिपति और उत्कृष्ट सेना को चारों ओर रहने देकर उनके मध्य स्त्रियों की रानी सीताजी के साथ विमान पर चढ़े और भरद्वाजाश्रम पधारे। ४१८७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऩ्बिऩा लॆऩ्ऩै निऩ्पा लाऴियुङ् गाट्टि यात्ऱ
तुऩ्बॆलान् दुडैत्ति यॆऩ्ऱु तुरन्दऩऩ् तोऩ्ऱ लॆऩ्ऱु
मुऩ्बिऩा लियऩ्ऱ वॆल्ला मॊऴिन्दऩऩ् मुदुनीर् तावि
अऩ्बिऩा लिलङ्गै मुऱ्ऱु मॆरिक्कुण वाह वैत्तोऩ् 4188

तोऩ्ऱल्–श्री राजाराम ने; अऩ्पिऩाल्–प्यार के साथ; ऎऩ्ऩै–मुझे; निऩ्पाल्–आपके पास; आऴियुम् काट्टि–मुँदरी दिखा; आऩ्ऱ–गम्भीर; तुऩ्पु ऎलाम्–दुःख सब; तुटैत्ति–पोंछ आओ; ऎऩ्ऱु–ऐसा कहकर; तुरन्तऩऩ्–भेजा; ऎऩ्ऱु–ऐसा; मुऩ्पिऩाल्–पहले; इयऩ्ऱ–जो घटा; ऎल्लाम्–वह सारा; मॊऴिन्तऩऩ्–कहा; मुतु नीर्–प्राचीन समुद्र; तावि–लाँघकर; अऩ्पिऩाल्–प्यार से; इलङ्कै मुऱ्ऱम्–सारी लंका को; ऎरिक्कु उणवाक–अग्नि का भोजन; वैत्तोऩ्–बनाया (जिसने या) उसने। ४१८८

श्रीराजाराम ने आपसे प्रेम के कारण मुझे यह कहकर भेजा कि अँगूठी दिखाओ और भरत का गंभीर दुःख पोंछ दो। इस भाँति जो श्रीराम-भक्ति के वश में हो पुराना समुद्र लाँघकर, लंका गया और जिसने अग्नि का भोजन बनाया था, उस हनुमान ने पूर्व घटित घटनाएँ बतायीं। ४१८८

कालिऩ्मा मदलै शॊल्लप् परदऩुङ् गण्णीर् शोर
वेलिमा मदिल्हळ् शूऴु मिलङ्गैयिल् वेट्टङ् गॊण्ड
नीलमा मुहिल्पिऩ् पोऩा ऩॊरुवऩा निऩ्ऱु नैवेऩ्
पोलुमा लिवैहळ् केट्पेऩ् पुहऴुडैऩ् दडिमै मऩ्ऩो 4189

कालिऩ्–पवन के; मा मतलै–श्रेष्ठ पुत्र के; चॊल्ल–कहने पर; परतऩुम्–भरत; कण्णीर् चोर–आँसू बहाते हुए; ऒरुवऩ्–एक (भाई); मा मतिल्कळ्–बड़े प्राचीरों की; वेलि चूऴुम्–दीवारों की गिरी; इलङ्कैयिल्–लंका में; वेट्टम् कॊण्ट–शिकार करनेवाले; नीलम्–नीले; मा मुकिल्–बड़े मेघ-सम श्रीराम के; पिऩ्–अनुसरण में; पोऩाऩ्–गया था; नाऩ्–मैं; निऩ्ऱु–यहीं रहकर; नैवेऩ्–लटता हूँ; इवैकळ्–ये भी; केट्पेऩ् पोलुम्–सुनूँगा शायद; अटिमै–मेरी दासता; पुकऴ्–यश से; उटैऩ्तु–युक्त अवश्य है। ४१८९

पवनपुत्र की बातें सुनकर भरत ने अपनी आँखों से आँसू बहाते हुए अपनी व्यथा जतायी। 'एक भाई है जो प्राचीरवलयित लंका में शिकार खेलने गये नीलमेघ-सदृश श्रीराम का अनुसरण करता गया। मैं भी एक छोटा भाई हूँ, जिसे यहीं रहकर घुलना पड़ा है। मुझे यह सब सुनने का ही सौभाग्य प्राप्त है शायद! हा! दासता मेरी बड़े यश के योग्य रही!। ४१८९

ऎऩ्ऱव ऩिरङ्गि येङ्गि यिरुकणु मरुवि शोर
वऩ्ऱिऱ लऩमऩ् शॆङ्गै वलककैयाऱ् पऱ्ऱिक् कालिऱ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चॅन्ऱन्न निरुळि नूडु शॅऱिपुनऱ् कङ्गै शेऱ्न्दान्
कुन्ऱिनै वलञ्जॅय् तेरोन् कुणकडऱ् ऱोन्ऱु मुन्नर् 4190

अॅन्ऱु–ऐसा कहकर; अवन्–वे भरत; इरङ्कि एङ्कि–दुःखी होकर तरसकर; इरु कणुम्–दोनों आँखों से; अरुवि चोर–नदी-सी बहाते हुए; वल् तिऱल्–कठोर बली; अनुमन्–हनुमान का; चॅङ्कै–सुन्दर हाथ; वलम् कैयाल्–दाहिने हाथ से; पऱ्ऱि–पकड़कर; कालिल्–पैदल; चॅन्ऱनन्–गये; कुन्ऱिनै–मेरु पर्वत की; वलम् चॅय्–परिक्रमा करनेवाले; तेरोन्–रथी; कुणक्कु कटल्–पूर्वी समुद्र में; तोन्ऱुम् मुन्नर्–प्रगट हो, उसके पहले; इरुळिन् ऊटु–अँधेरे में ही; पुनल्–जल से; चॅऱि–पूर्ण; कङ्कै–गंगा पर; चेर्न्तान्–आये। ४१९०

इस भाँति भरत दुःखी व व्यग्र होकर दोनों आँखों से आँसू बहाते हुए अतिबली हनुमान के सुंदर हाथ को दाहिने हाथ से पकड़े पैदल चले। मेरु पर्वत की परिक्रमा करनेवाले रथ के रथी सूर्य के पूर्वी समुद्र में उग आने के पहले ही अँधेरे में चलकर जलपूर्ण गंगा के किनारे पहुँच गये। ४१९०

इरावणन् वेट्टम् बोय्मीण् डॅम्बिरान योत्ति यॅय्दित्
तरादल महळुम् बूविऱ् ऱैयलु महिळच् चूडुम्
अरावुपॉन् मौलिक् केय्न्द शिहामणि कुणपा लण्णल्
विरावुऱ वॅडुत्ता लॅन्न वॅय्यव नुदयञ् जॅय्दान् 4191

अॅम्पिरान्–हमारे नाथ; इरावणन्–रावण के; वेट्टम् पोय्–शिकार के लिए जाकर; मीण्टु–लौटकर; अयोत्ति–अयोध्या; अॅय्ति–आकर; तरातल मकळुम्–भूमिदेवी और; पूविल् तैयलुम्–कमलादेवी; मकिळ–दोनों के मुदित होते; चूटुम्–धारण जो करेंगे; अरावुम्–तराशे गये; पॉन्–स्वर्ण के; मौलिक्कु–किरीट के; एयन्त–योग्य और; चिकामणि–सिर पर धारण करने योग्य श्रेष्ठ रत्न; कुणक्कु पाल्–पूर्व दिशा के; अण्णल्–पालक इन्द्र ने; विरावु उऱ–चुनकर युक्त हो ऐसा; अॅटुत्ताल् अॅन्न–ले लिया हो, ऐसा; वॅय्यवन्–सूर्य; उतयम् चॅय्तान्–उदित हुआ। ४१९१

हमारे प्रभु रावण के शिकार के लिए गये थे और लौट आ गये। अब भूदेवी और कमलादेवी को मोद में डालते हुए मुकुट धारण करने वाले थे। तदर्थ खूब तराशकर चमकदार किये गये स्वर्ण का मुकुट बना था। उसके योग्य सिर पर धारणार्थ एक महान रत्न की आवश्यकता थी। मानो पूरब के दिग्पाल इंद्र उससे मेल खानेवाला रत्न ले आये हों वैसा लगा सूर्य। ४१९१

कालैवन् विरुत्त पित्तरक् कडन्मुऱै कमलक् कण्णन्
कोलनीळ् कळल्ह ळेत्तिक् कुरक्किनत् तरशे नोक्किच्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चालवुङ् गलैहळ् वल्लोय् तवऱुण्डु पोलुम् वाय्मै
मूलमे युणरि नुन्ऱन् मॊऴिक्कॆदिर् मॊऴियु मुण्डो 4192

कालै वन्तु–सवेरा होकर; कटन् मुऱै–संध्या-वंदन आदि आह्निक; इऱुत्त पित्तर्–पूरा करने के बाद; कमलम् कण्णन्–कमलाक्ष श्रीराम की; कोलम्–सुन्दर; नोळ्–श्रेष्ठ; कऴल्कळ्–पादुकाओं का; एत्ति–पूजन करके; कुरङ्कु इनत्तु–वानरकुल के; अरचै नोक्कि–पति को देखकर; चालवुम्–बहुत; कलैकळ्–शास्त्रों में; वल्लोय्–निपुण; वाय्मै–तुम्हारे वचन में; तवऱु–गलती; उण्ट पोलुम्–होगी शायद; मूलमे–आदि से; उणरिन्–देखें तो; उन्तन्–तुम्हारे; मॊऴिक्कु–वचन का; ऎतिर् मॊऴियुम्–उत्तर-वचन भी, उण्टो–होगा क्या। ४१९२

सवेरा होने पर भरत ने आह्निक अनुष्ठान पूरा किया। फिर कमलाक्ष श्रीराम की सुंदर तथा सम्मानित पादुकाओं का पूजन किया। पश्चात् वानरयूथप हनुमान से पूछा कि हे बहुशास्त्र-निपुण ! तुम्हारे वचन में कोई गलती है शायद ! आदि से देखें तो तुम्हारे वचन की अन्यथा की संभावना होगी क्या ? । ४१९२

ऎऴुबदु वॆळ्ळम् जेनै वानर रिलङ्गै वेन्दन्
मुऴुमुदऱ् चेनै वॆळ्ळङ् गणक्किल मुडुहिऱ् ऱॆन्ऱाल्
अऴुवनीर् वेलै यन्न वरवमिन् ऱाह् वऱ्ऱो
विऴुमिदॆम् बिरान्वन् दानॆन् ऱुरैत्तदु वीर वॆन्ऱान् 4193

वीर–वीर; ऎऴुपतु वॆळ्ळम्–सत्तर वॆळ्ळम्; वानरर् चेनै–वानर-सेना; इलङ्कै वेन्तन्–लंकापति की; मुऴु मुतल्–बहुत अधिक; चेनै वॆळ्ळम्–सेना-सागर; कणक्कु इल–असंख्यक; मुटुकिऱ्ऱु–तेज आती; ऎन्ऱाल्–तो; अऴुवम् नीर्–गहरे जल के; वेलै अन्न–सागर-सम; अरवम् इन्ऱु–शब्द आज; आक वऱ्ऱो–हो न रहेगा क्या; ऎम्पिरान्–हमारे नायक; वन्तान्–पधारे; ऎन्ऱु–ऐसा; उरैत्ततु–जो कहा; विऴुमितु–बहुत सुन्दर है; ऎन्ऱान्–कहा भरत ने। ४१९३

वीर ! सत्तर 'वॆळ्ळम्' की वानर-सेना और लंकापति की विपुल सेना दोनों अपार तेज़ी से आती रहें तो गंभीर सागर के समान शोर उठता नहीं होगा क्या ? (यह तो सुनाई देता। इसलिए) तुमने जो कहा कि हमारे प्रभु आ रहे हैं, वह बहुत ही सुंदर लगता है ! भरत ने शंका के साथ ताने के स्वर में कहा। ४१९३

ओशनै यिरण्डुण् डन्ऱे परत्तुव नुरैयुञ् जोलै
वीशुतॆण् डिरैयिऱ ऱाय वॆळ्ळमो रेऴ पत्तुम्
मूशिय पऴुव मिङ्ङन् किडप्पदो मुरऱ्ऱ लित्ऱिप्
पेशिय दमैयु नङ्गो नॆङ्गुळन् पॆरुम वॆन्ऱान् 4194

पॆरुम्–अभिनंदनीय; परत्तुवन्–भरद्वाज का; उरैयुम चोलै–आश्रम;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरण्टु–दो; ओचत्तै उण्टु–योजन है; वीच्–लहरानेवाली; तॆळ्–स्वच्छ; तिरैयिऱ्ऱु–लहरोंवाले समुद्र के समान; आय–रहनेवाले; ओर्–एक; वॆळ्ळम् एऴु पत्तुम्–सत्तर वॆळ्ळम्; मूचिय–जिसमें भरे रहते हैं; पऴुवम्–वह उपवन; मुरऱ्ऱल् इन्ऱि–विना शोर के; इङ्ङन् किटप्पतो–इस तरह रहे; पेचियतु–तुम जो बोले; अमैयुम्–जचेगा वह; नम् कोन्–हमारे प्रभु; ऍङ्कु–कहाँ; उळान्–हैं; ऍन्ऱान्–पूछा भरत ने। ४१९४

भरत ने अपने अविश्वास के स्वर में आगे कहा कि हे मान्य मारुति ! भरद्वाजाश्रम दो ही योजन पर है। तरंगोद्वेलित तोयनिधि-सम सत्तर 'वॆळ्ळम्' की वानर-सेना तथा लंकाधिपति की विपुल सेना उस आश्रम में रहती है। उस स्थिति में उस आश्रम से कुछ भी शोर नहीं आता। क्या वह ऐसा रह सकता है ? तुम्हारा कथन बड़ा युक्त है ! कहो, हमारे प्रभु हैं कहाँ ? । ४१९४

परदन्:(ह्) दुरैत्त लोडुम् बणिन्दुमा रुदियुञ् जीर्शाल्
विरदमा तवत्तु मिक्कोय् विण्णवर् तम्मै वेण्डि
वरदनन् ऱळित्त वन्द वरत्तिनान् मलरुन् देनुम्
शरदमे मान्दि मान्दित् तुयिन्ऱदु तानै यॆल्लाम् 4195

परतन्–भरत के; अ.'तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहते ही; मारुतियुम्–मारुति; पणिन्तु–विनीत होकर; चीर्चाल्–श्रेष्ठतायुक्त; विरतम्–व्रत के रूप में; मातवत्तु–तपस्या में; मिक्कोय्–बढ़े हुए; वरतन्–वरद भरद्वाज; विण्णवर् तम्मै–देवों से; वेण्टि–प्रार्थना करके; अन्ऱु अळिप्प–तब दिये गये; अन्त वरत्तिनाल्–उस वर से; वन्त–जो आये; मलरुम्–उन पुष्पों और; तेनुम्–मधु को; मान्ति मान्ति–पी-पीकर; तानै ऍल्लाम्–सारी सेना; तुयिन्ऱतु–सो गयी; चरतम्–सच। ४१९५

जब भरत ने ऐसा कहा तो हनुमान ने विनीत होकर कहा कि हे महाव्रत तपस्वी ! वरद भरद्वाज ने देवों से प्रार्थना की और देवों ने वर दिया। उसके फलस्वरूप पुष्प और मधु जो मिले उन्हें खा-पीकर सारी सेना सो गयी है। हाँ, सच ! । ४१९५

वानवर् कॊडुक्क वन्द वरत्तिनान् मदुब मूशुम्
तेनॊडु किळङ्गुङ् गायुङ् गनिहळुम् बिऱवुञ् जीर्त्तुक्
कानहम् बॊलिद लाले कविक्कुल मवऱ्ऱै मान्दि
आनन मलर्न्द दिल्लै याहुनी तुयर लॆन्दाय् 4196

ऍन्ताय्–मेरे धाता; वानवर्–देवों के; कॊटुक्क वन्त–देने से प्राप्त; वरत्तिनाल्–वर से; कानकम्–वन में; मतुपम् मूचुम्–पधुप-मंडरित; तेनॊटु–मधु और; किळङ्कुम्–कंद; कायुम्–तरकारी; कनिकळुम्–फल; पिऱवुम्–और अन्य; चीर्त्तु–विशेष रूप से; पॊलितलाले–रहते हैं, इसलिए; कवि कुलम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वानरवृन्द; अवऱ्ऱै–उन्हें; मान्ति–खा-पीकर; आनतम्–मुख; मलर्न्ततु–खोलते; इल्लै आकुम्–नहीं हैं; नी–आप; तुयरल्–दुःखी न हों। ४१९६

मेरे धाता ! देवों के वर से वन में मधुपमंडरित मधु, कंद, मूल, फल और अन्य वन्यपदार्थ बहुतायत से पाये जाने लगे तो वानरवृंद उन्हें भुगतकर मुख नहीं खोल पाते। ४१९६

इनियॊरु कणत्ति नॆङ्गो नॆऴुन्दरुळ् तन्मै यीण्डुप्
पनिवरुङ् गण्णि नीये पार्त्तियॆन् ऱुरैत्ता निप्पाल्
मुनितन दिडत्तु वन्द मुळरियङ् गण्णन् वण्णक्
कुनिशिलैक् कुरिशिल् शॆय्द दिऱ्ऱॆनक् कुणिक्क लुऱ्ऱाम् 4197

इनि–अब; ऒरु कणत्तिल्–एक क्षण में; ऎङ्कोन्–हमारे राजा; ऎऴुन्तरुळ् तन्मै–पधारते, यह हाल; ईण्डु–यहाँ; पनिवरुम्–आँसू भरे; कण्णिन्–नेत्रवाले; नीये–आप ही; पार्त्ति–देखेंगे; ऎन्ऱु–ऐसा; उरैत्तान्–कहा; इप्पाल्–इधर; मुनि तनतु–मुनि के; इटत्तु वन्त–वासस्थान में आये; मुळरि–कमल-सम; अम् कण्णन्–सुन्दर आँखों वाले; वण्णम्–सुन्दर; कुनिचिलै–कुंचित धनुष वाले; कुरिचिल्–राजाराम; चॆय्ततु–का कार्य; इऱ्ऱु ऎन–ऐसा था ऐसा; कुणिक्कल्–कहने; उऱ्ऱाम्–लगते हैं। ४१९७

अब एक ही क्षण में हमारे प्रभु पधारेंगे। यह आप अपने अश्रु-बहाते नेत्रों से देख लेंगे। —मारुति ने विश्वास दिलाया। अब उधर भरद्वाज के आश्रम में आगत कमलाक्ष तथा कुंचित-कोदंडपाणि राजाराम ने जो किया, वह कैसा था, उसका वर्णन करेंगे। ४१९७

अरुन्दवन् शुवैह ळाऱो डमुदिनि दळिप्प वैयन्
करुन्दडङ् गण्णि योडुङ् गळैहणान् दुणैव रोडुम्
विरुन्दिनि दरुन्दि निन्ऱ वेलैयिन् वेलै पोलुम्
बॆरुन्दडन् दानै योडुङ् गिरादर्कोन् पॆयर्न्दु वन्दान् 4198

अरु तवन्–मान्य तपस्वी; आऱु चुवैकळोटु–षड्रसों के साथ; अमुतु–भोज; इनितु अळिप्प–मधुर देने पर; ऐयन्–प्रभु; करु तट–काली, विशाल; कण्णियोटुम्–आँखों वाली सीताजी के साथ; कळैकणाम्–सहायक; तुणैवरोटुम्–साथियों के साथ; विरुन्तु–भोज को; इनितु–सुख से; अरुन्ति निन्ऱ वेलैयिल्–जब भुगतते रहे तब; किरातर् कोन्–किरातराज; वेलै पोलुम्–सागर-सम; पॆरु तट–बड़ी, विस्तृत; तानैयोटुम्–सेना के साथ; पॆयर्न्तु वन्तान्–निकलकर चला आया। ४१९८

कठिन तपस्वी भरद्वाज ने षड्रस भोजन खिलाया। तब प्रभु असित-विशालाक्षी के साथ और सहायक साथियों के साथ आराम से भोजनकर के रहे; तब निषादराज गुह विस्तृत सागर-सम सेना के साथ निकल आया। ४१९८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॊळुदनन् मनमुङ् गण्णुन् दुळङ्गिनान् शूळ वोडि
अळुदनन् कमल मन्न वडित्तल मदनिन् वीळ्न्दान्
तळुविन नॆडुत्तु मार्बिऱ् ऱम्बियैत् तळुवु मापोल्
वळुविला वलिय रन्ऱो मक्कळु मनैयु मॆन्ऱान् 4199

मनमुम्–मन में; कण्णुम्–और आँखों में; तुळङ्किनन्–प्रसन्न होकर; चूळ ओटि–परिक्रमा करके; अळुतनन्–रोया; कमलम् अन्न–कमल-सम; अटि तळम् अतनिल्–चरण-तल में; वीळ्न्तान्–गिरा (श्रीराम ने); ऎटुत्तु–उठाकर; तम्पियै–छोटे भाई को; तळुवुमा पोल्–गले लगाते जैसे; मार्पिल्–छाती से; तळुविनन्–लगा लिया; मक्कळुम्–पुत्र; मनैयुम्–घर वाली; वळुवु इला–विना कमी के; वलियर् अन्ऱो–सकुशल हैं न; ऎन्ऱान्–पूछा। ४१९९

श्रीराम के दर्शन करके गुह मन में प्रसन्न हुआ, जिसकी झलक उसकी आँखों में भी प्रकट हो रही थी। पर दीर्घवियोग-जनित दुःख से रोते हुए उनकी परिक्रमा करके उसने उनके कमल-चरणों में गिरकर नमस्कार किया। श्रीराम ने उसे उठाया और भ्रातृवत् आलिंगन कर लिया; फिर प्रश्न किया कि क्या तुम्हारे पुत्र तथा पत्नी सकुशल तथा सानंद हैं ? । ४१९९

अरुळुन दुळदु नायेऱ् कवरॆला मरिय वाय
पॊरुळलर् निन्नै नीङ्गाप् पुणर्प्पिनाऱ् ऱॊडर्न्दु पोन्दु
तॆरुळ्तरु मिळैय वीरन् शॆय्वन शॆय्ह लादेन्
मरुळ्तरु मनत्ति नेनुक् किनिदन्ऱो वाळ्वु मन्नो 4200

उन्नतु अरुळ्–आपकी कृपा; उळ्ळतु–है; अवर् ऎलाम्–वे सभी; नायेऱ्कु–मेरे; अरिय आय–मूल्यवान; पॊरुळ्–पदार्थ; अलर्–नहीं; निन्नै–आपके; नीङ्का–अपृथक्; पुणर्प्पिनाल्–प्रेम से; तॊटर्न्तु पोन्तु–पीछे लगे आकर; तॆरुळ् तरुम्–शुद्ध ज्ञानयुक्त; इळैय वीरन्–छोटे वीर ने; चॆय्वन–जो किये वे कार्य; चॆय्कलातेन्–नहीं कर पाया; मरुळ् तरु–अज्ञान-भरे; मनत्तिनेनुक्कु–मनवाले मुझे; वाळ्वु–अपना जीवन; इनितु अन्ऱो–प्यारा था न। ४२००

गुह ने उत्तर में निवेदन किया कि आपकी कृपा से वे सब ठीक हैं। पर वे मुझ दास के लिए मूल्यवान चीज़ नहीं हैं। आपका अक्षुण्ण भक्ति के साथ अनुगमन करके आकर उद्बुद्ध ज्ञानी छोटे वीर ने जो सेवककर्म किया वह मैं कर नहीं पाया। अज्ञमन मेरे लिए यहाँ का जीवन सुखद रह गया न ! । ४२००

आयन पिऱवुम् बन्नि यळङ्गुवान् तन्नै यैय
नीयिवै युरैप्प दॆन्नै परदनि नीवै कुण्डो
पोयिनि दिरुत्ति यॆन्नप् पुळिमर्को निळवल् पॊर्ऱाळ्
मेयिनन् वणङ्गि यन्नै विरैमलर्त् ताळिन् वीळ्न्दान् 4201

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयत्त–वैसे; पिऱवुम् पत्ति–और अन्य बातें कहकर; अऴुङ्कुवान् तन्नै–अशांत रहनेवाले उससे; ऐय–तात; नी–तुम; इवै–ये; उरैप्पतु–कहते; ऍन्ऩै–क्यों हो; परतत्तिन्–भरत से; नी–तुम; वेऱु–अन्य; उण्टो–हो क्या; पोय्–जाकर; इत्तितु–सुख से; इरुत्ति–रहो; ऍन्ऩत्त–ऐसा बोले; पुऴिञर् कोन्–निषादराज; इळवल्–छोटे राजा के; पोन् ताळ्–सुन्दर चरणों में; मेयित्तन् वणङ्कि–नमस्कार करके; अन्नै–माताजी के; विरै मलर्–सुगन्ध-कमल-सम; ताळिन्–चरणों में; वीऴ्न्तान्–गिरा। ४२०१

ऐसी और अन्य ऐसी बातें कहकर गुह दुःखी हो रहा था। श्रीराम ने उससे पूछा कि तात ! तुम क्यों ऐसी बातें कह रहे हो ? क्या भरत में और तुम में भेद है ? जाओ सुख से रहो। निषादराज ने लक्ष्मण के चरणों में, फिर माता सीताजी के सुगंधित कमल-चरणों में गिरकर नमस्कार किया। ४२०१

तॊऴुदुनिन् ऱवनै नोक्कित् तुणैवर्हळ् तमैयु नोक्कि
मुऴुदुणर् केळ्वि मेलोन् मॊऴिहुवान् मुऴुनीर्क् कङ्गै
तऴुविरु करैक्कु नादन् तायिनु मुयिर्क्कु नल्लान्
वऴुविला वॆयित्तर् वेन्दन् कुहनॆन्ऩम् वळ्ळ लॆन्बान् 4202

मुऴुतु उणर्–सर्वज्ञ; केळ्वि–श्रौतज्ञान; मेलोन्–श्रेष्ठ श्रीराम; तॊऴुतु निन्ऱवनै–विनत उसे; नोक्कि–देखकर; तुणैवर्कळ् तमैयुम्–साथियों को; नोक्कि–देखकर; मॊऴिकुवान्–बोले; मुऴुनीर्–समृद्ध-जल; कङ्कै–गंगा; तऴुवु–के साथ लगी; इरु करैक्कु–दोनों तट की भूमि का; नातन्–अधिपति है; उयिर्क्कु–प्राणों से; तायिनुम्–माता से; नल्लान्–हितैषी है; वऴु इला–निर्दोष; ऍयित्तर् वेन्तन्–निषादराज है; कुकन् ऍन्नुम्–गुह नाम का; वळ्ळल्–उदार पुरुष है; ऍन्पान्–बोले। ४२०२

सर्वज्ञ तथा श्रौतज्ञानश्रेष्ठ श्रीराम ने अपने साथियों से गुह की तारीफ़ की। यह जलसमृद्ध गंगा के दोनों तटीय श्रेत्र का पालक है। मेरा प्राणों से और माता से अधिक हितू है ! निर्दोष निषादराज है। गुह नाम का है और उदारचेता है। ४२०२

अण्णलः(ह्) दुरैत्त लोडु मरिहुलत् तरश नादि
नण्णिय तुणैवर् यारु मित्तिदुऱत् तऴुवि नट्टार्
कण्णहन् ञाल मॆल्लाङ् गङ्गुलार् पॊदिवान् पोल
वण्णमाल् वरैक्कु मप्पाल् मऱैन्दन त्तिरवि यॆन्बान् 4203

अण्णल्–प्रभु के; अ.ःतु–वह; उरैत्तलोडुम्–कहने पर; अरि कुलत्तु–वानरकुल का; अरचन् आति–राजा सुग्रीव आदि; नण्णिय–आगत; तुणैवर् यारुम्–सभी मित्र ने; इत्तितु उऱ–मधुरता से; तऴुवि–गले लगाकर; नट्टार्–मित्रता बना ली; इरवि ऍन्पान्–सूर्य; कण् अकल्–विशाल; ञालम् ऍल्लाम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भूतल भर को; कङ्कुलाल्-अन्धकार से; पॊतिवान् पोल-आच्छादित करता-सा; वण्णम्-श्रेष्ठ; माल् वरैक्कुम्-बड़े मेरु पर्वत के; अप्पाल्-उस तरफ़; मऱैन्ततन्-छिप गया। ४२०३

प्रभु श्रीराम द्वारा गुह की तारीफ़ सुनकर वानरराज सुग्रीव ने सामने आकर उससे मित्रता कर ली। तब सूर्य विस्तृत भूतल भर को अँधेरे से आच्छादित करता-सा सुंदर बड़े मेरुपर्वत के पीछे छिप गया। ४२०३

अलङ्गलन् दॊडैयि नानु मन्दियिन् कडन्ग ळाऱ्ऱिप्
पॊलङ्गुऴै मयिलि नोडु तुयिलुऱप् पुणरि पोलुम्
इलङ्गिय शेनै शूऴ विळवलु मॆयिनर् कोनुम्
कलङ्गलर् कात्तु निन्ऱार् कदिरव नुदयञ् जॆय्दान् 4204

अलङ्कल्-हिलनेवाली; अम्-सुन्दर; तॊटैयितानुम्-मालाधारी श्रीराम भी; अन्तियिन्-संध्या का; कटत्कळ्-अनुष्ठान; आऱ्ऱि-पूरा करके; पॊलम्-स्वर्ण के; कुऴै-कुंडलधारिणी; मयिलिनोटुम्-कलापी-सी सीता के साथ; तुयिल् उऱ-सोने गये; इळवलुम्-छोटे वीर; ऍयिनर् कोनुम्-निषादराज; पुणरि पोलुम्-समुद्र-सम; इलङ्किय-विद्यमान; चेनै चूऴ-सेना के मध्य; कलङ्कलर्-अधीर न होकर; कात्तु निन्ऱार्-पहरा दे खड़े रहे; कतिरवन्-सूर्य; उतयम् चॆय्तान्-उदित हुआ। ४२०४

हिलती मालाधारी श्रीराम ने सायंसंध्यावंदन आदि अनुष्ठान पूरा किया। फिर वे स्वर्णकुंडलधारिणी और कलापी-निभ सीताजी के साथ निद्रा करने गये। छोटे वीर और निषादराज सागर-सम सेना को चारों ओर लगा देकर पहरा देते रहे। रात बीती और सूर्य उदित हुआ। ४२०४

कदिरव नुदय कालैक् कडन्कऴित् तिळव लोडुम्
अदिर्पॊलन् कऴलि नानव् वरुन्दवन् तन्नै येत्ति
विदितरु विमान मेवि विळङ्गिऴै योडुङ् गॊऱ्ऱम्
मुदिर्तरु तुणैव रोडु मुनिमनन् दॊडरप् पोनान् 4205

अतिर्-स्वरशील; पॊलन्-स्वर्णिम; कऴलिनान्-पायलधारी; कतिरवन्-सूर्य के; उतयम् कालै-उदय के समय में; कटन् कऴित्तु-आह्निक अनुष्ठान करके; अव्-उन; अरु तवन् तन्नै-श्रेष्ठ तपस्वी को; एत्ति-पूजा करके; इळवलोटुम्-छोटे के साथ; विळङ्किऴैयोटुम्-सुन्दर आभरणधारिणी के साथ; कॊऱ्ऱम्-और विजय; मुतिर् तरु-युक्त; तुणैवरोटुम्-साथियों के साथ; विति तरु-ब्रह्मा-दत्त; विमानम्-विमान पर; मेवि-चढ़कर; मुनि मनम्-मुनि के मन के; तॊटर-पीछे आते; पोनान्-गये। ४२०५

ध्वनिमय पायलधारी श्रीराम ने प्रातःकाल का आह्निक अनुष्ठान पूरा किया। उन महान तपस्वी की पूजा की। फिर उज्ज्वल आभरण-भूषिता सीताजी, लघुराज लक्ष्मण, विजयोत्कृष्ट साथियों के साथ ब्रह्मा-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दत्त विमान पर सवार होकर प्रस्थान किया। मुनि का मन उनके पीछे जा रहा था। ४२०५

ताविवान् पडर्न्दु मानन् दडैयिल देहुम् वेलैत्
तीविय कनिय दाहिच् चॅरुक्किय कामच् चॅव्वि
ओविय मुयिर्पॅऱ् ऱॅन्न वुम्बर्को नहरु मॊव्वा
माविय लयोत्ति शूऴु मदिऱ्पुऱन् दोन्ऱिऱ् ऱन्ऱे 4206

मानम्–विमान; ताबि–तेजी से जाता; वान्–आकाश में; तटै–बाधा से; इलतु–हीन; पटर्न्तु–आगे बढ़कर; एकुम् वेलै–जब जाता रहा; तीविय–मधुर; कनियतु आकि–अक्षय रहकर; चॅरुक्किय–मस्त; कामम्–मनोहारी; चॅव्वि–सौंदर्ययुक्त; ओवियम्–चित्र; उयिर् पॅऱ्ऱॅन्न–जीवंत हो उठा जैसे; उम्पर् कोन्–देवेंद्र का; नकरुम्–नगर भी (जिसकी); ऒव्वा–उपमान न बन सके; मा इयल्–प्रशंसा योग्य; अयोत्ति–अयोध्या के; चूऴुम्–आवरण की; मतिल् पुऱम्–बाहरी दीवार; तोन्ऱिऱ्ऱु–दिखायी दी। ४२०६

पुष्पक विमान आकाशमार्ग में अबाध गति से जा रहा था। तब मधुर तथा अक्षय प्रकृति वाला, तथा मस्त बनानेवाला, मनोहारी सौंदर्य से युक्त चित्र कोई जीवंत हो आए जैसे देवेंद्रनगर भी जिसकी उपमा नहीं बन सकता, उस अयोध्या के प्राचीर की बाहरी दीवार दिखायी दी। ४२०६

पॊन्मदिऱ् किडक्कै शूऴप् पॊलिवुडै नहरन् दोन्ऱ
नन्मदित् तुणैवर् तम्मै नोक्किय ञान मूर्त्ति
शॊन्मदित् तॊरुव रालुञ् जॊलप्पडा वयोत्ति तोन्ऱिऱ्
ऱॅन्नलुङ् गरङ्गऴ् कूप्पि यॅऴुन्दन रिऱैञ्जि निन्ऱार् 4207

पॊन् मतिल्–स्वर्णिम प्राचीर के; किटक्कै–स्थान; चऴ–घेरे रहे; पॊलिवु उटै–शानदार; नकरम् तोन्ऱ–नगर दिखायी दिया; नन्मति–बुद्धिमान; तुणैवर् तम्मै–साथियों को; नोक्किय–देखकर; ञानमूर्त्ति–ज्ञानमूर्ति श्रीराम के; ऒरुवरालुम्–किसी से भी; मतित्तु–अनुमान कर; चॊल्–वर्णन; चॊलप्पडा–नहीं किया जा सके ऐसी; अयोत्ति–अयोध्या नगरी; तोन्ऱिऱ्ऱु–दिखायी दे गयी; ऎन्नलुम्–कहने पर; करङ्कऴ्–हाथ; कूप्पि–जोड़कर; ऎऴुन्ततर्–उठे; इऱैञ्चि निन्ऱार्–विनत खड़े रहे। ४२०७

स्वर्ण-प्राचीर की छवि के अंदर शोभायमान अयोध्या दिखायी दी तो सद्बुद्धिमान साथियों को देखकर ज्ञानमूर्ति श्रीराम ने कहा कि किसी से भी अवर्णनीय महिमावाली अयोध्या दिखायी देती है, देख लो। उसे सुनते ही सभी हाथ जोड़ उठे और नमस्कार किया। ४२०७

अन्नदो रळवैयिन् विशुम्ब वायिनुम्
तुन्निरुङ् गदिरवर् तोन्ऱिना रनप

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊन्नणि पुट्पहप् पॊरुविन् मानमुम्
मन्नवर्क् करशनुम् वन्दु तोन्ड्रिनार् 4208

अन्नतु ओर् अळवॆयिन्–उस समय; विचुम्पतु–आकाश में रहनेवाला; आयिनुम्–हो तो भी; तुन्–पास-पास रहे; इरु कतिरवर्–वो सूर्य; तोन्ड्रिनार् ऎन्न–प्रगट हों जैसे; पॊन्–स्वर्णमय; अणि–सुन्दर; पुट्पकम्–पुष्पक नाम का; पॊरु इल्–अनुपम; मानमुम्–विमान; मन्नवर्क्कु अरचनुम्–और राजाधिराज; वन्नु तोन्ड्रिनार्–आ दिखायी दिये। ४२०८

तब पुष्पक बहुत दूर पर था। तो भी स्वर्णमय, सुंदर पुष्पक नाम का वह अप्रतिम विमान और राजाधिराज श्रीराम दोनों दो (या अनेक) सूर्यों के समान आ दिखायी दिये। ४२०८

अण्णले काण्डिया ललर्न्द तामरैक्
कण्णनुम् वानरक् कडलुङ् गड्पुडैप्
पॆण्णरुङ् गलमुनिन् पिन्बु तोन्ड्रिय
वण्णविर् कुमरनुम् वरुहिन् ड्रार्हळै 4209

अण्णले–महापुरुष; अलर्न्त–खिले; तामरै कण्णनुम्–कमल-सम आँखों वाले; वानरर्–और वानरों का; कटलुम्–सेना-सागर; कड्पु उटै–पतिव्रता; पॆण्–नारियों का; अरुकलमुम्–श्रेष्ठ शृंगार श्री सीताजी; निन्–आपके; पिन्पु–बाद; तोन्ड्रिय–जनित; वण्णम्–सुन्दर; विल् कुमरनुम्–धनुर्धर कुमार; वरुकिन्ड्रार्कळै–आते हैं (जो); काण्टि–(उन्हें) देख लें। ४२०९

हनुमान ने भरत से कहा कि हे महिमावान! उत्फुल्ल-कमलाक्ष सागर-सम सेना, और पतिव्रता स्त्रियों का शृंगार सीताजी और आपके अनुज, चित्र-धनुर्धर लक्ष्मण आ रहे हैं, देख लें। ४२०९

एळिरण् डाहिय वुलह मेड्रिनुम्
पाळ्पुड्ङ् गिडक्कुड़ पडिय वायदोर्
शूळॊळि मानत्तुत् तोन्ड्रु हिन्ड्रनन्
ऊळिया नॆन्ड्रुकॊण् डुणर्त्तुङ् गालैये 4210

एळु इरण्टु आकिय–सात के दो (चौदह); उलकम् एड्रिनुम्–लोक सवार हों; पाळ् पुड्रम्–तो भी खाली स्थान; किडक्कुड़–बाक़ी रखनेवाली; पडियतु आयतु–प्रकृति के बने; ओर्–एक; चूळ् ऒळि–सर्वव्यापी प्रकाश के; मानत्तु–विमान पर; ऊळियान्–युगपति; तोन्ड्रुकिन्ड्रनन्–दर्शन देते हैं; ऎन्ड्रु कॊण्टु–ऐसा; उणर्त्तुम् कालै–समझाते समय। ४२१०

वह पुष्पक यान ऐसा है कि उसमें चौदहों लोकों के वासी सवार हो जायँ तो भी खाली स्थान पाया जाय। वह व्यापनेवाली छवि से युक्त है, उस पर युगपति श्रीराम दर्शन देते हैं। ऐसा जब हनुमान ने बताया तब—। ४२१०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊन्नॊळि मेरुवित् पॊदुम्बिऱ् पुक्कदोऱ्
मिन्नॊळि मेहम्बोल् वीरन् तोन्ऱलुम्
मन्नॆदिर् वरुहुन रार्प्पि रावणन्
तॆन्नहर्क् कप्पुऱत् तळवुञ् जॆन्ऱदाल् 4211

पॊन् ऒळि–स्वर्ण-छवि; मेरुवित्–मेरु पर; पॊतुम्पिल्–एक कंदरा में; पुक्कतु–घुसी; ओर्–एक; मिन् ऒळि–बिजली के प्रकाश के साथ; मेकम् पोल्–(रहते) मेघ-सदृश; वीरन्–वीर श्रीराम के; तोन्ऱलुम्–दर्शन देने पर; मन्–राजा के; ऎतिर् वरुकुनर्–स्वागतार्थ आनेवालों का; आर्प्पु–कोलाहल; इरावणन्–रावण के; तॆन् नकर्क्कु–दक्षिणी नगर के; अप्पुऱत्तु–उस तरफ़; अळवुम्–तक भी; चॆन्ऱतु–गया। ४२११

स्वर्णच्छवि मेरु पर कंदरा में घुसी रही बिजली के साथ रहनेवाले मेघ के समान (सीताजी के साथ) श्रीवीरराघव के दर्शन पाते ही अगवानी के लिए आगत लोगों का कोलाहल सुदूर, दक्षिण की लंका के उस तरफ़ भी जा फैल गया। ४२११

ऊनुडै याक्कैविट् टुण्मै वेण्डिय, वानुडैत् तन्दैयार् वरवु कण्डॆनक्
कानिडैप् पोहिय कमलक् कण्णनैत्, तानुडै युयिरिनैत् तम्बि नोक्किनान् 4212

ऊनुटै–मांसल; याक्कै विट्टु–शरीर त्यागकर जिन्होंने; उण्मै वेण्टिय–सत्य खोजा उन; वान् उटै–स्वर्गवासी; तन्तैयार्–पिता का; वरवु कण्टु ऎन–आगमन देखा जैसे; कान् इटै–वन में; पोकिय–जो गये उन; कमलम् कण्णनै–कमलाक्ष को; तान् उटै–उनके; उयिरिनै–प्राणों (सम) को; तम्पि नोक्किनान्–कनिष्ठ भरत ने देखा। ४२१२

सत्यपालनार्थ मांसमय शरीर को जिन्होंने छोड़ दिया वे स्वर्गीय पिता स्वयं आ रहे हों, ऐसा; वन में जो गये थे उन कमलाक्ष श्रीराम को, अपने प्राण-सम भ्राता को भरत ने देखा। ४२१२

कॆट्टवान् पॊरुळ्वन्दु किडैप्प मुन्बुताम्
बट्टवान् पडरॊळिन् दवरिऱ् पॆयुणोय्
शुट्टवन् मानवऱ् रॊळुद लुन्निये
विट्टनन् मारुदि करत्तै मेन्मैयान् 4213

मेन्मैयान्–उत्तम भरत; कॆट्ट–खोयी गयी; वान् पॊरुळ्–श्रेष्ठ वस्तु; वन्तु किटैप्प–आ मिल गयी तो; मुन्पु–पहले; ताम् पट्ट–जो सहा; वान् पटर्–वह महादुःख जिनसे; ऒळिन्तवरिल्–छूट गया उनके समान; पॆयुळ् नोय्–दुःख-रोग (जिसको); चुट्टवन्–अब जिन्होंने जला दिया; मानवऱ्–(उन्होंने) मनुवंश दीप का; तॊळुतल्–नमस्कार करना; उन्नि–चाहकर; मारुति–मारुति के; करत्तै–हाथ को; विट्टनन्–छोड़ दिया। ४२१३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन्नत गुणों वाले उत्तम भरत ने, जिन्होंने खोयी चीज़ प्राप्त कर पहले के दुःख-दर्द से मुक्त लोगों के समान दुःख के रोग को जला दिया था, मनुकुलदीप श्रीराम को नमस्कार करने के विचार से हनुमान का हाथ छोड़ दिया। ४२१३

अक्कणत् तनुमनु मवणिन् ऱेहियत्
तिक्कुऱु मानत्तैच् चॆव्व नेय्दियच्
चक्करत् तण्णलैत् ताळ्न्दु मुन्निन्ऱान्
उक्कुऱु कण्णनी रॊळ्हु मार्बिनान् 4214

अ कणत्तु–तब; अनुमनुम्–हनुमान; अवण् निन्ऱु–वहाँ से; एकि–जाकर; अ तिक्कु उऱु–उस उत्तर दिशा की ओर आनेवाले; मानत्तैं–विमान के पास; चॆव्वस् ऍय्ति–सीधे जाकर; अ–उन; चक्करत्तु–चक्रधारी; अण्णलै–प्रभु के सामने; उकु उऱु–बहनेवाने; कण्ण नीर्–अश्रुजल से; ऒळ्कु–सिंचित; मार्पिनान्–वक्षवाले बनकर; ताळ्न्तु–झुककर; मुन् निन्ऱान्–खड़ा रहा। ४२१४

उसी क्षण हनुमान भी वहाँ से चला। उसके सामने आनेवाले पुष्पक विमान की ओर सीधे गया। अपने वक्ष को अपनी आँखों के अश्रु-जल से भिगोते हुए वह उनके सामने विनत खड़ा हो गया। ४२१४

उरुप्पविर् कनलिडै यॊळिक्क लुऱ्ऱवप्
पॊरुप्पविर् तोळनैप् पॊरुन्दि नायिनेन्
तिरुप्पॊलि मार्बनिन् वरवु शॆप्पिनेन्
इरुप्पन वायिन वुलहम् यावॆयुम् 4215

तिरु पॊलि–श्रीशोभित; मार्प–वक्ष वाले; नायिनेन्–कुत्ता (दास) मैं; उरुप्पु अविर्–तापयुक्त; कनल् इटै–आग में; ऒळिक्कल् उऱ्ऱ–छिपने को जो रहे; अ पॊरुप्पु–उन पर्वत; अविर्–के समान; तोळनै–कंधोंवाले के पास; पॊरुन्ति–जाकर; निन् वरवु–आपका आगमन; चॆप्पिनेन्–कहा; उलकम् यावॆयुम्–सारे लोक; इरुप्पन आयिन–स्थायी हुए। ४२१५

श्रीशोभित वक्ष वाले! कुत्ते-सदृश मैंने तापयुक्त आग में छिपने को उद्यत रहे उन पर्वतस्कंध भरत के पास जाकर आपके आगमन की सूचना दी। तभी सारे लोक रहनेवाले हुए। ४२१५

तीविनै याम्बल शॆय्यत् तीर्विला
वीविनै मुऱैमुऱै विळैव मॆय्म्मैयाय्
नीयवै तुडैत्तुनिन् ऱळिक्क नेर्न्दनै
यायिनु मन्बिना याञ्जॆय् मादवम् 4216

मॆय्म्मैयाय्–सत्यनिष्ठ; आयिनुम् अत्पिनाय्–माता से भी प्यारे; याम्–हमारे; पल–अनेक; तीविनै–दुष्कर्म के; चॆय्य–किये रहने से; तीर्विला–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अवार्य; वीवित्तै–मरण के सन्दर्भ; मुऱै मुऱै–बार-बार; विळैव–आते हैं; नी–तुम; अवै–उन्हें; तुटैत्तु नित्ऱु–पोंछते रहकर; अळिक्क नेर्न्तत्तै–बचाने आये; याम्–हमारे; चॅय्–पूर्वकृत; मा तवम्–महान तप (का फल) है। ४२१६

श्रीराम ने हनुमान की प्रशंसा की। हे सत्यनिष्ठ; माता से भी प्यारे! हमारे पूर्वकृत अनेक दुष्कर्मों के अवार्य फलस्वरूप मरण के संदर्भ बार-बार आते हैं। पर तुम उनको दूरकर प्राण बचाने आये हो! यह भी हमारे किये हुए महान तप का फल है! । ४२१६

अॅन्ऱुरैत् तनुमत्तै यिऱुहप् पुल्लिनान्
ऑन्ऱुरैत् तिऱुप्पदॅन् नुनक्कु मॅन्दैक्कुम्
इन्ऱुणैत् तम्बिक्कुम् याय्क्कु मॅन्ऱुनन्
कुन्ऱिणैत् तनवुयर् कुववुत् तोळिनान् 4217

अॅन्ऱु उरैत्तु–ऐसा कहकर; कुन्ऱु इणैत्तु अन–दो पर्वत मिले हों ऐसे; उयर्–उन्नत; कुववु–पुष्ट; तोळिनान्–कंधोंवाले; उनक्कुम्–तुम्हारे; अॅन्तैक्कुम्–मेरे पिता जटायु के; इन् तुणै–प्यारे संगी; तम्पिक्कुम्–छोटे भाई के; आय्क्कुम्–मेरी जननी के संबंध में; ऑन्ऱु–एक बात; उरैत्तु–कहकर; इऱुप्पतु–छूट जाना; अॅन्–कैसे सम्भव हो; अॅन्ऱुनन्–कहा और; अनुमत्तै–हनुमान को; इऱुक–कसकर; पुल्लिनान्–आलिंगन कर लिया। ४२१७

यह कहकर जुड़े पर्वत-सम उन्नत कंधों वाले श्रीराम ने आगे यह भाव भी प्रकट किया कि तुम्हारे, मेरे पिता (जटायु या दशरथ) के मेरे भाई (लक्ष्मण) के, और मेरी जननी के (प्रतीकार के) संबंध में कोई भी शब्द कहकर कैसे पार पाया जाय? और उसको गाढ़ालिंगन कर लिया। ४२१७

इडुऱु वान्तुणै यिरामन् शेवडि
शूडिय शॅन्नियन् तॊऴुद कैयिनन्
ऊडुयि रुण्डॅन वुलर्न्द याक्कैयन्
पाडुऱु पॅरुम्बुहऴुप् परदन् तोन्ऱिनान् 4218

ईटु उऱु–परस्पर-सम; वान् तुणै–अपने बड़े आश्रय; इरामन्–श्रीराम की; चेवटि–पादुकाओं को; चूटिय–धारण करते; चॅन्नियन्–सिर वाले; तॊऴुत–अंजलिबद्ध; कैयिनन्–हाथों वाले; उयिर्–जान; ऊटु–मध्य में; उण्टु–है; अॅन–ऐसा; उलर्न्त–(अनुमान से जाना जाय) शुष्क; याक्कैयन्–शरीरी; पाटु उऱु–विशिष्टतायुक्त; पॅरु पुकऴ्–प्रबल यशस्वी; परतन् तोन्ऱिनान्–भरत (पास) दिखाई दिये। ४२१८

(तब पुष्पक स्वागतार्थ आये लोगों के पास आ पहुँचा तो) परस्पर सम और भरत का आधार जो रहीं, उन श्रीराम की पादुकाओं को सिर पर धारण करके अंजलिबद्धहस्त भरत, जिनके प्राणवंत होने में बहुत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बारीकी से देखकर ही कुछ निश्चय किया जा सकता था, जो क्षीणकाय थे और जो बहुत यशस्वी हो गये थे प्रगट हुए। ४२१८

तोऩ्ऱिय परदऩैत् तॊऴुदु तॊल्लऱच्
चाऩ्ऱॆऩ निऩ्ऱव निऩैय तम्बियै
वाऩ्ऱॊडर् पेरर शाण्ड मऩ्ऩऩै
ईऩ्ऱवळ् पहैञऩैक् काण्डि यीण्डॆऩ्ऱाळ् 4219

तॊल् अऱम्–सनातन धर्म के; चाऩ्ऱु–साक्षी; ऍऩ–रूप; निऩ्ऱवऩ्–जो रहा उस (हनुमान) ने; तोऩ्ऱिय–पास आये; परतऩै–भरत को; तॊऴुदु–नमस्कार करके; वाऩ्–मोक्ष; तॊटर्–पहुँचानेवाले; पेर्–बड़े; अरचु–(कैंकर्य) राज्य के; आण्ट–शासक; मऩ्ऩऩै–राजा को; ईऩ्ऱवळ्–जननी के; पकैञऩै–शत्रु को (भरत को); इऩैय तम्पियै–ऐसे छोटे भाई को; ईण्टु–यहाँ; काण्टि–देख लें; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (श्रीराम से)। ४२१९

सनातनधर्म-साक्षीरूप हनुमान ने आगत भरत को नमस्कार किया और श्रीराम को बताया कि मोक्षप्रापक कैंकर्य-राज्य के शासक और मातृ-शत्रु और आपके ऐसे छोटे भाई भरत को इधर देखिये। ४२१९

काट्टिऩऩ् मारुदि कण्णिऱ् कण्डवत्
तोट्टलर् तॆरियला निलैमै शॊल्लुङ्गाल्
ओट्टिय माऩत्तु ळुयिरिऱ् ऱन्दैयार्
कूट्टुरुक् कण्डऩ्ऩ तऩ्मै कूडिऩाऩ् 4220

मारुति–मारुति ने; काट्टिऩऩ्–दिखाया; कण्णिल् कण्ट–आँखों से देखकर; अ तोटु–उन पुष्पों से; अलर्–खिली; तॆरियलाऩ्–मालाधारी का; निलैमै–हाल; चॊल्लुङ्काल्–कहा जाय तो; ओट्टिय–चलाये गये; माऩत्तु–विमान पर; उयिरिऩ् तऩ्तैयार्–जीवंत पिता का; कूटु उऱु कण्टु अऩ्ऩ–युक्त आकार देखा जैसी; तऩ्मै कूटिऩाऩ्–स्थिति में आये। ४२२०

मारुति ने दिखाया और श्रीराम ने देखा। तो पुष्पित-सुमन-माला-धारी श्रीराम का हाल क्या कहें ? विमान में आगत जीवंत पिता के दर्शन होने पर जो आनंद हुआ वैसे आनंद से भर गये। ४२२०

अव्वयि ऩयोत्ति वैहुञ् जऩमॊडु मक्कु रोणि
तव्वलि लाऱु पत्ता यिरमॊडुऩ् दाय रोडुम्
इव्वयि तडैऩ्दु ळोरैक् काण्बऩॆऩ् ऱिराम ऩुऩ्ऩच्
चॆव्वैयि निलत्तै वऩ्दु शेर्ऩ्ददु विमाऩऩ् दाऩुम् 4221

अव्वयिऩ्–तब; अयोत्ति–अयोध्या में; वैकुम्–वास करनेवाले; चऩमॊटुम्–लोगों के साथ; तव्वल् इल्–त्रुटिहीन; आऱुपत्तु आयिरम्–साठ हजार; अक्कुरोणियॊटुम्–अक्षौहिणी सेना के साथ और; तायरोटुम्–माताओं के साथ;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इव्वयित्–यहाँ; अटैन्तुळोरै–आये हुओं को; काण्पॅन्–देखूँ; ऍन्ऱु–ऐसा; इरामत् उन्त–श्रीराम ने सोचा तो; विमानम् तानुम्–विमान स्वयं; निलत्तै–भूमि को; चॅव्वयित्–सीधे; वन्तु–आकर; चेर्न्ततु–पहुँचा। ४२२१

श्रीराम ने तुरन्त मन में विचार किया कि मैं अयोध्यापुरिवासी, निर्दोष साठ सहस्र अक्षौहिणी सेना; माताएँ और यहाँ आगत लोग —इनसे मिलना चाहता हूँ। उनका भाव जानकर पुष्पक यान सीधे भूमि पर उतर आया। ४२२१

ऍव्वयि नुयिर्हट्कु मिराम नेऱिय
शॅव्विय पुट्पह निलत्तैच् चेर्दलुम्
अव्ववर्क् कणुहिय वमरर् नाडुय्क्कुम्
ऍव्वमिन् मानमॅन् ऱिशैक्क लायदाल् 4222

इरामत् एऱिय–श्रीराम जिस पर सवार थे; चॅव्विय–वह सुन्दर; पुट्पकम्–पुष्पक; निलत्तै–भूमि में; चेर्तलुम्–आया तो; ऍव्वयिन्–सर्वत्र रहनेवाले; उयिर्कट्कुम्–जीवों को; अव्ववर्क्कु–उनके योग्य; अणुकिय–प्राप्त; अमरर नाटु–स्वर्गलोक; उय्क्कुम्–पहुँचा सकनेवाला; ऍव्वम् इल्–निर्दोष; मानम् ऍन्ऱु–यान; इचैक्कल् आयतु–कहलाने योग्य रहा। ४२२२

जब श्रीराम का वाहन पुष्पक यान भूमि पर आया तब वह उस विमान के समान रहा, जो पुण्यवान जीवों को उनके योग्य स्वर्ग लोकों में पहुँचानेवाला हो और सर्वथा निर्दोष हो। ४२२२

तायरुक् कन्ऱु शार्न्द कन्ऱॅनुन् दहैय तानान्
मायैयिऱ् पिरिन्दोर्क् कॅल्ला मनोलयम् वन्द दॊत्तान्
आयिळै यर्क्कुक् कण्णु ळाडिरुम् बावै यानान्
नोयुऱुत् तुलर्न्द याक्कैक् कुयिर्पुहुन् दालु मॊत्तान् 4223

तायरुक्कु–माताओं के सामने; अन्ऱु–उसी दिन; चार्न्त–मिला; कन्ऱु–बछड़ा; ऍनुम्–कहा जाय; तकैयन् आनान्–ऐसे हो गये; मायैयिन्–माया से; पिरिन्तोर्क्कु–छूटे लोगों (के); ऍल्लाम्–सभी के लिए; मनोलयम्–मन के पहुँचने स्थान; वन्ततु ऒत्तान्–आ गया जैसे रहे; आय्–सुन्दर; इळैयर्क्कु–छोटे भाइयों के लिए; कण् उळ्–आँखों के अंदर की; आटु इरुम्–हिलती मूल्यवान; पावै आनान्–पुतली-सदृश रहे; नोय् उऱुत्तु–रोगपीड़ित हो; उलर्न्त–सूख गये-से; याक्कैक्कु–शरीर में; उयिर् पुकुन्तालुम्–जान आयी; ऒत्तान्–जैसे भी रहे। ४२२३

श्रीराम तब माताओं के लिए तद्दिन-जनित बछड़े के समान रहे। माया से छूटे लोगों के लिए समाधि (मनोलय) के पद के समान दिखे। सुंदर कनिष्ठ भ्राताओं के लिए आँखों के तारे बने। रोगपीड़ित क्षीण शरीर में प्राण आ गये हों जैसे लगे। ४२२३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎळिवरु मुयिर्हट् कॆल्ला मीन्ऱदा यॆदिर्न्द दॊत्तान्
अळिवरु मऩत्तोर्क् कॆल्ला मरुम्बद वमुद मानान्
ऒळिवऱप् पिऱन्द दॊत्ता नुलहिनुक् कॊण्क णार्क्कुत्
तॆळिवरुङ् गळिप्पुच् चॆय्युन् देम्बिऴित् तेऱ लॊत्तान् 4224

ऎळिवरुम्—दीन बने; उयिर्कट्कु—जीव; ऎल्लाम्—सभी के लिए; ईन्ऱ ताय्—जननी माता; ऎतिर्न्ततु—सामने आयी हो; ऒत्तान्—जैसे बने; अळि वरुम्—प्यार-गद्गद; मऩत्तोर्क्कु ऎल्लाम्—मन वाले सभी के लिए; अरु पत—श्रेष्ठ, पक्व; अमुतम् आनान्—अमृत बने; उलकिनुक्कु—(ज्ञानियों के) लोक को; ऒळिवु अऱ—दुराव छोड़कर; पिऱन्ततु ऒत्तान्—प्रत्यक्ष प्रगट जैसे रहे; ऒळ् कणार्क्कु—सुन्दराक्षियों के लिए; तॆळिवु अरु—अस्पष्टतायुक्त अच्छा; कळिप्पु चॆय्युम्—मोद देनेवाले: तेम्पिऴि—मधुर मधु के; तेऱल्—मद्य; ऒत्तान्—के समान रहे। ४२२४

दीन लोगों को जननी के समान लगे। प्यारे लोगों के लिए पक्व अमृत के समान रहे। ज्ञानी लोगों के लिए प्रत्यक्ष प्रकट भगवान लगे। सुंदराक्षी स्त्रियों के लिए अस्पष्ट मस्ती लानेवाले मधुर मद्य के समान लगे। ४२२४

आवियङ् गवऩ लान्मऱ् ऱिन्मैया लऩैय नीङ्गक्
कावियङ् गऴनि नाडु नहरमुङ् गवन्ऱु वाऴुम्
माविय लुण्क णारु मैन्दरुम् वळ्ळ लॆय्द
ओविय मुयिर्पॆऱ् ऱॆन्ऩ वोङ्गिऩ रुणर्वु पॆऱ्ऱार् 4225

अङ्कु आवि—वहाँ के प्राण; अवऩ् अलाऩ्—उनके सिवा; मऱ्ऱु इन्मैयाल्—और कुछ नहीं थे, अतः; अऩैयऩ्—उनके; नीङ्क—छोड़ जाने पर; काविः—नीलोत्पल-युक्त; अम्—सुन्दर; कऴनि नाटुम्—खेतों के कोसल देश में; नकरमुम्—और अयोध्या नगर में; कवऩ्ऱु वाऴुम्—चिंतित जो रहीं; मा इयल्—आमके टिकोरे-सी; उण् कणारुम्—अंजन लगी आँखों वालियाँ; मैन्तरुम्—और पुरुष; वळ्ळल् ऎय्त—प्रभु के लौटने पर; ओवियम्—चित्र; उयिर् पॆऱ्ऱु—जीवित हो गये; ऎऩ्ऩ—जैसे; ओङ्किनर्—फूल उठे; उणर्वु पॆऱ्ऱार्—सप्रज्ञ हो गये। ४२२५

वहाँ के लोगों के लिए प्राण श्रीराम ही थे। अतः उनके चले जाने पर नीलोत्पलसंकुल खेतों वाले कोसल देश में और अयोध्या नगर में आम के टिकोरे-सी आँखों वाली स्त्रियाँ और पुरुष सभी दुःखी तथा कृश रहते थे। अब उनके आकर मिल जाने से जीवन-प्राप्त चित्रों के समान वे सप्रज्ञ हो गये और फूल उठे। ४२२५

चुण्णमुऱ् जान्दु नॆय्युऱ् जुरिवळै मुत्तुम् बूवुम्
ऎण्णॆयुङ् गलिऩ मावि लाऴियु मॆण्णिल् याऩै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वण्णवार् मदमुन् नीरु मान्मदन् दऴुवु मादर्
कण्णवाम् बुत्तलु मोडिक् कडलैयुङ् गडन्द वन्ऱे 4226

चुणणमुम्–सुगंधचूर्ण; चान्तुम्–चन्दन; नॅय्युम्–और घी; चुरिबळै–आवर्तयुक्त शंखों; मुत्तुम्–के मोती और; पूवुम्–पुष्प; ॲण्णॅयुम्–तेल; कलित्तम्–रासयुक्त; मा–अश्वों के; विलाऴियुम्–मुख का झाग; ॲण्णिल्–असंख्य; यात्तै–हाथियों से; वण्णम्–रंगीन; वार्–झरनेवाला; मतमुनीरुम्–त्रिमदनीर; मान्मतम्–कस्तूरी; तऴुवुम्–शरीर पर मलकर; मातर्–रही स्त्रियों के; कण्णाम् पुत्तलुम्–नेत्र का आनंद-बाष्प; ओटि–बहकर; कटलैयुम्–समुद्र को भी; कटन्त–पार कर गये। ४२२६

लोगों ने आनंदातिरेक का उत्सव मनाया और सर्वत्र सुगंध चूर्ण, चंदन, घी, आवर्तयुक्त शंखों के जनाये मोती, पुष्प, तेल आदि बिखेरे। रासयुक्त अश्वों का मुख का झाग, और हाथियों का विविध रंग का त्रिमदनीर निकल बहा। कस्तूरी-चर्चित रमणियों की आँखों से आनंद-बाष्प झरकर बहा। सब मिलकर समुद्र को भी पार कर गया। ४२२६

अत्तैवरु मत्तैय राहि यडैन्दुऴि यरुळिन् वेलै
तत्तैयित्ति दळित्त तायर् मूवरुन् दम्बि मारुम्
पुत्तैयुनून् मुत्तिवन् तात्तुम् बॊन्नणि विमानत् तेऱ
वत्तैहळऱ् कुरिशित्त् मुन्दि मादवन् ताळिल् वीऴ्न्दान् 4227

अत्तैवरुम्–सभी; अत्तैयर् आकि–उस स्थिति में; अडैन्तुऴि–आये तब; अरुळित्–कृपा के; वेलै तत्तै–सागर को; इत्तितु अळित्त–ससुख-जनानेवाली; मूवर् तायरुम्–तीनों माताएँ; तम्पि मारुम्–और छोटे भाई; पुत्तैयुम् नूल्–यज्ञोपवीतधारी; मुत्तिवत् तात्तुम्–मुनि वसिष्ठ; पॊन् अणि–स्वर्णशोभित; विमानत्तु–विमान पर; एऱ–चढ़े तब; वत्तै कऴल्–धृत पायलधारी; कुरिचिल्–पुरुषोत्तम ने; मुन्ति–पहले; मातवत्–महातपस्वी के; ताळिल्–चरणों में; वीऴ्न्तान्–दण्डवत् की। ४२२७

ऐसी साज के साथ वे सब गये। विमान आकर रुका। तब तीनों जननियाँ जिन्होंने दयासागर श्रीराम को सुखद रूप से जनाया (या पाला था), और उपवीतधारी महर्षि वसिष्ठ विमान पर चढ़े। धृत पायलधारी श्रीराम ने प्रथमतः महातपस्वी के चरणों में नमस्कार किया। ४२२७

ॲडुत्तनन् मुत्तिवत् मऱ्ऱव् विरामनै याशि कूऱि
अडुत्तुळ तुन्ब नोङ्ग वणॆत्तणैत् तन्बु कूऱ्न्तु
विडुत्तुऴि मिळैय वीरत् वेदियत् ताळिल् वीऴ
वडित्तनून् मुत्तियु मेन्दि वाऴ्त्तित्ता नाशि कूऱि 4228

मुत्तिवत्–मुनि ने; अव् इरामनै–उन श्रीराम को; ॲटुत्तनन्–उठाया; आशि कूऱि–आशीर्वाद कहकर; अडुत्तु उळ–आगे होनेवाला; तुन्पम्–दुःख;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीङ्क–दूर हो ऐसा; अत्तु कूर्न्तु–प्रेम के आधिक्य से; अणैत्तु अणैत्तु–कई बार आलिंगन करके; विट्टुत्तुळि–छोड़ दिया फिर; इळैय वीरत्–छोटे वीर के; वेतियत् ताळिल्–महर्षि के चरणों में; वीळ–गिरते समय; वटित्त–श्रेष्ठतम; नूल् मुत्तियुम्–शास्त्रज्ञ मुनि ने; एन्ति–उठाकर; आचि कूरि–आशीर्वाद देकर; वाळ्त्तित्तात्–मंगल-कामना प्रगट की। ४२२८

मुनिवर ने उन्हें उठाया और आशीर्वाद दिया और भावी (जन्म आदि) दुःख से निवृत्ति के हेतु भक्ति के साथ उन्हें आलिंगन कर लिया। जब उन्होंने आलिंगन छोड़ा तब लघुवीर लक्ष्मण उनके चरणों में गिरे। शास्त्रसारज्ञ महर्षि ने उन्हें आशीर्वाद देकर मंगलकामना प्रकट की। ४२२८

कैहयत् तनयै मुन्दक् कालुऱप् पणिन्दु मऱ्ऱै
मॊय्कुळ लिरुवर् ताळु मुऱैमैयिन् वणङ्गुऱ् जॆङ्गण्
ऐयनै यवर्हळ् तामु मन्बुऱत् तळुवित् तत्तम्
शॆय्यता मरैक्क णीराल् मज्जनत् तॊळिलुऱ् जॆय्दार् 4229

कैकयत् तनयै–केकय-तनया को; मुन्त–पहला स्थान देकर; काल् उऱ–चरणों पर; पणिन्तु–नमन करके; मऱ्ऱै–बाद; मॊय् कुळल्–घने केश वाली; इरुवर ताळुम्–दोनों माताओं के चरणों में; मुऱैमैयित्–यथाक्रम; वणङ्कुम्–नमन करने पर; चॆं कण्–अरुणाक्ष; ऐयनै–प्रभु को; अवर्कळ् तामुम्–उन्होंने भी; अत्तु उऱ–सस्नेह; तळुवि–आलिंगन करके; तम् तम्–अपनी-अपनी; चॆय्य–लाल; तामरै कण् नीराल्–कमल-सी आँखों के जल से; मज्चनम्–मज्जन का; तॊळिलुम् चॆय्तार्–कार्य कर दिया। ४२२९

फिर अरुणाक्ष प्रभु ने पहले केकयतनया के चरणों में सिर लगाकर नमस्कार करने के बाद अन्य घने केश-वाली दोनों माताओं के चरणों में क्रमानुसार नमस्कार किया। माताओं ने भी उन्हें स्नेह के साथ गले लगा लिया और अपने अरुण-कमल-नेत्रों से बहनेवाले अश्रुजल से मज्जन करा दिया। ४२२९

अन्नमु मुन्नर्च् चॊन्न मुऱैमैयि नडियिल् वीळ्न्दाळ्
तन्निह रिलाद वॆन्ऱित् तम्बियुन् दायर् तङ्गळ्
पॊन्नडित् तलत्तिल् वीळत् तायरुम् बॊरुन्दप् पुल्लि
मन्नवऱ् किळव नीये वाळियॆन् ऱाशि शॊन्नार् 4230

अन्नमुम्–हंस-सी देवी; मुन्नर्–पहले (ऊपर); चॊन्न–कहे गये; मुऱैमैयित्–क्रम में; अडियिल् वीळ्न्ताळ्–चरणों में गिरीं; तन् निकर्–अपनी सानी; इलात–न रखनेवाले; वॆन्ऱि तम्पियुम्–विजयी कनिष्ठ भी; तायर् तङ्कळ्–माताओं के; पॊन् अडि–मनोरम चरणों में; तलत्तिल् वीळ–भूमि पर गिरे तो; तायरुम्–माताओं ने; पॊरुन्त–कसकर; पुल्लि–गले लगाकर; मन्नवऱ्कु–राजाराम के; इळवल् नीये–छोटे भाई (कहने योग्य) तुम ही हो; वाळि–जय हो; ऎनऱु–कहकर; आचि चॊन्नार्–आशीर्वचन कहे। ४२३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हंस-सी सीताजी ने भी पूर्वोक्त क्रम में उनका नमस्कार किया। फिर उपमा-रहित लक्ष्मण ने भी माताओं के सुंदर चरणतल में गिरकर दण्डवत् की। माताओं ने गाढ़ालिंगन करके जयोच्चार किया कि (कार्य में) केवल तुम एक राजाराम के छोटे भाई हो! और आशीर्वाद किया। ४२३०

शेवडि यिरण्डु मत्बु मडियुऱै याहच् चेर्त्तिप्
पूवडि पणिन्दु वीऴ्न्द परदनैप् पॊरुमि विम्मि
नाविडै युरैप्प दॊन्ऱु मुणर्न्दिल निन्ऱ नम्बि
आवियु मुडलु मॊन्ऱत् तऴुवित्त नऴुदु शोर्वान् 4231

चेवटि इरण्टुम्–दोनों पादुकाओं और; अन्पु–भक्ति को; अटि उऱै आक–चरण-भेंट के रूप में; चेर्त्ति–समर्पित करके; पू अटि–कमल-चरणों में; पणिन्तु–झुककर; वीऴ्न्त–जो गिरे; परततै–उन भरत को देख; पॊरुमि विम्मि–सिसक कर, कलप कर; ना इटै–जिह्वा से; उरैप्पतु–कहना; ऒन्ऱुम्–कुछ; उणर्न्तिलत्–नहीं जानकर; निन्ऱ–जो खड़े रहे; नम्पि–उन श्रीराम ने; आवियुम्–प्राण और; उटलुम्–शरीर; ऒन्ऱ–मिल जायँ, ऐसा; तऴुवित्त–गले लगा लिया; अऴुतु चोर्वान्–रोकर व्यग्र होनेवाले ने। ४२३१

भरत ने दोनों पादुकाओं को अपनी भक्ति-सहित श्रीराम को भेंट के रूप में समर्पित किया और कमल-चरणों में दण्डवत् की। उन्हें देखकर श्रीराम दुःखी हो सिसके। जीभ से क्या कहा जाय? वे कुछ बोल नहीं पाये। कुछ देर स्तब्ध रहने के बाद वे प्राणों और शरीर को एक करते हुए गाढ़ालिंगन करके रोये और शिथिल बने रहे। ४२३१

तऴुवित्त निन्ऱ कालैत् तत्तिवी ऴरुवि कालुम्
विऴुमलर्क् कण्णीर् मूरि वॆळ्ळत्तान् मुरुहिन् शॆव्वि
वऴुवुऱप् पिन्नि मूशु माशुण्ड शडैयिन् मालै
कऴुवित्त नुच्चि मोन्दु कन्ऱुकाण् करवै यन्नान् 4232

तऴुवित्तन्–गले लगाकर; निन्ऱ कालै–रहते वक्त; तत्ति वीऴ्–उछलकर गिरनेवाली; अरुवि कालुम्–नदी निकालनेवाली; विऴुमलर्–श्रेष्ठ कमल-सी; कण्णीर्–आँखों के जल की; मूरि वॆळ्ळत्ताल्–बड़ी बाढ़ के कारण; मुरुकिन् चॆव्वि–यौवन का सौंदर्य; वऴु उऱ–बिगाड़कर; पिन्नि मूचु–ऐंठकर बटी; माचु उण्ट–मैली; चटैयिन् मालै–जटाजूट को; कऴुवित्तन्–धुला दिया; उच्चि मोन्तु–मूर्धा सूँघकर; कन्ऱु काण्–वत्स को देखनेवाली; करवै अन्नान्–दुधारी गाय के समान रहे। ४२३२

आलिंगन करके श्रीराम ने फाँदती-गिरती अश्रुजल-नदी बहानेवाली आँखों के जल की बाढ़ से यौवन-सौंदर्यहारी, ऐंठकर बटी और मैली (भरत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

की) जटा को धुलाते हुए सिर सूँघा। वे तब बछड़े से मिलनेवाली दुधारी माता गाय की-सी स्थिति में रहे। ४२३२

अन्नैयदोर् कालन् दम्बॉऱ् चडैमुडि यडिय वाहक
कन्नैकळ् लमरर् कोमाऱ् कट्टवऱ् पडुत्त काळै
तुन्नैपरि करिते रूर्दि यॅन्ऱिवै पिऱवुन् दोलिन्
विनैयुऱु शॅरुप्पुक् कीन्दान् विरैमलर्त् ताळिन् वीळ्न्दान् 4233

अन्नैयतु–ऐसे; ओर् कालत्तु–उस समय में; कन्नैकळल्–ध्वनिमय पायलधारी; अमरर् कोमान्–देवेन्द्र के; कट्टवत्–विजेता (इन्द्रजित्) को; पट्टुत्त काळै–जिन्होंने मारा, उन ऋषभ-सम; तुन्नै–तीव्रगामी; परि–अश्व; करि–हाथी; ऊर्ति तेर्–सवारी का रथ; ऍन्ऱ–जो हैं; इवै–ये और; पिऱवुम्–अन्य; तोलिन्–चमड़े की; विन्नै उऱु–बनी; चॅरुप्पुक्कु–पादुका को; ईन्तान्–समर्पित किये थे (जिन्होंने) वे भरत; विरै मलर्–सुगंधित कमल-सम; अम् पॊन्–सुन्दर स्वर्णवर्ण; चटै मुटि–जटाभार को; अटियतु आक–चरणों में लगाकर; ताळिन् वीळ्न्तान्–चरणों पर गिरे। ४२३३

तब ध्वनिमय पायलधारी देवेंद्रविजेता इंद्रजित् के संहारक, ऋषभ-सम लक्ष्मण ने उन भरत के चरणों से अपना सुगंधित कमल-सम स्वर्णिम जटा वाला सिर लगाकर उनमें नमस्कार किया; जिन्होंने श्रीराम की चमड़े की बनी पादुका को तीव्रगामी अश्व, गज, वाहन रथ आदि समर्पित किये थे। ४२३३

ऊडुऱु कमलक् कण्णीर् तिशैतॊऱुञ् जिविरि योडत्
ताडॊडु तडक्कै यारत् तळुविनन् तन्निमै नीङ्गिक्
काडुऱैन् दुलैन्द मॅय्यो कैयऱु कवलै कूर
नाडुऱैन् दुलैन्द मॅय्यो नैन्दर्दॅन् ऱुलह नैय 4234

उलकम्–लोकवासी; तन्निमै नीङ्कि–अकेला रहना असंभव करके; काटु उऱैन्तु–वन में वास करके; उलैन्त–जो धुला; मॅय्यो–वह शरीर; कै अऱु–निष्क्रिय बनानेवाली; कवलै कूर–चिंता के बढ़ने से; नाटु उऱैन्तु–देश में रहकर; उलैन्त मॅय्यो–जो घुला वह शरीर; नैन्ततु–कृश हुआ; ऍन्ऱु–ऐसा पूछकर; नैय–क्षुब्ध हुए; कमलम् कण्–कमल-से नेत्र; ऊटु उऱु–से बहनेवाला; कण्णीर्–अश्रु; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; चिविरि ओट–छितरकर बहा; ताळ् तॊटु–आजानु; तट कै–विशाल बाहुओं से; आर तळुवितन्–खूब लपेट लिया। ४२३४

उन दोनों को देखकर लोकवासी यह पूछने लगे कि प्रभु को अकेले न जाने देकर जो वन में रहे और कृश हो गये उन लक्ष्मण का शरीर कृश है या निष्क्रिय बनानेवाले दुःख के बढ़ते राज्य में रहकर जो घुले उन भरत का शरीर कृश है ? लोकवासियों के दुःख के कारण व्यग्र होते उनके कमल-नेत्रों से जो अश्रु बह निकला वह सभी दिशाओं में बिखरकर बहा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तब भरत ने अपने आजानु भुजाओं से लक्ष्मण को गाढ़ालिंगन कर लिया। ४२३४

मूवर्क्कु मिळैय वळ्ळल् मुडिमिशै मुहिऴ्त्त कैयन्
तेवर्क्कुन् देवन् ताळुञ् जॅऱिकऴ लिळवल् ताळुम्
पूवर्क्कम् बॊऴिन्दु वीऴ्न्दा नॅडुत्तनर् पॊरुन्दप् पुल्लि
वाविक्कु ळन्न मन्नाळ् मलरडित् तलत्तु वीऴ्न्दान् 4235

मूवर्क्कुम्–तीनों के; इळैय–छोटे; वळ्ळल्–प्रभु शत्रुघ्न; मुटि मिचै–सिर पर; मुकिऴ्त्त–अंजलि करके रखे गये; कैयन्–हाथोंवाले; तेवर्क्कुम्–देवों के; तेवन्–देव श्रीराम के; ताळुम्–चरणों में और; जॅऱि कऴल्–पहनी हुई पायल वाले; इळवल् ताळुम्–लघुराज के चरणों में; पू वर्क्कम्–पुष्पवर्ग; पॊऴिन्तु–बरसकर; वीऴ्न्तान्–गिरे; अॅटुत्तनर्–उठाया; पॊरुन्त–खूब कसकर; पुल्लि–आलिंगन करके; वाविक्कुळ्–सरोवर में (रहते); अन्नम् अन्नाळ्–हंस के समान जो रहती हैं उनके; मलर्–कमल-सम; अटि तलत्तु–चरणतल में; वीऴ्न्तान्–गिरा शत्रुघ्न। ४२३५

फिर तीनों के छोटे भाई शत्रुघ्न सिर पर अंजलिबद्ध हाथ धरे आये और देव-देव श्रीराम के और धृत पायलधारी लक्ष्मण के चरणों में पुष्प-राशि बरसाकर विनत हुए। दोनों ने उन्हें उठाकर छाती से लगा लिया। बाद शत्रुघ्न सरोवरवासी हंस के सदृश रहनेवाली सीताजी के कमल-चरण में गिरे। ४२३५

पिन्निणैक् कुरिशिल् तन्नैप् पॆरुङ्गैयाल् वाङ्गि वीङ्गुम्
तन्निणैत् तोळ्ह ळारत् तऴुवियत् तम्बि मारुक्
किन्नुयिर्त् तुणैवर् तम्मैक् काट्टिना त्तिरुवर् ताळुम्
मन्नुयिर्क् कुवमै कूर वन्दवर् वणक्कञ् जॅय्दार् 4236

पिन् इणै कुरिचिल् तन्नै–अपने लघु भ्राता भरत से जो कभी नहीं बिछुड़ता उसे; पॆरु कैयाल्–विशाल हाथों से; वाङ्कि–उठाकर श्रीराम ने; तन्–अपने; वीङ्कुम्–फूले हुए; इणै तोळ्कळ्–हस्तद्वय से; आर तऴुवि–कसकर आलिंगन करके; अ तम्पि मारुक्कु–उन छोटे भाइयों को; इन् उयिर्–अपने प्राणप्यारे; तुणैवर् तम्मै–साथियों को; काट्टिनान्–दिखाया; मन् उयिर्क्कु–नित्य प्राणों के; उवमै कूर–समान जो रहे उन; वन्तवर्–आगतों ने; इरुवर् ताळुम्–दोनों के चरणों में; वणक्कम् चॅय्तार्–नमस्कार किया। ४२३६

बाद श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भरत से अपृथक् रहनेवाले शत्रुघ्न को उठाकर अपने दोनों स्थूल भुजाओं से कसकर आलिंगन किया। फिर उन दोनों भाइयों को अपने प्राणप्यारे मित्रों का परिचय कराया। श्रीराम के मधुर प्राण-सम प्यारे उन लोगों ने जो श्रीराम के साथ आये थे भरत और शत्रुघ्न के चरणों में नमस्कार किया। ४२३६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुरक्किनत् तरशैच् चेयैक् कुमुदनैच् चाम्बन् तन्नैच्
चॅरुक्किळर् नीलन् तन्नै मऱ्ऱुमत् तिऱ्ऱति नोरै
अरक्करुक् करशै वॅव्वे ऱडैवितिन् मुदन्मै कूऱि
मरुक्कमळ् तॊडैयन् मालै मार्बिनन् परद नित्ऱान् 4237

मरु कमळ्–सुगंध छिटकानेवाली; तॊटैयल्–गुँथी; मालै मार्पिनन्–माला से शोभित वक्ष वाले भरत; कुरङ्कु इनत्तु–वानरकुल के; अरचै–राजा को; चेयै–पुत्र अंगद को; कुमुतनै–कुमुद को; चाम्पन् तन्नै–जाम्बवान को; चॅरु किळर्–युद्धोत्साही; नीलन् तन्नै–नील को; मऱ्ऱुम्–और; अ तिऱ्ऱतिनोरै–उस वर्ग को; अरक्करुक्कु–राक्षसों के; अरचै–राजा को; वेऱु वेऱु–अलग-अलग; अडैवितिल्–क्रमानुसार; मुतन्मै–शिष्टवचन; कूरि निन्ऱान्–कहकर खड़े रहे। ४२३७

सुगंधित, गुँथी मालाधारी भरत ने वानरराजा, राजपुत्र अंगद, कुमुद, जाम्बवान, युद्धोत्साही नील से और अन्य वानरों से, तथा राक्षस-राज से अलग-अलग और क्रमानुसार शिष्ट वचन कहे। कहकर वे खड़े रहे। ४२३७

मन्दिरच् चुऱ्ऱत् तुळ्ळार् तम्मॊडुम् वयङ्गु तानैत्
तन्दिरत् तलैव रोडुन् दमरॊडुन् दरणि याळुम्
शिन्दुरक् कळिऱु पोल्वा रॅवरॊडुञ् जेनै योडुम्
शुन्दरत् तडन्दोळ् वॅऱ्ऱिच् चुमन्दिरन् तोन्ऱि नानाल् 4238

चुन्तरम्–सुन्दर; तट तोळ्–विशाल-बाहु; वॅऱ्ऱि–विजयी; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र; मन्तिरम्–मंत्री; चुऱ्ऱत्तु–मंडल में; उळ्ळार् तम्मॊटुम्–रहे लोगों के साथ; वयङ्कु तानै–गण्य सेना के; तन्तिरर् तलैवरोटुम्–सेनानायकों के साथ; तमरॊटुम्–परिवारों के साथ; तरणि–धरणी के; आळुम्–पालक; चिन्तुरम्–सिंदूर-तिलक-धारी; कळिऱु पोल्वार्–हाथियों के समान; ऎवरॊटुम्–सभी के साथ; चेनैयोटुम्–सेना के साथ; तोन्ऱिनान्–आया। ४२३८

सुंदर विशाल-बाहु तथा विजयी सुमंत्र, मंत्रीगण, सेना-सहित सेना-नायकों तथा अपने (या उनके) परिवारों और सिंदूरतिलकधारी हाथियों-सम धराधिपों को साथ लेकर श्रीराम के दर्शन के लिए आया। ४२३८

अळुहैयु मुवहै तानुन् दनित्तनि यमर्शॅय् देऱ्ऱ्
तॊळुवन नॅळुन्दु विम्मिच् चुमन्दिर निऱ्ऱ लोडुम्
तळुविन निरामन् मऱ्ऱैत् तम्बियु मनैय नीरान्
वळुविनि युळदन् ऱिन्द मानिलक् किळत्तिक् कॅन्ऱान् 4239

अळुकैयुम्–रोना और; उवकै तानुम्–आनन्द; तनि तनि–अलग-अलग; अमर्–युद्ध; चॅय्तु–करके; एऱ–चढ़ा; तॊळुतनन्–नमन करके; ऎळुन्तु–उठा; विम्मि–रोकर; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र; निऱ्ऱलोटुम्–जब खड़ा रहा तब; इरामन्–श्रीराम ने; तळुवितन्तु–गले लगा लिया; मऱ्ऱै तम्पियुम्–अन्य भाई (लक्ष्मण) ने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भी; अत्तैय नीरान्-वही किया; इन्त मानिलम् किऴत्तिक्कु-इस बड़ी भूमिदेवी की; इत्ति-आगे; वऴु-हानि; उळतु-होगी; अन्ऱु-नहीं; ऎन्ऱान्-कहा। ४२३९

सुमंत्र के मन में रोना और आनंद दोनों परस्पर स्पर्धा करके उठ आते थे। नमस्कार करके, सिसकते हुए वह खड़ा रहा। तब श्रीराम ने उसे गले लगा लिया। उनके कनिष्ठ लक्ष्मण ने भी वैसा ही किया। सुमंत्र ने आनंद के साथ श्रीराम से कहा कि अब यह महीयसी भूमिदेवी निर्विघ्न हो गयी। ४२३९

एऱुह शेत यॆल्लाम् विमानमी देन्ऱु तन्बोल्
माऱिला वीरन् कूऱ वन्दुळ वत्तीह वॆळ्ळम्
ऊऱिरुम् बरवै वानत् तॆऴिलियु ळॊडुङ्गु मापोल्
एऱिमऱ् ऱिळैय वीर निणैयडि तॊऴुद दन्ऱे 4240

तन् पोल्-जिनके समान; माऱ इला-दूसरा नहीं रहा; वीरन्-वीर श्रीराम के; चेत्त ऎल्लाम्-सारी सेना; विमान मीतु-विमान पर; एऱुळ-चढ़े; ऎन्ऱु कूऱ-ऐसा कहने पर; वन्तु उळ-जो आयी थी; अत्तीकम् वॆळ्ळम्-वह सेना की बाढ़; ऊऱु इरु परवै-स्रोतयुक्त बड़ा सागर; वानत्तु-आकाश के; ऎऴिलियुळ्-मेघ के अन्दर; ऒटुङ्कुमा पोल्-समा जाय जैसे; एऱि-चढ़कर; इळैय वीरन्-छोटे वीरों के; इणै अटि-चरणद्वय की; तॊऴुत्तु-वन्दना करके रही। ४२४०

तब अप्रतिम वीर श्रीराम ने आज्ञा दी कि सारी सेना विमान पर सवार हो जाये। सारी सेना इस प्रकार विमान में घुसी मानो स्रोतयुक्त बड़ा सागर आकाशस्थित मेघ में समा जाता हो। उसने छोटे वीर के चरणद्वय की वन्दना की। ४२४०

उरैशॆयि नुलह मुण्डान् मणियणि युदर मॊव्वा
करैशॆय लरिय वेदक् कुऱुमुनि कैयु मॊव्वा
विरैशॆऱि यलङ्गन् मालैप् पुट्पह विमान मॆन्ऱॆन्
ऱुरैशॆय्दु वानु ळोर्ह ळॊण्मलर् तूवि यार्त्तार् 4241

वानुळोर्कळ्-आकाशवासी देवों ने; विरै चॆऱि-सुगन्धपूर्ण; अलङ्कल् मालै-हिलती माला से अलंकृत; पुट्पकम् विमानम्-पुष्पकविमान; उरै चॆयित्-कहना हो तो; उलकम् उण्टान्-लोकभोक्ता; मणि अणि-सुघड़ सुन्दर; उतरम् ऒव्वा-उदर भी उपमा न होगा; करै चॆयल् अरिय-अपार; वेतम्-वेदज्ञ; कुऱु मुनि कैयुम्-छोटे मुनि अगस्त्य का हस्त; ऒव्वा-उपमा नहीं बन सकता; ऎन्ऱु-ऐसा; ऎन्ऱु-यह; उरै चॆय्तु-कहकर; ऒळ् मलर्-उज्ज्वल पुष्प; तूवि-बिखेरकर; आर्त्तार्-जयनाद किया। ४२४१

आकाशलोकवासी देवों ने कहा कि इस पुष्पकविमान की उपमा कहनी हो तो कहना चाहिए कि श्रीविष्णु ने सारे लोकों को प्रलयमें जिस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अपने उदर में समा लिया था, वह बहुत सुंदर और सुडौल उदर भी इसकी उपमा नहीं हो सकता। क्यों? नाटे मुनि अगस्त्य ने सारे समुद्र को अपने चुल्लू में उठा लिया था वह चुल्लू भी इससे उपमित नहीं किया जा सकता। उन्होंने उज्ज्वल पुष्प बिखेरकर जयनाद किया। ४२४१

अशनियिन् कुळुवु माळि येळुमॊत् तार्त्त दॆन्न
विशैयुऱु मुरशुम् वेदत् तोदैयुम् विळिहॊळ् शङ्गुम्
इशैयुऱु कुरलु मेत्ति नरवमु मॆळुन्दु पॊङ्गित्
तिशैयुऱच् चॆन्ऱु वानो रन्दरत् तॊलियिऱ् ऱीर्न्द 4242

विचै उऱु–शीघ्र फैलनेवाली; मुरचुम्–मेरी ध्वनि और; वेतत्तु ओतैयुम्–वेदध्वनि; विळि कॊळ्–गूँजनेवाली; चङ्कुम्–शंखध्वनि; इचै उऱु–संगीत की; कुरलुम्–कण्ठध्वनि; एत्तिन्–स्तुति का; अरवमुम्–शब्द और; अचनियिन्–अशनि की; कुळुवुम्–राशियाँ; एळु आळियुम्–सात समुद्र; ऒत्तु–एक साथ; आर्त्ततु ऎन्न–ध्वनि कर उठे जैसे; ऎळुन्तु–उठ; पॊङ्कि–बढ़कर; तिचै उऱु–दिशाओं में; चॆन्ऱु–जाकर; वानोर्–देवों की (स्तुति) की; अन्तरत्तु ऒलियिन्–अंतरिक्ष ध्वनि में; तीर्न्त–समा गये। ४२४२

शीघ्र फैलती भेरी-ध्वनि, वेदस्वर, गूँजती शंखध्वनि, और कंठ-संगीत-ध्वनि तथा स्तुति का शब्द— सब अशनिराशियाँ और सातों समुद्र गर्जन कर उठे हों, ऐसा उठा, बढ़ा, दिशाओं में गया और आकाश में जाकर देवों की स्तुति के नाद में विलीन हो गया। ४२४२

अव्वयिन् विमानन् दावि यन्दरत् तयोत्ति नोक्किच्
चॆव्वैयिऱ् पडर लुऱ्ऱ शॆहतल मडन्वै योडुम्
इव्वुल हत्तु ळोर्ह ळिन्दिर रुलहु काण्बान्
कव्वैयि नेहु हिन्ऱ नीर्मैयैक् कडुक्कु मन्ऱे 4243

अव्वयिन्–वहाँ से; विमानम्–विमान; अन्तरत्तु ताबि–आकाश में उड़कर; अयोत्ति नोक्कि–अयोध्या की तरफ़; चॆव्वैयिल्–सीधे; पटरल् उऱ्ऱ–जो गया वह; चॆक तलम्–जगतल को; मटन्तैयोटुम्–देवी के साथ; इव् उलकत्तु उळोर्कळ्–इस लोक के लोग; इन्तिरर्–इन्द्र के; उलकु–लोक को; काण्पात्–देखने के लिए; कव्वैयिन्–बड़े कोलाहल के साथ; एकुकिन्ऱ–जाते हों वैसी; नीर्मैयै–स्थिति; कटुक्कुम्–के समान था। ४२४३

तब विमान उठा, आकाश में उड़ा और अयोध्या की तरफ़ जाने लगा। वह दृश्य तब ऐसा लगा मानो भूलोकवासी भूमि की अधीश्वरी के साथ देवेंद्रनगर को देखने के निमित्त बड़े शोर के साथ उठ जा रहे हों। ४२४३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऩदो रळवैयि ऩमरर् कोऩ्ऱोडुम्
वाऩवर् तिरुनहर् वरुव दामॆऩ
मेऩिऱै वाऩवर् वीशुम् बूवोडुम्
ताऩुयर् पुट्पह निलत्तॆच् चार्न्ददाल् 4244

आऩतु ओर् अळवैयिऩ्–उस (एक) समय; ताऩ् उयर्–सर्वश्रेष्ठ; पुट्पकम्–पुष्पकयान; अमरर् कोऩ्ऱोटुम्–देवेन्द्र के साथ; वाऩवर्–देवों का; तिरुनकर्–श्रीनगर; वरुवतु आम्–आता हो; ऍऩ–जैसे; मेल्–ऊपर; निऱै–भीड़ में रहे; वाऩवर् वीचुम्–देववर्षित; पूवोटुम्–पुष्पों के साथ; निलत्तै–भूमि पर; चार्न्ततु (नंदिग्राम) आया। ४२४४

और उस समय सर्वश्रेष्ठ पुष्पक देवेंद्र-सह देवेंद्रनगर (अयोध्या के दर्शनार्थ) आ रहा हो, जैसे आया। उस पर आकाशस्थ बड़ी भीड़ के देवों ने फूल बरसाये। पुष्पों से भरा वह भूमि पर (नंदिग्राम) आया। ४२४४

38. तिरुमुडि शूट्टु पडलम् (श्रीकिरीट-धारण पटल)

नम्बिय परद ऩोड़ नन्दियम् बदियै नण्णि
वम्बलर् शडैयु माऱ्ऱि मयिर्विऩै मुऱ्ऱि मऱ्ऱैत्
तम्बिय रोडु ताऩुम् शरयुविऩ् पुऩलिऱ् ऱोय्न्दे
उम्बरु मुवहै कूर वॊप्पऩै यॊप्पच् चॆय्दार् 4245

नम्पिय–विश्वासी; परतऩोटु–भरत के साथ; मऱ्ऱैत् तम्पियरोटु–अन्य सहोदरों के साथ; ताऩुम्–स्वयं; नन्ति अम्पतियै–सुन्दर नंदिग्राम; नण्णि–आकर; वम्पु–सुगन्ध; अलर्–देनेवाली; चटैयुम् माऱ्ऱि–जटा निवारकर; मयिर् विऩै–केश-श्रृंगार का कार्य; मुऱ्ऱि–पूरा करके; चरयुविऩ्–सरयू के; पुऩलिल्–तीर्थ में; तोय्नतु–स्नान करके; उम्परुम्–देवों को भी; उवकै कूर–आनंद अधिक देते हुए; ऒप्पऩै–श्रृंगार; ऒप्प–युक्त; चॆय्तार्–कर लिये। ४२४५

अपने पर अकाट्य विश्वास रखनेवाले भरत के और अन्य लघु सहोदरों के साथ श्रीराम रमणीय नंदिग्राम आये। वहाँ सुगंधित जटा का निवारण करके बाल के बनाने का कार्य किया गया। सरयू में स्नान करने के बाद उचित रीति से उनका श्रृंगार किया गया, जिसे देखकर देव लोगों का आनंद बढ़ा। ४२४५

निरुदियिऩ् तिशैयिऱ् ऱोऩ्ऱु नन्दियम् बदियै नीङ्गि
कुरुदिकॊप् पळिक्कुम् वेलाऩ् कॊडिमदि लयोत्ति मेवच्
चुरुदयेत् तऩैय वॆळ्ळैत् तुरहदक् कुलङ्गळ् पूण्डु
परुदियॊत् तिलङ्गुम् बॆम्बूट् परुमणित् तेरि ऩाऩाऱ् 4246

कुरुति–रक्त; कॊप्पळिक्कुम्–उगलते; वेलाऩ्–माले वाले; निरुतियिऩ्–दक्षिण-पश्चिम; तिशैयिल्–दिशा में; तोऩ्ऱुम्–रहनेवाले; नन्ति अम् पतियै–सुन्दर नंदिग्राम को; नीङ्कि–छोड़कर; कॊटि मतिम्–ध्वजाओं वाले प्राचीरों को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अयोत्ति मेव–अयोध्या आये; एत्तु–स्तोता; चुरुति–वेदों के; अन्नैय–समान; वॆळ्ळै–श्वेत; तुरकतम्–अश्वों की; कुलङ्कळ् पूण्टु–राशियों से जोता जाकर; परुति–सूर्य; ऒत्तु–के समान; इलङ्कुम्–रहनेवाले; पॆम्पूण्–ताजे स्वर्ण से निर्मित; परु मणि–बड़े रत्नों से युक्त; तेरिन् आन्नान्–रथस्थ हुए। ४२४६

रक्तवमनकारी भाले के धारक स्वामी श्रीराम ने दक्षिण-पश्चिम के नंदिग्राम को छोड़कर ध्वजाओं से युक्त प्राचीरों वाली अयोध्या जाने के लिए स्तोता वेद-सदृश श्वेत तुरगचतुष्टय के जुते, सूर्य-सम शोभायमान तथा जडित स्वर्ण-सह मणिमय रथ पर सवार हुए। ४२४६

ऊऴियि निऱुदि काणुम् वलियिन्न दुयर्पॊऱ् ऱेरिन्
एऴुयर् मदमा वन्न विलक्कुवन् कविहै येन्दप्
पाऴिय मऱ्ऱैत् तम्बि पाल्निऱक् कवरि पऱ्ऱप्
पूऴियै यडक्कुङ् गण्णीर्प् परदन्कोल् कॊळ्ळप् पोन्नान् 4247

ऊऴियिन्–युग का; इऱुति–अन्त; काणुम्–देख सकनेवाले राम; वलियिन्नतु–बल से युक्त; उयर्–उन्नत; पॊत् तेरिन्–स्वर्णरथ पर; एऴु–सात हाथ के; उयर्–ऊँचे; मतम्मा अन्न–मस्त गज के समान; इलक्कुवन्–लक्ष्मण के; कविकै एन्न–श्वेत छत्र धारण करते; पाऴिय–पराक्रमी; मऱ्ऱै तम्पि–अन्य भाई (शत्रुघ्न) के; पाल् निऱम्–दुग्धवर्ण; कवरि पऱ्ऱ–चामर डुलाते; पूऴियै–धूलि को; अडक्कुम्–थमानेवाले; कण्णीर्–अश्रुजल वाले; परतन्–भरत के; कोल् कॊळ्ळ–वेत्र हाथ में लेते; पोन्नान्–गये। ४२४७

युगांतदर्शनबली उस उन्नत रथ पर जब श्रीराम गये तब सात हाथ के ऊँचे, मस्त हाथी के समान लक्ष्मण श्वेत छत्र धारण करते गये। बलवान शत्रुघ्न ने दुग्धवर्ण चामर डुलाया। धूलि को जमा दे, इस रीति से आँसू बहानेवाले भरत ने वेत्र लेकर सारथ्य किया। ४२४७

वीडणक् कुरिशिन् मऱ्ऱै वॆङ्गदिर्च् चिऱुवन् वॆऱ्ऱिक्
कोडणै कुन्ऱ मेऱिक् कॊण्डऱेर् मरुङ्गु शॆल्लत्
तोडणै मवुलिच् चॆङ्गण् वालिशेय् तूशि शॆल्लच्
चेडन्नैप् पॊऱुवुम् वीर मारुदि पिन्बु शॆन्ऱान् 4248

कुरिचिल् वीडणन्–श्रेष्ठ विभीषण; मऱ्ऱै–और; वॆम् कतिर् चिऱुवन्–गरम किरणमाली का पुत्र; वॆऱ्ऱि–विजयी; कोटु अणै–तथा दाँतों से युक्त; कुन्ऱम् एऱि–पर्वत (हाथी) पर चढ़कर; कॊण्टल्–मेघसदृश श्रीराम के; तेर् मरुङ्कु–रथ के पास-पास; चॆल्ल–गये और; तोटु अणै–पुष्पदलों वाले; मवुलि–किरीटधारी; चॆ कण्–लाल आँखों के; वालि चेय्–वालीपुत्र के; तूचि चॆल्ल–हरावल में जाते; चेटन्नै पॊऱुवुम्–शेषनाग-सम; वीर मारुति–वीर मारुति; पिन्बु चॆन्ऱान्–पीछे गया। ४२४८

उत्तम विभीषण और गरम किरणों के स्वामी सूर्य का सुत सुग्रीव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दोनों विजयी दंती पर्वत-सम गजों पर आरूढ़ हो रथ के दोनों ओर पास-पास गये। मालाधारी किरीटमंडित लाल आँख का वालीपुत्र अंगद हरावल में चला और शेषनाग-सम मारुति सबसे पीछे। ४२४८

अऱुपत्ते ऴमैन्द कोडि यानैमेल् वरिशैक् कानूऱ्
तिऱमुऱ्ऱ शिऱप्प राहि मानुडच् चॆव्वि वीरम्
पॆऱुहुऱ्ऱ वनप्प रुच्चि पिऱङ्गुवॆण् कुडैयर् शॆच्चै
मऱुवऱ्ऱ वलङ्गन् मार्बर् वानरत् तलैवर् पोनार् 4249

वरिचैक्कु–पद के; आनूऱ–अनुसार युक्त; तिऱम् उऱ्ऱ–बल से लगकर; चिऱप्पर् आकि–विशिष्ट बनकर; मानुडम्–मानव के; चॆव्वि–रूप में रहकर; वीरम् पॆरुकुऱ्ऱ–वीरता में बढ़े; वनप्पर्–सौंदर्य वाले; उच्चि पिऱङ्कु–ऊपर शोभित; वॆळ् कुडैयर्–श्वेत छत्रवाले; चॆच्चै–लाल चंदन लेप से लिप्त; मऱ अऱ्ऱ–निर्दोष; अलङ्कल्–मालाधारी; मार्पर्–वक्षवाले; अऱुपत्तु एऴु–सड़सठ; अमैन्त कोटि–करोड़; वानरर् तलैवर्–वानरयूथप; यानै मेल् पोनार्–हाथियों पर (सवार हो) गये। ४२४९

पद के अनुसार स्थान में, युक्त विशेषता के साथ सड़सठ वानरयूथप मानव-रूप में सुन्दर बनकर ऊपर श्वेतछत्र के शोभित होते लाल चंदन-लिप्त तथा मालाधारी वक्ष की शोभा दिखाते हुए गजों पर गये। ४२४९

ऎट्टॆन विऱुत्त पत्ति नेऴ्पॊऴिल् वळाह वेन्दर्
पट्टमवॆत् तमैन्द नॆऱ्ऱिप् पहट्टिनर् पैम्बॊऱ् ऱेरर्
वट्टवॆण् कुडैयर् वीशु शामरै मरुङ्गर् वानैत्
तॊट्टवॆञ् जोदि मोलिच् चॆन्नियर् तॊऴुदु शूऴ्न्दार् 4250

पट्टम् वैत्तु–मुखपट्ट लगाकर; अमैत्त–सजे हुए; नॆऱ्ऱि पकट्टिनर्–मस्तकों के हाथियों के; पैम् पॊन्–खरे स्वर्ण के; तेरर्–रथों पर सवार; वट्टम् वॆण् कुडैयर्–मंडलाकार श्वेत छत्र वाले; चामरै वीशुम्–चामर डुलानेवाले; मरुङ्कर्–जिनके पार्श्व में हों, वे; वानै तॊट्ट–आकाशस्पर्शी; वॆम् चोति–तेज ज्योति के; मोलि चॆन्नियर्–किरीट-धारी सिरों वाले; ऎट्टु ऎन–आठ में; इऱुत्त पत्तिन्–समाप्त दस, अठारह के; एऴु पॊऴिल्–सात भू के; वळाकम् वेन्तर्–मंडलों के राजा; तॊऴुदु चूऴ्न्तार्–नम कर घेरते आये। ४२५०

अठारह भागों में विभक्त सात मंडलों के अधिपति राजा मुखपटालंकृत गजों के साथ, खरे स्वर्ण के रथों पर, श्वेतछत्र, चामर आदि राज-मर्यादाओं की सेवा स्वीकार करते हुए मनोरम ज्योतिर्मय मुकुट पहने, विनत होकर श्रीराम को घेरे जा रहे थे। ४२५०

वानर महळि रॆल्लाम् वानवर् महळि रायवन्
दूनमिल् पिडियु मॊण्डार्प् पुरवियुम् बिऱवु मूऱ्न्दु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मीऩिऩ मदियैच् चूऴ्ऩ्द तऩ्मैयिऩ् विरिऩ्दु शुऱ्ऱप्
पूनिऱ् विमाऩऩ् दऩ्मेऩ् मिदिलैनाट् टऩ्ऩम् बोऩाऴ् 4251

वानर मकळिर् ऍल्लाम्–वानरियाँ सभी; वाऩवर् मकळिराय् वऩ्तु–देवांगनाओं के रूप में आकर; ऊऩम् इल्–निर्दोष; पिटियुम्–हथिनियों; ऑळ् तार्–उज्ज्वल किंकिणी वाले; पुरवियुम्–अश्वों और; पिऱ्ऱुम्–अन्यों पर; ऊर्ऩ्तु–सवार हो आयीं; मीऩ् इऩम्–नक्षत्रगण; मतियै–चन्द्र को; चूऴ्ऩ्त–आवृत रहें; तऩ्मैयिऩ्–उस प्रकार; विरिऩ्तु चुऱ्ऱ–विस्तृत मंडल में घेरे रहीं; पू–सौंदर्य तथा; निऱम्–रंगीन; निमाऩम् तऩ् मेल्–विमान पर; मितिलै नाट्–मिथिला देश की; अऩ्ऩम् पोऩाऴ्–हंस-सी सीता गयीं। ४२५१

सभी वानरियाँ अप्सराओं के रूप में आयीं और वे निर्दोष सुडौल हथिनियों, उज्ज्वल हारों से अलंकृत अश्वों और अन्य (शिविका आदि) वाहनों पर आरूढ़ होकर चंद्र को आवृत रहनेवाले नक्षत्रगणों के समान आ रही थीं। सुन्दर सुवर्ण-विमान पर श्री मिथिलादेशजा हंस-सी सीता उनके मध्य गयीं। ४२५१

तेवरु मुऩिवर् तामुऩ् दिशैतोऱु मलर्हळ् शिऩ्द
ओवलिऩ् मारि येय्प्प वॆङ्गणु मुदिर्ऩ्दु वीङ्गिक्
केवल मलराय् वेऱो रिडमिऩ्ऱिक् किडऩ्द वार्ऱाल्
पूवॆऩु नाम मिऩ्ऱिव् वुलहिऱ्कुप् पॊरुऩ्दिऱ् ऱऩ्ऱे 4252

तेवरुम्–देवों के; मुऩिवर् तामुम्–और मुनियों के; तिचै तोऱुम्–सभी दिशाओं में; ओवलिल्–निरन्तर; मारि–वर्षा; एय्प्प–के समान; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; मलर्कळ् चिऩ्त–पुष्पों को बिखेरने से; उतिर्ऩ्तु–छितरकर; वीङ्कि–बहुत फैलकर; केवलम्–केवल; मलराय्–सुमन ही सुमन; वेऱु ओर्–अन्य कोई; इटम् इऩ्ऱि–स्थान नहीं; किटऩ्त आऱ्ऱाल्–पड़े रहे इसलिए; पू ऍऩुम्–'भू' का; नामम्–नाम; इऩ्ऱु–आज; इव् उलकिऱ्कु–इस लोक के लिए; पॊरुऩ्तिऱ्ऱु–बहुत ही युक्त रहा। ४२५२

देवगण और मुनि लोग निरंतर बारिश होती हो जैसे फूल बरसा रहे थे। इसलिए सर्वत्र पुष्प ही पुष्प अत्यधिक परिमाण में छितरे पड़े थे और खाली स्थान दिखायी ही नहीं देता था। उस दृश्य को देखकर लगता है भू का नाम इस धरा के सम्बंध में सार्थक तथा समुचित बन गया। (तमिऴ में "पू" संस्कृत की "भू" को भी कहते हैं; यद्यपि संस्कृत में 'पू' और 'भू' में उच्चारण में भी अंतर है और अर्थ में भी। संस्कृत के 'भ' को तमिऴ में 'प' ही लिखा जा सकता है।)। ४२५२

कोडैयिल् वऱऩ्द मेहक् कुलमॆऩप् पदिऩा लाण्डु
पाडऱु मदञ्जॆय याद पणैमु परुमहप याऩै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काडुऱै यण्ण लॅय्दक् कडान्दिऱन् दुहुत्त वारि
ओडिऩ वुळ्ळत् तुळ्ळ कळितिऱन् दुडैत्त देपोल् 4253

कोटॅयिर्–ग्रीष्मकाल में; वऱन्त–शुष्क; मेकम् कुलम् ऍत–मेघसमूह के समान; पतिनालु आण्टु–चौदह साल; पाटु उऱु–बहनेवाले; मतम्–मद को; वॅय्यात–जिन्होंने न निकाला; पणै–दाँतों को; मुकम्–मुख पर रखनेवाले; परुमम् यानै–हौदेयुक्त गजों ने; काटु उऱै–वनवासी रहे; अण्णल्–प्रभु के; ऍय्त–लौटने पर; कटाम् तिऱन्तु–गण्डस्थल खोलकर; उकुत्त वारि–जो बहाया वह मदजल; उळ्ळत्तु उळ्ळ–अन्दर (मन में) रहा; कळि तिऱन्तु–आनन्द खुलकर; उटैमृतते पोल्–मानो बाँध तोड़कर; ओटिऩ–बहा। ४२५३

इन चौदह सालों में जो हाथी शुष्क मेघों के समान मदनीर-रहित थे, अब उनमें मस्ती आ गयी और गण्डस्थल खोलकर मदनीर बहाने लगे। वह ऐसा लगा मानो उनका आंतरिक आनंद गाल खोलकर बाहर मदजल के रूप में बह रहा हो। ४२५३

तुरुवत्तार्प् पुरवि यॅल्ला मूङ्गैयर् शॊऱ्पॅऱ् ऱॅन्ऩ
अरवप्पोर् मेह मॅन्ऩ वालित्त मरङ्ग ळान्ऱ
परुवत्ताऱ् पूत्त वॅन्नप् पूत्तऩ पहैविऱ् चीऱुम्
पुरुवत्तार् मेऩि यॅल्लाम् बॊन्निऱप् पशलै पूत्त 4254

तुरुवम् तार्–सदा पहने हुए हारों वाले; पुरवि ऍल्लाम्–सारे अश्व; मूङ्कैयर्–गूंगे; चॊल् पॅऱ्ऱ–वाणी पा गये हों; ऍन्ऩ–ऐसा; अरवम्–गर्जन; पोर् मेकम्–युक्त मेघों के; ऍन्ऩ–समान; आलित्त–हिनहिनाये; मरङ्कळ्–तरु; आन्ऱ–युक्त; परुवत्ताल्–मौसम में; पूत्त ऍन्ऩ–खिले जैसे; पूत्तऩ–पुष्पों से भर गये; पकै–शत्रु पर; विल् चीऱुम्–धनु के समान गुस्सा करनेवाली; पुरुवत्तार्–भौंहों वाली; मेऩि ऍल्लाम्–सभी रमणियों के शरीरों में; पॊन् निऱम्–स्वर्ण-रंग का; पचलै पूत्त–वैवर्ण्य फैला। ४२५४

सदा हारों से अलंकृत रहनेवाले घोड़े भाषण-शक्ति प्राप्त गूँगों के समान, वा अशनिघोषयुक्त मेघों के समान उच्च स्वर में हिनहिनाये। तरुओं में मानो मौसम आया हो, खूब पुष्प लग गये। शत्रु पर झुकाये गये धनुष के समान गुस्सा दिखानेवाली भौंहों से युक्त तरुणियों के शरीर में स्वर्ण वर्ण का रमणीय (हुलस प्रगट करनेवाला शारीरिक परिवर्तन-द्योतक) वैवर्ण्य फैल गया। ४२५४

आयदो रळविल् शॅल्वत् तण्णलु मयोत्ति नण्णित्
तायरै वणङ्गित् तङ्ग ळिऱैयॊडु मुऩियैत् ताळ्न्दु
नायहक् कोयि लॅय्दि नाऩिलक् किळत्ति योडुम्
शेयॊळिक् कमलत् ताळुङ् गळिनडञ् जॅय्यक् कण्डाऩ् 4255

आयतु ओर् अळविल्–ऐसे उस समय; चॅल्वत्तु अण्णलुम्–श्रीमान प्रभु;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अयोत्ति नण्णि–अयोध्या में आकर; तायरै वणङ्कि–माताओं को नमस्कार करके; नायकम्–सर्वलोकनायक के; कोयिल् ऍय्ति–मंदिर में जाकर; तङ्कळ् इरैयोटु–अपने इष्टदेव रंगनाथ को और; मुत्तियै ताळ्न्तु–मुनिवर वसिष्ठ की पूजा करके; नात्तिलम् किळत्तियोटुम्–भू देवी (श्री) के साथ; चॅम्मै ऑळि–ललाई वाली; कमलत्ताळुम्–कमला को; कळि नटम्–मोद के साथ; चॅय्य कण्टात्–नाचता देखा। ४२५५

उस समय सर्वश्रीमान श्रीराम ने अयोध्या पहुँचकर माताओं को नमस्कार किया। फिर सर्वलोकनायक श्रीविष्णु के मंदिर जाकर इष्टदेव श्रीरंगनाथ की पूजा की। फिर वसिष्ठ का अभिनंदन किया। तब भूदेवी और लाल कमल निवासिनी दोनों अपार संतोष के साथ नाच उठीं। यह श्रीराम ने देखा। ४२५५

वाङ्गुवुन् दुहिल्ह ळॅन्नु मत्तमिलर् करत्तिऱ् पल्हाल्
ताङ्गिन रॅन्ऱु पोदु मैन्दरुम् तैय लारुम्
वीङ्गिय वुवहै मेनि शिऱक्कवु मेन्मेऱ् रुळ्ळि
ओङ्गवुङ् गळिप्पाऱ् चोर्न्द वुडैयिला दारै यॉत्तार् 4256

तुकिल्कळ्–वस्त्रों को; वाङ्कुतुम्–उतार दें; ऍन्नुमु–यह; मत्तम् इलर्–विचार नहीं रखते तो भी; मैन्तरुम्–पुरुष और; तैयलारुम्–स्त्रियाँ (फिसलते वस्त्रों को); करत्तिल्–अपने हाथों से; पल्काल्–बार-बार; ताङ्कित्तर्–पकड़कर ठीक करते; ऍन्ऱु पोतुम्–तो भी; वीङ्किय–बढ़े हुए; उवकै–आनंद से; मेनि–शरीर; चिऱक्कवुम्–फूल जाते; मेल् मेल्–उत्तरोत्तर; तुळ्ळि–उछलते; ओङ्कवुम्–कूदते; कळिप्पाल्–मोद से; चोर्न्त–ढलते; उटै इलातारै–वस्त्रहीन (दिगंबर); ऑत्तार्–रहते-से रहे। ४२५६

स्त्रियाँ और पुरुष नंगा रहना चाहनेवाले नहीं थे। इसलिए बार-बार खिसकनेवाले वस्त्रों को पकड़-पकड़कर ठीक कराते रहे। पर संतोषाधिक्य से उनके शरीर फूले; संतोष उत्तरोत्तर बढ़ता गया और वे इतनी उछल-कूद मचाने लगे कि दिगंबर-से रह गये। ४२५६

वेशिय रुडुत्त कूऱै वेन्वर्हळ् शुऱ्ऱ वॅऱ्ऱिप्
पाशिळै महळि राडै यन्दणर् पऱित्तुच् चुऱ्ऱ
वाशमॅन् कलवैच् चान्दॅन् ऱितैयत मयक्कन् वन्नाल्
पूशिनर्क् किरट्टि यानार् पूशलार् पुहुन्दु ळोरुम् 4257

वेचियर्–वेश्याओं के; उटुत्त–पहने हुए; कूऱै–वस्त्रों को; वॅऱ्ऱि वेन्तर्कळ्–विजयी राजाओं के; चुऱ्ऱ–लपेट लेते; पचुमै इळै–खरे स्वर्णाभरण; मकळिर्–पहनी स्त्रियों के; आटै–वस्त्रों को; अन्तणर्–ब्राह्मणों के; पऱित्तु–छीनकर; चुऱ्ऱ–लपेट लेते; वाचम्–सुगन्ध-द्रव्य; मॅल् कलवै चान्तु–मृदु चंदन लेप; ऍन्ऱु इतैयत–आदि ऐसा; पूचलार्–न मलकर; पुकुन्तुळोरुम्–जो आये; मयक्कम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तनुत्ताल्–भीड़-भड़भड़ के कारण; पूचित्तर्क्कु–जो मलकर आये थे; इरट्टि आत्तार्–उनसे दुगुने लिप्त हो रहे। ४२५७

(आनंदातिरेक से और भी कुछ अनोखी बातें हो गयीं।) वेश्याओं की साड़ियों को राजा लोग लपेट आये थे। ब्राह्मणों ने श्रेष्ठ स्वर्णाभरण-भूषिता स्त्रियों के वस्त्रों को छीनकर पहन लिया था। जो सुगंधित अंगराग और चंदन-लेप आदि मलकर नहीं आये थे (या न मल सकनेवाले ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, संन्यासी आदि जो आये थे), उनके शरीर भी भीड़ के कारण अंगराग चंदन आदि से लिप्त हो गये। ४२५७

इऱैप्पॆरुञ् जॆल्व नीत्त वेऴिरण् डाण्डुम् यारुम्
उऱैप्पिल राद लात्ते वेऱिरुन् दॊऴिन्द वन्नार्
पिऱैक्कॊऴुन् दनैय नॆऱ्ऱिप् पॆय्वळै महळिर् मॆय्यै
मऱैत्तनर् पूणिन् मैन्द रुयिर्क्कॊरु मऱुक्कन् दोन्ऱ 4258

इऱै–राजा के पद का; पॆरु चॆल्वम्–बड़ा धन; नीत्त–छोड़ जो गये थे; एऴिरण्टु आण्टुम्–उन चौदहों वर्ष में; उऱैप्पिलर्–संतोष-रहित रहे; आतलाल्–इसलिए; वेऱु इरुन्तु–अकेले रहकर; ऒऴिन्त–जो समय बिताती रहीं; पिऱै कॊऴुन्तु–बालचन्द्र; अनैय नॆऱ्ऱि–समान भाल वाली; पॆय् वळै–धारण किये हुए कंकण वाली; मकळिर् अन्नार्–उस नगर की स्त्रियों ने; यारुम्–सभी; मैन्तर्–पुरुषों के; उयिर्क्कु–प्राणों में; ऒरु मऱुक्कम् तोन्ऱ–एक विलोडन पैदा करते हुए; मॆय्यै–शरीर को; पूणिन्–आभरणों से; मऱैत्तनर्–ढक दिया। ४२५८

राजा राज्य-वैभव को छोड़कर जंगल गये थे। उन चौदहों सालों में स्त्रियाँ दुःख के कारण अपने पतियों से अलग तथा शृंगार-हीन रहती थीं। अब बालचंद्र-से भालवाली, तथा कंकणहस्ता दयिताओं ने मुदित होकर अपने शरीर को खूब आभूषणों से सजा लिया तो उन्हें देखकर उनके प्रेमियों के मन में गुदगुदी और छटपटाहट पैदा हो गयी। ४२५८

विण्णुऱै वोर्तन् दॆय्व वॆऱियॊडुम् वेऱु ळोर्तम्
तण्णऱु नाऱ्ऱन् दम्मिऱ् ऱलैतडु माऱु नीराल्
मण्णुऱै माद रार्क्कुम् वानुऱै मडन्दै मार्क्कुम्
उण्णिऱैन् दुयिर्प्पु वीङ्गु मूडलुण् डायिऱ् ऱन्ऱे 4259

विण् उऱैवोर् तम्–व्योमलोकवासियों के; तॆय्वम् वॆऱियॊटुम्–दिव्य सुगंध के साथ; वेऱु उळोर् तम्–अन्य लोगों के; तण् उऱु–शीतल; नाऱ्ऱम्–सुगन्ध; तम्मिस्–आपस में; तलै तडुमाऱु नीराल्–मिश्रित होते, उस हाल से; मण् उऱै–भूलोकवासिनी; मातरार्क्कुम्–स्त्रियों में; वान् उऱै–और व्योमवासिनी; मटन्तैमार्क्कुम्–स्त्रियों में; उळ् निऱैन्तु–अन्दर से भरकर; उयिर्प्पु–श्वास को; वीङ्कुम्–फुलानेवाली; ऊटल्–ऊठन; उण्डायिऱु–पैदा हो गयी। ४२५९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देवलोकवासियों की स्वाभाविक दिव्य सुगंध और मानवलोक-वासियों की कृत्रिम सुगंध दोनों मिश्रित हो गये तो देवों के शरीर से कृत्रिम सुबास और मानवों के शरीर से दिव्य सुगंध आने लगा तो दोनों तरह की स्त्रियों के मन में रूठन पैदा हो गयी और नाक से निश्वास छूटने लगे। ४२५९

आयदो रळवि लैयऩ् परदऩै यरुळि ऩोक्कित्
तूयवी डणऱ्कु मऱ्ऱैच् चूरियऩ् महऱ्कुऩ् दॊल्लै
मेयवा ऩरऱ्ह ळाय वीरऱ्क्कुम् बिऱऱ्क्कु नऩ्दम्
नायहक् कोयि लुळ्ळ नलमॆलाऩ् दॆरित्ति यॆऩ्ऱाऩ् 4260

आयतु ओर् अळविल्–वैसे विशिष्ट काल में; ऐयऩ्–प्रभु श्रीराम; परतऩै–भरत को; अरुळिऩ्–सस्नेह; नोक्कि–देखकर; तूय वीटणऱ्कुम्–पवित्र विभीषण को; मऱ्ऱै–और; चूरियऩ्–मकऱ्कुम्–सूर्यपुत्र को; तॊल्लै मेय–पुरातनतायुक्त; वानरऱ्कळ् आय–वानरों के; वीरऱ्क्कुम्–वीरों को और; पिऱऱ्क्कुम्–दूसरों को; नम् तम्–हमारे; नायकम् कोयिल् उळ्ळ–प्रमुख महल की; नलम् ऎलाम्–सारी श्रेष्ठ विशिष्टताएँ; तॆरित्ति ऎऩ्ऱाऩ्–बताओ, यह आज्ञा दी। ४२६०

उस समय श्रीरामनाथ ने भरत को स्नेह के साथ देखकर कहा कि पवित्र विभीषण को और सूर्यपुत्र सुग्रीव को और हमारे बहुत काल के वानर वीरों को प्रमुख महल की सारी विशेषताएँ बतलाओ। ४२६०

ऎऩ्ऱलु मिऱैञ्जि मऱ्ऱैत् तुणैवऱ्हळ् याव रोडुम्
शॆऩ्ऱऩ ऩॆऴुऩ्दु माडम् बलवॊरीइ युलहिऱ् ऱॆय्वप्
पॊऩ्ऱिणिऩ् दमर रोडुम् बूमह ळुऱैयु मेरुक्
कुऩ्ऱॆऩ विळङ्गित् तोऩ्ऱु नायहक् कोयिल् पुक्काऩ् 4261

ऎऩ्ऱलुम्–सुनाते ही; इऱैञ्चि–नमन करके; मऱ्ऱै तुणैवऱ्कळ्–अन्य मित्रों; याबरोटुम्–सभी के साथ; ऎऴुऩ्तु चॆऩ्ऱऩऩ्–उठ चले; माटम् पल–अनेक प्रासाद; ऒरी इ–पार करके; पॊऩ् तिणिऩ्तु–स्वर्णनिर्मित; अमररोटुम्–देवों के साथ; पू मकळ् उऱैयुम्–कमला जहाँ रहती थी; मेरु कुऩ्ऱु ऎऩ–उस मेरु पर्वत के समान; उलकिल्–संसार में; विळङ्कि तोऩ्ऱुम्–शानदार रहनेवाले; तॆय्वम्–दिव्य; नायकम् कोयिल्–प्रमुख महल में; पुक्काऩ्–गये। ४२६१

यह आज्ञा सुनकर भरत उन्हें नमस्कार करके साथियों को ले गये। अनेक प्रासादों को पार कर प्रमुख मंदिर में आये जो देवों और कमला के वास के योग्य मेरु के समान दैवी शोभा के साथ खड़ा था। ४२६१

वयिरमा णिक्क नील मरहद मुदला युळ्ळ
शॆयिरु मणिह ळीऩ्ऱु शॆऴुञ्जुडऱ्क् कऱ्ऱै शुऱ्ऱु
उयिरुतुणुक् कुऱ्ऱु नॆञ्जु मुळ्ळमु मूश लाड
मयर्वरु मऩऩ्तु वीर रिमैप्पिलर् मयङ्गि निऩ्ऱार् 4262

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मयर्वु अऱम् मऩत्तु–निर्भ्रांत मन के; वीरर्–वीर; वयिरम्–वज्र; मणिक्कम्–माणिक्य; नीलम्–नील; मरकतम्–मरकत; मुतलाय् उळ्ळ–आदि जो हैं; चॅयिर् अऱ–निर्दोष; मणिकळ् ईऩ्ऱ–रत्नों से छूटनेवाले; चॅळु चुडर् कऱ्ऱै–पुष्ट प्रकाश-पुंज के; चुऱ्ऱ–आवृत रहने से; उयिर्–प्राण; तुणुक्कुऱ्ऱु–भयत्रस्त होकर; नॅञ्चुम्–मन और; उळ्ळमुम्–चित्त के; ऊचल् आट–झूलते; इमैप्पु इलर्–अपलक; मयङ्कि निऩ्ऱार्–मुग्ध खड़े रहे। ४२६२

निभ्रांतमन विभीषण आदि के भी उसको देखकर प्राण ठिठक गये। उनके मन डोलायमान हो गये। उनकी आँखें अपलक स्थिर रह गयीं। क्योंकि हीरे, माणिक्य, नील, मरकत आदि रत्नों की कांति की बाढ़ में वह मंदिर जगमगा रहा था। ४२६२

विण्डुविऩ् मार्बिऱ् कान्दु मणियॅऩ विळङ्गु माडम्
कण्डनर् परवऩ् तऩ्ऩै विऩविऩ रवर्क्कुक् कादऱ्
पुण्डरी हत्तुळ् वैहुम् बुरादनऩ् कऩ्ऩऱ् ऱोळाऩ्
कॊण्डनर् ऱवन्दऩ् ऩाले युवन्दुमुऩ् कॊडुत्त दॅऩ्ऱाऩ् 4263

विण्टुविऩ्–श्रीविष्णु के; मार्पिल्–वक्ष में; कान्तुम्–चमकनेवाली; मणि ऍऩ–श्रीकौस्तुभमणि के समान; विळङ्कुम् माटम्–शोभित प्रासाद को; कण्टनर्–देखा, उन्होंने; परतऩ् तऩ्ऩै–भरत से; विऩविऩर–पूछा; अवर्क्कु–उन्हें; पुण्टरीकत्तुळ्–कमल में; वैकुम्–रहनेवाले; पुरातनऩ्–पुरातन पुरुष ब्रह्मा; कऩ्ऩल् तोळाऩ्–इक्षु-सम मनोहर कन्धों के इक्ष्वाकु के; कॊण्ट नल्तवम् तऩ्ऩाले–अपनाये गये श्रेष्ठ तप से; उवन्तु–खुश होकर; कातल्–प्यार के साथ; मुऩ् कॊटुत्ततु–पहले दिया गया था; ऍऩ्ऱाऩ्–यह जवाब दिया भरत ने। ४२६३

श्रीविष्णुवक्षशोभाकारिणी कौस्तुभ मणि के समान रहे उस प्रासाद को देखकर उन लोगों ने भरत से पूछा कि इसकी तारीफ़ क्या है? भरत ने उत्तर दिया कि कमलासन ब्रह्मा ने इसे इक्षु-बाहु को (तमिळ् और संस्कृत का समास करके इसका विग्रह किया जाय तो इक्षु+बाहु हो जाता है। अतः इक्षु-सम बाहुवाले का अर्थ किया गया है।) उनकी श्रेष्ठ तपस्या से खुश होकर दिया था। ४२६३

पङ्गयत् तॊरुव निक्कु वाहुविऱ् कळित्त पाऩ्मै
इङ्गिदु मलराळ् वैहु माडमॅऩ् ऱिशैत्त पोदिऩ्
ऍङ्गळाऱ् ऱुदिक्क लाहु मियल्बदो वॅऩ्ऱु कूऱिच्
चॅङ्गैहळ् कूप्पि वेऱोर् मण्डब मदऩिऱ् चेर्न्दार् 4264

पङ्कयत्तु ऒरुवऩ्–पंकजवासी ब्रह्मा द्वारा; इक्कुवाकुविऱ्कु–इक्षुबाहु (इक्ष्वाकु) को; अळित्त–दिया गया; पाऩ्मै–ऐसा; इङ्कु इतु–यहाँ यह; मलराळ् वैकुम्–श्रीलक्ष्मी के वास का; माटम्–प्रासाद है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; इचॅत्त पोतिल्–जब कहा गया तब; ऍङ्कळाल्–हमारे द्वारा; तुतिक्कल् आकुम्–स्तुति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हो; इयल्पतो–ऐसी प्रकृति का है क्या; ऎन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; चॆं कंकळ्–लाल हाथों को; कूप्पि–जोड़कर; वेऱु ओर्–अन्य एक; मण्टपम् अतत्तिल्–मंडप में; चेर्न्तार्–पहुँचे। ४२६४

इक्ष्वाकु को कमलवासी ब्रह्मा द्वारा दिया हुआ यह प्रासाद श्रीकमला का वासस्थान है। भरत ने जब यह कहा तो उन्होंने विस्मय तथा गौरव-बुद्धि के साथ कहा कि इसका यशोगान हमें संभव है क्या ? हाथ जोड़कर नमस्कार करके वे दूसरे एक मंडप (महल) में चले आये। ४२६४

इरुन्दत्त रत्तैय माडत् तियल्बॆला मॆण्णि यॆण्णिप्
परिन्दत्त त्तिरवि मैन्दत् परदत्तै वणङ्गित् तूयोय्
करुन्दडङ् गण्णि त्ताऱ्कुक् काप्पुना णणियु नत्नाळ्
तॆरिन्दिडा दिरुत्त लॆन्त्तो वॆत्ऱलु मण्णल् शॆप्पुम् 4265

अत्तैय माटत्तु–उस प्रासाद की; इयल्पॆलाम्–सारी विशिष्टताओं पर; ऎण्णि ऎण्णि इरुन्तत्तर्–सोचते-सोचते रहे; इरवि मैन्तत्–सूर्यपुत्र सुग्रीव ने; परिन्तत्तत्–स्नेह से; परतत्तै वणङ्कि–भरत को नमस्कार करके; तूयोय्–पवित्रमूर्ति; करुतट–असितु विशाल; कण्णित्ताऱ्कु–आँखों वाले का; काप्पु नाण्–रक्षा-कंकण; अणियुम्–पहनने का; नल् नाळ्–अच्छा दिन; तॆरिन्तिटातु इरुत्तल्–बिना शोधे रहना; ऎत्त्तो–क्यों तो; ऎत्ऱलुम्–पूछा तो; अण्णल् चॆप्पुम्–भरत ने उत्तर दिया। ४२६५

विभीषण आदि उन प्रासादों की विशेषताओं पर ध्यान दे-देकर विस्मय से अभिभूत रहे। तब रविकुमार सुग्रीव ने स्नेह के साथ भरत से प्रश्न किया कि हे पवित्र मूर्ति ! असितविशालाक्ष श्रीराम का रक्षाकंकण-बंधन का पवित्र दिन अब तक क्यों नहीं शोध लिया गया है ? भरत ने उत्तर में कहा। ४२६५

एळ्कड लदत्तिऱ् ऱोय मिरुनदि पिऱविऱ् ऱोयम्
ताळ्विला दिवण्वन् दॆय्दऱ् करुमैत्तोर् तन्मैत् तॆन्त
आळियॊत् ऱुडैयोन् मैन्द त्तनुमत्तैक् कडिदि त्तोक्कच्
चूळ्पुवि यदत्तै यॆल्लाङ् गडन्दत्तत् कालित् तोन्ऱल् 4266

एळ् कडल् अततिल्–सातों समुद्रों से; तोयम्–पवित्र जल; पिऱ इरु नतियिल्–और बड़ी श्रेष्ठ नदियों का; तोयम–तीर्थ; ताळ्वु इलातु–अविलंब; इवण् वन्तु ऎय्तऱ्कु–इधर आ जाय, इसमें; ओर् अरुमै तन्मैत्तु–एक कठिनाई है; ऎन्त्त–ऐसा कहने पर; ऒत्ऱु–एक; आळि–चक्ररथ के; उटैयोत्–स्वामी के; मैन्तत्–पुत्र ने; अनुमत्तै–हनुमान पर; कटितित् तोक्कि–जल्दी दृष्टि डाली तो; चूळ् पुवि अतत्तै ऎल्लाम्–(समुद्र) आवृत भूमि सारी; कटन्तत्तत्–पार की। ४२६६

(भरत का उत्तर :) सातों समुद्रों से पवित्र तीर्थ लाना है। अविलम्ब लाना बड़ा कठिन काम है। यह सुनकर एक-चक्र-रथी सूर्य के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुत्र सुग्रीव ने तुरन्त हनुमान पर दृष्टि दौड़ायी तो इंगितज्ञ हनुमान समझ गया और समुद्रमेखला पृथ्वी को पार कर गया। ४२६६

कोमुनि योडु मऱ्ऱै मऱैयवर्क् कॊणर्ह वॆऩ्ऩा
एविऩऩ् तेर्व लाऩ्शॆऩ् ऱिशैत्तलु मुलह मीऩ्ऱ
पूमहऩ् तऩ्द काबऱ् पुऩिदमा दवऩ्वऩ् दॆय्द
यावरु मॆऴुऩ्दु पोऱ्ऱि यिणैयडि तॊऴुदु निऩ्ऱार् 4267

को मुनियोटु–मुनिराज वसिष्ठ; मऱ्ऱै–और अन्य; मऱैयवर्–ब्राह्मणों को; कॊणर्क–ले आओ; ऎऩ्ऩा–ऐसा; एविऩऩ्–प्रेरित किया (भरत ने); तेर्वलाऩ्–सारथी सुमन्त्र के; चॆऩ्ऱु–जाकर; इचॆत्तलुम्–कहते ही; उलकम्–लोक के; ईऩ्ऱ–सर्जक; पू मकऩ् तऩ्त–कमलासन-जनित; कातल्–प्यारे वसिष्ठ; पुऩितऩ्–पवित्र; मातवऩ्–महान तपस्वी; वऩ्तु ऎय्त–आ पहुँचे तो; यावरुम्–सभी; ऎऴुऩ्तु–उठकर; पोऱ्ऱि–स्तुति करके; इणै अटि–चरणद्वय की; तॊऴुतु निऩ्ऱार्–वंदना कर खड़े हुए। ४२६७

भरत ने सुमंत्र को आज्ञा दी कि मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठ और अन्य ब्राह्मणों को बुला लाओ। सारथी सुमंत्र जाकर बोला तो लोकसर्जक ब्रह्मा के पुत्र, पवित्र महर्षि पधारे। सभी ने उठकर उनके चरणद्वय में नमस्कार किया और स्तुति की। ४२६७

अरियणै परद ऩीय वदऩ्कणाण् डिरुऩ्द वऩ्दप्
पॆरियव ऩवऩै नोक्किप् पॆरुनिलक् किऴत्ति योडुम्
उरियमा मलरा ळोडु मुवऩ्दिऩि दूऴिक् कालम्
करियव ऩुय्त्तऱ् कॊत्त काप्पुनाळ् नाळै यॆऩ्ऱाऩ् 4268

परतऩ्–भरत के; अरि अणै–सिंहासन; ईय–दिलाने पर; आण्टु–वहाँ; अतऩ् कण्–उस पर; इरुऩ्त–विराजे; अऩ्त पॆरियवऩ्–उन महानुभाव ने; अवऩै नोक्कि–उन भरत को देख; पॆरु निलम् किऴत्तियोटुम्–मान्या भूदेवी के साथ; उरिय–अपने स्वत्व की; मा मलराळोटुम्–श्रीकमलाजी के साथ; उवऩ्तु–मोद के साथ; इनितु–सुख; ऊऴि कालम्–युग, युग तक; करियवऩ्–श्यामल मूर्ति; उय्त्तऱ्कु–राजभोग करें इसके लिए; ऒत्त–युक्त; काप्पु नाळ् नाळै–कंकण-धारण का दिन, कल ही; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ४२६८

भरत ने सिंहासन दिया और महानुभाव वसिष्ठ उस पर विराजे। उन्होंने भरत से कहा कि भूदेवी और श्रीदेवी के साथ श्रीराम युग-युग राज्य-वैभव भोगें —तदर्थ कंकण धारण का योग्य शुभ दिन कल होगा। ४२६८

इऩ्दिर कुरुव् मऩ्ऩा रेऩैय रॆऩ्ऩ निऩ्ऱ
मऩ्दिर विदियि ऩारुम् वशिट्टऩुम् विरैऩ्दु विट्टार्
शऩ्दिर कविहै योङ्गुऩ् दयरद रामऩ् तामच
चऩ्दर मवलि शूड मोरैयु नाळऩ् दूक्कि 4269

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्तिर कुरुवुम्–इन्द्रगुरु बृहस्पति के; अन्तार्–समान रहनेवाले; एत्तैयर् ऍन्न–कितने ही थे; निन्ऱ–जो खड़े रहे, वे सब; मन्तिर वितियित्तारुम्–मन्त्र-विधि-दक्ष ब्राह्मण; वचिट्टनुम्–और वसिष्ठ; चन्तिरन् कविकै–चन्द्र-श्वेत छत्र; ओङ्कुम्–जिनके ऊपर खुला रहा; तयरत रामन्–उन दशरथराम का; तामम्–प्रकाशमय; चुन्तरम्–सुन्दर; मवुलि–मुकुट के; चट्टम्–धारण का; ओरुयुम्–लग्न और; नाळुम्–तिथि; तूक्कि–शोधकर लिखकर; विरैन्तु विट्टार्–जल्दी संदेश भेजा। ४२६९

देवगुरु बृहस्पति-तुल्य कितने ही रहे! उन मंत्रविधिज्ञाता गुरुओं और वसिष्ठ ने दाशरथी राम के श्वेत-छत्रधारी होकर छविमय सुन्दर मुकुट धारण करने योग्य दिन शोधा, उसे लेखबद्ध करके सर्वत्र भिजवाया। ४२६९

अडुक्कॊय वुलह मून्ऱु मादरत् तूवर् कूऱ
इडुक्कॊरु पेरु मिन्ऱि ययोत्तिवन् दिरुत्ता रॆन्ऱाल्
तॊडुक्कुऱु कवियान् मऱ्ऱैत् तॊहैयिनै मुडिवु तोन्ऱ
ऒडक्कुऱुत् तुरैक्कुन् दन्मै नान्मुहत् तॊरुवऱ् कुण्डो 4270

आतरम् तूतर्–आतुर दूत; अटुक्कॊय–एक के ऊपर एक रहे; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों में; कूऱ–कह आये तो; इटुक्कु–कोने में भी; ऒरु पेरुम्–कोई; इन्ऱि–न रहा, ऐसा सब; अयोत्ति वन्तु–अयोध्या आकर; इरुत्तार् ऍन्ऱाल्–ठहर गये तो; मऱ्ऱै–अलग; तॊकैयिनै–संख्या को; मुटिवु तोन्ऱ–निर्धारित कर; तॊटुक्कुऱु–रचित; कवियान्–कविता द्वारा; ऒटुक्कुऱुत्तु–संग्रह करके; उरैक्कुम्–कहने की; तन्मै–शक्ति; नान्मुकत्तु–चतुर्मुख के; ऒरुवऱ्कु उण्टो–उनके पास भी है क्या। ४२७०

आतुर दूतों ने सब जगह संदेश पहुँचा दिया और कोने-कोने के सभी लोग आ गये। उन आगतों की संख्या को निर्धारित कर बताने की शक्ति चर्तुमुख में भी रही क्या? । ४२७०

अव्वयिन् मुनिव नॊडुम् बरदनु मरियिन् शेयुम्
शॆव्विय निरुदर् कोनुञ् जाम्बनुम् वालि शेयुम्
ऍव्वमि लाऱ्ऱल् वीरर् यावरु मॆळुन्दु शॊन्ऱाङ्
गव्विय मवित्त शिन्दै यण्णलैत् तॊळुदु शॊन्तार् 4271

अव् वयिन्–उस समय; मुनिवनॊटुम्–मुनिवर के साथ; परततुम्–भरत और; अरियिन् चेयुम्–सूर्यपुत्र; चॆव्विय–सीधा-सादा; निरुतर् कोनुम्–राक्षसराज और; चाम्पनुम्–जाम्बवान और; वालि चेयुम्–बालीपुत्र, अंगद; ऍव्वम् इल्–अनिंद्य; आऱ्ऱल्–बलवान; यावर् वीररुम्–सभी वीर; आङ्कु–वहाँ से; ऍळुन्तु चॆन्ऱु–निकल, चलकर; अव्वियम्–ईर्ष्या-द्वेष; अवित्त–हननकारी; चिन्तै–मन के; अण्णलै–प्रभु को (उन्हें); तॊळुतु–नमस्कार करके; चॊन्तार्–बोले। ४२७१

तब वसिष्ठ जी के साथ भरत, रविकुमार, सीधा-सादा राक्षसेन्द्र,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाम्बवान, वालीपुत्र और अनिंद्य बलशाली सारे वीर —सबों ने श्रीराम के पास जाकर नमस्कार किया और निवेदन किया (कि कल आपका मुकुट-धारण होगा)। ४२७१

नाळैनी मवुलि शूड नन्मैशाल् परुमै नन्नाळ्
काळैनी यदनुक् केऱ्ऱ कडन्मैमो दियऱ्ऱु हॆन्ऱु
वेळैये कायु नॆऱ्ऱि विऴियिनन् मेवु मॆन्बूप्
पूळैये शूडु वानॆप् पॊरुवुमा मुनिवन् पोनान् 4272

काळै–ऋषभ-सम; नी–आपके; मवुलि–किरीट; चूट–धारण करने; नन्मै चाल्–मंगलकारी; पॆरुमै नल् नाळ्–श्रेष्ठ सुदिन; नाळै–कल है; नी–आप; अतनुक्कु–उसके लिए; एऱ्ऱ–आवश्यक; मीतु कटन्मै–उत्कृष्ट कर्मानुष्ठान; इयऱ्ऱुक–करें; ऎन्ऱु–ऐसा बोलकर; वेळैये कायुम्–मन्मथ को भी दहन करनेवाली; नॆऱ्ऱि विऴियिनन्–भाल की आँखों वाले; मेवुम्–आकर्षक; मॆन्बू–मृदु; पू–फूल; पूळैये–'पूळै' का; चूटुवानॆ–धारण करनेवाले शिव; पॊरुवुम्–के समान विद्यमान; मा मुनिवन्–महान मुनि; पोनान्–गये। ४२७२

वसिष्ठ ने कहा कि हे ऋषभ-सम ! आप मुकुट धारण करें, तदर्थ मंगलमय और श्रेष्ठ सुदिन कल ही है। आप उसके लिए आवश्यक कर्मानुष्ठान करें। यह कहकर मन्मथदाहक भाल के नेत्र वाले, प्यारे मृदुल 'पूळै' (सेमर ?) पुष्पधारी शिवतुल्य महान मुनि विदा हुए। ४२७२

नान्मुहत् तॊरुव नेव नयनऱि मयनॆन् ऱोदुम्
नून्मुहत् तोङ्गु केळ्वि नुणङ्गियोन् वणङ्गु नॆञ्जन्
कोन्मुहत् तळन्दु कुऱ्ऱञ् जॆऱुल हॆल्लाङ् गॊळ्ळुम्
मान्मुहत् तॊरुव नन्नान् मण्डबम् वयङ्गक् कण्डान् 4273

नान् मुकत्तु ऒरुवन्—अनुपमेय चतुर्मुख के; एव–आज्ञा देने पर; नयन् अऱि–कलाविद्; मयन् ऎन्ऱु ओतुम्–मय कहलानेवाला; नूल् मुकत्तु–शास्त्रज्ञान में; ओङ्कुम्—बढ़ा हुआ; केळ्वि–श्रौतज्ञान का; नुणङ्कियोन्–सूक्ष्मज्ञ; मान् मुकत्तु ऒरुवन्–हरिणमुख वाला जो था उस अप्रतिम शिल्पी ने; वणङ्कुम् नॆञ्चन्–विनत विलवाला; कोल् मुकत्तु–मानदंड से; अळन्तु–नापकर; कुऱ्ऱम् चॆऱ्ऱु–त्रुटियाँ दूर करके; उलकु ऎल्लाम्–सारे लोकों को; कॊळ्ळुम्—समा लेनेवाले; मण्टपम्—मंडप को; वयङ्क–उज्ज्वल रूप से; कण्टान्–(निर्मित) देखा (बनाया)। ४२७३

चतुर्मुख की प्रेरणा से वास्तुशास्त्रचतुर, श्रौत-सूक्ष्म-ज्ञानी, हरिणमुख, श्रेष्ठतम शिल्पी, मय विनय के साथ आया। उसने सारे लोकों को समा लेनेवाला (या सारे लोकों को मोल लेनेवाला) एक मंडप बनाया जो सब तरह से निर्दोष व ज्योतिर्मय था। ४२७३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शूळ्कड नान्गिऱ् ऱोय मॅळुवहै याहच् चॊन्न
आळ्तिरै याऱ्ऱि नीरो डमैत्तियिन् ऱॆन्न वामॆन्
ऱूळियि निऱुदि शॆल्लुन् दादैयि नुलवि यन्ऱे
एळ्तिरै नीरुन् दन्दा निरुन्दुयर् मरुन्दु तन्दान् 4274

चूळ्–आवरण के; कटल् नान्किन्–चारों सागरों से; तोयम्–तीर्थ; ऎळुवकै आक–सात विध; चॊन्न–उक्त; आळ्तिरै–गम्भीर तथा तरंग-सहित सागरों का जल; आऱ्ऱिन् नीरॊडु–नदियों के तीर्थ के साथ; इन्ऱु अमैत्ति–आज लाओ; ऎन्न–कहने पर; इरु तुयर्–बड़े संकट में; मरुन्तु तन्तान्–ओषधि जो लाया था; आम् ऎन्ऱु–(वह) हाँ कहकर; ऊळियिन् इऱ्ऱति चॆल्लुम्–युगांत में बहनेवाले उसके; तातैयिन्–पिता के समान; उलवि–चलकर; एळ् तिरै–सातों समुद्रों का; नीरुम् तन्तान्–तीर्थ लाया। ४२७४

'आवरण के चारों समुद्रों से, सप्त समुद्र से और अन्य नदियों से पवित्र तीर्थ आज ही लाओ।' यह आज्ञा सुनकर संकट के अवसर पर जो ओषधि लाया था वह हनुमान 'हाँ' कहके गया और उस युगांत काल के अपने पिता वायु के-से वेग में जाकर उसी दिन सागरों का पवित्र तीर्थ लाया। ४२७४

ऎरिमणिक् कुडङ्गळ् पन्नूर् ऱियानैमेल् वरिशैक् कान्ऱ
विरिमदिक् कुडैयि नीळल् वेन्दर्हळ् पलरु मेन्दिप्
पुरैमणिक् काळ मार्प्पप् पल्लियन् दुवैप्पप् पॊङ्गुम्
शरयुविऱ् पुनलुन् दन्दार् शङ्गिन मुरल मन्नो 4275

वेन्तर्कळ् पलरुम्–अनेक राजा लोग सभी; वरिचैक्कु आन्ऱ–पद के अनुकूल; विरि मति–पूर्ण चन्द्र के समान; कुटैयिन् नीळल्–छत्र के नीचे; पल् नूऱ–अनेक सौ; ऎरि मणि–कांतिमय रत्न के; कुटङ्कळ्–घड़ों को; यानै मेल् एन्ति–हाथियों पर चढ़ाकर; पुरै–पोले; मणि–सुन्दर; काळम् आर्प्प–'काहल' वाद्य के बजते; पल् इयम्–अनेक बाजों के; तुवैप्प–स्वरित होते; चङ्कितम् मुरल–शंखराशियों के गूंजते; पॊङ्कुम्–उमगती; चरयुविल् पुनलुम्–सरयू का जल भी; तन्तार्–लाये। ४२७५

राजा जो अनेक थे वे सभी पूर्णचन्द्र-सम श्वेतछत्र के नीचे, गजों की पीठ पर बैठकर ज्योतिर्मय रत्नघटों में पवित्र सरयू का जल ले आये। तब 'पोले काहल' नाम के बाजे तुमुल नाद कर उठे; अन्य विविध बाजे स्वरित हुए और शंखराशियाँ गूंज उठीं। ४२७५

माणिक्कप् पलहै तैत्तु वयिरत्तिन् काल्हळ् शेर्त्ति
आणिप्पॊन् शुऱ्ऱि मुऱ्ऱि यळहुऱच् चमैत्त पीडम्
एणुऱ्ऱ पळिक्कु माडत् तिट्टन रदनिन् मीदु
पुणुऱ्ऱ तिरडोळ् वीरन् तिरुवॊडुम् बॊलिन्दान् मन्नो 4276

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मणिक्कम् पलकै–माणिक्य-फलक; तैत्तु–लगाकर; वयिरम्–हीरे के; तिण् काल्कळ्–सुदृढ़ पैर; चेर्त्ति–जोड़कर; आणि पॊन् चुऱ्ऱि–उत्कृष्ट स्वर्ण से बाजुओं को; मुऱ्ऱि–निर्मित करके; अऴकु उऱ–सुघड़ रूप से; चमैत्त–निर्मित; पीटम्–पीठ को; एण् उऱ्ऱ–उत्कृष्ट; पळिङ्कु माटत्तु–स्फटिक मकान में; इट्टनर्–डाला; अततित् मीतु–उस पर; पूण् उऱ्ऱ–आभरणभूषित; तिरळ् तोळ् वीरन्–पुष्ट कंधों वाले; तिरुवॊटुम्–श्री (सीता) सह; पॊलिन्तान्–शोभित हुए। ४२७६

स्वर्णमय बाजुओं के साथ हीरों के पैरों पर माणिक्य-फलक ठोंककर पीठ बनायी गयी और वह सुन्दर पीठ उत्कृष्ट एक स्फटिक महल में डाली गयी। उस पर आभरणभूषित पुष्ट भुजाओं के वीर श्रीराम श्रीलक्ष्मी (सीता) जी के साथ शोभित हुए। ४२७६

मङ्गल कीदम् बाड मऱैयॊलि मुऴङ्ग वल्वाय्च्
चङ्गिनङ् गुमुऱप् पाण्डिल् तण्णुमै यॊलिप्पत् ताविल्
पॊङ्गुपल् लियङ्ग ळार्प्पप् पूमऴै पॊऴिय विण्णोर्
ऍङ्गणा यहनै वॆव्वे ऱैदिरबि डेहञ् जॆय्दार् 4277

मऱै ऒलि मुऴङ्क–वेद-स्वर घोषित हुए; मङ्कलम् कीतम् पाट–मंगलगीत गाये गये; वल् वाय्–सघनस्वर; चङ्कु इनम्–शंखराशियाँ; कुमुऱ–गुंजित हुईं; पाण्टिल् तण्णुमै ऒलिप्प–ताल और मृदंग बजे; ता इल्–निर्दोष; पॊङ्कु–उच्चस्वरनिनादी; पल् इयङ्कळ्–अनेक बाजे; आर्प्प–बजाये गये; पू मऴै पॊऴिय–पुष्पवर्षा हुई; विण्णोर्–व्योमवासियों ने; ऍङ्कळ् नायकनै–हमारे नायक को; वॆववेऱु–अलग-अलग; ऍतिर्–(अयोध्या के) मुक़ाबले में; अपिटेकम्–अभिषिक्त; चॆय्तार्–करा दिया। ४२७७

वेदस्वर, मंगलगीत, शंखनाद, ताल और मृदंग की ध्वनि और अनेक विविध वाद्यों के नाद के बीच देवों ने पुष्पवर्षा की और हमारे नाथ का अलग-अलग, अयोध्या के मुक़ाबले में अभिषेक किया। ४२७७

मादवर् मऱैव लाळर् मन्दिरक् किळवर् मऱ्ऱुम्
मूदऱि वाळ रुळ्ळ शान्ऱवर् मुदनी राट्टच्
चोदियान् महनु मऱ्ऱैत् तुणैवरु मनुमन् ऱानुम्
तीदिला विलङ्गै वेन्दुम् पिन्नबि डेहञ् जॆय्दार् 4278

मा तवर्–महान तपस्वी; मऱै वलाळर्–वेदज्ञ; मन्तिरम् किळवर्–मंत्रणा में दक्ष; मऱ्ऱुम्–और; मुतुमै अऱिवाळर्–वृद्ध ज्ञानी; उळ्ळ–(जो वहाँ) रहे; चान्ऱवर्–उन साधुओं ने; मुतल् नीर् आट्ट–पहले स्नान कराया; पिन्–बाद; चोतियान् मकनुम्–ज्योति (सूर्य) पुत्र; मऱ्ऱै तुणैवरुम्–अन्य साथियों ने; अनुमन् तानुम्–और हनुमान ने; तीतु इला–साधु; इलङ्कै वेन्तुम्–लंकापति ने भी; अपिटेकम् चॆय्तार्–अभिषिक्त कराया। ४२७८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

फिर महान तपस्वी, वेदविप्र, मंत्रीगण, वृद्ध ज्ञानी तथा साधूजन —इन्होंने पहले क्रमशः श्रीराम का अभिषेक कराया (पवित्र जल से नहलाया)। फिर ज्योति-अर्क-पुत्र ने, अन्य मित्रों ने और बुराई से रहित साधु विभीषण ने अभिषेचन किया। ४२७८

मरहदच् चयिलञ् जॅन्दा मरॅमलर्क् काडु पूत्तुत्
तिरै यॅऱि कङ्गैवीशुन् दिवलॅया नत्तॅन्दु शॅय्य
इरुकुळै तॊडरुम् वेऱ्कण् मयिलॊडु मिरुन्द देय्प्पप्
पॅरुहिय शॅव्वि कण्डार् पिऱप्पॅत्तुम् बिणिहळ् तीर्न्दार् 4279

मरकतम् चयिलम्–मरकत पर्वत; चॅ तामरै–लाल कमल के; मलर् काटु पूत्तु–पुष्पवनविकसित; तिरै ॲऱि–तरंगें फेंकनेवाली; कङ्कै–गंगा; वीचुम्–जिन्हें छिटकातीं; तिवलॅयाल्–उन सीकरों में; नत्तॅन्तु–भीगकर; चॅय्य–लाल; इरु कुळै–दो कुंडलों में; तॊटरुम्–लगी चलनेवाली; वेल्कण्–भाले-सी आँखों की; मयिलॊटुम्–कलापी से; इरुन्ततु एय्प्प–रहता जैसे; पॅरुकिय–अधिक (श्रीराम का); चॅव्वि–सौंदर्य; कण्टार्–देखा (जिन्होंने) वे; पिऱप्पु ॲत्तुम्–जन्म नाम के; पिणिकळ्–रोगों से; तीर्न्तार्–वियुक्त हो गये। ४२७९

कोई मरकत पर्वत लाल खिले कमलों के वन के साथ तरंगायमान गंगा के सीकरों से भीगे, दोनों कुंडलों तक दौड़नेवाली, भाले-सी आँखों से भूषित एक कलापी के साथ विराजा हो —ऐसे दिखनेवाले श्रीराम का उस दैवी सौंदर्य की झाँकी जिसने देखी उसका भवरोग छूट गया! । ४२७९

तॅय्वनी राडऱ् कॊत्त शॅय्वित्त वशिट्टत् शॅय्य
ऐयमिल् शिन्दै यात्तच् चुमन्दिर तमैच्च रोडुम्
नॊय्दित्ति नियऱ्ऱ नोत्बिन् मादवर् नुत्तित्तुक् काट्ट
ॲय्दित्त वियत्तर् पल्वे ऱिन्दिरऱ् कियत्तर् वॅत्त 4280

तॅय्वम्–देवी; नीर् आटऱ्कु–तीर्थस्नान के लिए; ऒत्त–योग्य; चॅय्वित्तै–कर्म आदि; वशिट्टत् चॅय्य–वसिष्ठ ने कराया; नोत्पित् मातवर्–व्रती तपश्रेष्ठों ने; नुत्तित्तु काट्ट–सूक्ष्मता से इंगित किया; ऐयम् इल्–असंशय; चिन्तैयात्–मन वाले; अ चुमन्तिरत्–उस सुमन्त्र ने; अमैच्चरोटम्–मन्त्रियों के साथ; नॊयतित्तिन् इयऱ्ऱ–जल्दी तैयार किया; इन्तिरऱ्कु–देवेंद्र को; इयत्तर् ॲत्त–प्राप्य जैसे; पल्वेऱु–अनेक, विविध; इयत्तर्–सामग्रियाँ; ॲय्तित्त–आ पहुँचीं। ४२८०

वसिष्ठ को दिव्य तीर्थाभिषेक-कार्य में सहायता देते हुए व्रती तपस्वियों के सूक्ष्मतंत्रों के मार्गदर्शन में असंशयमन सुमंत्र ने मंत्रियों के साथ आवश्यक कार्य किया और देवेंद्र को प्राप्त जैसी सामग्रियाँ आ जुट गयीं। ४२८०

अरियणै यत्तुमत् ताङ्ग वङ्गद तुडैवाळ् पऱ्ऱप्
परदत् वॅण्कुडै कविक्क विरुवरुङ् गवरि वीश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विरैशॅरि कमलत् ताळ्शेर् वॅण्णॅय्मन् शडैयन् तङ्गळ्
मरबुळोर् कॉडुक्क वाङ्गि वशिट्टन्ने पुनैन्दान् मौलि 4281

अरि अणै–सिंहासन को; अनुमन्–हनुमान के; ताङ्क–धारण करते; अङ्कतन्–अंगद के; उटैवाळ्–कटिखड्ग; पऱ्ऱ–पकड़े रहते; परतन्–भरत के; वॅण् कुटै–श्वेत छत्र; कविक्क–ऊपर करते; इरुवरुम्–दोनों भाइयों के; कवरि बीय–चामर डुलाते; विरै चॅरि–घनी सुगन्ध के; कमलम् ताळ्–कमल पर आसीन श्री से; चेर्–युक्त; वॅण्णॅय् मन–वॅण्णॅय् नल्लूर के स्वामी; चटैयन् तङ्कळ्–शडैयप्पन के; मरपुळोर्–पूर्वजों के; कॉटुक्क वाङ्कि–बढ़ाते लेकर; वचिट्टन्ने–वसिष्ठ ने ही; मवुलि–किरीट; पुनैन्तान्–पहनाया। ४२८१

हनुमान ने सिंहासन धारण किया। अंगद करिखड्ग पकड़े रहा। भरत ने श्वेत छत्र श्रीराम के ऊपर किया। दोनों भाइयों ने (लक्ष्मण और शत्रुघ्न ने) चामर डुलाये। सुगंधित कमल पर आसीन श्री से युक्त और तिरुवॅण्णॅय् नल्लूर के स्वामी शडैयप्प वळ्ळल् (दानी) के पूर्वजों ने किरीट बढ़ाया तो वसिष्ठ ने ही उसे लेकर श्रीराम के सिर पर पहनाया। [१ 'श्री से युक्त' श्रीराम का विशेषण बन सकता है। तब सीताजी का अर्थ होगा। नहीं तो दौलत की देवी लक्ष्मी का अर्थ होगा। तब श्रीमान् शडैयप्प वळ्ळप् का अर्थ होगा। २ शडैयप्पन का नाम अमर कराकर अपनी कृतज्ञता जताने का जो कम्बन ने वादा किया था कहा जाता है कि उसका पालन इधर, अन्य स्थलों में जैसे किया गया। ३ यह पद्य बड़ा प्रसिद्ध मंगलमय पद्य है।]। ४२८१

वॅळ्ळियुम् बॉन्नु मॉप्पार् विदिमुरै मॅय्यिर् कॉण्ड
ऑळ्ळिय नाळि नल्ल वोरयि नुलह मून्रुम्
तुळ्ळिन कळिप्प मौलि शूडिनान् कडलिन् वन्द
तॅळ्ळिय तिरुवुन् दॅय्वप् पूमियुञ् जेरुन् दोळान् 4282

कटलिन् वन्त–क्षीरसागर से प्रगट; तॅळ्ळिय तिरुवुम्–सुलक्षणा श्रीदेवी; तॅय्वम् पूमियुम्–दिव्य भूदेवी; चेरुम्–जिनसे लगीं उन; तोळान्–कंधों वाले ने; कॉण्ट–शोधित; ऑळ्ळिय–मंगलमय; नाळिल्–दिन में; नल्ल ओरॅयिल्–शुभलग्न में; उलकम् मून्रुम्–तीनों लोकों के; तुळ्ळिन कळिप्प–उछलते और मुदित होते; वॅळ्ळियुम्–शुक्र और; पॉन्नुम्–बृहस्पति के; ऑप्पार्–समान पुरोहितों के; विति मुरै–बताये क्रम में; मौलि–मुकुट को; मॅय्यिल्–सिर पर; कूटिनान्–धारण किया। ४२८२

क्षीरसागर से उत्पन्न सुलक्षणा लक्ष्मी और दिव्य भूदेवी दोनों जिन भुजाओं से लग गयीं उन भुजाओं के स्वामी भगवान श्रीराम ने शोधित शुभ दिन में शुक्र-बृहस्पति-सदृश पुरोहितों के बताये क्रम से अपने सिर पर मुकुट धारण कर लिया। तब तीनों लोक मोद के साथ उछले। ४२८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शित्तमॉत् तुळऩॆन् ऱोदुन् दिरुनहर्त् तॆय्व नऩ्ऩूल्
वित्तह ऩॊरुवऩ् शॆऩ्ऩि मिलैच्चिय दॆऩ्ऩिऩु मेऩ्मै
ऑत्तमू वुलहत् तोर्क्कु मुवहैयि ऩुऱुदि युऩ्ऩिल्
तऩ्तमुच् चियिऩ्मेल् वैत्त दॊत्तदत् ताम मौलि 4283

तिरु नकर्–उस श्रीनगर में; तॆय्व नल् नूल्–दिव्य शास्त्रों में दक्ष; चित्तम् ऑत्तुळऩ्–मनतोषक; ऎऩ्ऱु ओतुम्–कहलानेवाले ने; वित्तकऩ् ऑरुवऩ्–सर्वज्ञ उत्तम श्रीराम के; चॆऩ्ऩि–सिर पर; मिलैच्चियतु–पहनाया; ऎऩ्ऩिनुम्–कहा जाय तो भी; अ तामम् मौलि–वह उज्ज्वल किरीट; मेऩ्मै ऑत्त–गौरवयुक्त; मू उलकत्तोर्क्कुम्–तीनों लोकवासियों को; उवकैयिऩ् उऱुति–संतोष का निश्चय; उऩ्ऩिल्–सोचें तो; तम् तम्–अलग-अलग उनके; उच्चिवित् मेल्–सिरों पर; वैत्ततु ऑत्ततु–रखा गया हो जैसे रहा। ४२८३

उस श्रीनगर के शास्त्रविदग्ध तथा मनोनुकूल वसिष्ठ ने सर्वज्ञ श्रीराम के सिर पर मुकुट क्या पहनाया; श्रेष्ठ सारे तीनों लोकों ने ऐसा आनंद मनाया मानो अलग-अलग हर एक के सिर पर मुकुट रखा गया हो। ४२८३

पऩ्ऩॆडुङ् काल नोऱ्ऱुत् तऩ्ऩुडैप् पण्बिऱ् केऱ्ऱ
पिऩ्ऩॆडुङ् गणवऩ् तऩ्ऩैप् पॆऱ्ऱिडैप् पिरिन्दु मुऱ्ऱुम्
तऩ्ऩॆडुम् बीळै नीङ्गत् तळुविऩाळ् तळिर्क्कै नीट्टि
नऩ्ऩॆडुम् बूमि यॆऩ्ऩु नङ्गैतऩ् कॊङ्गै यार 4284

पल् नॆटुकालम्–दीर्घ काल तक अनेक; नोऱ्ऱु–व्रतों का पालन कर; पिऩ्–बाद; तऩ् उडै–अपने; पण्पिऱ्कु एऱ्ऱ–गुण के योग्य; नॆटु कणवऩ्–माननीय पति को; पॆऱ्ऱु–प्राप्त करके; इडै पिरिन्तु–बीच में अलग होकर; तऩ्–अपनी; नॆटु पीळै–बड़ी पीड़ा; मुऱ्ऱुम्–पूरी; नीङ्क–दूर होने पर; नल् नॆटु–अच्छी बड़ी; पूमि ऎऩ्ऩुम्–भूमि की; नङ्कै–देवी ने; तळिर् कै नीट्टि–अपने पल्लवहस्त बढ़ाकर; तऩ्–अपने; कॊङ्कै यार–स्तनों को पूर्ण संतोष देते हुए; तळुविऩाळ्–छाती से खूब लगा लिया। ४२८४

भूदेवी ने बहुत काल तक तपस्या की और फलस्वरूप अपने गुण के योग्य मान्य पति के रूप में श्रीराम को पाया; पर तुरंत ही वियोग हो गया। बड़ा दुःख सहती रही। अब फिर वे आ गये और भूमिपति हो गये। तो उस श्रेष्ठ विशाल भूमि रूपी देवी ने अपने दोनों पल्लवहस्तों को बढ़ाकर अपनी छाती से खूब लगा लिया, जिससे उसके स्तन खूब हुलस गये। (भूमि को देवी के रूप में कल्पित करके राजा की पत्नी बताने की परिपाटी सर्वविदित है ही। राजा को भूप या भूपति कहना भी प्रचलित है। उस कल्पना को कुछ आगे बढ़ाकर पति-पत्नी व्यवहार में रंग लाना कवि की विदग्धता है।)। ४२८४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विरदनून् मुनिवन् शॊऩ्ऩ विदिनॆऱि वऴामै नोक्कि
वरदनु मिळैअर्क् काङ्गण् मामणि महुडञ् जूट्टिप्
परदऩॆत् तऩदु शॆङ्गोल् नडावुऱप् पणित्तु नाळुम्
करैतॆरि विलाद पोहक् कळिप्पिनु ळिरुन्दान् मऩ्ऩो 4285

बिरत नूल्–व्रतपालक; मुनिवन्–मुनि के; चॊऩ्ऩ–कहे अनुसार; बिति नॆऱि–विधि का विधान; वऴामै नोक्कि–उल्लंघन न करना देखकर; वरतनुम्–वरद श्रीराम ने; इळैअर्क्कु–छोटे भाइयों को; आङ्कण्–वहाँ; मा मणि–बड़े रत्नों से निर्मित; मकुटम् चूट्टि–किरीट पहनाकर; परतऩै–भरत को; तऩ् चॆङ्कोल्–अपना राजदण्ड (शासन); नटावुऱ–चलाने की; पणित्तु–आज्ञा देकर; नाळुम्–दिने-दिने; करै तॆरिविलात–अपार; पोकम् कळिप्पिनुळ्–भोग-विलास में; इरुन्तान्–लगे रहे। ४२८५

व्रतशास्त्रविदग्ध वसिष्ठ के कहे अनुसार यथाविधि श्रीराम ने अपने तीनों छोटे भाइयों के सिरों पर बड़े रत्नकिरीट पहनाये। भरत को राज्यपरिपालन की आज्ञा दी और स्वयं अपार भोगविलास में रत रहे। ४२८५

39. विडै कॊडुत्त पडलम् (अनुमति-प्रदान पटल)

पूमहट् कणिय दॆऩ्ऩप् पॊलिपशुम् बूरि शेर्त्ति
मामणित् तूणिऱ् चॆय्द मण्डब मदऩि ऩाप्पण्
कोमणिच् चिविहै मीदे कॊण्डलु मिऩ्ऩुम् बोलत्
तामरैक् किळत्ति योडुन् दयरद रामऩ् शार्न्दान् 4286

पू मकट्कु–भूमिदेवी का; अणियतु ऍऩ्ऩ–श्रृंगार जैसा; पॊलि–विद्यमान; पचुम् पूरि–खरा सोना; चेर्त्ति–लगाकर बने; मा मणि–श्रेष्ठ रत्न-जड़ित; तूणिल्–खम्भों पर; चॆय्त–सुनिर्मित; मण्टपम् अतऩित्–मंडप के (दरबार के); नाप्पण्–मध्य में; कोमणि–हीरों की; चिविकै मीतु–शिविका पर; कॊण्टलुम्–मेघ और; मिऩ्ऩुम् पोल–बिजली के समान; तामरै किळत्तियोटुम्–कमल की स्वामिनी के साथ; तयरत रामऩ्–दाशरथी राम; चार्न्तान्–आये। ४२८६

देवी पृथ्वी का श्रृंगार जैसा शोभायुक्त, स्वर्ण-निर्मित तथा रत्न-जड़ित खंभों वाला सभामंडप (दरबार का मंडप) था। दाशरथी श्रीराम और कमला सीताजी मेघ और बिजली के समान शोभायमान होकर रत्न-विशिष्ट एक शिविका पर बैठकर उस मंडप में आये। ४२८६

विरिकडल् नडुवुट् पूत्त मिऩ्ऩॆऩ्ऩ वारम् वीङ्ग
ऍरिकदिर्क् कडवुळ् तऩ्ऩै यिऩमणि महुड मेय्प्पक्
करुमुहिऱ् करशु शॆन्दा मरैमलर्क् काडु पूत्तोर्
अरियणैप् पॊलिन्द दॆऩ्ऩ विरुन्दऩ ऩयोत्ति वन्दान् 4287

विरि कटल्–विशाल सागर के; नटुवुळ् पूत्त–मध्य खिली; मिऩ् ऍऩ्ऩ–बिजली के समान; आरम् वीङ्क–मुक्ताहार ऊंचा दिखा; ऍऱि–जलानेवाले;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कतिर् कटवुळ् तन्नै–किरणमाली को; इनम् मणि–राशियों में रत्न; मकुटम्–जिसमें जड़ित हो उस किरीट के; एय्प्प–समान रहते; करु मुकिऱ्कु–काले मेघ का; अरचु–राजा; चॆन्तामरै मलर्–लाल कमल-पुष्प; काटु पूत्तु–वन में खिल रहते; ओर्–अपूर्व; अरि अणै–सिंहासन पर; पॊलिन्ततु ऎन्न–विराजकर शोभित रहा जैसे; अयोत्ति वेन्तन्–अयोध्याधिपति; इरुन्ततन्–आसीन रहे। ४२८७

विस्तृत सागर-मध्य बिजली कौंधती रहती हो, ऐसा मुक्ताहार चमक रहा था। किरणमाली की समानता कर रहा था उनका रत्नजड़ित मुकुट। काला मेघराज खिले कमल-पुष्पों के वन के साथ सिंहासन पर विराज रहा हो, ऐसा अयोध्याधिपति सिंहासन पर दर्शन दे रहे थे। ४२८७

मरहदच् चयिल मीदु वाणिलाप् पाय्व दॆन्त
इरुकुळै यिडऱुम् वेऱ्क णिळमुलै यिळैन लार्तम्
करकम लङ्गळ् पूत्त कऱ्ऱैयङ् गवरि तॆऱ्ऱु
उरहरु नररुम् वानत् तुम्बरुम् बरवि येत्त 4288

मरकतम्–मरकत के; चयिलम्–पर्वत; मीतु–पर; वाळ् निला–श्वेत चाँदनी; पाय्वतु ऎन्न–फैलती जैसे; इरुकुळै–दोनों कुंडलों से; इटऱुम्–टकराती; वेल् कण्–भाले-सी आँखों; इळ मुलै–बालस्तन वाली; इळै नलार् तम्–आभरणभूषिता स्त्रियों के; करम् कमलङ्कळ्–कर-कमलों में; पूत्त–खिले; अम्–सुन्दर; कऱ्ऱै कवरि–चामर; तॆऱ्ऱु–शरीर से धीरे से लगते; उरकरुम्–नागलोकवासी और; नररुम्–नर और; वानत्तु उम्परुम्–आकाश के देव; परवि–प्रशंसा में; एत्त–स्तुति करते (उस स्थिति में)। ४२८८

लोल कुंडलों से टकरानेवाली आँखों की, बालस्तनी आभरणालंकृता नारियों के करकमलों पर चामर डुलते थे और उनकी छवि मरकत शैल पर पड़नेवाली श्वेत चाँदनी के समान श्रीराम पर पड़ रही थी। नागलोक-वासी, भूलोकवासी नर और व्योमवासी देव यशगान राजस्तवन कर रहे थे। ४२८८

उलहमी रेऴुन् दन्न वॊळिनिलाप् परप्प वानिल्
तिलहवा णुदल्वॆण् डिङ्गळ् शिन्दनॊन् दॆळिदिऱ् ऱेयक्
कलहवा णिरुदर् कोनैक् कट्टळित् तिट्ट कीर्त्ति
इलहिमे निवन्द दॆन्न वॆळुतनिक् कुडैनिन् ऱेय 4289

तिलकम्–तिलक-सहित; वाळ्–सुन्दर; नुतल्–भाल रूपी; वॆळ्–श्वेत; तिङ्कळ्–चन्द्र; उलकम् ईरेऴुम्–चौदहों लोकों में; तन्न–अपनी; ऒळि–उज्ज्वल; निला–ज्योति; परप्प–फैलाता; वानिल्–आकाश में; वॆण् तिङ्कळ्–श्वेत चन्द्र; चिन्तै नॊन्तु–मन में दुःख कर; ऎळितिल् तेय–आसानी से क्षय होता; कलकम्–कलहप्रिय; वाळ् निरुतर् कोनै–तलवारधारी राक्षसेंद्र रावण को; कट्टु अऴित्तु–निर्मूल करके; इहट कीरत्ति–मिली कीर्ति; इलकि मेल–प्रकाशमान होकर, ऊपर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निवन्ततु अँत्त--उन्नत रहा जैसे; अँळु--उठा हुआ; तलि कुटै--अनोखा छत्र; निन्ऱु--रहकर; एय--छाया देता रहा (उस साज में) । ४२८९

श्रीराम का तिलक-सहित भाल रूपी चाँद चौदहों भुवनों में प्रकाश (यश) फैला रहा था। इसलिए आकाश का श्वेत चाँद दुःख से घुलकर अनायास क्षीण हो रहा था। कलहप्रिय, तलवारधारी राक्षसेंद्र को निर्मूल करके श्रीराम ने जो यश अर्जित किया था वह यश तेजोमय हो ऊपर झलक रहा हो —ऐसा श्वेत छत्र छाया दे रहा था। ४२८९

मङ्गल कीदम् बाड मऱैयव राशि कूऱच्
चङ्गिऩम् कुमुऱप् पाण्डिल् तण्णुमै तुवैप्पत् ताविल्
पॊङ्गुपल् लियङ्ग ळार्प्पप् पॊरुहयऱ् करुङ्गट् चॆव्वाय्प्
पङ्गय मुहत्ति ऩार्हळ् मयिऩडम् बयिल मादो 4290

मङ्कल कीतम् पाट--मंगलगीत गाये जाते; मऱैयवर्--ब्राह्मण; आचि कूऱ--आशीर्वाद देते; चङ्कु इनम्--शंखराशियाँ; कुमुऱ--गूँजतीं; पाण्टिल्--ताल; तण्णुमै--मृदंग आदि; तुवैप्प--बजते हैं; ता इल्--निर्दोष; पॊङ्कु--बजनेवाले; पल् इयङ्कळ्--अनेक बाजे; आर्प्प--शब्द करते; पॊरु--परस्पर लड़नेवाली; कयल्--'कयल' सी; करु कण्--काली आँखें; चॆव्वाय्--लाल अधर; पङ्कयम्--कमल-से; मुकत्तिऩार्कळ्--मुखवालियाँ; मयिल् नटम् पयिल--मोर के समान नाचतीं। ४२९०

मंगलगीत, ब्राह्मणों का आशीर्वाद, शंखध्वनि, ताल, मृदंग आदि की ठनक, विविध वाद्यनाद, इनके मध्य परस्पर स्पर्धालू, 'कयल' (मछली-) सी आँखों तथा लाल अधरों वाली पंकजमुखी रमणियाँ 'मयूर-नाच' दिखा रही थीं। ४२९०

तिरैकडऱ् कदिरु नाणच् चॆळुमणि महुड कोडि
करॆऩॆरि विलाद शोरिक् कदिरॊळि परप्प नाळुम्
वरैपॊरु माड वायिल् नॆरुक्कुऱ वऩ्दु मऩ्ऩर्
परशिये वणङ्गुन् दोऱुम् बदयुहऱ् जेप्प मऩ्ऩो 4291

तिरै कटल्--तरंग-सागर में; कतिरुम्--सूर्य को; नाण--लजाने देकर; चॆळुमणि--पुष्ट मणियों-सहित; मकुटम् कोटि--मुकुटपंक्तियाँ; करै ऩॆरिवु इलात--पार न जाना जाय, इस भाँति; चोरि--जो छिटकाते; कतिर्--उस प्रकाश को; ऒळि--ज्योति; परप्प--फैलती; नाळुम्--दिने-दिने; वरै पॊरुम्--पर्वतोपम; माटम् वायिल्--महल के द्वार पर; नॆरुक्कु उऱ--भीड़ लगाकर; वऩ्दु--आकर; मऩ्ऩर्--राजा लोग; परचि--स्तुति करके; बणङ्कुम् तोऱुम्--जब-जब नमस्कार करते; पतयुकम्--दोनों पर; चेप्प--लाल हो जाते (ऐसा)। ४२९१

लहरोंवाले समुद्र-मध्य उठते सूर्य को भी लजानेवाली रीति से जो प्रकाश छिटक रहे थे, उन मुकुटों की पंक्तियाँ अपार ज्योति की वर्षा-सी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कर रही थीं। हर दिन पर्वतोपम प्रासाद के द्वार पर श्रीराम आते तब भीड़ लगाकर राजा लोग आते और पैरों से सिर लगाकर नमस्कार और स्तवन करते। उससे श्रीराम के चरण लाल हो जाते थे। ४२९१

मन्दिरक् किळवर् शुऱ्ऱ मऱैयवर् वळुत्ति येत्तत्
तन्दिरत् यलैवर् पोऱ्ऱत् तम्बियर् मरुङ्गु शूळच्
चिन्दुरप् पवळच् चॆव्वाय्त् तॆरिवैयर् पलाण्डु कूऱ
इन्दिरऱ् कुवमै येय्प्प वॆम्बिरा तिरुन्द कालै 4292

मन्तिरम् किळवर्–मंत्रणा के अधिकारी मंत्री लोग; चुऱ्ऱ–घेर लेते तब; मऱैयवर्–ब्राह्मण; वळुत्ति–आशीर्वाद देकर; एत्त–स्तुति करते; तन्तिरम् तलैवर्–सेना-नायक; पोऱ्ऱ–स्तवन करते; तम्पियर्–सहोदर; मरुङ्कु चूळ–पार्श्व में घेरते; चिन्तुरम्–सिंदूर तथा; पवळम् चॆव्वाय्–प्रवालोपम लाल अधरों की; तॆरिवैयर्–स्त्रियाँ; पल् आण्टु कूऱ–जयजीव का गान करतीं; इन्तिरऱ्कु–(इस भाँति) इन्द्र से; उवमै एय्प्प–उपमित हों ऐसा; ऎम्पिरान्–हमारे प्रभु; इरुन्त काले–जब रहे तब। ४२९२

मंत्रणाचतुर मंत्री लोग घेरे रहे। ब्राह्मण मंगल-कामना में स्तुति करते व सेनापति लोग स्तवन करते रहे। कनिष्ठ सहोदर चारों ओर रहे। सिंदूर-सम, प्रवालोपम लाल अधरों वाली स्त्रियाँ 'जुग-जुग जियो' का गान करती रहीं। इस भाँति जब हमारे प्रभु देवेंद्र की समानता करते हुए रहते थे तब। ४२९२

मयिन्दन्मा तुमिन्दन् कुम्ब नङ्गदन् ननुमन् माऱिल्
कयन्दरु कुमुदक् कण्णन् शदवलि कुमुदन् तण्डार्
नयन्दॆरि तदिमु हत्को हशमुहन् मुदल नण्णार्
वियन्दॆळु मऱुबत् तेळु कोडियाम् वीर रोडुम् 4293

मयिन्ततन्–मैंद; मा तुमिन्तन्–बड़ा द्विविद; कुम्पन्–कुंभ; अङ्कतन्–अंगद; अनुमन्–हनुमान; माऱिल्–श्रेष्ठ; कयम् तऱ–तड़ाग से उत्पन्न; कुमुतक्कण्णन्–कुमुद जैसी आँखों वाला; चतवलि–शतबली; कुमुतन्–कुमुद; तण्टार्–शीतल मालाधारी; नयन्तॆरि ततिमुकन्–नयशील दधिमुख; को कचमुकन्–उत्तम गजमुख; मुतल–आदि; नण्णार्–शत्रु को भी; वियन्तु ऎळुम्–विस्मित कर युद्ध करनेवाले; अऱुपत्तेळु–सड़सठ; कोटियाम्–करोड़ संख्या के; वीररोटुम्–वीरों के साथ। ४२९३

मैंद, द्विविद, कुंभ, अंगद, हनुमान, कुमुदाक्ष, शतबली कुमुद, दधिमुख, गजमुख आदि शत्रुविस्मयकारी योद्धा, सड़सठ करोड़ वीरों और—। ४२९३

एनैयर् पिऱरुम् जुऱ्ऱ वॆळुबदु वॆळ्ळत् तुऱ्ऱ
वानर रोडुम् वॆय्योन् महत्वनट्टु वणङ्गिच् चूळत्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेऩिमि रलङ्गऱ् पॆन्दार् वीडणक् कुरिशिल् शॆय्य
मानबा ळरक्क रोडु वन्दडि वणङ्गिच् चऴ्न्दान् 4294

एऩैयर् पिऱरुम्–अन्य और लोगों के; चुऱ्ऱ–चारों ओर रहते; अॆऴुपतु–सत्तर; वॆळ्ळत्तु–वॆळ्ळम् में; उऱ्ऱ–रहे; वानररोटुम्–वानरों के साथ; वॆय्योऩ् मकऩ्–तापक सूर्य का पुत्र; वन्तु–आकर; वणङ्कि चूऴ–नमस्कार कर पास रहा तो; तेऩ् इमिर्–भ्रमर-गुंजरित; अलङ्कल्–हिलनेवाली; पचुमै तार्–नवीन मालाधारी; वीटणन् कुरिचिल्–विभीषण साधु; चॆय्य मानम्–श्रेष्ठ मान और; वाळ्–तलवार रखनेवाले; अरक्करोटु–राक्षसों के साथ; वन्तु–आकर; अटि वणङ्कि–पालागन करके; चूऴ्न्तान्–पास रहा। ४२९४

अन्य वीरों के मध्य, सत्तर वॆळ्ळम् की सेना के वानरों को लेकर गरम किरणमाली का पुत्र सुग्रीव आया। फिर भ्रमर-मंडरित तथा हिलने वाली मालाधारी साधु विभीषण मान और तलवार रखनेवाले राक्षस वीरों को लेकर आया और स्थित हुआ। ४२९४

वॆऱ्ऱिवॆऱ् जेऩै योडुम् वॆऱिप्पॊऱिप् पुलियिऩ् वॆव्वाल्
शुऱ्ऱुऱत् तॊडुत्तु वीक्कु मरैयिनन् शुऴलुङ् गण्णन्
कऱ्ऱिरळ् वयिरत् तिण्डोळ् कडुन्दिऱ मडङ्ग लन्नान्
अॆऱ्ऱुनीर्क् कङ्गै नावाय्क् किऱैकुहन् तॊऴुदु शूऴ्न्दान् 4295

वॆऱि–आग्रह और; पॊऱि–चित्तियों-सहित; वॆम्मै पुलियिऩ्–वैरी बाघ की; वाल्–पूंछ को; चुऱ्ऱु उऱ–घुमाकर; तॊटुत्तु–लपेटकर; वीक्कुम्–बंधी; अरैयिऩन्–कमर वाला; चुऴलुम् कण्णन्–घूमती आँखों का; कल् तिरळ्–पत्थर-सम कठोर; वयिरम्–वज्र-सम; तिण् तोळ्–सुदृढ़ कंधों का; कटु तिऱम्–सख्त ताक़त के; मटङ्कल् अऩ्ऩान्–सिंह के समान; अॆऱ्ऱुम्–लहराते; नीर्–जल की; कङ्कै–गंगा पर; नावाय्क्कु–नौकाओं का; इऱै–मालिक; कुकऩ्–(जो था उस) गुह ने; वॆऱ्ऱि–विजयी; वॆम् चेऩैयोटुम्–भयंकर सेना के साथ; चूऴ्न्तु तॊऴुतान्–आकर नमस्कार किया। ४२९५

फिर गुह अपनी विजयवाहिनी के साथ आया। उसकी कमर में आग्रह तथा चित्तियों-सहित रहे व्याघ्र की पूंछ लपेटी गयी थी। घूमने वाली (चंचल) आँखें, पत्थर-सम वज्रदृढ़ स्थूल कंधे, कठोर, बली सिंह-सम, लहराते जल की गंगा पर की नौकाओं का स्वामी वह नमस्कार करके पास रहा। ४२९५

वळ्ळलु मवर्हळ् तम्मेल् वरम्बिऩ्ऱि वळर्न्ब कादल्
उळ्ळुऱप् पिणित्त शॆय्है यॊळिमुहक् कमलङ् गाट्टि
अळ्ळुऱत् तऴुवि ऩान्पोऩ् ऱहमहिऴ्न् दिऩिदि ऩोक्कि
अॆळ्ळलि लाद मॊय्म्बो रीण्डिऩि दिरुत्ति रॆऩ्ऱान् 4296

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वळ्ळलुम्–वरद प्रभु भी; अवर्कळ् तम्मेल्–उनसे; वरम्पु इन्ऱि–असीम रीति से; वळर्न्त कातल्–बढ़ा रहा प्रेम; उळ् उऱ–अंदर से; पिणित्त–जो बाँधे रहा उस; चॆय्कॆ–हाल को; ऒळि मुकम्–प्रसन्न मुख के; कमलम् काट्टि–कमल में दिखाकर; अळ् उऱ–कसकर; तळुवित्तान् पोन्ऱु–आलिंगन किया जैसे; अकम् मकिळ्न्तु–मन में मोद पाकर; इन्तितिन् नोक्कि–मधुर दृष्टि से देखकर; ऎळ्ळल् इलात–अनिंद्य; मॊय्म्पीर्–बलवान लोगो; ईण्टु–यहाँ; इनितु–सुख से; इरुत्तीर्–आसीन हो जाओ; ऎन्ऱान्–कहा। ४२९६

वरद प्रभु के मुख पर असीम प्रेम का आंतरिक भाव झलकता था। उन पर उन्होंने ऐसी मधुर दृष्टि डाली, जिससे लगता था कि उन्हें गाढ़ालिंगन का-सा सुख मिल रहा हो। उन्होंने उन्हें आसन दिखाकर कहा कि सुख से आसीन हो जाओ। ४२९६

नन्नॆऱि यऱिवु शान्ऱोर् नान्मऱैक् किळवर् मऱ्ऱैच्
चॊन्नॆऱि यऱियु नीरार् तोमऱु पुलमैच् चॆल्वर्
पन्नॆऱि तोऱुन् दोन्ऱुम् बरुणिदर् पण्बिन् केळा
मन्नवर्क् करशन् पाङ्गर् मरबिनाऱ् चुऱ्ऱ मन्नो 4297

नल् नॆऱि–सन्मार्गगामी; अऱिवु–बुद्धिमान; चान्ऱोर्–साधु; नाल् मऱै किळवर्—चतुर्वेदज्ञ और; चॊल् नॆऱि–भाषण-रीति; अऱियुम्–जानने का; नीरार्–सामर्थ्यशाली; तोम् अऱु–निर्दोष; पुलमै–विद्वत्ता के; चॆल्वर्–धनी; मऱ्ऱै–और; पण्पिन्–श्रेष्ठ गुणों के; केळ् आम्–नातेदार ऐसे; पल् नॆऱि तोऱुम्–विविध शास्त्रों में; तोन्ऱुम्–चतुर रहे; परुणितर्–उत्कृष्ट पंडित; मन्नवर्क्कु–राजाओं के; अरचन्–राजा के; पाङ्कर्–पास; मरपिनाल्–क्रम के अनुसार; चुऱ्ऱ–घेरे रहे। ४२९७

सन्मार्गी बुद्धिमान, चतुर्वेदज्ञ, भाषण की रीति के ज्ञाता, निर्दोष विद्वत्ता के धनी और सुसंस्कृत गुणी और विविध शास्त्रों में विदग्ध पंडित राजाधिराज श्रीराम के पास अपने-अपने स्थान में स्थित रहे। ४२९७

तेम्बडु पडप्पै मूदूर्त् तिरुवॊडु मयोत्ति शेर्न्द
पाम्बणै यमलन् तन्नैप् पऴिच्चॊडुम् वणक्कम् बेणि
वाम्बुनऱ परवै ञालत् तरशरु मऱ्ऱु ळोरुम्
एम्बलुऱ ऱिरुन्दार् नॊय्दि निरुमदि यिऱन्द दन्ऱे 4298

वाम् पुनल्–उछलते (तरंगायमान) जल के; परवै–समुद्रावृत; ञालत्तु अरचरुम्–पृथ्वी के राजा; मऱ्ऱुळोरुम्–और अन्य लोग; तेम् पट्टु–मधुपूर्ण; पटप्पै–उपवनों से युक्त; मुतुमै ऊर्–प्राचीन नगरी; अयोत्ति–अयोध्या में; तिरुवॊटु–श्री के साथ; चेर्न्त–मिले; पाम्पु अणै–शेषशायी; अमलन् तन्मै–अमलदेव को; पऴिच्चॊटुम्–स्तुति के साथ; वणक्कम्–नमस्कार; पेणि–करके; एम्पल् उऱ्ऱ–संतोष से भरकर; इरुन्तार्–रहे; नॊय्तित्–अनायास; इरुमति–दो महीने; इऱन्ततु–बीत गये। ४२९८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इस भाँति लहरों वाले समुद्र से आवृत धरणी के राजा लोग और अन्य जन मधुपूरित उपवनों से भरी पुरातन नगरी अयोध्या में श्रिय:पति शेषशायी श्रीराम की स्तुति तथा सेवा करते हुए आनंद के साथ रहते थे। अनायास दो मास बीत गये। ४२९८

नॆरुक्किय वमर रॆल्ला नॆडुङ्गडऱ् किडॆनिऩ् ऱेत्तप्
पॊरुक्कॆऩ वयोत्ति यॆय्दि मऱ्ऱवर् पॊरुमल् तीर
वरुक्कमो डरक्कर् यारु मडिदर वरिविऱ् कॊण्ड
तिरुक्किळर् मार्बि ऩान्पिऱ् चॆय्ददु शॊप्प लुऱ्ऱाम् 4299

नॆटु–बड़े; कटऱ्कु–क्षीरसागर के; इटॆ–मध्य; नॆरुक्किय–सघन इकट्ठे हुए; अमरर् ऍल्लाम्–सारे देवों ने; निऩ्ऱु एत्त–रहकर स्तुति की; पॊरुक्कॆऩ–झट करके; अयोत्ति–अयोध्या; ऍय्ति–आकर; अवर् पॊरुमल्–उनका दुःख; तीर–दूर करने; वरुक्कमोटु–सवर्ग; अरक्कर् यारुम्–सभी राक्षसों को; मटि तर–मरने देने; वरिविल् कॊण्ट–सबन्ध कोदंड जिन्होंने लिया; तिरु–उन श्री; किळर्–निवास; मार्पिऩान्–वक्षवाले श्रीराम ने; पिऩ् चॆय्ततु–जो बाद किया; चॊप्पल् उऱ्ऱाम्–वह बताने लगते हैं। ४२९९

देवों ने सघन भीड़ में एकत्रित होकर क्षीरसागर-मध्य रहकर श्रीविष्णु से प्रार्थना की थी। वह सुनकर उन्होंने झट अयोध्या में अवतार लेकर, राक्षसों को निर्मूल करके देवों के दुःखनिवारण करने के संकल्प से सबंध कोदंड हाथ में लिया था। उन श्रीनिवासवक्ष श्रीराम ने आगे जो किया वह अब हम (कवि) कहने लगते हैं। ४२९९

मऱैयवर् तङ्गट् कॆल्ला मणियॊडु मुत्तुम् बॊऩ्ऩुम्
निऱैवळम् बॆरुहु पूवुम् जुरबियु निरैत्तु मेऩ्मेल्
कुऱैयिदॆऩ् ऱिरन्दोर्क् कॆल्लाङ् गुऱैवऱक् कॊडुत्तुप् पिऩ्ऩर्
अऱैकळ लरशर् तम्मै वरुहॆऩ वरुळ वन्दार् 4300

मऱैयवर् तङ्कट्कु ऍल्लाम्–सभी ब्राह्मणों को; मणियॊटु–रत्नों के साथ; मुत्तुम्–मोती; पॊऩ्ऩुम्–और सोना; वळम् निऱै–उर्वरतापूर्ण; पॆरुकु पूवुम्–समृद्ध भूमि; चुरपियुम्–और गायें; मेल् मेल् निऱैत्तु–बार-बार पंक्तियों में देकर; कुऱै इतु–यह हमारी माँग है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; इरन्तोर्क्कु ऍल्लाम्–जो याचना करते उन सभी को; कुऱैवु अऱ–मनमाने रूप से; कॊटुत्तु–देकर पिऩ्ऩर–बाद; अऱै कळल्–क्वणित पायलधारी; अरचर् तम्मै–राजाओं को; वरुक–आओ; ऍऩ–ऐसा; अरुळ–कृपा की आज्ञा देने पर; वन्तार्–आये। ४३००

उन्होंने सारे ब्राह्मणों को, रत्न, मोती, स्वर्ण, उर्वर वा समृद्ध भूमि, गायें आदि बार-बार पंक्तियों में भरकर दान किया। फिर क्वणित पायलधारी धराधिपतियों को 'आओ' कहकर बुलाया। वे भी आये। ४३००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐयनु मवर्हळ् तम्मै यहमहिळ्न् दरुळि नोक्कि
वैयहञ् जिविहै तॊङ्गन् मामणि महुडम् बॊऱ्पूण्
कॊय्युळैप् पुरवि तिणडेर् कुञ्जर माडै यिन्न
मॆय्युऱक् कॊडुत्त पिन्नऱक् कॊडुत्तनन् विडैयु मन्नो 4301

ऐयनुम्–स्वामी भी; अवर्कळ् तम्मै–उन्हें; अकम् मकिळ्नतु–प्रसन्नचित्त होकर; अरुळिन् नोक्कि–कृपा-दृष्टि डालकर; वैयकम्–भूमि; चिविकै–शिविका; तॊङ्कल्–हार; मामणि मकुटम्–किरीट; पॊन् पूण्–स्वर्णाभरण; कॊय् उळै–सँवारे अयालवाले; पुरवि–अश्व; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथ; कुञ्चरम्–कुंजर; आटै–वस्त्र; ऎन्न–आदि इन्हें; मॆय् उऱ–सच्चे स्नेह के साथ; कॊटुत्त पिन्नऱ्–देने के बाद; विटैयुम्–विदा भी; कॊटुत्तनन्–दिलायी। ४३०१

प्रभु ने उन्हें सस्नेह देखा और उन्हें भूमि, शिविकाएँ, हार, रत्न-मुकुट, स्वर्णाभरण, सँवारे अयालवाले अश्व, सुदृढ़ रथ, कुंजर, बहुमूल्य वस्त्र आदि इन वस्तुओं को सच्चे प्यार के साथ दान किया। उसके बाद विदा भी दिलायी। ४३०१

शम्बरन् तन्नै वॆन्ऱ तयरद नीन्ऱ कालत्
तुम्बर्तम् बॆरुमा नीन्द वॊळिमणिक् कडहत् तोडुम्
कॊम्बुडै मलैयुन् देरुङ् गुरहदक् कुळुवुन् दूशुम्
अम्बरत् तन्नन्दर् नीत्ता नलरिका दलनुक् कीन्दान् 4302

अम्परत्तु–सागर में; अन्नन्तर्–निद्रा; नीत्तान्–(के) त्यागी; चम्परन् तन्नै–शम्बरासुर के; वॆन्ऱ–विजेता; तयरतन्–दशरथ ने; ईन्ऱ–जब जनाया; कालत्तु–उस समय; उम्पर् तम्–देवों के; पॆरुमान्–राजा देवेंद्र द्वारा; ईन्त–दत्त; ऒळि मणि–उज्ज्वल रत्नमय; कटकत्तोटुम्–कटक के साथ; कॊम्पु उडै–दाँतों वाले; मलैयुम्–पर्वत-सम गजों; तेरुम्–रथों और; कुरकतम् कुळुवुम्–अश्ववृन्द और; तूशुम्–वस्त्र; अलरि–सूर्य के; कातलनुक्कु–पुत्र को; ईन्तान्–दिया। ४३०२

क्षीरसागर-शयन त्यागकर जो अयोध्या में अवतरित हुए थे, उन श्रीराम ने दशरथ के पुत्र के रूप में जन्म लेने के समय देवेंद्र ने जो कटक-दाँत वाले गज दिये थे उन पर्वतोपम हाथियों, रथों, अश्ववृन्दों और वस्त्रों को सूर्यसूनु को दान किया। ४३०२

अङ्गद मिलाद कॊऱ्ऱत् तण्णलु महिल मॆल्लाम्
अङ्गद नॆन्नु नाम मळ्हुऱत् तिरुत्तु मापोल्
अङ्गदङ् गन्नऱ् ऱोळाऱ् कयन्कॊडुत् तदनै यीन्दान्
अङ्गदन् पॆरुमै मण्मे लारऱिन् दऱैय हिऱ्पार् 4303

अङ्कतम्–अपयश; इलात–रहित; कॊऱ्ऱतु अण्णलुम्–विजय के स्वामी प्रभु ने भी; अकिलम्–संसार; ऎल्लाम्–घर में; अङ्कतनु–अंगद; ऎन्नुम्–का;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नामम्–नाम; अऴकु उऱ–सुन्दर रीति से; तिरुत्तुमा पोल्–सार्थक करते से; कन्नल्–इक्षु-सम; तोळाऱ्कु–कंधों वाले को; अयन्–ब्रह्मा ने; कॊटुत्ततनै–जो दिया था उस; अङ्कतम्–अंगद को; ईन्तान्–दिया; अङ्कु अतन् पॆरुमै–वहाँ उसका महत्व; मण् मेल्–पृथ्वी पर; अऱिन्तु–जानकर; अऱैय निऱ्पार्–कहने की शक्ति रखनेवाला; आर्–कौन है। ४३०३

अकलंक विजयी श्रीराम ने अंगद को इक्ष्वाकु को ब्रह्मा द्वारा दत्त अंगद को दान किया मानो उससे अंगद का नाम सार्थक बनाकर संसार भर में प्रशस्त करा रहे हों ! उस आभरण की महिमा कह सकनेवाले इस पृथ्वी में कौन मिले ? । ४३०३

पिन्नरु मवनुक् कैयन् पॆरुविलै यारत् तोडु
मन्नुनुण् तूशु मावु मदमलैक् कुळुवु मीन्दु
उन्नैनी यऱि यिन्द वुलहिऩि लॊप्पि लादाय्
मन्नुह कदिरोन् मैन्दन् तन्नोडु मरुवि यॆन्ऱान् 4304

पिन्नरुम्–फिर भी; ऐयन्–प्रभु ने; अवनुक्कु–उसे; पॆरुविलै–बड़े मूल्य के; आरत्तोटु–हार के साथ; मन्नुम्–युक्त; नुण्–महीन; तूचुम्–वस्त्र; मावुम्–अश्व; मत मलै–मत्त पर्वतों (गजों) के; कुळुवुम्–झुण्डों को; ईन्तु–देकर; इन्त–इस; उलकिऩिल्–भूमि पर; उन्नै अऱि–अपने को छोड़कर; ऒप्पु इलाताय्–अपनी सानी न रखनेवाले; नी–तुम; कतिरोन्–किरणमाली के; मैन्तन् तन्नोटु–पुत्र के साथ; मरुवि–मेल करके; मन्नुक–रहो; ऎन्ऱान्–कहा। ४३०४

और भी प्रभु ने उसे बहुमूल्य हार, सुंदर सूक्ष्म कारीगरी से युक्त वस्त्र, अश्व और हाथियों के दल आदि दिये और कहा कि स्वोपम वीर ! तुम अर्कपुत्र के साथ मेल बनाकर रहो। ४३०४

मारुदि तन्नै यैयन् महिळ्न्दिऩि दरुळि नोक्कि
आरुद विडुदऱ् कॊत्तार् नीयला लन्ऱु शॆय्द
पेरुद विक्कि यान्शॆय् शॆयल्पिऱि दिल्लैप् पैम्बूण्
पोरुद वियतिण् तोळाय् पॊरुन्दुऱप् पुल्लु हॆन्ऱान् 4305

ऐयन्–प्रभु; मारुति तन्नै–मारुति को; मकिळ्नतु–संतोष और; अरुळिन्–कृपा करके; इनितु नोक्कि–मधुर दृष्टि से देखकर; उतविटुतऱ्कु–सहायता देने में तुम्हारी; ऒत्तार्–समानता करनेवाले; नी अलाल्–तुम्हारे सिवा; आर्–कौन है; अन्ऱु चॆय्त–उस दिन कृत; पेरुतविक्कु–बड़ी सहायता का; यान् चॆय्–मैं (प्रतिकार) करूँ; चॆयल्–ऐसा कार्य; पिऱितु इल्लै–दूसरा नहीं; पैम् पूण्–स्वर्णाभरण-भूषित; पोर् उतविय–युद्ध सहायक; तिण् तोळाय्–सुदृढ़ कंधों वाले; पॊरुन्तुऱ–कसकर; पुल्लुक–आलिंगन कर लो; ऎन्ऱान्–कहा। ४३०५

प्रभु ने मारुति पर संतोष और कृपा की दृष्टि डाली। कहा कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सहायता करने में तुम्हारी, तुमको छोड़कर बराबरी करनेवाले कोई नहीं ! ऐसे बेजोड़ वीर ! उस दिन तुमने जो उपकार किया उसके प्रतीकार में कुछ करके उऋण हो जाऊँ, ऐसा कोई कार्य नहीं। तुम गाढ़ालिंगन कर लो। ४३०५

अॅन्ऱलुम् वणङ्गि नाणि वाय्पुदैत् तिलङ्गु तानै
मुन्ऱलै यॊदुक्कि निन्ऱु मॊय्म्बनै मुळुदु नोक्किप्
पॊन्ऱिणि वयिरप् पैम्बू णारमुम् बुनैमॆन् ऱूशुम्
वन्ऱिऱ् कयमु मावुम् वळङ्गिनन् वयङ्गु शीरान् 4306

वयङ्कु–ज्वलंत; चीरान्–कीर्तिवाले के; अन्ऱलुम्–यों कहते ही; नाणि–शरमाकर; वणङ्कि–नमस्कार करके; वाय् पुतैत्तु–मुख को ढँककर; इलङ्कु–विद्यमान; तानै–सेना के; मुन् तलै–हरावल में; ऒतुक्किन् निन्ऱु–हटकर जो खड़ा रहा; मॊय्म्पनै–उस बलवान को; मुळुतुम् नोककि–पूर्ण रूप से देखकर; पॊन् तिणि–स्वर्णमयी; वयिरम् पैम् पूण्–हीरा का श्रेष्ठ आभरण; आरम्–हार; पुनै–धार्य; मॆल्–महीन; तूचुम्–वस्त्र और; वल् तिऱल्–सशक्त; कयमुम्–गज और; मावुम्–अश्व; वळङ्किनन्–दिये। ४३०६

श्रीराम के ऐसा कहते ही हनुमान लजाते हुए सिर झुकाकर सेना के अग्रभाग में किसी कोने में दूर खड़ा हो गया। अपने मुख पर उँगलियों को (विनय-मुद्रा में) रखकर खड़े रहे उस पर प्रभु ने पूर्ण रूप से कृपा-दृष्टि डाली और स्वर्ण-रत्न-हीरे के आभरण, हार, धार्य वस्त्र और बलवान हाथी और अश्व दिये। ४३०६

पूमलर्त् तविशै नीत्तुप् पॊन्मदिन् मिदिलै पूत्त
तेमॊऴित् तिरुवै यॆयन् तिरुवरुण् मुहन्दु नोक्कप्
पामऱैक् किळत्ति यीन्द परुमुत्त मालै कैक्कॊण्
डेमुऱक् कॊडुत्ता ळन्ना ळिडरऱिन् दुदवि नाऱ्के 4307

पू मलर्–छविमय कमल के; तविचै–आसन को; नीत्तु–छोड़कर; पॊन् मतिल्–स्वर्णप्राचीर वाली; मितिलै पूत्त–मिथिला में उदित; तेम् मॊऴि–मधु-मधुर वाणी; तिरुवै–श्री (सीता) को (एक मुक्तामाला देकर); ऐयन्–प्रभु ने; तिरुवरुण्–कृपा को; मुकन्तु–लेकर; नोक्क–देखने पर; पा मऱै किळत्ति–वेदभाषित सरस्वती के; ईन्त–दिये गये; परु मुत्तम्–स्थूल मोतियों के; मालै–हार को; कै कॊण्टु–हाथ में लेकर; अत्ताळ्–उन्होंने अपना; इटम्–मौका; अऱिन्तु–समझकर; उतवित्तार्क्कु–जिसने सहायता की उसे; एम्–आनंद; उऱ–के साथ; कॊटुत्ताळ्–दे दिया। ४३०७

श्रीराम ने कमलवास त्यागकर जो मधुरवाणी भगवती लक्ष्मी स्वर्ण-प्राचीरों वाली मिथिलावासिनी हो गयी थीं, उनके हाथ में एक मुक्तामाला दी और एक सार्थक दृष्टि डाली। वह मुक्तामाला वेदभाषित सरस्वती

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

से दी गयी थी। सीताजी ने उस ऐन मौक़े पर जिसने उनकी सहायता की थी, उस हनुमान के हाथ में दे दिया। ४३०७

चन्दिरऱ् कुवमै शान्ऱ् तारहैक् कुऴुवै वॆन्ऱ्
इन्दिरऱ् केय्न्द दाहु मॆन्नुमुत् तारत् तोडु
कन्दडु कळिऱु वाशि तूशणि कलन्गळ् मऱ्ऱुम्
उन्दित नॆण्गिन् वेन्दऱ् कुलहमुन् दुदवि नाने 4308

तारकै–नक्षत्रों के; कुऴुवै–समूहों को; वॆन्ऱ्–जिसने हराया था; चन्तिरऱ्कु–चन्द्र को; उवमै–उपमा; चान्ऱ्–जो बन सके; इन्तिरऱ्कु–इन्द्र को; एय्न्ततु आकुम्–जो योग्य हो सके; ऍन्नुम्–ऐसे; मुत्तु आरत्तोटु–मुक्ताहार के साथ; कन्तु–खूंटा; अटु–तोड़नेवाले; कळिऱु–हाथी; वाचि–अश्व; तूचु–वस्त्र; अणिकलन्कळ्–आभरण; मऱ्ऱुम्–और अन्य चीज़ों को; ऍण्कित्–रीछों के; वेन्तऱ्कु–राजा को; उलकमुम्–प्रपंच को; उतविनान्–जिन्होंने रचा था, उन श्रीराम ने; उन्तितनन्–दिया। ४३०८

फिर त्रिलोकपिता श्रीराम ने रीछों के राजा जाम्बबान को निम्नलिखित उपहार दिये— नक्षत्रप्रकाशहारी, इंद्रयोग्य मुक्तामाला, खूंटे तोड़ सकनेवाले गज, वाजी, वस्त्र, आभरण और अन्य उपहार। ४३०८

नवमणिक् काऴु मुत्तु मालैयु नलङ्गॊळ् तूशुम्
उवमैमऱ् ऱिलाद पॊऱ्पू णुलप्पिल पिऱवु मॊण्डार्क्
कवनवॆम् बरियुम् वेहक् कदमलैक् करशुङ् गादल्
पवननुक् किनिय नण्बन् पयन्दॆडुत् तवनुक् कीन्दान् 4309

नवमणि–नव रत्नों से; काऴम्–निर्मित; मुत्तु मालैयुम्–मोती-माला; नलम् कॊळ्–मनोहर; तूचुम्–वस्त्र; मऱ्ऱु–और; उवमै–उपमा; इलात–जिसकी न हो; पॊन् पूण्–ऐसे स्वर्णाभरण; उलप्पु इल–अक्षय; पिऱवुम्–अन्य उपहार; ऒळ्–उज्ज्वल; तार्–हार से अलंकृत; कवनम्–तेज़ चलनेवाले; वॆम् परियुम्–क्रूर अश्व; वेकम्–तेज; कतम् मलैक्कु–क्रोधी गजों के; अरचुम्–राजा को; पवनन्–पवन के; इनिय नण्पन्–प्यारे सखा (अग्नि) के; पयन्तु–जाये; ऍटुत्तवनुक्कु–पुत्र को; कातल्–प्यारे नील को; ईन्तान्–दिया। ४३०९

फिर उन्होंने नवरत्नयुक्त मुक्तामाला, सुन्दर वस्त्र, अनुपम स्वर्णाभरण अक्षय अन्य उपहार, उज्ज्वल हारालंकृत तीव्रगामी भयंकर घोड़े, क्रोधी गजराज आदि उपहार, पवन-सखा अग्नि के पुत्र प्यारे (नील) को दिये। ४३०९

पदवलिच् चदङ्गैप् पैन्दार्प् पाय्परि पणैत्तिण् कोट्टु
मदवलिच् चॆलम् बॊऱ्पूण् मामणिक् कोवै मऱ्ऱुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उदवलिऱ् ऱहैव वन्ऱि यिल्लन वुळ्ळ वॅल्लाम्
शदवलि तनक्कुत् तन्दान् शदुमुहत् तवनैत् तन्दान् 4310

चतु मुकत्तवनै–चतुर्मुख के; तन्तान्–जनक (श्रीराम) ने; पतम्–चरणों में; वलि–वल्लरी-सम; चतङ्कै–घुंघुरुओं-सहित; पॅ तार्–स्वर्णहार से अलंकृत; पाय् परि–फाँद चलनेवाले अश्व; पर्ण–स्थूल; तिण्–सुदृढ़; कोटु–दाँतों वाले; मतम् वलि–मत्त बली; चॅलम्–शैल-सम हाथियों को; पॉन् पूण्–स्वर्ण-आभरण; मामणि–श्रेष्ठ रत्नों के; कोवै–हारों को और; मऱुम्–और; उतवलिल्–देने में; तकैव–देने के; अऱ्ऱि–सिवा; इल्लन–नहीं है ऐसे; उळ्ळ–जो रहे; ऍल्लाम्–उन सारे पदार्थों को; चतवलि ततक्कु–शतबली को; तन्तान्–दिया। ४३१०

चतुर्मुखजनक श्रीराम ने वल्ली-सम घुँघुरुओं से युक्त स्वर्ण-हार से विभूषित और फाँद चलनेवाले घोड़े, स्थूल सुदृढ़ दाँतों वाले हाथी, स्वर्णाभरण, रत्नहार और ऐसे अन्य उपहार, जिनके संबन्ध में यह नहीं कहा जा सकता कि ये देने योग्य नहीं, वे सारे (उपहार) शतबली को दिये। ४३१०

पेशरि दॊरुवर्क् केयुम् बॆरुयिलै यिदनुक् कीदुक्
कोशरि मिलदॆन् ऱॆण्णु मॊळिमणिप् पूणुन् दूशुम्
मूशरिक् कुवमै मुम्मै मुम्मदक् कळिऱु मावुम्
केशरि तनक्कुत् तन्दान् किळर्मणि मुळवुत् तोळान् 4311

किळर्–भासमान; मणि–रत्नाभरणधारी; मुळवु तोळान्–'मर्दल'-सम कंधों वाले; इतनुक्कु–इसके लिए; एयुम्–जो योग्य होगा; पॆरु–वह बड़ा; विलै–मूल्य; ऒरुवर्क्केयुम्–किसी के लिए भी; पेचरितु–कहना कठिन है; ईतुक्को–इसका; चरि इलतु–बराबरी का नहीं; ऍनऱु–ऐसा; ऍण्णुम्–मान्य; ऒळि मणि–उज्ज्वल रत्नों के; पूणुम्–आभरण; तूशुम्–वस्त्र; मूशु–फैलती; अरि–वडबा के; मुम्मै–तिगुने (मान्य); मुम्मतम्–त्रिमद वाले; कळिऱुम्–हाथियों को; मावुम्–और अश्वों को; केचरि तनक्कु–केसरी को; तन्तान्–दिया। ४३११

जाज्वल्यमान नवरत्नाभरणों से भूषित भुजावाले श्रीराम ने केसरी को ऐसे ज्वलंत रत्नाभरण दिये, जिनके योग्य बड़े मोल किसी से भी निर्धारित नहीं हो सकते थे और जिनके समान कोई दूसरी वस्तु नहीं थी। और वडबा के तिगुने बलवान तथा सर्वत्रग घोड़े और हाथी दिये। ४३११

वळनणि कलनुन् दूशु मामदक् कळिऱु मावुम्
नळनॊडु कुमुदन् तार नवैयऱु पनशन् मऱ्ऱोर्
उळमहिऴ् वॅय्दुम् वण्ण मुलप्पिल पिऱवु मीन्दान्
कळनमर् कमल वेलिक् कोशलक् काव लोनै 4312

कळन्–धान पीटने के मैदान; अमर्–युक्त; कमलम् वेलि–कमल के बाड़ों से पूर्ण; कोचलम् कावलोत्–कोसल के अधिपति ने; वळन्–समृद्ध; अणिकलनुम्–आभरण और; तूशुम्–वस्त्र; मा मतम्–अधिक मद से युक्त; कळिऱुम्–हाथी;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मावुम्–और अश्व; उलप्पु इल–अक्षय; पिऱवुम्–अन्य, सबको; नळनॊटु–नल और; कुमुतन् तारन्–कुमुद, तार और; नवै अऱ–निर्दोष; पनचन्–पनस और; मऱ्ऱोर्–अन्यों को; उळम्–मन; मकिऴ्वु–खुश; ऍय्तुम्–हो जाय; वण्णम्–ऐसा; ईन्तान्–दे दिया। ४३१२

धान पीटने के मैदान, कमलवन आदि से भरे कोसल देश के अधिपति श्रीराम ने बहुमूल्य आभूषण, वस्त्र, बहुमदमत्त हाथी, अश्व और अक्षय अनेक उपहार नल, कुमुद, तार, निर्दोष पनस आदि को देकर उनके मन को खूब तृप्त कर दिया। ४३१२

अव्वहै अऱुपत् तेऴु कोडिया मरियिन् वेन्दर्क्
कॆव्वहैत् तिऱन् नल्हि यिनियन पिऱवुङ् गूऱिप्
पव्वमॊत् तुलहिऱ् पल्हु मॆऴुपदु वॆळ्ळम् बार्मेल्
कव्वैयऱ् ऱिनिदु वाऴ्क् कॊडुत्तन् कडैक्क णोक्कम् 4313

अव्वकै–उस भाँति; अऱुपत्तु एऴु–सड़सठ; कोटियाम्–करोड़ जो थे; अरियिन्–उन वानरों के; वेन्तर्क्कु–नायकों को; ऍव्वकै–विविध; तिऱन्तम्–उपहार-पदार्थों को; नल्कि–देकर; इनियन्त–मधुर वचन; पिऱवुम्–अनेक; कूऱि–कहकर; पव्वम्–समुद्र; ऒत्तु–के समान; उलकिल्–संसार में; पल्कुम्–भरे-से रहनेवाले; ऍऴुपतु–सत्तर; वॆळ्ळम्–'वॆळ्ळम्' वानर-सेना को; पार् मेल्–भूमि में; कव्वै–दुःख से; अऱ्ऱ–रहित; इनितु वाऴ–सुख से रहें, तदर्थ; कटै कण्–आँखों के कोर से; नोक्कम्–कृपा की दृष्टि; कॊटुत्तनन्–डाली। ४३१३

इस भाँति सड़सठ हज़ार करोड़ वानर-यूथपों को भाँति-भाँति के उपहार देकर मधुर वचनों से खुश किया। फिर समुद्र-सम संसार में फैले रहनेवाले सत्तर वॆळ्ळम् वानरों पर कृपाकटाक्ष फेरी कि वे इस भूमि में विना किसी बाधा के, सुख से, रहें। ४३१३

मिन्नैयेर् मवुलिच् चॆङ्गण् वीडणप् पुलवर् कोमान्
ऱन्नैये यिनिदु नोक्किच् चराशरञ् जूऴ्न्द शाल्बिन्
निन्नैये यॊप्पार् निन्नै यलविल रुळरे लैय
पॊन्नैये यिरुम्बु नेरु मायिनुम् बॊरुवन् ऱॆन्ऱान् 4314

मिन्नै एर्–विद्युत्-संकाश; मवुलि चॆ कण्–लाल मुकुटधारी व लाल आँखों वाले; वीटणन्–विभीषण; पुलवन्–ज्ञानियों में; कोमान् तन्नैये–राजा को; इनितु नोक्कि–मधुरभाव से देखकर; चराचरम्–चराचर को; चऴ्न्त–आवृत; चाल्पिन्–इस सृष्टि में; निन्नै–तुम्हारी; ऒप्पार्–बराबरी करनेवाला; निन्नै–तुम्हें; अलतु–छोड़कर; इलर्–है कोई; उळरेल्–तो; ऐय–तात; पॊन्नैये–स्वर्ण को; इरुम्पु–लोहा; नेरुम्–समता करेगा; आयिनुम्–तो भी; पॊरु अऱ्ऱ–समान नहीं; ऍन्ऱान्–बोले। ४३१४

विद्युत्संकाश मुकुटधारी, रक्तनेत्र विभीषण को निहारकर श्रीराम ने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहा। चराचरसंकुल इस सृष्टि में तुम्हारे समान तुमको छोड़कर कोई नहीं होगा। होगा तो भी स्वर्ण की समता करने का व्यर्थ प्रयास करनेवाले लोहे के समान होगा। तुम्हारी पूर्ण रूप से बराबरी करनेवाला कोई होगा ही नहीं। ४३१४

अॅन्ऱुरैत् तमर रीन्द वॅरिमणिक् कडहत् तोडु
वन्ऱिऱ्ऱु कळिऱुन् देरुम् वाशियु मणिपॉऱ् पूणुम्
पॉन्ऱिणि तूशुम् बाशक् कलवैयुम् बुदुमॅन् शान्दुम्
नन्ऱुऱु ववनुक् कीन्दान् नाहणॅत् तुयिलॅत् तीर्न्दान् 4315

नाकु अणॅ–शेषशयन; तुयिलॅ–निद्रा; तीर्न्तान्–जिन्होंने छोड़ा, उन्होंने; अॅन्ऱु उरॅत्तु–ऐसा कहकर; अमरर् ईन्त–देवों द्वारा दत्त; अॅरि–ज्वलन्त; मणि कटकत्तोडु–रत्नकटक और; वल् तिऱल्–बहुत ही बलवान; कळिऱुम्–गज और; तेरुम्–रथ; वाचियुम्–अश्व; मणि पॉन्–रत्न, स्वर्ण; पूणुम्–आभरण; पॉन् तिणि–स्वर्ण-खचित; तूचुम्–वस्त्र; वाचम्–सुवासित; कलवैयुम्–लेप; पुतु–नवीन; मल्–मृदु; चान्तुम्–चंदन; नन्ऱु–श्रेष्ठ; उऱवु–रिश्ते के; अवनुक्कु–उसे; ईन्तान्–दिया। ४३१५

ऐसा कहकर शेषशयन-निद्रा त्यागकर जो अयोध्या में अवतरित हुए थे, उन्होंने देवों द्वारा दिया गया रत्नकटक और कठोर बलवान हाथी, रथ, वाजी, रत्नखचित आभरण, स्वर्ण-वस्त्र, सुवासित लेप, नवीन मृदु चंदन आदि श्रेष्ठ भाई के रिश्ते के उसे दिये। ४३१५

शिरुङ्गपे रियदॅन् ऱोदुऱ् जॅळुनहर्क् किऱैये नोक्कि
मरुङ्गिनि युरैप्प दॅन्नो मऱुवऱु तुणैवऱ् कॅन्नाक्
करुङ्गैमाक् कळिऱु मावुङ् गनहमुन् दूशुम् बूणुम्
ऑरुङ्गुऱ वुदविप् पिन्न रुदविन्नन् विडैयु मन्नो 4316

मरुङ्कु–पास में रहे; चिरुङ्क पेरियतु–श्रृंगवेरपुर; अॅन्ऱु–ऐसा; ओतुम्–कहा जो जाता है; चॅळु नकर्क्कु–उस समृद्ध नगर के; इऱैयै नोक्कि–राजा को देखकर; मऱु अऱु–अनिंद्य; तुणैवऱ्कु–साथी तुम्हें; इति–अब; उरैप्पतु–कहने के लिए; अॅन्नो–क्या है; अॅन्ना–कहकर; करु–बड़े; कै मा–सूंड़ों वाले; करु–सबल; कळिऱुम्–हाथी और; मावुम्–अश्व; कनकमुम्–कनक और; तूचुम्–वस्त्र; पूणुम्–आभरण; ऑरुङ्कु–एक साथ; उऱ–मिलाकर; उतवि–देकर; पिन्नर्–बाद; विटैयुम्–विदा भी; उतविनन्–दिलायी। ४३१६

समृद्ध श्रृंगवेरपुर के अधिपति गुह से श्रीराम ने कहा कि अकलंक सखा, तुमसे क्या कहूँ? फिर उसे बड़े-बड़े हाथी, अश्व, स्वर्ण, कौशेय-वस्त्र, आभरण आदि एक साथ खूब दिये और विदा भी दिलायी। ४३१६

अनुमनै वालि शेयैच् चाम्बनै यरुक्कन् तन्द
कनैहळऱ् कालि नानैक् करुणैयङ् गडलु नोक्कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निऩैवदऱ् करिदु नुम्मैप् पिरिहॆऩ्ऱु ऩीविर् वैप्पुम्
अॆऩददु कावऱ् कॆऩ्ऱु ऩेवलि ऩेहु मॆऩ्ऱाऩ् 4317

अनुमऩै–हनुमान को; वालि चेयै–वालीपुत्र को; चाम्पऩै–जाम्बवान को; अरुक्कऩ् तऩ्ऩ–सूर्य-जनित; कऩै कळल्–स्वरित पायलधारी; कालिऩाऩै–चरणों वाले सुग्रीव को; करुणै–दया के; अम्–सुन्दर; कटलुम्–सागर ने भी; नोक्कि–देखकर; नुम्मै–तुमसे; पिरिक–विदा हों; अॆऩ्ऱल्–ऐसा कहना; निऩैवतऱ्कु–सोचना भी; अरितु–संकट देता है; नीविर्–तुम लोगों का; वैप्पुम्–स्थान भी; कावऱ्कु–पालना; अॆऩतु–मेरा ही; अतु–काम है; अॆऩ्ऱऩ्–मेरी; एवलिऩ्–आज्ञा से; एकुम्–चलो; अॆऩ्ऱाऩ्–कहा श्रीराम ने। ४३१७

फिर करुणासागर श्रीराम ने हनुमान, वालीसुत, जाम्बवान, अर्कपुत्र वीरकटकचरण सुग्रीव आदि की ओर देखकर कहा कि तुमसे 'विदा लो' कहना सोचने के लिए भी कठिन लगता है। पर तुम्हारे देश भी मेरे पालनार्ह हैं ! इसलिए मेरी आज्ञा मानकर तुम लोग अपने-अपने स्थान चले जाओ। ४३१७

इलङ्गैवेऩ् दऱ्कु मिव्वा ऱिऩियऩ यावुङ् गूऱि
अलङ्गल्वेऩ् मदुहै यण्णल् विडैहॊडुत् तरुळ लोडुम्
नलङ्गाळ्पे रुणर्विऩ् मिक्कोर् नामुऱु नॆञ्जर् पिऩ्ऩर्क्
कलङ्गल रेवल् शॆय्दल् कडऩैऩक् करुदिच् चूळ्ऩ्दार् 4318

इलङ्कै वेऩ्तऱ्कुम्–लंकेश से भी; इव्वाऱु–इस भाँति; इऩियऩ–मधुर; यावुम्–वचन सब; कूऱि–कहकर; अलङ्कल्–विजयमाला के; वेल्–मालाधारी; मतुकै–महानुभाव; अण्णल्–प्रभु के; विटै कॊटुत्तु–विदा देकर; अरुळलोटुम्–कृपा कहने पर; नलम् कॊळ्–श्रेष्ठ; पेर् उणर्विऩ्–बड़ी बुद्धि में; मिक्कोर्–बढ़े सुग्रीव, गुह, विभीषण आदि; नाम् उऱु–भयमिलित; ऩॆञ्चर्–मनवाले; पिऩ्ऩर्–बाद; कलङ्ककलर्–अधीरता छोड़कर; एवल् चय्तल्–आज्ञा-पालन करना; कटऩ्–कर्तव्य है; अॆऩ–ऐसा; करुति–सोचकर; चूळ्ऩ्ऩार्–निर्धारण किया। ४३१८

मालाभूषित मालाधारी वीर तथा महान श्रीराम ने विभीषण से भी ऐसे मधुर विदाई के वचन कहे। श्रेष्ठ ज्ञानी वे लोग विदाई से घबड़ाये पर धीरे-धीरे धीर हुए और निश्चय किया कि आज्ञा मानना हमारा कर्तव्य है। ४३१८

परदऩै यिळैय कोवैच् चऩ्ऩुरुक् किऩऩैप् पण्बार्
विरदमा दवऩैत् तायर् मूवरै मिदिलेप् पॊऩ्ऩै
वरदऩै वलङ्गॊण् डेत्ति वणङ्गिऩर् विडैयुङ् गॊण्डे
शरदमा ऩॆऱियुम् वल्लोर् तऩ्ऩम पदियैच् चार्ऩ्दार् 4319

चरतम्–शाश्वत; मा ऩॆऱियुम्–श्रेष्ठ धर्ममार्ग में; वल्लोर्–सुदृढ़ उन्होंने;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

परतनै–भरत को; इळैय कोवै–लघुराज को; चत्तुरुक्कितनै–शत्रुघ्न को; पण्पु आर्–गुणपूर्ण; विरतम्–व्रती; मातवनै–महातपस्वी को; मूवर् तायरै–तीनों जननियों को; मिथिलैप् पॊत्तै–मिथिला की देवी; वरतनै–वरद श्रीराम को; वलम् कॊण्टु–परिक्रमा कर; एत्ति–स्तुति करके; वणङ्कितर्–नमस्कार किया; विटैयुम्–विदा भी; कॊण्टु–लेकर; तम् तम्–अपने-अपने; पतियै–स्थान को; चार्न्तार्–प्रस्थान कर गये। ४३१९

शाश्वत सन्मार्गगामी वे लोग भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, गुणपूर्ण व्रती तथा महातपस्वी वसिष्ठ, तीनों राजमाताएँ; मिथिला की देवी और वरद श्रीराम की परिक्रमा, वंदना और विनती करके विदा लेकर अपने-अपने स्थान को प्रस्थान कर गये। ४३१९

कुहनैत्तन् पदियि नुय्त्तुक् कुन्रिनै वलञ्जॆय् तेरोन्
महनैत्तन् पुरत्तिल् विट्टु वाळैयिर् ऱरक्कर् शूळक्
कहनत्तिन् मिशैये येहिक् कनैहड लिलङ्गै पुक्कान्
अहनुऱ्ऱ काद लण्ण ललङ्गल् वीडणन्शॆन् ऱन्ऱे 4320

अकन् उऱ्ऱ–मन में स्थिर; कातल् अण्णल्–प्रेम रखनेवाले; अलङ्कल्–विजयमालाधारी; वीटणन्–विभीषण; कुकनै–गुह को; तन् पतियित्–उसके स्थान में; उय्त्तु–छोड़कर; कुन्रिनै–मेरु को; वलम् चॆय्तेरोन्–परिक्रमा करनेवाले सूर्य के; मकनै–पुत्र को; तन्–उसके; पुरत्तिल्–नगर में; विट्टु–छोड़कर; वाळ् ऍयिऱ्–तलवार-सम दाँतों के; अरक्कर् चूळ–राक्षसों से आवृत; ककनत्तिन्–आकाश; मिचैये–मार्ग में ऊपर; एकि–जाकर; कनै कटल्–गरजते सागर-मध्य; इलङ्कै–लंका में; अन्ऱे–उसी दिन; चॆन्ऱ–जा पहुँचा। ४३२०

आंतरिक प्रीति में बढ़ा तथा महिमावान और विजयमालाविभूषित विभीषण गुह को उसके स्थान में और मेरु की परिक्रमा करनेवाले सूर्य के पुत्र सुग्रीव को उसके स्थान में छोड़ देकर गगनमार्ग से गया और गर्जनशील सागर से आवृत लंका पहुँचा। ४३२०

ऐयनु मवरै नीक्कि यरुळ्शॆऱि तुणैव रोडुम्
वैयह मुळ्दुज् जॆङ्गोन् मनुनॆऱि मुऱैयिर् चॆल्लच्
चॆय्यमा महळु मऱ्ऱच् चॆहतल महळुज् जऱ्ऱुम्
नैयुमा ऱिन्ऱिक् कात्ता नानिलप् पॊऱैहळ् तीर्तते 4321

ऐयनुम्–प्रभु ने भी; अवरै नीक्कि–उन्हें आज्ञा देकर; अरुळ् चॆऱि–अपनी कृपा के पूर्ण पात्र; तुणैवरोटुम्–साथी, भाइयों के साथ; वैयकम्–संसार; मुळुवतुम्–भर में; चॆङ्कोल्–उत्तम राजदण्ड; मनुनॆऱि–मनुधर्म के अनुसार; मुऱैयिल्–उचित क्रम में; चॆल्ल–चलाते हुए; चॆय्य–सौभाग्यदायिनी; मा मकळुम्–भगवती लक्ष्मी; मऱ्ऱुम्–और; अ–वे; चॆकतलम् मा मकळुम्–जगतल की ईश्वरी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भूदेवी; नॆंयुम् आऱ-कष्ट के हेतु; इऩ्ऱि-विना ही; पॊऱैकळ्-भार का; तीर्त्तु-निवारण करके; कात्तान्-पालन किया। ४३२१

प्रभु श्रीराम उन्हें विदा देकर अपने पूर्ण प्रेम के पात्र भाई साथियों के साथ भू भर में राजदंड मनुनीति के अनुसार चलाने लगे। उनके शासन में न सौभाग्यदायिनी लक्ष्मी को कोई शिकायत रही; न जगतीतल की ईश्वरी भूमिदेवी को कुछ दुःख करने का संदर्भ आया। भूभार-निवारण करते हुए उन्होंने राज्य किया। ४३२१

उम्बरो डिम्बर् काऱु मुलहमो रेऴु मेऴुम्
ऍम्बॆरु मानॆन् ऱेत्ति यिऱैञ्जिनिन् ऱेवल् शॆय्यत्
तम्बिय रोडुन् द्दानुन् दरुममुन् दरणि कात्तान्
अम्बरत् तनन्दर् नीङ्गि ययोत्तियिल् वन्द वळ्ळल् 4322

अम् परत्तु—अंबर (क्षीरसागर) में; अनन्तर्-निद्रा; नीङ्कि-त्यागकर; अयोत्तियिल्-अयोध्या में जो; वन्त-आये थे; वळ्ळल्-उन उदार प्रभ ने; उम्परोटु-ऊपर के लोक से; इम्पर्-इस लोक; काऱुम्—तक; उलकम्—लोक; ओर् एऴुम् एऴुम्-सात और सात चौदहों भुवनों के; ऍम् पॆरुमान्-हमारे प्रभु; ऍन्ऱु एत्ति-कहकर स्तुति कर; इऱैञ्चि निन्ऱु-विनत रहकर; एवल् चॆय्य-सेवा करते; तम्पियरोटुम् तानुम्-भाई के साथ, खुद और; तरुममुम्-धर्म के साथ; तरणि-भूमि का; कात्तान्-पालन किया। ४३२२

अंबर के क्षीरसागर में अपना शयन और अपनी निद्रा त्यागकर जो अयोध्या में अवतरित हुए थे, उन उदार श्रीमान् श्रीराम ने ऊपर से नीचे तक के चौदहों भुवनों का अपने भाइयों के साथ रहकर पालन किया। धरणी के साथ धर्म का भी पालन हुआ। और सारे लोकवासी हमारे प्रभु कहकर उनकी वंदना करते, स्तुति करते और उनकी सेवा करते रहे। ४३२२

फलश्रुति

इरावणन् तन्नै वीट्टि यिरामनाय् वन्दु तोन्ऱि
तरादल मुऴुदुङ् गात्तुत् तम्बियुन् दानु माहप्
पराबर माहि निन्ऱ पण्बिनैप् पहरु वार्हळ्
नरापदि याहिप् पिन्नु नमनैयुम् वॆल्लु वारे 4323

परापरम्-परात्पर पदार्थ; इरामनाय्-श्रीराम के रूप में; वन्तु-अवतार ले आकर; तोन्ऱि—प्रकट रहकर; इरावणन् तन्नै-रावण को; वीट्टि-मारकर; तम्पियुम् तानुम् आक-भाई और खुद; तरातलम्-धरातल; मऴुतुम्-सारा; कात्तु-पालन करके; आकि निन्ऱ-इस भाँति जो रहे; पण्पिनै-उस चरित्र को; पकरुवार्कळ्-कहनेवाले; नरापति-नराधिपति; आकि-बनकर; पिन्नुम्-फिर; नमनैयुम्-यम को भी; वॆल्लुवारे-जीत लेंगे। ४३२३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

परात्पर पदार्थ वह आदिपुरुष श्रीराम के रूप में प्रगट हुआ। उन्होंने रावण का संहार करके भाई और खुद मिलकर धरातल सारा रक्षित किया। ऐसा जो रहे उनके गुणगण-वर्णन करते उनके चरित्रगान करनेवाले लोग नराधिपति बनेंगे और फिर यम पर भी विजय पा जायँगे। ४३२३

युद्धकाण्ड (उत्तरार्ध) समाप्त ॥ कम्ब रामायण संपूर्ण ॥

॥ जय श्रीरामचरणों की ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ।।'

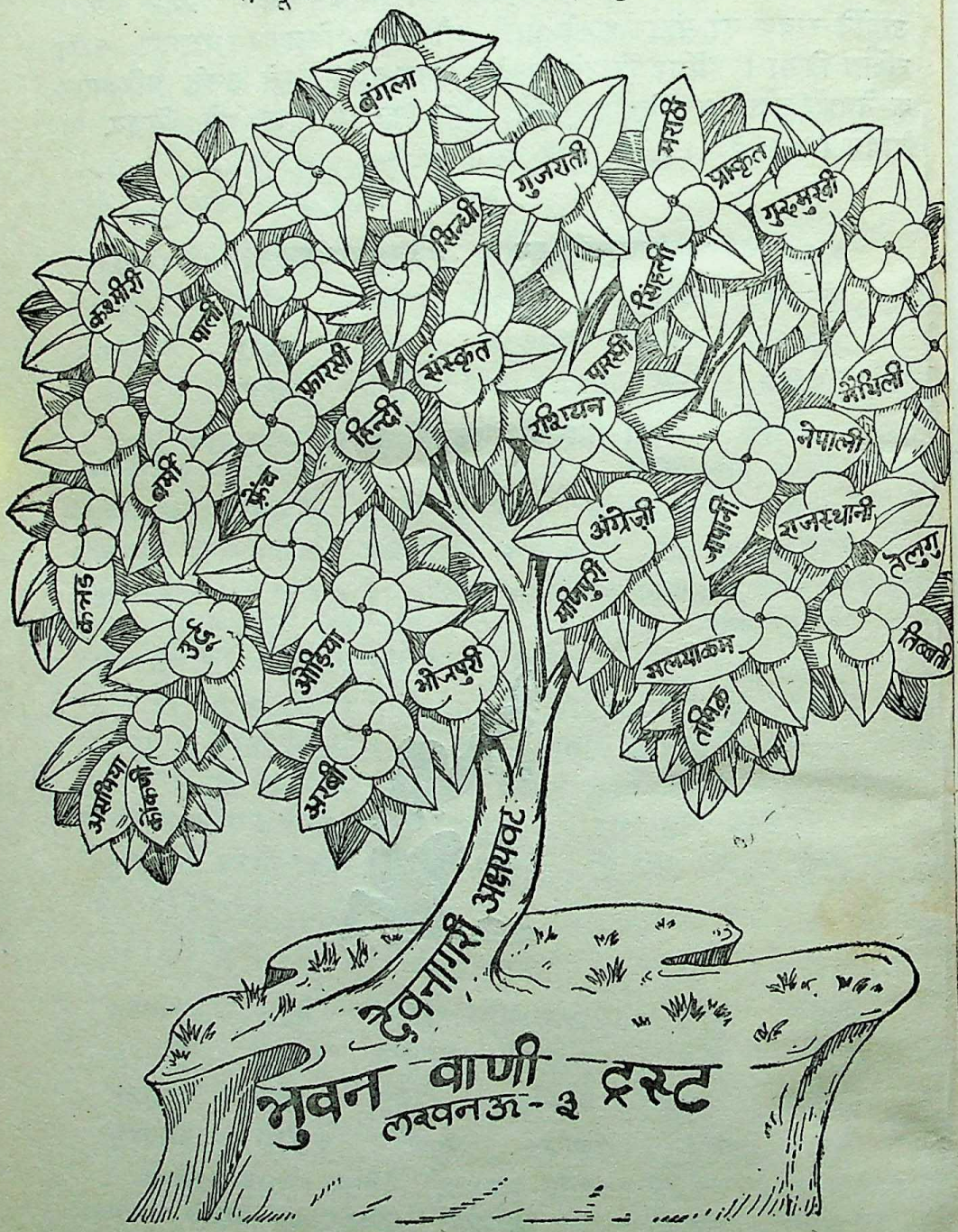

प्रतिष्ठाता— पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ताज़ी विज्ञप्ति

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थः—

१ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६० मूल्य ६०·००

२ ,, प्रेमानन्द रसामृत—
ना० लिप्य० हिन्दी अनुवाद पृ० संख्या ४९६ मूल्य ३५·००

३ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत) १५वीं शती हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ०सं० ७५२ मू० ४०·००

४ ,, —महाभारत-एळुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू०६०·००

५ बँगला— कृत्तिवास रामायण (पाँचकाण्ड)—१५वीं शती।
हिन्दी पद्या० सहित नागरी लिप्य० पृ० ६२४ मू० २५·००

६ ,, कृत्तिवास लंकाकाण्ड— ,, गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० २५·००

७ ,, ,, उत्तरकाण्ड ,, ,, मूल्य २५·००

८ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ०४८९ मू०२०·००

९ ,, लल्द्यद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ०१२० ,, १०·००

१० राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल पदमभगत कृत। पृ० ३०० मू० १५·००

११ तमिळ— तिरुक्कुरळ्-तिरुवळ्ळुवर कृत। २००० वर्ष से अधिक प्राचीन; नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ०३५२ मू०२०·००

१२ ,, कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ०६५२ मूल्य ४०·००

१३ ,, ,, अयोध्या-अरण्य पृष्ठ १०२४ मूल्य ७०·००

१४ ,, ,, किष्किन्धा-सुन्दर ,, १०१६ मूल्य ७०·००

१५ ,, ,, युद्धकाण्ड पूर्वार्ध ,, १०१६ मूल्य ७०·००

१६ ,, ,, ,, उत्तरार्ध ,, ८४० मूल्य ७०·००

१७ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराणं, अभिनव पम्प विरचित (जैन-मतानुसार रामचरित्र ११वीं शती) पृ० ६९० मूल्य ४०·००

१८ तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ४०० मूल्य २०·००

१९ ,, रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) अनु. पृ. १३३५ मू० ६०·००

२० ,, श्री पोतन्न महाभागवतमु १-४ स्कन्धपृ० ८५६ मूल्य ७०·००

२१ ,, ,, ,, ५-९ ,, मूल्य ७०·००

२२ ,, ,, ,, १०-१२ स्कन्ध मूल्य ७०·००

२३ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू०६०·००

२४ ,, श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत) पृष्ठ १००४ मू० ७०·००

२५ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषद-व्या०) २८०मू०२०·००

२६ उर्दू— शरीफ़ज़ादः (मिर्ज़ा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मूल्य ८·००

२७ ,, गुज़श्तः लखनऊ (मौ० शरर) पृ० ३१६ मूल्य २०·००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२८ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सैंची पृ० ९६८ मूल्य ४०·००
२९ ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ९९२ मूल्य ५०·००
३० ,, ,, ,, तीसरी सैंची पृ० ९६४ मूल्य ५०·००
३१ ,, ,, ,, चौथी सैंची पृ० ८०० मूल्य ५०·००
३२ ,, श्री दसम गुरुग्रन्थ साहिब प्रथम सैंची पृ० ८२० मू० ५०·००
३३ ,, ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ७०४ मू० ५०·००
३४ ,, ,, ,, ,, यंत्रस्थ मूल्य ५०·००
३५ ,, ,, ,, ,, ,, मूल्य ५०·००
३६ ,, श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाजः दिल मुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ० १६४ मू० १०·००
३७ ,, सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि। मूल्य ४·००
३८ सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० २०·००
३९ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०·००
४० असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ ,, ६०·००
४१ ओड़िआ—बैदेहीश-बिळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ० १०००,, ६०·००
४२ ,, तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िआ लिपि में मूलपाठ तथा ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद। पृ०सं० १४६४ मू० ६०·००
४३ संस्कृत—मानस-भारती रामचरितमानस-सहित संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद। पृ० ७४० मू० ५०·००
४४ ,, अद्भुत रामायण हिन्दी अनुवाद सहित पृ० २४४ मूल्य २०·००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

४५ अरबी क़ुर्आन शरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ४६·००
४६ ,, ,, केवल मूल; अरबी, नागरी दोनों लिपि में पृ० ५२० मू० २३·००
४७ ,, ,, केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मूल्य २३·००
४८ ,, क़ौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मूल्य १०·००
४९ ,, ज़ादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) भाग १ पृ० ३३६ मू० १५·००
५० ,, तफ़्सीर माजिदी (पारः १ से ५) क़ुर्आन शरीफ़ अरबी व नागरी, दोनों में मूल पाठ, तथा स्व० मौलाना अब्दुल् माजिद दर्याबादी का अनुवाद एवं वृहत् भाष्य हिन्दी में पृ० ५१२ मूल्य ५०·००
५१ बहुभाषाई— 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १५·००

प्राप्ति-स्थान— भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियां रोड, लखनऊ-३

यह ग्रन्थ सम्पूर्ण हो चुके हैं (सानुवाद देवनागरी लिप्यन्तरण):—

१—(बंगला) कृत्तिवासरामायण-पांचकांड नागरी लिप्य०, अवधी पद्यानुवाद मूल्य २५.००
२—(बंगला) कृत्तिबास रामायण लंकाकाण्ड ,, गद्यानुवाद ,, २०.००
३—(मलयाळम) ऐळुत्तच्छन्कृत महाभारत हिन्दी अनु० नागरी लिप्य० ,, ६०.००
४—(,,) ,, अध्यात्मरामायण, उत्तररामायण ,, ,, ४०.००
५—(कश्मीरी) रामावतारचरित—प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत ,, ,, २०.००
६—(,,) ललद्यद—हिन्दी, संस्कृत अनुवाद सहित ,, १०.००
७—(उर्दू) श्री 'रस्वा' कृत शरीफ़ज़ाद: (आर्यपुत्र) नागरी लिपि में ,, ८.००
८—(,,) गुजश्त: लखनऊ—मौ० शरर ,, २०.००
९—(गुरमुखी) श्रीगुरूग्रन्थ साहिब चार खण्ड (सम्पूर्ण) ,, १९०.००
१०—(,,) जपुजी तथा सुखमनी साहिब—ख्वाज: दिलमुहम्मद पद्यानु० ,, १०.००
११—(,,) सुखमनी साहिब मूल गुटका ,, ४.००
१२—(फ़ारसी) सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, श्वेताश्वतर) की फ़ारसी व्याख्या हिन्दी में ,, २०.००
१३—(अरबी) रियाज़ुस्सालिहीन जादे सफ़र (इस्लामी हदीस) प्र० खण्ड ,, १५.००
१४—(तमिळ) तिरुक्कुरळ् नागरी में मूल, हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद ,, २०.००
१५— ,, कम्ब रामा० बालकां० ४०.०० अयो० अरण्य ७०.०० किष्किं० सुंदर ,, ७०.००
युद्धकाण्ड (पूर्वार्ध) ७०.०० (उत्तरार्ध) ७०.०० (सम्पूर्ण) ३२०.००
१६—(मराठी) श्रीराम-विजय—श्रीधर कृत, हिन्दी अनुवाद सहित ,, ६०.००
१७—(नेपाली) रामायण भानुभक्त कृत सानुवाद ,, २०.००
१८—(तेलुगु) मोल्ल रामायण सानुवाद लिप्यन्तरण ,, २०.००
१९—(,,) रंगनाथ रामायण ,, ,, ,, ६०.००
२०—(कन्नड) रामचन्द्र चरित पुराणं—जैनसाहित्य (अभिनव पम्प नागचन्द्रकृत) ,, ४०.००
२१—(राजस्थानी) रुक्मिणी मंगल—पदम भगत कृत ,, १५.००
२२—(गुजराती) गिरधर रामायण हिन्दी अनुवाद सहित (नागरी लिप्य०) ,, ६०.००
२३—(रामचरितमानस) ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरण एवं ओड़िआ गद्य-पद्या० ,, ६०.००
२४—(संस्कृत) मानस-भारती—संस्कृत पद्या० सहित रामचरितमानस ,, ५०.००
२५—(सिंधी) स्वामी, शाह, सचल की त्रिवेणी ,, २०.००
२६—(असमिया) माधवकंदली रामायण ,, ६०.००
२७—(ओडिआ) बैदेहीशविळास—उपेन्द्र भञ्ज कृत ,, ६०.००
२८—(वाणी सरोवर)—बहुभाषाई-त्रैमासिक पत्र—वार्षिक ,, १०.००

ट्रस्ट के अतिरिक्त, सानुवाद देवनागरी लिप्यन्तरण के अन्य कार्य, जो अन्यत्र हो चुके हैं:—

२९—(अरबी) क़ुर्आन (मूल आयतें अरबी व देवनागरी लिपि में, अनुवाद, टिप्पणी सहित)—इस्लामी धर्माचार्यों द्वारा प्रतिपादित मूल्य ४६.००
३०—(,,) केवल मूलपाठ मूल्य २३.०० केवल अनुवाद ,, २३.००
३१—(,,) क़ुरानिक कोश क़ुर्आन के पठनक्रम से शब्दार्थ ,, १०.००

प्रकाशित हो रहे अन्य सानुवाद देवनागरी-लिप्यन्तरण ग्रन्थ (यन्त्रस्थ):—

१—(कन्नड) वत्सलेश्वर कौशिक रामायण २—(तेलुगु) पोतन्न भागवतम्
३—(गुरमुखी) श्री दशम गुरूग्रंथ साहब—गुरू गोविंदसिंह ४—(बंगला) कृत्तिवास उत्तरकां०
५—(हिब्रू) बाइबिल् ओल्ड् टेस्टमेण्ट् हिन्दी अनु० सहित हिब्रू तथा अंग्रेजी मूल नागरी
६—(ग्रीक) ,, न्यू ,, ,, ,, ,, ग्रीक ,, ,, लिपि में
७—(मराठी) श्रीहरि-विजय—श्रीधर कृत ८—(गुजराती) प्रेमानन्द-रसामृत
९—(,,) संत एकनाथ भावार्थ रामायण १०—(कन्नड) तोरवे रामायण
११—(संस्कृत) अद्भुतरामायण १२—(फ़ारसी) दाराशिकोहकृत ५० उपनिषद् (द्वि० ख०)
१३—(फ़ारसी) मुल्ला मसीही रामायण १४—(अरबी) बुखारी शरीफ़
१५—(अरबी हदीस)—जादे सफ़र द्वि० खण्ड १६— ,, तफ़सीर माजिदी

वाणी प्रेस, लखनऊ—३ में मुद्रित एवं भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ—३ द्वारा प्रकाशित
—द्वारा पण्डित नन्दकुमार अवस्थी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow